॥ अथ त्रिपदी चित्र भेद ॥

बी	ली	ब	दा	नी	स	न	ब	बा
न	न	र	यि	र	ता	बि	र	न
दी	मा	स	सा	नी	ध	नौ	स	ज

॥ अथ द्वीपदी गोमुत्रिका चित्र भेद ॥

बी	न	ली	न	ब	र	दा	यि	नी	बा	न	ब	र	न	बि	स	ता	र
दी	न	मा	न	स	र	सा	यि	नी	ज	न	स	र	नौ	बि	ध	ता	र

अर्थ. वीणाने धारण करनार, वरदान देनार, वाणी अने वर्णोने वितारनार, दुर्बळ जनोने मान सरोवरनी पेंठे सहाय करनार हे? सरस्वति, मे शरणे आवेला भक्तोने विधिये करी संसार समुद्रथी तारनारांछो.॥४॥

॥ सवैया ॥

बेद पुरान बतावन पावन; गावन बीन बजावनहारी, ॥
पत्र मराल मृणाल चखी; सुदयालहि बाल बिचच्छन नारी,॥
व्यापक विश्व जनी जस जापक; कापक ताप रसा रिझवारी,॥
शंकर सूरसुके बरदायिनि; कीजे कृपा अति बालकुमारी. ५॥

पवित्र वेद पुराणने बतावनारां, तथा गायन करनारां, विणाने बजावनार, जेनुं हंस वाहनछे, कमळनाजेवां जेनां नेत्रछे, अति दयावान, बाळ स्वरूप, स्त्रियोमां विचक्षण, ब्रह्मांडमां व्यापी रहेलां, जगतने उत्पन्न करनार, जेनो जश गुणीलोको जपेछे, त्रिविध तापने कापनार, रसमय, घणुं रीझनारां, शंकरादि सर्व देवताओ तथा मनुष्य विगेरेने वर देनार एवां हे? बाळरूप ब्रह्म कुमारी सरस्वति, म्हारा ऊपर परि पूर्ण कृपा करो. ॥ ५. ॥

॥ श्लोक ॥

॥ सरस्वतिनमस्तुभ्यंयाविद्यावरदायिनी ॥
॥ क्रियतेत्वत्प्रसादेनप्रवीणसागरोमया ॥ ६ ॥

अर्थ- विद्यारूपी वरदानने देवावाळां हे? सरस्वती; तमने हुं नमस्कार करुंछुं कारणके तमारीज प्रसन्नताथी प्रवीण सागर ग्रंथ रचुंछुं. ॥ ६ ॥

॥ अथ छंद भुजंगप्रयात ॥

ॐकार प्रेमं प्रभा नाद बिंदा, जयो मातुरा चातुरा भेद छंदा, ॥ गिरा ग्यान गोतीत गूढं गनानी, जयो पार बिस्तारता बेद बानी,॥ महा मोहिनी सोहिनी मोह माया, जयो जंत्रनी मंत्र तंत्रं उपाया, ॥ गुनाकार ज्योती निराकार गत्ती, जयो बोधना सोधना सारसत्ती, ॥ दशं द्वादशं षोडशं चत्र शष्टी, जयो भिन्न रूपी कला पार दृष्टी, ॥ बदे जोग बादं मुनिंद्रं बिचारा, जयो धारना कारना ध्यान धारा, ॥ निरत्ती सुरत्ती प्रकृत्ती परेशा, जयो मंडलाकार मध्ये प्रवेशा,॥ सबं व्यापितं थापितं बीज बाला; जयोही प्रणवं यथा मंत्र माला, ॥ महा मंगला रूप माहेश सिद्धी, जयो वैष्नवी ईंदिरा नेह निद्धी, ॥ सदा ब्रह्म सावित्रि सत्ता सुहानी, जयो भारती सारती बाक बानी,॥ रुषीराज आराधना ग्यान गूढा, जयो गायत्री नायका हंस रूढा,॥ बिपंचीरता पुस्तकं श्वेत वासा, जयो बुद्धि दातार अंकं विकासा, ॥ सुरी आसुरी किन्नरी पाय सेवे, जयो दृष्टिसें शारदा सिद्धि देवे,॥ कुमारी कला पूरना कामधेना, जयो चंद्रबिंबा रती रूप मेना, ॥ हसंती

लसंती गले हार मुक्ती, जयो कंज धारा दया सिंधु दुत्ती, ॥ कृपा कीजियें दीजियें सुप्रगन्या, ॥ जयो चिंत चिंतामनी चारु कन्या,॥ कलप्पं लता इच्छितं सोइ पाऊ, प्रवीनं कथा सागरकी बताऊ, ॥ रसन्ना मनं बास कीजें तिहारो, जुकत्ती उकत्ती सबेही सुधारो, ॥ पुरा प्रेमको पार कोऊ न पावे, तिहारे प्रसादें यथा बुद्धि गावे. ॥ ७ ॥

अर्थ ओंकार रूप, प्रेम रूप, कांति रूप, नाद रूप, विंदु रूप, मातृका रूप, अति चतूर, छंद तथा छंदना भेद रूप, वाणी रूप, ज्ञान रूप, वाणीना पण विचारमां न आवे एवां, गूढ ज्ञानवाळां, अपार विस्तारवाळां, वेदनी वाणी रूप, अति मोहकरवावाळां, शोभाववावाळां, आनंदमय, यंत्रस्वरूपवाळां, मंत्रतंत्र विगेरे साधनो जेणे उत्पन्न करेलांछे, गुणना संबंधथी साकारभासोछो, पण वस्तुताये करीने निराकार चैतन्यरूपछो, हे? सरस्वति, ज्ञानमय तथा शुद्ध छो, दश महा विद्यारूप, वार जेनां नामछे, अने सोळ उपचारथी पूजवा योग्य तमेछो, चोसठ कळाने धारण करनार अथवा चोसठ योगणी रूप ते पण तमेछो. जगत रूप, अने जेनी दृष्टी सर्व कळानी हद उलंघीने फेलाइ रहीछे, जेने वास्ते योगीयो योग संबंधी चर्चा करेछे, तेमज म्होटा मुनीओ शांत थई अनुभवथी जेनो विचार करेछे, एवां हे? सरस्वती, तमे जय आपो. तेमज धारणा शक्ति, कारण रूप, ध्यान रूप, अने सर्व जगतने धारण करनार तमेछो, चैतन्य रूप, जड रूप, प्रकृति रूप, इश्वरथी पण पर एवां हे? सरस्वति, तमे जय आपो, मंडलाकारनी अंदर प्रवेश करनार, जेथी सर्व जगत् व्याप्तछे तेमज जेणे जगतनी स्था-

[illegible] बीज रूप, बाळा रूप हे? सरस्वति, तमे जय आपो.

अर्थ. मसाण तथा जंगल रूप, तमेछो. महा मंगळ रूप, महेश्वरनी [illegible] सर्व धारण कर्याछे, अनेक ग[illegible] भंडार रूप विष्णुनी शक्ति रूप ल-

क्ष्मी ते तमेछो. तेमज ब्रह्मानी साथे शोभनार सावित्री ते पण तमारी सत्ताछे. वळी भारती, सरस्वति, सारने देवावाळां, वाक्यरूप तथा वाणीरूप पण तमेछो. मार्कंडेय विगेरे म्होटा ऋषीयो जेनी आराधना करेछे, गुप्त ज्ञानवाळां हे? सरस्वती, तमे जय आपो. गायन करनार, देवांगनाओमां मुख्यरूप, हंस उपर बेठेलां, मधुर स्वरवाळी विणाने बजाववामां प्रीतिवाळां, पुस्तकने धारण करनार अने सफेत वस्त्रने पेहेरनारांछो. हे? बुद्धिनां दातार सरस्वती, तमे जय आपो. अंकोने प्रकाशनार, देवांगनाओ, असुरनी स्त्रीयो अने किन्नरनी स्त्रीयो जेनां चरण सेवेछे एवां हे? शारदा, तमे कृपा दृष्टीथी भक्तोने सिद्धि देवावाळांछो, कुमारीरूप, कळाने परीपूर्ण करवावाळां, कामधेनुरूप छो. चंद्र बिंबमां कांतिरूप, रतिरूप, अने कामदेवमां पण तमारी सत्ताछे, हसतां मुखवाळां, अति शोभतां, जेना कंठमां मोतिनो हार झळकी रह्योछे, कमळने धरनारां, दयाना समुद्र रूप एवां हे? शिवदूति रूप सरस्वति, कृपाकरीने सारी बुद्धि आपो. चित्तनी चिंतामणी सुंदर कन्यारूप हे? सरस्वति, तमे वारंवार जय आपो. माटे कल्पलतारूप तम पासेथी इच्छित पामुंके जेथी प्रवीण सागरनी कथा रचुं अने म्हारी जीभमां तथा मनमां तमे वसीने ग्रंथ संबंधी सर्व भाषणनी युक्ती सुधारो. पूर्वे कोई कवीओ प्रेमना पारने पाम्या नथी पण तमारी कृपाथी जेवी जेनी बुद्धि ते प्रमाणे प्रेमने गायछे तेमज हुं पण गावाने इच्छुंछुं. ॥ ७ ॥

॥ अथ शंकरस्तुति ॥ दोहा ॥

वाम उमा अमला जटा ॥ उर कर उरुग अनूप, ॥
शीश शशी चरची भसम ॥ जय जय शंकर रूप ॥

॥ कुमारी कळा
रूप मेना, ॥ हसंती

अर्थ डावा अंगमां जेणे पार्वति धारण क
जेनीं जटाछे, हृदय तथा हाथमां उत्त

शे चंद्र चळकेछे, अने शरीरमां भस्मनुं लेपन कर्युंछे, एवा हे ? शंक
जय आपो. ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

अंब अरधंग भ्रष भंग शिर गंगधर; अंग सित भृंग अ
जंग बागें, ॥ मारके मार गर मार बर मार धर; पारक
हार संसार आगें,॥ कंद सुख द्वंद दुख वृंद हर चंदजुत; बाह
नंदि शिषि बिंदु भागें, ॥ माल गल मुंड बिनकाल प्रतिपाल
जन; आल गजखाल सिर रंग रागें. ॥ ९ ॥

अर्थ. पार्वती जेणे अर्द्धांगमां धर्याछे, भांग्यनुं भक्षण करनार, माथ
ऊपर गंगाने धारण करनार, जेनुं शरीर गौरछे, जेनी पासे भमराओना गुंजा
रव सहित अनेक डाक डमरु विगेरे वाजित्रना नाद थईरह्याछे, कामदेव
ने मारवावाळा, कंठमां झेर तथा श्रेष्ट माळाने धारण करनार, भक्तोने, सं
सारना पारने पमाडनार, सुखना धाम रूप, जन्म मरण विगेरे दुःखन
समुदायने हरनार, चंद्र शेखर जेनुं नामछे, जेनुं वाहन पोठीयोछे, कपा
ळमां बिंदुनी जगोए अग्नीनेत्र धारण कर्युंछे. कंठमां मुंडनीमाळा धारण
करीछे, काळ रहित, मृत्युने जीतनार, भक्त जनने पाळनार, हाथीनुं आळ
वांवडुं माथे ओढयुंछे एवा अनेक राग रंगमां मगन हे? शंकर तमने
मस्कार करुंछुं. ॥ ९ ॥

॥ गतागत अन्यार्थ यथा सोरठा, ॥

सानबनहेवास ॥ रेभसमनतनअतिरची, ॥
दाअहिनगुनदास ॥ तिलकधूमशिरसुरसरी. ॥ १० ॥

अर्थ. मसाण तथा जंगलमां जेनो वासछे, शरीरे अति भस्म चर्चिछे,
... भागा कर्याछे. अनेक गणो जेनुं दासपणुं करेछे. त्रिजुं अग्निने-

त्र अने गंगा अेओने मस्तकमां धारण करनार, हे? शिवजी, तमने हुं नमस्कार करुंछुं.

* अवरोहे कृष्न वर्णन बीजो अर्थ.

सदा निर्गुण छतां हृदयने विषे मणी माळा धारण करीछे, जेनां अनंत चरित्रछे, घनश्याम वर्णछे, एवा शोभीता श्री श्यामसुंदर जे रसिक श्रीकृष्न ते सरस मधुवनमां क्रीडा करेछे, तेने हुं नमस्कार करुंछुं. ॥ १० ॥

॥ अथ श्री राधेकृष्नस्तुति ॥ दोहा ॥

बरन बरन बिकसित बिपिन ॥ सुमन सुमन प्रति भृंग, ॥
यमुनां तीर समीर शुभ ॥ हरि राधे दोउ संग. ॥ ११ ॥

अर्थ. बगीचामां जात जातना रंग बेरंगी पुष्पो खिली रह्यांछे, अने दरेक फूलना गुच्छाओनी आसपास भमराओ गुंजारव करी रह्याछे, धीमो धीमो तथा थंडो अने सुगंधीवाळो ज्यांहां वायु वायछे, एवा मनोहर यमुनाजीने कीनारे श्रीकृष्ण राधाने संगे रमण करेछे. ॥ ११ ॥

॥ कवित्त ॥

कुंज कुंज पुंज पुंज मकरंद के सुरंज, ॥
उडत सुगुंज गुंज रंज रंज रहे भृंग, ॥
कुंद कुंद अटकत करत सदा गती गती, ॥
परिभृत उच्चरत सुनत जगे अनंग, ॥
गहरि गहरि यमुनाकी लहरि गजे सुरंग, ॥
सुमन सरोज आन आन छये रंग रंग, ॥
श्यामा श्याम हिंडोराहि गावत हिंडोरा बेठे, ॥
जटित जराव नंग भुखन सु अंग अंग. ॥ १२ ॥

* उपरनो सोरठो बिलोम वांचवाथी कृष्णनुं वर्णन निकळेछे.

अर्थ. कुंजे कुंजे जात जातना वृक्षोना झुंडोमां खीलेला फूलोना वच्चेना तंतुओमांथी उडता रजकणोना सुगंधनी साथे खुशीथइ भमराओ गुंजारव करी रह्याछे, ते सुखमांथी विश्रांति लेवासारु डोलरना प्रत्येक पुष्पनी साथे मिलाप करवा अटकी पाछा मूळ जगोनां सुखवास्ते तरेह तरेहनी गति तथा गुंजारव करता दोडादोड करेछे, तेओनो मनोरंजक अवाज अने कोयलना टउका सांभळतांज कामो दिप्पन थायछे, वळी उपरनी शोभामां वधारो करवासारु गंभीर अने मंद मंद घळघळाट करती यमुनाजीनी लेहेरो गाजेछे, तेमज बे कीनाराओमां तथा पाणीना प्रवाहनी वच्चे कमळ, डोलर, मोंगरा विगेरे जात जातना रंग बेरंगी फूलो छवराई रह्यांछे, आवा वखतमां राधाजी अने श्रीकृष्ण बन्ने जण पोताना नाजुक शरीरना अवयवोमां अमुल्य मणी माणेक तथा रत्न जडित्र घरेणां पेहेरी हींडोळा उपर बेसीने हींडोर रागनुं गायन करेछे ॥ एवां राधा कृष्ण जगतनुं कल्याण करो. ॥ १२ ॥

॥ अलंकार आरोहावरोह[1] ॥ श्लोक ॥

॥ विहंगोवाहनंयस्यात्रिकचायस्यभूषणम् ॥
॥ तद्भार्यासालपादेवीसादेवीवरदास्तुमे ॥ १३ ॥

अर्थ. (वि) गरुड, (हं) हंस (गो) पोठीयो ए जेओनां वाहन छे, (त्रि) त्रिशूळ, (कं) कमंडलु, (चा) धनुष ए जेओनां आयुध छे, एवा ब्रह्मा विष्नु अने रुद्र तेओनी स्त्रीओ (सा) सावित्रि (ल) लक्ष्मी (पा) पार्वति ए त्रणे देवीओ मने वरदायक थाओ. ॥ १३ ॥

॥ अलंकार * यथासंख्या ॥ दोहा ॥

मुषक हंस ब्रषराज खग ॥ इनहीपें असवार, ॥
गनपति शारद हर हरी ॥ चारहु मंगल चार. ॥ १४ ॥

१ वस्तुओनो चडतो उतरतो आगळ पाछळ अनुक्रमथी सरखो संबंध आवे तेनुंनाम आरोहा वारोह. * वस्तुओनो आगळ पाछळ सरखो अनुक्रम आवे तेनुं नाम यथा संख्या.

अर्थ. उंदर, हंस, पोठीयो, गरुड ए उपर क्रमे करीने स्वारी करनार, गणपति, शारदा, महादेव, अने विष्नु ए चार देव मंगळ रूपछे. ॥ १४ ॥

॥ अलंकार आरोहावरोह यथासंख्या ॥ सवैया ॥

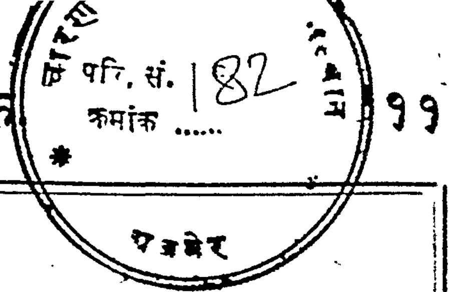
मूष मराल व्रषं खग आसन; पीत तुचं सित रक्त पटंजन,
दान्वसु तंत्रि पिनाक छुरी कर; बंस त्रिशूल सुपोथि गुनीमन,
वंदन चंदन भूति मृगंमद; क्रीट जटा कबरी इभ कुंभन, ॥
ईशज शारद ईश ब्रजेशजु; आदिहु मंगल चार किये इन. १५

अर्थ. उंदर, हंस, पोठीयो, ने गरुड एओ उपर बेसनार, गणपति, शारदा, महादेव, अने श्रीकृष्ण. पितांबर, हाथीनुं चामडुं, सफेत, अने रातुं एवां वस्त्रने पेहेरनार श्रीकृष्ण, महादेव, सरस्वति अने गणपति. फरशी, विणा, पिनाक धनुष अने फूलनी छडी एओने धारण करनार गणपति, शारदा, शंकर अने श्रीकृष्ण. तेमज वांसळी त्रिशूळ, पुस्तक अने मणीमाळा एओने धरनार श्रीकृष्ण, शिवजी, शारदा, अने गणपति. सिंदुर, चंदन, भस्म अने कस्तुरी एओनुं लेपन करनार गणपति, सरस्वति महादेव अने श्रीकृष्ण. कीरीट मुगट, जटा, वेणी अने हाथीनुं माथुं एओने माथे धरनार, श्रीकृष्ण, शंकर, शारदा अने गणपति. एओनुं ग्रंथ कर्त्ताए मंगळाचरणना आरंभमां प्रीतिथी ध्यान करेलुंछे. ॥ १६ ॥

॥ चोपाई ॥

संवत अष्टादश परजंतं ॥ तीस आठ साला बरतंतं ॥
सावन सुदि पंचमि कुजवारं ॥ कियो ग्रंथको मंगलचारं. १६

अर्थ. संवत १९३८ना श्रावण शुदि ५ ने मंगळवारने दिवसे मंगळा चरण पुर्वक आ ग्रंथनो प्रारंभ कर्योछे. ॥ १७ ॥



॥ दोहा ॥

राम कृष्न गुरु पद हृदे ॥ धरि करि कह्यो सुग्रंथ, ॥
पायो जिन परसादतें ॥ सुगम शारदा पंथ. ॥ १७ ॥

अर्थ. रामकृष्ण नामना विद्या गुरुनां चरणारविंद म्हारा पवित्र हृदय कमळमां धारण करी आ ग्रंथ संपूर्ण कहुंछुं जे गुरुनी मेहेरबानी वडे सेहेलाइथी वाणी रूप शारदाना पंथने पाम्योछुं. ॥ १८ ॥

॥ गाहा ॥

श्री गुरुनाथ प्रसादे ॥ किय चत्र देव मंगला चरनं, ॥
प्रेम प्रकाशन ग्रंथे ॥ प्रथम प्रबीन सागरो लहरं. ॥ १८ ॥

अर्थ. श्री सद्गुरु प्रतापेकरी उपर कह्या प्रमाणे गणपति विगेरे चारे देवनुं मंगळा चरण कर्युं प्रेम प्रकाश करनार प्रवीण सागर ग्रंथनी आ प्रथम लहरी संपूर्ण थई. १९ ॥

इति श्री प्रबीन सागर ग्रंथे चतुर्देव मंगलाचरणं नाम प्रथमा लहरी संपूर्णा. ॥ १ ॥ श्री छ श्री छ

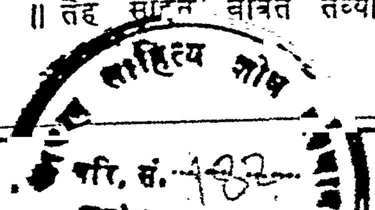
इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने, नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी, राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां, प्रथम स्तरंगः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ ब्रह्मास्तुति ॥

जिहि किनी सब सृष्टिकों ॥ प्रेम नेम परमान, ॥
तिहि बेधा बरनन करौं ॥ ग्रंथ पंथ गति जान. ॥ १ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखा बंध ॥ दोहा. ॥

किंचत् ब्रह्म स्तुति करी ॥पद्य मय नवरस प्रेम ॥ तेह सहित बात्रत तव्यो ॥ तरंग बीजो तेम. ॥ १ ॥



अर्थ. प्रेमना नियम प्रमाणे अनेक परमाणु वडे आ सर्व प्रकारनी सृष्टी रचनार जे ब्रह्मा तेने ग्रंथना पंथमां सुबुद्धि देनार तथा गति रूप जाणी तेमनुं वर्णन करुंछुं. ॥ १ ॥

॥ अथ जातिस्वभाव ॥ सोरठा ॥

चतुर बेदको जान ॥ मैं बरन्यो यह चतुरमुख, ॥
धरत चतुरमुख ध्यान ॥ सोय चतुरमुख होयहैं. ॥ २ ॥

अर्थ. चारे वेदने जाणनार, जे मैं चार मुखवाळा ब्रह्मा कह्या तेनुं जे ध्यान तथा स्मरण करेछे ते पण चार वेद म्होडेथी भणी जाय एवो बुद्धिवान अने चतुर थायछे. ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

चतुर बेद उच्चरन; चतुर सिर मुकट बिराजे, ॥
चतुर चतुर जिन नैन; चतुर खग बाहन छाजे, ॥
चतुर बरनके जनक; चतुर जुग जोरि बनावन, ॥
चतुर कोन दिसि चतुर; चतुर जुगजुगहि षं भगन, ॥
कर बरह दैन पंकज तनुज; अरुन रंग अंबुज लियें, ॥
कवि मूकमती विदुषहि करन; बरन रचन बुधि दीजियें. ३

अर्थ. रग्, यजु, साम अने अथर्वण ए चार वेदने उत्पन्न करी मुखथी उच्चार करनार, अने जेनां मस्तक ऊपर चळकता चार मुगट शोभी रह्या छे आठ नेत्रछे, अने पक्षीओमां दूध पाणीने जूदां पाडवानी क्रियामां चतुर हंस जेनुं वाहनछे, ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, अने शूद्र ए चार वर्णने उत्पन्न करनार, सत्य, त्रेता, द्वापर, अने कळी ए चार युग तथा स्त्री पुरुषनां जोडलां बनावनार, तेमज युगयुग प्रत्ये उत्तर दक्षिण विगेरे चार दिशा अने इशान अग्न्यादि चार कोण आकाश, ने तारागण, विगेरेने उत्पन्न

करनार वरदानने आपनार, कमळ जेनी जन्म भूमीछे, अने राता रंगनुं कमळ हाथमां धर्युंछे, जन्म भूमीना कारणथी राता वर्णवाळा, अने जेनी कल्पना शक्तिमां एक पण नवीन शद्बनी रचना फुरती नथी एवा मुंगी बुद्धिवाळाने पंडित करनार, अने निंदोष करनार हे? ब्रह्मा, म्हारा ऊपर कृपा करीने वर्ण विचारथी कविता रचवानी बुद्धि आपो. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मा विष्नु महेशसो ॥ रसमय रसिक नबीन, ॥
तबहि बिरंची सृष्टिकों ॥ सो नव रसमय कीन. ॥ ४ ॥

अर्थ. ब्रह्मा, विष्नु अने महेश्वर ए त्रण देवताओ रस मय अने शृंगार विगेरे नवे रसमां रसिकछे जेथी ब्रह्माए आ नवी सृष्टीने पण नव रसमय करीछे. ॥ ४ ॥

॥ दोहा. ॥

हे शृंगार अरु हास्य रस ॥ करुना रुद्र अरु बीर ॥
भय बिभत्स अभ्दुत भये ॥ शांतसु सुभग शरीर ॥

अर्थ. पेहलो शृंगार, बीजो हास्य, त्रीजो करुण, चोथो रौद्र, पांचमो वीर, छठ्ठो भयानक, सातमो बिभत्स, आठमो अभ्दुत, अने नवमो शांत ए प्रमाणे अनेक ग्रंथोमां नवरस कहेलाछे.

॥ छप्पै ॥

के शृंगारमय लीन; केइ कृत हास्य कुतूहल, ॥
के करुना मय जान; केइ रस रुद्र मयी बल, ॥
केइ बीर मय धीर; केइ नर धरत भयानक, ॥
के बिभत्स मय चित्त; केइ अभ्दुतमय कौतुक, ॥
ज्ञानी सुसंत जन शांत मय; इक इक रस सबकौं लगन,॥
सुर असुर नाग नरलोक जिय;सबजग नवरसमय मगन.५

अर्थ. केटलाएक लोको शृंगार रसमां लीन थइ रह्याछे, कोइ हास्यमां आश्चर्य पामी रह्याछे, कोई करुणरसमय दयामां तृप्तछे, कोइ रौद्र रसना जुस्सा वाळाछे, रण भूमीमां धैर्यवाळा धरि केटलाएक युद्धाओ वीर रसथी भरपूरछे, कोइ भयानक रसने धारी रह्याछे, अने कोईनां चित्त विभत्स रसमां गर्कछे, कोइ अभ्दुत रसना कौतुकथी परीपूर्णछे, ज्ञानी अने शांतिवाळा सज्जन लोको तो शांतरसमां आनंद पामीने ते मय थइ रह्याछे एवी रीते दुनीयाना सर्व लोकोने एकेका रसमां प्रीति होवाने लीधे एम जणायछे जे सुर, असुर, नाग अने मनुष्य विगेरे सर्व सृष्टी नव रसमय अने रसमा मगनछे. ॥ ५ ॥

॥ अथ रसभेद छंद ॥ भ्रमरावली ॥

बरने गुन देव प्रभा सुरसं मिलनं ॥ तुम जानहुंगे रसरीत सबैं कलनं ॥ प्रथमं रस श्याम सिंगार उभे बरनें ॥ रति कारन देव कनाइ कहें भरनें ॥ रस हास्य प्रकाश सुश्वेत गिनें त्रिगुने ॥ उनकारन हासिय वामन देव सुने ॥ करुना रस रंग कपोत समान कह्यो ॥ जल देवसु ताहिय कारन सोक लह्यो ॥ अरुनंरस रौद्र प्रभा कवितासु कहे ॥ उन कारन क्रोध सदाशिवजू सु रहे ॥ रस बीरसु चार प्रकारन हेम दुती ॥ कहिये सुर इंद्र सुकारन चाह वृती ॥ असितं रुचिहेजु भयानक येह रसें ॥ भय कारन कालसु ताहिकु देवलसे ॥ छबि बीभछ नील कहे रससो चतुरैं ॥ तिहि कारन नंदितहे महा काल सुरैं ॥ अदभूत कह्यो रस पीत प्रभा तनहे ॥ विसमे कहि कारन काम सुरं इनहैं ॥ रस शांत सुचंद्र कला वरनं करियं ॥ मन मोद सुकारन देव कहे हरियं ॥ रससों

रसकी उतपत्ति कही कविहीं॥ गुन ताय बनाय जनायदियो सबहीं ॥ बरनंत सिंगारहुतें रस हास्य बने ॥ करुनाहितें रुद्र उदे सुकबी सुगिने ॥ अदभूतसें बीरसु बीरहिमें उपजे ॥ रस शांत भयानक बीभछ मध्य भजें॥ कहियेजु प्रमात वृती चत्रके गुनये ॥ रस तीनहु तीन मिले अभिधान भये ॥ करुना अरु हास्य सिंगार मिलें जितहीं॥ वृति कौसिकि नाम बतावतहे तितहीं ॥ रस बीरसु अद्भुत हास्य जुरे जबतें ॥ उन भारति वृत्ति सुनाम भयो तबतें॥ भय बीभछ रुद्र इते रस आन जुरें ॥ यह वृत्तिसु आरभटी प्रगटी उचरे ॥ अदभूतसु बीरहि रुद्र जबें समता॥ यह सात्विकि वृत्ति भई सुकहें कविता ॥ रसमें रस मिश्रित दो अरु तीन कहें ॥ अनुमानत दूषन पंच प्रमान यहें॥ मधि बीभछ बीर सिंगार सुकाव्य कयो ॥ करुना मिलि रौद्र तबें प्रतनीक भयो ॥ मिलि दंपति दोय जिते लपटे कपटैं ॥ कहे नीरस ताय सयान भरे निपटैं ॥ बरने कछु भोगमें सोगहुकी उकती ॥ कविताइके भावमे बीरस ए जुकती॥अनुकूल इके प्रतिकूल इके जबहीं ॥ बिदुष सुरस दुसंधान कहे तबहीं ॥ बिन चाहत सो कविता बरने रसकों ॥ पटुदूषन पात्रक दुष्ट कहें तिसकों॥ कहिये निजमें रसके रसजो अरिहें॥ सुकवी यह काव्य प्रमान नहीं करिहें ॥ रिपु भावसो बीभछ ओर सिंगार सदा॥भानिबीर भयानक दोउ मिले दुखदा॥ करुना अरु हास्यमें बैर सदाइ रहे ॥ मति सागर नागर सोय क

वें नकहे॥रस रंगसु कारन देव वृती बरनी॥ रससों रसदोष अरू अरिताइ भनी. ॥ ६ ॥

अर्थ. हवे हुं नवेरसना वर्ण (रंग) मूळकारण, देवता अने परीणाम फळ (रसनुं परस्पर मळवाथी जे बने ते) तेओनुं उत्तरोत्तर अनुक्रमे वर्णन करुंछुं, जेथी रसिक विद्वानोने आनंद अने जिज्ञासुने रस शास्त्रनी रीति तथा लक्षणना ज्ञाननुं फळ थशे. प्रथम शृंगार रसछे तेनो रंग श्याम, तेनुं मूळ कारण रति अने देवता श्रीकृष्ण ते संयोगी अने वियोगी एवा भेदथी बे प्रकारनोछे. बीजो हास्यरस तेनो वर्ण श्वेत, मूळ कारण हसवुं देवता वामन, ते पण उत्तम मध्यम अने अधम ए भेदथी त्रण प्रकारनो. त्रीजो करुणरस तेनो वर्ण कपोतना (होलाना) जेवो, मूळ कारण शोक अने देवता वरुण ते पण स्वनिष्ठ परनिष्ठ एवा भेदथी बे प्रकारनो. चोथो रौद्र तेनो वर्ण लाल, मूळ कारण क्रोध, देवता रुद्र. पांचमो वीर रस तेनो वर्ण सुवर्णना जेवो मूळ कारण उत्साह, देवता इंद्र अने दानवीर, दयावीर, युद्धवीर अने धर्मवीर एवा भेदथी चार प्रकारनोछे. छट्टो भयानक रस तेनो वर्ण श्याम, मूळ कारण भय, देवता यम ते पण स्वनिष्ठ परनिष्ठ एवा भेदथी बे प्रकारनो. सातमो विभत्स तेनो वर्ण नील, मूळ कारण जुगुप्सा, देवता महाकाळ ते पण स्वनिष्ठ परनिष्ठ एवा भेदथी बे प्रकारनो. आठमो अद्भुत रस तेनो वर्ण पीत मूळकारण विस्मय देवता ब्रह्मा ते पण उपर प्रमाणे बे प्रकारनो. नवमो शांतरस तेनो वर्ण चंद्र कांति जेवो तेनुं मूळ कारण निर्वेद, (वैराग्य) देवता परब्रह्म. रस शास्त्रने जाणनार श्रेष्ठ कवीओअे रसथी रसनी उत्पत्ति कहीछे, तेओना गुण प्रगट करी सर्व जणावी दीधाछे. रसनुं वर्णन करवा वाळा एम कहेछे के शृंगार रसथी हास्यरस उपजेछे, अने करुण रसमांथी रौद्र रसनो उदय थायछे एम सारा सारा कवीओ मानेछे, तमेज अद्भुत रसमांथी वीररस शूर पुरुषोमां उपजेछे, अने

बिभत्स रसमांथी शांत अने भयानक रस उपजेछे. हवे चार प्रकारनी वृत्तिओनुं प्रमाण कहीएछीए त्रण त्रण रस परस्पर मळवाथी वृत्तिनुं एकेकुं नाम थायछे. जे ठेकाणे करुण, हास्य, अने शृंगार ए त्रण रस मळेछे त्यांहां कौशिकी वृत्ति थइ एम बतावेछे. ज्यारे वीर, अभ्दुत अने हास्य ए त्रण रस मळे त्यारे ते भारती वृत्ति थइ एम कहेछे. अने ज्यारे भय, बिभत्स, रौद्र, ए त्रण रस भेळा थाय त्यारे आरभटि वृत्ति प्रगट थइ एम कहेछे. अभ्दुत, वीर अने रौद्र ए त्रणे रसो ज्यारे बरोबर मळी आवेछे त्यारे ए सात्विकी वृत्ति थइ एम सारा कविओ कहेछे. एक रसमां बे अथवा त्रण रस मिश्रित थवाथी दोष थायछे ते दोष प्रमाणथी प्रत्यनीक, नीरस वीरस, दुःसंधान, अने पात्र दुष्ट एवीरीते पांच प्रकारनाछे एम म्होटा कवीओ मानेछे, बिभत्स रसमां वीर अने शृंगार रसनुं वर्णन करी काव्य रचे तेमज करुण रसनी वच्चे रौद्र रसनुं वर्णन करे त्यारे प्रत्यनीक नामनो दोष थायछे, जे स्थळने विषे नायक अथवा नायका एक बीजाना हृदयमां कपट राखीने आलिंगन करेछे एवी रचनामां नीरस दोष थयो एम डाह्या पुरुषो कहेछे. भोग संबंधी सुखमां शोकनुं वर्णन करे त्यारे ते कविताना भावमां वीरस दोष थयो एम युक्तिछे जे रचनामां एक स्थळे अनुकूळ (गमतुं) अने प्रतिकूळ (एथी उलटुं) वेय भेळा मळेछे त्यारे दुःसंधान दोष थयो एम विद्वान जनो कहेछे, ज्यांहां रसनी इच्छा नथी त्यांहां रसिक कवितानुं वर्णन करे तो पात्र दुष्ट दोष थयो एम कविताओना दोष जाणनार चतुर पुरुषो कहेछे. हवे रसोमां परस्पर जे शत्रुछे ते कहियेछीये, एवी शत्रु दोष वाळी कविताने सारा कविओ प्रमाण करता नथी, बिभत्स रस अने शृंगारने मांहो मांहे हमेशां शत्रु भावछे, तेमज वीर अने भयानक ए बन्नेने शत्रु भावछे माटे एकठा मळवाथी दुःख उत्पन्न करेछे, करुण अने हास्यनी वच्चमां हमेशां शत्रुपणुं रहेछे तेथी ते पण परस्पर शत्रुजछे. बुद्धिना समुद्र रूप चतुर कवीओ आवा दोषवाळी कविताने क्यारे पण र-

चतानथी, एवी रीते रसोना रंग, मूळ कारण, देवता अने रसोमांथी बनेली वृत्तिओनुं अनुक्रमे वर्णन कर्युं तेमज रसना दोष अने रसोमां परस्पर शत्रु-पणुं ते पण कह्युं. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

नव रसमें सिंगार बर ॥ सो हें उभय प्रकार ॥
इक संयोग वियोग पुनि ॥ द्वै सिंगार निरधार॥ ८ ॥

अर्थ. नवेरसोमां शृंगार रस श्रेष्ठ अने सर्वोत्तमछे अने ते बे प्रकारनोछे एक संयोगशृंगार ने बीजो विप्रयोग शृंगार एवो विद्वानोनो निर्णयछे. ॥८॥

नहि संयोग सिंगारमैं ॥ प्रेमहुको कछु नेम ॥
दंपति हिये बियोगमैं ॥ रहे अखंडित प्रेम ॥ ९ ॥

अर्थ. संयोग शृंगारमां कांइ पण प्रेमनो नियम नथी जेथी बे हदछे तेमज विप्रयोग शृंगारमां स्त्री पुरुषनी जुदाइने लीधे परस्पर एकबीजाना हृदयमां अखंड प्रेम व्यापी रहेछे. ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रेमनिरूपनभेद उल्लेखालंकार ॥ कवित्त ॥

सुघर संयोगी जन चातुकी पियूष धार ॥ बिरहि बिबेकी रंभा घनसार मानीहे ॥ मुकता सिकत जोगी मनमें छिपाय राख्यो॥ विना भेद चाहें अहि कालकूट बानीहें॥सागर या प्रेमस्वांत उरमे अजानहूंके ॥ पंकजके कोस मध्य पर्यो बुंद पानीहें ॥ देखो यह बारहूंको जेसो गेह तेसी देह ॥ जेसी देह तेसो गुन प्रगट निसानीहें. ॥ १० ॥

अर्थ. जेम बपैयो स्वाति रूप अमृतनी धाराने राखी रहेछे तेमज सु-

१ एक वस्तुने अनेक माणसो अनेक रीते समजे ते 'उल्लेखालंकार.

घड एवा संयोगी लोको प्रेम रूप अमृतने राखी रह्याछे, स्वाति बुंद प-ड्याथी थएला कपुरने जेम केळ राखी रहीछे तेम विरही एवा विवेकी जनो प्रेमने राखी रह्याछे, स्वाति बुंदमांथी थएला मोतिने जेम छीप छुपावी राखेछे तेमज योगी लोको अमुल्य मुक्ताफळरूप प्रेमने मनमां छुपावी रह्याछे, जेम सर्पना मुखमां पडेलुं स्वातिनुं बिंदु झेर थई रहेछे, तेमज प्रेमना भेदने न जाणनार दंभी लोकोना हृदयमां रहेलो प्रेम तेवोज थई रहेछे, सागर कहेछे के जेम कमळनी कळीमां पडेलुं स्वातिनुं बींदु पाणीज रहेछे तेमज अजाण माणसना हृदयमां ऊपजेलो प्रेम तेवोज थइ रहेछे माटे जुवो के आ स्वातिना वर्षादना पाणीने जेवुं घर मळेछे तेवुंज तेनुं स्थूळ बंधायछे अने जेवो देह बंधायछे तेवाज गुण प्रगटेछे आ प्रत्यक्ष दाखलोछे. ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम तत्व सत्ता सकल ॥ फेल रही संसार, ॥
प्रेम सधे सोई लहे ॥ परम जोतिको पार. ॥ ११ ॥

अर्थ. प्रेमना तत्वनी सत्ता सघळा संसारमां फेलाइ रहेलीछे जे पुरुष प्रेमनुं साधन करे तेज परब्रह्मना पारने पामे. ॥ ११ ॥

॥ सवैया ॥

जोग सध्यो अष्टांग कहाहे कहा, भयो वेद पुरानहि बांचे॥
तीरथ व्रत्त कियोतो कहाहे कहा, गुन गान निरंतर नाचे॥
देवन सेव करीतो कहा अरु, मंत्र अराध्यो कहा मन काचे
सागर नागर ताइ वृथा सब, प्रेम प्रतीत परी वह साचे१२

अर्थ. अष्टांग योग साध्यो तोपण शुं? तेमज वेद पुराण वांचवाथी पण शुं? तीर्थ तथा वृत्त करवाथी पण शुंछे? गुण गाई हमेशां नाचवाथी

पण शुं थयुं? देवताओनी पुजा करवाथी शुंथयुं? मन काचुंछे अने मंत्र आराधे तेथी पण शुं? सागर कहेछे के ए सघळी चतुराई एक प्रेम विना निष्फळछे ते माटे जेओने प्रेमनी प्रतिती थईछे तेज आ दुनीयामां साचाछे. ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम महा कवि जो भये ॥ रचे प्रेम रस ग्रंथ ॥
परि प्रकाश काहुन कह्यो ॥ प्रेम नेमको पंथ. ॥ १३ ॥

अर्थ. पेहेलां जे महा कवीओ थई गया तेओए प्रेम मय रसना अनेक ग्रंथो रच्या परंतु कोइए प्रेमना नियमना रस्ताने खुल्लो कर्यो नहीं. १३

॥ अथ तस्यप्रयोजनं तोटकछंदे यथा ॥

शिव शेष गनंपति बानि गही॥अगमं उकती निगमं सुकही॥ सनकादिक अंगिरसं सविता ॥शुक नारदसे उशना कविता॥ भृगु बालमि शृंगी बसिष्ठ कवी ॥ रुषिराज रची बहु बानि नवी ॥ इनहीं विध शंकर दत्त भये ॥ पुनि गोरख ग्रंथ रचे सुनये ॥ कुल बल्लभ कीन अनेक कथा ॥ किय काव्य सुरामहिनंद यथा ॥ अमरादिक के सुर भाष कहि ॥ पुनी केउ कवी व्रज भाष ग्रही ॥ तुलसी अरु सूर कबीर कये ॥ कवि केशव आदि अनेक भये ॥ उन पूरन प्रेमसु ग्रंथ किये॥ परिप्रच्छन भेद छिपाइ दिये ॥ परकास महंत कहंत नही॥ सब जान गये मनहींके महीं ॥ घट पूरन प्रेम हले न डुले ॥ हम तुच्छ भरे उभटंत छले ॥ उन कारन बुद्धि यथा कहियें॥ सुरता कछु चूक परी सहियें ॥ १४ ॥

शिवजी, शेष, गणपति, एओए वाणीनुं ग्रहण करी वेदना भेदवाळी अने गम न पडे एवी उक्तिथी घणा ग्रंथो रच्या. तेमज सनकादिक अंगिरा, सूर्य, शुकदेव, नारद, शुक्राचार्य, भृगु, वाल्मिक, शृंगी, वसिष्ठ, विगेरे म्होटा कवीओ तथा ऋषीओए विविध विषय वाळी कविताथी घणाक ग्रंथो रच्या. एज प्रमाणे गुरुदत्तात्री अने शंकराचार्य ते पछी गोरख एओए पण नवा ग्रंथो रच्या, तेमज वल्लभ कुळना गुंसाइओये अनेक प्रकारनी कथाओ रची, रामानंद स्वामीए पण यथा बुद्धि कविता रची, केटलाएक कवीओए देवतानी वाणी एटले संस्कृत भाषा कही ते पछीना केटलाएक कविओए व्रजभाषा ग्रहण करी. तुलसीदास, सुंदरदास, कबीरजी, केशव विगेरे घणाक कवीओ थइ गया तेओए परी पूर्ण प्रेमथी सारा ग्रंथो रच्या; एओए ग्रंथो तो रच्या परंतु गुप्त भेद छुपावी दीधो कारणके म्होटा पुरुषो प्रकाश करता नथी सर्व मनमांने मनमांज समजी रहेछे. पाणीथी पूरण भरेलो घडो हलतो नथी तेम छलकतो पण नथी, तेमज तेओ प्रेमथी पूर्ण हता माटे छलक्या नहीं, ने हुंतो अपूर्ण घडानी पेठे छली गयोछुं. ए कारणथी जेवी म्हारी बुद्धिछे तेवुं कहुंछुं जेथी वांचनाराओए म्हारी पडेली चुकने क्षमा करवी. ॥ १४ ॥

॥ दोहा. ॥

घट बढ पद गुरु लघु बरन ॥ उकति जुकतिको भेद, ॥
मिंत सोधि सुध कीजियें ॥ कबि मत करहु निषेद. ॥१५॥

अर्थ. आ ग्रंथमां घटतां वधतां पद, गुरु लघु अक्षरो अने उक्ती अने युक्तीना भेदोने हे? मित्र कवीओ, शोधीने शुद्ध करजो पण निषेध करशो नहीं. ॥ १५ ॥

प्रेम पंथ अति अगमहें ॥ निगम सराहत जाहि, ॥
सुरत निरतसें सोधवो ॥ सुगम न जानो ताहि. ॥ १६ ॥

अर्थ. प्रेमनो मारग अति अगम्य एटले गम न पडे तेवोछे, अने जेनुं वेद पण वखाण करेछे, तेने प्रीतिथी सारी दृष्टी वडे गोतवो; कारण के ते सुगमछे एम जाणवुं नहीं. ॥ १६ ॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति[1] अलंकार ॥ सवैया ॥

अंबरतें अति ऊंचि वहे अरु; ऊंडि रसातलहूतें अथारी,
तूहिनके गिरतें अति सीतल; पावकतें अति जारन हारी. ॥
मारहुतें कटु मीठि सुधाहुतें; झीनि अनुतें सुमेरतें भारी, ॥
जानत जान अजान न मानत; सागर बात सनेहकि न्यारी. ॥ १७ ॥

अर्थ. प्रेमनी वात आकाशथी उंचीछे, अने रसातळथी उंडीछे, बरफना पहाडथी अती थंडि, अग्निथी अति बाळनारी, झेरथी कडवी, अमृतथी पण मीठी, अणुथी झीणी, अने मेरु पर्वतथी म्होटी अने भारेछे, तेने जाणनाराज जाणेछे अने अजाणने मालम नथी माटे सागर कहेछे के स्नेहनी वात जूदीजछे. १७ ॥

॥ दोहा ॥

नासत भासतहें जगत, सोधो सकल बिबेक ॥
प्रेम प्रकासत तासु मन, आसत प्रगट अनेक. ॥ १८ ॥

अर्थ. सर्व प्रकारना विवेकथी विचार करी जोशो तो आ जगत नाश वाळुंछे एम भांसेछे पण जेना मनमां प्रेमनो प्रकाश थायछे तेने सत्यतानी अनेक प्रकारे आस्था ऊपजी आवेछे. ॥ १८ ॥

॥ अथ जातिस्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

वेद कितेव अरूझ रहे सब, ओर वृती बरतंत सनेही ॥

१ भेद पाडीने ने घणुं देखाडवुं ते भेदकाति शयोक्त्यलंकार.

देह दशा परकों परखे वह, बेपरवाहि फिरंत बिदेही ॥
पार लहेतो लहे परिब्रह्मको, शेष महेश न पावत जेही ॥
सागर नासत भासतहे जग, प्रेम प्रकासत आसत येही. ॥
॥ १९ ॥

अर्थ. आखुं जगत वेद अने किताबमां गुंचाइ रह्युंछे पण जे प्रेमीछे ते बीजीज रीते वर्त्तेछे, तेनी देहनी दशाने तो बीजो कोण परिक्षा करी शके? केमके ते प्रेममां विदेही थईने बेपरवाई फरेछे. जे परब्रह्मना पारने शेषनाग तथा शंकर विगेरे पण लेइ नथी शक्या; ते परब्रह्मना पारने लेवो होय तो आ प्रेमी लेइ शके, सागर कहेछे के जगत नाशवंत भासेछे पण तेमां जे प्रेमनो प्रकाशछे तेज साची आस्था छे. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

याहीकी जाने जुगति, बिबिध भेद बिस्तार॥
रसिक राधिका कृष्नको, बरनौं कछुक बिहार. ॥२०॥

अर्थ. आ प्रेमनी गतिना जूदा जूदा भेदोने विस्तारथी जाणनार रसिक जे राधाकृष्ण तेनो जरा विहार वर्णवुंछुं. ॥ २० ॥

॥ गाहा ॥

ग्रंथा गम गति गहियं ॥ ब्रह्मा स्तुती भेद रस भाषं ॥
परथम प्रेम प्रसंगे ॥ द्वितिय प्रबीनसागरो लहरं.॥२१॥

अर्थ. ग्रंथनी गति अगम्य जाणीने ब्रह्माजीनी स्तुति तथा नवे रसोना भेद कह्या. प्रेमना प्रथम प्रसंगथी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ बीजी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २१ ॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे ब्रह्मा स्तुति नवरस प्रेम निरूपनं नाम द्वितीया लहरि समाप्ता. ॥ २ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजी राज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां द्वितीय स्तरंगः समाप्तः

॥ अथ राधाकृष्न युगल स्वरूप बरनन यथा ॥ दोहा ॥

व्रजमें राधाक्रष्नजू, रच्यो सुरस सिंगार ॥
सोब्बरनन अब करतहौं, जाहि जपत संसार. ॥ १ ॥

अथ टीका कारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद भुजंगी ॥

करी राधिका केशवे प्रेम क्रीडा, शिखे सांभले तेहनी जाय पीडा ॥
धरी नम्रता भाव छंद भुजंगे, कह्यो तेहनो भेद त्रीजे तरंगे ॥ १ ॥

अर्थ. राधाजी अने श्रीकृष्णे क्रीडानी वखतमां वृजमां सारा रसवाळो शृंगार रच्यो तेज शृंगारने आखुं जगत जपेछे तेनुं वर्णन करुंछुं. ॥ १ ॥

रमन राधिका कृष्नको, प्रेम सहित संयोग ॥
सो उरमें रहियें सदा, जाहि जपत तिहु लोग.॥२॥

अर्थ. जेने त्रिलोकी जपेछे एवुं राधाकृष्णनुं रमण अने प्रेम सहित संयोग अमारा हृदय कमळमां हमेशां रहो. ॥ २ ॥

॥ अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ कवित्त ॥

दोउ नेनां नेन रूप देखत अघात नाहीं; ॥
दोउ मन मेल मानों एक मन कीनेहें, ॥
आसन सुखासनपें आनंद उमंग रागें; ॥
जैसें रतीनाथ रती प्रेम मद पीनेहैं, ॥
आनन दुहूकी शोभा बरनी न जाय मानों; ॥
जाकी छबी देखें शशी भान छबि हीनेहैं, ॥

नंद नंद सागर सुनागर प्रबीन राधे; ॥
वृंदावन कुंजमें सिंगार रस भीनेहैं. ॥ ३ ॥

अर्थ. बन्ने जण एक बीजाना नेत्रथी रूप जोतां तृप्त थतां नथी तेमज बन्ने जणे परस्पर मन मेळवीने एक मन कर्युंछे, जेम प्रेम रूपी मदीरानुं पान करीने रति तथा काम देव शोभे तेम आसन अने सुख कारक पलंग उपर आनंद अने उमंगथी बिराजेलां राधा अने श्रीकृष्ण शोभेछे, बेयना मुखारविंदनी शोभा वर्णवी जाति नथी, जेनी कांति जोयाथी चंद्र तथा सूर्यनी कांति मंद भासेछे, सागर कहेछे के चतुर एवा नंदना पुत्र श्रीकृष्ण अने सर्व कळामां प्रवीण राधाजी ए बन्ने जण वृंदावनना लता मंडपमां शृंगार रसथी भींजाएलां क्रीडा करेछे. ॥ ३ ॥

॥ अथ उत्प्रेक्षालंकार[1] ॥ सवैया ॥

मोर किरीट लसें बर राधेकें; राधेकें शीश प्रसून मनीको ॥
बातजको मंद स्यामके भालमें; स्यामनी भाल जरावको टीको
कानन कुंडल कान्ह बिराजत; कान्ह प्रिया तरुना अतिनीको
अंकमें सोहे मयंक मुखी मनुं; बारदमें शशि सारदहीको. ४

अर्थ. मोर मुगट राधावर जे श्रीकृष्ण तेने शोभेछे, अने राधाजीना मस्तकमां मणी जडित्र शिर फूल शोभेछे, श्याम सुंदर जे श्रीकृष्ण तेना कपाळमां कस्तुरीनुं तिलक शोभेछे अने शामनीजी जे राधाजी तेना कपाळमां जडित्र चांडलो शोभेछे, श्रीकृष्णना कानमां कुंडल चलकेछे, अने तेनी प्रिया जे राधा तेना कानमां शोभायमान तरुना (झुमखादार झाल) झळकेछे, एवी रीते श्रीकृष्णना खोळामां बेठेलां, चंद्रमुखी जे राधिका ते जाणे मेघनी काळी घटामां शरद ऋतुनो चंद्र शोभतो होयने? तेम शोभेछे. ॥ ४ ॥

---

१ एक वस्तुनी संभावना करवी ते उत्प्रेक्षालंकार.

॥ कवित्त. ॥

राधे मुख चंद ताकों चाहत चकोर जैसें; ॥
नयन सरोज ताकों चाहत अलीन ज्यौं, ॥
अधर पियूष ताकों चाहत फनिंद जैसें; ॥
सघन सुकेश ताकों चाहत शिखीन ज्यौं, ॥
कर्क कन रद ताकों चाहत सुकीर जैसें; ॥
कुच हेम पुंज ताकों चाहत कृपीन ज्यौं, ॥
राजी सुरसरी ताकों चाहत भगीरथ ज्यौं; ॥
त्रिबल त्रिबेनी सो प्रबीन चाहे मीन ज्यौं. ॥ ५ ॥

अर्थ. राधिकाना मुख रूपी चंद्रने चकोरनी पेठे, तेना नेत्र रूपी कमळने भमरानी पेठे, अने तेना अधरामृतने सर्पनी पेठे, तेना केश रूपी मेघने मोरनी पेठे, दांत रूपी दाडिमनी कळीओने पोपटनी पेठे, स्तन रूपी सोनाना पर्वतने लोभीयानी पेठे, रोम राजी रूपी (रूवांटानी बारीक पंक्ती) गंगाने भगीरथनी पेठे, त्रिवळी रूपी त्रिवेणीने माछलांनी पेठे, रसिक शीरोमणी श्रीकृष्ण चाहेछे. ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

कुंज गली बन जेबो तज्यौ अरु, बेठ रहे गिरिसें गिरधारी॥
नेननिकी छबि बक्र निहारबो, सोगति नेननिसें भइ न्यारी
टेढो किरीट खुली अलके सोइ, आपनसें सब सूधी बिसारी
औरनसें मुसके नाहिं मोहन, कीनिं भली ब्रषभानु दुलारी. ६

अर्थ. वननी कुंज गलीओमां जावुं आवुं छोडिने गिरधारी पहाड उपरज बेठा रहेछे, नेत्रनी छवी अने चपळताथी टेहेडुं जोवानी गति हती

ते आंख्योथी न्यारीज थई रहीछे, भृगुटी उपर वांको मुगट राखवो, छूटा केश राखवा, ए सर्वनी शुद्ध भूली गयाछे, अने बीजी स्त्रीयोथी जरा पण मरकता नथी, वृषभानुनी पुत्री राधानेज श्रेष्ट करीछे. ॥ ६ ॥

॥ यथा संख्या लंकार ॥ कवित्त. ॥

केश भोहें तम चाप व्याल शशी मध्य भृंग; ॥
चीतवें तुरंग बह्यो खग जैसें पूरहें, ॥
नेन अरु नासा कंज चंप कली मीन कीर; ॥
सुर माधुरोसो किधों कोकिला मयूर हें, ॥
अधर रद नली ललित कली सुधा मार; ॥
ग्रीवा सों कपोत किधों कंचनकी चूरहें, ॥
कुच कटी करी हरी हरी शृंग हरी जुरी; ॥
राधाजू प्रबीन माधा मिलबो जरूरहें. ॥ ७ ॥

अर्थ. जेना केश अने भृकुटी, घाटा अंधारा जेवा अने धनुष जेवीछे, तेमज सर्प जेवा अने पूर्ण चंद्र बिंबमां भमरो पांख पसारीने बेठो होय एवी अनुक्रमे दीसेछे, अने जेनां कटाक्ष वाजमां आवेला घोडा जेवां तेमज उडता पक्षी जेवां चपळछे. जेनां नेत्र अने नासिका कमळ जेवां अने चंपानी कळी जेवी तेमज माछलां जेवां अने पोपटनी चांच जेवीछे, जेनो मधुर अवाज कोयल अने मोरना जेवोछे, जेना होठ अने दांत कमळ अने डोलरनी कळीयो, तेमज अमृत अने दाडमनी कळीयो जेवाछे. जेनी डोक होलानो कंठ अने सोनानी चूडी जेवीछे. जेना स्तन अने कटि, हाथीना कुंभस्थळ जेवां अने सिंहनी कटि जेवी तेमज पर्वतनां शिखर जेवां अने सोनानी वेली जेवीछे, एवां जे रसिक राधाजी तेने हे? माधव, जरूर मळवुं जोइए. ॥ ७ ॥

॥ पूर्णोपमालंकार ॥ कवित्त. ॥

कंजसे अरुन रंग पाय म्रदु नीके अती,
हंस गती जेसी गति मंद देखी मोहियें ॥
सिंह कटी जेसी कटी छीन सुभ प्रभा मान,
करी कुंभसें कठोर कुच बर दोहियें ॥
अंब नव पल्लवसें कोमल अधर पान,
मीन जेसे चपल द्रग जावक निचोहियें ॥
बेनी बिषधर जेसी जाहिकी सरल श्याम,
ऐसी राधे राधेनाथजूके उर सोहियें. ॥ ८ ॥

अर्थ. जेना कमळ जेवा लाल कोमळ अति शोभायमान पगछे जेनी हंसना जेवी धीमी धीमी गतिछे ते जोतांज मोह थाय. जेनी सिंहना जेवी पातळी सुंदर केडछे, जेना हाथीनां कुंभस्थळ जेवां कठण अने उन्नत स्तनछे, जेनां आंबाना कोमळ नवपल्लव जेवा होठ अने तेवीज हथेळीओछे, जेनां माछली जेवा चपळ ने अळता जेवां लाल नेत्रछे, जेनो सर्प जेवो सरल अने काळो चोटलोछे एवां जे राधाजी ते राधानाथ जे श्रीकृष्ण तेना खोळामां शोभेछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ समश्या भेद ॥ सवैया ॥

एक भई विपरीत गती यह पैं, दधि कंजके मध्य समानौ॥
हालमकौं बिनु अंग चुगे शुक, इंदुषतें छितिपें ठहिरानौ ॥
अंबुजके बिकसे उलटें तिमि, द्वंद्वतें अंबु धुनीसें बहानौ ॥
लोचन रक्तकि बानि कपोत रटे, बिन आस्य अहीसें बंधानौ ९

१ वाचक, धर्म, उपमेय अने उपमान ए चारे जेमां आवे ते पूर्णोपमालंकार.

अर्थ. एक एवी अवळी गति थइ जे आ दूधनो समुद्र कमळनी वच्चे समाइ गयो एटले दूधना दरीयारूपी स्तन हाथ रूपी कमळमां समाइ गयुं, दाडिमनी कळीओने चुगवासारु वगर अंगवाळो पोपट चंद्र बिंबनी सरहद उपर ताक्यो एटले दाडमनी कळीओ जेवा दांतने चुगवासारु नासिकारूप वगर अंगवाळो पोपट चंद्र रूपी मुख उपर ताकी रह्योछे. खीलेला कमळमां उलटेली बे माछलीयोमांथी पाणीनी नदी वेहेवा लागी एटले कमळ सरखी आंख खीलवाने लीधे माछलीओ सरखा चपळ डोळाओमांथी आंसुरूपी नदी चालवा लागी, वगर मोढावाळा सापथी विंटाएलो होलो कोयलना जेवी वाणी बोलवा लाग्यो. एटले वगर मोढाळा साप रूपी चोटलाथी विंटाएलो होलारूपी कंठ कोयलना सरखी वाणी बोलवा लाग्यो. ॥ ९ ॥

अंतरलापिका ॥ कवित्त ॥

कनकके आदि मध्य कंचनकी नीकी छबि,
उरग घिसात पात नाहिं तिल मातहे ॥
कंद्रपके मध्य पुनि अंतहि अनंग लखि,
ललक लजात जलजात मिलजातहे ॥
सुंडाल प्रथम अरु द्वितीय दुरद सुनि,
सेवत अरन्य पिक सीसुन सिरातहे ॥
तरुनीके अग्र अरु पाछेही ललन पेखि,
सागर पियुष कुंभ प्रभाहु न पातहे. ॥ १० ॥

अर्थ. कनक (सोनुं) नो पेहेलो अक्षर एटले क अने कंचन (सोनुं) नो मध्य एटले च (कच) एटले राधाजीना चोटलानी सरस छबी जोइने काळो नाग तेनी बरोबरी करवा सारु जमीन उपर घसडाया करेछे परंतु तल मात्र तेनी तुल्यता पामी शकतो नथी. कंद्रप (कामदेव) नो वच्चेनो वर्ण द्र,

अनें अनंग (कामदेव) नो छेलो अक्षर ग एटले तेनां द्रग जे नेत्र तेनी शोभा जोइने ळळकतां कमळ लाजथी संकोचायछे. सुंडाल (हाथी) नो प्रथम सु, ने द्दिरद (हाथी) नो बीजो र एटले तेनो सुर सांभळी कोयल पोतानां बच्चां छोडीने जंगलमां वसेछे. तरुनी (स्त्री) नो पेहेलो त, अने ललन (स्त्री) नो छेलो न एटले तेनां स्तननी शोभानी बरोबरी अमृतना कलश पण पामी सकता नथी. ॥ १० ॥

॥ सवैया ॥

सेज बिनोद समैं आलि चूकिकें, बामसें श्याम कछूक गये बद
भोंह चढाय रही सतराय, दुहूं द्रग आय बहे मनुं बारद ॥
मानहि मान प्रबीन प्रिया तब, जांन अजांन भये मदिरामद
लाल बिहाल बिलोकि सुबाल, किये तिहि काल रसाल रद
च्छद ॥ ११ ॥

अर्थ. सखी कहेछे के सहज आनंदना वखतमां चूकथी श्याम सुंदर श्रीकृष्ण राधाजीने कांइक दुःख लागे एवुं वचन कहिगया तेथी करी भृकुटी चडावीने राधाजी रीसाइ रह्यां तेमज तेना बे नेत्रमांथी जाणे वरसाद वरसतो होयनै? एवी रीते आंसु वेहेवा लाग्यां. एवुं जोइने मानवाळां राधाजीनुं मान राखवासारु मद्य पीनारनी पेठे जाणता छता प्रेमने लीधे अजाण थया, आवि रिते श्रीकृष्णने बे हाल जोइने सुंदर बाळा राधिकाए तेज वखत कृष्णना होठनुं चुंबन करीने रसाळ कर्या. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

मुकुर गेह चिहु दिस जटे, कीनीं जोत उद्योत ॥
विना नेहसौं बारि बिच, दीपक जरिवो होत. ॥ १२ ॥

अर्थ. घरमां चारे तरफ काचना अरीसा जडयाछे तेमां तेजनो प्र-

काश करवाथी तेनुं प्रतिबिंब एवुं शोभेछे के जाणे वगर तेलनो दिवो बारीवच्चे बळतो होयनै? ॥ १२ ॥

॥ कवित्त ॥

बेठी वृषभान सुता साजिकें सिंगार सार,
सिषन सुधार रस बात करबो करे ॥
सोहन खवाय लाख सोह मे दिया अनंत,
बनी ठनी उठी पंथ पेड परबो करे ॥
नंदलाल वेग लाइ लाखन उपाय करी,
देखीयेजु साम डग मग भरबो करे ॥
ग्रहिके किवार ठाडी होरही नवोढा नारि,
बिना नेह बारी बीच दीप जरिबो करे ॥ १३ ॥

अर्थ. एक सखी आवीने श्रीकृष्णने केहेवा लागीके हे? नंदलाल, केश गुंथी शृंगार सजीने बेठेलां वृषभानुनी पुत्री राधाजी रसनी वातो करतां हतां, तेने में घणा सम देइ तेमज लाखो सम खवरावी तम पासे आववानी विनंती करी, तेथी तेणे बणीठणी उठीने रस्ते कदंम भरवा मांड्यां. तेने लाखो उपाय करी जलदी लावीछुं माटे हे? शामसुंदर, जुवो ए मार्गे धीमां धीमां डगलां भरतां आवेछे, एम कही दासी तथा श्रीकृष्ण जुवेछे तेटली वारमां तो नवोढा राधाजी कमाड झालीने उभां थइ रह्यां ते जाणे वगर तेलनो दिवो वारी वच्चे बळेछे. ॥ ११ ॥

बिछुवा अनोट पाय जेहर जराव जरी,
नूपुर झनंक पाय घुघरि घनी घूरे ॥
कटि छुद्रघंटिका कीसोरीके बिराजमान,
सोहत हमेल हार चुकि हियमैं परे ॥

कंठ कंठमाल औ रसाल बालहिकों राजे,
बिंदु भाल लाल मुख प्रभा शशीकी हरे ॥
चिर ओढे राधे शीश फूल नंग जोत होत,
बीना नेह बारी बीच दीप जरिवो करे. ॥ १४ ॥

अर्थ. आंगळीयोमां अणवट वींछीया अने पगमां जडित्र पगपान पेर्याछे ते उपर झम झमतां झांझरनी बारीक घुघरीओ गाजी रहीछे, तेमज बारिक घुघरीओवाळी कटीमेखळा किशोर अवस्थावाळी राधाजीनी केडे शोभेछे एटलुंज नहीं पण हमेल तथा हार पेहेर्योछे, छाती उपर अमुल्य नंग दार चोकी झळकी रहीछे, कंठमां पेहेरेली माळा रसिक बाळाने घणीज शोभेछे, कपाळमां लाल बिंदि धारण करीछे, तेथी तेनुं मुख चंद्रनी कांतिने पण हरेछे. लिलांबरचीर ओढेलुंछे, मस्तक उपर धारण करेल शिर फूलमानां लाल नंगनी जोत एवी दीसेछे के जाणे वगर तेलनो दीवो बारी वच्चे बळतो होय नहीं? ॥ १४ ॥

॥ अथभ्र[१]मा लंकार विभ्रमहाव ॥ सवैया ॥

सांझ समे हुलसे मन आवत, गाइन संग बने गिरधारी ॥
डीठ पर्यो वृषभानु सुता मुख, धायके आय चढीजु अटारी॥
गेल गहे ग्रहकाहुनकी ग्रह, नंदकि गेल रही ढिग न्यारी॥
ले लकुटी अधरान बजावत, बेनसु धेनकी हांकन हारी.१५

अर्थ. सांझनी वखते मनना हुलासथी बनीठनी गीरधारी गायोनी साथे व्रजमां आवेछे, तेटलामां दोडीने मेडी उपर चडीगयेलां वृषभानुनी पुत्री राधिकानुं म्होढुं देखतांज विभ्रम थएला श्रीकृष्ण, पासेनी नंदरायजीनी गलितो एक तरफज रही गई अने बीजाना घरनी गलि तर-

१ कोइ वस्तुने जोवाथी भ्रम थाय तेनुं नाम भ्रमालंकार.

फजवा लाग्या, तेमज लाकडीने होठ उपर धरीने वांसळीनी पेठे वजावा लाग्या, अने जे वांसळी हती तेने लाकडीने ठेकाणे गायो हांकवाना काममां लगाडी दीधी. ॥ १५ ॥

॥ कुंडलिया ॥

गनैं ब्रषा कन उडगननि पारावार किलोल ॥
बृच्छहिं भार अढारके, कनक सैल सम तोल ॥
को तोल करे गिरधातनको, कोउ पार लहे ब्रछ पातनको ॥
दधि बाज उडग्गन बुंद गने, हरिको गुन सो न सबैं बरने १६

अर्थ. वरसादनां बिंदु, आश्मानना तारा, समुद्रनां लोढ, अढारभार वनस्पतिनां पांदडां ए सर्वनी संख्या, तेमज मेरु पर्वतनो तोल, ए सर्व न करी सकाय एमछे तोपण कोइ सात धातु वाळा मेरुनो तोल करी सके; तेमज वृक्षनां पातरांनी संख्या करी सके; कोइ समुद्रना लोढ, अशमानना तारा, ने वरसादनां बुंदने गणे ते पण हरीना सघळा गुणने वर्णवी सके हीं. ॥ १६ ॥

॥ अथ दूजो भेद उल्लेखा लंकार ॥ कवित्त ॥
बेननकी बागेस्वरी नेंननकी एन वधू,
मेननकी एन सुख देनकी चिंतामनी ॥
ताननकी सिंधु अभिमाननी जुधेश वंधू,
अंग अंग सोहें दुति चंचलाई दामिनी ॥
गोननकी हंस मुख ज्रोननकी चंद अंस,
टोननकी कारनसु देखियेजुं कामिनी ॥
सुनो नंद नंद प्रभा कहांधों वताय कहौं,
भायें न नीहारे वह भवजूकी भामिनि ॥ १७ ॥

अर्थ. सखी कहेछे के हे? नंदलाल, वचन बोलवामां सरस्वती जेवी, आंख्योनी नमणाइमां मृगलीजेवी, तथा कामदेवना स्थान जेवी, सुख देवामां चिंतामणी जेवी, गायन गावामां समुद्र जेवी, अभिमान राखवामां दुर्योधन जेवी, तेमज अंगेअंगनी कांति तथा चपळतामां वीजळी जेवी, चालवानी गति करवामां हंस जेवी, अने मुखनी शोभामां चंद्रनां कीरण जेवी, जादु विद्याना कारण रूप, एवी राधा नामनी कामनीनी शोभा हुं क्यांहां सुधी वर्णवी कहुं? पण तेने जोयाथी शंकरनी स्त्री पार्वती पण नजरमां आवे नहीं. ॥ १७ ॥

॥ अथ उत्प्रेक्षा ऽलंकार ॥ सवैया ॥

साज सिंगार चढीहे झरोंखन, ठाढिहे भानु सुता सुषदाई ॥
हारनके दबि भारनसें कुच, दोउन पाइ मनों लघुताई ॥
चूरन भार उतारि मनों, मनमथ्थन हथ्थ किये सुघटाई ॥
सोहतहे त्रिवली सुमनों कचके लचके कटि हे दरकाई॥१८॥

अर्थ सुख देवावाळां वृषभानुनी पुत्रि राधाजी सणगार सजी झरोखा उपर चडीने उभेलांछे, तेणे पेहेरेला हारना भारथी दबाइने बन्ने उरे जाणे नाजुकताइ धरी होयनै? एवां दीसेछे, चूडीयोना भारथी नमेला तेना बे हाथ तो जाणे कामदेवे संघेडे चडावी सुघडताइथी बनावेला होयनै? एम जणायछे ने वळी पेट उपर त्रिवळी शोभेछे अने केश तथा स्तनना लचकवाथी तेनी पातळी कड लळक खाती होयनै? एम दीसेछे. ॥ १८ ॥

॥ अथ भ्रांतिमान अलंकार ॥ सवैया ॥

करि मंजन अंजन नील निचोलन, भूषन भूषितहे तनमें ॥
अंधियारि निशा अलि संग लिये, व्रजराजहुपें जुचली बनमें ॥

दुतिदामिनि देखि सिखी हुलसे, मुख चंद प्रकास चकोर नमें॥
सूनि नूपुर बाल मराल धसे, सु लगीहें कुलाहल कुंजनमें १९

अर्थ राधाजीए स्नानकरी आंख्योमां काजळ सारी निलांबर चीर तथा चोळी पेहेरी वारे अंग घरेणाथी शणगार्यां, अने अंधारी रातनी वखते सखीने साथे लेईने व्रजराज जे श्रीकृष्ण तेने मळवा सारु वनमां चाल्यां ते वखते तेनी वीजळीना जेवी कांति जोइने मोर हुलास पाम्या, चंद्र जेवा शोभीता मुखनो प्रकाश जोइने चकोर पक्षीनां टोळां सामे नमी आव्यां; एटलुंज नहीं पण पगमां पेहेरेलां तेनां झांझरनो झमकार सांभळीने हंसनां बच्चां धसवा लाग्यां; तेथी करी आखा वनमां कुंजें कुंजें कोलाहल अवाज थइ रह्योछे. ॥ १९ ॥

॥ अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

शेष महेश मुनेश सुकेशसें, ध्यान हमेशहि तो गुन गावे ॥
ब्रह्म सनंक सनात भृगू, बगदालिभ नारद स्वप्न न आवे ॥
बालमि शृंगिय शक्र शशी रवि, बासर रेंन तु चित्तमें लावे ॥
येंसिय आठ तेतीस नवं अरु, द्वेदस पार अग्यारन पावे २०

अर्थ. शेष, शंकर, मुनीश्वरो अने शुकदेवजी सरखा पण ध्यान धरीने हमेशां तमारा गुणो गायछे, ब्रह्मा, सनक, सनातन, भृगु, वगदालिभ, अने नारद सरखाना तो सोणामां पण आवता नथी, वालमिक. शृंगी, इंद्र, चंद्र अने सुर्य सरखा रात्रि दिवस चिंतवन करीने चित्तमां लावेछे, अठ्याशी हजार ऋषी, तेत्रीश करोड देवता, बार सूर्य, अगीयार, रुद्र विगेरे पण तमने पामी शकता नथी. ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

हरि गुनसो सागर भर्यो, कवि कपोतकी चंच ॥

पियत न खूटे प्रेम पय, यातें बरन्यो रंच ॥ २१ ॥

अर्थ. हरीना गुण रूपी समुद्र भर्योछे, तेतुं प्रेम रूपी अमृत सरखुं पाणी, होलानी चांच जेवा कवीना मुखवते पीवाथी खूटे एम नथी माटे आ जगोए रंच एटले थोडुंज वर्णन कर्युंछे. ॥ २१ ॥

॥ अथ मन सिच्छा ॥ कवित्त ॥

छारसम काया सब माया धूम छाया जेसी,
तमो गुन तजरे तूं तजि देबो गारीको ॥
तजदे बडाई तूं आदर अनादर तज,
तज शोक मोह चिंता झूठ नेह नारीको ॥
तप जप दान पुन्य बिनाकिये बेठ रह्यो,
जानत न तेरे सिर दंड दंड धारीको ॥
अहो मन मूढ तोसों कहा कहूं बेर बेर,
राखरे भरोंसो एक कुंजके बिहारीको. ॥ २२ ॥

अर्थ. शरीर राख समान नाशवानछे अने सघळी माया धुंवाडा तथा छांया जेवी मिथ्याछे. माटे तमोगुण तजीने गाळ्यो देवानी टेव छोडीदे तेमज म्होटाइ, आदर, अनादर, शोक, मोह, अने चिंता विगेरे दुर्गुणो तजीने स्रीयोनो जुठो स्नेह छोडीदे, अने तप, जप, दान, पुन्य कर्या वगर बेठुं रहेछे ते जाणतुं नथी जे तारा उपर दंड धरनार यम राजानो दंड पडशे! हे? मूर्ख मन, तुंने वारे वारे शुं कहुं हवेतो एक कुंज विहारी श्रीकृष्णनो भरोसो राख्य, के जेथी तारुं कल्याण थाय. ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

पार नपावत शेषसें, सहस उभैं जिहि रस्न ॥
प्रेमहुंसें परसन रहो, रसिक राधिका कृष्न. ॥ २३ ॥

अर्थ. जेनें बे हजार जीभोछे एवा शेष सरखा पण जेना पारने पामी शकता नथी त्यारे हुंतो कोण मात्र, माटे हे? रसिक राधाकृष्ण, केवळ प्रेमथीज म्हारी उपर प्रसन्न रहो. ॥ २३ ॥

॥ गाहा ॥

मुकति जुकति रति दाता ॥ रसमय रूप राधिका कृष्नं ॥
बरनन प्रेम प्रकासे ॥ तृतीय प्रबीन सागरो लहरं. ॥२४॥

अर्थ. मुक्ति युक्ति अने प्रीतिना दातार, रस मय जेनुं रूपछे एवा राधाकृष्णना प्रेमना प्रकाशनी साथे प्रवीणसागर ग्रंथनी आ त्रीजी लेहेर समाप्त थई. ॥ २४ ॥

इति श्री प्रबीन सागर ग्रंथे राधाकृष्न युगल स्वरूप वर्णनं नाम तृतीया लहरी समाप्ता. ॥ ३ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजी राज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां तृतीय स्तरंगः समाप्तः

॥ अथ ग्रंथाद्य सरस्वती बर्नन ॥ सवैया ॥

श्रीहरिकी पतनी सविता सुत, ता रिपुकों जिन बाहन कीनैं
शंकरकी पतनी तिन बाहन, ता भ्रषको पति भालमें दीनैं॥
द्रूहिनकी पतनी तनुजा सब, केत गये कवि सो सुनिलीनैं ॥
तूंहि हे आदि जुगादि उपावन, तूं द्रग नेंक सबैं जग भीनैं. १

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद काइव ॥

दंपति सुर नग असुर, सर्व कैलास सिधाव्या॥ उमा ईश आराध, सकल जन जन मन भाव्या
गण गणशांमा आप, तत्री तेवीविध जुक्ती ॥ तरंग चोथा मध्य, आवशे अटली उक्ती. ॥ १ ॥

अर्थ श्री हरी जे विष्णु तेनी स्त्री लक्ष्मी तेना पिता समुद्र तेमांथी

जेनो जन्मछे एवां मोति तेनो शत्रु जे हंस तेनुं जेणे वाहन कर्युंछे, शंकरनी स्त्री पार्वती तेनुं वाहन सिंह तेनो भक्ष मृग तेना पति चंद्र तेने जेणे कपाळमां धारण कर्योछे, ब्रह्मानी स्त्री सावित्री तेना शरीरथके उत्पन्न थएलां जे सरस्वति तेनुं महात्म्य म्होटा कवीओए कहेलुंछे ते सुज्ञ जनोए सांभळवुं जोइए. हे? सरस्वति, तमे सर्व थके आदिछो तेमज युगादिनी कल्पनाथीं सर्व ब्रह्मांडने रचनारांछो, तमारी कृपा दृष्टी रूप नेक नजरथी आ आखुं जगत आर्द्र अने आनंदवानछे. ॥ १ ॥

॥ अथ ग्रंथ बीज ॥ सोरठा ॥

यह बिधि भयो सुग्रंथ, जानो जाननहार सब ॥
बिरह प्रेम दोउ मंथ, बन बन ज्यौं ज्वाला बढत. ॥२॥

अर्थ. जेम जंगलमां परस्पर वांस घसाइ अग्निनी झाळ वधेछे, तेम वियोग अने प्रेमनुं मांहो मांहे मंथन थवाथी आ उत्तम ग्रंथ थयो ते सर्व जाणनाराओ जाणो. ॥ २ ॥

बढयो प्रेम बिस्तार, कहुं ताको निर्मान करि ॥
उच्छव शिव उच्चार, प्रथम कथा कैलासकी ॥ ३ ॥

अर्थ. जे प्रेमनो विस्तार वध्यो तेनुं निर्माण करीने वर्णवुंछुं, शिवरात्रीना उच्छवना उच्चारना प्रसंगथी प्रथम कैलासनी कथा कहुंछुं. ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रथम कथा ॥ कैलास बर्नन छंद प्रमानिका ॥

अखंड धाम ईशरं ॥ रजंत रज्जतं गिरं ॥
महेश्वरं बिराजितं ॥ सुराजनीत साजितं ॥
धरंत जोग ध्यानियं ॥ उभे दशा समानियं ॥
प्रियासु पारवत्तियं ॥ जटेश जोग गत्तियं ॥
रमंत रीझ रत्तियं ॥ जुगादि आदि जत्तियं ॥

हरम्य रम्य सोहितं ॥ द्रुहीनसें विमोहितं ॥
दरी अनेक श्रंगियं ॥ रजंत रंग रंगियं ॥
झरं झरंत निर्झरं ॥ सलील स्त्रोत सुभ्भरं ॥
नदी अल्लक नद्दियं ॥ बहंत घोष सद्दियं ॥
पशू गजेंद्र आदियं ॥ ब्रदे म्रगेंद्र नादियं ॥
अढार भार झुल्लियं ॥ अनंत बाग फुल्लियं ॥
प्रसून भार झुम्मितं ॥ मधूसु तंतु चुंबितं ॥
सुरंज कुंज छुट्टियं ॥ पिकं मयूर रट्टियं ॥
ब्रछं सुबेलि बुट्टियं ॥ बिकास बास छुट्टियं ॥
सुबास सीत धीरियं ॥ सदा बहे समीरियं ॥
मराल सारसं सुरं ॥ कलीतकंठ उच्चरं ॥
मुनींद्र जोग सद्धियं ॥ बिलोक मोद बद्धियं ॥
गिरं गिरं सुरं प्रभा ॥ सुजच्छ किंनरं सभा ॥
गिरा उचार गायका ॥ अनेक नृत्य नायका ॥
अगा अगापगा मगं ॥ कृतं कुलाहलं खगं ॥
लखंत इश्वरं पुरं ॥ ग्रहं ग्रहं पुरंदरं ॥ ४ ॥

अर्थ. महेश्वरना अखंड धाम रूप, जेमां शिवजी विराजेछे, ज्यांहां अदल राजनीति चालेछे, एवो रूपानो कैलास पर्वत शोभेछे. योग समाधीथी ध्यान धरी रह्याछे, मान अपमान त्याग करवाथी बेय प्रकारे जेनी दशा समान छे, जेनी स्त्री पार्वतीछे, जटाने धरनार, जोगीना ईश्वर, अने योगना आश्रय रूप, जगतनां आदि कारण, अने इंद्रीयोने नियममां राखनार यतीरूप, शंकर ज्यांहां खुशीथी पार्वती साथे रमण करेछे. जेनी अंदर रमणिक अनेक मेडीओ शोभेछे, जेने जोयाथी ब्रह्मादिक पण मोह पामेछे, जेमां अनेक

गुफाओछे, तेमज जात जातनां रंग बेरंगी शीखरो झळकेछे, जेनी झरयोमांथी झरणं झरी पाणी एकठुं थइने म्होटो प्रवाह चालेछे, तेमज जेमां नंदा अने अलकनंदा नामनी नदीओना प्रवाह घुघवाट करता चालेछे, जेमां हाथी आदि म्होटा पशुओ फरेछे, तेमज सिंहो गर्जना करेछे, जेमां अढार भार वनस्पति झुकी रहीछे, तेमज अगणित बाग बगीचाओ खीली रह्याछे, जेनां जमीन ऊपर नमेला फूलना गुच्छाओना तंतुने भमराओ चुंबि रह्याछे, तेमज कुंजोमांथी सुगंधमय रजकणो फेलाइ रह्याछे, जेमां कोयल तथा मोर मीठा अवाजथी रटी रह्याछे, तेमज झाड, वेल अने बुटीओ प्रफुल्लित थवाथी तेनी सुगंध धमधमी रह्योछे, जेनी अंदर हमेशां सुगंधमय ठंडो अने धीमो धीमो पवन चाल्या करेछे, तेमज हंस सारस, अने बपैया ए सर्व मधुर स्वरे उच्चार करी रह्याछे, ज्यांहां मोटा मुनीओ जोग साधेछे जेने जोयाथी आनंद वधेछे, जेमां ठेकाणे ठेकाणे कांतिवाळा देवताओ तथा यक्ष किन्नर विगेरेनी सभाओ जोवामां आवेछे, ज्यांहां गायन करनाराओ रागथी वाणीनो उच्चार करेछे, तेमज अनेक अप्सराओ नाची रहीछे, जे पर्वतमांथी नीकळेली नदीओने कीनारे अनेक पक्षीओ कोलाहल शद्ब करी रह्यांछे एवुं इश्वरनुं धाम जे कैलास ते जोतां घर घर प्रत्ये इंद्र पुरीना जेवी शोभा देखवामां आवेछे. ४

॥ छप्पय ॥

महाराज माहेश, बाग कैलास बिराजे ॥
उमया आप समीप, गान गंध्रव कुल साजे ॥
चारन किन्नर जच्छ, भूत प्रेतादि भयंकर ॥
के बिराज बिच सभा, केउ कर जोरित किंकर ॥
करि विनय अरज कीनी तहां, महमाया माहेश प्रत॥
महराज महारात्री निकट, यह उच्छव कीजैं महत ५

अर्थ. एक समये कैलासमां शिवजी सर्व गणोनी सभा भरी मध्य भागमां सिंहासन ऊपर वाघांबर आच्छादन करी विराजमान थया, तेमज उमयाजी वाम भागमां आवि बिराज्यां; ते समये गंधर्वना कुळो गायन करवा लाग्यां, चारण किन्नर, यक्ष, भूत प्रेतादि भयंकर रूपवाळा केटलाएक गणो वचमां बेठेलाछे, अने केटलाएक नोकरो हाथ जोडीने उभाछे; आवा आनंदना वखतमां उभां थइ विनयथी नम्रता पुर्वक माहामाया पार्वतीजीये पोताना प्राणपति शंकर पासे आ प्रमाणे अरज करी के हे? महाराज, महा रात्रिनो (शिवरात्रीनो) दिवस नजीक आव्योछे माटे म्होटो उच्छव करवानी तैयारी करवी जोईए. ॥ ५ ॥

॥ अथ उमा वाक्य ॥ दोहा ॥

महाराज इक मास प्रति, आवहिंगी महा रेंन ॥
बडो महोच्छव कीजियें, सबैं बढे सुख चेंन. ॥ ६ ॥

अर्थ. हे? महाराज, एक मास पछी महारात्री आवशे माटे तेनो म्होटो उच्छव करीए के जेथी सर्वना मनने अती सुख थाय. ॥ ६ ॥

हरि बेधा सुर असुर नग, किन्नर जच्छ मुनिंद ॥
सिंधु नाग दंपति सबैं, मिलेंतो महत अनंद. ॥ ७ ॥

अर्थ. विष्नु, ब्रह्मां, इंद्रादि देवताओ, असुर, पर्वत, किन्नर गण, यक्ष, मुनीओ, समुद्र अने नाग, ए सर्वनो स्त्रीयोए सहित आंही मेलाप थाय तो म्होटो आनंद थाय. ॥ ७ ॥

॥ शिव वाक्य ॥ दोहा ॥

तव हरजू मनहर भये, उमा अरज सुनि लीन ॥
सर्वगती नामा सुगन, उन प्रति आयस दीन ॥ ८ ॥

अर्थ. आवा प्रकारनी उमयाजीनी अरज सांभळी आनंद थई सर्व गति नामना गणने शंकरे पोतानी पासे बोलावी; देवोने आमंत्रण करवानी आज्ञा आपी. ॥ ८ ॥

॥ अथ छंद मौक्तिक दाम ॥

सदा शिव आयसके परमान ॥ म्रडा मुखकी उर धारि सुबांन ॥ किये स्त्रवगत्ति बिदाय सुदूत ॥ गयो चलि एक पुरी पुर हूत ॥ गयो चालि एक महा सिध नग्र ॥ सबैं कही बात श्रियंपति अग्र ॥ गयो इक ब्रह्म पुरी गन तास ॥ कही प्रति द्रूहिन बात प्रकास ॥ गयो इक नग्र जहां दुर नाद ॥ कह्यो उन श्रीमुखको समवाद ॥ गयो इक जंम धरंम सुधाम ॥ लह्यो उन ईश बुलावन नाम ॥ गयो इक सिंधु अपंपति थान ॥ कह्यो उनसें हरको फुरमान ॥ गयो इक नाग पुरी निरधार ॥ कह्यो सब आदिसु अंत बिचार॥ गयो इक राज जहां नगराज ॥ कह्यो उन शंभु महोच्छव साज॥ गयो इक जच्छसु किन्नर बास॥कह्यो महराज बुलावन पास॥ सबैं वह आयसकों उर धार ॥ मिले महराजहुके दरबार ॥ म्रजादिक सेव सबौंहि संभार ॥ करें गन षोडशही उपचार ॥ करी विनता विनता प्रति सेव॥ महोच्छव रीत रची महदेव ॥ ९ ॥

अर्थ. शंकरनी आज्ञा प्रमाणे तेमज पार्वतिनां कहेलां वचन मनमां राखी सर्वगति नामना गणे देवताओने बोलाववा सारु बीजा गणोने विदाय कर्या, तेथी एक दूत चालीने इंद्र पुरीमां गयो, अने एक दूत

वैकुंठ पुरीमां गयो, त्यहां लक्ष्मीना पति विष्णुनी पासे शिवरात्रिना उच्छवनी वात कही, एक दूत ब्रह्मपुरीमां गयो अने ब्रह्माजीने सर्व वात प्रकाश करीने संभळावी, एक दूत राक्षसनी राजधानीमां गयो अने ते पासे शंकरना मुखथी थएलो हुकम कह्यो. तेमज एक दूत धर्म राजानी संयमनी पुरीमां गयो अने तेने शिवरात्रीना उच्छव ऊपर आववा सारु शंकरनी आज्ञा कही, एक दूत समुद्रमां ज्यांहां वरुणनी पुरीछे त्यांहां गयो तेने पण उपर प्रमाणे शंकरनी आज्ञा कही, एक दूत पाताळमां नागलोकमां गयो अने तेओने आदिथी अंतसुधी उच्छव संबंधी विचार कही संभळाव्यो, एक दूत पर्वतना राजा हिमाळयना नग्रमां गयो अने एने पण शंकरना महोच्छवनी बीना कही संभळावी, एक दूत यक्ष अने किन्नरनी राजधानीमां गयो अने तेओने पण शंकर बोलावेछे एवुं कह्युं, आ प्रमाणे उच्छवमां जवानी आज्ञा सांभळी तेथी सुर, असुर, किंन्नर, गंधर्व, अने देवताओ विगेरे शंकरनी आज्ञा हृदयमां धारण करी वैमानमां बेशीने शंकरना दरबारमां आव्या. आवेला परोणाओने मान देवासारु मर्यादा पुर्वक संभाळ राखीने महादेवना गणोए सोळ प्रकारना उपचारथी सर्वनुं पूजन कर्युं तेमज गणोनी स्त्रीयोए देवांगनाओनी सत्कार पुर्वक पूजा करी ए रीते महोच्छवनो प्रारंभ कर्यो. ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

आये पुर कैलास सब, दंपति देव अनेक ॥
सेव करत शिव जन सकल, एक एक प्रति एक. ॥ १० ॥

अर्थ. कैलास पुरीमां सर्व देवताओनां अनेक जोडलां आव्यां तेओनी, एक देव पासे एक गण अने एक देवांगना पासे एक गणनी स्त्री एवि रीते हाजर रही शंकरना तमाम गणो सेवा करवा लाग्या. ॥ १० ॥

ग्यांन कथा चरचा चले, राग रंग सुविलास ॥
आयो तब उच्छव दिवस, सब मन मोद प्रकास. ॥ ११ ॥

अर्थ. आवा देवना रमुजी मेळामां ज्ञाननी कथा अने तेज संबंधी चरचा चालेछे, एवी रीते राग रंगना विलासथी दिवस गुजारेछे तेटलामां उत्सवनो दिवस (शिवरात्रीनो दिवस) नजीक आव्यो जेथी सर्वना मनमां आनंद प्रगट थयो. ॥ ११ ॥

सांज समे शिवजू सभा, रची तालके रोध ॥
तहँ सुर मिलि बैठें सबें, रजत छांह निग्रोध. ॥ १२ ॥

अर्थ. शिवरात्रीने दिवसे सांझनी वखते महादेवजी, तळावने कीनारे ज्यांहां सुंदर वडनी छायांछे त्यांहा सभा रचीने बिराज्या, तेमज सर्व देवताओ आवी, मर्यादा पुर्वक वंदन करी सौसौने आसने बेठा. ॥ १२ ॥

॥ छप्पै ॥

एक ओर गिरि शृंग, एक दिसि गंग गहर गति ॥
एक ओर बन बाग, एक रस ताल उच्छरति ॥
बट समीप प्रासाद, उठत नलअंबु चत्र दिस ॥
सीत मंद अरु सुरभि, स्वसन गति करत इच्छ बस ॥
सब भिन्न भिन्न सिंगार धरि, तित शंकर कीनी सभा ॥
बरनाव करत कैसें बनें, परम देव अकलित प्रभा ॥१३॥

अर्थ. आवा वखतमां जेनी एक तरफ रंगबेरंगी पर्वतना शीखरो चळकेछे अने एक तरफ गंगानो प्रवाह गंभीरताथी घळघळाट करतो चालेछे, जेनी बीजी तरफ बाग बगीचाओ प्रफुल्लित थई रह्याछे, तेमज एक तरफ अमृतरस जेवा पाणीथी भरेल तळावना मोजाओ रुपानी मीसाले चळकता उछळी रह्याछे, वडनी आसपास झुकी रहेली अट्टालीकाओना चोगानमां रहेला फूवाराओनां पाणी जेनी चोतरफ छूटी रह्यांछे तेमज शीतळ अने सुगंधवाळो धीमी गतिथी इच्छा पुर्वक पवन चाली रह्योछे जेनी अंदर सर्व देवो जूदा जूदा शृंगार

धारण करी विराज्याछे एवी मनोहर सभा शंकरे भरीछे, तेनुं वर्णन शी-रीते वनी सके? कारण के शंकर परम देवछे तेमज तेनी कांति तथा म-हिमा कोइना कळ्यामां आवे एम नथी. ॥ १३ ॥

इश विष्नु विधि इंद्र, चंद्र दिनयंद धर्म जम ॥
अगपति अहिपति अनंत, आपपति आप अनुक्रम ॥
निकषासुत सुधनंद, केऊ रुषिराज विराजें ॥
धरें छत्र छहंगीर, ठोर ठोरन प्रति छाजें ॥
सामीप षरे शिव गन सकल, हुकम प्रति हाजिर रहैं ॥
गंध्रव सुग्यान नृति नायका, कोन तास उपमा कहैं. १४

अर्थ. इश्वर, विष्नु, ब्रह्मा, इंद्र, चंद्र, सूर्य, यम, धर्म, पर्वतना पति हिमाळय विगेरे, सर्पना पति तक्षक तथा शेष विगेरे, जळना पति वरुण, समुद्र, विभिषणादि राक्षसो, धनपति कुबेर, अने केटलाएक म्होटा ऋ-षिओ, अनुक्रमे बेठेलाछे; तेओए धारण करेलां छत्र चामरो ठेकाणे ठेका-णे शोभी रह्यांछे, सामे उभेला सर्व शिवना गणो हुकम प्रमाणे हाजर थई रह्याछे, गंधर्वो गायन करेछे, नायकाओ नृत्य करेछे एवी आ सभा भराणीछे तेनी उपमा कोण कही सके? ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

उत आभा सुर गान गति, झुकत बाग वन कुंज ॥
यह कछुयक बरनन करौं, रव विहंग मधु गुंज ॥ १५ ॥

अर्थ. ए ठेकाणानी शोभा, स्वरोना उच्चारनी साथे गायन, बाग अने वनमां झुकी रहेली वेल्योना झुंडो, पक्षीओना मधुर अवाज अने भ्रमरना गुंजारव तेनुं थोडुं एक वर्णन करी कहुंछुं. ॥ १५ ॥

॥ अथ वह बर्नन छंद भुजंग प्रयात ॥

वसंता गमं कुंजके पुंज फुल्ले ॥ झुके मंजुरं मंजरी भ्रंग झुल्ले ॥ मधू माधवी चंपकं अंब मोरें ॥ कली केतकी कुंद फुंदा झकोरें ॥ हरी दुंबरी बेलि खुल्लि हजारि ॥ तुरा जूहि जासुल्ल तैसी तजारी ॥ तरं केसरं ब्रच्छ तालं तमालं ॥ लता नागवेली चमेली सुलालं ॥ जुहि निंब अन्नार नारिंग ज्रंभं ॥ थली बक्कुली निर्मली रंभ थंभं ॥ वदें चातुकी कोकिला मोर वांनी ॥ प्रसारे फुहारे झरे पात पानि ॥ लता बाग नीठं सरं लेर लागें ॥ भरे नीर पुरं समीरं त्रिभागें ॥ वकं वत्तकं सारसं कोक बृंदं ॥ मधू मंडियं कंज केऊ कुमद्दं ॥ झिली दद्दरं मद्द नद्दं झनक्के ॥ तरं मंजरं नीर के तीर तक्के ॥ नए रंगसें चित्र थंभा नवीनौ ॥ तहां राजितं देव दीवान कीनौ ॥ समाजं कला गान संगीत साधें ॥ उभै मेक ग्रामं सुरं लोक आधें ॥ म्रदंगानके द्वादशं कीन मोरें ॥ विना आदिदे तार बज्जे टकोरें ॥ चत्रं पंच दोही जुकत्ती उचारें ॥ सतं मुर्च्छना तीन बीधा त्रिबारें ॥ पटं पंच रागं त्रिया राग षट्टं ॥ दुअं चत्र अठ्ठं धुवा लाग दट्टं ॥ अदोसं दसं तार आलाप अठ्ठं ॥ सधें गानके तान चोवीस सठ्ठं ॥ अरोही सुरोही सुचाही असत्तं ॥ सुगानं दशं अष्ट तालं समस्तं ॥ खरे भ्रत्य खासे सभा खास खेलं ॥ करे प्रेम वत्तं कथा काम केलं. ॥ १६ ॥

अर्थ. वसंतऋतुना आववाथी जेमां कुंजना झुंडो प्रफुल्लित थई रह्याछे ते-

मज सुंदर नमेली डाळयोनी मंजरीनी आसपास भमराओ झुलता फरेछे, जेमां मोगरो, वसंतलता, चंपो अने आंबो, ए वृक्षो खीली रह्यांछे तेमज केतकीनी कळीयो तथा डोलरनां झुमखां पवनथी झुली रह्यांछे, जेनी अंदर लीला उमराओ तथा गुल्लहजारी नामनी वेल्यो खीली रहीछे तेमज गलतुरा, जुहि, जासुस, तजारा, केसर, ताल, तमाल, नागरवेल, चमेली, लाल चमेली, जुई, लींबडा, दाडम, नारंगी, जंबीर, (नानालिंवु) स्थळि, बोलश्री, निर्मळी, अने केळना स्तंभ ए विगेरे हजारो फूल फळवाळां झाडो प्रफुल्लित थई रह्यांछे. जेमां बपैया, कोयल, मयूर विगेरे अनेक पक्षीओ मधुर शब्द रटी रह्यांछे, तेमज छूटता फुवाराना पाणी झाडना पादडां उपर पसरी नीचे झरेछे, जेना लता मंडप तथा बगीचानी नजदीक पाणीथी भरपूर सरोवरनी लेहेरो गाज़ी रहीछे, तेमज त्रणे भागे सरखो एटले मंद, सुगंधी, अने शीतळ पवन वायछे. ज्यांहां बगला, बतको, सारस, अने चकवा ए विगेरे अनेक पक्षीयोना टोळां कोलाहल शब्द करी रह्यांछे तेमज केटलाक भमराओ कमळ तथा कमोदनीनी आसपास गुंजारव करी रह्याछे, ज्यांहां मदथी भरपूर तमरांओना अने देडकाओना अवाजोनो झणझणाट थई रह्योछे तेमज झाडनी मंजरीओ तथा झुमखांओ पाणीना कीनारा उपर ताकी रह्यांछे, जेमां रचेला सभामंडपना थंभो नवीन अनेक चित्रोथी रंगित शोभी रह्याछे एवा आ रमणीक स्थळमां देवनी सभा भराणीछे. आ समाजमां संगित शास्त्रनी कळा प्रमाणे त्रणग्राम, अने सात स्वरथी गायन थायछे, बार प्रकारना मोराथी मृदंग वागेछे. वीणा, सतार, सुंदरी, विगेरेना तारमां टकोरा वागवाथी तरेह तरेहना मधुर अवाज थायछे, चार पांच अने बे एटले अगीयार युक्तियोथी, एक अने सातने त्रण गणा कर्या एटले एकवीश मुर्च्छनाना उच्चार थायछे, छने पांचगणा कर्या एटले त्रीश रागणीओ अने छरागनुं, आठने आठगणा कर्या एटले चोसठकळा सहित दश प्रकारना दोष रहीत, आठ प्रकारना आलाप सहित अने चोराशी प्रकारना

नानथी गान साधेछे, अढार प्रकारना तालथी सारुं गायन करेछे सुंदर गम्तवाळी सभामां खरादिल्लथी नोकरी करनार चाकरो विनय पुर्वक उभाछे अने सभासदो परस्पर प्रेमनी वातो अने काम संबंधी चरचा करी रह्याछे. ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

और बाग शिवकी सभा, उमा औरही बाग ॥
एक एक हूंतें सरस, नृत्य भेद रस राग ॥ १७ ॥

अर्थ. एक बागमां शंकरनी सभा अने बीजा बागमां पार्वतीजीनी सभा शोभी रहीछे, जेनी अंदर एक एकथी सरस, संगीतना भेदथी नृत्य तथा गायन थायछे. ॥ १७ ॥

॥ सोरठा ॥

आप आप रस रीत, बाग बाग प्रति देव चय ॥
नृत्य भेद संगीत, ठोर ठोर प्रति देखियत ॥ १८ ॥

अर्थ. पोतपोतानी रीत प्रमाणे बगीचे बगीचे देवताओनां टोळां बेठेलांछे जेमां संगीतना भेदथी नृत्य अने गायन ठेकाणे ठेकाणे जोवामां आवेछे. ॥ १८ ॥

॥ अथ छंद मौक्तिक दाम ॥

जहां तहां धात धरा भृत शृंग ॥ जहां तहां बोलत ब्रच्छ बिहंग ॥ जहां तहां भूत पिशाचन झुंड ॥ जहां तहां होम हुताशन कुंड ॥ जहां तहां छंद उचार ब्रतीत ॥ जहां तहां अप्सर नृत्य सगीत ॥ जहां तहां जूथ मिले त्रिदिवेश ॥ जहां तहां मंत्र उचार महेश ॥ जहां तहां आपहि आप समान ॥ जहां तहां सोहें सभा सुभ थान ॥ जहां तहां डोलत

देव बिमान ॥ जहां तहां गंध्रव साधत गान ॥ जहां तहां बाजत बीन म्रदंग ॥ जहां तहां किन्नर चंग उपंग ॥ जहां तहां बांसुरि सिंगि पिनाक ॥ जहां तहां डोरु बजैं डफ डाक ॥ जहां तहां कंबु सुझल्लर नद्द ॥ जहां तहां नोवत पंच सबद्द ॥ जहां तहां पूजन पंच प्रकार ॥ जहां तहां षोडशही उपचार ॥ जहां तहां बृंद बधू बिबुधेश ॥ जहां तहां किन्नर जच्छ सुवेस ॥ जहां तहां आसुरि नागनि नग्य ॥ सुपूजित त्रंबक अंबिक जग्य. ॥ १९ ॥

अर्थ. कैलासमां ठेकाणे ठेकाणे सोना रुपा विगेरे धातुथी बनेला पर्वतना शिखरो झळकी रह्यांछे, ठेकाणे ठेकाणे झाडो उपर पक्षीओ बोली रह्यांछे, ठेकाणे ठेकाणे भूत पीशाचना जुथ्थ फर्या करेछे, ठेकाणे ठेकाणे होम करवाना कुंडोमां अग्नि प्रज्वलित थई रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे वाक्य रचनाथी उच्चार करनाराओ छंदना उच्चार करी रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे अक्षरना उच्चारथी संगीत प्रमाणे नृत्य गायन थई रह्यांछे, ठेकाणे ठेकाणे देवताओनां टोळां एकठां थयांछे, ठेकाणे ठेकाणे शंकरना मंत्रनो उच्चार करी रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे पोते देवता तथा तेओना बराबरीया बेठाछे, ठेकाणे ठेकाणे सभाओ तथा सुंदर स्थळो शोभेछे, ठेकाणे ठेकाणे देवताओना वैमानो फरेछे, ठेकाणे ठेकाणे गंधर्वो गान साधी रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे वीणा अने म्रदंग वागी रह्यांछे, ठेकाणे ठेकाणे किन्नरो चंग उपंग नामना वाजित्रो वगाडी रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे वांसळीयो शिंगडीयो अने पिनाक वागी रह्यांछे, ठेकाणे ठेकाणे डमरु, डफ अने डाकलांओ वागेछे, ठेकाणे ठेकाणे शंख तथा झालरोना शद्ब थई रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे नोवत अने पंच शद्बनामनुं वाजित्र वागी रह्युंछे, ठेकाणे ठेकाणे पांच प्रकारथी महा पूजन थायछे, ठेकाणे ठेकाणे षोडशो पचार

थई रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे देवांगनाओ तथा देवताओ, किन्नर, यक्ष, असुरनी स्त्रीयो, नागनी स्त्रीयो अने पर्वतनी स्त्रीयो ए प्रमाणे सर्व जागरण करीने अंबिका सहित शंकरनी पूजा करेछे. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

डोर नटी कमचार गति, सारु कीर मन रंज ॥
गान तान कुवलयहुपैं, करत किलालप गुंज. ॥ २० ॥

अर्थ. दोर उपर चडी नटनी स्त्रीयो अजाएब खेल करी रहीओछे, मल्ल परस्पर कसरत करी मल्ल युधनी गति करी बतावेछे, पोपट अने मेनाओ पोताना मधुर स्वरथी सर्व देवोना मनने रंजन करेछे, गान तानना सुख-कारक स्वरो आनंद उपजावेछे अने भमराओ कमळ उपर गुंजारव शब्द करी सुखमां वधारो करेछे. ॥ २० ॥

धूम धाम दिशि दिशि लगी, मह निशि जाग्रन होत ॥
चहुं दिस लगी चिराक मनुं, अर्क कोटि उद्योत ॥२१॥

अर्थ. शिवरात्रीना जागरणने लिधे दिशाये दिशाये धाम धूम लागि रहीछे ने चारे तरफ प्रगटेली चीराक बत्तियो, कोटि सूर्य उग्या होय तेवो उजास आपेछे. ॥ २१ ॥

तवहि हर्षि गन गनवधु, हर हजूरमह लीन ॥
आज निशा हाजर रहन, निज मुख आयस दीन ॥२२॥

अर्थ. ते वखते हर्षित थई शंकरे स्त्रीयो सहित गणोने हजुरमां बो-लाव्या अने "आज आखी रात्री अहीं सर्व हाजर रहेजो" एवी श्रीमुखथी आज्ञा कही दिधी. ॥ २२ ॥

॥ अथ श्राप पतन प्रसंग ॥ दोहा ॥

एक भृत्य हर महत हित, नाम विचित्रानंद ॥

उत आवन चूक्यो सुरत, उभें भई मति मंद ॥ २३ ॥

अर्थ. जे हमेशां शिवजीनो हितकारी अने उंची पदवीने पामेलो एक विचित्रानंद नामे शिवजीनो गण सभामां आववानी वात चूकी गयो जेथी स्त्री पुरुष बन्नेनी बुद्धि मंद थई गई. ॥ २३ ॥

चित्रकला त्रिय हेत रति, मगन भयो मदपान ॥
बस बिलास चूक्यो सुरति, हर हजूरकी जांन ॥ २४ ॥

अर्थ. पोतानी प्राणप्यारी चित्रकळा नामनी स्त्रीना स्नेहने लीधे मद्यपान करी रति क्रीडामां मगन थयो अने विषय विलासमां वश थवाथी शंकरनी हजुरमां हाजर थवानी याद चूकी गयो. ॥ २४ ॥

॥ छपय ॥

उहीं बखतमहि उग्र, याद उनहीकौं कीनौ ॥
करि किंकर दिशि दृष्टि, नांउ विचित्रानंद लीनौ ॥
उनहींसें रिपुभाव, उतें बिकटानंद ठाढे ॥
सुनत ईश उच्चार, मोद मनमैं अति बाढे ॥
अनुमान समय कीनी अरज, महाराज वह है नहीं ॥
तिय चित्रकला रतिसें रसिक, मगन महारस मेंनहीं. २५

अर्थ. एवा वखतमां शंकरे एनेज याद कर्यो अने जे तरफ किंकरो बेठेला हता ते तरफ द्रष्टी करीने विचित्रानंदनुं नाम लीधुं, ए वखते विचित्रानंदनी साथे शत्रुभाव राखनार विकटानंद नामनो गण पासे उभो हतो तेथी शंकरना वचन सांभळतांज तेना मनमां अति हर्ष वध्यो अने अनुमानथी समय विचारी अरज करी के हे? महाराज, ए विचित्रानंदतो अहीं हाजर नथी; ते पोतानी स्त्री चित्रकळानी क्रीडामां रसिक थई कामदेवना रंग रसमां मग्न थएलछे. ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

विकटानंदकी बाँनि सुनि, कछुक छोह चित धार ॥
सुनत सभा सामीप जन, करयो ईश उच्चार. ॥ २६ ॥

अर्थ. आवां विकटानंदना वचन सांभळीने मनमां जरा रीस लावी सर्व सभासदो तथा सभानी आसपासना लोको सांभळे एवी रीते महादेवे निचेप्रमाणे वचन कह्युं. ॥ २६ ॥

उनकौं आजहिकी निशा, सुख संयोग सनेह ॥
प्रातहुतें वहु काल लगि, पहैं ब्रहैं दुख देह. ॥ २७ ॥

अर्थ. "ए स्त्री पुरुषने आजनी रात्रीतो स्नेह संयोगना सुखमां जशे पण प्रातःकाळथी घणाक काळसुधी तेओ विरह दुःखने जाते भोगवशे." ॥ २७ ॥

॥ चोपाई ॥

सुनत एह शिवकी मुख बानि॥ सभा सकल करुना मन आनि॥ महादेव मनमैं मुरझाये ॥ कहा प्रसंग विकटानंद लाये ॥ विकटानंद मोद मन बाध्यो ॥ सहज आपको कारज साध्यो ॥ एक एक प्रति उचरत बानी ॥ जित तित उकति आपकी जानी॥ उमा दासि पुष्पावति प्यारी॥ चित्रकलासैं अति हितकारी॥ वह सुनि वात महा दुख पाई॥ चित्रकलाके निलय सिधाई ॥ जाय झरोखनके तर टेरी ॥ एहो भटु अरज सुन मेरी ॥ चित्रकला बानी सुनि बोली ॥ अंदर लई देहरी खोली ॥ २८ ॥

अर्थ. आवी शंकरना मुखथी वाणी सांभळी सर्व सभाना मनमां दया उत्पन्न थई तेमज म्होटा म्होटा देवो मनमां खेद पामीने केहेवा

लाग्या के जुवोने? विकटानंद केवो प्रसंग लाव्योछे. ए वखते विकटानंदना मनमां हर्ष वध्यो अने सहजवारमां पोतानुं काम साधी लीधुं, आ प्रसंगसंबंधी सर्व मांहोमांहे वातु करवा लाग्या, ज्यांहां जोईए त्यांहां श्राप संबंधी चरचा चाली रहीछे, ते समये जेने चित्रकळा साथे स्नेह अने साहेलीनो संबंधछे, एवी पार्वतिने अति प्यारी, पुष्पावति नामनी दासी आ वात सांभळतांज म्होटुं दुःख पामीने तत्काळ चित्रकळाने घेर जई पहोची. झरोखानी निचे आवी ने उभी रही अने कह्युं जे हे? बाइ, कमाड उघाड अने म्हारी अरज सांभळ? पुष्पावतिना वचन सांभळीने चित्रकळा उभी थई अने दरवज्जानुं बार उघाडी तेने अंदर लीधी. ॥ २८ ॥

॥ सोरठा ॥

चित्रकला पति दोय ॥ बिबस बारुनी रस बनें ॥
बूझन लागे सोय ॥ कहासु आये आप इत ॥ २९ ॥

अर्थ. मदिराना रसथी परवश थएल चित्रकळा तथा तेनो पति विचित्रानंद ए बन्ने जण जागृत थईने पुछवा लाग्यां के हे? पुष्पावति, केम अहीं आव्यां अने शुंकामछे ते कहो. ॥ २९ ॥

॥ अथ छंद उद्धोर ॥

पुष्पावती बोल्यो चाइ ॥ एते बीच गल गहि राइ ॥
नैनां बार लागी धार ॥ कीनी नीठही उच्चार ॥
दीनो ईश उच्छव याद ॥ भाष्यो श्रापको संवाद ॥
लागी बाँनि चेरी कान ॥ भूमी परैं ज्यौं बिनु प्रान ॥
होय सचेत बूझ्यो फेर॥ बहु पछिताय तिनही बेर. ॥ ३० ॥

अर्थ. पुष्पावति बोलवा जायछे एटलामां ते शोकने लीधे गदगद कंठे थई गई, तेमज आंख्योमांथी आंसुनी धारा चालवा लागी, मांडमांड

बोलीने शिवना उच्छवनी याद आपी तेमज श्राप थयानी आदिथी ते अंतसुधी वीना कही संभळावी. पुष्पावतिनां वचन काने पडतांज स्त्री पुरुष बन्ने प्राण विनाना मुडदां होयनै? तेम जमीन उपर पडी गयां, वळी स-सचेत थई घणीज दीलगीरीनी साथ बीजीवार पुछवा लाग्यां. ॥ ३० ॥

॥ पुष्पावती प्रति गनदंपत्युक्त ॥ दोहा ॥

सुर दंपति यौं उच्चरत, सुनि पुष्पावति सोय ॥
श्रीशंकरको श्राप हुव, क्यौंसु निवारन होय ॥ ३१ ॥

अर्थ. पुष्पावतिनां श्राप संबंधी वचन सांभळीने स्त्री पुरुष बन्ने कहेछे के हे? पुष्पावति, शंकरनो श्राप थयो ते कये प्रकारे निवारण थाय. ३१

॥ अथ पुष्पावत्युक्त प्रत्युत्तर ॥ दोहा ॥

तव पुष्पावति यौं कहत, औरन कछू उपाय ॥
मिटैं श्रापकों ताप सब, उमा अराधो जाय ॥ ३२ ॥

अर्थ. त्यारे पुष्पावती केहेवा लागी जे एनो बीजो तो कोई उपाय नथी; पण तमे जईने जो उमयाजीनुं आराधन करो तो श्रापथी थएल सर्व संताप मटे. ॥ ३२ ॥

गये तहां गन गन बधू, जहां क्रपर्दी नारि ॥
पद वंदन करिकें प्रथम, अस्तुति करी उचारि. ॥३३॥

अर्थ. ज्यांहां शंकरनी स्त्री पार्वति सभामां वेठांछे त्यांहां विचित्रानंद तथा तेनी स्त्री चित्रकळा बन्ने गयां अने प्रथम चरणारविंदनुं वंदन करी दीनताथी स्तुति करवा लाग्यां. ॥ ३३ ॥

॥ अथ उमास्तुति ॥ सवैया ॥

सोइ वडो सवतें जगमैं नर, उग्र अद्रिष्ट उहि जग पाया॥
वाक्य विसारद नारदसो शुक, शारदके पति देखि सराया

जो सुलतानि चहैं मनमें तो, सोई छिनमैं सुलतान कहाया॥
व्हैं भ्रतपें जगमातु कृपा जुत, तेरि कटाच्छ हमाउकी छांया.

अर्थ. हे? जगन्मात, जे भक्तना उपर तारां कृपा युक्त कटाक्षछे तेज आखी दुनीयामां सौथी मोटोछे अने जगतमां उग्र प्रारब्धने पाम्यो तेज गणायछे, वाक्य रचनामां कुशळ नारद, शुकदेव, मेघना पति इंद्र विगेरे देवो पण तुंने देखी स्तुति पुर्वक वखाण करेछे, जे भक्त पोताना मनमां बादशाहीनी चाहना करेछे तो क्षणमात्रमां पोताने बादशाह केवरावेछे, वास्ते हे? मात, तारां कटाक्ष *हमाउ पक्षीनी छांया जेवांछे. ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

मात सुद्रष्टि प्रतापतें, मिटें जु अघ दुख ओघ ॥
सुख संपति धृति संपजैं, आपें बचन अमोघ. ॥ ३५ ॥

अर्थ. हे? मातुश्री, तारी कृपा द्रष्टीना प्रतापथी पाप अने दुःखना ओघ मटेछे अने सुख, समृद्धि, धारणा, संप, अमोघ वचन रचना, (कविता शक्ति) ए सर्व वधेछे. ॥ ३५ ॥

हमपें श्री महाराज हर, कही आपकी बान ॥
माता तुमतें होयहें, मुसकलही आसान. ॥ ३६ ॥

अर्थ. अमारा उपर महाराजा महादेवजीए आपनी वाणी कहीछे ते हे? मातुश्री, मुशकलछे पण तमाराथी आसान थशे. ॥ ३६ ॥

॥ उमाउक्ति ॥ सोरठा ॥

तुमपैं परी जु चूक, अचल चले नहिं हर बचन, ॥
करिहौं अरज अचूक, मैं तुम कारन जायकें. ॥ ३७ ॥

---

* जे माणसने माथे हमाउ पक्षीनी छांया पडेछे तेने त्रण घडी, त्रण पहोर, अथवा त्रण दिवसमां राज्य मळेछे.

अर्थ. पार्वति कहेछे, तमे मोटी भूल खाधीछे अने शंकरना वचनतो फरे नहीं एवां अचळछे, तोपण हुं तमारे वास्ते तेमनी हजुरमां जई अवश्य अरज करींश. ॥ ३७ ॥

॥ छप्पय ॥

सुनि गन दंपति अरज, उमा करुना चित लाये ॥
सुख आसन आरोहि, जहां हर तहां सिधाये ॥
करी अरज कर जोरि, आपकों एह न उच्चित ॥
भलो बुरो निज दास, कहो कितियक इनकी मत ॥
यह चूक दंड लायक तऊ, सुनहुं बिनय असरन सरन ॥
भव एक मनुज बिरहा भुगति, फिर प्रापति व्हैं तुम चरन.॥

अर्थ. विचित्रानंद तथा तेनी स्त्री चित्रकळा ए बन्नेनी दीलगीरी भरेली अरज सांभळीने पार्वति पोताना मनमां दया लावी पालखीमां बेसी ज्यांहां महादेवजी विराजेलाछे त्यांहां पधार्यां, अने बे हाथ जोडी अरज करीने कह्युं के हे? महाराज, आ गणने श्राप दीधो ते आपने घटारत नथी, सारो नरसो पण पोतानो दासछे, अने कहो जे एनी बुद्धि ते केटलीक होय? चूक करी तेथी दंडने लायकछे तोपण हे? अशरणना शरण, विनय पुर्वक म्हारां वचन सांभळो. एक जन्म पर्यंत मनुष्य लोकमां वियोगनुं दुःख भोगवी फरीने तमारा चरणने प्राप्त थाय एवी रीते कृपा करी श्रापनुं निवारण करवुं ए आपने घटितछे. ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

तुम फुरमायो काल बहु, सो अब करियैं माफ ॥
याको सुच्छम कालमैं, होय निवारन श्राप. ॥ ३९ ॥

अर्थ हे? महाराज, तमे वियोग दुःख भोगववानो घणोक काळ कह्यो

ते हवे माफ करो अने हवे थोडा काळमां तेना श्रापनुं निवारण थाय एवी कृपा करो. ॥ ३९ ॥

॥ अथ शिवोक्त दोहा ॥

उमया करुना मय निरखि, हरष भयो तिहुनैंन ॥
आवैंगे तुम ल्यायेतें, यौं हर जंपे बैंन. ॥ ४० ॥

अर्थ. पार्वतिने करुणा मय जोइने त्रण नेत्रवाळा महादेवजीने हर्ष थयो, तेथी "हे? गिरिजा, तमारा लाववाथी थोडा काळमां तेओ अहीं आवशे" एवुं वचन श्रीमुखे कह्युं. ॥ ४० ॥

॥ चोपाई ॥

श्री उमया निज थानक आये ॥ सकल कथा गनकौं समुझाये ॥ बीती निशा प्रात दरसाये ॥ सकल सुरासुर धाम सिधाये ॥ गन गनात्रिय सुर देहसु छंडे ॥ मनुज लोक अवतार सु मंडे ॥ पुष्पावती प्रेम तस बंधी ॥ मनुज देह उन संग निमंधी ॥ ४१ ॥

अर्थ. त्यार पछी उमयाजी पोतानी सभाने स्थळे आव्यां अने त्यांहांनुं सघळुं वृत्तांत गणने कही संभळाव्युं, एटलामां तो रात्री वीती गइ अने सवार थयुं एटले देव असुरो विगेरे सर्वे पोत पोताने स्थानके गया, गण अने ते गणनी स्त्री देवनां शरीर छोडीने मनुष्य लोकमां पडि अवतार पाम्यां, चित्रकळानी सखी पुष्पावति ते पण तेना प्रेमना बंधनने लीधे देव देह छोडी तेनी साथे मृत्युलोकमां आवी. ॥ ४१ ॥

॥ अथ यथासंख्यालंकार पुष्पावत्युक्त चतुर्विधानि ॥

॥ प्रेम द्रढाव ॥ सवैया ॥

भ्रंग पतंग कुरंग भुजंगम, कंज शिखा सुर पुंगिन लैंहें ॥

मोर पपीह चकोर सुपंकज, घोर वृषा शशि सूर चहेहें ॥
हारन मीन मराल जुराफहि, काष्ठ जलं सर जोरि जुरेहें ॥
देहकुं छेह दहें इतनें परि, नेहकुं छेह प्रबीन न देहें. ॥ ४२ ॥

अर्थ. भमरो, पतंग, मृग, अने सर्प तेओ अनुक्रमे कमळ, दीपक, गायन, अने मोरली एओमां बंधन पामेछे तोपण प्रेमने लीधे तेनो त्याग करता नथी, तेमज मोर, बपैयो, चकोर, अने कमळ एओ पण अनुक्रमे मेघनी गर्जना, वरसाद, चंद्र, अने सूर्य एओने प्रेमथी इच्छेछे, वळी *हारल, माछलुं, हंस, अने †जुराफ तेओ काष्ठ, पाणी, मानसरोवर, अने जोडी एओनी साथे स्नेहथी जोडाइ रहेछे अने तेनो वियोग थाय तो प्राण तजेछे, माटे जे चतुरछे तेओ पोताना देहने छोडीदे पण स्नेहनो भंग करता नथी. ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

पशु पंछी सब प्रेम बस, तजत आपको प्रान, ॥

---

* हारल नामना पक्षीनुं बच्चुं ज्यारे मोटुं थइ पोताना माळामांथी उडेछे त्यारे, माळामानो लाकडानो कटको पगमां लेइने उडेछे ते कटकाने पोतानी आखी जींदगानी सुधी छोडतुं नथी अने तेम करवाथी कदी ते लाकडानो कटको झाडमां अटकी रहेछे तो तेथी तडफडीने मरेछे पण लीधेला लाकडाने छोडतुं नथी.

† जुराफ नामना पक्षीनुं जोडुं साथे जोडाएलुं होयछे, ते एवी रीते के तेना एक एक पगवडे नर अने मादा बन्नेए आंकडा भीडेला होयछे, अने तेओ साथे रहीने अर्धा दिवसमां चारो तथा अर्धा दिवसमां सुकेलां लाकडाना कटका भेळा करेछे, एम करतां ज्यारे तेनी बार वर्षनी उम्मर थायछे त्यारे तेने काम प्रगटेछे एटले जोडीथी छुटी विषय करवासारु भेळां करेलां लाकडा माथे बेय साथे बेसेछे एटले तेनुं वीर्य ते लाकडा माथे पडेछे, तेटलामां जोडीथी जुदा पडवाने लीधे मनमां वियोग थायछे तेथी खेद पामी मरवानी चाहना करेछे त्यांतो इश्वरी कुदरतने लीधेज ते वीर्यमां एवो चमत्कारछे के जेवुं पडेछे तेटली वारमांज लाकडां सळगी उठेछे तेथी बेय बळी मरेछे. तेना बळी मरवाथी थएलो राखनो ढेर जामी रहेछे. ज्यारे बार वर्ष थायछे त्यारे तेमांथी जोडी थएल तेनां बच्चां नीकळेछे.

धिक तिहि बिछुरे नां मरैं, तजी देह यह जान. ॥४३॥

अर्थ. पशु पक्षी सर्व प्रेमने वश्यछे अने प्रेम वास्ते पोतानां प्राण तजेछे, पण तेनेज धिःकारछे के जेओ, परस्पर लागेला प्रेमनो वियोग थवाथी प्राणने तजता नथी. ॥ ४३ ॥

॥ गाहा ॥

उच्छव हर कैलासं ॥ दंपति मिलन सुरा सुर बृंदं, ॥
गन शंकर मुख श्रापं ॥ चत्र प्रवीन सागरो लहरं. ४४

अर्थ. शंकरना कैलासमां शिवरात्रिनो उच्छव, अने तेमां सुर, असुर, विगेरे देवताओनो स्त्रियो सहित मेळो, ते प्रसंगमां विचित्रानंदने थएलो शंकरनो श्राप ए विगेरे जेमां वर्णनछे एवी आ प्रवीणसागरनी चोथी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ ४४ ॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे कैलास महोच्छव बर्ननं श्राप पतन नाम चतुर्थ लहरी समाप्ता. ॥ ४ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां चतुर्थ स्तरंगः समाप्तः

॥ अथ प्रेमाभिधान कथन ॥ छप्पय ॥

स्नेह राग अनुराग, रक्त आरक्त आसकत ॥
प्रीत लगन मन मिलन, प्रनय लय साच कहत हित॥
चित बंधन इक चित्त, निरंतर ध्यान बिनांतर ॥
सुखद अरू संतोष, प्रगट ह्वै चाह परस्पर ॥
मेलाप मेल मन मान पुनि, उभै एक अरुझन अहिट ॥
बंधान अनूंसंधान इह, प्रेम नाम जानहु प्रगट ॥ १ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त ॥ तरंग शिखावंध ॥ सवैया चंद्रेव ॥

भाषा ग्रंथ आगां डग मग पग, भरतो निरख्यो अनहद भाति. ॥ एम गणी रणमाल सुकवियें, संत धरी प्रभणी शुभ ख्याति. ॥ प्रगट प्रेम अभिधान छेटनो, वर्णव करतां विध विध-पेरच. ॥ विगत जरा भूगोळ बतावी, पंच प्रवीन सागरें लेहेरच. ॥ ६ ॥

अर्थ. प्रेमना नाम कहेछे स्नेह, राग, अनुराग, रक्त, आरक्त, आसक्त, प्रीति, लगन, मनमीलन, प्रणय, लय, साच, हित, चित्तबंधन, एकचित्त, निरंतरध्यान, वीनअंतर, सुखद, संतोष, प्रत्यक्ष एक बीजानुं चाहवुं, मिलाप, मेळ, मनमान, बेयनी एकता, अरुझन, अहिट, बंधाण, अनुसंधान एवी रीते प्रेमना नाम प्रसिद्ध जाणवां. ॥ १ ॥

॥ अथ अनुक्रम दोष निवारन ॥ दोहा ॥

अलंकार संगीत रस, हाव भाव छंद होय ॥
याको अनुक्रम नां ग्रह्यो, समय कहेहें सोय ॥ २ ॥

अर्थ. अलंकार, संगीत, रस, हाव, भाव, छंद, एओनो अनुक्रम लीधो नथी, पण ज्यांहां जेनो वखत त्यांहां तेने कह्येलछे. ॥ २ ॥

कथाजु प्रेम प्रसंगकी, जथाजोग सब बात ॥
ज्यों धर गिरि नद निर्झरन, सागर सबैं समात ॥ ३ ॥

अर्थ. जेम पृथ्वी, पर्वतो, नदीओ अने निर्झरणां ए सर्व सागरमां समाइ जायछे तेम आ प्रेम प्रसंगनी कथामां जे ठेकाणे जेवो प्रसंग ते ठेकाणे ते प्रसंगने संपूर्ण रीते वर्णवेलछे. ॥ ३ ॥

॥ अथ द्रष्टांता लंकार ॥ सवैया ॥

रंग मिल्यो वह रूप भयो रहें, पैं सवहींमें कहावत पानी॥
भारति भेद अनेक भये परि, अंक उचार अकारकि बानी ॥
मत्तहि मत्त लगैं मुनि सोधत, बोध सबें करतार कहानी ॥
भूपन भाव दशा रस भाषत, सागर त्यौंहि सनेह समानी. ४

अर्थ. जेम पाणीमां जूदी जूदी जातना रंग मळवाथी पाणीनुं रूप वदलेछे पण ते सघळुं पाणीज कहेवायछे, जेम वाणीना अनेक भेद थायछे पण एक अकारना उच्चारथीज सर्व वर्ण अने वाक्योनो उच्चार थायछे, जेम जूदा जूदा मतथी मुनियो इश्वर संबंधी शोध करेछे पण सघळी वावतमां इश्वरनोज बोधछे, तेम अलंकार, दशा, भाव, रस ए सर्व, सागर कहेछे के स्नेहनी अंदर समाई जायछे. ॥ ४ ॥

॥ अथ चौद लोकाभिधान अधिष्ठाता नाम बर्नन ॥

॥ *यथाक्रमालंकार ॥ छंद मरहट्ठा ॥

सब जगकी धरनी, वह कवि बरनी, हे शकती आधार ॥
तिनपैं बाराहं, सब इल साहं, बडरदहैं बिस्तार ॥
उनहीं पर कच्छं, धरिय सुलच्छं, पीठहुके परमान ॥
उन ऊरध लग्गं, श्वेत पनग्गं, शेष सहस फन जान ॥
पहिले पातालं, बासुकि व्यालं, सुजकहि राजसुहात ॥
तिनपैं दूजो दल, कहत रसातल, राजे कवचनिवात ॥
तृतियेंसु महातल, कद्रु सुतन कुल, काली अधिपति तास ॥
कहि तुर्य तलातल, बसत असुरकुल, महिदानव सुनिवास ॥
सुतलं सुभ भनियं, पंचम गनियं, नृपति जहां बलिराज ॥
बितलं सुबिसेषं, षष्ठम लेखं, शिव हटकेश्वर साज ॥
अतलं सप्तम कहि, बलिदानव रहि, राज करत शुभ रूप ॥
अठमं भनि भूरं, मनुज सपूरं, वैवस्वत मनु भूप ॥
नवमं भुवरं भनि, जहां शिवके गन, वीरभद्र मनिचंद्र ॥
दशमं सुरलोकं, सकल अशोकं, सुर संजुत रहे इंद्र ॥

* जे वर्णनमां घटित आगळ पाछळ सरखो अनुक्रम आवे तेनुं नाम यथा क्रमालंकार.

महरं अग्यारम, साजति संयम, राजत ऋषिय अनेक ॥
जनलोक सुबारम, जिह ब्रह्मचारम, साजत सकल बिबेक ॥
तप लोक त्रयोदश, वानपुरष बस, नर नारी धरि नेह ॥
सतलोक निवासी, बसत सन्यासी, लोक चतुर्दश एह ॥
तिनके पर धाता, जगत बिख्याता, सृष्टि उपावन हार ॥
तिन पर हर धामं, अति अभिरामं, सकल लोक संहार ॥
पुनि बिष्नू थानं, पद निरवानं, पोषन सृष्टि प्रमान ॥
तिनपर परि ब्रह्मं, निगम अगम्मं, पावत कोइ सुजान ॥५॥

अर्थ. सर्व जगतना आधार रूप आ पृथ्वी इश्वर शक्तिने आधारे रहीछे, अने ते शक्तिने आधारे सर्व पृथ्वीनो उद्धार करनार; जेनी दाढो विस्तार वाळीछे, एवो वराह रह्योछे. ते वराहना उपर काचबो पीठनो विस्तार करी लक्ष दई रह्योछे, ते काचबा उपर गौर वर्णवाळो, हजार फणाने धरनार शेषनाग रह्योछे, ते शेषनाग उपर जे विवरछे तेने पाताळ कहेछे अने ते शुभ स्थळमां नाग वसेछे, त्यांहां वासुकी नामनो नाग राज्य करेछे. तेना उपर जे बिजुं दळछे तेने रसातळ कहेछे, अने त्यांहां निवातकवच नामना दैत्यो वसेछे, अने त्यांहां सत्ता पण तेओनीजछे. ते उपर त्रीजुं महातळछे, त्यांहां कद्रुना पुत्रोनुं कुळ वसेछे, अने ते लोकनो काळिनाग अधिपतिछे. ते ऊपर चोथुं तळातळछे, त्यांहां असुर कुळ वसेछे, अने तेनो अधिपति मयदानव नाममो दैत्यछे. ते उपर पांचमुं सुतळछे, त्यांहां बळिराजा राज्य करेछे. तेना उपर छठुं वितळछे, त्यांहां हाटकेश्वर नामना महा रुद्र विराजेछे. तेउपर सातमुं अतळछे, त्यांहां मयनो पुत्र बळ राजा राज्य करेछे. एवी रीते सात पाताळ कह्यां. आठमा ते उपरना आ भुगोळने भुलोक कहेछे, अने ते मनुष्य विगेरे प्राणीयोनी वस्तीथी भरपूरछे, त्यांहां वैवस्वत नामना मनु राज्य करेछे. तेना उपर नवमो भुवर लोकछे त्यांहां

शिवना गणो वसेछे, तेमज वीरभद्र मणिभद्र अेओनुं मुख्य पणुंछे. तेना उपर दशमो सुर लोकछे अने ते अशोक स्थळमां सर्व देवताए सहित इंद्र वसेछे. तेना उपर अग्यारमो महर्लोकछे, तेमां संयम (मन वश्य राखनार) करनार अनेक ऋषीओ वसेछे. तेना उपर बारमो जन लोकछे तेमां सर्व विवेकने जाणनार, इंद्रिओने जितनार, अनेक ब्रह्मचारीओ वसेछे. ते उपर तेरमो तप लोकछे त्यांहां महा तपस्वी, इंद्रियोनो निग्रह करनारा वानप्रस्थो स्नेहथी स्त्रीयो साथे वसेछे. तेना उपर चउदमो सत्य लोकछे, तेमां महा त्यागी सन्यासीयो वसेछे. ए रीते चउद लोकनी व्यवस्था कही. हवे तेना उपर ब्रह्म लोकछे त्यांहां, जगतमां प्रख्यात, सृष्टि उत्पन्न करनार ब्रह्मा रहेछे. तेना उपर अति शोभायमान महादेवनो लोकछे त्यांहां सर्व सृष्टीनो संहार करनार महारुद्र वसेछे, तेना उपर विष्नु लोकछे, जेने लोको निर्वाण पद कहेछे, तेमां सर्व सृष्टिनुं पोषण करनार विष्नु वसेछे. तेना उपर वेदथी पण जाणी न सकाय एवा परब्रह्म व्यापी रह्याछे, ए कैवल्यरूप ब्रह्मने कोई ज्ञानवान पुरुषो पामेछे. ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

चौद लोकको यह कह्यो, सुच्छम भेद बिचार ॥
भूर लोककी सकल अब, कहूं बात बिस्तार ॥ ६ ॥

अर्थ. आ सूक्ष्म भेदथी चउद लोकनो विस्तार कह्यो, हवे भूलोकनी सघळी बिना बिस्तार पूर्वक कहुंछुं. ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

प्रथी कोटि पंचास, जुगत जोजन सब जानहु ॥
मध्य मेरु मंडान, प्रगट तिहि कहूं प्रमानहु ॥
जोजन लच्छ सुजान, यहें दीरघ धर ऊपर ॥
वाके शृंग बिसेष, बसत गंध्रव सुर किन्नर ॥

वत्तीस सहस जोजन प्रथुल, सत्त धातु गिर राज सिर ॥
सोले हजार जोजन सकल, प्रथुल धरा परि एह पर. ७

अर्थ. आ सघळी पृथ्वीनो पंचास करोड योजननो विस्तारछे एम युक्तीथी जाणवुं, तेना मध्ये पृथ्वीने आकर्षण करनार, अने आधार रूप जे मेरु तेनुं प्रमाण कहुंछुं, आ मेरु पर्वतनी लंबाई पृथ्वीथी शिखर पर्यंत एक लाख योजननीछे, तेनां शिखर उपर देव, गंधर्व अने किन्नर लोको वसेछे, तेना उपला भागनी पहोळाइ वत्रीश हजार योजननीछे अने तेमां सात धातुओनी खांणोछे, पृथ्वी उपर तेना मूळ भागनो विस्तार सघळो मळीने सोळ हजार योजननोछे. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

मध्य मेरु आवर्त्तहैं, इक इक द्वीप समंद, ॥
जिहि प्रमान अभिधानजुत, कह्योसु कहें कविंद. ॥८॥

अर्थ. वच्चेना मेरु पर्वतनी चारे तरफ फरतो एकेको द्विप अने एकेको समुद्र ए रीते सात द्विप तथा सात समुद्र विंटाई रह्याछे, तेओनुं नामे सहित प्रमाण जे म्होटा कवीओ कही गयाछे ते हुं कहुंछुं .॥ ८ ॥

॥ अथ छंद मनहंस ॥

लख एक जोजन जंबु, द्वीप सुजानियें ॥
पुनि द्विगुन तापर क्षार, सिंधु बखानियें ॥
पलवक्ष द्वीप सुद्विगुन, मान विचारियें ॥
रसइक्षु सागर द्वीगुनं फिर धारियें ॥
कुशद्वीप जोजन द्वीगुनं सुप्रमानसें ॥
दधि वारुनी तिन द्वीगुन, भाषत वांनसें ॥
कहि क्रौंच द्वीप सुताहि, द्वीगुन लच्छहें ॥

घृत सिंधु तापर द्वीगुनं परतच्छहें ॥
गुन शाक द्वीप सुफेर, द्वीगुन जोजनं ॥
अकुपार दधि तापार, जोजन द्वीगुनं ॥
द्विगुनो सुतातें द्वीप, शालमली कहे ॥
पुनि द्विगुन तासें मान, क्षीर समंदहे ॥
पुनि द्विगुन तिनसें द्वीप, पुष्कर सो कह्यो ॥
शुध नीर सिंधु प्रमान, द्वीगुन हीं रह्यो ॥
तिन ऊपरें मरियाद, गिरि आवर्त्तहें ॥
फिर आद्रस धर हेंम, आभा धर्त्तहें ॥
दिगपाल गज ता ऊपरें ठाढे रहें ॥
तिन पार कोउ नांलहें, आगें शून्यहें. ॥ ९ ॥

अर्थ. एक लाख योजनना विस्तारवाळो आ जंबु द्वीपछे, तेने फरतो क्षार समुद्र, (खारो समुद्र) बमणा विस्तारवाळो विंटाई रह्योछे, ते क्षार समुद्रथी बमणा विस्तारवाळो प्लक्ष द्वीपछे, तेमज ते प्लक्ष द्वीपथी बमणो इक्षुरस (शेरडीना रसनो) समुद्र तेने फरतो रह्योछे, ते इक्षुरस समुद्रथी बमणुं कुश द्वीपनुं मान कह्युंछे, ते कुश द्वीपथी बमणो तेने फरतो वारुणी (दारुनो) समुद्रछे एम विद्वानो कहेछे, ते समुद्रथी बमणा विस्तारवाळो क्रौंच द्वीपछे, ते क्रौंच द्वीपने फरतो ते द्वीपथी बमणो घृत (घीनो) समुद्र प्रसिद्धछे, ते समुद्रथी बमणा विस्तारवाळो शाक द्वीपछे, ते शाक द्वीपने फरतो ते द्वीपथी बमणा विस्तारवाळो दधि (दहींनो) समुद्रछे, ते समुद्रथी बमणो शाल्मली द्वीप कह्योछे, तेमज ते शाल्मली द्वीपथी बमणा मानवाळो क्षिर (दूधनो) समुद्रछे, ते समुद्रथी बमणा विस्तारवाळो पुष्कर नामनो द्वीप कह्योछे, ते पुष्कर द्वीपने फरतो तेथी बमणो शुद्धनीर (मीठा पाणीनो) समुद्रछे, ते समुद्रने फरतो लोकालोक नामनो मर्यादागिरि

विंटाइ रह्योछे, त्यार पछी तेने फरती अरीसा जेवी चकचकित सोनानी पृथ्वीछे, तेनी छेवट दिग्पाळना गज पृथ्वीना छेडा आकर्षण करी उभा रह्याछे, अने ते पछी आगळ शुन्यछे तेनो पार कोई लेइ सकता नथी. ९

॥ अथ दिग् हस्तिनामानि ॥ दोहा ॥

ऐरावत पुंडरीक पुनि, वामन कुमुद सु नीक ॥
अंजन पुष्पसुदंत कहि, सार्वभौम सुप्रतीक. ॥ १० ॥

अर्थ. अष्ट दिग्गजोनां नाम निचे प्रमाणे. ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वभौम, अने सुप्रतीक. ॥ १० ॥

॥ अथ दिग् हस्तिनी नामानि ॥

अभ्रमु कपिला पिंगला, अनूपमा सु बखान ॥
ताम्रकर्नि शुभ्रदंति कहि, वाम अंजना जान. ॥ ११ ॥

अर्थ तेओनी स्त्रीयोना पण अभ्रमु, कपिला, पिंगळा, अनुपमा, ताम्रकर्णि, शुभ्रदंतिका, वामना, अने अंजना एवी रीते नामोछे. ॥ ११ ॥

अंत द्वीपके खंड द्वै, सप्त सप्त सर मान ॥
आदि जंबु नव खंड इह, कहुं ताके अभिधान.॥ १२ ॥

अर्थ. छेला पुष्कर नामना द्विपना बे खंडछे बाकीना प्लक्ष, कुश, क्रौंच, शाक, शाल्मली, ए पांच द्वीपोमां सात सात खंडोछे अने पेहेला आ जंबु द्वीपना नव खंडछे तेओनां नाम कहुंछुं. ॥ १२ ॥

मेरावृत जंबू सुमधि, हे अठ कुलगिरि बास ॥
वाहीतें अंतर परयो, नव खंड भये प्रकाश. ॥ १३ ॥

अर्थ. मेरुने विटाएला जंबु द्वीपमां मेरु विना आठ बिजा कुळगिरि एटले सरहदना पहाडोछे; ते पहाडना अंतरनी पृथ्वीना नव विभाग थायछे तेने अनुक्रमे नव खंड कहेछे. ॥ १३ ॥

॥ छप्पय ॥

मध्य इलावृत खंड, केतुमालह पूरव पर ॥
हिरन कुरू अरु रम्य, तीन एहीं दिश उत्तर ॥
भद्र खंड बारुनी, भरत किन्नर हरि दच्छन ॥
नवह खंड दिशि नाम, भेद यह कहत बिचच्छन ॥
तिन मध्य मुख्य जानहु भरत, जहां सकल शुभहें जगत॥
धन धान्य दान सनमान जुत, भोग जोग अरु हरि भगत.॥

अर्थ. ॥आ जंबु द्वीपमां वच्चे इलावृत नामनो खंडछे, तेनी पूर्व तरफ केतुमाळ नामनो खंडछे, तेनी उत्तरे हिरण्य, कुरु, रम्य ए त्रण खंडोछे, तेनी पश्चिम तरफ भद्राश्व नामनो खंडछे, दक्षिणे भरत, किन्नर अने हरी ए त्रण खंडोछे, ए रीते दिशाओना भेदथी नवे खंडोना नाम विचक्षण पुरुषो कहेछे, ते नवे खंडोमां भरतखंड मुख्यछे जेमां सर्व प्रकारनी वखाणवा लायक युक्तिछे, धन, धान्य, दान, सन्मान, भोग, जोग, विगेरे अनेक प्रकारना सुखथी भरपूरछे एटलुंज नहीं? ईश्वरना भक्तो पण त्यांहां वसेछे. ॥ १४ ॥

॥ गाहा ॥

सज्ञा प्रेमसु संख्या, चत्रदश लोकनाम अधिपतियं ॥
द्वीप खंड परमानं, पंच प्रवीन सागरो लहरं. ॥ १५ ॥

अर्थ. प्रेमना नामनी संख्या, चउदलोकना नाम, तथा तेना अधिपतीओ, द्वीपना खंडो, तथा तेनुं प्रमाण इत्यादि व्यवस्थावाळी आ प्रवीणसागरनी पांचमी लेहेर संपूर्ण. ॥ १५ ॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे प्रेमाभिधान कथने च भूगोल निर्णये पंचमा लहरी समाप्ता. ॥ ५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां पंचम स्तरंगः समाप्तः ॥५॥

॥ दोहा ॥

अब प्रबीन सागर कथा, धुरतें कहत बनाय ॥
देश नगर पितु तास कुल, सो सब देत सुनाय. ॥ १ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त स्तरंग शिखाबंध ॥ छंद मनहंस ॥

आ लेहेरमां शुभ मुलक नग्र सुनामछे, महिपाल भूप प्रदीप ग्रह सुत तामछे ॥
ग्रह जोग सागर जन्मते जन्माक्षरो, षटमे तरंग प्रसंग ए दिलमां धरो. ॥ ६ ॥

अर्थ. हवे प्रवीणसागरनी कथा प्रथमथी विस्तार पुर्वक कहुंछुं. देश, नगर, अने तेनुं कुळ ए सघळुं संभळावी आपुंछुं. ॥ १ ॥

॥ छंद चंचला ॥

चत्र शष्ठि संख्य देश, भर्त्तखंड मध्य पेख ॥ बानि बेष देखतं सुराष्ट्र देश हैं बिसेष॥निद्धि रिद्धिको सुधाम, है तहां जु नेह नग्र ॥ मान दान जान लच्छ, सुख्खहे तिहां समग्र॥ बारहें सहस्त्र गाम, साम नामतें अबीह ॥ कोस सातसें प्रमान, खग्ग बान आन कीह ॥ फोज एक लाखहें, हजार बीस पंच फेर ॥ जोध जुद्ध मंडिकें, उदंड शत्रु कीध जेर ॥ भोम काज आय आय, सेवहें अनेक भूप ॥ या बिधी प्रदीप भूप, चंद्र बंशमें अनूप॥ एक सत्त मत्त सो, उपंत द्वारपें गयंद ॥ मेघ ज्यौं गजंतहें, सहस्त्र दुंदभी अमंद ॥ देश देश देशपत्ति, शत्रुसो सदा डरंत॥ राम राजसो अभंग, राज नीतसें करंत. ॥ २ ॥

अर्थ. आ भरतखंडनी अंदर चोसठ देशछे, तेमां पण भाषण, पेहेरवेष अने सभ्यता विगेरे गुण जोतां सौराष्ट्र देश सहुथी चडीयातोछे, एटलुंज नहीं पण निधि (खज़ानो) रिद्धि (समृद्धि)ना एक स्थळ रूपछे, तेमां प्रदीप राजानी राजधानीनुं नेह नग्रनामे म्होटुं प्रख्यात शेहेरछे, जेमां दान, मान, ज्ञान, अने द्रव्यो पार्जनादि अनेक प्रकारनां सुखछे, ते राजानी सत्ता तळे बारहजार गामछे, ज्यांहांनी प्रजा नामांकित राजाना प्रतापथी निर्भयछे, तेमज ओरसचोरस सातसे गाउना अंतरमां समशेर बाहादुरीथी तथा बाणयुद्धनी कळाथी पोतानी आज्ञा प्रवर्त्तावीछे, ते राजाने एक लाख अने पचीशहजार संख्यानी फोजछे, जे फोजना शूरवीर युद्धाओथी राजाए म्होटा संग्रामो करी उन्मत्त शत्रुओने जेर कर्याछे, एटलुंज नहीं पण जेनी हजुरमां जमीनना वांधानो इनसाफ लेवा सारु अनेक देशना राजाओ आवी सेवा करेछे, एवी जातनी समृद्धिथी आ गुणवान प्रदीप राजा चंद्र वंशमां सर्वोत्तम अने प्रख्यातछे, जेने मद झरेछे एवा म्होटा, शोभायमान, एकसो हाथी तो जेना सभा मंडपना पासेना मेदानमां मेघनी पेठे गर्जना करी रह्याछे, तेमज दुंदभी विगेरे हजारो वाजित्र म्होटा अवाजथी वागेछे जेथी देशो देशना राजा तथा शत्रुओ हमेशां डरी रह्याछे, एवी रीते रामचंद्रजीनी पेठे अभंग राजनीतिथी राज्य करेछे. ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

यह प्रदीप जगमें प्रसिध, इहि बिधि राज अखंड ॥
मंडे सुजस महि मंडले, दंडे पिशुन उदंड. ॥ ३ ॥

अर्थ. जगत्प्रसिद्ध आ प्रदीप राजा एवी रीते अखंडित राज्य करेछे अने जेनो जस आखी पृथ्वीमां फेलाई दिशाना अंतसुधी पहोच्योछे, वळी आ राजा, चाडीया, उन्मत्त, खळ, अने ठगाइ करनार, लुच्चा लोकोने शिक्षा करी दंड आपेछे. ॥ ३ ॥

सो प्रदीप नृप गृह उदित, कुल मंडन सुकुमार ॥
जोइ विचित्रानंद भो, हर किंकर अवतार. ॥ ४ ॥

अर्थ. जे विचित्रानंद नामे शंकरनो गण हतो तेज अवतार लेईने आ प्रदीप राजाना कुळमां घरेणा रूप कुंवर थई उदय पाम्यो. ॥ ४ ॥

॥ छप्पय ॥

उदे होत नृप नंद, उदित आनंद सकल उर ॥
बजत दुंदुभी द्वार, सजत सिंगार ललन पुर ॥
गृह गृह मंगल चार, छंद बंदिन बिस्तारत ॥
पाय दान सनमान, शह्व जय जय उच्चारत ॥
द्विज वेद भेद संगीत नृत, ठोर ठोर सोभत सभा ॥
ध्वज धाम धाम कंचन कलश, पुर पुरंद मानहुं प्रभा. ५

अर्थ. राजाने घेर कुंवरनो उदय थवाथी सर्व प्रजाना हृदयमां आनंद उत्पन्न थयो, राजद्वारमां नोवत वागवा मांडी, तेने लीधे स्वरूपवान शेहेरनी स्त्रीयो तरेह तरेहना शृंगार सजवा लागीयो, घेर घेर मंगळ उच्चार थइ रह्याछे, भाट चारण तथा वंदिजनो छंद बोलवाथी राजाये आपेलां दान अने सनमानने पामी जय जय शह्वनो उच्चार करेछे, ब्राह्मणो वेद भणेछे, संगीतना भेदथी गावावाळाओ गान करी रह्याछे, तेमज नायकाओ नाच करी रहीछे, ठेकाणे ठेकाणे सभाओ शोभेछे, घेर घेर धजा सहित सूवर्णना कलश झळकी रह्याछे, आवी रीते उच्छव थवाथी ते शेहेर जाणें इंद्रपुरीज होयनै? एवुं शोभेछे. ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

वाही समय प्रदीप नृप, उर उमंग अति लाय ॥
कही गनक मनहंस प्रति, जातक ग्रह सुवनाय. ॥ ६ ॥

अर्थ. आवा आनंदना वखतमां प्रदीप राजा पोताना हृदयमां अति उमंग लावीनें मनहंस नामना जोशीने कह्युं के आ कुमारना जन्म गृह बनावी लावो. ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

भूत भविष चित लाय, ग्रह निर्नय कीनो गनक ॥
सो नृप सनमुख आय, बैठें तब बूझत बिभू. ॥ ७ ॥

अर्थ. भूत तथा भविष्यकाळना विचार चित्तमां लावीने जोशीए ग्रहनो निर्णय कर्यो, पछी ते राजानी पासे आवी बेठा तेटलामां प्रदीप राजाए पूछवा माड्युं. ॥ ७ ॥

अथ नृप वाक्य मनहंस गनक प्रति ॥ चोपाई ॥

अहो गनक मनहंस प्रबीने, जन्म कुंडली तुम ग्रह कीने ॥
कछु प्रकार करिकें बिस्तारो, जो बुझें सो अनुक्रम धारो ॥
राशि स्वामि कोनें सुकहाऊ, उच्च नींच अभिधान बताऊ ॥
मित्र शत्रु ग्रह भेदसु कैसें, क्रूर सौम्य कहो खेचर जैसें ॥
केंद्र त्रिकोन उपचय ए कोहे, भेद दृष्टि भाषो तुम जोहे ॥
द्वादश भाव कहा कहा देखें, जिन अदृष्ट जातक अवरेखें॥
किहि थानंक परे ग्रह कोहें, ताको सुफल बताओ जोहें ॥
भिन्न भिन्न एतो समुझाऊ, फुनि इनाम ले निलय सिधाऊ.८

अर्थ. ज्योतिष शास्त्रमां कुशळ, हे! मनहंस जोशी, तमे जे जन्म कुंडळीना ग्रहो कर्याछे तेनो थोडो एक खुलासो करी विस्तार कही बतावो? अने जे पूछीए तेनो अनुक्रम मनमां धारी जवाब आपो? बार राशीना स्वामी कया ग्रहोछे? ऊंच नींच केवी रीते थायछे ते कहो? ग्रहोमां परस्पर शत्रु मित्रनो भेद शुंछे ते कहो? क्रूर अने सौम्य जे ग्रहो होय ते

वतावो? केंद्र, त्रिकोण, अने उपचय, ए केम थायछे? तेमज दृष्टीनो जे भेद होय ते कही संभळावो? वळी वार भावमां शुं शुं जोवायछे? जेथी ज्योतिप शास्त्र अदृष्टनी परिक्षा करेछे, कया कया थानकमां, कया कया ग्रहो पडेलाछे? अने तेनां जेवां फळ होय तेवां वतावो? एटलां प्रश्नो जूदी जूदी रीते समजावो पछी इनाम लई घेर पधारो. ॥ ८ ॥

॥ अथ मनहंस गनक वाक्यं नृपप्रति ॥ दोहा ॥

तव पंडित यौं उच्चरियं, यह मत गनित समंद ॥
कहौं उक्ति संच्छेप करि, चित दे सुनो नरिंद. ॥ ९ ॥

अर्थ. त्यारे पंडित एम कहेछे के हे? राजेंद्र, आ गणित शास्त्रनो मत समुद्र जेवो अपारछे, माटे तेनुं वर्णन संक्षेपथी कहुंछुं ते चित्त दइने सांभळो? ॥ ९ ॥

॥ अथ पंडितोक्त लग्नस्वामी भेद ॥ छप्पय ॥

मेप भौम वृष शुक्र, मिथुन बुध कर्क चंद्र भनि ॥
सिंह रवी बुध कन्य, तुलाको स्वामि शुक्र गनि ॥
वृश्चिक कुज धन गुरू, मकर अरु कुंभ शनी कहि ॥
मीन स्वामि सुरगुरू, राशि स्वामी इह विधि लहि ॥
शुभ काज समय करियत समंध, ग्रहथानक गति बल लहें
बुध जन विचार यह विधि सबैं, कवि जातक प्रश्न सुकहें.

अर्थ. मेप राशीनो अधिपति मंगळ, वृषभनो शुक्र, मिथुननो बुध, कर्कनो चंद्र, सिंहनो सूर्य, कन्यानो बुध, तुळनो शुक्र, वृश्चिकनो मंगळ, धननो गुरु, मकर तथा कुंभनो शनी, अने मीननो वृहस्पति, एवी रीते राशीयोना स्वामिनुं यथा योग्य ग्रहण करीने शुभ काममां तथा संबंध करती वखत ग्रहनुं स्थान तथा तेनी गति प्रमाणे बळाबळ गृहण करेछे,

आवी रीते जे ज्योतिष शास्त्रनो विचार ते मनहंस कविए जातक प्रश्न करती वखते प्रदीप राजाने कह्यो. ॥ १० ॥

॥ अथ उच्च नीच भेद ॥ छंद तोमर ॥

रवि मेष उच्च सु जान ॥ शशि वृष सु उच्च पिछान ॥
धरनंद मकर सु उच्च ॥ बुध कन्य दीरघ सुच्च ॥
गुरु कर्क उच्च कहंत ॥ भृगु मीन उच्च रहंत ॥
तुल मंद उच्च बिचारि ॥ तमराज मिथुन सुनारि ॥
ग्रह नीच कहें अब तेह ॥ जंपे सु जोतिष जेह ॥
तुल तरनि नीच सुजोय ॥ अलि नीच निशिकर होय ॥
करकें सुभौम असिद्ध ॥ गत मीन बुद्ध निषिद्ध ॥
मकरें अमरगुरु नीच ॥ भृगु नीच कन्या बीच ॥
गत नीच मेष सु मंद ॥ धनको सुनीच निशिंद. ॥ ११ ॥

अर्थ. सूर्य मेष राशीना, चंद्र वृषभ राशीना, मंगळ मकर राशीना, बुध कन्या राशीना, गुरु कर्क राशीना, शुक्र मीन राशीना, शनि तूळ राशीना-अने राहु मिथुन ने कन्या राशीना उच्चजाणवा, हवे तेज ग्रहो नीचना ज्योतिप शास्त्रमां कहेलाछे ते कहुंछुं, सूर्य तूळ राशीना, चंद्रमा वृश्चिक राशीना, मंगळ कर्क राशीना, बुध मीन राशीना, गुरु मकर राशिना, शुक्र कन्या राशीना, शनैश्वर मेष राशीना अने राहु धन राशीना नीच जाणवा. ॥११॥

॥ अथ ग्रह मित्र शत्रु भेद ॥ दोहा ॥

शशि मंगल गुरु तीन ए, रवि के जानहु मित्रु ॥
शुक्र शनैश्वर सूरके, सदा कहतहें शत्रु. ॥ १२ ॥

अर्थ. चंद्रमा, मंगळ, अने गुरु ए त्रण ग्रहो सूर्यना मित्र जाणवा,

शुक्र, अने शनि ए बे हमेशां शत्रु जाणवा, तेमज बुध सम जाणवो. ॥ १२ ॥

दिनकर बुध द्वै चंद्रके, मित्र कहें सब कोय ॥
सब ग्रह और समानहें, कोउ शत्रु नहि होय. ॥ १३ ॥

अर्थ. सूर्य अने बुध ए बे ग्रह चंद्रना मित्रछे एम सर्व दैवज्ञो कहेछे, तेने कोई ग्रह शत्रु नथी अने बाकीना मंगळ, गुरु, शुक्र, अने शनैश्वर ए ग्रहो समानछे. ॥ १३ ॥

सुरगुरु सूर सु सोम त्रय, कुजके मित्र कहाय ॥
वैर भाव बुध एकसें, कहें जातक कविराय. ॥ १४ ॥

अर्थ. बृहस्पति, सूर्य अने चंद्र ए त्रण ग्रहो मंगळना मित्र कहेवाय छे, अने तेने एक बुद्धनी साथेज वैरभावछे, शुक्र अने शनैश्वर समानछे, ए रीते जातक शास्त्र जाणनारा कवियो कहेछे. ॥ १४ ॥

दिनकर भार्गव बुध सुहृद, शत्रु भाव शशि जान ॥
औरें समता भाव सब, यहें गनक अनुमान. ॥ १५ ॥

अर्थ. सूर्य अने शुक्र ए बे बुधना मित्रछे, चंद्रनी साथे शत्रु भावछे, मंगळ, गुरु अने शनि एओनी साथे सम भावछे एम ज्योतिष जाणनाराओए अनुमान करेलुंछे. ॥ १५ ॥

मंगल हंस हिमांशु त्रय, सखा शिखंडिज एह ॥
उशना बुध अरिहें उभैं, सदा हीन फल देह. ॥ १६ ॥

अर्थ. मंगळ, सूर्य, अने चंद्र ए त्रणे ग्रहो बृहस्पतिना मित्रछे, शुक्र तथा बुध ए बे शत्रुछे ते निरंतर माठुं फळ आपेछे, अने शनैश्वर समानछे. ॥ १६ ॥

शशिसुत शनि प्रिय शुक्रके, सरस भावकों देत ॥
सूर निशाकरसें सदा, याकों रहत अहेत. ॥ १७ ॥

अर्थ. बुध अने शनैश्वर ए बे शुक्रना मित्रछे ते सारा फळने आपेछे, सूर्य अने चंद्रनी साथे तेने हमेशां शत्रुपणुंछे, अने मंगळ तथा गुरुनी साथे समपणुंछे. ॥ १७ ॥

असुरपुरोहित बुधहुसें, मंदसु वल्लभ भाव ॥
रवि शशि कुज रिपु तीनहें, कहे जातक कविराव. १८

अर्थ. शुक्र अने बुधनी साथे शनैश्वरने मित्र भावछे, सूर्य, चंद्र, अने अने मंगळनी साथे शत्रुपणुंछे, अने बृहस्पतिनी साथे समपणुंछे, एम जातक शास्त्र जाणनारा कवीओ कहेछे. ॥ १८ ॥

॥ अथ क्रूर सौम्य भेद ॥

रवि मंगल शनि राहु ग्रह, क्रूर कहावत चत्र ॥
शशि सुरगुरु बुध शुक्र ए, सौम्य सुजानहु मित्र. ॥१९॥

अर्थ. सूर्य, मंगळ, शनि अने राहु ए चार क्रुर ग्रहो केहेवायछे, चंद्र बृहस्पति, बुध अने शुक्र, ए चार सौम्य जाणवा. ॥ १९ ॥

॥ अथ केंद्रादि स्थान संज्ञा ॥ सोरठा ॥

केंद्र भुवन यह जान, प्रथम बेद सप्तम सुदश ॥
सौम्य उच्च निज थान, सो सुखदा क्रूरा दुखद. ॥२०॥

अर्थ. पेहेलुं, चोथुं, सातमुं, अने दशमुं, ए स्थानकोने केंद्र भुवन केहेछे, केंद्र भुवनमां सोम्य ग्रहो उच्चना अथवा स्वगृही थइने रह्या होयतो सारा फळने आपेछे, अने तेमज क्रूर ग्रहो सोम्य ग्रहोनी पेठे उपर कहेला स्थानकामां रह्या होयतो नेष्ट फळ आपेछे.॥ २० ॥

कहें त्रिकोन सुतास, नवम और पंचम उभें ॥
शुभ तहं सौम्य निवास, क्रूर अशुभ थानक इते. २१

अर्थ. नवमा अने पांचमा ए बे स्थानने त्रिकोण भुवन कहेछे, त्यांहां सौम्य ग्रहो रह्या होय तो सारुं फळ आपे अने क्रुर ग्रहो रह्या होयतो अशुभ फळ आपे. ॥ २१ ॥

त्रय षट अरु अग्यार, यह उपचय अभिधान गृह ॥
क्रूर सु ग्रह उच सार, सौम्य अशुभ थानक यहें. २२

अर्थ. त्रीजुं, छठुं अने अग्यारमुं ए स्थानकने उपचय भुवन कहेछे, ए स्थानकोमां क्रुर ग्रहो उच्चना थइने रह्या होय तो सारुं फळ आपे अने सौम्य ग्रहो पण उच्चना थइने रह्या होय तो अशुभ फळ आपे. ॥ २२ ॥

॥ अथ दृष्टि भेद छप्पय यथा ॥

तृतिय दशम द्वै भोंन, शनी संपूरन देखहिं ॥
और सु खग इहि थान, पंच बिश्वा सब पेखहिं ॥
थिर नव पंचम ताय, लखे पूरन गुरुअंमर ॥
इहि थानक ग्रह अवर, चरन द्वय दृष्टि तास सर ॥
चत्र अरु अष्ट थानक इते, लोहितांग पूरन लखें ॥
इहि ठोर अवर ग्रह चर्न त्रय, देखत सो दैवी दखें. ॥२३॥

अर्थ. त्रीजा तथा दशमा भुवनने शनी संपूर्ण देखे अने बीजां सर्व ग्रहो ते थानकने पांच विश्वा देखे तेमज नवमा तथा पांचमा भुवनने गुरु संपूर्ण देखे अने बाकीना ग्रहो तेने बे पाया देखेछे, चोथा तथा आठमा भुवनने मंगळ संपूर्ण देखेछे, बीजा ग्रहो तेने त्रण पाया देखेछे, ए रीते ज्योतिष शास्त्र जाणनाराओ कहेछे. ॥ २३ ॥

॥ अथ द्वादश स्थाननाम परिक्षा छंद सुभग ॥

प्रथमं सु यह थान ॥ तन प्रकृति परमान ॥ सुख दुख अनुसंधान ॥ ब्रन रूप पहिचान, ॥ द्वितियं भुवन भेद ॥ धन वृद्धि परिछेद ॥ निज कुटुंब सुख खेद ॥ अभिप्राय यह जान. ॥ त्रितियं सुकहि धाम ॥ उन सहज अभिराम ॥ पुनि पराक्रम ताम ॥ किंकर सु प्रति काम. ॥ चातुरे ग्रह मात्र ॥ ग्रह ग्राम पदचात्र ॥ कृषि कर्म जन यत्र ॥ अवलोकि आराम. ॥ पंचमहि आगार ॥ बुधि पुत्र बिस्तार ॥ शुभ शास्त्र सुबिचार ॥ बिधि मंत्र लखि मर्म, ॥ गृह षष्टमें केत ॥ रिपु रोग फल देत ॥ मातुलह पख हेत ॥ कहि क्रूरता कर्म. ॥ सपतालये जात ॥ बिनता गमन बात ॥ बानिज्यगत आत ॥ अवलोकबो एह, ॥ यह अष्टमे बास ॥ उन छिद्र परकास ॥ शस्त्रादि दुख तास ॥ कह कष्टहें देह. ॥ नोमे निलय भाग ॥ धर्म शील बैराग ॥ तप तीर्थ जप जाग ॥ एतो करो लच्छ. ॥ दशमें सदन एह ॥ निज कर्म पितु देह ॥ नृप द्वारको नेह ॥ व्यापार पारिच्छ. ॥ आसपद दशएक॥ इभ अश्व कितनेक ॥ सुखपाल सु विवेक ॥ मनि अंबर निहार, ॥ सदमं सु दशदोय ॥ बय दंड विधि जोय ॥ कहें बंध कछु होय ॥ निरबंध निरधार. ॥ २४ ॥

अर्थ. पेहेला स्थानकने तनु भुवन कहेछे तेमां सुख, दुःख, वर्ण रूप, तिल, लाखां, मश, विगेरे निशानी, जाति उम्मरनुं प्रमाण अने साहसपणुं इत्यादी विचारो जोवायछे. बीजा स्थानने धन भुवन कहेछे

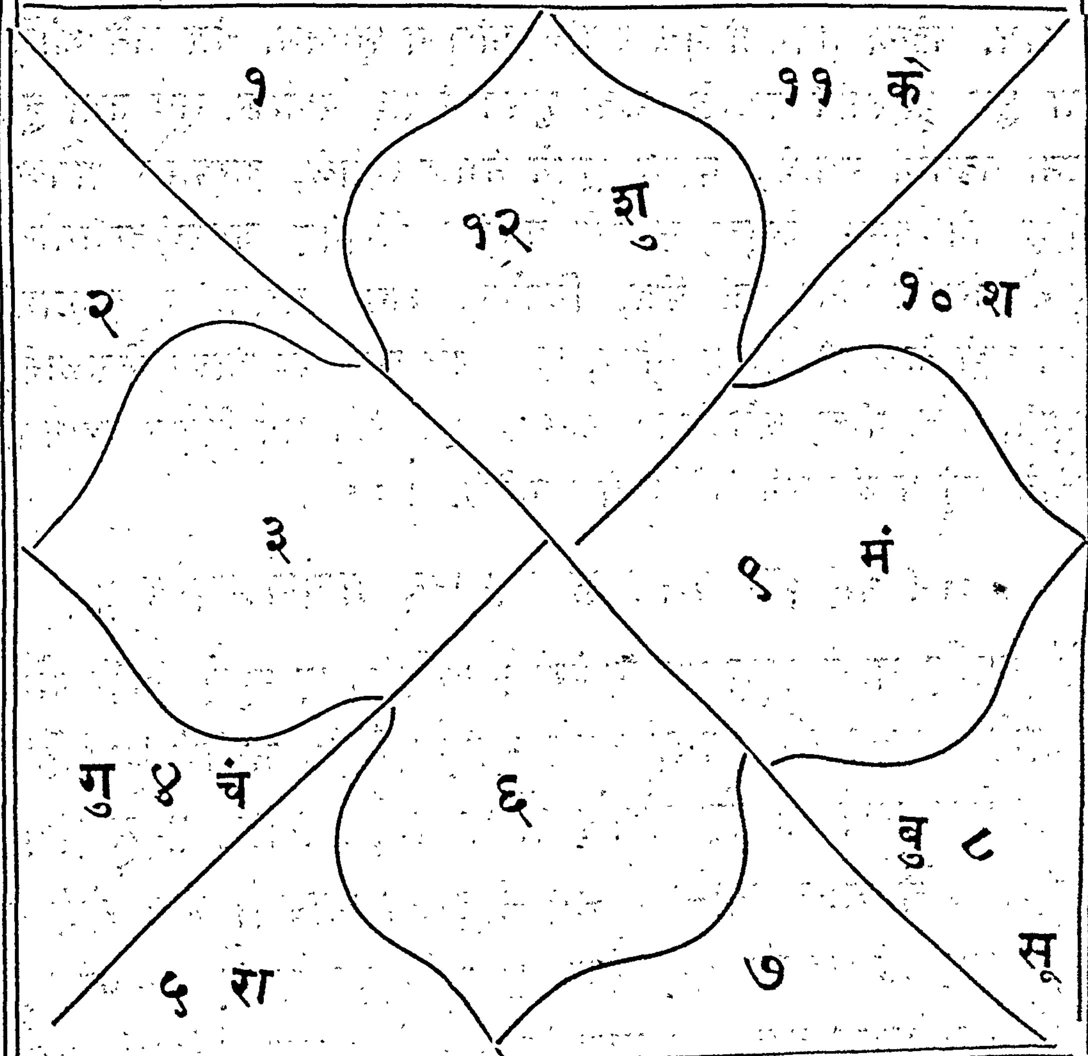
तेमां सोना विगेरे धातुनो लाभ तथा हाण, अने पोताना कुटुंबनुं सुख तथा दुःख, विगेरे अभिप्राय जोवायछे. त्रीजा स्थानकने सहज भुवन कहेछे, तेमां पराक्रम, नोकर, सहोदर, इत्यादि बावत जोवायछे. चोथा स्थानकने मातृ भुवन कहेछे तेमां घर, गाम, गायो, भेंसो, विगेरे चतुष्पद, सुहृद अने खेड इत्यादी बाबत जोवायछे. पांचमा स्थानकने संतान भुवन कहेछे, तेमां बुद्धि, पुत्र, मंत्र, विद्या, विनय, गर्भ संबंधी बावत तेमज नीति विगेरे जोवायछे. छट्ठा स्थानकने रिपु भुवन कहेछे, तेमां शत्रु, रोग, मोशाळपक्षनुं सुख, क्रूर कर्म-चिंता, शंका, इत्यादि बाबत जोवायछे. सातमा स्थानकने जाया भुवन कहेछे, तेमां स्त्री संबंधी विचार, वेपार, तथा ते संबंधी लाभ हानि, अने मुसाफरी ए सघळुं जोवायछे. आठमा स्थानकने छिद्र भुवन कहेछे, तेमां शरीर संबंधी कष्ट, संकट, आयुष्य, शस्त्रादि घात, कलंक ए सर्वे जोवायछे. नवमा स्थानकने भाग्य भुवन कहेछे, तेमां धर्मक्रीया, शीळ, वैराग्य, तप, तीर्थ, जप, यज्ञ, अने पुन्य विगेरे जोवायछे. दशमा स्थानकने कर्म भुवन कहेछे, तेमां राजद्वार संबंधी मान, तथा अपमान, पितानुं सुख, वेपारनी म्होटी पेदाश, इत्यादि सर्व जोवायछे. अग्यारमा स्थानकने लाभ भुवन कहेछे, तेमां हाथी, घोडा, पालखी, मणी, वस्त्र, इत्यादि वस्तुनो लाभ जोवायछे. बारमा स्थानकने व्यय भुवन कहेछे, तेमां खरच, दंड, बंधन, हानि, दान इत्यादिनो निर्णय थायछे. ॥ २४ ॥

॥ अथ लग्न राशी कथन मनहंसोक्त दोहा ॥

महाराज यह जानियें, सुत उतपति झष रास ॥
जो जो थानक ग्रह परे, कहो सु गनक प्रकास ॥ २५ ॥

अर्थ. हे? महाराज, तमारा कुंवरनो जन्म मीन राशीमां थयोछे एम

जाणवुं. त्यारे राजा कहेछे हे? दैवज्ञ, पंडित, जे जे भुवनमां ग्रहो रह्याछे तेनां फळनो प्रकाश करीने कहो. ॥ २५ ॥



॥ अथ तत्प्रयोजने छप्पय यथा ॥

प्रथम शुक्र पहिचान, पंचमें चंद्र अंगिरस ॥
राहु षष्टमें रहत, सूर बुध नोंमहुके वस ॥

दशमें कुज निरधार, मंद एकादश आये ॥
द्वादश केतु कहंत, गनक खेचर सु द्रढाये ॥
केंदर त्रिकोन उपचय किते, सौम्य क्रूर सु द्दश ग्रहें ॥
गृही नीच उच्च ग्रह सुह्रद लखि, सो प्रकाश प्रापति कहें.२६

अर्थ. पेहेला भुवनमां शुक्र रह्योछे, पांचमा भुवनमां चंद्र अने अंगिराना पुत्र बृहस्पति रह्याछे, छठ्ठा भुवनमां राहु रह्योछे, सूर्य तथा बुध नवमा भवनमां रह्याछे, दशमे भुवने मंगळ रह्योछे, अग्यारमे शनैश्वर रह्योछे अने बारमे केतुछे, ए रीते मनहंस जोशीए जन्मकुंडलीमाना ग्रहोनो निर्णय कर्यो. वळी केंद्र, त्रिकोण, अने उपचय, ए स्थानमां रहेला ग्रहो केटला? तेमज सौम्य, क्रूर, अने शुभ दृष्टीवाळा केटलाछे, स्वगृही, ऊच्च, नीच, अने मित्र ए कयाछे, एवी रीते सर्व विचार ध्यानमां लावीने तेनुं फळ खुल्ली रीते कही बतावेछे. ॥ २६ ॥

॥ अथ वह ग्रह भाव फल ॥ छंद भुजंगप्रयात ॥

वसें आदि थानं भृगू ता प्रसंगं ॥ रती नाथ रूपं गती गौर अंगं ॥ महा बीर बाहू बली नाद रत्तं ॥ उदारं सु शीलं प्रिया प्रेम मत्तं ॥ रहे पंचमे सोम ताके प्रमाने ॥ सु मेधा सु वृत्ती सबें शास्त्र जाने ॥ नवीनं कृता भारती भेद तंत्रं ॥ सदा इष्ट ऊपासनी बेद मंत्रं ॥ फुनी पंचमे ए प्रभावं सुजीवं ॥ दशंचत्र बीद्या अभ्यासी सदीवं ॥ गुनालंकृतं दीन बंधू सु दाता ॥ सुखी संतती भोमि भुक्ता सु ख्याता ॥ षटं थान राहू परे येह रीतं ॥ चढें शत्रु जीतं रु आपें अजीतं ॥ प्रतापं उदे प्राक्रमं होत सिद्धी ॥ दिनांहीं दिनां राज रिद्धी

सु वृद्धी ॥ रवी नौम भावें महा भाग्यकारी ॥ वृतं तीरथं देव सेवोपचारी ॥ अनूरागसें वृद्ध बैराग चंतं ॥ बढे बोध- के सोध तापं तपंतं ॥ शशीसूनु नोमें बसे एह गत्ती ॥ सु ग्याता अद्रष्टं उदे धर्म मत्ती ॥ परीब्रह्म सोधंत बोधं सु संतं ॥ तपं तीरथं जोग वृत्ती चहंतं ॥ दशम्मे कुजं ता फलं ये प्रकृत्ती ॥ शुभं राजजोगं वहें चक्रवृत्ती ॥ सुखं साजको भोग तासों कहावे॥ करे जास अभ्यास सोई उपावे ॥ स्थि- तं मंद एकादशे सो उपासी ॥ उरं अंतरं भाव लावे उदा- सी ॥ उदासी बढंतें पराक्रम्म धारे॥ पराक्रम्मको छोरि बो- धं बिचारे ॥ गयो द्वादशं केतु ताको सु जोगं ॥ जुरावें कहूं प्रेम तासें बियोगं ॥ मनं व्याकुलं कष्टकारी सुधारे ॥ य- हें नो ग्रहं भेद भिन्नं बिचारें. ॥ २७ ॥

अर्थ. हे? राजेंद्र, पेहेला भुवनमां शुक्र रह्योछे, ते प्रसंगथी आ त मारो राजकुमार चाल चलगतमां अने ...५मां कामदेव जेवो, गौरवर्ण- वाळो, महा शूरवीर, पोताना बाहु बळथी पराक्रम करनार, गायनमां प्रीति राखनार, उदार, सारा स्वभाव वाळो अने स्त्रीना प्रेममां मग्न थई उन्मत्त थशे. पांचमा भुवनमां चंद्र रह्योछे, तेना प्रमाणथी श्रेष्ट बुद्धिवान्, सारी वृत्ति राखनार, सर्व शास्त्रने जाणनार, वाक्यना भेदोथी नवीन काव्य रच- नार अने वेद मंत्रोथी इष्टदेवनी उपासना करशे. पांचमे बृहस्पति रह्याछे तेना प्रतापथी हमेशां चउद विद्याने जाणनार, सर्व गुणथी शोभित, गरीब स्थितिना लोकोने बंधुनी पेठे सहाय करनार, दातार, सारी संततीवाळो, पृथ्वीनो भोगवनार अने प्रख्यात थशे. छठ्ठा भुवनमां राहु पड्योछे तेथी लडाइमां ज्यांहां चढाइ करशे त्यांहां शत्रुने जीतीने पोते अजीत रेहेशे, प्रता- पनो उदय थशे, पराक्रममां सिद्धि थशे अने दिवसें दिवसें राज समृद्धिमां

वधारो थशे. नवमा भुवनमां सूर्य रह्याछे तेथी महा भाग्यशाळी, व्रत तीर्थ अने देवोने सेवनार, प्रीतिथी वैराग्यमां चित्त राखनार, अने शोधेला ज्ञाननो बोध वधवाथी तप करनार थशे. चंद्रनो पुत्र बुध नवमे रह्योछे, तेथी ज्ञानवान्, प्रारब्धवान, धर्ममां बुद्धि राखनार अने परब्रह्मनो शोध करवाथी सत्यपदार्थने जाणनार थशे, तथा तप, तीर्थ, योग, अने व्रतने चाहाशे. दशमे मंगळछे तेनुं फळ आ प्रमाणेछे, शुभ राज जोगनेलीधे चक्रवर्त्तिथइ सर्व सुख सामग्रीनो भोगवनार थशे, तेमज जे जे विद्यामां अभ्यास करशे ते ते विद्याने संपादन करशे. अग्यारमे शनैश्चर रह्योछे तेथी उपासक थशे, पण पोताना कोमळ हृदयमां उदासी भाव लावशे, उदासी वध्यां छतां पराक्रम करशे, अने पराक्रमनें छोडी ज्ञानसंबंधी विचार करशे. बारमे स्थानके केतु गयोछे तेना योगथी ते कुंवरने कोइनी साथे लागेला प्रेममां वियोग करावशे, वियोगने लीधे दुःख करनारी व्याकुळताने मनमां धरशे, हे? राजाजी, एवी रीते नवेग्रहोना भेदथी जूदां जूदां फळ कह्यां. ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

यहें अनूक्रम राज सुनि, जन्म कुंडली भेव ॥
दिये बसन मनि माल हय, किये बिदा दुजदेव ॥ २८ ॥

अर्थ आवी रीते अनुक्रमे जन्म कुंडली मांहेना भेद सांभळीने प्रदीप राजाए, ब्राह्मणमां मुख्य मनहंस जोशीने वस्त्र, मणीनी माळा, ने घोडो एवी रीते पोशाक आपी विदाय कर्या. ॥ २८ ॥

॥ गाहा ॥

जन पद नग्र सुनामं, भूप प्रदीप अयन उत्पत्ती ॥
सुच्छम गनक प्रकारं, षष्ठ प्रवीन सागरो लहरं ॥ २९ ॥

अर्थ. देश अने शेहेरनुं नाम, तथा प्रदीपराजाने घेर कुंवरनी उत्पत्ति, अने थोडाएक ज्योतिषशास्त्रना विस्तारथी आ प्रवीणसागरनी छठ्ठी लेहेर पूरी थई. ॥ २१ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे रससागर जन्म कुंडली भेद ग्रह फळ नीरूपण नाम षष्ठी लहरि समाप्ता. ॥ ६ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां षष्ठम स्तरंगः समाप्तः ॥६॥

॥ अथ कला प्रबीनोत्पत्ति कथन ॥ दोहा ॥

श्राप परें म्रत लोक भो, चित्रकला अवतार ॥
संज्ञा देश नरेश पुर, कहौं सु कछु बिस्तार. ॥ १ ॥

अर्थ. महादेवनो श्राप थवाथी विचित्रानंदनी स्त्री चित्रकळानो मृत्युलोकमां अवतार थयो तेनुं नाम, देश, त्यांहांना राजानुं थोडुं एक वृत्तांत अने तेनी राजधानीनुं वर्णन अेसर्व विस्तार करीने कहुंछुं. ॥ १ ॥

॥ अथ तत्प्रयोजने छंद पद्धरी ॥

चत्रशष्ठि भरत, जनपद प्रमान ॥ उन संधि देश, लघु लघु सु आन ॥ दीपंत सरस, गुज्जर सुदेश ॥ बरनं सु बसें, चत्र बिबिध बेश ॥ भुअ धान दान, सन्मान भोग ॥ जग प्रसिध सुजस, जह भक्ति जोग ॥ ऐसें समाज, गुज्जर अनूप ॥ राजंत तहां, सहि पुहवि रूप ॥ मनछापुरी सु, तिहि देश मद्धि॥ सुख अचल भोग, रति रिद्धि सिद्धि॥ राजान राज, राजंत तित्त ॥ नामं सु नीतपालं नृपत्त ॥ सूरज्ज बंश, कुलमें सरेश ॥ नामंत शीश, अनि सह नरेश ॥

नव खंड सुजश, किय अरि नमाय ॥ अनुसरहिं शरन पटतीस आय ॥ इक सहस कोस, गिरदी अमल्ल ॥ उन सत्रसहस, पुरहें अदल्ल ॥ लखदोय बाज, पख्खर लगंत ॥ पयदल असंख, आयस पुलंत ॥ सत दोय करी, मे मंत सोय ॥ सुखपाल और, रथ सहस दोय ॥ बिबि सहस द्वार, दुंदभि बजंत ॥ पचरंग निसान, दो सहस पंत ॥ पुनि ओर किते, बाजंत पूर ॥ सोरह हजार, बानैंत सूर ॥ पोहो नीतपाल, इहि बिधि प्रताप ॥ अरि जीतलीन, अनजीत आप ॥ राजंत मनंछापुरीय राज ॥ सोहंत नगर, सुरपुर समाज ॥ बनि सहर पास, चिहु ओर बाग ॥ फल फूल झूल, रहे मनहु फाग ॥ तर तर सुभृंग, झंकार तथ्थ ॥ सुर पिक अनेक, सहकार सथ्थ ॥ कइ ताल सरित, वापी सुकूप ॥ पनिहार घाट, घट जातरूप ॥ परचंड मंड, जह सुर प्रसाद ॥ वह मिलन बोम, मनु लगो बाद ॥ सुचि विप्र तहां, जुरि करत सेव ॥ भाषंत अमित, श्रुति बेद भेव ॥ ओपें प्रकार, गिर सम उतंग ॥ भयभीत शत्रु, निज पुर अभंग ॥ वह सोर भ्रपन्न, तिन बुरज बान ॥ पेखंत प्रसन, छूटै सुप्रान ॥ जुगती सु सहर, चौसर बजार ॥ चलिआत वनिज, जन दिसहि चार ॥ लख कोटि अरब, धन होत लेख ॥ व्यापार भारभीर सु विशेष ॥ निज राजमहल, सोहत अनूप ॥ रुचिसों जु रच्ये, विधि वरनि रूप ॥ कलशं सुहेम, ता शीश केत ॥ द्युति

देवराज, ग्रह प्रभा देत ॥ बिच राज महल, भामनि वि-शेष ॥ दुरि जातरूप, सुर ललन देख ॥ परिसिद्ध जगत, मधि नीतपाल ॥ बिलसंत राज, सूख अति बिसाल. २

अर्थ. आ भरतखंडमां चोसठ देशछे, तेनी पश्चिम तरफनी सरहद उपर बीजा न्हाना न्हाना देशो आवेलाछे, तेमां गुर्जर देश घणो शोभायमान अने रसाळछे, तेमां घणुं करीने ब्राह्मण क्षत्री विगेरे चार जातना वर्णो वसेछे, ध्यान, दान, सन्मान, इत्यादि विलासनी प्रसिद्धिना साथ जेनो सुजश आखी पृथ्वीमां फेलाइ रह्योछे, तेमज ज्यांहां अष्टांगयोग सहित नव प्रकारनी भक्तिथी इश्वरनु ध्यांन थायछे, एवी रीते सुख समुदायथी गुर्जर देश अनूपमछे, अने त्यांहां सर्व प्रकारे जाणे सर्व पृथ्वीनुं रूप एकठुं थयुं होयनै? एवी रीते शोभायमान मनछापूरी नामनुं म्होटुं शेहेर ते देशना मध्य प्रदेशमां आवेलुंछे. जे शेहेर अचळ सुख, अनेक तरेहना भोग, रतिविलास, संपत्ति, अने रिद्धिसिद्धिथी आवादछे, त्यांहां नरपतिना राजा नीतिपाळ राज्य करेछे, ते राजा सूर्य वंशमां अति श्रेष्टछे, जेनी हजुरमां बीजा देशना केटलाएक राजाओ शिर नमावेछे, वळी जेणे शत्रुने जीतीने नवे खंडमां कीर्त्ति फेलावीछे, तेमज छत्रीश कुळना राजवंशीयो शरणे आवी अनुसरी रह्याछे, एक हजार गाउनी गीरदमां तेनो अमलछे, तेनीसत्ता तळे बरोबर सत्तरहजार गामछे, बखतर पाखरथी सजेलुं बेलाख घोडानुं लश्करछे, असंख्य पायदळ आज्ञा प्रमाणे वर्त्तेछे, मदोन्मत्त बसो हाथीओ झुली रह्याछे, तथा बेहजार पालखीओ बे हजार रथ स्वारीमां दाखल थायछे-बेहजार दुंदभी राजद्वारमां वागी रह्यांछे, पंच रंगी बेहजार निशाण फरकेछे अने बीजां केटलांएक वाजित्रो वागी रह्यांछे, सोळहजार धनुषबाण धारण करनारा शूरवीरो शोभी रह्याछे, एवा महा प्रतापी नीतिपाळ राजा शत्रुने जीतीने पोते अजित केहेवायाछे, जेनी राजधानी मनछापुरी नगरी जा-

णे इंद्रनुं स्वर्ग होयनै? तेवी शोभेछे, शेहेरनी आसपास चोतरफ वाग रच्या छे तेमां वृक्षो उपर फळफूल झुली रह्यांछे ते जाणे वसंत खीली होयनै? झाडे झाडे भमराओ झणकार करी रह्याछे, कोयलना स्वरमां वधारो करनार अनेक पक्षीओ मधुर स्वरथी बोलेछे, केटलांएक तळाव, नदीओ, वाव्य, अने कुवा, पाणीथी भरपूरछे, पाणी भरनार स्त्रीओ चळकता सोनाना कळश भरी पनघट उपर जति आवति जोवामां आवेछे, त्यांहांनां उंचां अने विस्तारवाळां देरां आकाशने मळवासारु एक बीजां वाद करतां होयनै? तेम जणायछे, जेनी अंदर पवित्र ब्राह्मणो पूजा करवानी वखते हाथ जोडी पदक्रम इत्यादि भेदथी अमुल्य वेद मंत्रो भणी रह्याछे, पहाड सरखो उंचो चोतरफ नगरने किल्लो ओपेछे एवुं अभंग नय जोइ शत्रु वीयेछे, घणाक शूरवीरोने नाश करनारां अनेक कोकबाणो जेना कोठामां राखेलांछे, जेने जोतांज दुश्मनो तथा चुगलखोरोना प्राण नीकळी जायछे, ते शेहेरमां युक्तिथी चोपट जेवी चोसरी बजारछे, जेमां चारे दिशाओना वेपारीओ आवेछे अने लाखो करोडो अने अब्जनी संख्या सुधी पैसानी लेव देव थायछे, धमधोकार वेपार चालवाथी घणांक माणसोनी भीड मची रहेछे, नीतपाळ राजाना मेहेल अनोपम शोभी रह्याछे जाणे ते मेहेलमां ब्रह्माए प्रीतिथी सर्व पृथ्वीनुं रूप लावी मूक्युं होयनै? तेम लागेछे वळी ते मेहेल उपर सोनाना कळशना चळकाट साथे धजा फरकेछे ते जाणे शोभायमान इंद्रना घरनी शोभा देखाती होयनै? राजमेहेलना अंदरना भागमां रेहेनारी राणीयोनुं रूप जोइने देवताओनी स्त्रीयो लजवाईने भागी जायछे, एवी रीते जगत्प्रसिद्ध आ नीतिपाळराजा राज्य सुखमां विलास करेछे. ॥ २ ॥

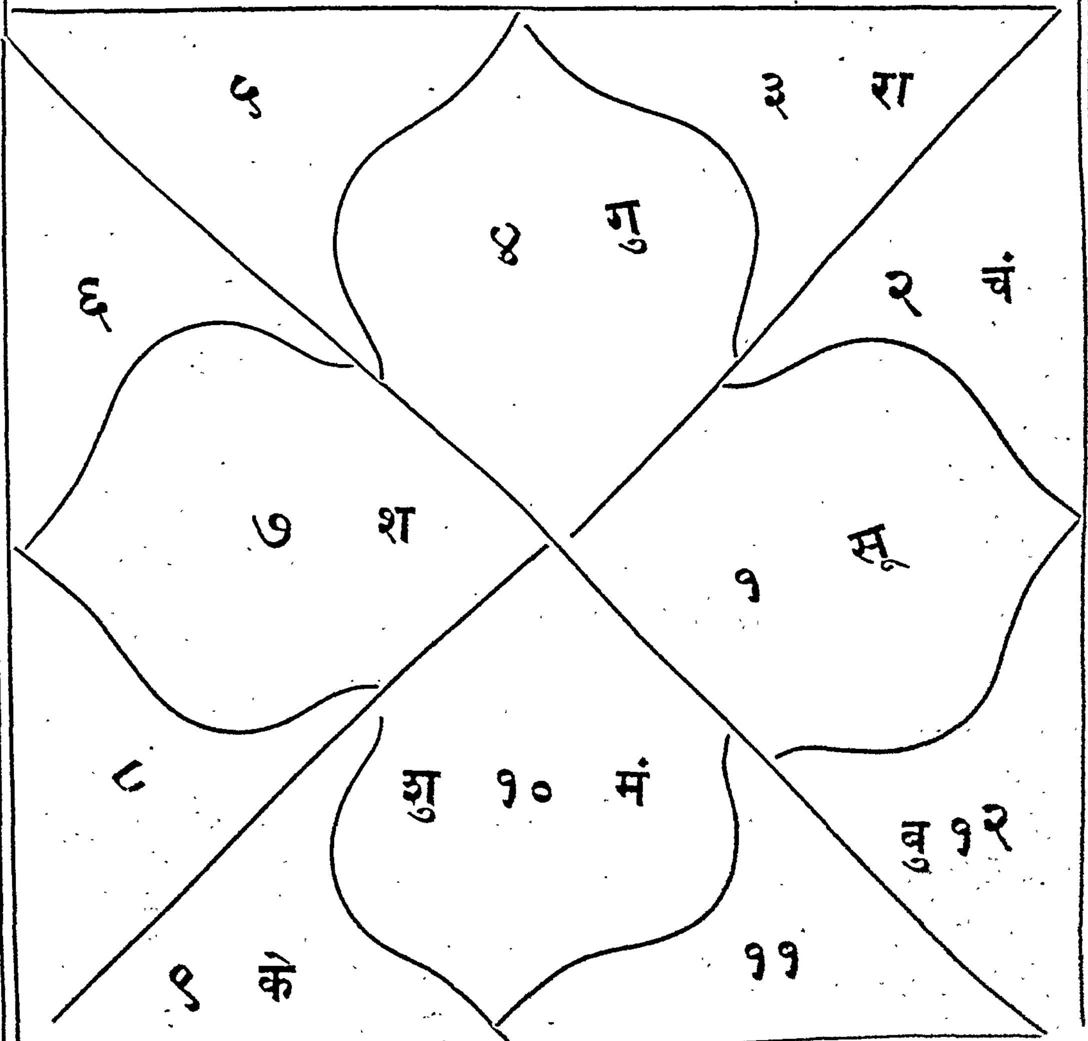
॥ दोहा ॥

नीतपाल वह गृह सुता, चित्रकला भव लीन ॥
नीलकंठ पंडित सु तिहि, जन्म कुंडली कीन. ॥ ३ ॥

अर्थ. जे विचित्रानंदनी स्त्री चित्रकळा हती तेणे नीतपाळ राजाने घेर कुंवरीनो जन्म लीधो त्यारे नीलकंठ पंडिते तेनी जन्म कुंडली करी. ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री कलाप्रवीण राज कुमारीकायाः ॥

॥ जन्म कुंडलिका ॥



॥ सोरठा ॥

यह ग्रह भाव बनाय, नीलकंठ नृपपें गये ॥

नीतपाल द्रग लाय, बोले ग्रह फल बरनियें ॥ ४ ॥

अर्थ. ग्रह तथा ग्रहना वार भाव बनावी नीलकंठ पंडित राजानी पासे गया, त्यारे नीतिपाळ राजाए कुंडली जोईने कह्युं के ग्रहना फळनुं वर्णन करी संभळावो. ॥ ४ ॥

॥ अथ वह जन्मकुंडली ग्रह लग्न भाव यथा ॥ छप्पय ॥

कर्क लगन तन भुवन, तहां सुरगुरु अधिकारिय ॥
तुल चातुर शनि बसत, षटम धन केतु बिचारिय ॥
मकर सपत कुज शुक्र, मीन नवमें बुध मानहुं ॥
मेष दशम गृह भानु, व्रषभ शशि ग्यारम थानहुं ॥
द्वादशें मिथुन राहू रहत, जिहि जिहि जैसे फल दहें ॥
निश्चय निहारि जातक जुगति, करि उदार सो सो कहें. ५

अर्थ. जन्म कुंडलीमां कर्क लग्नछे, अने शरीर भुवनमां बृहस्पति रह्यो छे, चोथे भुवने शनी तूळनो थई रह्योछे, छट्ठे भुवने केतु धननो थईने रह्योछे, सातमा भुवनमां मंगळ अने शुक्र मकरना थईने रह्याछे, नवमा भुवनमां बुध मीननो थईने रह्योछे, दशमा भुवनमां सूर्य मेषनो थईने रह्योछे अने अग्यारमा भुवनमां चंद्रमा वृषभनो थईने रह्योछे, अने बारमा भुवनमा राहु मिथुननो थइने रह्योछे, जे जे ग्रह जेवुं जेवुं फळ आपे ते संबंधी ज्योतिषनी युक्तिथी निर्णय करी खुल्ले रीते केहेवा सारु नीलकंठ पंडित राजा पासे आवी बोलेछे. ॥ ५ ॥

॥ अथ नीलकंठोक्त ग्रह लग्न भाव फल ॥ छप्पय ॥

प्रथम देवगुरु गते, चंद्र आनन व्रन कुंदन ॥
एन नेन शुक घ्रान, करक रद कोकिल कूजन ॥
तन कोमल दल कमल, बेनि विषधर कटि केहर ॥

उरु रंभा नख नीक, अरुन पद रसन अधर कर ॥
करता सुकाव्य संगीत रत, सुबुधि शील सीतल प्रकृति
रतिराज रीत कोबिद सुरस, गुरु सुभाव मन हंस गति ६

अर्थ. पंडित कहेछे के पेहेला भुवनमां वृहस्पति रह्योछे तेथी तेनुं चंद्र जेवुं मुख, सोंना जेवो वर्ण, हरणना जेवां नेत्र, पोपटनी चांच जेवुं नमणुं नाक, दाडमनी कळीयो जेवा दांत, कोयलना जेवो मधुर अवाज, कमळना पत्र जेवुं कोमळ पेट, काळा नाग जेवो चोटलो, केसरी सिंहना जेवी कड, केळना थंभ जेवा साथळ, नख, पगना तळां, जीभ, होठ, अने हथेळीयो ए पांच लाल ए रीते चेहेरो जाणवो. वळी सुंदर काव्यने रचनार, गायनमां प्रीति राखनार, बुद्धि शाळी, सुशीळ, थंडा मीजाजवाळी, काम क्रीडा तथा राजनीतिमां कुशळ, रसने जाणनार, म्होटा मनवाळी, हंसना जेवी गतिवाळी एवी तमारी राजकन्या थशे.

॥ छंद त्रोटक ॥

चतुरं सुबसें, खग मंद जिहीं ॥ अति उन्नत थान हरम्य तिहीं ॥ उन ग्राम घनें, बन बाग लता ॥ सवसें अरुची, मन व्याकुलता ॥ षटमैं ग्रह केतु जिहीं रहतं ॥ अति चातुरताइ उदार चितं ॥ तन व्याधि नव्यापत तास यथा ॥ भय आतुर मानसि बुद्धि बिथा ॥ भृगु सप्तम थानक जास रहें ॥ अति चातुरता पति तास कहें ॥ वह दंपतिको, मन एक सदा ॥ सुख होय लखें, अलखें दुखदा ॥ सपतं ग्रहसें, फुनि भोम रहें ॥ मन कंत मिलें, तन नां मिलिहें ॥ बिरहा तन तापसु आतुरता ॥ सुरतं न प्रियं, सुरता सुरता ॥ नवमें शशि सूनु सु शीलवती ॥

तप तीरथ सेवित पुन्य मती ॥ गुनवान सुमंत्र संगीत पढें ॥ रति संमृति देवन सेव बढें ॥ दशमें रवि उच्च ग्रहे गतहें ॥ परताप बडो, दिनहीं प्रतिहें ॥ बिबिधं वह राज सुनीत लहें ॥ क्रम कीरति योग बिशेष कहें ॥ दश एकम जास शशी सुबसें ॥ रतनांबर ईभ अनेक असें ॥ बुधि दीन दयाल कमी न धनं ॥ सुचिता रुचि प्रेम प्रकास मनं ॥ बसि द्वादश राहु रह्यो जिनकौं ॥ अनुराग बिराग बढें तिनकौं ॥ भय भीत सु चित्त नहीं थिरता ॥ ग्रह ए फल जातक उच्चरता ॥ ७ ॥

अर्थ. जेने चोथा भुवनमां शनि रह्यो होय तेने अति उंचा मेहेल मेडीयो इत्यादि सारां स्थळ मळे तेमज घणा बागबगीचा, गाम, इत्यादि सुख मळे पण सर्वथी अप्रीति अने मनमां व्याकुळता थाय. जेने छट्ठा भुवनमां केतु रह्यो होय तो ते अति चतुर अने तेनुं उदार मन रहे तेमज तेना शरीरमां कोईदी रोगनी पीडा थाय नहीं पण भय, आतुरता अने मनमां वधारे दुःख थाय. वळी जेने सातमे स्थानके शुक्र रह्यो होय तो तेने चतुर पति मळे अने ते स्त्री पुरुष वन्नेनुं हमेशां एक चित्त रहे वळी ज्यारे एक बीजाने देखे त्यारेज सुख थाय अने न देखे त्यारे दुःख थाय. जेने सातमा भुवनमां मंगळ रह्यो होय तेनुं पतिनी साथे मन मळे पण परस्पर अंग मिलाप थाय नहीं तेणे करी विरहाग्नीना तापथी शरीरमां आतुरपणुं रहे प्रिय पतिना वियोगथी रति सुख न मळवाने लीधे तेमांज चित्त लाग्युं रहे. जेने नवमा भुवनमां चंद्रनो पुत्र वुध रह्यो होय तो ते स्त्री सारा शीळ वाळी तप तीर्थ अने व्रतने सेवनार, पुण्य वुद्धि वाळी, गुणवान, सारा विचार वाळी, अने गायन शास्त्रने जाणनार थाय, अने तेने शुद्ध वुद्धिथी देवनी सेवामां प्रीति वधे, दशमे सूर्य उच्चनो थईने रह्योछे तेणे करी दि-

वसे दिवसे प्रताप वधे तेमज विविध विषय वाळी राजनीति जाणे, नसीबदार, किर्ति वाळी, अने योग शास्त्रने जाणनार थाय, अगीयारमे भुवने जेने चंद्र रह्यो होय तेने रत्न, वस्त्र, हाथी, घोडा, विगेरे तरेह तरेहनी दोलत मळे, बुद्धिवान, दयाळु अने अखूट धनवाळी थाय, पवित्रपणा माथे प्रीति थाय, अने मनमां प्रेमनो प्रकाश थाय, जेने बारमा भुवनमां राहु रह्यो तेने प्रीति अने वैराग्य वधे हमेशां भय युक्तचित्त चंचळ अने अस्थिर मन वाळी थाय ए प्रमाणे ग्रहोनां फळ जातक शास्त्र कहेछे. ॥ ७ ॥

॥ श्लेष दोहा ॥

मित्र दृष्टिकों परखियें, उच्च नीच सम हेत ॥
जाहीकौं जैसी लगन, सो तैसो फल देत ॥ ८ ॥

अर्थ. द्रष्टि, मित्र, उच्च नीच सम ए सर्व जन्म कुंडलीमांथी जोयाथी एम जाणवुं के जेनुं जेवुं लग्न अने जेवे स्थाने ग्रहो रहेला होय तेवुं फळ आपे. ॥ ८ ॥

॥ अथ नीतपाल वाक्य सोरठा ॥

नीलकंठ खग थान, कहे सुफल जाने सबें ॥
यह मंगल दुखदान, कहा करैं इश्वर अगम ॥ ९ ॥

अर्थ. राजा कहेछे के हे? नीलकंठ पंडित, जन्म कुंडलीना ग्रहोनां फळ तमे जे कह्यां ते सर्वे जाण्यां परंतु आ सातमे जे मंगळ रह्योछे ते घणो दुःख दायक जणायछे, पण शुं करीए! केम जे इश्वरनी गति अगम्यछे, ते कोईथी जाणी सकाती नथी. ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

इतनी कहि कीनी बिदा, दुजन दान बहु दीन ॥
नाम सुभग नृपनें दियो, कुमरी कलाप्रवीन ॥ १० ॥

अर्थ एम कही नीलकंठ पंडितने घणुं द्रव्य दानमां आपी विदाय कर्या, त्यारबाद राजाए पोतानी रुचीथी कुंवरीनुं कला प्रवीण एवुं नाम आप्युं. ॥ १० ॥

॥ अथ कुसुमावलि उत्पत्ति प्रसंग ॥ दोहा ॥

ता पुरमें द्रुज रहतहें, चतुरानन अभिधान ॥
ग्रह हय गय फंदन अरथ, राज द्वार सनमान ॥११॥

अर्थ. ते शेहेरमां एक चतुरानन नामे ब्राह्मण रहेछे, जेने घेर घोडा, हाथी, रथ, इत्यादि समृद्धिछे अने राजद्वारमां पण तेनुं सन्मानछे. ॥११॥

आगेंहीं उमया भ्रता, पुष्पावती सु नाम ॥
सो कुसुमावलि भइ सुता, वह चतुरानन धाम ॥१२॥

अर्थ. पूर्वे जे पार्वतीनी दासी पुष्पावति नामे कही हत्ती ते आ चतुरानन ब्राह्मणने घेर कुसुमावळी नामनी कन्या थई. ॥ १२ ॥

॥ अथ कला प्रवीन बाल चरित्र बर्नन ॥ छंद उद्धोर ॥

शिशुता बेसमें परबीन ॥ ललना सरस आभा लीन ॥
बासर रेन बाढत गात ॥ मानहु जल बढें जलजात ॥
बानी बाल मुख तुतरंत ॥ कोकिल कलभ कल उचरंत ॥
तनया मिलत जूथ नरेश ॥ समता शील कुल बय बेश ॥
गावत बाग बीच सुजाय ॥ खेलत ताल नूपुर लाय ॥
मानहु हंस शुक पिक सार ॥ लागे एक बेर उचार ॥
कर तन लटक जूथ कुमारि ॥ मानहुं कनक कुंज बयारि ॥
फूलन गेंद मारत हेत ॥ फरकी मीनकी गति लेत ॥
ऐसी रीत खेल अनंत ॥ कीजत जोइ चाहें चंत ॥

तब कछु समजसी नृप जान ॥ दीनो पढनको फुरमान ॥
लागे गुरु पढावन हेत ॥ मुखसें बरन निकसे लेत ॥
व्रत बिधि संम्रती अभिधान ॥ काव्य सु नीति शास्त्र सुवान॥
साहित जातकं संगीत॥ श्रुति पढि कोक जानी रीत॥१३ ॥

अर्थ. प्रवीण बाल्यावस्थामांज स्त्रीना सरखी सरस कांतिने धारण करेछे, पाणीमां उगेलुं कमळ जेम पाणी वधवाथी वधतुं जायछे तेम कळाप्रवीणनुं शरीर रात दिवस वधतुं जायछे, बाळपणाने लीधे मोढेथी तोतळा शब्द बोलेछे ते जाणे कोयलनुं बच्चुं मधुर शब्दना उच्चार करतुं होयनै? तेम जणायछे, पोताना सरखो जेनो स्वभाव, कुळ, उम्मर, अने वेशछे एवां राजकुमारीयोनां जुथ्थनी साथे मळी बागमां जई गायन करेछे, झांझरनी घुघरीओना अवाजने तालमां लावी गम्मत करेछे ते जाणे हंस, पोपट, कोयल, अने मेना ए सर्व एक वखते मधुर अवाज करतां होयनै? तेवी रीते तेना गायनना स्वरो एक वखतेज नीकळेछे, सर्व कुमारीओ रास गाति वखत पोतानी पातळी कड नमावी लटकां करेछे, ते जाणे कुंज भुवनमां सोनानी वेल्यो पवनना झपाटाथी लळकती होय नहीं? तेम शोभेछे, वळी परस्पर हेतथी फूलना दडा मारेछे तेथी बचाव करवा सारु चमकीने माछलीनी गति धारण करेछे एवी रीते अनेक प्रकारना मनगमता खेल करेछे एम करतां केटलेक दिवसे कुंवरीने लायक जाणीने राजाए विद्याभ्यास करवानी आज्ञा करी एटले गुरु हेतथी भणाववा लाग्या, तेथी कुंवरी पण जाणे गुरुना म्होडामांथी अक्षरोनुं आकर्पण करती होयनै? तेवी रीते छंद शास्त्र, धर्म शास्त्रनी स्मृतिओ, काव्य शास्त्र, नीतिशास्त्र, साहित्य, ज्योतिप, गायन, वेद अने कोकशास्त्र, ए सर्वनो अभ्यास करी सर्व विद्यामां माहितगार थई. ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

संग सहेली सब पढी, कुसुमावलि तिहि साथ ॥
कोंन प्रवीन प्रवीनसी, काव्य करन समराथ ॥ १४ ॥

अर्थ. कुसुमावळि विगेरे सर्व साहेलीयो तेनी साथे भणीयो; पण कळाप्रवीण जेवी काव्य रचवामां बीजी कोण चतुर अने समर्थ थई सके? अर्थात् कोय नहीं. ॥ १४ ॥

तब नृप दुज दच्छा दई, भई कुमरि बय संध ॥
नीतपाल निज मन मुदित, सोधनलगे समंध ॥ १५ ॥

अर्थ. त्यांरे राजाए कुंवरीनी परीक्षा लेइ भणावनार ब्राह्मणने गुरु दक्षिणा दइ प्रसन्न कर्या; त्यारबाद कुंवरी लायक उम्मरनी थई एटले नीतिपाळ राजा मनमां हर्ष धारण करी सगाइ करवासारु सारो वर शोधवा लाग्या ॥ १५ ॥

॥ गाहा ॥

मनछापुरी प्रसंगं, राज सु नीतपाल रजधानी ॥
उद्भव कला प्रवीने सप्त प्रवीन सागरो लहरं ॥ १६ ॥

अर्थ. मनछापुरीना प्रसंगथी नीतिपाळ राजानी राजधानीनुं वर्णन तथा कळाप्रवीणनुं जन्म चरित्र ए सर्व वृतांत युक्त प्रवीणसागर ग्रंथनी सातमी लेहेर समाप्त थई. ॥ १६ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कलाप्रवीन उद्भवो नाम सप्तमो लहरं समाप्त. ॥ ७ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां सप्तम स्तरंगः समाप्तः ॥ ७ ॥

॥ अथ तरंग शिखाबंध ॥ टीका कारोक्त ॥ दोहा ॥

गुरुथी सब विद्या ग्रहण, राजनीति शुभ रंग ॥
शिशु पनमां सागर चरित्र, अष्टम तवे तरंग ॥

॥ अथ रससागर चरित्र बर्नन दोहा ॥

नृप प्रदीप आतमज़ तस, ग्रह्यो न गनक प्रमान ॥
सोधि सुभग दीनो सुतिहि, रससागर अभिधान ॥१॥

अर्थ. प्रदीप राजाए पोताना कुंवरनुं नाम पाडवासारु ते जोशीनुं कहेवुं न मानी सारुं लागे तेटलावास्ते शोधीने रससागर एवुं नाम आप्युं. ॥ १ ॥

बढत बेस दिन दिन बढें, रूप सुमति रति रंग ॥
चढत सु शशि सागर लहर, यों रससागर अंग ॥ २ ॥

जेम चंद्रनी कळा वधवाथी समुद्रनी लेहेरो वधती जायछे तेम दिवसे दिवसे रससागरनी उम्मर वधवाथी रूप, सारी बुद्धि, रतिरंग विगेरे उंचा गुणो वधता जायछे. ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

सप्त बरष हुअ संध, पंडित ढिग बेठे पढन ॥
जो गुरु कहत प्रबंध, सो सहसा सीखत सबें ॥ ३ ॥

अर्थ, सात वर्षनी उम्मर थयापछी रससागर पंडितनी पासे वेशी विद्याभ्यास करवा लाग्या. विद्यागुरु जे जे प्रबंध कही संभळावेछे ते सघळो प्रबंध तत्काळ शीखी जायछे. ॥ ३ ॥

॥ छप्पय ॥

प्रथम बरन पहिचान, अंक मत्ता सु अनूक्रम ॥
पिंगल छंद प्रमान, अमर व्याकर्न समृति भ्रम ॥
पंच काव्य षट शास्त्र, राजनीती सब जानी ॥

गनक भेद साहित्य, समुझि संगीत सुबानी ॥
पुनि कोक कला अनुमान पढि, भिन्न बेद भेद सुग्रहें ॥
महाराज रीझ मनहंस, दुज द्वादश पुर दच्छादहें ॥ ४ ॥

अर्थ. पेहेलुं अक्षर ओळखवानुं ज्ञान मेळवी पछी अनुक्रमे अंकगणितनो अभ्यास कर्यो, तेमज पिंगळ, छंदनां प्रमाणो, अमरकोश, व्याकरण, पराशरादि स्मृतिओ, धर्म शास्त्र, रघुवंश कुमार विगेरे पंच काव्य, वेदांत, न्याय, सांख्यादि छ शास्त्र, अने राजनीति विगेरे सघळी बाबत जाणी लीधी. वळी पोताना ज्ञानमां वधारो करवा सारु ज्योतिष शास्त्र, साहित्यशास्त्र अने संगीत शास्त्रनी बाबत पण समजी गया, फरी कोक शास्त्रना विचारो जाणीने वेदना जूदा जूदा भेदोनुं ज्ञान झडपथी मेळवी लीधुं. आवी रीते कुंवरने थोडा दिवसनी मुदतमां हुशीयार कर्या तेथी प्रदीप राजाए मनहंस पंडितउपर खुशी थइ तेमने बार गामनुं इनाम दक्षिणामां आपी दीधुं ॥ ४ ॥

॥ अथ अन्य विद्याभिधान ॥ दोहा ॥

भ्रमरावृत मुदिगर भ्रमन, कुस्ती गति कमचार ॥
अपर उडावन तन सुमन, कीने राज कुमार ॥ ५ ॥

चक्रदंड पीलवा, मुद्गर फेरववा, कुस्ती करवी, मल्लयुद्धना दाव पेच, फूल सरखा पोताना नाजुक शरीरथी उलट सुलट गुलांटो खावी ए विगेरे सघळी जातनी अंगकसरतमां आ राजकुमार माहितगार थइ गया. ॥५

बांक बनैटी अरु पटा, धनुविद्या सब साध ॥
बाज फिरावन राज विधि, आखेटक आराध ॥ ६ ॥

लेजम, बलांटी, पटा, अने धनुर्विद्या विगेरे लडाइनी कळाने साधी लइ घोडा खेलववानी रीत, राज्यनी केळवणी अने सीकारना भेदोने पण जाणी लीधा. ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

राज नीतिकी रीत, रससागर जानें सबें ॥
सोय कहौं करि प्रीत, सुच्छम भेद सु संग्रहें ॥ ७ ॥

अर्थ. सर्व राजनीतिनी रीत जे रससागर जाणेछे तेनुं वर्णन प्रीतिथी थोडाएक भेदो साथे टुंकी मतलबमां कही संभळावुंछुं. ॥ ७ ॥

॥ अथ राजनीति बर्नन ॥ छंद रोला ॥

राजनीतकी रीत, एह रससागर जानें ॥ करि मज्जन नित प्रात, देव सेवा अनुमानें ॥ हय गय शाला देखि, अस्त्र विद्या आराधन ॥ आरोहे आरूढ, बाग बन नग्र निहारन ॥ कोट खंध कैबांन, सलैखानां सु निहारें ॥ किंकर निज निज थान, सावधान सु संभारें ॥ प्रजा अरज पहिचान, तास तकसीर सुधारत ॥ जिहि जिहि जैसो दोष, दंड तैसो तिहि डारत ॥ साच वात संग्रहें, जूठ परतीत न आवें ॥ चुगल चोर हुन्नरी, समयके लिये निभावें ॥ निज अमीर उमराउ, पुरानें मान न खंडे ॥ दीन दुजन प्रतिपाल, गुनेगारी ग्रह दंडे ॥ पुनि प्रधान दीवान, मान दिन दिन सु बढावें ॥ सरजोर सु उथ्थपें, हुकुम हाजर सु दृढावें ॥ कविकी मति वत दान, सूर सनमान सदाहीं ॥ करे हुकुम हित काम, रीझ पावतहें वाहीं ॥ सेंन पुरानो अटल, नयो समया सिर राखें ॥ वेध सु कारिय वेध, हेत हित कारिय दाखें ॥ कबहु होत पल कठिन, तबहुं हिम्मत नहिं छंडे ॥ आप विकट आगमें, ईश बिसवास सु

मंडे ॥ सेवक सामि सु धर्म, पटो दूनो सोइ पावें ॥ द्रोहि धर्म जो होत, ताहिको मूल मिटावें ॥ निज पैदास निहार, पटह भाग सु तिहि कीजें ॥ एक भरत भंडार, दान पुनि एक सु दीजें ॥ तीन सेंन प्रति खरच, एककी एह द्रढाई ॥ राज काज पर गाह, बाज गज राज खवाई ॥ नित प्रति चातुर संग, मूढ सांमीप न आनें ॥ भूखन बसन सुधारि, सभा रचबो नित जानें ॥ राग रंग रीझबो, रीझ जैसी तैसो दत ॥ कामनि विविधं बिलास, कोक चारित्रनकी गत ॥ आखेटक अभ्यास, कैफ करबो कोही दिन ॥ मित्र हेत अरि दहन, खटक बिसरे न कबी मन ॥ ८ ॥

अर्थ. जे राजनीतिनी रीतो रससागर जाणे छे अने जे प्रमाणे पोते वर्तेछे तेनुं वृत्तांत आ प्रमाणे छे. हमेशां प्रातःकाळमां वेहेला उठी स्नान करी पवित्रपणे देव पूजन करेछे. पछी गजशाळा अने अश्वशाळाने तपासी युद्धागारमां जइ तमाम जातना हथीयारोनो तपास करे छे. त्यारबाद घोडाउपर स्वारी करी सेहेरसुधारो जोई बागबगीचा अने वाडीओनी सेहेल करेछे. त्यांथी फरीने गढ, कोठा, खाइ, तबेला, अने शीलेखानाने तपासीने पछी नोकरो अने पेहेरगीरो तेमज थाणाना सीपाइयो सावध थइ पोतानी नोकरीउपर हाजर रह्याछे के नहीं? तेनो तपास करी पाछा राजमेहेलमां आवी सभामां रैयतनां कामो तपासवा बेसे छे. प्रजानी अरजनां लखाणउपर ध्यान दई तोहोमतदारनी कसुर जोई हुकुमनामा करी जेनी जेवी तकसीर ते मुजब योग्य दंडथी शिक्षा करेछे. साची वातने ग्रहण करेछे ने तेने जूठी वातनी तो प्रतीती आवती नथी. चोर, चुगलखोर अने हुनरी एवा लोको कोई समयउपर काम आवे तेटलावास्ते ते-

ओने नभावे छे तेमज पोताना अमीर, उमराओ, सामंतो अने जूनां माणसोनुं क्यारे पण अपमान करता नथी. दुर्वळ अने आधारविनाना ब्राह्मण लोकोनुं संरक्षण करेछे. गुन्हेगारना घर जप्त करी ते पासेथी दंड वसुल लेछे. वळी प्रधान, दीवान, अने कारकुनोना होदा तथा इलकाब माननी साथे दिवसे दिवसे वधारेछे. शिरजोर माणसने पोतानी नोकरी तथा राजधानीथी दूर करेछे ने राजाना हुकमप्रमाणे नीतिथी चालवानी असर नोकर अने प्रजाना हृदयमां ठसावेछे. कविता रची लावनार कविओने तेमनी विद्या अने वृद्धिप्रमाणे दान आपेछे, तेमज हमेशां शूरवीरोनुं सन्मान करेछे. जे माणस हुकुम प्रमाणे फतेह मेळवेछे ते माणस राजकुमारपासेथी म्होटी रकमनुं इनाम पामेछे. जूनी फोजने तैयार राख्याछतां वखते नवा सिपाइयोनी सेनामां भरती करी तेओने कवायत शीखवेछे. वेधीला माणससाथे वेध, अने हेतुसाथे हेत राखेछे. क्यारेक कठण वखत होय त्यारे पण हिम्मत छोडी बेसता नथी. विकट अने अगम्य स्थळमां जवुं होय तो पोते धैर्यताथी प्रवेश करेछे अने परमेश्वरउपर विश्वास संपूर्ण राखेछे. स्वामी सेवकना धर्मने जाणनारा नोकरो बमणो पगार खायछे. वळी जे धर्मना द्वेश करनारा होयछे, तेओना तो मूळ खोदी काढेछे. पोतानी वार्षिक पेदास जोइ तेना छ हिस्सा करी एक हिस्सो खजानामां दाखल करेछे, एक हिस्सो दान पुन्यना काममां खरचेछे, त्रण हिस्सामांथी तमाम फोजनुं खरच काढे छे, अने एक हिस्साथी राज्यनुं खरच तथा हाथी घोडाओनी खोराकीनुं पुरुं पाडे छे. निरंतर चतुर अने विद्वानोनो संग करेछे, अने मूर्ख लोकोने तो पासेज आववा देता नथी. सुंदर लुगडां अने घरेणां धारण करेछे, तेमज सभा रचवानी गोठवण पोते जातेज करेछे. राग रंग सांभळवाथी जेवी पोताने खुशी उपजे छे तेवुंज गायन करनाराओने इनाम वखसेछे. स्त्रीओसंबंधी जात जातना विलास, कोकशास्त्रनां चरित्र तथा तेना भेदो-

नो अभ्यास करी आ राजकुमार सर्व क्रियामां कुशळ थयाछे. हमेशां सीकार खेलवानुं अने केफ करवानुं पसन न पडवाने लीधे कोई कोई दिवसेज करेछे. मित्रनुं हित, अने शत्रुनो डस क्यारे पण मनथी विसारता नथी. ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

भेद यहें जानें सबें, रससागर सुकुमार ॥
नृप प्रदीप परि हें सदा, राज काजको भार ॥ ९ ॥

अर्थ. आ सघळा भेद रससागर कुमार जाणेछे, परंतु सर्व राजकारभारनो भार प्रदीप राजाउपर छे. (कुंवरने निश्चिंत राखवासारु राज्यनुं काम पोतेज चलावेछे.) ॥ ९ ॥

यातें कुमर न काज कछु, मन वत सुख बिलसंत ॥
कुल वय सम रजपूत कवि, आव्रत रहत अनंत ॥१०॥

अर्थ. माटे कुंवरने कांइ कामकाज करवुं पडतुं नथी जेथी मन गमता सुखभोगमां विलास करेछे, अने अनेक तेना जेवडाज कुळवान राजपुत्रो तथा कवीओ विंटाइने तेनी पासे ने पासेज रहे छे. ॥ १० ॥

॥ गाहा ॥

सागर मित हितकारी, भारतिनंद कवि रविजोतं ॥
वीरभद्र सत्रसालं, रतनप्रतापं कुमार उमराहं ॥ ११ ॥

अर्थ. सागरना हितेच्छु प्रिय मित्रोना आ प्रमाणे नाम छे. भारतीनंद, रविज्योतिकवि, वीरभद्र, सत्रसाळ, रत्नप्रताप अने कुमार उमराओ ए छ अने रससागर एवी रीते सात मित्रोनी मंडळी छे. ॥११॥

॥ छप्पय ॥

सतरंजादिक खेल, कवहुं गुन ग्रंथ बचावें ॥
सुरापान कब मगन, कवहुं संगीत नचावें ॥

कबहुं भगल मल कबहुं, कबहुं नट देखत साधन ॥
देत रीझवत दान, बसन वाहन धन भूषन ॥
आखेट करत कबहू अरन, प्रति उदान उतरत मुदित ॥
रस रंग राग नित नित नये, दिन दिन बिहरत यह जुगत

अर्थ क्यारेक सतरंज, अने ज्ञानबाजी आदी खेलनी रमत रमेछे, क्यारेक सुखदायक ग्रंथोनुं वंचाण करावेछे, क्यारेक सुरापानथी मग्न रहेछे, क्यारेक संगीत तथा गायनना भेद प्रमाणे नाच मुजरो करावेछे, क्यारेक पाडाओनी लडाइ अने मल्लयुद्ध जुवेछे, क्यारेक नटना खेलनुं साधन जोइने लुगडां, घरेणां, द्रव्य अने वाहन ए सर्व रमत करनारने रीझीने आपेछे, वळी क्यारेक सिकार करवा जायछे त्यारे वगीचामां उतरेछे, तेमज हर्षथी बाग वगीचानी सेहेल करेछे अने नवी रसरागनी गम्मतथी युक्ती पूर्वक दिवसे दिवसे रमण करेछे. ॥ १२ ॥

॥ गाहा ॥

द्विज विद्या उपदेशं, राजनीत बरनन संछेपं ॥
रससागर सुचरित्रं, अष्ट प्रबीन सागरो लहरं ॥१३॥

अर्थ ब्राह्मणे करावेलो विद्याभ्यास, संक्षेपथी राजनीतिनुं वर्णन, तथा रससागर राजकुमारना बालचरीत्र संबंधी व्रत्तांत युक्त प्रवीण सागर ग्रंथनी आठमी लहरी संपूर्ण थइ. ॥ १३ ॥

इति श्री प्रबीन सागर ग्रंथे रससागर बाल चरित्र तथा-राजनीति भेदो नाम अष्टमा लहरि समाप्ता ॥ ८ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री वावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रवोधिनी टीकायां अष्टम स्तरंगः समाप्तः॥ ८ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

चित हर्षि भूप सिकार चडशे, अश्व गजथी ऊपडी ॥
ए घडी अंबर गडगडी धर, मेघनी पडशे झडी ॥
मद पान करतां प्रश्न करशे, सुकवि प्रति पर गो थतां ॥
रणमाल कवि टीका रचे, नवमी लहरमां निरखतां ॥ १ ॥

अथ आखेटक प्रसंग ॥ दोहा ॥

रससागर इहि बिधि रहत, अति आनंद बिलास ॥
भयो बेस द्वादश वरष, आयो चातुर मास ॥ ॥ १ ॥

अर्थ. एवी रीते रस सागर अति आनंद विलासमां रहेछे एम करतां बार वर्षनी उम्मर थइ तेवामां चोमासाना दिवस आव्या. ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

रस सागर इक समय, मिंत मिल सौध बिराजत ॥
मेघराग गुनि गात, गहर धुनि अंबर गाजत ॥
सुरा पान महिं मगन, याद आखेटक आयो ॥
पंच सहस असवार, प्रति कुमर हुकम कहायो ॥
सजि सिलह सुभट पख्खर तुरिय, बोले म्रध नोबत बजी ॥
पैंदल हजार पंचहु लिये, दश सहस्र सैना सजी ॥ २ ॥

अर्थ. एक समये रस सागर मित्रोनी साथे मळी राज मेहेलमां वीराजमान थया, त्यांहां गुणीजनो मेघरागनुं गान करेछे तेमज आकाशमां गेहेरी मेघनी गर्जना गाजे छे. सुरापानथी मग्न थया ते वखत सीकारे जवानी वात याद आवी तेथी कुंवरे पांच हजार स्वारोने तैयार थवा हुकम फरमाव्यो. सुभटो घोडाउपर पाखर नाखी बखतर पेहेरी तैयार थया, चोपदारना ललकारासाथे नोबतना अवाज थवा

लाग्या, तेमज पांच हजार पायदळने पण साथे लीधुं एवी रीते दश हजार युध्धाओना लशकरने सज कर्युं. ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

दश गय पंच हजार हय, पैंदल पंच हजार ॥
रससागर महराजको, चढ्यो सु सहज सिकार ॥ ३ ॥

अर्थ. दश हाथी, पांच हजार घोडा, पांच हजार पायदळ एवी रीते रससागर महाराजानुं एटलुं लशकर तो सेहेज शिकारवास्ते चड्युं. ॥३॥

॥ अथ छंद पद्धरी ॥

सागर कुमार साजित सिकार ॥ लीनी सु फोज दश सहस लार ॥ नोवत सुनाद छूटे निसांन ॥ दुर्जन सु त्रास दिशहू दिशांन ॥ बाजंत तूर भेरी बिशाल ॥ कैबांन बांन केते कमाल ॥ सागोश स्वान चीते सुसंग ॥ बेहेरि सुबाज जुररा बिहंग ॥ लगरा सुझगर तूरमचि लीन ॥ कूही सुबास कर बासकीन ॥ शकरा सुपान मीरहु सिकार ॥ दल मिलित आय दरबार द्वार ॥ महराज चढत लीनी सलाम ॥ धुनि सुनि लखंत जन धाम धाम ॥ उच्चार मिरध नीसान अग्र ॥ निकसे सुमध्य दिन वहिर नग्र ॥ तिहि किय मुकाम सरितासु तीर ॥ बन्नात मोंमपोसी सवीर ॥ है्सतह संग वानिज दुकान ॥ परि पूर साथ सह खान पान ॥ ४ ॥

अर्थ. सागर कुमार जथाबंध दश हजारनी फोज लेई शिकारने वास्ते सज्ज थया ते वखत सारा अवाजथी नोवत वागेछे तेमज नीशांन

फरकी रह्यांछे तेना प्रतापथी दशे दिशाओनां दुर्जन लोको त्रास पामेछे. म्होटां नगारां रणतूर विगेरे वाजित्र मोटा अवाजथी वागेछे. कोकबांण चलावामां चतुर केटलाएक युद्धाओ आगळथी आवी हाजर थइ रह्याछे. सागोश, सीकारी कुतरा, चित्रा, बाज, बेहेरी अने जुररा विगेरे पक्षीओ तेमज लगरा, झगड वीलाडा, तुरमचीं, कुही (बाजनी एक ज़ात) बास विगेरे पक्षीओना पांझरां हाथमां लेइ केटलाएक शीकारीओ आवी उभाछे तेमज केटलाएक अमीर सरदारो हाथमां शकरा लइने आवेछे. आवी रीते लशकर एकठुं थइ दरबारगढना दरवाजा आगळ आवी हाजर थयुं महाराज चल्या के तरत सघळा युद्धाओ सलाम करी अनुक्रमे चालवा लागा. वाजित्रना अवाज सांभळीने लोको पोतपोताना घर मांथी नीसरी महाराजानु दर्शन करेछे. चोपदारना ललकारसाथे पंचरंगी नीशान आगळ चलावीने महाराजा धीमी गतिथी वपोरनी वखते अभिजित मूहूर्त्तमां शेहेर वहार सधाव्या, अने त्यांहां सुंदर नदीना कीनाराउपर मुकाम कर्यु. वनातना मोमपोशी तंबु ताणी लीधा. साथे वशें वाणीआनी दुकानो हती जेथी करी आखी फोजने खावा पीवानी सघळी सामग्री पुरी मळती हती. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुध पख मास अपाढ शुभ, तिथि सप्तमि बुधवार ॥
अमरजोग अभिजित नखत, सागर चढे सिकार ॥५॥

अर्थ अपाढ मासना शुक्ल पक्षनी सातम अने बुधवारने दिवसे अमृतसिद्धि योग अने अभिजित नक्षत्रनुं सारुं मूहुर्त्त लइ रससागर महाराजा शिकारे चढ्या. ॥ ५ ॥

किय मुकाम सरिता सुतट, बिच महराज सबीर ॥
घन बरसत सरसत तरल, मुख दरसत न मिहीर ॥६॥

अर्थ नदी कीनारे लशकरनी वच्चे महाराजानो तंबु ताणीने मुकाम कर्यु ते वखते वरसाद वरसेछे, पवनना झपाटानी साथ वीजळी चमकेछे, अने माणसोनां मोढां तथा सूर्य देखातो नथी. ॥ ६ ॥

अथ वर्षा बर्नन ॥ छंद हारक ॥

घोर घटन जोर पटन मोर अटनपें रटें ॥
चातुक धुन झिल्लव गन भेक सरनके तटें ॥
गाज गहर बीज सहर सीत लहर मारुतं ॥
नील धरन शैल झरन बेल तरन आव्रतं ॥
चाप सुरन पंच बरन अंबर मनि छाहियं ॥
दंपति हित चाहत चित ब्रैहि बिपति लाहियं ॥
बूढ दरस बूंद बरस श्रोत भर सु छल्लियं ॥
राज कुमर साथ सुघर ता अवसर चल्लियं ॥ ७ ॥

अर्थ काळा रंगनी घाटी मेघनी घटा चडी आवीछे, वरसादे मुकेला वरामांहेथी धोरीआनी माफीक पाणी जोरथी वरसेछे, पासेनां वनमां मोर मधुर शद्ब करेछे. तळावने कीनारे चोतरफ बपैआ, तमरां, अने देडकां अवाज करी रह्यांछे, मेघनी गंभीर गर्जना साथे वीजळी सळावा करे छे, थंडो पवन लेहेरोथी वायछे, जमीन नीली थइ गइछे, पहाडामांथी नीरझरणां चाल्यां जायछे अने वेल्यो झाडनी साथे वींटाइ गइछे, पंचरंगी खेंचेलुं इंद्रनु धनुष देखायछे, वादळांओनी घटाथी गगन मणी सूर्य ढंकाणोछे, आवा वखतमां संयोगी स्त्री पुरुषो हितनी साथ एक बीजाने चित्तमां चाहेछे अने वियोगी लोको दुःख पामेछे, बूढ एटले वर्षादमां उपजता राता रंगना जीवडाओ देखायछे, मेघनां बिंदु वरसवाथी नदीना कीनारा उपरांत पाणी भराइ जवाने लीधे तेना प्रवाह छलकता देखाय

छे आवा वरसादना वखतमां राजकुमार रससागर साथे सुघडपुरुषो लई शीकार करवा सारु चाल्या- ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

घन बरषत गत जगत चख, छित छहियत तम व्रंद ॥
नरपति निज मित मिल सकल, हित वत करत अनंद॥८॥

अर्थ. मे वरसवाथी जगत चक्षु सूर्य ढंकाइ गयोछे अने चोतरफ जमीन उपर अंधारु छवराइ गयुंछेः–आवा समयमां महाराजा रससागर पोताना सघळा मित्रोनी साथे मळी मनगमतो आनंद करेछे. ॥ ८ ॥

निशिकर सुत बासर बितित, सुरगुरु तमी ब्रतंत ॥
गत सुजाम परि गुन घरी, शिवा सु सुर उच्चरंत ॥ ९ ॥

अर्थ. चंद्रना पुत्र बुधवारनो दिवस वीती गयो अने गुरुवारनी रात थई तेमज एक पहोर अने त्रण घडी रात्री वीत्यापछी शीवा (फ्याउडी) सारा स्वरथी शद्ब बोलवा लागी. ॥ ९ ॥

सुर उत्तर ईशान बिच, फुनि दच्छन चित धार ॥
सो रससागर सुकवि प्रति, बूझ्यो सुकन बिचार ॥ १० ॥

अर्थ. ते शद्ब उत्तर अने ईशाननी वच्चे थयो वळी तेटलामांज दक्षिणमां थयो. आवी रीते फ्याउडीनो शद्ब सांभळीने रससागर राजकुमार पोताना नामांकित कवीने शुकनसंबंधी विचार पूछवा लाग्या. ॥ १० ॥

अथ कविप्रति रससागरोक्त ॥ दोहा ॥

अहो सुकवि रविजोत तुम, जानत राज बसंत ॥
पशु पंछी आगम उकति, कहोसु यह वरतंत ॥ ११ ॥

हे? रवीजोत कवी, आप राजवसंत विगेरे शुकनना ग्रंथो जाणोछो

तेमज पशु पक्षीनी भविष्य वाणी पण जाणोछो, माटे ते वात कहो.॥११॥

अष्ट दिशा पति पाहुने, अंत्र दिशा सु निकेत ॥
ज्वाल आदि अठ भेद कह, कहा कहा फल देत ॥१२॥

अर्थ. आठ दिशाना स्वामी के जे दिशामां जेनुं घर हमेशां रहेछे ते तथा तेना परोणा तथा ज्वाला आदिक आठ भेद, अने ते शुं शुं फळ आपेछे ते कहो?॥१२॥

॥ अथ रससागर प्रति कवि रविजोति उक्त ॥
॥ शुकन भेद ॥ दोहा ॥

करनहार किरतार सो, कहनहार कहि देत ॥
तुम बूझत ते ते कहौं, प्रश्न अनुक्रम लेत ॥ १३ ॥

अर्थ. कविये कह्युं के कहेनार कही दे. पण करनार तो परमेश्वरछे. माटे तमे जे प्रश्नो पूछ्यां तेना उत्तर अनुक्रम लईने कहुंछुं.॥१३॥

॥अथ शुकन भेद दिशा स्वामी भाव ॥ छपय॥

पूरव रबि ऋषिवान, अगनि शशि खत्रबंधु रह ॥
दच्छन कुज नृप जान, बूध नैरुत बानिक कह ॥
पच्छिम सुरगुरु बिप्र, बाबि भार्गव आसुरपति ॥
मंद शबर उत्तरह, ईश ईशानकोंन थिति ॥
आदित्य निशादिन आप ग्रह, अनु दिन इक इक घर खसे
शंकर अडोल औरे सबे, पुनि आदित निज ग्रह बसे॥१४

अर्थ. पूर्व दिशामां खेडुनुं घरछे.माटे ते दिशानो ते स्वामी कहेवाय, अने त्यां खेडु रविवारे रहे, अने अग्निकोणमां रजपूतनुं घरछे. ते त्यां सोमवारे रहे. दक्षिणमां राजानुं घरछे, ते त्यां मंगळवारे रहे. नैऋत्यमां वाणियानुं घर, ते त्यां बुधवारे रहे. पश्चिममां ब्राह्मणनुं घर. ते त्यां गुरुवारे रहे. वायुकोणमां पादशाहनुं घर ते त्यां शुक्रवारे रहे. उत्तरमां

भिल्लनुं घर ते त्यां शनीवारे रहे. अने ईशानमां शिवनुं स्थानछे. रविवारे दिवसने रात (खेडु) पोताने घेर रहे. पछी दररोज (डाबी तरफ) एकेक दिशामां पारके घेर परोणो रहे. एज रीते शिवजी विना बिजा बधाय, अकेक घर बदले अने खेडु फरीने वळी रविवारे पोताने घेर आवीने रहे. पण शिवने घेर कोइ परूणो रहे नहीं. अने शिव कोइने घेर जाय नहीं (खेडु,ब्राह्मण,रजपूत, पादशाह, राजा, भील्ल,अने वाणियो, तेओ एक एकनी पाछळ रहीने दररोज डाबी तरफनी अकेकी दिशा बदलता रहे, तोज उपर कहेला वारोमां पोतपोताने घेर पहोचे. वळी आ लहेरना ९ मा छंदमां कहेला गुरुवारे एकवीशमा छंदमां कह्या प्रमाणे राजाने घेर वाणियो परोणो आवे).॥१४॥

॥ अथ पाहुने भेद ॥ दोहा ॥

कृपिकर्त्ता ब्रत नृप वनिक, दुज असुरेश निशाध ॥
ज्यौं सु जगत बिबहार हे, त्यौं बीरज घटि बाध ॥ १५ ॥

अर्थ. खेडु, रजपूत, राजा, वाणियो, ब्राह्मण, पादशाह अने भिल्ल तेओनो जेवी रीते जगतमां व्यवहार छे. तेवी रीते वधतुं ओछुं फळ तेओनुं जाणवुं.॥१५॥

चलत पंथ गति पाहुने, थानक थानकि जान ॥
छल बल जीत अजीत यह, जानो परखि पयान ॥१६ ॥

अर्थ. परूणा रस्ते गति करीने चाले, त्यारे जे स्थानके आवे, ते तथा ते स्थानकनो धणी कोणछे. ते जाणीने ते उपरथी प्रयाण करनार मुसाफरे अर्थात् शुकन जोनारे छळ बळ जीत अने हार, ते परीक्षा करीने जाणवां. जेमके भिल्ल रवीवारे पोताने घेरथी एटले उत्तर दिशाथी चालीने वायु कोणमां पादशाहने घेर परूणो आवे, माटे रविवारे पश्चिममां फाउडी बोले एवो जोग आवे, त्यारे शुकन जोनारे पादशाहना दरबारना

गुण केवा छे. तेवुं फळ, तथा भिल्लना गुण केवा छे तेवुं फळ थशे.एम जाणवुं, इत्यादि ॥ १६ ॥

कई दिशामां कोनां घरछे अने कये वारेत्यां कोण परूणा आवे छे.तेनुं पत्रक.

दिशाओनां नाम.	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वाव्य	उत्तर	ईशान
कोनां कोनां घर	खेडुनुं घर	रजपूतनुं घर	राजानुं घर	वैश्यनुं घर	ब्राह्मणनुं घर	शाहनुं घर	भिलनुं घर	महादेवनुं घर
रवीवार	खेडु	ब्राह्मण	रजपूत	पादशाह	राजा	भिल	वैश्य	०
सोमवार	ब्राह्मण	रजपूत	पादशाह	राजा	भिल	वैश्य	खेडु	०
मंगळवार	क्षत्रि	पादशाह	राजा	भिल	वैश्य	खेडु	ब्राह्मण	०
बुधवार	पादशाह	राजा	भिल	वैश्य	खेडु	ब्राह्मण	रजपूत	०
गुरुवार	राजा	भिल	वैश्य	खेडु	ब्राह्मण	रजपूत	पादशाह	०
शुक्रवार	भील	वैश्य	खेडु	ब्राह्मण	रजपूत	पादशाह	राजा	०
शनिवार	वैश्य	खेडु	ब्राह्मण	रजपूत	पादशाह	राजा	भिल	०

॥ अथ दिशांतर स्थान भाव ॥ छपय ॥

उदित अगनि बिच अगनि, अगनि दच्छन बिच कूपह ॥
दछ नैरुत बिच वापि, नईरुत पच्छिम बागह ॥
पच्छ बावि मधि काठ, बावि उत्तर लच्छी वद ॥
उतर ईश रनथंभ, ईश पूरब सोनित नद ॥
अगनी सु कूप रन नद अशुभ, वापि भाव सम जानिये ॥
उपबनह काठ लच्छी सुभग, ज्वाल भेद अनुमानिये॥१७॥

अर्थ. पूर्व अने अग्निकोणनी वच्चे अग्नि कुंड छे. अने अग्निकोणअने दक्षिण दिशानी वच्चे कूवो छे. दक्षिण अने नैरुत्य दिशानी वच्चे वाव छे.

नैरुत अने पश्चिम दिशानी वच्चे बाग छे, पश्चिम अने वाव्य दिशानी वच्चे लाकडुं छे. वाव्य अने उत्तर दिशानी वच्चे लक्ष्मी कहिये. अने उत्तर ने इशान दिशा वचे रणस्थंभ छे. अने ईशान अने पूर्व दिशानी वच्चे लोहिनी नदी छे. तेमां अग्नि, कूवो, रणस्थंभ अने लोहीनी नदी, एटलां अशुभ छे. अने वाव्य सारी नहीं तेम खोटी पण नहीं, एवो तेनो भावार्थ जाणिये. बाग, लाकडुं, अने लक्ष्मी ते सारां जाणवां, ए रीते ज्वाळादि आठ भेदनुं अनुमान जाणवुं ॥ १७॥

॥ अथ ज्वालादि प्रहर भाव ॥ छपय ॥

सूर उदित इक जाम, ज्वाल पूरब दिश जानहु ॥
अगे अगनि प्रति धूम, छांह दच्छन अनुमानहु ॥
नैरुत धर निरधार, अस्त महिं पंक कहावे ॥
वावि बसत जलबंब, भसम उत्तर पर आवे ॥
अंगार बसे ईशान तब, प्रहर प्रहर भुगता दिशा ॥
चलि नीत रीत निज ग्रह रहे, बीतत इक दिन इक निशा १८

अर्थ. दररोज सूरज उग्या पछी एक पहोर सुधी ज्वाळा पूर्व दिशामां अने अग्नि कोणमां धूमाडो, अने दक्षिण दिशामां छाया, नैऋत्य दिशामां पृथ्वी, पश्चिम दिशामां गारो, वाव्यकोणमां जळनो बंब, उत्तरमां भस्म, अने इशानमां अंगारा रहे छे. एम जाणवुं. ते आठे कह्यां ते प्रत्येक पहोरे जमणी तरफ अकेकी दिशा भोगवे छे. ए रीते रातने दहाडाना आठ पहोरमां फरीने पाछां सवारमां पोतपोताने स्थानके रहे छे. जेमके दिवसने बीजे पहोरे ज्वाळा अग्निकोणमां जाय, त्यारे धूमाडो दक्षिणमां, छाया नैऋत्यमां पृथ्वी पश्चिममां, गारो वाव्यकोणमां, जळबंब उत्तरमां, भस्म ईशानमां अने अंगारा पूर्वमां जाय. एज रीते प्रत्येक पहोरे आठे फरे छे. ते स्पष्ट समजवानुं कोष्टक आ नीचे लख्युं छे॥१८॥

॥ अथ ज्वाळादि प्रहर कोष्टक ॥

	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैरुत्य	पश्चिम	वायु	उत्तर	ईशान
पेहेलो पोहोर	ज्वाळा	धूम	छाया	पृथ्वी	गारो	पाणी	भस्म	अंगारा
बीजो पोहोर	अंगारा	ज्वाळा	धूम	छाया	पृथ्वी	गारो	पाणी	भस्म
त्रीजो पोहोर	भस्म	अंगारा	ज्वाळा	धूम	छाया	पृथ्वी	गारो	पाणी
चोथो पोहोर	पाणी	भस्म	अंगारा	ज्वाळा	धूम	छाया	पृथ्वी	गारो
पांचमो पोहोर	गारो	पाणी	भस्म	अंगारा	ज्वाळा	धूम	छाया	पृथ्वी
छठो पोहोर	पृथ्वी	गारो	पाणी	भस्म	अंगारा	ज्वाळा	धूम	छाया
सातमो पोहोर	छाया	पृथ्वी	गारो	पाणी	भस्म	अंगारा	ज्वाळा	धूम
आठमो पोहोर	धूम	छाया	पृथ्वी	गारो	पाणी	भस्म	अंगारा	ज्वाळा

अथ ज्वालादि फल भाव ॥ छप्पय ॥

ज्वाल अगनि भय अशुभ, धूम मनकों मुरझावें ॥
छांह निफल क्रत काम, धरा आनंद उपावें ॥
कीच कुशल परि कष्ट, जलह सीतल सुखकारी ॥
भलो विभूती भाव, अतिहि संकट अंगारी ॥
मधि आदि अंत अनुमान करि, भलो बुरो फल भाव गहिं
चिंतह बिचारि चातुर घरी, सुकन भेद कोविद सु कहि १९

अर्थ. अग्नी झाळ भय विगेरे अशुभ फळने आपे, धूम मनने मुंझवण करावे, छाया निष्फळ काम करावे, पृथ्वी आनंद उपजावे, गारो कुशळता राखे पण घणुंज कष्ट उपजावे, जळ कामने थंडु करे पण अंत्ये

सुखकारी छे, ने भस्मनो भाव घणोज श्रेष्ट जाणवो, अने अंगारा अति संकट करनार जाणवा. आदि अंत्य अने मध्यनुं अनुमान करीने सारा नरसा फळनो भाव ग्रहण करेछे. मनमां विचारीने चार घडी सुधी चर्चानी साथ सुकवीए शुकन भेद कह्यो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सुकन सिंधु संछेप करि, कह्यो सुमति अनुसार ॥
अबजो आपुनकों भये, ताको कहौं बिचार ॥ २० ॥

अर्थ. शुकन भेद समुद्र जेवो अपारछे ते में मारी बुद्धिप्रमाणे संक्षेपे कह्यो हवे जे आपणने शुकन थयां तेनो विचार कहुंछुं. ॥ २० ॥

॥ अथ निज सुकन भाव ॥ छप्पय ॥

शिवा सु सुर रनथंभ, कहूं आहव उपजावें ॥
छांह धुम्रके मध्य, निफल जुध मन मुरझावें ॥
फुनि दच्छन उच्चार, नृपति गृह साह सिधावें ॥
जलह तहां ग्रह जोग, रारि हनि रीझ उपावें ॥
मनुंहार मानि उनकी सुफिर, आप सराहोगे वहें ॥
चत्र घरी जोग अनुराग चित, कहुं लगहें सुकनी कहें २१

अर्थ. प्रथम उत्तर अने इशाननी वच्चे रणथंभछे त्यांहा फ्यावडीनो शद्व थयो तेथी क्यांक लडाइ उपजावे, वळी छाया अने धुम्रनी वच्चे शद्व थयो माटे निष्फळ जुद्ध थाय अने तेथी मनमां मुंझवण करावे, तेमज दक्षिणमां उच्चार थयो तेथी त्यां राजाने घेर वाणीयो परोणो गयो छे अने त्यांहां जळनो जोगछे तेने लीधे राड मटाडीने रीझ उपजावे एटलुंज नहीं पण ते राजानी मीजमानी स्वीकारीने आप त्यांहां पधारी तेनां वखाण करशो. आ चार घडीना समयमां आवां शुकन थयां तेना

जोगथी त्यांहां कोइनी साथे प्रीतिथी मन लागशे एम शुकन जाणनार रविजोत कवी कहेछे. ॥ २१ ॥

॥ गाहा ॥

आखेटक सुपयानं, पावस गहन पंथ गिरि गहियं ॥
सुकन भेद अनुसारं, नवम प्रबीन सागरो लहरं ॥ २२ ॥

अर्थ. सीकार खेलवानी चडाइमां मेघ राजाना देखावनी साथे जंगल तथा पहाडने रस्ते जतां जे शुकन थयां तेना भेद संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी नवमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २२ ॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे आखेटक प्रयान सुकन भेद नाम नवमी लहरी समाप्त ॥ ९ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां नवम स्तरंगः समाप्तः ॥ ९ ॥

॥ अथ टिकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

सजि सेन सागर कुंवर सघळुं शोळ भेद सिकारना ॥
रमवा गया गिरि गहनमां करी सोळ दाडा नेमना ॥
दिन एक ओछे आविया नितिपाल सरहद पर यथा ॥
कविराज रणमल वरणवे दशमी लहरमां ए कथा ॥

अथ आखेटक विहार ॥ दोहा ॥

उभै प्रहर चरचा चली, कियो शयन सुख साज ॥
निशि बीति आनंद भर, उठे प्रात महराज ॥ १ ॥

अर्थ. एवीरीते शुकन संबंधी बे पहोर चरचा चाली त्यारपछी महाराजा रससागरे सुखथी पलंग उपर निद्रा करी, ए प्रमाणे आनंदथी रात्री वीती त्यारे प्रातःकाळमां महाराजा उठ्या. ॥ १ ॥

खान पान करिकें चढे, गिरि झंगर पथ लीन ॥
इत प्रतना महराज उत, इंद्र अडंबर कीन ॥ २ ॥

अर्थ. खान पान करी चडाई करीनें परवतनी झाडीनो रस्तो लीधो तेटलामां आंही जेम रससागर महाराजानी सेना चढी तेम आकाशमां इंद्रे आडंवर कर्यो. ॥ २ ॥

॥ अथ फोज वर्षा भाव एकत्र बर्नन ॥

द्रष्टांता लंकार ॥ छंद चोबोला ॥

सागरकी जु चढीहे चमूं इत, त्यों उत इंद्र घटा प्रसरी ॥
सूरनके कर शेल सकत्तिय, त्यों उत कन्यककों बिजुरी ॥
वाजत आनक नाद इतैं, उतकों घन घोर बजे गहरी ॥
तूर वजे सहनाइ इतैं, सु उतें धुनि मोरनकी उचरी ॥
मंद गयंद चले इतकों. उत बृंद सु श्याम मिले बदरा ॥
घोर सु पाखर घंटनकी, इत त्यों उत सोर करे ददरा ॥
गावतहें गुनि राग इतैं, उत राव उपावन झल्लवकी ॥
राज कुमार इतैं रकतांवर, त्यौं उत भा नव पल्लवकी ॥
वैरख ओर निसान इतैं, उत देव धनू छबिकों जुं धरे ॥
वानि वदंत नकीब इतैं, उत चातुक त्यों ललकार करे ॥
शात्रव दस्यु इतैं दुरगें, उत मंद पतंग मयूख करी ॥
सेंन इतैं रससागरको, सुरराज उतैं मनु होड परी ॥ ३ ॥

अर्थ. आंही जेम रससागरनी सेना चढीछे तेमज आकाशमां इंद्रनी घटानो प्रसार थयोछे. आंही जेम शूरवीरोना हाथमां रहेली सांग्यो अने भालां चमकेछे तेम त्यांहा सोना जेवी वीजळी चळकेछे. आंही जेम

म्होटा नगारांना नाद थायछे तेम त्यांहां गेहेरी मेघनी गर्जना गाजी रहीछे. आंही जेम रणतूर अने सरणाइयो वागेछे तेम त्यांहां मोरो शद्बना उच्चार करेछे. आंही जेम धीरा धीरा हाथीओ चालेछे तेम त्यांहां काळा रंगनां वादळांना जुथ्थ धीमे धीमे चाली भेळा थायछे. जेम आंही पाखर अने घंटना घोर शद्ब थायछे तेम त्यांहां देडकां सोर करेछे. जेम आंही गुणीजनो रागथी गायछे तेम त्यांहां तमरांना अवाजनो घणेणाट थइ रह्योछे. जेम आंही राजकुमारे रातां वस्त्र पहेर्याछे तेम त्यांहां नवां कुंपळनी राति कांती थइछे. जेम आंही आरबोनी वेरखे रंगबेरंगी निशान धर्याछे तेम त्यांहां पंचरंगी कांतीवाळा इंद्र धनुष्यने धारण कर्युंछे जेम आंही छडीदार पोकार करेछे तेम त्यांहां बपैया ललकार करी रह्याछे, जेम आंही आ सैन्य चढवाथी चोर अने शत्रुओ दूर जई संताइ गयाछे तेम त्यांहां सूर्यनां कीरणोने झांखां करी दीधांछे. एवी रीते आंही रससागरनुं सैन्य अने त्यांहां इंद्रनुं सैन्य ए बन्नेने जाणे परस्पर वाद पड्यो होयनै! तेम जणायछे. ॥ ३ ॥.

अथ अलंकार रूपक फुनी वर्षा बर्नन ॥ दोहा ॥

बन बनांत परूखर बनीं, घन कन पटा समाज ॥
झन झनांत खग घंट सुर, गिरि पावस गजराज ॥ ४ ॥

अर्थ. जेने वन रुपी बनातनी झूल बनीछे, मेघनी धारा रुपी पटा तंग विगेरे सामान छे. पक्षीओना कोळाहळ शद्ब रुपी घंटना शद्ब थायछे एवो वर्षा ऋतुना पर्वत रूपी हाथी शोभेछे. ॥ ४ ॥

अथ रूपकालंकार ॥ कबित्त ॥

बग पंत दंत क्रंत चपला कपोल चित्र, धारा धर सुंड दंड मद बुंद बरषात ॥ झल्लव झनंक लोह लंगर खनंक पा-

य, प्रबल समीर झर लागी फुतकार बात ॥ गजरव घन गाज सारसी पपीहा सुर, सुर धनु रंग रंग कसन कसे- हे गात॥ बद्दर गयंद वृंद दद्दरन मोर सोर, घुघ्घरन घोर चहुंओर घंट घननात ॥ ५ ॥

अर्थ. जेने बगलानी पंक्ति रूपी दांतनी कांति चळकी रहीछे, विज- ळीना सवकाररूपी कपोळनुं चित्र झळकेछे, मूशळ धारा रूपी सुंढ छे, वरसादनां झीणां फोरां रूपी मद झरेछे. तमरांना झणकार रूपी लोढा- नी सांकळ पगमां खणकेछे, वरसादनी वा झडी रूपी सुंढमांना फु- त्कार उडेछे, मेघनी गर्जना रूपी चीस पाडेछे, सारस अने बपैयाना शद्व रूपी तेनो अवाज छे, पंचरंगी इंद्र धनुष रूपी रंगीन बंधनोथी ते- नां शरीर कस्यांछे, एवा वादळां रूपी हाथीना समुदायने देडकां तथा मोरना शद्व रूपी चोतरफ घुघराना घणणाट तथा टोकरा वागेछे. ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

रहें बरपत बरषें रहत, करत बलाहक छंद ॥
सागर चलि गिरिवर गहें, जहँ पशु पंछी बृंद ॥ ६ ॥

अर्थ. घडीकमां वरसेछे अने घडीकमां रही जायछे एवीरीते मेघ ग- म्मत करी रह्योछे. एवा वखतमां राजकुमार रससागर चालीने ज्यांहां पशु पक्षीओनां टोळांछे एवा पहाड तरफ गया. ॥६॥

॥ अथ सिकार ठोर बर्नन छंद छवी यथा ॥

आये सुराज ॥ आखेट साज ॥ गिरिवर उतंग ॥ जल स्त्रवत शृंग ॥ झर झरनि झार ॥ धुनि बार धार ॥ बहु भांति वृच्छ ॥ बन बेल गुच्छ ॥ निज निज सु नीड ॥ खग करत क्रीड ॥ सरवर बिसेक ॥ सरिता अनेक ॥ बाराह

बाग ॥ मृग जाग जाग ॥ वृक भाल बृंद ॥ कपि करत छंद ॥ सामर सु जूह ॥ शशके समूह ॥ पशु भांत भांत ॥ बरनें न जात ॥ गिरदी पहाड ॥ शत कोस झाड ॥ हरिताइ देख ॥ रीझे बिशेष ॥ सर तीर आय ॥ बिधकर वुलाय ॥ आयसा दीन ॥ दश फोज कीन ॥ खेलें पहार ॥ बीथी बिचार ॥ आपाप संग ॥ रस रीझ रंग ॥ वह गहन मांझ ॥ दरसाइ सांझ ॥ सब लैं सिकार ॥ कीनी गुजार ॥ महराज तांम ॥ दीनें इनाम ॥ वह ताल तीर ॥ कीने सबीर ॥ निज मिसल ठोर ॥ उमराओ ओर ॥ षट मिंत बास ॥ महराज पास ॥ ७ ॥

अर्थ महाराजा रससागर सीकारनी सामग्री लेइ पहाडमां आव्या. ते पहाड घणो उंचो छे, अने जेनां शीखरमांथी पाणी झर्या करेछे झरता नीरझरणांना पाणीनी धारानो अवाज वांरवार सांभळवामां आवेछे, जेनी आसपास जातजातना झाडो शोभी रह्यांछे तेमज वनमां वेल्यो अने फुलना गुच्छाओ झुकी रह्याछे, पोतपोताना माळाओमां पंखीओ कल्लोल करेछे. ज्यांहां घणां तळाव अने नदीओ छे अने ठेकाणे ठेकाणे वराह, वाघ, मृग, नारडांओ, अने रींछनां टोळां जोवामां आवे छे, वांदराओ रमत करी रह्याछे, सावरनां जुथ्थ, सांसलांनां टोळां अने जेनुं वर्णन करवामां न आवे एवां जात जातनां पशुओ फरेछे. पहाडने फरतां सो गाउमां अनेक झाडो रह्यांछे, जेनी नीलता जोई महा राजा अति प्रसन्न थया अने त्यांहांथी तळावने कीनारे आवी पाराधीओने बोलावी फोजनी दस टुकडीओ करी वननी गलीओमां शीकार रमवा आज्ञा करी. पोतपोताना सोवती साथे रस रंग अने खुशीथी शीकार रमवाने प्रसंगे ते जंगलमांज सांज थइ गइ त्यारे सर्व सीकारीओ सी-

कार लइ महाराजानी हजुरमां आवी सलाम भरी उभा रह्या त्यारे महाराजाए तेओने इनाम आपी खुशी कर्या अने ते तळावनेज कीनारे देरा तंबु नाखी मुकाम करी सभा भरी बीराजमान थया, बीजा अमीर उमराओ पोतपोतानी मीसलने ठेकाणे रह्या अने छ मीत्रोनो निवास तो महाराजानी पासेजछे. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सांझ भई सदसी रची, हेरत बिपिन बहार ॥
सागर द्वै कबिसें कह्यो, बरनो कबित सिकार ॥ ८ ॥

अर्थ. सांज थइ एटले सभा भरी महाराजा जंगलनी वहार जोवा लाग्या ते वखते सागरे बन्ने कवीओने कह्युं के सीकार संबंधी वर्णन कवीताथी कही संभळावो. ॥ ८ ॥

अथ भारती नंदोक्त ॥ कबित्त ॥ सिकार भेद यथा ॥

प्रथम धराकों निरधारियें कुरंग रूख, मूरकों जरूर करि डारियें सुमारसें ॥ छंडियें चपलताई खंडियें न सुरताकों, रीझियें सुथिर आन दीजियें सु तारसें ॥ जानीयें सु मारुत पिछांनीयें पटोंहीं ऋतु, एन नेन आयुधकों ल्याय एक लारसें ॥ साधककों तारबो जु मारबो हरन हेर, इतनो विचारनो तो फीरबो सिकारसें ॥ ९ ॥

अर्थ. पेहेलां जमीन, हरण अने झाड तेनो निर्णय करवो, शीकार करवो सेहेल पडशे के नहीं ए विचारवुं, पछी मेहेनत करीने हरणनां टोळांने सुमारमां लाववां अने चपळता छोडी दइ स्थिर चित्त राखवुं तेमज द्रष्टी चूकवी नहीं, हालवुं चालवुं बंध करी स्थिर थइ रहेवुं उतावळ नकरतां हरणनां टोळांने सिधि लेनमां पोतानी नजीक आववा

देवां पवन केवो वायछे अने तेमां केम करवुं ठीक पडशे ए रीते पवनने जाणवो. तेमज छए ऋतुनी परिक्षा करवी. हरण, आंख्यो, अने हथीयार, ए त्रणेने एक तारमां लावी हरण घेरी लावनार साधकने वचावी हरणने जोइने मारवुंः—आटलो विचार होय तोज सीकारमां फरवुं. ॥ ९ ॥

अथ फुनि रविजोतोक्त सिकार बर्नन ॥ श्लेष भेद ॥

॥ कबित्त ॥

आवन मिलावनको प्रथम बिचार भेद, जावन फिरावनको दाओ भूमि लखियें ॥ छरितु समे सुधार थिरता निहारें थान, अंबर समारबे दुराय देह अखियें ॥ सुरता लगाइयें नलाइयें सु आतुरता, संकित सुवाससें समीरहु न नखियें ॥ दब्बन दबावनको पाय अनुमान पंथ, सागर सिकारके समाजकों परखीयें ॥ १० ॥

अर्थ. पेहेलां पशुने आववानो तथा मिलाववाना भेदनो विचार करवो पछी जावानो अने फेरववानो आंही दाव लागशे के नहीं एवी रीते जमीनने जोवी. छ ऋतुमांनी हाल कइ रतुछे अने तेमां केम करवुं ठीक पडशे एवी रीते स्थिर अने हरकत न आवे एवुं स्थान जोई पेहेरेलां लुगडांने शरीरथी जुदा न पडे एवी रीते संभाळी राखवां पशु न देखे एवी रीते शरीरने गुप्त राखी दीर्घ दृष्टीए जोई रहेवुं. आतुरता न राख्या छतां संकेत स्थळमां वेशी रहेवुं अने सारा वस्त्रथी पवन पण नाखवो नहीं (कारणके लुगडुं उडवाथी पशु भडकी भागी जाय) दाववा दबाववाना रस्तानुं अनुमान करवुं, एवी रीते हे? सागर सीकारोपयोगी सर्व सामग्रीनी परिक्षा करवी. ॥ १० ॥

॥ अथ रससागरोक्त दोहा ॥

यहें समग्र सिकारको, कबि तुम कह्यो प्रमान ॥
भेद किते अभिधान जुत, बिधि बिधि कहो बिधान ११

अर्थ. हे? कवि, आ तमे सघळा सीकारनुं प्रमांण कह्युं पण तेनां नाम सहित केटला भेदछे तेनी विधि जूदी जूदी रीते कही संभळावो. ॥११॥

॥ अथ कबि उक्त दोहा ॥

बनचर खेचर बेधके, द्वादश भेद सिकार ॥
महाराज जानत सबें, फुनि हम कहें प्रकार ॥ १२ ॥

अर्थ वनमां फरनारां पशु, अने आकाशमां उडनारां पक्षीओना सीकारना बार भेदछे, ते सर्वे हे? महाराज, तमे जाणोछो तो पण आपें पुछ्युं तेथी तेनो प्रकार कहुंछुं ॥ १२ ॥

॥ अथ सिकार भेद अभिधान दोहा ॥

घेरे गोंड गाँडि सु कहि, नीडँ डोरँ अरु फंदँ ॥
मूँल डाँव पशुँ पंखँ विधि, घंटँ वेगँ यह छंद ॥ १३ ॥

अर्थ. घेरे, गाडें, गाँडी, नीडँ, डोरँ, फंदँ, मूळँ, डावँ, पशुँ, पंखँ, घंटँ अने वेगँ एरीते बार प्रकारना शीकारछे, ॥१३ ॥

अथ द्वादश सिकार भेद उदाहरन ॥ छंद मल्लिका ॥

आप थान एन हेर ॥ बाज बा कुजाक घेर ॥ अस्त्र दावसें हनंत ॥ घेरं तासकों कहंत ॥ नीर तीर खोधि वेध ॥ बैठ रेत राहबंध ॥ पीवतं पशू प्रहार ॥ गोंड तासको बिचार ॥ वेधकं गडी सुवास ॥ दाव देखि लाय पास ॥ वेधितं बिसास धारि ॥ गाँडियं यहे प्रकारि ॥ आवतं पशू ढ्ढाय ॥

वृच्छ बेधकं चढाय ॥ छांह आय अस्त्र छेद ॥ एह नींडको सु भेद ॥ नील वृच्छ डार हाथ ॥ साधकं वधीक साथ ॥ नीठ कीन बेध बान ॥ एह डोरँको प्रमान ॥ कच्छ चारके निकास ॥ आगमं प्रसार पास ॥ पीठसें करंत छंद ॥ बंध होत एह फंद ॥ बेध वृच्छ मूल धार ॥ साधकं हकें सिकार ॥ दृष्टि चोरि मारि लेत ॥ एह मूलँको सु हेत ॥ जानि आवनं निरंत्र ॥ कीन काठ जोरि तंत्र ॥ आय सो पशूद्वंत ॥ डार्बको यहें व्रतंत ॥ साधकं सु दाव लाय ॥ आखटी पशू लगाय ॥ वाहिको ग्रहंत जाय ॥ सो कहें पशूउपाय ॥ बेधकं विहंग ठानि ॥ आदि बाज पंख आंनि ॥ छोरितं ग्रहें सु तास ॥ पंखं भेद ए प्रकास ॥ रेंन दीप तंत्र कीन ॥ साधकं सु बीन लीन ॥ नाद रीझ जंतु आय ॥ घंट सो हनंत ताय ॥ जातहें पशु सु भाज ॥ पीठपें हकंत बाज ॥ पोंचके करंत घाव ॥ एह बेगँको सुभाव ॥ १४ ॥

अर्थ. पोते उभो होय त्यांहाथी हरणने जोइने घोडाथी अथवा शीकारी कुतराथी घेरी लेइने हथीयारना दावथी जे मारेछे तेने घेर नामनो सीकार कहेछे. पाणीने कीनारे खाडो खोदीने अथवा रेतीथी पाळ वांधीने पशुने आववानो मारग वांधीने वेशी रहेछे अने पाणी पीवा आवेला पशुने पाणी पीतां मारेछे तेने विचारवान पुरुषो गाड नामनो सीकार कहेछे. पशु मारनार सीकारी चारे तरफ पाणानो गढ करी त्यांहां वेशी रहे ने पशु घेरी लावनार साधक दाव जोईने पासे लावेछे, पछी विश्वास धरावी हरणने मारेछे एरीते गाडी नामना शीकारनो प्रकारछे. आवता पशुने द्रढ धीरवणी आपी वेध करनार शीकारी झाड उपर चढीने झाडनी छायां न-

ळे आवेलां पशुने हथीयारवते झडपथी मारेछे ए नीड नामना शीकारनो भेदछे. नीलां झाडनां डाळां हाथमां लइ वेधक साधकनी साथे फरीने पशुने पोताना नजदीक लावी बाणथी मारेछे ए डोर नामना शीकारनुं प्रमाण छे. हमेशां ज्यांहां पाणी भर्यु रहेछे एवी जगोए तेमज पशुने चरवानुं ठेकाणुं होय त्यांहां आवी आगळथी पाशलो पसारी जइ पछवाडेथी हरण विगेरे पशुओने घेरी लावी फासामां फसावी मारेछे तेने फंद नामनो शीकार कहेछे. वेध करनार शीकारी झाडना मूळमां संताइ रही साधके घेरी लावेला पशुने नजर चुकावीने मारेछे ए मूळ नामना शीकारनो भेद छे. ज्यांहां हमेशां पशु जातां आवतां अने फरतां होय त्यांहां लाकडां गोठवी तेनो यंत्र करी राखे तेमां पशु आवे के तरत दवाईने मरे एवुं डाब नामना शीकारनुं वृत्तांत छे. साधक दाव लगावी हरणनी पछवाडे शीकारी जनावरने दोडावी तेने पकडी लेछे ते पशु नामना शीकारनो उपाय कह्योछे. वेध करनार उडतां पक्षीओने जोइ शीकारी पक्षीओने तेनी पछवाडे छोडे अने ते जई पक्षीने पकडी लावे ए रीते पंख नामना शीकारनो भेद प्रगट करी कह्यो छे. रात्रीए दीपमाळानो तंत्र करी साधक वीणा लेई वजावेछे अने तेना अवाजथी मोहित थईने आवेला पशुओने मारे तेने घंट अथवा घंटावळ नामनो सीकार कहेछे. जे पशु भागी जतुं होय तेनी पछवाडे घोडो दोडावी पहोंची जइ घा करीने मारे ए वेग नामना शीकारनो स्वभाव छे. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

विनंसी शस्त्र सु वेध कहें, फंदे विनांन सु भेद ॥
चार प्रकार सु जानियें, जल चरके परछेद ॥ १५ ॥

अर्थ. वनसी, (कांटो) शस्त्र वेध, जाळ अने वीनान, ए रीते चार

प्रकारनो जळना जीवने मारवानो शीकारछे, ॥ १५ ॥

सोर प्रकार सिकारके, कविनें कहे बनाय ॥
महाराज रीझे सु मन, खेल खुशी चित चाय ॥ १६ ॥

अर्थ. रविजोत तथा भारतीनंद कवीए एप्रमाणे सोळ प्रकारना शीकारनुं वर्णन कह्युं ते सांभळतां खुशीनी साथ शिकार खेलवानुं चित्तमां लावी महाराजा मनमां आनंद पाम्या. ॥ १६ ॥

महाराज कहि मिंत प्रति, यह गिरि गहन अपार ॥
इक इक दिन एकेक विध, खेलैं सोर सिकार ॥ १७ ॥

अर्थ. महाराजाए पोताना मित्रोने कह्युंजे आ पहाड अने तेने फरतुं वन घणुंज म्होटुं छे, वास्ते एक एक दिवसे एकेको सीकार करवो एवी रीते अनुक्रमे सोळ दिवस सुधीमां सोळे जातना शीकार खेलवा. ॥ १७ ॥

यह द्रढाव करिके लगें, राग रंग सु बिलास ॥
सुरापान पीवन लगे, जगे चिराक प्रकास ॥ १८ ॥

अर्थ. एवी रीते शीकार करवानो निश्चय करीने राग रंग अने सुरापानथी विलास करवा लाग्या ए वखते चारे तरफ चिराकनो (दिवाबतिनो) प्रकाश थयो. ॥ १८ ॥

अति सुखसें बीती सु निश, प्रगटी प्रभा पतंग ॥
बन बन प्रति बाहनि बही, तर तर मृगित तुरंग ॥ १९ ॥

अर्थ. एवी रीते अती सुखमां रात वीती गइ अने सवारमां सूर्यनी कांति प्रगट थइ, वन वन प्रत्ये फोज फरवा लागी अने झाडे झाडे शीकारीओनां घोडाओ शीकारने गोतवा लाग्या. ॥ १९ ॥

॥ अथ छंद चुलीया यथा ॥

नग नग मग मग मृग मृगित, झरनपगा पग पग सु नि-

हारत ॥ आयस जो महाराजकी, सोय प्रकार सबै पशु मारत ॥ ओर जंतु अनेकमें, बाग बराह भाल वृक गाजत ॥ जोध मरत मारत किते, बीर हाक आनक धुनि बाजत ॥ कसब करत जोई विसम, सो महराज इनामहि पावत ॥ अगहन क्रौंच दरी गहन, ताहि कुजाक सु सोधत आवत ॥ दिन प्रति खेलत ए जुगति, निश शुभ ठोर मुकाम जमावत॥ पंन्रह दिन वीते रमत, नीतपाल हद नीठ सु जावत ॥२०॥

अर्थ. पहाडे पहाडे अने रस्ते रस्ते मृगोने गोतेछे, नीरझरणां अने नदीओने कीनारे शीकार सोधी लावनार शीकारीओ पशु पंखीनां पगलां जोता फरेछे. जेवीरीते महाराजाए हुकम करेलोछे ते प्रमाणे सर्व युद्धाओ पशुने मारेछे, बीजां अनेक पशुओ करतां वाघ, सूवर, रींछ, अने नारडाओ गाजेछे. केटलाएक जुद्धाओ मरेछे, केटलाक पशुओने मारेछे अने शूरवीरोनी हाकलो साथे म्होटां नगाराना अवाज थायछे. विकट भूमीमां बहादुरीथी शीकार करवामां जे कसब करेछे ते महाराजा पासेथी इनाम पामेछे. पहाडनां कोतर, गुफाओ अने जेमां माणस पेशी न शके एवी झाडीनां झुंडो विगेरेमां शीकारी कुतराओ शीकारने शोधता आवेछे. दिवसे दिवसे एवी युक्तीथी शीकार खेलतां सांझ पडेछे एटले सारे ठेकाणे आवीने देरा तंबु नाखी मुकाम जमावेछे. एवी रीते शीकार खेलतां खेलतां पन्नर दिवस थई गया त्यारे आ सघळी फोज नीतिपाळ राजानी सरहद उपर जइ पहोची. ॥ २० ॥

॥ सोरठा ॥

नित प्रति हास विलास, आखेटी आये करत ॥
नीतपाल हद पास, कीय मुकाम सु आयकें ॥ २१ ॥

अर्थ. दिवसे दिवसे हास्य विलास करता शिकारीओए नीतिपाल राजानी सरहद पासे आवी मुकाम कर्यु. ॥ २१ ॥

पीछे रहे प्रसार, गिरिवर शतकोसी गिरद ॥
इक द्वै कोस उजार, नीतपाल आगें अमल ॥ २२ ॥

अर्थ. सो गाउनी गीरदीना विस्तारवाळो पर्वत पछवाडे रही गयो अने एक बे गाउनी उजाड पछी नीतपाळ राजानो अमलछे त्यांहां सुधी शीकार खेलतां खेलतां आव्या. ॥ २२ ॥

पंनृह कीये प्रकार, रमन बेग भेद सु रह्यो ॥
खेलन प्रात बिचार, फुनि चाहत पीछें फिरें ॥ २३ ॥

अर्थ. एवी रीते पन्नर प्रकारना शीकार खेल्या पण वेग नामनो शीकार रमवो रही गयो ते सवारमां खेलीने पछी पाछा फरशुं एवी रीते विचार कर्यो. ॥ २३ ॥

॥ गाहा ॥

चढी चमूं बरनावं, गिरिवर गहन प्रभा परकाशं ॥
सोरह भेद सिकारं, दशह प्रबीन सागरो लहरं ॥ २४ ॥

अर्थ. चडेली फोजनुं वर्णन, पर्वत अने जंगलनी शोभानो प्रकाश, अने सोळ प्रकारना शीकारना भेद संबंधी वृत्तांत युक्त प्रवीण सागर ग्रंथनी आ दशमी लहरी संपूर्ण थई. ॥ २४ ॥ श्री श्री श्री श्री श्री

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे सिकार भेद नाम दशमी लहरी समाप्ता ॥ १० ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां दशम स्तरंगः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ टिकाकारोक्त शार्दूल विक्रीडित छंद ॥

सिंधू देशथि आविने, नृपतणे गोरें कह्यां भेदथी ॥
ए सामुद्रिक लक्षणो, नृप नितीपाळें सुण्यां प्रेमथी ॥
सिंधू राजकुमारने, निज सुता आपी सगाई करी ॥
ते वृत्तांततणी भणू, लहरि आ अग्यारमी वीस्तरी ॥

॥ अथ कूराबाद कला प्रवीन संबंध प्रसंगो यथा ॥

॥ छप्पय ॥

जनपद सिंध नरेश, सहर कूरा सु बाद बर ॥
तरनतेज अभिधान, आंन दशचत्र सहस पुर ॥
उभैं लच्छ अस चढत, बढत इतमांम दिनहु दिन ॥
गज रथ अरु सुखपाल, माल काहूं न कमी तिन ॥
दुरजन दवंत जिनके डरन, करन सु कवि दानी कहत ॥
जगती सुमध्य फेल्यो सुजस, इंद्र ओर आभा लहत ॥१॥

अर्थ. सिंध देशमां अती सरस कूरावाद नामे शेहेर छे त्यांहां तरनतेज नामे राजा राज करेछे. चउद हजार गामोमां तेनो हुकम वर्तेछे. तेनी फोजमां वे लाख घोडां चडेछे. तेनी आवरु तथा दोलत दीन परदीन वधती जायछे. हाथी, रथ, पालखी विगेरे कोई वस्तुनी कमी नथी. तेना भयथी दुष्ट अने लुच्चा लोको दवाई जायछे. सारा सारा कवीओ तेने दान देवामां कर्ण जेवो कहेछे. तेनो जश आखा जगतमां फेलाई रह्योछे. अने जाणे वीजो इंद्रज होयनै? तेम ते शोभेछे. ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर सुघर ताकों कहत, रंग राव अभिधान ॥
सूर सु शील उदार अति, विद्या लहन विधान ॥ २ ॥

अर्थ. अति चतूर, शूरवीर, सारा स्वभाववाळो, उदार, विविध प्रकारनी विद्याभ्यास करवामां सुघड, एवो रंगराव नामे राजाने एक कुंवर छे. ॥ २ ॥

सोय कुमर बय संध हुय, तरनतेज सु निहार ॥
सोधन करे समंधको, यह बिचार चित धार ॥ ३ ॥

अर्थ. लायक उम्मरना थएल ते राजकुमारने जोई तरनतेज राजा तेनी सगाई करवानो विचार चित्तमां धारी सारो समंध शोधवा लाग्या. ॥ ३ ॥

राज सु बोलिय राजगुरु, शशिधर नाम सु ताय ॥
सोधन कुमर समंधकी, बात सु कही बताय ॥ ४ ॥

अर्थ. राजाए शशिधर नामना राजगुरुने बोलावीने तेने कुंवरनी सगाई शोधी काढवानी वात विस्तारीने कही बतावी. ॥ ४ ॥

॥ छप्पय ॥

शशिधर प्रति महराज, एह बानी उच्चारीय ॥
कुमर भये बय संध, करो समंध निहारीय ॥
मरुत ढुंढ अरु हिंदु, मेद मालव प्रति जाओ ॥
गुज्जर धर सोराठ, सोधि नातो सु बनाओ ॥
सामर्थ्य राज सामांन कुल, सम बय रूप सु ठानीयें ॥
आगम सु भेद जानंत तुम, सामुद्रिक अनुमानीयें ॥ ५ ॥

अर्थ. शशिधर नामना राजगुरुने आवी वात कही जे हवे कुंवर जुवान अवस्थाने पहोंच्या वास्ते सारुं ठेकाणुं जोई समंध करी आवो. मरु, (मारवाड) ढुंढ, (ढुंढाड) हिंदुस्तान, मेद, (मेवाड) अने माळवा एविगेरे देशोमां जाओ तेमज गुजरात अने सौराष्ट्र देशमां जई सारी रीते

तपास करो ते एवी रीते के आपणा जेवुंज सामर्थ्य, राज्य, कुळ, कुंवरना सरखी उम्मर, अने रूप जोवुं. भविष्यनो भेद तो तमे जाणोछो तोपण सामुद्रिकना लक्षणोनुं अनुमान करी समंध करजो. ॥ ५ ॥

॥ अथ छंद उद्धोर ॥

शशिधर चले आयस पाय, यह सामान दीनो राय ॥
दश दुंदभिय दश निसांन, पेंदल पंच सत अनुमान ॥
हय फुनि साथ एक हजार, द्वै गजराज दीने लार ॥
चेरी अंतरंग सुदोय, चक्री द्वैं सु वाज सजोय ॥
द्वै सुखपाल लीनी साथ, द्वै लख खरच दीनो हाथ ॥
यह इतमांम साथ सु दीन, विद्या राजगुरकों कीन ॥ ६ ॥

अर्थ. आवी रीते राजानो हुकम लेइ शशिधर राजगुरु जवाने तैयार थया त्यारे तरनतेज राजाए नीचे प्रमाणे सामान आप्यो. दश घोडे नगारां, दश नीशांन, पांचसें युद्धाओनी संख्यानुं पायदळ, एक हजार घोडेस्वारो, बे मोटा जातवान हाथी, खानगी काम करवा वास्ते बे दासीओ, घोडाथी जोडायेला बे रथ, बे पालखी, हाथ खरच वास्ते बे लाख सोनामहोरो एटली सामग्री साथे आपीने गुरुने वीदाय कर्या. ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

ओर ठोर इक द्वै निरखि, आये गुज्जर देश ॥
बहु सनमान दियो सु तिहि, नीतहिपाल नरेश ॥ ७ ॥

अर्थ. त्यांहांथी चाल्या पछी राजगुरु बीजा देशोमां एक बे ठेकाणे कन्या जोइ गुजरातनी राजधानीमां आव्या, त्यांहां तेने नीतिपाल राजाए घणुंज सन्मान आप्युं. ॥ ७ ॥

नृप बूझ्यो शशिधर सु प्रति, तरनतेज आनंद ॥
आप सिधारतहो कहां, कैसो मतो नरेंद ॥ ८ ॥

अर्थ. राजाए शशिधरने पुछयुं के तमारा तरणतेज राजा आनंदमां छे? आप क्यांसुधी सधावोछो? अने राजाजीनो केवो मत छे ते कहो. ॥ ८ ॥

शशिधर कहि नृप सुत सुघर, कन्या सोधन काज ॥
एहि बात पर आपलों, हम पठये महराज ॥ ९ ॥

अर्थ. शशिधर कहेछे के अमारा राजाना राजकुमार अति सुघड छे तेने वास्ते कन्या शोधवा हुं नीकळयोछुं अने ए वात सारुज आपनी पासे महाराजाए मने मोकल्योछे, ॥ ९ ॥

नितपाल उक्ति ॥ चोपाइ ॥

तुम समंध सोधनकों आये, उचरत बात भेद हम पाये ॥
सामुद्रिक सु भेद तुम पाओ, यह संछेप हमें समुझाओ ॥
दीरघ र्‍हस्व देह शुभ केते, सुच्छम ऊंच कहो शुभ जेते ॥
रक्त सु प्रथुल कहो शुभ जोही, शुभ गंभीर बताओ सोही ॥
कहा जामात्र लछ अपलच्छन, कन्या सुभग कहा कहा दूषन ॥
सकल भेद तुम जांननहारें, हम उमेद सुन बेकी धारें ॥१०॥

अर्थ. नीतिपाळ राजा कहेछे के तमे सगपणनो शोध करवा आवेलाछो तेनो भेद तमे वात कही तेथी जाण्यो पण वर कन्या संबंधी सामुद्रिकना जे भेद तमे जाणता हो ते अमने टुंकी मतलबमां समजावो. देहना अवयवोमां केटला र्‍हस्व (टुंका) अने केटला दीर्घ (लांबा) सारा कह्याछे तेमज सूक्ष्म (झीणा) अने ऊंचा विभागो सारा गणाता होय ते पण कहो. वळी राता अने पहोळा तेमज सारा अने गंभीर भाग होय ते बतावो. जमाइनां लक्षण अने अपलक्षण तेमज कन्याना गुण अने दुषण ए सघळा भेदने तमे जाणवा वाळाछो तेथी अमे तमारा वचन सांभळवानी उमेद राखीए छीए. ॥ १० ॥

॥ अथ शशिधरोक्त ॥ दोहा ॥

सामुद्रिक मुनि बर उकति, पार न पावत कोय ॥
तुम बूझ्यो सो मति यथा, कहौं अनुक्रम सोय ॥ ११ ॥

अर्थ शशीधर राजगुरु कहेछे के सामुद्रिक ए म्होटा मुनीओनी उक्तिछे अने तेना पारने कोइ पामी शकतुं नथी पण तमे पुछ्युं तेथी हुं माहारी बुद्धिप्रमाणे अनुक्रमे कहुंछुं. ॥ ११ ॥

अथ सामुद्रिके प्रत्यंग शुभ लच्छन भेद ॥ दोहा ॥

पंच दीर्घ रस्वह चतुर, पंच सूक्ष्म षट ऊंच ॥
सप्त रक्त त्रय बिस्तरन, त्रय गंभीर समुंच ॥ १२ ॥

अर्थ. पांच दीर्घ, चार ऱ्हस्व, पांच सूक्ष्म, (झीणा) छ उंचा, सात राता, त्रण विस्तारवाळा, त्रण गंभीर, एवी रीते शरीर विभागनो समुदाय सारो कह्योछे. ॥ १२ ॥

॥ अथ प्रथकांग भेद ॥ छंद बिजोहा ॥

जानुनी द्वैकरं ॥ नैंन नासा बरं ॥ अंत्र ऊरं उभं ॥ पंच दीर्घं शुभं ॥ ग्रीवही प्रज्जनं ॥ जानियें जंघनं ॥ प्रष्ठ रस्वं सुहें ॥ च्यार एही लहें ॥ प्रव्वयं अंगुली ॥ केश रद्दावली ॥ सुच्छमं नीर्झरं ॥ पंच तुच्छं नरं ॥ कक्ष वक्षो जियं ॥ कुक्ष कंधं कियं ॥ घ्रान लिल्लाटहें ॥ छै शुभं ऊंचहें ॥ पानि पादं चखं ॥ तालू जिंव्हा नखं ॥ आधुरं आरनं ॥ सात श्रेष्टं जनं ॥ भाल ऊरं लखें ॥ मुर्द्धनी मानुषे ॥ तीन विस्तारितं ॥ सो शुभं कारितं ॥ श्रोन नाभी गनं ॥ शद्व उच्चारनं ॥ तीन गंभीरहें ॥ रम्य लच्छं कहें ॥१३॥

अर्थ. गोठण, हाथ, आंख्यो, नाक, अने स्तननो अंतर (छाती वच्चेनो भाग) ए पांच अंग लांबां होय तो सारां डोक, प्रजन, (गुह्यांग) जांघ, अने पृष्ट (वांसो) ए चार टुंका होय तो सारां, आंगळीओना पर्व, माथाना वाळ, दांतनी पंक्ती, नख अने चामडी ए पांच अंग बारीक होय तो सारां, बगल, उर, पेट, कांध, नाक अने ललाट ए छ अंग उचां होय तो सारां, हथेळी, पगनां तळीयां, आंख्यना खुणा, ताळवुं, जीभ, नख, अने होठ ए सात रातां होय तो सारां, कपाळ, छाती, अने माथुं ए त्रण विस्तार वाळां होय तो सारां, कान, नाभी, अने मोढेथी बोलवानो उच्चार ए त्रण गंभीर होय तो सारां, एवी रीते सामुद्रिक जाणवा वाळा पुरुषो शुभ लक्षण कहेछे. ॥ १३ ॥

॥ अथ जामात्र शुभ लच्छन ॥ छंद मंथान ॥

आपें बिद्या बंत ॥ सूरापनो चिंत ॥ ख्याता शुभं देश ॥ तारुन्यता बेश ॥ शीलं गुनं सार ॥ रूपं शुभं धार ॥ माधुरता बानि ॥ शुद्धं कुलं जांनि ॥ दीनं दया कार ॥ सोहे सु आचार ॥ भोगी सबें भोग ॥ काया बिना रोग ॥ दृढं मती कीन ॥ पापा रती हीन ॥ जानें निजं रीत॥ सारं करे प्रीत ॥ सत्यं सु भाषंत ॥ इष्टं उपासंत ॥ आपें सु उद्दार ॥ जामात्र सोसार ॥ १४ ॥

अर्थ. पोते विद्वान, मनमां शुरवीरपणुं, सघळा देशोमां प्रख्यात, जुवान उम्मरवाळो, सारो स्वभाव अने सारा गुणवाळो, स्वरूपवान, मधुर वचन बोलनार, उत्तम कुळवाळो, गरीब उपर दया करनार, शुद्ध आचार पाळनार, सर्व भोगने भोगवनार, जेनुं शरीर रोग विनानुं छे, पुख्त बुद्धिवाळो, पापमां जेनी प्रीति नथी, पोताना कुळनी तथा व्यवहारनी रीतिने जाणनार, सारा मित्रोसाथे दोस्ती करनार, साचुं बोलनार, पोताना इष्ट

देवनी उपासना करनार, अने जातें उदार ए प्रमाणे लक्षणवाळो जमाई उत्तम गणायछे. ॥ १४ ॥

अथ जामात्र दुषन ॥ छंद तिलका ॥

मलिनं वसनं ॥ न मया सुमनं ॥ वय जास बृधा ॥ अघ कार श्रधा ॥ कुल हीन वही ॥ तन रोग जिहीं ॥ अरु खंड दशा ॥ सु अचार भ्रशा ॥ रति हीन भवं ॥ नित मिंत नवं ॥ मन पीशुनता ॥ क्रम हीन क्रता ॥ अदतार सदा ॥ कुपथें सु मुदा ॥ दुर आकरती ॥ गुन चोर गती ॥ पुरषं परखें ॥ विन खोट लखें ॥ १५ ॥

अर्थ. म्हेलां वस्त्रवाळो, मनमां निर्दय, जेनी अवस्था वृद्ध छे, पापना कामोमां प्रीति राखनार, नीच कुळवाळो, जेना शरीरमां रोग छे, अस्थीर वृत्तीवाळो, सदाचारथी भ्रष्ट, कम पुरुषातणवाळो, हमेशां नवा नवा मित्रो करनार, चुगली करनार, क्रमविना हिणुं-काम करनार, अदातार, नठारा मार्गमां खुशी रेहेनार, खराब आकृ-तिवाळो, अने गुणचोर, एवा खोटीला पुरुषनो त्याग करी वगर खो-टवाळा पुरुषनी परिक्षा करी जमाई करवो. ॥ १५ ॥

अथ कंन्या सुभ लच्छन ॥ छंद शंखनारी ॥

तनं हेम रंगं ॥ रुची केश भ्रंगं ॥ प्रभा एन नेनं ॥ तिलं फूल नासा ॥ सरोजं सु वासा ॥ शुकं प्रीय दंतं ॥ रसा रक्त क्रंतं ॥ छवी सुक्त जैसें ॥ शुभं श्रोन ऐसे ॥ पिकं भाप वानी ॥ दरं ग्रीव जांनी ॥ शुभा ओठ बिंबा ॥ हनुं पक्क अंबा ॥ उरं छीन आभं ॥ गती गूढ नाभं ॥ कटी तुच्छ आरी ॥ नितंवं प्रसारी ॥ बरं रंभ जंघं ॥ सु पिंडी निषगं

॥ पदं पान रक्तं ॥ सु रेखा सु वृत्तं ॥ न छीनं न मंसं ॥ गति ईभ हंसं ॥ तुछं नीद्र हांसी ॥ सु शीलं प्रकासी ॥ सुकुम्मार ताई ॥ मनो कंज छाई ॥ यहे लच्छ कन्या ॥ लिखे सु प्रगन्या ॥ १६ ॥

अर्थ. जेना शरीरनो रंग सोना जेवो छे, वाळ भमराना जेवा काळा अने लांवा छे, मृगना नेत्र सरखी जेनी आंख्योनी शोभा छे, पुनमना चंद्र सरखुं जेनुं म्होडुं छे, तलना फूल जेवुं जेनुं नमणुं नाक छे, कमळना सुगंधजेवी जेना शरीरनी सुगंधी छे, दाडमनी कळीयो जेवा जेना दांत छे, लाल कांतिवाळी जेनी जीभ छे, छीपनाजेवी आकृतीवाळा जेना कान छे, कोयलना जेवी जेनी मधुर वाणी छे, शंख सरखो जेनो कंठ छे, घोलाना जेवा लाल जेनां होठ छे, पाकेला आंवाना फळजेवी जेनी हडपची छे, जेनां स्तन नानां अने कठण छे, जेनी नाभी गंभीर छे, जेनी कड पातळी तेमज अहार थोडो छे, जेनां नितंब म्होटां अने विस्तारवाळा छे, जेना साथळ केळना थांभला जेवा छे, जेनी पींडीयो वाण राखवाना भाथा जेवी छे, जेना हाथनी हथेळीओ तथा पगनां तळीयां लाल छे, जेना पग तथा हाथना मध्यमां सारी रेखा फेलायेली छे, अति पातळी नहीं तेम अति जाडी पण नहीं, हाथणी अने हंसनाजेवी जेनी चाल छे, जेने थोडुं हसवुं तथा थोडी निद्रा छे, सारा स्वभावथी प्रकाशवाळी, जाणे कमळ प्रफुल्लित थयुं होयने? एवुं जेनुं सुकुमारपणुंछे, एवा लक्षणवाळी कन्याने सारी बुद्धिवाळाओए उत्तम कही छे. ॥ १६ ॥

अथ कन्या दूषन ॥ छंद मालती ॥

कुराल सु बेश ॥ सु पिंगल केश ॥ द्रगं फुनि पिंग ॥ खुजाकृति अंग ॥ अती विसतार ॥ कृशांग निहार ॥ अधूर

सु दंत ॥ असीत सु कंत ॥ प्रथू जिहि कंध ॥ मधू वृष गंध ॥ घनी छुधवान॥बदे अति बान॥सुपाकृति कांन॥प्रथू लघु घ्रांन॥ चलं गति चिंत॥ तनं विषमंत ॥ करं गुलि ओर॥ रसन्न कठोर ॥ क्रता नित रोष ॥ डरे नहिं दोष ॥ सदा चित लोल॥ उनंत कपोल ॥ अती जिहि निद्र॥ कछू तन छिद्र ॥ अधूर सकंप॥नहीं मन जंप॥ कठोर सु बार॥ हसंत अपार॥ पदंगुठ अंत ॥ त्रजंन्य बढंत ॥ त्रजन्य हिहेर ॥ बढे मध्य फेर॥ अनामिक जाय ॥ धरा न छुआय ॥ भ्रुवा प्रथु रूप ॥ कपोलन कूप ॥ बढें वृष जोग ॥ कछू तन रोग ॥ बढ्यो धरि अंग ॥ कुशील कुरंग ॥ त्रपा जिहि छींन ॥ कन्या वह हीन ॥ १७ ॥

अर्थ. विकाळ जेनो वेप छे, पिंगळा केश छे, वळी आंख्यो पण पींगळी छे, अंग खुजली वाळुं छे, अति लांबी, शरीरे दुबळी, होठ, जीभ अने दांत ए त्रण जेनां काळां छे, पहोळुं अने जाडुं जेनुं कांध छे, मद्य जेवी शरीरनी दुर्गंधी छे, बहु भुखाळवी, घणुं बोलकी, सुपडाजेवा जेना कान छे, पहोळुं अने टुंकुं एवुं चिबुं जेनुं नाक छे, चित्त अने चाल जेनी चपळ छे, वेडोळ जेनुं शरीर छे, हाथनी आंगळीओ अने जीभ जेनी कठण छे, हमेशां क्रोध करनारी, जे दोप करतां डरती नथी, जेनुं चित्त अस्थीर छे, जेना गाल उंचा छे, घणी जेने निद्रा छे, कांइक शरीरमां खोट छे, रोशने लीधे जेना होठ फरकता रहेछे, जेने मनमां जंप नथी, जेना कठोर वाळ छे, घणुं हसवावाळी, पगना अंगोठाना अंत सुधी तर्जनी (अंगोठा पासेनी आंगळी) वधी गइ छे, तर्जनीने वधती जोइ मध्यमा (वचली आंगळी) पण तेज प्रमाणे वधी गइछे, जेनी अनामिका (वचली आंगळी पासेनी आंगळी) पृथ्वीने अडती

नथी, जेनां भवां जाडां अने पहोळांछे, जेना कपोल (गाल) कुवा जेवा उंडाछे, छोटी उम्मर छतां वर्ष वधारे जणाय, जेना शरीरमां कांईक रोगछे, जेनां शरीरना अंग लांबा टुंकांछे. नठारा स्वभाववाळी, जेना शरीरनो रंग खराबछे ने जेने लाज थोडीछे, एवी कन्या हीन लक्षणवाळी जाणवी. ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

सामुद्रिक जनता सुभग, गुन ओगुन जामात्र ॥
कन्या गुन दूषन कहे, नृप गुरु परखि सुपात्र ॥ १८ ॥

अर्थ सामुद्रिक लक्षण जाणनारा शशिधर पंडीते जमाइना गुण अने अवगुण तेमज कन्याना गुण अने दोष कह्या, ते सांभळी नीतिपाळ राजाए आ राज गुरु सुपात्र छे, एवी परिक्षा करी. ॥१८ ॥

नीतपाल मनुहार करि, रखे दिवस दस बीस ॥
रंगराउ प्रति करि मतो, किय कन्या बकसीस ॥ १९ ॥

अर्थ पछी नीतिपाळ राजाए खुशीथी बरदास करी दसवार दिवस तेने पोतानी राजधानीमां राख्या अने रंगराव साथे कन्याना संबंधनो मत ठरावी कन्या बक्षीस करी. ॥ १९ ॥

॥ छप्पय ॥

बजे द्वार दुंदभी, माल गृह गृह प्रति बंदन ॥
राज समाज सुरचित, चुआ केसर अरु चंदन ॥
नृत्य भेद संगीत, नीतपाल सु जस गावत ॥
बनि बनि तरुनि समूह, कलापरवीन बधावत ॥
विप्रह उचार बेदह धुनी, अनि जन सह आनंद अति ॥
आगम अदृष्ट अंकन उदैं, वह कन्या दरसैं दुचिति ॥ २० ॥

अर्थ. राजद्वारमां दुंदभी वागेछे, अने घर घर प्रत्ये तोरण तथा फूलनी माला बांधीछे, दरबारमां सभा भराई बेठीछे, अने चुवा चंदन ने

केसरनां छाटणां थइ रह्यांछे, संगीतना भेदथी गायन अने नाच थायछे, तेमज वंदीजनो नीतिपाळ राजाना सुजस गायछे, शेहेरनी स्त्रीयो वस्त्र घरेणाथी सणगार सजी राजद्वारमां आवी कळा प्रवीणने वधावेछे, ब्राह्मणो वेदनो उच्चार करेछे, बीजा लोको पण अती आनंद पामेछे, भविष्य अने अद्रष्टमां लखेला आंकडानो उदय थयो तेथी नाराज थएली ते कन्या उदास देखायछे. ॥ २० ॥

॥ सोरठा ॥

दुचिती कला प्रवीन ॥ सकुचितसी मनसें कहें ॥
कहा करम गति हीन ॥ यह समंध सविता कीयो ॥ २१ ॥

अर्थ वेचेहेन थएली कळा प्रवीण संकोच पामी मननी साथे केहेवा लागी के अरे रे! माहरा करमनी गति केवी नवळीछे! के जेथी पिताए आवो अयोग्य संवंध कर्यो ॥ २१ ॥

॥ छप्पय ॥

शशिधर प्रति महराज, बाज वकसीस बीस किय ॥
उभैं सुखासन सुभग, उभैं रथ ईभ उभैं दिय ॥
उभैं जोर निज बसन, वलय कुंडल मनि मालह ॥
शीशपेच शिरपाउ, कनक उपवीत दुसालह ॥
पहेराव ओर जन जन सुप्रति, वत इतमाम सबें दीये ॥
लखि पत्र तरुनतेजह सु प्रति, राज गुरुह विदा कीये॥२२

अर्थ केटलाक दिवस राखीने शशिधर राजगुरुने नीतिपाळ राजाए विश घोडा, उत्तम वे पालखीओ, वे रथ, वे हाथी, पोताने पेहेरवाना वस्त्रनी वे जोड, कडां, कुंडल, मणीनो हार, शिरपेच, सोनानी जनोइ, अने दुशालो एवी जातनो शिरपाव आप्यो. तेनी साथे आवेला बीजा लोकोने पण

इजत प्रमाणे सर्वने पोशाक आप्या, अने एक पत्र तरुणतेज राजा उपर लखी राजगुरुने विदाय कर्या. ॥ २२ ॥

॥ गाहा ॥

तरुन तेज इतमामं, समध जोग सामुद्रिक भेदं ॥
एकादश अभिधानं, पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ २३ ॥

अर्थ. तरणतेज राजाये राजगुरुनी जोडें आपेली सामग्री अने नीतिपाळ राजाना मिलापनें प्रसंगे सगपण बावत वात थयापछी शशिधर पंडीते सामुद्रिकना भेदनी चर्चा करी ए वीगेरे वृत्तांत संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी आ अगीयारमी लेहेर पूर्ण थई. ॥ २३ ॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे संबंध सामुद्रिक भेदो नाम एकादशमी लहरी समाप्ता ॥ ११ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवी रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां एकादशम स्तरंगः समाप्तः ॥ ११ ॥

॥ अथ टिकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

चतुरंगिणि नीतिपाळना दळ सुभट साथे अवर ते ॥
छत्रीश आयुध वाद्य छत्रिश विविध गणियां नाम जे ॥
भेद तेनो ग्रंथकारे जे कह्यो रसमां रमी ॥
तेह तणा वृत्तांतनी आ लेहेर कहुंछुं बारमी ॥

अथ नितिपाळ सेहेलान प्रसंग ॥ दोहा ॥

सेल करन सैंना सजी, नीतपाल नर नाह ॥
गय हय रथ पैंदल चले, यह चतुरंग अथाह ॥ १

अर्थ. नीतिपाळ राजाए सेहेल करवा सारु सेना तैयार करी. हाथी, घोडा, रथ अने प्यादा एवा चार अंगवाळी अपार सेना चाली. ॥ १ ॥

छप्पय

वजि निसांन वहु बिद्द, गजह शिर दरक अश्व गनि ॥
मनहु सघनके महन, धरा नभ गजत चंड धुनि ॥
फुनि पताक फहरात, मनहु पचरंग जरी चक ॥
सुर करनाल सहनाय, होत नकीब गहक हक ॥
पख्खरित बाज गज यौं पुलत, मनु अठार खोयन मलिय॥
करि चाह नृपति सेलांनक, जि चतुरंगी सेना चलीय॥२॥

अर्थ पोशाकथी सजेला हाथी तथा घोडाओना जुथ्थ उपर निशान समेत घणांएक नगारां वागेछे, ते जाणे चोमासाना मेघना अवाजथी आकाश तथा पृथ्वी गाजी उठतां होयनै! एवी रीते पडछंदाना प्रचंड अवाज गाजेछे, वळी धजा तथा पताका फरेरेछे, ते जाणे पचरंगी जरीना पडदा उडता होयनै? एम दीसेछे, जंजाळ्योना अवाजनी साथे सरणाईओ वागे छे अने गंभीर अवाजथी चोपदारोनी हाकलो थायछे, पाखरथी सणगारेला पुष्ठ घोडा तथा हाथीओ चालेछे, तेथी जाणे अढार अक्षौहिणी सेना एकठी मळी होयनै? महाराजा नीतिपाळे सेहेलानीये जवा इच्छा करी तेथी हाथी, रथ, घोडा अने प्यादा ए चार अंग वाळी सेना चाली. ॥२॥

अथ गज वर्नन ॥ दोहा ॥

गिरि उतंग सम अंग गनि, भा घन वद्दर भत्त ॥
साज सहित अहिराव सम, हले सु जुथ्थ हसत्त ॥ ३ ॥

अर्थ. उंचा पहाड जेवां जेनां अंगछे, मेघना वादळांनी कांत्ति जेवी

कांति जेणे धारण करीछे, एवा साज सहित ऐरावत हाथीं सरखा हाथीओनां जुथ्थ चालवा लाग्यां. ॥ ३ ॥

॥ अथ छंद हनुंफाल ॥

मद मसत हस्ति चलंत ॥ घन ब्रसत बद्दर क्रंत ॥ शिर लसत बंदन शूल ॥ जरकसित ढंपित झूल ॥ पुनि घसत लंगर पाय ॥ गिर धसत ठोकर लाय ॥ निज डसत शुंडा दंड ॥ तन असित अति पर चंड ॥ मद झरत झरन समान ॥ अरि डरत देखि उतान ॥ घन घुरत घंटन घोर ॥ तन करत कज्जर खोर ॥ शिर जरित कंचन साज ॥ गह भरत उचरत गाज ॥ शिर कुंभि सरीय सु चंग ॥ मद लुबध गुंजित भृंग ॥ सित दिपत इभ मुख दंत ॥ मनु प्रभा घन वक पंत ॥ शिर भलक अंकुश ऊप ॥ नभ झलक चपला रूप ॥ कुंतार करत बखान ॥ डग भरत ताम धरान ॥ ४ ॥

अर्थ. वरसता मेघना वादळानी कांत्ति जेवा शोभीता, जेओ मदथी मस्त थई गति करेछे, जेनां मस्तकमां सिंदोरनां त्रिशूल विगेरे चित्रो शोभेछे, जरकसी झुल्योथी जेनां शरीर ढंकाएलांछे, वळी पगमां लंघर घसडाता जायछे, जेनी ठोकर लागवाथी पर्वतो धशी पडेछे, पोतानी शुंढ रुपी दंड मोमां लेइने डसी रह्याछे, जेनां अंग काळां अने अति म्होटांछे, पर्वतना झरणानी समान जेनो मद झरी रह्योछे, जेना माथानी उंचाई जोइने दुश्मनो डरेछे, घणाएक घंटना घोर अवाज गाजेछे, जेने शरीरे काजळनी खोर (रंग) लगावेलछे, जेना उपर सोनानां जडित्र साज नाखेलांछे, एवा ते हाथीओ कदम भरवानी साथ गाजता चालेछे, जेनां कुंभस्थळ उपर मोतीना झुमखादार मोड घणा सारा शोभेछे, मदना सुगंधने लीधे

भमराओ आसपास गुंजारव करी रह्याछे, जेना मोढामां धोळा दांत शोभी रह्याछे, ते जाणे मेघनी काळी घटामां वगलानी पंक्ती बेठी होय-नै! एम जणायछे, तेमज माथा उपर भालां अने अंकुश एवां ओपेछे के जाणे आकाशमां वीजळी चळकती होयनै! कौंतार धरनार मावत जेम जेम वखाण करेछे तेम तेम जमीन उपर डगलां भरता जायछे. ॥ ४ ॥

॥ अथ उत्प्रेक्षालंकार ॥ छप्पय ॥

इक गज नृप आरूढ, नाम दिय ताम मुकट मन ॥
भद्र जात शोभंत, कनक हीरा मय भूषन ॥
मेघाडंवर छत्र, चौंर चिहुंओर बिराजत ॥
मनहुं राज राजंत, सूर उदयागिर उद्दित ॥
आरोह अवर उमराउ गज, के बंदीजन बिरद पढि ॥
सोहंत भूप दळ रूप शुभ, मनु सुर जुत सुरराज चढि ॥

अर्थ. जे एक हाथीउपर राजा विराजमान थएलाछे तेनुं मुगट मणी एवुं नाम राखेलुं छे, ते भद्र जातिनो घणो शोभायमान छे, तेनां हीराए जडित्र सोनानां घरेणां छे, वळी तेनाउपर मेघाडंवर छत्र धारण करेलुं छे, तेमज चोतरफ चम्मर ढळी रह्यांछे, ते उपर वीराजमान थएल राजा एवा शोभेछे के जाणे उदयाचळ माथे सूर्यनो उदय थयो होयनै? बीजा उमरा-ओ पण पोतपोताना हाथीउपर बेठाछे ते समये केटलाएक बंदीजनो जश गायछे, राजा अने तेनी फोजनो देखाव एवो शोभेछे के जाणे दे-वताओनी फोजे सहित इंद्र चाल्यो होयनै? ॥ ५ ॥

॥ अथ अश्व वर्नन ॥ छंद मुक्तदाम ॥

तरक्कित चल्लीय जूथ तुरंग ॥ फरक्कित पारत फेंट कुरंग ॥
अलक्कत साज लगे गज गांह॥ छलक्कत आपहुकी लखि छांह

लटक्कत सैंन करंत लगाम ॥ सटक्कत सांम संभारत तांम ॥ चमक्कत अंग सु रंग सु चंग ॥ अनी दपटंत अफारत अंग ॥ वहें मनु छूटत नाउक बान ॥ कियो सहगोसहुकी छबि कान॥ ढलक्कत स्त्रल्ल छटा उर ढल्ल ॥ कुमारिय गोंनित कंध न कल्ल ॥ धकैं गजराज प्रकार धसंत ॥ दरप्पनके प्रतिबिंब डरंत ॥ चहूं दिश चक्रित बीज चमंक ॥ घुरे घन घूघर हेम घमंक ॥ बने नवरंग सु अंग विधांन ॥ मनी जट हाटक पीठ पलांन ॥ बनांत सु के मखतूल विराज ॥ समारितहें जर तारन साज ॥ पढे कितनेइ सु कोतल पंत ॥ चमू कितनेइ सु बीर चढंत ॥ प्रथीपति ता मधि नीतसुपाल ॥ मनू सुरराज सुराव्रत माल ॥ ६ ॥

अर्थ. तुरकी चालथी घोडाओनां जुथ्थ चाल्यां जायछे, फरकीने दोडवाथी हडफेटे आवता हरणोने पाडी नाखेछे, माथे झळकतां साज नाखेलांछे, पोताना पडछायाने जोइने उछळता आवेछे, लगामनो इसारो करवाथी लटकता चालेछे, तेमज सटकती वखते पोताना स्वारनी संभाळ राखेछे, जेनां जातजातनां रंगीन अंगो चमकी रह्यांछे, जेओ फोजमां चलाववाथी पोताना अंगने अफळावेछे ते घोडाओ एवा दोडेछे के जाणे तीरंबाजनुं बाण छुट्युं होयनै! ते वखते सागोसना कान जेवी कान सुरीओनी छटा करेछे, सेढाइना पीछां जेवी गुंथेली केशवाळीयो ढळकी रहीछे तेमज जेनी छातीयो ढाल जेवी विशाळ शोभी रहीयो छे, कार्तिक स्वामीनुं वाहन जे मोर तेना गळा जेवी जेनी कांधनी आकृतीयो छे, अवश्य काममां हांकवाथी हाथीनी पेठे धसारो करेछे, अरीसामां अथवा जलाशयोमां पोतानां प्रतिबिंब जोवाथी भडकेछे, चारे दिशाओमां चकर

फरेछे तेथी एवी रीते शोभेछे के जाणे वीजळीयो चमकती होयनै? घणा घमघमाट करता सोनाना घुघराओनो अवाज घुरी रह्योछे, जेओनां शरीरउपर नवा रंगदार चित्रवाळी अने घरेणा वीगेरेनी शरीरने शोभावनार सामग्री विधि पुर्वक बनावेलीछे, जेओनी पीठउपर मणीए जडित्र सोनानां पलाण नाखेलांछे तेमज वनातना मखमलना अने जरीना घासीया अने गादीओ नाखेलीछे, कवाईती अने केळवणी पामेला अनेक कोतल घोडाओनी पंक्ति मोढा आगळ चाली आवेछे, अने एवाज सणगारेला केटलाएक घोडाओ उपर सेनाना युद्धाओ स्वारी करेछे, आ घोडाओनी फोज वच्चे पृथ्वीना पति नीतिपाळ राजा एवा शोभेछे के जाणे देवना मंडलथी विंटाएलो इंद्र होयनै? ॥ ६ ॥

॥ अथ रथ बर्नन ॥ छंद रथोद्धता ॥

हैं अनंत फंदन वरूथनी ॥ नीड डोर जिहि रेसमीं तनी ॥
जात रूप परचंड दंडहे ॥ नीक जट्ट हाटकं सु इंडहें ॥
झल्लरीय जरतार छात्रियं ॥ झीन झबे मांनिक जरत्रियं ॥
नीमि बांक कुबजं सुरूपियं ॥ बाज केक वृषभं सजोहियं ॥
तास झूल मखतूल झूलितं ॥ भ्रंत सूर चकडोल भूलितं ॥
चंग सोर घुघरी घनी वजें ॥ जूथ नृत्य अछरं मनो सजें ॥
रंग रंग सोहित पताकियं ॥ मानुं धाम कर्द्दम प्रभा कियं ॥
मध्य चाप इषुधी सु साजितं ॥ के अमाति उमराउ राजितं
॥ ७ ॥

अर्थ. फोजमां अनेक रथ छे, जेना नीड (मांच) रेसमनी दोरीथी ताणीने बांध्याछे, सोनाना लंबगोळ जेनी छत्रीओना दंडछे, घाटीलां जडित्र सोनानां जेमां इंडांछे, छत्रीयोमां जरियन कपडां जडेलांछे, तेमज झालर पण जरीनीछे, जेनां बारीक पडदामां माणक जड्यांछे अने नेमी (पैडा-

ना पाटा,) बाक (धरी तथा कमानो) अने उंटडा जेना रूपानाछे, केटलाएक रथने बलद अने केटलाएकने घोडाओ जोडेलाछे, तेओना उपर मखमलनी झुल्यो झुली रहीछे, ते जोई भ्रांतिथी इंद्रना रथने पण भूलवी नाखेछे, चंगना सोर साथे घणी एक घुघरीओ वागेछे, एवा घमघमाट करता रथना जुथ्थ चाल्या आवेछे ते जाणे अप्सराओ नाचती होयनै? जेना उपर रंग बे रंगी धजा अने पताका शोभी रह्याछे, ते जाणे कर्दम ऋषीए मनथी रचेला कामग नामना वैमाननी शोभानी बरोबरी करता होयनै? जेना मध्यमां धनुष बाण विगेरे हथीयारो राखेलां. छे तेमज केटलाएक अमीर उमराओ बीराजेलाछे. ॥ ७ ॥

॥ अथ पैंदल बर्नन ॥ छंद मोदक ॥

ब्रंद कजाकनके जु चले बनि ॥ अग्रन पंत बनी सुपताकनि ॥ तूर बजें करनाट सुतंसह ॥ मौंअरि के परिगाह सु बंसह ॥ के सरनाहन फेर क्रनालह ॥ अंबर नील सितं पित लालह ॥ पूरव रूम क्रनाट फिरंगिय ॥ हिंद सु सिंध बरारब बंगिय ॥ बान कबान तुफंग सु धारत ॥ दीठ परे पशु पंखिन मारत ॥ सांम सु आयस टूक करें तन ॥ मानु प्रभा नवरंग घटा घन ॥ आपन आपन जूथ चलें मल ॥ पंथहु पंथ प्रसारित पैंदल ॥ कैंधुं धसे रघु बीर अनूचर ॥ कैं निकसे कनकंपुर किंकर ॥ ८ ॥

अर्थ. प्यादानां टोळां बनीने चालवा लाग्यां जेओनी आगळ धजा अने पताकानी हार बंधाइ गई, तेने पछवाडे रणतूर, करनाट अने तांसां बजावता चालेछे तेमज मोर, (ताउस) भेरी अने वांसळीयो बजावेछे, केटलाएक सरणाइअने करनाल विगेरे वाजित्रो वगाडेछे, कोइए नीला, कोइए धोळा, अने कोइए पीळा कपडाना दरेस पेहेर्या

छे, फोजमां केटलाएक पुरवीआ, रूमी, कर्नाटकी, फीरंगी, हिंदुस्थानी, सिंधना, आर्वस्थानना अने वंगाळाना सिपाइयोनी भरती छे, अने तेओए वाण, धनुप, वंदुक अने पिस्तोल ए विगेरे हथीआरो धारण कर्याछे, नजरे पडेलां पशु पंखीओने मार्याविना छोडता नथी तेमज लडाइमां पोताना धणीनी आज्ञाप्रमाणे शरीरनां टुकडे टुकडा थई जायछे तोपण पाछा फरता नथी. आ पायदळनुं लशकर जाणे नवी रंगदार मेघनी घटा चडी होयनै? एवुं दीसेछे, सिपाइयो पोतपोतानां टोळांओमां मळीने चालेछे, नीतिपाळ राजाए रस्ते रस्ते मोकलेला प्यादाना सीपाइओ जाणे रामचंद्रजीना अनुचर धसारो करी चाल्या जता होयनै? अथवा लंकाना किंकरो पोताना शेहेरमांथी नीकळ्या होयनै? एवा लागेछे. ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

चत्र अंग चतुरंगनी, वरनें प्रथक बनाय ॥
नादा युध षट त्रीश विधि, वजि सजि वरनों ताय ॥ ९ ॥

अर्थ. चार अंगवाळी सेनानुं जूदी जूदी रीते वर्णन बनावीने कह्युं हवे छत्रीश प्रकारनां वाजित्रो वागेछे तथा छत्रीश प्रकारनां हथीयारो धारण करायछे तेनुं वर्णन करुछुं ॥ ९ ॥

॥ अथ षट् त्रिंश वाजित्राभिधान छप्पय ॥

मंडल वीन रवाव, अनोप तंवूर उपंगह ॥
चंर वसु सुंरद पिनाकि, कुमायच पुंगी सुरंगह ॥
वंसी परिगह वांस, कानुटक तोल सुपिंगी ॥
तूर भेर सहनाय, पाव रनसंग दर सिंगी ॥
करनाट पनव आनक मुरंज, डफ सुडाक डमरू सजे ॥
जलतरंग झंझ मंजीर सिलि, पटह त्रीश वाजित्र बजे॥१०॥

अर्थ. श्रीमंडल, वीन, रवाज, अनोप, तंवुर उपंग, वर, वसु, सुरंदो, पिनाक कुमायच, पुंगी, सारंगी. वंसी, परगाह, वांस, कानुटक, ताल, पिंगी, रणतूर, भेरी, सरणाइ, पावो, रणसींगु, शंख शिंगी, करनाट, पणव, आनक, मुरज, डफ, डाक, डमरु, जलतरंग, झांझ अने मजीरा ए प्रमाणे छत्रीश प्रकारनां वाजीत्र वागी रह्यांछे. ॥ १० ॥

॥ अथ षट त्रिंश आयुधाभिधान ॥ छप्पय ॥

चक्र[१] शूल[२] धनु[३] वज्र[४], बान[५] कैवान[६] तुफंग[७]ह ॥
फरसु[८] कटार[९]ह छुरा[१०], सेल[११] खेटक[१२] गद[१३] संग[१४]ह ॥
तोमर[१५] पाश[१६] भुशंड[१७], बांक[१८] खंजर[१९] जंबू[२०] लठ[२१] ॥
जंत्र[२२] सु अंकुश[२३] भाल[२४], हल[२५]ह मूशल[२६] खग[२७] बर[२८] बठ[२९] ॥
जंजाल[३०] जरह[३१] गुपति[३२] गुरज[३३], दाओ[३४] पटा[३५] पिस्तोल[३६] लिय
आयुध षडांग षट त्रीश जुत, नीतपाल सन्या चलिय॥११॥

अर्थ. चक्र, त्रिशूल, धनुष, वज्र, वाण, कैवान, तुफंग, फरशी, कटार, छरा, सेल, खेटक, गदा, शांग्य, तोमर, पाश, भुशंडी, बांक, खंजर, जंबुर, लठ्ठ, जंत्र, अंकुश, भालुं, हळ, मुसल, खांडु, वर, वठ, जंजाल, जरह, गुप्ती, गुरंज, दाव, पटा, पिस्तोल, ए रीते छये अंगमां छत्रीश आयुधने धारण करनार नीतिपाळ राजानी सेना चाली. ॥ ११ ॥

॥ अथ समग्र सेन वर्नन ॥ छंद सेहेल ॥

यही रीतसे नीतपालं चढें ॥ बिरद्दा वली वान वंदी पढें ॥
षटं त्रीश वंसावली खत्रियं ॥ चले आसुरं चंड चारित्रयं ॥
षटं आयुधं त्रीश अंगं सजे ॥ बिषमं षट त्रीश नादं वजे ॥
बितुंडं प्रचंडं सु पंथं वहे ॥ परावंध वीरं सु वाजं ग्रहे ॥

रथं संचरं कौन आरोहितं ॥ सुखंपाळ फुंदा जरी सोहितं ॥
भयंकार द्रकं भरे भारियं ॥ किते बान कैबान कत्तारियं ॥
वहे पायकं व्यूह केते बनें ॥ इकं जोजनं जाय तंबु तनें॥१२॥

अर्थ. आवी रीतथी नीतिपाळ राजा सेलानी करवा चड्या ते वखते भाट चारण विगेरे तेना बंदीजनो जश गाय छे, राजानी साथे छत्रीश वंशना क्षत्रीओ तेमज उग्र चरित्रवाळा केटलाएक असुरो पण सज्ज थईने चाल्या, युद्धाओए छत्रीश जातनां हथीयारो धारण कर्यांछे, भयंकर सिंधु रागमां छत्रीश जातनां वाजां वागेछे, प्रचंड हाथीओ चालेछे, पलाण नाखी तंगथी कसेला कोंतल घोडाओने शूरवीरोए पकड्याछे, केटलाएक रथमां बेशीने चालेछे, पालखीओ जरीना फुंदाथी शोभेछे, बाण, कोकबाण, कटारी विगेरे भयंकर हथीयारोना भार रथमां भर्यांछे, केटलाक प्यादाना व्युह चाल्या जायछे तेओए एक जोजन उपर जइने तंबु ताण्या. ॥ १२ ॥

॥ अथ सैन संख्या ॥ छप्पय ॥

असी सहस अस चढिय, सवा अनुमान हसत सत ॥
सहस डोल सुखपाल, लच्छ निक सित कुजाक भ्रत ॥
सुतर पंच अध सहस, वेद सत आतस बानहुं ॥
त्रिवि सहस्र बाजित्र, दस सहस बनीक दुकानहुं ॥
निज सहर छंडि जोजन निकसि, द्वादश कोश मुकाम किय॥
सहलान नीतपालह सहज, दुर्ज्जन गिरि गहवर दुरिय ॥
॥ १३ ॥

अर्थ. एशी हजार घोडाओ, आशरे सवासो हाथी, एक हजार रथ, एक हजार पालखीओ, धोळा दरेसथी शणगारेला एक लाख प्यादा,

अढी हजार उंट, चारसो आतसवाजी अने कोकवाण चलावनार कारीगरो, बे हजार वाजीत्र अने दश हजार वाणीयानी दुकानो एटली संख्यानां आ नीतिपाळ राजानां लशकरे चडाइ करी पोतानुं शेहेर छोडीने एक योजन एटले चार गाउ उपर जइ त्यांहा थोडिएक विश्रांति लेइ त्यांथी कुच करी बार गाउ उपर जइ मुकाम कर्युं, सेहेज सेहेलानी करवा वास्ते नीतिपाळ नीकळ्या ए वात सांभळतांज चोर ठगारा विगेरे लुच्चा लोको पहाडनी गुफामां अने जंगलमां जै छेटे भागी संताइ रह्या. ॥ १३ ॥

॥ अथ अलंकार उल्लेख नृप पराक्रम बर्नन ॥ छप्पय ॥

राज नीत रघु बीर, सरस साहस लंकेशर ॥
प्रजा पालन प्रथुराज, गुनह गंभीर सु सागर ॥
मघवा रमन मनोज, नचल आहव मेरू नग ॥
रिपु काटन दुज राम, जगत तप तेज नयन जग ॥
माहेश रीझ बकसन सुमन, गंग नीर निरमल सुगति ॥
सुर गुरु सयांन धारन धरम, नीतपाल सोहें नृपति ॥१४॥

अर्थ. राजनीतिमां रामचंद्र जेवा, साहस कर्म करवामां लंकाना राजा रावण जेवा, रैयतनुं पालन करवामां पृथुराजा जेवा, गुणे करीने गंभीरतामां समुद्र जेवा, कामक्रीडामां इंद्र जेवा, लडाइमां मेरु पर्वत जेवा अडग, शत्रुओने कतल करवामां फरशुराम जेवा, जगतनी अंदर तप अने तेजमां सूर्य जेवा, वरदान अथवा इनाम आपवामां शंकर जेवा, शुद्ध विचारनी गतिमां गंगा जेवा निर्मळ, अने धर्मनुं धारण करवामां बृहस्पति जेवा शाणा, एवा नीतिपाळ राजा शोभेछे. ॥ १४ ॥

॥ सोरठा ॥

नीतपाल सहलान, करत करत आये तितें ॥
रस सागर जिहि थान, किय मुकाम आखेट करि ॥१५॥

अर्थ. जे ठेकाणे रससागरे शीकारना खेलथी विसामो लेवा मुकाम करेलुंछे त्यांहा सेहेल करता करता नीतिपाळ राजा आव्या. ॥ १५ ॥

दुहुं दल इक दिन आय, अष्ट कोश अंतर परें ॥
तहं लगि कछू न ताय, एक एकहूकी खबर ॥ १६ ॥

अर्थ. एक दिवसे बन्ने लशकरे आवीने आठ आठ गाउने अंतरे पडाव कर्यो त्यांहां सुधी तेओने एक बीजाना लशकरनी कांइ पण खबर नोती. ॥ १६ ॥

॥ गाहा ॥

नीतपाल सहलानं, चत्र अंग वर्नन चतुरंगानि ॥
नादायुध अभिधानं, द्विदश प्रवीन सागरो लहरं ॥ १७ ॥

अर्थ. नीतिपाळ राजानी सेहेलानी, चतुरंगिणी सेनानुं वर्णन, फोजनी संख्या, वाजित्र अने आयुधोना नाम, ए विगेरे प्रसंगयुक्त प्रवीण सागर ग्रंथनी बारमी लेहेर संपूर्ण थई. ॥१७॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे नीतपाल सेहेलान वर्नन नाम द्वादशमि लहरि समाप्ता ॥१२॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवी रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां द्वादशम स्तरंगः समाप्तः ॥ १२ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

हरोली महाराजना सैन्य सामे, नितीपाळनी फोजने अंग वामे ॥
कर्यो युद्ध भेटी भयंकार भारी, कहे तेरमी लेरमां ते सुधारी ॥

॥ अथ नीतपाल रससागर संग्राम प्रसंग यथा ॥ दोहा ॥

दुहुं जामनि सुख भर बितित, भयो उदय नभ भान ॥
कूच करनके अरनमें, दुहु दल बजे निशांन ॥ १ ॥

अर्थ. बेयने रात्री सुख चेनमां वीति गई बीजे दिवसे आकाशमां सूर्यनो उदय थवाथी जंगलनी अंदर कूच करवानां बन्ने लशकरमां निशानना फटकारा साथे नगारां वागवा लाग्यां. ॥ १ ॥

नीतपाल बामी मिसल, चली निकट कंतार ॥
सागरकी अग्रिम चमू, सोधत जहां सिकार ॥ २ ॥

अर्थ. नीतिपाळ राजाना लश्करनी डाबी तरफनी एक टुकडी हार बंध चालीने रससागरना लश्करनी आगली टुकडी ज्यांहां शीकार शोधे छे तेनी नजदीक आवी पहोंची. ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

नीतपाल दश सहस, चली बाईं चतुरंगन ॥
रससागर सु हरोल, सहस उभ सोधत आरन ॥
भयो जोग भाराथ, रह्यो अंतर अध जोजन ॥
आखेटीके अग्र, उठे बातज कोलह बन ॥
हक्के सु बीर ता पुंठि हय, कुंत असुग हनियत किते ॥
सहलांन दिशा सनमुख भजे, आयुध मुख उबरे तिते ॥३॥

अर्थ. नीतिपाळ राजाना लश्करमांथी दस हजार संख्यानी डावी तरफनी चतुरंगिणि सेनानी एक टुकडी ज्यांहां सागरना बे हजार स्वारो

हरोळथी जंगलमां शीकार शोधेछे त्यांहां आवी पहोची, ते बन्ने राजा-
ने वे गाउनो अंतर रह्योछे तेटलामां तो बन्ने फोजनी टुकडीओ मळती
वखते महाभारथना जेवो देखाव थयो. शीकारी स्वारोनी आगळ जंग-
लनां हरण, सुवर विगेरे केटलाएक पशुओ उठी भागवा लाग्या ते जोई
शूराओए तेने पछवाडे घोडा दोडावी लांबां अने कठण भालांथी केट-
लाएकनां प्राण लीधां अने हथीयारोनां म्होढामांथी जेटलां पशुओ बच्यां
तेओ सेहेल करवा आवेल नीतिपाळ राजाना लश्करनी तरफ भागी नी-
सर्यां. ॥ ३ ॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

हरोलिय लीन वनंचर हक्कि ॥ धरा गिरि बाज खुरान ध-
मक्कि ॥ तरव्वर तूटत फेंट तुरंग ॥ कुराहन क्रौंच धसंत
कुरंग ॥ किते लगि कंटक जात दुकूल ॥ फुनी रतु राज
रचे मनु फूल ॥ वहे नद निर्झर बाट उबाट ॥ न खेंचत
सिंधव सूर निराट ॥ सु संचर पंत रहंत समग्र ॥ असं
सत पंच भये तिहि अग्र ॥ दरी अंतराय परी नहि दीठ
॥ निकसित जाय सहेलीय नीठ ॥ ४ ॥

अर्थ. सागर कुमारना शीकारी स्वारोए पशुओने हांकी पछवाडे
घोडा दोडाव्यां ते वखत घोडाओना डावलाना पडघाथी जमीन अने
पहाड धमकी उठ्यां, तेना पगना झपाटाथी झाडो तूटवा लाग्यां, हर-
णनां टोळांओ आडे रस्ते अने पर्वतो तरफ धसी नीकळ्यां तेने पछवाडे
जवाथी केटलाएक युद्धाओनां रंगबेरंगी कपडां कांटामां भरायां ते जाणे
वसंत ऋतुए रचेलां फूल खीली रह्यां होयनै! जेम नदी अने निर्झरणानां
पाणी रस्तो गेर रस्तो न जोतां वही नीसरेछे तेम अवळे रस्ते दोडता घो-
डाओने शूराओ खेंचता नथी, सपाटाथी चालता सघळा घोडेस्वारो हा-

रबंध उभा थई रह्या तेमांथी पांचशें घोडेस्वारो तेनी आगळ थया, रस्तामां एक गुफा आडी आवी तेथी सेहेलानीनुं लश्कर देखायुं नहीं जेथी शीकारी स्वारो सेहेलानी लश्करनी टुकडी नजदीक जई चढ्या. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सहलानी सात्रव समुझि, बाज उठाहिय बीर ॥
बिरद हाक बज्जीय बिषम, गज्जीय नाद गहीर ॥ ५ ॥

अर्थ. सेहेलानी सुभटोए शीकारी स्वारोने शत्रु जाणीने तेओना उपर घोडा दोडावी मूक्या त्यारे वीर पुरुषोनी भयंकर हाकलो साथे गंभीर अवाजथी गर्जना थवा लागी. ॥ ५ ॥

आखेटी खेचें सु अस, निरखि फोज सेहेलान ॥
सेहेलानी सनमुख वहे, नवरंग खुले निसान ॥ ६ ॥

अर्थ. सेहेलानीनी फोज जोईने शीकारी स्वारोए पोताना घोडाओ खेंची राख्या पण सेहेलानी तो नवरंगी नीशान खुलुं करी तेना सामे दोडी आव्या. ॥ ६ ॥

॥ अथ छंद हनूंफाळ ॥

नद गहर बज्जिय नीठ ॥ दुहुं दल सु मिलियत दीठ ॥
उत उठिय आतस अग्य ॥ जट धर सु चख मनु जग्य ॥
उभ वहिय वृंद असत्र ॥ नभ गिरत मानु नखत्र ॥
तित त्रहिय त्रंबक तूर ॥ सनमुख सु मिलियत सूर ॥
परसेल पंजर पार ॥ बिल निकस मनु अहि वार ॥
वपु वहत अति किरवान ॥ मनु तडित पतन समान ॥
भये रोष बाथ भिरंत ॥ मद पीयत मनुं मदमंत ॥ ७ ॥

अर्थ. साम सामुं जोइ बन्ने लशकर एकठा मळती वखते गंभीर अवाजथी वाजित्र वागवा लाग्यां अने ते लडाइना मेदानमां आतसबाजी सळगी उठी ते जाणे जटा धारण करनार महादेवजीनुं त्रीजुं नेत्र उघडयुं होयनै? बन्ने लशकरना युद्धाओ शस्त्रनो वरसाद वरसावेछे ते जाणे आकाशमांथी तारा खरता होयनै? ते स्थळे नगारां अने रणतूरना अवाज थवा लाग्या तेथी शुरवीरो एक बीजाना सामा थई प्रहार करवा लाग्या, चळकतां भालां युद्धाओनां बखतर भेदी शरीरमांथी सोंसरा नीकळयांछे, ते जाणे राफडामांथी सर्पो बहार नीकळ्या होयनै? तेमज युद्धाओना अंग उपर तरवारोना घा पडेछे ते जाणे वीजळीयो पडती होयनै? तेम दिसेछे, क्रोधातुर थएला योधाओ एक बीजाने बाथो भरेछे, ते जाणे दारु पीने मदेला होयनै? तेम जणायछे. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

परे सु सागर भट सितर, भयो खरो भाराथ ॥
सेहेलांनी परसत सबा, मुरेजु सागर साथ ॥ ८ ॥

अर्थ खरेखरो महा भारथना जेवो संग्राम थयो जेनी अंदर रससागरनो फोजना सितेर सुभटो कतल थइ पड्या, सेहेलानीना लशकरनो मिलाप थतां मारा मारीमां सागरनुं लशकर मचकोडाइ लडाइनुं मेदान छोडी दई पाछुं हठ्युं ॥ ८ ॥

तज्यो खेत निज भट निरखि, किय रससागर क्रुद्ध ॥
चले सु तुरी उठाय तब, जोध करनकों जुद्ध ॥ ९ ॥

अर्थ. पोताना सुभटोए रणभुमी छोडी ते जोईने रससागर राजकुमारे अति क्रोध कर्यो अने पोतानो घोडो दोडावी सर्व युद्धाओ समेत युद्ध करवा चाली नीसर्या. ॥९॥

॥ छंद पद्धरी ॥

करि रोश चलिय सागर कुमार ॥ मिलि मुंच्छ भ्रोंह जपि मार मार ॥ ललकार सकल जोधार लीन ॥ कोपे सुभट सुर सिंधु कीन ॥ जोधार अंग धारे जरद्द ॥ निहसे सु ताम निसांन नद्द ॥ चख बीर अरुन मुख उदित चंड ॥ पावक पहार मानहुं प्रचंड ॥ संचरे लरन आखाड सिद्ध ॥ उलटयौं सु मनहु परलैं उदद्ध ॥ हिंसार बाज हुअ बीर हक्क ॥ इल धूर पूर ढंपे अरक्क ॥ सु मिले फेर दोउ दल समान ॥ मनु सुर सुरारि सागर मथान ॥ ग्रिद्धनी व्योम सुर करत गाढ ॥ उडि बक सु पंति मनु घन अषाढ ॥ रन सेन उभय अद्दरीय रार ॥ धुरजटी उठे मनु छोह धार ॥ चिहुं ओर करत चिल्लान चीस ॥ रव कीन मनहु सिंगी गिरीस॥ आराब लगी आतस सु आग ॥ जटधार मनों बाडवा जाग ॥ बीरान तीर नावक सु बान ॥ सल्लभ चिनंग केंधों क्रसान ॥सूरांन सेल घट नाट साल॥बिबि ओर ईस सलकंत व्याल॥धर धर परंत सर सार धार ॥छिति क्रोध सिद्ध गोला पछार ॥ जोधार जेर बंधत जरद्द ॥ भव जट अनेक भये बीरभद्द ॥ केते कटार तन पार कीन ॥ दुलहनि दरीच कर मनहुं दीन ॥ महि परि उठंत केते कबंध ॥ धर पहर दोय लग्गे सु धंध ॥ जुरियत अनेक नभ देवयान ॥ मिलियंत अच्छर बर चिंतमान ॥ उमया सु पत्र रत पूर आर ॥ हर प्रोहे सीस केते सुहार ॥ भुअ परे बाज पद्दमी

भुशंड ॥ परभा पहार अजगर प्रचंड ॥ बीरान डाक डमरू वजंत ॥ भूतं पिशाच जोगनि भ्रषंत ॥ सबिकादि पंष पोषित समूह ॥ जयकार हुव सागरह जूह ॥ १० ॥

अर्थ. क्रोध करीने रससागर कुमार चाल्या ते वखते तेनी मूछ भ्रकुटीनी साथे मळीने " मारो मारो" एवो जप करवा लागी, ललकारानी साथे केटलाएक युद्धाओ हुबाळो करी उठ्या, कोपेला सुभटोए सिंधु राग कर्यो, युद्धाओए अंगमां बखतर पेहेर्यां अने फरकता नीसानो साथे नगारां गडगडवा लाग्यां, भयंकर वीर रस उदय थवाथी युद्धाओनी आंख्यो अने म्होडां लाल थई गयां ते जाणे म्होटा पर्वत उपर अग्नी सळगी उठ्यो होयनै? एम दीसेछे, अखाडामां साधेला वीरो लडाई करवा जायछे ते जाणे प्रलय वखतनो समुद्र उलट्यो होयनै? वळी घोडाओनी हावळो अने वीरोनी हाकलो थवा लागी, जमीनथी उडेली धुळनी डमरीए सूर्यने ढांकी दीधो, सरखे सरखां बन्ने लशकरो भेळां थयांछे ते जाणे समुद्र मंथन करवा देव तथा दैत्यो भेळा थया होयनै? गीध अने गीधनी स्त्रीयो आकाशमां भयंकर शद्ब करेछे ते जाणे अशाढ महीनाना मेघमां शद्ब करती वगलाओनी पंक्ती उडती होयनै? रणभूमीमां बन्ने लशकरो भेळां थई लडवा लाग्यां ते जाणे क्षोभ करीने महारुद्र उठ्या होयनै? चारे तरफ समळीयो चीसो पाडेछे ते जाणे महादेवे शिंगीनो अवाज कर्यो होयनै? आरबनी बंदुको अने आतसबाजीमां आग लागी ते जाणे प्रलय वखतना रुद्र अथवा वडवानल अग्नी जागी उठ्यो होयनै? युद्धाओना तीर अने बाणावळीओनां बाण वरसेछे ते जाणे टीडनां टोळां अने अग्नीना तणखा झरता होयनै? बन्ने तरफना शूराओना शरीर रूपी नाटकशाळामांथी भालां सोंसरा नीकळेलांछे ते जाणे महादेवजीनी बन्ने बाजुए सर्प सळकता होयनै? तीर विगेरे हथीआरोनी तीखी

धारथी जमीन उपर युद्धाओनां धड अने माथां पडेछे ते जाणे सिद्ध लोको क्रोधथी पृथ्वी उपर गोळा फेंकता होयनै? युद्धाओ अंगमां जडित्र बखतर पेहेरीने लडवा दोडेछे ते जाणे महादेवनी जटामांथी अनेक विरभद्र प्रगट थया होयनै? केटलाएकना शरीर भेदी कटार बार नीकळ्याछे ते जाणे परणती वखते कन्याए अंतरपटमांथी हाथ बार काढ्यो होयनै? लडाइनी जमीन उपरथी उठी केटलांएक माथा विनानां धड हाथमां हथीयारो लेइ दोडेछे, आवी रीते जमीन उपर बे पहोर सुधी लडाइनो धंध लागी रह्यो ते जोवा सारु आकाशमां अनेक देवताओनां वैमान भेळां थयां, तेमज युद्ध समारंभमां इच्छावर वरवा सारु अनेक अप्सराओ भेळी थायछे, चंडीनो सिंह आ लडाइमां लोही पीने तृप्त थयो ने महारुद्रे पण पोतानी मुंडमाळामां वधारो करवा सारु पडेलां केटलांएक सुरवीरोनां माथां लेई परोव्यां, जमीन उपर घोडा हाथी अने सांढीयाओ पडेलाछे तेनो देखाव म्होटा पहाड अने अजगर पड्या होयनै? एवो भयंकर जणायछे, वीरोनां डाक अने डमरु वागेछे ते प्रमाणे नाचतां भूत, प्रेत, पीशाच अने जोगणीओ रणभूममिां फरीने रुधिर मांसनुं भक्षण करेछे. आ लडाइमां गीध कागडा अने समळाओ विगेरे मांसाहारी पक्षीओना जथ्थाने पोषणने माटे उजेणीना परव जेवुं थइ रह्युंछे एवी रीते संग्राम करतां सागरनो जय थयो अने तेना लशकरे फते मेळवी. ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सहस सूर अध सहस अस, चमर बंध नृप चार ॥
हुओ पंच सिंधुर परत, रससागर जयकार ॥ ११ ॥

अर्थ. सागरना लशकरमां एक हजार शूरवीरो, पांचसे घोडा, चमरबंधी चार राजा अने पांच हाथी एटलुं सैन्य पडवाथी रससागर कुमारनो जय थयो. ॥ ११ ॥

॥ छप्पय ॥

सूर उभैं अध सहस, सहस अनुमान बाज सज ॥
सेनापति नृप सप्त, गिरे द्वादश आहव गज ॥
वाम चमू भइ बिचल, रारि हारित छंड्यो रन ॥
वान सुखासन वरह, जीत लीनें सागर जन ॥
वाजित्र नाद विध विध बजे, महाराज सागर मुदित ॥
रस वीर रुद्र बीरन रचे, दुति मुख द्वादश रवि उदित ॥१२

अर्थ. नीतिपाळ राजाना लशकरमां अढी हजार शूरा, आशरे एक हजार पाखरीया घोडा, एक सेनापति, सात राजा अने बार हाथी एटली फोज लडाइमां कतल थवाथी डावी तरफनी सेना गभराइने युद्धमां हारी रणना मेदानने छोडी पाछी हठी गई तेथी सागरना शूरवीर युद्धाओए झडपथी तेओनां धनुष, वाण, तोप विगेरे हथीआरो म्याना, पालखी, हाथी, घोडा, विगेरे वाहन दारु, गोळा, अने खजाना विगेरे सर्व युद्धोपयोगी सामग्री पोताने हस्तक करी लीधी अने सेनमां मधुर स्वरथी जात जातनां वाजित्र वागवा लाग्यां, महाराजा अति हर्ष पाम्या आवी रीते सुभटोए रुद्र अने वीर रस रच्यो तेथी जाणे एक काळे वार सूर्य उग्या होयनै? एवी रीते सागरनुं मुख झळकतुं देखायुं. ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

खेत छंड सेहेली खसे, इक गिरि अंतर जाय ॥
सुतर चलाये राज प्रति, रन बीती कहिताय ॥ १३ ॥

अर्थ. रणक्षेत्र छोडीने सेहेलानीनुं लश्कर हठी गयुं ते एक पहाड आडो आपी तळेटीमां जई ठेरायुं अने त्यांथी वनेलुं वृत्तांत केहेवा सा-

रु नीतिपाळ राजा पासे एक सांढणी स्वारने मोकल्यो, त्यारे तेणे लडाइमां बनेली सघळी वीना महाराजाने कही संभळावी. ॥ १३ ॥

सुतरी नीतसुपाल प्रति, बीतत कह्यो विचार ॥
महाराज भरि रोश मनु, धरी अगनी घ्रत धार ॥ १४ ॥

अर्थ. सांढणी स्वारे महाराजा नीतिपाळनी पासे जइने संग्राममां बनेलुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं तेथी जेम अग्नीना कुंडमां घीनी धार नाखवाथी अग्नी वधी जाय तेम महाराजाना मनमां क्रोध वधी गयो. १४

॥ अथ उत्प्रेच्छा लंकार ॥

॥ छप्पय ॥

जंभ शीश धरबजर, धरे सुरपरि जालंधर ॥
ध्रुअ किन्नर रुष धरे, हुये मनमथ्थ दहन हर ॥
शिर काश्यपु नर सिंह, भीम कौरव शिर भारथ ॥
कै रघु शिर लंकेश, शीश शिशुपाल जदू सथ ॥
सुतरी पुकार नरनाह सुनि, धरिय कोप कर मुच्छ धरि ॥
जोगनीभाल ज्वाला जगिय, पावक मनु खांडीव परि १५॥

अर्थ. जंभा सुरना उपर इंद्रे, देवताओ उपर जालंधरे, किन्नरना उपर ध्रुए, कामदेवने बाळवा सारु शीवजीए, हिरणकश्यपना उपर नृसिंहे, महाभारथनी लडाईमां कौरवना उपर भीमसेने, लंकापति रावणना उपर रामचंद्रजीए, अने शिशुपाळना उपर यादवोए कोप कर्यो होयनै! तेम नीतिपाळ राजाए सांढणी स्वारनो पोकार सांभळी दुश्मनोउपर क्रोध धारण करीने मूछ उपर हाथ नाख्यो अने तेनी भ्रकुटीमांथी कोपने लीधे जोगणीना जेवी ज्वाळा नीकळी ते जाणे खांडव वन उपर अग्नीनी झाळ सळगी उठी होयनै! ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सागरके सनमुख तबें, रुष पलटी महराज ॥
दिश दिश हाक नकीब हुअ, आनक बिषम अवाज ॥१६॥

अर्थ. सागरनी उपर नीतिपाळ राजाए क्रोध धर्यो त्यारे दिशाये दिशाये नकीबोनी हाकलो साथे म्होटा भयंकर अवाजथी नगारां वागवा लाग्यां. ॥ १६ ॥

॥ अथ अलंकार एकावली ॥ छप्पय ॥

दिश दिश हाक नकीब, हाक हाकन नोबति गज ॥
नोबति नोबति तूर, तूर तूरन छुट्टी धज ॥
धज धज प्रति मिलि फोज, फोज फोजन गज चल्लीय ॥
गज गज परि गज पती, पतिहि प्रति छत्र सु झल्लीय ॥
छत्र छत्र प्रति चमर छवि, उपमा घन दामनि बढीय ॥
अनेक इंद्र कैंधो उदधि, नीतपाल बाहनि चढीय ॥ १७ ॥

अर्थ. दिशाए दिशाए नकीबनी हाको थई रहीछे, हाके हाके नोबत गाजेछे, नोबते नोबते रणतूर वागेछे, रणतूरीए रणतूरीए धजा फरकी रहीछे धजाए धजाए फोज मळती जायछे, फोजे फोजे हाथीयो चालता थाय छे, हाथीए हाथीए सरदारो बेठाछे, सरदारे सरदारे छत्र धर्याछे, छत्रे छत्रे चम्मर ढळी रह्यांछे, तेनी शोभा एवी जणायछे के जाणे मेघनी काळी घटामां वीजळीयो चमकती होय! आ प्रमाणे नीतिपाळ राजानी सेना चडी ते जाणे अनेक इंद्रो चड्या होय अथवा सागर उलट्यो होयनै! ॥ १७ ॥

॥ अथ छंद कंद ॥

धरं नीतपालं चमू उद्धियं धूर ॥ समीरं चढ्यो पत्ररद्दी प्र-

भा सूर ॥ धरा धुज्जीयं सैल धोंसान धोंकार ॥ भुअंगं मनो कच्छ कोलं तज्यो भार ॥गजं बाज धक्कं गिरं झंगरं गाह॥ रसा सोधनं कीन मानों प्रथूराह ॥ बहंतं सरीता सरं सोषितं बार ॥ अगस्तं लियो मानहो ओर ओतार ॥ थपें किंकरं उथ्थपें केरि मंथान ॥ जग्यो फेर मानों रघूवीर राजान ॥ १८ ॥

अर्थ. आवी रीते नीतिपाळनी सेना चडी तेथी जमीन उपर धुळ उडी ते जाणे सूर्यनी कांति ढांकवा सारु धुळनुं वाहन करीने पवन चड्यो होयनै! नगाराना धमकाराथी पहाड अने पृथ्वी ध्रुजवा लाग्यां तेजाणे पृथ्वी धरनार शेष काचबो, अने वराहे पोताना उपरनो बोजो छोडी दीधो होयनै! पहाड अने झाडीना रस्ताओमां हाथी अने घोडाओने धकेली मेल्या ते जाणे जमीनने शोधवा सारु पृथुराजा नीकळ्या होयनै! सेना चालवाथी वेहेती नदीओ अने तळावनां पाणी सोषाइ गयां ते जाणे अगस्त्य मुनीए फरीने अवतार लीधो होयनै! पोताना नोकरोने थापेछे अने शत्रुओने उथापेछे ते जाणे फरीने रघुवीर रामचंद्रजी उदय थया होयनै! ॥ १८ ॥

॥ अथ छंद भुजंग प्रयात ॥

प्रथी नाथ जुद्ध चले नीतपालं ॥ जरैंपोस जो धारलीनें सु जालं ॥ धरें पख्खरं पीठ गज्जं सु धज्जं ॥ विषमं षटं त्रीश नादं सु बज्जं ॥ तुरंगानके अग्र छूटे पताखा ॥ भुजा दंड धारी उचारंत भाषा ॥ गजं बाज फोजं छवी छांह गीरं ॥ हुओ मंडलं ओर अंत्रं महीरं ॥ चमू नाथ ईभं चहुंओर चोरं ॥ भ्रमंतं भुशंडीनके कुंभ भोरं ॥ वहें फंदनं पायकं बाज वृंदं ॥मिसलं मिसलं सुछल्ले समंदं॥ कितपंच सद्दी

दुरद्दी कमालं ॥ मनों गाज कादंबनी मेघ मालं ॥ परे प-
रूखरं कुंजरं सोभ पंती ॥ दरी तुंग केंधों दिगंपाल दंती॥
तुरंगं सनाही चढे साहि तेगं ॥ बसू खंड मानों बहे चंड
वेगं ॥ भयंकार छाये नभं अग्र भाला ॥ जगीहें किधों
बाडवा अंत ज्वाला ॥ सुभट्टं सु कोदंड टंकार सज्जे ॥ भ-
ये पारथं भारथं जूथ भज्जे ॥ अराबा किते आतसी कीन अ-
ग्रं ॥ महा वीर धीरं सु सेना समग्रं ॥ अरंन्नो प्रलैं काल
फोजं उलट्टी ॥ जुगं अंत केंधो कियो रोश जट्टी ॥ १९ ॥

अर्थ. ज्यारे पृथ्वीपति नीतिपाळ राजा युद्ध करवा चाल्या त्यारे तेणे जरीनो पोषाक अने सोनानुं जडित्र बखतर धारण कर्युं, सुभटोए हाथीओनी पीठ उपर पाखर नाखी धजाओ धारण करी त्यारे अति भयंकर छत्रीश जातना वाजां वाग्यां, घोडे स्वारना लशकरनी आगळ पताका जोरथी फटकवा लाग्या, युद्धाओ भुजदंड ठोकीने जुस्साथी बोलवा लाग्या, हाथी, घोडा, अने छत्रधारी युद्धाओनुं मंडल एवी शोभा आपेछेके जाणे जमीनने आकाशनी वचमां एक बीजुज सूर्य मंडल बन्युं होयनै! सेनापतीओना हाथी उपर चारे तरफ चम्मर ढळया करेछे, हाथीनां कुंभस्थळ माथे भमराओ फरी रह्याछे, मीसले मीसले रथ, पायदळ, अने घोडानां जुथ्थ चाल्यां जायछे ते जाणे समुद्र छली चाल्यो होयनै! केटलाएक हाथीओ माथे पंच शद्वी अवाज थै रह्याछे, ते जाणे कादंबिनी (कुंझडीओवाळी मेघनी घटा) अने मेघना मंडल गाजतां होयनै! पाखरीया हाथीओनी हार एवी शोभेछेके जाणे गुफाओ नी टोंच अथवा दिगपाळना हाथीयो होयनै! तेगा (खुल्ली तरवार) धारी घोडे स्वारोनी सेना चडी ते जाणे जमीननां भाग उपर पवन अथवा गरुड गति करता होयनै! एम शोभेछे, आकाशमां भयंकर अने चळकतां

भालानां फळां छवराई रह्यांछे ते जाणे वडवा नामना अग्निनी झाळो लागी होयनै! एम दिसेछे, केटलाएक सुभटो धनुष्यना टंकारव करेछे ते जाणे अर्जुन विगेरे युद्धाओ महा भारथनी लडाइमां धनुष्यना टंकारव करता होयनै! बंदुको, कोकबाण अने आतसथी लडनारा केटलाएक आरब लोकोने आगल करीने शूर अने रणमां धीर लडवैयाओथी भरपूर आ आखुं लश्कर प्रलय काळना समुद्रनी पेठे उलटयुं ते जाणे जगतनो नाश करवासारु महादेवे क्रोध धर्यो होयनै! ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

नीतपाल इहि बिधि चले, दुहु दल भयो निहार ॥
इष्ट मंत्र निज उच्चरिय, रन ठाढे जितवार ॥ २० ॥

अर्थ. एवी रीते नीतिपाळ राजा लश्कर लेइने आव्या अने सामेथी रससागरनुं लश्कर आव्युं, बन्ने लश्करो एक बीजानी नजरे पडतांज बीजयी युद्धाओ पोत पोताना इष्टदेवना मंत्रनो उच्चार करी रण भूमीमां उभा रह्या. ॥ २० ॥

गुन गहीर कबि राज तब, जिहि गज बंध प्रमान ॥
मन बूझन धार्यो मतो, बदी बिरदकी बान ॥ २१ ॥

अर्थ. त्यारे राज्य तरफथी जेने हाथी चोपदार विगेरे मळेलछे अने राजमां पण जेनुं घणुं मानछे एवा गुणगहीर नामना कवीराजे राजाने अभिप्राय पूछवासारु तेनी हजूरमां जइने स्तुति पुर्वक नीचे प्रमाणे प्रशंसा करी. ॥ २१ ॥

॥ अथ गुनगहीर कवी उक्त नीतपाल बिरदावली ॥

॥ छंद छबी ॥

राजान राज ॥ महिमंड माज ॥ खल दल बिपंड ॥ दंडन

उदंड ॥ वर दैंत बंस ॥ हिंदुआन हंस ॥ सेना समंद ॥ कैवान कंद ॥ षटत्रीश क्षत्र ॥ छांह गीर छत्र ॥ मरदं सुमेर ॥ जुध सत्र जेर ॥ उरबी सु इंद ॥ महिमा अमंद ॥ भव अंश भूप ॥ रज धान रूप ॥ कोपित कृशान ॥ जाहर जहान ॥ जग चख उजाल ॥ पोहो नीतपाल ॥ २२ ॥

अर्थ. राजाना राजा, भूमंडळना मर्यादारूप, लुच्चाओनी टोळीने विखेरी नाखनारा, ऊन्मत्तने दंडनार, पोताना कुळने दीपावनार तथा वरदान देनारा, हिंदुओमां हंसरूप सेनाथी समुद्ररूप, आयुधोना समुहरूप, छत्रीश जातना क्षत्रीओमां छत्ररूप, मरदोमां मेरुजेवा, लडाइमां शत्रुओने जेर करनार, पृथ्वीना इंद्र, अखंड महीमावाळा, राजाओमां शिवना अंशरूप, राजधानीमां घरेणारूप, कोप करवाथी अग्निजेवा, आखी दुनीयामां प्रख्यात, सूर्यजेवा प्रकाश करनार, हे? नीतिपाळ राजा, तमारो जय थाओ. ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

विरद बोलि कवि पाल प्रति, करी अरज करजोर ॥
यह अचिंत आहव कहा, कोन शत्रु शिर जोर ॥ २३ ॥

अर्थ. आवी रीते स्तुती करीने नीतिपाळ राजानी पासे कवीओ हाथ जोडीने नम्रता पुर्वक अरज गुजारी कह्युं जे आवी अणचिंतवी लडाइ केम थइ अने आवो शिरजोर कटो दुशमन कोण छे! ॥ २३ ॥

पाउं हुकम महराजको, लाउं खबर तहकीक ॥
तब लगि आप इतैं रहें, उभै न जुरे अनीक ॥ २४ ॥

अर्थ महाराजानो हुकम मळे तो तेओ कोण छे अने केम लडेछे ते सघळी खबर लावी आपुं त्यांहांसुधी आपे आंहीज रेहेवुं अने बन्ने लशकरोने भेळां थवा देवां नहीं. ॥ २४ ॥

नीतपाल कबि अरज सुनि, एती करी उचार ॥
आप वेग सुध लाइयें, तवलों जुरें न रार ॥ २५ ॥

अर्थ. कवीराजनी अरज सांभळीने नीतिपाळ राजाए एटली वात कही के आप जलदीथी त्यांना खबर लावो तमे आवशो त्यांहांसुधी लडाइ थशे नहीं. ॥ २५ ॥

राज हुकम सुतरी बहे, प्रतना कही पुकार ॥
कबि आवन लगि कलहको, निज मुख कह्यो निवार ॥२६

अर्थ. राजाना हुकमथी सांढणी स्वारे जइने लश्करमां पोकार करीने हुकम संभळावी दीधो के कवी आवे त्यांहांसुधी कोइए लडाइ करवी नहीं एम महाराजाए श्रीमुखे मना करेलीछे. ॥ २६ ॥

॥ छप्पय ॥

राज सेन तित रहे, कबि सु चल्लिय सलाम करि ॥
सहस आध असवार, साज हाटक निज गज सरि ॥
सुतर चलाये अग्र, खबर दीनी सागर प्रत ॥
गुनगहीर कविराज, आप मिलवेकों आवत ॥
सागर उचार इतनी सुनत, च्यार पेंड आगें चले ॥
मरजाद यथा सनमान करि, महाराज सु कवी मिले ॥२७॥

अर्थ. राजानुं सैन्यतो त्यांहांज रह्युं पण कवीराज महाराजाने सलाम करी पोतानी साथे पांचशें घोडेस्वार लेइ सोनानी अंबाडीवाळा पोताना हाथीउपर बेशी राजकुमार रससागरना लश्कर तरफ सधाव्या, अने सागरने खबर देवासारु आगळथी सांढणीस्वार मोकल्यो तेणे जइ रससागरने खबर दइ कह्युंके गुणगहीर नामना कवीराज आपने मळवासारु आवेछे महाराजा रससागर ते वात सांभळतांज चार कदम आगळ

चाली नम्रता पुर्वक जेवुं घटे तेवुंज सनमान करी कवीने मळ्या. ॥२७॥

॥ सोरठा ॥

वितत बात वृतंत, कवि बूझ्यो सागर कह्यो ॥
तव पिछताये चिंत, परी उभै पहिचांन जब ॥ २८ ॥

अर्थ. थएली वातनो हेवाल कवीए पुछ्यो अने महाराजा सागरे कही संभळाव्यो, पछी ज्यारे एक बीजाने ओळखाण पडी त्यारे बन्ने जण मनमां पस्ताया. ॥ २८ ॥

आसु होय असवार, कबि सु चले पहिचान करि ॥
कही सकल बिसतार, नीतपाल नृपसें कथा ॥ २९ ॥

अर्थ. कवीराजे रससागर कुमारनी साथे ओळखाण करी तत्काळ हाथीउपर स्वार थइ नीतिपाळ राजानी हजुरमां आवी पोहोच्या अने सघळुं वृत्तांत विस्तारीने महाराजाने कही संभळाव्युं. ॥ २९ ॥

॥ छप्पय ॥

नीतपाल सुनि बात, भयो मन मन्यु सु हीनो ॥
बिरचंद्र परधान, बोलि दीवान सु कीनो ॥
मिले महत उमराउ, एह परमान कियो सब ॥
आहव भयो अचिंत, कछू तकसीर नहीं तब ॥
बाहनि तुच्छ शिशुता सु बय, अभय दान उन दीजियें ॥
समंध आप उन आदि लखि, मिल मनु हार सु कीजियें ३०

अर्थ. नीतिपाळ राजा आ वृत्तांत सांभळी क्रोध रहीत थइ गया एटले बीरचंद्र नामना प्रधानने बोलावीने त्यांज सभा भरी, म्होटा म्होटा अमीर उमराओए भेळा थइने एवो निश्चय कर्यो के आ लडाइ अण-

चिंतवी थइ पडी तेमां एनी कांइ तकशीर नथी, वळी एनुं लश्कर घणुं-ज थोडुंछे तेम उम्मर नानी छे वास्ते एने अभय दान देवुं जोइए, केमके एने अने आपणे आगळनो समंध छे ते जोइ तेनी साथे मिलाप करी आदर सन्मान करवुं जोइए ॥ ३० ॥

॥ चोपाइ ॥

नीतपाल सब अरज सु मानी, मनसु बात मिलबे की ठानी॥ दरकबाहकों आयस दीनी, कलह जुरनकी बरजन कीनी ॥ गुन गहीर कबि प्रथम पठाये, रससागर प्राते मिलन कहाये ॥ चाह मिलन जुग सेंन सुचल्लीय, पारवार मानहुं छिति छल्लीय ॥ ३१ ॥

अर्थ. नीतिपाळ राजाए सर्व सभासदोनी अरज सांभळीने पोताना मनमां मळवानो निश्चय कर्यो, चोपदारने बोलावी लडाइ बंध करवानो हुकम कर्यो अने आगळथी गुणगहीर कवीने त्यां मोकली रससागरने मळवानुं कहाव्युं; मळवानी चाहना करी बन्ने लश्कर चाल्यां ते जाणे जमीन उपर समुद्र छली चाल्यो होयनै! ॥ ३१ ॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

उभै दल त्रंबक बज्जीय तूर ॥ सिलैंधर वृंद सु बंधीय सूर ॥ उभै नृप कुंजरपें असवार ॥ निसांन नकीबन अग्र किनार ॥ उभैं दिश बंदिन छंद उचार ॥ सुरान्नत गान बजावन सार ॥ उभैं महिनाथ चमू गति मंद ॥ दुती भइ छीन मिलंत दिनंद ॥ उभैं बिच बंधित पाट बितान ॥ बने जरतार बनांत बिछांन ॥ उभैं नरनाह मिले तित

आंन ॥ पुरातन नीत म्रजाद प्रमांन ॥ उभैं इक आसन एक उछीर ॥ बिराजित इंद्र मनो जुग बीर ॥ उभैं उमराउ सभा किय आय ॥ गुनी बिरदावत गांनक गाय ॥ उभैं हित बात करंत अनंत ॥ चढे रन सो पिछतावत चिंत ॥ उभैं मनुहार पियंत अमल्ल ॥ खरी भइ रीझ मिट्यो मन पल्ल ॥ उभैं किय तत्र मिसल्ल मुकाम ॥ बिरोचन सोम कुली दछ बाम ॥ ३२ ॥

अर्थ. बन्ने लशकरमां त्रांबानां ढोल, नगारां अने रणतूर वाग्यां बन्ने लशकरमांना भाला धारी सुभटो हारबंध आगळ थया, बन्ने राजा हाथी उपर स्वार थया, बन्नेनां नीशांन अने नकीबोनी आगळ हार बंधाइ, बन्ने लशकरमां बंदीजनो छंद बोली जस गावा लाग्या, बेय फोजमां सुरावटी गायनसाथे वाजां वजावेछे, बेहु राजाओनी सेना मंद मंद गतीथी चालेछे, बेय सेना मळवाथी रज उडी तेने लीधे सूर्यनारायणनी कांति जांखी थइ गइ, बन्ने लशकरना वचमां तंबु ताणी चांदनी बांधी सिंहासनो नाख्यां तेमज जरीनां अने बनातनां बिछानां बीछाव्या, त्यांहा आवी बन्ने राजा आगळना राजवंशीओनी रीति प्रमांणे मर्यादाथी मळ्या, बन्ने राजवंशीओ एक आसन अने एकज तकीये बीराज्या ते जांणे बे इंद्र एक आसने बेठा होयने! एम शोभेछे, बेउ तरफना अमीर उमराओनी सभा भराणी, बेय तरफना गुणवान भाट चारणादि बंदीजनो जश बोलेछे अने गवैआओ गायछे, बेय राजा परस्पर हेतथी घणीएक वातो करेछे तेमज लडाइमां परस्पर सामसामा चड्या तेनो मनमां पस्तावो करेछे, बेय मांहो मांहे सत्कार करीने कसुंबा पीयेछे, बेयने खरी रीतेथी संतोष थयो अने मनमांथी शल्य नीकळी गयां, बन्ने राजाए त्यां सभा करी मुकांम कर्युं, सूर्यवंशी नीतिपाळराजा अने सोमवंशी रससागर बन्ने राजा

अनुक्रमे जमणी डाबी वाजुए वीराज्या. ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

नीतपाल सागर नृपति ॥ रीझ भई मिटि रोस ॥
उठि सबीर निज निज गये, उर सु तज्यो अपसोस ॥ ३३॥

अर्थ. महाराजा नीतिपाळ अने रससागर कुमारने रोष मटीने स्नेह थयो, त्यार पछी मनमांथी अपसोष तजी एक बीजानी रजा लइ पोत पोताना तंबुमां गया. ॥ ३३ ॥

॥ गाहा ॥

रससागर सु हरोलं, बामी मिसल नीतपालं नृप ॥
आहव मिलन उपावं, त्रिदश प्रबीन सागरो लहरं ॥ ३४॥

अर्थ. रससागरनी फोजना आगळ चालनार हरोळी लशकरने अने नीतिपाळ राजाना डाबी तरफना लशकरने मीलापनी साथेज युद्ध थयो अने ओळखाण पड्यापछी मिलाप थयो इत्यादि वृत्तांत संयुक्त प्रवीण सागर ग्रंथनी आ तेरमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ ३४ ॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे नीतपाल रससागर युद्ध मिलाप प्रसंग नाम त्रयोदशमि लहरी समाप्ता ॥ १३ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवी रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां त्रयोदशम स्तरंगः समाप्तः ॥ १३ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद ललित ॥

नरवरो रुडा, रंगमां रळी ॥ नगरमां गया, हेतमां हळी ॥
प्रबिन सागरे, प्रेमथी छळी ॥ लहरि चौदमी ते कहे कळी ॥

॥ अथ रससागर नीतपाळ मनुहार प्रसंग ॥

॥ छप्पय ॥

दिशि दिशि तनित बितान, गान नाटक गुन सज्जें ॥
जित तित जगित चिराक, त्रिबिध बाजित्र सु बज्जें ॥
महाराज जुग मुदित, उदित आनंद सु जन जन ॥
बीतो तमी बृतांत, दुती प्रगटी नभ दिनमन ॥
शशिह सबीर कुंदन कलश, जर निसांन रसमी जुगति ॥
सोहत मुकाम मानहु सहस, द्वारामति देवाल दुति ॥ १ ॥

अर्थ. चोतरफ दिशाए दिशाए तंबु ताणेलाछे तेमां गुणीजनो गायन अने नाटकना खेल करी रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे चिराक बती अने फानसनो प्रकाश थइ रह्योछे, घाथी वागे एवां नगारां विगेरे, घसवाथी वागे एवां सारंगी विगेरे, अने फुंक मारवाथी वागे एवां रणतुर तथा शरणाइ विगेरे उपर कह्या प्रमाणे त्रण प्रकारनां वाजित्रो वागेछे, बन्ने राजाओने हर्ष तेमज जन जन प्रत्ये आनंदनो उदय थइ रह्योछे, एवी रीते रात्रीनुं वृत्तांत वीतवाथी आकाशमां सूर्यनारायणनी कांति प्रगट थइ अने तेनां तेजस्वी कीरणो सपेत तंबु माथे रहेला जडित्र कलश उपर तथा धजा पताका अने जरीना नीशानो उपर प्रसरवाथी चळकता हजारो तंबु एवा शोभीता देखाया के जाणे द्वारिकापुरीना देवालयो होयने! ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रेन पंच उतहीं रहे, नीतपाल मनि न्योत ॥
निज मिजलस सागर सु मिलि, कीयो बिदाको ठ्योत ॥२

अर्थ. नीतिपाळ राजानुं आमंत्रण मानीने रससागर पांच रात्रीसुधी

त्यांज रह्या त्यारपछी पोतानी सभा भरीने राजधानी भणी जवानो विचार कर्यो. ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

देव उदित दुंदभी, सेन शशिबंस कराये ॥
नीतपाल सुनि नाद, आप सागर प्रति आये ॥
हित अति करि मनु हार, कोउ बिध बिदा न कीने ॥
बातन रीझ बनाय, मनंछा पुरलों लीने ॥
उत रैन अहर उतही रहे, दूजे दिन नोबति बजी ॥
नृप नीतपाल सागर सहित, कूच करन सेना सजी ॥ ३ ॥

अर्थ. सूर्यना उदयनी साथे चंद्रवंशी राजकुमारे फोजमां कुच करवाना नगारां वगडाव्यां तेनो अवाज सांभळीने नीतिपाळ राजा पोते सागरनी पासे आव्या, तेणे घणा हेतथी राजकुमारनो सत्कार करी घणा आग्रहथी कोइ प्रकारे चालवानी रजा आपी नहीं अने मनोरंजक वातोथी राजकुमारने रीझवीने मनंछापुरीसुधी तेडी जवानो ठराव कर्यो, ते दिवस अने रात्री तो त्यांहांज रह्या अने बीजे दिवसे फोज तैयार थवानी नोंबत वागी, एटले रससागर राजकुमार समेत नीतिपाळ राजाए कुच करवासारु सेनाने सज्ज करी. ॥ ३ ॥

॥ छंद तोटक ॥

रससागर नीत सुपाल मिले ॥ मनईछ पुरी व्रतमं सु चले ॥ बसुधा परि बाहनि बृंद बहे ॥ छबि अंबर अंबुद आन छहे ॥ गहरी धुनि आनक नाद घनें ॥ प्रतना पति सामज शीश बनें ॥ कितने बन वीर अखेट करें ॥ प्रति जोजन जाय मुकाम परें ॥ तित साजतहे दुहुं भूप सभा ॥

नित नाटक होत पुरंद प्रभा ॥ दश द्वादश द्यौस चले जवही ॥ अध जोजन इंछ पुरी तवही ॥ उत सैंन उभैं सु सवीर गढे ॥ भ्रत पट्टन पेंषि वधाइ वढे ॥ नृप द्वार सुजाय वधाइ कही ॥ सुनि लोग पुरं हरखे सवही ॥ ४ ॥

अर्थ. युद्धाओना वृंदथी वींटाएला रससागर कुमार तथा नीतिपाळ राजा बन्ने मळीने मनंछापुरीने रस्ते चाल्या, जमीन उपर लश्करनां टोळां चाल्यां जायछे ते जाणे आकाशमां आवीने मेघनी घटा छवराणी होयनै! गंभीर अवाजथी घणाएक नगारां वागेछे, सेनाना अधिपतीओ हाथीउपर वेठेलाछे, केटलाएक सुभटो जंगलनी अंदर शीकार खेलता आवेछे, वळी एक जोजन जइ मुकाम करी बन्ने राजा सभा भरीने वेसेछे, ते स्थळे नाटकना खेल थायछे तेथी जाणे आज इंद्रनी सभा होयनै! एवी रीते दश बार दिवस ज्यारे रस्ते चाल्या त्यारे मनंछापुरी अर्धो योजन (वे गाउ) रही, ते ठेकाणे बन्ने लश्करे तंबु नाखी पडाव कर्यो, मनंछापुरीने जोइने वधामणी देवासारु एक चाकरने मोकल्यो तेणे राजद्वारमां जइने महाराजाना आववानी वधामणी कही संभळावी ते सांभळीने गामनां सघळां लोको हर्ष पाम्यां. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि वधाइ हरखित सकल, गृह गृह मंगल चार ॥
ठोर ठोर दुंदभि वजे, सजि मंडन नर नार ॥ ५ ॥

अर्थ. वधामणी सांभळीने सर्व लोको हर्षवान थयां तेमज घेर घेर मंगळना चिन्ह देखावा लाग्या, ठेकाणे ठेकाणे नगारां वागेछे अने स्त्री पुरुषो जात जातना सणगार सजेछे. ॥ ५ ॥

नीतपाल पाटित कुमर, रुद्रसेंन अभिधान ॥
सोय चढन नृप सांमुहें, किय किंकर फुरमान ॥ ६ ॥

अर्थ. रुद्रसेन नामना नीतिपाळ राजाना पाटवी कुमारे राजानी सामे सामैयामां चडवाना हेतुथी फोज तैयार करवानो एक नोकरने हुकम फरमाव्यो. ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

कुमर चढे रुद्रसेंन, तूर भेरी आनक वज ॥
निज समान उमराउ, कुमर दस बीस चढे गज ॥
सोर सहस असवार, पंच पैंदल सहस्त्र लिय ॥
दिनकर अंसु बितीत, जाय प्रतना प्रवेश किय ॥
कीने सबीर नृपसें निकट, नीतपाल बंदन सुकरि ॥
फुनि रससागरसें मीले, उर बिशेष आनंद भरि ॥ ७ ॥

अर्थ. रुद्रसेंन कुमार चड्या तेथी रणतूर ढोल तथा नगारां वाग्यां, तेमना जेवडा अमीर उमराओना दश बार कुंवरो हाथीउपर चड्या, सोळ हजार स्वार, पांच हजार प्यादा, एटलुं लश्कर साथे लइने सूर्यनां कीरण अस्त पामती वखते सेनामां जइने प्रवेश कर्यो, राजानी नजदीक पोतानो तंबु नखावीने पोताना पीता नीतिपाळने वंदन करी पछी हृदयमां अति आनंद धारण करीने रससागर राजकुमारने मळ्या. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

निशि बीती नाटक रचत, भइ मयूख नभ भान ॥
पुर प्रसाद दरसाइ द्रुति, मनहुं लंक सुर थान ॥ ८ ॥

अर्थ. सुख चेनमां नाटकनी गमतथी रात्री वीति गइ अने आकाशमां सूर्य उग्यो तेनां कीरण पडवाथी शेहेरनी मेडीओ ने देवाल्योनो एवो देखाव थयो के जाणे रावणनी राजधानी सोनानी लंका होयने! ॥८॥

पुर जन नृप आगम उमगि, राह निहारत नेंन ॥
सेप मुहूरत सहसकर, चले सु चढि गुन सेंन ॥ ९ ॥

अर्थ. राजाना आववानी वधामणी सांभळी उमंग पामेलां गामनां लोको पोतानी आंख्योथी रस्तो नीहारेछे, सूर्य अस्त थया आगमच छेल्ला मुहूर्त्तमां त्रणे लश्करो चढी चाल्यां. ॥ ९ ॥

॥ छंद पद्धरी ॥

दिन लगन शेष दल चलिय साज ॥ बाजित्र नाद धर गगन गाज ॥ उपबन सु बृच्छ फूले अनंत ॥ बीथी सु कुंज वाहनि वहंत ॥ कलिकंठ कीर पिक चक्र मोर ॥ बिकसित प्रसून सारंग सोर ॥ सर भर सलील श्रोता सु कूह ॥ सारस सिचान जलचर समूह॥ एसें चरित्र निरखत महीप ॥ सेना सु सहर आवत समीप ॥ नृप आगम सु जन हरख धार ॥ निकसे सु नग्र परकार द्वार ॥ नर नारि निकसि सांमे चलंत ॥ मानहुं प्रकार विपु दल मलंत ॥ बाहनी बोंम नृप उदित चंद ॥ सनमुख प्रसार केंधो समंद ॥ पुर द्वार नीठ फहरे निशांन ॥ दुति देव मंद भइ समय दान ॥ दुज कवि अनेक उचरें असीस ॥ उमराउ सीस नामे सु ईस ॥ कैबांन कोट कीनी सलाम ॥ कीनो प्रवेश पुर द्वार ताम ॥ हर सेन वाम मधि नीतपाल ॥ सागर सु दच्छ आरूढ व्याल ॥ वाजंत्र घोर गानंक गान ॥ बंदि ब्रदाव लठधार वान ॥ नर नार नग्र उमडे उछाह ॥ बंधे सु मोद स्त्रक राह राह ॥ प्रति चौंक चौंक सारथिक साज॥

अक्षत अबीर उडि अरुन राज ॥ हरितं सुदूब हरिता धरंत ॥ प्रासाद पुष्प वृष्टी परंत ॥ जित तित सुदीप माला प्रकास॥ मानो सहस्त्र कर सत उजास॥ बिनता बिसेष साजे सिंगार॥ झांखे दरीच दामनि उजार॥ साहा नमंत शिर हाट हाट ॥ हाटक हमेल चिक झुकित पाट ॥ रजधान राज प्रबिसत प्रकार ॥ किंकर सलाम कीनी गुजार ॥१०॥

अर्थ. दिवसना छेल्ला लगनमां आखुं लश्कर सज थइने चाल्युं त्यारे वाजित्रोना अवाजथी जमीन अने आकाश गाजी रह्यां, शेहेरनी बाहारना उपवनमां जात जातनां अनेक फूल प्रफुल्लित थइ रह्यांछे, जेनी कुंज गलीयोमांथी सेना चाली जायछे, बपैया, पोपट, कोयल, चकवा अने मोर मधुरा अवाज करेछे, खीलेला फूलोनी आसपास भमराओ सोरा सोर करी रह्याछे, पाणीथी भरपूर तळाव, नदी, कुवा अने कुंड विगेरे जळाशयोने कीनारे सारस सींचाणा अने जळमां रेहेनारा जीवनां टोळां बेठेलांछे; वन्ने राजा सेनासाथे एवी अनेक तरेहनी शोभा जोता जोता शेहेरनी नजीक आवता जायछे, राजाना आववाथी लोको हर्ष धरीने शेहेरना दरवज्जा बहार नीकळ्यां एटलुंज नहीं पण जोवानी आतुरताथी नर नारीओ सामे चालेछे ते जाणे एक बीजुं लश्कर सामुं आवतुं होयनै! सेनारूपी आकाशमां राजारूपी चंद्रनो उदय थवाथी जाणे सामा आवता माणसोना समुदायरूपी समुद्र छली आवतो होयनै! शेहेरना दरवज्जा पासे नीशान फरकवा लाग्यां, सूर्यनी कांति झांखी थइ अने दान देवानो समय थयो तेथी अनेक ब्राह्मणो तथा कवीओ आशीर्वादनो उच्चार करवा लाग्या, अमीर उमराओए पोताना राजाने शीश नमाव्यां, करोडो कोट्टेदारोए आवी सलाम करी, शेहेरना दरवज्जामां प्रवेश कर्यो ते वखते रुद्रसेन राजकुमारनी स्वारी डावी बाजुए चालेछे अने महाराजा नीतिपाळ

वच्चे चालेछे रससागर राजकुमार जमणी बाजुए हाथीउपर वीराजी चालेछे त्यारे वाजीत्रोना घोर अवाज थायछे अने नायकाओ गायन करे छे, भाट चारणादी वंदीजनो अने चोपदारो वाणीथी जश गायछे, उत्साहथी नर नारीयो समेत आखुं नगर उमटी आव्युं छे, हर्षथी रस्ते रस्ते तोरण अने फुलनां हार वांध्याछे, चौटे चौटे साथीया पुरेलाछे, अक्षत, (चोखा) अवील अने राता रंगनो गुलाल उडेछे, अने लीली धोथी ढंकाएली जमीन लीली लागेछे, उंची अटाळीका अने मेडीओमांथी फुलनो वरसाद पडेछे, ठेकाणे ठेकाणे दीपमाळानुं अजवाळुं थइ रह्युंछे, ते जाणे सो सूर्यनुं अजवाळुं होयनै! वीजळी जेवी कांतीवाळी स्त्रीओ घणाक शृंगार सजीने चकमांथी जुवेछे, हाटे हाटेथी साहुकारो माथां नीचां करीने नमन करेछे, सोनानी हमेल अने जडित्र सोनानो पाटीयाळो हार झुकी रह्योछे, राजगढमां प्रवेश करती वखते अंदरना नोकरोए आवी सलाम करी. ॥ १० ॥

॥ छप्पय ॥

राज निकट आराम, नाम नवरंग बाग जिहि ॥
रससागर जुत सेन, कीन सुमुकाम ठोर तिहि ॥
संग रहे रुद्र सेन, विविध मनुहार बनायत ॥
बाग मेहेल सुभ थान, तहां कीनी सु बिछायत ॥
नृप नीतपाल सूधे चले, पंच उलंघित देहरी ॥
गज तजि दिवान कीनों तहां, चली बधाइ सु चेहरी ॥११

अर्थ. राजगढनी पासे एक वगीचोछे जेनुं नाम नवरंग बाग छे तेमां सैन्य समेत रससागरे मुकाम कर्यु, त्यांहां रुद्रसेन कुंवर साथे रहीने नाना प्रकारनी मीजमानी करेछे, बागनी वच्चे सुंदर मेहेल हतो त्यांहां सारी बीछायत करावी, एवी रीते रससागरे मुकाम कर्युं, अने नीतिपा-

ळ राजा तो सीधा चाल्या गया ते पांच दोढिओ ओलंगीने हाथीउ-परथी उतरी ते स्थळे सभा भरी बेठा एटले दासी जनानखानामां वधाइ देवा गइ. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

अंदर द्वार उछाह हुअ, सजे सु मंडन नार ॥
दीपमाल दिश दिश जगी, गायक गान उचार ॥ १२ ॥

अर्थ. वधामणी सांभळवाथी जनानखानामां घणो आनंद थयो, रा-णीओए सारां सारां घरेणां तथा वस्त्र पेहेर्यां, दिशाये दिशाये दीपमालानो प्रकाश थयो अने गायन करनारा रागना उच्चार करवा लाग्या. ॥ १२ ॥

॥ छप्पय ॥

महल सोर महाराज, सोर सोरह दासी जुर ॥
चली बधावन राय, अतिहि आनंद लाय उर ॥
केसर अतर गुलाब, चुआ चंदन लीने कर ॥
उडत अबीर गुलाल, थार मुकता फलके भर ॥
बिध बिध प्रसून धारे प्रथक, मंगल गावत मंद गती ॥
सिंगार सोर वृष सोर बय, आंइ जहां राजे नृपति ॥१३॥

अर्थ. नीतिपाळ राजाने सोळ राणीओ छे अने तेना सोळ मेहेलछे, ते प्रत्येक मेहेलमांथी सोळ सोळ दासीओ एकठी मळीने महाराजाने व-धावा वास्ते चाली; त्यारे मनमां अति उमंग लावीने केसर, अतर, गु-लाब, चुवा अने चंदननां पात्र हाथमां लीधां, तेमज उडाडवा वास्ते अबील, गुलाल अने मोतीओना थाल भरी लीधा, जात जातना फुलनी छाबो भरी धीमी धीमी गतिथी मंगळ गातीओ चालेछे, जेणे सोळे सणगार धारण कर्याछे अने जेनी सोळ सोळ वर्षनी उम्मरछे एवी ते दा-सीओ ज्यांहां महाराजा बीराज्याछे त्यांहां आवी. ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

अरचे चरचे ईश प्रति, सुमन हार पहिराय ॥
निराजन घन सार किय ॥ शशिगोती सु बधाय ॥ १४ ॥

अर्थ. दासीओए महाराजानी पुजा करी, चंदन चर्च्युं, फूलना हार पेहेराव्यां, कपुरथी आरती उतारी, अने मुगताफळे वधाव्या. ॥ १४ ॥

किंकर निज कीनी विदा, उर अति बढयो उमंग ॥
महाराज प्रापित महल, वहें सहेली संग ॥ १५ ॥

अर्थ. महाराजाए हृदयमां अति उमंग वधवाथी पोताना कींकरोने रजा आपी अने आवेली दासीओनी साथेज राजमेहेलमां दाखल थया. ॥ १५ ॥

खांन पांन सज्या सहित, करि सागर मनुहार ॥
रुद्रसेंन आयस लई, गये सु निज आगार ॥१६॥

अर्थ. खावा पीवाना पदार्थ अने वीछाना पलंग आदी सामग्रीथी रससागर कुमारनी मीजमानी करी आज्ञा लइ रुद्रसेन कुंवर पोताना राजमेहेलमां गया. ॥ १६ ॥

आमिषादि नित नित असन, बहु व्यंजन पकवान ॥
अस्त उदैं कल परत नहि, अति आनंद उदान ॥ १७ ॥

अर्थ. रससागर राजकुमारने हमेशां आमीष विगेरे खावाना पदार्थ, भात भातनां शाकपत्र, जात जातनां पकवानोनुं भोजन मळवाथी तेमज बगीचानी सेहेलना आंनदथी सूर्यना उदय अस्तनी खबर पडती नथी. ॥ १७ ॥

सुरा आदि विधि विधि अमल, विधि विधि गान उचार ॥
आमंत्रन विधि विधि नये, विधि विधि नित मनुहार ॥१८

अर्थ. मदिरा आदिक जात जातना केफ कसुंवा, जात जातना गायनना उच्चार, जुदां जुदां नोतरां अने जात जातनी मीजमानीओथी रससागर राजकुमार सुख चेनमां दिन गुजारेछे. ॥ १८ ॥

॥ छप्पय ॥

नीतपाल मनुहार, सरस रससागर मानी ॥
सागर की जु सयांन, नीतपालादि बखानी ॥
पख इक गयो प्रमान, अरज बिद्याकी कीनी ॥
नीठ नीठ करि नीत,पाल आयस तब लीनी ॥
एकेक दान दुज कवि दीये, उर उछाह अति अति वढे ॥
बाजे निशान उद्दित अरुन, सेन सु रससागर चढे ॥ १९ ॥

अर्थ॰ नीतिपाळ राजानी श्रेष्ठ मीजमानी रससागरे मान्य राखी तेमज रससागरनुं शाहाणपणुं अने जमामरदीना नीतिपाळादि राजाओए वखाण कर्यां, आवी रीते सुखमां एक पखवाडीयुं नीकळी जवाथी सागरे घेर जवानी रजा मागी ने घणो आग्रह कर्यो त्यारे मांड मांड नीतिपाळ राजानी रजा मळी तेथी मनमां अतिशें आनंद वधी गयो अने ब्राह्मणो तथा कवीओने बोलावी यथा योग्य दान आप्यां, सूर्यना उदयनी साथे कुचनां नगारां वाग्यां अने सेन सहित सागर चड्या.॥१९

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

चढे रससागरजू गजराज ॥ सज्यो सतकुंभ सु कुंभिय साज ॥ सुरंगिय पाग सु शीश लसंत ॥ तुरा लर मोतनकी सु झुकंत ॥ कलंगिय पच्छ हमाउ सु कीन ॥ नव ग्रह शीश सु पेच मनीन ॥ कनंक गुलीक सु कुंडल कान ॥ मनूं मुख बिंब सु भान बिहान ॥ झगा कसमीर सु रंगित झी-

न ॥ भर्यो जर चंदन अंतर भीन ॥ मनी जट चोकिय मोतन माल ॥ सुशोभित सोसनियं सु दुशाल ॥ बिराजत नील मनी भुज बंध ॥ शुभं बल नीक जटे कर संध ॥ बनी मनि मुद्रिक पल्लव बीच ॥ मनो निरवतावलि रैंन मरीच ॥ रह्यो कटि फेंट गुलाबिय रंग ॥ सुनेरिय मीन कटार सु संग ॥ भर्यो जर तार सु नील तमान ॥ कसी असि चाप उभैं कर वान ॥ कुलावन बीच झुकंत निषंग ॥ उदैं मनु कोटिहि कोटि अनंग ॥ नकीबन हाक बजंत निशान ॥ भयो दल कूच सु उद्दित भान ॥ महेलन नीठ चले महराज ॥ परी उनकाननि नाद अवाज ॥ विलोकन ब्रह्म सुता परवीन ॥ झरोखन आय दुहू द्रग दीन ॥ २० ॥

अर्थ सोनानी अंवाडीथी सजेला शुभ्र हाथी उपर महाराजा रससागर वीराजमांन थया ते वखते सुंदर रंगीन पाग सागरना मस्तक उपर शोभेछे तोरा अने मोतीनी लरो झुकीरहीछे, हमाउ पक्षीना पीछां नाजुक कलगी उपर धारण करेलांछे, तेमज आकाशमां चळकता नव ग्रहो जेवा मणीयोथी जडित्र शीरपेच झळकी रह्योछे, सोनानां गोळाकार कुंडळ कानमां चळकेछे, तेथी सागरनुं मुख जाणे सूर्यनुं विंव होयनै! केसरना रंगथी रंगेलो बारीक जरीना बुंटाथी भरेलो चंदन तथा अत्तरथी भींजायेलो जामो पेहेर्योछे, मणीये जडेला चोकीदार हार तथा मोतीनी माळा कंठमां धारण करेलीछे, पासे शोशनी रंगनो दुशालो शोभेछे, नीलमणीथी शोभीता बाजुबंध बांधेलाछे तेमज जडित्र सोनानां कडां हाथमां पेहेरेलांछे, पल्लव जेवी सुदर नाजुक आंगळीओमां मणीथी जडेली वीटीओ चळकाट करेछे ते जांणे रात्रीने समये आकाशना नक्षत्रोनां कीरणो चळकतां होयनै! वळी सोनाना मीणाकारी कटारनी साथे गुलाबी रंगनो

शोभायमान फेंटो कडे वांधेलोछे ने जरीथी भरेलो लीला रंगनो तमान पेहेरेलोछे, भेठमां सोनानी जडित्र मुठवाळी तरवार कसी लीधीछे तेमज एक हाथमां धनुष अने बीजा हाथमां वाण धरेलछे, वांसे वांधेला बाणथी भरपूर सोनाना भाथा बन्ने वाजुए झुकी रह्याछे ने जाणे करोडो कामदेव प्रगट थया होयनै! एवा दीसेछे, चोपदारनी हाकलो, नीशान, अने नगारां वागवाथी सूर्यना उदयनी साथेज सघलुं सेन कुच करी चढी नीसरुं, माहाराजा स्वारी समेत राज मेहेल तरफ चाल्या ते वखत अनेक वाजित्रोना अवाज अेने काने पडवाथी सागरनी स्वारी जोवा सारु कलाप्रवीन तथा ब्रह्मसुता कुसुमावळी ए बन्नेये झरोखा उपर आवीने सागरने मार्गे नेत्र अर्पण कर्या ॥ २० ॥

॥ अथ प्रवीन चरित बर्नन अलंकार जाति स्वभाव ॥

॥ कबित्त ॥

उदित मिहीर बाल मंजित गुलाब नीर, फिरोसी सु चीर धरयो छेहरे किनार जर॥ बिछुआ मंजीर पाय किंकिनि शरीर मध्य, मोती मनिहार हीर भुजबंध चूर कर ॥ बेसर सु कीर नासा काशमीर खोर बिंद, लोलक घुभी रजंत कबरी कुसुम लर ॥ नेंन तीर नाग रेख बीर पान बीर देत, सुनत गहीर धुनि धीर न सकीसु धर ॥ २१ ॥

अर्थ. सूर्य उदय थवाथी कळाप्रवीणे गुलाबना सुगंधीवाळा जळमां न्हाइने जरीना छेडा तथा जरीयनी कीनारीदार पीरोजा रंगनुं चीर पेहेर्युं, पगमां वींछीया तथा लंघर पेहेर्या तेमज कम्मरमां कटीमेखळा बांधी, मोती, मणी अने फुलना हार कंठमां धारण कर्या, हाथमां बाजुबंध बांधी अने चुडीयो पेहेरी, पोपटनी चांच सरखा नमणा नाकमां नकवेसर (नथ)पेहेर्युंछे, कपाळमां केसरनी आड अने ला-

ल कुंकुमनी वेंदी धारण करीछे, कानमां झुमखादार लोलक लटकी र-ह्यांछे तेमज केशमां गुंथेला फूलनी लरो झुकी रहीछे, तीरजेवा कटाक्ष-वाळी आंख्योमां अंजननी रेखा ओपी रहीछे, राता कमळजेवा हाथमां मेंदीनो रंग आपेलोछे आवी लावण्यतावाळी कळाप्रवीण वाजानो गं-भीर अवाज सांभळी पोताना मनमां धीरज धरी शकी नही ॥ २१ ॥

॥ अथ पुर्णोपमा अलंकार ॥

उठीहे चमंकि पाय धरनि धमंकि धरे, जेहर झमंकी मन आतुर अती भई ॥ उर अकुलाय धाय चढीहे झरोख जा-य, चिकसु उठाय लखी कुसुम अगें लई ॥ सागर चलंत मग जुरत दुहुन द्रग अटाकी घटानमें छटान ज्यौं छिपैं गई ॥ दोऊ मन प्रेम वान लगे ज्यों लगे निशांन पें अया-न तनत्रान छेदन भये दई ॥ २२ ॥

अर्थ. वाजाना अवाजनी भनक काने पडवाथी चमकी उठी ने धम-धमता पगथी जमीन उपर कदंम भरवा लागी तेथी झांझर अने लंघरनो झमझमाट थइ रह्यो मनमां अति आतुर थइ, हृदयमां अकळाइ जइ दोडीने झरोखा उपर चडी गइ, त्यांहां गोखमां बांधेला चकने उठा-वी कुसुमावळीने आगळ लइ रससागरने जोवा लागी रस्ते चालता सा-गर अने गोखमां रहेली कळाप्रवीण ए बन्नेनी आंख्यो एक बीजानी साथे जोडातांज तुरत मेडीयोनी घटामां वीजळीनी पेठे छपी गइ तेथीजेम नीशानना उपर वाण लागे तेम बन्येना मनमां प्रेम वाण लाग्यां. अ-जाणपणमां पण प्रेमनां वाण वागवाथी जेम बखतर भेदाइ जाय तेम वेयना मन भेदाइ गयां. ॥ २२ ॥

॥ सवैया ॥

सागर जात गयंद चढे सु, प्रवीन झरोख चढी उमगी ॥

दूर कियो चिक दीठ जुरी जुग, रीझ भई भरि लाज भगी
दामनि ज्यौं सु दमंक गई चित, दोउनके सु चमंक लगी ॥
होत नहीं बिरहानल उद्दित, प्रेम जरीक जगी चिनगी २३

अर्थ. रससागर जेम हाथीउपर चडी जायछे तेम कळा प्रवीण उमंग पामीने झरोखाउपर चडेलीछे, चक दूर कर्यो एटले बेयनी नजर जोडाइ गई तेथी रीझ तो थई पण लाजभरी कळा प्रवीण लाज काढी भागीने वीजळीनी पेठे दमकी (सळकी) गई, तेथी बन्नेना चित्तमां चमक लागी, विरहाग्निनो उदयतो थयो नहीं पण प्रेमनी जराएक चिनगारी (तणखी) जागृत थई. ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

धन संबत रितु मास पख, धन सु उदे दिन कीन ॥
जाम घरी पल धन लग्यो, सागर प्रेम प्रवीन ॥ २४ ॥

अर्थ. संवत, ऋतु, मास, पक्ष अने आ उदय थएला दिवसने धन्य छे तेमज पोहोर, घडी अने पळने पण धन्य छे के जेमां सागर अने प्रवीणने प्रेम लाग्यो. ॥ २४ ॥

बैंठि बाल बीछोंन परि, मन फुनि चितवन चात ॥
रससागर मग गमन किय, झांखी चख उरझात ॥ २५ ॥

अर्थ. बाळा बीछानाउपर बेठी तो खरी पण मनमां वारंवार चिंतवन कर्या करेछे अने जे रस्तेथी रससागर गया ते रस्ताने आंखे जोईने मुंझायछे. ॥ २५ ॥

॥ छप्पय ॥

रससागर मग जात, हरम हरमनि प्रति हेरत ॥
वह मुख निरखन चहत, कंध फुनि पाछें फेरत ॥

प्रापत भये बजार, साह शिर नमत जितैं तित ॥
निकसे नग्र बहीर, चटक लागी न मटत चित ॥
दोऊ लखंत दुचिते भये, वय किसोर कहत न बनें ॥
एकेक चाह लागी सु उर, मुरझावत निज निज मनें २६॥

अर्थ. रससागर रस्ते जतां मेडीये मेडीये हेरीने जोया करेछे अने ते कळाप्रवीणनुं मुख जोवानी चाहनाथी फरीने पाछु कांध फेरवेछे, एम करता करता बजारमां आव्या त्यांहां ठेकाणे ठेकाणेथी शाहुकारो शीर नमावेछे, नग्रनी बाहार नीकळ्या पण चित्तमां जे चटक लागीछे ते मटती नथी एवी रीते रससागर तथा कळाप्रवीण ए बन्ने एक बीजाने जोवाथी बे चेन्ह थयां, उम्मर कीशोरछे तेथी केहेवानुं कांइ बनतुं नथी पण एक बीजानी परस्पर हृदयमां चाहना लागी तेथी पोत पोताना मनमां मुंझायाकरेछे. ॥ २६ ॥

॥ अथ अलंकार उत्प्रेछा ॥

॥ गाहा ॥

प्रेम रह्यो परछन्नं, गुन औषधि मंत्र अंकहु मुनि ॥
मानहु ईसमें अनलं, जल सुचिताइ वेद परि ब्रह्मं ॥ २७ ॥

अर्थ. औषधमां जेम गुप्त गुण रह्योछे, मंत्रना वर्णोमां जेम ऋषि छंद रह्याछे, जेम महादेव पासे अग्नी रह्योछे, जेम जलमां पवित्रताइ रहीछे, अने जेम वेदमां परब्रह्म रह्याछे. तेम कळाप्रवीण तथा सागरना मनमां छानो प्रेम रह्यो. ॥ २७ ॥

प्रेम बीज उर पहियं, रहियं लाज पांसु लपटायो ॥
जोबन घन बरखंतं, वृच्छ अमोल ऊगहे आगें ॥ २८ ॥

अर्थ. हृदयरुपी पृथ्वीमां प्रेम रुपी बीज पड्युं अने ते लाज रुपी

खातरमां लपटाइ रह्युं ते ज्यारे जोबन रुपी वरसाद वरसशे त्यारे तेमांथी आगल उपर अमुल्य झाड उगशे. ॥ २८ ॥

॥ अथ छंद चंद्रायणा ॥

चले सु सागर सैंन, मनंछा नग्रसैं॥ नीतपाळ तारीफ, रसनकी अग्रसैं॥ सूर बंस हद छंडि, गये सु पहारमें ॥सागर चूके सुरत, लगे सु सिकारमें ॥ दिवस चले दस बीस, मुकाम मुकामसें ॥ उतरे आय उदान, निकट निज धामसें ॥ बहे सु किंकर नग्र, बधाई जा करी ॥ ठोर ठोर उच्छाह, उमग लागी झरी ॥ २९ ॥

अर्थ. मनंछापुरीथी चालेलुं सैन्य पोतानी जीभथी नीतिपाल राजानी तारीफ करतुं करतुं सूर्यवंशी सदरहु राजानी सरहद छोडी देइने पहाडमां पोहोच्युं, त्याहां रससागर कला प्रवीणनी सुरत चुकी जइने शीकार खेलवा लागी गया. मुकामे मुकामेथी कुच करी दस वीश दीवस चाल्या त्यारे पोतानी राजधानीए आवी पोहोच्या अने पोताना शेहेरनी नजदीक जे बाग हतो तेमां आवी उतर्या. त्यांहांथी चालीने नोकरोए नगरमां जइ वधामणी कही तेथी ठेकाणे ठेकाणे उच्छव अने उमंगनी झडी लागी रही. ॥ २९

॥ छप्पय ॥

सांझ समे चढि सेंन, तूर दुंदभि धुनि बज्जिय ॥
राग रंग गुन गान, होत पूरह प्रवेश किय ॥
अटन अटन जन चढे, सुमनको घन बरषावत ॥
चंदन केसर चरचि, माननी मंगळ गावत ॥
निज द्वार नीठ उमराउ सब, शीश नामि ग्रह ग्रह वहे ॥

सागर प्रदीप वंदे चरन, कहि वितीत महिलन गये ॥ ३०

अर्थ. सांझनी वखते सैन्य चड्युं त्यारे तूर दुंदभी विगेरे घणां वाजित्रो वागवा लाग्यां, राग रंग अने गुणी जनना गायननी साथे शेहेरमां प्रवेश कर्यो, त्यारे मेडीये मेडीये चडीने लोको फूलनो वरसाद वरसावेछे केसर चंदन चरचीने स्त्रीयो मंगळ (गाणा) गायछे, एवी रीते राजद्वारनी पासे अव्या त्यारे सघळा अमीर उमराओ आज्ञा लइ शीर नमावीने पोत पोताना घर तरफ जवा लाग्या, अने सागर पोताना पीता प्रदीपराजाना चरणनुं वंदन करी बनेली हकीकत कही संभळावीने मेहेलमां गया. ॥ ३० ॥

॥ गाहा ॥

मिलन नृपति मनुहारं, जुग द्रग जुरत प्रेम उतपन्नं ॥
नेह सु नग्र सपंतं, चउद प्रवीन सागरो लहरं ॥ ३१ ॥

अर्थ. महाराजा नीतिपाळ तथा रससागरनो समागम, नीतिपाळे करेलो सत्कार, कळाप्रवीन तथा रससागर ए बन्नेनां नेत्र एक बीजानी साथे जोडायाथी प्रथम प्रेमनुं उत्पन्न थवुं अने त्यांथी पाछुं रससागरनुं नेह नग्रमां आववुं इत्यादि वृत्तांत युक्त प्रवीणसागरनी आ चौदमी लेहेर संपुर्ण थइ. ॥ ३१ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे मनुहार प्रथम प्रेम जुरन नाम चतुर्दश लहरि समाप्ता ॥ १४ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवी रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां चतुर्दशम स्तरंगः समाप्तः ॥ १४ ॥

॥ अथ टीका कारोक्त तरंग शिखाबंध छंद हरिगीति ॥
अढार नामो जे कह्यां, अवयोगनां ते ते तजी ॥
शुभ मूरत धारि लग्ननुं, रूडि जान शोभीती सजी ॥
रससागर पर्णि पामिया, सुख रहि ससुरना शेरमां ॥
वीवा वखाणी वर्णवे कवि, पुरण पन्नर लेरमां ॥

॥ अथ रससागर उद्वाह प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

रससागर महराज, भई त्रयोदश वरष वय ॥
नृप प्रदीप सुख साज, किय अद्दर उद वाहको ॥ १

महाराजा रससागरनी तेर वर्षनी उम्मर थइ तेथी प्रदीपराजाए मनमां खुशी थइने विवाहनो आदर कर्यो. ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

मुलक मेद पुर मुदित, नाथ संग्राम सेंन जिहि
तास सुता सुभ लच्छ, आव्हयें चंद्र कला तिहि ॥
शोधि शील कुल रूप, तहाँ संमंध द्रढायो ॥
शुद्ध मुहूरत धारि, लगन दुज साथ पठायो ॥
लीनो बधाय मुकता फलन, भोंन भोंन उच्छव भये ॥
कीने बिदाय दुज देवकों, मनि कुंदन भूपन दये ॥ २ ॥

अर्थ. मेवाड नामना मुलकमां मुदित पूर नामनुं शेहेरछे त्यांहां संग्रामसेन राजा राज्य करेछे तेनी सारा लक्षणवाळी कन्या जेनुं नाम चंद्रकळाछे तेनो सारो स्वभाव सारु कुळ सारु रूप ए वीगरे शोधीने त्यांहां रससागरनी सगाइ करी अने संग्रामसेन राजाए पण सारुं मुहूर्त जोवरावी लगन लखावी ब्राह्मण साथे मोकलाव्युं ते लगन मोतीथी वधावी लीधुं तेथी घेर घेर उत्सव थयो, पछी ब्राह्मणने मणी सुवर्ण अलंकार अने पोशाग आपी विदाय कर्यो. ॥ २ ॥

॥ अथ लग्न भेद अवयोग ॥ छप्पय ॥

कुंलिक विष्टिं उतपाँत, मृत्युँ कानक यमघंटह ॥
लताँयोग गृहवेंध, वैध्रतां गैलं बतिपातह ॥
अष्ट पष्टमें इंदु, क्रांति साँम्य सु गैलांत गन ॥
रिक्ताँ दग्धाँ तिथ्य, प्रथम संक्रांतिहुँको दिन ॥
नक्षत्र गृहनें छंडे हयन, अष्टादश अवयोग लखि ॥
उद्वाह समय सागर गनक, यह लग्न लीनों परखि ॥ ३ ॥

अर्थ. कुलिक, विष्टि, उत्पात, मृत्यु, काण, यमघंट, लत्तायोग, गृह वेध, वैध्रत, एकार्गळ, व्यतिपात, छठे आठमे चंद्र, क्रांति साम्य, गल्लांत, रिक्ता तथा दग्धा तिथि, संक्रांतिनो प्रथम दिवस, ग्रहणे भोगवेलुं नक्षत्र, अने दक्षिणायन ए अढार अवयोग जोइ अने तेने तजीने सागरना विवाहनी वखते जोशीए आ लग्न परिक्षा करी लीधुं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सोम सूर माधव शुकल, दशमि देव गुरुवार ॥
स्वांतिभ गोधूलिक समें, कियो लग्न निरधार ॥ ४ ॥

अर्थ. उत्तरायनना सूर्य, वैशाक महिनाना शुक्लपक्षनी दशम अने गुरुवारने दिवसे स्वाति नक्षत्रमां गोधुलिक समे लग्ननो निश्चय कर्यो. ॥ ४ ॥

उभय ठोर उच्छव रच्यो, उर उद्वाह सु धार ॥
पूजे हेरंबी प्रथम, विघन विनासन हार ॥ ५ ॥

अर्थ. हृदयमां विवाहनो विचार धारी बन्ने राजधानीमां मोहोटो उत्सव रच्यो अने पेहेला आरंभमांज विघ्नने नाश करनार गणपतिनी पूजा करवा लाग्या. ॥ ५ ॥

॥ तत्र गणपति स्तुति ॥ छंद जयमंगल ॥

गुनं वृंदं गनेशं ॥ सुही बंदं सुरेशं ॥ प्रथू दुंदी प्रचंडं ॥
बुधी दाता बितुंडं ॥ करी कुंभं बिशालं ॥ रदं मेकं रसालं
बन्यो भालं सु चंदं ॥ चढयो बिंदू सु बंदं ॥ अनूरागं दुकूलं॥
कुनैं दामं प्रफूलं ॥ हरं सूनु हरंबे ॥ उरं मोदं सु अंबे ॥
खनंके सं अरूढं ॥ गिरागम्यं सुगूढं ॥ सुधी बुद्धी सु ईशं॥
गुना मुख्यं गिरीशं ॥ बिघन्नंही विदारं ॥ अनंतं धी उदारं॥
शुभं आदेश सामी ॥ नमो तुभ्यं नमामी ॥ ६ ॥

अर्थ. गुणना समुदाय रूप, गणोना मुखी, इंद्रादि देवताओ जेने नमेछे, म्होटुं पेट अने प्रचंड जेनी आकृतीछे, बुद्धिना दातार, लांबी सुंढवाळा, विशाळ हाथीनुं मस्तक जेणे धारण करेलुंछे, रसवालो एक दांत जेने शोभेछे, जेना कपाळमां चंद्र रह्योछे, बींदुने ठेकाणे जेणे सिंदुर लगाव्योछे, राता रंगनां रेशमी वस्त्र पेहेर्याछे. प्रफुल्लीत करेणना फूलोना हार कंठमां पेहेर्याछे, शंकर तथा पार्वतिना पुत्र, अंवाना हृदयमां आनंद उत्पन्न करनारा अने उंदर उपर स्वारी करनारा, वाणीमां न आवे एवा गुप्त, सीद्धि बुद्धिना पति, महादेवना गणोमां मुख्य, विघ्नने नाशकरनारा, अगाध बुद्धि वाळा, उदार, कल्याण रूप, हे? गणपति हे? स्वामी तमने हुं आवाहनादि षोडशोपचार पूजा अर्पण करीने नमस्कार करुंछुं. ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

रसमय रससागर कुमर, चंद्र कला छबि लीन ॥
गनपति पूज सु मदन फल, कौतुक वंधन कीन ॥ ७ ॥

अर्थ. चंद्रकळानी छबीमां लीन थयेला रससागर कुमारे गणपतीनी पूजा करीने मंगळ सूत्रनी साथे मिंढोळ पोताने हाथे वांध्युं. ॥ ७ ॥

॥ अथ छंद चर्चरी ॥

दोय ठोर गनेश पूजित, नील मंडप छाहितं ॥
देश देश अमंत्र कीने, भूप दिशि दिशि आहितं ॥
गान गायक तान साधत, भेद बाजित बाजितं ॥
कंचनी नित नृत्य कारित, राज मंडल साजितं ॥
धाम धामनि कुंभ हाटक, पाट तार पता खियं ॥
वेद भेद सु वीप्र पाठित, कीरती कवि भाषियं ॥
दूब हारित द्वार द्वारन, वंद माल सु बद्धियं ॥
रक्त राज अबीर ऊडत, सारथीक सु साद्धियं ॥
काशमीर कपूर अत्तर, चूआ चंदन लाहितं ॥
वास भूषन साज दंपति, बाम मंगल गाहितं ॥
खांन पांन अनेक आसव, चित्त सह आनंदहे॥
पांडुके बलिराय अध्वर, सत्र ए रघु इंदहें ॥ ८ ॥

अर्थ. बेय राजधानीमां गणेशनां पूजन करीने लीला रंगना मांडवा रोप्या, देशो देशमां कंकोतरीयो मोकलीने आमंत्रण कर्या, तेथी दशे दीशाना राजाओ मंडपमां आवी दाखल थया, गायन करनारा अनेक प्रकारनां तांन गायछे, जूदा जूदा भेदथी वाजित्रो वागेछे हमेशां नायकाओ नाच करेछे, राजवंशीओनी मंडलीओ शोभी रहीछे, घेर घेर सोनाना कळश अने रेशमी ध्वजा पताका धारण करेलाछे. पद क्रम जटा घन इत्यादि भेदथी ब्राह्मणो वेद भणेछे, कवीओ कीर्तीनुं वखाण करी रह्याछे, घेर घेर दधि चंदन अक्षत अने लीला रंगनी धोथी मंगल चिन्ह जोवामां आवेछे, तेमज तोरण अने फूलना हार बांध्याछे, लाल रंगनो गुलाल अने अबील उडी रह्योछे, साथीआ अने रांगोळीओ पूरीछे, केसर, कपूर,

अतर, चुवा, चंदन विगेरे सुगंधथी शोभीतां स्त्री पुरुषोए जात जातना वस्त्र, घरेणादि शृंगार सज्याछे, अने स्त्रीओ मंगळ गीत गायछे, खावा पीवाना पदार्थ अने अनेक प्रकारना मादक रसोथी (दारुथी) सर्वना चित्तमां आनंद पसरी रह्योछे, तेथी आ विवाह यज्ञ जाणे पांडवनो के बळीराजानो के रघु कुळना इंद्र रामचंद्रनोज यज्ञछे. ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

नेह नग्र अरु मुदित पुर ॥ इहिं विधि भयो उछाह ॥
इतें बरायत सज भई ॥ उतें निहारत राह ॥ ९ ॥

अर्थ. नेहनग्र अने मुदितपुर ए बन्ने राजधानीमां एवी रीते म्होटो उत्साह (आनंद) थयो, आंहीथी जान सज थइ अने त्यांहां वाट जुवेछे. ॥ ९ ॥

॥ अथ बरात संख्या बर्नन ॥ छंद बरायति ॥

शतं सु द्वादशं सजे सु दंतियं ॥ असं सु पंच लच्छ पंत पंतियं ॥ सिबीक फंदनं सहस्त्र पंचियं ॥ लखं सु साथ पंच पैदलं कियं ॥ धजं दशं सहस्त्र बीस नादियं ॥ कविंद सोरही हजार हालियं ॥ उभै हजार बिप्र वेद बायका ॥ हजार चार गायका सु नायका ॥ कनंक बाज साज जोध कुंजरं ॥ कसुंब केसरी जरी पटंवरं ॥ मनी सु मानिकं सु पन्न मुत्तियं ॥ अलंकृतं अनेक देह दुत्तियं ॥ अखंड राग रंगके उछाहसें ॥ परे न जान रात द्योस राहसें ॥ यहें सु रीत होत हास्य छंदियं ॥ चले बरात वृंद मंद मंदियं ॥ करे कलोल नौलराज नीतियं ॥ चलंत राह बीच मास बी-

तियं ॥ मुदीत नग्र नीठ देहरे दिये ॥ बधाइ पत्र पैंकदे अगें किये ॥ १० ॥

अर्थ. बारशे हाथी सजीने साथे लीधा अने पांचलाख घोडानी पायगा हारबंध आगळ चाली; पांच हजार पालखीयो तथा रथ अने पांच लाख पायदल साथे लीधुं; दश हजार धजा पताका, वीश हजार वाजित्रो अने सोळ हजार कवीओ साथे चाल्या; वेदना भणनारा बे हजार ब्राह्मण, चार हजार गायन करनारा तथा नायकाओ साथे चाली; सोनानां घरेणांथी सजायेला घोडा, जुद्धा अने हाथीयो साथेछे; कसुंबा केसरथी रंगेलां वस्त्र तथा जरीनां पीतांबरो पेहेरेलांछे; मणी, माणेक, पाना अने मोतीथी सणगारेला अनेक जानैआओना शरीरनी कांति प्रकाश करीरहीछे; अखंड राग रंगना आनंदमां जान रस्ते चाली जायछे तेने रात दिवस गयानी खबर पडती नथी; एवीरीते हास्य विनोदनी गम्मत रमतने लीधे आ जाननां युथ्थ घणांज धीमे धीमे चालेछे; हमेशां राजानी साथे नवीन राजनीति मुजब कलोल करवाथी जानने चालते चालते रस्तामांज एक महीनो वीति गयो अने मुदितपुरनी सरहद उपर आवी डेरा दीधा; वधाइ पत्र दूतने दइने आगळ कर्यो. ॥ १० ॥

छप्पय

रससागर सुबरात, मास इक पंथ वहाये ॥
मुदित पुरी दरसंत, सौध धज कलश लखाये ॥
कीनो तहाँ मुकाम, रह्यो अंतर जुग जोजन ॥
वहे वधाई हार, पत्र कुंकुम दीने तिन ॥
पहुंचें सु पैंक मुदितह पुरि, राजद्वार पत्र सु दिये ॥
संग्राम सेन मन मोद भरि, पायक गज नायक किये ॥११॥

अर्थ. रससागर कुमारनी जांन रस्ते एक महीना सुधी चाली त्यारे मुदितपुरी

देखातांज त्यांना मेहेल,धजा, कलश विगेरे देखाणां तेथी त्यांहांज मुकाम कर्युं; ज्यांहां जान उतरीछे ते स्थानकने अने मुदितपुरने बे जोजन एटले आठ गाउनो अंतर रह्यो; अेटले वधामणी लेइ जनार दुतनी साथे कंकु केसरे छांटेलो पत्र आप्यो; ते लेइ दूत आगळथी मुदितपुरमां पहोच्यो अने तेणे राजद्वारमां जइ वधाइ पत्र आप्यो; तेवांची संग्रामसेन राजाए मनमांहर्ष धारण करीने एवुं इनाम आप्युं के एक साधारण पगथी चालनार खेपीयाने हाथीनो नायक करी मूक्यो. ॥ ११ ॥

दोहा

मुदितनग्र जन मन मुदित, जित तित भये उछाह ॥
भूप अनुज रनजीत तिहि, आप बुलाये राह ॥ १२ ॥

अर्थ. मुदितनग्रनां लोको मनमां हर्ष पाम्या अने ठेकाणे ठेकाणे उत्साह थयो ते वखते महाराजा संग्रामसेने पोताना नानेरा भाइ रणजितसींहने हजुरमां बोलाव्या. ॥ १२ ॥

कह्यो सु नीठ बरात अब, जोजन जुगल मुकाम ॥
आप सिधारें सामुहें, आवत अपने धाम ॥ १३ ॥

अर्थ. राजाये कह्युंके जांन हवे नजीक आवीछे अने आंहींथी बे जोजन उपर मुकामछे वास्ते आप तेनुं सामैयुं करवा सारु सामा पधारो कारणके ए जांन आपणे घेर आवेछे. ॥ १३ ॥

॥ छप्पय ॥

चढे राज रनजीत, चढे द्वैसत गज नायक ॥
एक नियुत असवार, नियुत अनुमान सु पायक ॥
तूर भेर करनाल, पनव आनक धुनि वज्जे ॥
केसर जरी कसूंब, बसन भूषन तन सज्जे ॥

छाँहगिर छत्र छायो सु नभ, उडि गुलाल आसव छकित ॥
रवि सेस जाम रहे जा मिले, राजत राज प्रदीप जित १४

अर्थ. एवो हुकम सांभळीने रणजीतसिंह चड्या तेनी साथे बशे तो मुख्य हाथी, दश लाख असवार, आशरे दश लाख प्यादा, एटलुं लश्कर चड्युं त्यारे तुरीयो, भेरी, (ढोल,) करनाल, पणव अने नोवत विगेरे वाजित्रो वागेछे; युद्धाओए केसरथी रंगेलां जरीनां तथा कसुंबी वस्त्र, तेमज जात जातना घरेणां शरीरपर सजेलांछे. छत्रधारीओनां छत्रथी आकाश छवराइ गयुंछे; गुलाल उडेछे; मधुपानथी छकेला सुभटो सेना सहित ज्यारे सुर्य आथमवामां पाछलो एक पहोर बाकी रह्यो त्यारे ज्यां प्रदीप राजा बीराजेछे त्यांहां जइ मळ्या. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

उर सु उभैं आनंद भरि, नृप प्रदीप रनजीत ॥
रेंन नृत्य संगीत रत, चलें उदित आदीत ॥ १५

अर्थ. प्रदीप राजा अने रणजीतसींह ए बन्ने जणाये हृदयमां आनंद धरीने ते राततो नाच गायननी गम्मतथी त्यांहांज गुजारी अने प्रातः काळमां सूर्य उदय थती वखते बन्ने चड्या. ॥ १५ ॥

॥ अथ छंद पद्धरी ॥

दोय मिले चढि सेन चले अनु रागसें ॥सांझ भये लगि नीठ विलं वित वागसें ॥ पंच घरी दिन पच्छ रहे फुनि चाल्लियं ॥ मानहुं सात समुंद छमा भर छाल्लियं ॥ अंतर जोजन आध चले जन नग्रसें ॥ मानु घटा नवरंग उडित अग्रसें ॥ बाजत नाद अनेक गुनी जन गाइतं ॥ ऊडि गुलाल अबीर धरा नभ छाइतं ॥१६ ॥

अर्थ. बन्ने सैंन प्रीतिथी मळीने चढी चाल्यां ते मुदितपुरनी नजीक बगीचामां आवी मुकाम करी सांज सुधी रोकायां; पाछलो पांच घडी दिवस रह्यो त्यारे पाछां चाल्या ते जाणे साते समुद्र क्षमा रारवीने छल्या होयनै! ज्यांन अने नगरने बे गाउनुं छेटुं रह्युं अटले न गरनां सर्व लोको जोवासारुं चाल्यां, ते जांणे मेघनी नवरंग घटा आग ल चडी आवी होयनै! अनेक प्रकारनां वाजां वागेछे अने गुणीजनो गायछे, उडता अबील गुलालथी जमीन अने आकाश छवराइ गयांछे. ॥ १६ ॥

॥ छप्पय ॥

नग्र द्वारके नीठ, वाग संग्रामसैंन शुभ ॥
बन अनंत बिच महल, कुंज गिरदी जोजन उभ ॥
झुकित फूल फल वृंद, भ्रंग भूले मधु गुंजत ॥
चौंक चौंक जल जंत्र, कीर केकी पिक कुंजत ॥
दीनो बरात बासह तहाँ, उभे नियुत अंदर रहे ॥
अनि जन सबीर उपवन गिरद, मिसल देख सबही दहे १७

अर्थ. शेहेरना दरवज्जा पासे महाराजा संग्रामसेननो सुंदर वाग-छे, जेने अनंतवन केहेछे तेनी वच्चे एक रमणीक मेहेलछे. जे मेहेलनी चारे तरफ बे जोजन एटले आठ गाउमां जात जातना व्रक्षोना कुंज-नी घटाओ आवी रहीछे, फूल अने फळना समुदाय झुकी रह्याछे, जेना सुगंधना लोभथी भमराओ गुंजारव करेछे चोकें चोकें पाणीनां फुवारा उछळी रह्याछे, तेम पोपट, मोर अने कोयल मधुर अवाजथी कलोल करी रह्यांछे, एवा ते मनोरंजक वागमां जानने जानीवासो आप्यो विश लाख माणसतो ते वागनी अंदर समाइ रह्यां. अने बीजा लोकोने वा गनी बहार उपवनमां चारे तरफ नारवेला तंबुमां जेवी जेनी सभा ते प्रमाणे सर्वने उतारा आप्या. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उपवन वास बरात किय, सूर घरी गुन सेश ॥
बिंद सैंन तीसह सहस, कीनो सहर प्रवेश ॥ १८ ॥

अर्थ. एवी रीते उपवनमां जाने वास कर्यो अने ज्यारे बाकी त्रण घडी सूर्य रह्यो त्यारे वरराजाए त्रीश हजार फोजनी साथे शेहेरमां प्रवेश कर्यो. ॥ १८ ॥

॥ अथ छंद मनहंस ॥

रससागरं बनि बिंद पट्टन चल्लियं ॥ सम शील कुल बय-वेप मिंत सुमल्लियं ॥ शत कुंभियं शत कुंभ साज सु साजितं॥ तिहि शीश राज कुमार शत सु बिराजितं ॥ रचि काशमीर दुकूल जरकस बुट्टियं ॥ चरचे सु अत्र गुलाब माधुर छुट्टियं ॥ शिरपेच कुलह सु रंग तोरन झुक्कियं ॥ मनिहार मुत्तिय माल दूलरि चुक्कियं ॥ कर मुद्रिका भुजबंध कंकन सोहितं ॥ मनु कोटि इंद्र अनंग आभा मोहितं ॥ छबि छांह गीर सु छत्र चामर छाजितं ॥ धुज अग्र बाजित नाद घन धुनि गाजितं ॥ अस बीस सैस सु तास कीजत आवतं॥ दश सैस पैंदल साथ गानक गावतं ॥ लठधार बोलत बानि अग्र पताखियं ॥नृत भेद रूपा रूप वंदिन भाषियं पुर पोर कीन प्रवेश मंगल मालियं ॥ जुरि माननी निरखें झरोखन जालियं ॥ हट लेत बनिक सलाम सौध दिवालियं ॥ उडि व्योम छाय अबीर पोप गुलालियं ॥ चकडोल गोखन गाय मंगल नारियं ॥ इहि रीत बिंद सुपंत राज दुवारियं ॥ १९ ॥

अर्थ. रससागर वरराजा वनीने मुदितपुर तरफ चाल्या, पोताना समान (सरखो) स्वभाव, उम्मर, कुळ अने वेशवाळा मित्रो मळेलाछे; सो हाथीओ सोनाना साजथी सजेलाछे अने तेना उपर सो राजकुमारो विराजेलाछे; केसरथी रंगेल जरीयन बुंटिदार वस्त्र पेहेर्याछे अने शरीरमां लगावेला अतर अने गुलाबजळनो सुगंध भभकी रह्योछे; मस्तक उपर शिरपेच, कलगी अने सारा रंगदार तोरा झुकी रह्याछे; तेमज मणीना हार, मोतीनी माळा, दुगदुगी, अने जडीत्र चोकी ए विगेरे घरेणां धारण कर्याछे; हाथनी आंगळीओमां विंटियो, भुजाए बाजुबंध, अने कडां शोभी रह्यांछे; तेथी जांणे क्रोडो इंद्र तथा अनेक कांमदेवनी कांतिने लजावता होयनै! सूर्य मुखो छायादार छत्र अने चामर छाजी रह्यांछे; धजानी आगळ वाजीत्रो मेघना गंभीर अवाजनी पेठे गाजी रह्यांछे; वीशहजार घोडेस्वारो घेरीने चाल्या आवेछे; दशहजार पायदल साथे चालेछे; अने गायन करनारा गायछे;आगळ पंचरंगी पताका फरकी रह्याछे, जेनीपासे चोपदारो ललकारता आवेछे, नायकाओ नृत्य करेछे; अने बंदिजनो छंद रूपक बोलता आवेछे; एवी रीते शेहेरना दरवज्जामां प्रवेश कर्यो त्यारे वधाववा सारु मंगळमाळा हाथमां लइने एकठी थयेली स्त्रीयो झरोखानी जाळीयोमांथी वरराजाने नीरखेछे. मेहेल, मंदिर अने दुकाने बेठेला साहुकारो सलांम भरेछे; अबील, फुल अने गुलाल ऊडीने आकाशमां छवराइ रह्यांछे; रथमां तेमज गोखमां बेठेली स्त्रीयो मंगळ गायछे, एरीते वरराजा राजद्वारमां प्राप्तथया. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

राजद्वारहीसें निकट, अटा सघन अभिधान ॥
लवू बराती बास किय, बहु मनुहार सुमान ॥ २० ॥

अर्थ. राजद्वारनी नजीक सघन नामनी एक हवेली हती तेमां सा-

गर कुमारनी लघुवरात एटले न्हानी जाने माननी साथे घणाक सत्कार पुर्वक जानी वासो कर्यो. ॥ २० ॥

छप्पय

लघु वरात तहँ बसित, बाज वाहन दुलहा किय ॥
राज कुमर सत संग, उभैं शत पासवान लिय ॥
सहस आध सहचरी, सकल आयुध सजि लीनें ॥
दुज पंडित दश बीश, गमन मंडप दिश कीनें ॥
नृत्य भेद रूपा रचित, गानक साधे गान गत ॥
बात्तिस सु कबि बोलें बिरद, राजद्वार प्रबिसंत तित ॥ २१ ॥

अर्थ न्हानी जानतो त्यांहांज रही अने तोरण जवा वास्ते वरराजाए घोडा उपर स्वारी करी साथे एकसो राजकुमार अने बशे हजुरी लीधा; साथे पांचशे दासीओछे ते सघळीओए हथीआरो सजीलीधेलांछे. अने दश वीश पंडित ब्राह्मणो सहीत वरराजा मंडप तरफ सधाव्या ते वखते वारांगनाओ नाचेछे तेमज गायन करनाराओ रागनी गतो साधेछे अने नामीचा बत्रीश कवीओ जश बोलता आवेछे; एवी रीते वरराजाए राजद्वारमां प्रवेश कर्यो. ॥ २१ ॥

॥ सोरठा ॥

रससागर सु नरेश ॥ वंदन वंदन माल किय ॥
मंडप करत प्रवेश ॥ स्वश्रु परिच्छन कीन तहाँ ॥ २२ ॥

अर्थ रससागर राजकुमारे तोरणनुं वंदन करीने ज्यारे मंडपमां प्रवेश कर्यो त्यारे त्यांहां आडुं अंतर पट राखीने सासुए पोंख्या. ॥ २२ ॥

॥ अथ छंद पद्धरी ॥

पुन्याह कीन पंडित उचार, संग्राम दुलह चट चरन धार॥

मधु पर्क छुद्र दधि आज्य लीन, ग्रहि ग्रह्य सूत्र बंदन सु कीन ॥ २३

स्वस्तिवाचन पुर्वक पंडितो वेदनो उच्चार करवा लाग्या; महाराजा संया मसेने आपेलो दर्भनो विष्टर (दर्भनुं बनावेल आसन) वरराजाए पोता ना पगनीं तळे धारण कर्या पछी मध, दहीं, घी ए त्रण वस्तुओनुं मधु पर्क करी ग्रह्य सूत्रनी विधि प्रमाणे ग्रहण करीने वंदन कर्युं. ॥ २३ ॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

घटं चत्र कुंभिय हाटक जाँन ॥ जरी कउसेय तनें सुवि ताँन ॥ रची रँग भूम सु अंगन राट ॥ प्रबालिय खंभ प-टीर कपाट ॥ सुनेंरिय पंचहु रंग सुधार ॥ दिवालन चित्र रची चित्रकार ॥ मिले तहँ राज बधूनके वृंद ॥ मनों च-हुंओर प्रकाशित चंद ॥रहे मनि मुत्तिय भूषन झूल ॥ ज-री नवरंग सुअंग दुकूल ॥ झरोखन अंगन मंगल गाय ॥ रच्यो मनु रंभ महोच्छव आय ॥ तहाँ अति दूलह अद्दर कींन ॥ जराव सु चोकिय आसन दीन ॥ बुलावन पंडित आयस पाय ॥ सहेलिय चंद्रकला प्रति जाय ॥ कियो प-धरावनको सु बिचार ॥ सजे तन भिन्नहु भिन्न सिंगार ॥ २४ ॥

अर्थ चोरीना चारे स्थंभोमां सुवर्णना गोळा तथा कळश बांध्याछे, जरी तथा रेशमी कपडानो उलेच ताण्योछे, आवीरीते राजाना आंगणामां रं-गभूमी रचीछे, जेमां प्रवाळांना थांभला तथा सुखडना कमाडछे, पं-चरंगी सोनेरीनां सुधारीने दिवालमां चिताराओए बुटा तथा जातजातनां चित्रो रच्यांछे, त्यांहा मंडपमां राजाओनी स्त्रीओनां टोळां मळ्यांयां ते

जाणे चारे तरफ चंद्रना प्रकाश थया होयनै! ते राणीओना अंगउपर मणी मोतीनां घरेणां झुली रह्यांछे, जरी तथा नवरंगी वस्त्र शरीरमां धारण करेलांछे, झरोखामां तथा आंगणामां ते नारीओ मंगळ गांयन करेछे, ते जाणे रंभादि अप्सराओए आवीने म्होटो उच्छव रच्यो होयनै! ते मंडपमां वरराजानो घणो आदर सत्कार करिने तेने जडित्र वाजोठनुं आसन आप्युं, कन्या पधराववानी आज्ञा पंडित पासेथी लैने साहेलीओ चंद्रकला पासे गइओ, अने मंडपमां कन्या पधराववानो विचार कर्यो, तेथी चंद्रकलाए जुदा जुदा शणगार सज्या. ॥ २४ ॥

॥ अथ शृंगार बर्नन ॥ अलंकार जाति स्वभाव ॥

॥ छंद मल्लिका ॥

अंग ऊबटं सु रंज ॥ माधवी सलील मंज्र ॥
चैल आरद्रं उतार ॥ धौत बासनं सु धार ॥
अंग पौंछितं अनूप ॥ केस पास अग्र धूप ॥
नेह लाय ग्रंथि बेन ॥ नीरजं प्रसून श्रेन ॥
गंधसार धारलीन ॥ केसरं त्रिपुंड कीन ॥
लंग लाल पाट लार ॥ दाउदी प्रसून तार ॥
केसरी उढोन सार ॥ तार छेहरे किनार ॥
नील कंचुकी कसंत ॥ कंज सारके लसंत ॥
जावकं रचे सुपाय ॥ बीछुआ अनोट लाय ॥
जेहरं सँजीर बंध ॥ किंकनी कटी सु संध ॥
नीक हार मुक्त माल ॥ चोकियं पनें सु लाल ॥
दूलरी बिराज बास ॥ कंठ कंठ पोत शास ॥

बेसरं बिराज नास ॥ श्रोन त्रोंनको बिलास ॥
अंगदं भुजा सु दंड ॥ कंगनं बलै सुमंड ॥
पोंचि पोंचियं सु साज ॥ मुद्रि अंगुरी बिराज ॥
पूनरंभवं सु पान ॥ लाल बुट्टिका रचान ॥
भाल मानु आर्ध चंद ॥ धारितं जराव बिंद ॥
बिंदली कसी बनाय ॥ सीसफूल नीठ लाय ॥
बेंनि बेंनिबंध ग्राय ॥ सो छुए छवांन जाय ॥
आननं तमोर रंग ॥ बंदनं भयौ सु मंग ॥
भिन्न भिन्न आनि केक ॥ भूषनं धरे अनेक ॥
नेन नाग रेख धार ॥ लैं दिठोन दीन नार ॥
मुक्र आननं निहार ॥ लाजमें गडी सु बार ॥
साथकी कुमार आय ॥ सहिकें लही उठाय ॥
गोंन कीन मंद मंद ॥ ज्यौं छक्यो झुकैं गयंद ॥२५

अर्थ. अंगे खुसबोदार सारा रंगवाळी पीठी लगावीने मधुमाधवीना सुगंधवाळा पाणीथी स्नानकर्युं, भींजाएलां वस्त्र उतारीने धोयेलां वस्त्र पेहेर्यां, अनोपम अंग लुंछी तेमज केश ओळी सुकावीने आगळ अगरनो धूप लीधो, सुगंधी तेल लगावी वेणी गुंथी. ने तेमां कमळना हार गुंथ्या, मळीयागीरी चंदन धारण करीने कपाळमां केसरनी त्रीपुंड्र आड करी, दाउदी फूलथी भरेल लाल अतलसनो लेंगो पेहेर्यो, सोनेरी छेडावाळी किनारीदार केसरथी रंगेली ओढणी ओढी, लीला रंगनी कंचुकी पेहेरी तेनी कसो कसी बांधीलीधी ते कमळना तंतु जेवी शोभेछे, अळताथी रंगेला पगमां वींछीया अने अणवट पेहेर्या. झांझर पेहेरीने लंघर बांध्या, पातळी कडमां घुघरीओवाळी कटीमेखळा पेहेरी, सुंदर हीराना हार अने

मोतीनी माळा कंठमां पेहेरी तेमां लाल पन्नाथी जडेली चोकीओ लट की रहीछे, कपोत सरखा गळामां कंठी तथा दुगदुगी वीराजेछे, नाकमां नथ शोभेछे, अने कानमां झुमखां दार झालुं झळकी रहीछे. भुजाए बाजुबंध बांधेलाछे चूडो अने कंगन हाथमां शोभीरह्यांछे. पोहोंचा उपर पोहोंचीओ अने आंगळीओमां वींटीओ शोभेछे, नख अने हथेळीओमां मेंदीनी लाल बुटीओ रची , कपाळमां जाणे अर्ध चंद्र होयनै? तेम सोनानो जडित्र चांडलो धारण कर्यो, ने ललाटमां वारीक वींदली बांधीने मस्तक उपर शिरफूल धारण कर्युं, वेणीमां बांधेलो जडीत गोफणो जड़ने पेनीए स्पर्श करवा लागो, पाननी बीडी चावी तेथी मोढानो लाल रंग थइ गयो अने सेंथामां सिंदुर भर्यो, जातजातनां अनेक जडाउ घरेणां पेहेर्या, आंखमां सीसानी सळीथी अंजननी वारीक रेखा धारण करी तेमज गाले काजळनो मसो कर्यो, पछी आरीसामां म्होढुं जोइने राजकन्या लाजथी बेशी गयां त्यारें पासे रहेवावाळी कुमारीओ आवीने हाथे झाली उभां करीने तेडी चालीओ त्यारे राजकुमारि मंद मंद गतीथी एटले धीमे धीमे चालेछे ते जाणे छकेली हाथणी झुकी आवती होयनै? ॥ २५ ॥

॥ छप्पय ॥

सही पंच शत संग, शील कुल बेस बराबर ॥
भूषन बस्‍न बनाय, साहि लीनी दुलही कर ॥
सहस उभें सहचरी, खमा सुख खमा उचारत ॥
केसर अतर गुलाब, चुआ चंदन घन धारत ॥
जित तित झनंक जेहर लगी, पिक धुनि मंगल गाहितं ॥
मानहुं अनेक उदित अरक, दुलहनि मंडप आहितं ॥ २६ ॥

अर्थ-स्वभाव, कुळ, पेहेरवेश, अने उम्मरथी पोतानी बरोबर पांचसो स-

स्त्रीओने साथे लीधी, तेओ घरेणां लुगडां संभाळी कंन्यानो हाथ साइने चालेछे, बे हजार दासीओ तो मोढेथी "खमां खमां" एवा अवाज करेछे, केटलीएक सखीओ केसर, चंदन, अतर, गुलाबजळ, चुवा अने कस्तुरी वीगेरे सौभाग्य द्रव्यनां वासण हाथमां लेइने जायछे, ठेकाणे ठेकाणे झांझर अने लंघरना झणेणाट वागी रह्याछे, ते दासीओ कोयल ना सरखा मधुर अवाजथी गीत गाती आवेछे एवी रीते कन्या मंडपमां आव्यां तेथी जाणे अनेक सूर्यनो उदय थयोहोयनै! एम दीसवा लाग्युं. ॥ २६ ॥

॥ छंद पद्धरी ॥

चत्र कुंभि गमन कन्या सु कीन ॥ दुलहा सुमुख आसन सु दीन ॥ अन्योन्य गंध चार्चित अपार ॥ पहिराय कंठ पर सून हार ॥ दुज बदि प्रयोग कन्या सुदान ॥ मेलाप पान कीनो सुपान ॥ चत्रबींस तंतु चत्र कर विसाल ॥ आरोप कीन मंगल सुमाल ॥ एकेक ग्रंथि बंधे सुवास ॥ गावंत नारि पख उभय हास ॥ चत्र हस्त स्थंदिलं निगम चार ॥ कीने सु पंच भुव संसकार ॥ वन्ही सु बेद मंत्रन दृढाय ॥ गृह्योक्त मंत्र आहूति लाय ॥ दंपति उठाय कर कर सुधार ॥ लाजा सुहोम कीनो प्रकार ॥ मंगल सु चत्र स्थंदिल भ्रमंत ॥ कन्या सु वाम किय दच्छ कंत ॥ पूजे सु सप्तपदि छोय पाय ॥ कंसार नार भोजन कराय ॥ उच्छिष्ट भुक्त वंद्यो सु विंद ॥ उरमें विशेष बाढ्यो अनंद ॥ दंपती देव स्वस्तकि धार ॥ आशिषा वेद कीनो उचार ॥ आशिषा कीन अभिशेक ताँम ॥ सागर सु दीन दश दुजन ग्राम ॥ सौं

भाग्यवती प्रोक्षे अशीष ॥ हेरंब अंब नामे सु शीश ॥ २७॥

अर्थ. कन्या चोरीमां आव्यां तेने वरराजाना सामे आसन आपी पधराव्यां,वर कन्या बेयने सुगंधी चंदन चरची कंठमां फूलना हार पेहेराव्या, ते वखते ब्राह्मणोए प्रयोग भणीने कन्यादाननो संकल्प कर्यो अने वरना हाथमां कन्यानो हाथ आप्यो, एवी रीते हस्तमेळापण कर्या पछी चार हाथनी चोवीश त्रागवाळी मंगळमाळा एटले वरमाळा वर कन्याने पेहेरावी तेमज बेयना वस्त्र लइने छेडा छेडी बांधी, त्यारे बेय पक्षनी स्त्रीओ हसवुं आवे एवां मर्यादा पुर्वक फटाणाना गीतो गावा लागी पछी ब्राह्मणोए वेदविधि तथा कुळाचार प्रमाणे मेखळाबंध स्थंडील करी तेउपर पंचभुसंस्कार कर्या, वेद मंत्रथी अग्नीनी स्थापना करीने तेमां ग्रह्यसूत्रना मंत्र प्रमाणे आहुतीओ आपी, पछी वर कन्याने उभांकरी हथेवाळो मेळवी विधीएथी लाजा (सेकेलीशाळ)नोहोम कर्यो अने स्थंडीलने चार मंगळ फेरवी कन्याने डावी बाजु अने वरराजाने जमणी बाजु एवी रीते फेरवीने बेसार्यां, पछी वरराजाए कन्याना जमणा पगनो स्पर्श करीने सप्तपदीनुं पूजन कर्युं, ते पछी वरराजाए कन्याने कंसारनुं भोजन करावीने पोते ते उच्छिष्ट कंसारनुं कन्याना हाथथी भोजन कर्युं, तेथी बन्नेना मनमां अतीशे आनंद थयो, पछी चार सौभाग्यवति स्त्रीओए कन्याना हाथमां साथीयो पुरी ईश्वर पार्वती ब्रह्मा सावित्री कृष्ण रुक्मणी इंद्र इंद्राणी ए रीते चार देवनां जोडानां नाम लइने तेमनी सौभाग्य आपी. पछी ब्राह्मणोए तीलक करीने वेद मंत्रनो उच्चार कर्यो अने अभिशेक पुर्वक आशीर्वाद दीधो, ते वखते सागरे ब्राह्मणोने दश गाम दक्षिणामां आप्यां त्यां सौभाग्यवती स्त्रीओए आशीश दइने वधाव्या अने वर कन्याए मंडपमांथी उठी गणपती तथा गोत्र देवीने वंदन करी शीश नमाव्युं. ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

शीष अंब हेरंब नय ॥ उर आनंद विशेश ॥
रत्न महल सज्या रचित ॥ दंपति कियो प्रवेश ॥ २८ ॥

अर्थ. गोत्र देवी तथा गणपतीने शीश नमावीने मनमां हर्ष पामी स्त्री पुरष बन्नेए जे मेहेलमां रत्न जडित्र सज्जा रचेली हती ते मेहेलमां प्रवेशकर्यो. ॥ २८ ॥

॥ गाहा ॥

रस सागर उदवाहं ॥ मुहुरत शुद्ध दोष अभिधानं ॥
पानी ग्रहन प्रसंगं ॥ पंत्र प्रबीन सागरो लहरं ॥ २९ ॥

अर्थ. रससागरनो विवाह, लग्नना मुहूर्तमां गुणदोषनो विचार अने विवाहनी बीना संबंधी आ प्रवीण सागर ग्रंथनी पन्नरमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २९ ॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे रससागर चंद्रकला उद्वाह अनुक्रम निरूपणं नाम पंचदशो लहरं ॥ १५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां पंचदशम स्तरंगःसमाप्तः ॥ १५ ॥

॥ अथ तरंग शिखाबंध. ॥ छंद चंद्र विलोकन. ॥

चंद्रकळा जेम चंद्रकळा, ते चडे उतरे चंद्र प्रमांण. ॥ अष्ट भेद आलिंगन चुंवन, सप्त विधि जे शास्त्र वखाण. ॥ पंचभावनें हाव अष्ट दश, छऋतू समय समाना भेद. ॥ षोडशमो रणमल्ल सुकविए, प्यार धरि प्रभण्यो परिछेद ॥ १ ॥

अथ रससागर चंद्रकला विहार प्रसंगो यथा

॥ दोहा ॥

दंपति महल प्रवेश करि ॥ गये बरातीबास ॥
लागे द्वार झरोंख खुलि ॥ चेरीं गिरद अवास ॥ १ ॥

अर्थ. स्त्री पुरुषे मेहेलमां प्रवेश कर्यो एटले जाननां मांणसो जानीवासे गयां अने दासीओए झरोखानां तमाम कमाड खुल्लां कर्यां पछी ते अवासमां चारेतरफ चोकी करवा गोठवाइ गइ. ॥ १ ॥

॥ अथ शयन ग्रह साज वर्नन ॥ छंद मंदाक्रांता ॥

सेजं सोहें, धवल वसनं, गंग फेनं समानं ॥ छाये फूलं, ललित मल्लिका, पाट फुंदे कसानं ॥ श्रीखंडादी, मृगमद जुतं, छंटितं कासमीरं ॥ सोंधा अत्रं, अगर धुपितं, माधवीकं उसीरं ॥ पूंगी लोंगं, निकट धरितं, बालुका नागवेली ॥ जातीपत्रं, फलसु सुभगं, पुष्प चंपा चमेली ॥ वारा कुंभं, जडित पनिका, दाम द्वारं कपूरं ॥ पंखा पाटं, सुरभि सलिलं, दीप जोती सु भूरं ॥ सोधं हेमं, मुकर जटितं, कारितं चित्र कारी ॥ ठोरं ठोरं, चिकन बिछितं, गेंदुकं हेम तारी ॥ नाना खेलं, जित तित रचे, गायका गान साधे ॥ त्रीयं प्रियं, सकुचि मुदितं, मेन मंत्रं अराधे ॥ २ ॥

अर्थ. सज्जा उपर बीछावेलुं गंगाना फीणजेवुं सपेत वस्त्र शोभेछे, ते उपर सारां सुगंधीवाळां मालतीनां फूलो छवराव्यांछे, फुमकावाळा सेजवंधी सेज कसीछे, मलयागिरी चंदन अने कस्तुरीए सहीत केसर छांटेलुं, चुवा, अतर, अगरनो धुप, मधुमाधवीना सुगंध युक्त पाणी, अने सु

गंधी वाळो धमधमी रह्योछे; पलंगनी नजदीक सोपारी, लवींग, एलायची, नागरवेलनां पान, जावंत्री, जायफळ, तमालपत्र विगेरे खावाना पदार्थ तथा चंपा, चेमेली विगेरे सुगंधी फूलो राखेलांछे; रत्नथी जडेल सोनाना पाणीना कळश पासें राखेलाछे; फूलना हार तथा कपूरथी द्दार शणगारेलांछे; झालरवाळा पंखा रहीगयाछे; सोनाना जडित्र वाजोठ उपर सुगंधी पांणी भरी राख्यांछे; हांडी तथा ग्लासमां दीवा बतीओनो घणोक प्रकाश थइ रह्योछे; मेहेलमां चारेतरफ सोनाथी जडेला अरीसा शोभी रह्याछे; तेमज चीतारानां करेलां जातजातनां चित्रो शोभी रह्यांछे; ठेकाणे ठेकाणे बीछानां बीछाव्यांछे; तेउपर सोनेरी तारथी भरेला तकीया तथा गालमसुरीयां शोभी रह्यांछे; मेहेलनी बाहार चारेतरफ ठेकाणे ठेकाणे नाटक विगेरे खेल थायछे अने गायन करनारा गायन करेछे; आवा शोभायमान मेहेलनी अंदर स्त्री पुरुष बन्ने जण शरमथी संकोचाइ सानंदाश्चर्य पामीने कामदेवना मंत्रनु आराधन करेछे. ॥ २ ॥

सोरठा

विध बिध कीन बिलास ॥ पहरायत सहचरि प्रसन ॥
उमडित हंस उजास ॥ उठे दुलह प्रमुदित बदन ॥ ३ ॥

अर्थ. एवीरीते स्त्री पुरुषे जात जातनो विलास कर्यो तेथी पेहेरो करनारी दासीओ परस्पर खुशी थइओ अने सूर्यना प्रकाशनी साथे हस्ते म्होढे वरराजा जागीउठ्या. ॥ ३ ॥

सागर जाय समाज ॥ किय बंदन गुरुजन जनक ॥
नृप प्रदीप महराज ॥ इंद्र दान आरंभ किय ॥ ४ ॥

अर्थ. त्यारपछी सागर कुमारे जानीवासे पोताना समाजमां जइ गुरुजन तथा पोताना पिताने वंदन कर्यु; पछी महाराजा प्रदीपराजाए ईंद्रदान (दायु) देवानो आदर कर्यो. ॥ ४ ॥

॥ अथछंद सारंग ॥

राजं प्रदीपं समाजं तहां कीन ॥ संग्रामसेनं बुलाये सथं लीन ॥ केते मिले देश देशं महीपाल ॥ केते कविंदं दुजं गानकं जाल ॥ चेलं तँही हेम हीरा मनी माल ॥ दीने रथं बाज गज्जं सुखंपाल ॥ कीनो काविंदेश मुख्खं जयंकार ॥ लनि बिदा मास मानी मनूँहार ॥ ५ ॥

अर्थ. पेहेलां प्रदीप राजाए सभा भरीने संग्रामसेनने बोलावी पासे राख्या; ते सभामां देशदेशना राजाओ आवी बीराजमान थया; तेमज केटलाएक कविश्वरो ब्राह्मणो अने गायन करनारा हाजर थया, तेओने पोशाक, सोनुं, हीरा, मणीओ अने मोतीनी माळाओ तेमज रथ, घोडा, अने हाथी पालखीओ विगेरेनां दान आपी प्रसन्न कर्या तेथी म्होटा कविश्वरो पोताने म्होढेथी महाराजा प्रदीपनो जयकार बोल्या; पछी संग्रामसेने आदरथी आपेली मीजमानी मान्य राखीने एक मास पछी महाराजा प्रदीपे पोतानी राजधानीमां जवानी आज्ञा लीधी. ॥ ५

॥ छप्पय ॥

रससागर सुवरात, मुदितपुर मास विलंबित ॥
नीठह नीठ बिदाय, दीन संग्रामसेन तित ॥
हय गय फंदन शिविक, शकट कुंदन सु रजतभर ॥
महत रत्न मनि मुक्त, जटित भूषन सुवसनजर ॥
दुहिता अमाति दुज कवि दिये, पारीबरह अपार किय ॥
इक हूं मुकाम निज संग चलि, वर बरात बिदा सुदिय॥ ६

अर्थ. एवीरीते रससागर राजकुमारनी जान मुदितपुरमां एक महिना सुधी रोकाणी तेने संग्रामसेने घणी मेहेनतथी मांड मांड रजा दीधी अने दायजामां पोतानी दीकरीने घोडा, हाथी, रथ, पालखी, सोनां रुपाथी भरेलां गाडां, म्होटां रत्नो, मणी, मोती विगेरेथी जडेलां जात जातनां घरेणां अने जरीयन वस्त्र आप्यां; एक ब्राह्मण, एक कारभारी तथा एक कवी अने केटलीएक दासीओ साथे आपी; एवीरीते घणो क दायजो आपीने राजकुमारीने वोळाववा सारु संग्रामसेन राजा एक मुकाम सुधी साथे चाली वर अने जानने रजा आपी. ॥ ६ ॥

॥ चोपाइ ॥

निज पुर नृप संग्राम सिधाये, बर बरात संचर सु पळाये॥
मंद मंद चलि आय सुदेशं, नेहनग्र मधि कियो प्रवेशं ॥
मंगलीक ग्रह ग्रह प्रति साधे, अति हुलास पुरजन मन बाधे ॥
मंगल गुनी मांनुनी गावे, दुलहा दुलहनि महल सिधावे ॥७

अर्थ. त्यारपछी संग्रामसेन राजा पोतानी राजधानीमां सधाव्या अने वरराजा समेत सघळी जान पोताना देशने रस्ते चालतीथइ; ते धीरे धीरे चालीने पोताना देशमां आवीपहोची अने नेहनग्रमां सामैयासाथे प्रवेश कर्यो तेथी नगरमां घेर घेर आनंद मंगळ थयां; शेहेरनां सर्व लोकोना मनमां घणोज हर्ष वधीगयो अने स्त्रीओ वरराजाना पोंखणानीसाथ मंगळ गाणां गावा लागी, त्यारपछी वर कंन्या मेहेलमां सधाव्यां. ॥ ७ ॥

दोहा

चंद्रकला गति कोक विध, आलिंगन उर धार ॥
चुंबन भेद सु बंध वर, दंपति करत बिहार ॥ ८ ॥

अर्थ. चंद्रनी घटती वधती कळानी गति प्रमाणे काम देवना रेठाण तथा कोकशास्त्रनी रीति प्रमाणे आलिंगनना भेद हृदयमां धारीने चुंबन तथा आसनना भेदथी स्त्री पुरुष रमण करेछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ चंद्रकला स्थान निरूपनं ॥ छंद अपरांतिका ॥

कोककी कला भेदसों कहे ॥ मेन चंद्रिका अंग जो रहें ॥
कृष्न पक्ष प्रातीपदा प्रतं ॥ काम कामनी शीश वासितं ॥
दूज लोयने त्रीतिया धरे ॥ चोथ गल्लियं पंचमी गरें ॥
कुक्ष षष्टमी सप्तमी स्तने ॥ अष्टमी कटें नौमि नाभिनें ॥
श्रोणियं दशे ऊरु ग्यारसी ॥ जंघ द्वादशं गुल्फ त्रीदसी ॥
चत्रहीदशं पाय पृष्ठके ॥ मंदही तिथी पा अंगुष्ठके ॥
वाम अंगमें मेंन यों ध्रढे ॥ शुक्ल पक्षसें दक्षकों चढें ॥
ज्यौंहिं ऊतरें त्यों चढे तनं ॥ शीशलों गये मास पूरनं ॥ ९॥

अर्थ चंद्रनी चडती उतरती कळा मुजब कामदेव स्त्रीनां शरीरना अवयवोमां रहेछे तेनो भेद कोक शास्त्रनी कळाथी आ प्रमाणे कह्योछे; कृष्न पक्षना पडवाने दीवस कामदेव स्त्रीना माथामां, बीजने दीवस डाबी आंखमां, त्रीजने दीवस निचला होठमां, चोथने दीवस गालमां, पांचमने दिवस कंठे, छठने दीवस काखमां सातमने दीवस डाबा स्तनमां, आठमने दीवस कडमां, नोमने दिवस नाभिमां, दशमने दिवस नितंब एटले डाबी कडना पाछळना नीचला भागमां, अग्यारशने दिवस साथळमां, बारशने दीवस पींडीमां, तेरशने दीवस डाबा पगनी घुंटीमां, चउदशने दीवस पगना फणामां, अने अमासने दिवस डाबा पगना अंगुठामां कामदेव वसेछे; एवीरीते स्त्रीना वाम अंगमां कामदेव वसेछे तेमज शुक्लपक्षना पडवाथी आरंभीने पूनम सुधी स्त्रीनां

जमणा पगना अंगुठाथी अनुक्रमे जेम डावा अंगमां कामदेव उत्तरोत्तर वध्योछे तेमज माथा सुधी चडतो गयो एवी रीते ज्यारे काम स्त्रीने माथे जायछे त्यारे पुनमे मास पूरण थायछे. ॥ ९ ॥

॥ अथ अष्ट विधि आलिंगन भेद ॥ छंद महालक्ष्मी ॥

आठ रीतं सु आलिंगनं ॥ सोय संछेप कीनो ब्रनं ॥
चंद्रबिंबा नवं नागरं ॥ संग रीझे रसंसागरं ॥
एक पायं सु चंपे पगें ॥ दूसरो दूसरेसें लगें ॥
प्रीय बाला भुजासें ग्रहे ॥ वृक्षरूढा सु तासें कहे ॥
कंठ लागे प्रिया प्रीयसें ॥ हे लटक्की रही हीयसें ॥
प्रेम बाढें उभैं जानियें ॥ सो लताबेष्टितं ठानियें ॥
श्रोन बैठें प्रियाके पती॥ ओठ चुंबे सु बाढे रती ॥
केस छूटे प्रिया प्री ग्रहे ॥ लाघवं तास संज्ञा दहे ॥
नैंन मूदें तिया पीयके ॥ संग लावे कुचं हीयके ॥
रीझ रीतं सु वेठंतहे ॥ बीजकं तास भाषंतहे ॥
दोउ सोहें बिहारं बतं ॥ हीयसें हीय लावे हितं ॥
दंपती चिंत लावे मुदें ॥ एह ऊरूपगूढं उदें ॥
रीझहीसें लपट्टे उभं ॥ मंद बातं उचारे शुभं ॥
श्रोंह हांसी चखं चंचलं ॥ सोय जानो तिलंतंदुलं ॥
पान पानं उरंसें उरें ॥ जंघ जंघा उभैंही जुरें ॥
एक गत्ती उभैंही लही ॥ छीरनीरं सु भाषें वही ॥
भाल भालं कपोलं जुरें ॥ पानि कंठं उरंसें उरें ॥
वीर देवंत एकं इकें ॥ संगना सोय लालाटिकें ॥ १० ॥

अर्थ. आठरीतनां जे आलिंगन कहेवायछे तेनुं संक्षेपथी वर्णन कर्युंछे. चंद्र बिंबसरखा म्होढावाळी नवोढा चतुर चंद्रकळानी संगे, रीझीने रससागर जातजातनां आलिंगन करेछे; एक पगथी एक पग दबावे तेमज बीजो पग स्त्रीना बीजा पगसाथे लगाडे अने पुरुष स्त्रीने हाथथी पकडे तेने वृक्षरूढा नामनुं आलिंगन कहेछे. स्त्री पुरुषनां कंठसाथे वळगीने छातीनीसाथे लटकीरहे, एम करवाथी बन्नेने प्रेम वधे अने जे क्रीडा थाय तेने लतावेष्टित नामनुं आलिंगन कहेछे. पुरुष स्त्रीनी कम्मर उपर बेशीने होठ चुंबे तेनेलीधे रती वधे अने स्त्रीना छुटेला केशने पकडी क्रीडा करे तेने लाघव नामनुं आलिंगन कहेछे. स्त्री पोताना पतिनी आंख्यो हाथवते ढांकीने पोतानां स्तन पतिनी छाति सरसां चांपी खुशीथइने बेठक करे तेने बीजक नामनुं आलिंगन कहेछे.स्त्री पुरुष परस्पर बन्ने विहारनी वातो करतां प्रेमथी एक बीजानी छातीसाथे छाती लगाडी मनमां हर्ष पामीने क्रीडा करे तेने उरूपगुढ नामनुं आलिंगन कहेछे. स्त्री पुरुष खुशीथी एक बीजा साथे लपटीने प्रेमनी धीमे धीमे वातो करे; भवां हसतां होय एवी रीते चंचळ नेत्रथी कटाक्ष करी क्रीडा करे तेने तिलतंदुल नामनुं आलिंगन कहेछे. हाथसाथे हाथ, छातीसाथे छाती अने जांघनी साथे जांघ जोडीने स्त्री पुरुष बन्ने एक रीतथी क्रीडा करे तेने क्षीरनीर नामनुं आलिंगन कहेछे. कपाळसाथे कपाळ अने गालसाथे गाल जोडे अने हाथ गळामां नाखीने छातीसाथे छाती मीलावीने एक एकने मुखमां पाननीबीडी आपी क्रीडा करे तेने लालाटिक नामनुं आलिंगन कहेछे. ॥ १० ॥

॥ अथ सप्तविधि चुंबन भेद ॥ छंद सारवती ॥

लाय मुखं तियके मुखसें ॥ चुंबन जोर करंत लसें ॥
छोह तिया पिय मोद लहें ॥ सोय मिता अभिधान कहें ॥

त्रीय प्रियं मुख मेल करें ॥ चुंबन देत जु रीझ भरें ॥
कंप सुबाल अधूर कृतं ॥ सो अभिधान कहें फुरतं ॥
मूंदत नेंन तिया पियके ॥ आपुनके वहि रीत टके ॥
ओठ सुकंत धरें रसना ॥ सो अवध्रष्ट कहे सँगना ॥
जोर करे तिय कंत ग्रहे ॥ चुंबन ले प्रतिकूल दहे ॥
नेम बिनां हर कोय तनें ॥ भ्रांति प्रबीन वहें बरनें ॥
पान तिया पिय ओठ ग्रहे ॥ चुंबनकी रस रीत लहे ॥
दंपति मोद बढंत चितें ॥ पीडित नाम वहें कहतें ॥
आपुसमें अरसं परसं ॥ लेत दुहूं रस रीझ वसं ॥
एकहुएक जुरें अधुरं ॥ संपुट एह कहे चतुरं ॥
चुंबन कंत करे मुखसें ॥ आधुर ओर रसन्न प्रसें ॥
दंत लगे त्रिय नृत्यकरे ॥ मौलि वहें अभिधान धरे ॥ ११॥

अर्थ. पुरुष पोतानुं मुख स्त्रीनां मुख साथे लगाडीने जोरथी चुंवन करी खुशी थाय; जोराजोरीने लीधे प्रेममां स्त्री रीसाती जाय तेथी पुरुष आनंद पामे तेने मिता नामनुं चुंवन कहेछे. स्त्री पोतानुं मुख पतिना मुख साथे मेळवीने खुशीथी चुंवन आपे; प्रेमने लीधे स्त्रीनो होठ कंपवा लागे तेने स्फुरती नामनुं चुंवन कहेछे. स्त्री पोताना पतिनी आंख्यो हाथथी वींचावीने पोते पण एवीजरीते आंख्यो टकावी राखे अने जीभथी पतिना होठ चुंवे तेने अवघृष्ट नामनुं चुंवन कहेछे. जोर करती स्त्रीने पुरुष पकडीने स्त्रीनी इच्छा न छतां हरकोइ ठेकाणे नियम विना चुंवन करे तेने डाह्या पुरुषो भ्रांति नामे चुंवन कहेछे. पुरुष स्त्रीना हाथ दवावी होठनुं ग्रहण करे अने प्रेमथी चुंवन करी रस लीये तेथी स्त्री पुरुष बन्नेना चित्तमां स्नेह वधे तेने पीडित नामनुं चुंवन कहेछे.

स्त्री पुरुष आपसमां परस्पर रसनी खुशीमां गुलतान थइने एक बीजां होठनी साथे होठ लगाडी चुंबन ले तेने चतुर पुरुषो संपुट नामनुं चुंबन कहेछे. पुरुष स्त्रीने मुखथी चुंबन करती वखते होठ अने जीभ अडाडी दंत घात करे तेथी स्त्री नाचवा लागे तेने मौली नामनुं चुंबन कहेछे. ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

हाव भाव रस रीत; दंपति रति बिलसे सदा ॥
सोय कहों करि प्रीत; नाम सुगुन संछेप करि ॥ १२ ॥

अर्थ. हाव भाव अने रसनी रीतथी चंद्रकळा तथा रससागर हमेशां काम क्रीडानो विलास करेछे ते हुं प्रीतिथी हाव भावनां नाम तथा तेना गुण संक्षेपे कहुंछुं. ॥ १२ ॥

॥ अथ भाव भेद निरूपनं ॥ छंद पदनील ॥

आनन बोल बिलोकन मध्य जनावतहें ॥ सो मन धारित बात बिचच्छन पावतहें ॥ ताय कवीश्वर भाव सुपंच प्रकार कहें ॥ सोय कहों बिसतार सु सुच्छम पंथ गहें ॥ एक बिभाव सु हे अनुभाव सु ओरहि हे ॥ स्थाइय सात्विक यों बिभिचारिय जान लहे ॥ पंचहु भावके लच्छन भेद यहें बरनें ॥ तास बिभाव कहंत जिहीं रस रीत बनें ॥ दोय कहे तिन भेद अलंबन उद्दिपनं ॥ रम्य कछूक निहारि धरे चिशटा सु मनं ॥ भाव बिभाव उदीत अनूकरनं जु करें ॥ ताय कहें अनुभाव सु दंपति प्रेम भरें ॥ स्थाइ नवं रति हांसिय क्रोध सु शोक तदा ॥ ओर उछा भय निंदित बिस्मय जान सुदा ॥ सात्विक स्तंभ सु स्वेद रुमं सुरभंग कहे ॥

कंप बिरंग असू सु प्रलैं अठ जान लहे ॥ वीश त्रयोदश भेद यहें बिभचारि भजें ॥ नेम बिनां नवहू रस भेदनमें उपजें ॥ आदि त्रिवेद सु ग्लानि शँका अरु आलसहें ॥ दैन्य सु संमृति मोह धृती चपलाइ वहें ॥ व्रीड मदं श्रम चिंत कहे हरखं गरवं ॥ नींदसु नींद बिषाद अवेग जडं सरवं ॥ स्वप्न प्रबोध विवाद अरू उतकंठ गनें ॥ आपसमार मती उग्रता फुनि त्रास भनें ॥ व्याध अरू उनमाद भयं तरकं मरनं ॥ नाम तथा गुन ए बिभिचारिय त्रीस गनं ॥ ॥ १३ ॥

अर्थ. म्होढाना इसाराथी किंवा बोलवाथी अने जोवाथी मनमां धारेली जे वात जणावेछे तेने डाह्या पुरुष जाणीलेछे तेथी तेने कवीश्वरो रसभाव कहेछे. अने ते रस भाव पांच प्रकारनो कह्योछे; तेनो विस्तार करीने कहुंछुं. जेथी रसभावनो सूक्ष्म रस्तो जाणवामां आवशे. एक विभाव, बीजो अनुभाव, त्रीजो स्थाइ, चोथो सात्विक, अने पांचमो व्यभिचारी भाव केहेवायछे; आ पांचे भावनां लक्षण तथा भेद आवी रीते वर्णवेलाछे; जेथी रसनी रीत उत्पन्न थाय तेने विभाव कहेछे; अने ते विभावना आलंवन अने उद्दिपन एवीरीते बे भेद कह्याछे. कांइक खुशी उपजावनार रमणीक वस्तुने जोइने मनमां चेष्टा धरे अने विभाव भावने बरोबर रीते जणावी आपे तेने अनुभाव नामनो भाव कहेछे; जेथी नायक नायका बन्ने प्रेममां मग्न थायछे. स्थायी भावना नव भेदछे ते आ प्रमाणे-- रति, हास्य, क्रोध, शोक, उत्साह, भय, निंदा, विस्मय, अने मोद. (निर्वेद) सात्विक भावना आठ भेदछे; स्तंभ, (जडपणुं) स्वेद, (परशेवो) रोम, (रुंवांनुं उभुं थवुं) स्वरभंग, (सादनुं बदलवुं)

कंप, (धुजवुं) वैवर्ण, (वेरंग थवुं) अश्रु, (आंसु) अने प्रलय. (मुर्छा) व्यभिचारी भावना तेत्रीश भेदछे; अने ते नियम विना नवे रसना भेदोमां उपजेछे तेनो भेद आ प्रमाणे-- निर्वेद, (वासना रहित) ग्लानी, (अचाहि वस्तु देखवाथी थाय ते) शंका, (भ्रांति) आलस्य, (सामर्थ्य छतां अनुत्साह) दैन्य, (दीनपणुं)स्मृति, (पुर्वनुं ज्ञान) मोह, (शरीरनी शूध भूलवी) धृति, (स्थिरपणुं) चपळता, (चंचळपणुं) व्रीडा, (शरम) मद, (उन्मत्तपणुं) श्रम, (थाक) चिंता, (प्रिय वस्तुनुं ध्यान) हर्ष, (आनंद) गर्व, (अहंकार) निद्रा, (उंघ) निंदा, (तिरस्कार) विषाद, (खेद) आवेग, (व्याकुळता) जडता, (सर्व कर्मथी अनिच्छापणुं) स्वप्न, (सोणुं) प्रबोध, (सावधानपणुं) विवाद, (बीजासाथे वाद करवो ते) उत्कंठा, (प्रियवस्तु प्राप्त थवानी आतुरता) अपस्मार, (मोढेथी फीणआवे एवी बेशुद्ध) मति, (अकल) उग्रता, (पोताने उत्तम जाणवुं) त्रास, (उद्वेग) व्याधी, (विरह रोग) उन्माद, (अविचारितपणुं) भय, (बीक) वितर्क, (संदेह थवाथी विचार्या करवुं) अने मरण. (प्राणत्याग) एवीरीते नाम तथा गुणना भेदे करीने व्यभिचारी नामनो भाव तेत्रीश प्रकारनोछे. ॥ १३ ॥

॥ अथ अष्टादश हाव निरूपनं ॥ छंद हरिगीत यथा ॥

दंपतिय सिंगार प्रगटत तास अंगसु भावहें ॥ सोय भाव विचारि सोधत अष्टदश विधि हावहें ॥ प्रीतको सो भेष धारें चिंत प्रेम प्रकाशहे ॥ वाहिको अनुकर्न साधे हाव लीला तास हे ॥ मिंत चाह सनेह बाढत नौतमं गति आनबे ॥ हावसें परवीन धारत सो विलासहि जानवो ॥ तुच्छ भूषन अंग धारत शोभ होत विशेषहे ॥ साहिता मत

शोधि साहित हाव बिच्छित सो कहे ॥ हँस चाल बिलोक बोलन जास रीत जथा कृता ॥ सोय हाव ललीत सोहित रूप रंग सु सोहिता ॥ अंग भूषन वास उलटे बेन उलटे उद्यमं ॥ प्रेमके भर रीत बदले सोय हावहि विभ्रमं ॥ बोल समय न बोलि सकियत लाज व्यूढ बिचारियें ॥ तासके परभावसें वह हाव विहरति धारियें ॥ मिंत मिलि अपमान करियत चिंत धारत हासकों ॥ हाव एह बिबोक कहियत छोभ बाढत तासकों ॥ दंत नख छत मर्द आरति मंद सुख दुख मानियें ॥ तासके अनुकर्न सोई हाव कुटमित जानियें ॥ क्रोध श्रम भय हर्ष गर्वित कंप स्मित अभिलाषितं ॥ ऊपजित इकबेर हाव सु किलहकिंचित भाषितं ॥ मिंत दरशन चिंत चाहत बात धरत न कानहें ॥ चातुरी कर हाव कहियत सो मुटायत जानहें ॥ जूँनपन आनंद उपजित चिंत प्रेम प्रकाशितं ॥ बाल कारन विनां हासियत हाव कहियत हासितं ॥ वाम भरि आनंद बेठत निज समीप सु मिंतहे ॥ चौंकि उठियत बिना कारन चकित हाव कहंतहे ॥ रूप ओर सुहाग जोवन गर्व कामानि धारितं ॥ ताहिको बिस्तार बर्नत हाव मद सु उचारितं ॥ कंत बिछुरत बिरह व्यापित चल विचल तन चिंतहे ॥ आरती उपचार शोधन हाव तपन कहंतहे ॥ रीझ मनवत वसन भूषन रीझवत नव खेलहें ॥ रीझवत पियसंग बसबो कहें हाव सु केलहें ॥ रूप सुंदर सुभग भूषन वास सुभग बनाव-

के ॥ प्री लखन उतकंठ लागी गुन कुतूहल हावके ॥ आध तन सिंगार साजित आभरन अध सोहितं ॥ हाव सोय विछेप कहियत चकित इत उत जोहितं ॥ स्यांम संग सुजान कामनि वात निकसित कोयहें ॥ जान होय अजान बूझत हाव मुग्धित सोयहें ॥ १४ ॥

अर्थ. स्त्री पुरुषमां शृंगार प्रगट थवाथी तेओना अंगनां लक्षण तथा स्वभावउपरनो भाव विचार पुर्वक शोधी जोतां अढार प्रकारना हाव उपजेछे. ते आ प्रमाणे-- स्त्री पोताना पतिनां वस्त्र तथा घरेणां धारण करीने पुरुषना जेवो वेष धरे अने चित्तमां प्रेमनो प्रकाश थवाथी पतिना जेवी क्रीया साधे तेने लीला नामनो हाव कहेछे. पोताना मित्रनी चाहनाथी स्नेह वधे अने अंगना अवयवोनी नवी अने जूदीज गति देखाय तेने हावना जाणनार चतुर पुरुषो विलास नामनो हाव कहेछे. थोडां घरेणां पेहेरवाथी जेनुं शरीर शोभे तेने साहित्यना मतने शोधी काढनारा पुरुषो विच्छित हाव कहेछे. हसवुं, चालवुं, जोवुं अने बोलवाथी जेनी रीत बरोबर घटारथ जणाय अने रूप रंगथी शोभे तेने ललित हाव कहेछे. शरीरे लुगडां तथा घरेणां उलट सुलट पेहेरे; भाषण तथा उद्यम पण उलट सुलट थाय अने प्रेममां मग्न होवाने लीधे रीति पण वदली जाय त्यांहां विभ्रम नामनो हाव थयो एम कहेछे. लाजने लीधे बीचारमां घुचवाइने पोताना पति साथे बोलवानी वखते जे स्त्रीथी बोली शकाने नथी एवा पूर्ण भावना प्रतापथी विहृत नामनो हाव थयो एम धारेछे. स्त्री पोताना हृदयमां मश्करी तथा गर्व धरीने पोताना प्राण पतिनो निरादर करे तेथी करी क्षोभ थाय तेने विब्बोक नामनो हाव कहेछे. पतिए करेला दंत घात, नखक्षत अने मर्दननी पीडाथी मनमां सुख छतां उपरथी थोडुं दुःख जणावीने जे स्त्री जूठो रोष दर्शावे तेने कुट्ट-

मित नामनो हाव कहेछे. क्रोध, श्रम, भय, हर्ष, गर्व कंप, स्मित, (थोडुं हसवुं) अने अभिलाष ए सर्व ज्यांहां एक काळे उपजे त्यांहां किलाकिंचित नामनो हाव थयो एम कह्युछे. जे स्त्री चतुराइ करी पोताना प्रियनां वखाणनी वातो काने न धरे अने पतिनां दर्शनने चाहे तेने मोटायित नामनो हाव कहेछे. जोवन अवस्थाने लीधे आनंद उपज्याथी चित्तमां प्रेमनो प्रकाश थाय अने ते वाला कारण विना हसे तेने हासित नामनो हाव कहेछे. स्त्री आनंदथी भरपूर थइने ज्यांहां पोतानो प्रिय मित्रछे त्यांहां सामी जइने बेसे अने एवीरीते बेसतां कारण विना चमकी उठे तेने चकित नामनो हाव कहेछे. रूप सौभाग्य अने जोबन विगेरेना गर्वने धरीने जे स्त्री रूप, सौभाग्य अने जोवननुं विस्तारीने वर्णन करे तेने मद नामनो हाव कहेछे. पोताना पतिना वियोगने लीधे विरह व्यापवाथी जेनुं तन मन चळ विचळ थाय ने क्यांय पण चेंन न पडे तेथी थएली पीडा मटाडवावास्ते इलाज शोधती होय तेने तपन नामनो हाव कहेछे. जे स्त्रीने पोतानी इच्छा प्रमाणे लुगडां तथा घरेणां मळे तेमज ते मनमानती रंमत गम्मतमां गुलतान रहे अने पोतानी मरजी प्रमाणे पोताना प्राण प्रियनी पासेने पासेज रहे तेने केली नामनो हाव कहेछे. सारा स्वरूपवाळी स्त्री सुंदर लुगडां तथा घरेणां पेहेरीने पोताना प्रिय पतिने जोवानी उत्कंठा धरे ए लक्षणथी कुतूहळ नामनो हाव थयो एम केहेवायछे. अरधो शृंगार अर्धा अंगमां पेहेरे तेमज अधुरां घरेणां पेहेरीने चकित थएली स्त्री चारे तरफ जोया करे तेने विक्षेप नामनो हाव कहेछे. चतुर स्त्री पोताना स्वामीनी पासे नीकळेलो कोइ वातने जाण्या छतां अजाण थइने पूछे त्यांहां मुग्धित नामनो हाव थयो एम म्होटा कविओ कहेछे. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

उदाहरन अरु बंध विधि, कहें ग्रंथ बढिजाय ॥

याहीतें संछेप करि, दीनो भेद जनाय ॥ १५ ॥

अर्थ. हाव भावनां उदाहरण तथा लक्षणोनी विधि केहेवाथी ग्रंथ वधी जाय ते वास्ते टुंकी मतलबमां संक्षेपकरी भेद जणाव्योछे. ॥ १५ ॥

॥ अथ षट् ऋतु विलास बर्ननं ॥ दोहा ॥

षट् रितु प्रति भूषन वसन, नये नये नित हेत ॥
रूप दुलह दुलहनि नये, नये नये सुख लेत ॥ १६ ॥

छ रुतुमां नवां नवां घरेणां तथा नवां नवां वस्त्र पेहेरीने नव नव हेते मळीने वर वउ नवां नवां रूप करीने नवां नवां सुख लेछे. ॥ १६ ॥

॥ अथ तत्र प्रथम ग्रीषम बर्ननं ॥ दोहा ॥

चेल गुलावी केसरी, सब सीतल उपचार ॥
मुक्ता मंडन बाग बसि ॥ ग्रीषम करत बिहार ॥ १७ ॥

अर्थ. गुलाबी तथा केसरी वस्त्र, सघळा थंडा पदार्थना उपायो, मोतीनां घरेणां अने बगीचानो वास इत्यादि विलासोथी उनाळाना दिवसमां विहार करेछे. ॥ १७ ॥

॥ छप्पय ॥

बिपन कुंज बाटिका, फिरत जलजंत्र फुहारन ॥
छबि शीतल तरु छाँह, विविध जल केल बिहारन॥
बहु घनसार गुलाब, मलय कसमीर बिलेपन ॥
शुभ केसर मय बसन, तास भूषन मुक्ता तन ॥
पेखंत चंद्र सीतल पवन, सुमन सेज गजरा सुभत ॥
चिलसे बिलास निसदिन बिबिध, रससागर ग्रीषम सुरत १८

अर्थ. जंगल, झाडनी घटाओ अने वाडीयोनी सेहेलानी करवी; चोतरफ उछलता पाणीना फुआराओनी वाहार लेवी; झाडनी ठंडी छांया-

तळे रेहेवुं, जातजातना कुंड कुवा अने होजना पाणीमां विहार करवो; कपूर, गुलाब, मळयागिरी चंदन अने केसर विगेरे सुगंधी शीतळ पदार्थोना घणाक लेप करवा; सुंदर केसरथी रंगेलां लुगडां अने तेवांज सुंदर मुगताफळना घरेणां शरीरे पेहेरवां; रातनीं वखते चंद्रमाने जोवो, सुंगंधिवाळा पवननुं सेवन करवुं; फूलनी सज्जाओमां सुवुं अने शोभायमांन गजरा पेहेरवा, एवीरीते ग्रीष्मऋतुनी मनगमती क्रीयार्थी रससागर राजकुमार ग्रीष्म ऋतुमां जातजातना विलास करेछे. ॥ १८ ॥

अथ वर्षा ऋतु बर्ननं ॥ दोहा ॥

सुही कसूंबी पट सकल, नीक जटित सिंगार ॥
अटा घटा निरखन नवल, बरषा करत विहार ॥ १९ ॥

अर्थ. कसुंबेथी रंगेलां शोभीतां वस्त्र पेहेरवां, घाटीलां जडित्र घरेणां धारण करवां अने मेडीमां बेशीने चडेला मेघनी नवीन घटाने जोवी एवीरीते वर्षा ऋतुमां विहार करेछे. ॥ १९ ॥

॥ छप्पय ॥

ऊंच बसत शुभ अटा, घटा प्रगटित घनमें छवि ॥
निरखत गोख निकेत, सु धर गिरि हरित भये सवि ॥
मिलि दंपति मनुहार, प्यार अति करि मद पावत ॥
भाव कवित सुर भेद, गुनीं मल्लार सु गावत ॥
सोभंत कसूंमल पट सुही, कौतुक श्रावन त्रीज कृत ॥
बिलसे बिलास निस दिन विविध, रससागर वरपा सु रत॥२०

अर्थ अतिशे उंची अने शोभायमान मेडीमां रहीने मेघ मंडळमां प्रगट थएली घटानी छवीने जुवेछे; मेहेलना गोखमां बेशीने नीलकाईगयेली जमीन तथा सघळा पाहाडोनी शोभाने जुवेछे; स्त्री पुरुष बन्ने मळीने

एक बीजाने सत्कार पुर्वक अतिशे प्यार करीने मदीरा (दारु) पायछे, कवीत, भाव अने स्वरना भेदथी गुणीजनो जेनी पासे मल्लार रागथी गायन करेछे, कसुंबाथी रंगीन पेहेरेलां वस्त्र घणांज शोभेछे, श्रावणनी त्रीजना कौतुक करवा साथे वर्षा ऋतुमां रससागर राजकुमार रात दिवस जातजातना विलासथी क्रिडा करेछे. ॥ २० ॥

॥ अथ शरद ऋतु वर्नन ॥ दोहा ॥

अंवर जरी सु सोसनीं, पना सु भूषन धार ॥
चंद्रोदय जल कमल छवि, शरद सु करत बिहार ॥२१॥

अर्थ. सोसनी रंगवाळां जरीनां वस्त्र तथा पानाथी जडेलां घरेणां पेहेरवां ने चंद्रना प्रकाशनी साथे पाणीमां खीली आवेला कमळनी शोभाने जोवी एवीरीते शरद ऋतुमां विहार करेछे. ॥ २१ ॥

॥ अथ छप्पय ॥

मंदिर दीपक माल, बाल दीपक माला बन ॥
चहत चंद्र चंद्रिका, तिया पति जरह बसन तन ॥
कर कर कमल कुमोद, प्रेम धरि दुर्गा पूजत ॥
अति उज्वल आगार, उमडि सुख अनंत अरूझत ॥
तटनीं तडाग तट विमल तहाँ, क्रीडा जल मंजन करत ॥
बिलसे बिलास निस दिन बिविध, रससागर यह शरद रत

अर्थ. मंदिरमां मोटा दीवानी हारयो प्रगटेलीछे तेमज अनेक नाना दीवानी दीपमाळा बनावीछे; तोपण चंद्रमाना प्रकाशने चाहतां स्त्री पुरुष अंगमां जरीनां वस्त्र पेहेरी हाथमां कमळ तथा पोयणीनां फूल लइने प्रेमथी दुर्गा देवीनुं पूजन करेछे; अतिशे ऊजळा मंदिरमां उमंगथी अनंत सुखमां मग्न थायछे; नदी तथा तळावना नीर्मळ कीनारा उपर

जइने पाणीमां नावानी साथे क्रीडा करेछे एवीरीते शरद ऋतुमां रससागर राजकुमार विविध रसथी विलास करेछे. ॥ २२ ॥

अथ हेमंत ऋतु वर्नन ॥ दोहा ॥

नील निचोल सु अंबरी, मानिक भूषन सार ॥
अतिहि उष्न उपचार तन, हेमँत करत विहार ॥ २३ ॥

अर्थ लीला तथा काळा रंगनी शालो अने दुशाला ओढवा, गरम वस्त्र पेहेरवा, माणेकथी जडेलां घरेणां धारवां, अंगने सुख करे एवा गरम उपचारोनुं सेवन करवुं एवीरिते हेमंत ऋतुमां विहार करेछे. ॥ २३ ॥

॥ अथ छप्पय ॥

भूमि भुवन मय भोग, तैल मर्द्दन तप तापन ॥
हैं जल केलि हमाम, तप्त भोजन तरुनीं तन ॥
बहु मृगमद तंबोल, तल्प घन तूल तलाई ॥
सुजनी सुभग दुसाल, सदल सरपाउ सुहाई ॥
शुभ मानिक भूषन सकल, कोक कुतूहल रस कवित ॥
बिलसे बिलास निस दिन विविध, रससागर हेमंत रित २४

अर्थ. जमीननी अंदर रचावेला भोंयरांनां घरमां रहीने भोग भोगववा; तेलनुं मर्दन करवुं, सगडीमां आग सळगावीने तापवुं; हमामखानामां राखेला गरम पाणीथी नावुं तथा क्रीडा करवी; गरमा गरम जमवुं; स्त्रीना शरीरने सेववुं; कस्तुरीनुं लेपन करवुं तथा पानबीडां चाववां; घाटा रुथी भरेली तळाइमां सुवुं; सारी सारी सुजनी अने दुशाला ओढवा; तार छेडावाळा शिरपाव धारण करवा; सघळां माणेकथी जडेलां घरेणां पेहेरवां, कोकशास्त्रना भेदथी गम्मत करवी तथा रसालंकार युक्त कवित्त वांचवां एवीरीते रससागर राजकुमार रात दिवस जातजातना विलासथी हेमंत ऋतुमां रमण करेछे. ॥ २४ ॥

॥ अथ शिशिर ऋतु वर्नन ॥

अंबर सर्पी सित वसन ॥ नीलमनीं सु अपार ॥
दंपति प्रेम अनंत उर ॥ शिशिर सु करत बिहार २५ ॥

अर्थ. अमर, घी, सपेत कपडां अने नील मणीओनां अलंकार विगेरे पदार्थोथी स्त्री पुरुष मनमां घणोक प्रेम धरीने शिशिर ऋतुमां विहार करेछे. ॥ २५ ॥

॥ अथ छप्पय ॥

पाक सहस शत पाक, नेह अभ्यंग करत नित ॥
भेपज मोदक भक्ष, ताम्र पारद पक्व तित ॥
आमिप उष्न अहार, चंद्रहासह रस अचवन ॥
काम थंभ गुटिकान, तेज उपचार करत तन ॥
सनमान त्रिया नृत गान शुभ, निस दीरघ दिन छीन नित॥
विलसे विलास निस दिन विविध, रससागर यह शिशिर रित

अर्थ. सालम पाक विगेरे जातजातना हजारो पाक खावा; हमेशां तेलनुं मर्दन करवुं; जातजातनी औषधीयोनी साथे अडदीया लाडु खावा; मारेलुं त्रांबु तथा पकावेलो पारो खावो, मांस विगेरे गरमा गरमी पकावेला पदार्थोनुं भोजन करवुं, चंद्रहास विगेरे मादक रसनुं पान करवुं; कामने स्तंभन करी राखे एवी गोळीओ अने शरीरे तेज रहे एवा अनेक उपायो करवा; स्त्रीने मान आपवुं; नृत्य जोवुं तथा गायन सांभळवुं पूर्वोरीते रससागर राजकुमार जेमां रात म्होटी अने दिवस नानो होयछे एवी शिशीर ऋतुमां जातजातना विलासथी क्रीडा करेछे. ॥ २६॥

॥ अथ वसंत ऋतु वर्नन ॥ दोहा ॥

स्वेत चिचित्रित तन वसन्न , सकल नंग सिंगार ॥

केसर चंदन कुमकुमा, करत वसंत विहार ॥ २७ ॥

अर्थ. सपेत अने केसरना छांटणांवाळां जातजातनां कपडां पेहेरवां; तेमज मणी माणेक विगेरे सघळा नंगोथी जडेला शणगार धारण करवा; केसर चंदन अने कुमकुमां (गुलालथी भरेला लाखना दडा) विगेरे वसंतोपयोगी पदार्थोथी वसंत ऋतुमां विहार करेछे. ॥ २७ ॥

॥ अथ छप्पय ॥

जुवती नर कर जूथ, खुसीमहि फाग सु खेलही ॥
केसर जल पिचकारि, लिये अत्तर कर तेलहि ॥
गोद अबीर गुलाल, नडर इतरेतर नांखहि ॥
बोलत राग बसंत, भजें मुख गारि सु भाखहि ॥
बाजें मृदंग डफ बीन बहु, राजे सब लज्जा रहित ॥
बिलसे बिलास निस दिन बिबिध, रससागर सु वसंत रित

अर्थ. स्त्री तथा पुरुषोनां टोळां भेळां करीने खुशीथी फाग खेलेछे; केसरना पाणीनी अने अत्तर तथा सुगंधी तेलनी पिचकारीओ भरी भरी परस्पर ताकीने नाखेछे; खोळामां राखेला अवील गुलालनी फांटो न डरतां एक बीजा उपर उडाडेछे; वसंत राग गाइने खुल्ले म्होढे फाग बोलेछे; मृदंग, धफ, वीणा विगेरे घणाएक वाजां वागी रह्यांछे; लाज विना फाग बोलेछे पण फागनी ऋतुने लीधे सघळां शोभेछे, एवीरीते वसंत ऋतुमां रससागर राजकुमार जातजातना विलासथी हमेशां क्रीडा करेछे. ॥ २८ ॥

॥ अथ गाहा ॥

कोक कला अनुमानं ॥ वर्नन भाव हाव सु विलासं ॥
षट रुतु कृत सु विहारं ॥ सोर प्रवीनसागरो लहरं ॥२९॥

अर्थ. कोक शास्त्रना भेदथी चंद्रनी कळा प्रमाणे कामदेवनुं रेठाण; तथा हाव भावना विलासनुं वर्णन अने सागर कुमारे छए ऋतुमां करेलो विहार, इत्यादि वृतांत युक्त प्रवीण सागरनी सोळमी लेहेर पूर्ण थइ. ॥१६॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कोक कळा भाव हाव षट ऋतु विहारो नाम षोडशो लहरं ॥ १६ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां षोडश स्तरंगःसमाप्तः ॥ १६ ॥

अथ टिकाकारोक्त तरंग शिखाबंध. ॥ दोहा ॥

गायक भणे प्रवीण प्रति. ॥ राग रूप रस रंग. ॥
ताळ काळ शुभ सतरमो ॥ तेआ तवे तरंग. ॥ १७ ॥

॥ अथ गायन प्रसंग ॥ छंद चोपाइ ॥

शुभ जनपद पंजाव जहांहें ॥ पुर लाहुर मुलतान तहांहें ॥ गायन तहां अनंत रहावे ॥ सब संगीत रीत ग्रह गावे ॥ मुख्य चातुकी कोकिला दोई ॥ सोर अठार वरष वय सोई ॥ रंम्य स्वरूप लहन रस ग्रंथा ॥ जानन भेद नायका पंथा ॥ राग रागनी रूप प्रबीना ॥ साज बजावन मुरज सु बीना ॥ गूढ भेद जानन गुन गाथा ॥ काव्य नवीन करन समराथा ॥ वह गायन दिन एक बिचारी ॥ जनपद सहल करनकी धारी ॥ १ ॥

अर्थ. जे भूमीमां नामीचो पंजाब देशछे ते भूमीमां लाहोर अने मुलतान ए बे प्रख्यात शेहेरछे, ते शेहेरमां अनेक गवैया अने गायन कर-

नारी अगणित नायकाओ रहेछे; ते सघळां संगीत शास्त्रनी रीत प्रमाणे रागना घरमां गाइ जाणे एवांछे; तेमां पण मुख्यत्वेकरी चातुकी अने कोकिला नामनी बे वारांगनाओ सरस गणायछे; तेमां एकनी सोळ वर्षनी अने बीजीनी अढार वर्षनी उम्मरछे; ते घणी रूपवाळी अने मनोहर एटलुंज नहिं पण रसशास्त्रना ग्रंथोने समजनार, नायकाभेदना मारगने जाणनार, राग अने रागणीओनां रूपने ओळखीने गावामां चतूर, म्रदंग, मुरज, विणा विगेरे वाजाना स्वर मेळवीने बजाववामां कुशळ; गूढ भेद वाळां वाक्योनी गतिने जाणनार, नवीन कविता रचवामां समर्थ एवी गायन करनारी ते नायकाओए एक दिवस विचारीने बीजा देशोमां सेहेल करवानो निश्चय कर्यो. ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कछू तास अरथ न कमी, दिय गुरुजन गृह भार ॥
गायन देशाटन चली, देखन राजदुहार ॥ २ ॥

अर्थ. तेओने कांइ द्रव्यनी कमी नथी तोपण घर तथा इसकामतनो बोजो पोताना गुरुजन विगेरे वृद्धोने सोंपीने फकत राजद्दार जोवा सारुज परदेशनी मुसाफरीए चालीयुं. ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

हय जोरित चकडोल, एक मंदोलिका सु वर ॥
पंच सुतर सामान, दश सु दासी सकटी सर ॥
असी साठ असवार, साठ पंचासक पायक ॥
नटवा अरु नायका, और दस बीसक गायक ॥
जेहर जराव अंबर जरी, बिध बिध वाजित संग लिय ॥
कोकिला चातुकी नाम जिहि, राज सहल गायन चलिय ॥ ३ ॥

अर्थ. घोडाथी जोडाएलो एक रथ एक उमदी पालखी, सामान उपाडवाने पांच उंट, दश दासीओ, पांच गाडी, साठ एंशीक असवार, पचा साठ प्यादा, नट नायकाओ अने बीजा दशवीश गवीया, झांझर लंघर अने बीजां जडाउ घरेणां तथा जरीना पोषाक समेत जातजातनां वाजां लइ कोकिला अने चातुकी नामनी गायन करनारी नायकाओ रजवाडानी सेहेल करवा मुसाफरीए चाली. ॥ ३ ॥

॥ चोपाइ ॥

चलत त्वरित करि मेधा मनमें ॥ कोउ न गान करत तिय जनमें ॥ रसन रीति नृप नरन कहावत ॥ पर जनान गति कोउ न पावत ॥ यातें राज तियन मह गावें ॥ तो तहकीक खबर दिल पावें ॥ अस विचारि चित चोकस भारी ॥ गान तियन महिं कीजन धारी ॥ ४ ॥

अर्थ. रस्ते चालतां तुरत बुद्धिनी साथे मनमां एवो विचार कर्यो के कोइ पण स्त्रीलोकोमां गायन करतुं नथी सर्व गायन करनारीओ राजाओनीज रस संबंधी रीतभात कहेछे; पण जनानखानानी गतिने कोइ पामतुं नथी माटे राजाओनी स्त्रीओमांज आपणे गाइए तो जनानखानानी अंदरनी रीतभातने दिलमां जाणीए एवा विचारथी चित्तमां चोकसी करीने तेओए स्त्रीओमांज गायन करवानी वात मनमां धारी. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

जावे राजदुहार प्रति, गावे बीच जनान ॥
पावे मोज अदृष्टवत, फुनि उठि चलें विहान ॥ ५ ॥

अर्थ. राजदरबारमां जायछे अने जनानखानामांज गायछे कीस-

मत प्रमाणे मळेली मोज लेइने फरीने त्यांथी चाली बीजी राजधानी-मां जायछे. ॥ ५ ॥

फिरत आइ गुज्जॅर धरा, पुरी मनंछा थान ॥
खान पान सामान किय, नीतपाल राजान ॥ ६ ॥

अर्थ. एम फरते फरते गुजरातनी धरामां मनंछापुर नामना नगरमां आवी त्यांहां नीतिपाळ राजाए खानपानादि सामान विगेरेथी घणुं सन्मान कर्युं. ॥ ६ ॥

॥ छंद दोधक ॥

गायन थान इकंत जमायो ॥ खानहि पान सबें सुख पायो॥
सांझ सु राजदुहार सिधाई ॥ द्वार प्रवेशन आयस पाई ॥
जाय जनानहिमें सिर नाई ॥ बीन म्रदंग मिलाय सु गाई ॥
गायन भेद सँगीत सु लीनो ॥ गान प्रमान सबें तिय कीनो॥
रीझ प्रबीनकला उर आई ॥ सासन श्री महराज मगाई ॥
रीझ प्रमान इनाम जुं दीनो ॥ गायनको सु टिकावहिं कीनो ७

अर्थ. गायन करनारी कोकिला तथा चातुकीए एकांत स्थले रेहेवानो जमाव कर्यो त्यांहां खावा पिवानुं घणुं सुख पामीयुं; सांझ पडी एटले राज-द्वारमां आवीयुं अने अंदर जवानी रजा लइने जनानखानामां जइ राणी-ओने शिरनमाव्यां; पछी सारंगी अने म्रदंगनो स्वर मेळवीने गायन करवा लागी; तेओए गायनमां संगीत शास्त्रनो भेद लीधो तेथी सर्व राणीओए तेओनुं गायन प्रमाण कर्युं; आवुं गायन सांभळवाथी कळाप्रवीणना मन-मां खुशी उपजी आवी, तेथी महाराजानी रजा मगावीने खुशी मुजब इनाम आप्युं अने ते कोकिला अने चातुकी नायकाओनें त्यांहां थोडा दिवस रेहेवानुं फरमाव्युं. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

नित प्रति राजकुमारि मिल, सुने जु गायन गान ॥
इक दिन कलाप्रवीन जूं, बूझ्यो यहें विधान ॥ ८ ॥

अर्थ. हमेशां राजकुमारीओ मळीने ते नायकाओनुं गायन सांभळेछे, एम करतां एक दिवस कळाप्रवीणे आ प्रमाणे भेद पुछ्यो. ॥ ८ ॥

॥ अथ कलाप्रवीनोक्त छप्पय ॥

कहा सप्त सुर नाम, कोंन अनुमान पिछानें ॥
कहा मुर्छना ग्राम, सुरसु केते मिलि जानें ॥
क्यों सु भये षट राग, कोंन रागनीं राग प्रति ॥
कोंन तास सुत सुता, रंग रूप सु कैसी गति ॥
सब मिल सुरूप केते प्रथक, केते ताल लगाइयें ॥
कोकिला चातुकी भिन्न करि, एते भेद बताइयें ॥ ९ ॥

अर्थ. साते स्वरोनां नाम शुं अने ते केवा अनुमानथी ओळखायछे? केटली मुर्छना अने केटलां ग्रामछे? केटला स्वरो एक बीजामां परस्पर मळेछे? छ राग केनाथी उत्पन्न थया अने दरेक राग प्रत्ये केटली केटली रागणीओछे? तेओना केटला दीकरा अने केटली दीकरीओछे? तेमज तेओना रंग रूपनी केवी गतिछे? जुदां जुदां सघळां मळीने केटलां रूपछे अने तेओने केटला ताल लगाडायछे हे! कोकिला चातुकी, जुदी जुदी रीतथी एटला भेद बतावो? ॥ ९ ॥

अथ गायनोत्तर ॥ दोहा ॥

अहो प्रवीन संगीत दधि ॥ पैंर न पावत पार ॥
जो बूझे सो मतियथा ॥ कहों भेद बिस्तार ॥ १० ॥

अर्थ. हे? कलाप्रवीण, संगीत शास्त्र समुद्र जेवुं गभीरछे तेथी तेना पारने कोइ तरिने पामतुं नथी; तोपण जे भेद पूछ्या ते हु म्हारी बुद्धि प्रमाणे विस्तारीने कहुंछुं. ॥ १० ॥

अथ स्वर नाम ॥ छंद चंद्रायणा ॥

षर्ज रिषभ गंधार सु मध्यम जानियें ॥ पंचम धैवत और निषाद बखानियें ॥ स रि ग म प ध नी सप्त सप्त सुर अंकहें ॥ तीन ग्राम मूर्छना बीस एकं कहें ॥ ११ ॥

अर्थ. षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत अने निषाद ए प्रमाणे स्वर जाणवा. सा री ग म प ध नी ए सात साते स्वरोना अंक (अक्षर) छे; त्रण ग्राम अने एकवीश मुर्छनाछे. ॥ ११ ॥

अथ ग्राम धामाभिधानं ॥ दोहा ॥

नाभि कंठ कपालिका ॥ यहें धाम निरधार ॥
यह अभिधान सु जानियें ॥ मंद मध्य अरु तार ॥ १२ ॥

अर्थ. नाभी, कंठ, कपाळ ए त्रणे ग्रामनां अनुक्रमे स्थानकछे; अने ए त्रणे स्थळ मंद; मध्य अने तार एवा नामथी ओळखायछे. ॥ १२ ॥

अथ सप्तस्वर अनुमान भेद ॥ छप्पय ॥

विरहि बान सुर षर्ज, रिषभ चातुकी उचारन ॥
अंगुचार गंधार, मध्य कुरची कल धारन ॥
पंचम कोकिल शब्द, बाज धुनि धैवत जानें ॥
घन गर्जन सु निषाद, सप्त सुर भेद बखांनें ॥
षट सुर फिरंत षंडव वहें, पंच सु ओडव धारियें ॥
स्वर सप्त सोय पूरन कहे, रागन धाम विचारियें ॥ १३ ॥

अर्थ. मोरनी वाणी सरखो षड्जनो, वापैयाना उच्चार जेवो रुषभनो, बकराना उच्चार जेवो गांधारनो कुरचीना (क्रौच पक्षी) उच्चार जेवो मध्यमनो, कोयलना शब्द जेवो पंचमनो, घोडाना अवाज जेवो धैवतनो अने मेघनी गर्ज्जना जेवो निषादनो उच्चारछे. जे गायनमां छ स्वरो फरे तेने खाडव कहेछे; पांच स्वरो आवे तेने ओडव कहेछे; ने जेमां साते स्वरो आवीजाय तेने पूर्ण कहेछे; एवीरीते सात स्वरनो विचारछे. हवे रागनी जन्म भूमीनो विचार कहीए छए. ॥ १३ ॥

॥ अथ षट रागोत्पत्तिभेद ॥ छप्पय ॥

भैरों हरतें भयो, मालकोसह विष्नू मुख ॥
ब्रह्म गात हिंडोल, हुवो दीपक दिनमनि रुप ॥
शेषहुतें श्रीराग, मेघ गाजत अकास हुव ॥
एक एक प्रति राग, पंच रागनीं प्रगट भुव ॥
सुत पंच पंच प्रति रागनीं, पंच पंच पुत्री कहें ॥
विस्तार वढ्यो संबंधसें, तीन लोक फैल्यो वहें ॥ १४ ॥

अर्थ. भैरव राग महादेवजीथी, मालकोश विष्नुनां मुखथी, हिंडोर ब्रह्माना शरीरमांथी दीपक सूर्यना तेजथी, श्री शेषथी अने मह्लार आकाशमां गाजता मेघथी थयो. हवे अकेका रागने पांच पांच रागणी (स्त्री) प्रगटछे; तेमज प्रत्येक रागणीने पांच पांच पुत्र अने पांच पांच पुत्रि थयेलीछे तेओना परस्परना संबंधने लीधे एटलो बधो विस्तार वधीगयो के जे त्रणे लोकमां फेलाइ गयो. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

[illegible] नवीनके, तवी बहुत विस्तार ॥
कहें नवीन षट रागके, रागनि युक्त उदार ॥ १५ ॥

अर्थ. आ सघळा रागना परीवारनुं वर्णन करीएतो ग्रंथनो घणोक विस्तार वधी जाय माटे हे? कलाप्रवीण रागणीओ समेत फकत छ रागनोज विस्तार कहीए छए. ॥ १५ ॥

अथ श्री भैरव पंच रागनी नाम भेद ॥ चोपाइ ॥

भैरो राग भैरवी नारी ॥ बैरारी माधवी बिचारी ॥
सिंधू बंगाली सु कहावे ॥ यहें रीत संगीत बतावे ॥ १६ ॥

अर्थ. भैरव रागने पांच स्त्रीओछे; ते आ प्रमाणे भैरवी, वेराडी, माधवी, सिंधु अने वंगाली कहेवायछे एम संगीत शास्त्रमां जणावेछे. ॥ १६ ॥

अथ भैरवादि रागनी स्वरूप सिंगार भेद ॥ छंद पदनील ॥

शंकर सो जु सरूप हिमंकर भाल दहे ॥ अंबक तीन जटा मधि देवधुनी सु बहे ॥ अंबर सेत अही भुज मुंडन माल गरें ॥ भैरव आसन सिद्ध मृगं तुचपें जु करें ॥ सोहत गौर सरूप सुपेत सु पाट लसें ॥ श्वेत उढोन उरोजन कंचुकि लाल कसें ॥ चंपककी उर माल बजावत ताल करें ॥ भैरवि शंकर थान उचारत बानि हरें ॥ कंचन कंकन पान सु कंचुकि श्वेत हिये ॥ नागनिके छवि केस सु अंग बिखेर दिये ॥ देव प्रसूनन गुच्छ सु रीझ धर्यो श्रवने ॥ चाहतहे पिय संग बिरारिय सो वरने ॥ अंजित नेंन परीभृत बेन सु हेम तना ॥ पीत निचोल पिया मुख चुंबतहे ललना ॥ कंठ भुजा धरि रीझतहें छिन मध्य हसे ॥ ए मधुमाधवि साम समीप सदा बिलसे ॥ अंबर आरुन रूप बिसाल

त्रिसूल लिये ॥ पूजतहे शिव थान खरी कर कंज कीये ॥ क्रोध भरी मनमें विरहानल अंग दहें ॥ हेरतहे पति पंथ सु सिंधवि तास कहें ॥ भाल दिये मृगसार विभूत सु अंग धरें ॥ शीश जटा शुभ मूरति लीन त्रिशूल करें ॥ केसर रंग उढोन सु मंदहिं मंद हसे ॥ एह बँगालनि साते हवे ल सदा वन कुंज वसे ॥ १७ ॥

अर्थ. जेनुं शंकरना जेवुं स्वरूपछे; कपाळमां चंद्र धारण कर्योछे त्रण नेत्रछे; जटामांथी गंगा वेहेछे; धोळां वस्त्र पेहेरेलांछे; भुजाए सर्प अने गळामां मुंड माळा धारण करेलीछे एवो भैरव राग मृगचर्म उपर सिद्धासन करीने रह्योछे. हवे जेनुं गोरुं स्वरूप घणुं शोभेछे; सपेत वस्त्र पेहेरेलांछे; तेमज सपेत ओढणी ओढीछे; स्तन उपर लाल रंगनी कंचुकी कसेलीछे; गळामां चंपाना फूलनो हार पेहेरेलोछे अने हाथथी ताल वजावेछे एवी भैरवी नामनी रागणी शंकरना मंदिरमां हरहर एवी वाणीथी गान करेछे. सोनानां कंकण हाथमां पेहेरेलांछे; सपेत रेशमनी कंचुकी पेहेरीछे; नागणना सरखा लांबा केश छुटा करीने शरीरना उपर लवरावेलाछे; पारी जातकना फूलना गुच्छा खुशीथी कानमां धरेलाछे अने पोताना प्राण प्रियना संगने चाहेछे एवी वेराडी नामनी रागणी वर्णवेलीछे. काजळथी आंख्यो आंझीछे; कोयलना जेवां मधुर वचन बोलेछे; सोना जेवुं, कोमळ अने कान्तिवाळुं अंगछे; पीळां वस्त्र पेहेर्यांछे; पोताना पतिना मुखनुं चुंबन करेछे; अने कंठमां हाथ धरी खुशी थइने घडीए घडीए हसेछे एवी मधुमाधवी नामनी रागणी पोताना स्वामी पासेज निरंतर विलास करेछे. लाल रंगनां वस्त्र पेहेरेलांछे; तपस्वीना लायक जेनुं रूपछे; म्होटुं त्रिशूळ हाथमां लीधुंछे; महादेवना मंदिरमां उभी उभी कमळ जेवा हाथ पसारीने पूजा करेछे; मनमां

क्रोध करी पोताना प्रियना वियोगनी अग्निथी अंगने बाळेछे अने वारंवार पोताना पतिनी राह जुवेछे तेने सिंधवी नामनी रागणी कहेछे. कपाळमां कस्तुरीनुं तीलक करीने अंगे भस्म लगावेलछे; मस्तक उपर रहेली जटानेलीधे जेनी अजाएब खुबसुरती दीसेछे; हाथमां त्रिशूळ धेलुंछे अने केसरी रंगनी ओढणी ओढीने धीमे धीमे हसेछे एवी गाली नामनी रागणी बाळस्वरूपथी हमेशां वनना लता मंडपमां वसेछे. ॥ १७ ॥

॥ अथ श्री मालकोस पंच रागनी नाम ॥ चोपाइ ॥

मालकोसहूकी यह बाला ॥ टोडी गोडी रूप रसाला ॥
फनि गुनकलि खंभायति नारी ॥ कुकुभ युक्त पांचों हि-
तकारी ॥ १८ ॥

अर्थ. मालकोश रागनी अति सुंदर रूपवाळी पांच स्त्रीओ आ प्रमाणेछे टोडी, गोडी, गुनकली, खंभाती, अने कुकुभ आ पांच रागणीओ मालकोश रागनी कल्याण कारी स्त्रीयोछे. ॥ १८ ॥

॥अथ मालकोसाद्य रागनी स्वरूप श्रृंगार भेद॥ छंद चामर॥

सेत बास धारितं सुरूप साम रंगहे ॥ सीप सून कंठ हार
बार जूथ संगहे ॥ शीश चूड पानमें छरी सु बास धारितं ॥
चातुरी बिलास मालकोस सो बिचारितं ॥ कंज नेन की
जितं कटाछ कुंजमें खरी ॥ सेत सारि साम कंचुकी सु बा-
नि माधुरी ॥ खोरहें कपूर बीन नाद एन रीझही ॥ काम
रंग अंग भीन टोडि रागनी कही ॥ कोकिला सु बा-
नि बाम साम अंगियां हिये ॥ पान नाद अंन मोर भौंन
तीरपें कीये ॥ सेत बास चंद्रिका उजास आस्य जानियें ॥

बागमें विराज बाल गोरिका बखानियें ॥ बासहे मलीन दीरघं उसास डारितं ॥ छीन अंग नेंन नीर आंगियां भिगारितं ॥ बार खोलि बैठितं कदंब शीश डारिहें ॥ एह-रीत जानियें गुनंकली सु नारिहें ॥ नेंन एनके समान कोकिला सु बानहें ॥ चातुरी भरी जु भेद भाषितं सु तांन-हे ॥ सोहितं कसूब बास हंसकी ग्रहें गती ॥ चंद्र आननं प्रकाश सोयहे खँभायती ॥ कंतके बिलाससें उजागरंग नेनमें ॥ तूट हार बार छूट तूतरंत बेनमें ॥ कंचुकी दरार खाइ बांहकी बलैं छनी ॥ एंड भार अंग मोरितं कुकुभ-रागनी ॥ १९ ॥

अर्थ. सपेत कपडां पेहेरेलांछे; घणो स्वरूपवान; जेना शरीरनो रंग श्यामछे; कंठमां मोतीना हार पेहेरेलाछे. अने नायकानुं टोळुं साथेछे; माथे मुगट अने हाथमां सुगंधी फूलनी गुंथेली छडी धरेलीछे; विलास करवामां घणोज चतुर एवो मालकोश राग कहेलोछे. कमळ जेवा नेत्र-थी कटाक्ष करती लता मंडपमां उभीछे; सपेत साडी ओढेलीछे अने काळा रंगनी कंचुकी पेहेरीछे; घणांज मधुर वचन बोलेछे; कपुरनो सुगंधी लेप अंगे लगावेलोछे अने वीणाना अवाजथी हरणोने रीझावेछे; अंगमां उपजेला कामना रंगथी भींजाएली टोडी नामनी रागणी कहीछे. जेनी कोयलना जेवी मधुर वाणीछे अने श्याम रंगनी कंचुकी उर उपर करेलीछे; हाथमां नाद नामनुं वाजित्र लीधेलुंछे अने आंबाना म्होरना झुमखा कान उपर लटकावेलाछे; सपेत वस्त्र पेहेरेलांछे; चंद्र कांतिना उजास जेवुं जेनुं म्होडुं झळकेछे; एवी बागमां वीराजेली बाळरूप गोडी नामनी रागणी वखाणीने कहीछे. जेणे मेलां वस्त्र पेहेर्यांछे लांबा अने उंडा

नीसासा नाखेछे; विरहनी आगथी जेनुं अंग घणुं दुबळुं थइगयुंछे; नेत्रमांथी झरेला आंसुनी धाराथी कंचुकी भींजावेलीछे अने वाळ छुटा राखीने वेठेलीछे; जेना उपर कदंब वृक्षनी डाळ झुकी रहीछे; एवी रीतथी गुनकली नामनी रागणी जाणवी जेनां नेत्र मृगनां जेवां अने कोयलना जेवी वाणीछे; चतुराइथी भरपूर जे भेद भरेलां मधुर तान बोलेछे अने अंगमां कसुंबी वस्त्र शोभेछे; हंसना जेवी चालवानी गतिछे अने पूरण चंद्रना जेवो जेना म्होढानो प्रकाशछे एवा लक्षणवाळी खंभाती नामनी रागणी छे. आखी रात पोताना स्वामीसाथे विलास करवाथी उजागरानो रंग जेनी आंखमां खीली रह्योछे, हार तुटी गयोछे, केश छूटा थइ गयाछे, वचन बोलतां तोतळायछे, हाथनी चुडीयो त्रटकी गइछे जेनी कंचुकी फाटी गइछे, ने आळसने लीधे एडी उपर भार दइने अंग मरोडेछे ते ककुभ नामनी रागणीछे. ॥ १९ ॥

अथ हिंडोर पंच रागनी नाम भेद ॥ चोपाइ ॥

रामकली देसाख सु बामा ॥ ललिता अरु बिलावली नामा ॥ पटमंजरी पंचमीं नारी ॥ ए हिंडोरकि आग्या कारी ॥ २० ॥

अर्थ. रामकली, देशाख, ललिता, बिलावली, पटमंजरी ए पांच रागणीओ हिंडोर रागनी आज्ञाकारी स्त्रीयोछे. ॥ २० ॥

॥ अथ हिंडोराद्य रागनी स्वरूप शृंगार भेद ॥

॥ छंद चर्च्चरी ॥

सीसपें मनि मुक्त सोहित पीत बास सु हावही ॥ अंग हेम अनंग उपमा मंद मंद सु गावही ॥ हाटकी हिंडोरना परि नारि देत सु झोलहें ॥ अंग अंग सिंगार साजित

राग यह हिंडोलहे ॥ नील अंग दुकूल दीपत पीत रं-ग सु अंगहें ॥ एनसार सु भाल चर्चित जटित भूषन नंगहें ॥ सामको मन मोहि लीजत हाव भाव सु गायकें ॥ रागनीं यह परखि लीजें रामकलिय बनायकें ॥ सूरती सु प्रचंड मोहन वीर रसमय बालिका ॥ साम चीर सनेह पतिसें हार हिय मनि मालिका ॥ आनितें पति जान न दहत मधुर बानीं मापहे ॥ अंग अंग अनंग प्र-चाटित रागनीं देसाखहे ॥ गौर अंग पुहूप गुननीं सज-त मोर सिंगारहे ॥ झीन वास दुसंक दामनि सुख सुधाकर मारहे ॥ कंज नेनन अंजि काजर अधुर बीर ब-खानियें ॥ हास युक्त बिलास हेरत ललित रागनि जानि-यें ॥ आप बन संकेत राजित राह देखत मितकी ॥ लाल चीर सु नील कंचुकि देह दामन कंतकी ॥ साज अंग सिंगार आभ्रन ध्यान वह लागी रहें ॥ मेन व्यापित अंग अकुलित बिलावल तासें कहें ॥ फूल माला सृगाजि उरमें बिरह व्यापित अंगमें ॥ प्री बिजोग बिहाल सेजन रेंन दिन यह रंगमें ॥ खान पानन बसन भूपन नां सुहावें सहचरी ॥ छीन होत छिनां छिनां प्रति रागनी पटमंजरी ॥ २१ ॥

अर्थ. जेना मस्तक उपर मणीथी जडेलो मुगट शोभेछे; पीळां वस्त्र पेरेलांछे; अंगनो सोना जेवो कांतिछे ने जेने कामदेवनी उपमा देवा-यछे; पोते पोते गायन करेछे; पोते सोनाना हींडोळा माथे बीराजेलोछे अने केनी मोझो प्रेमथी झुलावेछे ने जेणे अंगे अंगमां शणगार सजेलाछे

एवा लक्षणवाळो हिंडोल नामनो रागछे. जेणे लीला रंगनो पोषाक पेहेर्योछे; ने जेनुं सोना जेवुं पीळुं शरीरछे; कपाळमां कस्तुरीनुं तिलक करेलुंछे, अमुल्य नंगथी जडेलां घरेणां पेहेर्याछे; हाव भाव अने गायन करीने पोताना पतिना मनने मोह उपजावी हरी लेछे एवा लक्षणथी रामकली रागणी पुर्वक परखी लेवी. जेनी आकृती अति प्रचंड छतां घणी शोभेछे; वीर रसथी भरपूर बाळ स्वरूपेछे; श्याम रंगनुं चीर पेहेरेलुंछे; पोताना प्राणपतिनी साथे घणोज स्नेहछे; कंठमां मणी अने माणेकथी जडेला हार पेहेर्याछे; बीजी कोइ नायका पासे पोताना पतिने जवा देती नथी; मधुर वाणी बोलेछे; अंगे अंगमां कामनो रंग प्रगट देखायछे एवा लक्षणवाळी देशाख नामनी रागणी छे. जेनुं गोरुं अंगछे अने पोयणीना फूलनी माळा पेहेरेलीछे; सोळे शणगार सजेलाछे; पेहेरेलां झीणां बारीक वस्त्रनी अंदर जाणे विजळी चमकती होयने एवी दीसेछे; अमृतने धारण करनारा चंद्रना जेवुं जेनुं शोभीत मुखछे; कमळना सरखी नमणी आंख्योमां बारीक काजळ आंज्युंछे; जेना बींब (घोला) जेवा लाल होठ वखाणवा लायकछे; जरा हसिने विलासथी जुवेछे ए लक्षणथी ललित नामनी रागणी जाणवी. पोते वननी घाटी लतामां संकेत स्थळे रहीने पोताना प्रिय मित्रनो राह जोती बेठेलीछे; लाल चीर अने लीलारंगनी कंचुकी पेहेरेलीछे; जेना अंगनी कांति वीजळीना जेवी चमकतीछे; शरीरे शृंगारनी रीत प्रमाणे घरेणां पेहेरीने जे पोताना प्रिय पतीनाज ध्यानमां लागी रहेछे; काम व्यापवाथी जेनुं अंग अकळाइ गयुंछे तेने विळावळ नामनी रागणी कहेछे. जेणे हृदयमां करमाइ गयेली फूलनी माळा धारण करीछे; शरीरे विरह व्यापेलोछे; प्रिय मित्रना वियोगने लीधे पलंगमां बेहाल थइने पडी रहेछे; चेन पडतुं नथी अने रात दिवस वियोगना रंगमांज दिलगीर रहेछे; खावुं, पीवुं तथा लुगडां, घरेणां तेमज दासीओ पण गमती नथी;

क्षण क्षणमां अंगे दूबळी थती जायछे; एवा लक्षणवाळी पटमंजरी नामनी रागणीछे. ॥ २१ ॥

॥ अथ दीपक पंच रागनी नाम भेद ॥ चोपाई ॥

देसी ओर कमोद कहावें, नट केदार दार गुन गावें ॥
बहुरि कांनरा रूप विसाला, यहें पंच दीपककी बाला २२

अर्थ. देशी, कमोद, नट, केदार अने कानरा ए पांच रागणीयो दीपक रागनी स्त्रीओछे. ॥ २२ ॥

॥ अथ दीपकाद्य रागनी स्वरूप शृंगार भेद ॥

॥ छंद हारक ॥

सोहत गज पीठ परन आवत गन कामनी ॥ आरुन तन लाल बसन माल मुकतकी बनी ॥ बेस सुभग केस खुलित गावत सुभ बानियें ॥ कुंजन मधि गुंज मधुप दीपक यह जानियें ॥ नील बसन गौर सुतन सोवत पतिपें खरी ॥ आभ्रन तन पानि बिजन चाह रमनकी भरी ॥ रूप रसिक गावन पिक प्रीतम मन मोहनी ॥ जोवन मत रीझत चित देसि कहत रागनी ॥ कुंदन तन सारि अरुन सेत बरन कंचुकी ॥ कूजन पिक गुंजन मधु कुंजन बनमें झुकी ॥ काम दहत मिंत चहत शोच रहतहें घर्नी ॥ व्याकुल चित राह लखित कैयत सु कुमोदनीं ॥ प्रि मनहर चिंत चतुर केसर बर अंगहे ॥ हंस गमन भूपज तन चैल अरुन रंगहे ॥ पीठ तुरंग पानि धरत जूथ सखिनके लहें ॥ नाटिक गति साधित नित रागनि नट सो कहें ॥ गंग जटन कूह लटन

भेख सु मुनि धारितं ॥ रूप सुभग पंकज द्रग ऐ उपवित डारितं ॥ भूति चढित ग्यान गढित मंत्र पढित सारहें ॥ कानन मधि आनन शशि सोहित सु किदारहें ॥ शाम बरन रिष्ट करन सेत बसन सोहितं ॥ ईभ रदन वाम धरन अंबरमनि पूजितं ॥ खोर मलय भाल रचित माल सुमन केहरा ॥ आंगन मधि खरी लसित ललन हसित कांनरा ॥ २३ ॥

अर्थ. हाथीनी पीठ उपर बेठो शोभेछे; स्त्रीओना जुथ्थथी विंटाएलोछे जेनुं अंग रातुंछे ने लाल कपडां पेहेर्याछे; कंठमां मोतीनी माळा पेहेरीछे; सरस पोषाक पेहेरीने केश खुला राखेलाछे अने मधुर वाणीथी गायन करेछे ते जाणे कुंज मंडपमां भमरो गुंजारव करतो होयनै! एवा लक्षणवाळो दीपक राग जाणवो. लीलां वस्त्र पेहेरीने गोरा अंगवाळी सुतेला पतिनी आगळ उभेलीछे; अंगमां घरेणां पेहेर्याछे अने हाथमां वींझणो लीधेलोछे; पोताना प्रिय पति साथे रमण करवानी चाहनाथी भरपूरछे; रूपमां वखाणवा लायक, रसने जाणनारी, कोयलना जेवा मधुर अवाजथी गायन करनारी, पतिना मनने मोह उपजावनारी, जुवानीथी छकेली, प्रसन्न चित्तवाळी देशी नामनी रागणी कहीछे. जेनुं सोना सरखुं कान्तिवाळुं शरीरछे; लाल साडी अने सपेत कंचुकी पेहेरीछे; कोयलना सरखा मधुर अवाजथी भमरानी पेठे गुंजारव करती लता मंडपमां झुकी रहीछे; कामना तापथी मित्रने चाहती; घणी शोकातुर थएली व्याकुळ मनथी मित्रनी राह जुवेछे एवा लक्षणवाळी कुमोदनी नामनी रागणीछे. प्रियना मनने हरनारी, चित्तमां चतुर, जेनुं केसर जेवुं सरस अंगछे; जेनी हंसना जेवी चालवानी गतिछे; जातजातनां घरेणां अने लाल वस्त्र पेहेर्याछे; हाथीनी पीठ उपर हाथ धरेलोछे; सखीओनां टोळां

साथे लीधेलांछे; हमेशां नाटकनी विधाने साधेछे तेने नट नामनी रागणी कहेछे. जेणे जटामां गंगा धारण करीछे; अंग उपर वांकी लटो लटकी रहीछे; मुनीना जेवो वेष धर्योछे; सुंदर रूप अने कमळना जेवी आंख्योछे; सर्पनी जनोइ पेहेरीछे; अंगे विभूती लगावीछे; ज्ञानमां गर्क थइ सारा मंत्रोनो उच्चार करेछे; वनमां शोभती; चंद्र मुखी ते केदार नामनी रागणीछे. जेनो श्याम वर्णछे; हाथमां खड्ग धर्युंछे, पेहेरेलां सफेत वस्त्र शोभेछे; डावा हाथमां हाथीनो दात राखेलोछे अने सूर्यनारायणनी पूजा करेछे; कपाळमां मलयागिरी चंदननुं तिलक कर्युंछे; फूल तथा केवडानी माळा कंठमां पेहेरीछे; आंगणामां उभी रहीने शोभाने लीधे विलासथी धीमे धीमे हसेछे ते कानरा नामनी रागणीछे. ॥ २३ ॥

॥ अथ श्रीराग पंचरागनी भेद ॥ चोपाई ॥

मालसरी मारू शुभ नामा ॥ धन्यासरी वसंत सु बामा ॥
आसावरी युक्त यह जानी ॥ श्री रागके पंच मनमानी ॥ २४ ॥

अर्थ. मालसरी, मारु, धन्याश्री, वसंत आशावरी ए पांच रागणीओ श्री रागनी मन गमती स्त्रीयोछे. ॥ २४ ॥

॥ अथ श्रीरागाद्य पंचरागनी स्वरूप शृंगार भेद ॥

॥ छंद नाराच ॥

मनोजके समान रूप बीन लीन पानहें ॥ फटीक माल कंठ धार माधुरी सु बानहें ॥ सरोज एक पानमें सँगीत भेद गावहीं ॥ बिराजमान कुंज बीच श्रीय सो कहावहीं ॥ रसाल वृच्छ छाँहमें रहंत बैठ बालिका ॥ अनूप रूप पानिले धरंत पान आलिका ॥ अरून बास ओर पीत रंग

अंगिया रहें ॥ बिछोह कंतपें हसंत मालश्री वहें कहें ॥ बिराजितं सँकेत ठोर सारियं लसें जरी ॥ धरे प्रसून भूषनं अनंग रंगसें भरी ॥ सखी लखंत रीझ रीझ चुंबनं कियो चहें ॥ सु बास साजितं कितें सु मारु रागनी कहें ॥ बिजोग मिंत लीन छीन छीन अंग व्हेंगही ॥ उसास लेत आप अंसुआनकी धुनी बही ॥ बिराज मोरश्री तरें बिलास आसकी भरी ॥ न कोउ एक आपही उदानमें धनी सरी ॥ मधूप गुंज आसपास साम अंग सोहितं॥ मयूर पिच्छ अंब मोर पानि मिंत मोहितं ॥ बिलास हाव भावके हुलास चिंत चाहनीं ॥ सुपेत वास कासमीर खोरि सो वसंतनीं ॥ बिराज बाग बृच्छ छांह सामही सरीरहें ॥ लपेट अंग नागनी सुपेत रंग चीरहें ॥ प्रसून हार धारितं पटीर भालमें भरी॥ सुरंज कुंज आसपास रागनीं असावरी॥२५

अर्थ. कामदेवना सरखुं जेनुं रूपछे, ने एक हाथमां वीणा लीधेलीछे, स्फाटिक मणीनी माळा कंठमां पेहेरेलीछे, जेनी मधुर वाणीछे, एक हाथमां कमळनुं फूल राखीने संगीत शास्त्रना भेदथी गायन करेछे, एवो कुंज मंडपमां बीराजेलो श्रीराग कह्योछे. जे वाला आंबानी छायां तळे बेठी रहेछे, अनोपम रूपवाळी, जेणे सखीना हाथ उपर पोतानो हाथ लइने राख्योछे, रातां वस्त्र अने पीळा रंगनी कचुंकी पेहेरीछे, पतिनो वियोगछे तोपण हस्या करेछे तेने मालश्री नामनी रागणी कहेछे. जे संकेत स्थळे बेठेलीछे, ने जेने पेहेरेली रंगीन जरीनी साडी घणी ओपेछे, फूलनां घरेणां धारण कर्यांछे; कामना रंगमा भरपूर थएली-रीझी रीझीने सखीने जुवेछे अने चुंबन करवाने चाहेछे, ने जेणे केटलांएक रंग बे रंगी

कपडां सजेलांछे तेने मारु रागणी कहेछे. जे मित्रना वियोगने लीधे अंगे अती दूबळी थइ गइछे अने वळी मोटा नीसासा मुकेछे, तेने लीधे पोतानी आंखोमांथीतो आंसुनी नदी वहेछे, विलास करवानी आशाथी भरपूर थयेली मोरश्रीना झाड तळे वीराजेलीछे, जेमां कोइपण माणस नथी एवा वगीचामां एक पोते वेठेलीछे ते धन्याश्री नामनी रागणीछे. जेनी आसपास चोतरफ भमरा गुंजारव करेछे तेमज जेनुं श्याम अंग घणुंज शोभेछे; हाथमां मोरनां पींछां अने आंबाना मोरना गुच्छा धरेलाछे, पोताना प्रिय मित्रने मोह उपजावनारी, हाव भावना विलासनी गम्मतना हुलासने मनमां चाहाती, जेणे सपेत कपडां पेहेरेलांछे अने अंगे केसरना चंदननो लेप कर्योछे, एवी वंसतनी नामनी रागणी जाणवी. जे वगीचामां झाडनी छांया तळे वीराजेलीछे, ने जेनु श्याम शरीरछे तेमज अंगे नागणी लपेटीने सपेत रंगतुं चीर पेहेरेलुंछे, फूलना हार धारण कर्योछे, कपाळमां मळयागिरी चंदननी अर्चा करीछे, जेनी आसपास खीलेला कुंज मंडपना सुगंधी रजकणो वेहेकी रह्यांछे ते आशावरी नामनी रागणीछे. ॥ २४ ॥

अथ मेघ राग पंच रागनी नाम भेद ॥ चोपाई ॥

टंक मलार गूजरी नारी ॥ फुनि भूपाली अति हितकारी ॥
देसकार जुत पंच गनाई ॥ मेघ रागहूके मन भाई ॥२६ ॥

अर्थ. टंक, मलार, गुर्जरी, भूपाळी, अने देशकार ए पांच रागणी मेघ रागनी मन गमती स्त्रीओछे. ॥ २५ ॥

अथ मेघाद्य रागनी स्वरूप शृंगार भेद ॥ छंद मनहंस ॥

धरि छत्र राजत वीर मंडल साजहीं ॥ विपु पीत साम मुखारविंद विराजहीं ॥ सिर चूड पानि कृपान खोलतहीं रहें ॥ महा वीर बाहु वलिष्ट मेघ वहे कहें ॥ विछुरंत प्री-

तम अंग बिलखी बालहें ॥ रचि पोप सेज उसास लेत बिसालहें ॥ अनि बाल देखत नीठ बोल लहंतहें ॥ नव रंग धरित दुकूल टंक कहंतहें ॥ म्रग नेन कोकिल बेन गौर सु रंगहें ॥ भरि नेन बिलखित बाल बिछुरत संगहें ॥ तन छीन बास मलीन बीन सु धारहें ॥ निज मिंतकी करमाल सोय मलारहें ॥ दस दोय आभ्रन अंग सोर सिंगारहें ॥ तनु कंचुकी छबि पीत आरुन सारहें ॥ पर सेज बिलखित बाम छीन कटी खरी ॥ कर ताल गांन रसाल बाल सु गूजरी ॥ सित बास सेत सिंगार आनन चंदहें ॥ तनु गौर माधवि खोर उर आनंदहें ॥ निज मिंत कारन पानि पोपन मालिहें ॥ निरखंत राह सुनाह यह भूपालिहें ॥ तन हेम रंग रसाल मोतिन हारहें ॥ मुख चंदकी अनुहार चित सिंगारहें ॥ किय खोर चंदन भाल मंद सु हासनिं ॥ यह देसकार कहंत कंत बिलासनीं ॥ २७ ॥

अर्थ. जेने माथे धरेलुं छत्र शोभी रह्युछे अने जे शूरवीरोनी सभा भरीने तेमां बेठेलोछे, जेनुं पीळुं शरीर अने शाम मुखारविंद घणुंज शोभेछे, माथा उपर मुगट धारण कर्योछे अने हाथमां खुल्ली तरवार राखेलीछे, म्होटो शूरवीर, तेमज जेना हाथ जय मेळववामां वळीआछे तेने मेघ नामनो राग कहेछे. जे पोताना प्रिय पतीना वियोगने लीधे अंगमां दिलगीरीनां चिन्ह धारण करीने खेद पामेछे, पोयणीना फूलनी सज्या बीछावीने ते उपर लांबा अने उंडा नीसासा मुकेछे, बीजी सखीओने जोइने तेओने पासे बोलावीलेछे; अने जेणे नवरंग वस्त्र पेहेरेलांछे तेने टंक नामनी रागणी कहेछे. जेनी मृगना जेवी आंख्यो, कोयलना जेवुं

मधुर भाषण अने सुंदर गोरुं अंगछे; आंसुथी आंख्यो भरीने; जुदा पडी गयेला प्रिय पतिने लीधे दिलगीर थायछे; अंग घणुंज दुवळुं थइ गये-लुछे; ने जेणे मेलां कपडां पेहेरेलांछे, हाथमां वीणा धारण करेलीछे, ने पोताना मित्रना नामनी हाथमा माळा लेइने जपेछे, ते मलार नामनी रागणीछे. जेणे पोताना अंगमां वार आभर्ण तथा सोळ शणगार सजे-लाछे, उर उपर पीळा रंगनी कंचुकी कसीने लाल साडी पेहेरीछे, पात-ळी कम्मरवाळी जे स्त्री वियोगने लीधे पलंग उपर सुख न पडतां विलाप करी एकदंम उभीथइ हाथमां करताल लेइने मधुर अने रासिक गायन गा-यछे ते गुर्जरी नामनी रागणी केहेवायछे. जेणे सपेत कपडां तेमज मोती तथा सपेत मणीनां घरेणां पेहेरेलांछे, जेनुं चंद्रना जेवुं ऊजळुं म्होढुंछे, गौर अंगमां मधुमाधवीनो सुगंधी लेप लगाडीने मनमां आनंद पामी रहीछे, पोताना प्रिय मित्र वास्ते हाथमां फूलनी माळा लइने जे पतिनी राह जोया करेछे ते भूपाळी नामनी रागणीछे. जेणे सोना जेवा अंगमां अमूल्य मोतीनो हार पेहेरेलोछे, म्होढा रूपी चंद्रने शोभावे एटलांज घरेणां पेहेरेलांछे, कपाळमां चंदननुं तीलक करीने धीमे धीमे हसेछे, पोताना पतिने विलासथी खुशी उपजावेछे तेने देशकार नामनी रा-गणी कहेछे. ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

तीस रागनी राग षट ॥ गावत गुनी बनाय ॥
तब दस दोष बचावही ॥ सो अब कहें सुनाय ॥ २८ ॥

अर्थ. पूर्वरीते त्रीश रागणी अने छ रागने गुणवान लोको सा-री रीते गायछे ते वखत दश प्रकारना दोष न आवे एवीरीते जे बचाव करेछे ते दश दोष तथा तेनां लक्षण हवे अमे कहीए छीए. ॥ २७ ॥

॥ अथ दश दोषाभिधान ॥ छप्पय ॥

प्रथम काकसुर काल, तालहीनहु सुरभंगह ॥
भ्रू मुख ग्रीव डुलंत, ओर फुनि डोलत अंगह ॥
सुर भेद न जानंत, ओर सुर ग्रहत कपालहि ॥
समय बिना संगीत, राग उपजें न रसालहि ॥
दश दोष राग संगीत मत, गावत गुनीं बचावहीं ॥
श्रोता प्रबीन तब सुख लहें, मंगन मोज सु पावहीं ॥२१॥

अर्थ. पेहेलो काकस्वर एटले कागडाना जेवो स्वर काढवो, बीजो काळ, त्रीजो ताल हीन एटले ताल विना गावुं; चोथो स्वरभंग एटले गावामां साद तुटी जाय, पांचमो भवां मुख अने गळाने वेडोळ करी डोलाववां, छठो बधा अंगने डोलाव्या करवुं, सातमो सुरना भेद-ने न जाणवो, आठमो कपाळी राग पकडवो, नवमो वखत विना रागने गावो अने दशमो रस उपजे एवा रागनुं बराबर आलेप थाय नहीं एवीरीते संगीत शास्त्रना मतने जाणनार गुणी विद्वानो दश दोष बचावीने गायछे त्यारे हे? कळाप्रवीण, चतुर सांभळनाराने सुख उपजे अने गायन करनारा याचक पण मोजने पामेछे. ॥ २१ ॥

अथ संगीत शास्त्रे कालानुमान भेद ॥ छंद पद्धरी ॥

सुचि अग्र कमल दल बेध काल ॥ बरनंत ताय छिन बुधि बिसाल ॥ वसु छिन मिलंत इक लव वदंत ॥ लव अष्ट एक काष्टा कहंत ॥ काष्टा सु अष्ट एकहि निमेष ॥ आठहु निमेष इक कला लेख ॥ द्वै कला एक त्रुट्टी बखानि ॥ द्वै त्रुटिक एक अनु तास जानि ॥ अनु द्वै मिलंत द्रुत एक होय ॥ जुग द्रुत जुरंत लघु कहत सोय ॥ लघु द्वै मिलंत

गुरु कहें तास ॥ त्रै लघु पुलीत कीनो प्रकास ॥ लघु चत्र चत्रमुख कहत ताय ॥ संगीत काल वरनें बनाय ॥ ३० ॥

अर्थ. सोयना अग्रथी कमळनुं पांदडुं विंधतां जेटलो काळ थाय तेने बुद्धिवान विद्वानो क्षण कहेछे; एवा आठ क्षण मळवाथी जे बनेछे तेने लव कहेछे, आठ लवने एक काष्ठा कहेछे, आठ काष्ठा मळवाथी एक निमिप थायछे, आठ निमेपनी एक कळा थायछे, बे कळानी एक त्रुटी, बे त्रटीनुं एक अणुं, बे अणुं मळवाथी एक द्रुत थायछे, बे द्रुत मळेछे तेने एक लघु कहेछे, बे लघु मळेछे तेने एक गुरु कहेछे, त्रण लघु मळेछे त्यारे तेने एक प्लुत कहेछे अने चार लघु मळेछे तेने एक चतुर्मुख कहेछे एवी रीते संगीतनो काळ विस्तारथी वर्णवेलोछे. ॥ ३० ॥

अथ अनुभेदोत्पत्ति स्वामी कथ्यते ॥ छंद सिंह ॥

अनु उद्भव मारुत चंद्र पती ॥ द्रुत भो जल शंकरकी जु रती ॥ द्रुतही जु विराम वही सु गती ॥ प्रगटे घन मारुत कंद जती ॥ लघु पावकतें भये देवि कला ॥ लघुव्राम जलज्जि सु जीवबला ॥ गुरु अंबर व्है पति शेष तिनें ॥ प्लुत भोम हरी हर ब्रह्म गिनें ॥ मुख चत्र विधी भये स्वामिविधी ॥ यह भेद उचारतहें प्रसिधी ॥ ३१ ॥

अर्थ. अणुंनी पवनमांथी उत्पत्तीछे ने तेना स्वामी चंद्रछे; द्रुत जळथी थयेलछे अने तेना देवता शंकरछे, एवीजरीते द्रुत विराम मेघ मंडळना पवनथी उत्पन्न थयोछे अने तेना पति कार्तिक स्वामीछे, लघु अग्नीथी थयो अने तेना देवता देवीछे, लघुविराम जळथी थयो अने तेना देवता अग्नीछे, गुरु आकाशथी जन्मेलोछे अने तेना पति शेपनागछे, प्लुत जमीनमांथी थयेलोछे अने हरी हर ब्रह्मा ए त्रण देवो तेना स्वामीछे,

चतुर्मुख ब्रह्माथी थएलछे अने तेना स्वामी पण ब्रह्माजछे ए प्रमाणे भेदोनो विचार प्रसिद्ध कहेछे. ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

छिन सु आदि त्रुटि अंतलों, या मधि सुच्छम रूप ॥
ताको उचरन होत नाहिं, वातें रहे विलूप ॥ ३२ ॥

अर्थ. क्षणथी आरंभीने त्रुटीना अंत सुधी जे झीणुं रूप रहेलुंछे तेनो उच्चार थइ शकतो नथी तेथी ते वीलुप (गुप्त) रहेछे. ॥ ३२ ॥

अनू आदिदे रूप जो, ताकी होत उचार ॥
उनकी संज्ञाकों कहें ॥ जंतु शब्द विस्तार ॥ ३३ ॥

अर्थ. अणुआदिदेइने जेटलां रूपछे तेओना उच्चार थायछे पण ते उच्चार केना जेवाछे एटलुं समजवा वास्ते जे जे पक्षीओना जेवा तेओना उच्चारछे तेनी संज्ञा कहुंछुं. ॥ ३३ ॥

॥ अथ जंतु शब्द संज्ञा भेद ॥ छप्पय ॥

अनु तीतर उच्चार, चटक द्रुत बानीं जानो ॥
द्रुत बिराम बक शब्द, चक्रवाकह लघु ठानो ॥
लघु बिराम पिक बोल, गुरू बायस बानीं रुख ॥
कुर्कुट प्लुत कहंत, बचन केकी चन्द्रहमुख ॥
यह विधि उचार बरनें सकल, तिहि मिल ताल कहें गुनीं ॥
अनेक भेद तालन भये, सो प्रवीन ग्रंथन सुनीं ॥ ३४ ॥

अर्थ. अणुनो तेतरना जेवो उच्चारछे तेमज द्रुतनो चकलीना जेवी वाणीछे, द्रुत विरामनो बगलाना जेवो अवाजछे अने लघुनो चकवाना जेवो शब्दछे; लघुवीरामनो कोयलना जेवो बोलछे अने गुरुनी कागडाना जेवी लुखी वाणीछे, प्लुतनो उच्चार कुकडाना जे-

यो कह्योछे अने चतुर्मुखनो अवाज मोरना जेवोछे; एवीरीते सर्वना उ-च्चार वर्णवीने कह्याछे. तेओना उच्चार मळवाथी गुणवान विद्वानो तेने ताल कहेछे अने ते तालना अनेक भेद थयाछे ते हे? कळाप्रवीण, तमे संगीतना ग्रंथोमां सांभळ्या हशे. ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

अनु आदिक उच्चार गति ॥ आवृत ताल अनंत ॥
सोर मुख्य संगीतमें ॥ तिहि अभिधान कहंत ॥ ३५ ॥

अर्थ. अणु विगेरेना उच्चारनी गतिने वींटाइने अनेक ताल रह्याछे, परंतु संगीत शास्त्रमां जे सोळ ताल मुख्य कहेलाछे तेओनां नाम कहुंछुं. ३५

॥ अथ ताल कालाभिधान ॥ छप्पय ॥

एकताळ लघुशेप, जेतलज्ञह त्यौंरा कहि ॥
सूर साम अरु झंप; प्रीतमठ जयमंगल वहि ॥
ब्रह्म लच्छमीं भेद, कनकमेरु मिश्रहव्रत ॥
कुंभ सु रायभयंक्र, ओर पाताल कुंडलन ॥
यह सोर ताल आदिक कहे, गान नाद नाटिक सु गत ॥
बिश्राम तास चत्र काल कहें, समहि विषम आगत अतित

अर्थ. एकताल, लघुशेप, जेतलज्ञ, त्यौंरा, सूर, साम, झंप, प्रीतमठ, जयमंगल, ब्रह्म, लक्ष्मी, कनकमेरु, मिश्रहव्रत, कुंभ, रायभयंक्र, अने पातालकुंडल ए सोळ ताल मुख्य कह्याछे. गावुं, वजाववुं अने नाटकनी गतिमां विसामो लेवाना चार काळ कह्याछे ते आ प्रमाणे सम, विषम, आगम अने चोथो अतीत. ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

यह गायन संगीत गति, सूच्छम कही सुनाय ॥

तिहिं प्रबीन सनमान किय, भूषन बसन बनाय ॥ ३७ ॥

अर्थ. गायन करनारी कोकीला अने चातुकी नामनी नायकाओए संगीत शास्त्रनी गति बारीक भेदथी कही संभळावी, तेथी कळाप्रवीणे तेओनो घणो सत्कार करीने केटलांएक घरेणां तथा वस्त्र विगेरेनो पोषाक आप्यो. ॥ ३७ ॥

॥ गाहा ॥

गायन कला प्रबीनं ॥ चरचा राग रागनी भेदं ॥
ताल काल अनुमानं ॥ सत्र प्रबीन सागरो लहरं ॥ ३८ ॥

कळाप्रवीणनी पासे नायकाओए करेली चरचामां राग रागणीओना भेद तेमज तालना समय तथा तेओना अनुमान संबंधी प्रवीणसागरनी आ सत्तरमी लेहेर पुरी थइ. ॥ ३८ ॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथ कला प्रबीन गायन प्रसंगे संगीत भेदो नाम सप्तदशो लहरं ॥ १७ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां सप्तदश स्तरंगःसमाप्तः ॥ १६ ॥

॥ अथ अष्टादश तरंग शिखा बंध छंद झंपताळ ॥

गांन चर्चा थतां कारिका मंडले ॥ नृत्य भेदो कह्या नाम विद्या वले ॥
ताल मोहोरा मृदंगे गती जे गणे ॥ लेर अढारमी भेद तेनो भणे ॥ १८ ॥

अथ कला प्रबीन गायन चर्चा प्रसंग ॥ दोहा ॥

एक समें एकंत प्रति, बैठे कलाप्रबीन ॥
चिंत चढी सागर सुधी, कीने कवित नवीन ॥ १ ॥

अर्थ. एक समये एकांत स्थळे राजकुमारी कळाप्रवीन बेठां हतां ते वखते रससागर राजकुमारनी छबी पोताना चितमां चडी आवी तेथी तेणे नीचे प्रमाणे त्रण नवीन कवीत बनाव्यां. ॥ १ ॥

॥ अथ अलंकार जातिस्वभाव प्रवीनोक्त कवित्त यथा ॥

कटि फेंट छोरनमें, भ्रकुटी मरोरनमें, सीस पेंच तोरनमें, अति उरझायकें ॥ मंद मंद हांसनमें, बरुनी बिलासनमें, आनन उजासनमें, चकचोंध छायकें ॥ मोती मनि मालनमें, सोसनी दुसालनमें, चिकुटीके तालनमें, चेटक लगायकें ॥ प्रेम वान देगयो, न जानियें किते गयो, सु पंथी मन लेगयो, झरोंखे द्रग लायकें ॥ २ ॥

अर्थ. कडें बांधेला सोनेरी फेंटाना छेडाओमां, भ्रकुटीनी (भवांनी) टेडाइमां तेमज शीरपेच उपर लटकता तोरामां अतिशे रीझावीने, वळी धीमे धीमे हसवामां, पापणना विलासमां अने म्होढानी उजळी कांतिमां अंजावी देइने; मोतीना हार तथा मणीनी माळामां अने सोसनी रंगथी रंगेला दुशालामां अने चपटीना तालमां चेटक (जादु) लगाडीने प्रेमनुं बाण मारी गयो हुं जाणती नथी के ते क्यां गयो पण झरोखामां आंख्योथी नजर लगाडीने ते खुब सुरत पंथी म्हारुं मन हरी गयो. ॥ २ ॥

॥ अलंकार उपमा कवित्त ॥

सुगंध समीर जैसें, हंस वार छीर जैसें, भू जल मिहीर जैसें, मधूपी चढायकें ॥ पारद कुमारि जैसें, हरी स्वांत धार जैसें, अंम्र एनसार जैसें, धूम उरझायकें ॥ उक्ती एकदंत जैसें, शुद्ध बोध संत जैसें, मित बात मित जैसें,

सैनन जनायकें ॥ प्रेम बान देगयो, न जानियें किते गयो, सु पंथी मन लेगयो, झरोंखे द्रग लायकें ॥ ३ ॥

अर्थ. वायु जेम सुगंधीने, हंस जेम पाणीमांथी दुधने, सूर्य जेम पोतानां कीरणो पसारीने जमीनना पाणीने, कुंवारी स्त्री जेम (पारानी खाणमां नजर करीने) पाराने, बपैयो जेम स्वाति नक्षत्रना वर्शादनी धाराने, अमरनो धुप जेम पोताना धुंवाडामां घुंचवीने कस्तुरीने, गणपती जेम व्यासादि महा कवीओनी वाणीने, सत्पुरुषो जेम शुद्ध ज्ञानना उपदेशने, अने मित्र जेम सानमां जणावेली मित्रनी वातने लइले, तेम प्रेमनुं बाण मारी गयो हुं जाणती नथी के ते क्यां गयो पण झरुखामां आंख्यथी नजर लगाडीने ते खूबसुरत पंथी मारुं मन हरी गयो. ॥ ३ ॥

॥ अलंकार उपमा कवित्त ॥

अहि खगराज जैसें, चिरियां सु बाज जैसें, केहरी सु गाज जैसें, प्रांन निकसायकें ॥ जलचर झषाह जैसें, मीन मीनहाह जैसें, कीर पंखग्राह जैसें, फंद उरझायकें ॥ भागीरथ गंग जैसें, घंटिक कुरंग जैसें, कुहिया कुलंग जैसें, भूतल भ्रमायकें ॥ प्रेम बान देगयो न जानियें किते गयो सु पंथी मन लेगयो झरोंखे द्रग लायकें ॥ ४ ॥

अर्थ. गरुड जेम सर्पने, बाज जेम चकलीने, मेघनो गर्जना जेम केसरी सिंहना प्राणने काढी लेछे, मघरमच्छ जेम जळमां रेहेनारा प्राणीओने, मछीमार जेम माछलाने, पंखग्राह नामना शीकारने जाणनार शीकारी जेम पासमां फसावीने पोपटने, भगीरथराजा जेम गंगाने, घंटावळ नामना सीकारने जाणनार जेम हरणने, कुया (शीकारी पक्षी) जेम काकाकव्वाने जमीनना मेदानमां फेरवीने झडपथी लइलेछे, तेम-

ज प्रेमनुं बाण मारी गयो हुं जाणती नथी के ते क्यां गयो पण झरोखामां आंख्योथी नजर लगाडीने ते खुब सूरत पंथी मारुं मन हरी गयो. ॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रेम बीज परबीन उर, ढंपित त्रपा सु धूर ॥
जोबन घन बरसत फुहीं, उदये कवित अंकूर ॥ ५ ॥

अर्थ. आगळ रससागर राजकुमारनी छबी जोवाथी कळाप्रबीनना हृदयमां जे प्रेम रूपी बीज पड्युं हतुं ते लाज रूपी धूडमां ढंकाइ गएलुं हतुं तेनी उपर हवे जोबन रूपी वरसाद वरसवाथी ते बीजमांथी आ उपर कहेला त्रण कवीत रूपी कोंटा थया. ॥ ५ ॥

छिन बिसरत उर चढत छिन ॥ वह रससागर ध्यान ॥
एक समय आमंत्रि अलि ॥ कीनो कुमरि दिवांन ॥ ६ ॥

अर्थ. ते रससागर राजकुमारनुं ध्यान कलाप्रवीणने क्षणमात्रमां विसरी जायछे अने क्षणमात्रमां मनमां चडी आवेछे, तेथी एक वखते पोतानी प्यारी सखीओने बोलावीने सभा भरी. ॥ ६ ॥

अथ कलाप्रवीन कुमारिका मंडल बर्नन ॥ छंद पद्धरी ॥

दिस दिस दरीच सतखन दिवाल ॥ शारद उमंड मनु मेघ माल ॥ चांदनी चोक रचि चित्रकार ॥ श्रीखंड साख खोलित दुहार ॥ प्रति द्वार द्वार दरियच उसीर ॥ पट झींन झींन माधवी नीर ॥ सुखरा सु खंभ सोभा लसंत ॥ कंचन लिखाव कंगुरन कंत ॥ आंगन अनूप छवि फटिक बंध ॥ मारुत सु मंद सीतल सुगंध ॥ जरकस दिवाल गीरी झुकंत ॥ कुंदन सु पाट आसन उनंत ॥ विध विध विचि

त्र गेलम बिछाय ॥ उत बाल जूथ बैठें सु आय ॥ सिंहास- नं सु कुमरी प्रवीन ॥ सहचरी गिरद सामांन लींन ॥ कर कासमीर कुमकुम गुलाब ॥ अरगजा अंत्र मृगसार डा- ब ॥ किंहि कर कपूर चंदन बिजून ॥ माधवी कुंद चंपक प्रसून ॥ फलजाय जायपत्री सुजांन ॥ त्रिकुटी लवंग पूंगी सु पांन ॥ मनिजटित शीस परबीन छत्र ॥ जुग पा सवांन ठाढी सु तत्र ॥ कर चमर लीन सहिविध सयां- न ॥ बोलंत आस आशिषा बांन ॥ सब राय कुमरि कुल- बय समांन ॥ शुभ रूप बास भूषन बिधांन ॥ केसर कसूं- ब कौसेय चेल ॥ सित असित नील जरकसित बेल ॥ भू- षन सु नीक मानिक जरित्र ॥ पीरोज मर्क पंनें बिचित्र ॥ किय दीपदान हिलबी हजार ॥ प्रति द्वार द्वार किंगुर किनार ॥ राजंत राज मंडल कुमार ॥ उपमा सुरी सु सुर पति अगार ॥ चंचला कुंड मंडलीय चंद ॥ चांदनी चक्र मोहनीय फंद ॥ ललना विचित्र आभा लसंत ॥ कैलास कुंज फूलित बसंत ॥ गायका उभैं साधंत गान ॥ नायका नाटकी भेद आन ॥ ७ ॥

अर्थ. दिशाए दिशाए चोक अने सैंकडो खंडवाळा मेहेलनी दिवाली उभीछे ते जाणे शरद रुतुना मेघनी सफेत घटाओ चडी होयनें? एवी दिसेछे; चारे तरफ चोकमां जात जातना चित्रो वाळी चांदनी बांधे- लीछे, मळयागीरी चंदनना शाखवाळां बार खुल्लां मेलेलांछे, बारणे बार- णे सुगंधी वाळानी त्रटीओ बांधेलीछे, ने तेना उपर मधुमाधवीना सुगंधी पाणीथी भींजावेला बारीक कपडां राखेलांछे, सुखडना थांभला शोभी

रह्याछे, तेमां वारीक कोतरणीथी कोतरेला कोंगरानो देखाव सोनानी कांति जेवो जणायछे, स्फाटिक मणीथी बांधेला आंगणानी शोभा तो घणीज अनुपमछे, जेनी अंदर मंद शीतळ अने सुगंधी पवन वायछे, चकचकीत दीवालो जरीना पर्वतनी माफक झुकी रहीछे, ते चोकनी अंदर सुवर्ण जडीत्र तख्त तथा उंचा सिंहासनो गोठवेलांछे, अने नीचे जात जातना रंग बेरंगी गलीचा बीछावेलाछे, ते स्थळे राजकुंवरीयोनां जुथ्थ आवीने बेठां अने सिंहासन उपर राजकुवरी कळाप्रवीण आवी बीराज्यां, त्यारे दासीओ जात जातनी सामग्री लइने कळाप्रवीणने फरती उभी रही. कोइए हाथमां केसर, कंकु अने गुलावजळनां वासण लीधांछे; कोइए अरगजा, अत्तर अने कस्तुरीना डावला लीधेलाछे; कोइए कपूर, चंदननां पात्र अने वींझणा लीधेलाछे; कोइए मधुमाधवी, डोलर अने चंपाना फूल लीधेलांछे; कोइए जायफळ, जावंत्री, एलची, लवींग, सोपारी अने पानबीडानो अडाळीओ हाथमां राखीछे; ते वखते मणीथी जडेलुं छत्र राजकुमारी कळाप्रवीणने माथे धरेलुंछे, पासे रहेवावाळी बे दासीओ हाथमां चम्मर लइने प्रवीणने पवन नाखेछे अने म्होढेथी खमां खमां एवी आशीशनी वाणी बोलेछे, सघळी राजकुमारीओ कुळ अने उम्मरमां सरखी छे, सुंदर स्वरूपने शोभावे एवां वस्त्र तथा घरेणां पेहेर्यांछे; केसरी, कसुंबी, रेशमी, धोळां, काळां, लीलां, जरीनां अने वेल बुंटाथी भरेलां कपडां पेहेर्यांछे; अमुल्य माणेक अने पीरोजा रंगना मणी तथा मर्कत अने पानाथी जडेलां जात जातनां घरेणां पेहेरेलांछे; ते स्थळे हजारो हांडीओ, गलास अने चीमनीओ प्रगटीने बारणे बारणे तथा कोंगराना कीनारा उपर राखेलीछे; आ दीवाओना प्रकाशमां राजकुमारीनुं मंडळ एवुं शोभेछे के जाणे इंद्रना भुवनमां देवांगनाओ बेठेली होय एवी उपमाने धरेछे; अथवा ते जाणे बिजळीओनुं कुंडाळुं कींवा चंद्रनुं मंडळ होयनै? वळी चांदनी चोकमां चक्राकृतिए बेठेलुं मंडल जाणे जगतने मोह उपजाव-

वासारु पाशलो रच्यो होयने? एवी रीते कुंवारीकाओ विचित्र प्रकारनी कांतिथी शोभेछे; सभानो देखाव एवो जणायछे के जाणे कैलासनो बगीचो वसंतऋतुना योगथी खीली रह्यो होयने? आवा आनंदना वखतमां कोकीला अने चातुकी ए बन्ने नायकाओ नायका भेद तथा नाटकना भेदोने जणावीने गायन करेछे. ॥ ७ ॥

॥ छप्पय ॥

राज सुता आवर्त्त, कला परबीन बिराजे ॥
नृत्य भेद नाटकी, बीन मरदंग सु बाजे ॥
छये रंग रति पुंज, मधुप गुंजत सुबास बस ॥
हिलव कुंभ भरि पात्र, सबै अचवत आसव रस ॥
हुल्लास कला परबीन हुअ, नेह नवल हिय लाय हित ॥
गायन बुलाय लीने निकट, शिष्य भेद भंषे कवित ॥ ८ ॥

अर्थ. राजकुंवरीओनां मंडळथी विंटाएलां कलाप्रवीण बीराजेलांछे अने तेनी पासे नाटकना भेदथी नाच गायन थायछे, वीणा अने मृदंग विगेरे वाजित्र वागेछे, तेथी आनंदना समुदायनो रंग छवराइ रह्योछे, भभकता अत्तर तथा गुलाबजळना सुगंधमां मोह पामेला भमरा गुंजारव करी रह्याछे, आवा वखतमां बिलोरी काचना सीसामांथी प्याला भरीने सघळी राजकुमारीओ मदिरा पीयेछे, ए समये रससागर राजकुमारनी साथे जोडाएला नवा स्नेहने मनमां लावीने अति हुलास पामेली कळाप्रवीणे हेतथी कोकीला अने चातुकी ए बन्ने नायकाओने पोता पासे बोलावीने गुरु जेम शिष्यने शीखवे एवा भेदथी आगळ बनावेलां त्रण कवित कह्यां. ॥ ८ ॥

॥ चोपाइ ॥

कलाप्रबीन कवित्त सिखाये ॥ गायन राग रूप ग्रहि गा-

ये ॥ फेर प्रवीनकला यह सूझी ॥ गायन बोलि प्रश्न यह बूझी ॥ कित महोर मरदंग सु बज्जें ॥ जापरि नृत्य नाटिका सज्जें ॥ जो नायका नृत्य गति लावें ॥ कौन भेद अभिधांन कहावें ॥ ९ ॥

अर्थ, कळाप्रवीणे शीखवेला कवीतने नायकाओए रागना रूपमां लावीने गायां. फरीने कळाप्रवीणने आ भेद पूछवानी वात सुझी एटले नायकाओने बोलावी आ प्रमाणे सवाल पूछ्यो, केटला म्होरोथी मृदंग वागेछे के जेना आधारे नाटक करनारा नाच करेछे! तेमज नायकाओ पण नाचवानी गतियो जे लावेछे तेना केटला भेद अने केटलां नाम कहेवायछे!(ते कहो.) ॥ ९ ॥

अथ गायनोक्त मृदंग मोहोर भेद ॥ दोहा ॥

गज संजम हनमंत अरु ॥ चत्र मलार जुत जांन ॥
अठ द्वादश अठ अठ उकति ॥ बाजत महोर भिधांन॥१०॥

अर्थ. गज, संजम, हनुमंत अने चत्रमलार समेत मुख्य चार भेदछे; गजना आठ, संजमना बार, हनुमंतना आठ अने चत्रमलारना पण आठ मोहोरा; एवा नामथी मृदंग वागेछे. ॥ १० ॥

अथ नृत्य भेदा भिधान ॥ छप्पय ॥

आघदसरा कबाट, गतागत भेद सु जानें ॥
सर्वतोसुमुख जमक, ओर अमृत गति आनें ॥
सिंहाविलोकन पर्न, भेद नव समह दून भनि ॥
तान मांन द्वै भेद, खंड नव भेद ओर गनि॥
गति भेद जुक्त चत्रदश भये, नाटिक लावत नृत्यहें ॥
परबीन भेद ओरें प्रथक, तुम जानत कहा हम कहें॥११॥

अर्थ. आद्यक्षरा, कवाट, गतागत, सर्वतोमुख, जमक, अमृतगति, सिंहाविलोकन, पर्न, नवसमह, दून, तान, मान, पंडनव अने गतिभेद सहित चउद थया, ए चउदे भेदने नाटक करवावाळां नाचमां लावेछे, हे! कळाप्रवीण, बीजा पण जुदा जुदा भेदोछे ते सघळाने तमे जाणोछो माटे अमे शुं कहीए! ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

बूझे कला प्रवीनजू, कहे सु गायन लच्छ ॥
नाटिकसाला नृत्य माहि, किये भेद परतच्छ ॥ १२ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणे जे पुछ्युं ते नायकाओए लक्षणनी साथे कही देखाड्युं, वळी नाटकनी रमत करीने तेना नाचमां उपर कहेला भेद प्रत्यक्ष करी बताव्या. ॥ १२ ॥

वह समयो बीतो सुभग, नाटिक करत विहांन ॥
उठि कुमारि निज ग्रह गई, दिये रिझवत दांन ॥ १३ ॥

अर्थ. एवी रीते नाटकनी गम्मत करतां ते आनंदनो वखत वीती गयो एटले खुशी मुजब इनाम आपीने कचेरी बरखास्त थतां राजकुमारी पोताना मेहेलमां गयां. ॥ १३ ॥

गायन कला प्रवीनजू, इहि विध करत हुलास ॥
हय फंदन भूषन बकसि ॥ बिदा कीय षट मास ॥ १४ ॥

अर्थ. नायकाओ अने कळाप्रवीण एवी रीते दीवसे दीवसे आनंद विलास करेछे, एम करतां छमास वीती गया एटले नायकाओने घोडा, रथ, अने जात जातनां घरेणां विगेरेनुं इनाम बकसीने विदागीरी आपी. ॥ १४ ॥

॥ गाहा ॥

मंडलि कला प्रवीने ॥ नाटिक भेद मुरज गति मोहोरा ॥

अष्टादश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ १५ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणनी सभानुं वर्णन नाटकना भेद तथा मृदंगना मोहोरानी चर्चा संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी अढारमी लेहेर पुर्ण थइ.१४

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे कला प्रवीन राज मंडल नाटिक मुरज भेदो नाम अष्टा दशो लहरं ॥ १८ ॥ ॥ श्री ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री वावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रवोधिनी टीकायां सप्तदश स्तरंगःसमाप्तः ॥ १८ ॥

अथ टीका कारोक्त ॥ चोपाइ ॥

वेदया नेहनगरमां जई ॥ राज म्हेलमां दाखल थई ॥
सागर साथे चर्चा करी ॥ लेर ओगणिश कहे विस्तरी ॥

अथ गायन नेहनग्रागत प्रसंगोयथा ॥ ॥ दोहा ॥

कलाप्रवीन इनांम दिय, गायज बीदा कीन ॥
सोय चली सोराठ धर, नेहनग्र पथ लीन॥ १ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणे इनाम आपीने नायकाओने विदाय करी एटले ते वधे नायकाओ सोरठ देशनी प्रथ्वीमां सेहेलानी करवासारु नेहनग्रने रस्ते चाली. ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

चलत धोस दस वीस, नेहनग्रह पुर पुग्गिय ॥
अदा सोध एकंत, ठोर तिहि अवमोचन किय ॥
नांम धांम निरधार, कारवारी सु कहायो ॥
खांन पांन मामांन, राजद्वारहुसें आयो ॥

प्रविसंत राज संध्या समय, गांन करत संगीत गत ॥
रीझे सु राग चंद्रहकला, गायन कीन विलंब तित ॥ २ ॥

अर्थ. दशवीश दीवस चालतां थया एटले नेहनग्र नामना शेहेरमां आवी पोहोची, अने एकांत स्थळे एक मेडी शोधीने त्यांहां आवी उतारो कर्यो, पोतानुं नाम, देश, अने कसब विगेरे हकीकत त्यांना कारभारीने केहेवरावी तेथी खावा पीवानी सघळी सामग्री राजदरबारमांथी आवी, तेनो उपभोग करीने सांजनी वखते वाजां लइ राजद्वारमां प्रवेश कर्यो अने जनानखानामां जइ संगीत शास्त्रनी रीत प्रमाणे गायन कर्युं, तेओना रागथी महाराणी चंद्रकळा खुशी थयां अने तेओने नेहनगरमां रोकावानुं फरमाव्युं. ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

राज बधू रीझें सकल, गायन गांन सु तांन ॥
चंद्रकला सु सराह किय, सुनी सु सागर कांन ॥ ३ ॥

अर्थ. नायकाओए तान गायां तेथी सघळी राणीओ खुशी थइ एटलुंज नहीं पण चंद्रकळाए तेनां जे वखाण कर्यां ते रससागरे काने सांभळ्यां. ॥ ३ ॥

॥ छप्पय ॥

रितु वसंत मधु मास, चंद्र पूरन परकासित ॥
सोध भोमि तीसरी, कीन चांदनी बिछाइत ॥
रससागर शशिकला, सकल आभूपन साजें ॥
कादंबरि अचवंत, बडे उच्छाह बिराजें ॥
दस बीस पासवान सु प्रथक, निजखेग ठाढी रही ॥
महराज चिंत गायन चढी, उन प्रति पठवनकी कही ४ ॥

अर्थ. वसंतऋतुमां चैत्र मासना शुक्लपक्षनी रात्रीए पूर्ण चंद्रनो प्रकाश थवाथी मेहेलनी त्रिजी भोयें वीछाना वीछाव्यां, त्यांहां महाराजा रससागर तथा चंद्रकळा अलंकार पेहेरी मद्यनुं पान करीने मोटा आनंदथी वीराज्यां; त्यारे पासे रहेवावाळी दशवीश दासीओ नजर वेग जरा छेटे उभी रही, ते वखते महाराजाना चित्तमां नायकाओ चडी आवी तेथी ते बन्ने नायकाओने पोतानी पासे बोलावी लाववानो हुकम दासीयोने फरमाव्यो. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

लहि आयस चेरी चली, आई गायन थान ॥
कही कोकिला चातुकी, ईश बुलावन बान ॥ ५ ॥

अर्थ. महाराजानी आज्ञा लइने एक दासी चाली नीकळी ते नायकाओने उतारे आवी कोकिला तथा चातुकी बन्नेने " महाराजाए बोलाव्यां छे " एवी वाणी कही. ॥ ५ ॥

हुकुम पाय गायन उभैं ॥ चली सु चेरी संग ॥
उनकी उभैं सु किंकरी ॥ लीनें बीन म्रदंग ॥ ६ ॥

अर्थ. आवो महाराजानो हुकम सांभळीने बन्ने नायकाओ ते दासीनी साथे चाली नीकळी तेओनी बे दासीओए पण विणा अने मृदंग लइने साथे गमन कर्युं. ॥ ६ ॥

॥ छंद पद्धरी ॥

गायका आइ महराज धांम ॥ तीसरी भूमि लीनी सलाँम ॥ बैठी सु राज सासना लीन ॥ सुरतार कीन मरदंग बीन ॥ संगीत रीत समये प्रमांन ॥ रागनी राग गाये सुतांन ॥ महराज कीन आयसा राग ॥ बोलो वसंत जंगल बिहा-

ग ॥ कानरा शुद्ध गाओ सु फेर ॥ कहि पासवांन गायका टेर ॥ वह घरी एह समयो व्रतंत ॥ तरु तरु भये सु थिर जीव जंत ॥ आयो सु चंद आधे अकास ॥ चांदनी जोति चहुंदिश प्रकास ॥ दूसरे प्रहर घरीयार बग्ग ॥ तीसरे जांम पहिरात जग्ग ॥ निसिचर परंद साधंत सोर ॥ विधु बिंब हेर उलटे चकोर ॥ मधु मुरझि कंज कुमुदनि विकास ॥ सीतल समीर मिलयत सु बास ॥ नभ सौध सटा उज्वल लखंत ॥ घनसार सघन मानहु व्रपंत ॥ श्रीखंड किधौं पैं दधि फुंहार ॥ कैलास श्रृंग गंगा सु धार ॥ महराज मुदित मद मद्यपांन ॥ समयो पिछाँन गायन सयाँन ॥ बाजित चढाय नृप करि सलांम ॥ सातमें सुरह तीसरे ग्रांम ॥ आलाप बीन मरदंग गाज ॥ अच्छर उचार सुरपति समाज ॥ आयस प्रमांन रागनी गाय ॥ महराज कुमर लीनें रिझाय ॥ ७ ॥

अर्थ. नायकाओ! माहाराजाने मेहेले आवीओ अने त्रीजो भॉये चडीने तेओथे सलाम लीधी; तेमज महाराजानी आज्ञा लइने तेओ वेठी, पछी वीणा अने मरदंगनो सूर मेळवीने संगीत शास्त्रनी रीती प्रमाणे वखत जोइने राग रागणीमां तान गाइ संभळाव्यां; ते सांभळीने महाराजाए आ प्रमाणे राग गावानो हुकम फरमाव्यो, वसंत, जंगलो अने वीहागराग बोलो? पछी शुद्ध कानरो गाओ? एम दासी मारफत केहेवराव्युं, ते वखते एवो समय हतो के स्थावर जंगमनां प्राणीमात्र स्थीर थइ गयां हतां, तेमज झाडे झाडे पक्षीओ गुपचुप थइ बेठेलां हतां, चंद्र पण आकाशनी वच्चे आवी पोहोच्यो हतो, तेथी चोतरफ चंद्रकांतिनो प्रकाश

थइ गयो हतो, एटलामां बीजा पोहोरनी घडीयाळ वागी एटले त्रीजा पोहोरनो पेहेरो करनार पेहेरेगिर जागी उठ्यो, रात्रीमां फरनारां पक्षी विगेरे सोरासोर करवा लाग्यां; प्रकाशीत चंद्रबींबने जोइने उलटथी चकोर पक्षी उडवा लाग्यां, मोगरा, अने सूर्य विकाशी कमळ करमाइ गयां अने चंद्रविकाशी कमळ तथा पोयणा विगेरे फूल खीलीं आव्यां सुगंधनी साथ मळीने थंडो पवन वावा लाग्यो; आकाशना अंजवाळाथी शोभीता राजमेहेलोनो समुदाय घणो उजळो देखावा लाग्यो ते जाणे मेघ पोताना मंडळमांथी कपूरनो वरसाद वर्शावतो होयनै? अथवा चंदनना पर्वत होयनै? अथवा क्षीर समुद्रना फूवारा उछळता होयनै? अथवा कैलासना शीखरमांथी गंगानी धारा पडती होयनै? एम दीसवा लाग्युं, आवा वखतमां महाराजा मद्यपानना केफथी अतिआनंद पाम्या, एटले शाहाणी गानारीओए वखत वर्तीने वाजित्र चढावी सुर मेळवीने महाराजाने सलाम करी, पछी सातमा सुरने त्रीजा ग्राममां आलापीने वीणा तथा मृदंग, वजाव्यां. ते जाणे इंद्रनी सभामां अप्सराओ गाती होयनै! एवीरीते महाराजाना हुकम मुजब रागणीओ गाइने ते रससागर राजकुमारने रीझावी लीधा. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

गायो कवित बसंतमें, विष्नु पद सु विहाग ॥
गायन निज बानी सु माहिं, गायो जंगल राग ॥ ८ ॥

अर्थ. नायकाओए पेहेलुं कवित वसंत रागमां गाइने पछी विष्नुपदनो विहाग राग गायो अने छेवट पोतानी पंजावी भापामां जंगला नामनो राग गाइ बताव्यो. ॥ ८ ॥

अथ वह गायनोक्त शब्दोदाहरनं ॥ अलंकार सम रूपक

॥ कवित्त ॥

तरु नवपल्लवके, कलम कलीन करि, लेखक अनंग गति,

मधुकर साजकी ॥ माधवी प्रसून मोर, किंशुकन सही कीनी, रज मकरंद दीनीं, सुकन समाजकी ॥ कोकिला सु कीर मोर, बाचंत बर्न भेद, मिलहु मिलहु जन, बिरही अवाजकी ॥ चलीयें प्रवीन पोन, त्रिविध बराती लायो, बाती सुनियें जु आई, पाती रितुराजकी ॥ ९ ॥

अर्थ. झाडनां नवां पातरां रूपी कागळमां कमळनी कळी रूप कलम करीने लखनार कामदेवे मधुमाधवीनां फूल तथा आंबानो मोर अने केसुडा रूपी साही करीने भमराना जथ्था रूपी अक्षरो लख्या, सुगंधी फूलना तंतु वच्चे ऊडता रजकणोना समुदाय रूपी रज लइने तेना उपर नाखी, आ कागळ संबधी अक्षरना भेदने कोयल, पोपट अने मोर " हे? वियोगी लोको, मलो मलो (भेळांथाओ भेळां थाओ ,,) एवा अवाजथी वांची बतावेछे, हे? चतुर लोको जोवा चालो, आ मंद सुगंध अने शीतळ एवा त्रण प्रकारनो पवन रूपी जानैयो रतुना राजा वसंतनी लग्नपत्रीका लाव्योछे तेनी वातने सांभळो. ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सुरभी चारत बन सुन्यो ॥ नारायन मुख नाम
सो बसुरीसें बावरो ॥ कीनो गोकुल गाम ॥ १० ॥

अर्थ. वनमां गायो चारता नारायणना मुखथी जे नाम वंसरीमां सांभळ्युं ते वंसरीथी आखुं गोकुळ गाम दीवानुं बनी गयुं. ॥ १० ॥

अथ बिहागोक्त विष्नु पद ॥ अलंकार विनोक्ती ॥

काना तेरी कछुयक मुरलीमें कारन ॥ ब्रंद्रावनमें मधुर बजाई शरद चंद उजियारन ॥ श्रवन सुनत बिनता सुधि भूली द्रग भरि आये वारन ॥ व्रज सिंगरोई भयोहे वा-

वरो धुनिमें लगीहे धारन ॥ सागर एह सनेह भरीहें राधे राधे उचारन ॥ ११ ॥

अर्थ. हे? काना, तारी मोरलीमां कांइक कारण एटले जादु रहेलोछे, जे मोरली वृंदावनमां शरद ऋतुना प्रकाशीत चंद्रना अंजवाळामां वजावी ते काने सांभळतांज व्रजनी स्त्रीओ शुध भुली गयुं अने तेओनी आंख्योमां आंसु भराइ आव्यां एटलुंज नहीं पण आखुं व्रज दीवानुं थइ गयुं, सौहुनी धारणा ते मोरलीना अवाजमां बंधाइ गइ, स्नेहथी भरपूर मोरलीए हे? राधा, हे? राधा, एवा नामनो उच्चार कर्यो माटे हे? सागर राधानुं नाम बोलवाथीज ते मोरली स्नेहवाळीछे एम समजवुं. ॥ ११ ॥

॥ जंगलोक्त पंजावी ख्याल यथा ॥

वो मितनूं वोहोराइ अँखीयां ॥ दरसदा दारू प्याला पाया तादिनसें तलखीयां ॥ पल बिछुरनसें कल न परतहे श्रावन धार वरषीयां ॥ निसदिन डोलतहें जु दिवानी नेहदा जादू नखीयां ॥ सागर एह सजन विन देखें जनम जनमदी दुखीयां ॥ १२ ॥

अर्थ. ते मित्र म्हारी आंख्योने छकावी मुकी, देदार रूपी दारुनो प्यालो पायो ते दीवसथी तलख्या करेछे वियोगने लीधे क्षणमात्र पण चेन पडतुं नथी अने श्रावण मासना वर्शादनी पेठे (आंख्यो) आंसुनी धारा वर्षेछे; स्नेह रूपी जादु नाख्यो त्यारथी रातदिवस दीवानी माफक फर्या करेछे, वास्ते हे? सागर सज्जनने देख्या वगर ते आंख्यो जनमो जनमनी दुखणीछे. ॥ १२ ॥

॥ चोपाइ ॥

गायन तीन भेद यह गाये ॥ महाराज रीझे मन पाये ॥

कळाप्रवीन कवित जो कीनें ॥ शुद्ध कानरामें वह लीनें १३

अर्थ. नायकाओए आ त्रण भेद गायनमां गाया, तेथी महाराजा खुशी थया एटलुंज नहीं पण ते भेद तेना मनमां गमी गया; (आवो वखत मनमां विचारीने) कळाप्रवीणे जे कवित बनाव्यां हतां ते कवित, शुद्ध कानरा रागमां लेइने गावा माड्यां. ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

रससागर सुनियत कवित; संमृति भई पुरांन ॥
मनछापुरी गलीन मधि, वहैं झरोखा ध्यान ॥ १४ ॥

अर्थ. महाराजा रससागरने आ कवित्त सांभळतां वेतज जूनी वातनी स्मृति थइ अने मनंछापुरीनी राजगलीमां आगळ जोयेला झरोखानुं ध्यान लागी गयुं. ॥ १४ ॥

सागर सहचरिसें कही, गायन बूझो जाय ॥
यहें कवित को ग्रंथके, किहि बानी कहँ पाय ॥ १५ ॥

अर्थ. सागरे दासीने कह्युं जे तमे जइने नायकाओने पुछो जे आ कवित कया ग्रंथनांछे? कोणे रचेलांछे? अने तमने क्यांथी मळ्यां छे? ॥ १५ ॥

॥ छंद उधोर ॥

चेरी चली आयस पाय ॥ बूझी गायकाप्रति जाय ॥ गायनकों भयो उछाह ॥ चरचा चिंत बाढी चाह ॥ भ्रत्या प्रत्य भंखी भास ॥ श्रीमुख नीठ आवन आस ॥ जो महराज बूझें बात ॥ बरनीं दूरसें नहि जात ॥ सासन नीठकी हम पाय ॥ दीजें बात भेद बताय ॥ किंकरि बूझि सागर फेर ॥ लीनी नीठ गायन टेर ॥ ठाढी बंदि करपुट

कींन ॥ वेंठन राज सासन दींन ॥ श्रीमुख कही गायन प्रत्त ॥ भंखो कोंन भेद कवित्त ॥ १६ ॥

अर्थ. महाराजानी आज्ञा लेइने दासीए जइने नायकाओने पुछ्युं तेथी नायकाओने घणो आनंद थयो अने ए वातनी चरचा करवानी तेना मनमां चाहना वधी, तेथी दासीने एवुं कह्युं जे अमारे हजूरनी, पासे आववानी उमेदछे अने जे महाराजा पूछावेछे ते आम छेटेथी (बीजानी पासे) केहेवाय एम नथी, जो हजुरनी पासे आववानी अमने रजा मळे तो ते वातनो भेद बतावी दइए; पछी दासी पाछी जइ महाराजाने पुछी रजा लेइने तेनी हजुरमां नायकाओने लेइ गइ; त्यारे नायकाओ वंदगी करी हाथ जोडीने उभी रहीओ; एटले महाराजाए बेसवानी आज्ञा आपी, पछी श्रीमुखथी नायकाओने कह्युं के आ कवीतनो शोभेदछे ते कहो. ॥ १६ ॥

अथ गायनोक्त ॥ छप्पय ॥

हम लहोर महि रहत, चाह चल्लिय देशाटन ॥
आइ मनंछापुरी, नीतपालह नरिंद जिन ॥
तास सुता सु किसोर, कलापरबीन नाम जिहि ॥
हम अनुकंपा कीन, मास पट किय बिलंब तिहि ॥
चातुरी भेद जाने सकल, रूप राशि उतही रहें ॥
महराज आप बूझे कवित, उन सिखाय उनही कहें ॥ १७

अर्थ. अमे लाहोरमां रहीएछीए, त्यांहांथी देशाटन करवानी इच्छाए नीकळ्यां छीइए, फरते फरते ज्यांहां नीतिपाळ राजा राज्य करेछे एवो मनंछापुर नामनी राजधानीमां आव्यां, ते राजानी राजकन्या घणी सुन्दर अने कीशोर अवस्थानीछे अने जेनुं कळाप्रवीण एवुं नामछे, तेणे अमारा उपर मेहेरवानी करी छ महीना सुधी त्यांहां राख्यां,

ते राजकन्या चतुराइना सघळा भेद जाणेछे, एटलुंज नहीं पण जथ्थांवंध सघळु रूप तेमांज रह्युछे, हे? माहाराज आपें जे कवीत पूछ्यां ते, अमने एणे शीखव्यां तथा एणेज वनाव्यांछे. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

सागर यह वानीं सुनत, संमृति लगि सु हेर ॥
उदैं प्रेम अंकूर भो, कवित गवाये फेर ॥ १८ ॥

अर्थ. रससागरने आ वात सांभळताज जोएली कळाप्रवीणनी पाछी स्मृति थइ, तेमज प्रेमना कोंटानो उदय थयो तेथी फरीने कवीत गवराव्यां. ॥ १८ ॥

॥ गाहा ॥

नेहनग्र संपत्तो, गायन सौध सागरं चर्चा ॥
ओगनीस अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ १९ ॥

अर्थ. नायकाओनुं नेहनग्रमां आववुं तेमज माहाराजाना मीलापनी साथे मेहेलमां थएली चर्चा संवंधी प्रवीणसागरनी ओगणीशमी लेहेर पूर्ण थइ. ॥ १९ ॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे रससागर श्रीमुख चर्चा नाम एकोनविंशो लहरं ॥ १९ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री वावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रवोधिनी टीकायां एकोन विंश स्तरंगः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ टिका कारोक्त ॥ छंद वैतालवृत्त ॥

उच्चरी गायन भूप प्रति जे, मुलक शेहेर प्रवीणनुं ॥
कुळ ज्ञाति नाम तमाम ते कहि, विगत समदृदा वर्णनुं ॥

प्रत्यंग वळी शृंगार आभ्रण, रंग रस वसमां भळी ॥
अटलो विगत कवि दाखवे, शुभ वीशमी लेहेरे वळी ॥ १ ॥

॥ अथ रससागर गायन चर्चा प्रसंगः ॥

॥ रससागरोक्त सोरठा ॥

रससागर वह बात, बूझत फेर असाध उर ॥
जनपद पुर कुल जात, कहो प्रवीन अभिधान कहा ॥ १॥

अर्थ. रससागरे आ वात पूछी तो खरी परंतु तेना मनमां (आगलनो बनाव सांभरी आववाथी) असाध्य थइ गइ, तेथी हवे पछी धैर्यतानी साथे पुछेछे के कयो देश? कयुं शेहेर? कयुं कुळ अने तेनी कै जातछे, तेमज तेनुं (बीजुं) नाम शुंछे? (ते कहो.) ॥ १ ॥

॥ अथ गायनोक्त प्रत्युत्तर ॥ कवित्त ॥

द्रग भोंन बांन मिल, गुन ग्राम आदि रूप, द्वीप परे दुज राज, भूमि अनुमान करि ॥ राग भूत भूमि बांन, बान वसुधा मिलाव, लाग भुज युग मानि, स्थानक निवास परि, द्वीप द्रग द्वीपवति, द्वीप यूग वेद रूप, परम पवित्र वंश, उदय प्रभा धरी ॥ गिरि गंगा पंथ भूत, समय समीर बीन, तत्व ईशशीश ब्रह्म, अंक संगना उचरी ॥ २ ॥

अर्थ. द्रग केतां बे एटले बीजा वर्गना कखगघङ ए माहेला भोंन केहेतां बीजा अक्षरनी साथे बाण एटले बाराक्षरीनुं पाचमुं रूप मळवाथी गु थयो, गुण एटले त्रीजा वर्गना चछजझञ ए माहेला ग्राम एटले त्रीजा अक्षरने आदिरूप केहेतां पेहेलुं रूप लगाडवाथी ज थयो, द्वीप एटले सातमा वर्गना यरलव ए माहेला पर एटले बीजा अक्षरने द्विजराज एटले पेहेलुं रूप लागवाथी र थयो, एवीरीते “गुजर” ए त्रण अक्षर

नीकळवाथी जे नाम थयुं ते नामनो देश कळाप्रवीणनी जन्मभूमि छे एम अनुमान करवुं अर्थात् गुर्ज्जर देश तेनी जन्म भूमि छे.

राग एटले छठा वर्गना पफबभम ए माहेला भूत एटले पांचमा वर्णमां भूमि एटले पेहेलुं रूप लागवाथी म थयो, बाण एटले पांचमा वर्गना तथदधन ए माहेला बाण एटले पांचमा अक्षरमां वसुधा एटले पेहेलीज मात्रा मळवाथी न थयो, लोग एटले त्रीजा वर्गना चछजझञ ए माहेला भुज एटले बीजा अक्षरमां युगमनी एटले बीजी मात्रा मेळववाथी छा थयो एवीरीते "मनछा" ए त्रण अक्षर एकठा मळवाथी जे नाम थयुं ते नामना शेहेरना सारा स्थानकमां निवास करीने रहीछे अर्थात् मनंछा पुरीमां रहेछे.

द्वीप एटले सातमा वर्गना यरलव ए माहेला द्रग एटले बीजा अक्षरने द्वीपवति एटले पेहेली मात्रा लागवाथी र थयो. द्वीप एटले सातमा वर्गना यरलव ए माहेला यूग एटले चोथा अक्षरने वेद एटले चोथुं रूप लागवाथी वी थयो एवीरीते " रवी" ए बे अक्षर नीकळवाथी जे नाम थयुं ते नामना परम पवित्र वंशमां ऊत्तम कांतिने धारण करनार ते प्रवीण उदय थएलीछे अर्थात् सूर्यना पवित्र वंशमां जन्मेलीछे.

गिरि एटले आठमा वर्गना शषस ए माहेला गंगापंथएटले त्रीजा अक्षरने भूत एटले पांचमी मात्रा लागवाथी सु थयो, समय एटले त्रीजा वर्गना चछजझञ ए माहेला समीर एटले त्रीजा अक्षरने बीन केहेतां बीजी मात्रा लगाडवाथी जा थयो- तत्व एटले पांचमा वर्गना तथदधन ए माहेला इशशीश एटले पांचमा अक्षरने ब्रह्म एटले पेहेली मात्रा लगाडवाथी न थयो एवी रीते "सुजान" एटला अक्षरनुं जे नाम थयुं ते तेनुं नाम केहेवायछे अर्थात् सुजान तेनुं नामछे. ॥ २ ॥

गूढोक्ती गायन सुनत, भये सु सिंधु सयांन ॥
गरव नरव तामहि उलटि, पायो गानित विधांन ॥ ३ ॥

अर्थ. सागरना प्रश्नना जवाबमां नायकाओए गूढ भेदवाळुं उत्तर वचन कह्युं ते सांभळवाथी महाराजाना मनमां जे असाध्य हती ते मटी गइ अने साध्य थै, गरव अने नरव ए शद्बोने उलटी रीते वांचतां वरग अने वरण एवा बे शद्ब थया, तेथी ते माहेली गणीतनी विधि जाणवामां आवी अर्थात् वर्ग, वर्ण अने मात्रानी गणतरीनी विधिथी देश विगेरे सर्व बाबत जाणी लीधी. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सागर गायनसें कही, मन तरंग भरि मेंन ॥
अंग अंग बरनन करहु, जैंसो देख्यो नेंन ॥ ४ ॥

अर्थ. पछी रससागरे नायकाओने कह्युं के मनमां कामदेवना तरंगने (वीकारने) ठसावी कळाप्रवीणना अंगना तमाम अवयवोनुं जेवुं तमारी आंख्ये जोयुं होय तेज प्रमाणे नखथी केश पर्यंत वर्णन करी बतावो? ॥ ४ ॥

गायन कर्त्ता काव्यकी, तोटक छंद बनाय ॥
बरनन कलाप्रवीनको, सागर दियो सुनाय ॥ ५ ॥

अर्थ. नायकाओ काव्य रचनार हती तेथी नीचे प्रमाणे तोटक छंद बनावीने कळाप्रवीणना अंगना तमाम अवयवोनुं वर्णन महाराजा रससागरने कही संभळाव्युं. ॥ ५ ॥

॥ अथ गायनोक्त कलाप्रवीन प्रत्यंग वर्नन ॥

॥ अलंकार लुप्तोपमा छंद तोटक ॥

पुनरंभव पानिपकी प्रभुता ॥ बजरं परि मानिककी छबिता
पदपल्लव नीरव चंप कली ॥ हरि केसर कुंकुमकी हद ली॥
उपमा चरनं अरनं बरनं ॥ कमलं कज पातरनं करनं ॥ द्युति
राजत नादिग एडिनकी॥मनु नारिंग गेंद कुजं मनिकी॥छबि

है मुरवा मति मोहि छकी॥रुचि मार सु न्याय हिमं रथकी ॥ रतिकी गति पिंडुरिमें जुरुकी ॥ झलकें मनमथ्थ निपंग झुकी ॥ गहरी गति जानु सु ग्रंथनकी ॥ मथनी उलटी मन मथ्थनकी ॥ जुग जानु करी कर हेम जुटी ॥ उपमा फुनि भानुफला उलटी ॥ बरनीं न नितंब बनी बरकी ॥ सुखमा तट रूप भरे सरकी ॥ कटिलंक मनो मृगराज कस्यो ॥ ललितं नव अंकुर जानि लस्यो ॥ नव नाभि सु नीरज कोश बनी ॥ गति मेंन सिकारनकी गडनी ॥ अहिवेल दलं छबि ऊदरकी ॥ त्रिवली रस तीन तरंगनकी ॥ उरु रूप सिवारनसी अवली ॥ निरखें गुन साम चिटी नवली ॥ रस रीझ भरे दुहु पाखरवा ॥ परियांनके हाटकके परवा ॥ बिबि काम बटासें उरोज बनें ॥ तिहुनेंन निसांन सवीर तनें ॥ परि राजत सांम सुरंग प्रभा ॥ सतकुंभके श्रंग मधूप सभा ॥ कलधौत उरं कुच नीकटवा ॥ नवरंग मनोज मही नटवा ॥ भवनं सुरपास कला भुजकी ॥ कमलं नल दंड तिमिध्वजकी ॥ प्रगटी कर कंजनकी परसं ॥सु बयार करं श्रुतिके सरसं ॥ सरसी अँगुरी नख वाढ सजे ॥ रसनोदन मांनिक खोर रजे ॥ पुनि पीठ सु रंभ शिशू पतवा ॥ चतुराइ अनंग पटी-चितवा ॥ तरुनी गल ग्रीव कपोतनकी ॥ गति कंबु सुराहि अनंगनकी ॥ चिबुकं टहि ठोडिय मेचककी ॥ तरुराज फलं अलि सूंनु तकी ॥ अरुनं छबि राजतहें अधुरं ॥ शिशु पल्लव किंदुरकें सुखरं ॥

दुतिहैं रसना गन दंतनमें ॥ कुवलै दल हालिमके कनमें कबहों मुख मंद सु बानि कहें ॥ रव कोकिल हीनप पाय रहें ॥ दुलसें कबहू तब मंद हसे ॥ कुसुमावलि चंद कला विकसें ॥ तबकं जुत बास कपोल लसें ॥ मधुमाधवी लेन मधूप धसें ॥ ललितं मुख नासिक ओप लली ॥ कहि कीर सु दीपक चंप कली ॥ चख चंचलता श्रुति कोंन चलें॥ मृग खंज तिमी मधु कंज मलें ॥ बरुनी पल भौंह बिशेष बनें ॥ तरवार तरंग धनू अतने ॥ अति सोहित भाल शशी त्रितियं॥ कुवलैं दल कातरि खंड कियं ॥ शशिगोतन सीप हरी श्रवनं ॥ भव खंडन दाव धुनी भवनं ॥ चिहुरं मनमथ्थ खुले चमरी ॥ कर ग्रंथित केवलसी कबरी ॥ परवा मानि नील विहंग पटी ॥ फनिआर धरें मनि धार फटी ॥ चिकुरं रुचि नेह भरे चलकें ॥ जमुना मरकंत प्रभा झलकें ॥ झमकें फुंद घूघरवा सु झबे ॥ छपदी नव गुंजन कंज छबे ॥ गुन लाल प्रसून सु बेंन गही ॥ बिचलोचन भूमि त्रिबेंनि वही ॥ विध रुद्र निबंध कसी कबरी ॥ रुचि पीत चंदं मा[illegible] चकरी ॥ शिरफूल जराव जयों नरस्यां ॥ दरवी मानों बिंब फनीं दरस्यो ॥ भतियाहि सु चंदन मंग भयों ॥ सुरस्त रवि गो तममें प्रसयों ॥ लटना अलकावलि यों लटकें ॥ झुकि पुंछ अही सिसुवा भटकें ॥ कुटिलानाकि राजत ओप खरी ॥ कुसमं गुछ अंकुश काम करी ॥ झलवा मलवा पलवा दलवा ॥ दलवा

अलिवा किलवा झुलवा ॥ करनं हरनं जरनं तरनं ॥ तरनं तरनं अरनं करनं ॥ श्रवनं सुमनं भवनं सुतनं ॥ शशि शृंग कीये मलिका सुमनं ॥ बँदनी नँग सुजत खेंच बधी॥ शशि शीश नवं ग्रह पंत सधी ॥ जलजात लरी बिंद लाल जटें ॥ दर बीदुरकें कुज चंद चटें ॥ सरसी अरचा किय केसरकी॥ रससागर नाउ सुरंगुरुकी ॥ बिंदवा छबि लाल जँगाल बढी ॥ चुनियाँ ढिग नील पतंग चढी ॥ चख नाग सु नाग नये बचवा ॥ चमकी सुखदो तनकी रचवा ॥ मनि नील सु नासनमें मुरवा ॥ धुनि चाहत दोखि लटें धुरवा ॥ मुकता मनि बेसरसें मलकें ॥ भ्रगुसूनु शशी शशिमें भलकें ॥ रद राजत रेखनकी रसमीं ॥ मनु कुंद कली शिशु पीत भ्रमीं ॥ अरुनाइ अनोप तमोर असी ॥ धुनि प्रेम हियें मुख लैर धसी ॥ दुति राजत नाग दिठौं न दियो ॥ करता लवले रस राज कियो ॥ हरवा मुकता मनि माल हियें ॥ अमरं धुनि धार हजार कियें ॥ दुलरी दुति चौंकिनकी दमकें ॥ चपला घन हेम गिरं चमकें ॥ भुजबंध दुहू सु जराव भजें ॥ सुख आसन मेंन महीप सजें॥ चिकुही गुजरी कँगनी जु चुरी ॥ रद कुंजर रंग भरी कंगुरी ॥ पंहुची मुंदरी अंगुरी परसें ॥ दुति छत्र मनो भवकों दरसें ॥ मँहिदी नप पानन मोह मनं ॥ गहिरें दल पंकज बूढ गनं ॥ कटिसें रसना रव यों निकसें ॥ बरदावन चंदन मेंन बसें ॥ लखि नीविनके फुँदना लटकें ॥ चकरी कर

कामहुतें चटकें ॥ रव नेपुर पाहिल घूघरवा ॥ बजती धुनि जेहरकी बिछुवा ॥ मधु वाल मुराल सुलाल मुनी ॥ गुन गावत कंद्रपके जुगुनी ॥ अंगुरी सु अनोट रहें अटकें ॥ चरितं गुन भापतहें चटकें ॥ दुगनी दुति जावक पाय दये ॥ छवि कंज सु फूल जसूल छये ॥ गजराज मुरालनकी गतिकी ॥ मधि लंगर चातुरकी सतिकी ॥ बिविधं नवरंग दुकूल बनें ॥ गुनकी रसना नहि जात गनें ॥ प्रति अंग कही छवि दीठ परी ॥ किरतार प्रवीन करी सु करी ॥६ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणना पगना नखनी चमकनी, शोभातो वज्र जातिना हीरा उपर राखेला माणेकनी छवि जेवीछे, तेना पगनी आंगळीओ जातवान चंपानी कळीओ जेवीछे अने ते जाणे लीला केसर तथा कंकुनी दळीओ बनावी होय तेवीछे, उपमाथी पग राता रंगवाळाछे, परंतु ते जळमांथी उपजेला कमळना पातरा तथा जासूसना फूलनी बराबरी करे तेवाछे, पग पासेनी एडीओनी कांति मानोके, नारंगी, दडो, अने मंगळना मणी जेवीछे, वुद्धिने मोह उपजावनार, छकेली कळाप्रवीणानी बे घुंटीओनी छवी कामदेवना सोनाना रथनी न्या (पैडा वच्चेनो गोळ भाग) जेवीछे, कामनी स्त्री रतीनी गतिनी शोभाने रोकनार तेनी पांनीओ कामदेवना झुकेला भाथा जेवी झळकेछे, तेना गुठणनी ढांकणीओनी गंभीरता उलटावेली कामदेवनी झेरणीना अग्र भाग जेवीछे, सोनेथी जडेल हाथीनी सुंढ जेवा तेना बे साथळ उलटेली केळ जेवाछे, अति श्रेष्ट नितंबनी (कडनी पाछळनो भाग) शोभा वर्णवी शकाय एवी नथी, तोपण ते शोभामां पाणीथी भरपूर तळावना कीनारा जेवाछे, तेनी पातळी केडनो लंक कसाएला (सीकार उपर टांपेला) सिंहना जेवोछे, एटलुंज नहीं पण ते जाणे शोभायमान नवीन कोंटो

ळळकतो होय एवोछे, तेनी गंभीर नाभि नवा कमळना कोश (वच्चेनो खाडो) जेवीछे, एटलुंज नहीं पण ते, कामदेवना शेकार करवाना खाडा जेवीछे, तेना पेटनी आकृति तो, नागरवेलना पान जेवीछे, पण ते उपर रहेली त्रिवळी (पेटना त्रणवाटा)पाणीनी त्रण लेहेरो जेवीछे, तेना पेट उपर पडेली सेवाळ माफिक रोमराजी (रुवांनी बारीक पंक्ति) तो जोवाथी काळो दोरो तथा नवी काळी कीडीओनी हार जेवीछे, रस रीझथी भरपुर तेनां बे बाजुनां पडखां परीयोनी सोनानी पांख जेवांछे, तेनां बे स्तन कामदेवना खेलवाना बे बट्टा जेवां बनेलांछे, तेमज त्रण नेत्रवाळा महादेवनानीशाण रूप कामदेवे ताणेला तंबु जेवांछे, ते स्तन उपर रहेला काळा रंगनी शोभातो सोनाना पर्वतनी शीखर उपर बेठेला भमरानी सभा जेवीछे, तेना स्तननी आसपासनो सोना जेवो झळकतो छातीनो भाग कामदेवरूपी नटने नाचवानी रंगभूमी जेवोछे, वरुणपाशनां बांधाना तेना हाथ कमळनुं नाळ तथा कामदेवना दंड जेवाछे, हस्तरूपी कमळमांथी प्रगटेली पांखडीओ जेवी तेनी आंगळीओ, पवननी लेहेर तथा वेदना स्वरो जेवीछे, रसदार आंगळीओ उपर वृद्धि पामेला नख हीरामां पाडेला माणकना डांक जेवा शोभेछे, तेनी पीठतो सुंदर केळना वच्चांना पत्र जेवीछे, एटलुंज नहीं पण कामदेवनी चतुराइना चित्रो चितरवानी पाटी होय तेवीछे, तरुण अवस्था वाळी कळाप्रवीणनुं गळुं होलाना गळा जेवुंछे अने तेनी नमणाइ शंख तथा कामदेवनी सराइ जेवीछे, तेनी डाढी उपर ओफेलुं त्राजवुं पाकेला आम्रफळ उपर ताकेली नाजुक भमरी जेवुंछे, लाल रंगनी छबीथी शोभता तेना होठ फूटेलुं कुंपळ, पाकेलुं घोलुं अने परवाळां जेवा शोभेछे, चळकता दांतना समुदायमां रहेली तेनी जीभनी कांति, पाकेला दाडमना कणमां राखेला कमळना लाल पत्र जेवीछे, क्यारेक ते म्होंदेथी धीमे धीमे वचन कहेछे त्यारे कोयलनो स्वर पण तेनाथी हीनता पामीने रहे-

छे, क्यारेक हुलास पामेछे त्यारे धीमे धीमे हसेछे, तेथी तेनुं हसवुं खीले-
ला फूलनी पंक्ति तथा चंद्रनी कळा जेवुं दीसेछे, तेना डाबा गाल उपर
रहेलुं नाजवुं मधुमाधवीनो सुगंध लेवा धसेला भमरा जेवुं लागेछे, तेना
शोभायमान मुखने ओपावनार नमणुं नाक पोपटनी चांच, दीवो अने
चंपानी कळी जेवुं शोभेछे, चंचळताथी कानना खुणा सुधी चालती ते-
नी आंख्यो गुण अने आकारथी मृग, खंजन पक्षी, माछलुं, भमरो अने
कमळना जेवीछे, अति शोभायमान तेनी पापण, डोलर (पोपचां) अने
भ्रकुटी अनुक्रमे खुल्ली तरवार, पाणीनी लेहेरो अने वगर खेंचेला धनुष जे-
वीछे बीजना चंद्र जेवुं शोभायमान तेनुं कपाळ कातरीने खंड पाडेला
कमळपत्र जेवुंछे, मोतीनी छीपनी शोभाने हरनार तेना कान महा रुद्रना
पाश तथा तेनी धुणीना भुवन जेवाछे.
तेना केवळ गुंथेला केश, चोतरफ वीखरायेली कामदेवनी चमरी जेव
शोभेछे, मोरनां पींछानी पंक्ती जेवी माथा उपर पाडेली तेनी वच्चे वा-
जुनी पाटी मणीने म्होढामां लेती वखते उघडेली सर्पनी फण जेवीछे,
सुगंधी तेल नाखवाथी तेना चळकता केश मरकत मणी तथा जमुना-
जीनी प्रभा जेवा झळकेछे, तेनी वेणीमां गुंथेला फूमकादार गोफ
णामां झमझमाट करती घुघरीओ, कमळना फूल उपर गुंजारव करती
नवीन भमरीओ जेवी लागेछे.

लाल रेशमनी दोरी तथा सफेत फूलथी गुंथेली तेनी वेणी हीरानी
[illegible]मां वेहेती त्रीवेणी (गंगा जमुना अने सरस्वति) नदी जेवीछे,
[illegible] पाश तथा रुद्र पाशनी विधिथी कसी बांधेली तेनी कवरी (चोटलो)
[illegible] उपर चकरी वेग चडती मकरी (गुंचळुं वाळी चाले तेवी
[illegible]) जेवी दीसेछे, मस्तक उपर जडाउ शिरफूल धारण कर्युंछे ते,
[illegible] नीकळेला नानाना [illegible]मां रहेला मणीना बिंब (आकार)
जेवुं देखायछे, प्रवीन [illegible] तेना सेंथामां भरेलो सिंदुर सूर्यनुं लाल

कीरण अंधारामां प्रसर्युं होय एवो शोभेछे, सुंदरी ते कळाप्रवीणना वाळनी वारीक लटो झुकीने पुंछडा झाटकता सर्पना बच्चां जेवी लटकेछे, काननी आगळ वाळेला तेना नाजुक वाळनी टेडाइनी शोभा फूलना गुच्छा तथा कामदेवना हाथीना अंकुश जेवीछे, नेत्र रूपी कमळ दळने मळवा आवती तेनी झाल्यो क्रीडा करता भमरा पासे झुकी आवता पीपरना पत्र जेवीछे.

कानमां पेहेरेला तेना सोनाना जडित्र तरोणा, (काननां घरेणां) तरुण (ऊगता)सूर्यना लाल कीरण जेवाछे, मंगळना नंगथी चळकतां तेनां कर्णफूल, अपूर्ण चंद्रना शृंग उपर राखेला मालतीनां फूल जेवां लागेछे, जातजातना नंगथी चळकती कपाळ उपर खेंचीने बांधेली तेनी बींदली चंद्रमाना मस्तक उपर नवे ग्रहनी हार बंधाणी होय ते जेवी दीसेछे, तेनी लाल बींदलीमां जोडाएली मोतीनी लर, विद्रुम (परवाळां) सरखा वर्णवाळा मंगळने चंद्रमा चुंवतो होय एवी लागेछे, तेना कपाळमां करेली सुंदर केसरनी अर्चा रसना समुद्रमां चालता बृहस्पतिना वाण जेवीछे, लाल चांडला पासे करेली जंगालनी टीपकी चुनीओ उपर चडता लीला रंगना पतंग जेवी शोभेछे, तेनी आंख्योमां आंझेला काजळनी वारीक रेखा सर्पना कणा तेमज चमकता पतंगीयानी कांति जेवीछे, नाकमां पेहेरेला लीला मणीना मोरने जोइने तेना अवाजने चाहता मेघना वरा झुकता आवेछे.

तेनां नकवेसरमां (नाकनी वाळीमां) रेहलुं मोती तथा मणी मुख रूपी चंद्र मंडळमां झळकता शुक्र तथा चंद्र जेवां शोभेछे, तेना दांतमां जडेली सोनानी रेखनी कांति, डोलरनी कळी उपर बेठेला पीळी भमरीना वच्चा जेवी शोभेछे, खाधेला पान बीडानो रंग हृदयमां रहेला प्रेमनी नदीनी लेहेर मुख उपर धसी आवी होय ते जेवीछे, तेना कान पासे करेला मसानी कांति, परमेश्वरना तेजमांथी अंश लइने बनावेला रत्नना साचा

शृंगार जेवोछे, तेना हृदय उपर धारण करेलां, पाणीदार मोती तथा मणीना हार, गंगाजीए हजारो धारा करीं होय ते जेवाछे, तेनी बे लर वाळी दुगदुगीनी साथे रहेली जडाउ चोकीनी कांति, सोनाना पर्वत उपर रहेला मेघनी घटामां चमकती वीजळी जेवीछे, बन्ने भुजाए वांधेला जडाउ बाजुबंध, कामदेवरूपी महाराजाने वेसवा वास्ते सजेला सिंहासन जेवाछे, तेना हाथमां पेहेरेला चूडानी गुजरी, कंकण, ठैया अने चुडीओ; हाथीना दांतमाथी बनावेली, रंगथी भरपूर अने कांगरीदारछे; पहोंचामां पहोंची अने आंगळीओमां नंगदार विंटीओ पेहेरवाथी तेना हाथ कामदेना छत्र जेवा देखायछे; मनने मोह उपजावनार, तेना हाथना नखे दीधेलो मेंदीनो रंग, कोमळ कमळना घाटा पत्र उपर बेठेला बूडना (चोमासाना राता जीवडाना) समुदाय जेवोछे, तेनी कडेथी नीकळता कटिमेखळाना शब्द जाणे कामदेवना वंदीजनो तेमांज वसीने वखाण करता होय ते जेवोछे, तेना घाघरानी नाडीनां लटकतां फूमकां कामदेवना हाथथी चटकती चकरडी जेवांछे, तेना पगमां पेहेरेलां झांझर, लंगर, पगपानांनी घूघरीओना अने विंछीयाना अवाज; भमरा, हंसना बच्चां, नारदमुनीनी विणा अने कामदेवना गुणोने गाता गुणवान वंदी जनोना जेवाछे; आंगळीओमां अटकता अणवट चटकां करीने तेना गुणनां चीचवुं वखाण करता जणायछे, अळतो लगाडवाथी बमणी थएली तेना पगनी शोभा छवराएलां कमळ तथा जासूसनां फूलनी कांती जेवीछे, तेनी चालवानी लटक मदेला हाथी तथा हंसनां बच्चानी चाल जेवीछे, एटलुंज नहीं पण चतुर पुरुषनी बुद्धिने अटकावनार लंगर जेवीछे, जातजातनां रंग बे रंगी पेहेरेलां तेनां वस्त्र तेमज तेना गुण अपार होवाथी गणी शकाय एवा नथी तोपण अमे जेवी नजरे जोइ तेवी तेना अंगे अंगनी छबि कही बतावी परंतु जगत कर्त्ता परमेश्वरे पोताना हाथथीतो जीवोमां एक कळाप्रवीणनेज रचेलीछे. ॥६॥

॥ दोहा ॥

नखतें सिख सिखतें सु नख, आभा कही बनाय ॥
तऊ प्रबीन नवीन छबि, बनी न बरनी जाय ॥ ७ ॥

अर्थ. नखथी केश सुधी अने केशथी नख सुधी तेनी कांति वखाणीने कही, तोपण प्रवीणनी नवी शोभायमान छवी वखाणी जाय एवी नथी. ॥ ७ ॥

अथ तदंते रससागर अभिलाष दशा ॥ सोरठा ॥

सुनत श्रवन प्रति अंग, अंग अंग प्रगटें अनंग ॥
भई सुमन गति भृंग, बिनां बाग बिकसित कुसुम ॥ ८ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणना अंगे अंगनी शोभानुं वर्णन सांभळीने महाराजाना अंगे अंगमां काम प्रगट थयो अने फूलमां जेम भमरानी गति थाय तेमज वगर बागे खीलेला फूलमां महाराजाना मननी गति थइ गइ. ॥ ८ ॥

उदयो प्रेम पतंग, सुख समूह सकुचित कुमुद ॥
भयो मुदित मन भृंग, बिरह कुंज प्रफुलित लता ॥ ९ ॥

अर्थ. प्रेम रूपी सूर्य उग्यो तेथी सुखना जथ्था रूपी चंद्र विकाशी पोयणीनां फूल करमाइ गयां, विरह रूपी कुंज मंडप उपर प्रफुल्लित थएली वेल जोइने मन रूपी भमरो खुशी थयो. ॥ ९ ॥

उमडी घटा सनेह, धीर जवासा तरु सुक्यो ॥
बिरहा सर सु भरेह, मित सुरत छूटे पटा ॥ १० ॥

अर्थ. स्नेह रूपी मेघनी घटा चडी आवी धीरजता रूपी जवासानुं झाड सुकाइ गयुं, एटलुंज नहीं पण विरह रूपी तळाव भराइ गयुं अने मित्रनी सुरत रूपी लेहेरो चालवा लागी. ॥ १० ॥

मग मग या गति लीन, डग डग ला लागत खरी ॥
लगनी अगनि प्रवीन, जल थल प्रति जगमग रही ॥११॥

अर्थ. रस्ते रस्ते अने डगले डगले सर्व प्रकारे महाराजाना मनोविकार नायकाओए कहेली सुरतमां गुंथाइ गया, एटलुंज नहीं पण कळाप्रवीणनी लगनी रूपी अग्नी स्थावर जंगमना सघळा पदार्थोमां जगमगवा लागी एटले जागी गइ. ॥ ११ ॥

अमर कोस दधि प्रान, विरह ज्वाल पावक जरें ॥
सुरति धूम अनुमान, मृगमद मिलित प्रवीन तन ॥ १२ ॥

अर्थ. अमर रूप सागरना प्राण, विरह रूपी अग्नीनी झाळथी बळवा लाग्यां, तेथी तेनी सुरतिरूपी धुवाडो कस्तुरी रूप प्रवीणना शरीर तरफ चाल्यो. ॥ १२ ॥

॥ सवैया ॥ अलंकार दृष्टांत ॥

लोह करीच फिरें तितही, जित ग्राव चमंककी फुरता ॥
अंमर कोशको धूंम तितैही, जितैंहि मृगंमदकी दुरता ॥
पुंगीको नाद वजें जितहि, तित पंनग आननकी मुरता ॥
यों परवीन सुनें प्रति अंग, भ्रमें तित सागरकी सुरता॥१३

अर्थ. जेम जे तरफ चमक पथरीनो चमक होय ते तरफ लोढानो कांटो फरे, ज्यांहा दुर रहेली कस्तुरी होय त्यांहांज अमरनो धुंवाडो जायज्यांहां मोरलीनो अवाज थतो होय त्यांहांज सर्प सामी फण मांडीने नाचे, तेमज कानेथी सांभळेला कळाप्रवीणना अंगे अंगमां महाराजा मनसागरनी सुरत फर्या करेछे. ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मान कुमर रीझे सु नित, दान मान हिय ताय ॥

गायन निज थानक गई, सागर प्रनय जनाय ॥ १४ ॥

अर्थ. आ प्रमाणे गायननी साथे कळाप्रवीणना अंगे अंगनुं वर्णन करवाथी नायकाओ उपर महाराजा खुशी थया अने तेने माननी साथे इनाम आप्युं एटले नायकाओ रजा लेइ रससागरने केटलुंक हेत जणावी पोताना देशमां गई. ॥ १४ ॥

॥ गाहा ॥

गायन राज समीपें, वर्नन किय प्रवीन प्रत्यंगं ॥
सागर दशा तदंते, वीश प्रवीन सागरो लहरं ॥ १५ ॥

अर्थ. नायकाओए महाराजानी पासे करेलुं कळाप्रवीणना अंगे अंगनुं वर्णन तथा ते सांभळवाथी महाराजानी बनेली हालत संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी वीशमी लेहेर संपूर्ण थई. ॥ १५ ॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे रससागर गायन चर्चा कलाप्रवीन प्रत्यंग वर्ननो नाम विंशमो लहरं ॥ २० ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां विंशम स्तरंगः समाप्तः ॥ २० ॥

॥ अथ तरंग शिखाबंध छंद दोहा ॥

विरह अंग सागर वध्यो ॥ फेलो मनमां फेर
पत्र मित्र पठवन विधी ॥ एकवीशमी लेर ॥ २१ ॥

अथ रससागर मित्र चर्चा प्रसंग ॥ दोहा ॥

इन नेनन आनन वहैं, कब देखहुं किरतार ॥
एसें रससागर निशा, बीती करत विचार ॥ १ ॥

अर्थ. हे? जगतकर्त्ता परमेश्वर, आ आंख्योथी ए म्होडुं हुं क्यारे देखोश! एवी रीते विचार करवामां महाराजा रससागरने रात वीती. ॥ १ ॥

भयो भोर मिंत सु मिले, करें कुतोहल बात ॥
रससागर औरें दशा, जानीं काहु न जात ॥ २ ॥

अर्थ. सवार थयुं एटले सघळा मित्रो आवी मळ्या ने तेओ हास्य विनोदथी वातो करवा लाग्या, पण महाराजा रससागरनी तो जूदीज दशा थइ गइछे ते कोइनाथी जाणी जाती नथी. ॥ २ ॥

॥ अथ अलंकार भिन्न पद रूपक ॥ ता दशा बर्नन हिंदि ॥

॥ सवैया ॥

देहको देहरा चिंतके तख्तमें, इस्कके देवकी जोत जागी ॥ प्रान पूजा करें नेंन पानी भरे, कौंन ध्यानी कथा आन तागी ॥ स्वास पंखा ठह्यो बुद्धि बीरा गह्यो, जीह तंत्री लह्यो भेद रागी ॥ मित्र मंत्रं भजें तंत्र फंदं तजें, एक प्रवीनसें टेक लागी ॥ ३ ॥

अर्थ. शरीर रूपी देवळमां चित्त रुपी तख्त उपर इस्क रूपी देवनी जोत प्रगटी, तेनी प्राण रूपी पूजारो पूजा करेछे, आंख्यो पाणी भरी लावेछे, कान रूपी ध्यानी बीजी वातो छोडी दइने ध्यान करेछे, स्वास रूपी पंखो चालेछे, बुद्धिए बीडां लीधांछे अने जीभ रूपी वीणा बीजा फंदने छोडी दइ रागना भेदने लइने हे? मित्र, हे? मित्र, एम कहीने मीत्रना मंत्रने भजेछे, एवीरीते महाराजाने एक कळाप्रवीणनीज टेक लागीछे. ३

॥ दोहा ॥

भूलिगये चित गति सुरति, भूपन बसन शरीर ॥

मनमें बसी प्रवीन छवि, वढी विरहकी पीर ॥ ४ ॥

अर्थ. जेथी महाराजा स्वभावनी गति अने पोतानी सुरत भूली गया एटलुंज नहीं, शरीरे लुगडां घरेणां सजवानुं पण भूली गया, मनमां कळाप्रवीणनी छवी वसी तेथी वियोगनी पीडा वधी गई. ॥ ४ ॥

अलंकार स्मरणानु भाव ॥ सवैया ॥

गंद्रव गान प्रवीन उचारत, बीन प्रवीन वजावत रागी ॥ भाषत भाष प्रवीन सु भेदन, मिंत प्रवीन सुरा मद दागी ॥ गायन वानि प्रवीन कथा सु, प्रवीन सुनी तवसें रति जागी ॥ सागर चिंत प्रवीन चढे सु, प्रवीन प्रवीन वहें जक लागी ॥ ५ ॥

अर्थ. गंधर्वनी पेठे गायन करेछे तेमां पण प्रवीणना नामनोज उच्चार करेछे, तेमज प्रीतिथी वीणा वगाडवामां पण प्रवीणना नामनेज वजावेछे, वात करेछे तेमां पण प्रवीणनेज मळवाना भेदनां वचन बोलेछे, दारु पीए छे तेमां पण प्रीय मीत्र प्रवीणना नामथीज केफ प्रसरेछे, एवी रीते गावा तथा बोलवामां प्रवीणनीज कथा करेछे एटलुंज नहीं पण ज्यारथी कळाप्रवीणने सांभळीछे त्यारथी प्रीति जागीछे, आवीरीते सागरना चित्तमां प्रवीण चडवाथी हे! प्रवीण, हे! प्रवीण, एवी रीते म्होढेथी झंखना लागीछे ॥ ५ ॥

॥ चोपाइ ॥

महाराज प्रच्छन मुरझावें ॥ वात भेद कहुपें न बतावें ॥ मिंत पाए चितकी जु उदासी॥ बोलन लगे कुतोहल हांसी ॥ मंद मंद प्रतिउत्तर बोलें ॥ वहें ध्यान महराज न डोलें ॥ आन काहु आसय नह सूझें ॥ वेमरजाद होय को बूझें ॥

यों वासर दश पंच विहाये ॥ मिंत बात बूझन अकुलाये ॥
समय एह बूझनकी ठांनी ॥ बोले सुहृद राज प्रति बांनि ॥

अर्थ. महाराजा छानां मनमां मुझाया करेछे, पण वातनो भेद कोइनी पासे बतावता नथि, एवामां मित्रो महाराजानुं मंन उदास जाणी हास्य विनोदनां वचन बोलवालाग्या, तेनी साथे धीमे धीमे जवाव आपेछे पण पेहेला ध्यानने चूकतानथी, तेम बीजा कोइने तेनो अभीप्राय सूजतो नथी, अने बेमरजाद थइने पूछी पण कोणसके? एरीते दूःखमां पांच दश दिवस वितिगया एटले तो मित्रो वात पूछवाने अकळाया, तेथी एकांत वखते आ वात पूछवानो ठराव करीने महाराजा पासे वचन बोल्या. ॥ ६ ॥

॥ अथ मित्रोक्त दोहा ॥

मिंत अरज महराज किय, बाग विलोकन बान ॥
महाराज मंदोल चढि, कियो गमन उद्यान ॥ ७ ॥

अर्थ मित्रोए बागजोवानी अरज करी ते मंजुर राखीने पालखीमां विराजमान थइ महाराजाए बगीचा तरफ गमनकर्युं. ॥ ७ ॥

॥ अथ बाग वर्नन ॥ छप्पय ॥

बीतत अहर बसंत, व्रच्छ बीरुध बिलंब किय ॥
कोमल किसलय झुकित, सुमन बन बन प्रति फुल्लिय ॥
बोलत विविध विहंग, भृंग गुंजार करत तित ॥
सीत मंद मधु स्वसन, जुकति जलजंत्र उच्छरित ॥
आमंत्रि मंत्र महराज प्रति, एकंतिक आसन रचिय ॥
पटुता उचारि बानी प्रथक, यहें बिनय महराज किय ॥ ८

अर्थ. वसंत ऋतुना दिवस गयाछे तेथी झाड उपर वेल्यो चडिछे ने

झाडना कोमळ पातरां झुकीरह्यांछे, बगीचामां झाडे झाडे फूल खीली रह्यांछे, जात जातनां पक्षीओ मनोरंजक शद्ब करी रह्यांछे, ठेकांणे ठेकाणे भमराओ गुंजारव करेछे, धीमो धीमो, थंडो अने सुगंधी पवन वायछे, युक्तिथि रचेला पाणीना फुवारा उछळी रह्याछे, आवा बगीचामां गुप्त विचार पूछवानुं महाराजाने आमंत्रण करीने एकांतस्थळे बिछायत करी आसन नांख्युं, त्यांहां महाराजा बीराज्या एटले चतुराइथी जुदां जुदां वचनो बोलीने नीचे प्रमाणे मित्रोए विनय कर्यो. ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

करि अभिवंदन जोरि कर, कियो छमापन क्रोध ॥
सासन श्री महराज ग्रहि, बूझी मनकी शोध ॥ ९ ॥

अर्थ. मित्रोए पेहेलां वंदन करी हाथ जोडीने क्रोध न करवा विशे माफी मागी लीधी, पछी महाराजानी आज्ञा लेइने मनमां रहेलो विचार पूछ्यो. ॥ ९ ॥

॥ मित्रोक्त ॥

कहा भयो कित चित गयो, किही जपत दिन रैन ॥
पल पल प्रति लीनह प्रभा, कहा नयो चित चैन ॥ १०

अर्थ. मित्रो कहेछे के हे? महाराजा, आ शुं थयुं? तमारुं चित्त क्यां गयुं? अने रात दिवस कोने जपोछो? पळे पळे तमारी कांति झांखी थती जायछे तो तमारा मनमां नवुं चेन शुं थयुंछे ते कहो. ॥ १० ॥

नीठ नीठ बूझत कही, गायन उक्ति उदार ॥
वहैं कवित वर्नन यहैं, उर आसय विस्तार ॥ ११ ॥

अर्थ. एरीते घणीक वार पूछतां मांड मांड महाराजा बोल्या अने नायकाओए कहेलां प्रण कवित्त तथा तेओ करेलुं नखशीखनुं वर्णन तेमज पोताना मननो अभिप्राय विस्तारथी कही बताव्यो. ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

देखित श्री महराज, दुचिते बिरहानल दुखित ॥
आधि मिटावन काज, यहैं मिंत उच्चार किय ॥ १२ ॥

अर्थ. विरहरूपी अग्निना दुःखथी महाराजाने बेचेन थयेला जोइने तेना मननी पीडा मटाडवासारु मित्रो आ प्रमाणे बोल्या. ॥ १२ ॥

॥ मित्रोक्त ॥ छप्पय ॥

महाराज यह बात, सत्य हमतोनहि मानें ॥
कुमरी वय सु किसोर, कवित कैसें करि जानें ॥
कलाधार गायका, रीझ रावरी सुपाई ॥
चरचा भेद चलंत, उक्ति समये सिर लाई ॥
मानें न आप अनुमान यह, पाती लिख सु पठाइयें ॥
परिहैं प्रतीत प्रतिउत्तरन, मन न कछू मुरझाइयें ॥ १३ ॥

अर्थ. हे? महाराजा, आ वात अमे तो साची मानता नथी केमके किसोर (छोटी) उम्मरनी कुंवरी कइरीते कवित्त रची जाणे? प्रपंच कलाने जाणनार नायकाओये आपने खुशी थया जाणी (आप पासेथी कांइक इनाम मेळववा सारु) आ वातना भेदनी चर्चा चालतां वखत विचारीने बनावटी उक्ती कहीछे, ते आपे मानवी न जोइए, पण ए बाबतमां आपणे एटलुं अनुमान करवानुंछे के आहींथी पत्र लखीने त्यांहां मोकलीए, एनो जवाब आववाथी प्रतीति पडशे, ए बाबत मनमां कांइपण मुंझावुं नहीं. ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

निज उर कर निरधार, मिंत उकति सागर सुनें ॥
आय सु राज दुहार, सभा विसर्जन बाग किय ॥ १४ ॥

अर्थ. मित्रोनां वचन सांभळीने ते प्रमाणे पोताना मनमां निश्चय कर्यो, पछी महाराजा रससागर बागमां थएली कचेरी बरखास्त करीने राजद्वारमां पधार्या. ॥ १४ ॥

बीतत अहर कितेक, पाती लखी प्रवीन प्रति ॥
बानी अहर विवेक, छंद सु मुत्तियदाम करि ॥ १५ ॥

अर्थ. केटलाएक दिवस वीति गया पछी महाराजा रससागरे विवेक पूर्वक सरस शद्ब लावी मोतिदाम छंद रचीने कळाप्रवीण प्रत्ये मोकलवानो एक पत्र लख्यो. ॥ १५ ॥

निज सु अनुग निरखंत, भायो भारतिनंद कवि ॥
विषम सु सरनि बहंत, सबैं बात समराथ वह ॥ १६ ॥

अर्थ. पोताना मित्रो उपर नजर करीजोतां पासे बेठेला भारतीनंद कवी गम्या, कारणके ए कठण काम होय तेने सेहेलाइथि करवामां तेमज सघळी बाबतमां समर्थछे. ॥ १६ ॥

॥ अथ भारतिनंद वर्नन ॥ छप्पय ॥

करता काव्य नवीन, नाद बीनादि बजावन ॥
राज भेद रिझवंत, रीत संगीत सु गावन ॥
लावन उक्ति अनेक, टेक धारित विवेक मन ॥
षट भाषा षट शास्त्र, वेद परवीन पुरानन ॥
नाना प्रकार परपंच कर, बीर धीर गंभीर मति ॥
साहस उदार सरसति प्रसन, जासु समय तैसी प्रकृति १७

अर्थ. नवीन काव्य रचनार, विणा विगेरे वाजित्र वगाडनार, राजनीतिना भेदथी राजाने खुशी करनार, संगीत शास्त्रनी रीत प्रमाणे गायन करनार, दृष्टांत सिद्धांतनी उक्तीथी युक्ति पुर्वक अनेक वातो लावनार, टेकीला, मनमां वीवेकी, छ भाषा, छ शास्त्र, चार वेद अने अढार

पुराणमां कुशळ; नाना प्रकारना प्रपंच करनार, शूरवीर, रणमां धीर, गंभीर मतिवाळा, साहसीक, उदार बुद्धिवाळा, अने जेने सरस्वती प्रसन्न छे, तेमज जेवो वखत तेवो स्वभाव राखनार आ भारतीनंद कवि छे. ॥ १७ ॥

तासु बुलाय इकंत, चिंत आसय उच्चारी ॥
जनपद पुर नृप नाम, वात सबही विस्तारी ॥
कुमरी कलाप्रवीन, नाम कहि पत्र दियो कर ॥
प्रच्छन पठवन भेद, ओर लावन प्रतिउत्तर ॥
केते उपाय फुनि फुनि प्रथक, कवि सुनियत सागर कये॥
भारतीनंद मनमें मुदित, प्रति पयौन रंहस भये ॥ १८ ॥

अर्थ. एवा लक्षणवाळा ते भारतीनंद कवीने एकांतमां बोलावीने महाराजा रससागरे पोताना मननो अभिप्राय कह्यो, वळी देश, शेहेर, राजानुं नाम विगेरे सर्व वात विस्तारथी कही, अने कळाप्रवीण राजकुंवरीनुं नाम लेइने कवीना हाथमां पत्र दीधो, छानीरीते कागळ पोहोचाडवाना भेद कह्या, अने पाछो तेनो प्रतिउत्तर लाववानी भलामण करी, बीजा केटलाएक जुदा जुदा उपायो वारं वार कवि सांभळे एवीरीते महाराजाए कही बताव्या तेथी भारतीनंदे मनमां हर्ष पामीने जलदी चुपकीथी चालवानो विचार कर्यो. ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

करि वंदन महराजकों, पत्र लियो सिर धार ॥
हय गय सिबिक सबीर साजि, तुरत होत तहियार ॥ १९

अर्थ. पछी महाराजाने वंदन करीने पत्र माथे चडावी लीधो, घोडा, हाथी, पालखी अने तंबु विगेरे सामग्री सजीने तरत तैयार थया. ॥१९॥

॥ गाहा ॥

सागर प्रथम सु विरहा, चरचा मिंत्र पत्र पठवन विधि ॥
एकवीस अभिधानं, पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २० ॥

अर्थ. सागरने पेहेलुंज विरहनुं दुःख थवाथी मित्रोए करेली चर्चा पछी पत्र लेइने भारतीनंदने मोकलवानी हकीकत संबंधी प्रवीणसागरनी एकवीशमी लेहेर पूर्ण थइ. ॥ २० ॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे रससागर मित्र चर्चा प्रथम पत्र भेदो नाम एकविंशमो लहरं समाप्त ॥ २१ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री वावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रवोधिनी टीकायां एक विंशम स्तरंगः समाप्तः ॥ २० ॥

॥ उधोर ॥

करि परियाण भारतिनंद ॥ पहुंच्या पुर प्रवीण कविंद ॥
शालि होत्र नीकहि तहा पेर॥ वाविशमी वनी एम लेर. ॥ १ ॥

॥ अथ भारतीनंद कवि मनंछापुरी पयाॅन प्रसंगो यथा ॥

॥ दोहा ॥

शत कुजाक अस शत उभैं, इक इभ सिबिक समान ॥
राय हुकम कबिराय किय, पुरी मनंछ पयाॅन ॥ १ ॥

अर्थ सो प्यादा बसे घोडा, एक हाथी, एक पालखी, एटली सामग्री लेइने महाराजाना हुकमथी कविराजे मनंछापुरी तरफ प्रयाण कर्यु. ॥ १

॥ सोरठा ॥

निशि दिन हास विलास, कर्त्त छंद कविको चलिय ॥

चहे व्रतम प्रति मास, पुग्गिय मनइंछह पुरी ॥ २ ॥

अर्थ. रात दिवस हास्यविनोद करती कवीनी स्वारी चाली ते चालते चालते एक महीनानी आखरे मनंछापुरीए पहोची. ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

वन उपवन आवर्त्त, सुभर सीतल सरिता सर ॥
गिरद कुंज विच दुर्ग, अटा उमडित तिहि ऊपर ॥
कनक कुंभ सिर केत, झुकित जर जवनि झरोखन ॥
द्वार द्वार दुंदभी, मनहु गर्जित घटा सु घन ॥
द्वाराधिपाल सासन सु मगि, पुरह पोर परवेश किय ॥
दिवस्त समें दानह उदित, एकंतिक ग्रह उत्तरिय ॥ ३ ॥

अर्थ. ते शेहेरनी चारेतरफ वींटाएला बाग बगीचा घणा शोभायमान दीसेछे, तेम त्यांहां थंडा पाणीथी तळाव तथा नदीओ भरपूर भरेलांछे; झाडनी घटानी वच्चे कील्लो देखायछे, ते कोटनी अंदर दूरथी देखाती मेडीओ उपर सोनाना चळकता कळश अने फरकती धजाओ देखायछे, झरोखे झरोखे जरीना पडदा झुकी रह्याछे, घेर घेर नगारां वागेछे, ते जाणे मेघनी घटा गाजती होय ने? एम जणायछे. (आवा रळीयामणा शेहेरना दरवाजा पासे कवीराजनी स्वारी आवी पहोची) एटले द्वाराधिपाळनी (दरवाणीनी) रजा लेइने शेहेरना दरवाजामां प्रवेश कर्यो अने दिवस आथम्या पछी चंद्र उगती वखते एकांत स्थळे घर भाडे लइने तेमां उतर्या. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

उन रहिना कहिना न कहुं, मतो दुरावन काज ॥
सोदागर बने सु कवि, लगे खरीदन बाज ॥ ४ ॥

अर्थ. आंही रेहेवुं पण कोइने खबर पडवादेवी नहीं कारणके छाना मताथी काम करवुं एरीते विचार करी सोदागरनुं बानुं करीने कवीराज घोडानी खरीद करवालाग्या ॥ ४ ॥

बाज बिलोकतहें सु कवि, बिध बिध करत विचार ॥
साहित मत सोधत सखी, पाती पठवन धार ॥ ५ ॥

अर्थ. कवीराज घोडाने जुवेछे पण पोताना मनमां नाना प्रकारना विचार करेछे, पत्र पोहोचाडवानुं धारीने साहित मेळवनारी सखीओने शोधेछे. ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

धाइ जनी अरु नाइ नटी, सु परोसनि राज प्रवेसनि हेरें॥
चूरही हेरि सुनारि बराइनि, मालनि सिल्लपिमें मन फेरें ॥
ब्रह्मसुता पटवानि चितेरनि, रामजनि सु सन्यासिनि टेरें ॥
बाजके व्याज सु राजकी शासन, सोधें सखी कोउ काज निवेरे ॥ ६ ॥

अर्थ. धाव्य, जनी (सुयाणी) वालदाणी, नटडी, पाडोशण विगेरे राजदरबारमां जती आवती स्त्रीयोने गोतेछे चूडीवाळी, (मणीयारी) सोनारण, तंबोलण, माळण अने कडीयाणी विगेरे स्त्रीयोमां पोतानुं काम साधवासारु मनने फेरवेछे, ब्राह्मणी, पटवानी स्त्री, चितारानि स्त्री, भगतांणी, अतीताणी विगेरेने पण जुवेछे, एवीरीते कवीराज सोदागर बनी घोडा लेवाना मसथी महाराजानी आज्ञाप्रमांणे कांम बजावी आपनार कोइपण जातिनी सखीने शोधेछे. ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

लए बाज दस बीस, भए दस द्वादसही दिन ॥
पठवन पत्र प्रवीन, मतो सोधत नितही मन ॥

गुनगहीर कवि सूनु, उक्तिवर नाम कहाये ॥
सोय सहर निरखंत, गली उनहीं चढि आये ॥
बूझंत तास सु कवि सुनें, नाम धाम निरधार किय ॥
परसे सु आय सिविका सु तजि, उन आसन सनमान दिय

अर्थ. भारतीनंद कवीए दश वीश घोडा खरीद कर्या, अने तेने दस वार दिवस थइ गया (पण लाग फाव्यो नहीं,) कळाप्रवीणने पत्र पहोचाडवानी युक्तीओ हमेशां पोताना मनमां शोध्या करेछे, एवामां एक दीवसे गुणगंभीर कवीना दीकरा उक्तिवर नामना कवी शेहेरमां सेहेल करता करता ज्यांहां भारतीनंद कवी उतरेला छे ते गलीए चडी आव्या पूछ परछ करतां तेने कवी मालम पड्या, जेथी तेना नाम तथा गामनो निश्चय करीने पालखीमांथी उतरी भारती नंदने आवी मळ्या, एटले भारतीनंदे घणां सन्माननी साथे तेने आसन आप्युं. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

बूझ्यो तितही उक्तिवर, भारतिनंद सु भेव ॥
कहो सिधारत आप कित, कछु कारन कहि सेव ॥ ८ ॥

अर्थ. त्यांहां उक्तिवर कवीए भारती नंद कवीने एवो भेद पूछ्यो के आप क्यांहां सधावोछो ते कहो अने अम सरखुं कांइ काम काज सेवा फरमावो ॥ ८ ॥

उत्तर भारतिनंद दिय, कहि सेवन कछु काज ॥
बाज खरीदन पठहिय, रससागर महराज ॥ ९ ॥

अर्थ. त्यारे भारतीनंदे जवाब दीधोके काम काज तथा सेवा विशे आपनी मेहेरबानी जोइयें आहींतो केवळ घोडानी खरीदी करवासारुज महाराजा रससागरे अमने मोकल्याछे. ॥ ९ ॥

कही भारतीनंद कवि, बाज खरीदन बान ॥
बूझ्यो तब फुनि उक्तिवर, परखन अश्व प्रमान ॥ १० ॥

अर्थ. भारतीनंद कवीए घोडा खरीद करवानी वात कही एटले पछी उक्तिवरे घोडानी परीक्षानुं प्रमाण पुछ्युं ॥ १० ॥

अथ उक्तिवरोक्त ॥ छंद चंद्रायणा ॥

उत्तम मध्यम नीच कनिष्ट कहाइयें ॥ किहि जनपद उतपन्न शुद्ध सु बताइयें ॥ द्विज छत्री अरु वैश शुद्र क्यों जानियें ॥ क्योंसु भये उतपन्न आदि अनुमानियें ॥ अंग रंगकी खोटि किती बिधकी कहें ॥ भ्रमरिकानके भेद अशुभ को अंगहे ॥ सुभग रंग शुभ भृंग किते तन लेखीयें ॥ सदा व्याधि अभिधान सु कोंन परेखीयें ॥ ११ ॥

अर्थ. उत्तम, मध्यम, नीच अने कनिष्ट कोने कहीए ते कहो? तेमज कया देशमां उपजेला घोडा शुद्ध अने सरस कहेवायछे तेपण वतावो? ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अने शूद्र एवी जातिना घोडा केवा लक्षणथी जाणीए अने तेओ शेमांथी उत्पन्न थयाछे ते जाणवानुं अनुमान कहो? शरीरना रंगनी खोट केटला प्रकारनी कहेवायछे अने भमरीओ पडवाथी कया कया अंग अशुभ गणायछे ते कहो? शरीरमां कया कया रंग तथा कये ठेकाणे भमरी पडी होय ते सारी गणायछे ते कहो? हमेशां घोडाओमां थता रोगनां नाम तथा ते रोगोनी परिक्षा करवानुं ते पण कहो ॥ ११ ॥

॥ अथ भारतीनंदोक्त दोहा ॥

शालिहोत्र रुषिराज कृत, अश्वन भेद अपार ॥
जो बूझत तुम उक्तिवर, कहुं संछेप उदार ॥ १२ ॥

अर्थ. उक्तिवरना प्रश्नना जवाबमां भारतीनंद कहेछे के रुषीराजना

कोमेला शालीहोत्र ग्रंथमां घोडानी परिक्षाना घणा भेदछे, पण हे? उ-
क्तिवर कवि, आपे जे पूछ्युं तेविशे हुं टुकी मतलबमां थोडी एक हकी-
कत कहुं ते (सांभळो.) ॥ १२ ॥

अथ अश्व उत्तमादि चत्र जाति भेद ॥ छप्पय ॥

ताज तुलान तुपार, यहैं उत्तम जानो सहि ॥
गोगक अरु केकान, पट्टिहारी मध्यम कहि ॥
राजसलथ सामजा, उत्तरा नीच कहावें ॥
सिंधुपार सावरा, गोहोर कानिष्ठ बतावें ॥
चत्र जाति भेद द्वादश भए, अनि जनपद मिश्रित रहे ॥
कीजें परेख लीजें सु हय शालिहोत्र औसें कहे ॥ १३ ॥

अर्थ. ताज, तुलान, तुखार ए उत्तम पंक्तीनाछे, गोगक, केकान
अने पट्टिहारी ए मध्यम पंक्तिना कह्याछे, राजसलथ, सामजा अने उत्तरा
ए नीच पंक्तिना केहेवायछे, सिंधुपार, सांवरा अने गोहोर ए कनिष्ट पं-
क्तिना, एवीरीते चार पंक्तिना घोडाना बार भेद थया, तेओमां बीजा
देशना पण मिश्रित रह्याछे, ते माटे परिक्षा करीने घोडा लेवा एम
शालीहोत्र कहेछे. ॥ १३ ॥

अथाश्वचतुर्वर्णोद्भव परिक्षा भेद ॥ छप्पय ॥

जल उद्भव द्विज पुप्प, गंध मंगल असवारी ॥
अग्नि छत्र तन अगर, कलह चढियत जयकारी ॥
मरुत वेस घृत गंध, सहज गमन सुखदाई ॥
भूमि शूद्र मधु मकर, यहैं आखेट उपाई ॥
मुख बोरि ब्रह्म पानी पियत, खुर लगाय खत्री लहें ॥
संचंत चार वैशहु अधुर, शूद्र सदा डरपत रहें ॥ १४ ॥

अर्थ. जळमांथी उपजेलो होय ते ब्राह्मण जातिनो घोडो अने तेना शरिरनो सुगंध फूलना जेवो होय अने ते मंगळीक काममां स्वारी करवाथी सारा फळने आपे, अग्निमांथी उपजेलो होय ते क्षत्री जातिनो घोडो, तेना शरीरनो सुगंध अगरना जेवो होय अने ते लडाइमां चडवाथी जय आपे, पवनमांथी उपजेलो होय ते वैश्य जातिनो घोडो, तेना शरीरनो सुगंध घीना जेवो होय अने ते सेज काममां स्वारी करवाथी सुखने आपे, जमीनमांथी उपजेलो होय ते शूद्र जातिनो घोडो, तेना शरीरनो सुगंध मघरमच्छना जेवो होय अने ते शीकारमां चडयाथी सारुं फळ आपे, (वळी पांणी पीती वखते तेनी जातिनी, खबर पडेछे ते आप्रमाणे) म्होढुं बोळीने जे पाणी पीए ते ब्राह्मण जातिनो खुरी लगावीने (खडताळ नाखीने) जे पाणी पीये ते क्षत्री जातिनो, होठवते पाणीने खेंचीने पीऐ ते वैश्य जातिनो अने हमेशां पाणी पीतां जे डरतो रहे ते शूद्र जातीनो ॥ १४ ॥

॥ अथाश्व अंग खोट भेद छंद हाकली ॥

करन तीनि त्रीकरन कहें ॥ बिकराली रद बिपम वहें ॥
जिहि दंता बढि घटि बरनें ॥ रद भंगा तिहि हय सु भनें॥
अहि आकार धरनि निरखें ॥ अहि मूसल्य तुरग परखें ॥
फरकें अंग सु अशुभ सदा ॥ अधकेशं इत उत दुखदा ॥
जिहि कंठ वृप सम कुमुरा ॥ सुरगी तास सु अतिहि बुरा॥
थन सो बाज कहत थनही ॥ यह एकंड वृपन इकही ॥
उरधा पुंछ असव चमरी ॥ यह एकादश प्रकृति बुरी १५

अर्थ. जे घोडाने त्रण कान होय तेने त्रिकर्ण कहेछे अने जेना दांत विकाळ होय तेने विषम कहेछे, जेना दांत वधता घटता होय तेने रदभंग कहेछे, जे सर्पने आकारे थइने जमीनने जुवेछे तेने अहिमुशल्य

कहेछे, जेनुं हमेशां अंग फरकेछे, तेने अशुभ कहेछे, जेने आगळ पाछळ अथवा मोवाळा होय तेने दुःखद कहेछे, जेने कंठे वळदनी माफक कामळी होय तेने सुरगी कहेछे अने ते घणोज अनिष्टछे, जेने थन (आंचळ) होय तेने थनही कहेछे, जेने एक वृषण होय तेने एकांड कहेछे, अने जेनुं पुंछडुं उंचु रहेतुं होय तेने चमरी कहेछे, ए स्वभावथीज अगीयार जातनी खोट बुरी समजवी. ॥ १५ ॥

॥ अथ अश्वरंग खोटी भेद ॥ छंद रोला ॥

श्वेत रंग चत्र पाय, शाम जमदूत सु आंखें ॥ भस्म रंग तन रसन, सोय भस्मी सहि भाखें ॥ एक रंग अनि रंग विंदु पुष्पाक्ष कहावे ॥ सर्व रंग मिल विंदु, सोय मिश्रांग बतावे ॥ असित तालु जिहि सोय, कृष्न तालु लखि लीजें ॥ सेत रंग मुख शाम, काल मुख सोय कहीजें ॥ ओर रंग दाहिनो, पाय इक सेत सु मूशल ॥ ओर रंगमें जंघ, शाम सो कहे अमंगल ॥ आनि रंगमें लाल, टीक सो अरुनंजन कहि ॥ आनि रंगमें टीक, शाम सो कालंजन वहि ॥ आनि रंग सित टीक, सेतअंजनी सु जानो ॥ एन टीक अनि रंग, पद्मअंजनि बखानों ॥ श्वेत तिलक बिच अंत्र, तिलकतूटह वह ठाने ॥ बाय दांय अधरंग, आनि अधअंगी माने ॥ ओर रंग चत्र पाय, सेत कंचुकी कहत तिहि ॥ ओर रंग वह मगट, डोर शीशतें पुंछ जिहि ॥ अरुन रंग सित विंदु, पुहुप कच्छी वह धारे ॥ एक रंग आननी ताय तामर सु विचारे ॥ आनि रंग इक सेत, अग्रनासा सो दूतहि ॥ बाज अंगमें रंग, खोट इन ईश यहैं कहि ॥ १६ ॥

अर्थ. जे घोडाना शरीरनो रंग धोळो होय अने चारे पग काळा होय तेने समदूत कहेछे, जेना अंग तथा जीभनो रंग राखना जेवो होय तेने भस्मी कहेछे, जेना शरीरनो एकज रंग होय अने तेमां बीजा रंगनुं बिंदु (तवकुं) होय तेने पुष्पाक्ष कहेछे, जेने शरीरे सर्व रंगना बिंदु होय ते मिश्रांग कहेवायछे, जेना ताळवानो रंग काळो होय तेने कृष्णताळु कहेछे, जेना शरीरनो रंग सपेत अने म्होढानो रंग काळो होय तेने काळमुख कहेछे, जेना शरीरनो रंग जूदो होय अने फकत एक डावा पगनो रंग सपेत होय तेने मुशळ कहेछे, जेना शरीरनो रंग जुदो छतां एक जांघज काळी होय ते अमंगळ कहेवायछे, जेना शरीरनो रंग बीजो होय अने लाल रंगनुं टीलुं होय तेने अरुणांजन कहेछे, जेना शरीरनो रंग जूदो छतां काळा रंगनुं टीलुं होय तेने काळंजन कहेछे, जेना शरीरनो रंग बीजो होय अने टीलुं सपेत होय ते श्वेतांजन कहेवायछे, जेना शरीरनो रंग बीजो होय ने काळीयार मृगना जेवो टीलानो रंग होय तेने पद्मांजन कहेछे, सपेत टीलानी वचे अंतर होय तेने तीलकतूट कहेछे, डावी अने जमणी बाजुए जूदा जूदा रंग होय तेने अर्धांगी कहेछे, जेना शरीरनो रंग जूदो होय अने चार पगनो रंग सपेत होय तेने कंचुकी कहेछे, जेना शरीरनो रंग बीजो होय अने माथाथी पुंछडा सुधी डोर (काळोशेढ) होय तेने मगट कहेछे, जेना शरीरनो लाल रंग होय अने धोळा रंगनुं बिंदु होय तेने पहोपकच्छी कहेछे, जेना शरीरनो रंग एक लालज होयछे तेने ताम्र कहेछे, जेना शरीरनो बीजो रंग होय अने एक नाकनी डांडीनो सफेत रंग होय तेने दूत कहेछे, एवीरीते घोडाना अंगना रंग तथा टीला उपरथी शाळीहोत्रमां आ ओगणीश खोटयो कहीछे. ॥ १६ ॥

॥ आथश्व अशुभ भ्रमरिका स्थान भेद ॥ छप्पय ॥

हृदय कंध कटि नाभि, कपोलह बाम कहीजें ॥
कुक्ष पांसु फुनि भाल, त्रिवलि नीचें लखि लीजें

जंघ पुच्छ परि गुह्य, पुच्छ ढंपित गूडह गनि ॥
कुकुदि पृष्ट कुरपेर, पादु उदरंतरही भनि ॥
कक्षांत ओर आधुर अगर, वशि भ्रमर अशुभा कहें ॥
अनुमान खोटि एती सु तजि, लहन हार सिंधव लहें ॥

अर्थ. छातीए, काने, कडे, नाभीए, डावे कपोळे, जडवे, कुखें, पडखें, कपाळे, त्रिवळीनी नीचे, जांघे, पुंछडा उपर, गुह्य इंद्रीए, पुंछडाथी ढंकाएली गुदा इंद्रीए, ककुदीए, (कवे) वांसे, आगला, पगने गोठणे, पगे, पेट वच्चे, काखे अने होठनी आगळ ए वीश ठेकाणे पडेला भमरा अशुभ गणायछे, अनुमानथी एटली खोटो तजीने घोडानी खरीद करनारा घोडा लेछे. ॥ १७ ॥

॥ अथ अश्व सुभग रंग भेद छंद पद्धरी ॥

तन पीत सेत पद नील नैंन ॥ यह चक्र वाक अस श्रेष्ठ चैंन ॥ वपु जंबु रंग पद चंद्र सेत ॥ यह मल्लिकाक्ष फल सुभग देत ॥ सेतंग मध्य सब रंग चित्र ॥ यह सामकर्न सबमें पवित्र ॥ अनि रंग पाय मुख सेत होय ॥ भापंत पंचकल्यान सोय ॥ मुख भाल पुच्छ पद हृद सु कंत ॥ सित अठ अष्ट मंगल कहंत ॥ शुभ रंग पंच एही प्रमान ॥ नृप आसनीक सोधे सयान ॥ १८ ॥

अर्थ. जेनुं शरीर पीळुं, धोळा पग अने नीली आंख्यो होय ते घोडो चक्रवाक केहेवायछे, अने ते श्रेष्ट गणायछे, जेना शरीरनो रंग जांबु जेवो अने पग चंद्रजेवा उजळा होय ते मल्लिकाक्ष केहेवायछे, अने ते सारा फळने आपेछे, जेनुं अंग धोळुं होय अने तेमां बीजा रंगनां जात जातनां चिन्ह होय तेने श्यामकर्ण कहेछे, अने ते सघळा घोडाओथी पवित्र गणा-

यछे, जेना शरीरनो रंग बीजो होय अने पग तथा म्होढुं श्वेत होय तेने पंचकल्याणी कहेछे, जेनां म्होढुं, कपाळ, पुंछडुं, चार पग अने छाती ए आठ अंग धोळां होय ते घोडाने अष्टमंगळ कहेछे, ए पांच रंगी पांच प्रकारना घोडा शुभ अने राजाने बेसवा लायक गणीने शाहाणा पुरुषो शोधी खरीद करेछे. ॥१८॥

अथाश्व भ्रमरीका शुभ स्थान भेद ॥ छप्पय ॥

भाल शुद्व त्रय सुभग, सुभग शशि कला भाल महि ॥
शुद्व कंठ त्रय सुभग, कंठ इक चिंतामनि कहि ॥
कंध परत त्रय सुभग, सुभग दक्षह कपोल पर ॥
श्रवनमूलपें सुभग, सुभग सोहत त्रिवली सर ॥
पुनि तालु सेत मध्यह सुभग, यह नव भृंग निहारीयें ॥
तजि अशुभ भेद शुभ संग्रहें, बाज खरीद बिचारीयें १९॥

अर्थ. कपाळमां त्रण भमरा होय तो ते सारा तेमज चंद्रनी कळा जेवा ऊजळा टीलामां भमरो होय ते सारो, गळा उपर त्रण भमरा होय ते सारा, जेना गळा उपर एक भमरो होय ते श्रेष्ट गणायछे, तेमज तेने चिंतामणी कहेछे, कांध उपर त्रण भमरा पड्या होय ते सारा तेमज जमणा जडबा उपर पडेलो भमरो पण सारो गणायछे, कानना मूळ उपर पडेलो भमरो ते सारो तेमज त्रीवळी उपर पडेलो भमरो सारो समजवो, धोळा ताळवामां पडेलो भमरो पण सारो ए नव ठेकाणे पडेला भमरा जोइने अशुभ लक्षणवाळा घोडाने तजीने सारा लक्षणवाळानो संग्रह करवो, एवीरीतनो सघळो विचार घोडा खरीद करती वखते करवो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

नाभि कंठ गल नासिका, पाय चत्र पर होय ॥

भाल भ्रमरिका तीन सुध, जयमंगल कहे सोय ॥ २० ॥

अर्थ. जे घोडाना नाभि, कंठ, गाल, नाक, अने चार पग एटला उपर तथा कपाळमां पण भमरा होय ते सारा एटलुंज नहीं पण ते घोडाने जयमंगळ कहेछे. ॥ २० ॥

ऐसें भेद अनेकहें, अश्व शुभा शुभ लच्छ ॥
तामहि तत्व सु संग्रहे, कहि दीने परतच्छ ॥ २१ ॥

अर्थ एवीरिते घोडाना सारां अने नरसां लक्षण जाणवाना अनेक भेदछे तेमांथी साररूप भेद एकठा करीने खुल्लि रीते तमने कह्या.॥ २१

अथाश्वसदा व्याधी भेद ॥ दोहा ॥

वोहोंतर व्याधि सु बाज वपु, आनहि आन निदान ॥
विक्रय लहत विचारवी, सो द्वादश अभिधान ॥ २२ ॥

अर्थ. घोडाना शरीरमां वोहेंतेर प्रकारना रोग थायछे तेना जूदां जूदां निदान (कारण) छे, पण घोडा लेती वखते खरीद करनारें तेना मुख्य बार रोग विचारवा जोइए तेनां निचे प्रमाणे नामछे. ॥ २२ ॥

॥ अथ द्वादश व्याध्याभिधान भेद चोपाई ॥

पेट कीट पखशूल कहाई ॥ लोही लघू पित्त अरु वाई ॥
कम खुराक सत पुरपी धांसा ॥ आंसू झरन बार चल नासा ॥ भाल शूल पुनि मुख जल धारा ॥ व्याधि विलोकि खरीदन हारा ॥ २३ ॥

अर्थ. पेटमां जीवडा, पडखामां शूल, लोही मुतरतो होय ते, पित्तविकार, वायु विकार, ओछो खोराक खातो होय ते, शरीरे चळ, धांश, आंसु झरतां होय ते, नाकेथी पाणी झरतुं होय ते, कपाळमां शूळ नीकळ्युं होय ते, अने म्होढेथी पाणी झरतुं होय ते, एरीते खरीद करनारे ए बार मुख्य रोग जोवा जोइए. ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

भारतिनंद कवी कही, विधी परेखन वाह ॥
उर अति रीझे उक्तिवर, निज मुख कीन सराह ॥ २४ ॥

अर्थ. भारतीनंद कवीए घोडा पारखवानी विधी कही ते सांभळीने उक्तिवर कवी पोताना मनमां खुशी थया अने पोताने म्होढेथी भारतीनंदनी केटली एक तारीफ करी. ॥ २४ ॥

॥ गाहा ॥

कवि मनछापुर गमनं ॥ चरचा उभय अश्व भेद विधी ॥
उभय बिंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २५ ॥

अर्थ. भारतीनंद कवीनुं मनंछा पुरीमां जवुं, तेनो उक्तिवर कवि साथे थएलो मीलाप, तथा घोडाना लक्षण संबंधी चर्चा संयुक्त प्रवीण सागर ग्रंथनी बावीशमी लेहेर पूर्ण थइ. ॥ २५ ॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे भारतिनंद उक्तिवर चर्चा अश्व भेदो नाम द्वाविंशतिमो लहरं ॥ २२ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टारमज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां एक विंशम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ टीका कारोक्त तरंग शिखाबंध छंद पद्धरी ॥

कवि जुगल करी नृपद्वार वात ॥ बनिया कवींद पाछि जोगि जात ॥
द्विज प्रश्न प्रति संन्यास भेद, कहि लेर चैविश आ तजि खेद ॥

अथ भारतिनंद उक्तिवर चर्चा प्रसंगो यथा

भारतिनंदोक्त ॥ छप्पय ॥

किते राज संतान, किते अंते दर भाषत ॥

किते द्वार देहुरी, किते अंदर पहिरायत॥
राज सभा कब रचे, कबें परसंत विदेसी ॥
कुमर पास को रहें, कोंन अंतर परवेसी ॥
एते सु भेद कवि उक्तिवर, भिन्न भिन्न भंखो तुमें ॥
परसवे नीतपालह नृपति, हें उमेद हियमें हमें ॥ १ ॥

अर्थ. (हवे भारतीनंद कवि उक्तीवर कवीने आ प्रमाणे पूछेछे,)राजाने संतान केटलांछे? राजाना जनानखानामां परणेली स्त्रीओ केटलीछे? बाहार राखेली स्त्रीओ केटलीछे? दरबारमां केटला दरवाजा अने केटली दोढीओछे? राजदरबारमां चोकी करवा केटला पेहेरेगीर सीपाइओ हाजर रहेछे? राजासाहेब क्यारे सभा रचेछे? परदेशी मुसाफरोने मुलाकात लेवानो कयो वखत ठरावेलोछे? राजकुंवरनी हजूरमां कोण रहेछे अने जनानखानामां जनार आवनार कोणछे? हे? उक्तिवर कवि, एटला प्रश्ननो भेद जूदी जूदी रीते तमे कही बतावो? केमके नीतीपाळ राजानी साथे मिलाप करवानी अमारा मनमां उमेदछे. ॥ १ ॥

॥ छंद पद्धरी ॥

भारतीनंद बूझी सु मोय ॥ संछेप बात बरनों सु सोय ॥
नृप नीतपाल ओतार इंद ॥ माहेश मोज सेना समंद ॥
नरइंद सोर उदवाहि नारि ॥ पुनि पासवानि नृत्तिक अपार॥नंदनी एक नृप एक नंद॥ दुजराज बिंब दीपति दिनंद
॥सुत नाम रुद्रसेनह रसाल ॥ वर रूप कला परवीन बाल
॥दरबार द्वार देहुरी सात ॥ सत पंच पंच पायक रहात ॥
परकार राज गिरदी प्रमान ॥ थित सहस पंच प्रति थान
थान ॥ रवि योस राज सदभा रचंत ॥ बासी बिदेस तिहि

दिन प्रसंत ॥ उमराओ वृंद आवें अमात ॥ नायका नृत्य गायका गात ॥ छवि छौंहगीर नँग जटित छत्र ॥ चिहुं दिशा पासवान सु विचत्र ॥ बोलंत विरद सु कवी सु वान ॥ जेष्टीसुधार निज थान जान ॥ दिन चत्र घरी मंडल रचंत ॥ जामनी जाम अध वीश्रजंत ॥ देहुरी सात लंघित भुआल ॥ वहें कोन पुरुष अभिधान बाल ॥ ता अंत्र फेर देहुरी तीन ॥ पहिरात राज किंकरी कीन ॥ उनहीं सु शस्त्र बंधे अखंड ॥ पहिराव पुंस मूरति प्रचंड ॥ २ ॥

अर्थ. हे? भारतीनंद कवि, आपे जे वात मने पुछी तेनुं टुंकी मतलबमां वर्णन करुंछुं ते सांभळो. नीतपाळराजातो इंद्रनो अवतारछे, तेनी उदारता महादेवना जेवीछे, तेनी फोज समुद्रना जेवी गंभीर अने अपारछे, महाराजा नीतपाळने परणेली सोळ राणीओछे, पासे रहेवावाळी नाच करनार नायकाओनो तो पार नथी, संतानमां एक कुंवरी अने एक कुंवरछे ते चंद्र बिंब अने सूर्य बिंब जेवां शोभायमानछे, कुंवरनुं रुद्रसेन अने सुंदर रूपवाळी कुंवरीनुं कळाप्रवीण एवुं नामछे, दरबारमां सात दोढीओछे, अने दरेक दोढीए पांचसे पांचसे शीपाइओ रहेछे, राजगढने फरता ठेकाणे ठेकाणे पांच पांच हजार योधाओ चोकी करेछे, रवीवारने दिवसे महाराजा सभा भरेछे, ते दिवसे परदेशी लोकोने मुलाकात थायछे, सभामां अमीर उमराओ तथा कारभारिविगेरे जथावंध आवी बेसेछे, नायकाओ आवीने नाच करेछे अने गायन करनारा गायन करेछे, तेवखते महाराजाना उपर छत्र धरनार चळकता नंगोथी जडेलुं छत्र धारण करेछे, तेमज चारेतरफ हजुरीओ उभा रहेछे, भाट चारणादि बंदीजनो तथा कविओविचित्र वचनथी स्तुति करेछे, अने चोपदारो छडीओ हाथमां लेइने अदब प्रमाणे पोत पोताने ठेकाणे उभा रहेछे, पाछलो चार घडी

दिवस होय ते वखतथीज सभा भरावानो आदर थायछे अने ते सभा अस्त पहोर रात्री गया पछी विसर्जन थायछे, आ राजाना दरवारगढनी सात दोढीओनुं उलंघन करीने अदर जइ शके एवो कोण जमामर्द पुरुषबच्चोछे? अर्थात् पुरुष नाम धारी छोकराथी पण जइ शकाय तेम नथी. त्यांहांथी आगळ माहेलीकोरना दरवारमां पण पाछी त्रण दोढीओछे, त्यांहां राजानी दासीओ पेहेरो करेछे, अने तेओए सघळां हथीआरो बांधेलांछे तेमज पुरुषना जेवो पोषाक पेहेरेलोछे, तेथी तेओना चेहेरानो देखाव पुरुषनाथी पण घणोज भयंकर दीसेछे. ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

रुद्रसेन महराज निज, महलन करत बिहार ॥
आवृत निज सम शत उभय, कवि उमराओ कुमार ॥ ३

अर्थ. पोताना सरखा बसे अमीर उमराओ तथा कवीओना कुंवरोथी विंटाएला रुद्रसेन कुंवर पोताना मेहेलमां रमण करेछे. ॥ ३ ॥

॥ चोपाई ॥

कुमरी कलाप्रवीन कहावे ॥ राज सुता आवर्त्त रहावे ॥
शील रूप कुल वेस सहेली ॥ बाल जूथ जौंबुनद बेली ॥
क्रीडत बाग एकंत अटारी ॥ कहिं हजूर एक ब्रह्म कुमारी ॥
एती बात उक्तिवर भाखी ॥ भारतिनंद भेद उर राखी ४

अर्थ. महाराजानी कुंवरी जे कलाप्रवीण कहेवायछे ते हमेशां पोताना बरोबर राजकुंवरीओनां मंडळमां रहेछे, स्वभाव, रूप, कुळ अने अवस्थाथी सरखे सरखी साहेलीओना टोळामां ते(जंबुनदीमांथी उपजेला) सोनानी बेल्य जेवी दीसेछे, ते कोइ वखते बाग बगीचामां अने कोइ वखते एकांत स्थळनी मेडीमां रमण करेछे, ते कळाप्रवीणनी हजुरमां एक ब्राह्मणनी पुत्री रहेछे, एटली वात उक्तीवरे कही देखाडी तेनो सघळो

भेद भारतीनंद कवीए पोताना मनमां द्रढ करी राख्यो. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राज रीत अनुमान किय, पतंगन पावे पार ॥
भारतिनंद अनंदभो, सुनियत ब्रह्मकुमार ॥ ५ ॥

अर्थ. अनुमान करीजोतांतो पोताना मनमां एम थयुंके राजरीतना पारने सूर्य पण पामी शके तेम नथी परंतु एक(कळाप्रवीणनी हजुरमां) ब्राह्मणनी पुत्री रेहेछे, एवुं साभळीने भारतीनंदने आनंद थयो. ॥ ५ ॥

चतुरानन निहचें किये ॥ कुसुमावलि अभिधान ॥
एतेमें उठि उक्तिवर ॥ आयस लई पयान ॥ ६ ॥

अर्थ. भारती नंदे चतुरानन ब्राह्मण तथा तेनी पुत्री कुसुमावळीना नामनो पोताना मनमां निश्चय करी राख्यो एटलामां उक्तिवर कवीये उठीने जवानी आज्ञा लीधी. ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

वही रेंन बरतंत, चित्त कविराज मतो किय ॥
अनुग मित्र आमात, अवहमोचन सिच्छा दिय ॥
कह्यो सिद्ध परछंन, बसत तित भो हम जावन ॥
सोय जोग आयसा, होय व्हेंगो इत आवन ॥
इतनी उचारि आराम किय, अंत जाम निश उठि शयन॥
निज साज मतेवत संग लिय, एकाकी किनो गमन ॥ ७ ॥

अर्थ. ते दिवसनी रात थइ एटले कवीराजे पोताना मनमां मनसुबो कर्यो अने नोकरो, मित्रो तथा कारभारीओने एकठा करीने तेओने पोताना उतारामां शिखामण आपी अने कह्युके एक सिद्ध गुप्त स्थळे रहेछे, तो त्यांहा मारे जवानु थशे अने वळी ज्यारे ते जोगीनी आज्ञा थशे त्यारे

पाछु आंही आववानुं थशे, एटली वात कहीने पोते सज्यामां आराम कर्यो. पछी पाछली एक पहोर रात रही त्यारे जागृत थइ पलंग उपरथी उठ्या अने पोताने जोइती सामग्री साथे लइने एकाएक चाली नीसर्या. ॥ ७ ॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

उठे निश जाम रहे कविराज ॥ लियो निज संग मतेवत साज ॥ प्रकार सु खोलित रच्छक द्वार ॥ गये इक कोस इकंत उजार ॥ महा सरिता जल मंजिय अंग ॥ रच्यो नखसीख बिभूतिय रंग ॥ त्रिपुंड सु केसर बंदन बिंद ॥ दिये उर मध्य वढ्यो सु अनंद ॥ अछादन अंबर ओर कुपीन ॥ करं मधि दंड कमंडलु लीन ॥ कस्यो कटिबंध सु मेखल धार ॥ लई कर सिंगिय किन्नरि लार ॥ उचारत तार सु अंचल हाथ ॥ मनों नवसें निकसे इक नाथ ॥ धरे अवतंसन एन अजीन ॥ चले पुर कंन्यक होय अचीन ॥ प्रवेशन प्रात कियो पुर ताम ॥ गली चतुरानन बूझिय धाम ॥ सु पुग्गिय बूझत बूझत पोर ॥ उतैं द्विज मंडल हें चहुंओर ॥ दियो दुज आसन तापस वंद ॥ उच्चारित जोग सु आशिष छंद ॥ तबें चतुरानन बूझिय बात ॥ रहो कित आप कितें लगि जात ॥ ८ ॥

अर्थ. एवी रीते पाछली एक पहोर रात रहेतां उठीने कवीराजे पोताना उपयोगनो जोगतो सामान साथे लीधो अने दरवाणीए दरवाजो उघाड्यो ने चलते शेहेर बाहार नीकळीने एक गाउ उपर उजाड हती त्यांनी एकांत स्थळे गया, त्यांहां एक मोटी नदीना पवित्र पाणीथी अंगे

स्नान करीने नखथी केश पर्यंत बिभूतीनो रंग चडाव्यो, कपाळमां केसरनुं त्रिपूंडू करीने सिंदोरनी बनकी करी, एम करवाथी पोताना हृदयमां आनंद वधी गयो, ओढवाने वास्ते एक चदर राखीने कोपीन पेहेरी, पछी हाथमां दंड कमंडळ लीधां, कटीबंध कसीने कटिमेखळा धारण करी अने बीजा हाथमां शींगडी, बजाववानी किन्नरी तथा अंचळो राखीने उंकारनो उच्चार करवा लाग्या, ते जाणे नवनाथमांथी एक नाथ प्रसिद्ध नीकल्या होयनै? एम दीसवा लाग्युं; कानमां कुंडळ पेहेरीने मृगचर्म धारण कर्युं कोइ ओळखी न शके एवीरीते निश्चित थइ अवधूतनो वेष करी वनमांथी शेहेर तरफ चाल्या सवारना पहोरमांज पाछो ते शेहेरमां प्रवेश कर्यो अने चतुरानन ब्राह्मणनी गलि तथा तेना घरनुं ठेकाणुं पूछवा लाग्या, पूछतां पूछतां तेनी प्रोळमां पहोच्या, ए प्रोळमां चारे तरफ (ब्राह्मणोनां मंडळ वसेछे तेथी) त्यांहां बेठेला ब्राह्मणोए तपसीने वंदन करीने आसन आप्युं, जेथी जोगीए जोगनी रीत प्रमाणे छंद बोलीने आशिर्वाद दीधो, त्यारे (तेमां बेठेला) चतुराननेज आवी रीते वात पुछी के हे? महाराज, आप क्यांहां रहोछो अने क्यांहां सुधी जाओछो? ॥ ८ ॥

॥ अथ संन्यास्युक्त दोहा ॥

रहैं ब्रह्मकी सृष्टिमें, चहैं ब्रह्मको ध्यान ॥
कहाजानें कित जाइगें, प्रेरनहार प्रधान ॥ ९ ॥

अर्थ. सिद्धे कह्युंजे ब्रह्मनी सृष्टीमां रहीए छीये अने ब्रह्मना ध्याननें चाहाइए छीइए, शुं जाणीए जे क्यांहां जाशुं, कारण के जावा आववानी प्रेरणा करवा वाळा मुख्य परब्रह्मछे. ॥ ९ ॥

॥ अथ चतुराननोक्त दोहा ॥

आमना सु मठ संप्रदा, पद अरु क्षेत्र प्रकास ॥
देव देवि आचार्यको, तिर्थ किते संन्यास ॥ १० ॥

अर्थ. (त्यारे चतुरानन ब्राह्मणे प्रश्न पूछ्युं के) सन्यासीना आ

म्नाय केटलाछे? अने तेनां नाम शुंछे? मठ केटलाछे? अने तेनां नाम शुंछे? तेमज संप्रदायनी शी रीतछे? पद अने क्षेत्र ते पण प्रसिद्ध कहो? तेमज देव देवी आचार्य कोणछे? अने तीर्थ केटलांछे ते अनुक्रमे कहो. ॥ १० ॥

॥ अथ संन्यास्युक्त षड्विध संन्यासाम्नाय भेद छप्पय ॥

पाश्चिमामना प्रथम, मठह शारदा उचारे ॥
कीटवार संप्रदा, तीर्थ आश्रम पद धारे ॥
क्षेत्र तास द्वारिका, देव सिद्धेश्वर आरय ॥
देवि भद्र कालिका, ब्रह्म विष्नु आचारय ॥
गोमती गंग तीरथ सु तिहि, एसें इष्ट उपाइयें ॥
संन्यास कहे द्विजवर सुनो, सहि विधि सिद्धि सु पाइयें ११

अर्थ. सिद्ध कहेछे के पेहेलो पश्चिमआमनाय अने तेनो शारदा मठ कहेछे, कीटवार एवुं संप्रदायनुं नामछे अने ते मठना शिष्यो तीर्थ अने आश्रम एवा पदने धारण करेछे तेनुं द्वारिका क्षेत्रछे अने देव सिद्धेश्वरछे, तेनां भद्रकाळी देवी अने ब्रह्मा विष्नु आचार्यछे त्यांहां गोमती गंगानुं तीर्थछे, संन्यासी कहेछे के हे? ब्राह्मणमां श्रेष्ठ चतुरानन सांभळो के एवीरीते सघळी बाबत जाणीने इष्टदेवनी उपासना करीए तो सारी रीतथी सिद्धि पामीए. ॥ ११ ॥

द्वितिय पूर्व आमना, भोग गोवर्धन मठ भनि ॥
भोगवार संप्रदा, उनह पद बन अरु आरनि ॥
तिहि पुरुषोत्तम क्षेत्र, देवता जगन्नाथ तित ॥
विमल शक्ति बलभद्र, पद्म आचारय भाषित ॥
तीरथ महोदधी तित महत, एसें इष्ट उपाइयें ॥
संन्यास कहे द्विजवर सुनो, सहि विधि सिद्धि सु पाइयें १२

अर्थ. बीजो पूर्व आम्नाय अने तेनो गोवर्धन मठ कहेवायछे, तेनो भोगवार एवा नामनो संप्रदायछे अने त्यांहांना शिष्यो वन अने आरण्य एवा पदने धारण करेछे, त्यांहां पुरुषोत्तम क्षेत्र अने जगन्नाथ देवताछे, विमळ शक्ति अने बळभद्र तथा पद्माचार्य एवां आचार्यनां नामछे, त्यांहां महोदधिनुं (महासागरनुं) म्होटुं तीर्थछे, सन्यासी कहेछे हे? ब्राह्मणमां श्रेष्ट चतुरानन, सांभळो के एवी रीते सघळी वात जाणीने इष्टदेवने भजीए तो सेहेलाइथी सिद्धिने पामीए. ॥ १२ ॥

उत्तरामना त्रितिय, तास जोयसी मठह वद ॥
अनंद वार संप्रदा, गिरी सागर पर्वत पद ॥
क्षेत्र बद्रिका श्रमह, तहाँ दैवत नारायन ॥
पूरन गिरि मात्रिका, मल्लिकानंद नाथ भनं ॥
तीरथ नियंत भाषंत तित, एसें इष्ट उपाइयें ॥
संन्यास कहे द्विजवर सुनो, सहि विधि सिद्धि सु पाइयें १३

अर्थ. त्रीजो उत्तर आम्नायछे अने तेनो जोशी मठ कह्योछे, आनंदवार एवुं संप्रदायनुं नामछे अने त्यांहांना शिष्यो गिरि, सागर अने पर्वत एवा पदने धारण करेछे, त्यांहां बद्रिकाश्रम क्षेत्र अने नारायण देवताछे, पूर्ण गिरि देवी अने मल्लिकानंदनाथ एवुं आचार्यनुं नामछे, ते स्थळने नियंता तीर्थ कहेछे, सन्यासी कहेछे के हे? ब्राह्मणमां श्रेष्ट चतुरानन ब्राह्मण, सांभळो के एवीरीते जाणीने इष्टदेवनी उपासना करीए तो सारी रीतथी सिद्धिने पामीए. ॥ १३ ॥

तुर्य दच्छिनामना, तहाँ सिंगेरि मठ सुखद ॥
भूरिवार संप्रदा, पुरी भारति सरसति पद ॥
श्रं[illegible] रामेश्वर क्षेत्र, देव वाराह बसत जित ॥

कामाक्षा मात्रिका, नाथ शृंगी तापस तित ॥
भद्रेति तीर्थ राजे तहाँ, एसें इष्ट उपाइयें ॥
संन्यास कहे द्विजवर सुनो, सहि विधि सिद्धि सु पाइयें १४

अर्थ. चोथो दक्षिण आम्नाय अने तेनो सुखदायक शृंगेरी मठछे, भूरीवार एवुं संप्रदायनुं नाम छे, अने त्यांहाना शिष्यो, पुरी, भारती अने सरस्वती एवा पदने धारण करेछे, ज्यांहां रामेश्वर एवा नामनुं शुभ क्षेत्र अने वराह देवता वसेछे, त्यांहां कामाक्षी देवी अने शृंगीनाथ ए नामना तपस्वी आचार्यछे, त्यांहां भद्र तीर्थ शोभेछे, सन्यासी कहेछे हे? ब्राह्मणमां श्रेष्ट चतुरानन, सांभळो के एवी रीत जाणीने इष्टदेवनी उपासना करीए तो सारी रीतथी सिद्धिने पामीए. ॥ १४ ॥

पंचम उर्ध्वामना, तहाँ मठ मेरु कहावे ॥
देहकाशि संप्रदा, ज्ञान पद ताय बतावे ॥
कहे क्षेत्र कैलास, तत्र देवता निरंजन ॥
माया देवी तहाँ, इश्वरह आचारय इन ॥
तीरथ सु मनह सरवर तहाँ, एसें इष्ट उपाइयें ॥
संन्यास कहे द्विजवर सुनो, सहि विधि सिद्धि सु पाइयें १५

अर्थ. पांचमो उर्ध्वाम्नाय अने तेनो मेरु मठ कहेवायछे, देहकाशी, एवुं संप्रदायनुं नामछे अने त्यांहांना शिष्योनु ज्ञान एवा नामनुं पद कहेछे, कैलास क्षेत्र अने निरंजन देवताछे, महा माया देवी अने तेना इश्वर आचार्यछे, ते स्थळे मानसरोवर तीर्थछे, सन्यासी कहेछे के हे? ब्राह्मणमां श्रेष्ट चतुरानन, सांभळो के एवी रीते जाणीने इष्टदेवनी उपासना करीए तो सारी रीतथी सिद्धिने पामीए. ॥ १५ ॥

षष्ठम अथ आमना, परम आत्मा मठ माने॥

पर संतोष संप्रदा, जोग एकें पद जाने ॥
मनहसरोवर क्षेत्र, देव प्रमहंसा ताही ॥
मनसा देवी तत्र, नाथ चेतना वहाँही ॥
त्रिकुटी कहंत तीरथ तहाँ, एसें इष्ट उपाइये ॥
संन्यास कहे द्विजवर सुनो, सहि विधि सिद्धि सु पाइयें १६

अर्थ. छठ्ठो अथो आम्नाय अने तेनो परमात्मा मठ मानेछे, परम संतोष एवुं संप्रदायनुं नाम अने त्यांहांना शीश्यो जोग एवा नामना एकज पदने धारेछे त्यांहां मनरूपी तळाव तेज क्षेत्रछे अने तेना परमहंस देवताछे, मनसा देवी अने चेतनानाथ आचार्यछे, त्यांहां त्रिकुटी (इडा-पिंगला सुषुम्णा) नामनुं तीर्थछे, सन्यासी कहेछे हे? ब्राह्मणमां श्रेष्ठ चतुरानन, सांभळो के एवीरीतथी जाणीने इष्टदेवनी उपासना करीए तो सारी रीतथी सीद्धिने पामीए. ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

बरनी सह बिस्तार, संन्यासी संन्यास बिधि ॥
पूजन पंच प्रकार, द्विज कीनो शुभ लच्छ लखि ॥ १७ ॥

अर्थ. आवीरीते सन्यासीये सन्यासनी सर्व विधि विस्तारीने कही संभळावी, ते सांभळीने प्रसन्न थएला चतुरानन ब्राह्मणे तेनां सारां लक्षण जोइ पांच प्रकारना उपचारथी पूजा करी. ॥ १७ ॥

अशन कराय, पुनि पूंगीफल पान दिय
न दियो जमाय, द्वारांदर एकंत ग्रह ॥ १८ ॥

अर्थ. पछी जातजातनां स्वादिष्ट अन्नथी भोजन करावीने पान, सोपारी आप्यां, वळी पोतानी डेलीनी माहेलीकोर एकांत घरमां सन्यासीने आसन रचिआप्युं. ॥ १८ ॥

॥ गाहा ॥

कवि संन्यास स्वरूपं ॥ जोगामना चत्रमुख चर्चा ॥
त्रयहविंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ १९ ॥

अर्थ. कवीए सन्यासीनुं रूप लइने चतुरानन ब्राह्मण साथे करेली योग आम्नाय विगेरेनी चरचा संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी त्रेवीशमी लेहेर संपूर्ण थई. ॥ २३ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कवि चतुरानन चर्चा संन्यास भेदो नाम त्रयो विंशतिमो लहरं ॥ २३ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां त्रयो विंशम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ टीका कारोक्त तरंग शिखाबंध छंद ललित ॥

कुसुमने कवी भेटीया भळी ॥ रसिक रागणी गाइ त्यां गळी ॥
प्रथम प्रेमनी वातडी कही ॥ चतुर वीशमी लेरमां सही ॥

॥ अथ कवि कुसुमावलि चर्चा प्रसंगो यथा ॥ चोपाइ ॥

उन आसन संन्यास जमायो ॥ उन दिन बीत प्रात पुनि आयो ॥ प्रनव पढंत गुनवती फेरे ॥ कुसुमावलि संचर चख हेरे ॥ १ ॥

अर्थ. हाल्यां एकांतना घरमां सन्यासीए आसन जमाव्युं,पछी ते दिवस वीती गयो अने बीजा दिवसनुं सवार थयुं तेथी सन्यासी ॐकार मंत्र भणी माळा फेरवेछे, अने चंचळ आंख्योथी कुसमावळीना रस्ताने जोया करेछे. ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

एतेमें कुसुमावलि, आयस लई प्रवीन ॥
फंदन चढि ग्रह गमन किय, संग कुजाक सु लीन ॥ २ ॥

अर्थ. एटलामांतो कुसुमावळिए कळाप्रवीणनी रजा मागी अने रथमां बेशी साथे पाळा लेइने घर तरफ गमन कर्युं. २ ॥

रथ कुजाक रहे देहुरी, निज ग्रह गई कुमार ॥
अशन कीन उठियत लष्यो, उन संन्यास अगार ॥ ३ ॥

अर्थ. रथ, तथा पाळा दोढीए रह्या अने ब्रह्म कुमारी पोताना घरमां चाली गइ, तेणे जमी उठ्या पछी ते सन्यासीवाळा घर तरफ जोयुं. ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

ब्रह्मनि जोगि निहार, पुच्छिय निज परिवार प्रति ॥
उन सह कही उचार, ईश रूप संन्यास इत ॥ ४ ॥

अर्थ. त्यांहां कुसुमावळी जोगीने जोइने पोताना कुटंब परिवारने पूछवा लागी, (जे आ कोणछे) त्यारे तेओए इश्वर रूप सन्याशी आहीं उतर्याछे एवो जबाब आप्यो. ॥ ४ ॥

गई सु बंदन ताय, उर विशेष आनंद भरि ॥
संन्यासी सुख पाय, रूप हेर निज मन रहे ॥ ५ ॥

अर्थ. आ वात सांभळतांज मनमां आनंदथी भरपूर थएली कुसुमावळी ते स्वामीनुं वंदन करवा गइ, संन्यासी पण पोताना मनने हरे एवुं कुसुमावळीनुं स्वरूप जोइने खुशी थया. ॥ ५ ॥

उन पद बंदन कीन, उन छंदन आशिष दई ।
भव रिपु तापस भीन ॥ कुसुम सु चली प्रवीन प्रति ॥ ६ ॥

अर्थ. कुसमावळीए तेना पगनुं वंदन कर्युं एटले स्वामीए तेने वेदमं-

अधी आशिर्वाद आप्यो, पछी कामदेवना तापथी भींजाएली कुसुमावळी कळाप्रवीण तरफ चाली नीसरी. ॥ ६ ॥

॥ चोपाई ॥

इहि विधि ब्रह्मसुता नित आवे ॥ अशन बिसर्ज जोगि प्रति जावे ॥ वंदन करि नृप द्वार सिधावे ॥ तापस समथ इकंत न पावे ॥ वात बृतंत कौंन प्रति बूझे ॥ आप चिंत संन्यास अरूझे ॥ वासर यों चत्र पंच बिहाये ॥ तापस एह मतो मन लाये ॥ अहर ब्रह्म चरचाह उपावे ॥ आध निशा आसन प्रति जावे ॥ होत एकंत आपकों जबही ॥ किंनरि तार तार करि तबही ॥ बिजया मगन सप्त सुर साधे ॥ मनहु गान गंध्रव आराधे ॥ जागत लोग, श्रोन सुर लग्गे ॥ दंपति बिरह जोग मन जग्गे ॥ दिन द्वै च्यार एह बिध कीनो ॥ सुनवेहार सराहन लीनो ॥ ७ ॥

अर्थ. एवी रीते हमेशां कुसुमावळी पोताने घेर आवेछे अने जमी रह्या पछी जोगीनी पासे जायछे तेनुं वंदन करीने राजद्दार तरफ सधावेछे, तपशीने एकांतनो वखत मळतो नथी, एटले पोताना मनमां रहेली वातनी हकीकत कोने पुछे! एम होवाथी संन्यासी पोताना मनमां मुंझाया करेछे, आम चारपांच दिवस तो काढ्या पछी सन्यासीए मनसुबो करीने आवी रीत चलावी के दिवसे ब्राह्मणमां वेशीने ब्रह्म संबंधी चर्चा चलावेछे अने अर्ध रात्री गया पछी पोताना आसन उपर जायछे, (मह गया पछी) ज्यारे पोताने एकांत मळे त्यारे कीन्नरीना तार चडावी विजयाना रंगमां मग्नथइ सात स्वरथी गायन करेछे ते जाणे कोइ स्वर्गनो गंधर्व गायननीसाथ आराधना करतो होयने? तेवुं दीसेछे, आ मधुर

गायननो अवाज काने पडवाथी आसपासनां लोको जागी जायछे एटलुंज नहीं पण संयोगी स्त्री पुरुषने काम अने वियोगी स्त्री पुरुषने विरह जागेछे, बेचार दिवस आवी रीते गायन कर्यु त्यारे तो सांभळनाराओ वखाण करवा लागी गया. ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

वहैं सराहन श्रोंन, परी कुमरि कुसुमावली ॥
रही निशा निज भोंन, शासन मंगि प्रबीन प्रति ॥ ८ ॥

अर्थ. लोकोए करेलां स्वामीनां गायननां वखाण ब्रह्म कुमारी कुसुमावळीने काने पडवाथी ते दिवसनी रात्रीए कळाप्रवीणनी आज्ञा लइने पोताने घेरज रही. ॥ ८ ॥

आध निशा अनुमान, सोए सकल समीप जन ॥
कुसुम संन्यासी थान, गई सु घंट कुरंग गति ॥ ९ ॥

अर्थ. आशरे अरधी रात गया पछी आसपास रेहेनारां सघळां लोको सुइ गयां (एटले स्वामीए गायननो आरंभ कर्यो) तेथी जेम रागमां मोह पामेली हरणी घंटावळना पास तरफ जाय तेवीज रीते कुसुमावळी स्वामीने स्थानके गइ. ॥ ९ ॥

लगे संन्यासी हेर, आसन आच्छादन करन ॥
कही कुसुम तिहि बेर ॥ नाद सुनन उर चाह अति॥ १०॥

अर्थ. संन्यासी कुसुमावळीने जोइने आसननुं स्थानक आच्छादन (कमाड बंध) करवा लाग्या, त्यारे कुसुमावळीए कह्युं जे आपनुं गायन सांभळवानी मारा मनमां चाहनाछे. ॥ १० ॥

॥ अथ संन्यास्युक्त गाहा ॥

सुनहो ब्रह्म कुमारी ॥ हम गुरु पीर आयसा एही ॥
नन अन्य प्रत्य सुनावें ॥ आसन नित्य गाय एकाकी ११

अर्थ. हे? ब्रह्म कुमारी कुसुमावळी, तमे मारी वात सांभळो, अमारा गुरु देवनी एवी आज्ञाछे के गायन बीजा कोइने सभळाववुं नहीं अने हमेशां आसन उपर बेशीने एकांते एकलाएज गावुं. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

आडंबर संन्यास करी, फिर पिछतायें चिंत ॥
मिलें न फिर पीछी फिरे, एसो समय इकंत ॥ १२ ॥

अर्थ. कुसुमावळी पासे सन्यासीए आडंबर कर्यो तो खरो पण पाछा पोताना मनमां पस्ताया अने विचार कर्यो जे जो आ पाछी फरी जाशे तो पछी आवो एकांतनो वखत नहीं मळे. ॥ १२ ॥

बोले फिरि आओ इतैं, बैठो ब्रह्म कुमार ॥
तुम चाहे तो हम करैं, इक द्वै तान उचार ॥ १३ ॥

अर्थ. पछी स्वामी बोल्या के हे? कुसुमावळी, आवो आवो अने अहीं बेसो, तमारी इच्छा होय तो हुं एक बे ताननो उच्चार करुं १३॥

घरि एक वात बनायके, पाइ चिंत परतीत ॥
किंनरि ग्रहि लहि समय सुर, गायो भेद संगीत ॥ १४ ॥

अर्थ. एक घडी सुधी वातो करी तेथी मनमां प्रतीति आवी एटले हाथमां किन्नरी लइ चालता वखतनो सुर आलापीने संगीत शास्त्रना भेदथी गायन करवा लाग्या. ॥ १४ ॥

॥ अथ छंद पद्धरी ॥

संन्यास भेद संगीत गाय ॥ सुर सप्त भेद किंनरि बजाय ॥समयो वृतंत चिंतमें लाय॥दो च्यार राग रागनि उपाय॥
बह्मनी रीझ उलटी अपार ॥ पर्वनी रेन मनु पारवार ॥
जानी सु रीझ जोगेंद्र चित्त ॥ परवीन कीन लीने कवित्त ॥

कानरे मध्य गाये सु भीन ॥ परखे कुमारि परवीन कीन ॥ संन्यास प्रत्य बूझी बनाय ॥ एही कवित्त कोनसें पाय ॥ संन्यास फेर भंषी सु बात ॥ हमनें बनाय वह हमें गात॥ ब्रह्मनी कहे क्यौं कहे आप ॥ तापसी वितथ भंपे प्रलाप ॥ आगें कवित्त हम सुने एह ॥ तुम कहो हमे कीने सु तेह ॥ मुनिराज बानि बोले बहोर ॥ तुम्म सुने वहें होयगे ओर ॥ हमने बनाय या कवित तीन ॥ याही कवित्त या दशा दीन ॥ ब्रत्तीत रहे पुनि मौन धार ॥ ब्रह्मनी चिंत वाढ्यो बिचार ॥ १५ ॥

अर्थ. सन्यासी संगीत शास्त्रना भेद प्रमाणे गायन करेछे अने साते स्वरना भेद प्रमाणे किन्नरी वजावेछे, चालतो वखत चित्तमां लावीने बे चार राग तथा बे चार रागणीयो छेडी, ते सांभळवाथी कुसुमावळीने अपार रीझ उत्पन्न थइ ते जाणे पूनमनी रात्रीए समुद्र उलट्यो होयनै! जोगीए पोतानां मनमां खुशी थयेली तेने जाणीने कलाप्रवीणना बनावेलां त्रण कवित्त जुदां जुदां लइने कानरा रागनी अंदरगाइ संभळाव्यां, ते सांभळतांज आतो कळाप्रवीणनां बनावेलांछे एम कुसुमावळीए परिक्षा करी, पछी संन्यासीने पूछी जोयुं के आ कवित्त कोनां बनावेलांछे अने कोनी पासेथी आपने मळ्यांछे ते कहो? त्यारे संन्यासी फरीने आवी वात बोल्या जे ए कवित्त अमे बनावेलांछे अने अमेज गाइए छीए, त्यारे कुसुमावळीए कह्युं के आप एम केम बोलोछो तमे संन्यासी थइने आवुं जुठु केम भांखोछो? आ कवित्त तो आगळ में सांभळेलांछे अने तमे कहोछो जे अमारां करेलांछे (ए वात केम घटे?) त्यारे जोगीराज वचन बोल्याके तमे सांभळ्यां हशे ते कवित्त तो बीजां हशे, पण आ त्रण कवित्त तो अमारां बनावेलांछे अने आ कवीतेज अमने आवी दशा

दीधीछे, एटलुं कहीने जोगीराजतो मौनव्रत धरी रह्या पण कुसुमावळीना मनमां विचार वधीगयो ॥ १५ ॥

॥ सोरठा ॥

ब्रह्मनि मन उरझाय, पुनि बूझ्यो संन्यास प्रति ॥
कैसें कहो सुनाय, दशा जोग कवितन दई ॥ १६ ॥

अर्थ. कुसुमावळी मनमां मुंझाइ जवाथी पाछी संन्यासीने पूछवा लागी के आ कवित्तें तमने आवी जोगीनी दशा शीरीते दीधी ते वातनो भेद कही संभळावो. ॥ १६ ॥

स्मित भंण्यो संन्यास, कहा काम इन बात तुम ॥
यहँ वडो इतिहास, पढे सु जाने प्रेम विधि ॥ १७ ॥

अर्थ. त्यारे संन्यासीये हसीने कह्युं के तमारे एवातनुं शुं प्रयोजनछे? एतो मोटो इतिहासछे जे प्रेमनी विधि भण्युं होय तेज तेने जाणे. १७

भंख्यो ब्रह्म कुमार, कहो प्रेम इतिहास कहा ॥
कोन कवित्त विचार, मोसों मोय सुनाइयें ॥ १८ ॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळीए कह्युंके प्रेम ते शुं? अने इतिहास ते शुं? कवित्तनो शो विचारछे? तमने म्हारा सम तेतो मने मोढेथी संभळावो. १८

॥ छप्पय ॥

पूरन भइ प्रतीत, जोग आनँद मन जग्यो ॥
कथा कहन अभिलाख, वचन ब्रह्मनि प्रति मग्यो ॥
खाली शब्द न जाय, जोइ मग्गों सो दीजे ॥
प्रेम पुरानन भेद, कबहु परकास न कीजें ॥
द्रढ मन उदार अति द्विज सुता, प्रति ब्रतीत बकस्यो वचन ॥
चित चाह भरी बरतंत वह, बूझन लगी सु छनहु छन ॥ १९

अर्थ परिपुरण प्रतीति थइ एटले जोगीना मनमां आनंद जागृत थयो अने कथा केवानी इच्छाथी जोगीए कुसुमावळी पासे आवुं वचन मागी लीधुं एकतो म्हारो स्वाल खाली न जाय अने जे हुं मागु ते तमारे देवुं, जुना प्रेमना भेदने क्यारे पण खुल्लो करवो नही, आवां वचन सांभळीने द्रढ अने उदार मनवाळी ब्रह्मकुमारी कुसुमावळीए बन्ने वातनुं संन्यासीने वचन आप्युं, पछी ते व्रत्तांत सांभळवानी चाहनाथी भरपूर थयेली कुसुमावळी क्षणे क्षणे योगीने पूछवालागी. ॥ १९ ॥

॥ सोरठा ॥

व्रती कह्यो बरतंत, सो सब द्विजदुहिता सुन्यो ॥
आखेटकके अंत, गायन गति सागर दशा ॥ २० ॥

अर्थ. शीकारनी अंते, (मनंछा पूरीमां बन्नेनी नजरनुं एकठुं थवुं) राजधानीमां गयापछी नायकाओनो मिलाप अने तेओए कहेलां कवित्त, सांभळवाथी सागरनी दशा विगेरे जोगीए कहेलुं संघळु व्रत्तांत कुसुमावळीए सांभळ्युं. ॥ २० ॥

यहैं प्रेम इतिहास, मंत्र बीज अच्छर यहैं ॥
यहैं भेद संन्यास, यह कवितन दीनी दशा ॥ २१ ॥

अर्थ. वळीजोगीये कह्युंके एज प्रेमनो इतिहासछे अने मंत्र बीजना एज अक्षरो छे, संन्यास ग्रहणकरवानो पण एज भेदछे, अने ए कवित्तेज आवी दशा दीधीछे. ॥ २१ ॥

सधें सु पार समाध, प्रेम उभय अच्छर यहैं ॥
या महि सिद्धि अगाध, बेधादिक बरनें सबें ॥ २२ ॥

अर्थ एक प्रेम शब्दना आ बे अक्षरने जे साधेछे, तेज समाधीना पारने पामेछे अने एवे अक्षरमांज उंडी सिद्धि रहेलीछे, तेथी ब्रह्मादिक सघळा देवो तेनुं वर्णन करेछे. ॥ २२ ॥

बात भेद विस्तार, संन्यासी भंष्यो सबें ॥
बाला ब्रह्म विचार, मौंन गह्यो विस्मय सु मन ॥ २३ ॥

अर्थ. एवीरीते वातना भेदनो सघळो विस्तार सन्यासीए कह्यो, ते सांभळी कुसुमावळी मौन (मुंगी)थइ गइ एटलुंज नहीं पण पोताना मनमां विचारनी सांथे आश्चर्य पामीगइ. ॥ २३ ॥

॥ गाहा ॥

कुसमावलि संन्यासी, चरचा प्रेम भेद परकाशं ॥
चत्रवीस अभिधानं, पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २४ ॥

अर्थ. कुसुमावळी अने सन्यासीनी चर्चा थतां प्रेमना भेदना प्रकाश संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी चोवीशमी लेहेर पुर्ण थइ. ॥ २४ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे संन्यासी कुसुमावली चर्चा प्रेम प्रकाश भेदो नाम चतुर्विंशमो लहरं ॥ २४ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां चतुर्विंशम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद नाराच॥

कुसुमेन नर्मी मळी उभे दरेक उच्चर्या ॥ कृती कवेशथी स्वरूप स्तीतणा गण्या कर्या ॥ जुदा जुदा घणाक भेद शास्त्रना प्रमाणथी ॥ पचीशमा तरंगमां उमंगथी कथा कथी ॥

अथ पुनि संन्यासी कुसमावली चर्चा प्रसंग दोहा ॥

कुसम प्रत्य संन्यासि कहे, कैसें कला प्रवीन ॥
जा कारन सागर हुकम, यहैं दशा हम कीन ॥

अर्थ. कुसुमावळीने सन्यासी कहेछे के कळाप्रवीण केवांछे? के जेना

वास्ते महाराजा रससागरना हुकमथी अमे आवी जोगनी दशा करी. ॥ १ ॥

॥ अथ कुसुमोक्त दोहा ॥

हस्तिनि शंखिनि चित्रिनि, सृष्टा सृष्टि सु कीन ॥
इनही समय सरूप गुन, पद्मिनि कला प्रवीन ॥ २ ॥

अर्थ. ब्रह्माए पोतानी सृष्टिमां हस्तिनि शंखिनी अने चित्रिणी एवी जातनी स्त्रीओ बनावीछे, पण आ वखतमां तो खुबसुरती अने गुणथी कळाप्रवीणनेज पद्मिनी बनावेलीछे. ॥ २ ॥

॥ अथ संन्यास्युक्त दोहा ॥

सबैं भेद साहित्यके, जानत ब्रह्म कुमार ॥
लच्छन नायक नायका, चत्र चत्र कहो उदार ॥ ३ ॥

अर्थ. संन्यासी कहेछे के हे? कुसमावळी, तमे साहित्य शास्त्रना सघळा भेद जाणोछो, माटे चार नायक अने चार नायकानां लक्षणो विस्तारनी साथे कहो. ॥ ३ ॥

अथ कुसुमावल्युक्त चत्र नायक भेद यथा॥ दोहा ॥

अनुकूलह दच्छन प्रथम, शठ अरु धृष्ट विचार ॥
चत्रहु गुन तनकी प्रकृति, सुच्छम कहुं उदार ॥ ४ ॥

अर्थ. पेहेलो अनुकूळ, बीजो दक्ष, त्रीजो शठ, अने चोथो धष्ट एवा चार नायकछे, ए चारेना गुण तथा तेना शरीरनी प्रकृति कहुंछुं ॥ ४ ॥

॥ तत्र प्रथम अनुकूल भेद ॥ छप्पय ॥

सदा शांत शुभ वदन, वास शुभ रुच तन कोमल ॥
सुच्छमांग तुछ भोग, ह्रस्व कर पद रद उज्वल ॥
निद्रा तुच्छ प्रमाद, तुच्छ आहार जघन जिन ॥

अमल वास रुचि उकति, मंद म्रदुता जुत भाषन ॥
सहजहि सुगंध संगीत रुचि, वीर धीर सु उदार मन ॥
पूरन सु प्रेम एकें पतनि, अनुकूल लच्छन सु इन ॥ ५॥

अर्थ. हमेशां शांत स्वभाव, ने सुंदर मुख होय, शरीर सुगंधीवाळुं, केश तथा अंग कोमळ, नाजुक शरीर, विषय भोग थोडो, हाथ पग न्हाहाना, दांत उजळा, निद्रा अने प्रमाद थोडां, आहार तथा गुह्येंद्रि सूक्ष्म, निर्मळ कपडां उपर प्रीति, वाणी धीमि, कोमळता, युक्त भाषण, ने जेने सहेजे सुगंधी पदार्थ तथा गायन उपर प्रीति होय, वळी जे शूरवीर, रणमां धिर, मननो उदार अने एक पोतानीज स्त्री उपर परीपूर्ण प्रेम राखतो होय ए सर्व अनुकूळनायकनां लक्षणछे. ॥ ५ ॥

॥ अथ दच्छन भेद ॥ छप्पय ॥

शुभ लच्छन सु उदार, सदा शुचि चित्र आसकत ॥
शीलवान सु सुरूप, समय ज्ञाता सु काव्य कृत ॥
काम कला परवीन, रीझ रीझवन विधि जाने ॥
प्रीत रीत खंडे न, सार संगीत वखाने ॥
पटुता उचार समता सहज, भामिनिके नित मन हरन ॥
पूरन प्रताप प्रमुदित वदन, यह दच्छनके अनुकरन ॥ ६

अर्थ. सारा लक्षण वाळो, उदार, हमेशां पवित्र, चित्रमां आसक्त, शीलवान, सुंदर स्वरूपवाळो, वखत जाणनार, सारी काव्य रचनार, काम कळामां प्रवीण, रीझवा तथा रीझववानी विधिने जाणे, प्रीतिनी रीतिने कोइदी खंडन करे नहीं, तेमज संगीतना सारने वखाणे, चतुराइथी बोले, स्त्रीओमां सर्वमां समान प्रीति राखे, हमेशां स्त्रीओना मनने हरे, पूरण प्रतापी, अने हसता मुखवाळोहोय, ए दक्ष नायकनां लक्षणछे. ॥ ६ ॥

॥ अथ शठ भेद छप्पय ॥

मुख सु मिष्ट हृदि कपट, अडर अपराधि सदाही ॥
स्थूल भुजा उर प्रथुल, श्रोनि बड तन कठुराही ॥
कूर्मोदर द्रश चपल, क्रूर देही लज्जा तनु ॥
लंपट काम सु केल, अतिहि आतुर मर्कट मनु ॥
साचही समान क्रूरहि कहे, निज स्वारथ नितही चहे ॥
अति हानि वृद्ध अनुमाननह, शठ सूज्ञान तासें कहे ॥ ७ ॥

अर्थ. जे मोढेथी मीठुं बोले अने मनमां कपट राखे, इश्वरनो पण डर न राखतां हमेशां पराया अपराध करे, जेना हाथ घणा जाडा अने छाती पहोळी होय, कडनी नीचेना पाछला बन्ने भाग म्होटा, ने अंग घणुंज कठोर होय, काचवानी पीठ जेवुं पेट अने आंख्यो चंचळ, होय, जेनो चेहेरो बीवरामणो अने लाज थोडी होय, कांम भोगमां लंपट, ते जाणे वांदरो होयने? एवो आतुर होय, साचानी पेठे जुठुं बोले अने निरंतर पोतानी मतलबने इछे अने जेने हानि तथा वृद्धिनुं कांइ अनुमान सूजे नहीं एवा लक्षणवाळा पुरुषोने विद्वानो शठ कहेछे. ॥ ७ ॥

॥ अथ धृष्ट भेद छप्पय ॥

स्थूल केश शिर वदन, फटित द्रग चल हेरन चित ॥
कंध बाहु ह्रस्व दीर्घ, श्रोन दीरघ पद सोहित ॥
क्रोध निद्र सालसा, कपट पीशुन अधिकारी ॥
नडर दंभि निर्लज्ज, भोगको आतुर भारी ॥
क्रतघनी दोष शंक न धरे, अविश्वास डर मानिये ॥
प्रीतकी रीत जानें नही, बहुभुक धृष्ट बखानिये ॥ ८ ॥

अर्थ. जेना वाळ, माथुं अने म्होडुं घणा जाडां, ने फाटेली आंख्यो,

चंचळ नजर, तथा चीत्त चपळ, कांध, हाथ, टुका अने लांबा, कडनी नीचेना पाछला वे भाग म्होटा अने पग लांबा, अति क्रोधी, उंघणो, आळसू, कपटी अने चाडीयानुं काम करतो होय, अडर, दंभी, नीलजो, अने ज्ञान भोगमां घणोज आतूर होय तेम कृतघ्नी, नरसुं करतां परमेश्वरनी पण बीक न राखे, ने जेना मनमां कोइनो विश्वास न होय प्रीतीनी रीत तथा प्रेमना मार्गने जाणे नहीं, ने झझुं खाय एवा लक्षणवाळा पुरुषने धष्ट कहेछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ चतुर्विध नायका भेद दोहा ॥

पद्मिनी चित्रिनी शंखिनी, ओर हस्तिनी वाल ॥
मुख्य भेद यह तियनके, बरनत बुद्धि विशाल ॥ ९ ॥

अर्थ. पद्मिनि चित्रिणी शंखिनी अने हस्तिनी एरीते स्त्रीओना मुख्य चार भेद अति बुद्धिवाळा विद्वानो वर्णवेछे. ९ ॥

अथ पद्मिनी भेद ॥ छप्पय ॥

चंद्रानन तन कनक, नेंन मृग कोकिल भाषन ॥
कटि केहरि गल कंबु, कंज कर पद शुक नासन ॥
रंभोरु कच उरग, अधर सुखरा रद हालम ॥
गति मराल कुच पीन, छोह निद्रा स्मित भुक कम ॥
सहजहि सुवास सुमती मृदुल, अति उदार पूजा सकति ॥
पूरन सु प्रेम व्रीडा सु शुचि, प्रथम एह पद्मिनी प्रकृति १०

अर्थ. जेनुं चंद्रना जेवुं म्होडुं, सोनाना जेवुं कांतिवान शरीर, हरणीना जेवी आंख्यो, कोयलना जेवुं मधुर भाशण, केसरीसिंहना जेवी कड, शंखना जेवुं गळुं, कमळनाजेवा, हाथ, पग अने पोपटना जेवुं नाक, केळना थांभला जेवा साथळ, काळा सर्प जेवा केश, परवाळा

जेवा होठ, अने दाडमनी कळीयो जेवा दांत, हंसना जेवी चालवानी गति, वगर पाकेली केरी जेवां कठण स्तन अने जेने क्षोभ, निद्रा, हसवुं, अने आहार, ए थोडां होय, जाते सुगंध वाळुं शरीर, सारी बुद्धि, कोमळ स्वभाव, अति उदार मन, परमेश्वरनी भक्ति तथा पूजामां आसक्त, परीपूर्ण प्रेमना स्वरूपने जाणनारी, लाजवाळी अने पवित्र होय, ए पेहेली पद्मिनी जातिनी स्त्रीनां लक्षणछे. ॥ १० ॥

अथ चित्रिनि भेद ॥ छप्पय ॥

चपल द्रष्टि चित अचल, कंज नेनी रुचि केसर ॥
श्याम केश गज गमन, भ्रंग भ्रुअ भाप मयुर वर ॥
काव्य शील्प संगीत, चित्र रीझे सु रीझावे ॥
प्रेम नेम परबीन, चिंत चातुरी उपावे ॥
नन हस्व दीर्घ प्रथुल न कृशा, कोप तुच्छ अंबर अमल ॥
तुच्छ सु प्रमाद सुकुमार शुभ, यह चित्रिनि लच्छन सकल

अर्थ. जेनी चंचळ नजर, द्रढ चित्त, कमळ जेवी आंख्यो, केसरना जेवी कांति, काळा केश, हाथणीना सरखो चाल, भमरा जेवी काळी भृगुटी (भवां) अने मोरना जेवुं भापण, काव्य, कारीगरी, गायन अने चित्रना कामथी खुशी थाय, तेमज ते काममां पोते माहीतगार होवाथी बीजाने पण खुशी उपजावे, ने जे प्रेमना नियममां कुशळ, छतां मनमांथी चतुराइ भरेला विचारो उपजावे ने जे शरीरे अति टुंकी, लांबी, पोहोळी, अने दुबळी न होय, जेमां थोडो क्रोध, निर्मळ लुगडां, थोडुं आळस, अने अति खुबसुरती होय ए सघळां चित्रिणी जातिनी स्त्रीनां लक्षणछे. ॥ ११ ॥

॥अथ शंखिनी भेद ॥ छप्पय॥

बाहु दीर्घ कृश शीश, पाय कुच दीर्घ तपत कर ॥

तन दीरघ तनु रीस, वक्र चाले वसुधा पर ॥
स्थूल घ्रान भ्रू अधर, हस्व अंगुलि नम्रत गल ॥
रति अतृप्त त्रप हीन, भुक्त बहु क्रूर प्रकृति कल ॥
गज मद सुगंध कटि मुख प्रथुल, विठ्हल मदन बिलास महि
कपटी कुशील पीसुन सदा, केश पिंग शंखिनि सु कहि १२

अर्थ. जेना हाथ लांबा, पातळुं माथुं, पग तथा स्तन लांबां, हाथ उना शरीरे खरशट, कदे लांबी, अति रीशाळ, जमीन उपर टेडी चाले, ने जेनुं नाक, भ्रगुटी, ने होठ जाडा, आंगळीओ टुंकी, वांकुं गळुं, विषय भोगमां अत्रप्त (भुखी) लाज विनानी, झाझुं खानारी, नठारा स्वभाववाळी, शरीरनो सुगंध हाथीना मद जेवो, कड ने म्होढुं अति पोहोळां, विषय भोगववाने आतुर, कपटथी भरेली, फुवड, हमेशां चाडीयानुं काम करनारी अने पीगळा केशवाळी, ए शंखिनि जातिनी कहीछे. ॥ १२ ॥

अथ हस्तिनी भेद ॥ छप्पय ॥

स्थूल अंग बहु छुधा, लोम तिच्छन पिंगल चख ॥
गंधक गंध कुशील, कुटिल वानी भाषत मुख ॥
रोषवान स्वर रुक्ष, काम केली अत्रप्त नित ॥
बहुत म्रपा विन त्रपा, दुष्ट दुमनी सदा रहत ॥
अरु चित कुरंग कुच शिथल अति, प्रीत रीत जाने नही ॥
अंकुश म्रजाद माने न कछु, हस्तिनि हस्तिनि सम कही

अर्थ. अंग जाडुं, भुख झाझी, रुवांडां तीखां, (आकरां) पीगळी आंखो, गंधकनाजेवो शरीरनो गंध, खराब स्वभाव, ज्यारे म्होडेथी बोले त्यारे कडवां अने नठारां वचन बोले, अति क्रोधवाळी, लुखा सा-

दवाळी, हमेशां विषयनी रमतमां अनृप्त, जूठुं बोलनारी, लाज वोणी, दुष्ट स्वभाववाळी, अने निरंतर रीसथी चडीने चडी रहे, हरणना जेवुं चपळ मन, स्तन शीथळ ने जे प्रीतनी रीतने जाणे नहीं, अने पोताना कुळ धर्मनी मर्यादा रूप अंकुशने पण न मानती होय, एवां लक्षणवाळी हस्तिनी जातिनी स्त्री हाथणी जेवी गमार कही छे. ॥१३॥

॥ दोहा ॥

चहु विध नायक नायका, बरने भेद बनाय ॥
रीझ भीज मनमें रहे, सन्यासी सु सराय ॥ १४ ॥

अर्थ. आ चार प्रकारना नायक तथा नायकाओना भेद सारा रीते वर्णवी बताव्या, तेथी पोताना मनमां कुसुमावळीनुं वखाण करतां सन्यासी आनंदथी भींजाइ रह्या. ॥१४॥

॥ अथ सुकुमावल्युक्त ॥ दोहा ॥

जिहि एती लयं प्रेमकी, रससागर सु कुमार ॥
सो केते जाने सकल, त्रिया भेद बिस्तार ॥ १५ ॥

अर्थ. कुसुमावळी विदुने कहे छे के जेने आटली बधी प्रेमनी ले लागेलीछे, ते तमारा रससागर राजकुमार सर्व मळीने केटली जातिनी स्त्रीओना भेदने जाणे छे? ॥ १५ ॥

सोय कहो संछेप करि, नायकानके लच्छ ॥
सुनन चाह हमकों वहे, तुम बानी परतच्छ ॥ १६ ॥

अर्थ. जेटली नायकाओनां लक्षण ने जाणता होय, ते संक्षेपथी कहो, कारण के ए भेद तमारी मधुर [illegible] ली रीते मारे सांभळवानी चाहना छे. ॥ १६ ॥

॥ अथ सन्यास्युक्त ॥ सो[illegible]ा ॥

सो कछु कही न जाय, रससागर जाने जिती ॥

ब्रह्मनि कहों बनाय, सब संछेप सु नायका ॥ १७ ॥

अर्थ. जेटली नायकाओ महाराजा रससागर जाणेछे, तेलटी कहेनां पार आवे तेम नथी, तोपण हे ब्रह्म कुमारी कुसुमावळी ? संक्षेपथी सघळी नायका कहुंछुं ते सांभळो. ॥ १७ ॥

॥ अथ नायका भेद संख्या वर्नन ॥ छंद क्रीडाचंद्र ॥

जुकत्ती उकत्ती पटं आपमें नायका जो बरत्ती ॥
कियो भेद संछेप जैसी हमै चित्त वृत्ती प्रकृत्ती ॥
तुमें जानहो मितके चितकी चातुरी ए प्रमानी ॥
करी आपकी आयसाके प्रसादं विधानी ज्यु बानी॥
स्वकीया तिया आपके शामके रंग रत्ति सदाही ॥
प्रकीया प्रिया प्रीतके मीतसें नीत लावे मुदाही ॥
सामान्या वधू प्रेमके नेमहीनी लपट्टी कपट्टी ॥
त्रयं भेदमें नार उच्चार सो वेद भेदं प्रगट्टी ॥
कहों पद्मनी पद्मना हेमवेली नवीनं प्रवीनं ॥
यहे चित्रनी मितके चीतकी प्रीत संगीत लीनं ॥
वहे शंखनी भंखनी जूठ प्रेमं प्रमानं न जाने ॥
अरू हस्तिनी मस्तनी गत्त धी प्रेम वत्ति न माने॥
अवस्था कही तीनकी तीन सो वेद भेदं उकत्ती ॥
मुगद्धा कथा काम ग्याता अग्याता सुरत्ती नमत्ती ॥
मध्या कामनी काम रु लाज दोऊ समानं प्रमाने ॥
सदा प्रोढ सो मीतके चीतकी रीझ खीजं पिछाने ॥
नवझंवधू बालकी नीतही नीत घूनी वढंती ॥
नवंजोबना कामनी काम सीढी चढंती पढंती ॥

अनंगानवं बाल स्याल त्रसंती रसालं विशालं ॥
लजाप्राय रत्ती चरंती लजंती भजंती सु लालं ॥
अरूढा यहे जोवना अंग कामं विकासे प्रकासे ॥
बचंनाप्रगल्भा उरानो निकासे बिलासे ज्यु हासे ॥
मनोभावनी बाम कामंकला चंचलासी उजासी ॥
विचित्रारती भेद रत्ती सु मत्ती जुवंती प्रकासी ॥
समस्तंरसंकोविदा मिंतके चिंतका चाह पूरे ॥
विचित्रालली मोहनीकी कला लालको चित्त चूरे ॥
अक्रामीत जो मिंतकों भीर ज्यों हाथ लावे बुलावे ॥
लुबद्धापती लाजकी शामसें वाम शंका न लावे ॥
किये द्वादशं भेद त्रै भेदके द्वादशं त्रै बखानी ॥
अधीरा पती दोषसें रोषमें क्रूर भाषंत वानी ॥
सु धीरा त्रिया आपके शामसें रोस बत्ती न बोले ॥
समंधीरता कंतपें भेदसें बात बोले न खोले ॥
चत्रंबीश अंकूर बाला बरंनी सु ग्याता कवित्ता ॥
बसू अष्ट त्रै दोय कीनी त्रयं लच्छनं संजुगत्ता ॥
सुआधीन ले आदि आद्यं स्वयंदूतिका मानि वामा ॥
अनूढा कही गर्विता भिन्न भिन्नं सबे आदि नामा ॥
सुआधीनपत्तीक जाके गुनंसे बध्योहे ज्यु शामं ॥
उतंकंठिता शोचितं चिंतमें मिंत क्यों नाय धामं ॥
सज्यावासिकं सेज साजे बिराजे पिया पंथ हेरे ॥
अभीसंधिता आदि माने न पाछे चहें प्रीयनेरे ॥
खरी खंडिता प्रेम खंडे पती ओर संगी बिलोके ॥

वियोगी पती प्रोपिता मेन नाराच छत्ती सु झोके ॥
विप्रलब्धिका एह संकेतमें प्रीय नाये रिसाये ॥
अभीसारिका साजि सिंगार शामं सु जाये रिझाये ॥
स्वयंदूतिका दूत वानी पियासें अराधे सु साधे ॥
समस्यावधू प्रीछवे ओरही ठोरको दाव बांधे ॥
दुरावे सखी लक्षिता प्रच्छनं मितसें चिंत लावे ॥
रतीकी गती कोकहु अंगमें चेन आवे लखावे ॥
गुप्तारती गोप जाने विधाने सुमाने सयाने ॥
कुलट्टा पटाछूट वामं सु कामं बिलासं बखाने ॥
मुदित्ता सुरत्ता व्रती जानिये आगमं प्री उमंगे ॥
विनासे अनूसेन संकेत जावे न पावे न रंगे ॥
अनूढा त्रिया जाहिको व्याह कीनो न सोही कुमारी॥
स्वयंदूतिकादी कही अष्ट नारी चितमें बिचारी ॥
प्रियं सापराधं लखे माननी त्रैविधं मान धारे ॥
लघूमान सो सामनी सामसें ख्यालहीमें निवारे ॥
कही मध्य सो क्रोध छूटे पती बोध कथ्थे प्रचंडे ॥
गुरूमाननी मान घट्टे न बोले सु वानी विखंडे ॥
चले जार प्रानेशकी नायका पर्वसंता बखानी ॥
लखे मिंतको चेन त्री ओरसों अन्य संजोग जानी॥
ग्रहे मिंतके दोपसें गर्व सो गार्विता भाव तीनं ॥
मती सागरं काव्यके भावमें बाल कथ्थी प्रबीनं॥
निजं रूपके गर्व सो रूपगर्वा पती बात खंडे ॥
हिनी प्रेमगर्वा पतीसें रतीसें भरी रार मंडे ॥

त्रिती कामगर्वा सबेही गुरू लोगकी लाज तज्जे ॥
विनाही समे कामसें सामनी सामको संग भज्जे ॥
षटं चत्र ते नायका ए सबे तीन रूपं बिचारे ॥
त्रिया त्रैगुनी ताय विस्तारिकैं द्वे गुनी हैसु धारे ॥
उतमं अपंमान जोरे तुछोरे सदाही सहल्ले ॥
लघू दोषतें मध्यमा मान साधे प्रनामं विचल्ले ॥
यही अद्धमा बारहीवार रूठे न छूटे कपट्टं ॥
इतीसें जुदी तीन बामा विचारे सयाने निपट्टं ॥
दिवानायका सो पतीसें सदा रीझ रंगं निभावे ॥
दिवादिव्य सो मितकी रीझसें चिंत लावे न लावे ॥
अदिव्या सदा प्रेमके नेमहीसें ज्यु हीनी जुवत्ती ॥
इती रीतसों सागरं चिंत जानी सु आनी जुकत्ती ॥
चतुरंक्रिया मर्ममें सेनसें मेन चेनं जनावे ॥
छिती नायका मोहनी बानिमें बानिभेदं बनावे ॥
दुहूमें पतीकुं अती वल्लभा जानिये सोइ जेष्टा ॥
कछू न्यूनहे वल्लभा नायका सो कही जे कनिष्टा ॥
इती नायका देवबानी व्रजंभाषमें साख बोले ॥
मिले भेद भिन्नं किये होय संख्या सु प्रस्ताव खोले ॥
त्रिया त्रैगुनी चत्र भेदं करी त्रैगुनी ताय लीजे ॥
किये द्वादशं भेद त्री भेदकों त्रैगुने चौ गुनीजे ॥
चत्रंविंशकै त्रैगुनी त्रैगुनी द्वैगुनी द्वे ज्यु लीनी ॥
लखं एक छासीसहस्रं छसें और चौवीश कीनी ॥ १८ ॥

अर्थ. युक्ति पुर्वक उक्तिथी छ ए भाषामां ते नायकाओ कहेली छे, तेना भेद हुं जेवी म्हारा चित्तनी वृत्ति तथा स्वभाव छे, ते प्रमाणे टुंकी

मनवचमां आपनी आज्ञारूप मेहेरबानीने पामेली म्हारी बुद्धिने नायका भेदना विधानवाळी करीने कहुं छुं, ते सांभळवाथी अमारा मित्रना चित्तनी चतुराइ आवी रीतनी छे, ते तमे स्पष्ट जाणशो. जे स्त्री पोताना पतिना प्रेमना रंगमांज निरंतर प्रीतिथी आसक्त रहे, अने बीजा पुरुषने क्यारे पण इछे नहीं, ते स्वकीया नायका, जे स्त्री पोताना पति शिवाय प्रीति बंधाएला मित्र साथेज हमेशां हर्ष लावे, ते परकीया नायका, जे स्त्री प्रेमना नियमथी रहित छतां पोताना पती साथे केवळ कपटथी रमे, ने जूदा जूदा पुरुषो साथे द्रव्यसारुं व्यभिचार करे, ते सामान्या; ए त्रण प्रकारनी नायकाओ आपने जे में कही, तेओना वळी चार भेद प्रगट करीने कहेला छे;

जे स्त्री कमळ जेवी कोमळ कांतिवाळी, नवीन सोनानी वेल जेवी, अने चतुर होय, ते पद्मिनी, जे स्त्री पोताना पतिनी प्रीतिमां तथा गायनमां लीन होय, ते चित्रिणी, जे स्त्री बहु बोलकी, तथा जूठाबोली छतां प्रेमना नियमना प्रमाणने न जाणती होय ते शंखिनी, जे स्त्री मस्तानी तथा बुद्धि विनानी अने प्रेमनी वातने न माने ते हस्तिनी, आ जे मे उपर कहेली त्रण नायकाओनी मुग्धादि त्रण अवस्था कही छे, अने ते प्रत्येकना पद्मिन्यादिक चार चार भेद कह्या छे, "एटले छत्रीश थइ," मुग्धा नायका बे प्रकारनी छे, तेमां जे स्त्री पोताना अंगमां खीली आवेली जुवानीने तथा कामक्रिडानी वातने जाणे, ते ज्ञातयौवना, अने जे स्त्री पोतानी जुवानीने न जाणे, तेमज कामक्रिडामां जेनी बुद्धि न होय, ते अज्ञातयौवना, ने जे स्त्री काम तथा लाज ए बेने बराबर रीते जाणे, ने माने, ते मध्या, अने जे स्त्री पोताना मित्रना मनमां रहेली खुशी तथा रीसने सारी रीते जाणीशके ते प्रौढा, जे स्त्रीना शरीरनी कांति, दीनपरदीन वधती जती होय ते नवलवधु, जे स्त्री काम क्रीडाना भेदने शीखती शीखती काम देवनी नीसरणी उपर चडवा लागे ते नवयौवना, जे बाळा रतिक्रीडाथी

त्रास पामे पण विशाळ रसवाळी होय,ते नवलअनंगा, जे स्त्री घणी लाजथी पोताना स्वामी साथे क्रीडा करे, ते लज्जाप्राया, जे स्त्रीना अंगमां जोबन तथा काम प्रसिद्ध खीलेलां जणातां होय, ते आरूढयौवना, जे स्त्री पोताना पतिने हास्य विलासमां ठवको दे, ते वचन प्रगल्भा, जे स्त्री वीजळीना सरखी उज्वळताथी कामक्रीडामां घणी चंचळता वर्ताबे, ते मनोभावनी, "प्रादुर्भूतमनोभवा" जे स्त्री कामक्रीडामां वृद्धिवाळी अने जेनुं जोबन प्रकाशित होय, ते रतिविचित्रा, जे स्त्री पोताना मित्रना मननी इच्छाने पुरी पाडे,ते समस्तरसकोविदा, जे स्त्री मोह उपजावनारी, कळाथी पोताना प्रिय पतिना मनने हरे,ते विचित्रालली, "विचित्रविभ्रमा" जे स्त्री पोपटनी पेठे पोताना मित्रने नियममां लावी, हसावी, रमाडीने बोलावे. ते आक्रामिता,जे स्त्री पोताना पति पासे जरापण लाजनी शंका न राखे,ते लुब्धापति,एवी रीते उपर कहेली मुग्धा विगेरे त्रण नायकाओना नवलवध्वादि बार भेद कह्या छे, " तेमां चार भेद मुग्धाना, चार मध्याना, अने चार प्रौढाना छे." ते बारे भेदने स्वकियादिक त्रण भेदे वखाणवी. "एटले ३६ थाय," जे स्त्री पोताना पतिना दोषथी रोषने लीधे क्रूर वचन बोले,ते अधीरा, जे स्त्री पोताना पतिनी पासे रोषथी कठण वचन न बोले ते धीरा, जे स्त्री पोताना पति पासे पतिना दोषनी वात मर्ममां जणावे पण भेद खुल्लो न करे, ते धीराधीरा, वळी नायकाओना भेद जाणनार विद्वानोए कवितामां चोवीस प्रकारनी नायकाओ वर्णवेली छे. ते वसु एटले ८, अष्ट एटले ८. पछी ३, पछी २, अने पछी ३, एटली २४, लक्षण संयुक्त स्त्रियो कहेली छे, तेनी विगत जे स्वाधीन पतिका आदि लइने८,अने स्वयंदूतिका आदि लइने अनूढा सुधी मानीलीधेली ८, अने पछी मानवती आदिक ८नां जूदां जूदां नामो कह्यां छे, जे स्त्रीना गुणथी पति बंधाएलो होय,ते स्वाधिनपतिका. अने म्हारो मित्र हजी मारे घेर केम न आव्या, एम कहीने ते स्त्री पोताना मनमां शोच

कर्या करे ते उत्कंठिता, जे स्त्री सज्या बिछावीने पोताना पतिनी वाट जोनी बेसे, ते वासक सज्या, जे स्त्री रीसने लीधे पेहेलां पोताना पतिनुं कह्युं न माने, ने पछी पोतानी पासे पति आवे एम चाहे ते अभिसंधीता, जे स्त्री बीजी स्त्री पासे गयेला पोताना पतिने जोइने प्रेमनुं खंडन करे ते खंडिता, जे स्त्री पोतानो पति विदेश गयो होय, अने वांसेथी कामनां बाण छातीमां लागवाथी वियोगने लीधे मुंझाया करे, ते प्रोषितपतिका, जे स्त्री पोतानो प्रिय संकेत स्थले (नीमेले ठेकाणे) न आववाथी रीसाय ते विप्रलब्धा. जे स्त्री जातजातना शृगार तथा वस्त्र पेहेरी पति पासे जइने पतिने आनंद पमाडे, ते अभिसारीका, जे स्त्री पोताना पतिने दूतिना जेवां वचनथी समजावी पोतानुं काम साधे, ते स्वयंदूतिका, (वचनविदग्धा) जे स्त्री बीजुं कांइ समजावे अने बीजे ठेकाणे जवानो दाव पेच लगावे, ते समस्यावधु (क्रियाविदग्धा) जे स्त्री सखीनाथी छानी रीते मित्र साथे मन लगाडे, ते वात तथा कोकशास्त्रनी रीते रतिक्रीडा करेली होय, ते छानी राखे, पण तेनी सखी चिन्ह उपरथी जाणी जाय ते लक्षिता, जे स्त्रि पोते करेली रतिने गुप्त राखवानी रीत जाणेतेने डाह्या माणसो रतिगुप्ता माने छे, जे स्त्रि छूटपटे एटले निर्लजपणे काम विलासने वखाण्या करे, ते कुलटा, जे स्त्री पोताना पतिनुं आववुं जाणीने हवे कामक्रीडा थशे एम जाणी आनंद पामे, ते मुदिता, जे स्त्री संकेत स्थळे जाय अने त्यां ते स्थळनो नाश थयो जुए अथवा पोतानो प्रिय त्यां मळे नही, ते अनुशयना, जे स्त्रीनो विवाह करेलो न होय ने कुंवारी होय, ते अनूढानायका, कहेनाय ए रीते स्वयंदूतिका आदिक आठ नायकाओ चित्तमां विचारीने कही, अपराधवाळा पतिने जोइने स्त्रीओ त्रण प्रकारनुं मान धारे छे, तेथी तेनां त्रण जूदां जूदां नाम पडेछे, ते आ प्रमाणे, जे स्त्री पोताना पतिने बीजी स्त्री पासे जोइने मान धरे ने ते मान पाछुं पोताना प्रिय साथे सेहेज वातमांछोडीदे, ते लघुमानवती, जे स्त्री पोताना पतिना मुखथी बीजी स्त्रीनुं वखाण सांभळीने प्रचंड मान धरे ने पाछुं ते मान ज्यारे पति सारी रीते

बोध करे त्यारे तजे, ते मध्यमानवती, जे स्त्री पोताना पतिना शरीरमां बीजी स्त्री पासे जइ आव्यानां चिन्ह जोइने मान धरे, ने पाछुं ते मान पोतानो पति ज्यारे न घटे एवी दिनताथी घणी रीते आजीजीनी साथे समजावे तेथी धीरे धीरे छोडे, ते गुरुमानवती, जे स्त्री सवारेज पोतानो पति परदेश जनार छे, एम जाणीने खेद पामे, ते प्रवत्सपतिका. जे स्त्री बीजी स्त्री पासे जइ आवेला पोताना पतिनां चेन जोइने खेद पामे,ते अन्यसंभोगदुःखिता, जे स्त्री पोताना पतिनो दोष जोइने गर्व धारण करे,ते गर्विता नायका कहेवाय, परंतु ते त्रण प्रकारनी थाय, जेना भेद सागर जेवा गंभीर बुद्धिवाळा विद्वानोए काव्यभावमां कह्या छे, जे स्त्री पोताना रूपना गर्वथी पतिनी वातने खंडन करे, ते रूपगर्विता, जे स्त्री पोताना पतिना भर प्रेमथी गर्व धरीने जेनी तेनी साथे लडे, ते प्रेमगर्विता, जे स्त्री पोतानां सघळां मोटेरां कुटुंबी लोकोनी लाज तजीने समय विना कामातुर थइ पतिनो संग करे, ते कामगर्विता, ए उपर कहेली स्वाधीनपतिकाथी गर्विता सुधीनी "छने चोगणी करिये एटले" चोवीश नायकाओनां उत्तम दिक त्रण रूप विचारमां लइ,अर्थात् त्रणगणी करीने पछी तेने दिव्यादिकथी त्रणगणी करवी,ते नायकाने क्रिया चतुरादिकथी बमणी विस्तारवी पछी तेने जेष्ठादिक बे भेदे गुणीकरवी.जे स्त्री पोताना पतिए अपमान कर्युं होय,तोपण मनमांथी रोष छोडीने हमेशां सरल चाले,ते उत्तमा,जे स्त्री पतिना थोडा दोषथी मान करे,पण पाछी परिणामे मान तजी दे,ते मध्यमा, जे स्त्री पतिनो दोष जोइने वारे वारे रीसाय,अने कपट न मूके,ते अधमा, ए त्रण नायकाओथी जूदी बीजी त्रण नायकाओ घणा डाह्या विद्वानो कहे छे.ते आ प्रमाणे,जे स्त्री पोताना पतिना स्नेहने हमेशां सारी रीते नभावे,ते दिव्या,जे स्त्री पोताना पतिना प्रेममां मन लावे अथवा न लावे,ते दिव्यादिव्या, जे स्त्री हमेशां पतिना प्रेमना नियमथी हीन होय,ते अदिव्या, एवी

वीनथी महाराजा रसमागरे पोताना मनमां जाणेली नायकाओ में युक्तिमां लावीने कहीछे, जे स्त्री कांइक क्रिया करीने तेनी सानमां कामनां चेन पोताना पतिने जणावे,ते क्रियाचतुरा, जे स्त्री बोलवाना भेदमां सान करीने कामनां चेन पोताना पतिने जणावे,ते मोहनी, एक पतिने बे स्त्रियो होय, तेमांनी जे स्त्री पतिने वधारे वाहाली होय,ते जेष्टानायका जाणवी अने कांइक ओछी वाहाली होय,ते कनिष्टा नायका कहिये. ए रीते एटला प्रकार वाळी नायकाओनी संस्कृत भाषाना ग्रंथो तथा वृज भाषाना ग्रंथो पण साक्षी आपे छे, आ जूदी जूदी सघळी नायकाओने एकठी करीने तेनो प्रस्तार करवाथी तमाम भेदनी संख्या प्रसिद्ध थायछे.

सारांश--स्वकियादिक त्रण स्त्रियो गणीने तेने पद्मिन्यादिक चार भेदे गणीने तेने मुग्धादि त्रणगणी करी लइये.एटले३६थाय.पछी नवलवधू आदिक चार भेद तथा धीरादि मध्याना त्रण भेद मेळवतां१५थाय.तेने स्वकीयादि त्रण भेदे गणतां (४५) थाय,तेने पद्मिन्यादि भेदथी चारगुणी करिये, एटले (१८०) थाय तेमां प्रथम कहेली स्वकियादि (३६) मेळविये एटले (२१६) थाय.तेने स्वाधिनपतिकाथी गर्विता सुधीना चोवीश भेद गुणा करतां"५१८४" थाय,तेने उत्तमादि त्रण भेदे गुणतां"१५५५२" थाय, तेने दिव्यादि त्रण भेदे गुणतां "४६६५६ थाय,तेने क्रियाचतुरादि बे भेदे गणतां "९३३१२" थाय, तेने जेष्टादि बे भेदे गणतां "१८६६२४" एक लाख छाशी हजार छसो अने चोवीश नायकाओ थाय. ॥१८॥

॥ दोहा ॥

लाख एक छासी सहस, छसें ओर चोवीश ॥
इते भेद वनितानके, हमें लहतहे ईश ॥ १९ ॥

अर्थ. एकलाख छाशीहजार छसें ने चोवीश, एटला प्रकारनी नायकाना भेद रसमागर महाराजा जाणे छे. ॥ १९ ॥

कवि भंषत रीझे कुसुम, वहुर लगे वतरान ॥
अचरिजसी धारत उभय, इक इक समुझि सयान ॥ २०

अर्थ. कवीनुं भाषण सांभळीने कुसुमावळी रीझीने घणां वखाण करवा लागी एटलुंज नहीं पण शांणां वन्ने जणा एक बीजानी समजण जोइने आश्चर्य पाम्यां. ॥ २० ॥

॥ गाहा ॥

कुसुमावलि संन्यासं, चरचा प्रथक नायका भेदं ॥
पंचविंश अभिधानं, पूर्न प्रवीनसागरो लहरं ॥ ॥ २१ ॥

अर्थ. ब्रह्म कुमारी कुसुमावळी अने सन्यासीना मिलापना प्रसंगे थयेली नायका भेदनी चरचा संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी पचीशमी लेहेर पुरीथइ. ॥ २१ ॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे कुसुमावली संन्यास चर्चा नायका भेदो नाम पंचविंशतिमो लहरं ॥ २५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां पंचविंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ संन्यासी कुसुमावली पत्र प्रकाश प्रसंगः ॥ दोहा ॥

एक एकहुकी प्रकृति, उभै सराहन कीन ॥
संन्यासी सागर पती, कर कुसुमावलि दीन ॥ १

अर्थ. एक बीजाना स्वभावना बन्नेए परस्पर वखाण कर्या, पछी संन्यासीए महाराजा रससागरनो पत्र कुसुमावळीना हाथमां आप्यो. ॥१

॥ चोपाई ॥

यहैं बात संन्यास उचारी ॥ पाइ हमे परतीत तुमारी ॥

रससागर सु पत्र लखिदीनो ॥ सोय आपके हाजर कीनो ॥ पहोचे यह परवीनकलापें ॥ पुनि प्रति उत्र लिखें वह आपें ॥ यँहँ आप प्रतिउत्तर दीजें ॥ नहि तो बचन जूठ कहि लीजे ॥ कुसुमावली कही संन्यासी ॥ तुमतो दई हमनकों फांसी ॥ राज द्वार क्यों उत्तर लीजे ॥ बचन जूठ कैसें भंखीजे ॥ पुनि ब्रह्मनि मन निश्चय धार्यों ॥ प्रति संन्यास उत्र उच्चार्यों ॥ दिन दशपंच रहो इन ठाउँ ॥ प्रान तजों या उत्तर लाउँ ॥ २ ॥

अर्थ. संन्यासीए कुसुमावळीने कह्युं जे हवे मने तमारी खात्री थइ, तेथी महाराजा रससागरे जे पत्र लखीदीधो हतो ते में तमने हाजर कर्यो, हवे आकाशगळ कळाप्रवीणने पहोचे अने तेनो उत्तर पोताना हाथथी लखीआपे, एवीरीते जो बने तो तेनो जवाव आपो अने नहींतो तमे कहो जे में वचन आप्युं ते जुटुंछे, आ वात सांभळी कुसुमावळीए संन्यासीने कह्युं जे तमेतो मने फांशी आपी, राजद्वारनो पण उत्तर केम लेवाय! तेम तमने आपेलुं वचन जुटुंछे एम पण केम कहेवाय! पछी कुसुमावळीए पोताना मनमां निश्चय करीने संन्यासीने कह्युं जे दश पांच दिवस आप आंहीं रहो तो तेटलामां कांतो प्राण तजुं अने कांतो उत्तर-लावी आपुं. ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

उभ श्रोता वक्ता उभय, ग्यानी उभय विशेश ॥
अन्यो अन्येकेक प्रति, उभय कीन आदेश ॥ ३ ॥

अर्थ. बेउ जण वात सांभळवामां तथा केवामां कुशळ, बेउ वचन बोलवामां पण चतुर एवा स्वामी तथा कुसुमावळीए जुदांपडती वखते

एक बीजाने परस्पर वन्नेए आदेश कर्या. ॥ ३ ॥

उभय रूप गुन सम उभय, उभय बराबर वेश ॥
अन्यो अन्येकेक प्रति, उभय कीन आदेश ॥ ४ ॥

अर्थ. बेउ रूप तथा गुणमां सरखां तेम वेशमां पण बराबर, स्वामी तथा कुसुमावळीए जूदां पडती वखते एक बीजाने परस्पर वन्नेए आदेश कर्या. ॥ ४ ॥

उभय नम्र उन्नत उभय, कुल गुरुताईभेश ॥
अन्यो अन्येकेक प्रति, उभय कीन आदेश ॥ ५ ॥

अर्थ. बेय नम्रता तथा म्होटाइमां बराबर तेमज कूळ, धर्म अने गुरु परंपरामां सरखां बेउ जण जूदां पडती वखते एक बीजाने परस्पर वन्नेए आदेश कर्या. ॥ ५ ॥

धीर दई पाती लई, कीनो ग्रह परवेश ॥
अन्यो अन्येकेक प्रति, उभय कीन आदेश ॥ ६ ॥

अर्थ. कुसुमावळीए स्वामीने धीरज आपी पत्र लेइ, पोताना घरमां जवासारु जूदां पडती वखते एक बीजाने परस्पर वन्नेए आदेश कर्या.

॥ सोरठा ॥

निश अध गई निहारि, उभ अत्रप्त बात न उठे ॥
निज ग्रह गई सुनारि, संन्यासी आसन शयन ॥ ७ ॥

अर्थ. वातोमां बेय अतृप्त थइने उठतां नथी, पछी अरधी रात वीती गइ जाणीने कुसुमावली पोताना घरमां गइ अने संन्यासी आसन उपर जइ सूता. ॥ ७ ॥

सब निश शोच बिचार, कीनो ब्रह्म कुमारिका ॥
प्रात चलत दरबार, संन्यासी वंदन कियो ॥ ८ ॥

अर्थ. कुसुमावळीएतो आखी रात शोच अने विचार कर्या कर्या अने सवार थयुं त्यारे दरबारमां जती वखत सन्यासीने वंदन कर्युं. ॥ ८

वंदित कही कुमारि ॥ महाराज माया अगम ॥
आशिष जोगि उचारि ॥ कही मनंछा तुम सफल ॥ ९ ॥

अर्थ. वंदन करतां कुसुमावळीए कह्युं जे हे? योगीराज, तमारी माया तो अगम्य एटले कोइना जाणवामां आवे एवी नथी, ते सांभळी स्वामीए योगनी रीत प्रमाणे आशीर्वाद आपी कह्युं जे तमारी मननी इच्छा सफल थशे.

॥ छंद मुक्तदाम ॥

चली चढि फंदन ब्रह्म कुमार ॥ दिनंकर उद्य गई दरबार ॥ पहोंचिय जत्र कलापरवीन ॥ दुहू कर खोलि सु आशिष दीन ॥ सुता नृप वंदन कीन बुलाय ॥ निज़ासन ब्रह्मनि बैठित आय ॥ करे नित ख्याल खुशी सु रसाल ॥ रही ग्रहिमोंन वही दिन बाल ॥ भई निश बीतगयो दिन ताप ॥ सहेलिय ऊठि चली ग्रह आप ॥ कलापरवीन दुजी मुख देख ॥ कछू दुचिती यह कीन परेख ॥ झरोखन आप बिराजित जाय ॥ लई तहँ बिप्रनि नीठ बुलाय ॥ कलापरवीन सु बूझिय बात ॥ कहो किहि भेद अरूझत जात ॥ तबैं दुज बाल सु उत्तर दीन ॥ कछू नहि आज सु मादक कीन ॥ प्रवीन सु माजुम लीन मगाय ॥ लियो निज ब्रह्मनिकों जु लिवाय ॥ दुजी मगवाई सु आसव बोलि ॥ ल्यो कर किंकरि कुंभ सु खोलि ॥ सुता नृप पात्र पियाए सु पंच ॥ उभैं भइ आनन मादिक रंच ॥ १०॥

अर्थ: पछी रथमां बीराजीने कुसुमावळी सूर्य उगती वखते राजदरबारमां गइ, त्यांहा कळाप्रवीणछे तेनी पासे जइ बे हाथ खुल्ला करी आशीर्वाद दीधो, त्यारे राजकन्याए पण तेने माननी साथे बोलावीने वंदन कर्युं, पछी कुसुमावळी पोताना आसन उपर मर्यादा पुर्वक आवीने बेठी, हमेशां तो खुशी उपजावे एवा रसवाळा ख्याल करे, पण ते दिवसे तो केवळ ते बाळा कुसुमावळी मौनव्रत (मुंगापणुं) धरीने रही छे, एम करतां दीवसनो ताप मटी गयो अने रात्री थइ एटले सर्व साहेलीओ उठीने पोतपोताने घेर गइओ, कळाप्रवीण कुसुमावळीनुं मुख जोइने (पोताना मनमां विचार करवा लागी के) आज आ कुसुमावळी कांइक उदासीमांछे एवी परिक्षाकरी लीधी, पछी पोते जइ जरोखामां बेठी अने त्यांहा पोतानी पासे कुसुमावळीने बोलावी लीधी, तेने कळाप्रवीणे वात पूछी जे हे? कुसुमावळी, तमे आज शा भेदथी उदासी थतां जाओछो ते कहो? त्यारे कुसुमावळीए कह्युं जे आज में कांइ नीसो कर्यो नथी तेने लीधे एमछे, ए वात सांभळतांज प्रवीणे माजम मगावीने पोताना हाथथी कुसुमावळीने लेवराव्यो, त्यारे कुसुमावळीए पण दासी पासे मदिरानो कुंभ मगावी खुल्लो करावी तेमांथी पांच पात्र भरावी राजकुमारि कळाप्रवीणने देवराव्यां, नीस्साना रंगथी बन्ने कन्याओ लाल आंख्यो अने प्रफुल्लित मुखवाळी थइओ. ॥ १० ॥

॥ चोपाई ॥

जाम बितीत जामनी होई ॥ सहचरि आयस दई सु सोई ॥ कुसुमावलि एकंत परेखें ॥ कही प्रवीन चांदनि देखें ॥ उठि जन दोर चांदनी आये ॥ इक द्वै तान ब्रह्मनि गाये ॥ उर हुल्लास हुओ अति जवही ॥ बोली ब्रह्म कुमरिप्रति तवही ॥ ११ ॥

अर्थः एक पहोर रात वितिगइ एटले पासे रहेवावाळी दासीओने रजा आपी तेथी ते सूइ रहीयुं, कुसुमावळी तो एकांत समयनी वाटज जोइ रही हती, एटलामांतो कळाप्रवीणे कह्युं जे चालो आपणे चांदनीनी मजा जोइए, पछी बन्ने कन्या उठीने प्रकाशित चंद्रना अजवाळामां आवी बेठीओ एटले कुसुमावळीए एक बे तीन गोथां, ज्यारे कळाप्रवीणना मनमां अतिशे आनंद थयो त्यारे कुसुमावळी राजकुंवरी प्रत्ये बोली. ॥ ११ ॥

॥ छंप्पय ॥

एक सर्वरी सुपन, भयो सो कह्यो न जाई ॥
बहुत बात विस्तार, हीनिकें मध्य हसाई ॥
यहे सुरत परवीन, बात बझनको लग्गी ॥
ब्रहानि मोह वधाय, वचन दोउ यह सग्गी ॥
सुनि सुपन क्रोध कीजें नहीं, अरज प्रत्युत्तर दीजियें ॥
विधि विधि विवेक कहतहि बतें, सुपन सु भेद सुनीजियें ॥ १२

अर्थः हे! कळाप्रवीण आज गइ रातमां एक स्वप्न थयुं ते कह्युं जाय एवुं नथी, कारण के ते वातनो घणोज विस्तारछे अने ते स्वप्नमां हाणनी अं... हांसुंछे, एवा भरम उपर कळाप्रवीण वारंवार वात पूछवा लागी, त्यारे कुसुमावळीए स्वप्ननी वातनो घणोक मोह वधारीने कळाप्रवीण पासेथी बे वचन मागी लीधां, तेमां एकतो ए जे स्वप्ननी वात सांभळी क्रोध करवो नहीं अने बीजुं अरज सांभळी पाछो तेनो प्रत्युत्तर देवो, ए प्रमाणे बे वचन आपो तो जात जातना विवेकथी वात कहेवानुं बने अने तमे पण स्वप्नना भेदने सांभळो? ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

बात सुनन उर चाह बहु, बकसे वचन प्रवीन ॥

कुसुमावलि प्रति नृप कुमरि, कहो कहो जक लीन ॥ १३ ॥ अर्थ—पोताना मनमां वात सांभळवानी घणी चाहना छे तेथी कळाप्रवीणे आगळना करार प्रमाणे वर्तवानुं वचन आप्युं, ने पछी कुसुमावली पासे राजकुमारीए हवे वात कहो कहो एवी जकर लीधी. १३

अथ सुपन आडंबर कुसुमावलि उक्त ॥ छंद पद्धरी

आयो सु सुपन निश एह आज ॥ आखेट आवे वह महाराज ॥ गाजंत निशान, साजंत गयंद ॥ निकसे झरोख नीचे नरिंद ॥ निज कुमर एह साथी न सथ्थ ॥ चांदनी आय आकाश पथ्थ ॥ कौमुदी चंद पूरन प्रकाश ॥ राजंत आप इत मुदित आस ॥ उठि आप तासु मनुहार कीन ॥ आधे उछीर आसन सु दीन ॥ वतरान लगे उभ उर हुलास ॥ नन पासवान हम एक पास ॥ सिंगार बास दुहु सम सरूप ॥ भामनी कामि कामनी भूप ॥ जर चेल चित्र मनि मुक्त माल ॥ राधिका कृष्ण आभा रसाल ॥ मुसकात बात तुम करत मंद ॥ उर बढत हर्ष त्यों त्यों अनंद ॥ चंदन चढाय सौगंध लाय ॥ तुम पात्र दीन सेराह ताय ॥ आपको पात्र उन दीन फेर ॥ हसि अति हुलास आनन सु हेर ॥ एकैक भयो उर अति सनेह ॥ मानहु घटा श्रव सुधा मेह ॥ तुम भरयो पात्र हमरे बार ॥ हसि कह्यो आप हमसें निहार ॥ दो गुलाबदानी मगाय ॥ महराज अंग छिरकौं जु आय ॥ तुम लगे चहुर बतियां उमग्य ॥ हाँहाँ सु लांउ कहि गई जग्ग ॥ एही सुपन्न कारन सु कोन ॥ मुसकाय यही ब्रह्मनी मोन ॥ १४ ॥

अर्थ. कुसुमावळी कळाप्रवीणने कहेछे के आज रात्रीए एवुं स्वप्न आव्युं के ओल्या राजवंशी सीकारे आव्याता ते आव्याछे, तेना नीशान नगारां वागेछे, अने सजेला हाथी उपर अंबाडीमां बीराजीने आपणा झरोखा नीचे थइ नीकळ्या, जेनी साथे कोइ नथी एवा ते एकाएक राजकुमार चांदनी खीलती वखते आकाश मार्गेथी आपणा मेहेलमां आव्या, ते वखते चंद्रनी ज्योत्स्नानो (चांदनीनो) पण परीपूर्ण प्रकाश थयो हतो तेथी आप अंतःकरणमां आनंदथी भरपूर थइ, चंद्रना अजवाळामां आंही वीराज्या हतां, ते राजाने जोतां आपे घणां मान तथा सत्कारनीसाथे मनवार करी, उठीने अर्धुं आसन बेसवा आप्युं अने बन्ने जण मनमां हुल्लास पामीने वातो करवा लाग्यां, ते वखते बीजां पासे रेहेनारां कोइ न हतां, ने हुं एकज पासे हती, शृंगार, वस्त्र अने खुबसुरतीमां सरखे सरखां बन्ने जण जाणे रतीने कामदेव होयने! एवां राणीने राजा दीसतां हतां, वळी जरीनां वस्त्र तथा जातजातना मणीओनी माळा अने मोतीना हार पेहेर्या हता, ते जाणे सुंदर रूपवाळां राधा कृष्ण शोभतां होयने! एम लागतुं हतुं, ते वखते तमे धीमे धीमे वातो करतां मंद मंद हसतां हतां तेम तेम मारा मनमां आनंद वधतो जतो हतो, पछी तेने तमे चंदन चढावी अतर लगावी मदिरानुं पात्र भरी आप्युं, अने तेणे पण अति आनंदथी आपना मुख सामुं जोइ हसी मदिरानुं पात्र भरीने आपने आप्युं, एम करवाथी परस्पर एक बीजाना मनमां अतिशे स्नेह वधी गयो, ते जाणे मेघनो घटामांथी अमृतनो वरसाद वरसतो होयने! एम लाग्युं, पछी बीजीवार तमे पात्र भरी मारा सामुं जोइने बोल्यां के हे? कुसुमावळी, जलदी गुलाबदानी मगावो एटले हुं महाराजाना अंग उपर गुलाबजळ छांटुं एम कही तमे उमंगथी वातो करवा लाग्यां, त्यारे में कह्युं जे हांहां लावीआपुंछुं एम केहेतांज जागीगइ, तो हे? कळाप्रवीण, ए स्वप्ननुं शुं कारण हशे ते कहो? एटली वात कही

ને બ્રહ્મ કુમારી કુસુમાવળી જરા મરકીને પાછું મૌનવ્રત (મુંગાપણું) ધારી બેઠી. ॥ ૧૪ ॥

॥ દોહા ॥

કેહા સુપન કારન કહા, કહા ઉકતિ યહ કીન ॥
સુમન ગુચ્છ મુસકાય કછુ, કુસુમ સુ હન્યો પ્રવીન ॥ ૧૫

અર્થ. આ સ્વપ્ન તે કેવું? અને તેનું કારણ શું? આતો તમે શું ભાષણ કર્યું? એમ કહી જરા મરકીને કળાપ્રવીણે કુસુમાવળીને ફૂલનો ગજરો માર્યો. ॥ ૧૫ ॥

॥ ચોપાઈ ॥

કુસુમ પ્રવીન પ્રકૃતિ કછુ જાની ॥ બોલનલગિ કુમરી પ્રતિ બાની ॥ રાજ વંશ બ્રહ્મકો નહિ મારે ॥ હમ તો સુપન સત્ય કરિડારે ॥ દ્વિજ દધીચ સુર કારજ કીનો ॥ દ્વિજ અગસ્ત કોપિ દધિ પીનો ॥ દ્વિજ મિલાય રુકમિની હરિ દોઇ ॥ દ્વિ-જ સુ દીન જાનો મત કોઈ ॥ દ્વિજ વશ મંત્ર મંત્ર વશ દેવા ॥ એહિ વિધ સૃષ્ટિ કરત દ્વિજ સેવા ॥ યાતેં વચન સત્ય દ્વિજ માનો ॥ દ્વિજ સુ દેવ માનવ જિન જાનો ॥ ૧૬ ॥

અર્થ. આવા મરમમાં કુસુમાવળી કાંઇક કળાપ્રવીણની પ્રકૃતીનું વ-લણ જાણી ગઇ, એટલે પાછી રાજકુંવરીને કેહેવા લાગીકે રાજવંશી તો તમારી પેઠે બ્રાહ્મણને મારે નહીં, અમેતો બ્રાહ્મણ કેહેવાઇયે તો સ્વપ્ન ખોટું કેહેવાયછે તેને પણ સાચું કરી નાખીયે, (અને બ્રાહ્મણના પરાક્રમ વિષે આગળના દાખલા કહું તે સાંભળો?) દધીચિ નામના ઋષીએ પોતાના અંગના હાડ કાઢીઆપીને દેવતાઓનું કામ કર્યું, તેમજ અગસ્ત્ય નામ-ના બ્રાહ્મણતો કોપીને સમુદ્રને પીઇજ ગયા, વળી બ્રાહ્મણે શ્રીકૃષ્ણ તથા

रुक्मणी ए वेदने मेळां करी आप्यां, माटे ब्राह्मणोने कोइये दीन (गरीब) जाणवा नही, कारणके ब्राह्मणने वश मंत्रछे अने मंत्रने वश देवताछे, तेटलाजमाटे सवळी सृष्टी ब्राह्मणनी सेवा करेछे, तेथी ब्राह्मणना वचन साचांज जाणो, ने जे ब्राह्मणने तमे मनुष जाणोछो ते देवरूपछे. १६

॥ गाहा ॥

ब्रह्मनि वात प्रवीनं, सुनियत धार अंतरंग सखी ॥
कारन करन प्रकाशं, बोलिय प्रति विवेक जुत बानी १७

अर्थ. स्वप्न संबंधी जे वात पोतानी सखी कुसुमावळीए कही ते सांभळी अंतःकरणमां धारण करी तेनुं कारण खुलुं करवाना हेतुथी कळाप्रवीण विवेक भरेलां वचनोवडे कुसुमावळीसाथे वात करवा लागी. ॥ १७ ॥

पेंडित भरित उसासं ॥ बोलत मंद मंद यह बानी ॥
उन उत कित इत आवहि, पावहि जिहि अद्रष्टमहि जैसो॥

अर्थ. पेहेलां आळस खाइ उंडो अने लांबो नीसासो मुकीने पछी धीमे धीमे एवुं वचन बोली के, हे! सखी, ए त्यांहांना रेहेनार राजवंशी आंही केम आवे वारु! पण जेना अद्रष्टमां होय तेवुं तेने मळे. ॥ १८ ॥

॥ सोरठा ॥

एक अंगवत नारि, संग रहत निश दिन सदा ॥
आशय लई निहार, कुसुम सु कलाप्रवीन मन ॥ १९ ॥

अर्थ. एकज अंगनी पेठे बने कुंवरीओ हमेशां रात दिवस साथेने साथेज रहेछे, तेथी कुसुमावळीए कळाप्रवीणना अंतःकरणनो अभिप्राय जाणी लीधो. ॥ १९ ॥

फुनि तब कही प्रकाश, वहे आप जोरी बिहद ॥

हे न कछू परिहास, उन पठायो आप प्रति॥ ॥ २०

अर्थ. पछी कुसुमावळीए खुलुं कह्युंजे हे! कळाप्रवीण, ए राजवंशी अने आप बन्नेनी जोड खुब सुरतीथी वेहद शोभेछे, आ कांइ मशकरी नथी कारणके आप उपर तेमनो पत्र आव्योछे. ॥ २० ॥

तुरस त्रपा तजिदीन, चित प्रवीन भई चटपटी ॥
लाव लाव जक लीन, कुसुम वहें पाती कहाँ ॥ २१ ॥

अर्थ. एवात सांभळतांज कळाप्रवीणे मनमांथी लाज तजीदीधी एटलुंज नहीं पण तेना मनमां चटपटाट चाल्यो एटले आतुरताथी बोली के हे? कुसुमावळी, ए पत्र क्यांछे ते लाव लाव एवीरीते जकर लीधी.२१

बाती कही बनाय, आखेटक संन्यासलौं ॥
कुसुम प्रतीत सुपाय, पाती दई प्रवीन प्रति ॥

अर्थ. पछी कुसुमावळीए, ते राजा शीकारे आव्या हता त्यांहांथी आरंभीने संन्यासीने मोकल्याछे त्यांहां सुधी सघळी वात विस्तारथी कही संभळावी ने ज्यारे पोताने खरेखरी प्रतीति थइ एटले कागळ लइ कळाप्रवीणने आप्यो. ॥ २२ ॥

॥ गाहा ॥

पाती लई प्रवीनं, उर आनंद उदास उमंगिय ॥
खोलित कसन सु ग्रंथी, बंद विदार बाचने लग्गिय॥२३॥

अर्थ. कागळ हाथमां लेतांज कळाप्रवीणना हृदयमां उदासी अने आनंद वधीगयो, पछी ते थेली उपर बांधेली रेशमनी गांठो छोडी सघळा बंध तोडी नाखीने वांचवा लागी. ॥ २३ ॥

अथ पत्र उदाहरन शिरनामेंको ॥ सोरठा ॥

अहो श्रि मिंत प्रवीन, चरन भेद ग्रहि बाँचियें ॥

लिख्यो जु पत्र नवीन, छंद सु मुक्तियदाम करि ॥ २४ ॥

अर्थ. हे! प्रिय मित्र कलाप्रवीण, आ नवीन पत्र मौक्तिकदाम छंद करी लख्योछे तेना अक्षरना भेदनुं ग्रहण करी वांचजो? २४॥

॥ अथ छंद मौक्तिकदाम ॥

स्वसंतिय श्री मनइछित थान ॥ बसें तहँ जाननहार बिधान ॥ सदा उर अंतर एकहु रंग ॥ उभे गति जाननहार अनंग ॥ त्रिहू गुन त्रीबिध जाननहार ॥ करे चत्र वेद सु भेद विचार ॥ लहें रति चारिहु भेद वहार ॥ रती इत पंच व्रती तुक धीर ॥ पढे फुनि पंच कवित्त सु काव्य ॥ सधे रस मिश्रित पंच सु भाव्य ॥ पटे रस शासतरं षट बानि ॥ अलिंगन रात पटो रितु जाति ॥ सतो सुर लीन सँगीतन जुक्त ॥ सतं मत संसकृतं सु विभक्त ॥ अठो गुन सात्विक आठ प्रकार ॥ त्रियातकि आठ दशा बिसतार ॥ नवं रस थाइ कला नव लीन्न ॥ नवं बिधि व्याकरनं ग्रह भीन ॥ दशा दश हाव दशं दश थान ॥ दशं मह पूजन काव्य प्रमान ॥ दुहू दश आभरनं अनुमान ॥ दशं दुहु अंक जुतं अभिधान ॥ बिद्या दश चत्रनकी रति रीत ॥ ध्रुवा दश चत्रन भेद सँगीत ॥ दशं अरु पंच सु मैन निवास ॥ कथा अनुमान समास प्रकास ॥ पटं दश आनन भूपन अंग ॥ दशं पट गान कलान अनंग ॥ अठं दश भिन्न सु बात पुरान ॥ दशं अठ ताल विधान सु गान ॥ दुहू दश एक सु मूर्छना गात ॥ दशं उकती दश

दोय बनात ॥ घटं दश दोय दुहानाकि जात ॥ गुनं दश
दोय सु लच्छन बात ॥ उभे दश द्वादश संचर एक ॥ अठं
दश द्वे गुन राग विवेक ॥ शतं दश दोय कल्लान सु भेद ॥
दशं अठ आसन कोक सु वेद ॥ अलंकृत आठ दशं दश
नाम ॥ बढे अति अच्छरके विशराम ॥ गने गनती गुन
छंद अपार ॥ पढे नहि पार लहे मुखचार ॥ सबें उपमा
शुभसी छबि लीन ॥ इते गुन लायक मित प्रवीन ॥ सदा
चिरजीव रहो वह मित्र ॥ लिख्यो रससागरनें यह पत्र
॥ सबे रसके तुम सज्जन धाम ॥ सु वंचहु जे कमलापति
नाम ॥ इतें निज नेहसे मोद अनंत ॥ लिखो निजके सु
मया करि मित ॥ बढें पतियाँ लखि प्रेम प्रकाश ॥ घटें
उमड्यो मनु भाव उदास ॥ विचारहु फेर हकीकति भाप
॥ तुमें सुख देखनको अभिलाप ॥ घरी धन जो मुख देख-
हु आप ॥ मिटे तनके विरहानल ताप ॥ कबें किरतार
करें दिन एह ॥ घटा बरपें चढि अंम्रत मेह ॥ सदा मन
ध्यान न चूकत सोय ॥ जबे मिलहो तब आनंद होय ॥
कहा लिखियें विसतार विशेप ॥ इतेमहि जानहुगें अबि-
शेप ॥ इते फुरमान लखो फुरमास ॥ सबे बिधिहें हमको बि
शवास ॥ मनंतर अंत्र न राखिये एह ॥ हमें तुम चाहत
दीठ सनेह ॥ न लेखियें लेखक दोप जरूर ॥ लखो प्रति
उत्तर पत्र जरूर ॥ एके पर आठ सु संमत लेखि ॥ नहें
न्रप तीनरु विंश विशेपि ॥ सितं पख ओर मधू शुभ मास

॥ भयो परि पूरन चंद्र प्रकाश ॥ गुरू ग्रह बीत गई निश आध ॥ लिख्यो यह पत्र सु मित्र अराध ॥ नभाउन प्रेम प्रकार प्रतीत ॥ विचारहु फेर सवैयन रीत ॥ २५ ॥

अर्थ. स्वस्तिश्री मनंछापुर महा शुभस्थाने एटले कल्याण कारक अने शोभायमान मनंछापुर नामना शुभस्थानमां रहेनार, सर्व प्रकारनी विधिओने जाणनार, हमेशां हृदयमां एकज रंगने राखनार, कामदेवनी त्रेय प्रकारनी गतिने जाणनार, त्रण गुण तथा त्रण प्रकारनी वेदविधिने जाणनार, चार वेदना भेदनो विचार करनार, तेमज बहारनी चारे प्रकारनी रतिक्रीडाना भेदने जाणनार, अंतरनी पांच प्रकारनी रती अने बाहारनी चार प्रकारनी वृत्तिओने जाणनार, पांच जातना कवित्त अने पांच काव्यने भणनार,

रसयुक्त पांचे भावने साधनार, आ सृष्टिना मधुरादि छ रस, छ शास्त्र, छ भाषा अने छये ऋतु प्रमाणे आलिंगन करवानी रीतिने जाणनार, संगीत शास्त्र मुजब साते स्वरथी गायन करनार, संसकृतमां रहेली साते विभक्तीना मतने जाणनार, कविताना आठ गण अने स्वेद, कंप, स्वरभंग विगेरे आठे प्रकारना सात्विक भावने जाणनार, नायकानी आठ दशाने विस्तारनार, शृंगारादि नव रस तथा रतिहास्य विगेरे तेना स्थायी भावनी कळाने जाणनार, नव प्रकारनां व्याकरण तथा नवे ग्रहोना जूदां जूदां रूपने जाणनार,

अभिलाष विगेरे दश अवस्था, लिला विलासादि दशप्रकारना हाव, तेमज दश स्थानकने जाणनार, दश महाविद्यानुं पूजन अने दशप्रकारना कालप्रमाणने जाणनार, बारे अंगे बार प्रकारना घरेणां पेहेरी जाणनार, अंके युक्त बार प्रकारना नामने जाणनार, चौद विद्या, चौद प्रकारनी रति क्रीडानी रीत, ध्रुपद विगेरे संगीत शास्त्रना चौद भेदने जाणनार, कामदेवना रेहेवाना पन्नर ठेकाणाने ओळखनार, सर्व प्रका-

रनी कथानुं अनुमान अने समासनी रीतने जाणनार, अंगमां तथा मुख उपर सजवाना सोळ शृंगार तथा गायन संबंधी सोळ प्रकारनी कामकळाने जाणनार, अढार पुराण माहेली जूदी जूदी वार्त्ताने तथा गायनना अढार तालनी रीतिथी गानने जाणनार,

तेमज गायननी एकवीश प्रकारनी मूर्छनाने जाणनार, बावीश प्रकारनी उक्तिथी भाषण करनार, छवीश प्रकारना दोहानी जातने जाणनार, बत्रीश लक्षणवाळां, तेत्रीश प्रकारना संचारी भावने जाणनार, (छ राग त्रीश रागणीयो एम मळीने) छत्रीश प्रकारनी राग कळाना विवेकने जाणनार, बोतेर कळाना भेदने जाणनार, कोकशास्त्रमां कहेला चोराशी प्रकारनां आसनने जाणनार, एकशो आठ प्रकारना अलंकारने माननार, वधता ओछा अक्षरोना विश्रामने जाणनार, जेने भणतां चार मुखवाळा ब्रह्मा पण पार पामता नथी एवा गण, मेरु, मर्कटी, पताका प्रस्तार समेत अपार छंदोनी गणतरी करनार,

एवी सर्व उपमाथी शोभायमान छविने धारणकरनार, उपर कहेला सर्व गुणोथी विराजमान, कळाप्रवीण नामना मीत्र नीरंतर चीरंजीव रहो, हे! मीत्र, तमेतो सर्व रसना धाम रूपछो, माटे आ पत्र लखनार रससागरना जयश्रीकृष्न वांचजो, आहीं आपना स्नेहथी घणो आनंदछे, हे! मीत्र आपनी कुशळताना समाचार मेहेरबानीनी राहे पत्र द्वारायें लखशो, कागळ लखवाथी प्रेमनो प्रकाश वधेछे, एटलुंज नहीं पण मनमां वधी गयेलो उदासीनो भाव मटे, तेमज कागळमां लखेला भाषणनी हकीकतनो विचार जाणवामां आवे, केवळ तमारुं म्होडुं जोवानी अमारे अभिलाषाछे, आपना मुखने जोइए ते घडीतो धन्यछे, जे जोवाथी शरीरमां रहेला विरहाग्निनो ताप मटे, अमृतना मेघनी घटा वरसे ए ये वरसे एवो दिवसतो जगत्कर्ता परमेश्वर क्यारे करशे, म्हारुं मन क्यारे पण तमारा ध्याननें चुकतुं नथी, माटे ज्यारे मळशो त्यारेज आनंद थशे,

अति विस्तारीने वणु शुं लखीये, आटलामांज सघळी बावत जाणी जशो. आंही अमसरखो कांइ पण काम काजनी फरमाश लखजो अने अमारे तो सर्व प्रकारे तमारो विश्वासछे, ते संबंधी तमारे कांइपण मनमां अंतर राखवो नहीं, अमेतो तमने स्नेहथी जोवाने चाहीएछीए, पत्रनो लेखक दोष होयतो लेखशो नहीं अने पत्रनो उत्तर तरत जरूर लखजो, एक उपर आठ एटले अढार अने छत्रीशमां त्रण वधरवाथी ओगणचाळीश एटले संवत १८३९ नां चैत्र शुद १५ ने गुरुवारनी अर्धी रात्री वीतिगया पछी पूर्ण चंद्रनो प्रकाश थती वखते मीत्रनी आराधना रूप आ पत्र लख्योछे ते वांची हमेशां आ जोडायेला प्रेमने नभावशो एवो अमारे खरे खरो विश्वासछे, (आटलेथीज बंध थयुं एम न समजनां) नीचे लखेला सवैयानो अभिप्राय विचारीजोशो. ॥ २४ ॥

॥ अथ अलंकार दृष्टांता सवैया ॥

रंगहि रंग रह्यो मिलकें अति, मंजतहीं चटकी नहि छूटे ॥
भेद कछू न परे परसें कर, पात प्रसून खरे नहि खूटे ॥
भाजन फूटगयो जु इते पर, टूक भयेहें तितीविधि तूटे ॥
ऐसें नवीन वसे उर भीतर, जैसें बनाय बलोलमें बूटें २६

अर्थ. जेम काचना वासणनां रंग साथे तेमां बनावेलां चित्रनो रंग मळीने रह्योछे, अतिशे मांजवाथी तेनी चटक छुटती नथी अने हाथनो स्पर्श करवाथी तेमां भेद पण पडतो नथी, तेमज तेमां बनावेलां पानडां तथा फूल खरतां नथी, तेम खुटतां पण नथी, एम करतां कदाचित ते वासण फुटीने तेना कटके कटका थइ जाय, तो ते चित्रनां पण तेटलाज कटका थायछे, एवीरीते हे! कळाप्रवीण, जेम बलोलनां वासणमां बनावेलां बुंटाओ वसी रह्याछे, तेम अमारा हृदयमां तमे वसी रह्याछो. ॥ २६ ॥

॥ अथ अलंकार दृष्टांत ॥

बंध परेच जुदे पिंजरा दोउ, एककु एक घरी विसरे नां ॥
ओसर वोट खुलें कवही तव, अंगहि अंग निहारत नेनां॥
आपसमें वतरानलगे तव, जानत मेर विरंचिकों हेनां ॥
देखो प्रवीन विहंगमकी गति; कीर कहाँको कहाँकि हे मेनां

अर्थ जोके वन्ने पक्षीओ ढंकायेला पडदाथी जूदा जूदा पिंजरामां बंध पडेछे, तोपण एक एकने घडीएक विसारतां नथी अने क्यारेक समयने लीधे पडदा खुलेछे, त्यारे आंख्योथी एक एकना अंगने जोया करेछे, वळी आपसमां एक वीजां वातो करवा लागेछे त्यारे एम जाणेछेके ब्रह्माने पण मेहेर नथी, हे? प्रवीन, ए पक्षीओनी गतिने जुओ, के क्यांहांनो पोपट अने क्यांहांनी मेनाछे. ॥ २७ ॥

॥ अथ अलंकार दृष्टांत ॥

धाम अराम रह्यो करिकें तहँ, मिंत मिल्यो तो चल्यो तजि तीरें ॥ कोमल कुंजनको वसिया, रसिया व्हे उड्यो सुख छांड शरीरें ॥ बाज वहे तो गहे गति बाजकी, धीर वहे तो ग्रहे गति धीरें ॥ कोटि उपाय करे बिछुरें नाहिं, प्रेम प्रवीन सुगंध समीरें ॥ २८ ॥

अर्थ-सुगंध वगीचामां घर करीने रह्योछे पण त्यांहांजो पोतानो मीत्र वायु मळेछे, तो ते वगीचाना कीनाराने छोडी दइने तीरनी माफक चालो नीकळेछे, जे सुगंध कोमळ कुंजनो (लत्तामंडपनो) रहेनार छतां रसीक थइ शरीरना सर्व सुखने छोडी दइने उडी नीकळेछे, जो कदी पवन वाजना जेवी उतावळी गतिथी चालेछे, तो पोते पण बाजना जेवी उतावळी गतिने पकडेछे अने जो ते धीमो चालेछे, तो पोते

पण योमि गतिने लेछे, सुगंधने पवनथी जूदो पाडवासारु करोडो उपाय करे तोपण ते जूदो पडे नहीं, हे? प्रावेन, पवननीसाथे सुगंधने एवो प्रेम लागेलो होयछे. ॥ २८ ॥

॥ अथ अलंकार दृष्टांत ॥

पावसमें मन मोद लिये मनु, पान किये द्विरदी मदिराके॥
ज्यौं ज्यौं घटा वरसे सरसें, तन सूकत सूकगए गदराके ॥
आठहु मास निसास रहे अरु, गाजत गाज उठे बदराके॥
एसे यहें गुजरान अहो निश, देखो प्रवीन सने ददराके

अर्थ. मदिरानुं पान करवाथी हाथीओ जेम आनंद पामे तेम चोमासानी ऋतुमां देडकांओ हर्ष पामेछे, ने जेम जेम वरसादनी घटा वरसेछे तेम तेम सजीवन थतां जायछे, ने वर्षा रुतु गया वाद गारो सुकाइ जवाथी शरीरे सुकाइ जायछे, आठ महिना सुधी तो प्राणविनाना थइ रहेछे अने वादळांना गाजवानीसाथेज पाछा गाजी उठेछे, रात दिवस तेओनुं एरीरिते गुजरान थायछे, माटे हे? प्रवीन, देडकांओनो स्नेह जुओ, केमके अमे पण एवीजरीते रातादिवस गुजरान करीएछीए. २५

॥ अथ अलंकार दृष्टांत ॥

भीन भयो चित चित्र लख्यो तन, नंदित नीरज नंद दगारो ॥ अंग जरे मुरझायपरे पुनि, चाहत चंच अंगारको चारो ॥ सूर प्रभा प्रगट्यौं तो कहा सब, लागतहे जु हलाहल खारो ॥ देखो प्रवीन चकोरके नेंनन, चंद गयो तो भयो अँधियारो ॥ ३० ॥

अर्थ. चित्तमां भयभीत थायछे अने शरीरे लखेला चित्र माफिक थइ रहेछे, वळी "कमळमांथी जनमेलो ब्रह्मा दगाखोरछे,, एम कहीने तेने

निंदेछे, अंगे वळेछे, अकळाइ अकळाइने पृथ्वी उपर धुंचवाइ पडेछे, पाछो फरीने चांचवते अंगारा खावाने चाहेछे, कांतिथी प्रकाशमान सूर्य प्रगट थयो तो तेथी शुं थयुं! केमके एनेतो सर्व प्रकारे हळाहळ झेरजेवो खारो लागेछे, माटे हे! प्रवीन, जुवो के चकोरनी आंख्योने चंद्रमा गयो तो पछी अंधारुंज थयुं. ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

आठ तीन पर पंच कर, तीन तीन पर दोय ॥
पंच पंच कर एक सो, निशदिन जपंत सोय ॥ ३१ ॥

अर्थ. आठमा वर्गना (शषसह) ए माहेला त्रीजा वर्णनी एटले(सनी) बाराक्षरीनी पांचमी मात्रा करवी, एटले (सु) त्रीजा वर्गना (चछजझञ) ए माहेला त्रीजा वर्ण उपर एटले (जउपर) बीजी मात्रा देवी, एटले (जा) पांचमा वर्गना (तथदधन) ए माहेला पांचमा वर्णनी एटले (ननी) पेहेली मात्रा करवी, एटले (न) (थाय, एवीरीते उपर कहेला सर्व वर्णो एकठा करवाथी सुजान एवुं जे नाम थयुं, तेनेज रातदिवस जप्या करीएछीए. ॥ ३१ ॥

पंच सवैया द्वै दुहा, बीश छंद अनुमान ॥
लिख्यो जु पत्र प्रवीनपें, सागर रसिक विधान ॥ ३२ ॥

अर्थ. पांच सवैया, बे दुहा, अने अनुमानथी वीशेक छंद युक्त रसीक महाराजा रससागरे रसना विधानवाळो पत्र कळाप्रवीण उपर लख्यो. ३२

॥ गाहा ॥

कुसुम सु कला प्रवीने, चरचा प्रथम पत्र वंचन विधि ॥
षष्ठविंश अभिधानं, पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ ३३ ॥

अर्थ. कुसुमावळी तथा कळाप्रवीण ए बन्नेये प्रथम पत्र वांचवामां विधिथी चर्चा चलावी ते संबधी प्रवीणसागर ग्रंथनी छवीशमी लेहेर स-

माप्त. थइ. ॥ २१ ॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे कलाप्रवीन कुसुमावलि संवादे प्रथम पत्र वंचन भेदो नाम षष्ठविंशतिमो लहरं॥ २६

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री वावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रवोधिनी टीकायां षष्ठविंशतितम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध॥ छंद दुर्मिला॥

परचा तहँ वेद लिये चलवी, करपत्र गृही शिर छत्र कर्यो ॥
विधिथी शुभ वांचिय छंद, प्रबंध सु अंतरमांहि उछाह धर्यो ॥
तदनंतर वृत्त कुमारि तणू, धरवा शिव पास उमंग भर्यो ॥
दिनकाज करे निशि योग धरे, कथि सार सताविशमां उचर्यो. ॥ २७

अथ कलाप्रवीन दशा कुसुमावलि चर्चा प्रसंग॥ सोरठा॥

सागर पत्र प्रवीन, वंचतही बदली दशा ॥
मनहु छीन जल मीन, तिहिंवेर तलफन लगी ॥ १ ॥

अर्थ. महाराजा रससागरनो पत्र वांचतांज कळाप्रवीणनी दशा बदली गई, तेमानो के जेम पाणी सुकाइ जवाथी माछली तलफती होयने! तेम ते समये तलफवा लागी. ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

खोलत वीर बाँचने लग्गी, रोंम रोंम बिरहानल जग्गी ॥
बरन बरन सर छाती पारा, जाने प्रेम जाननेहारा ॥
पहुचें एक पंकती आरा, उमडे नेंन असाढी धारा ॥
पूरन छंद बाचने लग्गे, प्रान पतंग दीप ज्यों दग्गे ॥

अथ इति पत्र वाँचने पाई, एतेमे तनकी सुधि नाई ॥
कुसुमावलि पाती कर लेवे, हिय द्रढकी हिम्मति फिर देवे॥
मागे फिर सचेतव्हे पाती, अति उसास भरिआवे छाती ॥
इहि बिधि पाती पूरन कीनी, कलाप्रवीन मूर्छना लीनी ॥
कुसुमावलि मनमें पिछतानी, ऐसहि बात अगें नहि जानी॥
के उपचार करन मन लागी, मुहुरत गए मूर्छना भागी ॥
फिर फिर बात बूझने लागे, कुसुमावलि मतेकों आगें॥ २॥

अर्थ. कवर फोडीने कागळ वांचवा लागी के तरत रुंवाडे रुंवाडे विरहानळ जागृत थयो अने अक्षरे अक्षरे कामनां बाण छाती सोंसरां थइ आरपार उतरवा लाग्यां, तेनी पीडाने तो प्रेमने जाणनार होय तेज जाणे अजाण जाणे नहीं, एवीरीते कळाप्रवीण पत्र वांचतां वांचतां एक हारना अंत सुधी पहोची तेटलामां तो जेम अषाढमहीनाना मेघनी धारा वरसे, तेम आंख्योमांथी आंसुनी धारा पडवा लागी, आखा छंदने वांचवालागी, त्यांहांतो जेम पतंगीओ दीवामां बळे तेम प्राणरूपी पतंग प्रेम रूपी दीवामां बळवा लाग्यो, अथथी ते इति सुधी कागळ वांच्यो त्यांहांतो पोताना शरिरनी पण शुद्ध रही नहीं, एवीरीते प्रवीण बेहोश थइगइ, त्यारे कुसुमावळी कागळ पाछो पोताना हाथमां लइलेछे अने तेने द्रढताथी स्थिर मन राखवानी वारेवारे हिम्मत आपेछे, कुंवरी पाछी पोते ज्यारे सचेत थायछे त्यारे कागळ पाछो मागी लेछे अने वांचवानो आदर करेछे त्यां घणाक उसासा नीसासाथी पाछी छाती भराइ आवेछे, आवीरीते मांड मांड कागळ पूरो कर्यो के तरत पाछी कळाप्रवीण मूर्छा खाइगइ, एटले कुसुमावळी पोताना मनमां पस्ताइने कहेवा लागी के आवी वात आगळथी जाणी नहीं, जो जाणी होत तो आ कागळनो भेद खुल्लो करत नहीं पण जे थनारछे हतुं ते थयुं, पछी

कुसुमावळी घणाक उपायो करवा लागी, तोपण मूर्छा उतरी नहीं, एम करतां करतां बे घडी वीतिगइ एटले मूर्छा उतरी गइ के तरत पाछी वारे वारे कुसुमावळीने वात पुछवा लागी एटले कुसुमावळी ते मतनुं खंडन करवा लागी. ॥ २ ॥

अथ पुनि कलाप्रवीन दशा ॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

टुटे बंधमें लोककी लाज टुटी, छुटे बीरमें चिंतकी धीर छूटी ॥ गुलाबी किये नेंन नेनोमें पानी, भरीआइ छत्ती सु बोले न वानी ॥ दिवानी भई चांदनी बीच डोलें ॥ उदासी लई पान लावे कपोलें ॥ पसीना भयो रोमकी रोच जग्गें ॥ वही मिंतका चिंतमें ध्यान लग्गें ॥ उसासा भरे श्वासके संग ज्वाला, भई चंद्रकी चंद्रिका ज्वाल माला ॥ मनो अंग दाहे परी दाह जग्गा ॥ कटे घाउके ऊपरें लोंन लग्गा ॥ सखी हाथसें पत्र ले फेर वंचे ॥ दुऊ नेंनसें नीर धारा न खंचे ॥ ३ ॥

अर्थ. कागळनी येलीना बंध तुट्या के लोक लज्जा तुटीगइ, तेमज कागळ तुट्यो के पोताना मननी धीरजता छुटीगइ अने रोइ रोइने गुलाबी रंग जेवी करी मेलेली आंख्योमांथी आंसुनी धारा चालवा लागी, एटलुंज नहीं पण छाती भराइआवी, तेथी वेण बोली शकती नथी पण पाछी दीवानी थइने चंद्रना अजवाळामां फरेछे, उदासी धरीने हाथ गाले लगाडीने बेसेछे, अंगे परसेवो वळी गयो, रुंवाडे रुंवाडे विरहाग्नी रोपनी जागी उठी, एटलुंज नहीं पण, ते मित्रनुं ध्यान पोताना मनमां लागीगयुं, नीसासा भरवाथी माहेला श्वासनी साथे झाळो उठी अने पंडा तथा प्रकाशमान चंद्रनुं अजवाळुं पण अग्नीनी झाळोना

जथ्थारूप थइ पड्युं, अंग बळेछे अने मनमां परीताप सळगी उठ्योछे, ते जाणे वागेला घा उपर मीठुं लगाड्युं होयनै? एवीरीते वेदना करेछे, तोपण पोतानी सखीना हाथमांथी पत्र लेइने पाछो वांचेछे अने बन्ने आंख्योमांथी चालती आंसुनी धाराने तो खेंचतीज नथी. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुमावलि पटुताइ करि, बहु समुझावत बाल ॥
त्यों सु प्रेम बाढे बिरह, आज्य अगिन मिलि ज्वाल ॥४॥

अर्थ. जेम जेम कुसुमावळी चतुराइथी घणी रीते समजावेछे तेम तेम राजकुंवरीने तो अग्नीमां घी होमवाथी जेम झाळ वधती जाय तेम प्रेमनीसाथे विरह वधतो जायछे. ॥ ४ ॥

नीठ नीठ आनी सयन, उर सु द्रढाई धीर ॥
बिंद याद नींद न लगी, जुरी प्रात बहु वीर ॥ ५ ॥

अर्थ. पछी कुसुमावळीये प्रवीणना हृदयमां धीरजता ठसावीने, तेने मांड मांड शय्यामां सुवारी, तो पण आखी रात पोताना प्रियपतीना स्मरणने लीधे निंदर आवी नहीं, अने सवार थयुं ऐटले घणीक सखीयो आवीने भेळी थइ. ॥ ५ ॥

॥ अथ चोपाई ॥

दिनकर उदित सहेली आई ॥ सोउ न कलाप्रवीन सुहाई ॥ कुमरी कछू उदास लखाई ॥ सोई चतुर सहेलिन पाई ॥ षुसी खेल बिघ बिधके मंडे ॥ उन उदास भावहू न छंडे ॥ दिन प्रति दिन यहतरें बिहावे ॥ चरचा वही रेंनकुं चलावे ॥ ब्रह्मनि वह बातकों बिसारे, राज सुता छिन छीन संभारे ॥ ६ ॥

अर्थ. रात वीतिगइ अने सवार थतां सूर्यना उदयनी साथे तमाम साहेलीओ आवी, ते राजकुंवरीने गमीओ तो नहीं पण इयो उपाय, आ-ज कांइक राजकुंवरी उदासीमांछे एम शाहाणी साहेलीओ जाणी गइ, पण उदासीनुं कारण न जाणतां केवळ प्रवीणने प्रसन्न करवासारु खुशीथी जातजातनी हांसु उपजे एवी रमत मांडी, तो पण तेणे उदासीपणुं छो-डयुं नहीं, एवीरीते प्रत्येक दिवस उदासीमां काढेछे अने रात्रीनी वखते कुसुमावळीसाथे कागळ संबंधी चर्चा चलावेछे, ब्रह्म कुमारी कुसुमावळी तो ए वातने भुलावी देछे, पण राजकुंवरी वारंवार घडीए घडीए संभारी आपेछे. ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

पूरन कलाप्रवीन, प्रेम उर मध्य सु आयो ॥
तर्क कीन दिन तीन, चिंतमें एह द्रढायो ॥
मरना व्हेंत कबूल, ओरहीसें नहि वरना ॥
उसया ईश अराधि, गुजर पत्रहिपर करना ॥
एतो उलंघ बात जु कहें, कुल मजाद अपवाद जन ॥
कोमार विरद धारन मतो, निज निश्चें कीनो स्व मन ॥७

अर्थ. ज्यारे कळाप्रवीणना हृदयमां परीपूर्ण प्रेम उपजी आव्यो, त्यारे त्रण दिवस सुधी तर्क करीने मनमां एवो निश्चय कीधो, के मरवुं पडे तो कबूल. परंतु बीजा पुरुषनी साथे तो वरवुंज नहीं, ने केवळ उसया महेशनुं आराधन करीने महाराजाना कागळ उपरज गुजरान करवुं, ने एम करवाथी जो लोको केहेशे जे आणे कुळधर्म तथा मर्यादानुं उलं-घन कर्युं, एम वातो करी निंदा करे तेटलामाटे आपणे कुमारिकाव्रत धारवुं एवो निश्चय प्रवीणे पोताना मनमां कर्यो. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

यों धारत दिनकर अहर, भई साँझ शशि भोर ॥
कुमरी नीतपाल सु प्रति, कही अरज करजोर ॥ ८ ॥

अर्थ. एवो मत धारतां सूर्यना दिवस रवीवारनी सांज थइगइ ने सवारे सोमवार थशे एम जाणी राजकुंवरी कळाप्रवीणे बन्ने हाथ जोडीने पोताना पिता नीतिपाल राजानी पासे नम्रताथी नीचे प्रमाणे अरज करी. ॥ ८ ॥

॥ छप्पय ॥

महाराज निज बाग, उमा माहेश सुहावे ॥
उन मानतके लिये, प्रात शशि दिन सु सिधावे ॥
व्रद्ध बाल नर नारि, सहर सिगरोई आवे ॥
खान पान सामान, सबें सिरकार पठावे ॥
नृप नीतपाल कुमरी अरज, सुनियत वह मानी सबें ॥
धरि आस तास आयस दई, पुर पुकार भंपी तबें ॥ ९ ॥

अर्थ. हे? पिताजी, आपणा बगीचामां भवानीशंकरनुं सुशोभित मंदिरछे, तेनी मानता पूरी करवासारु काले सोमवारनो उत्तम दिवसछे, तेथी आपनो जो हुकम होय तो त्यांहां जइए, अमे एकला जइए एम नहिं, पण आखा शेहेरनां वृद्ध, बाळक, स्त्री, पुरुष विगेरे सर्व आवे, ने तेओने वास्ते खावा पीवानी सघळी सामग्री सरकार पहोचाडे, आ प्रमाणे पोतानी कुंवरीए करेली सघळी अरज नीतिपाल राजाए सांभळतांवेंत मंजुर करी अने तेनी इच्छा पुरी पाडवानी आज्ञा आपीने पोताना शेहेरनां लोकों अने तेनी इच्छा पुरी पाडवानी आज्ञा आपीने पोताना शेहेरमां ढोंडी पीटावीने सघळां लोकोए काले सोमवारछे वास्ते नीमेले स्थळे दर्शन करवा जवुं, एवो हुकम संभळावी दीधो. ॥ ८ ॥

निश वीति शशि भोर, नाद नृप द्वार सु बज्जे ॥
पुरजन मंडन धारि, सबैं शिव थानक सज्जे ॥
चक्री अरु मंडोल, सुतर गज वाज सु पैंदल ॥
इहि विधि वरन अठार, आय इश्वर थानक चल ॥
सामान खान पानहि सकल, दिय अम्रात जन जन सुप्रति
उच्छव अनंत जन मन मुदित, ठोर ठोर संगीत गति॥१०

अर्थ. रात वीतीगइ अने सोमवार थयो के राजद्वारमां वाजां वागवा मांड्यां ने शेहेरनां सघळां लोको जातजातनां घरेणां तथा रंग वेरंगी कपडां पेहेरीने आनंदथी महादेवना मंदिर तरफ जवा लाग्यां, ने रथ, गाडीओ, पालखी, म्याना, उंट, हाथी, घोडा अने पायदळ विगेरे फोजनीसाथे महाराजा नीतिपाळनी स्वारी वागमां आवी, तेम शेहेरना सर्व गृहस्थो पोतानी इजत प्रमाणे म्होटा दवदवाथी, ने गरीवो पोतानी गजा प्रमाणे उत्सवनां चिन्ह धारीने, एवीरीते अढारे वरण परमेश्वरने मंदिरे चाली आव्यां, तेओने खावा पीवानी सघळी सामग्री राजाना कारभारीओए आपी दीधी, आ मनोरंजक मेळाना प्रसंगथी वागमां सर्वो आनंद वर्त्ति रह्योछे, तेमज लोकोनां मन पण हर्षथी खीली रह्यांछे, अने ठेकाणे ठेकाणे वाजिंत्रोनी साथे मधुर गायन थायछे. ॥ १० ॥

॥ अथ छंद झंपताळ ॥

बागमें नीतपाल नृपत्ती रजे ॥ नाद वाजित्रके भिन्न भिन्नं बजे ॥ केउ वाजी गरं रंक वाजी नटा ॥ नायका नृत्य साधंत केउ पटा ॥ नायका गान साधंत केउ कला ॥ कुंजमें गुंज मानूप कूटे नला ॥ मानुपं सोर झिंगोर केउ खगा ॥ मानिनी नृत्य गावंत केउ जगा ॥ आपके आप सामान के.

ऊ सभा ॥ मानहो उच्छवं इंद्र पाई प्रभा ॥ राज पुत्री जरी नंग सिंगारियं ॥ हेम तारी सु पाटंबरं धारियं ॥ अंग आभावनी कंचनं वेलियं ॥ संग लीनी शतंपंच साहेलियं ॥ मंद गत्ती सबें मंगलं गावही ॥ ऊमया ईश थानंकपे आवही ॥ ११ ॥

अर्थ. महाराजा नीतपाळ वगीचामां वीराजेलाछे अने त्यांहां जूदा जूदा मधुर स्वरथी वाजां वागेछे, ने केटलाएक वाजीगरो रंगभूमीमां रमत करेछे, केटलाएक नट उंचा वांसडा तथा दोर वांधीने पोतानो खेल करी वतावेछे, केटलीएक नायकाओ नाचेछे अने केटलाएक जुवानो पट्टा खेलेछे, केटलाएक गायन करनारा संगीतनी कळाथी गायन करेछे, ने झाडनी घटामां तथा लतामंडपमां भमराओ गुंजारव करेछे, तेमज पाणीना नळमांथी जात जातना आकारवाळा फुवारा उछळी रह्याछे, केटलेक ठेकाणे माणसो सोरवकोर करेछे अने केटलेक ठेकाणे हंस, सारस विगेरे पक्षीओ मधुर अवाज करी रह्यांछे, केटलेक स्थले तो स्त्रीओनां टोळां मळीने गरवीयो गायछे, अने केटलेक ठेकाणे पोताना सरखे सरखा मित्रो एकठा थइ सभा भरी वेठाछे, तेथी आ उत्सव एवो शोभेछे के जाणे इंद्र विगेरे देवताओनो मेळो भराणो होयनै? ए समये राजकुंवरीए जातजातनां नंगथी जडित अलंकार धारण कर्या अने सोनेरी छेडा तथा कीनारीदार पीतांवर पेहेर्युं तेथी तेना शरीरनी शोभा एवी दीसवा लागी के जाणे सोनानी वेल होयनै? पछी पोतानी साथे पांचसें साहेलीओ लेइने हंसनी पेठे धीमी धीमी गतिथी चालीने मंगळ गाणां गातां गातां सर्व महादेवजीना मंदिर तरफ आव्यां. ॥ ११ ॥

अथ छप्पय पटविधानी ॥ अलंकार आरोहावरोह यथासंख्य समरं शशि सारंग, जिष्नुं धन्वंतरि शंकर ॥

तिलक रूढँ आयुंद्ध, नादँ वाहँन ओरे सरँ ॥
कमलँ एनँचख शंखँ, चापँ तोतामुखँ इंदू ॥
कांति सुघँट अरु कुँटिल, गोलँ ऊझँकेसे स्त्रदूं ॥
तिय पानँ नेनँ ग्रीवाँ गनो, भ्रकुँटी नासाँ भालँ भनि ॥
एती प्रवीन आभा लिये, बाल बाग निकसी सु बनि॥१२

१	२	३	४	५	६
कामदेव	चंद्र	कृष्ण	अर्जुन	धन्वंतरी	शंकर
बाण	वाहन	वाजित्र	आयुध	वाहन	तिलक
कमळ	मृगना नेत्र	शंख	धनुप	पोपटनी चांच	चंद्र
कोमळ	भयभीत थयेल	गोळ	वक्रता	सुघड	कांति
हाथ	नेत्र	डोक	भ्रकुटी	नाक	कपाळ

अर्थ. कामदेवनुं बाण कमल ते सरखा कोमल हाथ, चंद्रमानुं वाहन मृगपण ते भयथी नाठेलुं होय तेना नेत्र सरखां नेत्र, कृश्ननुं नाद करवानुं वाजीत्र शंख ते सरखुं गोळ गळुं, अर्जुननुं आयुध गांडीव धनुप,ते सरखी वांकी भ्रकुटी, धन्वंतरीनुं वाहन पोपट, तेनी चांच सरखुं नमणुं नाक, अने शंकरनुं तिलक चंद्र, तेनी कांति सरखुं उज्वळ कपाळ, एवीरीते छए अंगमां उपर कहेली छये वस्तुनी कांतीने धारण करीने बालारूप प्रवीन सुंदर बनी गया। अलंकारथी बनीने बगीचामांथी महादेवजीना मंदिर तरफ जवा नीकली ॥ १२ ॥

॥ अथ छंद मुक्तिदाम ॥

सदा शिव मंजन गौरि कराय ॥ चरच्चत चंदन केसर चाय ॥ चढाइय पुष्प सु बिल्लव पत्र ॥ गुलाल सु ओर अबीर बिचित्र ॥ कियो तित धूप सु दीपक माल ॥ फला रगके नइवेद रसाल ॥ त्रिकुट्टिय लोंग सु पुंगिय पान ॥ धर्यो मुखवास अनेक विधान ॥ कनंकन थार कपूर सु लीन ॥ करी उत आरति बाल प्रवीन ॥ परी भवनाथ भवानिय पाय ॥ करी तहँ अस्तुति छंद बनाय॥ १२

अर्थ. मंदिरमां आवीने कळाप्रवीणे गौरी समेत शंकरने पंचामृतथी स्नान कराव्युं, पछी सुगंधवाळुं केसरनुं चंदन चडाव्युं, तेमज तरेह तरेहनां फूल तथा बीलीनां पत्र चडाव्यां, पछी जात जातना रंगदार गुलाल तथा अबील चढावी खुसबोदार धूप करीने दीपमाळा प्रगटी, पछी फळ समेत अर्घ आपीने घणा स्वादिष्ट मेवा तथा रसवाळां चार प्रकारनां अन्ननुं नैवेद्य धर्युं, पछी इलायची लवींग सोपारी अने पान विगेरे तरेह तरेहना मुखवास महादेव पासे मूक्या, सोनाना थाळमां कपूर सळगावीने परमेश्वरने आरती उतारी, वळी प्रदक्षिणा करीने पाछी कळाप्रवीणे सोनानी लाकडीनी पेठे पडीने महादेवजीने दंडवत कर्या ने एक नवीन छंद बनावीने आ प्रमाणे स्तुति करवा लागी. ॥ १२ ॥

॥ अथ छंद तोमर ॥

जय जय जटा मधि गंग ॥ जय जय कवरियत अंग
जय जय विभूति विलास ॥ जय जय सुगंध प्रकास ॥
जय जय सो चंदा भाल ॥ जय जय त्रिपुंड्र रसाल ॥
जय जय सु नैंन ज्वलिंद ॥ जय जय सु बंदन बिंद ॥

जय जय सु मुंडन माळ॥ जय जय सु मुक्त रसाल ॥
जय जय अही तन धार ॥ जय जय प्रसूनन हार ॥
जय जय गरल गल संध ॥ जय जय हि पोत सु बंध ॥
जय जय सु नग्न शरीर ॥ जय जय पितांबर चीर ॥
जय जय सु भख्खन भंग ॥ जय जय सुरा मद संग ॥
जय जय वपू विकराल ॥ जय जय सरूप बिशाल ॥
जय जय सु नंदी नाथ ॥ जय जय मृगेंद्र सु साथ ॥
जय जय सु गुनजुत दास ॥ जय जय सु जोगिनि पास ॥
जय जय सु संकट गंज ॥ जय जय जनारति भंज ॥
जय जय उमा अध अंग ॥ जय जय सदा शिव संग ॥
जय जय भवा भव भूप ॥ जय जय सु प्रेम सरूप ॥
इतनी सु अस्तुति कीन ॥ बंदे चरन परवीन ॥ १४ ॥

अर्थ. जटामां गंगाने धरनार हे? महादेव, तेमज विशाळ केश पाशने धरनारां हे? महादेवी, विभूति लेपन करनार हे? शंकर, अने सुगंधी चंदन लगाडनारां हे? पार्वति, कपाळमां चंद्रने धारण करनार हे? शिवजी, अने शोभायमान त्रिपुंड् तिलक धारनारां हे? पार्वती, भृगुटी वच्चे अग्नीरूप नेत्रने राखनार हे? शंभु, अने वे भवां वच्चे सींदुरनी विंदी धरनारां हे! उमा, गळामां मुंड माळा धरनार हे? महारुद्र, अने कंठमां मोतीनी माळा पेहेरनारां हे! माहामाया, शरीरे सर्प धरनार हे? शंभु, तेमज फूल ना हार धरनारां हे? देवी, कंठमां हलाहल झेर राखनार हे? नीलकंठ, अने कंठे मंगळरूप कंठ सुत्र राखनारां हे? जगदंवा, नग्न स्वरूप वाळा हे! भूतनाथ, अने अंगे रेशमी चीर पेहेरनारां हे! इश्वरी भांग पीनार हे! सदाशीव अने मदिरा पान करनारां हे! योगमाया विक्राळ

अने भयंकर शरीर वाळा हे! विरुपाक्ष अने सुंदर रूप तथा लावण्यताथी शोभीतां हे! त्रिपुरसुंदरी नंदी ऊपर स्वारी करनार हे! वृषभध्वज अने सिंह ऊपर स्वारी करनारां हे! वाघेश्वरी, भूत भैरव विगेरे प्रमथ गणने पासे राखनार हे! मृत्युं जय, अने चोसठ जोगणीओने पासे राखनारां हे? गीरीजा वीघ्न तथा दुःख भांगनार हे! महादेव, अने शरणे आवेलां लोकोनी पीडाने हरनारां हे! आदीमायां, अर्धा अंगमां ऊमयाने धारण करनार हे! विश्वंभर, तेमज अर्धा अंगमां महादेवने साथे राखनारां हे! विश्वेश्वरी जुगे जुगना राजा हे! शंकर, अने परीपुर्ण प्रेमरूप हे! भवानी तमने हुं नमस्कार करुंछौ, तमो जय पामो अने हुंने जय पमाडो,एटली स्तुति करीने कळाप्रवीणे उमया तथा ईश्वरना चरणनुं वंदन कर्यु. ॥ १४

॥ गाहा ॥

वंदे चरन प्रवीनं ॥ उमया ईश प्रति यह संगीय ॥
जलधारा जल नंखिय ॥ भंखिय विरद कुमारिका रहनं १५

अर्थ एवीरीते वंदन करी पोताना हाथनी अंजळीमां पाणी लईने प्रवीण बोली के हे! भवानीशंकर, मारे कुमारीका व्रत धरवानी ईच्छा छे ते तमे पूरीपाडजो अेम मागीने कह्युं के हुं आजथी कुंवारीज रहीश, एवो संकल्प करीने महादेवनी जळाधारीमां हाथमां राखेलुं पाणी छोडीदीधुं. ॥ १५॥

॥ दोहा ॥

शिक्षा देत सहेलियन, वरजे रही न नार ॥
सोय वात नृपनें सुनी, हुओ सु हाहाकार ॥ १६ ॥

अर्थ. शीखामणनी साथे सघळी साहेलीओए नीयम न लेवा विशे घणी मनाकरी तोपण कुंवरीए नीम लीधुं, आ वात नीतिपाळ राजाने काने पडतां हाहाकार थईगयो . ॥१६॥

॥ चोपाई ॥

नृप अंतर आमात बुलाये ॥ कुमरी बरजन काज पठाये ॥ बोले आय कुमरि प्रती बानी ॥ एह कहा उर अंतर ठानी ॥ कुमरी कही होय सो होई ॥ एह बात बरजो मत कोई ॥ उमया ईश एह व्रिद दीनो ॥ शीश चढाय हमे सो लीनो ॥ प्रान समान राखिहौं मेरे ॥ उठो अमात जाओ निज डेरे ॥ १७ ॥

अर्थ. पछी नीतिपाळ राजाए कारभारीओने पोतानी हजुरमां बोलावीने कह्युं के तमो कुंवरी पासेजई लीधेलुं व्रत्त तजीदेवा विषेनी समजण आपो राजानी आज्ञाथी कारभारीओ कुंवरी पासेआवी कहेवा लागा के हे? बाईसाहेब तमे आते शो विचार मनमां धार्यो, आम करवुं ए कांई सारुं नहीं, त्यारे कुंवरीए कह्युं के थनारुं हतुं ते थयुं, हवे एवात तजवा विषे कोइए कांइपण केहेवुं नहीं, उमया अने ईश्वरे ए व्रत्तज आप्युं ते में माथे चडावी लीधुंछे, तेने हुं मारा प्राणसमान गणीने पाळीश माटे हे? कारभारीओ तमो तमारे घेर जाओ. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

अति अमात बरजी तऊ, मानि न राज कुमारि ॥
उठि अमात नृपपें गये, कही बात बिस्तारि ॥ १८ ॥

अर्थ कारभारियोये लीधेलो नीयम तजी देवानी घणीकरीते समजुती आपी, परंतु राजकुंवरीए तेओनी बात मानी नहीं, एटले कारभारीओ त्यांहांथी उठीने राजा साहेब पासे आव्या, अने बनेली सघळी बात विस्तारथी कही समजावी. ॥ १८ ॥

लाजी बरजी नाँ मिटे, कही येहि छितिपाल ॥

करम रेख अतिही कठिन, सृष्टा लिखी सु भाल ॥ १९ ॥

अर्थ. वळी कारभारियो कहे छे के हे? प्रथ्वीनाथ अतिशे कठण एवी जे कर्मनी रेखा सृष्टीकर्त्ता विधाताए कपाळमां लखीछे, ते प्रमाणे जे थनार होय ते गमे एटला उपायोथी मटाडवा जइए तोपण मटेज नहीं. ॥ १९ ॥

॥ छप्पय ॥

नीतपाल तिहि काल, गान नाटक वरजाये ॥
कीनो सहर प्रवेश, दुचित सब जन दरसाये ॥
आवत भयो अनंद, इसी दरसाइ उदासी ॥
वन सु चलत रघुवीर, मनहुं मन अवध सु वासी ॥
इहि रीत सदन आये सकल, गान न नाटक नाद गति ॥
प्रविशत प्रवीन निज महल प्रति, उर सनेह प्रगटंत अति२०

अर्थ. उपर प्रमाणे वात सांभळी ते वखते महाराजा नीतिपाळे गायन तथा नाटक विगेरे खेल बंध कराव्या, ने पोते स्वारी समेत शेहेरमां प्रवेश कर्यो अने सघळां लोको उदास देखायां, आवती वखते जेवो आनंद देखातो हतो तेवोज जती वखते उदासी देखावालागी, जेम रामचंद्र वनमां गया, पछी अयोध्यानां लोको शोकातुर थइ उदासी धरीने पाछां अयोध्यामां गयां हतां, तेवीजरीते नट नायका अने नाटक करनारां विगेरे सघळां लोको गाजा वाजा विना पोतपोताने घेर आव्यां, राजकुंमारी कळाप्रवीण पण पोताना राजमेहेलमां गयां के तरत तेना मनमां अतिशे स्नेह वधीगयो. ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

सही गई निज निज महल, रही कुसुम इक पास ॥
गइ जाम जामनि तबे, कही एह परकास ॥ २१ ॥

अर्थ. साहेलीओ पोत पोताने घेर गइओ अने कुसुमावळीज एक पासे रही, ज्यारे एक पहोर रात वीती, त्यारे कुसुमावळीए आ प्रमाणे प्रसिद्ध वात कही. ॥ २१ ॥

॥ गाहा ॥

कुमरी कला प्रवीनं ॥ यह उपाय कीन कहा आपें ॥
मम चित एह उदासी ॥ क्यों दिन बिषम बीतिहे आगें २२

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के हे? कळाप्रवीण आते आपे शो विचार करीने कुमारी व्रत लीधुं? अरे? केवळ मारा मनमां तो उदासीनी साथे एज चिंता थायछे, के आजतो कांइ नहीं पण आगळना कठण अने अति विषम दिवस केम वीतशे वारु? ॥ २२ ॥

कुसुन सु प्रत्य प्रवीनं ॥ कही अब कहा करंत हसाई ॥
प्रजरन लगे पहारं ॥ अंजुली नीर बूझहे बन्ही ॥ २३ ॥

अर्थ. त्यारे कळाप्रवीणे कुसुमावळीने कह्युं के हे! बेहेन हवे शुं? मश्करी करोछो? ज्यांहां आखो पहाड सळगी ऊठ्यो ते हवे एक अंजळी पाणी छांटवाथी शुं? ओलाशे. ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कनकसु कळाप्रवीनकी ॥ सुनी जु बात सयॉन ॥
धीर धरन मन द्रढ करन ॥ वदी बिरदकी बान ॥ २४ ॥

अर्थ. आवी डाहापणवाळी प्रवीणनी वात सांभळीने कुसुमावळी तेना मनमां धीरज धरावा अने द्रढ मन रखाववा पोते आप्रमाणे आशिर्वादनां वचन बोली. ॥ २४ ॥

॥ अथ छंद कंद ॥

भली सूत्रधारा रच्यो खेल ब्रह्मंड ॥ ब्रतं धार खंडा अनी

सेलके दंड ॥ यही रीत आपें कियो प्रेमको पान ॥ सुनी नाँहि ऐसी हमें आजलों कान ॥ विना भोगही जोग सिद्धी करामात ॥ न हूई न होवे यही ओरसें वात ॥ मनंछा सदा पूरिहे आपकी ईश ॥ यहें सत्य जानो हमें ब्रह्म आशीष ॥ २५ ॥

अर्थ. परमेश्वररूप सुत्रधारे घणोज सरस आ ब्रह्मांडरूपी नाटकनो खेल रच्योछे, तेमां जे आवुं व्रत धरवुं ते खरेखर तरवारनी धार उपर चालवा जेवुं किंवा वरछीनीअणी ऊपर चडवा जेवुंछे, तो तेवीजरीते आपे प्रेमनुं पान कर्युं ए कांई थोडा आश्चर्यनी वात नथी, तम सरखी वीजी कोई स्त्री आज सुधी में ह्मारे काने सांभळी नथी, तमे तो वगर भोगे जोगनी करामत साधीछे, तो आवी वात वीजी कोई स्त्रीनाथी बनेली नथी तेम वनशेज नहीं, माटे हे? कळाप्रवीण, आपना मननी ईच्छा जगत्कर्ता परमेश्वर पुरी पाडशे एवो अमारो ब्राह्मणनो आशिर्वादछे, ते साचो जाणो. ॥ २५ ॥

॥ गाहा ॥

कलाप्रवीन सु कुसुमे ॥ चरचा प्रेम नेम परसंगं ॥
सप्ताविंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २६ ॥

अर्थ. कळाप्रवीण तथा कुसुमावळी वच्चे चालेली प्रेमनी चर्चा संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी सतावीशमी लेहेर संपूर्ण थई. ॥ २६ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कलाप्रवीन कुसुमावळी चर्चा प्रेम नेम ग्रहणो नाम सप्तविंशतीमोलहरं ॥ २७ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री वावाजीराज राज्याश्रीत अवाजाद महाराज

कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां सप्तविंशतितम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद भुजंगी ॥

शुणी वात शाणी सखीनी वखाणी ॥ धरया वार अंगे अलंकार जाणी॥
रची सोळ शृंगारने पत्र लीधो ॥ अठावीशमी लेरमां भेद कीधो ॥

अथ प्रवीन कला कुसुमावळी पत्रोत्तर भेद प्रसंगोयथा

॥ सोरठा ॥

कही कुसुम तिहिं वार, वह जोगी अवलौं इतैं ॥
ताको करो विचार, पत्रोत्तर पावे कहा ॥ १ ॥

अर्थ. पछी खुशीनी वखते कुसुमावळीए कह्युं जे ओला जोगीराज हजु सुधी आंही रह्याछे तेनो विचार करो ने तेने पत्रनो शो ऊत्तर देवोछे तेनी गोठवण करो. ॥ १ ॥

सुनी सु ब्रह्मनी भाष, रीझे कला प्रवीनजू ॥
तन गहनो पोपाक, कियो बकस कुसुमावली ॥ २ ॥

अर्थ. ब्रह्मकुमारी कुसुमावळीनुं भाषण सांभळीने राजकुंवरी कळाप्रवीण घणी खुशीथई, एटलुंज नहीं पण पोताना अंगनां घरेणां तथा पोषाक कुसुमावळीने वक्षीश कर्यो. ॥ २ ॥

द्वादश आभ्रन धार, नौतम कलाप्रवीनजू ॥
सजे सोर सिंगार ॥ उर सु दशा अभिसार ग्रहि ॥ ३ ॥

अर्थ. पछी कळाप्रवीणे मनमां अभिसारिकानी दशा लईने नवां बार प्रकारनां आभरण (घरेणां) धरीने सोळ प्रकारनो शृंगार सज्यो, ते नीचे प्रमाणे. ॥ ३ ॥

॥ अथ वह द्वादशाभरन पोडश शृंगार वर्नन यथा ॥

॥ अथ छंद लघु नाराच॥

फुलेल अंग रंजियं ॥ गुलाव नीर मंजियं ॥
बनाय केश पट्टियं ॥ सिंदूर माँग थट्टियं ॥
ललार आड केसरी ॥ गुलाल विंदुली करी ॥
सरोज नैंन अंजनं ॥ चढाय चित्र चंदनं ॥
समीप धूप लाहियं ॥ सुवास ले चढाहियं ॥
दिये सु पान मेंदियं ॥ सु पाय जावकं कियं ॥
उभे दशं सु आभ्रनं ॥ सिंगार षोडशं तनं ॥
समार मंग मुत्तियं ॥ प्रसून शीश जुत्तियं ॥
जराव विंदुली जरी॥ विराजमान वेसरी ॥
तरोंन श्रोंन झुक्कियं ॥ हमेल हार चुक्कियं ॥
मनी सु पोंचियं जरी॥ अनूप मुद्र अंगुरी ॥
चुरी भुजान कंगनं ॥ रसाल किंकनी धुनं ॥
बजंत पाय जेहरं॥ अनोट वीछुवा सुरं ॥
दुकूल रंग रंगके ॥ सिंगार सार अंगके ॥
बिराजमान चुक्कियं ॥ समीप आरसी लियं ॥
निहार अंग आपसें ॥ जरी मनोज तापसें ॥
लगो सु ध्यान मिंतमें ॥ विचार लाय चिंतमें ॥
सिंगारकों उतारियं ॥ पितांवरं सु धारियं ॥
कियो सरूप जोगनी ॥ विभूत अंगसें वनी ॥
करें सु रुद्र मालिका॥ लपंत नैंन लालिका ॥
लपेट वेंनि शीशसें ॥ लगी समाधि ईशसें ॥
लिलार आध चंदवा ॥ बन्यो सु लाल बिंदुवा ॥

दुसाल लाल रंगसें ॥ लपेट आध अंगसें ॥
सरोज आसनं किये ॥ विदेह साधनं लिये ॥
बन्यो सरूप बालिका ॥ मनो कनंक कालिका ॥
मगाय फेर आरसी ॥ सरूप देखिके हसी ॥ ४ ॥

अर्थ फूलेल तेलनुं अंगे मर्दन करीने सुगंधी गुलाबजळवडे स्नान कर्युं, पछी केश ओळी पाटीओ पाडीने अंबोडो वाळ्यो अने सेंथामां सिंदुर भरीने कपाळमां केसरना चंदनथी बारिक आड काढी, तें वच्चे लाल गुलालनी बिंदि करी, पछी कमळ जेवी सुशोभित आंख्योमां काजळ सार्युं, अंगमां जात जातना सुगंधी चंदननो लेप कर्यो, पछी पोताने पासे धूप लावी तेनो सुगंध लई अंगमां चडाव्यो, ने हाथनी हथेळीमां मेंदी लगावीने पगनी पाटलीयो उपर अळतानो रंग लगाड्यो, एवी रीते बार अंगे बार प्रकारनां आभरण धरीने आ प्रमाणे सोळ शृंगार सज्या, सेंथो समारी ते उपर मोतीनी लरो बांधी, तेमज केशना अंबोडा उपर फूलना गजरा लटकाव्या, कपाळमां सोनानी जडाऊ बींदी धारण करीने पोपटनी चांच सरखा नाजुक नाकमां पाणीदार चळकता मोतिनी नथ पेहेरी, तेमज मोतीना झुमखां वाळी झाल्यो कानमां लटकाव्यो, पछी हमेल हार तथा जडाव चोकी पेहेरीने हाथे जडित्र पहोंचीयो बांधी अने आंगळीओमां अनोपम विंटीओ पेहेरी, वळी हाथमां चुडीओ तथा कंकण धारण कर्या, कडे बांधेल कटीमेखळानी घुघरीओना अवाजनी साथेज पगमां पेहेरेलां झांझर तथा लंघर झणझणाट करतां गाजी उठ्या, तेमां वळी वधारो करवासारु पगनी आंगळीयोमां पेहेरेला अणवट तथा वींछीया मधुर स्वरथी टणटणाट करवा लाग्या, जातजातनां रंग बेरंगी वस्त्र पेहेरी अंगे सघळा सणगार सजीने सोनाना जडित्र पाटमाथे बिराज्यां, पछी पासे दर्पण लईने तेमां पोताना अंगनुं प्रतिबिंब

जोयुं के तरत कामना तापथी वळवा लागी, एटलुंज नहीं पण तेनुं ध्यान मित्रमां लागी गयुं, तेथी मनमां विचार लावीने सजेलो सघळो शणगार उतारी नाख्यो अने एक पितांवर पेहेरी लीधुं, ने जोगणीना जेवो वेप तथा रूप करीने अंगे विभूती लगावी लीधी, हाथमां रुद्राक्षनी माळा धारण करीने लालचोळ आख्योंथी टगमग टगमग जोवा लागी, पछी छोडेला वेणीना वाळ जटानी पेठे मस्तक उपर लपेटीने परमेश्वरमां ध्यान समाधी लगाडी ते वखते प्रवीणना कपाळमां अर्धो बीनकी जेवो चांडलो हतो ते अर्धचंद्र जेवो दीसवा लाग्यो, लाल रंगनो दुसालो अर्धा अंगमां लपेटीने पद्मासन वाळी विदेह साधन लेई बेठी, आ वखते कोमळ अंगवाळी बाळारूप प्रवीणनुं एवुं स्वरूप वनीगयुं के जाणे सोना जेवा अंगवाळी काळिकादेवी होयनै! वळी पाछी पोते दर्पण मगावी तेमां पोतानुं रूप जोइने हसीपडी ॥ ४ ॥

॥ गाहा ॥

राज सुता तिहिबेरं ॥ कलम धार पत्र कर लीनो ॥
सागर प्रत्य सनेहं ॥ लखिय भेद छंद मधुभारं ॥ ५ ॥

अर्थ ते वखते राजकन्या कलम पकडी हाथमां कागळ लेइने परीपूर्ण स्नेहथी मधुभार छंदना भेदमां महाराजा रससागर उपर पत्र लखवा बेठी. ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

प्रनय पत्र पूरन कियो, शुभ सौगंध चढाय ॥
कसन बंध दीनो कुसुम, जरी सु थेली लाय ॥ ६

अर्थ घणा स्नेहथी पत्र पूरो लखी ते उपर सुगंधी चुर्ण चडावी, जरीनी थेलीमां लपेटी ते उपर रेशमनी दोरीनी गांठो बांधीने कुसुमावळीने आप्यो. ॥ ६ ॥

तादिनसें परबीनजू, यह ब्रद ग्रह्यो अनूप ॥
आद्य निशा सिंगार करि, ताजि कृत जोगनि रूप ॥ ७ ॥

अर्थ ते दीवसथी प्रवीणे एवुं नीम लीधुं के रातना आगला भागमां सणगार सजवो ने पछी ते तजीदईने जोगणीना जेवुं रूप धरी बेसवुं. ७

॥ छप्पय ॥

सजत रैंन सिंगार, दशा अभिसार सु लावे ॥
सोय विसर्ज्जन करत, रूप जोगनी बनावे ॥
देव सेव जप करत, आदि निश योंहि बितावहि ॥
कुमरी प्रेम कवित्त, करत ब्रह्मनिहि सिखावहि ॥
विप्रनी गाय वह बीन ग्रहि, चत्र घरी निशि कृत शयन॥
लौकीक काज दिनप्रति करे, निश नित प्रति उपचार इन॥

अर्थ. एवीरीते रातनी वखते सणगार सजेछे ने पाछी मनमां अभिसारिकानी दशा लावीने सजेलो सणगार तजीदेई जोगणीना जेवुं रूप धरी बेसेछे, ने देव सेवा करवामां तथा माळा फेरवी जप करवामां आगली रात काढेछे, ने पछी प्रेमथी नवां कवित्त रचीने ब्रह्मकुमारी कुसुमावळीने शीखवेछे, एटले कुसुमावळी हाथमां विणा लेईने ते कवित्त गाई देखाडेछे, ने मात्र चार घडी सुधीज रातमां निंदर लेछे अने लोकवेहेवारनुं कामकाज होय ते तो दिवसेज करीलेछे अने हमेशां रातनी वखते तो उपर कह्या प्रमाणेज उद्योग कर्या करेछे. ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

नित प्रति यह गुजरान, धार्यो कलाप्रवीनजू ॥
प्रगटित चिंत्र विहीन, कुसुम पत्र जुत किय विदा ॥ ९ ॥

अर्थ कलाप्रवीणे प्रतिदिवसे एवीज रीते गुजरान करवानुं धार्यु

अने सवार थतां सूर्यबिंब उगती वखते पत्र समेत कुसुमावळीने विदाय करी. ॥ ९ ॥

ब्रह्मनि गइ निज वास, अशन कीन उतहीं रही ॥
शयन समय संन्यास, पास गई प्रमुदित वदन ॥ १० ॥

अर्थ. कुसुमावळी पोताने घेर गई, ते जमीने ते दिवस तो त्यांहांज रही ने रात्रीए सुवा वखते हस्ते म्होढे संन्यासी पासे गई. ॥ १० ॥

बूझ्यो सकल बिवेक, संन्यासी कुसुम सु कह्यो ॥
तबें सराही टेक, कुमरी कला प्रवीनकी ॥ ११ ॥

अर्थ. कागळ संबंधी वृत्तांत संन्यासीए घणां विवेकथी पुछ्युं, त्यारे कुसुमावळीए सवळी वात कही संभळावी, एटले संन्यासीने कळाप्रवीणनी खेरेखरी प्रतीति थई एटलुंज नहीं पण, कळाप्रवीणे लीधेला कुमारीका व्रतनी वात सांभळवाथी संन्यासी, कुंवरीनी टेक तथा धारणानुं वखाण करवा लाग्या. ॥ ११ ॥

निशि एकंत निहार, पत्र दियो परवीनको ॥
संन्यासी शिर धार, लीनो कुमरि सलाम करि ॥ १२ ॥

अर्थ रात्रीए एकांत जोईने कुसुमावळीए प्रवीणनो लखेल पत्र संन्यासीने आप्यो, त्यारे संन्यासीए घणा माननी साथे नमताइथी पत्र लईने पोताने माथे चडाव्यो. ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

संन्यासी रीझे सुरत, कवित आशिषा कीन ॥
पाती नाम प्रवीन लिख, कुसुमावलि कर दीन ॥ १३ ॥

अर्थ. पछी संन्यासी घणा खुशीथया एटले राजकन्याने आशीर्वाद देवासारु प्रवीणना नामनो एक चित्रबंध कविता रचीने ते पत्र कुसुमावळीना हाथमां आप्यो. ॥ १३ ॥

॥ अथ अलंकार आशिषा कला प्रवीन आशिषा ॥

॥ छप्पय कमल बंध यथा ॥

चत्र वदन जुग रचहि, रसा जवलगि अनंत गहि ॥
हर उमया अध वसहि, जीव जवलों सुधा श्रवहि ॥
वरन भारती करहि, पवन जब लगि गवनं खहि ॥
रमन रमा हरि रसहि, बीन जवलों नारद लहि ॥
नग नाक अचल नीरद छलहि, तरनि तेज जबलगि तपुहि॥
हिल्लोर गंग जल तब लगहि, चिरह जीव परबीन तुहि ॥

अर्थ. ज्यांहां सुधी ब्रह्मा आ जगतनी रचना कर्या करे, ज्यांहां सुधी शेषनाग आखी पृथ्वीने धारण करी राखे, ज्यांहां सुधी महादेवजीना अर्धा अंगमां उमयाजी वसे, ज्यांहां सुधी चंद्रमाना कीरणोमांथी अमृत स्त्रवे, (अरे) ज्यांहां सुधी सरस्वती वर्ण, शब्द तथा विद्यारूपे जगतमां फेलाई रहे, तेमज ज्यांहां सुधी पवन आकाशमां गमन करी वाया करे, ज्यांहां सुधी विष्नु तथा लक्ष्मीनुं जोडुं अखंड रहे, ज्यांहां सुधी नारदमुनी वीणाने धारण करी राखे, तेमज ज्यांहां सुधी पहाड अने स्वर्ग अचळ रहे, ज्यांहां सुधी पाणीथी भरपूर समुद्र उछळ्या करे, ज्यांहां सुधी तेजवाळो सूर्य तपे, ज्यांहां सुधी गंगाना जळनी हेरो उपज्या करे, त्यांहां सुधी हे? प्रवीण, तमे चीरंजीव रहो. (आ छपाना अगीयारे पदोमांथी पेहेलो अकेको अक्षर लेतां आ छपाना छेला पद मुजव" चिरहजीव परवीन तुहीं " एवा अगीयार अक्षरो नीकळी आवेछे. ॥ १४ ॥

दोहा

विधि विषधर हर शशि गिरा, मरुत विष्नु मुनि वीन ॥
दिव दधि रवि जल गंग लगि, चिरह जीव परवीन ॥

अर्थ. ब्रह्मा, शेषजी, शंकर, चंद्रमा, सरस्वती, वायु, विष्नु नारदजी-नी वीणा, (मेरु विगेरे पर्वत,) स्वर्ग, समुद्र, सूर्य, ने गंगानुं जळ एटलां ज्यांहां सुधी रहे त्यांहां सुधी हे? प्रवीण, तमे चिरंजीव रहो. ॥ १५ ॥

संन्यासी श्रमभो सफल, कुसुम सु विद्या लीन ॥
अवमोचन प्रति आदि निशि, उठि निज गमन सु कीन १६

अर्थ. आवी रीते सन्यासीनी मेहेनत सफळथई एटले पोते कुसुमाव-ळीनी रजा लेईने आगली रातेज चतुरानन ब्राह्मणने त्यांहाथी आसन उठावीने पोताना उतारा तरफ गमन कर्युं ॥ १६ ॥

साज बदल सोये सयन, भये उठे परभात ॥
नेहनग्र पछि फिरन, आयस कही अमात ॥ १७ ॥

अर्थ. पछी वेश बदलीने पलंग उपर पोढ्या, ते सवार थये उठ्या अने तेणे पाछुं नेहनगर तरफ जवा तैयारी करवानी पोताना प्रधानने आज्ञा आपी. ॥ १७ ॥

॥ छप्पय ॥

साज बाज गजराज, सबिक पैंदल सब सज्जिय ॥
अतिहि भयो आनंद, नाद नीसाँन सु बज्जिय ॥
नेहनग्रकी दिसा, चित हरखंत गमन किय ॥
बहत राह दिन किते, भये निज नग्र सु पुग्गिय ॥
प्रविशंत सदन निज जन मिले, बीती निशा विशेप सुख ॥
उतकंठ लगी उरमें यहें, कब लखिहौं महाराज मुख ॥ १८

अर्थ. एटले तेणे साजथी घोडा, हाथी, रथ, म्याना, पालखी अने पायदळ विगेरे सघळी फोज सजीने तैयार करी एटलुंज नहीं पण अतिशे आनंद थयो जेने लिधे मोटा घोर अवाजथी नगारां नरघांद

विगेरे वाजिंत्र वागवा मांड्या, पछी मनमां हर्ष आणीने लोकोए नेह-नगरनी दिशा तरफ गमन कर्यु; रस्ते चालतां चालतां केटलाएक दिवस वीती गया पछी पोताना शेहेरमां पहोच्या, ते दिवसे सारुं महूर्त्त हतुं तेथी गाममां प्रवेश कर्यो, ने घेर जइ पोताना स्नेही लोकोने मळ्या, सुख चेनमां ते रात वीती गइ पण, कविराजना मनमांतो एवी उत्कंठा लागी रही हती के हुं महाराजानुं मुख क्यारे जोइश. ॥ १८ ॥

॥ गाहा ॥

प्रेम दशा परवीनं, सागर पत्र लिखन प्रति उत्तर ॥
अष्टविंश अभिधानं, पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ १९ ॥

अर्थ. प्रेमने लीधे थयेली प्रवीणनी दशा, तेमज सागरना कागळना जवाबमां प्रवीणे लखेला प्रत्युत्तरना पत्र संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी अठावीशमी लेहेर पूरी थइ.

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे कलाप्रवीन प्रेम दशायां पत्र प्रत्युत्तर भेदो नाम अष्टविंशतिमो लहरं ॥ २८ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां अष्टविंशतितम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध॥ छंद हरिगीति॥

पत्र लखेल प्रवीनने लहि, कवि कुसुमावली पासथी ॥
नेहनग आवि आपिओ रससागरने निज हाथथी ॥
उत्कट आणी प्रेम वाणी, विविध वांची दावथी ॥
ओगणत्रीशमि लेहेर तेनो, भेद भाखे भावथी ॥

अथ कलाप्रवीन पत्र प्रत्युत्तर प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

सूर उदित सुकवी चले, गये सु राजदुहार ॥
सह आवर्त्तन जुत सभा, सागर मिले कुमार ॥ १ ॥

अर्थ. सूर्य उगती वखते नामांकीत भारतीनंद कवि राजदरबारमां गया अने त्यांहां सभामां बिराजेला सर्व सभ्यो समेत रससागर राजकुमारने मळ्या. ॥ १ ॥

छिन छिन प्रति सुकवी वदन, हेरतहे महाराज ॥
मुदित जान उर सुख उदित, कियो बिसर्ज समाज ॥२ ॥

अर्थ. कविने दीठा के तरत पोतानुं मन प्रवीण संबंधी विचारमांज गुंथाएलुं हतुं, माटे महाराजा क्षणे क्षणे आशा सफळ थशे के नहीं? एवी आतुरताथी कविराजनुं मुख जोया करेछे, हर्षथी खीलेला मुखने जोतांज पोताना हृदयमां सुखनो उदय थइ गयो, तेथी सभा विसर्जन (बरखास्त) करी. ॥ २ ॥

गये अटा एकंत चढि, बूझ्यो कुमर विधान ॥
कही बात बिस्तार कवि, पाती पठवन वाँन ॥ ३ ॥

अर्थ. पछी पोताना प्रिय मित्र भारतीनंद कविने साथे लेइने एकांतनी अटारी उपर चडीगया त्यांहां सागरकुमारे सघळुं वृत्तांत पुछ्युं एटले कवीराजे पत्र पहोचाडवामां बनेली तमाम हकीकत विस्तारथी कही संभळावी. ॥ ३ ॥

कलाप्रवीन सराह करि, उर अनंद अति लाय ॥
सुकवि ऊठ कुंनस करी, पाती पाँन धराय ॥ ४ ॥

अर्थ. प्रथम हर्ष लावीने कळाप्रवीणनां वखाण कर्या, ते पछी महाराजाना हाथमां प्रवीणनो प्रत्युत्तर पत्र आपीने कवीराजे वंदन कर्युं. ॥ ४ ॥

अथ कलाप्रवीन पाती उदाहरनं शिरनामेको ॥ दोहा ॥

श्रीसागर महाराजजू, निधि गुन अचल नरिंद ॥
पत्र उकति जुत वाँचियें, मधूभार यह छंद ॥ ५ ॥

अर्थ. गुणना भंडार, अडग, राजाना इंद्र, हे? महाराजा रससागर-रजी, पत्रनी उक्ति समेत आ मधुभार छंद कृपा करीने वांचजो. ॥ ५ ॥

॥ अथ छंद मधुभार ॥

स्वस्तिश्री गांउ ॥ नेहनग्र नाँउ ॥ गुनके निधाँन ॥ पूजहि प्रमान ॥ आपसें आप ॥ दिनकर प्रताप ॥ बंदगी बाँन ॥ परम सनान ॥ अविचलहि बाच ॥ संनेह साच ॥ गंगा पवित्र ॥ सब शुभ चरीत्र ॥ दीनन दयाल ॥ बानीं रसाल ॥ गुन मुक्त माल ॥ गौ विप्र पाल ॥ पुनके जिहाज ॥ कवि कुल निवाज ॥ जसके समाज ॥ मंत्रह सकाज ॥ बुधिके निधाँन ॥ गुरुवे गुमान ॥ अंमृतह नेंन ॥ सुख इष्ट देंन ॥ गनपति गरूर ॥ निज वंश नूर ॥ मन मित्र रंज ॥ अरि समर गंज ॥ सागर गभीर ॥ सेना सधीर ॥ अ- तिही उदार ॥ भू ग्रहन भार ॥ गुरु गुन अनंत ॥ करतार चिंत ॥ त्रिय हरन धूप ॥ मनमथ सरूप ॥ निरबल अ- धार ॥ सरनं सधार ॥ निज देव वंद ॥ आनंद कंद ॥ ॥ औषधी मेह ॥ पोषन सनेह ॥ चातुरह चिंत ॥ बनके बसंत ॥ सुख देंन दूर ॥ घनज्यों मयूर ॥ विनपरां पच्छ ॥ पंछियां वच्छ ॥ चकोर चंद ॥ चातुकी बुंद ॥ मधुकर सु बास ॥ ननके निवास ॥ मन मीन बार ॥ अहि गंधसार ॥ अंबरक नेंन ॥ मृग नाद बेंन ॥ संनेह एक ॥ राखंत टेक

॥ शिव शक्ति दोय ॥ मानंत सोय ॥ तिहू लोक मांहि ॥ सवही सराहि ॥ चारहू वेद ॥ जानंत भेद ॥ पँच तत्व अं-ग ॥ जानत सरंग ॥ पट लहन भाप ॥ चातुर सलाप॥सा-तहू द्वीप ॥ इसके अधीप ॥ अठ कुल उलंग ॥ महिमा उतंग ॥ नव रसहि सार ॥ जानन विचार ॥ दश दिगहि पाल ॥ जशके हमाल ॥ विद्या विधान ॥ चौदह सयांन ॥ अठ दश पुरान ॥ जानन प्रमान ॥ सब कला सार ॥ जाने विचार ॥ गुन सकल श्रष्ट ॥ सब्ब हरन कष्ट ॥ एसें अनंत ॥ उपमा लहंत ॥ हिंदवान माज ॥ श्री महाराज ॥ सागर सनेह ॥ चिरजीव देह ॥ लखियत प्रवीन ॥ अर-जी सु कीन ॥ बाँचिये रस्न ॥ राधिका कृष्न ॥ रावरे नेंन ॥ अति मोद चेंन ॥ आपको पत्र ॥ शिर कियो छत्र ॥ बाँ-चो बनाय ॥ उर लाय लाय ॥ करि लिख्यो भेद ॥ परसन उमेद ॥ देखत तरंग ॥ उलट्यो उमंग ॥ कीट ज्यों भ्रंग ॥ गति भई अंग ॥ इनहीं प्रमान ॥ उरहमें ध्यान ॥ चाहना चिंत ॥ मिलवो सु मिंत ॥ जिन्हान जाप ॥ गुन गाए आ-प ॥ अभिलाप कांन ॥ कव सुनहु बांन ॥ भुज यों सु भाय ॥ परसों जु पाय॥द्रग देख आप ॥ व्हेंगे नीपाप ॥ रावरो रंग॥ रमि रह्यो अंग ॥ हियमें हजूर ॥ जानो जरूर ॥ राखवी टेक ॥ दिन दिन विशेक ॥ तुम मया मिंत ॥ धारियें चिंत॥ कछु अंत्र भेद ॥ कीजें निपेद ॥ फुरमास होय ॥ फुरमाय मोय ॥ इत सवें आप ॥ फेल्यों प्रताप ॥ हंमेश पत्र ॥ लि-

लिये विचित्र ॥ संवत अठार ॥ चालीश धार ॥ वैशाख मास ॥ पून्यो प्रकास ॥ शिर आय सोम ॥ निश आध भोम ॥ मदनें सराप ॥ तकसीर माप ॥ फिर दशा चित्त ॥ जानों कवित्त ॥ ६ ॥

अर्थ. स्वस्तीश्री एटले कल्याणकारक अने शोभायमान नेहनगर नामना शेहेरमां निवास करनार, गुणना भंडार, सर्व प्रमाणोथी पूजवा लायक, प्रमाणीक, पोताना महिमाथी प्रख्यात, एटले सागरते सागर जेवाज, सूर्य जेवा प्रतापी, वंदन करवा योग्य, परमेश्वरनी भक्ति करनार, वास्तविक रूपे परमात्मा सरखा, अचळ वचनवाळा, (एटले कहेलुं वचन पाळनार,) स्नेहमां साचा, ने साचा स्नेहने जाणनार, गंगा सरखा पवित्र, जेनां सघळां चरित्ो अतिशे उत्तमछे, एटलुंज नहीं पण सारां चरित्रोने विस्तारनार, गरीबो उपर दया राखनार, मधुर वचन बोलनार, रसिक वाणीवाळा, सर्व प्रकारना गुणो रूप मोतीनी माळा जेवा, गाय तथा ब्राह्मणोनुं पालन करनार, पुण्यना तो एक वाहाण रूप, कवीओना कुळ उपर नवाजनार, यशना समुदाय रूप, विचार पुर्वक काम करनार, बुद्धिना भंडार, म्होटाइना मानने धरनार, अमृत सरखी दृष्टीवाळा, (अमृतथी भरपूर आंख्योवाळा,) मनवांछित सुख आपनार, गणपति सरखा मगरूर, पोताना वंशना तो एक तेजरूप, मीत्रोना मनने रंजन करनार, लडाइना मेदानमां दुश्मनोनें हरावनार, समुद्र जेवा गंभीर, दरीया सरखी म्होटी सेनाने होम्मतनी साथे धैर्य आपनार, रणमां धीर, अतीशे उदारताथी भरपूर, प्रथ्वीना भारने उतारनार, म्होटा अनेक उमदा गुणवाळा, जगतकर्त्ता परमेश्वरनुं चिंतवन करनार, स्रीयोना तापने हरवामां कामदेव जेवा खूबसुरत, दूर्बल, गरीब तथा नोधाराना आधार, शरणे आवेला लोकोने आश्रय आपी रक्षा करनार, पोताना इष्टदे-

वने खरेखरी उपासनाथी वंदन करी भजनार, आनंदना समूहरूप, जात जातनां अनाज तथा ओपधीओनुं जेम वरसाद पोपण करेछे तेवीज रीते पोपण करी स्नेहने वधारनार, चतुराइथी भरपूर, चतुर पुरुपोनी संभाळ राखनार, वनने प्रफुल्लित करवामां वसंत ऋतु रूप, जेम मेघ छेटेथी मोरने सुख आपेछे तेम तमे दूरथी पण सुख देवावाळाछो, एटलुंज नहीं पण पक्ष वगरनां प्राणीओने पक्ष (पांख) रूप, पक्षीओने आश्रय आपवामां एक वृक्ष सरखा, चकोर पंक्षीने चंद्र जेवा, अने बपैयाने स्वातिना बुंद जेवा, भमराओने सुगंधी रूप, मनने आश्रय आपनार एक घर सरखा, मन रूपी माछलीने मानसरोवरना जळ जेवा, सर्पोने मळीयागीरी चंदनना झाड जेवा, रक्तनेन (राती आंखवाळी) कोयलने आम्रवृक्ष सरखा, हरणीयाने आनंद उपजाववमां एक वीणाना नाद जेवा, एक स्नेहनी टेकने राखनार, वे जे शिव तथा शक्ति तेने अभेद उपासनाथी माननारा, त्रणे लोकमां जेने सर्व वखाणेछे एटलुंज नहीं पण चारे वेदना भेदने जाणनार, पृथ्वी, जळ, विगेरे पांचे तत्वोनां लक्षण, गुण, तथा रंगने ओळखनार,

छ प्रकारनी भाषाने जाणनार, चतुर शीरोमणी, चतुरनी परिक्षा करी आश्रय आपनार, साते द्वीपना अधिपति, मेरु विगेरे आठ कुळ पर्वतोने उलंघीने जेनो महिमा अतिशे उंचो वधिगयोछे, एटलुंज नहीं पण नवे रसना सार तथा विचारने जाणनार, दशे दिगपाळो जेना यशने दिशाओना अंतसुधी फेलाववासारु मजूर बनेलाछे एटलुंज नहीं पण, आपतो चउदे विद्यानां विधानो जाणवामां कुशळछो, तेमज अढारे पुराणो तथा तेनां प्रमाणोने जाणनार, सघळी कळाओना सार तथा विचारोना ज्ञाता, सर्व गुणोथी श्रेष्ट, सर्व प्रजाना दुःखने हरनार, एवी अनेक उपमाओथी अलंकृत, हिंदुओनी मर्यादा, शोभायमान, स्नेहना सागररूप, हे! महाराजा रससागरजी शरीरे सर्वदा चिरंजीव रहो, नम्रता पुर्वक आ अरजी लख-

नाग आपनी दासी कळाप्रवीणना आप जीभथी अरजी वांचती वखते श्री राधा कृष्ण वांचजो, हे? महाराजा, आपनां नेत्रतो अमोने आनंद तथा सुख चेन उपजावनारांछे, ने आपनो जे पत्र आव्यो ते मस्तक उपर छत्र रूपे करेलोछे, अने ते माहेला विचारो मनमां लावी लावीने आनंदथी सारी रीते वांच्यो, ने तेना जवाबमां तेज कागळनी उक्ती प्रमाणे भेद लख्याछे ते मेहेरबानीनी राहे स्वीकारशो, आपना स्पर्शनी उमेदवार आ-दासीने तो नदीयोनी चळकती लेहेरो जेवी, पत्र माहेला वर्णोंनी हारा जो-तांज उलटमां आवेलो अमाप उमंग वधी पड्योछे, एटलुंज नहीं पण प्रे-मनो कांटो वागवाथी जेम भमरा पछवाडे कीडानी गति थायछे, तेमज रीत भात बदलवाथी आ अंगनी गति थई गइछे, आ द्रष्टांत प्रमाणेज अमारा हृदयमां आपनुं ध्यान लागी रह्युंछे, ने आ चित्ततो मित्रने मळवा-ने चाहेछे ने आ जीभ तो जाणे जप करती होयनै? एवीज रीते हमेशां आपना गुणोनुं गायन करेछे, ने कानतो एवी अभीलाषा (इच्छा) करी रह्याछे के आपणे महाराजाना मुखनी मधुर वाणी क्यारे सांभळशुं? बन्ने हाथ एम इच्छेछे के आपणे जइने महाराजाना पगनो स्पर्श करीए, ते-मज आंख्यो पण आपनुं दर्शन करी निष्पाप थवा इच्छेछे ने आपनो रं-गतो अमारा अंगे अंगमां रमी रह्योछे, प्रतीति (खात्री) पुर्वक जाणो के आप हजूर अमारा हृदयमां नीवास करी रह्याछो माटे दिवसें दिवसें वि-शेष टेक राखवी, हे? प्रिय मित्र, तमो चित्तमां कृपा धरजो, ने कांई अंतर भेद न राखतां खेद करशो नहीं, अम सरखुं कांई काम काज तथा सेवा होय ते कृपानी साथे फरमावजो, आहीं सर्व प्रकारे आपनो प्रताप फेलाई रह्योछे, हमेशां कुशळ समाचारना विविध पत्र लखजो मिति सं-वत १८४० ना वैशाक शुदी पुनमने मंगळवारनी अर्ध रात्रीए अमृत मय उज्वळ कीरणोथी प्रकाश करनार, चंद्र आकाशरूपी रंग भूमीना मेदा-ननी वच्चे प्रकाशतो वखते मधना आनंदमां आ पत्र लख्योछे, माटे कांइ

भूल चूक रही होय ते विशे अमारो अपराध क्षमा करशो, एटलुंज नहीं पण अमारा चित्तनी दशा नीचेनी कविता वांचवा उपरथी पुरती रीते जाणशो एज विनंती. ॥ ६ ॥

अथ अलंकार कारन माला ॥ कवित्त यथा ॥

भानहूतें जोत भारी, भारी कामहूतें कारी, कारी गरहूतें न्यारी, प्यारीहें चतुर नर ॥ वेदतें अभेद बानी, बानीमें न आवे ध्यानी, ध्यानीसें पुरानी जानो, नाहि न अमरपर ॥ फेलरही अंग अंग, अंगहू न जाने रंग, रंगकी तरंग जैसें, गंग हर शीर झर ॥ पौन पानीहू न पावे, पावे सो स्वरूप गावे, गावें गुन सागर हमेश चाह उर भर ॥ ७ ॥

अर्थ. प्रेमनी जोति सुर्यनी जोतथी भारे अने कामदेवथी पण आकरीछे, कारीगरथी अथवा काळा झेरथी न्यारीछे, परंतु ते चतुर पुरुषने प्यारीछे, तेनी वाणी वेदथी अभेदछे, तेमज तेनुं ध्यान वाणीमां आवतुं नथी, वळी ध्यानी पुरुषथी पण पुराणी (जुनी) छे, ते स्वर्गमां पण नथी, अने अंगे अंगमां फेलाइ रहीछे, पण तेना रंगने अंग जाणतुं नथी, रंगनी लेहेरो तो महादेवजीना मस्तक उपर रहेली गंगानी पेठे झरे छे, तेने पवन तथा पाणी पामतां नथी, अने जे पामेछे ते तेनां स्वरूपने गाया करेछे; माटे हे? सागर, अमे पण हमेशां हृदयमां चाहनाथी भरपुर थइने गुण गाया करीये छीये. ॥ ७ ॥

॥ अथ अलंकार असंगती ॥ सवैया ॥

सागर रावरे कागदको इत, ज्यों ज्यों लगो अरहंट फरेबो ॥ त्यों त्यों हमें अखियांन अहो निश, वारकी धार घरी ज्यों ढरेबो ॥ ज्यों ज्यों प्रवाह वहें असुआनको, त्यों

त्यों त्रिहा हिय होज भरेवो ॥ ज्यों ज्यों सुरंज सनेह चढे मधि, त्यों त्यों जिया निंबुवा उछरेवो ॥ ८ ॥

अर्थ. हे सागर आंहीं जेम जेम आपना कागळनो रेंट फरवा लागो छे, तेम तेम अमारी आंख्योंमांथी रात दिवस घडीमांथी जेम पाणीनी धारा ढळें, तेनीज पेठे आंसुनी धाराओ ढळेछे, अने जेम जेम आंसुनो प्रवाह वेहेछे, तेम तेम हृदयमां विरहरूपी होज भरातो जायछे, ने तेमांथी जेम जेम स्नेहना नळ चडेछे, तेम तेम जीवरूपी लींबु उछरया करेछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ अलंकार परि करांकुर ॥ सवैया ॥

गोमन व्योमन झोम उठे धगि, रोंमन रोंमनसें जग जारे ॥ गात सिरात नही दिन राति सो, बातन जात कछू बिसतारे ॥ भीतर चीतर मिंत रह्यो सु प्रतीतन थीत रह्यो जिय हारें ॥ नागरताइ कहा करिये चितकी तुम सागर जाननहारे ॥ ९ ॥

अर्थ. विरहाग्नीनी आंचने लीधे पृथ्वी तथा आकाश धगी उठेछे, ते जगतमां रुंवाडे रुंवाडे बाळेछे, ने रात दिवस शरीर तो थंडुज पडतुं नथी, ते वात कांइ वीस्तारी जती नथी, परंतु अंतरमां मित्र चित्राइ रह्याछे, तेनी प्रतीतीथी जीव केवल हारे (वारणे) स्थीरथइ अटकी रह्योछे, एमां अमो शुं चतुराइ करीए, केमके हे? सागर, तमो चित्तनी वातने जाणवावाळाछो. ॥ ९ ॥

॥ अथ अलंकार लुप्तोत्प्रेक्षा ॥ सवैया ॥

सागर सिंधु सनेहको नाउ ॥ पयों रस भौंर कर्यों तहँ घेरों ॥ देखतहे जितही तितही जल ॥ ज्ञार पहार पुलीन न

हेरो॥काम कमाँन चढाय इतें पर, चोट चलावत आवत नेरो ॥ ऊडत बूडत बैंठत बेधत, काग कुहांको भयो मन मेरो ॥१०॥

अर्थ. हे? सागर प्रेम रूपी समुद्रमां स्नेह रूपी वाण पहच्युंछे, त्यांहा रस रूपी भमरीओए घेरो कर्योछे, ज्यांहां देखेछे त्यांहां पाणीने पाणीज देखायछे, झाड, पहाड के कीनारो देखातो नथी, एटला उपर वळी कामदेव कमान चडावी चोट करीने पासे आवतो जायछे, उडे तो बूडे अने वेसेतो वेधे, एवीरीते क्वाथंभ उपर रहेला कागडानी पेठे म्हारुं मन थयुंछे. ॥ १ ०

अथ अलंकार समरूपक ॥ सवैया ॥

सायत सोधतहें मिलवो, पढवो गुन पंडित मेंन अखारें ॥ द्योस निशा जुज पत्र घरी बिरहांनके अंक हमेश विचारें ॥ नेंननके जल कुंभ भरें धुनि, ध्यान बिधानकि टेक सुधारें ॥ प्रेमको जंत्र नली सुरता मधि, सागर मिंत निछत्र निहारें ॥ ११ ॥

अर्थ. मळवाना समयने शोधीए छीए, कामदेवरूपी पंडितना अखाडामां जइने ते संबंधी गुण भणीए छीए, अने रात दिवस जुदां जुदां टीपणां तथा घडी बांधीने विरहना अंकने (अक्षरने) हमेशां विचारीए छीए, ने नेत्र रूपी पाणीना कुंभने भरीए छीए, अने धुन लगाडीने ध्याननना विधाननी टेकने सुधारीए छीए, एटलुंज नहीं पण प्रेमरूपी यंत्रमां गोठवेली सुरता रूपी नळीकामांथी हे? सागर, मित्ररूपी नक्षत्रने जोया करीए छीए. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम व्रच्छ पल्लव परसि, ज्वाला विरह अपार ॥

मन सूता तंता सुरति, निश दिन करत बिहार ॥१२॥

अर्थ. प्रेम रूपी वृक्षनां पल्लवनो स्पर्श करीने विरह रूपी अपार ज्वाळा मन रूपी सूत्रोना सुरती रूपी तंतुथी हमेशां विहार करेछे. ॥ १२

चोसर मांडें चितकी, सुरत फिरावें सार ॥
पासो ढारें प्रेमको, जीते जीतनहार ॥ १३ ॥

अर्थ. चित्त रूपी चोपाट मांडीने तेमां सुरता रूपी सोगठां फेरवीए छीए, अने प्रेम रूपी पासा ढाळीए छीए पण जे जीतनार हशे, ते जीतशे. ॥ १३ ॥

वांचत पत्र प्रवीनको, रससागर तिहि बेर ॥
तन मनकी जैसी दशा, बनी सु बरनों फेर ॥ १४ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणनो पत्र वांच्यो ते वखते महाराजा रससागरना शरीर तथा मननी जेवी दशा थइ गइ, तेने हवे फरीने वर्णवुंछौ. ॥१४॥

॥ अथ रससागर दशा बर्ननं ॥ छंद हनुंफाल ॥

थेली लखी जरतार ॥ मन दृढ हुवा वहि बार ॥
खोली सु कसनें ग्रंथ, प्रगटी कला मनसंथ ॥
कुसबोह लागी घ्रांन, लागो झरोंखा ध्यांन ॥
करसें जु खोली वीर, सिटिगई मनकी धीर ॥
शिरनांम वाँचत संग, बदल्यो बदनको रंग ॥
ज्यों ज्यों पलेटत हाँस, त्यों त्यों उलट ऊसास ॥
ज्यों ज्यों बँचे तुक छंद, उर बढत सुख आनंद ॥
उपमा सु बंचत भीन, मन तुच्छ जल ज्यों मीन ॥
बंची हकीकत तार, दो नेंन जलकी धार ॥

तबकी दशाकी बात, मुखसें कही नहिं जात ॥
बाहुरेसें दरसाय, कवि रहें मन मुरझाय ॥१५॥

अर्थ. जरीनी थेली जोड़ ते वखते तो मन द्रढ थयुं, पण रेशमनी दोरीनी गांठ्यो छोडी के तरत अंगे अंगमां कामदेवनी कळा प्रगट थइने पसरी गइ, कागळ माहेला चूर्णनो सुगंध नाके पड़तांज कळाप्रवीणना झरोखानुं ध्यान लागी गयुं, पोताना हाथथी कागळनुं परबीडीयुं उखेडयुं के मननी धीरजता मटीगइ, ने शिरनामुं वांचवानी साथेज मोढानो रंग बदली गयो, जेम जेम एक पछी एक एवीरीते शब्दोनी हारो वांचीने पटलावेछे, तेम तेम उलटेलो श्वास जोरथी चालेछे, ने जेम जेम छंदनी तुको वांचेछे तेम तेम हृदयमां सुख तथा आनंद वधतो जायछे, जूदीजूदी उपमा वांचता थोडा पाणीमां पडेला माछलानी पेठे मन तलफेछे, कागळनी अनुक्रमे एकंदर हकीकत वांची त्यारे तो बन्ने आंख्यो मांथी आंसुनी धार चाली नीकळी, ते समयनी महाराजानी दशानी वात तो म्हाडेथी कही जाय तेवी नथी, महाराजा दीवाना सरखा देखाया तेथी कवी पोताना मनमां मुंझाइ रह्या. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

कही सुकवि महाराजकों, सुरत रखें इक ठोर ॥
एती सुनत सचेत व्हें, बूझन लगे बहोर ॥ १६ ॥

अर्थ. पछी कवीए कह्युके हे! महाराजा, सुरत संभाळी चित्त ठेकाणे राखो, एवां वचन सांभळतांज सचेत थइने प्रवीण संबंधी सघळु वृतांत विस्तारथी कहेवा सारुं कवीने आज्ञा करी. ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

ऐसें सुकवि सुनाय, रससागर बोले बचन ॥
बरनो सकल बनाय, कैसें कलाप्रवीनकी ॥ १७ ॥

अर्थ. एवीरीते कविने आज्ञा संभळावीने रससागर, बोल्या के प्रवीणनो खुब सूरती तथा कळा केवीछे ते सघळु सारी रीते विस्तारथी कहो. ॥ १७ ॥

अथ अलंकार अनन्वय ॥ कवी उक्त छप्पय ॥

लिख्यो पत्र महाराज, सोय यहि बिधि पहुँचायो ॥
बांचत कळाप्रवीन, चिंतमें मतो द्रढायो ॥
जाय उमा हर थांन, आप लीनो कुमार व्रत ॥
सती संत अरु सूर, कोउ करिहे न असी गत ॥
वय तुच्छ आप पटुता बडी, कह इक रसन सराहियें ॥
शोधंत आंन यहि सम तिया, सृष्टा सृष्टि न पाइयें॥ १८॥

अर्थ. कवी कहेछे हे? महाराजा, आपें जे पत्र लख्यो हतो ते आगळ कह्या प्रमांणे युक्तिथी पहोचाड्यो, ते वांचतांज कळाप्रवीणे पोताना मनमां द्रढ निश्चय कर्यो, एटलुंज नहीं पण उमामाहेश्वरने मंदिरे जइने पोते कुमारीका व्रत लीधुं, सती, संत अथवा कोइ देव पण एना सरखुं व्रत धरी शकेनहीं, उम्मर नानी पण चतुराइ मोटी ते एक जीभथी शुं? वखाणीए, पण शोधी जोतां प्रवीण सरखी बीजी कोई स्त्री आ ब्रह्मानी सृष्टीमांतो पामीएज नहीं. ॥ १८ ॥

॥ सोरठा ॥

सागर सुकवि उचार, सुनीं पत्र वंच्यो प्रथम ॥
ऐसी आशय धार, चत्र प्रहर चरचा चली ॥ १९॥

॥ छप्पय ॥

अर्थ. कवीनो उच्चार सांभळीने प्रथमतो सागरे पत्र वांच्यो ते पछी एना अभिप्रायनी चार पहोर सुधी चर्चा चलावी. ॥ १९ ॥

रससागर तिहि समय, एह आशय उर धारी ॥
क्रत दिन प्रति निज काज, रयन एकंत अटारी ॥
मिलेजु सिगरे मिंत, एह चरचा ऊपावें ॥
कवित सवैया छंद, विरहकी दशा वनावें ॥
पठवें सु पत्र परबीन प्रति, मास मास धार्यो विरद ॥
उँन पत्र फेर आवे इतें, वढे प्रेम दुहु हद विहद ॥ २० ॥

अर्थ ते वखते महाराजा रससागरे एवो निश्चय मनमां धार्यो के दी-वसेंतो राज्य संबंधी काम काज करवुं, ने रात्रीए एकांतनी अटारीमां वे-सवुं, त्यांहां सघळा मित्रो एकठा मळीने प्रवीण संबंधी चर्चा चलाववी, ने वियोगनी स्थितिनां कवित्त सवैया अने छंद वनावी तेनो पत्र महीने महीने प्रवीण तरफ मोकलाववो, तेमज पाछो एनो कागळ आंहीं आवे एम करवाथी वन्नेने वेहद प्रेम वधतो जशे, (महाराजाए ए प्रमाणे नियम लीधो) ॥ २० ॥

॥ गाहा ॥

पत्र सु कला प्रवीने ॥ सुकवी दहन वंच सागर विधि ॥
उनहत्रीश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २१ ॥

अर्थ. कवीए आपेलो प्रवीणनो पत्र महाराजाए वांच्यो ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी ओगणत्रीशमी लेहेर पूरीथई. ॥ २१ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कलाप्रवीन पत्र प्रत्युत्तर भेदे रससागर दशा वर्ननो नाम एकोनत्रिंशतिमो लहरं ॥२९॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपट्टने पत्तने नृपचक्र चूडाम-णी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाई महात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां एकोनत्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ छंद मंदाक्रांता ॥

मंछापूरें नरपति गया, वैद्य राजा बनीने ॥
पत्री आपी कुसुम करमां यंत्र युक्ती करीने ॥
छंदो जे जे सरस लखिया, पूर्ण प्रेमे गणीने ॥
केशे तेनां लहरि त्रिशमी, शुद्ध भेदो भणीने ॥

अथ दंपति दशा वैद प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

सागर कला प्रवीनकों, लगो एक चित ध्यांन ॥
विरह दशा बरनत सदा, पाती पर गुजरांन ॥ १ ॥

अर्थ. सागर अने कळाप्रवीणने चित्तमां एक ध्यान लागी गयुं, तेथी हमेशां वियोगी स्थितीनुं वर्णन करीने केवळ कागळ उपरज गुजरान करेछे. ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

ऐसें अहर कितेक, वहें चरचा बिस्तारत ॥
कब मिलहें किरतार, यहें दोऊ उर धारत ॥
शोच शोच महराज, एह सुकवी प्रति बूझी ॥
बिना मिलन परवीन, उरह मति मोह अरूझी ॥
अभिलाप लगो मनमें सु अति, मनछापुर कीजें गमन ॥
चितमें बिचार धार्यों मतो, कोऊ विध देखें बदन ॥ २ ॥

अर्थ. एवीरीते वियोग संबंधी चर्चा विस्तारथी चलावतां केटलाएक दिवसो वीतीगया, जेथी बन्नेजणा पोताना मनमां एम धारेछे, के हे? जगत्कर्त्ता परमेश्वर, अमो क्यारे मळशुं, पछी शोक करी करीने केटलेक दीवसे महाराजाए आवीरीते कवीराजने पूछ्युं के हे? कवी, प्रवीणने मळ्याविना म्हारीबुद्धि मोहथी गुमथइ मुंझाई गइछे, एटलुंज नहीं पण,

मनमां तो एवी आशा लागी रहीछे के मनंछापूर तरफ जइए, चित्तमां विचारी विचारीने त्यांहां जवानो निश्चय धार्योछे, जो कोय उपायथी प्रवीणनुं मुख जोइएतो सुख थाय. ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

कही सुकवि महाराज प्रति, जो चित धारत सोय ॥
सातो मिंत सिधाइयें, ओरें खवरि न होय ॥ ३ ॥

अर्थ. एवां वचन सांभळीने कवीए महाराजाने कह्युके आपे जे विचार चित्तमां धार्योछे तेमज करीए, नें वीजा कोईने खवर न थाय एवीरीते साते मित्रो त्यांहां जइए. ॥ ३ ॥

॥ चोपाई ॥

वात यहें महराज विचारी ॥ मनछापुरी गमनकी धारी ॥ निज हजूर किंकर फुरमावें ॥ हमें इष्ट साधनकों जावें ॥ पीछेफिरें तहांलों कोई ॥ हें यह इत यह जाने सोई ॥ महल आवनें मतो मिटायो ॥ ओरहिको ओजार वतायो ॥ खवरदार यह कोउ न पावे ॥ पावत इष्ट सिद्धि नाहिं आवे ॥ वंद वस्त ऐसी बिध कीने ॥ सातो मिंत बुलाय सु लीने ॥ संग मतेवत साज सवारी ॥ आध निशा कीनीं असवारी ॥ प्रच्छन भेद काहु नहि चीनीं ॥ कोउ गांउं पहिचांन न दीनीं ॥ वहत गहन मनछापुर आये ॥ आय वाग अवमों च द्रढाये ॥ किय मंजन निज वास उतारे ॥ फिरेंग पोस सातो जन धारे ॥ ४ ॥

अर्थ. ए प्रमाणे वात विचारीने महाराजाए मनंछापुर तरफ जवा पा-

शुं, पछी पोताना हजूरी नोकरोने बोलावीने फरमाव्युंके अमो इष्ट साधन करवा जइएछीए, ते पाछा फरीने आवीए त्यांहां सुधी सघळा लोको एमज जाणे के महाराजा तो आंहींज छे, मेहेले आववानो रीवाज बंध कर्यो ने बीजा सर्व कामना उपायो बताव्या ने कह्युं के खबरदार आ वात कोय जाणे नहीं, ने जो कोईपण जाणशे तो इष्टसिद्धि थशे नहीं, वास्ते साव-धान रेहेजो, आवीरीते बंदोबस्त करीने साते मित्रोने बोलावी लीधा ने इ-च्छा प्रमाणे जोइती सामग्री साथे लइ स्वारी सजीने अर्धी राते प्रयाण कर्युं, आ छानो भेद कोइये जाण्यो नहीं, तेमज रस्ताना गामोमां पण क्यांय ओळखाण आपी नहीं, एवीरीते जंगलमां मुसाफरी करता करता मनछापुरीमां आवीपहोच्या, ने तेओये बगीचामां आवीने उतारो कर्यो ने पोतानां लुगडां उतारी न्हाया, पछी साते जणाये फीरंगीनो पोषाक धारण कर्यो. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

बांनो धर्यो तबीबको ॥ सहर नजरमें लाय ॥
बनी जु छबि महाराजकी ॥ सो बिध कहों बनाय ॥५॥

अर्थ. शेहेर नजरमां लावीने डाकतरनुं बानुं धर्युं, ते वखते महाराजानी छबीनी जे शोभा बनी ते विधि पुर्वक वर्णवीने कहुंछुं. ॥ ५ ॥

अथ रससागर फिरंग रूप बर्ननं ॥ छंद तोटक ॥

महाराज तबीब प्रपंच किया ॥ यह साज फिरंगिन मोंन लिया ॥ त्रिकुटी शिरताज जराव धरी ॥ कुरती जरतार बनात करी ॥ पिसतोल धरी दोउ कंमरमें ॥ नवरंग छडी सु लई करमें ॥ कुसुमावलि राह मुकांम धर्यो ॥ कुरसी पर आसन आप कर्यो ॥ लखि पंथिक रूप निहार हसे ॥

भये प्रात सु ब्रह्मसुता निकसे ॥ चकडोर लगे उत दीठ करी ॥ कवि देखतहीं पहिचांन परी ॥ चरचांनलगी रथ खेंच तहां ॥ तुम कोंन कहाँलो वसंत कहां ॥ तव उत्तर एह फिरंग दिया ॥ हमनें सहलांन विदेश किया ॥ इतसें वहु दूर विलात रहें ॥ हमकों सव लोग तवीव कहे ॥ मन वेदरकार इलाज करें ॥ दरदी न रहे हम दीठ परें ॥ समुझी इतनें मांहि ब्रह्म सुता ॥ यहतो वह कारन कौन मता ॥ तुम आय भलें कहि मंद हसें ॥ दरदी यह सेर अनेक वसें ॥ इतनी कहि आप ग्रहें उतरी ॥ अध जीमि उठी दरवार फिरी ॥ ६ ॥

अर्थ. महाराजाए डाक्तरनो प्रपंच कर्यो, त्यारे आ प्रमाणे फीरंगीना जेवो स्वांग (वेष)सजी लीधो, मस्तक उपर जात जातनां नंगोथी जडेली त्रण हांसाळी जर्यनी टोपी, शीरपेच समेत मुगटने ठेकांणे धारण करी, तेमज जरीनो जाडित्र कवजो, कोट, ने उमदी वनातनुं पटलुंन पेहेरी लीधुं, कम्मरे बे वाजु बे पिस्तोलो धारण करीने नवी रंगदार छडी रेशमी रुमालनी साथे हाथमां लीधी, एवीरीते फीरंगीनो पोषाक पेहेरी साते मित्रोए आवी, जे रस्तेथी कुसुमावळी जती आवती हती त्यांहां वीछायत करीने मुकाम कर्युं, ने महाराजा पोते खुरसी उपर आसन करी वीराज्या, त्यांहां तेओने जोइने रस्ते जनारां आवनारां लोको आ परदेशी मुसाफरनुं सानंदाश्चर्य पमाडे एवुं रूप जोइने हसेछे, तवार थयुं के ब्रह्मसुता कुसुमावळी ते रस्तेथी नीकळी त्यांहां तेओने नजरे जोया के तरत तेनुं मन हींडोळानी पेठे झोकां खावा लाग्युं, पण तेमां कवीने देखतांज ओळखाण पडी, एटलुंज नहीं पण पोतानो रथ खेंची मंगावीने

चरचा करवा लागी, के तमो कोणछो? क्यांहांसुधी जशो? अने क्यांहां रहोछो? त्यारे फीरंगी बनेला महाराजाए पोताना मुखथी एवो उत्तर आप्यो के, अमो जूदा जूदा देश जोवानी इच्छाथी परदेशमां सेहेलानी करवा नीकळ्या छीये, ने आंहीथी घणे छेटे विलायतछे, त्यांहां रहीएछीए, अने अमने सघळां लोको डाक्तर अथवा वैद कहेछे, एटलुंज नहीं पण अमो मनमां शंका न राखतां रोगीयोना उपाय करीएछीए, ने अमारी नजरे पडेलो सक्ष दरदी [illegible]ज नहीं, एटली वातमांतो ब्रह्मसुता कुसुमा वळी समजी गइ ने पोताना मननी साथे केहेवा लागी, के अहो! आतो आगळना कारण साजुंजे वधो प्रपंच कर्योछे एम कह्या पछी "तमो भले आव्या" एम कही जरा हशीने बोली के आ शेहेरमां अनेक दरदीओ वसेछे, एटलुं कही पोताने घेर जइ उतरी ने ते अरधुं जमी न जमी एवीरीते उठीने पाछी दरवार तरफ चाली. ॥ ६ ॥

दोहा

कुसुम फिरी दरबार प्रति, आइ जहां बैठान ॥
फुनि उत रहि चरचा लगी, बूझ्यो एह बिधांन ॥ ७ ॥

अर्थ. पाछी कुसुमावळी दरवार तरफ जवा नीकळी त्यारे जे स्थळे बेशी हता त्यांहां आवी पाछी त्यां चरचा थवा लागी, तेमां आ प्रमाणे विधान पूछ्युं ॥ ७ ॥

अहो बैद बांनी सुनो, साध मिटें सब व्याध ॥
कहो सु कैसें के समें, ऐसी होय असाध ॥ ८ ॥

अर्थ. हे? वैद्य म्हारी वात सांभळो के साध्यना तो सघळा रोगो मटी जायछे पण आ हुं कहुंछुं, ते प्रमाणे क्या कारणथी अने कये वखते असाध्य थायछे ते कहो. ॥ ८ ॥

अथ अलंकार स्मृत्युक्ती ॥ तत्र कुसुमावल्युक्त

॥ सवैया ॥

ऐयत वैयत वार द्रगें अरहंट ज्यों बोरत ढोरत गागर ॥
रोवत जोवत राह दशों दिश, देखत लेखत रावरे कागर॥
झूरत सूरतकों न विलोकत, कंपत झंप सहेलिय लागर ॥
हेर निसांन निदान निवेरहु, व्याध सधें क्यों असाधि ए
सागर ॥ ९ ॥

अर्थ. जेम रेंट फरी फरीने [illegible]मां गोठवेली गागरोने भरेछे ने ठलवेछे तेम आंख्योमांथी आंसु भरेछे ने ठलवेछे, दशे दिशाओना मार्गो जोया करेछे अने रोया करेछे, ने म[illegible]जानो कागळ जुवेछे ने वळी लखेछे, शरीरनी दरकार न राखतां झुरेछे, ने पोतानी सुरत जोती नथी, ने साहेलीओ पासे कंपेछे, ने चमकी उठछे, हे? सागर, ए प्रमाणे लक्षण जोइने रोगना कारणनो निर्णय करो, के आ रोग ते साध्यनो केअसाध्यनो! ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मनि बांनि तवीब सुनि, यह प्रति उत्तरकीन ॥
पाती लिखी प्रवीनपें, साध यंत्र कहि दीन ॥१० ॥

अर्थ. कुसुमावळीनी वात सांभळीने तेना जवाबमां वैदे प्रवीण उपरनो एक पत्र लखी कुसुमावळीने आपी कह्यु जे "आ साध्य यंत्रछे तेथी साध्य थइ जशे. ॥ १० ॥

अथ वह पाती उदाहरनं ॥ दोहा ॥

अहो मिंत परबीनजू, आए बिदेसी बैद ॥
कवित सवैयनको लहो, भिन्न भिन्न सब भेद ॥ ११ ॥

अर्थ. हे? प्रिय मित्र, प्रवीण आ विदेशी वैद्य आवेलाछे, मारे काग-

ळ माहेला कवित्त तथा सवैयाना जूदा जूदा भेद विचार पुर्वक ग्रहण करो. ॥ ११ ॥

॥ अथ अलंकार संशय दृष्टांत ॥ छप्पय ॥

सूर उदित तव कहा, दर्द चकवा नहि भागें ॥
दीप कियो तव कहा, नेंन खद्योत न लागें ॥
चंद्र कौमुदी कहा, दर्श देख्यो न चकोरा ॥
कमल प्रफुल्लित कहा, वास लोभित नहि भौंरा ॥
घन गाज गाज वरण्यो कहा, चाह न पूरत चातकी ॥
परवीन प्रेम जानंत यों, प्यास न बूझत बातकी ॥ १२ ॥

अर्थ. जो के चकवा चकवीनुं दुःख न भाग्युं, तो सूर्य उग्यो तो पण शुं? जो पतंगीयानी आंख्यो न लागी तो पछी दीवो कर्यो, तेथी शुं, थयुं? जो के चकोर पक्षीने दर्शन न थयुं तो चंद्रमानी कांति पण शाकामनी! जो सुगंधथी लोभाएला भमरा पासे न आव्या तो कमळ प्रफूल्लित थयुं तो पण शुं थयुं! जो बपैयानी इच्छा पुरी न पाडी तो पछी वर्षाद गाजी गाजीने वर्ष्यो तो पण शुं! हे? प्रिय मित्र प्रवीण तमे तो प्रेमने जाणोछो, पण एवीरीते खाली कांइ वातनी तरप मटती नथी. १२

अथ अलंकार जातिस्वभाव ॥ सवैया ॥

मित विचार करो चितमे यह, कैसें भयोहे हमें इत ऐवो॥ एकहु ढेक दिना चत्र पंचमे, अंत परेगों उतें फिरिजैवो ॥ जांननहार अजांन भये कह, ज्यों त्यों करो इकवेर मिलैवो ॥ आज त्रपा न दलंवो प्रवीनपें, पाछें दुहून घनों पछितैवो ॥ १३ ॥

अर्थ. हे? मित्र, मनमां एज विचार करो के आहीं अमारुं आववानुं केम थयुंछे, तेम वळी एक बे के चार पांच दिवसमां अंते पाछुं त्यांहां जवुं पडशे, अरे? तमे जाणवावाळा अजाण केम थया! हवे जेम तेम करीने एक वार मळवानुं करो, हे?प्रवीण, आजतो लांजने उलंगता नथी पण पछे बन्नेने घणो पश्चाताप थशे. ॥ १३ ॥

अथ अलंकार दीपकावृत्ति ॥ छप्पय॥

ज्वाल बुझावत जलह, जलह जारत क्यों बूझे ॥
तिमिर निवारत सूर, सूर तमकृत कह सूझे ॥
गरल उतारत सुधा, सुधा मारत्त को वारे ॥
तपत मिटावत चंद, चंद तपतहि को टारे ॥
घनमाल जिवावतहे जगत, क्यों जीवें घन व्हें विमुख॥
परबीन मिंत सुख दाय तुम, दुख दहियत सरज्यों न सुख १४

अर्थ. जुओके अग्नीनी झाळने पांणी ठारेछे, पण ज्यारे पाणीज बाळे त्यारे केम ठरे! अंधाराने सूर्य मटाडेछे पण ज्यारे सूर्यज अंधारु करे त्यारे शुं सुझे! झेरने अमृत उतारेछे पण ज्यारे अमृतज मारे त्यारे कोण निवारण करे! गरमी अथवा तापने चंद्र मटाडेछे पण ज्यारे चंद्रज ताप करे त्यारे कोण तापने टाळे! आ मेघ मंडल वर्षाने आखा जगतने जीवाडेछे पण ज्यारे मेघ न वर्षे त्यारे जगत केम जीवे! हे! प्रिय मित्र प्रवीण, सुख देवा वाळा तमेज ज्यारे दुःख देशो त्यारेतो अमारा प्रारब्धमांज सुख सरजेलुं नथी ॥ १४ ॥

॥ अथ अलंकार ग्रहित मुक्तदाम ॥ सवैया ॥

कीजें विचार कहा मिलवे महि, कामरि भारि बनें अति भींजें ॥ भींजरहे मन एकहुं रंग, तिहि प्रति छेह कहीं पर

दीजे ॥ दीजे नहीं दरसन इति भये तो बिरही सु कहाँ लग जीजे ॥ जीजे सोई गिनतीमें नही दिन, मित प्रवीन मेहेर न कीजे ॥ १५ ॥

अर्थ. अरे! मळवामां शुं विचार कर्या करोछो, एम जाणतां नथी के कामळी जेम जेम भींजाय तेम तेम भारे थती जाय, ने अमो मनमां एकज रंगथी भींजाइ रह्या छीए, तेने तमे शाकारणथी छेह आपोछो, एटलुं थतां पण दर्शन देतां नथी तो आ वियोगी अमे क्यांहां सुधी जीवीए, जीवीए छीये ते दिवसतो गणत्रीमांज आवता नथी, तो हे! प्रिय मित्र प्रवीण, हजु सुधी केम मेहेर करतां नथी भला. ॥ १५ ॥

अथ अलंकार द्रष्टांत ॥ छप्पय ॥

गंगा न्हाय हर परसि, पाप न घट्यो तब न घट्यो ॥
गये धनंतर द्वार, रोग न मिट्यो तब न मिट्यो ॥
प्रगटे सूर प्रताप, तिमिर न गयो तब न गयो ॥
ईश लिये उपदेश, ज्ञान न भयो तब न भयो ॥
शुकदेव व्यास सुनियत कथा, भ्रम न तग्यो तब नां तग्यो
परवीन मित आये सुपुर, दुख न भग्यो तब नां भग्यो१६॥

अर्थ. गंगामां न्हाया अने विश्वनाथनो स्पर्श कर्यो तोपण जो पाप न घट्युं तो पछी नज घट्युं तेम धन्वंतरी वैदने घेर गया ने जो रोग न मट्यो तो पछी नज मट्यो सूर्यनो प्रकाश थयो ने जो अंधारुं न गयुं तो पछी नज गयुं, परमेश्वर पासेथी उपदेश लीधो ने जो ज्ञान न थयुं तो पछी नज थयुं, शुकदेवजी तथा व्यासजी जेवाना मुखनी कथा सांभळी ने जो भ्रांती न गइ तो पछी नज गइ, तेम हे! प्रिय मित्र प्रवीण, अमे आ तमारा मेहेरमां आव्या ने जो दुःख न भांग्युं तो पछी नज भांग्युं. ॥ १६ ॥

अथ अलंकार द्रष्टांत ॥सवैया॥

बातन घात भईहें इते पर, घात अनंग रची क्यों निवारों॥ अंबरलों धर ज्वाल उठी जर, तापर पाय कहां निरधारों॥ कोश पचाशक पाँच भये डग, पाँच भये डग कोश हजारो ॥ यादिन याद करो न प्रबीनजु कोनहुंपें फिरयाद पुकारों ॥ १७ ॥

अर्थ, अरे? एकतो आ वातज घात रूप थईछे, ते उपर वळी अनंगे (कामे) घात रची तो हवे कईरीते नीवारण करुं? तेमज आकाशथी मांडीने आ जमीनना अंत सुधी झाळ सळगी उठी तेना उपर कए टेकाणे पग धारण करुं? आवती वखते तो आ पचाश गाउनुं अंतर पण पांच डगलां अेवुं थई गयुं हतुं, ने हवेतो पांच डगलां पण हजारो गाउना मेदान सरखां थइ पड्यांछे, तो हे! प्रिय मित्र प्रवीण, आवा दुःखना दिवसमां ज्यारे याद करो नहीं, त्यारे, पछी हुं म्हारा दरदनी फरीयाद कोनो पासे जइने पोकारुं! ॥ १७ ॥

अथ अलंकार जातिस्वभाव ॥ सवैया ॥

आस बिलोकन आस हमें बिस, बास बडो सु निराश धरो नां ॥ अंम्रतकी जु भरी अखियां उनही अखियां विप बुंद भरो नां ॥ प्रांन समांन कियोहे हमें वह, बोत दिनां को सने बिसरो नां ॥ पोंर खरेंकरजोर अहो निश, तासें प्रबीन मरोर करो नां ॥ १८ ॥

अर्थ. अमारे तमारुं मुख जोवानी परीपूर्ण आशाछे, तेमज तमारो म्होटो विश्वासछे, तेथी हवे अमने नीराश करोमां अने जे आंख्यो अमृतथी भरपूर भरेलीछे ते आंख्योमां हवे हलाहल झेरनां बुंद भरोमां, अने

जेने अमे प्राण समान करीने राखेलछे, एवो जे आ घणा दिवसनो स्नेह तेने हवे विसारी मूकोमां, हे! प्रिय मित्र प्रवीण, रात दिवस हाथ जोडीने आपनी हजुरना दरवाजामां उभा छीए, तेनाथी हवे मरोर करोमां एटले मरडाओमां. ॥ १८ ॥

अथ अलंकार जातिस्वभाव ॥ सवैया ॥

नैनन नीरनको झरबो भरबो अति सास उदास उसासी॥
बात कहा उरझी सुरझेन रहे मुरझाय बिदेशके बासी ॥
छूटहिगी न छुटेबो करो कहु, कंठ परीहै सनेहकी फांसी ॥
मित प्रवीन भई सु भई अब, हेतहुकी न करो तुम हांसी ॥ १९ ॥

अर्थ. आंख्योमांथी आंसु झरावबां, (वरसाववां) ने उदासीथी उंडा, अने लांबा उसासा निसासा भरवा, आम थतां पण वात शु घुंचवाइ रहीछे, जे कांइ सुझती नथी, पण तेथीकरी आपना दर्शननो उमेदवार आ परदेशी मुसाफर मुंझाइ रह्योछे, ने जे आ स्नेहरूपी फांशी कंठमां पडेलीछे, ते छोडवाना गमे तेटला उपायो करशो तो पण छूटशे नहीं, तो हे? प्रिय मित्र प्रवीण, जे वात थनारी हती ते थइ हवे तमो हेतनी हांशी करो-मां. ॥ १९ ॥

॥ अथ अलंकार असंभव ॥ सवैया ॥

बात बिछोहनकी तुम जांनत, ऐसो सवाद यहें सियरा ॥
ओसर नीठ बन्यों न बिसारहु, बोत दिनाको लगो नियरा
आप बडे न बिचारतहो, मिलबेंकों हमें तलफें जियरा ॥
मित प्रवीन महेर न आवत, कैसें कठोर कियो हियरा २०

अर्थ. वियोगना दुःखनी वातने तो तमो जाणोछो के जेमां आवो शीतळ स्वाद रह्योछे, पण मांड मांड आवो अवसर बन्योछे तेने विसारी

भूकोमां, कां जे घणा दिवसनो स्नेह लागेलोछे, आप म्होटांछो, ते तो विचारतां नथी पण मळवा वास्ते अमारो जीवतो तलफेछे, हे? प्रिय मित्र प्रवीण, हजी सुधी मेहेरज आवती नथी, तो केम ह्रदय कठोर करी वेठांछो. ॥ २० ॥

॥ अथ अलंकार दृष्टांत ॥ सवैया ॥

राम गये बनबास इते पर, भाग गतीसें सती संग तागें ॥ संकट भाग भयो नल राय, इतें पर भ्रांति दमंतिय लागें ॥ पांडव भाग बेहाल किये जु, इतेपर कैयनकी गति जागें ॥ मिंत प्रवीन जु देश विदेशहुं भाग चलेंहें दुहू डग आगें ॥ २१ ॥

अर्थ. एकतो राम वनवास भोगववा गया, एटला उपर वळी भाग्यनी गतीथी हरण थयाने लीधे सती सीताए पण संग तजी दीधो, तेमज भाग्य जोगथी नळराजाने दुःख थयुं, एटला उपर वळी दमयंती विशे भांति उपजीआवी, तेमज भाग्यजोगे पांडवोने बे हाल कर्या, एटला उपर वळी पाछुं द्रौपदी वास्ते कैयाकीचक तरफनुं दुःख जाग्युं, माटे हे? प्रिय मित्र प्रवीण, देशमां किंवा परदेशमां पण भाग्य बे डगलां आगळनुं आगळ चालेछे. ॥ २१ ॥

अथ अलंकार विनोक्ति ॥ दोहा ॥

नीर तीर तलफत पर्यो, धीर न धरियत मीन ॥
निकट तऊ पलहें बिकट, परसे विनां प्रवीन ॥ २२ ॥

अर्थ. पाणीना कीनारा उपर पडेलुं माछलुं तलफेछे ने धीरज धरतुं नथी, पासे पड्युंछे तोपण हे? प्रिय मित्र प्रवीण, पाणीनो स्पर्श कर्या विनां ते पळ म्होटा विकट दुःख रूप थइ पडेछे. ॥ २२ ॥

ग्रीषम गिर लागे जरन, सरवर निकट पुलीन ॥
बूझेगो कैसें विपिन, परसे विनां प्रवीन ॥ २३ ॥

अर्थ. ग्रीष्म ऋतुना दिवसमां जंगल बळवा लाग्युं तेनीपासे घणो तळावनो कीनारो नजदीकछे, पण हे? प्रिय मित्र प्रवीण, तेना जळनो स्पर्श कर्या विनां बळतुं जंगल शी रीते ठरे? ॥ २३ ॥

निकट जडी मुहरा धरें, काम भुजंग डस कीन ॥
विष व्याप्यो उतरत नहीं, परसे विनां प्रवीन ॥२४॥

अर्थ. जेने काम रूपी सर्प दंश कर्योछे, तेनी पासे झेर उतारे एवी बुंटीओ तथा तेवाज मोहोरा राखेलाछे, पण हे? प्रिय मित्र प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विनां अंगमां व्यापी गयेलुं झेर उतरे नहीं. ॥ २४ ॥

भोजन लावे थार भर, कर पकवांन नवीन ॥
तऊ छुधा भाजत नहीं, परसे विनां प्रवीन ॥ २५ ॥

अर्थ. नवां जात जातनां पकवान बनावी थाळमां भरीने सुंदर भोजन पासे लावी मूक्युंछे, तोपण हे? प्रिय मित्र प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विनां अमथी एम कांइ भूख भांगे नहीं. ॥ २५ ॥

केसर चंदन कुमकुमा, भरे कटोरे तीन ॥
अंग रंग लागत नहीं, परसे विनां प्रवीन ॥ २६ ॥

अर्थ चंदन केसर अने कंकुना त्रण कटोरा भरीने पासे राखेलाछे, पण हे? प्रिय मित्र प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विनां अंगे रंग लागे नहीं.॥ २६

प्याले भर धरियत निकट, सुरा सरस अति कीन ॥
तऊ केफ आवत नहीं, परसे विनां प्रवीन ॥२७॥

अर्थ. अति सरस मदीरा (दारु) बनावी तेना प्याला भरीने पासे मूक्या राख्याछे तो पण हे? प्रिय सखी प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विनां अमस्तो केफ आवेज नहीं. ॥ २७ ॥

अंमृतको भाजन निकट, भर्यो धर्यो नहि पींन ॥
यों देखत अमर न भये, परसे विनां प्रवीन ॥ २८ ॥

अर्थ. अमृतनुं पात्र भरीने पासे मूकी राख्युंछे ने पीधुं नथी, तो हे! प्रिय सखी प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विनां अमस्तुं जोयाथी अमर थाय-ज नहीं. ॥ २८ ॥

गंगा जमुना सरसती, लहर त्रिवेनी लींन ॥
निकट गये पातक रहे, परसे विनां प्रवीन ॥ २९ ॥

अर्थ. गंगा, जमुनां, अने सरस्वति ए त्रण नदीओनी त्रिवेणी पांणी थी भरपूर लेहेरो नाखती प्रवाह रूपे चाली जायछे, पण हे! प्रिय सखी प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विनां एटले न्हाया विना खाली पासे जइ आव्याथी तो पाप रहीज जाय. ॥ २९ ॥

श्रीमंडल बीना मुरज, धरे सकल रस भींन ॥
मधुरे स्वर बाजत नहीं, परसे बिनां प्रवीन ॥ ३० ॥

अर्थ. श्री मंडळ, वीणा, मुरज विगेरे जात जातनां रंगीन वाजित्रो पासे मेली राख्यांछे, पण हे? प्रिय सखी प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विना मधुर अवाजथी वागेज नहीं. ३० ॥

लोह पुंज इतको धर्यो, इत पारसमनि दीन ॥
सो कंचन कैसें बने, परसे विनां प्रवीन ॥३१॥

अर्थ. एक तरफ लोढानो ढगलो करी राखेलोछे, ने एक तरफ पारस मणी मूकी राख्योछे पण, हे? प्रिय सखी प्रवीण, तेनो स्पर्श कर्या विना सोनुं केम थाय भला. ॥ ३१ ॥

॥ अथ अलंकार हंस न्योक्ती ॥ सवैया ॥

मोतिनकी सिकता जल शीतल, पंकज नील सिते पित

आरन ॥ कंचनकी तहलीर करी नवरंग जरी मनिबंध कीनारन ॥ झार अठारहु भार प्रफुल्लित, बात त्रभेद झ. कोरत डारन ॥ हंस छुधातुर आतुर डोलत, मिंत प्रवीन कहो किहि कारन ॥ ३२ ॥

अर्थ. चूगवाने वास्ते ज्यांहां मोतीनी वेळुछे, पीवाने सारु ज्यांहां शीतळ अने सुगंधी जळछे, ने खावाने वास्ते ज्यांहां पंकमांथी (गारामांथी) उपजेलां लीलां, धोळां, काळां, पीळां, ने रातां एवां जातजातनां कमळोछे, ने फरवासारु सोनानी पाळ करेलीछे नवा नवा रंग बेरंगी मणीओथी जडित्र जेना कीनारा. तेमज उतरवाना आरा बांधेलाछे, जेनी आस पास अढारभार वनस्पतिनां वृक्षो प्रफुल्लित थइ रह्यांछे, एटलुंज नहीं पण मंद, सुगंध अने शीतळ एवा त्रण प्रकारनो पवन झाडनी डाळीयोने झुलावो रह्योछे एवा मनने सुख उपजावनार स्थळमां जे हंस भूखथी आतुर थएलो भटकेछे, हे? प्रिय मित्र प्रवीण, ए शाकारणे ते कहो. ॥३२

॥ सोरठा ॥

सरवर मांन पुलींन, शीतल जल मुगता चुगन॥
कारन कहा प्रवीन, प्यास छुधा हंसा मरत ॥ ३३ ॥

अर्थ फरवा वास्ते सुंदर मानसरोवरनो किनारोछे, पीवासारु शीतळ पाणीछे, ने चूगवाने वास्ते तो मूगताफळछे, तोपण हे? प्रिय सखी प्रवीण हंस भूख तथा तरशथी मरेछे तेनुं शुं कारण? ॥ ३३ ॥

डसे बिरह अहि शांम रोंम रोंम लागी लहर ॥
धरियत होय अरांम, मोहरे अधर प्रवीन मुख ॥ ३४ ॥

अर्थ. विरहरूपी काळो नाग करडेलोछे जेना झेरनी लेहेर रूवांडे रूवांडे लागी गइछे, माटे मोढामां जो प्रिय सखी प्रवीणना मुखनां नीचला होठ रूप अमृतमय मोहोरो धरे तो आराम थाय. ॥ ३४ ॥

हे मन भयो विहाल, विन मिलयत परवीनजू ॥
जिय विरहानल जाल, बूझेगी देखे वदन ॥ ३५ ॥

अर्थ. प्रिय मित्र प्रवीणने मळ्याविना आ मन वे हाल थइ गयुंछे, ने हृदयमां तो विरहाग्नीनी झाळो सळगी उठीछे ते ज्यारे प्रवीणनुं मुख जोशुं त्यारे ठरशे. ॥ ३५ ॥

वीच दरीचन धाय, गोख झरोखनमें अटा ॥
बदन न देख्यो जाय, हेर हेर हारे नयन ॥ ३६ ॥

अर्थ. आगळ एकवार तो ज्यारे झरुखा उपर चढी आवी गोखमां आडो चक नाखी बीराज्यां हतां, त्यारे जरा म्होढुं जोयुं पण बीजी वारतो झरुखा, बंगला ने मेडीओनी घटा वच्चे आडी आवीजवाथी आंखो जोइ जोइने हारी गइ. तोपण मुख देखायुं नहीं. ॥ ३६ ॥

॥ गूढोक्ति ॥

तीजो कीजे चिंत, रस गिनती परवीन करि ॥
मिलन विचारहु मिंत, दूजो व्हैहे प्रेमको ॥ ३७ ॥

अर्थ. हे? प्राण सखो प्रवीण, जेटला रसछे तेनी गणतरी करीने ते माहेलो त्रीजो रस चित्तमां धरी मळवानुं विचारो, नहीं तो हे? मित्र, प्रेमने ठेकाणे बीजो रस पेदा थशे, अर्थात् मळवा साफ मनमां करुणा धरो, नहीं तो प्रेमनो हास्यरस थशे, एटले प्रेमनी मश्करी थशे. ॥ ३७ ॥

कीनी कुसुम विदाय, एती लिख पाती दई ॥
सो प्रवीन प्रति जाय, मौन ग्रही मनमें मुदित ॥ ३८ ॥

अर्थ. एवी रीते पत्र लखी आपीने कुसुमावळीने विदाय करी, एटले मनमां हर्ष पामेली ते कुसुमावळी प्रवीणनी पासे आवी मौन ग्रहण करीने उभी रही. ॥ ३८ ॥

॥ अथ गाहा ॥

सागर गमन विदेशं, बर्नन तबीब रूप बरनावं ॥
पठवन पत्र प्रवीनं, त्रीश प्रवीन सागरो लहरं ॥ ३९॥

अर्थ. सागर परदेशनी मुसाफरीए गया ने फीरंगीनो वेष लेई डाक्तर बनीने कुसुमावळी मारफते पत्र पहोचाड्यो. तेना वर्णन संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी त्रीशमी लेहेर पुर्णथई. ॥ ३९ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे सागर विदेश गमन प्रवीन पत्र पठवन भेदो नाम त्रिंशतिमो लहरं ॥ ३० ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां त्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद छप्पय ॥

चरचा कुसुम प्रवीण, बेहु परस्पर करशे ॥
जेथी कुसुम वधाइ, पत्र ले समीप धरशे ॥
वांच्याथी तन विरह, थता त्यां फीरंग आवी ॥
निरणय नाडि समेत, भेद वैदक समझावी ॥
वधतां व्याधि विषाद अति, वैद्य जशे दरबारमां ॥
केशे ते वृत्तांत आ, लेर एकत्रिश सारमां ॥

अथ कलाप्रवीन कुसुमावलि चर्चा प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

नेंन भोंह मुसकित वदन, अल्लनि बैठी आय ॥
वदन वधाइके लिये, अति मनमें अकुलाय ॥ १ ॥

अर्थ. मनमां आनंदथी मगन थएली कुसुमावळी आंख्यो अने भ्रुकुटी मरकावयाना मनथी हर्षनां चिन्ह जणावती हस्ते म्होढे आवीने

कळाप्रवीणनी पासे वेसी गइ, वेठी तो खरी पण आ एक सुखदायक वधामणी केहेवानी आतुरताथी मनमां अति अकळावा लागी. ॥ १ ॥

पर इकंत ओसर नहीं, भटू भीर चहुं ओर ॥
कुमरीं चित चंचल परखि, कही चिंत किहि ठोर ॥२ ॥

अर्थ. पण शुं करे जे चारे तरफ सखी साहेलीओनी भीड भराइ जवाथी एकांतनो समय मळतो नथी, परंतु कुसुमावळीना चेहेरा उपरथी ज राजकुंवरी कळाप्रवीणे तेना मननी चंचळता जाणी लीधी, ने कह्युं के हे! कुसुमावळी आ वखते तमारुं चित्त कये ठेकाणेछे! ॥ २ ॥

॥ चोपाई ॥

आज कहा ओरसी लषावें ॥ कछु प्रतीत जाननें न पावें ॥
मंद मुसाकि ब्रह्मनी कहाया ॥ एकें नजर तमासा आया ॥
कुमरी कहे कोंनसा तमासा ॥ जासें अति आवतहें हांसा॥
विप्रनि कहे विलात रहाये ॥ सोय फिरंग सहरमें आये ॥
उनकी लखी ओर पोसाखा ॥ हांसी होय सुनत उन भाषा॥
एती कही ओर नहिं खोलें॥ख्याल रमूज पुसी फिर बोलें॥
बीतत अहर निशा दरसाई ॥ सब सहियां निज भवन सिधाइ ॥ कलाप्रवीन इकंत जु कीनी ॥ ब्रह्मनि वेंद वधाई दीनी ॥ ३ ॥

अर्थ. प्रवीणे कह्युं के हे? कुसुमावळी, आज कांइक जूदीज रीतना हर्षमां देखावछो, पण तेनुं कारण कांइ जाण्वामां आवतुं नथी, त्यारे ब्राह्मण कन्याए जरा हसीने कह्युं के आज एक आश्चर्य उपजावनार मोटो तमासो नजरे जोवामां आव्योछे, त्यारे राजकुंवरीए पुछ्युं के एवो कयो तमासो जोयो के जेथी हांसु उपजेछे, त्यारे कुसुमावळीए कह्युं के विला

वतना रहेवाशी जे फिरंगीछे, ते फिरंगी आपणा शेहेरमां आवेलाछे, तेनो आ आपणी दुनीयानी रीतथी जूदोज पोषाकजोयाथी ने तेवीज तेनी अजाएब भाषा सांभळवाथी हांसु उपजेछे, एटलुं कही बीजो भेद प्रगट न कर्यो, ते पछी खुशीनी साथे रमुजी ख्यालनी वातो करवा लागी, दिवस विति गयो ने रात्री थइ एटले सघळी साहेलीओ पोत पोताने घेर गइ, त्यारपछी कळाप्रवीणनी साथे एकांत करती वखते ब्रह्मपुत्रि कुसुमावळीए वैद्य संबंधी वधामणी दीधी. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

कुमरि वधाई बैद सुनि, हरषित चिंत अपार ॥
करि विनती ब्रह्मनि बहुरि, पाती दई निकार ॥४॥

अर्थ. वैद्य आववानी वधामणी सांभळीने राजकुवरी पोताना चित्तमां अती हर्षपामी, एटले समजुतीनी साथे विनंती करीने कुसुमावळीए वैद्यनो पत्र काढी आप्यो. ॥ ४ ॥

ओर दोर मनको भयो, पाती बंच प्रबीन ॥
तन गहनो पोपाक जुत, ब्रह्मनि बकसन कीन ॥५॥

अर्थ. ते पत्र वांचवाथी प्रवीणना मननो जूदोज वेग थइ गयो, एटलुंज नहीं पण पोताना शरीरनुं घरेणुं उतारी पोपाक समेत कुसुमावळीने लइ अर्पण कर्युं. ॥ ५ ॥

निस नितव्रत आराध कर, चरचा लगी फिरंग ॥
रहे रूप बरनन करत, निशिं बीती यहि रंग ॥ ६ ॥

अर्थ. पछी ते रात्रीए हमेशांना नियम प्रमाणे पोताना नित्यनुं आराधन कर्या बाद फीरंगी संबंधी चरचा चालवा लागी, ते फीरंगीनुं रूप वर्णन करतां रंगमांज रात वीती गइ. ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

प्रगटन लगो प्रभात, लाल रेख अंबर लगी ॥
शशि आभा न सुहात, छिन छिन तन दुति तारिका॥७॥

अर्थ. सवार थवा लाग्युं एटले सूर्यना लाल कीरणनी रेखाओ आकाशना मेदानमां पसरवा लागी, जेथी चंद्रनुं तेज शोभतुं नथी ने क्षणे क्षणे आकाशना ताराओनी कांति झांखी पडती जायछे. ॥ ७ ॥

॥ अथ प्रभात बर्ननं ॥ चोपाई ॥

मंद मंद आभा दरसाये, तरनि तेज तारिका घटाये ॥ बांनि ब्रुच्छ चिरियांन उचारी॥ अंबर महि उलटी उजियारी ॥ बाग बाग प्रति बन सु विकासे ॥ सर सर कमल पुंज परकासे ॥ चकवा दंपति मिंत मिलानें॥ दीप मंद मंदह दरसानें ॥ चिंत विछोह चकोरा दग्गे ॥ कुंज भृंग गुंजारव लग्गे ॥ निशिचर निज मनमें मुरझाये ॥ दिनचर चित अनंत सुख पाये ॥ ठोर ठोर रवि बिंब प्रसारी॥ आशा दुति आरुनी निहारी ॥ चरचा चलत बखत यह आया ॥ बाला विरह अंग प्रगटाया ॥ मता मिंत मिलबेका ठांना ॥ किय प्रवीन दरदीका बाँना ॥ ८ ॥

अर्थ. धीरे धीरे चंद्रनी कांति झांखी देखावा लागी, सूर्यना तेजथी ताराओनुं तेज घटवा लाग्युं, वृक्षोमांथी चरकलीओ उठीने बोलवा लागी, आकाशमां उलटेलुं अजवाळुं पसरी गयुं, बाग, बगीचा अने वन प्रफुल्लित थयां, तळावे तळावे कमळनां जुथ खीली आव्यां, ने चकवा चकवीनां जोडलां पोताना मीत्र सूर्यने मळी आनंद पाम्यां, दिवा झांखा देखाया, चकोर पक्षीना चित्तमां चंद्रमाना विजोगनुं दुःख जागृ

थयुं. झाडनी घटाओमांथी तेमज लतामंडपमांथी भमराना गुंजारव थवा लाग्या, रात्रीमां फरनारां प्राणियो पोताना मनमां मुंझाइने गुप्त थयां, तेमज दिवसमां फरनारां प्राणीओ मनमां अति सुख पामीने फरवा लाग्या ठेकाणे ठेकाणे सूर्यनुं अजवाळुं पसरी गयुं जेथी दिशाओनी लाल कांति थइ गइ, चर्चा चालतां चालतां आवो प्रभातनो समय आव्यो एटले कळाप्रवीणे पोताना अंगमां विरह प्रगटावी दीधो ने मीत्रने मळवानो निश्चय करीने प्रवीणे दरदीनुं बानुं कर्युं. ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

मिंत मिलन उरधार ॥ दरदी कीन प्रवीनजू ॥
कीनी कुसुम पुकार ॥ आसपास ओरें नहीं ॥ ९ ॥

अर्थ. मीत्रने मळवानुं मनमां धारीने कळाप्रवीण दरद मंद थइ गया एटलुंज नहीं पण दरदना जोरथी मुर्छा खाइने पडी गया, त्यारे आसपास बीजुं कोइ न हतुं ने आकस्मात आवो बनाव बन्यो तेथी कुसुमावळीए एकाएक पोकार कर्यो. ॥ ९ ॥

॥ अथ कलाप्रवीन दर्ददशा वर्ननं ॥ छंद पद्धरी ॥

बेहोस होत रायां कुमार ॥ कुसुमावली सु कीनी पुकार ॥ आये मिले सु जन्नान लोग ॥ कोऊ निदान पावे न रोग ॥ महराज आप देखनें आय ॥ निज वैद मान करिकें बुलाय ॥ मिलि राज वैद परखे चरित्र ॥ बाला सरूप देखे विचित्र ॥ निसकों निहार दरदी न पाय ॥ आपके जांन ओषध खवाय ॥ ज्यों ज्यों करंत ओषध उपाय ॥ त्यों त्यों विसेप व्याधी जनाय ॥ हारे सु वैद लग्गी न कार ॥ बाला करंत तलफन अपार ॥ महराज विप्र

आयसा दीन ॥ जप जाप होम आराध कीन ॥ लहे केउ नीम दीने सुदांन ॥ भइ सांझ तोउ बोले न वांन ॥ १० ॥

अर्थ. ए प्रमाणे राजकुंवरी बेहोश थतां कुसुमावळीए पोकार कर्यो, एटले जनानखानानां सघळां लोको आवी मळयां, परंतु कोइ रोगना कारणने जाणी शकतुं नथी, ने दरद वधतुं जायछे, एवी वात सांभळीने महाराजा नीतिपाळ पोते कुंवरीने जोवा सारु आव्या, ने पोतानी राजधानीना नामांकित वैद्योने बोलाव्या, राजवैद्यो मळीने रोगनी परिक्षा करवा लाग्या, त्यां तो बाळरूप प्रवीणनुं तरेहवार रूप जोयुं पछी नाडी जोइने रोगना कारणनें ओळखी शक्यां नहीं, एटले पोताना जाणीता औषध खवरावबा लाग्या. जेम जेम औषध तथा उपायो करेछे, तेम तेम रोग विशेष जणायछे, वैद्यो ओषड करीने हारी गया, पण कांइ कारी लागी नहीं, राजकन्यातो व्याधिथी तडफडया करेछे, आवुं दुःख जोइने महाराजा नीतिपाळे ब्राह्मणोने आज्ञा आपीने जप, जाप, होम, पूजा विगेरे देवताओनुं आराधन कराव्युं, ने पोते सभामां आव्या, केटलीक बाधाओ लीधी, केटलांक दांन आप्यां, ने सांझ थइ गइ तोपण राजकन्या मुखथी वचन बोलतां नथी. ॥ १० ॥

अथ अलंकार बिनोक्ति ॥ सवैया ॥

हें न निसांन निसांनन जाहर, बैद कहा परखे बपुरे ॥
लोग अजांन निदांन निहारत, दांन बिधांन बिथा न हरे ॥
मंत्र न जंत्र न तंत्र न भेद, कितेइ करंत कछू न टरे ॥ सागर
मिंत मिलें न तबें लगि, कोनहु आय सहाय करे ॥ ११ ॥

अर्थ. प्रसिद्ध नाडी चालेछे, पण जेने साध्य नथी तेने बापडा वैद शुं परखी शके? अरे! अजाण लोको रोगनुं निदान जोया करेछे, पण जाणतां नथी, के दान, पुन्य, जप, पूजा विधि ए कोइ आ पीडाने हरे नहीं,

मंत्र, जंत्र, ने तंत्रना भेद विगेरे केटलाएक उपायो करवाथी जरापण न मटे! ज्यां सुधी प्रिय मीत्र सागर मळे नहीं त्यांहां सुधी कोण आवीने सहाय करे! ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

सांझ भई एसें दरद, कोउ निदांन न पाय ॥
कोटिहु कियें इलाजपें, समें न आंन उपाय ॥ १२ ॥

अर्थ. आवा दरदमांने दरदमांज सांज पडी गइ, तो पण कोइ दरदना कारणने जाणी शक्युं नहीं, तेम करोडो उपाओ कीधा, तो पण आ पीडा बीजा कोइ उपायथी शमती नथी. ॥ १२ ॥

बानी मंद प्रवीन सो, कुसुमहि दियो सुनाय ॥
लोग सबें करुना लगे, मन महीप मुरझाय ॥ १३ ॥

अर्थ. सघळां लोको करुणामां मगन थइ शोक करवा लाग्या, महाराजा पण मनमां मुंझावा लाग्या, ते समये कळाप्रवीणे धीमे धीमे बोलीने कुसुमावळीने आ प्रमाणे संभळाव्युं. ॥ १३ ॥

॥ अथ विभावना अलंकार ॥ कलाप्रबीनोक्त ॥ सवैया ॥

काहेकों चंदन अंग लगावत, काहेकों नीर गुलाबको डारो ॥ काहेकों फूलन हार धरावत, काहेकों ले घनसार बिगारो, काहेकों सीत बयार बिजोनत, ए न बिथा उपचार हमारो ॥ जंगम जोगी जती दुज बूझहु हे कोउ मिंत मिलावन हारो ॥ १४ ॥

अर्थ. शा सारु अंगे चंदन लगाडोछो! ने शा वास्ते गुलाबजळ छांटोछो! अरे! शुं करवा फूलना हार पेहेरावोछो! खाली शा सारु लैने कपूर बगाडोछो? शा कारणे वींझणा फेरवीने टंडा पवन नाखोछो! अरे!

मारा दरदनी पीडा मटाडवाना आ उपचार नहीं तो, जंगम, जोगी, जती, ब्राह्मण विगेरेने पूछी आवो जे कोइ मीत्रने मेळवनारछे! ॥ १४ ॥

अथ विभावना अलंकार ॥ कला प्रवीन व्याधि दशा वर्नन

॥ कवित्त ॥

लाय लाय चंदन गुलाब चरचाय आली, अंग अंग ला
गत अनेक भांत लाय लाय ॥ जाय जाय निसन निहार
त निदांन जांन, जांनहू न परे बिथा प्रांन भयो जाय जाय॥
पाय पाय हारे पथ गुरुजन घेर घेर, पाय घरी धीर धरे
ऐसो न उपाय पाय ॥ हाय हाय हेतूजन करत निराश
भरे, आश भरे सागर ब्रहेंनि मुख हाय हाय ॥ १५ ॥

अर्थ. सखीओ चंदन अने गुलावजळ लावी लावीने जेम जेम चर्चेछे, ने छांटेछे तेम तेम अंगमां रुंवाडे रुंवाडे अनेक प्रकारनी लाइ सळगी उठेछे, ने रोगनुं निदान जाणवा सारु जेम जेम वैद्यो जै जैने नाडि जुवेछे, तेम तेम तेओने पीडानुं कारण तो जाणवामां आवतुं नथी, पण आहींतो प्राण गयां के जाशे एम थइ रह्यांछे, घेर घेर म्होटां लोको आराम करनार उपचारोनी वाट जोइने हारी गयां, परंतु घडी के पळमात्र शांति थाय अथवा धीरज धरे एवो उपाय मेळवी शक्या नहीं तेथी नीराश थएलां स्नेही जनो हाय हाय करेछे, ने आशा भरेला रससागर वियोगनी पीडाथी हाय हाय करेछे. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

कुमरि बात सुनियत कुसुम, सहियन दई सुनाय ॥
हमें ब्रह्म कैसें कहें, बैद बिलाती आय ॥ १६ ॥

अर्थ. राजकुंवरीनी वात सांभळतांज कुसुमावळीए विवेकथी सखी

ओने संभळावीने कह्युं जे अमे ब्राह्मण अने आ राजद्वार माटे केम कहीए पण विलायति वैद्य आपणा शेहेरमां आवेलाछे. ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

सोई सुनी जनांन, सहियन प्रति चरचा चलत ॥
कहि पठ्यो फुरमांन, बैंद बुलावन राय प्रत ॥ १७ ॥

अर्थ. सखीओमां आ वातनी चरचा चालवाथी, जनानखानानी राणीओए सांभळी एटले तेओए विलायती वैद्यने बोलावी लाववा संबंधी विनंती नीतिपाळनी हजुरमां केहेवरावी. ॥ १७ ॥

सुनत राय सब बात, हित दुहिता आतुर हुवे ॥
आयस दई अमात, बैंद बिलाती लाउ इत ॥ १८ ॥

अर्थ. आ सघळी वात सांभळी महाराजा पोतानी कुंवरीनुं दुःख जोइने आतुर थइ गया, माटे विलायती वैद्यने आंहीं बोलावी लावो एवी आज्ञा कामदारने आपी. ॥ १८ ॥

॥ छप्पय ॥

आयस पाय अमात, बैंद थांनक प्रति आये ॥
बरनी बात जनाय, कही महराज बुलाये ॥
तब यह कह्यो तबीब, दरद देखतें मिटावें ॥
पें व्हें बे मरजाद, राज द्वारमें न आवें ॥
बहु दूर बिलातहुंमें बसें, सहल देश निरखें सबें ॥
निस बिना व्याध जानन परे, क्यों निदांन कीजें तबें ॥ १९

अर्थ. महाराजा नीतिपाळनी आज्ञा सांभळीने कामदार वैद्यने उतारे आव्या, त्यांहां सघळी वात विस्तारनी साथे जणावीने कह्युं जे आपने महाराजा बोलावेछे त्यारे वैदे एम कह्युं के दरद तो नजरे जोतांज म-

टाडी दइए, पण त्यांहां ओझलने लीधे वेमर्याद थाय वास्ते राजद्वारमां तो न आवीए, वळी अमे अति दूर विलायतना रेहेवाशी छइए, ने फक्त नवा नवा देश जोवा नीकळ्या छीए, वास्ते सेहेलानीनी साथे सर्वे देश जोइए छीए, कांइ बीजुं प्रयोजन नथी, तोपण हे? कामदार, नाडी जोया विना रोग जाणवामां आवे नहीं, त्यारे पछी शुं ओषड करीए! १९

॥ अथ छंद मौक्तिक दाम ॥

अमायत कीन अती मनुंहार ॥ चले उठि वैद सुराज दुहार ॥ गये जहँ राजतहे महराज ॥ कियो सनमांन उचं करताज ॥ समीपसु बैठहि वैद अमात ॥ तबें महराज सु बूझिय बात ॥ कहो नव नारिन नाम सु कोंन ॥ पितं कफ वात गती कह भोंन ॥ किती गति होत त्रिदोष विचार ॥ इती विधि वैद कहो बिसतार ॥ २० ॥

अर्थ. एवां डाक्तरनां वचन सांभळी कामदारे विवेकथी समजावीने अती सत्कार कर्यो, एटले वैद्य उठी कामदारनी साथेज राजद्वार तरफ चाल्या, ते ज्यांहां महाराजा नीतिपाळ विराजेछे त्यांहां गया, ने सलाम करीने उभा रह्या, एटले महाराजाए हाथ उंचो करी सलाम लइने सत्कार कर्यो, पछी राजानी पासे वैद्य अने कामदार बेठा त्यारे महाराजाए वैद्यने आ प्रमाणे वात पूछी के हे? वैद्य नवेनाडीओनां शुं नामछे ते कहो! तेमज वात, पित्त, अने कफनी गती तथा तेना भुवनने (घरने) विस्तारीने कहो? केटली अने केवी केवी गतिमां त्रिदोष उपजानो विचार थायछे, हे? वैद्य, एटलां प्रश्नोनो विधि पुर्वक विस्तार कहो! ॥ २० ॥

॥ अथ नव नाडी परिक्षा ॥ वैद्योक्त ॥ गाहा ॥

सुनि छिति पाल सु बयनं ॥ तब तबीब दीन प्रति उत्तर ॥

वैद्क विधि सु अनंतं ॥ बरनहुं भेद आप जो बुझिय॥२१

अर्थ. त्यारे महाराजा नीतिपाळनां वचन सांभळीने वैद्ये उत्तर आप्यो के हे? पृथ्वीनाथ, वैदक शास्त्रनी तो अपार गतिछे, पण आपे जे भेद पूछ्यो तेनुं वर्णन करुंछुं. ॥ २१ ॥

अथ नव नाडी नाम भेद ॥ गाहा ॥

स्नायू हिंसा धमनी ॥ धारनि धरा तंतुकी जांनहु ॥
वायुकि स्थिरा विचारहु ॥ जीवज्ञा सु नाडि नव एही ॥२२॥

अर्थ. स्नायु, हिंसा, धमनी, धारिणी, धरा, तंतुकी, वायुकी, स्थिरा, अने जिवज्ञा ए प्रमाणे नवनाडीओनां नामछे. ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

पांनि मूल अंगुष्ठके, बहत त्रिधांम सु नार ॥
आदि अंत पित बातहे ॥ मध्य सु कफ निरधार॥२३॥

अर्थ. हाथना अंगुठाने मूळे त्रणे घरमां हमेशां नाडी चाल्या करेछे, तेमां आदि एटले पेहेला घरमां चालती होय त्यारे पित्त, अने अंत एटले छेला घरमां चालती होय त्यारे वायु अने मध्यम एटले वच्चेनां घरमां चालती होय त्यारे कफ एम समजवुं. ॥ २३ ॥

॥ सोरठा ॥

पहें त्रिदोप विधांन, बहत चत्र गति भेद यह ॥
इन आदांन निदांन, कर चिकत्स भेपज करहु ॥२४॥

अर्थ. हवे आ प्रमाणे त्रिदोपनी विधिछे, के जे आ नाडी त्रण प्रकारनी गतिना भेदथी चालेछे, ते ज्यारे चोथी गतिना भेदथी आदि मध्य अने अंत ए त्रणे घरमां चालवा लागे त्यारे त्रिदोप उत्पन्न थायछे, एवी रीते नाडी वेहवाथी आदान एटले रोगनुं पूर्व रूप, निदान एटले

मूळ कारण अने चिकित्सा एटले रोग मटाडवाना उपचारो करीने वैदुं करीएछीए. ॥ २४ ॥

॥अथ नाडी गति भेद ॥ सवैया॥

बायस भेक कुलिंग गती पित, थांनक आद उनें निरधारें॥ मोर मराल कपोत कहे कफ, मध्य निवास वनाय विचारें ॥ नाग जलो गति होय जवें तव, मारुत भापत अंत अगारें ॥ तीतर लाव बटेर वहे गति, तीनहुं ठोर त्रिदोप निहारें ॥ २५ ॥

अर्थ. नाडी ज्यारे कागडो, देडको अने कुलिंग पक्षी एओना जेवी गतिथी वेहेती होय त्यारे पित्तनी उत्पत्तिछे ने नाडी आदि एटले पेहेला घरमां चालेछे, एम समजवुं, तेमज मोर, हंस अने कपोतना जेवी गतिथी वेहेती होय त्यारे कफनी उत्पात्तिछे, ने नाडी मध्य एटले वच्चेना घरमां चालेछे एम समजवुं, तेमज नाडीनी सर्प तथा जळोना जेवी गति थाय त्यारे वायुनी उत्पत्तिछे अने अंत्य एटले छेला घरमां चालेछे, एम म्होटा वैद्यो कहेछे, ने ज्यारे तेतर, लाव, अने बटेर पक्षीना जेवी गतिथी त्रणे घरमां वहे त्यारे त्रिदोप उपज्यो एवी रीते जुवेछे. ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

चपला पित्त सु मंद कफ, वात वक्र गति होय ॥
ओर ठोर गति ओर ग्रहि, कहें त्रिदोपी सोय ॥२६॥

अर्थ. पित्त विकारनी नाडि चपळ गतिथी चाले, ने कफनी धीमी गतिथी चाले, तेमज वायुनी वांकी गतिथी वहे अने बीजा त्रणे घरमां जूदी जूदी गतिथी चाले त्यारे ते त्रिदोपीछे एम समजवुं.॥ २६ ॥

नाडी भेद तवीवलें, भापे भिन्न सु भांन ॥

नीतपाल मन व्हैं मुदित, अंदर आयस दीन ॥२७॥

अर्थ. आवी रीते फिरंगी वैद्ये लैने नाडीना जूदा जूदा भेदो युक्ति पुर्वक कह्या, तेथी महाराजा नीतिपाळ मनमां आनंद पाम्या ने वैद्यने जनानखानामां जवानो हुकम आप्यो. ॥ २७ ॥

॥ अथ छंद हनुंफाल ॥

आमात उठि वैदांन ॥ नृप द्वार कीन पयाँन ॥ देहुरी लंघित सात ॥ पुनि किंकरी पहिरात ॥ बैठाय बैद दुहार ॥ इक गई अंदर नार ॥ नृप नार बुझ्झिय जाय ॥ इत फिरंग आयस पाय ॥ उन कही आवे दोय ॥ तीसरो संग न कोय ॥ उन बैद भंखी जाय ॥ जन दोउ अंदर आय ॥ कीनो सु बैद पयांन ॥ सुकवी ग्रह्यो सामाँन ॥ फिर लंघि देहुरि तीन ॥ परवेस अंदर कीन ॥ किंकरी सामीं आय ॥ ले चली सौध बुलाय ॥ २८ ॥

अर्थ. कामदार तथा वैद्य एओए सभामांथी उठीने राजद्वार तरफ प्रयाण कर्युं, तेओ सात दोढीओ उलंघीने ज्यांहां लडायक पोषाक पेहेरनारी कांकरीओ एटले उडदाबेगीओ पहेरो करेछे, ते दरवाजा सुधी आवी पहोंच्या, एटले तेओने त्यांहां दरवाजे बेसारीने एओमांथी एक दासी अंदर गइ, तेणे जैने महाराजा नीतिपाळनी पटराणीने कह्युं जे फिरंगी वैद्य आंहीं आववानी आज्ञा मागेछे, त्यारे तेणे फरमाव्युं जे बे जण आवे बिजा कोइने साथे न लावे, राणीसाहेबनी आज्ञा प्रमाणे दासीए जइ वैद्यने कह्युं के बेजण अंदर आवो, एवां कांकरीना वचन सांभळीने वैद्य बनेला महाराजाए अति आनंदथी प्रयाण कर्युं, तेनी साथे औषध विगेरे सामग्री लइने सुकवी सधाव्या, तेओए पाछी त्रण दोढीओ

उलंघीने अंदर प्रवेश कर्यो, त्यांहां तो मेहेलमांथी एक दासी सामे आवी, ते महोटा माननी साथे बोलावीने राज मेहेलमां लेइ चाली. ॥ २८

॥ गाहा ॥

व्याधि सु कलाप्रवीनं, नाडी भेद वैद प्रविशन विधि ॥
एकात्रिंश अभिधानं, पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २९ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणने विरह व्याधी उपजवाथी फिरंगी वैद्यनुं आगमन, ने महाराजा नीतिपाळे पूछेला पृष्नोना जवाबमां वैद्ये कहेलो नाडी भेद, तेमज राजानी आज्ञाथी वैद्य राजमेहेलमां गया, ते संबंधी प्रवीणसागरनी एकत्रीशमी लेहेर संपूर्ण थइ.

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे प्रवीन व्याधि नाडि परिक्षा भेदो नाम एकात्रिंशतिमो लहरं ॥ ३१ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां एकात्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३२ ॥

॥ चोपाई ॥

करतां चेष्टा भूप कुमारी, करशे वैद्य चिकित्सा सारी ॥
करि आराम सागर घर जाशे, एह लेहेर बत्रीशें गाशे ॥

अथ कला प्रवीन वैद चिकित्सा प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

वैद सु अंदर जाय, निरखित राज दुहार छबि ॥
सो सुरपुर समुदाय, कैलासक वैकुंठ विधि ॥ १

अर्थ. वैद्ये अंदर जइने राजमेहेलनी शोभा जोइ, त्यांहां तो एवी शोभा जोवामां आवी के जाणे आ इंद्रनुं स्वर्ग, कैलास किंवा वैकुंठ पुरीछे. १

आय सु चेरी संग, जहाँ ब्रंद बैठे बधू ॥
उत लें नाम फिरंग, कुसुम सुनाई कुमरि प्रति॥ २ ॥

अर्थ. आवी रीते शोभा जोता जोता वैद्य, सुघड दासीनी साथे ज्यांहां स्त्रीयोनां वृंद बेठेलांछे त्यांहां आव्या, एटले कुसुमावळीए फिरंगीनुं नाम लेइने राजकुंवरीने समजावी दीधी. ॥ २ ॥

॥ अथ छंद मनिमाल ॥

आये इत वैद अवाज कहें ॥ वाला बिखरे तन साज चहें॥ व्रह्मी रुप नैंन उघार लखी ॥ नैंनांमहि ब्रह्मसुता पर खी ॥ अंका भरि सेज बिठाय दही ॥ एते कछु साज समार लही ॥ सिंगार खसे सु सजे न सजे ॥ वैदांन समीप सु आय रजे ॥ बैठी उत राज तरून सभा ॥ देखंत तबी च कुमारि प्रभा ॥ झीनें पटमें छवि कामनिकी ॥ मानों दरसे दुति दामनिकी ॥ टूटी लर मोतिय शीश झरे ॥ मानो पयकी घन धार धरे ॥ छूटी लट सो उर आय रही ॥ मानों हर नागनि चक्र लही ॥ ज्यों ज्यों बेंदी छबि भोंह चढें ॥ त्यों त्यों उपमा सु अनेक वढें ॥ ऐसें सिगरेइ सिंगार खसे ॥ मानो ललना रति अंत लसें ॥ शोभा लखिकें मन रीझि रहें ॥ देखें कर लाउ तबीब कहें ॥ दीनो कर वैद नसा परखें ॥ टेढी करि भ्रोंह त्रिया निरखें ॥ एकें इक दीठ मिलंत जबें ॥ लीनो वधु सात्विक भाव तबें ॥ चंदा मुख बिंब चढी अरुनी ॥ लाली गुल नैंन भरी वरुनी॥ रानी उलटी कर कंप लहें ॥ भूलो शुध वैंद बिलोक रहें॥

ब्रह्मी कहि बैद सह्मारि दशा ॥ कीजें उपचार निदांन नशा ॥ बैदांन इतेमहि जांन लहि ॥ चेरे करसें निज थेलि ग्र ही ॥ सीसा मदका सु निकास लिया ॥ नोरंग चुआ उन नाम किया ॥ प्याला भर एक सु आप पिया ॥ दूजा भरि राज कुमारि दिया ॥ नासा स्वर खेंचत सीवि करें ॥ वेदा मिस बैंदन चिंत हरें ॥ बीरी कहि चूरन पांन दही ॥ एते महि बाल सह्मार लही ॥ ३ ॥

अर्थ. आंही वैद्य आव्या, एवो शद्व कह्योके तरत बाळारूप प्रवीण वीखराई गयेला शृंगारने अंगमां समो करी सजवाने चाहावा लागी, एट ले आंख्यो उघाडीने ब्रह्मपुत्री कुसुमावळीने जोइने इसारो कर्यो, त्यारे आं ख्यों उघाडतांवेंतज तेना नेत्रनो मरम ब्रह्मकुमारी कुसुमावळी परखी गई, एटलुंज नहीं पण झडपथी राजकंन्याने खोळामां लेई तकीयानुं ओठींगण आपीने पलंगपर बेसारी दीधां, एटली वारमां तो केटलोक साज समारी लीधो. बीजो खशी गयेलो केटलोक शृंगार कांई सज्यो कांइ न सज्यो ए- वीरीते वैद्यनी सामे आवीने रजु थयां, ज्यांहां राणीयोनी सभा बेठीछे त्यां- हा वैद्यराज कुंवरी कळाप्रवीणनी कांति जोयछे, त्यांहांतो झीणां त्रासां- क वस्त्रमां कामनी कळाप्रवीणनी छवी एवी शोभेछे के जाणे आकाश- मां वीजळी चमकती होयनै? मस्तक उपरथी त्रुटेल मोतीनी लरोनां मोती झरेछे, तेजाणे मेघ दूधनी धारथी वरसतो होयनै! केशमांथी छुटी गयेली एक लट स्तन उपर आवी रहीछे, तेजाणे महादेवे काळी नागणीनुं चक्र (घुंचळुं)धर्युं होयनै! जेम जेम जडित्र बिंदुलीनी छवि धनुषाकार भ्रकुटी उपर तेजथी चडती जायछे, तेम तेम अनेक प्रकारनी उपमा बधती जायछे, एवीरीते सघळा शृंगार खसी गयाछे, तेथी ललनारूप प्रवीण एवी लागेछे के जाणे, कामराजनी स्त्री रती होय, अथवा रतिकोटाना

विलासमां मग्न थई होयनै!

एवी अदभूत शोभा जोईने वैद्यतो पोताना मनमां सानंदाश्चर्य पामी रह्या, पछी वैद्ये कह्युं के हाथ लावो एटले नाडी जोइए? एवुं सांभळीने हाथ आप्यो एटले वैद्य तो नाडीनी परिक्षा करेछे, अने कळाप्रवीण तो टेढ़ेडी भ्रकुटी करीने वैद्यनुंरूप जोया करेछे, ज्यारे एक बीजानी परस्पर आंख्यो अने नजर मळी गई, त्यारे स्त्रीए सात्विक भाव ग्रहण कर्यो के तुरत चंद्र सरखा मुखबिंब उपर लाल कांति चडीआवी, ने गुलाबना फूलना जेवी लाली कमळ जेवी आंख्योमां पसरी गई, ने पांखडीओ जेवी पापणोमां तरेह तरेहनो विलास थवा लाग्यो, एटलुंज नहीं पण रोम राजी उलटथी खीली आवी तेथी हाथ कंपवा लाग्यो.

त्यांहां तो पोताना शरीरनी शुद्ध भूलीजइने वैद्यराज जोइज रह्या, त्यारे मन पुत्रीए कह्युं जे हे! वैद्य, दशा संभारी चित्त ठेकाणे राखी नाडी जोइने रोगनुं कारण विचारो, ने पछी उपचार करो के जेथी अमा[illegible]-ळी राजकन्याने आराम थइ जाय.

एटलुं केहेतांज वैद्य जाणी गया, पछी चित्त स्थिर राखीने पोताना शिष्य पासेथी दवानी थेली लेइने तेमांथी मद्यनो शिपो काढी लीधो, "आनुं नाम नवरंग चूर्णछे" एम कही एक प्यालो भरीने पोते पीधो, अने बीजो प्यालो भरीने राजकुंवरीने दीधो, ते हाथमां लेइ कळाप्रवीण नाकना स्वरने सेंची सीसकारो करीने पीइ गयां, आवीरीते वैदाना मिशथी वैद्ये प्रवीणनुं चित्त हरी लीधुं, तेमज कळाप्रवीणे पोतानी लावण्यताथी वैद्यनुं मन हरी लीधुं, पछी वैद्ये आ चूरणछे एम कहीने आगळ प्रमाणे एक पाननी बीडी पोते खाधी अने बीजी बीडी प्रवीणने आपी ते खातां रोग असाध्य मटीने साध्य थइ गइ. ॥ ३ ॥

अथ जाति स्वभाव श्लेषालंकार तर्कोक्ति ॥ सवैया ॥

नेंननमें मन बात जनावत, नेंननमें सनिपात सो आवें ॥

सीत घरीक घरीक उठे जर, फेर घरी मुरजी तन तावें॥ साधन ओर अराधन ओरन, नारि निहारि सबें सुध पावें ॥ बैदनकों सब भेद परिच्छन, आयुष वैद प्रवीन मिलावें ॥ ४ ॥

अर्थ. हवे वैद्य तेना शरीरनी स्थिति कहेछे, के थोडा वचनोमां सर्व वातनो भाव जणावी देछे, आंख्योमां सन्निपातनो रंग खीली आवेछे, घडीकमां शरीर टाढुं शीतळ पडी जायछे, ने घडीकमां ताव चडी आववाथी उनुं थइ जायछे, एटलुंज नहीं पण पीडाने लीधे मनमां मुंझाइ मुंझाइ फरीने घडीए घडीए शरीरने तपावेछे, ओषड विगेरे साधनो जूदां अने दुःखना जोरथी तेना मननी आराधना पण जूदीज, जेथी करी कोइ उपाय लागु थतो नहीं होय, आवी रीतनां सर्व लक्षण नाडी जोइ तेथी मालुम पडी आवेछे, वैद्योने तो नाडी जोइ रोगना भेदनी परीक्षा करवानुंज सामर्थ्य छे, तो सारा नशीबने लीधे जो आयुष्य रूप महावैद्य मळे तोज कोमळ अंगवाळी राजकुंवरी प्रवीणने मेळवी आपे. ॥ ४ ॥

॥ अथ हेतुत्प्रेक्षालंकार कलाप्रवीन दशा ॥ सवैया ॥

द्रग लोलनसें अध खोल लपें, कर टेक कपोल दियें न दियें ॥ कस कंचुककी कसकांन लगी, मुखसें सिसकार कियें न कियें ॥ भ्रुव कोंननसें फरकांन लगी मुख, काहुको नाम लियें न लियें ॥ झीझकात प्रवीनाकि बात मनो कही बोइ करें सुनिवो करियें ॥ ५ ॥

अर्थ. अरध उघाडेली चपळ आंख्योथी जोया करेछे, ने हाथनी कुमळी नाजुक आंगळीनो टेको गाल उपर क्यारेक देछे अने क्यारेक नथी देती, पहेरेली कुंचुकीनो कसने कसवा लागी जायछे, ने मरकीने मुखथी सीसकारो करेछे ने वळी नथी करती, वांको भृकुटीना खुणाने फरकावी

ने मोढेथी कोईनुं नाम लेछे ने वळी नथी लेती, विरहपीडाना रंगथी झलकाती प्रवीणना मुखनी वाणी जाणे के ते कह्याज करे ने आपणे सांभळ्याज करीए. ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रदीपालंकार तत्र प्रवीन नैंन बर्ननं ॥ सवैया ॥

रूप भरी रस रंग कटाछन, नाओक क्रंन सरं नखियां ॥ माधवि आरुनता रदकी, हदकी मधुमत्तनकी झखियां ॥ खंजन गंजन मीन प्रभानह रंजन कंजनकी पखियां ॥ मिंत प्रवीन अहो मृगकी अखियांमें न आवतहे अंखियां ॥ ६ ॥

अर्थ. रूप, रंग, तथा रसथी भरेली जे आंख्यो पोताना कटाक्षनी शोभाथी तीरंबाजे कान सुधी खेचीने तीर नाख्युं होय तेनी शोभाने पण हरावेछे, ने पोतानी रक्तताथी (लालीथी) माधवी जातिना मद्यनी आ[गनी] हदने तेमज उज्वळताथी हाथीना दांतनी उज्वळतानीहदने दबा[वी] लेछे, ने मदामतताथी भमराने झंखवी नाखेछे. एटलुंज नहीं पण खंजन पक्षीने गंजन करनारी, माछलानी कांतिने हरनारी, राता कमळनी पांखडीओने रंजन करनारी, एवी हे! प्रिय मित्र प्रवीण, आश्चर्य पमाडनारी, आ तमारी आंख्यो मृगनी आंख्योनी बरोबरीमां पण आवती नथी, अर्थात् मृगनी आंख्योनी शोभाने पण व्यर्थ करे एवीछे. ॥ ६ ॥

अथ उत्प्रेक्षालंकार प्रवीन बानी बर्ननं ॥ सवैया ॥

चंचलता चख कोंन चमंकित, खोर झुकें बरुनी तिरछांनी भोर कपोल धसें उससें रसकें चसकें ससकें मुसकांनी ॥ रेख रदच्छदकी झलके, चलके रद रत्त रसा दर सांनी ॥ कोकिलकी कलकी हलकी हलकी सुनि मिंत प्रवीनकी बांनी ॥ ७ ॥

अर्थ. चंचळता युक्त चक्षुना (आंखोना) खुणा चमकेछे, ने वारीक काजळनी खोरथी शोभीती वांकी पांपणो झुकी रहीछे, वन्ने भमरो कपोळ (गाल) तरफ धसी आवेछे तेथी जाणे सीसकारानी साथे स्वास खेंचीने अमृततुं पात्र पीती वखते मुख मरकतुं होय तेम रसवाळा चसकाथी म्होढुं मरकतुं जणायछे नें दांतने ढांकनारा परवाळा जेवा सुंदर होठनी रेखा झळकेछे, चमकता दांतनी अंदर देखाती राती जीभ चळकेछे, एवा शोभायमान मुखमांथी नीकळेली प्रिय मीत्र प्रवीणनी वाणी सांभळवाथी कोयलना मधुर अवाजनी हलक पण हलकी लागेछे. ।. ७॥

अथ संदेह श्लेष भेद अलंकार ॥ सवैया ॥

बोलतही सरसात हितू मन, बेंनमें मोर महा सुख दांनी ॥ जेबरनी सुरता रतिकी यह, ते पुतरीमें परें सब जांनी ॥ भेद कितेइ किते सुर वंदन, जोइ कहे यह टेक निसांनि ॥ तांन विधांन गुमांन भरीअत, वीन किधों परवीनकी बांनी ॥ ८ ॥

अर्थ. बोलतांज हेतुजननां मन खुशी थायछे, ने वचनमांतो मोरनी पेठे महा सुख देवावाळीछे, ने जेटली कामदेवनी स्त्री रतिनी सुरत क्रीडा संबंधी चतुराइ वर्णवेलीछे ते सर्व आ प्रवीण रूप पुतळीमां मालम पडेछे, केटलाक भेद, स्वर, तथा ग्राम मुर्छना विगेरे जे कहेवायछे तेने जोइने जोवावाळा कहेछे के आ सर्व टेकनी नीशानीछे, एटलुंज नहीं पण तान, विधान तथा गुमाननी भरेली आ ते विणा के? प्रिय मीत्र प्रवीणनी वाणी? ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

होय सचेत कुमारि, बूझन लगी बधूंन प्रति ॥
ओठसु आंनन धार, कहीसु इतें किरंगि को ॥ ९ ॥

अर्थ. राजकुंवरी सचेत थइ मोढामां होठ धरी राखीने एटले दांतथी होठ दबावीने पोतानी सखीने पूछवा लागी के आ फिरंगी आंही केवा! ॥ ९ ॥

कीनी कुसुम उचार, कुमरी खमां खमां सुकहि ॥
लीनी भलें सह्मार, आपे भई असाध गति ॥ १० ॥

अर्थ. त्यारे राजकन्याने खमा खमा एवा उच्चारथी मान आपीने ब्रह्मकुमारी कुसुमावळीए कह्युं के हे! बाइसाहेब, आपने असाध्य थइ गइ हती ते आ वैद्यने ओपडे करीने साध्य थइ ते घणुंज सारुं थयुं. ॥ १०

सो कीनों आसांन, आए वहैं फिरंग इत ॥
दीजें इन सनमांन, कहा म्रजाद सु कीजीयें ॥ ११ ॥

अर्थ. आ फिरंगी वैद्य आही आव्या एज आपणा उपर मोहोटुं एसान कियुंछे माटे एमने सन्मान आपो, ठाली मर्यादा शुं करोछे. ॥ ११

॥ चोपाइ ॥

कला प्रवीन कुमरि सुधि लीनी ॥ अनुग बधाइ राज प्रति दीनी ॥ महाराज मन दुचिते भज्जे ॥ देहुरि पंच शबद्दि य बज्जे ॥ अति आनंद सहर जन पाये ॥ केंउ कुमरी उपासन लाये ॥ हुकुम राज मंत्री प्रति दीनों ॥ भलो निदांन फिरंगिन कीनों ॥ कुंडल बलय बसन ले जाओ ॥ वैदन प्रति इनांम बकसाओ ॥ यह अमांत सुनि अंदर आये ॥ बकसन वैंद साज सब लाये ॥ बानी यह प्रति वैंद कहाई ॥ यह इनांम महराज पठाई ॥ १२ ॥

अर्थ. ए प्रमाणे कळाप्रवीणने साध्य थइ एटले एक खास नोकरे महाराजा नीतिपाळने वधामणी आपी, तेथी महाराजाना मननी उदासी

मटी गइ एटलुंज नहीं पण राजसभाना दरवाजा उपर पांच प्रकारना शद्बथी नोवत शरणाइ विगेरे वधाइना वाजां वागवा माड्यां, तेथी शेहेरनां सर्व लोको आनंद पाम्या ने अति उमंगथी आ वधाइना वदलामां राजकुंवरी सारु भेट सामग्री लइने आववा लाग्या. उलटमां आवेला महाराजा नीतिपाळे आवो हुकम आप्यो के आ फिरंगी वैद्ये घणो सारो उपाय कर्यो जेथी कुंवरीने शांति थइ, माटे आ कुंडळ, कडा, कंठी अने जरीनां वस्त्र लइ जइने वैद्यने इनाम दाखल बक्षीस आपो, एवो हुकम सांभळी बक्षीस आपवानी सर्व सामग्री लेइने कामदार जनांन खानामां आव्या, तेमणे विवेकनी साथे वैद्यने कह्युंके महाराजाए आपने वास्ते आ इनांम मोकल्युंछे ते स्वीकारील्यो. ॥ १२ ॥

॥ सोरठा ॥ तबीबोक्त ॥

हम इनांम नहि लेत, कृपा ईश काहु न कमी ॥
पर उपकारन हेत, सहज देश निकसे सहल ॥ १३ ॥

अर्थ. त्यारे वैद्ये कह्युंके अमे इनांमतो लेता नथी कारणके इश्वरनी कृपाथी अमारे कोइ वस्तुनी कमी नथी, अमोतो केवळ परोपकार करवा माटेज देशांतरोनी सेहेलांनी करवा निकल्या छीए. ॥ १३ ॥

लीनो नहि ईनांम, बोत विनय मंत्री करी ॥
गये अमायत धांम, सासन मंग महीपकी ॥ १४ ॥

अर्थ. कामदारे अति विनय कर्यो तो पण फिरंगी वैद्ये इनांम लीधुं नही, एटले कामदार सभामां आवी बनेली हकीकत कही महाराजानी आज्ञा लइने पोताने घेर गया. ॥ १४ ॥

बैठे उतें फिरंग, चिंत न उठवेकों चलें॥
नेंन निहारत अंग, उर उमंग अतिही भरे ॥ १५ ॥

अर्थ. हवे त्यांहां फिरंगी वैद्य बेटाछे तेनुं मनतो उठी जवाने चालतुं

ज नथी, ने हृदयमां भरपूर उमंग वधी जवाने लीधे आंख्योथी कलाप्रवीणना रुपने जोया करेछे. ॥ १५ ॥

कीनी कुसुमन सेंन, लोक लाजहूके लिये ॥
बीती जाम जु रेंन, तब तबीब लीनी बिदा ॥ १६ ॥

अर्थ. पछी लोक लाजना डरने लीधे कुसुमावळीए सांन करी तेथी नीराश थइने फिरंगी बनेला वैद्ये ज्यारे एक पहोर रात वीतीगइ त्यारे विदाय लीधी. ॥ १६ ॥

॥ छप्पय ॥

तब तबीब निज थांन, आय मित्रन प्रति भंखिय ॥
तुम प्रताप तारुनी, व्याधि मुसाकिल असांन किय ॥
नृप इनांम पठयो, सोय हमहू नहि लीनों ॥
सुख सुरता मन प्रांन, उलट उनहीकों दीनों ॥
विध विध बनाय बातन करी, वह चरचा सबही निशा ॥
परभात मतो करि मित मिल, अबें गमन कीजें दिशा ॥१७

अर्थ त्यार पछी वैद्य पोताने उतारे आवीने साते मीत्रोने केहेवा लाग्या, के आ तमारा प्रतापथी तरुण उम्मर वाळी प्रवीणनो रोग मटी जवानो साथे मिळाप थयो, एज महारा उपर मोटी मेहेरवानी करीछे, राजाए इनाम मोकलाव्युं ते तो में न लीधुं, पण उलटो हुं मारुं सुख, सुरत, मन अने प्राण उलटथी एने देइ आव्योछुं, एवी रीते विविध प्रकारनी वातो करवामां रात वीती गइ अने प्रभात थयुं एटले सर्व मीत्रोए एकठा थइने एवो विचार कर्यो के हवे आपणे आपणा देशनी दिशा तरफ गमन करीए. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हुल्साये सागर सुमन, परी भनक वह कांन ॥

बनें न फिर मिलवो अवें, धार्यो मिंत पयांन ॥ १८ ॥

अर्थ. आ प्रयाण करवानो भणकारो काने लागतांज महाराजा रससागर मनमां मुंझाइ गया ने दीलगीरीनी साथे केहेवा लागा के अरे हवे तो फरी मळवानुं वने नहीं अने आ मीत्रोए तो प्रयाण करवानुं धार्युं. ॥ १८ ॥

अथ एकावल्य लंकार ॥ तत्र सागरोक्त सवैया ॥

चलवो यह कांन भनंक परी, तवतें अँखियांन भरे जलवो॥ जलवो बिरहानल पावकसें, जिय नावक वांन लगो सलवो ॥ सलवो हिय होत प्रवीन मिटें न, बन्यो नाहिं फेर घरी मिलवो ॥ मिलवो मिलवो सुखहीतें गयोहे भयोहें अवे चलवो चलवो ॥ १९ ॥

अर्थ. चालवुं, एवी काने भनक पडी त्यारथीज आ आंख्यो पाणी भर्या करेछे, हवे तो विरह अग्नीना तापथी वळ्या करवुं ने कलेजामां जे तरिंवाजनुं वाण लाग्युं ते सेहेवुं, हे? प्राण सखी प्रवीण, जे हृदयमां सेहेवानुंछे तेतो मटेज नहीं, माटे सहन करवुं, अरे! फरीने घडी मात्र मळवानुं वन्युंज नहीं, ने मळवुं मळवुं एवुं वचन तो मोढेथी गयुं अने हवे तो चालवुं चालवुं एवुं थयुं. ॥ १९ ॥

अथ जातिस्वभाव अलंकार ॥ छप्पय ॥

तवें मिंत महराज, करी कर जोर अरज यह ॥
आप गये रजधांन, निशा पहिचांन परी नह ॥
अवें रहत थिर इतें, काहु जो जांनन पावें ॥
नफा न कछु इन वात, गुनेगारह ठहरावें ॥
महराज कहो इतहीं रहें, यहें सु वात विचारियें ॥

मिलवो बनें न इहि फेर अब, नेहनग्र पथ धारियें ॥ २० ॥

अर्थ. महाराजा रससागरजीने उदास जोया त्यारे मित्रोए आ प्रमाणे अरज करी के, आप राजधानीमां गया त्यारे रात्री हती एटले कोइने ओळखाण पडी नहीं, पण हवे जो आहीं स्थिति करी रहीए ने जो कोइ जाणी जाय तो ए वातमां कांइ लाभतो नहीं पण उलटा गुनेगार ठरावे, हे? महाराजा, कहोतो आंहीं रहीए अने कहोतो जइए, ए वातनो विचार करी जुवो. पण हवे आंही फरीने मळवानुं बनशे नहीं, माटे मरजी होय तो नेहनगर तरफ सधावीए. ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

यहीं बात कर प्रात उठि, कियो गमन दिस बास ॥
सागर कलाप्रवीन दुहु, उरमें लई उदास ॥ २१ ॥

अर्थ. ए वात करीने मित्रोना वचन उपरथी सवारमां उठीने पोताना देश तरफ गमन कर्युं, त्यारे वियोगने लीधे सागर तथा प्रवीण ए बन्नेए मनमां उदासी धारण करी. ॥ २१ ॥

अथ वह प्रातः सूर्योदय वर्ननं ॥ संदेहालंकार सवैया ॥

प्रात उदें प्रगटयों रवि बिंब, किधों कैलासपति द्रग ज्वालहि ॥ पत्र तजें विकसोहें पलास, उसास जह्यात धराधर ज्यालहि ॥ पोंनसें तुंग उड्यो गिरिराज, कीधों मुचकंद जगावन कालहि ॥ रक्त भर्यो सु झर्यो सु लसें जनु, जोगिनि कालि भुजामें कपालहि ॥ २२ ॥

अर्थ. सवार थतां सूर्यना उदयने जोइने संदेह करेछे, अरे! आते लालचोळ सूर्यनुं बिंबछे के, कैलासना पति शिवजीना नेत्रनी झाळछे! के पानरा वगरनो राता रंगीन केसुडाथी भरपूर खाखरो खीली आव्योछे! के

जमीनने धारण करनार शेपनाग पोताना उठता स्वासनी अग्नीनो जमाव करेछे, के पवनना झपाटाथी कोइ पर्वतनुं शीखर उडतुं आवेछे? के काळ यवन मुचकंदराजाने जगाडेछे! के लोहीथी भरपूर छलकतुं संहार करनार जोगणी महाकाळीना हाथमां खपर शोभेछे के शुं! ॥ २२ ॥

॥ चोपाई ॥

यहि विधि उदय प्रभाकर कीनों ॥ नेहनग्र पथ सागर लीनों ॥ उत प्रवीन उनकी सुधि पाये ॥ दोऊ मन विशेप दुख पाये ॥ जारत विरह ज्वाल तन जग्गी ॥ ठोकर मनहु व्याल तन लग्गी ॥ कुसुम मिंत उत इत समुझावें ॥ पें न धीर कोऊ विधि पावे ॥ अगें अनंद होंन मन धारी ॥ पें मिल विरह दून बिस्तारी ॥ खांन पांन भूपन रुचि छंडे ॥ मदन भेद विस्तारन मंडे ॥ उनके चिंत भेद वह जांनें ॥ बिरही बिना वदंत न मांने ॥ २३ ॥

अर्थ. एवी रीते सूर्यें उदय कर्यो नें महाराजा रससागरे नेहनगरनो रस्तो लीधो, त्यांहां सागरना प्रयाणना खबर थयाथी प्रवीण अने आंही प्रवीणना वियोगथी सागर ए बन्ने जण मनमां अति दुःख पाम्यां एटलुं-ज नहीं पण, शरीरमां दाह करनार विरहाग्नीनी झाळ सळगी उठी, ते जाणे अंगमां झेरी सरपनी ठोकर लागी होयनें! एवी पीडा करवा लागी-त्यांहां कुसुमावळी अने आंही मीत्रो विनय पुर्वक समजावेछे, तोपण बन्ने जण कोय उपायथी धीरज धरतां नथी, आगळ आनंद थशे एम मनमां धार्युं हतुं,पण मळवाथी तो उलटो बमणो विरह वधी गयो, तेथी खावापीवानी तथा लुगडां, घरेणां पेहेरवानी प्रीति छोडी दीधी, ने बन्ने जण काम भेदनो विस्तार करवा लाग्यां, एओना चित्तना भेदने एओ-ज जाणे, आ वात विरही वीना बीजाने केहेवा जेवे तो मानेनहीं. २३

अथ तस्य दृष्टांतानन्वयालंकार ॥ सवैया ॥

पानिके जंतु कहा पहिचांनत, ग्रीषमके तपकी गरदीकी ॥ केसरकी करिहें कह किंमत, हे न परीख जहां हरदीकी ॥ कायरकों न कछू परिहें कल, सूरनकों सुधि हे मरदीकी ॥ वे दरदी न प्रवीन लहें कछु, जांनहिगो दरदी दरदी-की ॥ २४ ॥

ग्रिष्म ऋतुना तापनी गरमीने पाणीना जीव शुं जाणे! तेम जेनी पासे हलदरनी परिक्षा नथी ते केसरनी परिक्षा शुं करी शके! लडाइना मेहेदानमां मरदामी करवानी कायरने कांइ कळ पडशेज नही, मरदांमी करवानी तो सूरवीरोनेज शुद्ध होयछे, एप्रमांणे हे! प्रिय सखी प्रवीण, दरदीना दरदने दरद विनानो पुरुष जाणशे नही, पण जे कोइ दरदी हशे तेज दरदीना दरदने जाणशे. ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

समुझावें सागर सु प्रति, मिलिमिलि राह सु मिंत ॥
सुख जानत दुखभो प्रगट, धीर न धरियत चिंत ॥२५॥

अर्थ. आवी हालत थइ जवाथी रस्ते मीत्रो एकठा मळी मळीने सागरने समजावेछे, पण आकस्मात सुख जाणतां दुःख प्रगट थयुं तेथी चित्तमां धीरज धरता नथी. ॥ २५ ॥

चहत राह बहु दिन भये, लंघ विदेश सु देश ॥
जिहि विधि कीनो गमन त्यों, किय निज धांम प्रवेश ॥२६॥

अर्थ. रस्ते चालतां चालतां घणा दीवस विती गया, वाद परदेशने उलंघीने पोताना देशमां आवी पहोच्या, जेवी रीते जती वखते गमन कर्युं तेवीज रीते पोतानी राजधानीमां प्रवेश कर्यो. ॥ २६ ॥

॥ अथ गाहा ॥

वैंद कला परबीनं ॥ चरचा नेहनग्र सागर गति ॥
उभैं त्रिंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥२७॥

अर्थ. कळाप्रवीणनुं वैदुं कर्यावाद पोताने उतारे थयेली चर्चा बंध पड्या, पछी मित्रो सहित महाराजा रससागर पोतानी राजधानीमां पधार्या, तेसंबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी बत्रीशमी लेहेर संपूर्णथइ. ॥ २७ ॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे कला प्रवीन वैदोपचार
विधि भेदो नाम द्वात्रिंशतिमो लहरं ॥ ३२ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां द्वात्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३२ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद॥ दोहा ॥
सागर कलाप्रवीणने, थातां विरह अपार ॥
केशे लेर तेत्रिशमां, दशे दशानो सार ॥

अथ दंपति विरह दशा वर्नन प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥
इतकों रससागर कुमर, उतकों कलाप्रवीन ॥
मिलि बिछुरत बाढयो सुदुख, विरह दशा तब लीन ॥ १ ॥

अर्थ. आहीं रससागर कुमार अने त्यांहां कळाप्रवीण ए बन्ने एकठां मळीने जूदां पडीगयां, तेथी वियोगनुं दुःख वधीगयुं एटले विरह दशा लइ बेठां. ॥ १ ॥

तत्र विप्रलंब शृंगारे विरह वर्ननं ॥ छप्पय ॥
बिछुरत प्रीतम उभैं, होत तिहि ठोर जो रसहि ॥

विप्रलंब सिंगार, तास बरनंत सु कवि कहि ॥
भेद चत्र तिहि भिन्न, पूर्वअनुराग कहीजें ॥
करुना मान प्रवास, यहें चारो लिख लीजें ॥
गुन भेद रूप ताकें सु गहि, बहुर दशा दश बिस्तरत ॥
करि भिन्न भिन्न ताकी कला, बिरह बिथा बर्नन करत ॥ २॥

अर्थ. जे स्त्री अथवा पुरुषने परिपूर्ण प्रीति बंधाइ गयेली होय, तेमांथी एकपण जूदूंपडे ते ठेकाणे वियोगनुं दुःख वधीजायछे तेने विद्वान कवीओ विप्रलंब शृंगार कहीने वर्णवेछे, ते विप्रलंब शृंगारना जूदा जूदा चार भेदछे, तेमां पेहेलो पूर्वानुराग विप्रलंब, बीजो करुण विप्रलंब, त्रीजो मानविप्रलंब अने चोथो वास विप्रलंब, ए चारेने जाणवा जोइए, माटे तेओना गुण, रूप अने भेदोनुं ग्रहण करीने पाछी दश प्रकारनी दशा विस्तारेछे, ते दशानी जूदी जूदी कळा करीने विरहनी पीडानुं वर्णन करेछे ते आ प्रमाणे. ॥ २ ॥

॥ अथ छंद पद्धरी ॥ ॥

देखंत प्रेम दंपतिहि सोय ॥ बिछुरंत तुदन परकास होय ॥ बिनु लखें प्रांन तलफें अताग ॥ एही सु भेद पूर्वानुराग ॥ आपको जास मिलरह्यो रंग ॥ जोगांन जोग दुख तास अंग ॥ लिख मिंत दशा शोचंत चिंत ॥ ताहि सो बिरह करुना कहंत ॥ मिंतको मिंत पावें जु दोष ॥ पावंत चिंत आवेंजु रोष ॥ कछु रार होत बिछुरे सु आंन ॥ बिन मिलें कष्ट वह बिरह मांन॥ परदेश मिंत कीनो पयांन॥ मिटिगई ओध पुग्गे न थांन ॥ एकेक चिंत बाढे उदास

॥ तासें कहंत बिरहा प्रबास ॥ बिन मिलें शोच वाढंत चिंत ॥ दश दशा होत ब्रह सो बदंत ॥३॥

अर्थ. जे स्त्री पुरुषमां देखितोज प्रेम होय ते जूदां पड्या पछी पीडानी साथे प्रकाश थाय, अने पोताना प्रियने जोया वगर प्राण अतिशे तलफे ए पूर्वानुराग विप्रलंबनो भेदछे, पोतानो रंग जेनी साथे मळीरह्यो होय, तेना अंगमां दैवजोगथी दुःख उपजीआवे, तेने लीधे मित्रनी दशा जोइने जे मित्र मनमां शोच करे, तेने करुण विप्रलंव कहेछे, मित्रे मित्र साथे करेला दोषने मित्र जाणे, ते जाणतांज पोताना मनमां क्रोध उपजी आवे तेथी कांइ क्लेश करीने जूदां पडीजाय पण परस्पर वगर मिलापे अति दुःख पामे ए मान विप्रलंव, मित्र परदेश गयो होय अने तेना वदाडनी मुदत पूरी थया पछी पण घेर न पहोची शके, तेथी परस्पर एक वीजाना मनमां उदासी वधती जाय तेने प्रवास विप्रलंव कहेछे, हवे विरहमांथी दश दशा उपजेछे ते कहुंछुं. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

विप्रलंब सिंगारके, कहे चार परकार ॥
होत दशा दश बिन मिलें, सो अब कहों उदार ॥ ४ ॥

अर्थ. एवी रीते विप्रलंव शृंगारना चार प्रकार कह्या, पण वगर मिलापे जे दश प्रकारनी दशा थायछे तेनो हवे विस्तार कहुंछुं. ॥ ४ ॥

॥ अथ दश दशा नाम कथनं ॥ गाहा ॥

अभिलाष सु चिंतायं ॥ गुनह कथन संमृति उद्वेगं ॥
फुनि प्रलाप उन्मादं ॥ जडता व्याध मरन यह जानहु ॥५

अर्थ. एक अभिलाषा, वीजो चिंता, त्रीजो गुणकथन, चोथी स्मृति, पांचमी उद्वेग, छठो प्रलाप, सातमो उन्माद, आठमी जडता, नवमी व्याधी, अने दशमी मरण एप्रमाणे दश दशा जाणवी. ॥ ५ ॥

अथ विरह दश दशा भेद ॥ छंद मौक्तिकदाम यथा ॥ मिलें मन नेंनन वेंनन रंग ॥ चहें मिलवो चित दंपति अंग ॥ इकें इक बाढतजात सनेह॥ कही अभिलाष दशा ब्रह एह ॥ किहीविध मित मिलें उत जाय ॥ इतें मिलहें कब मिंत सु आय ॥ यहें निश द्योस बिचारत चिंत ॥ चिंता ब्रह चातुर तास कहंत ॥ जहां गुन मिंत सु चिंत गनंत ॥ अलंकृत ओर सरूप ब्रनंत ॥ भयो मनमथ्थ सुमार बिशेष ॥ यहें विरहा गुन कथ्थन लेष ॥ बिनां प्रिय ओर कछु न सुहाय ॥ सबें ग्रह काज दिये बिसराय ॥ लगी मिलिवें मिलियें यह बांन ॥ दशा बिरहा वह संमृति जांन ॥ सबें सुखदायक जो उपचार ॥ वहें दुख दैन लगे सु अपार ॥ लगो मन मिंत सु मिंतहि ध्यांन ॥ दशा उदबेग ब्रहा सु बखांन ॥ रहे मन भोंर समान भ्रमंत ॥ तनं मनमें परताप तपंत ॥ वहो विधि बानि वदें प्रिय पच्छ ॥ यहें परलाप दशा ब्रह लच्छ ॥ तरंकित ऊठ चलें सु बिशेष ॥ चितें रहें चकित आंनन देख ॥ हसें फुनि रोय करंत बिवाद ॥ यहे बिरहा सु दशा उनमाद ॥ गई सुधि बुद्धि सु भूलि सयांन ॥ भयो सुख दुःख सु दोय समांन ॥ लगी प्रियसें सुरता अवछेद ॥ दशा बिरहा जडता यह भेद ॥ तपें तन दीरघ लेत उसांस ॥ झरे जल नेंनन होय निरास ॥ बढे दिनही दिनही मन आध ॥ दशा बिरहांन कहें यह व्याध ॥ छलं बलके उपचार करंत ॥ बनें नहि

क्यों न मिलें दोउ मिंत ॥ वढे परि पूरन प्रेम प्रमांन ॥ वने तव शेष दशा सु विधांन ॥ ६ ॥

अर्थ. जे स्त्री पुरुषनो परस्पर प्रेमने लीधे मन, आंख्यो, अने वचनोनो रंग मळीगयो होय ते स्त्री पुरुष अंग मिलाप करवासारु पोताना मनमां चाहे, तेथी करीने परस्पर जे अतिशे स्नेह वधतो जाय ते विरहनी अभिलाष दशा कहेलीछे. ने जे दंपती कया उपायथी मित्र मळे, जो मळे तो त्यांहां जइए; अरे! आंहो आवीने मित्र क्यारे मळशे! एवीरीते रात दिवस चित्तमां विचार्या करे, तेने चतुर पुरुषो विरह संबंधी चिंता एवा नामनी दशा कहेछे. जे दंपती नीरंतर पोताना मनमां मित्रना गुण गण्या करे, एटलुंज नहीं पण ते मित्रना अलंकार, पोपाक अने खूबसुरतीनुं खुली रीते वर्णन कर्या करे, तेथी करीने जे मनने मथनार बेहद काम वधी जाय ते विरह संबंधी गुणकथन दशानुं लक्षणछे.

जेने पोताना प्रिय विना बीजुं कांइ पण गमतुं नथी, ने घरनुं सघळुं कामकाज वीसारी मुकीने, मुखेथी तो मळीए मळीए एवांज वचन बोल्या करे ते विरह संबंधी स्मृति एवा नामनी दशा जाणो. जे सर्व प्रकारे सुख उपजावनारा उपचारोछे, तेज अतिशे दुःख दायक थइ पडे, ने मनमां मित्रनुं ने मित्रनुंज ध्यान लाग्युं रहे, ते विरह संबंधी उद्वेग नामनी दशा वखाणीने कहेलीछे. मनतो भमरानी पेठे भमतुंज रहे अने शरीर तथा मनथी जूदो जे जीव ते पण तापथी तपी जाय, तेने लीधे पोताना प्रिय मित्रना पक्षनी विविध वाणी बोल्या करे तेज विरह संबंधी प्रलाप दशानुं लक्षणछे. तडफडीने जागी उठे, ने चमकी उठीने चाली नीकळे, ने पोताना प्रिय मित्रना मुखनी छवि जोवानी आतुरताथी चित्तमां व्याकडानी पेठे फर्या करे तेने लीधे क्यारेक हसे, ने क्यारेक रोय, ने वळी विवाद करवा लागी जाय, एज विरह संबंधी उन्माद दशाछे. शुद्ध बुध ने शाहाणपणुं भूली गयाथी सुख अने दुःख बेय समान थई रहे. तेथीकरीने

एक पोताना प्रिय मित्रमांज अखंड द्रष्टि लागी रहे, एज विरह संबंधी जडता नामनी दशानो भेदछे. अंगमां तपायमान थइने लांबा उसासा निसासा भरे, ने जेनी आंख्योमांथी आंसु झर्या करे, ने वळी निराश थइ जाय, ने दिवसे दिवसे मननी पीडा वधती जाय, एज विरह संबंधी व्याधी एवा नामनी दशा कहेलीछे. ज्यारे छळवळना अनेक उपायो करवाथी पण कोइ रीते बन्ने मित्रोने परस्पर मळवानुं बने नहीं अने मनमां परीपूरण प्रेमनुं प्रमाण वधी पडे, त्यारे अनायासे जे मरण थायछे ते मरणनामनी छेली दशानुं विधान कहेवायछे. ॥ ६ ॥

॥ गाहा ॥

उत कुसुम परवीनं, माहाराज मिंत इत चरचा ॥
कीनी काव्य नवीनं, जो जो दशा होय सब बरनें ॥ ७ ॥

अर्थ. त्यांहां कुसुमावळी तथा कळाप्रवीण अने आंही महाराजा रत्नसागर तथा तेना मित्रो, चर्चाना प्रसंगथी जे जे दशा उपजीआवेछे ते ते स्थितिना वर्णन संबंधी नवीन कविता रचेछे. ॥ ७ ॥

अथ कला प्रबीन कुसुमावल्युक्त विरह दशा बर्ननं ॥

तत्र प्रथम कलाप्रबीनोक्त मिलितरूपकालंकार

॥ सवैया ॥

राज महा अभिलाप बिराजत, चिंतहे राजकुमार विचच्छन ॥ संम्रति ओर उद्वेग वजीर, अमीर दुहू जडता गुन कथन ॥ हे हकमी उनमाद प्रलापहि, व्याधरु शेष निआउ चुकावन ॥ सागर साह सनेहकी आयस, यातन न म दुहाई फिरी इन ॥ ८ ॥

अर्थ. अभिलापरूपी राजा गादी उपर बीराजेछे, तेनी पासे अति विचक्षण चिंतारूपी राजकुमारछे, स्मृति अने उद्वेग रूप वजीरोछे, जडता

अने गुणकथनरूप वे अमीरो हाजर रह्याछे, ज्यांहां उन्माद अने प्रलाप रूप वे हाकेमोछे, ज्यांहां व्याधी अने मरण रूप वेय न्याय चुकवनारा अधीकारीओछे, हे!सागर, आपना साहसिक स्नेहरूपी वादशाहना हुकमथी आ शरीररूपी नगरमां एओनी दुहाइ फरी गइछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ मिलित रूपकालंकार ॥ सवैया ॥

सागर सूर प्रभा प्रगटी अरु, नेह मरीच निरंतर जागें ॥ कांम अनोपम ओप करें इत, आतसके चसमें चख लागें ॥ ताकि परी रुषहें घटमें प्रतिबिंबित प्रांन महा दुख दागें ॥ काहु बिचार न बूझें अबें यह, जारत जोबनको वन आगें ॥ ९ ॥

अर्थ सागररूप सूर्यनी कांति प्रगटीने प्रकाश पामी ने तेना स्नेह रूपी एकरस कीरणो जगमगाटनी साथे जागृत थयां, जेने कामदेव अनुपम तेज आपेछे, एवा तेजरूपी आतसमां आंख्यो रूप चसमां लागी गयां, ते द्वारा तेनी कांति हृदयरूपी घटमां पडी, ते प्रतिबिंब प्रज्वलित थतांज प्राणमां मोटुं दुःख पेदा थयुं, आ अग्नी कोइ विचार के उपायथी बूझतो नथी ने आगळ जोवन रूप वनने वाळेछे. ॥ ९ ॥

॥ अथ भिन्न पद श्लेष रूपकालंकार ॥ कवित्त ॥

उर पुर बेठो जारि, ज्वलन नमाय लीनों, नेंन गढ टेढो जल, नलन डुबायोहें ॥ सुख साज राजकों, बिखेरिकें बिदाय दीनें, मन मजमूंन ग्वालियर लें चढायोहें ॥ प्रान तख्त बेठो आय, दुखके दिवांन जुत, बिरहा बिकट सूबा, अमल जमायोहें ॥सागर बियोगी खंड, दंडन प्रचंड रूप, मदन पठायो साह, प्रेम दल आयोहें ॥ १० ॥

अर्थ. हृदयरूपी शेहेरने वाळीने मांही आवी वेठो अने तेजरूपी राज सत्ताने नमावी लीधी, नेत्ररूपी टेडा कील्लाने आंसु रूप पाणीना नळथी डुबाव्यो, सुख रूप सामग्री तथा तेज रूपी राज्यने विखेरी नाखीने सौने विदायगिरी दीधी, ने मनरूपी मजमुदारने तो घोलर चडावी दइ उजड कील्लामां केद कीधोछे, एटलुंज नहीं पण दुःख रूपी दीवानने साथे लइने प्राणरूपी तख्त उपर आवी वेठेला विरहरूपी विकट सुवाए चोतरफ पोतानोज अमल जमावी दीधोछे, एवी रीते हे? सागर वियोगीना देशनो दंड करवामां भयंकर देखाववाळुं कामदेव रुप बादशाहे मोकलेलुं प्रेमनुं लश्कर आवेलुंछे. ॥ १० ॥

॥ अथ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

नेंननसें जब नेंन लगे तबसें वह नेंनन चाहत नेंनां ॥
रेंन कहूं अँसुवा बरजे दिन, रेंन वहे छिनही विसरेंनां ॥
मेंन महा दुखमें नित तावत, ज्यों ढिग मंजर पंजर मेंनां॥
हें न कछू सुख चेंन हिये व्रह, जाग रहे अरु सागर हेंनां११

अर्थ. ज्यारथी आंख्यो साथे आंख्यो लागीछे त्यारथीज ए आंख्योने आंख्यो चाहेछे, ने राते तो कांइक आंसु झरवा बंध पाडे पण एम न करतां उलटी रातदिवस क्षणमात्र ए आंख्योने आ आंख्यो विसारती नथी, जेम मेनाना पिंजरा पासे बिलाडाने बांधी राख्यो होय, ते जेम मेनाने भयथी तपावे, तेवीजरीने आ कामदेव हमेशा दुःखमां ताव्या करेछे, तेने लीधे हृदयमां सुखचेन पडतुं नथी, एटलुंज नहीं पण विरह जागी रहेछे अने सागर नथी. ॥ ११ ॥

अथ यथासंख्यालंकार ॥ कुसुमावल्युक्त ॥ सवैया ॥

बाल महांन विहाल विलोकित, कीये इलाज सखी सब दोरी ॥ एक गुलाब लियो छिरकावन, चंदनकी इक ल्याइ

कटोरी ॥ फूलन हार इकें पहिरावत एकहु दांन समीर गह्योरी ॥ सागर एकहिवेर सबें वह फोरत ढोरत तोर मरोरी ॥ १२ ॥

अर्थ. विरहथी बेहाल थएली वालाने जोइने तेनो उपाय करवासारु सघळी सखीओ दोडी नीकळी, तेमांथी एक सखी गुलावजळ छांटवा सारु गुलाबदानी लावी, एक चंदननी कटोरी लावी, एक फूलना हार पेहेरावा लागी, एके ठंडो पवन ढोळवासारु हाथमां वीझणो लीधो, पण हे? सागर, ए बधां एकवारेज फोडी, ढोळी, तोडी ने मरडी नाख्यां, ते आ प्रमाणे के गुलावदानी फोडी नाखी, चंदननुं पात्र ढोळी नाख्युं, हार तोडी नाख्यो ने वीझणाने मरडी नाख्यो. ॥ १२ ॥

अथ अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

नेननसें असुवा उमहे सो गलीन भई वरषाकी तरंगन ॥ बारहु मास रहे ऋतु ग्रीषम, आयत सास परोसनि अंगन ॥ जेहर सो रसनां दोहरी भई, पल्लवकी मुंदरी भई कंगन ॥ सागर छेद भये छतीयां सर तोउ भरें मनमथ्थ निषंगन ॥ १३ ॥

अर्थ. आंख्योमांथी उलटेला आंसुनो धार चालेछे, ते जाणे शेरीमां चोमासानी मोटी नदी बनी गइछे, बारेमास हृदयमांतो ग्रीष्म ऋतुज रह्या करेछे, अर्थात् ताप तप्याज करेछे एटलुंज नहीं पण स्वास तो पाडोशणना आंगणा सुधी आवजाव करेछे, पगमां पेहेरवानां लंघरोतो वमणी कटीमेखळा जेवां थइ रह्यांछे, ने आंगळियोमां पेहेरवानी नाजुक वींटियो हाथमां पेहेरवाना कंकण जेवी थइ गइछे, तेमज हे? प्रिय मित्र सागर, छातीमां छेद पडी गयाछे तोपण हजो कामदेव पोताना भाथामां बाण भरयाज करेछे. ॥ १३ ॥

अथ रससागर मिन्नोक्त विरह दशा बर्ननं ॥अलंकार तद्रूपक
॥ सवैया ॥

याजिय कुंड रच्यो हियमें तहँ, इंधन अस्ति सु आंन ठहे हें ॥ बीच धरे विरहा विशवानर, नेंन स्त्रवा घृत धार बहेहें ॥ होमतहे सुखकी करि आहुति, धीरिज श्रीफल मध्य दहेहें ॥ प्यारे प्रवीन प्रवीन पढें श्रुति, नांमके मंत्र निरंत्र ग्रहेहें ॥ १४ ॥

अर्थ. आ जीवेतो पोताना हृदयमांज यज्ञनो कुंड रच्योछे, जेमां हाड रूपी समीध (इंधणा) लावीने ठसाव्याछे, तेनी वचमां विरहरूपी अग्नी मूकेलोछे, नेत्ररूप शरवा आंसुरूपी घीनी धाराथी वह्या करेछे, अने सुखरूप कुल द्रव्यनी आहुती आपीने होमेछे, धीरजतारूप पूर्णाहुतिनुं श्रीफळ होमीने अग्नीमां वाळेछे, "हे? प्यारी प्रवीण हे! प्यारी प्रवीण" एनामरूप वेदना मंत्रोनो निरंतर उच्चार करी करीने भण्या करेछे. ॥ १४ ॥

अथ असंगत्यलंकार ॥ सवैया ॥

प्रेमको बीज धर्यो हियमें वह, लाजकी पांसु दबाय दुरायें ॥ नेंन घटा बरसें जबही तबही जलके परसें दरसायें ॥ पत्र सखी प्रसरे गुन भेद, किते अभिलाष प्रसून लगायें ॥ चाहत चिंतसु आवनके फल, प्यारे प्रवीन कहो कब पायें ॥ १५ ॥

अर्थ. जे प्रेमनुं बीज हृदयमां धारण कर्युं हतुं ते लाजरूपी मृत्तिकाथी ढांकीने संताडी मुकेलुं हतुं, ते ज्यारे नेत्ररूप मेघनी घटा वरसवा लागी त्यारे तेना पाणीना स्पर्शथी कोंटारूपे देखाइ आव्युं, तेमां गुण भेदरूप सखीरूपी पांदडां तथा कोमळ पातरां प्रसरी गयां, ने अभिलाष रूप

फूल खीली आव्या, हवेतो चीत्त केवळ फळ आववा सारुज चाहेछे, तो हे? प्राणप्यारी प्रवीण, ए फळ क्यारे पामशुं ते कहो. ॥ १५ ॥

अथ असंगति अलंकार ॥ सवैया ॥

अंब अताग निवान भरे ब्रह, संस्मृति तंत्र सँवार धरें ॥
ब्रीडको मंच बध्यो गुनके गुन, बैल विचार फिरेबो करें ॥
कांतिकि माल कसी बरुनि ग्रह, नेंन घरी सु भरें उवरें ॥
अंग उदांन प्रवीन रच्यो जिय, प्रेम प्रसून लता प्रसरें ॥
॥ १६ ॥

अर्थ. विरह रूपी अताग पाणीनुं नवाण भरेलुंछे, त्यांहां स्मृति रूप यंत्र संभाळथी गोठवी राख्योछे, ने जे लाजनो रेंट गुणरूपी रांढवाथी वांधी राख्यो छे तेने विचाररूप बेल फेरव्या करेछे, ते रेंटथी मांडीने पापणोनां अंत सुधी जे कांतिरूप रांढवानी माळा कसी राखीछे, तेने लीधे नेत्र रूप घडाथी पाणी भरेछे ने ठलवेछे, तेथी करीने आजीवे जे पोताना अंगमांज नवीन बगीचो रच्योछे, तेमां प्रेमरूपी वेल फुलथी भरपूर थइ ने पसरती जायछे. ॥ १६ ॥

अथ विभावनालंकार ॥ सवैया ॥

सेपल वीच भरेइ रहो सु परेइ रहो प्रसरे तन सारें ॥ कंठ कपोल झरेइ रहो सु भरेइ रहो नव वास भिंगारें ॥ बुंदनसें बिखरेइ रहो सु ढरेंइ रहो बरुनीं अग ढारें ॥ नेंनन नीर खरेइ तवें जब, नाम तिहारो प्रवीन उचारें ॥ १७ ॥

अर्थ. आंसुनुं पाणी पांपणनी वचमां भर्युज रहे अगर पड्युं ज रहे, किंवा आखा अंगमां पसरे, कंठ अने गाल, आंसु तथा पसीनाथी झरतांज रहे अथवा भर्याज रहे, कांतो नवां वस्त्र भिंजावे, ने अश्रुनां जळ टें-

दमांर्जज विखराया रहे, अथवा ढाळेली पापणोने मार्गेथी ढळतां रहे, पण हे? प्रवीण ज्यारे तमारा नामनो उच्चार करीयेछीये त्यारेज आंख्यो-मांथी आंसु खरेछे. ॥ १७ ॥

अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

शोच विचार वढेइ रहें सु पढेइ रहेंहे नजीम निदांनें ॥ आं
नन तेज अढेइ रहें सु द्रढेइ रहें वैबस्वत जानें ॥ प्रेम प्रतीत
ढढेइ रहें सु गढेइ रहें बिरहा तन प्रांनें ॥ चिंत प्रबीन च
ढेइ रहें सु गढेइ रहें मनमथ्थ निसांनें ॥ १८

अर्थ. हमेशां शोक ने विचार वध्याज रहेछे, ने जोशीओतो तेना निदाननां प्रश्नो भण्याज करेछे, मोढानुं तेज अवटायुंज रहेछे, हृदयमां अग्नीतो भर्योज रहेछे, प्रेमनी प्रतीती दीवसे दीवसे मजबूत थतीज जायछे, शरीर तथा प्राणमां विरह ठस्योज रहेछे, चित्तमां प्रवीणतो चढ्योज रहेछे, तेमज कामदेवनुं निशान पण मनमां रोपायुंज रहेछे. ॥ १८ ॥

॥ अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

नेंनन नींद कछू करवो अरु, पावकही जरवो मनकों ॥ सा
स उसासनको भरवो पुनि, शोच सदा करवो दिनकों ॥
नेंनन नीर प्रवा झरवो फिर, चाहतहें मरवो तनकों ॥
प्यारे प्रबीन बिचार करो यह, कोंन खता बिरही जनकों
॥ १९ ॥

अर्थ. आंख्योमांथी निद्रा तो कांइ करवीज नहीं ने अग्नीमां मनने बाळवाज करवुं, उंडा अने लांबा उसासा निसासा भर्याज करवा ने वळी हमेशां आखो दिवस शोच कर्याज करवो, आंख्योमांथी आंसुनो प्रवाह वरसाव्या करवो ने वळी शरीर तजवानुं पण चाहावुं, तो हे? प्रिय मित्र प्र-

वीण विचार करो के आ कया विरहि जननो खताव लागेलो हशे! १९

॥ अथ असंगति संदेहको संकर अलंकार ॥ सवैया ॥

प्रेम सुरंज उठे हियमें तिनसें जु चुआंन लगे बरुनी वन ॥ मित्रको तंत्र कियो घटमें वह, जंत्रसें कैंधो वहेहें सुरा कन ॥ प्रांन सनेही वही द्रग किंकर, कैंधो गुलाव लगे छिरकावन ॥ कैसि भई गति सो न परें कल, प्यारे प्रवीन विनां इन आंखन ॥ २० ॥

अर्थ. अरे! आते हृदयमां प्रेमनो फुवारो उछळेछे, तेथी करीने पापणो रूप वन चुवा लागु! के मित्ररूपी तंत्र घटमां गोठवी राख्योछे, ते यंत्रमांथी उपजेली मदिराना कण वेहेछे, के पोताना प्राण स्नेहीने आ आंख्यो रूप नोकरो गुलावजळ छांटवा लाग्याछे! एक प्राण प्यारी प्रवीणवीना आ आंख्योनी केवी गति थइ गइछे! ते कांइ कळवामां आवती नथी. ॥ २० ॥

॥ अथ सम रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

स्वासाकि डोर प्रबीन तनें अरु, आंसुन नेह लगावत आरें ॥ चिंतकी सांन फिरान लगी वह, आसिककी किरवांन उजारें ॥ काट कुटील खरेंवो करेहें, झरेवो करें विरहा चिनगारें ॥ वाहन प्रांन वियोगिनपें नित, आयुध मार खराद समारें ॥ २१ ॥

अर्थ. स्वास रूपी दोरीने प्रवीणे ताणी, ने आंसुरूपी तेल आराओमां लगाव्यु तेथी चित्तरूपी सराण फरवा लागी, ने इशक रूप तलवारने सजेछे, तेमांथी कुटीलतारूप काट खरतो जायछे, ने विरहरूप तणखा झर्या करेछे, एवी रीते प्राणप्रिय प्रवीणना वियोगी आशक उपर

हणवाताल कामदेव रूपी शीकलीकर हमेशां हथीयार सजेछे. ॥ २१ ॥

अथ रूपकालंकार ॥ सवैया ॥

चोक कसी पुत नायकसें अरु, अच्छत नेंन कटाछ उडावें ॥ बंदन जावक बिंद करे सितकारकि फूकसें मूठ चलावें ॥ हारकि संकरसें जु हनें हिय, पायलके दुहु डाक बजावें ॥ भूत धर्‍यो विरहा घट भीतर, मिंत प्रवीन मिले तो समावें ॥ २२ ॥

अर्थ. पलंग रुप चाचरने (चोकने) कोय पुतना वीगेरे देवीना मंत्रथी खीले ने नेत्रना कटाक्ष रूप आखा उडाडे, सेथाना सिंदुरना तथा पगमां लगाडेला अळताना रंग रुप चांडला करे, सीतकारा रूप फुकथी मूठ चलावे, हार रूप सांकळथी हृदयने हणे, ने पगनां झांझर रूप ने डाकलां वगाडे, एवी रीतना उपाय करनार प्रिय मित्र प्रवीण रूप भुवो मळी आवे तोज आ घटमां धसी पेठेला विरह रूप भूतने शमावे.२२ ॥

अथ समरूपकालंकार ॥ सवैया ॥

मेंन सुनार दुकांन रच्यो तन, धीरज सास धुआं उमटें ॥ ज्यों ज्यों लगें बिरहानल ज्वाल त्यों, कंचन नेह प्रभा प्रगटें ॥ शांम तुला रति लाल धरें मधि, नेंन कसी सु बढें न घटें ॥ प्यारे प्रवीन परच्छनहार, बनावत भेद मनी सु जटें ॥ २३ ॥

अर्थ. कामदेवरूपी सोनीए आ शरीर रुपी दुकान रचीछे, तेमांथी धीरजतारूप धुंवाडो स्वासने मार्गे थइने नीकळेछे, जेम जेम विरहरूप अग्नीनी झाळ लागेछे,तेम तेम स्नेहरूपी सोनानी कांति प्रकाशती जायछे, ने आंखोओ रूप कांटामां प्रीति रूप चणोटी राखीने तेनी साथे तो-

लथी सरखावी जोतां, तेमज आंख्योरूपी कसोटीमां कसी जोतां घटतुं वधतुं नथी, हे? प्राण प्यारी प्रवीण, एवी रीते सदरहु सोनार छानी रीते अनेक प्रकारना भेदरूप मणीओथी जडित्र हार बनावेछे. ॥ २३ ॥

अथ मिथ्याध्यवसत्यलंकार ॥ सवैया ॥

एक समें किरतार करें यह, उत्तरसें इक जोगिन आवें ॥ दंड करें नृप खंडनके शिर, आय त्रियांनकि आंन फिरावें ॥ जाय सदा जिय चाहतहैं हम, पच्छम ताय पटोदे पठावें ॥ कंठ भुजा धरिकें भरि आसव, तादिन आय प्रवीन पिआवें ॥ २४ ॥

अर्थ. एक समये जगत्कर्ता परमेश्वर एवो बनाव बनावे के उत्तर दिशामांथी एक जोगणी आवे अने ते खंडे खंडना राजाओने माथे दंड करे ने चारे तरफ कामनीओनीज थाणां बेसारीनें राजाओना उपर स्त्रीओनीज आण फेरवे, अने जेने अमारो जीव चाहेछे, तेनेज जेदी आ पश्चिम देशनी मुखत्यारीनो पट्टो आपीने मोकलावे, तो ते दिवस आवीने प्रिय सखी प्रवीण गळामां हाथ नाखीने मदिरानुं पान करावे. ॥ २४ ॥

अथ उत्प्रेक्षालंकार ॥ सोरठा ॥

ज्यों ज्यों संघति होत, त्यों त्यों अति बिरहा बढें ॥
मांनहु दीप उदोत, पूरन नेह प्रवीन जू ॥ २५ ॥

अर्थ. हे? प्रवीण, संपूर्ण स्नेहने लीधे जेम जेम तमारी यादगीरी थायछे, तेम तेम विरह आतिशे वधतो जायछे, ते मानो के जेम पुरना तेलथी दिवानो प्रकाश वधतो होयनै! ॥ २५ ॥

अथ मित्रोक्त समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

ज्वाल बनीं बिरहा बडवानल, आंसुन लेर लगी प्रसरें ॥

धीरज बेट डुबावनकों मकरध्वज मीन कलोल करें ॥ नाउ मनोरथके न चलें मग, नेहकि भौंर अरूझ परें ॥ प्यारे प्रवीन बीनां तन सागर, सागरकी समताजु धरें ॥ २६ ॥

अर्थ. विरह रूप वडवानळ अग्नीनी झाळ बनीछे, आंसु रूप मोजा उपजी उपजीने पसरता जायछे, धीरजता रूप बेटने डुबाडवा सारु कामदेव रूप मच्छ कलोल करेछे, रस्ते स्नेह रूपी मोटी भमरीनी घुचवणी आडी आवीपडवाथी मनोरथ रूप वाण चाली शकतुं नथी, एवी रीते एक प्राण प्यारी प्रवीण विना महाराजा रससागरनुं शरीर समुद्रनी तुल्यताने धारण करेछे. ॥ २६ ॥

अथ प्रतिपालंकार ॥ गाहा ॥

रेरे धिपणा मंदो ॥ चंदो किय वंदन सरभरियं ॥
एयं कला चलायं ॥ दिन दिन कला बढ्ढियं अबला ॥ २७॥

अर्थ. हे? मंद बुद्धिवाळा कवीओ आ चंद्रने स्त्रीना मुख सरखो कह्यो एज विरुद्धपणुंछे, केमके चंद्रनी कळा चळ होवाने लीधे दिवसे दिवसे घटती जायछे, अने अबळाना मुखनी कळा तो दिन पर दिन वधती जायछे. ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसेंही चरचा चलत, दिन बीतत दुहु ठोर ॥
पत्र लिखत एकेक प्रति, बढ्यो विरहको दोर ॥२८॥

अर्थ. बन्ने ठेकाणे एवीरीतनी चर्चा चालवामांज दिवस गुजरेछे, ने बन्नी परस्पर पत्र लखी मोकलवाना प्रसंगथी विरहनो वेग वधी पड्योछे. ॥ २८ ॥

॥ गाहा ॥

सागर कलाप्रवीनं ॥ व्यापित विरह दशा वर्नन विधि ॥

त्रयं त्रिंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ २९ ॥

अर्थ. महाराजा रससागर तथा कळाप्रवीणने व्यापेली विरह दशाना वर्णन संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी तेत्रीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २९

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे दंपति विरह दशा वर्ननं नाम त्रय स्त्रिंशतिमो लहरं ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां त्रयस्त्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३३ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद॥ पुष्पिताग्रा॥

विरह दुखथि दंपती तपाशे, अति ठबका विधि आदिने अपाशे ॥
मळि निज जन वेसशे अवाशे, शुभ लहरी चोतरीशमां गवाशे ॥

अथ उपालंभ भेद ॥ दोहा ॥

पाती प्रेम एकेक प्रति, आवतहे इहि रीत ॥
करत शोच चितमें किते, बासर भये वितीत ॥ १ ॥

अर्थ. एवी रीते एक बीजा उपर प्रेमना पत्रो हमेशां आवेछे, ते वांची वांचीने मनमां शोक कर्या करेछे. एम शोक करवामांज केटलाएक दिवसो वीती गया. ॥ १ ॥

रेंन द्योस नेंन न लगे, हें न कछू सुख चेंन ॥
सेंन भरे बिछुरें दुहू, लगे उपालंभ देंन ॥ २ ॥

अर्थ. रात दिवस आंख्यो मळती नथी, एटले निद्रा आवती नथी, तेम कोइ उपायथी सुख चेन पडतुं नथी, केमके कामथी भरपूर भरेला बेहु जण एकठां मळीने जुदां पडी गयां, तेथी जुदी जुदीरीते परमेश्वर विगेरे देवोने ठबको देवा लाग्यां. ॥ २ ॥

अथ तत्र प्रथम प्रवीनोक्त उपालंभ भेद ॥ कर्ताउपालंभ ॥ परिसंख्यालंकार ॥ सवैया ॥

देह जुदाइ करीतो कहा मन, एह जुदो न कबें परिहें ॥ नें ननसें तसमीर जो सागर हें जु, लखी सु नहीं टरिहें ॥ ध्यां न लगो वह बानिकको सोइ, अंगके संग लगो जरिहें ॥ क्योंरे गुमांन करे किरतार अबें करि कोप कहा करिहें ॥३॥

अर्थ. शरीरनी जुदाई करी तेथी शुं थयुं! पण आ मन क्यारेय जुदु पडशे नहींतो, आ आंख्योए जे प्यारा सागरनी तसवीर जोइछे ते ताराथी टाळी नहीं टळे, नें ए वानकनुं जे ध्यान लागी रह्युंछे ते तो आ शरीरनी साथेज बळशे, तो हे? जगत्कर्त्ता परमेश्वर शामाटे गर्व करेछे! हवे कोप करीने अमने तुं शुं करीश! ॥ ३ ॥

अथ परिकरांकुरालंकार ॥ कवित्त ॥

सागर अताग सो न, चातुरहू तर्यो जाय, मरें पार पर्यो जाय, ताछिनहूं मरियें॥मेरहूको फेर बिनां,पायहू न पर्यो जाय, मरें लाग गिर्यो जाय, गिरहूतें गरियें ॥पर बिन पंछीहूतें, नभहू न चढ्यो जाय, नभनको नेचो पाय, नभ हूतें परियें ॥ पति पति जपि जपि, तपि तपि हार्यो तन, किरतार टार अंक फेरहूं न करियें ॥ ४ ॥

अर्थ. समुद्र अतागछे, ते चतुर पुरुषोथी पण तर्यो जाय एवो नथी. ने जो मरवाथी पण पार पडाय तो ते क्षणेज मरीये, मेरुना फेरने वगर पगे फराय नहीं ने जो पडवानो लाग मळे तो पर्वत उपरथी पडीये, पांख विनाना पंखीथी आकाशे चढ्युं जाय नहीं पण जो आकाशनो छेडो पामीए तो आकाशेथी पडीये, पति पति एवी रीते जपी जपी ते-

मज तपी तपीने शरीर हारी गयुं, तो पण सिद्धी मळी नहीं, पण जो सिद्धि मळी होयतो कीरतारना लखेला अंक फेरवीने न करीये. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

हरता करता कहतहें, सोउ न साच विचार ॥
नेंन नीर अजहुं न मिटें, बिरही कहा बिहार ॥ ५ ॥

अर्थ. सर्व लोको परमेश्वरनें कर्त्ता हर्त्ता कहेछे, तेज साचो विचार नथी, केमके जो ते हर्त्ताछे तो अमारी आंख्योमांथी हजुसुधी वेहेता आंसुं केम मव्या नहीं, अर्थात् ते आंसुने केम हरतो नथी! नें जो कर्त्ताछे तो अमारो विरहीनो वियोग भांगीने विहार केम करावतो नथी! ॥ ५ ॥

अथ विशेषालंकार ॥ इंद्रोपालंब ॥ सवैया ॥

हे मतिमंद पुरंदर ये अबला पर आज कहा बल बंध्ये॥ ना विरही बिरही कबहू बिरही जनको सुरसें उर बंध्ये॥ ना ढिग सागर मिंत अली तब, या दिनमें सुख ऐसो निंध्ये ॥ कांम कमांन गही इतनें पर, चातुक बांन कमांन हि संध्यो ॥ ६ ॥

अर्थ. हे! मंद, बुद्धिवाला इंद्र, अबळा उपर आज आ शुं बळ बांध्युं छे! तुं विरहवान नथी, तेम [illegible] छोडदी विरह थयो नथी जणातो, केमके विरही जननो तो रस साथेज [illegible] दिगेरेमां ते [illegible], पण प्रिय मित्र सागर रूप भ्रमर म्हारी पासे नथी तेथी आ दिवसमें आवुं सुख नमधेलुंछे, वळी एटला उपर कामदेवे कमान पकडीने बापैया रूपी बाण साध्युंछे.॥ ६ ॥

अथ व्याघातालंकार ॥ चंद्रोपालंब ॥ सवैया ॥

दधि कोक सरोजन शोक निधांन मधूकरकों मुरझावतहें॥
दरदी तनकी मनकी बतियां, सो उलूकको मिंत न पावतहें॥

कछु शंक विनां धर कोंन धरें, हर कंकनसो शिर आवतहें॥ बिरही जनकी विनती सुनिकें, शशिकों न कोऊ समुझावतहें ॥ ७ ॥

अर्थ. समुद्र, चकवा अने कमळोने शोकना भंडार रूप, भमराओने मुंझावनार, आ दरदीनां तन मननी वातने तो घूडनो मित्र जाणतोज नथी, कांइक चीक विनातो जगतमां एने कोण धरे! पण आतो महादेवजीना कंकण रूप थयोछे, तेथी माथे चडतो आवेछे, अमारी विरही जननी अरजी सांभळीने पण आ चंद्रमाने कोइ समजावतुं नथी॥ ७ ॥

अथ पर्यस्तापन्हुति अलंकार ॥ सवैया ॥

हें न सुधा शशि पुंज हलाहल, बूझहुं चक्क पुकार करेंगो ॥
देखतहीं दुखदायक तूं यह, कंज सबें बिधि साख भरेंगो ॥
लाजत हे न इतें पर आवत, साज कला कहा मोहि करेंगो॥
सागर मिंत मिलेंगे तबें लग, तेरो रिपू द्रगतें न टरेंगो ॥
॥ ८ ॥

अर्थ. हे? चंद्रमा तुं अमृतमय नथी तुंतो केवळ हळाहळ झेरनोज समूहछो! जो पुछ तो आ चकवो पुरावानी साथे पोकारकरी उठशे, तुं तो देखीनोज दुःख दायकछो! ते छिपेंजाप, भ्रळां कमळो साक्षी भरशे? लाजनी नथी ने उलटो उपर न न आवेछे, तो कळा सजीने हुंने तुं शुं करनारछो! समज के प्राण मित्र सागर, मळशे त्याहां सुधीतो तारा शत्रु रूप काजळ अथवा अंधारुं म्हारी आंख्योमांथी टळशेज नहीं. ॥ ८ ॥

अथ शिक्षाक्षेपालंकार ॥ ब्रह्म उपालंभ ॥ कवित्त ॥

करेहे अधीन कछु, परेहे न ब्रह्म कल, डरेहे न चिंत अंत,

प्रस्तावना.

आ मुळ ग्रंथ हिंदुस्तानी भाषानी कवितामां राजकोटना महाराजा मेरामणजीए संवत १८३८ मां आरंभ करीने रचेलो जेनी साठ लेहेर इडरना दरबारी शीलाप्रेसमां इसवीसन १८६७ मां छपाइ हती ते-थी घणा विद्वानो तथा सरदारो आ ग्रंथ पुरो वांचवानी घणी चाहना राखेछे. पण तेमानी केटलीएक कवितानो अर्थ घणो मुशकेल होवाथी अर्थ साथे पुरो ग्रंथ छपावी प्रगट करवा घणा सज्जनोए भलामण कर-वाथी राजकोटना रहीश रा. हरीशंकर प्राणजीवन जे के राजकोटना राज्यना आश्रयथीज घणी पेढीओ थयां पोतानुं प्रवीपणुं मानीने पोताना प्राचीन राजानी अपूर्व कवितानी करेली मेनत दुनीआने बतावी आगला राजाओ केवा विद्वानो हता. एम देखाडवा गूजराती भाषांतर साथे पुरो ग्रंथ छपावी बार पाडवानुं काम पोताना भाइ शास्त्री चतुर्भुज प्राणजीव-नने सोंप्युं तेमणे राजकोटना बारोट कवि रणमल अदाभाइ पासे अड-तालिश लहेरोंनी गूजराती टीका करावीने पोताना "राजकोट काठी-यावाड प्रिन्टिंग प्रेसमां" छपावी. पण तेमां केटलाएक छंदनो अर्थ बाकी रही गयो हतो ते तथा ते पछीनी लहेरोंमाना पण केटलाएक छंदनो अर्थ न समजायाथी तेमानां ५० कवित, सवैया, दोहा विगेरेनी बने चोपडियो जूदी छपावीने कच्छ, भावनगर, विगेरे काठियावाडमां तथा गूजरात अने मुंबाइ मारवाड विगेरेमां ते भाषाना जाणनार विद्वानोने अकेकी नकल पहोचाडी. ने लख्युं के तेमांथी जेटला कवितनो अर्थ समजाय ते कृपा करीने लखी मोकलशो.

पण मन मानतो अर्थ लखाइने कोइ जग्योयेथी आव्यो नही. छेवट अमदावादमां कवीश्वर दलपतराम डाह्याभाइए ने बधा छंदोनो अर्थ निःशंशय करी आप्यो तथा लहेर ४२ थी ते ८४ सुधीनी टीका

प्रस्तावना.

पण तेमनी पासे करावीने अमदावादमां आ ग्रंथ पूरो छपाव्यो. ते टीका करावतां तथा छपावतां घणुं खरच थयुं तो पण घणो वखणायेलो आ उपयोगी ग्रंथ प्रगट थवाथी अमारा मनने शंतोष थयोछे.

आ ग्रंथमां रस, अलंकार, नायकाभेद, अनेक जातिना छंद, नाडिपरीक्षा, अश्वपरिक्षा, शुकनावळि, चमत्कारी गणित, नक्षत्र आकार, तारासंख्या, विगेरे अनेक प्रकारनी चतुराइ तथा नीति अने ईश्वर भक्ति तथा अष्टांग योगनो उपदेश छे. पण मुख्य तो प्रेमनिरूपणनो आ ग्रंथ छे. ते चोराशीमां लहरीमां विस्तारथी लखेलुं छे. एटले आ ठेकाणे वधारे लखवानी अमे जरूर जाणता नथी. आ ग्रंथ पोताना नाम प्रमाणे खरे खरो प्रवीणतानो सागर छे. एम वांचवाथी जणाशे, वळी आ ग्रंथनी टीका वगरनी मूळ नकलो ५०० जूदी छपावी छे.

आ काममां जाडेजा प्रतापसिंहजी मेरुजी श्री गवरीदड दरबारे पोताना जूना पुस्तकनो चोपडो जे शुद्ध ने सारो वखणाय छे ते अमने आपी मदद करी छे तेथी तेनो उपकार मानवामां आवेछे.

आ ग्रंथकर्त्ता माहाराजा मेरामणजीना पुत्र भाभाजी तेना पुत्र सूराजी, तेना पुत्र बीजा मेरामणजी तेना पुत्र माहाराजा बावाजीराज साहेब हाल राजकोटमां राज्य करेछे. ईश्वर तेमने सुखी राखो तथास्तु.

॥ समाप्तः ॥

सही.

मालेकनी वती

भट गोविन्दराम गौरीशंकर.

प्रबीनसागर ग्रंथकी अनुक्रमणिका.

लहरी   प्रसंगानुक्रम.

प्रसंगानुक्रम.

करताको राजहैं॥जोई जोई आवे मन, सोई सोई लीजें कर, कोई दिन ओई संग, दरदी अवाजहैं ॥ सागर प्रवीन को क, शोककी न जानतहैं, कोकनद नंद तोय, तोककी नवा जहैं ॥ मानरे अजांन तेरो, काल न रहेगो मांन, जाहिर ज हांन आनदांन तेरी आजहैं ॥ ९ ॥

अर्थ. हे? ब्रह्मा, आटली बधी अनीति करेछे, ते तुंने कांइ खबर पडती नथी! मनमां डरतो नथी पण अंते जगत्कर्त्ता परमेश्वरनुं राजछे, जे जे मनमां आवेछे ते ते करेछे, ते साथे कोयदीवस दरदीनी पण फरीयाद होय, तो ते उपर तो मुलगुं ध्यानज देतो नथी, अरे! सागर अने प्रवीण रूप चकवा, चकवीना शोकनी वातनेतो तुं जाणतोज नथी, माटे हे? कमळना पुत्र ब्रह्मा! तुंने तो बाळकोनीज उपमा देवी घटारतछे, हे? अजाण हजी मान मान! काले तो तारुं मान रेहेशे नहीं, केमके आ दुनीयामां जाहेर रीते तारी आण दाण तो आजजछे. ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

चतुर नहींरे चतुरमुख, नहीं प्रेम पहिचांन ॥
सागर मिंत चकोर शशि, ताय न मिलवे आंन ॥१०॥

अर्थ. हे? चार मुखवाळा ब्रह्मा, तुं चतुर नथी जणातो, तेम तुंने प्रेमनी पण ओळखाण नथी, एम न होयतो सागर रूप चंद्रसाथे प्रवीण रूप चकोरने लावी ने मेळवी दे नहीं! ॥ १० ॥

पर्यस्ता पन्हुतिअलंकार ॥ सवैया ॥

मूरति हे मनकी मनमें, लगनीं अगनीं झरके तपनेंमें ॥ माल लियें मुख नांम उचारत, वासर वीततहैं जपनेंमें ॥ या तनको मिलवोइ मिट्यो अरु, वातनको मिलवो सपनेंमें ॥

ब्रह्म वडो इसकीमें अजांन वियोग ले भाल लिख्यो अपनेंमें ॥ ११ ॥

अर्थ. मूरती तो मननी मनमांजछे, ने लगनी तो हृदयमां झरता अग्नीना तापथी तपवामांज रहोछे, हाथमां माळा लइने म्होढेथी नामनो उच्चार कर्या करीए छीए, ने जप करवामांज दिवस गुजरेछे, आ शरीरनुं मळवुं तो मटयुं पण वातनुं मळवुंय सोणामां रह्युं, माटे हे? प्यारा सागर, आ ब्रह्माज वडो इशकीना मार्गथी अजाण देखायछे, के जेणे वियोग लइने आपणाज कपाळमां लखीदीधो. ॥ ११ ॥

अथ उल्लासालंकार ॥ सवैया ॥

खारो कियोहे पयो निधिकों पय कारो कियो, पिकसो अनु मांनों ॥ कंटक डार गुलाव कियो अरु, चातक बारही मास त्रसांनों ॥ पंकको अंक कियोहे मयंकमें, आग कियोहे चकोरको खांनों ॥ सागर मिंत सबें परखा करि, हंस पती हरबाहन जांनों ॥ १२ ॥

अर्थ. जळना भंडाररूप अति गंभीर समुद्रना पाणीने खारुं कर्युं, ने मधुर अवाजथी सुख उपजावनार कोयलने काळी करी, ए उपरथीज ब्रह्मानी बुद्धि विशे अनुमान करो! वळी खुसबोदार गुलावनी डाळ्योमां कांटा कर्या, ने बपैया जेवा उत्तम पक्षीने बारे मास तरश्यो राख्यो; ठंडा किरणोथी प्रकाश करी सुख उपजावनार चंद्रमां गारानो डाग कर्यो, चकोर जेवा मनोहर पक्षीने वास्ते आगनो खोराक कर्यो, तो हे? प्रिय मित्र सागर, सर्व वाते परिक्षा करीने हंसना पति ब्रह्माने महादेवजीना वाहन जेवा जाणो, अर्थात् बळद जाणो. ॥ १२ ॥

अथ भ्रमापन्हुति कामदेवोपालंभ ॥ कवित्त ॥

घटा हें न केश वब्र, छटा हें न बेसर चे, कुच हें न अंमृतके

कुंभ धरे भर भर ॥नैंन हें न एंन येजु, कज्जर कलंक नांहि ज्योंन हें न तन जोत, भूषन न कर कर॥भाल हे न इंदु लाल विंदु हें न ज्वाल नैंन सुरसरीन नैंनको नीर वहें झर झर ॥ कौंनपें चढाई आज, करीहें तिमंगलेश नैंन इंद चंद ईश कांपतहें थर थर ॥ १३ ॥

अर्थ. आ कांइ मेघनी घटा नथी एतो केशछे, आ कांइ वज्रनी शोभा नथी एतो नाकमां पेहेरेलुं नकवेशरछे, आ कांइ अमृतना कळश भरी भरीने मूक्या नथी, एतो स्तनछे, आ कांइ मृग नथी एतो आंख्योछे, आ कांइ कलंक नथी एतो काजळनी रेखाछे, आ कांइ तेज नथी, एतो शरीरनी कांतिछे, आ कांइ कीरणो नथी, एतो घरेणाछे, आ कांइ चंद्रमा नथी एतो कपाळछे, आ कांइ अग्नी नेत्र नथी एतो लाल रंगनुं विंदुछे, आ कांइ गंगाजी नथी, एतो नेत्रमांथी झरझर आंसु वेहेछे, हे? मघरमच्छना इश्वर कामदेव, आज कोना उपर चडाइ करीछे? तारा नेत्रथी इंद्र चंद्र अने शंकर, एओ थरथर कंपेछे. ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

सरपति सुरपति हें न ॥ नाहि मकरपति हीमकर ॥
सरब गती सरवेंन ॥ चढ्यो कोप कर कौंनपें ॥ १४ ॥

अर्थ. हे! पंचवाणना पति, आ सुरपति इंद्र नथी, हे? मघरमच्छना पति, आ हीमकर चंद्रमा नथी, हे? सर्व ठेकाणे गति करनार काम, आ इश्वर नथी, त्यारे तुं कोप करीने कोना उपर चड्योछो? ॥ १४ ॥

अथ सागरोक्त उपालंभ भेद द्रष्टांतालंकार

कर्त्ता उपालंभ ॥ सवैया ॥

ग्रीषमके गिरिके तरके पर, दाह लगें तन एसें दहेगो ॥
पावसके घनकें वनके सम, अंबक अंब प्रवाह वहेगो ॥

सोत हरें गनि जैसी भई तुम, आपकि आप सबैंहि सहे गो ॥जो विरही मनकी न लहो हरि, कौंन पराइ पुकार कहेगो ॥ १५ ॥

अर्थ. ग्रीष्म ऋतुना तापथी जेम पहाड माहेला वृक्षो उपर दा लागेछे, तेम कदाचित् आ शरीरने बाळशो, अथवा चोमासाना वर्षादने लीधे वनमांथी जेम पाणी वहेछे, तेम आ आंख्योमांथी आंसुनो प्रवाह वेहेवरावशो, पण शीयाळामां सीता हराइजवाथी जेवी तमारी स्थिति थइ गइ हती तेवीज रीते पोताने माथे पडेला दुःखने सर्व लोको पोतेज सहन करशे, तो हे? हरी जो विरही जननी पीडानी वातने नहीं जाणो तो पछे कोण पराइ फरीयादीनी पोकार कहेशे? ॥ १५ ॥

अथ स्मृतिमान् अलंकार ॥ सवैया ॥

कच्छ भये परवेश दधी कर, भूलगये कमला हरि लाई॥ रावन दुष्ट हरी वनिता वन, प्रेमकि पीर तबेंउ न पाई ॥ विप्रके संग वहे पुर कुंदन, या दिन या दिन आ दिन आई॥ प्यारे प्रवीन प्रवीन पुकारत, क्योंन सुनों अरजी यह सांई ॥ १६ ॥

अर्थ. हे? हरी, काचवानुं रूप धरी समुद्रमां पेशीने जे, कमळाने लाव्या ते भूलीगया, तेम वनवासनी वखते वनमांथी दुष्ट रावण सीताने हरी गयो, तोपण प्रेमनी पीडाने न जाणी? एक गरीब ब्राह्मणनी साथे रातोरात कुंदनपुर तरफ चाली नीकळ्या ए दिवस, पण तमने आवा अमारा दिवस जोइने याद नथी आवता? अमेतो, हे! प्रवीण हे! प्रवीण एम पुकारीए छीए, तो हे? परमात्मा, आ अमारी अरजी केम सांभळता नथी? ॥ १६

अथ शिक्षाक्षेपालंकार ॥ कवित्त ॥

चकोरी ज्यों हेरि हेरि, चातुकी ज्यों टेरी टेरी, जगनूं ज्यौं

घेरी घेरी, दरदी दहतहे ॥ सूर शशि सागर समीरसें न पावे सुख, जाके शीश बीतत सो सबही सहतहे ॥ जानीहे तो बोतहे न जाने तो प्रबीनहे न, उलतेको पानी सो बरेदन बहतहे ॥ राज नीत रीत ऐसें, चलेगी अनीत कैसें कोउ किरतारसें पुकार न कहतहे ॥ १७ ॥

अर्थ. चकोरीनी पेठे जोइ जोइने, बपैयानी मादानी पेठे पोकारी पोकारीने, अने पतंगियानी पेठे घेरीघेरीने, (वियोगी) दरादियो बळेछे, तेओ सूरज, चंद्र, समुद्र, अने पवनथी सुख पामतां नथी, अर्थात् चकोरी सूरजथी, चातुकी चंद्रथी, पतंगिया समुद्रथी, अने विरहनां दरदी त्रिविधि पवनथी सुख पामतां नथी, तेओमां जेने जेने माथे दुःख वितेछे, ते बधुं सहन करेछे, पण भरतीनुं पाणी पर्वणीने दहाडेज वहेछे, अर्थात् चडतो अमल थोडो वखत रहेछे. एटलो मर्म जो ते ब्रह्मा जाणशे, तो घणुंछे, अने जो नहीं जाणेतो ते चतुर नथी, पण कोइ परमेश्वरने पोकारीने एटलुं कहेतुं नथीके ब्रह्मानी राजनीतिमां आवी अनीति केटला दहाडा चालशे १७

अथ शिक्षाक्षेपालंकार ॥ सवैया ॥

मिंत विना ज्यु तपै तलफै तन, धीमर जाल गहे मनु माछे॥
ऐसि दशा न दया तुमकों ब्रज, दीनदयाल कहावत आछे ॥
बारहि बार पुकार प्रबीनज्यु, बार करो न बिचारहो पाछे॥
पापनि साप बियोगिनके हरि, व्हैगो बिछोह तुह्मे अरु लाछे ॥ १८ ॥

अर्थ. मानो के मच्छि मारे जाळमां माछलां पकड्यां होय. तेम मित्र विना शरीर तपेछे, ने तरफडेछे. एवी दशा थई तोपण तमने दया नथी, अने ब्रजमां दिनना दयाळ सारा कहेवाओछो, अमे वारे वारे प्रवीण प्रवीण

शोकारिये छिये, पण तारे चडता नथी, एथी पाछळथी पस्ताशो. अने हे हरि? वियोगीना आपना पापथी तमारे ने लक्ष्मीने वियोग थशे.॥१८॥

॥ अथ ब्रह्म उपालंभ व्याघातालंकार ॥ सवैया ॥

हे न हीतू हितकी नहि मानत, चिंतमें कोन निआओ धर्योहे ॥ कैसें जवाब करेगो तहाँ, किरतारके दंड कछू न डर्योहे ॥ कोन गुनो तकसीर कहा, परवीन दधी संग वेर कर्योहे॥ छांड मरोर अजों चतुरानन, तेरो पिता इत पाय पर्योहे ॥ १९ ॥

अर्थ. (हे ब्रह्मा?) तुं अमारो हेतु नथी, अने हितनी वात मानतो नथी, तें मनमां केवो न्याय धार्यो छे? तुं परमेश्वरना दंडथी कांइ बीतो नथी, पण त्यां केवी रीते जवाब करीश? तें प्रवीण ने सागर साथे वेर कर्युंछे, पण तेओनो शो गुनो? ने शी तकशीरछे? हे ब्रह्मा? हजी तारो मरोड मुकीदे, केमके तारो बापतो अांहीं आवीने पगे पड्योछे, अर्थात् कमळ तो प्रवीणना पग साथे उपमानो संबंध राखेछे.॥१९॥

॥ व्याघातालंकार ॥ सवैया ॥

जाय मिलीहे सुता परवीनसें, भ्रात उहां वसि ध्यान धर्योहे ॥ तातको तात रहे नित नेनन, तातके भ्रात मिलाप कर्योहे॥ तातके भ्रातके मिंत किते तह, तात रहे नित पाय पर्योहे ॥ रे विधि नीच कपूत कुलच्छंन मंद मती तिनसें अगर्योहे ॥ २० ॥

अर्थ. तारी दीकरी सरस्वति ते जइने प्रवीणने मळीछे, "मुखमां रहे छे" अने तारो भाइ जे कमळथी उपजेलुं मोती तेणे तो त्यां (नथमां) वसीने ध्यान धर्युंछे, तारो बाप कमळ, तेनो बाप जळ ते प्रवीणनी आंखमां (आं-

सुरूपे) हमेशां रहेछे; तारा वापनो भाइ जे चंद्रमा तेणे पण (चांदलारूपे) तेनो मेळाप कर्योछे, तारा वापना भाई चंद्रना मित्रो जे ताराओ ते केट-लाएक (ताराटवकी अथवा हीरारूपे) त्यांछे, अने तारो वाप रोज प्रवीणने पगे पड्यो रहेछे, (कमळ जेवा पगछे) अरे निच, कपूत, कुलक्षणवाळा, मंदमतिवाळा, ब्रह्मा, एवी प्रवीण साथे तुं लडेछे?॥२०॥

॥ असंगत्यलंकार ॥ सवैया ॥

हाजर जादु निहारत नेन या, प्रेमकि साहि परी हिय आ-ती ॥ साह सनेह सु तख्त सिंहासन; ढारत पंग वजीर वि-छाती ॥ दोरत दोउ कुजाक दशो दिश, चोर न पाय चहू-मुख घाती ॥ देखतही द्रग आयगयो सव, या कर मिंत प्र-वीनकि पाती ॥ २१ ॥

अर्थ. नशीव लखनार चोरने पकडवाने हजरतनो दाखलो--आ नेत्र हजरतना जादुनी (क्रिया) जुएछे,त्यां प्रेमनी रुसनाइ हैयामां आवीने पडी, पगवगर चालनार मनरूपी वजीर विछानुं पथरावेछे, अने सिंहासनना तख्त उपर स्नेहरूपी पादशाह आवीने वेठा,अने संकल्पविकल्परूपी वे प्यादा (चोरने पकडवासारुं) दशेदिशामां दोडवा लाग्या, पण घातकी ब्रह्मारूपी चोर मळ्यो नहीं, एटलामां प्रिय मित्र प्रवीणनुं पत्र हाथमां आववाथी तेमां जोतांज वधुं नजरे आवी गयुं.॥२१॥

॥ संभावनालंकार ॥ सवैया ॥

पन्नग पाओ तवे सव पोन, पुकारतही पतियां नहि ल्यावे ॥
वीरन वांध गडो धरनी, हनुमंत प्रवीन अजों न मिलावे ॥
अंत कृपान कटो विधिके कर, फेर न काहु वियोग वनावे ॥
चाहे सो तूं कर सागररे,करतार ज्यु एक दिनां फुरमावे॥२२॥

अर्थ. ज्यारे पोकार करतां पवन, पत्र लावतो नथी, त्यारे बधा पवनने नष्ट थाइ जाओ, अने हनुमानजी प्रवीणने हजीसुधी मेळवता नथी, त्यारे ब्रधा वीरोने बांधीने पृथ्वीमां दाटो. अने छेल्लिवारे तरवारे करीने ब्रह्माना हाथ कापो, के फरीथी कोइने वियोग करावे नहीं, अरे मारा जीव सागर, जो परमेश्वर एक दिवस हुकम करवानुं तने फरमावे तो तुं चाहे तेम कर.॥२२॥

॥ अथ कलम उपालंभ अनूपलब्धि संकर परिकरां-
कुरालंकार ॥ सवैया ॥

देखनके द्रग बाउरे डोलत, प्रेमके पान भये मतवारे ॥
याहि सबी सु कवी न भईहे, प्रवीन प्रवीन प्रवीन पुकारे॥
फेर विचार कियो हियमें तव, तेरि नहीं तकसीर चितारे ॥
या कलमें चलमें न रीझायहे, आद उने अरु बैर हमारे २३

अर्थ. प्रेमनुं पान करवाथी उन्मत्त थयेली आंख्यो (प्रवीणनी छबिने) जोवाने वास्ते दिवानी थइने फरेछे, अने आवी छबि तो कोइ वखते बनेलीज नथी, (तेथी जीभ) प्रवीण, प्रवीण, प्रवीण, एम पोकार करेछे, फरी मनमां विचार कर्यो, त्यारे लाग्युं के हे चितारा, एमां तारी तकशीर नथी, आ कलमें पोताना चालवामां अमने रीझव्या नथी, कारण के तेने अने अमारे असलनुं वेरछे, मतलब के कलम मुसलमानी शब्दछे, अने अमे हिंदु छिये.॥२३॥

॥ अथ अद्रष्टोपालंभ जातिस्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

पत्र प्रवीनकि साथ मरे पल, आध हिये न अराध विसारे॥
मीन मनों जल छीन जिये तउ, दीनकि कोन पुकार बिचारे॥
संग सदा वसिये हसिये मिलि, एसें अद्रष्ट करे न दगारे ॥

आस उसास भरी अखियां द्रग,फेर कहूं इक वेर निहारे२४

अर्थ. प्रवीणनी साथे पत्र साधीसाधीने मुवा, अने (अमे) एनी आराधना अरधी पळ पण विसारता नथी,जाणे के माछलुं जळ खुटवाथी जीवे, एम जीविये छिये, तोपण गरीबना पोकारनो कोइ विचार करतुं नथी,अने हमेशां (प्रवीणनी) साथे रहिये, हशिये अने मळिये, एवुं दगाबाज नशीब करतुं नथी, मोढे श्वासलैये छिये, अने आंख्यो भरिये छिये, अने चाहिये छिये के आ आंख्ये फरीने एकवार क्यारे निरखिये?॥२४॥

॥ अथ संशयाक्षेपालंकार ॥ सवैया ॥

अंग उमंग तरंग न भो अरु, रंग न भो परजंकनको ॥
वेननको रस रेन न भो अरु, चेन न भो कर कंकनको ॥
जावक नागन दाग न भो ज्यु,सुहाग न भो हरि लंकनको॥
मिंत प्रवीन मिलाप न भो तव,वंक सवे विधि अंकनको॥२५॥

अर्थ. शरीरमां उमंगनो तरंग थयोज नहीं,अने पलंगनो रंग थयो नहीं, रात्रिमां वचननो रस थयो नहीं,अने प्रवीणना हाथना कंकणनुं चिन्ह (मारा शरीर उपर) थयुं नहीं, एना पगना अळतानो तथा एना नेत्रना काजळनो डाग (मारा शरिरमां) थयो नहीं, अने सिंहना जेवी केडना लांक वाळी प्रवीणनो सौभाग्यरूप हुं थयो नहीं, अने प्रवीण मित्रनो मेळाप न थयो त्यारे ते बधोय ब्रह्माना आंकनो वांकछे.॥२५॥

॥अथ कर्त्ताउपालंभ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

कररे उनके गुनकी गुननी जिय, ध्यान हमेश वहे धररे ॥
धररे उन मूरति आंखनमें, अवही तो गयो सुख वीसररे ॥
सररे उन आयस राख चढाय ज्यु, एसि करींहे विडंवररे॥
भररे अति सास उदास भयो हिय, याद प्रवीन प्रभा

कररे ॥ २६ ॥

अर्थ. हे जीव ! ए प्रवीणना गुणनी माळा कर, अने हमेशां एनुंज ध्यान धर, अन एनीज मूरति आंखमां धर, केमके हवेतो सुख विसरी गयुंछे, विश्वंभरे आवी (दशा) करी, माटे तेनी आज्ञा माथे चडावी राख्य, उदास थयेला हैयामां अतीशे श्वासोश्वास भर्या कर, अने प्रवीणनी छबिने याद कर.॥२६॥

॥अथ चंद्र उपालंभ गूढोक्ति श्लेश अंतर्लापिका॥दोहा.

समजा हिन राकुं मयनर, यह न लहत्त अजान ॥
संकर शंकर अंकपर, कर मयंक कर बान ॥२७॥

अर्थ. समज्या वगर आ राहुछे, एम माननार आ अज्ञानि चंद्र मर्म लेतो नथी, मतलब के जाणतो नथी, तेथी (संकर) मिश्रित अने (शंकर) अगीयार अक्षर उपर, मतलब के "सजानकुयर" अने 'महिरामन' उपर पोतानी किरणोनां बाण कर्यांछे, एमां पहेला चरणना अगियार अक्षर-मांथी एक लेवो ने एक पडचो मुकवो, ए रीते अक्षर लेतां ए बे नाम नीकळे छे.॥

अर्थ बीजो. प्रेमना (राकुं) रस्ताने समज्या वगर अज्ञानमय नरछे, ते आटलुं समजता नथी के सुखकर सुखकर(एना मित्रना नामना विशेषणना) अक्षरो उपर करमना आंक कुरबानछे. अर्थात् मित्रने वास्ते नशीबमां लखेलुं सुखदुख वेठनुं कबूलछे.॥२७॥

॥अथ पर्यायोक्ति प्रथम भेद अलंकार ॥ छपय॥

सागर कलाप्रवीन, मिंत अरु कुसुमावलि पुनि ॥
उपालंभके भेद, लगी इहि विधि चरचा धुनि ॥
बन लिख पठवत पत्र, एक एकहि प्रति आवे ॥

लग्यो सु हित संधान,ओर कछु नांहि सुहावे ॥
सुख साज काज भूले सकल, मिंत मिंत साधन लगे ॥
ज्यों ज्यों वितीत होवत अहर, जोत प्रेम त्यों त्यों जगे॥२८॥

अर्थ. सागर तथा कळाप्रवीण, अने सागरना मित्र तथा कुमुमावळी, ए चारेजण वच्चे इश्वरादिकने ठवको देवाना भेदनी चरचानी धुनि एवी रीते लागी रही, अने तेओना लखेला पत्र एक बीजा उपर आवे छे, तेने लीधे प्रेमनुं संधान लाग्युं,तेथी बीजुं कांइ गमतुं नथी. ने सुखनो साज तथा सघळां काम भूली गयां. अने मित्र मित्र एवीज साधना लागी रही, अने जेम जेम दहाडा वीतेछे. तेम तेम प्रेमनी जोत जागेछे. ॥२८॥

॥ गाहा ॥

उपालंभ अनुमानं, मिंतह चिंत उक्तिकी चरचा ॥
चतुर त्रिंश अभिधानं, पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥२९॥

अर्थ. ईश्वरादिकने ठवका देवानुं अनुमान तथा मित्रना चित्तनी उक्तिनी चरचा संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ चोतरीसमी लहेर संपूर्ण थई.॥२९॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे दंपति उपालंभ भेदो नाम चतुस्त्रिंशतिमो लहरं ॥ ३४ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां चतुस्त्रिंशत्तमस्तरंगः समाप्तः॥३४॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा॥

कर्युं शिवालय सागरे, आज्ञा नीती पाळ ॥
लखे लहेर पांत्रीशमी, उच्छव एह विशाळ ॥

अथ शिवालय प्रसंग ॥ दोहा ॥

दिनभर दिन एई दशा, तन छिनभर सुख नांहि ॥

मिलन मिंत कैसें बने, कीजे सोय उपाहि ॥ १ ॥

अर्थ. दिवसे दिवसे एवी दशा थई, अने क्षणमात्र पण शरीरे सुख पडतुं नथी. माटे हे प्रिय मित्र प्रवीण? आपणे मळवानुं शी रीते बने ते कहो, तो ते उपाय करिये. ॥१॥

॥ सोरठा ॥

सागर भरे सनेह, ऐसें लिखी प्रवीन प्रति ॥
उन प्रति उत्तर एह, आयो सो बरनत अबे ॥ २ ॥

अर्थ. स्नेह भरेला सागरे प्रवीणप्रत्ये उपर प्रमाणे लख्युं. तेनो प्रतिउत्तर जे आव्यो. तेनुं वर्णन हवे करूंछुं. ॥२॥

॥ अथ प्रत्युत्तर ॥ दोहा ॥

करे पुंस ऊपाउ को, अबला निबला अंग ॥
कही बात पूरव कथा, कौवा कनक भुजंग ॥ ३ ॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के पुरुष कांइ उपाय करी शके, पण स्त्रीतो अंगे निर्बळ होयछे, ते शुं करे? एम कहीने कागडो, धंतुरो, अने सर्प ए त्रण संबंधी पुरातननी एक चालती कथानी वात कही. ते एछे के पूर्वे एक विरहणी स्त्रीने ज्यारे पतिनो वियोग पीडतो हतो, त्यारे ते कागडानुं चित्र करीने एम मन वाळती हती के आ कागडो वधामणी देवा आव्योछे.तेथी मारो पति घेर आवशे. वळी ज्यारे कोयलना शब्दथी तेने पीडा थती हती, त्यारे ते धंतुरानुं चित्र करीने मन वाळती हती.के आंबानी रहेनारी कोयल आ धंतुराने जोइने जती रहेशे. एटले मारी पीडा मटशे. वळी ज्यारे त्रिविधि पवनथी तेने पीडा थती हती, त्यारे ते सर्पनुं चित्र करीने मन वाळती हती, के आ सर्प पवनने खाइ जशे,एटले मारी पीडा मटशे. विचारी अबला आटलो उपाय करी शके. एथी वधारे शुं करे?॥३॥

॥ चोपाई ॥

यह जुवावको अरथ विचार्‌यो ॥ मिलन भेद महाराज सु धार्‌यो ॥ आपहिकी हदपर इक गांऊ ॥ नेंनतरंग तासकों नांऊं ॥ तहँ पहार परचंड बिराजें ॥ गहिरी नीठ सरिता धुनि गाजें ॥ सरवर सुभग बेळ वन घेरें ॥ नीतपालहूकी हद नेरें ॥ के पशु पंछी व्रंद रहावें ॥ प्रभा शिखर हर पु रकी पावें ॥ रससागर मन मतो द्रढायो ॥ फोज सिकार चढन फुरमायो ॥ सहस बीश हय गय पैंदल सजि ॥ कि यो कूच बहु बिधि बाजित बजी ॥ मंद चलत दिन किते बिहाये॥ आखेटक खेलत उत आये ॥ सर गिरि सरित सु भग दरसाये ॥ उनही ठोर मुकांम जमाये ॥ शिल्पि सुना र उतें बुलवाये ॥ हुकुम एह महाराज कहाये ॥ इतें एक शिव थान बनाओ ॥ गुपत एक इत गुफा चलाओ ॥ निकट तहां इक बाग बनावें ॥ उतसें गुफा इतें चलि आवें ॥ ता पर महल बाग महि कीजें ॥ पुनि इनांम आपको लीजें ॥ प्रच्छन यह महाराजसु भाखी ॥ कारीगर अपनें मन रा खी ॥ हुकुम एक मंत्री प्रति दिनों ॥ कांम शिवालयको स रु कीनों ॥ ४ ॥

अर्थ. ए जवावनो अर्थ पोताना मनमां विचारी महाराजाए युक्ति पु र्वक भेदथी मळवानो मनसुवो धार्यो, पोतानी सरहद उपर [illegible] गां मछे, जेनुं नेनतरंग एवुं नांमछे, त्यांहां एक मोहोटो विशाळ, अति शोभाय मान पहाडछे, जेनी पासे पांणीथी भरपूर नदी गंभीर अवाजथी गाजेछे,

आस पास मोहोटां मोहोटां सुंदर तलावोथी ने जात जातनां विलि विगेरे वृक्ष वेलीओथी वेरागेलोछे, एटलुंज नही पण, ते पहाड नीतिपाळ राजानी सरहद पामेछे, जेमां केटलाएक पशु पक्षीओना जथ्था रहेछे, जेना शीखरनी शोभा महादेवजीना कैलासनो उपमाने धरेछे, त्यांहां जवानो मनमां द्रढ निश्चय करी महाराजा रत्नसागरे पोतानी फोजने शीकारे चडवानो हुकम फरमाव्यो, घोडा, हाथी, पायदल विगेरे वीश हजार संख्यानुं लशकर सजीने विविध वाजित्रोना अवाजनी साथेज कुच करीने चढी नीकळ्या, ते रस्ते धीमे धीमे चालतां केटलाक दिवस वीतिगया पछी शीकार खेलता खेलता त्यांहां आवीपहोच्या, त्यांतो तळाव, नदी, पहाड अने जंगल देखाणुं एटले ते स्थळे आवीने मुकाम कर्युं, पछी त्यांहांज कडीआ सुतार विगेरे कारीगर लोकोने बोलावीने आवो हुकम आप्योके आंही एक शीवजीनुं मंदिर बनावो ने त्यांहांथी एक छानुं भोयरुं चलावो? पासे एक मोहोटो बाग बनावो, ते एवीरीतिके महादेवजीना मंदीरमांथी ते भोयरुं वगीचामां आवे, तेना द्वार उपर एक मेहेल बनावो? तेमांथी गुप्त रीते महादेवजीना मंदीरमां जवाय ने पाछुं तेज रीते मेहेलमां अवाय, आ वातनी कोइने खबर न पडे एवी रीते काम बजावो आप्या पछी अमारी पासेथी मनगमतुं इनाम ल्यो, आ गुप्त वात महाराजाए कडीआओने कही, ते कडीआओए पोताना मनमांज राखीने काम सरु कर्युं, तेनी देखरेख वास्ते एक कामदारने हुकम आपीने तेने त्यांहांज राख्यो एवीरीते महादेवजीना मंदिरनो आरंभ कर्यो. ॥ ४ ॥

॥ छप्पय ॥

पुर इंन किय परवेश, उतें महाराज विलंबिय ॥
मंदर सिरो रहंत, ईश थांनक पूरन किय ॥
निकट बाग बन निरद, बीच महेलात बनाई ॥

ईश थाँनतें गुफा, आनि उनमें उमडाई ॥
कीनी दिवाल उपबन गिरद, कोट गिरद साहेशकी ॥
विप्रह बुलाय सायत सु लखि अद्दर किय अभिषेककी॥ ५ ॥

अर्थ. ते पछी ते नेनतरंग शेहेरमां प्रवेश करयो ने महाराजा पण त्यांहांज रोकाया, केटलाएक दिवस वीतीगया पछी विश्वकर्माए महादेवनुं मंदिर पुरुं कर्युं, ने मंदिरनी पासे वृक्षोथी गीच एक वगीचो वनाव्यो, तेनी वचे वृक्षोना झुंडमां अति नमुनदार मेहेलात रची, ने महादेवना देवळमांथी गुप्त भोंयरु जमीनमां खणावीने तेनुं द्वार मेहेलमां लावी मूक्युं, वगीचाने फरती ग्रानीट (पथरनी पाकी दिवाल) वांधी, तेमज महादेवना देवळने फरतो कील्लो वांध्यो, आ सघळी मनमानती रचना जोइने महाराजा खुशी थया, एटले वास्तु प्रतीष्टानुं मुहूर्त्त जोवरावयासारु ब्राह्मणोने एकठा करी अभिषेकनो आरंभ धार्यो. ॥ ५ ॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

बडे मुनि पंडित वेद विचार ॥ कियो अभिशेकहुको निरधार ॥ अँते उर आप बुलाहिय तत्र ॥ लिखे प्रति देशन देशन पत्र ॥ किते द्विज तापस के छितिराज ॥ बुला हिय शंकर थान समाज ॥ वहें कवि भारतिनंद बुलाय ॥ दही उंनकों यह वात सुनाय ॥ पठावन नीतहिपाल नरेश ॥ सिधारियें आप सु गुज्जर देश ॥ दई उंन पांन पती परवीन ॥ लखी उपचार हमें यह कीन ॥ अँते उर पत्र दियो सु लिखाय ॥मतो मिलिये इत आपहि आय ॥ उभे गज संग उभे शत वाज ॥ किये महाराज बिदा कविराज,

अर्थ. मोहोटा मोहोटा मुनी तथा पंडितोए वेदना विचार पूर्वक अ-

भिशेकना मुहूर्त्तनो निश्चय कर्यो, एटले महाराजाए पोतानी राजधानीमांथी तेडुने त्यांहां वोलावी लीधां, एटलुंज नहीं पण देशो देशमां कंकोतरीयो लखी मोकली, ने केटलाक ब्राह्मणो, तपस्वियो तथा राजाओने मानथी आ स्थळे महादेवना उत्सवमां वोलाव्या, पछी ए भारतीनंद कवीनेज वोलावीने आ प्रमाणे वात संभळावीने कह्युंके नीतिपाळराजाने तेडवा सारु आप गुर्जर देशमां पधारो? एम कहीने प्रवीण उपर लखलो पत्र कविना हाथमां आप्यो, तेमां लखी जणाव्युं के मळवासारु अमे आ उपाय गोठव्योछे, माटे जरूर पधारजो, वीजो एक नीतिपाळ राजानो पत्र लखावी दीधो, तेमां लखी जणाव्युं के आपने मळवानी घणी अभिलाषाछे, माटे जरूर पधारशो, एवीरीते कविने भळामण आपीने वे हाथी अने वसे घोडे स्वारनी साथे महाराजाए विदाय कर्या. ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

भारति नंद सु गमन किय, आये मनंछित थांन ॥
मिले जथा मरजाद वत, नीतपाळ राजांन ॥ ७ ॥

अर्थ. भारतीनंदकवि त्यांहांथी चालीने मनंछापुरमां आव्या, ते राज सभामां जइ महाराजा नीतिपाळने मर्यादा पुर्वक मळ्या. ॥ ७ ॥

॥ छप्पय ॥

दह्यो पत्र महाराज, कह्यो सागर मुख भाषित ॥
करी अरज कविराज, नीतपालह नरेश प्रत ॥
कुमर शिवालय कियो, तास अभिशेक विचारें ॥
मेहेर करें महाराज, आप उतकों जु पधारें ॥
उनके जनांन आए उतें, उन लिख पाति यह कही ॥
आपें जनांन कीजें हुकुम, मिलवें चाहतहें वही ॥ ८ ॥

अर्थ. रससागरनो पत्र नीतिपाळराजाने आप्यो, तेमज म्होढेथी कहेला समाचार कहीने कवीराजे नीतिपाळराजाने आ प्रमाणे अरज करी, के हे? महाराजा नीतिपाळ, रससागर कुंवरे एक महादेवनुं शिवालय बांध्युंछे, तेनो हवे अभिषेक करवो धारेछे, माटे आप जो त्यांहां पधारोतो मोहोटी मेहेरवानी करी केहेवाय, एना जनानखानानी तमाम राणीओ त्यांहां आवेलीछे, वास्ते कुंवरे पत्र लखीआपीने कह्युंछे के आप जनानाने आववानो जरूर हुकम करशो, कारणके आ लोको मळवाने चाहेछे, तेओए पण पत्र लखी आपीने कह्युंछे के त्यांहांथी जनानखानुं आंही पधारे तो घणुं सारुं, कारण के अमारे मळवानी घणी अभिलाषाछे, माटे हे? महाराजा, आप जनानाने तैयार थवानो हुकम फरमावो के जेथी तेओनी इच्छा पूरी थाय. ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि अरज महाराज सुनि, धार्यो मतो पयांन ॥
आमायत आयस दई, साजन लगे समांन ॥ ९ ॥

अर्थ. एवीरीते भारतीनंद कविनी अरज सांभळीने महाराजा नीतिपाळे त्यांहां प्रयाण करवानुं धारीने कामदारने आज्ञा आपी एटले ते सर्व सामग्री तैयार करवा लाग्या. ॥ ९ ॥

पाती सुकवि प्रवीनकी, दई कुसुमके पांन ॥
समाचार इनमें सही, कही बुलावन बांन ॥ १० ॥

अर्थ. पछी कविए प्रवीणनो पत्र कुसुमावळीना हाथमां आपीने कह्युं के समाचारतो आ कागळमांछे, पण त्यांहां पधारवा विशे खचीत कहेलुं छे माटे तजवीज करो. ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

सजे राज सामांन, असवारी छोटी उतें ॥

सायत दीन जनांन, कुमरी कलाप्रवीन जुत ॥ ११ ॥

अर्थ. त्यांहां जवासारु महाराजाए नानी स्वारीनी सामग्री सज करीने राजकुंवरी कलाप्रवीण समेत जनानाने आववानो हुकम आप्यो. ११

उतरे सखि आरांम, सायत दुज शोधी सुभग ॥
चले मुकांम मुकांम, सरंजाम संख्या सु यह ॥ १२ ॥

अर्थ. ब्राह्मणो पासे शुभ मुहूर्त जोवरावीने वगीचामां आवीउतर्या, त्यांहांथी आ प्रमाणे संख्यानी फोज साथे लइने मुकामे मुकामनी गोठवण करी चालता थया. ॥ १२ ॥

॥ अथ छंद हनुंफाल ॥

हय दल बतीस हजार ॥ पयदल न पावे पार ॥ गज संग साठ पचास ॥ मनु घटा भादो मास॥ शत एक आतस संग ॥ सज जोध सह्रह अंग ॥ अधसात शत निशांन ॥ महाराज सहज पयांन ॥ उमराउ आप जनांन ॥ रथ एक शत अनुमांन ॥ सहचरी दोय हजार ॥ पट सहस संग बजार ॥ सुखपाल गुन शत लीन ॥ छितिपाल चल्लन कीन ॥ करि कोस कोस मुकांम ॥ आये सु शंकर धांम ॥ ॥ १३ ॥

अर्थ. बत्रीश हजारतो घोडेस्वारनुं लशकरछे, अने पायदळनोतो पार नथी, पचास साठेक हाथीओ भेळाछे, ते जाणे भादरवाना वरशादनी घटाओ चडी होयने? एवादिसेछे, एकसो जुवान आतस बाजी छोडवा वाळा, एकसो बख्तरीया युद्धाओ अने साडात्रणशे निशांन, एटली संख्यानी फोज महाराजाए सहज प्रयांणमां साथे लीधीछे, हवे उमराओना तथा पोताना जनानाना कुल मळीने एकसो रथछे, बेहजार दासीओ,

छ हजार वांणीआनी दुकानो, अने त्रणशे पालखीयो एटलुं साथे लेइने महाराजा नीतिपाळे गमन कर्युं, ते एक एक गाउ उपर मुकाम करता करता ज्यांहां शंकरनुं धामछे त्यांहां आवी पहोच्या ॥ १३ ॥

॥ छप्पय ॥

रससागर सुनि खबरि, आप सामें चढिआए ॥
मिलें उभैं महाराज, अवहमोचन करवाए ॥
खान पांन सामांन, जनह जन प्रति पहुचायो ॥
अंते उर मनुहार, अंते उरसें पठवायो ॥
दश वीश नृपति ऐसें मिले, सब मनुहार सु पावही ॥
कीनें मुकांम गिरदी किते, शंकर बीच सुहावही ॥ १४ ॥

अर्थ. नीतिपाल राजा पधार्या एवा खबर सांभळीने रससागर सामैया साथ सामा चडी आव्या, त्यांहां बन्ने राजाओ घणा स्नेहथी मळ्या, अने निमेले स्थळे नीतिपाळ राजानो उतारो कराव्यो, झडपथी तमाम मांणसोने खावा पीवानी सामग्री पोंचाडी दीधी, तेमज कुंवरना जनानखानामांथी सत्कार पुर्वक सघळी सामग्री नीतिपाळना जनाना वास्ते पोंचाडी दीधी, आवा दश विश राजवंशीओ आहीं मळ्या ते सघळा मान नी साथे सत्कार पाम्या आवीरीते राजाओनां लश्करो चारेतरफ मुकाम करी पड्याछे, तेनी वचे आ शंकरनु नवीन धाम कैलासना जेवुं शोभेछे. ॥ १४ ॥

॥ छंद पद्धरी ॥

दश दिशा होतहे राग रंग ॥ बाजें रबाब वीनां मृदंग ॥
नायका नृत्य गति ठोर ठोर ॥ मांनहु इंद्र आरंभ ओर ॥
॥ चहुं ओर व्योम छाई सु ढह्व ॥मानहुं विमान ध्वजकी न

कल्ल ॥ तूरीन फेर नीशांन नद्द ॥ मानहू मेघमाला शबद्द ॥ घन घटा छए गज राज बृंद ॥ बीजरी भालमें लाल बिंद ॥ जरकसी जेव लग्गे निशांन ॥ सुरराज चाप रेखा समांन ॥ हिंसार वाज ठामहू ठांम ॥ शिव धाम बीच गिरदी मुकाम ॥ १५ ॥

अर्थ दशे दिशाओमां रागरंग थायछे, रबाब, वीणा, अने म्रदंग विगेरे वाजां वागेछे, ने ठेकाणे ठेकाणे नायकाओ नाचेछे, ते जाणे इंद्रे बीजो उरसव रच्यो होयने! चारे कोर चमकति ढालो छवराइ गइछे, ते जाणे आकाशमांना वैमानोनी धजाओ छवराइ होयनै! तुरी तथा नगाराना अवाज थायछे ते जाणे मेघनी घटा गाजती होयनै! वरशादनी घटाओजेवा हाथीओना कपाळमा सिंदूरनां टीलां काढेलांछे ते जाणे वीजळीओ चमकती होयने! जरीनां निशानो उभांकर्यांछे तेतो इंद्रना धनुषनी रेखा जेवां शोभेछे, ठेकाणे ठेकाणे घोडाओनी हावळो थायछे, एवीरीते शिव ना धामने वच्चे रास्तोने चारे तरफ राजाओनां लश्कर मुकाम करी पड्या छे. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

चाही तरें मुकाम छब, निरखत नजर जुआय ॥
सो रससागर प्रत सुकवी, वरनन कियो बनाय ॥ १६ ॥

अर्थ एवीरीते मुकामनी छबी नजरे जोयावीने भारतीनंद कवीये महाराजा रससागरने आ प्रमाणे तेनुं वर्णन करी संभळाव्युं. ॥ १६

॥ अथ छंद शंखनारी ॥

कहूं मल्ल खेलें ॥ कहूं दंड पेलें ॥ कहू व्रत्त बंधे ॥ व्रतं धार सद्धे ॥ कहूं गोर बाला ॥ रचं इंद्रजाला ॥ कहू पात्र नंचे ॥

सुरा वृत्त खंचे ॥ कहूं नाद वज्जे ॥ कलावंत सज्जे ॥ कहूं नाग हेरें ॥ कहूं बाज फेरें ॥ कहूं चोक वांधें ॥ कला शस्त्र साधें ॥ कहूं देव सेवा ॥ भनें वेद भेवा ॥ कहूं राज धानं ॥ सभा शोभमानं ॥ कहूं वांन नंखे ॥ कवींदेश भंखे ॥ कहूं कीर लावें ॥ सु सारों पढावें ॥ कहूं दांन मानं ॥ धरें जोग ध्यानं ॥ धुनी ताल तीरं ॥ भई भार भीरं ॥ १७ ॥

अर्थ. हे? महाराजा क्यांक मल्लकुस्ती करेछे, ने क्यांक दंड पीलेछे, क्यांक दोर वांधी ते उपर चडीने रमवानी क्रीया साधेछे, क्यांक गोडीयाना छोकराओ इंद्रजालनो खेल करी वतावेछे, क्यांक वेश्याओ नाचेछे, क्यांक रागनां मंडळ आळेपायछे, क्यांक वाजां वागेछे, क्यांक कलामति गायन थायछे, क्यांक हाथीओने जोवा सारु माणसोनां टोळां एकठां थयांछे, क्यांक घोडा फेरवेछे, क्यांक चोक वांधीने हथियारोनी कळा साधेछे, क्यांक देव सेवाओ थायछे, क्यांक पद क्रमना अनुक्रमथी वेद भणायछे, क्यांक राजवंशीओ सभा भरीने वेठाछे, क्यांक वांण फेंकेछे, क्यांक कवियो कविता वोलेछे, क्यांक पोपटने लावीने रमाडेछे, क्यांक मेनांने पढावेछे, क्यांक दान तथा मान देवायछे, अने क्यांक जोगीओ ध्यान धरेछे, एवीरीते नदी तथा तळावना कीनारा उपर माणसोनी भीड भराइ गइछे. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

ठोर ठोर प्रति देखियत, इहि विधि लगो उछाह ॥
भार भीर दिश दिश भई, राह राह प्रति राह ॥ १८ ॥

अर्थ. ज्यांहां जोइए त्यांहां ठेकाणें ठेकाणें एवी रीते उत्साह लागी रह्योछे, नें दिशाए दिशाए अने रस्ते रस्ते माणसोनी भीड मची रहीछे. ॥ १८ ॥

॥ गाहा ॥

सागर किय शिव धामं ॥ नीतपाल आवन उछाह बिधि ॥
पंचात्रिंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ १९ ॥

अर्थ. सागरे करेला शिवना धाममां नीतिपाळ राजाना आगमनना (आववाना) उत्साह संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ पांतरीशमी लेहेर संपूर्ण थइ.

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे शिवालय महोच्छव बर्नने पंचत्रिंशातिमो लहरं ॥ ३५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां पंचत्रिंशातिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३५ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध दोहा ॥

मळनां कवि कुसुमावळी, बनी परस्पर वात ॥
विरह दशा छत्रीशमी, लेहेर केशे साक्षात ॥

अथ कवि कुसुमावलि चर्चा प्रसंगः ॥ छप्पय ॥

राज हुकुम कविराज, मनंछापुरी पठाये ॥
सुत जनांन छितिपाल, बोलि शिव थांनक लाये ॥
महत साह उत रहत, कुसुम सु कवी चरचा किय ॥
सागर कलाप्रवीन, चिंत उनकी आशय लिय ॥
निश योस रहनहारे निकट, सोच दशा जांनत सबें ॥
छेंन भांति भेद संछेप विधि, उदाहरन बरनत अबें ॥ १ ॥

अर्थ. महाराजाए आज्ञा आपीने कवीराजने मनंछापूरीए मोकल्या, हता ते त्यांहांथी जनाना समेत नीतिपाळ राजाने शीव्रालये बोलावी लाव्या. पंथे चालवामां अने मनंछापुरीमां रेहेवामां प्रसंगोपात सागर तथा प्रवीण ए बेउना मनना अभिप्रायने लीधे कुसुमावळी तथा कवीए परस्पर चर्चा करी, केमके हमेशां जे पासे रेहेतुं होय तेज मननी हालतने जाणे, तो आ बन्ने रातदीवस पासेज रेहेनारांछे, तेथी प्रवीण तथा सागरनी दुःख दशाने सारीरीते जाणेछे, माटे हवे टुंकी मतलबमां एओनी वातोना भेदनां उदाहरणोनुं वर्णन करुंछुं. ॥ १ ॥

अथ तत्र कवि उक्त चरचा बर्ननं ॥ दोहा ॥

बार बार कहि कहि जपत, बिन परबीन बिहाल ॥
प्रेम जोत हियमें जगी, लगी सुरत सब काल ॥ २ ॥

अर्थ. वारे वारे वीनपरवीन बीहाल एवां वचनो कही कहीने जपेछे, ने हृदयमां प्रेमनी जोत जागीछे जेथी सदाकाळ सुरता लागी रहेछे. ॥२॥

बरन चंप चख मीन मृग, रव बीना नव बाल ॥
बिरहा जल वह रटत दधि, बिन परबीन बिहाल ॥ ३ ॥

अर्थ. जेनो वर्ण चंपाना जेवोछे, ने नेत्र माछली तथा मृगना जेवांछे, ने सुर वीणाना जेवोछे, एवी नवीन जोबन वाळी बाळारूप प्रवीणना विरह रूप पाणीथी भरपुर थएला रससागर, प्रवीणविना बे हालछुं एवां वचनो बोली बोलीने रटेछे. ॥ ३ ॥

स्मृतिमान्अलंकार ॥ सवैया ॥

एन पती शिवता अभिधांन सु, छंद उचारनसें तिछकारें ॥ देव प्रभा छिनदा न परें कल, आसुग सून जटी उर धारें ॥ नेंनन नेंन मिलेहें तबीसें कबीन प्रबीन प्रबीन वि-

सारें ॥ नेहिके जाय झरोखनसें इतनी, लिखकें अरजी को उ डारें ॥ ४ ॥

अर्थ. मृगना पति चंद्रमा तेना पति सागर एटले जेनुं नाम सागरछे, ने छेदोना उचारथी तो समुद्रने पण तिरस्कारेछे, ने जेने दिवस तथा रात्रीनी कळ पडती नथी परंतु मित्रने तो सोनानी पेठे प्राणनी साथे जतोने हृदयमां धरी राखेछे, ने ज्यारथी नेत्रोनी साथे नेत्रो मळयांछे त्यारथी क्यारे पण प्रवीण प्रवीण एवा नामने विसारता नथी, ने कह्या करे छे के स्नेहीना झरोखामां जइने एटली अरजी लखीने कोइ नाखे? ॥४॥

निदर्शनालंकार ॥ कवित्त ॥

मंजन करत प्रात, मांगत निरंजनपें, जंपत प्रबीनकों बिलोकबो चहतहें ॥ खांन पांन मान सबें, पावत प्रतिज्ञा करि गांन आंन चांन हूमें गुनकों गहतहें ॥ रोंम रोंम भोम व्योम, मेंनके हुताशनहें, नेहकों न देह छेह, देहकों दहतहें ॥ नरके नरिंदहें, समंदके समान मत, दूरतें हजूरके हजूर व्हे रहतहें ॥ ५ ॥

अर्थ. प्रातःकालमां स्नान करती वखते नीरंजन परमेश्वर पासे प्रवीणने मळवानुंज मागेछे, जप करती वखते पण प्रवीणने जोवानुंज चाहेछे, खानुं पीनुं तथा मान विगेरे भोगोने पण प्रवीण संबंधी मानताने लीधे प्रतिज्ञा पुर्वकज खाय पीए अने भोगवेछे, गायन तथा बीजी वातो मांथी पण प्रवीणनाज गुणनुं ग्रहण करेछे, रुवांडे रुवांडे अने पृथ्वी तेमज आकाशमां चारे तरफ कामाग्नी जागी रहेछे, तो पण स्नेहने छेह देता केवळ पोताना शरीरनेज बाळेछे, ते नरना तो नरेंद्रछे, ने समुद्र सरखा गंभीरछे, भले दूरछे, परंतु दूरपणुं नहीं मानतां हजुरना हजुरी थइ रहेछे. ॥ ५ ॥

लाटानुप्रास स्मरणानुभाव अलंकार ॥ दोहा ॥

कसक कसक लागत कठिन, मुसक मुसक मुख बात ॥
रसिक रसिक कह कह रटत, ससिक ससिक उससात॥६॥

अर्थ. मरकी मरकीने म्होढेथी कसकसती वातो करतां घणुं कठण-लागेछे, परंतु हे? रसीक, हे? रसीक एम कही कहीने रटेछे, ने वळी ससीक, ससीक एटले सरड, सरड लांबा अने उंडा नीसासा उसासा भरे छे. ॥ ६ ॥

॥ रूपक अभेद सवैया ॥

चिंत गुडी सो उडचोइ रहे, पकरें कर नेंननकी वर जोरी॥
नेहके चंग सदाई बजे, सुबियोगके वात लगे झक झोरी ॥
दूर रहेपें हजूर न आवत, कूरके काग सो जात न टोरी ॥
तांनत नाहि त्यों जानन पांवत, प्रानको पत्र प्रवीनाकि डोरी ॥ ७ ॥

अर्थ. नेत्ररुपी हाथथी वले करीने पकडेलो चीत्त पतंग उड्योज रहेछे, ने तेमां स्नेहरुपी मोरचंग सदा वजाज करेछे ने वळी ते वीयोगरुपी पवन लागवाथी झक झोळाइ जायछे दूर रहेछे, पण हजुरमां आवतो नथी ने ते कुडरुपी कागडाथी त्रोड्यो जतो नथी, ताणतां नथी तेथी जाणवा पामतां नथी जे प्राणरुपी पत्र ने प्रवीणरुपी दोरीछे. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

नागरि नागरि जपत नित, सागर सदा उदास ॥
प्रेम बूंद परवीन विन, चातक मरत पियास ॥ ८ ॥

अर्थ. हे? नागरी, हे? नागरी, अर्थात् हे? चतुर, हे? चतुर, एम कही कहीने जप करता सागर नीरंतर उदास रहेछे, एटलुंज नहीं पण प्रवीण रूप प्रेम बुंद विना सागर रूप बपैयो प्यासे मरे छे. ॥ ८ ॥

विनोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

सूर विनां चक बाग विनां पिक, बार बिनां झकहें झख जेंसें॥हंस विनां सर पंख विनां पर, पत्र बिनां तरु राजत तेंसें ॥ मोर विनां घन भोंर विनां बन, बुंद बिनां तन चातक वेंसें ॥ प्रेम बिनां मित बाम विनां पत सागर जीवत हें मृत जेंसें ॥ ९ ॥

अर्थ. सूर्यविना जेम चकवो, वगीचाविना कोयल, पाणीविना माछलुं, सरोवरविना हंस, पांखोविना पंखी, पातरांविना झाड, मेघविना मोर, वनविना भमरो, स्वातीना बुंदविना वपैयो, प्रेम विना मित्र अने स्त्री विना जेम पती, तेम प्रवीणविना सागर मरेला सरखा जीवेछे. ॥ ९ ॥

अथ कुसुमोक्त चर्चा वर्ननं ॥ उपमेय लुप्तोपमाऽलंकार ॥ सवैया ॥

प्रीय पयांनकि बात सुनें बिरहांनकी धूनि जगी तनमें ॥
लोहित लोइन धार रही, धर सोधत सास उसासनमें ॥
हास विलास तजे उनहीं छिन, मित्रके मंत्र भजे मनमें ॥
सागर ध्यांन धरें चुपव्है रहि, जोगनि ज्यों गुरु लोगनमें ॥ १० ॥

अर्थ. प्रिय मित्रना प्रयाणनी वात सांभळतांज शरीरमां वीरहनी धुणी सळगी उठीछे, नेत्रमां लाल रंग चढी आववाथी लोहीनी धार फेलाइ रहीछे, नीसासा उसासामां गोथां खाइने जमीनने शोधेछे, तमे सभाळ्या ते क्षणथीज हास्य विलास तजीने मनमां मित्रना मंत्रने भजेछे, ने जेम गुरु मंडळमां जोगणी चुप थइने बेठी रहे, तेमज पोताना वडीलोमां सागरनुं ध्यान धरी चुप थइने बेठी रहेछे. ॥ १० ॥

निदर्शन भेद दूजोअलंकार ॥ सवैया ॥

सागर सागरजू रसनां दुसरी मुख मोंन लही सुलही ॥ कांनन आंन न बांन सुनि वरुनीसें धुनी जो वही सो वही ॥ गोंन कियो तुम ता छिनसें दिनही दिन व्याध नही सु नही ॥ या कुलकांन रहो न रहो परि एकहि टेक ग्रही सु ग्रही ॥ ११ ॥

अर्थ. जभिथी सागर सागर एवुं नाम जपेछे, ने बीजी वातनुं तो जे मोढेथी मुंगाव्रत लीधुंछे, तेज लीधुंछे, तेम कांनेथी बीजी वात सांभळी नथी ते सांभळतीज नथी, आंख्योनी पांपणोमांथी जे आंसुनी नदी वहीछे ते वहेजछे तमे गमन कर्युं ते क्षणथीज जे नवी व्याधी पेदा थइछे ते तो दविसे दविसे नवी नवीज थती जायछे, आ वात कुळमां लाजनी साथे रहो अथवा न रहो पण जे एक टेक पकडीछे तेज पकडीछे. ॥ ११ ॥

॥ मालोपमालंकार ॥ कवित्त ॥

प्रहलाद नाहर ज्यों, वेद भेद पाहर ज्यों, शशि जोत साहर ज्यों, लेहेर हिये भरें ॥ श्रीपति जुगारद ज्यों, प्रिया कूप पारद ज्यों, कलिकंठ बारद ज्यों, पलहूंन वीसरें॥बलि सुनु शंकर ज्यों, चकोरी हिमंकर ज्यों, कोकन दिनंकर ज्यों, ध्यांन चितमें धरें ॥ अंतर भये प्रवीन, सागर निरंतरही, दरदी धनंतर ज्यों, राह देखबो करें ॥ १२॥

अर्थ. प्रल्हादजी जेम नरसिंहने, व्यासजी जेम वेदना भेदने, अने समुद्र जेम चंद्र कांतिने, हृदयमां धारीने लेहेरोथी भरपूर थायछे, तेम प्रवीण सागरने मनमां धारीने लेहेरोथी भरपूर थायछे, गजेंद्र जेम लक्ष्मीपति

गोम्तुने, कुवा माहेलो पारो जेम पद्मीनी स्त्रीने, अने बपैयो जेम मेघने पळ मात्र वीसारतो नथी, तेम प्रवीण क्षणमात्र पण सागरने वीसारतां नथी, बलीराजानो पुत्र बाणासुर, जेम शंकरनुं, चकोर पक्षी जेम चंद्रमानुं अने चकवो जेम सूर्यनुं चित्तमां ध्यांन धरेछे, तेमज प्रवीण पोताना मनमां सागरनुं ध्यांन धरेछे, वियोगने लीधे अंतर थइ जवाथी निरंतर कळाप्रवीण, जेम दरदी धनंतर वैद्यनी वाट जुवे तेम रससागरनी राह जोया करेछे. ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम जहर लागी लहर, कहे दशा जिय जाय ॥
ब्याध सधें परवीनजू, मिले धनंतर आय ॥ १३ ॥

अर्थ. शरीरमां प्रेमरूपी झेरनी लेहेर लागवाथी एवीतो दशा थइ गइछे के जीव जायछे, प्रवीणनी आ व्याधी तो, तो शांती पामे के जो सागररूप धनंतर वैद्य आवी मळे. ॥ १३ ॥

संदेह श्लेष संकर ॥ सवैया ॥

लाल सु रेख गुलाल लगीहें, किधों यह आतसकी चिनगारी ॥ बुंद बने बरुनी जलके, पिचकारि अनीक बती ब्रह जारी ॥ कज्जर छीट परे निकटे वह, चित्र चुवाके धुआ बिसतारी ॥ सागर मिंत विनां परवीनके, नेंनन होरी रचीक दिवारी ॥ १४ ॥

अर्थ. लाल रंगनी रेखाओछे, ते शुं गुलाल उडेछे! के आतसबाजीना तणखा झरेछे! आंसुनां बुंद पांपणोमां भरायांछे, ते शुं अणिवाळी पीचकारी छुटेछे! के विरहरूप बती प्रगटीछे! भींजाएलुं काजळ पासे सासे नीकळी चालेछे, ते शुं रंगदार चुवाना रेलाछे! के विस्तारथी मस्बावेद धुमाडा चालेछे! एक प्रिय मित्र सागर, विना आ प्रवी-

णना नेत्र आते होळी रची छे के दिवाळी ? ॥२४॥

॥अथ दृष्टांताऽलंकार ॥ सवैया ॥

तार कढे मुख वार विहार, करे पर तार रहे उरझ्यो तन ॥
जंत्रहि मंत्रहि तंत्रहि जोग,फरे न टरे अटरे ज्यों उडग्गन॥
द्योस भगे रु जगे निश चंद,बिलोके नगे न गने अतु अंगन॥
सागरसें नित लाग रह्योसो,भयो मकरी मकरी मकरी मन.२५

अर्थ. जेम करोळियो मोढामांथी तार वहार काढीने तेना उपर विहार करेछे, अने तेना आधारे पोतानुं शरीर लटकावी राखेछे, ते जंत्र, मंत्र के तंत्रना जोरथी फरतो नथी, के टळतो नथी, ने (नग) आकाशना तारानी पेठे अटळ थइने रहे छे; तेम प्रवीणनुं मन मोढाथी बार उचो स्वर काढीने ते स्वर उपर विहार करेछे, अने शरीरने धारी राखेछे, तेनी एवी दशा फेरववा सारुं कोई जंत्र,मंत्र ने तंत्रना प्रयोग करे तेथी फरती नथी, ने टळती नथी, अने आकाशना तारानी पेठे स्थिर रहेछे,वळी जेम चंद्रकीर्ण दिवसे अदृश्य थायछे,अने रात्रिये चंद्रनी साथे जागृत थायछे, तेम प्रवीणनुं मन आकाशमां चंद्रने जुएछे, ने शरीरना मोतने गणतुं नथी,वळी मगरी जेम हमेशां सागर साथेज लागी रहेछे, तेम प्रवीणनुं मन पण हमेशां रससागर साथे लागी रह्युंछे, एरीते करोळियो, कीरण, अने मगरी जेवुं प्रवीणनुं मन थयुंछे. ॥२५॥

॥उपमालंकार दोहा॥मन प्रवीन कुंदन महोर,प्रेम प्रकासे जोत॥
बिरह अगनि ज्यों ज्यों तपे, त्यों त्यों किम्मत होत ॥२६॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के प्रवीणनुं मन सोनानी महोर जेवुंछे, तेमांथी प्रेमनी जोतनो प्रकाश थयोछे, अने विरहरूपी अग्निथी ते जेम जेम तपेछे, तेम तेम तेनी किमत वधारे थायछे. ॥२६॥

॥रूपकालंकार दोहा॥साधन सुमिरन मिंतको.ध्यानि जंत्र बनाय॥

जिय मनिधर वादी विरह, घट घट दियो दबाय ॥ १७ ॥

अर्थ. विरहरूपी वादिये तेना जीवरूपी सर्पने मित्रना स्मरणरूपी साधन अने पत्ररूपी जंत्र बतावीने शरीररूपी घडामां दावी राख्यो छे. ॥१७॥

॥ पर्यस्ताऽलंकार ॥ सवैया ॥

तीर हने अशरीर अहो निश, धीर सबेहि गमी गरमी ॥
नावन खावन गावनकी सुधि, भूलि गईहे भई भरमी ॥
व्याध समावन कारन साधक, सिद्ध नजूम नमी नरमी ॥
सागरज्यु बिन पाय,उपाय किये न चढेंगे अमी उरमी ॥ १८॥

अर्थ. प्रवीणने रातने दहाडो कामदेव बाण मारेछे, तेनी गरमीथी बधी धीरज गुमावी छे, अने भ्रमित थवाथी नावानी, खावानी अने गावानी सुध भूली गई छे. ते व्याधी समावाने वास्ते साधक, सिद्ध अने जोशियोने नम्रताथी नमेछे, पण सागरजीने पाम्याबगर कोई उपाय करवाथी अमीना मोजा तेना शरीरमां चडशे नहीं. ॥१८॥

॥ अथ पुनि कवि उक्त चर्चा ॥ वक्रोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

जाम सु बासर मासहि संवत, जात चले;सु कहांलो चलेगे;
आनस आग लगे चिनगे सु,बुझे न तबे जियही न जलेगे॥
या असुवां बहेवोई करे सु, अबे यह बारिनिधी न छलेगे ॥
ठेरन बेरही बेर प्रवीनज्यु फेर कहूं इक बेर मिलेगे ॥ १९॥

अर्थ. सागरना दुःखविषे कविये कह्युं के--पहोर, दिवस, महिना अने वर्ष चाल्यां जायछे, ते सांभळीने कुसुमावळिये वक्रोक्तिमां कह्युं के--ते कया ठेकाणा सुधी चाल्या चाल्या जशे? कवि--आननी अग्निना तणखा लाग्या छे. कुसुमावळी--ते ओल्वाइ नहीं जायतो जीवजंतु बळी जाशे नहीं? कवि--ते आंसुओ नव्याज करेछे. कुसुमावळी--त्यारे तो हवे सागर छलकाई नहीं जाय? कवि--(वेरवेर) वारेवारे प्रवीण प्रवीण एम पोकारेछे. कुसुमावळी--त्यारे तो कोई ठेकाणे ते चतुरने फरीथी एक वेर एटले वार मळशे. ॥१९॥

स्मृतिमान्अलंकार ॥ सवैया ॥

बेंन प्रवीन प्रवीन उचारत, नेंन प्रवीन विनां न लगावें ॥
रेंन प्रवीन विनां दुख बीतत, सेंन प्रवीन विनां न सुहावें ॥
चाह प्रवीन दशा परसें तन, राह प्रवीन सदा दरसावें ॥
रोंमहि रोंम प्रवीन रहे रमि, कोउ प्रवीन प्रवीन मिलावें ॥ २० ॥

अर्थ. मुखथी तो हे? प्रवीण, हे? प्रवीण, एवां वेंण उचारेछे, ने आंखो पण प्रवीण वीना बीजे क्यांय लगाडता नथी, तेम रात पण प्रवीण विना दुःखमां वीतेछे सज्जामां सुवानुं पण प्रवीण वीना गमतुं नथी, हमेशां प्रवीणनाज मारगने देखाडेछे, एवी रीते रुवांडे रुवाडे प्रवीण रमी रह्यांछे, तो एवुं कोइ प्रवीण (चतुर) छे जे अमने प्रवीण मेळवी आपे? ॥ २० ॥

॥ सोरठा ॥

ता दिनतें तलफंत, जा दिनतें बिछुहा भयो ॥
याद न चूकत चिंत, रा दिनप्रति देखत रहत ॥ २१ ॥

अर्थ. जे दिवसथी वियोग थयो ते दिवसथीज तलफ्या करेछे, ने चित्तमांथी यादि न चुकता दिवसे दिवसे राह जोया करेछे. ॥ २१ ॥

दृष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

मोरकि ध्यांन लगी घन घोरसें, डोरसें ध्यांन लगी नटकी ॥ दीपक ध्यांन पतंग लगी, पनिहारिकि ध्यांन लगी घट की ॥ चंदाकि ध्यांन चकोर लगी, चकवांनकि ध्यांन दिनेश टकी ॥ मीन मनो जल ध्यांन सु सागर पंथ प्रवीन रहें अटकी ॥ २२ ॥

अर्थ. जेम मोरनुं ध्यान मेघनी गर्जना साथे लागी रहेछे, ने नटनुं दोर साथे, पतंगीयानुं दीवा साथे, पाणीयारीनुं घडा साथे, चकोरनुं चंद्रमा साथे, चकवानुं सूर्य साथे, अने माछलानुं पाणी साथे, तेम सागरनुं ध्यान प्रवीणने पंथे अटकी रहेछे. ॥ २२ ॥

॥ सोरठा ॥

इहि विधि उभय सयांन, चलत राह चरचा भई ॥
सागर तिय शिव थांन, मिलबेको धारत मतो ॥ २३ ॥

अर्थ. एवी रीते शाहाणा बन्ने जणने रस्ते चालतां चालतां जे चर्चा थइ तेमां सागर तथा प्रवीणने शीवजीना मंदिरमां मेळववानो अनुमत धार्यो. ॥ २३ ॥

॥ गाहा ॥

कवि कुसुमावलि मिलनें, दंपति दशा भेद चरचायं ॥
षट् त्रिंशति अभिधानं, पूर्न प्रवीनसागरो लहरं ॥ २४ ॥

अर्थ. कवि तथा कुसुमावळीना मिलापमां जे सागर तथा प्रवीणनी दशा वीशे चरचा चाली, ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी आ छत्रीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २४ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कवि कुसुमावलि चर्चा दंपति दशा बर्ननो नाम षट्त्रिंशतिमो लहरं ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधीराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां षट्त्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३६ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

सजी जोग शृंगार रूडा, दंपती चेहु रुज थयां ॥

साथ सवळी राणियो लै, प्रवेण शिव मंदिर गया ॥
चर्चा करवा कुसुम चाली, मन लगाडी मेहेरमां ॥
भेद तेनो भाखशे, शुभ साडत्रीशमी लेहेरमां ॥

॥ अथ शिवाभिषेक प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

श्रावन शुक्ल चतुर्दशी, बासर सुभग निशेश ॥
दिय मुहूरत महाराज द्विज, ईश करन अभिषेक ॥ १ ॥

अर्थ. श्रावण मासना शुक्ल पक्षनी चउदश ने सोमवार ने सारे दिवसे महाराजा रससागरने ब्राह्मणोए शिवजीनी प्रतिष्टा साथे अभिषेक करवानुं शुभ मुहूर्त्त आप्युं. ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

रससागर आयसा, बरुनि मह ब्रह्म बराये ॥
बेद मंत्र जप जाप, होम हवनादि कराये ॥
पंचामृत शिव शक्ति, कियो षोडश विधि पूजन ॥
अंग देव जुत जंत्र, हुओ अभिषेक सु पूरन ॥
वह समय थांन शंकर वहें, दरसाई कैलास छवि ॥
पर्वनी प्रात आए दरस, सागर जुत छितिपाल सवि ॥ २॥

अर्थ. महाराजा रससागरे आज्ञा आपीने ब्राह्मणोने वरुणीमां वराव्या, ने वेदना मंत्र प्रमाणे जप, जाप, होम, हवन, विगेरे कर्म कराव्यां, शिवशक्तिने पंचामृत स्नान करावीने षोडषोपचारथी विधि वडे पूजन कर्युं, ते पछी अंगना देवताओ अने यंत्रना पूजन समेत अभिषेक संपूर्ण थयो, ते वखते आ शंकरना स्थाननी छवी कैलासना जेवी देखाइ, आ उत्सवनी पर्वणीने दिवसे सवारमांथीज नितिपाळ विगेरे सर्व [illegible] लइने दर्शन करवासारु महाराजा रससागर आवी पोहोंच्या हता. ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

नीतिहिपाल जनांन, आवन दरस शिवालयें ॥
सुनी सु सागर कांन, उर उमडित उच्छाह अति ॥ ३ ॥

अर्थ. नितिपाळ राजाना जनानखानानी राणीओ शिवालये दरशन करवा आवेछे, एवी वात कांने सांभळवाथी महाराजा रससागरना हृदयमां आनंदना उभरा उलटी आव्या. ॥ ३ ॥

उतें सु नृपति कुमार, कही कुसुम वह आज दिन ॥
सजें सकल सिंगार, उर अभिलाष दशा गहें ॥ ४ ॥

अर्थ. त्यांहां राज कन्याने कुसुमावळीए कह्युं के, आगळ धारेलो ते आज दिवसछे, एवां वचन सांभळी हृदयमां अभिलाष दशा ग्रहण करेंने प्रवीणे आ प्रमाणे सघळा शणगार सज्या. ॥ ४ ॥

॥ अथ कलाप्रवीन शृंगार वर्ननं ॥ छंद झंपताल ॥

कामिनी आदि सिंगार उत्तारियं, हाटकं अंग नीलांबरं धारियं ॥ चौकियं चेरियं नीर धारा धरें ॥ नारके वारसें बुंद झारा झरें ॥ उपमा एहि पावंतहे भामिनी ॥ मांनहों मेघ कादंबिनी दामिनी ॥ अंग अंगोछ बिच्छायतं आहियं ॥ चंदनं चित्र सोभा तनं लाहियं॥ साम पाटं जरी कंचुकी सोहितं ॥ मानहों ईश सन्नाह आरोहितं ॥ लाल लेंगा जरंतार बुट्टा भजें ॥ कम्मरी सार किंनार सारी सजें ॥ हेम आभूषनं अंग अंगं धरें ॥ नील नीलंक मानिक्क पंना जरें ॥ वेनरी हार माला गरें मुत्तियं, मांनहों दीप माला बनी दुत्तियं ॥ आरसी एक बाला इतेमें लिये ॥ अंजनं रंजनं

कंज नैंनं दियें ॥ ५ ॥

अर्थ. कामनीए प्रथम पेहेरेलो वस्त्रालंकारादि शणगार उतार्यो, ने सोना जेवा अंगमां एक लीलुं वस्त्र पेहेर्युं, पछी नावानी चोकी उपर आवी बेठी, एटले नवरावबवासारु दासीओ आवी सुगंधी जळनी धार करवा लागी, ते वखते नारीना छुटा वाळमांथी पाणीना बुंद रूप झरणां झरवा लाग्यां, तेथी करी ते भामनी एवी उपमा धरवालागी के जाणे मेघनी काळी घटामां वीजळी चमकती होयनै? एवीरीते स्नान करी रुमालथी पोतानुं अंग लुइने बीछाना उपर आवी बेठी अने तेणे जात जातना चंदन, अत्तर, सोंधा, अरगजा विगेरे सुगंधी पदार्थी अंगमां लगाड्या, पछी काळा रंगना रेशमनी जयेनी कुंचुकी पेहेरी लीधी ते एवी शोभवा लागी के जाणे महादेवे कवच धर्युं होयनै! पछी जरतारनी बुंटीओथी भरेलो लाल रंगीन लेंगो (घाघरो) पेहेरीने केसरना रंगथी रंगेली कीनारीदार साडी धारण करी, अंगे अंगमां लीलम माणीक्य अने पानाथी जडेलां सोनानां आभूषणो धर्या, नाकमां नथ पेहेरी, कंठमां हार तथा अमूल्य मोतीओनी माळा धारण करी, तेनी कांति एवी देखावा लागी के जाणे दीपमाळा प्रगटी होयनै! एटलामां एक सखीये अरीसो लइ देखाडीने प्रवीणनी कमळ सरखी आंख्योमां रंजन करे एवुं बारीक काजळ सार्युं. ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

इतें नारि सिंगार किय, उत सागर महाराज ॥
सांझ दरश आवन सुन्यों, कीनो यहें समाज ॥ ६ ॥

अर्थ. आंही नारीये शणगार सज्यो ने त्यांहां महाराजा रससागरे सांजे दरशन करवा आववानुं सांभळीने आ प्रमाणे समारंभ कर्यो. ६

॥ चोपाइ ॥

आप ईश थांनक प्रति आये ॥ वह निवात निर्जन करवा

ये ॥ पहिरायत चहुओर विठारे ॥ सुकवि राज उद्यान सिधारे ॥ महल मध्य अवमोचन कींनों ॥ गुफा धांम शिव पंथ सु लींनों ॥ प्रच्छन दोउ ईश प्रति आये ॥ ओर कोउ जांननें न पाये ॥ दोउ दिगंबर भेष वनाया ॥ बर्नन तास वनाय वताया ॥ ७ ॥

अर्थ. पोते शिवना स्थान प्रत्ये आव्या, ने ते मंदिर माणसो रहित कराव्युं, पटलुंज नहीं पण चारे तरफ पेहेरो वेसारी दीधो, पछी कवि तथा महाराजा वन्ने जण वगीचामां सधाव्या, त्यांहां मेहेलनी वच्चे उतारो करीने गुफाद्वाराए शिवालयनो पंथ लीधो, छानी रीते ते वन्ने जण शिवालये आवी पहोंच्या, आ वात कोइ जाणी शक्युं नहीं, पछी वेय जणे दिगंबर जोगीनो वेष वनाव्या तेनुं हवे वनावीने वर्णन करुंछुं. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

इत प्रवीन सागर उतें, भूपन जोग सिंगार ॥
बर्नन करत बराबरी, सजे सो एकहि वार ॥ ८ ॥

अर्थ. आंही प्रवीण ने त्यांहां सागरे एकज वखते शृंगार तथा जोगनां आभूषणो सज्यां तेनुं बरोबर वर्णन करुंछुं. ॥ ८ ॥

॥ अथ छंद मौक्तिकदाम ॥

इतें रस भूपन साजत नार ॥ उतें महाराज सु जोग उचार ॥ इतें चिकुरांन समीप सुगंध ॥ उतें जट जूट लगाव न बंध ॥ इतें दिय भाल जराउको चंद ॥ उतें किय लाल सु चंदन बिंद ॥ इतें घन चंदन केसर अंग ॥ उतें भसमी मुनहें तिहि संग ॥ इतें उर हार हमेल रसाल ॥ उतें

रुदराक्ष कियें उर माल ॥ इतैं भुजबंध सु पौंचिय धार ॥ उतैं कर कंकन बद्रिकेदार ॥ इतैं धुनि जेहर जेब झनंक॥ उतैं पग लंगर लोहखनंक ॥ इतैं जर अंबरको तन साज ॥ उतैं कर चंमरहे म्रगराज ॥ इतैं चकडोल प्रवीन चढंत ॥ उतैं पदमासन जोगि द्रढंत ॥ ९ ॥

अर्थ. आंही प्रवीण प्रीतिथी आभूपण पेहेरेछे, अने त्यांहां महाराजा योगनो उच्चार करेछे, आंही सुगंधी तेलनी साथे वाळ ओळीने केश पाश वांधेछे, ने त्यांहां जटा जूटना बंध बांधेछे, आंही कपाळमां जडित्र चांडलो धरी लीधो, तेमज त्यांहां सिंदूरनी लाल वीनकी करी, आंही घाटुं सुगंधी चंदन अने केसर अंगे लगाडयुं, तेनी साथेज त्यांहां अंगे भस्म चडावी, आंही उरमां हमेल हार तथा सोनाना चळकता हार धर्या, तेम त्यांहां हृदयमां रुद्राक्षनी माळा धरी, आंही हाथमां बाजुबंध तथा पोंहोचीओ धारण करी, ने त्यांहां बद्रीकेदारनुं कंकण हाथमां धर्युं, आंही पगमां झांझर तथा लंघरना झणकार थया, ने त्यांहा पगमां लोढानुं लंगर खणकवा लाग्युं, आंही जर्यनी वस्त्र अंगे सज्यां, अने त्यांहां काळीयार मृगनुं चर्म अंगे लपेटयुं, आंही प्रवीण पालखी उपर चड्यां, तेमज त्यांहां योगी द्रढ पद्मासन करी बेठा. ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सागर भारति नंद दुहु, सज्यो जोग सिंगार ॥
बंदन करि कीनी सु शिव ॥ अस्तुति यहैं उदार ॥ १० ॥

अर्थ. महाराजा सागर तथा भारतीनंद कवि ए बे जणाए योगीना जेवां चिन्ह धारण कर्यां पछी, महादेवने वंदन करीने जे स्तुती करी तेनुं वर्णन करुंछुं. ॥ १० ॥

॥ अथ शिव स्तुति ॥ छंद सेनिका ॥

गंग धार जह धार मंडियं ॥ आध अंग संग लीन चंडियं
॥ बाल चंद बिंद लाल ज्वालियं ॥ कंगनं भुजंग मुंड मालि
यं ॥ शूल पान हे पिनाक सज्जनं ॥ डाक डमरू अवाज ब
ज्जनं ॥ जंग जीत नीत भंग खावनं ॥ ख्याल प्रेत जाल
कों खेलावनं ॥ व्याल आल खाल लीन वासनं ॥ केहरी
बिछान कीन आसनं ॥ अंगकों विभूत रंग चाहियं ॥ जोग
भोग ध्यान प्रान ग्राहियं ॥ देव दानवं नगेश वंदनं ॥ वंदि
तं कलेश वृंद कंदनं ॥ कामना मनांछ पूरनं करं ॥ जे महे
श जे महेश जे हरं ॥ ११ ॥

अर्थ. जटामां गंगाना जळरूप धरेणुं धर्युंछे, ने अर्ध अंगमां पार्वतिने राखेलाछे, कपाळमां बीजनो चंद्र, लाल ली... नी ज्वाळा धारण करीछे, तेमज सर्पनां कडां ने गळामां मुंडनी माळा धरीछे, हाथमां त्रिशूळ तथा सजेलुं पिनाक धनुष लीधेलुंछे, ने डाक तथा डमरू विगेरे वाजित्रो वागेछे, म्होटा म्होटा संग्रामो जीतीने जे हमेशां भांग खायछे ने रमतमां भूत, प्रेत पीशाचादीने खेलावेछे, हाथीना आला चामडानुं नग्न ओढी लीधुंछे, ने केसरी सिंहनुं चर्म बीछावी आसन करेलुंछे, अंगे विभुतीनो रंग चढावीने योग रूप भोगनां ध्यानमां प्राण ने ग्रहणकर्याछे, देवदानव, पर्वत विगेरे जेने वंदन करेछे वंदन करनारा भक्तोना क्लेशने नाश करनारा मनमां इछेली कामनाने पूरण करनार शंकर? तमने नमस्कार करूंछु नो हे हर? कृपा करीने हवे जय आपो. ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

शिव वंदन कर जोर, एती शिव आराध करि ॥

वानि वदी वहोर, उमया स्तुति कीनी यहें ॥ १२ ॥

अर्थ. एवी रीते स्तुति पुर्वक शंकरनुं आराधन करी वे हाथ जोडीने वंदन कर्युं, पछी घणी सुंदर वाणीथी उमयाजीनी आ प्रमाणे स्तुति करी. ॥ १२ ॥

॥ अथ श्री उमा स्तुति छंद शालिनी ॥

अंगा संगा ईश सिद्धी कहानीं ॥ ईशं शीशं गंग धारा वहांनी ॥ धाता ज्ञाता राजसी रूप रांनी ॥ वेदं भेदं भिन्न बांनी बखांनी ॥ कंजा रंजा वैष्नवी सृष्टि व्यापी ॥ देवा सेवा दानवं देव थापी ॥ नीरा तीरा तीरथं रूप रत्ती ॥ सत्ता वृत्ता चित्त वृत्ति प्रकृत्ती ॥ सूरा नूरा कुंभनीमें प्रकाशी ॥ चंदा छंदा वृच्छ वेली विकासी ॥ वारा धारा मेदनीमें वृषंति ॥ पारावारा नीर वीरा नखंती ॥ मेरा फेरा हेमरांया म्रजादा ॥ ब्रह्मा क्रंमा नीत रीता विवादा ॥ भोमा व्योमा तेज नीरा समीरा ॥ तत्ता सत्ता ग्यांन ध्यांना गहीरा ॥ तांमा [illegible]त्विकी राज राया ॥ नीचा बीचा ऊरधा मध्य माया [illegible] धुन्या धारना नाम धारा ॥ दग्गा नग्गा इंड ब्रह्मांड [illegible]रा ॥ मंत्रा जंत्रा तंत्र विद्या विलासा ॥ धंन्या कंन्या पूरनीं चिंत आसा ॥ प्रेमा नेंमा कारनं रूप माता ॥ जोगा भोगा वंदितं सिद्धि दाता॥१३॥

अर्थ. शंकरना अंग साथे रहीने तुं ईश्वरी सीद्धि केहेवाणी, महादेवना मस्तक उपर गंगा रूपे रही जळ धारा थइने वहोछो, धारण करनारी, जाणनारी, रजोगुण रूपी रूपवान महाराणी तुंछो, ने चार वेद जूदी जूदी वाणीओना भेदोथी वखाणेली तुं कमळा रूप, रंजन करनारी, वैष्नवी

रूप, आपी सृष्टीमां व्यापी रहीछो. देवाधिदेवी जाणीने देव सेवा करवा माटे देव तथा दानवोए आपेली तुं, जळ रूप, कीनारा रूप, तीर्थ रूप, पार आपनारी गति रूपछो. सत्ता रूप, आवृत्ति रूप, चित्तनी वृत्ति रूप, प्रकृति एटले महामाया रूप पण तुंछो. सूर्य रूप, तेज रूप, कुंभक प्राणायाममां अथवा घट घटमां प्रकाश करनारी, चंद्र रूप, छंद रूप, तुं, वृक्ष तथा वेल रूपे प्रफुल्लित थइछो, मेघ रूपे जमीनमां वरसाद करनारी, समुद्र रूपे पाणीनो लेहेरो नाखनारी, मेरु पर्वत रूप, फेर रुप, ने हिमालय रूपे मर्यादा करनारी तुंछो. वेदना क्रम रूप, नीति रूप, रीति रूप, ने वाद तथा विवाद रूप तुंछो. पृथ्वी आकाश जळ तेज अने वायु रूप तुं, चेतन रूप, सत्तारूप, ज्ञान रूप, ध्यान रूप अने गंभीर रूपछो. धर्मा गुण रूप. योगी रूप, सत्व गुण रूप तुं राजराजेश्वरीछो. नीच उंच अने मध्य रूप, हे? महामाया, तुं शून्य रूप, शब्द रूप, धारणा रूप, अनेक नाम रूपने, धारण करनारीछो. दिशा रूप, पर्वत रूप, इंड रूप, ब्रह्मांडना पालने पोषनारी तुं, मंत्र रूप, यंत्र रूप, तंत्र रूप, विद्या अने विलास रूपछो. नारी धन्य केवा योग्य कन्या रूप तुं, चित्तनी आशा पूर्ण करनारी, प्रेम रूप, नेम रूप, कारण रूप, मातरूपछो. योग रूप, भोग रूप अने मंदन करनारने सिद्धि दातार ? जगदंबा, तुंने हुं नमस्कार करुं. ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

इहि विधि अस्तुति कीन ॥ शिव समीप आसन कियें ॥
कर हर दांम सु लीन ॥ ध्यांन द्रढायो सिध उभय ॥१४॥

अर्थ. एवी रीते स्तुति करीने शिवजी पासे आसन कर्या, पछी हाथमां रुद्राक्षनी माळा लइने बन्ने सिद्धोए ध्यांन द्रढाव्युं. ॥ १४ ॥

कलाप्रवीन सु संग ॥ अंते उर गुज्जर नृपति ॥

अतिही भरे उमंग ॥ फंदन चढि कीनो गमन ॥ १५ ॥

अर्थ. कलाप्रवीणने संगे लइने गुर्ज्जर देशना राजा नीतिपाळनी तमाम राणीओए अति उमंगथी रथमां बेशीने शिवालय तरफ गमन कर्युं. ॥ १५ ॥

॥ छप्पय ॥

ईस देहरी आय, गीरद कीने पहिरायत ॥
उतरे राज जनांन, लगी दोहरि सु किनायत ॥
वहें देहरी तिष्ठ, खबर अंदर मगवाई ॥
तबें हकीकति तहां, सिद्ध दोऊकी पाई ॥
ओरनें कह्यो सो उठा इयें, तबें कुसुम बोली तहां ॥
इत पाव घरी कीजे बिलम, हमें देखआवें उहां ॥ १६ ॥

अर्थ. शिवालयना दरवाजामां आवीने चारे तरफ फरतो पेहेरो बेसारी दीधो, ने बेवडी कनात खेंचाणी एटले राजानुं जनानुं उतर्युं, तेओए ते डोढीमां उभां रहीने अंदरना खबर मगाव्या, त्यारे त्यांहां शिवालयमां बे सिद्धो बेठेलाछे एवी हकीकत मालम पडी, ते वखते बीजां केटलांएके कह्युं के जोगीओने त्याह[illegible] उठाडी मुकोए, आवां वचन सांभळीने कुसुमावळी झडपथी बोली के जो आप सर्व पा घडीमात्र आहीं विलंब करो तो हुं त्यांहां जोइ आवुं. ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुम आइ शिव थांन प्रति, कीया सिद्ध दीदार ॥
उर धारी हांसी उकति, बोली यहें तिहि बार ॥ १७ ॥

अर्थ. कुसुमावळीए शिवालयमां आवी ने सिद्धनां दर्शन कर्यां, पछी पोताना मनमां मश्करी करवानुं धारीने ते वखते हास्य उक्तीथी आवां

नमन चौंसी. ॥ १७ ॥

॥ चोपाई ॥

कुसुम सिद्ध हर वंदन कीनों ॥ फुनि जुवाब जोगी प्रति दीनों ॥ नीतपाल अंतेउर आवें ॥ कही जोगि इतसें उठ जावें ॥ तुमें रहन हम अरज सु कीनीं ॥ काहूओर कानहुं न दीनी ॥ कहो अबें क्या मतो करेंगें ॥ आप रहत चकडोल फिरेंगें ॥ एती सुनत जोग सिद्धाई ॥ बदन जोति बेहोंस लखाई ॥ सुर्त दीठ ब्रह्मनि ठहरानी ॥ धारी कहा बदत यह बानीं ॥ मिलत दीठ बाला मुसकांनीं ॥ कहा जोग सिद्धि सु पिछांनीं ॥१८॥

अर्थ. कुसुमावळीए प्रथम सिद्ध तथा शंकरने वंदन कर्यु, पछी जोगी प्रत्ये आवां वचन कह्यां के नीतिपाळ राजानी राणीओ दर्शन करवा माटे आवेछे, तेओ कहेछे के जोगीओ आंहीथी उठीजाय, तमारी रेहेवा विषेनी में घणी अरज करी, परंतु ते काने सांभळतां कोइए ध्यानमां लीधी नहीं. तो हवे शो मत करशुं ते कहो? पण आप जो आंही रेहेशो तो तमाम रथ पाछा फरी जशे, एटली वात सांभळतांज जोगीनी सिद्धाइ सौघो पडी गइ, एटलुंज नहीं पण म्होढानी कांति झांखी पडी तथा चेहेरा उपर बेहोंशी देखाइ आवी, जोगीनी सुरत जोइने ब्रह्म कुमारी उभी रही अने मनमां धार्यु के जोइए हवे आ सिद्ध केवां वचन बोलेछे! त्यां तो एक बीजानी द्रष्टी मळतांज कुसुमावळी हशी पडी, अने सिद्धने केहेवा लागी के तमारी योग सिद्धाइनो जाणी. ॥ १८ ॥

॥ तत्र सागरोक्त सोरठा ॥

कैंधों कहत बनाय, कैंधों साची कुसुम यह ॥

एतों करत उपाय, मिले न मिंत प्रवीनजू ॥ १९ ॥

अर्थ. जोगीए कह्युं के हे? कुसुमावळी, आ वात तमे बनावीने कहोछो के शुं साचीछे! शिव! शिव! आटलो उपाय करतां पण प्रियमित्र प्रवीण मळ्यां नहीं. ॥ १९ ॥

अथ अलंकार जातिस्वभाव ॥ सवैया ॥

गायनकी अरु नायनकी नित, नेंननिकी बरुनी कसबेकी ॥ पांन सुरा रुचि पांनहि खांनकी, आंनन आंन बधू द्रसबेकी ॥ भूपन बास सुबास चढावन, सेज बिलास समे हसबेकी ॥ जोंलों प्रबीन बियोग तबें, लगि सोह हमें सुखसें बसबेकी ॥ २० ॥

अर्थ. गायन करवाना, नावाना, ने हमेशां आंखनी पापणो कसीने सुवाना, प्रीतीथी सुरापान करवाना, पानबीडी खावाना, बीजी स्त्रीओनां मुख जोवाना, घरेणां तथा सारां सारां वस्त्र पेहेरवाना, अंगमां सुगंधी पदार्थ लगाडवाना, तेमज सेज विलासनी वखते हसवा, समेत ज्यांहां सुधी प्रवीणनो वियोगछे त्यांहां सुधी सुखथी वसवाना पण म्हारे सोगनछे. ॥ २० ॥

॥ अथ अलंकार जाति स्वभाव ॥ सवैया ॥

परबीनसें चिंत अधीन भयो यह, जाय न काहुसें भेद कहें ॥ धर धीर कहांलों शरीर रहें, अशरीरके तीर परें न सहें ॥ नित आस उदास नयेइ नये, अरु बासर जात चहेइ चहें ॥ बतियांको बिचार कहंत तुमे, पतियां छतियां कर हार रहें ॥ २१ ॥

अर्थ. प्रवीणनी साथे आ चित्त आधीन थयुंछे तेभेद कोइने कह्यो

[illegible] नर्मी, तेम धैर्यता धरवाथी पण क्यांहां सुधी शरीर रहे? केमके [illegible] गगनना कामदेवनां तीर पडेछे ते हवे सेहेवातां नथी, हमेशां आ [illegible] अने उत्त्रासो नवी नवी थती जायछे अने दिवस पण वह्याने वह्यां-न [illegible], आ वातनो विचार तमने कहीयेतो केवळ पत्रनेज छातीना [illegible] करीने रहीयेछीए ॥ २१ ॥

॥ अथ अलंकार द्रष्टांत ॥ सवैया ॥

द्रोन उठावन बांन लग्यो भ्रत, ध्यांन हरी हनुमांन जती ज्यों ॥ ऐंचत बासन दुष्ट दुशासन, श्रीपति साधन पंडव ती ज्यों ॥ थंभको दंभ निहारतही प्रहलादकि, राम रुपी मुरली ज्यों ॥ मिंन प्रवीन प्रवीन पुकारत जारत जेरनछो ड मनों ज्यों ॥ २२ ॥

अर्थ. द्रोणाचळ पर्वत उठावतो वखते भरतनुं बाण वागवाथी हनुं-मानजीए जेम हरीने ध्यान धरीने पोकार्या, कौरवोनी सभामां दुष्ट बुद्धि-वाळा दुशासने चीर खैंच्यां ते वखते पांचाळीए जेम लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण ने [illegible] समर्या, तपावेला थंभनो दंभ जोइने प्रेल्हादजीये जेम रांम [illegible] मदजवाथी रामने पोकार्या, अने वळती वखते सती जेम [illegible] पण पोकारेछे तेमज अमे हे? प्रवीण हे? प्रवीण [illegible] छीये.

॥ दोहा ॥

कहीं कुसुम तव मुह मुसक, धारन राज द्रढाय ॥
हलवेकी भेंखी हमें, अबही हाजिर आय ॥ २३ ॥

अर्थ. हे तमने राजाने धारणा द्रढावीने कुसुमावळीये मुखथी मरकी [illegible] मलकीनी वात कही पण प्रवीण तो हमणांज आपनी

पासे आवी हाजर थाय. ॥ २३ ॥

कुमरी कलाप्रवीनकी, एसी दसा व्रतंत ॥
निस दिन यह साधन लगो, मिंत मिंत अरु मिंत ॥ २४॥

अर्थ. कलाप्रवीण कुमरीनी पण एवीज स्थिति थइ गइछे, जेथी रात दिवस मीत्र मीत्र अने मीत्र एवुंज साधन लाग्युंछे. ॥ २४ ॥

अथ कुसुमोक्त कलाप्रबीन दशा वर्नन अलंकार रूपक भेद ॥ कवित्त ॥

मुकता प्रबालनकी, मालके समान होत, चंदन चढायो सोतो बंदनसो व्हेंजात ॥ बिरही असुर बांनीं, लागत डरांनी अति, बरि बरि उठें नेक, बरह बरह कहें जात ॥ घटा गहे रांनके निसांनकी अवाज सुनि, नेंनन हुतासनले, सरकर गहें जात ॥ सावनकी जामनिमें, दामनि पताखा देखि, कामनि सरूप कबें, कालिकाको लहें जात ॥ २५ ॥

अर्थ. वियोगना तापने लीधे सफेत मोतीनी माळा परवाळानी माळा समान आरक्त थइ जायछे, अने अंगे चंदन चढावेलुंछे तेतो सिंदूरना जेवुं लाल थइ जायछे, मोरनीं अथवा विरह संबंधी आसुरी वाणी अतीशे डरामणी लागेछे, वळी वळीने उठेछे ने वळुंछुं वळुंछुं एम कहे जायछे, फेलाएला मेघनी घटाना निशाननो अवाज सांभळीने नेत्रना अग्नीनुं बाण हाथमां लेती जायछे, श्रावण मासनी रात्रीमां वीजळी रूप पताका जोइने कामनी क्यारेक कालिकानुं रूप धारण करी जायछे. ॥ २५ ॥

जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

आंन तिहारि तिहारि हितू मोहि, पांनिहि पांन मिलावतहें

॥ चुंबन ओर अलिंगन खंडन, आपहिके सम भावतहें ॥
नांउ तिहारे सुरा भरि भाजन, पीवत ओर पिवावतहें ॥
वानकी चाह लगी तुमकों वह, ओरन वात बनावतहें ॥२६

अर्थ. तमारा वास्ते लावी लावीने म्हारा हाथनी साथे पोतानो हाथ मिलावेछे, चुंबन, आलिंगन, अने मर्दन आपनी साथे करवां गमेछे, वळी तमारा नामथी मदिरानां पात्र भरी भरीने पोते पिएछे तेम बीजा-ओने पायछे, तमारा संबंधी वात करवानी चाह लागीछे तेथी बीजी वात करतीज नथी. ॥ २६ ॥

तत्र कवि उक्त कुसुम विरदावली द्रष्टांतालंकार

॥ सवैया ॥

सेज सुही चलि नंदाकि नंदनि, व्हां सपनें अनिरुद्धहि देखा
॥ सांमहि सांम पुकार उठी वह, वाम बहे द्रग वारि विशे
षा ॥ मंत्रि सुता सुर दानव मानव, चित्र बनाय बताय परे
खा ॥ पंखनि होय मिलाय प्रवीनजू, एक सरायें सखी चि
त्रलेखा ॥ २७ ॥

अर्थ. बळीना पुत्र बाणासुरनी कंन्या (ओखा) सज्यामां सुती हती त्यारे स्वप्नामां अनिरुद्धने जोया, ते वखत हे! पति, हे! पति, एम पोकार करती जागी उठी पछलुंग नहीं पण तेना नेत्रमांथी विशेषे करी पाणी वे-हेवा लाग्यां, त्यारे कुंभांड नामना प्रधाननी कंन्याए देव दैत्य अने मनुष्य विगेरेनां चित्रो लखी बनावीने तेनो जे पति हतो तेने परखी लीधो, पछी पोते पंखणी रूप थइ अनिरूद्धने लावीने मेळवी दीधा, तेम तमे जो प्रवीणने लावीने मेळवी आपो तो अमे तमने एक चित्रलेखा सखी समान गणीने वखाणीए. ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम पियाला जिन पिया, ताकों शुद्ध न बुद्ध ॥
बानांसुर तनया छकी, लखी छबी अनिरुद्ध ॥२८॥

अर्थ. जेणे प्रेमना पियाला पीधा होय तेने शुद्ध के बुद्ध रेहेती नथी, जेमके स्वममां अनीरूद्धनी छबि जोइने बाणासुरनी पुत्री ओखा दीवानी थइने छकीगइ. ॥ २८ ॥

॥ अथ कुसुमावलि उक्त सोरठा ॥

आई हमे प्रयांन, बनिहे सो करिहों सबें ॥
आवे कबी जु आंन, आप न इतसें ऊठियें ॥२९॥

अर्थ. अमे प्रयाण करीने आव्यांछीए, माटे बनशे ते सघळुं करशुं, पण जो कदी बीजुं कोइ आवे तोय आप आंहींथी उठी जशोमां.॥२९॥

ऐसो मतो सुनाय, कुसुमावलि पीछी फिरी ॥
सो जनांन प्रति जाय, कही सु बरनन अब करहुं॥३०॥

अर्थ. एवो मत संभळावी दइने कुसुमावळी पाछी फरीआवी, तेणे राणीओ पासे जइने जे बात कही तेनुं हवे वर्णन करुंछुं ॥ ३० ॥

॥ गाहा ॥

दंपति जोग शृंगारं, सागर कुसुम शिवालयं चर्चा ॥
सप्त त्रिंश अभिधानं, पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ ३१ ॥

अर्थ. स्त्री पुरुषे योग तथा शृंगार सज्या, पछी शिवालयमां सागर अने कुसुमावळीने चर्चा थइ ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनो साडत्रीशमो लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ ३१॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कलाप्रवीन रससागर योग शृंगार वर्ननो नाम सप्त त्रिंशतिमो लहरं ॥ ३७ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणि श्री राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां सप्तत्रिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३७ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद भुजंगप्रयात ॥

सुता भूपनी ईशने धाम आवी ॥ मळी जोगिने चित्तमां प्रेम लावी ॥
स्त्री देवती श्री मुखें काव्य जेनो ॥ आडत्रीशमी लेरमां भेद तेनो ॥

॥ अथ कलाप्रवीन शिव पूजन प्रसंगो यथा॥दोहा॥

जाय कुसुम जनांन प्रति, ऐसें कही बनाय ॥
शिव समीप जोगी उभय, सो शिवरूप लखाय ॥१॥

अर्थ. कुसुमावळीए राणीओ पासे जइने आ प्रमाणे वात बनावी ने कह्युं के शिवजीनी समीपे जे बे जोगीओ बेठेलाछे ते तो प्रत्यक्ष शिवस्वरूप देखायछे. ॥ १ ॥

वह आसन उठवें नहीं, कैसें उठो कहाय ॥
वह दरशन लायक उभें, परसन परम सदाय ॥ २ ॥

अर्थ. एओ आसन उठावे नहीं, तेम तेने उठी जाओ एम पण केम कहेवाय? परंतु ते बेय जोगीओ दर्शन करवा लायकछे, एटलुंज नहीं पण हमेशां स्पर्श करवाथी परम कल्याण करे एवा जणायछे. ॥ २ ॥

सुनत एह ब्रह्मनि बचन, उतरे बाला वृंद ॥
किय प्रवेश हर देहरी, उरमें भरे अनंद ॥ ३ ॥

अर्थ. ब्राह्मण पुत्री कुसुमावळीनां एवां वचन सांभळीने राणीयोनां वृंद रथमांथी नीचे उतर्यां अने हृदयमां आनंदथी भरपूर थइने शिवजीना मंदिरमां प्रवेश कर्यो. ॥ ३ ॥

॥ अथ छंद चामर ॥

देहरी समीप आय, बाल वृंद उत्तरी ॥ जेहरी झनंककी भनंक कानमें परी ॥ कोटरी दिवालके दुहारमें प्रवेसितं ॥ तीर मींन नीर ज्यों चहंत जोगिके चितं ॥ तारुनी समूह मंद मंद देहरे चली ॥ मांनहो सुरी पुरी महेश पूजनें मिली ॥ अंग नंगके शृंगार रंग रंग सारियं ॥ दामनी प्रकाश दीपमालिका उजारियं ॥ कामनी शरीरके सुवास भ्रंग रंजितं ॥ बागके प्रसूनको बिकास छांड गुंजितं ॥ वंक नेंन राहकों बिलोकबो सु अद्दरे ॥ सिद्ध जोग ध्यांनको द्रढाव फेरकें करे ॥ एक एकसें करंत हांस भेद छंदियं ॥ द्वारके समीप आय ईश शीश बंदियं ॥ सिद्ध शिष्य उच्चरे सु एक एक आवनां ॥ पूजका समांन एक ओर साथ लावनां ॥ फूल केसरं कपूर ब्रह्म बालनें लिया ॥ आदिही प्रबीनका प्रबेश देहरे किया ॥ ४ ॥

अर्थ. देवालयना द्वार समीप आवीने स्रीयोनां जुथ्थ उतर्यां, तेना पगना झांझर तथा लंघरना झणकारनी भनक जोगीना कानमां पडी, कोटना द्वारमां प्रवेश करतांज कीनारे पडेलुं माछलुं जेम जळने चाहे तेम योगीनुं मन प्रवीणने चाहवा लाग्युं, तारुणीओनां वृंद धीमे धीमे देहरे चाल्यां, ते जाणे स्वर्गनी देवांगनाओ महेश्वरनुं पूजन करवा मळी होयनै? अंगे जात जातना रंगदार नंगथी जडीत्र शणगार सजेलाछे तेथी जाणे वीजळीओ चमकती होय अथवा दीपमाळा प्रगटी होयनै? आ स्त्रीओना शरीरना सुगंधथी रंजन थयेला भमराओ बगीचा मांहेला खीलेला फूलना सुगंधने छोडी दइने पासे आवीने गुंजारव करवा लाग्या, नेत्रना वांका कटाक्षथी मार्ग जोवानुं आदरे तो म्होटा सिद्ध तथा यो-

मांहे पण फरीने ध्याननो द्रढाव करवो पडे, एक एकनी साथे परस्पर मळवानी मेदथी अनेक छंद करतां शिवना द्वार पासे आवी शंकरने मस्तक नमावीने सर्व स्त्रीओए वंदन कर्युं, त्यारे सिद्धना शिष्य बोल्याके एक एक जणीए अंदर आववुं अने पूजानी सामग्री उपाडवासारु एक बीजा मांगनने साथे लाववुं. एवां वचनसांभळतांज ब्रह्म पुत्री कुसुमाव लीए झडपथी फूल कपूर केसर विगेरे पूजानो सामान पोते लीधो, ने तयेनी पेहेलां देवालयमां प्रवीणने प्रवेश कराव्यो. ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

अंदर कियो प्रवेश, कुसुमावली प्रवीन दुहु ॥
सिद्ध शिष्य आदेश, बाहिर बैठी बाल सब ॥ ५ ॥

अर्थ. कुसुमावळी तथा प्रवीण ए बे जणीओए देवालयमां प्रवेश कर्यो एटले सिद्धना चेलानी आज्ञा प्रमाणे तमाम राणीओ बहारना घुमटमां बेशीगइ. ॥ ५ ॥

॥ अंदर चरित्र यथा गाहा ॥

जय जय हर उच्चारियं ॥ उमया ईश वंदियं बाला ॥
कुसुमावलि कर गहियं, सिध समीप आसन ऊन दिया ॥

अर्थ. "जय हर जय हर" एवा उच्चारनी साथे प्रवीणे उमा तथा इ-शने वंदन कर्युं, एटले कुसुमावळीए हाथ ग्रहण करीने सिद्धनी समीपे मृगछालाना आसन उपर राजकन्याने बेसारी दीधी. ॥ ६ ॥

उर धारत्ता अभिलाषा, स्मित मुख फेर वंदियं सिद्धं ॥
कुमरि दीठ अहारियं, हर गुरु लोग जोग त्रय रुप्पी ॥७॥

अर्थ. हृदयमां धारेली कन्यानो अभिलाषछे, माटे मंद हास्यथी शो-भीता मुखने फेरवीने सिद्धने वंदन कर्युं, पछी शंकर, वडीलो, तथा योगी ए त्रणे तरफ कुंवरी अनुक्रमे नजर चलावा लागी. ते आ प्रमाणेके सिद्धनीना दर्शन करवां, वडीलोने खबर न पडे एवीरीते तेओनी नजर

वचाववी अने सिद्धने जोइने ते साथे चर्चा करवी. ॥ ७ ॥

॥ तत्र सागरोक्त सोरठा ॥

निरखित नार शृंगार, सिद्ध सु भंखिय शिष्य प्रति ॥
वरनन शंकर नारि, सब नखतें शिखलों कहों ॥ ८ ॥

अर्थ. प्रवीणना शृंगारने जोइने सिद्धे पोताना शिष्यने कह्युं के आना शणगारनी साथे सरखावीने शंकरनी स्त्री पार्वतीना शृंगारनुं नखथी ते शिखा पर्यंत सघलुं वर्णन कहो. ॥ ८ ॥

उमया उरमहि धारि, रूप सु कलाप्रबीनको ॥
शिष्य सु उकति उदार, गुरु आयस बर्नन बद्यो ॥ ९ ॥

अर्थ. हृदयमां उमयाजीनुं ध्यान धरीने शिष्ये सुंदर उक्तीथी गुरुनी आज्ञाने लीधे कळाप्रवीणना स्वरूपनुं आ प्रमाणे वर्णन कही बताव्युं. ॥ ९ ॥

अथ वह शृंगार बर्ननं ॥ छंद हनुंफाळ यथा ॥

पद पीठ कंजन रंग ॥ नख जटित कुंदन नंग ॥ पिंडुरि सु मेंन निषंग ॥ उलटी सु रंभा जंग ॥ दोऊ नितंब सु पीन ॥ तट रूप सरके कींन ॥ त्रिवली सु गंग तरंग ॥ कटि कस्यो केहरि अंग ॥ नव नाभि नीरज धारि ॥ राजी सु चेंटी हारि ॥ कुच कलश कंचन चक्क ॥ नारिंग बिल्लव पक्क ॥भुज कामकी धुज दंड ॥ कर कंज माधुर मंड ॥ ग्रीवा सु कनक कपोत ॥ पक अंब ठोडी जोत ॥ बींबी सु ओठ प्रवाल ॥ रसना कमल दल लाल ॥ दारयो कली छबि दंत ॥ नासिका कीर चुगंत ॥ सौवरन सिकता श्रोंन ॥ अलकावली

अहि छीन ॥ मृग मधुप मीन सु नेंन ॥ भ्रकुटी चढ्यो
धनु मेंन ॥ छवि भाल आधक चंद ॥ फनि छत्र वेंनि फनींद
सिरफूल वेंदी दीन ॥ कजरांन रेखा कीन ॥ वेसर तरोंनां
सार ॥ मुख रंग रेख तँवोर ॥ कंगनी वलय किनार ॥ चो
की हमेल सु हार ॥ रसना मजीर वजंत ॥ जेहरी धुनि झन
कंत ॥ विछुवा अनोंट सुधार ॥ रुचि रीझ देखन हार ॥ न
वरंग अंग दुकूल ॥ शृंगार माला फूल ॥ मुख चंद्रिका छ
वि रंन ॥ कहि कोकिला सुर वेंन ॥ उपमा अनेक सु लीन॥
श्रम रंग रेखा भीन ॥ पढि प्रेम रूप रसाल ॥ जय जय
सु शंकर वाल ॥ ॥ १० ॥

अर्थ. पगना तळानो रंग लाल कमळना जेवोछे, ने नखतो कुंदन-
मां नंग जडेला होय तेवा चमकेछे, पगनी पींडीओ कामदेवना
भाथा जेवी दीसेछे, ने उलटावेली केळना स्तंभ जेवी जांघोछे, वे नीतंव
अति कठणछे एटलुंज नहीं पण ते तळावना कीनारा जेवा मांसल
(मानसाळा) करेलाछे, पेट उपर त्रण वाटानी त्रिवळी पडेछे ते गंगा
नी लेहेरो जेवी शोभेछे, कटितो कसायला केसरी सिंहना जेवी पातळी
छे, अने नाभि पण नवीन कमळ जेवी धारवामांछे, पेट उपर वारीक
वाळनी हार वेसाड गइछे, ते जाणे सोनानी भींत उपर काळा रंगनी
कीडीओनी हार चालती होयने एवो देखाव आपेछे, कठीन अने उन्नत
स्तन ते जाणे सोनाना कळश, चकवा, नारंगीना फळ तथा पाकेला बी-
ला जेवाछे, हाथ तो कामदेवनी धजाना दंड जेवाछे, हथेळीओ खीले-
ला कमळनी बरोबरी करेछे, गळुं सोनाना होलाना गळा बरोबरछे, ने
आंगळी पाकेली फळी जेवीछे, होठ बोला तथा परवाळां जेवा लालछे,

जीभ कमळना कुंपळ जेवी लाल अने कोमळछे, दांतनी छबी दाडमनी कळीओना जेवीछे, नाक पोपटनी चांच जेवुं नमणुंछे, कान सोनानी छीप जेवाछे, वाळनी वारीक लटो सर्पना बच्चां जेवी दीसेछे, नेत्र मृग, भमरा तथा माछली जेवां चपळछे, भृकुटी चडावेलां कामदेवना धनुष जेवीछे, कपाळ अर्ध चंद्र जेवुं शोभीतुंछे, वेणी फण चडावेला नागना छत्र जेवीछे, माथा उपर शिरफुल अने जडित्र बिंदुली धारण करेलीछे, आंख्योमां काजळ सारीने वारीक रेखाओ करेलीछे, नाकमां झुमखादार मोरवाळी नथ पेहेरेलीछे, कानमां तरोना (झाल्यो)लटकेछे मुखमां तांबुलना लाल रंगनी रेखाओ घणी शोभेछे, हाथमां कंकण तथा चुडीओ पेहेरेलीछे, कंठमां चोकी हमेल तथा हार पेहेरेलाछे, कडे बांधेली कटि मेखळानी घूघरीओ घमकेछे, पगमां पेहेरेलां झांझर तथा लंघरनां झणकार थायछे, पगनी आंगळीओमां विंछीया अने अणवट धरेलाछे, ते रणकाराथी जोवावाळाने आनंद उपजावेछे अंगमां जातजातनां रंगीन वस्त्र पेहेरेलांछे, वळी शणगारमां वधारो करवा सारु फूलना हार तथा गजरा धारण करेलाछें, मुख पुनमनी रात्रीना पूर्ण चंद्रजेवुं ओपेछे, स्वर तथा वेण कोयलना जेवांछे, एवी अनेक उपमाओने धारण करनार रसना रंगनी रेखाओथी भींजाएलीछे एवीरीते प्रेमथी रसवाळा रूपनुं वर्णन करीने कविए कह्युं जे हे? शंकरनी स्त्री पार्वति, तमने नमस्कार करुंछुं माटे कृपा करीने जय आपो. ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

कुमरि अंग कबिराज, उमा उक्ति बर्नन कियो ॥
सागर हरष समाज, पूजन लिया प्रवीनजू ॥ ११ ॥

अर्थ. एवीरीते कविराजे उमानी उक्तीथी कलाप्रवीण कुंवरीनां अंगनु वर्णन कर्युं, ते सांभळीने सागरे हर्ष धारण करीलीधो ने प्रवीणे

पूजानी सामग्री लीधी, ॥ ११ ॥

॥ अथ छंद भुजंग प्रयात ॥

शिवं शीश पंचाम्रतं धार मंडे ॥ उतें सिद्धसें बंकद्रष्टी न छंडे ॥ इतें चंदनं ईश शीशं चढावें ॥ उतें मित चिंतं अनंदं बढावें ॥ इतें बिल्वं पल्लवं शंभु धारे ॥ उतें नेनकी सेंन नाराच डारे ॥ इतें शंकरं धारितं फूल माला ॥ उतें मोहितं जोग चारित्र वाला ॥ इतें कीन माहेश्वरं दीप धूपं ॥ उतें हाव भावं दिखावें सरूपं ॥ इतें वाम कामा गुलालं अरच्चा ॥ उतें तापसंकों लखावें चरच्चा ॥ इतें आरती राजकन्या उतारे ॥ उतें नेंन संन्यास अंगं निहारे ॥ इतें दच्छना पांन पूगी धरावें ॥ उतें मितकों प्रेम पानं करावें ॥ किये पूजनं ईश्वरं फेर वंदा ॥ इतें मध्य वानी बदी ब्रह्म नंदा ॥ शिवं रूप जोगेशकों हार साजो ॥ हमें सेव कीजें तहांलों बिराजो ॥ कुमारी गरे हार सिद्धं धराया ॥ वही ब्रह्मनी अद्वरी ब्रह्ममाया ॥ करामातसें बत्त मत्ता चलावें ॥ पढे वेदसों जानने कोंन पावें ॥ दुहूं चित्तकी आनकें अभिलाषा ॥ वहें शिष्य ठाढोरहें द्वार शाखा ॥ लगें मंत्रही मंद बत्ती उचारें ॥ वडे सोरसें वेद ब्रह्मी पुकारें ॥ लगें दोउ उच्चार पीयूप धारा ॥ मनों प्रेम लेरं लगी पारवारा ॥ कहा जानियें कोंनसी वात भंखे ॥ मनों अम्रतंकी भरी मत्र नंखे ॥ वहें वातको भेद कोऊ न जानें ॥ पढें ब्रह्मनी बेद एही प्रमानें ॥ घरी दोयलों एह

कीनों सयांनी ॥ इतें मांझ वोली सखी और वांनी ॥ नहीं वेदके ब्रह्मनी पार तेरे ॥ तुमें आउ जावें हमें ईश नेरें ॥ वही वानि सो दंपती कांन लागी ॥ विजोगा गमी अंगमें जाल जागी ॥ उसासीं भरें नेंनसें वार झारा ॥ दुरावें करें ब्रह्मनी धूप धारा ॥ विछोहें बिचारी दुहू प्रांन तज्जें ॥ इतें वीचमें गैंब आवाज वज्जें ॥ भवा ईश आवाज एही उचारें ॥ उभें चिंतमें बात ऐसी न धारें ॥ रितू पट्ट येही जगें सिद्ध आवें ॥ तुमैं कीजियें सोइ जोई वतावें ॥ एही बार आवाज काहून पाई ॥ वहे चारके चिंतमें धीर आई ॥ दुहू ईश जोगीशकों वंद फेरें ॥ उठें वाल आई जहां चोक डेरें ॥ १२ ॥

अर्थ. आंहीं शिवजीना मस्तक उपर दहीं दूध विगेरे पंचामृतनी धार करवा मांडेछे ने त्यांहा सिद्धनी साथे वांकी नजर लगाडीछे, तेने छोडती नथी, आंही इश्वरना मस्तक उपर चंदन चढावेछे अने त्यांहां मित्रना चित्तमां आनंद वधारेछे, आंहीं शंभुना उपर वीलवीनां पत्र धारण करेछे अने त्यांहा मित्रना उपर नेत्रना कटाक्ष रूप वाण नाखेछे, आंहीं शंकरने फूलना हार तथा माळा धरावेछे अने त्यांहा वाळा रूप प्रवीण चरित्रथी योगीने मोह रूप माळा धरावेछे, आंहीं महेश्वरने धूप तथा दीप करेछे अने त्यांहां योगीने हाव, भाव तथा स्वरूप देखाडेछे, आंहीं शिव तथा पार्वतिने अवील गुलाल चडावीने पूजा करेछे अने त्यांहां तप-स्वीने चर्चा करी देखाडेछे, आहीं राजकन्या महादेवने निराजन आर्ती उतारेछे अने त्यांहां रंगीन नेत्रथी संन्यासीना अंगने निहाळेछे, आहीं देव पासे दक्षिणा, पान तथा सोपारी विगेरे धरावेछे अने त्यांहां मित्रनं

प्रेमनुं पान करावेछे, पूजा करी रह्या पछी फरीने शिवजीनुं वंदन कर्युं एटली वारमां ब्रह्म पुत्री कुसुमावळी आवां वचन बोली के शिव स्वरूप आ योगेश्वरने हार धरावो, ने हुं पूजा करुं एटली वारसुधी आप आंहीं बीराजो? एवां वचन सांभळीने राजकुवरीये सिद्धना कंठमां फूलना हार धराव्या, अने ते ब्रह्म पुत्री कुसुमावळीए ब्रह्मनी माया आदरी, करामत थी करपल्लवी करीने वातो करवानो मत बतावेछे.

पोते उंचा स्वरथी वेद भणेछे तेथी कोइ वात जाणी शकतुं नथी, सागर तथा प्रवीण ए बेयना मननी अभिलाषा जाणीने जे भारतीनंद शिष्य हतो ते पण वारसाख पासे जइ उभो रह्यो, त्यारे प्रवीण तथा सागर मंद मंद अवाजथी वातो करवा लाग्या ने ब्रह्म पुत्री कुसुमावळी म्होटा स्वरथी वेद भणवा लागी, बेयना उच्चार अमृतनी धारा सरखा थवा लाग्यां, ते जाणे प्रेम रूप अमृतना समुद्रनी लेहेरो फेलावा लागी होयनै? शुं जोगणीए जे शी वातो, करेछे पण जाणे मेघ अमृतनी झडीथी वरसतो होयनै! ए वातोना भेदने कोइ न जाणी शके ए प्रमाणे कुसुमावळी वेद भणेछे, आ शाहाणी सखीए त्रे घडी सुधी तो एवीज रीते सहुने स्तंभन करी राख्यां एटली वारमां तो एक बीजी सखी आ प्रमाणे वचन बोली के हे? कुसुमावळी, तमे ब्राह्मणछो माटे तमारा वेदनो कांइ पार नथी, पण हवे जो तमो बाहेर आवो तो अमे पुजा करवा सारु शीवजी पासे जइए, आ दासीनां वचन स्त्री पुरुषने कांने पडतांज वियोगना आगमनी अंगमां झाळ सळगी उठी, जेथी बन्ने उसासा नीसासा भरेछे, एटलुंज नही पण बेयनी आंख्यमांथी पांणीनां झरणां झरवा लाग्यां, त्यारे कुसुमावळीये आ वात ढांकवा सारु धूप धारा ने स्तुती करवाना प्रपंचथी वार लगाडे छे, पछी वियोगने लीधे बेय जणाए प्राण तजी दइये, एम विचार्युं एटली वारमां तो एक म्होटो गेबी अवाज थयो, ते अवाजनी साथे इश्वर तथा पार्व

तिए आवां वचन कह्यां के तमो वेय जणां मनमां एवी मरवानी वात धारशो नही, केमके छ ऋतु विती गयापछी एटले एक वर्ष आ जगोए एक सिद्ध आवशे ते सिद्ध जे प्रमाणे वात बतावे ते प्रमाणे तमो करजो आ गेबी अवाज बाहेर कोइए सांभळ्यो नहीं पण तेथी आ चारे जणना मनमां धीरजता प्राप्त थइ, पछी प्रवीण तथा कुसुमावळी, इश्वर तथा योगेश्वरने फरीथी वंदन करी आज्ञा मागी उठी ने ज्यांहां बहार घुंमटमां राणीओ बेठेलीओछे ते चोकमां आवी उभां रह्यां. ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

एक मुहूरत उपजती, दंपती चरचा कींन ॥
कछु बरनें संछेप करि, भारति निज मुख भीन ॥ १३ ॥

अर्थ. एक मुहूर्त्त एटले बे घडी सुधी मनमां उपजेला हर्षनी साथे स्त्री पुरुषे चर्चा करी, तेनुं जुदी जुदी रीते भारतीनंद कविए जे पोताना मुखथी वर्णन आपेलुंछे तेनुं हुं थोडुं एक वर्णन करुंछुं. ॥ १३ ॥

॥ तत्र प्रथम सागरोक्त ॥ जातिस्वभाव अलंकार सवैया ॥
श्रोंन कछू न सुनें बतियां जबतें बतियां रस प्रेंम पिवायो या रसना कछु ओर न जंपत, नांम प्रवीन प्रवीन पढायो या मन ओर न चाहतहें जबतें मन आपहिकेंसें मिलायो ॥ नेंन कछू न निहारतहें जबतें मुख चंद जेसो दरसायो ॥ १४ ॥

अर्थ. ज्यारथी आपे वातो करीने प्रेमरस पीवराव्योछे त्यारथीज आ कान बीजी कोइ वात सांभळता नथी ने ज्यारथी प्रवीण प्रवीण एवुं नाम भणाव्युंछे त्यारथी आ जीभ बीजुं कांइ जपती नथी, ज्यारथी आपे मननी साथे मन मेळव्युंछे त्यारथी आ मन बीजाने चाहतुं नथी, ज्यारथी

चंद्र सरखुं मुख देखाडयुंछे त्यारथी आ आंख्यो बीजुं कांइ जोती नथी. ॥ १४ ॥

॥ दृष्टांता लंकार ॥

सीत हरी दिन एक निशाचर, लंक लई दिन ऐसोहि आयो ॥ एक दिनां दमयंति तजी नल, एक दिनां फिर ही सुख पायो ॥ एक दिनां वन पांडवके अरु, एक दिनां छिति छत्र धरायो ॥ शोच प्रवीन कछू न करो, किरतार यहैं विधि खेल बनायो ॥ १५ ॥

अर्थ. एक दीवसे सीता राक्षसे हरी ने पाछी रामचंद्रे राक्षसोने मारी सिना समेत लंकाने झीती लीधी एवो पण दिवस आव्यो, एक दीवसे नळ राजाए दमयंतीने तजी दीधी, ने पाछो ते नळ दमयंतीने मळीने फरी सुख पाम्यो, एवो पण दिवस आव्यो, एक दिवस पांडवो वनमां गया अने एक दिवसे शत्रुओने मारी, पृथ्वीने झीती, माथे छत्र धराव्युं एवो पण दरास आव्यो, माटे हे? प्रिय मित्र प्रवीण, कांइ शोक करोमां केमके जगत कर्त्ता परमेश्वरे एवीजरीतनो खेल बनाव्योछे. ॥ १५ ॥

विभावनाऽलंकार ॥ दोहा ॥

मजनूं चतुरानन बनें, भेद लहें रस भीन ॥
चतुरानन मजनूं बनें, धन दिन वहैं प्रवीन ॥ १६ ॥

अर्थ. जो मजनुं ब्रह्मा थाय तो जूदा जूदा रसना भेदोने ग्रहण करे, अने ब्रह्माछे तेज जे दिवसे मजनुं थाय तो हे? प्रवीण, ते दिवस धन्य केहेवाय. ॥ १६ ॥

॥ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

नैंन उसास हियो भर आवत, वासर ऐसें किते भरियें ॥

ले फिरियाद कहां फिरियें अरु, लाय लगे सो कितें लरियें ॥ जाय किधों गिरियें गिरि तुंगन, खाय किधों विपकों मरियें ॥ मिंत कछू उपचार बताइयें, अंत प्रवीन कहा करियें ॥ १७ ॥

अर्थ. हमेशां निशासा उसासाथी हृदय तथा आंख्यो भराइ आवेछे ते आमने आम केटलाक दिवस भर्या करीए, आ वातनी फरीयाद लइने क्यांहां फरीए, तेम लाइ लागे त्यारे क्यांहां जइने लडीये, उंचा पर्वत उपर चडी जइने पडीए? के झेर खाइने मरीये! हे! प्रवीण, तेनो कांइक उपाय बतावो! के अमे अंते शुं करीए. ॥ १७ ॥

अथ कलाप्रबीन श्रीमुख चर्चा द्रष्टांतालंकार

॥ सवैया ॥

जैसेंहि सागर डीठ परे तुम, तेंसेहि ध्यांन हमेश रहों धर ॥ गावतहों गुन गीत अहो निश, आवतहें अखियां हियरा भर ॥ कैसी करौं किरतारकी हैं गति, नांहि मिलें को उपाय कहूं कर ॥ आपके पायनकी सो यहें विधि, गाय बँधि ज्यों कसायनके घर ॥ १८ ॥

अर्थ. हे! सागर, जेवा तमो नजरे जोवामां आव्याछो तेवुंज हमेशां ध्यान धरीने रहुंछुं, अने अहोनिश आपनाज गुणनां गीत गाउंछुं, तेथी आंख्यो अने हृदय भराइ आवेछे, तो केम करुं! जे परमेश्वरनी एवी गतिछे, के कोइ उपाय करवाथी मळवानो जोग बनतो नथी, जेवीरीते कसाइने घेर गाइ बंधाएली होय तेवीरीते आपना पगनो आ दासी बंधायेलीछे. ॥ १८ ॥

॥ जाति स्वभाव अलंकार ॥

पायन बीच जँजिर जरे तब, कोउ उपाय चलें न तियाकी

बात कही न बनें सो कहूं प्रति, हौंस रहीहे हियामें हि थाकी ॥ जो पल बीततहें हमकों वह, कैसें कहों मुखसें जो कियाकी ॥ सागर नागर नागर हो यह, जानतहें जग दीश जियाकी ॥ १९ ॥

अर्थ. वे पगनी वच्चे बेडी जडे त्यारे पछी स्रीनो कोय उपाय चाले नहीं, आ वात कोइनी पासे कही जाय एवी नथी, माटे हयानी हौंशतो हयामांज रहीछे, अने अमने दुःखमां जे पळ वीतेछे ते केम कही शकुं? जे मुखथी कही शकाय एवी नथी, हे! सागर, तमो तो चतुरछो पण आ जीवनी वातने तो एक जगदीश्वरज जाणेछे. ॥ १९ ॥

॥ द्रष्टांताऽलंकार सवैया ॥

कोउ हनों करमे कर आयुध, केहरि व्याल करी मुख डारो ॥ कोउ गिराओ गिरव्वरसें कसि, बंध महा जल मध्य डुबारो ॥ कोउ धरो चिर मुंडन ऊपर, लोहको थंभ धगायके जारो, सागर नां रसनासें तजौं प्रहलादके राम ज्यों नाम तिहारो ॥ २० ॥

अर्थ. कोइ हाथमां खुलां हथीयार लइने मारो, अथवा सिंह सर्प के हाथीना म्होडामां नाखो, अथवा कोइ म्होटा अने उंचा पर्वत उपरथी गबडावी पाडो, कींवा बंधथी कसी लइने अथाग पाणीना दरीयामां बुडाडो, कोइ झेर पीवरावो, अथवा धगावेलो लोढानो थांभलो मस्तक उपर नाखीने बाळो, तो पण हे! सागर, जीभेथी जेम प्रहलादजीए रामनुं नाम तज्युं नहीं, तेमज हुं पण तमारुं नाम तजुं नहीं. ॥ २० ॥

॥ सोरठा ॥

चरचा यहें चलंत, बतियां फुनि औरें बनि ॥
मिले मिंत अरु मिंत, चित इकंत सुख कों चहें ॥ २१ ॥

अर्थ. एवीरीते चर्चा चालतां बीजी पण घणी वातो थइ, मित्रनी साथे मित्र मळया तेथी बेयना मन एकांतिक सुखने चाहवा लाग्यां. ॥ २१ ॥

देवर चोक़ प्रवीन, राजत जहँ मंडल रच्यो ॥
सबहूं पूजन कीन, द्वे द्वे अंद्र प्रवेश किय ॥ २२ ॥

अर्थ. देवाळयना चोकमां ज्यांहां राणीयो मंडळ रचीने बेठेलीछे त्यांहां आवीने प्रवीण बीराजमान थयां, एटले बबे जणीए मंदिरमां प्रवेश करीने सर्वे पूजन कर्युं. ॥ २२ ॥

सवा जांम निशि जात, पूजन करी पीछे फिरे ॥
उभ अवमोचन आत, पावत नांहि आरांम छिन ॥ २३ ॥

अर्थ. सवापहोर रात्री जते सर्व पूजन करीने पाछां फर्यां, त्यारे बेयजण पोत पोताने उतारे आव्यां तो खरां, पण क्षणमात्र सुख के आराम पामतां नथी. ॥ २३ ॥

सर्बरी गई सयांन, ज्वाल उभय बिरहा जरत ॥
नीतहि पाल विहांन, कूच करन आयस लई ॥ २४ ॥

अर्थ. शाहाणां बन्ने जणने सय्या उपर विरहाग्नीनी झाळोथी बळवा मांज रात बीति गइ, अने सवार थतां नीतिपाळ राजाए कुच करवानी आज्ञा लीधी. ॥ २४ ॥

सबें नृपति निज थांन, प्रति संचर कीनो गमन ॥
द्विज मंगन बहु दांन ॥ समर्पीत सागर तहां ॥ २५

अर्थ. सर्व राजाओए पोत पोतानी राजधानीना मार्ग तरफ गमन कर्युं, एटले रससागरे त्यांहां ब्राह्मण तथा भाट चारणादि मागण लोकोने दान आपीने विदाय कर्या. ॥ २५ ॥

॥ गाहा ॥

सागर कला प्रवीनें ॥ शिव थांनक श्री मुखं चरचा ॥
अष्ट त्रिंश अभि धानं, पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ २६ ॥

अर्थ. सागर तथा कळाप्रवीणने शिवाळयमां श्रीमुखथी जे चर्चा थइ ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आडत्रीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २६

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे शिवालये श्रीमुख चर्चा भेदो नाम अष्ट त्रिंशतिमो लहरं ॥ ३८ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां अष्टत्रिंशातिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३७ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीति ॥

छए ऋतुने वर्णवी, प्रवीणे लख्यो शुभ पत्र जे ॥
वांचि विवेकी सागरे, संग हृदय चांप्यो तूर्त्त ते ॥
पछि लख्यो उत्तर अनु भवे, करि काव्य नवली नेहथी ॥
ओगणचाळीश लेर तेनो भेद भणशे स्नेहथी ॥

अथ दंपति षट् ऋतु विरह प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

बीतत सह निज थांन प्रति, भों पूरन अभिशेक ॥
उतें रहे सिध ओध लग, रससागरहि नरेश ॥ १ ॥

अर्थ. शिव प्रतिष्टा संबंधी अभिशेक संपूर्ण थयो एटले सर्व लोको पोत पोताने स्थानके गयां, अने महाराजा रससागर सिद्ध आववानी मुदत सुधी त्यांहां शिवालयेज रोकाया. ॥ १ ॥

इन यह तलफत मित बिन, त्यों उत कला प्रबीन ॥

आवत एकहि एक प्रति, पख धर पत्र नवीन ॥ २

अर्थ. जेम आहीं महाराजा सागर, मित्र विना तलफेछे तेमज त्यांहां कळाप्रवीण तलफेछे, पण पखवाडीए पखवाडीए एक वीजाप्रत्ये नवीन पत्रो परस्पर आवे जायछे. ॥ २ ॥

षट रितु विरह प्रवीनजू, वरनी कवित बनाय ॥
सो पाती सागर बँची, उदाहरन कहें ताय ॥ ३ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणे विरहनी स्थितिमां छए ऋतुनुं वर्णन कविताना आकारमां लखीने जे पत्रिका मोकली अने ते सागरे वांची तेनुं उदाहरण कहुंछुं. ॥ ३ ॥

अथ वर्णा लंकार पदछेकानुप्रास तत्र प्रथम शरद ऋतु भेद ॥ कवित्त ॥

सागर सरद सर, सरिता सलील स्त्रवें, सुभग समीर सीत, सरस सरस सासि ॥ हुलसत हंसी हंस, हलकें हवाई होत, हौंस हिय हेरे हितु, हरसि हरसि हसि ॥ कमल कुमोद कुल, कलिका कला कलीत, कंत बिन कांमा कांम, करसि करसि कसि ॥ दादुर दबाकि दोर, दामिनि दुरायें द्रुम, दीरघ दिखाये दल, दरसि दरसि दिसि ॥ ४ ॥

अर्थ. हे? सागर, शरदऋतुना दीवसोमां तळाव तथा नदीओनां निर्मळ शीतळ पाणी स्त्रवेछे, सुगंधीदार शीतळ पवन मंद मंद वायछे ने अमृतथी भरपूर शीतळ कीरणवाळो चंद्र प्रकाशेछे, हंस तथा हंसणीओ हुलास पामेछे, एटलुंज नहीं पण हलकथी तेओना मनोरंजक मधुर अवाज थायछे, हौंशीलां हेतु लोको परस्पर हृदयमां हरषी हरषी एक बीजाने जोइ जोईने हसेछे, तमाम कमळ तथा पोयणाओ जथा बंध कळीओनी कळा-

थी संकळाइ गयेलांछे, आवा समयमां कंथ विनानी कामनीओने काम-देव शोषण करी करीने कसेछे, देडकांओना अवाज बंध पडी गया, वीजळी छुपी गइ, लांवा अने म्होटां झाडो तथा पातरां देखायां अने निर्मळताने लीधे दिशाए दिशाओ दरसवा लागी. ॥ ४ ॥

पदछेकानुप्रास बर्नालंकार हेमंत ऋतु भेद ॥ कवित्त ॥

सूर स्त्रवे सीत सीतकर सो सुभाव सीत, सीतल समीर सत्र, सरित सरित सित ॥ गंगाको गहन गूढ, गौरव गुफान गहि, गोचर गगनचरकी, गरित गरित गत ॥ मुरझायें मीन माधवीन मडरायें मधु, मंजुल मनो[illegible] मो-द, मलित मलित मित ॥ लखीयत ललिता लु[illegible] जो लहें न लाल, लहरि लगायें लाल, ललि[illegible] लत ॥ ५ ॥

अर्थ. हेमंत ऋतुना दिवसोमां सूर्य पण हीम स्त्रवेछे एटले टाढने फेलावेछे, ने चंद्रमातो स्वभावेज शीतळछे, पवन पण टाढा शीतळ वागछे, ने सर्व नदीए नदीओ पण थंडी पडी गइछे, गंगाना कीनाराना जंगलना गुप्त स्थळोमां तथा म्होटा पर्वतोनी गुफाओ तरफ, पृथ्वी अने आकाशमां फरनारां प्राणीओ झडपथी झट झट गति करेछे, पाणीमां माछलां मुंझायांछे, माध्वी लतानो सुगंधी रस शोशाइ जवाथी आसपास गुंजारव करनार भमराओ डरथी अवाज करता बंध पड्याछे, सुंदर कामदेवना आनंदथी मित्रनी साथे मित्र परस्पर मळेछे, आवा समयमां जे सुंदरीनो प्रिय पति पासे न होय तेने हिमना अग्नीनी लेहेरो लागवाथी, करमाइ गयेली सुंदर रंगीन लता जेवी विरहाग्नीमां लव लीन थएली जाणवी. ॥ ५ ॥

पदछेकानुप्रास वर्नालंकार शिशिर ऋतु भेद

॥ कवित्त ॥

जुग जांम जांमनीके जानत, बिजोगी जन, जरें जोग जम्यो जमी, जलहि जलहि जहि ॥ दुगम दिशांन देख, दिन प्रति दीन देव, दंपति दगेहें देह, दलहि दलहि दहि ॥ अंग अंग उठे आग, अमल अनंग ऐसें, अजहू न आये इत, अलहि अलहि अहि ॥ चकवा न पूरे चाह, चातुकी चकोर चुप, चंचल भयोहे चिंत, चलहि चलहि चहि ॥ ॥ ६ ॥

अर्थ. शिशिर ऋतुना दिवसोनी रातना चारे पोहोर वीतेछे तेने तो एक वियोगी लोकोज जाणेछे, केमके शृंगार संबंधी जमावेलो तेनो सघळो जोग वळी जायछे, अने जमीन पण विरहने लीधे धगधगी उठेछे, ने नजवाय एवी दुर्गम दिशाओने जोइने दिन प्रति दिन वियोगी स्त्री पुरुषोना देहमां काम उद्दिपन्न थएलोज रहेछे, अने दीलने तो बाळ्याज करेछे, एटलुंज नहीं पण अंगे अंगमां आग सळगी उठेछे, आवा कामराजना अमलमां पण हजी सुधी आंहीं मित्र रूप आळसु भ्रमर आव्यो नहीं, तेम चकवा समाचार दइने इच्छा पूरण करता नथी, वपैया तथा चकोर चुप थइ बेठाछे, अने चालवुं चालवुं एम चाहीने चित्त चंचळ थइ गयुंछे. ॥ ६ ॥

पदछेकानुप्रास वर्नालंकार यथा वसंत ऋतु भेद

॥ कवित्त ॥

बकुल वसंत बेल, बारब बदाम बट, बोलत बिहंग बृंद बग न बगन बन ॥ माधवी मधू कमल्ली, मंजर महोर मंडि, मधु

मकरंद मोद, मगन मगन मन ॥ प्रमदा परस पांनी, परस प्रकाश प्रेम, पलटैं परम पंथी, पगन पगन पन ॥ दंपति दिशोही दिश, दोरत न दुरें देह, दिन छिनदा न दोऊ, द्रगन द्रगन दन ॥ ७ ॥

अर्थ. वसंत ऋतुना दिवसोमां मोरश्री, वासंतिकलता, आंबा, बदाम अने वटमोगरा विगेरे वृक्षो खीली आव्यांछे, ने पक्षीओनां टोळे टोळां बगीचे बगीचे अने वन वनमां मधुर अवाजथी बोलेछे, माधवी लता, कस्तुरी, मोगरा, अशोकवृक्ष अने कमलिनि विगेरेना फूल झाडनी मंजरीयोना उपर उलटेला भमराओ सुगंधना आनंदने लीधे मनमां मगन थइ थइने गुंजारव करेछे, स्पर्श करवानो प्रेम प्रकाश थवाथी प्रेमदाना हाथनो प्रेमेकरी स्पर्श करवा सारु परदेश गयेला पंथीओ पोताना वतन भणी आववा सारु एक पछी एक एवीरीते कदम उपर कदम उठावी रस्तो पलटता आवेछे, ने दशे दिशाओमां स्त्री पुरुषोनां टोळे टोळां जाहेर पणे दोड्या करेछे, एटलुंज नहीं पण रात दिवस गम्मतनेलीधे आंख्यो विंचीने नींदर पण करतां नथी. ॥ ७ ॥

पदछेकानुप्रास वर्नालंकार ग्रीष्म ऋतु भेद ॥ कवित्त ॥

बन बन बिलखि विषधर विहंग वड, बासर बिषम बाय, बगर बगर बर ॥ डंगर डिगंबरसे, डारत डमर डार, डोलतहें डंड बारे, डगर डगर डर ॥ नलिका निदाघ नीर, नलिन नवीन वन, निलय निवासी नीठ, नगर नगर नर ॥ समर समर सूर, सायक सरासन ले, स्धयत सधत साधें, सगर सगर सर ॥ ८ ॥

अर्थ. ग्रीष्म ऋतुना दिवसोमां तापने लीधे वनेवनमां झेरी नाग

तथा पक्षीओ विलखेछे, अने दिवस तो म्होटा विषम थइ पडेछे, उनां वळवळता विपम वायु वळथी चोकें चोकें तथा फळीए फळीए वायछे, अने डुंगरा डींगवर जेवा डरामणा दीसेछे, झाडनी डाळ्योने मरडी मरडीने पाडी नाखेछे, पात्रां वळी ज्वाथी दंड जेवी डाळ्योवाळां वृक्षो रस्ते रस्ते अने शेरीए शेरीए डोल्या करेछे, निदाघने (गर्मीने) लीधे नगर नगर प्रत्ये नळ तथा फुवारावाळां नवीन कमळना वनरूपी घरनां निवासी लोको पण मांड मांड गुजरान करेछे, रणसंग्रामे चड्या होय एवीरीते कामदेव तथा सूर्य बाण अने धनुष लइने साधन करतां झेराळां तीर सघळे ठेकाणे सांध्या करेछे, तेथी तळावो सुकातां जायछे. ॥ ८ ॥

पदछेकानुप्रास बर्नालंकार वर्षा ऋतु भेद ॥ कवित्त ॥

फूलन चढेहें फंद, फरकें न फूल फल, फहेलत पोंन फूल, फहर फहर फरि ॥ गावत मयूर गन, गाढी गाढी गहें गति गगनकी गाज गोष, गहर गहर गरि ॥ सागर सरीत सर, सुभर सलील सब, सुरखी तडित श्यांम, सहर सहर सरि॥ थरर थरर कुंद, थलन थलींन थित, थकि थकि पंथी पर, थहर थहर थरि ॥ ९ ॥

अर्थ. वर्षा ऋतु एटले चोमासाना दिवसोमां लता मंडप उपर तथा वेल्यो अने वनस्पतिमां फूलना गुच्छा चडी आवेछे, अने पवन बंध थाय छे त्यारे फूल तथा फळ कंपतां बंध पडेछे, अने पाछो ज्यारे फरर फरर पवन फूलोमांथी फेलायछे त्यारे तो सघळां फूल फळ अने पांदडां कंपवा लागेछे, आवा वखतमां जथा बंध मोरो टैकानी साथे गंभीर गतिथी गायन करेछे, आकाशमां गड गडता मेघ गाजेछे, एटलुंज नहीं पण अवाजनी साथे चारे तरफ घळ घळाट करता वरसवा लागेछे, तेथी हे सागर? नदी, तळाव, कुंड, तथा कुवा विगेरे सघळां जलाशयो पाणीथी

भरपूर थइ जायछे, चळकती रंगीन विजळीओवाळी काळी घटाओ शेहेरे शेहेर उपर पसरती जायछे, डोलर, पोयणी अने स्थळ कमळो विगेरे थरर थरर कंपेछे, थाकी थाकीने मुसाफरो वर्षादने लीधे थरथरीने सारा स्थळोमां स्थिर थइ जायछे. ॥ ९ ॥

सहोक्त्यलंकार ॥ षट् ऋतु समग्र भेद ॥ कवित्त ॥

शरदकी चांदनीसी, प्रगटी सुरत जोत, बोलत बचन तुत रात एहीहे हिमंत ॥ शिशिरको साज सो तो, रोंमको भयो समाज, प्रेंमको प्रकाश जेसी, फूलिहे प्रभा बसंत ॥ बिरह प्रलाप हियें, ग्रीषम तपत ताप, नेंननके आंसू नीर, ब्रषाके प्रवा वहंत ॥ षट रितु अंग अंग, आजही बनीहे मेरे, कोन रितु आवनकी, सागर तुम बदंत ॥ १० ॥

अर्थ. शरद ऋतुनी चांदनी जेवी तो सुरतनी जोत प्रगट थइछे, ने बोलतां बोलतां जे वचन तोतळायछे ते हेमंत ऋतुछे, अंगमां रोम्भावळी उपडी आवीछे ते शीशर ऋतुनी सामग्री बनी गइछे, प्रेमनो प्रकाश थयोछे ते तो जेवी वसंत रुतोनी कांति खीली होय तेवो दिसेछे, हृदयमां जे विरहनो प्रलाप उपज्योछे, तेज ग्रीष्म ऋतुनो ताप तपेछे, आंख्योमांथी आंसु झरेछे ते वर्षा ऋतुना प्रवाह वहेछे हे प्रिय मित्र, एवीरीते छ ऋतुओ तो आज म्हारा अंगे अंगमां बनी आवीछे, तो हवे तमे कइ ऋतु आववानी कहोछो! ॥ १० ॥

सहोक्त्यलंकार ॥ सवैया ॥

चंद भयो दरदी शरदें सु, हिमंत समीर सिखी सम लेखो
शीत शिशीर सबें तन तावत, दाहत कंज बसंत बिसेषो ॥
ग्रीषम ताप तपे बिरहा पर, बुंद टपा अँखिया अवरेखो

सागर एक दिनां इत आयके, नागर हिंमत किंमत देखो ॥ ११ ॥

अर्थ. आ जे शरद ऋतुमां चंद्र प्रकाशेछे तेने तो वियोगीओने दरद करनारज समजो, ने हेमंत ऋतुना पवनने तो अग्नी बरोबरज लेखो, शिशिर ऋतुनी टाढ तो थंडक न करतां आखा शरीरने तावेछे, अने हृदय रूपी कुंजने वाळेछे तेने तो कुंजोने प्रफुल्लीत करनार वसंत ऋतुछे एम विशेषे करीने जाणो, अने विरहनी जे आग लागेछे तेज ग्रीष्म रुतुना ताप तपेछे एम जाण्या उपरांत जे आ आंख्योमांथी आंसुना बुंद झरेछे तेने वर्षा ऋतु धारो, हे प्रिय मित्र सागर हे चतुर? एक दिवस आंही आवीने अमारी हीम्मतनी कीम्मत जुओ? ॥ ११ ॥

सहोक्त्यलंकार ॥ सवैया ॥

याहि ब्रषा बरषें असुवा शशि, शारद प्रेम प्रभा भरि श्राव तु ॥ सोय शिशीर भ्रमें बरुनी सिय, हेंम सु जांम रही अषियां सितु ॥ लाल बसंत प्रसूंन प्रफूल्लित, ग्रीषम जो बिरहा झर बाढतु ॥ सागर मिंत पयांन कीयो इन, नेंन में आंन छहि षटहू रितु ॥ १२ ॥

अर्थ. आ आंसु वर्षेछे एज वर्षा ऋतुछे, अने प्रकाश पामेला प्रेमना उभरा उठेछे तेज शरदऋतुनो चंद्र अमृत स्रवेछे, पापणो कंपी कंपीने फरकेछे तेज शिशिर ऋतुछे, अने आंख्यो जामी जायछे ते हेमंत ऋतुछे, अने लाल रेखाओछे ते तो वसंत ऋतुनां फूल प्रफुल्लीत थयांछे विरहनी झाळो साथे झडी वधती आवेछे ते ग्रीष्म ऋतुछे, हे प्राणप्रिय सागर? ज्यारथी प्रयाण कर्युं त्यारथीज आ नेत्रोमां छये ऋतुओ आवीने छवराइ गइछे. ॥ १२ ॥

यथा संख्यालंकार सागर प्रत्युत्तर भेद ॥ सवैया ॥

हेम शिशीर वसंत सु ग्रीषम, ओर व्रषा शरदी जु मिलायें द्योस नलीन त्रपा निशि तापन, बारद ज्यों घट धीर घटायें ॥ रेंन समीर लता दिन दांमिनि, चंद्र कला ज्यों अनंग बढायें ॥ मिंत प्रवीन प्रवीन अहो निश, जंपतहि षट हू रितु जाये ॥ १३ ॥

अर्थ. हेमंत, शिशीर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा अने शरद ए छये ऋतुओने मेळवीए छीए, अर्थात् ए ऋतुओमां अनुक्रमे जेमके हेमंतना दिवसो, शिशिरनां कमळ, वसंतनी लाज, ग्रीष्मनी रात्री, वर्षानो ताप, अने शरदनो वरसाद घटेछे, तेनी पेठे घटनी (हृदयनी) धीरजताने घटाडीए छीए, अने तेज ऋतुओमां अनुक्रमे जेमके हेमंतनी रात्री, शीशीरनो पवन, वसंतनी वेलो, ग्रीष्मना, दिवसो वर्षानी वीजळी, अने शरदनो चंद्र [illegible] छे, तेनी पेठे कामकळाने वधारीए छीए, तो हे प्रियमित्र प्रवीण? अमारितो रात दीवस. हे प्रवीण हे प्रवीण? एवो जप करवामांज छए ऋतुओ जायछे. ॥ १३ ॥

॥ विकल्पालंकार ॥ सवैया

चाह प्रवीन घटी न मटी, निकटी पल आवत राह चलेकी ॥ फेर बनें न कहूं मिळवो तव, वात सबें यह भाग भलेकी ॥ आंन बनें तो सहीहे नहीं तव, होंस अहो निश पांन मिलेकी ॥ ऐसें रह्यो तो भयोई असूकप, बार जिया बपुरों निकलेकी ॥ १४ ॥

अर्थ. प्रवीण संबंधी चाहना तो घटी नहीं तेम मटीयेय नहीं अने रस्तो चालवानी पळतो नजीक आवती जायछे, फरीने क्यांय मळ-

वानुं नहीं वने त्यारे तो आ सघळी वात सारा नशीवनीज देखायछे, आववानुं वने तो तो ठीकजछे, नहीं तो पछी रात दिवस हाथ अथवा कागळ मळवानीज हौंश रेहेशे, ए पण एमने एमज रेहेशे तो प्राण तो कंपेछे अने हवेतो केवळ वापडा जीवनेज शरीरमांथी वाहेर नीकळी जवानी वारछे. ॥ १४ ॥

विशेषोक्त्यलंकारो यथा ॥ सवैया ॥

या पलही पलही तलफें तन, तोबिन तोबिनके झष जैसें ॥ पंथ थके सु मनोरथके मुख, जोत मनों शशि सूर उदैसें ॥ ज्वाल कराल जगी उर भीतर, कौंलों निभाव बने अब ऐसें ॥ नीतकी रीत प्रबीन नहीं तब, क्यों करियें भरियें दिन कैसें ॥ १५ ॥

अर्थ. पाणी विनां जेम माछलुं तलफे तेम आ शरीर तमविना पळे पळे तलफेछे, अने मनोरथने मार्गे चाली चालीने छेडो न आववाथी मन थाकी गयुंछे, म्होढानी जोति तो एवी झांखी पडी गइछे के जाणे सूर्योदय थवाथी चंद्रमानी जोति होयनै! हृदयनी अंदर भयंकर झाळ सळगी उठीछे तो हवे आम क्यांहां सुधी नभाव वनीशके! हे प्रिय मित्र प्रवीण नीतिनी रीत जाणो नहीं त्यारे पछी शुं करीए! अने केम करीने दिवस काढीए! ॥ १५ ॥

अथ गुंफालंकार ॥ कावित्त ॥

जांनहूकी जांन ताकों, जानत प्रबीन नांहि, जांनिहो प्रबीन तोपें, जांनहि गमाइयें ॥ चिंतकी न जानों मिंत, मिंतकी न जानों चिंत, चिंतकीजो जानों मिंत, ओर कहा चाहियें ॥ वेदको न लहो भेद, भेदको न लहो वेद, वेद भेद लहो

तो, अभेद व्है निभाहियें ॥ देहीके सनेहीकी न नेही बात जांनतहो नेही येही जानों तोपें, देहीकों न दाहियें ॥ १६॥

अर्थ. जे बाबत जरूर जाणवी जोइए तेनी जाण छतां जाणतां नथी, पण जो जाणवानी बाबत जाणो तो तमारा उपर जांन (जीवतर) गुमावी दइए, हे मित्र! आ चित्तनी जाणतां नथी तेम मित्रनी पण चित्तमां जाणतां नथी, परंतु हे मित्र! जो चित्तनी जाणो तो पछी बीजुं शुं चाहीए! वेदना भेदने लेतां नथी, तेम भेदना वेदने (ज्ञाननेय) लेतां नथी, पण जो वेदना भेदने ल्यो तो अभेद थइने नभावीए, हे हितस्वी! देहना स्नेहीनी वातने जाणतां नथी, पण हे स्नेही! जो नेहनी वातने जाणो तो तम उपर देहने न बाळीए! ॥ १६ ॥

अथ छेकोक्त्यलंकार ॥ सवैया ॥

ध्यांन प्रवीन प्रवीन लग्यो गुन, गांन प्रवीन तजें न कबें ही ॥ कोउ दिनां पल एक बन्यो सोउ, जांन नहीं गुजरी सु जबेंही ॥ होंनको कोंन मिटावनहारहे, ऐसी लहीहे निसांनि सबेंहि ॥ ता दिनसें नित डोलत बाउरे, सोये सुखोये जमार सबेंही ॥ १७ ॥

अर्थ. प्रवीण प्रवीण एवुंज ध्यांन लाग्युंछे अने प्रवीणना गुणना गायनने तो क्यारेय तजता नथी, कोइ दिवस एवी एक पळ बनी आवी ते वखते जे वात गुजरी ते तो जाणवामांज आवी नहीं, होनार वस्तुने कोण मटाडनारछे! एवीज सघळी निशाणीओ लइए छीए, पण ते दिवसथीज हमेशां दिवानानी माफक फरीए छीए एटलुंज नहीं, पण गमगीथी सुखमांज सघळो जमवारो खोइए छीए. ॥ १७ ॥

॥ अथ दृष्टांतालंकारो यथा ॥ सवैया ॥

पहिचांन प्रवीन भई जबतें, तबतें चित प्रेम प्रभा छबि जागी ॥ बढती उर आस उदास चली यह, जंपत पास बसें बडभागी ॥ निश बासर बीततहें बिकटे, निकटे न प्रिया हियहें अनुरागी ॥ घन गाज इतेंपर यातें जिया ग्रह बाज कबूतरकी गति लागी ॥ ॥ १८ ॥

अर्थ. हे प्रवीण! ज्यारथी आपनी साथे पश्चान थइछे त्यारथीज चित्तमां प्रेमना प्रकाशनी छबि जागीछे, अने हृदयमां आशानी साथे उदासी वधी चालवाथी, "जे पासे वसेछे तेज म्होटा भाग्यवाळोछे" एम जपीये छीए ने रात दिवस विकट पणे (कष्टें) (दुःख) वीतेछे, वळी प्रिया पासे नथी अने मन तो अनुरागी थइ रहेलुंछे, एटला उपर वळी मेघ गाजेछे तेथी करीने आ जीवनी तो बाजे पकडेला कबुतरना जेवि गति लागीपडीछे. ॥ १८ ॥

अथ सुधापन्हुत्यलंकार ॥ दोहा ॥

पावस बाजीगर प्रबल, डौंरू गाज अवाज ॥
बिरही मन बदलत बटा, जिय कपोत ग्रह बाज ॥ १९॥

अर्थ. आ कांइ मेघ चडी आव्यो नथी आतो बळवान बाजीगरछे एम जाणो? आ कांइ गर्जनानो अवाज नथी आतो डमरु वागेछे एम समजी ल्यो आ कांइ वादळनी घटाने बदलावतो नथी आतो विरहीना मनरूपी वट्टाने (लाकडाना दडाने) बदलावेछे आ कांइ बाजे होलाने पकडेलो नथी आ तो आ जीवनेज पकडेलोछ एम जाणो. ॥ १९ ॥

अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

प्रेमको प्याला पियो भरकें हम, या सुख जांन पर्यो न तबें ॥ कैफकी ज्वाल जगी घट भीतर, कोटि प्रकार कियें

न दवें ॥ जांनहिंगो न अजांन कहें कछु, जांनत जानन हार सवें ॥ पथ्थ न पावहिगें जु प्रबीन तो, कोंन उपाय करेंगे अवें ॥ २० ॥

अर्थ. ज्यारे अमे प्रेमनो प्यालो भरीने पीधो त्यारे अमने आ सुख जाणवामां आव्युं नहीं, पण हवे तो घटनी अंदर जे केफनी झाळ जागी छे ते करोडो प्रकार करवाथी पण दवाती नथी, अजाण माणस वात केहेवाथी पण कांइ जणशे नहीं केमके जे जाणनारछे तेज सघळुं जाणे छे माटे प्रवीण रूपी पंथ्यने (परेजीना खोराकने) जो नहीं पामीए तो हवे पछी शोउपाय करीशुं! ॥ २० ॥

॥ अथ असंभवालंकार ॥ कवित्त ॥

जियरा अजांन ताकों, प्रेंम पहिचांन परी, तादिनसें भई सो तो, सबें वात सहियें॥ आगम बूझ बूझ, कियेहे नजुम कूरे मनकी तरंगही सों, मुरझाय रहियें॥रेंनहीं न नींद दिन दिनहीं न परें चेंन, अजहू न मिंत मिलें, कैसें कैं निवहियें ॥वार वार क्यों कहें, प्रवीनजू विचार देखो, कहबेकी नहीं सो तो कोंनहीपें, कहियें ॥ २१ ॥

अर्थ. आ जीव जे अजाण हतो तेने प्रेमनी ओळखाण पडी परंतु ते दिवसथी जे वातो बनी आवीछे ते सघळी वातोने सहीएछीए, जोश पूछी पूछीने जोशीयो तथा नजूमीयोने पण कूडा करयाछे हवे तो मननी लेहेरो थीज मुंझाइ रहीए छीए, रातनी वखते आंख्योमां निद्रा आवती नथी अने दिवसे क्यांय सुखचेन पडतुं नथी, अने हजी सुधी मित्र मळ्या नहीं तो हवे केम करीने नभीए, वारे वारे शुं कहीए! परंतु हे प्रियमित्र! प्रवीण विचारी जुवो के जे, वात बीजापासे केहेवा लायक नथी ते कोनी पासे जइने कहीए. ॥ २२ ॥

॥ अथ समरूपकालंकार ॥ दोहा ॥

तन बनकी लकरी बन्यों, प्रेम सूत्रकी धार ॥
बिरहाको आरा कीयें, खेंचत कांम सुतार ॥ २२ ॥

अर्थ. शरीर वनना लाकडा रूप बन्युछे तेनें प्रेम रूपी सुतरनी दोरी वडे वीटी, विरह रूपी आरा उपर चडावीने कामदेव रूप सुतार खेंच्या करेछे. ॥ २२ ॥

मन पंखा सुरता लठी, कसें मिंत गुन तार ॥
प्रेम झुलावनहार इन, बाढे बिरह बयार ॥ २३ ॥

अर्थ. मन रूपी पंखाने सुरता रूपी लाकडीमां मित्रना गुण रूपी तारथी कसीने प्रेम रूपी झुलावनारो जेम जेम झुलावेछे तेम तेम विरह रूपी पवन वधतो जायछे. ॥ २३ ॥

तन चोकी मध मन मुकुर, प्रेम कलहियां दीन ॥
लखि मुख आंनन सो लहो, परसत दरस प्रवीन ॥२४ ॥

अर्थ. शरीर रूपी घरानी वच्चें रहेला मन रूपी काचमां प्रेम रूपी कलइ चडावीदेवाथी तेमां ज्यारे मुख जोइये छीये त्यारे प्रिय मित्र प्रवीणनाज मुखनी छवी दरशी आवेछे ॥ २४ ॥

॥ गाहा ॥

षट ऋतु बर्नन भेदे, पत्र प्रबीन तासु प्रति उत्तर ॥
उनचालीश भिधानं, पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ २५ ॥

अर्थ. छए ऋतुना वर्णनना भेदनो जे पत्र प्रवीणे लखी मोकल्यो हतो, ते वांचीने महाराजा सागरे प्रत्युत्तर लख्यो ते संबंधी प्रवीण सागरनी ओगणचाळीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ ३९ ॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे षट् ऋतु विरह भेदो नाम एको

नचत्वारिंशतिमो लहरं ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां एकोन चत्वारिंशतिमस्तरंगः समाप्तः ॥ ३९ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

थातां कष्ट अपार, क्रूर दिलमां तापें तपि कामनी ॥
वर्णी वात वसंतना, विरहनी भावे थकी भामनी ॥
पत्रो जे लखिया प्रवीण, कुंवरी पामी व्यथा देहनी ॥
आ चाळीशमि लेरमां विनयथी केशे कथा तेहनी ॥

॥अथ कलाप्रवीन वसंत विरह बर्नन प्रसंगो यथा ॥दोहा॥

ऋतु वसंत बरषा बहुर, अति बिरही दुख दाय ॥
बीती दशा प्रबीन वह, सागर लिखी बनाय ॥ १ ॥

अर्थ. घणुंकरीने वसंत अने वर्षा ए बे ऋतुओ वियोगी लोकोने अति दुःख दायक थइ पडेछे, माटे ते बे ऋतुमां प्रवीणने जे दशा वीती तेनुं वर्णन कविताना आकारमां लखीने ते पत्र महाराजा सागर तरफ मोकल्यो. ॥ १ ॥

अथ तत्र प्रथम कलाप्रवीन वसंत विरह बर्नन॥ संभावनालंकार ॥ सवैया ॥

धावहिगें मलयाचल मारुत, रावहिगें मधु कंज छटेंगें ॥
छावहिगें नव पल्लव कुंजन, स्त्रावहिगें सुसुरंज छटेंगें ॥
गावहिगें जु हिंडोर गुर्नीजन, भावहिगें रस रंग बटेंगें ॥
लावहिगें सगरे सुख सागर, आवहिगें तो उदास मिटेंगें

॥ २ ॥

अर्थ. आ वसंत ऋतुमां मळीयाचळ (चंदननो पहाड) माहेलो पवन दोडी आवीने वावा लागशे, भमराओ गुंजारव करशे, प्रफुल्लित थएलां कमळो जमीन उपर लटी जशे, व्रक्षो उपर नवीन अने कोमळ पत्र छवराशे, कुंजोमाथी सुगंधी रसो स्रवशे, सुंदर पिचकारीयोना रंग छंटाशे, गुणवान लोको हिंडोर राग गाशे, मनगमता रसरंग वेंहेंचाशे, सघळां सुखरूप पदार्थो लावशे पण जो प्रिय मित्र सागर आवशे तोज उदासी मटशे. ॥ २ ॥

अथ माला दिपकालंकार ॥ कवित्त ॥

बन घन छई बेल, घन तन रच्यो खेल, तन मन चहें केल, मन जन ये धरहु ॥ चर थिर मोद अंग, थिर तर फूल भ्रंग तर दर नए रंग, दर दन छे क रहु ॥ झल मिल कोक पंत, मिल चल मंत मंत, चल दल भयो चंत, दलहु न बीसरहु, द्रग लग रहे आप, लग मग हरो ताप, मग सगरे प्रलाप, सागर सदा हरहुं ॥ ३ ॥

अर्थ. वनमां घाटी वेल्यो छवराणीछे, आकाश तथा शरीरमां खेल रच्योछे, जेथी तन तथा मन केली (रमण) करवाने चाहेछे, ए वात ने मनमां धरो! जंगम तथा स्थावर प्राणीओ अंगमां आनंद धरेछे, स्थिर रहेला व्रक्षोना फूलमां गुंजारव करता भमराओ भमेछे, झाडोमां नवा नवा रंगनां पात्रां आव्यांछे, वास्ते आवा कठीन दिवसना दुःखने क्षय करो! एकठा मळेला चकवानी पंक्ति झळकवा लागीछे, अने मित्रोनी साथे मित्रो मळीने चालेछे, जेथी पीपळाना पत्रनी पेठे चित्त चंचळ थयुंछे, तो दिलमांथी विसारी मुकोमां! अमारी द्रष्टीए तो आपज लागी

रह्याछो, माटे मार्गे लागीने ताप हरो एटलुंज नहीं पण हे सागर! हमे
शां सघळा प्रलापने (दाहने) हरो! ॥ ३ ॥

अथ दीपका वृत्ति अलंकार तीसरो भेद ॥ सवैया ॥

कुंज लतांन प्रसून भरे फुनि, भृंग पराग भरे पँखियांमें ॥
कोकिल बाग सुहाग भरे अरु, फागन राग भरे सखिया
में ॥ केसर कुंभ गुलाव भरेहे अबीर गुलाल भरे अँखियां
में ॥ आस उसास उदास भरे अति सागर बैंठ रहों दुखि
यामें ॥ ४ ॥

अर्थ. कुंजनी वेल्यो पोताना गुच्छाओमां फूल भरेछे, भमराओ पो-
तानी पांखोमां सुगंधी रज भरेछे, बगीचामां कोयलो सोह्यामणा मधुर
अवाज भरेछे, सखीओ पोतानी साहेलीओमां वसंत राग भरेछे, लोको केसर
अने गुलावजळना कळश भरेछे आंख्योमां अबील गुलाल भरेछे, हे
सागर आवा वखतमां अमे दुःखमां बेशी रहीने आशा, उदासी अने
उसासा भरीए छीए. ॥ ४ ॥

अथ स्मृति अलंकार ॥ सवैया ॥

अंबन अंबन कोकिल कूजित, कीर अनारनपें अवरेखो ॥
द्रुमन द्रुमन वेलि चढी अरु, माधवि कूंद मधुपन पेखो ॥
शीतल पोंन सुवास मिले जितही, तित प्रेम भरें सब ले
खो ॥ पंथिक जाय कहो इत आउरे, सागर बाग वसंत
को देखो ॥ ५ ॥

अर्थ. आंबे आंबे कोयलो बोलेछे, अने दाडमीओ उपर पोपट बोलेछे
तेने जुओ, झाडें झाडें वेल्यो चढी गइछे अने वसंत लता तथा डो-
लरना फूल उपर भमरा गुंजारव करेछे एम जाणो, सुगंधनी साथे मळेलो

शीतळ पवन वायछे ने ज्यांहां जोये त्यांहां सघळां प्रेमथी भरपुर थए-
लांछे एम लेखो, हे! पंथी सागरनी पासे जइने तमे एटलुं कहोके हे
सागर, तमे आंही आवो ने आ वसंतना बागने जुओ! ॥ ५ ॥

अथ एकावल्यलंकार ॥ कवित्त ॥

उपवन अंबरमें, चंद कुंद सोहियत, कुंद अरु चंदहूमें, मयू
खी लता लसंत॥लतामें मयूखीमें प्रकाश फूल फेल रहे, फू
लमें प्रकाशमें जु, पोंन माधुरी प्रसंत ॥ माधुरी पवन म
ध्य, सीतता मधूप सूर, मधुसुर सीतमें मनोज बिरहा ध
संत ॥ बिरहा मनोज मन, तनमें बसंत नित, तन मन
सागरमें सागर बिनां बसंत ॥ ६ ॥

अर्थ. बगीचा तथा आकाशमां चंद्र अने डोलर शोभेछे, डोलर
अने चंद्रमां चंद्रकांति तथा वेल्यो ओपेछे, वेल्यो तथा चंद्रकांतिमां
प्रकाश तथा फूलो फेलायछे, फूल अने प्रकाशमां पवन तथा मधुरता
प्रसरती जायछे, मधुरता तथा पवनमां शीतलता तथा भमराना स्वरो
दिसेछे, भमराना स्वरो अने शीतलतामां कामदेव तथा विरह धसेछे,
ने विरह तथा कामदेव हमेशां मन तथा शरीरमां वसेछे, अने शरीर तथा
मन सागरमां वसेछे, एज सागर विनां आ वसंत ऋतुछे. ॥ ६ ॥

अथ माला दीपकालंकार ॥ सवैया ॥

कुंज लतांन प्रसूंन भरेहें, प्रसून पराग भरे तन भ्रंगन ॥
बागन बागन अंब महोरित, अंबन अंबन कोकिल कूजन
॥ धांमनि धांमनि कांमनि, कंत रमें कसमीर गुलाल अबी
रन ॥ मिंत बसंत हसंत सबें गहि, मोंन एकंत रहे बिरही
जन ॥ ७ ॥

अर्थ- कुंजनी वेल्योमां जातजातनां फूल भर्याछे अने फूलना परागने (सुगंधी रजने) भमराओ पोताना अंगमां भरेछे, बगीचे बगीचे आंबा खीली रह्याछे अने आंबे आंबे कोयलो टौका करेछे, घेर घेर केसर गुलाल तथा अबीलथी कंथ अने कामनीओ रमेछे, हे मित्र! आवा वसंत ऋतुमां सघळां हसेछे, परंतु एक विरही जनज मौनव्रत (मुंगापणुं) धारण करीने एकांतमां बेसी रहेछे. ॥ ॥ ७ ॥

अथ जातिस्वभाव अलंकार ॥ सवैया॥

मंजर कुंज सुरंज छटें मधु, कोकिल कीर रटे रसबो॥ खेल गुलाल अवीरनके घन, चंदन केसरको घसबो ॥ अंबर सेत सुवास सुरंगित, गावत गारि सुनें हसबो ॥ सागर संग वहें वड भागनि, फागन बागनमें बसबो ॥ ८ ॥

अर्थ. कुंजनी मंजरीओना फूलोमांथी उडेला रज कपोतना सुगंध रचकेछे, भमरा, कोयल अने पोपट रसाळ वचनो कोमळी बोलीने रटेछे, लोको वाळा तथा चंदन घसी घसी घोळेला केसरनी साथे मेळवीने तेना रंगथी तेमज अबील गुलालथी खेलेछे, सुगंधीदार रंगथी रंगेलां श्वेत वस्त्र पेहेरीने फाग गायछे, एटलुज नहीं पण फाग संबंधी गाळयो सांभळीने हसेछे, आवा फागण मासना वखतमां जे स्त्री सागरनी साथे बगीचामां बसेछे तेज म्होटा भाग्यवाळीछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ विरोधाभासालंकारो यथा ॥सवैया ॥

बाग विहंग विलास भरे धुनि, कूजतहे फरही फरही ॥ मोद मराल सरोज मधूकर, गुंज ग्रहे सरही सरही ॥ दंपति गारि गुमान गहें मिल, गावतहें घरही घरही॥ सागर मिन वसंतहि चातुक, मोंन ग्रही बरही बरही ॥ ९ ॥

अर्थ. बगीचाओमां विलासथी भरपूर थएलां पक्षीओ फरी फरीने

मधुर अवाजथी बोलेछे, खीलेलां कमळोने जोइने आनंद पामेला हंस तथा भमराओ तळावें तळावें गुंजारव करेछे, स्त्री पुरषो गुमानथी गाळ्यो बोलवा सारु एकठां मळीने घेर घेर गायन करेछे, हे प्रिय मित्र सागर! आवा वसंतना वखतमां एक बपैया, मोर अने वियोगी लोकोएज मात्र मौनव्रत (मुंगापणुं) धारण करेलुंछे. ॥ ९ ॥

समरूपकालंकार ॥ सवैया ॥

फूल गुनीं उपवीत लता मकरंदन चंदनसें चरचाये ॥ कोकिल कीर मधू शिश साधन, फूंक समीरहुकी फहराये ॥ पांन लियें जल पंकजमें बिरही दुख दांन प्रयोग पढाये ॥ दंपतिकों अभिशेकन सागर मिंत बसंत महा मुनि आये ॥ १० ॥

अर्थ. हे प्रिय मित्र सागर! फूल रूपी रुद्राक्षनी माळा अने वेल्यो रूपी जनोइ पेहेरीने सुगंधी रजरूप चंदनथी चर्चाएलो, कोयल, पोपट तथा भमरा रूपी शिष्योने साधवासारु वायुरूप फूंकने फेलावतो, कमळ रुपी हाथमां जळ लइने वियोगी लोकोने माटे दुःख दायक प्रयोग भणतो भणतो, स्त्री पुरुषने अभिशेक करवासारु आ वसंत रूपी म्होटो मुनी आवेलोछे. ॥ १० ॥

अथ चपलातिशयोक्त्यलकांर ॥ सवैया ॥

कुंजन पात सुरंज छटे जल, फूलन झूलन मत्त मधूको ॥ बागनकी परछांइ दशो दिश, रंग हरोइ भयोरहे भूको ॥ सागरजू इक आँबन ऊपर, कोकिल आँन कियोहे कुहूको ॥ कामनि चिंत चमंक उठी उन, एक उसास सबें बन सूको ॥ ११ ॥

अर्थ. जेमां कुंजना पत्रोमांथी सुगंधी रजनी भभक अने पाणीना फुवारा छुटेछे, झूलता फूलना गुच्छाओनी आसपास मदेला भमराओ गुंजा गुंज करता फरेछे, एवा आ बगीचानी, दशे दिशाओमां झांड पडवाथी जमीननो रंग लीलो थइ रह्यो होयछे, हे सागर! आवा वखतमां आंबाना वृक्ष उपर एक कोयले आवीने टौको कर्यो, ते सांभळतांज जेएक कामनीनां चित्तमां चमक उठी तेना एकज उसासाथी आ सघळुं वन सुकाइ गयुं. ॥ ११ ॥

अथ पर्यायोक्त्यलंकार ॥ कवित्त ॥

जळ जंत्र झार लागे, पात पात धार लागे, कोकिला उचार लागे, बाग बिसतारतें ॥ बेल वृंद डार लागे, कंज बेसुमार लागे, त्रिविध बयार लागे, भ्रमर गुंजारतें॥ गुनिजन लार लागे, फाग तांन तार लागे, लव पिचकार लागे, अंग अंग यारतें ॥ दंपति सिंगार लागे, प्रेम पाराबार लागे, सागर सह्मार लागे, बिरही बिचारतें ॥ १२ ॥

अर्थ. जळना जंत्रो तथा फुवारा झरवा लाग्या, झाडें झाडें कोमळ पत्रो आववा लाग्यां, विस्तीर्ण बगीचाओमांथी कोयलो मिठा उच्चार करवा लागी, वेल्योना जथ्था डाळ्यो उपर चडवा लाग्या, बेसुमार कमळो खीलवा लाग्यां, धीरो सुगंधी अने शीतळ एवो त्रिविध पवन वावा लाग्यो, भमरा गुंजारव करवा लाग्या, गुणीजनो एक बीजा साथे नातासाक मळवा लाग्या, फाग तथा तानटपाना स्वरो थवा लाग्या, मित्रोमां परस्पर एक बीजाना अंग उपर पीचकारीयोना रंग छुटवा लाग्या, स्त्री पुरषोनां जोडलां शणगारवा लाग्यां अने पारावार प्रेम लागवाथी विरही विचारनीसाथे सागरने संभारवा लाग्यां. ॥ १२ ॥

अथ स्मृतिमान्अलंकार ॥ सवैया ॥

कुंज लता परसून प्रफुल्लित, कांम कमी न रखी न रखे ॥
दंपति कोकिल भ्रंग बिहंग मही, बिरहा हरषी हरषे ॥
केसर नीर अबीर गुलालहि, या अँषियाँ बरषी बरषे ॥
सागर मिंत बसंत दशो दिश, बोलनमें परखी परखें ॥
॥ १३ ॥

अर्थ. कुंजनी वेल्योमां फूल प्रफुल्लित थयांछे, आवा वखतमां काम देवे कोइ वातनी कमी राखी नथी अने राखतो पण नथी, दंपति कोयल तथा भमरा विगेरे पक्षीओनां जोडलां तेमज पृथ्वी तथा वृक्षो विरहीने जोइने हरख्यांछे अने हरखेछे, केसरनां जळ अने अबील गुलालथी आ आंख्यो वर्षीछे अने वर्षेछे, हे मित्रसागर! दशे दिशाओमां वसंत फेलाइ रह्योछे माटे बोलवामांज परिक्षा कस्नार परखे. ॥ १३ ॥

॥ अथ विरोधाभास अलंकार ॥ सवैया ॥

ठोरहिं ठोर हिंडोर सधें घट, पंचमि कुंज लसंत लसंत ॥
अंगन अंगन रंग रचे बन, कोकिल भ्रंग रसंत रसंत ॥
धांमनि धांमनि कांमनि कंत, रमे रस खेल हसंत हसंत ॥
चिंत निचिंत रहें बिरही कह, मिंत दिगंत बसंत बसंत ॥
॥ १४ ॥

अर्थ. ठेकाणे ठेकाणे, हिंडोर राग साधेछे, घट स्थापन तथा वसंत पंचमीनी कुंजो अतिशे शोभेछे ते शोभेजछे, आंगणे आंगणे रंग रच्याछे अने वनमां कोयल तथा भमराओ रसाळ वचनोथी रटेछे ते रटेजछे, घेर घेर कंथ अने कामनीओ रमेछे तेओ रसना खेलथी हसेछे ते हसेज छे, आवा समयमां विरही लोक पोताना चित्तमां निश्चित शु रहे! केमके जेनो मित्र दिशाने छेडे जइने वस्योछे ते त्यांहांज वसेछे. ॥ १४ ॥

अथ संभावना, अलंकार ॥ सवैया ॥

सोर वगांन बगांन खगांन नगांन पगांन पलाश खरेंगे ॥ कुंज पतांन छतांन बितांन, व्रतांन प्रतांन प्रसून भरेंगे ॥ मंद स्वसांन निसांन ब्रहांन, सु कांमनी प्रांन दहांन करेंगे ॥ चिंत चहंत महंत ग्रहंतर मिंत बसंत कहां बिसरेंगे ॥ ॥ १५ ॥

अर्थ. वगीचे वगीचेथी पक्षीओना अवाजना सोर बकोर थशे, पर्वतोनी पाउमां (तळेटीमां) अने नदीओना कीनारा उपर खाखरानां केसुडां खरशे, कुंजोना पालां रूपी छतमां रहेला रंग बेरंगी चंदरवानी वेलो पोताना गुच्छाओमां फूलो भरशे रात्रीने वखते मंद मंद पवन वाइने वियोगी कामनीओना प्राणने बाळवानु करशे माटे आ चित्त जेने मोहोटा घरनी अंदर चाहिछे ते मीत्र वसंत रतुमां केम विसरशे १५

अथ यथासंख्या अलंकार ॥ कवित्त ॥

भ्रंग जोति मकरंद, मंद पौंन अरविंद, कोकिला सुमन छंद, कुंद रूप छनमें ॥ त्रिमलाई लहर अन, मोद बास मिंत अरु, चिंत फुनि नेंनहें वसंत रितु पनमें ॥ पंकज मयंकमें सुमन गजराजनमें, वनमेंरु वारनमें अंबमें लतनमें ॥ लोक बाग जल सिंधु, दंपति वियोगनमें, कुसुम विदेश अंग कंतमें मगनमें ॥ १६ ॥

भमरा, ज्योति, मकरंद, मंदता, पवन, कमळ, कोयेल, फूल, छंदे, डोलर, निर्मळता, लेहेरो, अनुमोद, मित्रवास, चित्त, नेत्र, कमळमां, चंद्रमां, फूलोमां, हाथीमां, वनमां, पाणीमां, आंबामां, वेलोमां, लोकोमां, बागमां,

जळ[11]मां, समुद्र[12]मां, दंपती[13]मां, वियोग[14]मां, कंथ[15]मां, मार्ग[16]मां, एटले हे कुसुमावळी वसंत रतुना समयने लीधे भ्रमरा कमळमां, ज्योति चंद्रमां, सुगंध फूलोमां, मंदता हाथीमां, पवन वनमां, कमळ पाणीमां, कोयलो आंबामां, फूल वेल्योमां, स्वेच्छाचरण लोकोमां, डोलर बगीचामां, निर्मळता जळमां, लेहेर्यो समुद्रमां, अनुमोद स्त्री पुरषमां, मित्र वासना वियोगमां, चित्त कंथमां अने नेत्र मार्गे एवीरीते परस्पर अनुक्रमे एक बीजाना रूपमां प्रेम बंधाइ जवाथी क्षणे क्षणे तेओमांज वसेछे. ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

इहि बिधि कलाप्रबीनकी, बरनी बिरह बसंत ॥
कुसुम संग चरचा चली, लिखी सो सागर मिंत ॥ १७ ॥

अर्थ. एवीरीते कुसुमावळीसाथे चर्चा चालवाथी वसंत ऋतुना विरहनी हालतनुं वर्णन लखीने, कळाप्रवीणे ते पत्र पोताना प्रिय मित्र महाराजा रससागर उपर मोकलावी दीधो. ॥ १७ ॥

॥ गाहा ॥

कुमरी कलाप्रबीनं ॥ बर्नन ब्रह बसंत रितु भेदं ॥
चत्वारिंश अभिधानं ॥ पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ १८ ॥

अर्थ. राजकुंवरी कळाप्रवीणना वसंत ऋतुना विरह भेद संबंधी वर्णननी साथे प्रवीण सागर ग्रंथनी चाळीशमी लेहेर संपूर्णथइ. ॥ ४० ॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे कलाप्रबीन वसंत विरह दशा बर्ननो नाम चत्वारिंशतिमो लहरं ॥ ४० ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां चत्वारिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ३९ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

पामी ताप वसंतना विरहनो, भूपे घणा खेदथी ॥
कीधी जे कविता रसाळ रसिके, पत्रो लख्या प्रेमथी ॥
वांची काव्य कलाप्रवीण कुवरी, प्रेमे दिवांनी हवी ॥
एक्तालीशमि लेर आ अनुभवें, केशे निशाणी नवी ॥

अथ रससागर वसंत विरह बर्नन प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

जेसी दशा प्रवीनकी, तैसी सागर चिंत ॥
चरचा मित्र पत्रह प्रिया, बरनों बिरह बसंत ॥ १ ॥

अर्थ. जेवी कलाप्रवीणमी दशा थइ गइछे, तेवीज सागरना चित्त नी दशा थइ जवाथी मित्रोसाथे चर्चाकरीने सागरे वसंत ऋतुना विरह नो जे पत्र पोतानी प्रिया प्रवीणने लखी मोकलाव्यो तेनुं वर्णन करुं छुं. ॥ १ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

थापन किनों महामुनि मेंन सो, मंत्र कला सितकार पढ्यो री ॥ बेद हकार अकार उचारत, लोम धनी फगुवा दोउ फोरी ॥ नेंनन नीर छटें प्रगटें उमडें जु उसास समीरन दोरी ॥ कोरि प्रवीन बुझावें हमें हिय, होरिके आगम की भई होरी ॥ २ ॥

अर्थ. कामदेवरूपी मोहोटा मुनीए अग्निनुं स्थापन कर्युं, एटलुंज नहीं पण ते मोटाना सीसकाराऊपी मंत्रनी कळा भण्यो, हाय हाय एवा वेदने उच्चारी ने खीली आवेलां रुंवाडारूप धाणी दाळीआ फोडीने तेना फगवा कर्या, तथा आंख्योना आंसु रूप छांटणां प्रगट थयां, ने उसासा रूप पवन दोडीने उमटी आव्यो, हे प्राणप्यारी प्रवीण! आजे

अमारा हृदयमां होळीना आगमननी (आववानी) होळी सळगी उठीछे तेने कोण बुझावे! ॥ २ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

केसरके फुतकार उडावत, कोकिल नाद सु घंट बजंती ॥ बेलिके बंध जरे जकरे अरु, लंगर लोह मधूकर पंती ॥ माधवि कुंदन बंदन चित्रहे, साइ तमाल लगाइ सुहंती ॥ प्यारे प्रबीन अहो हमकों ऋतु, राज भयो रति राजको दंती ॥ ३ ॥

अर्थ. केसर रूपी फुंफवाडा उडाडेछे, अने कोयलना शब्द रूपी घंट वागेछे, वेल्योरूप जरीना बंध कसी लीधेलाछे,अने भमरानी पंक्ति रूप लोढानुं लंघर खणकेछे, माधवी तथा डोलर रूपी सिंदूरनां चित्रो कारेलांछे, अंगे लगाडेली तमालरूपी साइ घणीज शोभेछे, ओहो! हे प्राण प्यारी प्रवीण! अमने तो आ ऋतुराज जे वसंत ते रतीराज जे काम देव तेना हाथी सरखो थयोछे. ॥ ॥ ३ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

जामगि कुंद कनेर लगाइहें, केसरके चिनगार गढेहें॥ माधविके परसून सो आतस, बीर मधू अस पौंन बढेहें॥चाप लता रु उशीर निषंगहे, पल्लवके किरवांन कढेहें ॥ बेधन एंन प्रबीन वियोगिकों, या ऋतु राज सिकार चढेहें ॥ ४ ॥

अर्थ. डोलर तथा लाल कणेर रूपी जामग्री प्रगटीछे, तेमां केसर रूपी तणखा एकठा करेलाछे, माधवीनां फूल रूपी आतसबाजी अने भमरा रूपी शूरवीरोने साथे लइने पवन रूपी घोडाने झडपथी वधारतो आवेछे, वेल्यो रूपी धनुष अने वाळा रूपी भाथा बांधीने पल्लव रूपी उघा

ती तरवार हाथमां काढीलीधीछे, हे! प्रवीण एवीरीते तमारा वियोगी मृगने वेधवा तारु आ रतुनो राजा वसंत शीकारे चढ्योछे ॥ ४ ॥

अथ वक्रोक्ती अलंकार ॥ सवैया ॥

बाग बजे बड भागिनके डफ, राग हिंडोर सजें गेहेरें ॥
कोकिल कीर अली सुर साधत, धीर समीर वहें लेहेरें ॥
फूलरहें बन वेल सबें फल, झूलरहें पतवा फेहेरें ॥ मिंत प्रवीन बसंत विलोकत, क्यों बिरही न हियो हेहेरें ॥ ५ ॥

अर्थ. मोहोटा भाग्यवानना बगीचाओमां धफ वागेछे, अने गंभीर अवाजथी हींडोर राग आळेपायछे, कोयल, पोपट तथा भमराओ स्वर साधेछे, शीतळ अने सुगंधीदार पवन धीमी धीमी लेहेरोथी वायछे वनमांनी सघळी वेल्यो प्रफुल्लित थइछे, फळ झुलीरह्यांछे, ने पात्रां पवनना झपाटाथी फरुकेछे. हे प्रीयमित्र प्रवीण! एवा वसंतने जोतां-थी विरहीनुं हृदय केम न हरेरे! ॥५॥

अथ संभावना अलंकार ॥ सवैया ॥

अलि गुंजन कुंजन पुंजन व्हैहें, प्रभंजन कंजन व्हैं प्रसरेंगें ॥ द्रग झंपत केसरकी पिचकारिन, दंपति गोद गुलाल भरेंगें ॥ चिहुंओर हिंडोरके तांननके जब, कांनन आंन भनंक परेंगें॥ अहो मिंत प्रवीन वसंतके वासर धीरज चिंत ह हां न धरेंगें ॥ ६ ॥

अर्थ. कुंजोना समुदायो उपर जथाबंध भमराओना गुंजारव थशे, कमळो उपर ठवराइने पवन पसरवा लागशे. केसरनी पीचकारीओथी आंखोने झांखीने स्त्री पुरुषो गुलालना खोळा भरशे, अने ज्यारे चारे तरफथी गवाएला हींडोर रागना तानोनी भनक आवीने कानमां

पडशे त्यारेतो अहो हे प्रीयमित्र प्राविण! आ वसंत ऋतुना दीवसोमां हा! हा! आ चित्त धीरजता नहींज धरे! ॥ ६ ॥

अथ सुधा पन्हुति अलंकार ॥ सवैया ॥

केतकि दंड सु दंड लिये कर, फूल दिनेश गुलै फरसी हें ॥ अंब कदंबनमें उरझी यह, व्हैन लता सुफरीन फसी हें ॥ मींन प्रवीन बियोगिनके जिय, किंशुक ऐंचनकी बिन सीहें ॥ मिंत बसंतके बाग नहीं यह, धीमरकी मिल सैंन धसीहें ॥ ७ ॥

अर्थ. आ कांइ केतकीनो दंड नथी आतो हाथमां दंड लीधेलोछे, आ कांइ सूरज मुखीनुं फूल नथी आतो फरसीछे, आंबा तथा कदंबना वृक्षोमां घुचवाइ गयेली आ लीली वेल्यो नथी आतो फरी, जाळ अने फांसीछे, आ कांइ केसुडां नथी आतो प्रवीणना वियोगी रूप माछलांना जीवने खेंचवानी बीनसी (कांटो) छे, हे प्रीय मित्र प्रवीण! आकांइ वसंत ऋतुनो बाग नथी आतो मछी मारनी फोज एकठी मळी ने धसी आवेलीछे ॥ ७ ॥

अथ विभावना अलंकार ॥ सवैया ॥

जा मुख बेंन सबैं मुख अम्रत, तेन अम्रत गांन हमें असि धारा॥ किंशुक ओर प्रमानत माधवी, माधवी सोय चकोर को चारा ॥ आंन सुहावत शीतल मारुत, शीतल होत ह में तन आरा ॥ मोह प्रवीन भयोहें बसंत, बसंत प्रवीन विनां हम हारा ॥ ॥ ८ ॥

अर्थ. मोढामांथी नीकळेलां एवांजे गायननां वेण सर्व लोको ना मुखमांथी अमृत सरखां नीकळेछे, ते अमृत सरखु गायन अमारेतो तरवार

नी धार जेवुंछे, आ दिवसोमां सर्व लोको केसुडां तथा माधवी लताने प्रमाणेछे परंतु अमने तो केसुडां तथा माधवी लता चकोरना खोराक अंगारा जेवी लागेछे, वीजा लोकोनेतो शीतळ पवन घणोज सोह्यामणो लागेछे, पण अमारा शरीरनेतो आ थंडो पवन चक्र अथवा करवतना आरा जेवो लागेछे, हे प्रवीण! वीजा लोकोनेतो आ वसंत मोह रूप थयोछे परंतु अमेतो प्रवीण विनां आ वसंतने हारी गया छीये. ॥ ८ ॥

अथ अलंकार एकावली ॥ कवित्त ॥

पुर पुर हरे वाग, वाग वाग धरी माल, माल माल जंत्र
जंत्र, जंत्र सेत लेहेरी ॥ वन वन भरी बेल, बेल बेल भ
रे फूल, फूल फूल भृंग भृंग, भृंग धुनि गेहेरी ॥ गली ग-
ली छई कुंज, कुंज कुंज कुंज भौंन, भौंन भौंन सेज सेज,
सेजन सु रेहेरी॥ पंथी उत जाइयें, वताइयें [illegible]
एहो इत आइयें प्रवीनजूसें केहेरी ॥ ९ ॥

अर्थ. शेहेरे शेहेरे लीला वगीचा थयाछे, ने वगीचे व[illegible] घडानी माळाओ बांधीछे, ने माळाए माळाए यंत्रो गोठव्याछे ने यंत्रे यंत्रेथी स[illegible] पाणीनी लेहेरो चालेछे ने [illegible] फालेली वेल्यो वींटाईछे अने वेल्ये [illegible] फूलो [illegible] आव्यांछे, फूले फूले भमराओ भमेछे, ने भमरे [illegible] गंभीर अवाजना गुंजारव थायछे. गलीए गलीए कुंजो छवराइ गइछे, ने कुंजे कुंजे कुंजभुवन (लतायह) वनीगयांछे, ने भुवने भुवने शेज्या [illegible]छे, ने शज्यायें शज्यायें स्त्री पुरुषोनां जोडलां रमण करेछे, माटे हे पंथी! त्यांहां जइ वसंतना भेद वतावीने आहीं आवो एवी रीतनां [illegible] प्रवीणनी पासे जइने केहेने. ॥ ९ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

ये मधुरे मधुरे दिनमें मधुरे सुर, चाहत मंगल गावन ॥ मोदकि माल बँधी नव पल्लव, कोकिल कोक लगे जु पढावन ॥ थार बनें सित पत्रनके मधि, मोतन बूंद बनाये बधावन ॥ प्यारे प्रवीन चलो जु मिलो अहो, आयो बसंत बयार बुलावन ॥ १० ॥

अर्थ. हे मधुर! (हे रसीक) आ वसंतना मधुर दिवसोमां रसीकलोको अथवा भमराओ तमने मधुर स्वरथी गांणा गावा ने चाहेछे, अने नवां कुंपळ रूपी मोदमाळा (तोरण) वांधीने कोयल तथा चकवाने पढाववा लागेलांछे, सपेत पात्रां रुपी थाळ बनावीने तेमां बुंद रूपी मोतीओ वधाववासारु बनावीने भरी राख्यांछे, माटे हे प्राणप्रियप्रवीण! चालो अने मळो, केमके ओ हो हो! मोटी धांम धुमथी तमने बोलाववा सारु आ वसंतनो पवन आवेलोछे. ॥ १० ॥

अथ सुधापन्हुति अलंकार ॥ सवैया ॥

हें न गुलाल सु नेंनकी ज्वालहें अंग अबीर बिभूत चढाये ॥ केसर ओर गुलाबके रंग न, गंग तरंग उमंग वहाये ॥ गाय धमार न वीर कुलाहल, बीन बजें डफ डौंरु वजाये॥ धीरज चिंत प्रवीन धरो ऋतुराजके रूप पशूपति आये ॥ ॥ ११

अर्थ आ गुलाल नथी आतो त्रीजा नेत्रना अग्नि झाळोछे, अंगे अबील लगाव्यो नथी आतो विभूती चडावीछे, आ केसर अने गुलावनो रंग नथी, आतो उमंगथी गंगानी लेहेरोने वेहेवरावेछे, आ धमार गाता नथी आतो विरोना कोळाहळ शब्द थायछे, आ कांइ विणा अने डफ वागतां नथी आतो डाक तथा डमरु वागेछे, माटे हे प्रिय-

मित्र प्रवीण! चित्तमां धीरज धरो, केमके रतुनाराजा वसंतना स्वरूपथी आ पशुना पति महादेवजी आव्याछे. ॥ ११ ॥

अथ सम रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

पल्लवके तुररा जु धरे शिर, बेलि अखारेकि डोर बधांनीं ॥
मोर मधूकर कुंजन गुंजन, कोकिल मंत्र उचारत बांनी ॥
वादी वसंत वियोगीपें डारत, मूठ गुलाल अबीर उडांनी॥
जीवन जंत्र प्रवीनको पत्र, बिलोकि बचे हम या जिय जां
नी ॥ १२ ॥

अर्थ. मस्तक ऊपर कोमळ पल्लव रूपी तुररा धर्याछे, वेल्यो रूपी अखाडानी दोरीओ बंधाइ गइछे, कुंजोमां थता भमराओना गुंजारव रूपी मोरली वगाडेछे, कोयलनी वाणी रूप मंत्रनो उच्चार करीने वसंत रूपी वादी वियोगी उपर अबील गुलालनी मूठीओ रूप मूठ चलावेछे, माटे केवळ प्रवीणना पत्र रूप जीवन जंत्रने जोयाथीज आ जीव वचेछे एम अमो नक्की जाणीएछीए. ॥ १२ ॥

अथ कैतवापन्हुति अलंकार ॥ सवैया ॥

रंभन थंभनमें दपटी मिस, पत्रनके किरवांन पटीहें॥ जीव बिजोगिनके चोहोरावन, व्याज गुलाब वजी चपटीहे ॥
फंदनहें बन ब्रंदन ऊपर कैतव कुंज लता लपटीहे ॥ मिंत प्रवीन बिलोकतहि हम, चिंत वसंत वडो कपटीहे ॥
॥ १३ ॥

अर्थ केळोना थांभलामां पात्रांना मसथी संताडी राखेली आ काढेली तरवारनी पटीछे, वीयोगीना जीवने गभरावना सारु गुलावनी कळीओ फोडवाना मसथी आ चपटी वागीछे, वन वृक्षोना झुंडना मसथी

आ रथ राखेलोछे, जेना उपर कपट रूपी कुंजनी वेल्यो लपटाइ गइओ छे, हे प्रियमित्र प्रवीण चित्तमां वीचारी जोतां अमने तो आ वसंत वडो कपटी दीसे छे. ॥ १३ ॥

अथ सम रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

रंभन मंजर पुंछ फिरावत, मुंछ उशीरनकी फेहेरीहे ॥ चंदन कुंद गुलाबन आंबन, सीत सुगंधनको लेहेरीहे ॥ ताल वडे फणिचक्र प्रवीनजू मिंत बिजोगनको केहेरीहे ॥ आंनन ज्वाल गुलाल उडावत, ब्याल वसंत वडो जेहेरीहे ॥ १४ ॥

अर्थ. केळयोनी मंजरिओ रूपी पुंछडांने फेरवेछे, वाळा रूपी मूछोने फरकावेछे, चंदन, डोलर, गुलाब अने आंबा वीगेरेना थंडा शीतळ सुगंधनो लेहेरीछे, मोहोटा ताडना पत्ररूपी फणना चक्रने धर्युंछे, हे प्रियमित्र प्रवीण, वीयोगीओनो केर (नाश) करनार, मोढेथी गुलाल रूपी झेरनी झाळोने उडावनार आ वसंत रूप मोहोटो नाग वडो झेरी देखायछे. ॥ १४ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

कोकिल भृंगन पुंग सुनीं मलयाचल बिल्लहुतें उठि धायो ॥ पल्लवकी रसना फरकावत, केसरको फुतकार उडायो ॥ नेंन गुलाब प्रसून सु खोलत, डोलत कुंजलता लपटायो ॥ मिंत प्रवीन बिजोगि बिलोकत ब्याल बसंत बयारहो आयो ॥ १५ ॥

अर्थ. कोयल तथा भमराना अवाज रूपी मोरली सांभळीने मळीयाचळ पहाड रूपी राफडाना दरमांथी उठीने दोडी आवेलो, नवां कुंपळ

रूपी जीभना लवरका करतो, केसरना रंग रूप फुंफवाडा नाखतो, गुलाबना फूल रूपी नेत्रने उघाडतो, डोली डोलीने वेल रूपे थइ कुंजोमां लपटाइ गयेलो, एवी रीतथी हे प्रियमित्र प्रविण वीयोगीने जोवा सारु वसंतना वायु रूप आ नाग आव्योछे. ॥ १५ ॥

अथ सम रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

चेलन चेलन केलनके डफ बेलन सेलनसें लपटाये ॥ पीत रते सित फूलसु चंदन, अंग चिता मकरंद लगाये ॥ भृंग सु कोकिल शंखसि तें धुनि ले, शतपत्र अलेख जगाये ॥ लूंट प्रवीन विजोगिनके मठ, मिंत वसंत दिगंबर आये ॥ १६ ॥

अर्थ. झाडनी छालयो रूपी वस्त्रवाळा अनेक चेलाओने साथे लइने केळ रूपी डफने वगाडतो वेल्यो रूपी शेलीथी वींटायेलो, अंगे पीळां, रातां अने सपेत फूलो रूप चंदन तथा सुगंधी रज रूपी चीतानी विभुती लगावीने भमरा तथा कोयल रूप शंखनें मोहोटा गंभीर अवाजथी वगाडतो हाथमां कमळ रूपी खप्पर लइने अलेख जगावतो थको, हे प्रियमित्र प्रवीण, वियोगीना मठने लुंटवा सारु आ वसंत रूपी दीगंबर आव्योछे ॥ १६ ॥

अथ रूपक संभावनाको संकर अलंकार ॥ सवैया ॥

मंजरके जु धरे तुररा कलिकानके खंजरसो अलबोहे ॥ कोकिल कीर बजे हक वीर समीर सु तीरनको चलवोहें ॥ बाजें गुलाबनकी पिसतोल जु, पत्र पताकनको हलवोहें ॥ एरि वसंत दहंत कहा उर, मिंत प्रवीन अजों मिलवोहें ॥ ॥ १७ ॥

अर्थ. वृक्षोनी मंजारियो रूप तुररा धर्याछे, हाथमां कळीओ रूपी खंजर सेहेवाय नहीं एवुं घणुं विषमछे, कोयल तथा पोपटना अवाज रूपी वीरोनी हाकलो थायछे पवन वायछे तेतो तीरनुं चालवुंछे, गुलाबनी कळीयो फूटवा रूपी पीस्तोलना अवाज थायछे, पात्रां कंपेछे ते पताकानु हलवुंछे, अरे वसंत तुं शामाटे हृदयने बाळेछे! अमारेतो हजी प्रियमित्र प्रवीणने मळवुंछे. ॥ १७ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

प्रौढ प्रभंजन बाज चढ्यो रति राज सु आज सिकार रमें ॥ ताल सु पल्लव टीप बजावत, सून निशांन सिरो बनमें ॥ कोकिल हाक कलोल करे ब्रछफंद लता प्रसरी मगमें ॥ कैसें प्रबीन वियोगि बचें सस, भृंग दशो दिश स्वान भमें ॥ १८ ॥

अर्थ. पवन रूपी म्होटा जवर जस्त घोडा उपर चडीने रतीनो पति कामदेव आज शीकार रमेछे, ताड वृक्षनां पात्रां रूप टीप बजावेछे. वनमां आकाश रूपी थंडा शीतल निशाणने फरकावेछे कोयल रूपी शीकारीओ अवाज रूपी वीरहाकलो करेछे, मारगे मारगे वृक्षनी वेल्यो रूपी पाशला पसरी गयाछे, अने दशे दिशाओमां भमरा रूपी शीकारी कुतरा भमेछे, माटे हे प्रियमित्र प्रवीण! वीयोगी रूप सांसलो केवी रीते बचे. ॥ १८ ॥

अथ सम रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

मारुत मंद गयंद तुरी बन, नाद निशांन द्विरेफ धुनीं ॥ कोकिल कीर सु बीर कुलाहल, साध उठे चिहुंओर सुनीं ॥ आतससी मकरंद उडें नव, मंजरी सूरन पग्ग तनीं ॥

वेधन आये प्रवीन वियोगिकों, कामकि फोज बसंत वनीं ॥ १९ ॥

अर्थ. मंद पवनरूपी हाथीछे, वनरूपी घोडाछे, अने भमराना शद्ब रूपी नगारां नीशांन वागेछे, कोयल तथा पोपटना अवाज रूपी शूरवीरोना कोळाहळ थायछे, जे साभळवाथी चारे तरफनां प्राणीओ चमकी उठेछे, सुगंधी रज रूपी आतसवाजी छुटेछे, नवीन मंजरीओ रूपी तरवारो शूर वीरोए मीयांनमांथी ताणी लीधेलीछे, एवीरीते हे प्रिय मित्र प्रवीण! वीयोगीने वेधवा सारु आ कामदेवनी फोज वसंत रूपे वनीने आवेलीछे. ॥ १९ ॥

अथ विरोधा भास अलंकार ॥ सवैया ॥

रंग अनंगके खेल गये अरु, वेल गई तर फूल प्रकासी ॥ कोकिलको कल जोर गयो अरु, भौंरन सोर गयो सुख रासी ॥ कुंज कुलाहल कीर गयो अरु, धीर समीर गयो सुभ वासी ॥ येहो प्रवीन बसंत गये हियतें न गई मधु पुरनमासी ॥ २० ॥

अर्थ. जातजातना रंगथी रमवानुं, तथा कामक्रीडाना खेल गया, वेलो पण करमाइ गई, झाडनां फूलोनो प्रकाश गयो, कोयलना मनोहर अने मधुर अवाजनुं जोर गयुं, सुखना ढगला रूप भमराना गुंजार मनो सोर गयो, कुंजोमां थता पोपटना कोळाहळ शद्ब गया, ने जे सुंदर सुगंधवाळो पवन धीमे धीमे वातो ते पण गयो, हे प्रवीण! एवीरीते तमाम वसंत गयो तो पण अमारा हृदयमांथी हजी मधु एटले (वसंतनी) पूर्णमासी एटले होळी गइ नहीं. ॥ २० ॥

अथ उत्प्रेक्षा अलंकार ग्रीषमदशा वर्नन ॥ सवैया ॥

आले उशीर दरीच झरोखन, बागनमें चिहुंओर फुवारे ॥

सेज प्रसून प्रसूनके भूखन, चेल परेच गुलाब भिगारे ॥ धीर समीर सुरंज श्रवें कन, मांनों महेश जटा जल झारे ॥ ऐसे निदाघके बासरमें इत, आओ प्रवीन हमे हिय प्यारे ॥ २१ ॥

अर्थ. झरोखामां भींजावेला वाळानी तटीओ बांधीछे, बगीचाओमां चारे तरफ फुवारा छूटेछे, फूलनी शैय्याओ, फूलनां घरेणां, अने गुलाबजळथी भींजावेलां वस्त्र तथा मछरदानीना पडदा राखेलाछे, धीमो धीमो पवन चालवाथी पाणीना यंत्रोनी नळीओमांना जळकण स्रवेछे, ते जाणे महादेवजीनी जटानां पाणी झरतां होयनै! एम दीसेछे, आवा ग्रीष्म ऋतुना गरम दीवसोमांतो अमारा हृदयनां प्यारां हे प्रवीण! आंही आवो? ॥ २१ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ कवित्त ॥

दिशे दिशि दाये सो विभूति लायें अंग अंग, गिरिराज आये आये बैठे बिप्र बरनीं ॥ समीध बनायें बन, उपबनके [illegible]ठाये आजको समाज लूक पोंन श्रवा झरनी ॥ मारतंड को मयूख, लागी दिव मंड ज्वाल, धूमकी उमंड देखयत गो धुमरनीं ॥ मुनि मेंन बिरही जन चर कर होमतहे पावक प्रबीनजू प्रचंड कुंड धरनी ॥ २२ ॥

अर्थ. दीशाए दीशाए लागेला दा रूपी विभूती अंगे अंगमां चरचीने तैयार थएला मोहोटा पर्वत रूप ब्राह्मणो आवी आवीने वरुणीमां बेठेलाछे, वन अने उपवननां समीध (होमवानां लाकडां) बनावीने एक ठां करेलांछे, लु रूपी घीना पवनरूपी शरवा भरी भरीने ढींच्या करेछे, सूर्यना कीरण रूपी झाळो आकाशना मंडळ पर्यंत पोहोचवा लागीछे,

जमीननी धुंवर रूप यज्ञना धुवाडाना जथ्था चारे तरफ फेलाएला देखा यछे, पृथ्वी रूपी मोहोटा कुंडमां प्रवीण रूपी अग्निनुं स्थापन करीने तेमां कामदेव रूपी मुनी, विरही जन रूपी चरु करीने होमेछे. ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

चरचा सागर मिंत किय, लिखित प्रबीन बनाय ॥
सो बसंत ग्रीषम दशा, बर्नन दियो सुनाय ॥

अर्थ. पोताना मित्रो साथे चर्चा करीने महाराजा रससागरे बनेली हकीकतनो जे पत्र प्रवीण उपर लखी मोकलाव्यो ते पत्र संबंधी वसंत तथा ग्रीष्म ऋतुनी दशानुं वर्णन संभळावी दीधुं. ॥ २३ ॥

॥ गाहा ॥

बिरह दशा बसंते ॥ सागर विदित लिखित परबीनं ॥
इकतालीश भिधानं ॥ पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ २४ ॥

अर्थ. वसंत ऋतुमां वीतेली विरहनी दशा जे महाराजा रससागरे प्रवीणने लखी जणावी ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी एकतालीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २४ ॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे रससागर बसंत ग्रीष्म बिरह बर्ननो नाम एक चत्वारिंशतिमो लहरं ॥ ४१ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रीत अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां एक चत्वारिंशतिम तरंगः समाप्तः ॥ ४१ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

वर्षाना दिवसो विषे घनघटा, साथे थति वीजळी ॥
देखीने निनि पाळ राज कुंवरि, ॥ अंगे अतिशे जळी ॥

तेनूं दुःख रसाब्धिने, लखि करी पोते रहि वेगळी ॥
बेतालीशमि लेरथी, गुणिजनो लेजो सहू सांभळी ॥

अथ कलाप्रबीन वर्षा बिरह बर्नन प्रसंगो यथा.

॥ सोरठा ॥

पावस बिरह प्रबीन, बीती सो बरनों दशा ॥
कुसुमसु चरचा कीन, सोय लिखी सागरसु प्रति ॥ १ ॥

अर्थ. कुसुमावळी साथे चर्चा करीने जे समाचार, पत्रद्वाराए महाराजा रससागरने लखी जणाव्या ते पत्र संबंधी चोमासाना दिवसोमां जे विरहनी दशा कळाप्रवीणने वीती तेनुं वर्णन करुंछुं. ॥ १ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ कवित्त ॥

बद्दर परेच बंधे, दद्दरन घोर डौंरू, चद्दर बिछाई हरी, हर ताई धरकी ॥ तापर रच्योहे खेल, व्याल करी कुंज बेल, बूढ कर औंन गैल, गैल बुंद छरकी ॥ चातुकीके काग केकी, कुळके उलूक राग, बग गीध जाग जाग, किये पौंन भरकी ॥ बीज मुख ज्वाल साजी, चिनगे खद्योत राजी, सागर बनाई घन, बाजी बाजीगरकी ॥ २ ॥

अर्थ. वादळां रूपी पडदा बांध्या, देडकाओना अवाज रूपी डमरु वगाड्युं, नीलकाइ गएली जमीन रूपी लीलो चादर वीछावीने तेना उपर खेल रच्योछे, ते एवीरीते के कुंजनी वेल्योना सर्प कर्या, ने चोमासामां थता राता जीवडा रूपी दडा बनाव्या, गलीओमां गळेला बुंद रूपी छरा कर्या, वपैया रूपी कागडो कर्यो, मोरोना कुळना अवाज रूपी घुडना राग कर्या, अने जगोए जगोए बगलाओ तथा गीध रूपी पवन भक्ष करनारा सिद्धो कर्या, वीजळी रूपी मोढानो झाळो

सजी अग्नीनी पेठे झळकता पतंगियाओनी पंक्ति रूप तणखा कर्या, हे सागर! एवीरीते मेघ रूपी वाजीगरे वाजीगरनी बाजी बनावीछे. २

अथ सुधापन्हुति अलंकार ॥ सवैया ॥

मोरन सोर न मोर वजे फणि,चक्र यहें न चढी सेहेरें ॥
हे चपला न कला रसना फुन,कार न मारुतकी फेहेरें ॥
या चिनगे न खद्योतनके गन, बुंद न आननकी जेहेरें ॥
हे न त्रपा अहि मंडल सागर, लाये बिजोगिनिकों लेहेरें ॥ ३ ॥

अर्थ. आ कांइ मोरोना शोर वकोर नथी आतो मोरली वागेछे, आ कांइ वर्षादनी शेलडियो अथवा शेडो चढी नथी आतो फण्योनां चक्रो छे, आ कांइ विजळी नथी आतो जीभना लवकारा थायछे, आ कांइ पवनना लेरखा नथी आतो फुंफवाडाछे, आ कांइ पतंगीयाना समूह उडता नथी आतो तणखा झरेछे, आ कांइ वर्षादना पाणीनां बुंद नथी आतो मोढाना झेरनां बिंदुछे, हे सागर! आ कांइ मेघमंडळ नथी आतो नागनुं मंडळछे, जे माहेला सर्पो विजोगणने लेहेरो लेवराववा सारु आव्याछे. ॥ ३ ॥

अथ समाधि अलंकार ॥ सवैया ॥

घोर भयो घन घोर चहूं दिश, मोर चकोर भये उन सा नीं ॥ दादुर झींखि डरांन लगे दुति, दांमिनि झार झकोरत आनीं ॥ मीत सखीर भ्रमावतहें मन, काम कठोर कमी नहिं रानी ॥ सागर आग लगी इतने पर, चातुकनें बहु पी धुनि मानी ॥ ४ ॥

अर्थ चारे दिशाओमां वरशाद चडी आववाथी घनघोर अंधारानुं

जोर थयुं,अने मोर ने चकोर तेना शाक्षी थया, देडकां ने तमरां डरावा लाग्यां छे, विजळीनी कांतिरूपी झाळ झपाटा करवा लागी, ते जोई. अने ठंडो पवन मनने भमावेछे, तेथी कठोर कामदेवे कांइ कमी राखी नहीं, हे सागर? तेथी विरहरूपी आग लागी. एटला उपर वळी बपैये पियु पियुं एवी ध्वनी कही, एटले वधारे आग लागी. ॥४॥

॥ अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

भारि भयो घन घोर चहू दिश,ओर घटा उमडी अति कारी ॥ कारि निशा अँधियारि तिही महिं, दीपति दामिनिकी उजियारी ॥ यारि समे सुनि मोरनकी धुनि, कंपत लंफत प्रान अटारी ॥ टारि टरे न यहें बिधना गति, सागर पीर सनेहकि न्यारी ॥ ५ ॥

अर्थ. भारे घोर वर्षाद थयो, अने चारे दिशाओ तरफ अतिशे काळी घटा चढी आवी, अने काळी अंधारी रात थइ, तेमां विजळीनी कांति झळकवा लागी, आ समे मोरनी ध्वनी सांभळीने प्राण अटारीमां लपाइने कंपेछे. आ दैवनी गति टाळी टळे नहीं,हे सागर स्नेहनी पीडा न्यारीजछे.॥५॥

॥ अथ चपलातिशयोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

इंद्र घटाकि छटाकि चटा, बिटपी व्रतती छिति छावनकी ॥ पात्रुक चात्रुक झिल्लिन अल्लिन, भेकन केकन गावनकी ॥ सागर सारस कोकिल सूर,मराल शशी मुरझावनकी ॥ जावनकी महाराज बजी, बिरहानकि नोबत आवनकी ॥ ६ ॥

अर्थ. वर्षादनी घटानी अने वीजळीनी चमकारीनी तथा पृथ्वीमां झाडो अने वेलाओ छवरावानी, पोपट, बपैया, तमरां, भमरा, देडकां, अने मोरने गावानी, अने समुद्रने, चकवाने, कोयलने, सूरजने, हंसने, अने

चंद्रमाने अकळावानी, महाराजा सागरने सिधाववानी, अने विरहने आववानी नोवत वागी. ॥६॥

॥ सवैया ॥

छावन जोंग उपावन गावन, मोर जिवावन भेकन जानी ॥
घोर घटा वन वेल बढावन, धावन पोंन चढावन पानी ॥
सागर नेह नभावन पावन, श्रावन आवनकी नहि ठानी ॥
तीजमें वीजहुकी चमकावन, वीजमें तीज ज्यु शवरि बानी ७

अर्थ. हे सागर जोगने छवरावनारी, गायनने उपजावनारी, मोरने अथवा मने अने देडकांने जीवाडनारी जाणिये, वर्षादनी घोर घटाने तथा वननावेलाने वधारनारी, पवनने दोडावनारी, तथा पाणीने चडावनारी. हे सागर? पवित्र स्नेहने नभावनारी, श्रावणमां आववानी, अथवा स्रावन एटले वर्षाद आववानी(अगमचेती रूपे)त्रीजीरीतुमां अर्थात् शीयाळो ने उनाळो गया पछी चोमासाना आरंभमां बीजमां त्रीज मेळविये एटले आशाडशुद पांचमनी विजळीनी चमकारी जेवी आपनी वाणी केम ठरावी नहीं ? अर्थात् मोकली नहीं? अर्थात् पांचमनी विजळी जेम वर्षाद आववानी अगमचेती बतावे छे. तेवीज आपनी आववानी अगमचेतीनी वाणी केम लखी मोकली नहीं ? ॥ ७॥

॥ अथ न्यून रूपक भेद अलंकार ॥ सवैया ॥

महिरान घटानकि डाक वजे, तडिता तरशूलनसी दरसे ॥
शुक चातुक दादुर मोर सबे, गन वीर धसे धुरवा धरसें ॥
हरिनंद निकंद करे जबही, तबही सरसो तुअ शंकरसें ॥
विरही मन ताप मिटावनको दुख, रे घन क्यों न उतें बरसे ८

अर्थ. गंभीर अवाजथी गाजता मेघनी घटानां डाकलां वागेछे, वीजळी त्रिशूल सरखी देखायछे, पोपट, बपैया देडकां अने मोरो विगेरे सघळा गणो, तेमज वादळांनी रीछडीओ रूप शूरवीरो जमीन उपर धसारो करता आवेछे, पण हे मेघ! ज्यारे तुं हरीना पुत्र कामदेव नो नाश कर! त्यारे तु शंकर सरखो केहेवा, माटे विरही जनना शरीरना ताप अने मनना दुःखने मटाडवा सारु हे दुःखदायक वर्षाद तुं त्यां हांजइने केम वरसतो नथी. ॥ ८ ॥

॥ अथ जातिस्वभाव अलंकार ॥ कवित्त ॥

धुरवा धरा धसांने, बेली बन लपटांने, सुरराज चापतांने बूढ दरसाईहें ॥ बादरान छांन लागे, भांनको छपांन लागे, दादुरा डरांन लागे, केकी धुनि गाईहें॥ चातुकी उचार ...ी, घटाघोर गहरांनी, घनबीज चमकांनी, दंपति सुहाईहें ॥ दरस बिन रावरे, बियोगी जन बावरे, हे एहो इत आओरे, असाढ रितु आईहें ॥ ९ ॥

अर्थ. मेघना वरा (धोरीया) पृथ्वी उपर धसी आव्या, वेल्यो वनमांना वृक्षो साथे लपटाइ गइ, देवना राजा इंद्रे पंचरंगी धनुष ताण्युं, बूढ एटले जेने गावडीओ कहेछे, एवा वर्षादमां ऊपजता राता जीवडा देखावा लाग्या, वादळां छवराइ छवराइने सूर्यने ढांकवा लाग्यां, देडकाओ डरां डरां एवा शद्धो करवा लाग्यां, मोरो टौकानी साथे गावा लाग्या, वपैया मधुर वाणीना उच्चार करवा लाग्या, वर्षादनी काळी घोर घटाओ अवाजनी साथे फेलावा लागी, मेघमंडळमांथी वीजळी चमकवा लागी, अने स्त्री पुरुषनां जोडलां शोभवा लाग्यांछे, आवा राळियामणा वखतमां आपना दर्शन विना वियोगी जन दिवानां थइ गयांछे,

माटे हे सागर! आंही आवो केमके अषाढ महीनानी ऋतु आवेलीछे, ॥ १ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

वहरहे सु वनें छवि अंबर, दद्दर नूपुर घूघुर बाजन ॥ घोर घनों सु मृदंगनकी धुनि, बीज छटा सु गटानकि साधन ॥ पंत वर्नी वक मोतिनके गन, चातुक कीर मयूर अलापन ॥ पातर रूप बनाय घटा, बरषो उत जायके सागर आँगन ॥ १० ॥

अर्थ. वादळांछे ते तो वस्त्रनी छबि रूप वनि गयांछे, देडकां रूप झांझरना घुघरा वागेछे, वर्षादनी गर्जना रूप मृदंगना अवाजनी ध्वनि थायछे, वीजळियोना चमकारा रूप फूलना दडा उडाडवानुं साधन बन्युंछे, वगलानी पंक्ती रूप मोतीना हार धर्याछे, बपैया, पोपट अने मोरोना अवाज रूप राग आळेपायछे, माटे हे मेघ! तारी घटाने पातर (नायका) रूप बनावी ने त्यांहां सागरना आंगणामां जइने वरश. ॥ १० ॥

अथ दृष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

व्यालन ज्यों चुप व्हैके रही सुनि मोरनकी जु भयानक भाषा ॥ पोंन झरी फहरी तिनसें यह, प्रांन भयोहे निवात पताखा ॥ घोर घटा गरजें बरषे तन, सूकगयो ज्यों जवासन शाखा ॥ सागर दामिनिके दुतिसें छतियांनमें होयगईहें भलाखा ॥ ११ ॥

अर्थ. मोरोनी अतिशे भयानक वाणी सांभळीने नागणीनी पेठे चुप थइ रहिछुं, पवननी झडी फेलावा लागी तेथी आ प्राण देवाळयनी ध्व-

जा जेवां सकंप थइ गयांछे, मेघनी घोर घटाओ गर्जनानी साथे वर्षेछे तेने लीधे आ शरीर जवासानी डाळनी पेठे सुकाइ गयुंछे, हे सागर! चमकती वीजळीनी कांतिथी तो आ छातीमां शलाक (डांक) दीधी होय तेम शळाका थइ गइछे. ॥ ११ ॥

अथ हेत्वपन्हुति अलंकार ॥ सवैया ॥

चपला नाहिं ज्वालमुखी चमके, अरु धूम धसें धुरवा धरसें ॥ बधु इंद्र अँगारनकी छबिहें, जगनूं चिनगारनसें सरसें ॥ इन दंपति चाहे चकोरन ज्यों, सुवियोगनि दाह तहें तरसें ॥ जितही जित घोर घटा बरसें, तितही तित पावकसो दरसें ॥ १२ ॥

अर्थ. आ कांइ वीजळी नथी आतो ज्वाळा मुखी चमकेछे, आ कांइ मेना वरा जमीन उपर धसी आवता नथी आतो धुंवाडाना गोटा फेलाइ फेलाइने धसी आवेछे, आ राता रंगना जीवडा नथी आतो अंगारानी छबीछे, आ ऊडता पतंगीया तणखा सरखा देखायछे जेने आ चकोर पक्षीनां जोडलां चाहेछे, ते तो झाडनी पेठे विजोगणने बाळेछे, ज्यांहां ज्यांहां घोर घटाथी मेघ वर्षेछे त्यांहां त्यांहां अमने तो अग्नी सरखो देखायछे. ॥ १२ ॥

अथ छेक लाटानु प्रास अलंकार ॥ कवित्त ॥

घाट घाट दादुरा सो, बाट बाट बोलतहे, बन बन मोर सोर, घन घन बिज्जुरी ॥ दिश दिश धुरवा सो, धसि धसि धावतहें, गिरि गिरि बार धार, झरी झरी उत्तरी ॥ जग जग जगनूं सो, डग डग ऊडतहें, झिन झिन झिल्ली धुनि, बन बन उच्चरी ॥ पीय पीय हरि बानी, जीय जी

यथो निराश, सागर वियोगिनि बिलखत ब्रहा भरी ॥ १३ ॥

अर्थ. घाटे घाटनां देडकांओ तो वाटें वाटें बोलेछे, वने वने मोरोना शोर बकोर थायछे, मेघनी घटाए घटाए वीजळियो चमकेछे, दिशाए दिशाए धुरवा (रीछडीओ) धसी धसीने दोडेछे, पहाडे पहाडे वर्षादना पाणीनी धाराओ झरी झरीने उतरती जायछे, ठेकाणे ठेकाणे चळकता पतंगीया डगले डगले ऊडेछे, वनमां झण झण तमराना उच्चार थायछे, पीयू पीयू एवा बपैयाना मधुर शब्दो सांभळीने हे सागर! जीववानी बाबतमां जेनो जीव निराश थइ गयेलोछे, एवी विरहथी भरपूर थयेली विजोगण वलखेछे. ॥ १३ ॥

अथ समाधि अलंकार ॥ सवैया ॥

प्रातहुतें मुरझात गयो दिन, सांझ भये घन घोर अराधी ॥ दांमिनि देखि डरी जगनूं जरि, सोइ गई गहि मित समाधी ॥ राउरे चाह चमंक उठी फुनि, बाउरि होय बिभावरि आधी ॥ सागर कोंन धरी सुखकी इत, चातुक नें बहुरीं धुनि साधी ॥ १४ ॥

अर्थ. सवारथीज मुंझवणमां मांड मांड दिवस वीति गयो अने सांझ पडी के मेघनी गर्जना साथे काळी घटा चडीआवी, चमकती वीजळी जोइने डरी, ऊडता पतंगीयाने जोइने बळी एटले मित्रनी समाधी ग्रहण करीने सुइगइ ते पाछी अर्ध रात्रीए आपनी चाहनाने लीधे दीवानी थइ अने चमकी उठी हे सागर! ते उपरांत वळी आहीं बपैयाये पिउ पिउ एवी घणी धुन करवा माडीछे, माटे हवे सुखनी कइ घडी रही ते कहो? ॥ १४ ॥

अथ खंड पद लाट अलंकार ॥ कवित्त ॥

झमकी झिंगोर झिल्ली, तमकी सु बक पंत, चमकी खद्योत जोत, दमकी दमन घन ॥ निपटी अँधारी निश, झपटी समीर सीत, कपटी न आये मिंत, लपटी लतन बन ॥ डहकी अनेक भेक, गहकी मयूर गन, चहकी पपीहा धुनि, ब्रहकी दहन तन ॥ सबही समांन आज, भए दुख दांनमेरे, कीजियें उपाय आय, सागर अटन मन ॥ १५॥

अर्थ. झणझणाटनी साथे तमरांना झींगोर (अवाज) थवा लाग्या, वगलानी हार्यो तवकवा लागी, जथ्थाबंध पतंगीयाओ झळकवा लाग्या अने मेघनी घटाओमां वीजळियो चमकवा लागी, मेघली अंधारी घोर रात मळवा लागी, थंडो पवन झडपथी वावा लाग्यो अने वेल्यो वनमां लपटावा लागी, तोपण हजी कपटी मित्र आव्या नहीं अने अनेक देडकांओ डहकवा लाग्यां, मोरोना जथ्था गेकवा लाग्या, बपैयाओना अवाजना सिसकार थवा लाग्या, वियोगीनां शरीर बळवा लाग्यां, एरीते वर्षा ऋतुनो सघळो सामान आज म्हारे दुःख दायक थइ पड्योछे, माटे हे सागर! आ मेहेलमां आवीने शुद्ध दीलथी कांइक उपाय करो. ॥ १५

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

कुरती नवरंग बनें बदरां धुज, इंद्र धनूं फहरें नभ अद्दे ॥ परगाह सु गाज बजे गन केकन, चातुक वांसुरिके सुर सद्दे ॥ धुरवा सु तुफंगन आग छटा धुनि, दादुर झिल्लि कवाद अरद्दे ॥ बिरही जनके मनके गढ ऊपर, वारद गारदके व्रज बद्दे ॥ १६ ॥

अर्थ. नवीन रंग बेरंगी वादळां रूप कोट पाटलुन विगेरे दरेश

बनावेलोछे, आकाशीनी वच्चे खेंचायला इंद्र धनुष रूप धजा फरकेछे, मेघनी गर्जना रूप पडघम वागेछे, मोरो अने बपैयाना स्वर रूप बीगल तथा वांसळियो विगेरे वेंडवाजांना स्वरो सधायछे, वरा (रीछडीओ) रूप वंदुको छुटेछे, वीजळी रूप आग सळगी उठीछे, देडकां अने तमरानी ध्वनी (अवाज) रूप कवायतनुं आराधन थायछे, एवीरीते विरही जनना मन रूपी गढ उपर वर्षादे गारदीओनां टोळां एकठां करीने राखेलांछे. ॥ १६ ॥

अथ लाटानुप्रास कारक दीपक अलंकार ॥ सवैया ॥

झांखि झरोखनमें चढि चांदनि, पाय धमंक धमंक धरें ॥
घोरि भई वदरांन विलोकत, मेघ झमंक झमंक झरें ॥
मोरन सोर सुनें अंखिया जल, बुंद ठमंक ठमंक परें ॥
सागर लाग सहेलिनके गर, चंत चमंक चमंक मरें ॥ १७ ॥

अर्थ. झरोखा माथे चडी चांदनी झांखीने धम धम पग धरेछे, वादळाने जोइनेतो दीवानी थइगइ पण वर्षाद झम झम झरेछे तेने ली धे तथा मोरोना सोर (टोंका) सांभळवाथी आंख्योना जळनां बुंद ठम ठम गळेछे, हे सागर! साहेलीने गळे लागी, चित्तमां चमकी चमकीने पडेछे. ॥ १७ ॥

अथ असंगति अलंकार ॥ सवैया ॥

चागन केकिन राग उचारत, लागत बांन वियोगन नारी ॥
घोर घटा चढिआई अटा, विरहीन पटामें छटा सु कटारी ॥ पोंन धसें पुरवा धुरवा धर, दादुरवा सुरवा भय कारी ॥ श्रावनमें धन जीवनरे पति, संग सुरा भरि पी मनहारी ॥ १८ ॥

अर्थ. बगीचाओमां मोरोना रागना उच्चार थवाथी विजोगण नारीने बाण वागेछे, काळा रंगना वादळांनी घोर घटानी अटाओ चडी आवीछे, तेमांथी जे वीजळी सवकारा करेछे, तेतो विरहीनां हृदयमां कटारी जेवी लागेछे, जमीन ऊपर पवन, पूर अने वरा धसेछे, तेमज देडकांना स्वरो थायछे, ते अति भयंकर लागेछे, आवा रळीयामणा श्रावण मासमां तो जे पोताना पति साथे मदिराना प्याला भरी भरीने पीनारीछे, तेना जीवतरने धन्यछे. ॥ १८ ॥

अथ जातिस्वभाव सुपद लाट अलंकार ॥ कवित्त ॥

उठी घटा कारी यारी, लागत डरारी भारी, गिरियें अटारीके कटारी मार मरीयें ॥ बद्दरकी गाज मोर, दद्दर अवाज सुनि, अंतको समाज साज, अगहीतें परियें ॥ बातही न कहीजात, ऐसें चित आत नित, शंकर निवात जाय, निज घात करीयें ॥ बेर बेर टेरतहें, फेरहू न मिलो मींत, सागरजू याते मन, मार पीन धरियें ॥ १९ ॥

अर्थ. चडेली काळी घटाओ भारे डरामणी लागेछे, माटे मेडीएथी पडीए के पेटमां कटारी मारीने मरीए! वादळांनी गर्जना, तथा मोरो अने देडकानां अवाज सांळभीने तो एम थायछे के अंतकाळनो सामान सजीने पर्वत ऊपरथी पडीए? वात कही जाती नथी ने हमेशां चित्तमां एम आवेछे के शंकरना मंदिरमां जइने कमळपूजा खाइए, अर्थात् पोताना शरीरनो नाश करीए? वारे वारे बरकीए छीए, पण हे मित्र सागर! फरीने मळताज नथी! माटे मनमां एम थायछे जे झेर पीइ लइए. ॥ १९ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

बद्दरके जु फनूंस किये मधि, दांमिनि दीपति दीप जगाये

दहर घोर दशो दिश घूघुर, झिल्लिनके झनकार बजाये॥ चातुक वींन नवीन वजें बन, मोरन जंगल के सुर लाये इंद्र धनूं धनू तीर समीरले, सागर मेघ सिकारिव्है आये ॥ २० ॥

अर्थ. वादळांनु फानस करीने तेमां प्रकाश करनारी वीजळीनो दिवो प्रगट्योछे, दशे दिशाओमां देडकाना शद्बना घूघरा अने तमरानां झणकारा वगाड्याछे, वनमां वपैया रूप नवीन विणा वागेछे, वनना मोरो टहुका करीने जंगलना स्वर लावेछे, इंद्रना धनुष रूप धनुष अने पवन रूपी तीर लइने हे सागर! आ मेघ सीकारी थइने आव्योछे. ॥ २० ॥

अथ अलंकार समरूपक ॥ सवैया ॥

कैला घटांनके आंन धरेहें, छटांनकि ज्वालमुखी सु जगाये ॥ फुंकु नरीन समीर झरी धुरवानके धूम दशो दिश धावे ॥ इंद्र धनूष समांन समारि, पतंग पतंगनके जु उडाये ॥ कुंदन बांम वियोगनि तावत, सागर मेघ सुनारव्है आये ॥ २१ ॥

अर्थ. काळी घटाओ रूप कोयला लावी धरेलाछे, तेमां वीजळी रूप ज्वाळामुखी (अग्नी) सळगावीछे, पवननी झडी रूप धमानी फुंको चालेछे, अने दशे दिशाओमां रींछडीओ रूप धुंवाडो फेलातो जायछे, इंद्रना धनुष रूप समाणीथी समारीने पतंगीया रूप तणखाने उडाडेछे, हे सागर! एवीरीते विजोगण नारी रूप कुंदनने तावया सारु आ वर्षाद सोनी थइने आवेलोछे. ॥ २१ ॥

॥ अथ एकावलि अलंकार सवैया ॥

घरसें पुरवा धुरवा घरसें, धरसें बढि वेलि चढी तरसें ॥

तरसें चित चातुकके हरसें, हरसें दुति दामिनि अं
बरसें घन घोर घटा झरसें, झरसें धुनि बाढत दा तुना
॥ दरसें बिन मिंत ब्रहा सरसें, सरसें दिन सा
परसें ॥ २२ ॥ गं ॥

अर्थ. पाणीनां पूर अने मेना वरा जमीनने परसेछे, पृथ्वी गं ॥
वधेली वेल्यो वृक्षो उपर चडेछे, तरश्या बपैयाओनां चित्त हर्षेछे गं ॥
शमांथी सळावाकरती कांतिवाळी वीजळियो हर्षेछे, वर्षादनी
ओ झडीथी वर्षेछे, तेमज झडीथी देडकाओना अवाजनो रंगे
जायछे, मित्र दर्श्याविना वृद्धीनी साथे नवो नवो विरह उप ॥
माटे जे दिवसे सागर आवीने स्पर्श करे तेज दिवस सरस णिकाओ
थवा जे दिवसे सागरने परशीए तेज दीवस श्रेष्ठ गणाय. ॥ शे, ने

॥ अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥ वेरंगी

तनसें बिरहा न बढेंगे तबेंही चढेंगे जबें बदरा पोताना
घनसें धरवा निकलेंगे तबें अकुलेंगे नहीं जिय धीरजता
दनसें सो दरसेंगो तबें, सरसेंगो न
नसें । घन गाजने जानहुगे मितवा वैया ॥
ये तनसें ॥ २३ ॥ तरंग तरब्बर फूलहि ॥
संवर दंपति कूलहि ॥

अर्थ. ज्यारे वर्षादमांथी वादळांओ च
हीं वधे! ज्यारे मेघमंडळमांथी वरा नीकळशे त्यारे झरता पटा धर झू-
नहीं अकळाय! ज्यारे दीवस, रात्री सरखो देखाशे त्यारे व दिगंबर
धिक दुःख नहीं थशे! हे मित्र सागर! ज्यारे मनथी नहीं
शरीरथी शुं कहीए? ॥ २३ ॥ यां, वेल्यो

अथ प्रथम भेद निदर्शनालंकार ॥ कवि आव्यां, देड
थी कोनाराने

भरपूर ढांकीने चालवा लाग्यां, काळी घोर घटाओ रूप अटारीओथी मे घ उलगइ गयो, वीजळीने सजीने वर्षादना वरा पृथ्वी उपर झुमी आव्या, आ समयना आकाशने जोइने म्होटा दिगंबर योगीयो पण भूल खाइ जाय त्यारे हे प्रवीण! वियोगी जन शीरीते वचे? ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रथम भेदनिदर्शनालंकार ॥ कवित्त ॥

दुर दुर दादुरा प्रबीनजू बसे यों कहें बन तन डोलत कहें, कछू न कीयबो ॥ पीय पीय चातुकी सो, बिषयों बदत बानी, धक धक जल धार, जपें प्रान जीयबो ॥ जन जन झिंझिगन, कहेंना प्रकाश कछु, चप चप चपला उचारतहें रीयबो ॥ ब्रच्छ वेलि चढि चढि, बतावतहें मिंत राह, घोर घोर घटाके अकार प्रेम पीयबो ॥ ४ ॥

अर्थ. देडकाओ दूर दूर एवा शब्द करीने प्रवीण दूर वसेछे एम कहेछे, वनना वृक्षो शरीरे डोली डोलीने डोलवा शीवाय कांइ करवुं नहीं एम जणावेछे, बपैया पिय पिय एवा अवाज करीने विष पीयो विष पियो एवी वाणी बोलेछे, धक धक चालती पाणीनी धाराओ धकधक चालता प्राणथी जपो जपीने जीवो एम कहेछे, झणझणता शब्दनी साथे भमराओ दर दर माणस पासे प्रकाश न करो एम सूचवेछे, अने चप चप चळकती वीजळी तो चुप चुप थइ रेहेवानुंज उच्चारेछे, वेल्यो झाड उपर चडी चडीने मित्रना मार्गने वतावेछे, अंधारी घोर घटाओतो घटाने आकारे प्रेमने घोळी घोळीने पीयो एम कहेछे. ॥ ४ ॥

अथ विरोधाभास अलंकार ॥ सवैया ॥

घोर घटाके पटासें छटा मनमथ्थहु उद्दमकी दमके ॥ रेनहु मैंन पतंगन पंगति, प्रेम चितें चमकी चमके ॥ झिल्ल-

व झार पहारनकी झर, अंग ब्रिहा झमकी झमकें ॥ पावस मिंत प्रवीन प्रभंजन, पूर बके भ्रमकी भ्रमके ॥ ॥ ५ ॥

अर्थ. अंधारी घोर घटानी रींछडियोमांथी वीजळी अने हृदयमांथी कामदेव दमक्यांछे अने वळी दमकेछे, रातनी वखते कामदेव, पतंगीयानी पंक्ति अने प्रेम चित्तमां चमक्यांछे ने वळी चमकेछे, तमरांना झणझणाट, झाडोनी झडी, पोहाडोनां निर्झरणां अने अंगमां विरह झमक्यांछे ने वळी झमकेछे, हे मित्र प्रवीण! वर्षाद, वायु, पूर अने बगला भ्रमक्याछे, अने वळी भ्रमकेछे. ॥ ५ ॥

अथ कैतवापन्हुति अलंकार सवैया ॥

भूमहि धूम छये घन झूमत लाइ लगी चपला चिहुं घातें ॥ जूह पतंग चिनंग उतंगनि, ऊडि चले पुरवा इन बातें ॥ पावस व्याज प्रवीनजु पावक, कीनें बिजोगिनके तन तातें ॥ दाओ लगे परदाउ लगावन आयेहें चातुक कोसी कहांतें ॥ ॥ ६ ॥

अर्थ. पृथ्वी उपर झुमी आवेला मेघना मसथी जमीन उपर धुवाडो छवराइ गयोछे, वीजळीना मसथी चारे तरफ लाइ सळगी उठीछे पतंगियाओना जथ्थाना मसथी म्होटा म्होटा तणखा पूर्व दिशाना पवनथी उडी चालेछे हे? प्रवीण एवीरीते वर्षादना मसथी अग्नियें वियोगियोनां शरीरने तप्त करेलांछे तथापि दा लाग्या उपर वळी डांभ देवासारु डुंभारणां वाळो आ वपैयो क्यांहांथी आव्योछे? ॥ ६ ॥

अथ समरूपकअलंकार ॥ सवैया ॥

डोर लला चपलाकि कला अरु, बक्र पला सुरचाप निहारो ॥ गोल गटा घनकीजु घटा बरुनी सु पटा जलको वि-

सतारो ॥ सेत जगा सु बगाकी खगच्छन तारे तगा पतगा को उजारो ॥ प्यारे प्रवीन बिनां दुखियां अखियांनमें इंद्र कियाहे अखारो ॥ ७ ॥

अर्थ. डोळा माहेली लाल रेखा रूप वीजळीनी कळाछे, भ्रकुटीनी कमान रूप इंद्र धनुपछे एम जुवो, गोळाकार काळी कीकी (माणसढां) रूप वर्षादनी घटाछे, पापणो रूप वरा जळने विस्तारेछे, श्वेतता रूप बगळनी पंक्तिछे, चळकता सतारा रूप पतंगीयानुं अजवाळुंछे, एवीरीते प्राण प्यारी प्रवीण विना दुखणी, आ आंख्योमां इंद्रे (वर्षादे) अखाडो करेलोछे. ॥ ७ ॥

अथ यथासंख्य संदेहको संकर अलंकार ॥ कवित्त ॥

धुरवाके गन जोध, बादर बिभूति गज, गाजन अवाज डाक, दुंदभी समररे ॥ दामिनीके ज्वाल खग, बुंद धसे गंगा बांन, चातुकी मयूर सिंगि, तूरसें कहररे ॥ पटा जटा सिले साज, चाप पोरके पताखा दादुरके बाजे मुख, अर न परवररे ॥ वरषा के वामदेव कामराज बाहनाहें पंथिक प्रवीनसें नवीन बात कररे ॥ ८ ॥

अर्थ. आते वराछे? के गणछे? के युद्धाओछे? आते वादळांछे? के विभूतीछे? के हार्थीओनां टोळांछे? आते मेघनी गर्जनाछे? के डाकलां वागेछे? के युद्धनां दुंदभी वागेछे? आते वीजळीछे? के अग्नीनी झाळोछे? के उघाडी तरवारोछे? आते जळनां बुंदछे? के गंगानो प्रवाह धसी आवेछे? के बाण वर्षेछे? आते बपैया अने मोरोना अवाज छे? के शींगडियो वागेछे? के रणतुरां वागेछे? आते वर्षादना पटाछे? (वरा) के मस्तकनी जटाछे? के सजेलां भालांछे? आते इंद्रधनुपछे? के चंदन चरचुंछे? के पताकाछे? आते देडकांओना अवाजछे? के म्होढाना शद्बोछे?

(महादेव पासे गाल नाद करेछे ते) के आरबनी बेरखो बोलेछे? आ-ते वर्षादछे! के महादेवजीछे! के कामदेवनी सेनाछे! हे पंथी! प्रवीणनी पासे जइने आ नवीन वात करने! ॥ ८ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

घोर घटा घन बुंदनमें निश, दामिनिसें दब क्यों न रयोहें ॥ चातृक मोर चकोरन सोरन, दादुरसें डरहू न लयोहें ॥ जोत बयार लगें सु जगें तब, जानपरें जु गयो न गयो हें ॥ प्यारे प्रबीन निदांन करो कछु, पावस प्रांन पतंग भयोहें ॥ ९ ॥

अर्थ. अंधारी घोर घटाओ, वर्षादनां बुंद, रात्री अने वीजळीथी छुपीने दबाइ रह्यो नथी बपैया, मोर, चकोर अने देडकाओना सोर बकोरथी पण भय पाम्यो नथी, जोत जागेछे अने पवन लागेछे त्यारे गयो के नथी गयो एम जणायछे, हे प्राण प्यारां प्रवीण! कांइक उपाय करो! केमके वर्षा ऋतुने लीधे आ अमारो प्राण (प्राण नामनो वायु) पतंग रूप थइ गयोछे. ॥ ९ ॥

अथ संभावनालंकार ॥ सवैया ॥

चातुक मोरन सोर भयो चिहुंओरन घोर घटा गरजी ॥ सीर समीर शरीर दहें, अशरीर न मांनतहें अरजी ॥ कैसें सहें निबहेंगे कही बिध बीज यहें नरहें बरजी ॥ पावस आए न आए प्रबीन हहा करतार कहा सरजी ॥ १० ॥

अर्थ. बपैया अने मोरोना सोर बकोर थया, चारे तरफ अंधारीघोर घटाओ गाजवा लागी, थंडो शीतळ पवन शरीरने बाळेछे, अने शरीर वि-

नानो कामदेव अरजी मानतो नथी, हवे केवीरीते सहन करीयें! अने शीरीते नभीए! आ वीजळी तो वरजवाथी पण रहेती नथी, चोमासुं आव्युं पण प्रवीण न आव्यां, अरेरे! हे जगत्कर्ता परमेश्वर! आते शुं सरज्युंछे. १०

॥ अथ समरूप अलंकार ॥ कवित्त ॥

बक पंत फूलनके, भूपन फिलाय डारे, बंदनको भाजन सो, वृंदन फलादहें ॥ सुर चांप सोच भरी, भ्रकुटी चढाय राखी, बारद अपार धार, अंबक प्रवा वहें ॥ चढिआई घटा श्याम, बिथुरें सु केश वांम, चातुकी उचार पीय पीय रसना कहें॥ पूरव प्रचंड पोंन, प्रथुल उसास भरें, पावस प्रवीनजू वियोगनी बनी रहें ॥ ११ ॥

अर्थ. बगलानी पंक्तिरूप फूलोनां घरेणां फेलावी नाख्यांछे, चोमासामां उपजता राता जीवडा अने फलाद (रक्तकीर) रूप सिंदूरनां पात्र छे, इंद्र धनुष रूपी क्रोधथी भरेली भ्रकुटी चडावी राखेलीछे, वर्षाद-नी अनेक धाराओ रूप आंख्योना आंसुना प्रवाह वहेछे, कामनीना केशनी फेलाएली लटो रूप काळी घटाओ चडी आवीछे, बपैया रूप जिव्हा पियु पियु एवा उच्चार करेछे, पूर्व दिशाना आकरा पवन रूप म्होटा उसासा निसासा भरेछे, एवीरीते आ वर्षाद प्रवीणनी पेठे वि-योगण रूप बन्यो रहेछे. ॥ ११ ॥

॥ सवैया ॥

अंबरतें गिरतें धरतें सरतें सरितें धुरवा जल धावे ॥ आं खनतें तनतें मनतें असुवा, अरु स्वेद सनेह बढावे ॥ दा दुर मोरन सोरनतें, घन घोरनतें दरतेंजु बचावे ॥ कंठ प्रवीन भुजा धरकें भरिकें करि आसव पावस पावे ॥१२॥

अर्थ. आकाश, पहाड, पृथ्वी, तळाव, नदियो अने वर्षादनी शेढ-डियोमांथी जथ्थाबंध पाणीना धोधवा दोडी आवेछे, ते आंख्यो, शरीर, अने मनमांथी अनुक्रमे आंसु, स्वेद (पसीनो) अने स्नेहने वधारेछे. देडकां तथा मोरोना सोरथी अने वर्षादना घमघोर अंधारानां डरथी तो जो प्रवीण कंठमां हाथ धरीने वर्षादमां मदिरानां पात्र भरी भरीने पायतो बचावे. ॥ १२ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

अंबर बीज पितंबर सोहत, चंदन सो सुर चांप चढायो ॥ फाटिक माल बनी बक पंतन, बीन प्रबीन सिखीन बजायो ॥ चातुक दादुर गांन उचारत, कामिके चित कलेश लगायो ॥ छूटे घटासें पटासो जटा छबि, बारद नारदसो बनि आयो ॥ १३ ॥

अर्थ. आकाशनी वीजळी रूप पतांबर शोभेछे, खेंचेला इंद्र धनुष रूप चंदन चडावेलुंछे बगलानी पंक्ति रूपी स्फाटिकमणीनी माळा पेहेरीछे, मोरना शद्ब रूपी नवीन विणाने वगाडेछे, वपैया अने देडकांओना अवाज रूप मधुर गायन गाइने कामी जनना चित्तमां क्लेश उपजावेछे, एवरिते हे प्रवीण! काळी घोर घटामांथी छुटीने जमीन उपर धसी आवता पटा (वरा) रूप खुल्ली जटानी छबि धारण करीने आ वर्षाद नारदमुनी सरखो बनी आव्योछे. ॥ १३ ॥

॥ अथ स्मृतिमान् अलंकार ॥ कवित्त ॥

झुंड आये बकवा प्रचंड आए सुरचाप, मंड आए मघवा उमंड आए धुरवा ॥ रंग आए कुंजन पतंग आए पात पात, श्रंग आए हरिता उमंग आए मुरवा ॥ घोर आए बदरान तोर आए चातुकीकों, मोर आए दादुर करोर

आए सुरवा ॥ दांमिनि नवीन छबि, दिश दिश कींन आ-
ए, अजहू न आयेरी प्रवीन मिंत पुरवा ॥ १४ ॥

अर्थ. बगलाओनां झुंड(टोळां) आव्यां, म्होटुं इंद्र धनुष खेचाइ आव्युं वर्षाद उलटी आव्यो, वरा उमटी आव्या, बाग, बगीचा अने वननी कुंजोमां नवां कुंपळनो रंग आव्यो, पांदडे पांदडे पतंगीया आव्या, पर्वतोने शिखरे शिखरे नीलता आवी, वेल्यो खीली आवी, अंधारी घोर घटाबंध वादळां चडी आव्यां, बपैयाओनां टोळां आव्यां, लाखो मोर आव्या, करोडो देडकांनां अवाज आव्या, दिशाए दिशाएथी नवीन वीजळिओनी छबी चमकी आवी, तोय पण हजी पूर्व जन्मनां मित्र प्रवीण आव्यां नहीं. ॥ १४ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

नील घसें धुरवा धर ऊपर, नील गीरव्वर अंबररे ॥ फंद घटा घहरावतहें अरु चातुक सीत बजे सररे ॥ श्रावन मीर सीकार चढ्यो अरु, कच्छ प्रवीन रहे पररे ॥ बीज के बाज उडावत आवत, तूं न बचे जिय तीतररे॥ १५ ॥

वर्षादना वरा रूप भिट्ठो पृथ्वी उपर घसेछे, पर्वतनी नीलता रूप वस्त्रो धर्यांछे. मेघनी काळी घटाओ रूप पासला फेलावेछे बपैयाना अवाज नी टोप अने शीतळ पवन रूप बाणना सुसवाटा वगडेछे एवीरीते श्रावण मास रूप अमीर प्रवीण रूप शीकार उपयोगी सजळ जमीनना मेदाननी सपाटी उपर सीकारे चड्योछे ते वीजळी रूप बाजने उडावतो आवेछे माटे हे? जीव, तेतर रूप तुं नहीं बचे. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

चातुक मीत समीर सर, श्रावन मीर सीकार ॥

बीज बाज फंदा घटा, जिय तीतर अनुहार ॥ १६ ॥

अर्थ. वपैयाना अवाज रूपी टीप अने शीतळ पवन रूपी बाण, श्रावण मास रूपी अमीर शोकारे चडनार, वादळा रूपी पासला, वीजळी रूपी बाज अने तेतर रूपी जीव. ॥ १५ ॥

अथ स्मृतिमान् अलंकार ॥ कवित्त ॥

बारसें सुढार चिहुओर झुके भार भरे, मुक्त हार जैसें, बक, जित तित घेर घेर ॥ कज्जर कनार जैसें, घटासें प्रकार सेर, नेंनकी कटाच्छसी, छटाकी छबि फेर फेर ॥ कासमीर कुंकुमकी आड जैसो इंद्र धनु, बेंदीके समान बूढ, हार्यो मन हेर हेर ॥ बानीके समांन बांनी चातुक मयूर ठानीं मितवा प्रवीन जूकी याद आवे टेर टेर ॥ १७ ॥

अर्थ. मस्तकना वाळ जेवा, पाणीना भारथी भरपूर वर्षादना वरा चारेतरफ झुकी रह्याछे, मोतियोना हार जेवा बगलाना जथ्था ज्यांहां जोइए त्यांहां ऊडता दिसेछे, काजळनी रेखा जेवी घटा माहेली शेज्यो पसरीछे, नेत्रना कटाक्ष जेवी वीजळीनी छवि वारे वारे चमकेछे, केसर तथा कुंकुमनी आड जेवुं इंद्र धनुष खेंचायुंछे, जडाउ वींदली सरखा चोमासाना रंगीन जीवडाओने जोइ जोइने मन हारी गयुंछे, अने मधुर वाणीना सरखी बपैया तथा मोराए उच्चारेली वाणी सांभळीने पोकारी उठवानी साथे प्रिय मित्र प्रवीणनी वारे वारे याद आवेछे. ॥ १७ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

आज घटाकी अटाके झरोखन राजतहें रति राज सभा भर ॥ पंच सदी चिहुंओर बदी धुनि, चातुक मोर प्रवीन सधें सुर ॥ जेर किये बीरहीन वहे जस आरति बीज उता

रनि ऊपर ॥ मोतिनकी बरषा वरषावत पावत दांन गु
नीजन दद्दर ॥ १८ ॥

अर्थ. आज वर्षादनी घटा रूप अटारीना (मेडीना) झरोखा उपर मना भरीने वीराजेला रतिना पति कामराज अति शोभेछे, चारे तरफ नोबत नगारां, चोपदार तथा वंदीजनो विगेरेना पांच प्रकारना शब्दोनी धुन्य थायछे, अने हे प्रवीण! बपैआओ तथा मोरो स्वर साधेछे, जेर करेला विरही लोको जेना जशने गायछे, उपर रहेली वीजळी आरती उतारेछे, एटलुंज नहीं पण ते महाराजा बुंद रूप मोतियोना वर्षादने वरसावेछे, ने दांनने देडका रूपी गुणी जनो पामेछे. ॥ १८ ॥

अथ स्मृतीमान् अलंकार ॥ सवैया ॥

चातुक कीरन सोर बनेंबो रि मोरन ठोरन ठोर नचेबो ॥
कारे सटांन पटांनकि आवन, रूप घटांन छटांन रचेबो ॥
दद्दर झिल्लनके गनकी धुनि, कीजतहें सुन प्रांन तजेबो ॥
आय विनां न बनेंगो प्रवीनजू पावसमें विरहीन वचेबो
॥ १९ ॥

अर्थ. बपैया तथा पोपटना अवाजना बनावो, ठेकाणे ठेकाणे मोरोना नाच, वादळांनी शेडयोनुं छवरावुं, वर्षादना धोधवानुं आववुं, चडी आवेली काळी घटाओनां रूप अने विजळियोनी रचना जोइने, तेमज अथागथ देडकां अने तमराना अवाज सांभळीने आ जीव प्राण ताजि देवानुं धारेछे, माटे हे प्रवीण! आव्या विना चालशे नहीं, केमके आ चोमासानी ऋतुमां वियोगी वचे एम नथी. ॥ १९ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

दद्दर घंट झिल्ली सुर घुघुर, मोरन संकर सोर बजाये ॥

गाज धुनीं बक पंतन दंतन बंदन बीज कला लपटाये ॥
ब्रच्छ उपारतहें बिरही मन, बुंदनके फुतकार उडाये ॥
इंद्र घटा न प्रबीन यहें रति, राजके छूट पटा झर आये
॥ २० ॥

अर्थ. देडकांओनां अवाज रूपी घंट, तमरांना स्वर रूपी घूघरा अने मोरोना स्वर रूपी लोढानी साकळनां खणखणाट वगाड्या, गर्जना रूप अवाजनी साथे बगलानी हार रूप दांत धारण करीने वीजळी रूपी सिंदुरना चित्रोनी कळाथी लपटायेलो, वियोगीना मन रूप झाडने उखाडतो आवेछे, अने पाणीना बूंद रूप फुत्कारा उडाडेछे, माटे हे? प्रवीण, आ वर्षादनी घटा नथी, पण आतो इंद्र घटाना स्वरूपथी रतिना पति कामदेवनो मदझर हाथी छूटीने आवेलोछे. ॥ २० ॥

॥ कवित्त ॥

सज्जत निरंत्र मन, तज्जत न प्रांन ध्यांन, गज्जत सघन तातें, लज्जतन गहरें ॥ झरि झरि जार जार, बिरहिन डारे मार, फरर फरर ताहीपें त्रिबिध बात फहरें ॥ जांनत न ब्रह्म कर्म, मर्म सर्म एतेपें धर्महीन आवत न मीनकेत महरें ॥ परम प्रबीन प्रीत, आगरकों चाहें नित, कागर सरूप प्रेम, सागरकी लहरें ॥ २१ ॥

अर्थ. अंतर विना जेम होय तेम निरंतर आ मन तमारी धारणा करी राखेछे, ने प्राण तो क्यारेय ध्यानने तजतां नथी, वळी गंभीर अवाजथी मेघ गाजेछे तेथी शरीर थडकी थडकीने कंपेछे, वर्षाद झडीथी झरी झरी वाळी वाळीने वियोगीने मारी नाखेछे, ते उपर वळी मंद सुगंधी अने शीतळ पवन फरर फरर वायछे, ब्राह्मणनां कर्मने, मर्मने अने शरम

ने जाणतो नथी अने उलटो ते उपरांत धर्म विनानो, माछलाने ध्वजा-
मां राखनारो, कामदेव मारतो आवेछे, माटे हे प्रवीण? परम प्रीतिथी तम
ने अगन्ने अने तमारा कागळ रूप प्रेमना दरियानी लेहेरोने हमेशां
चाहीए छीए. ॥ २१ ॥

॥ सवैया ॥

घोर घटा गेहेराए उठी घन, आगम बूंद छुहा छरके ॥
दांमिनि जोत जगी झिलवा उमगे सुरवा सुर दादरके ॥
मीन समीर चली पुरवा धुरवा धासि आवत अंबरके ॥
पावस साज विलोक प्रवीन विहालहें प्रांन ब्रिही नरके
॥ २२ ॥

अर्थ. अंधारी काळी घोर घटाओ गाजी उठी, वर्षादना आगमने
लीधे चंदनना छांटणां छंटाया, वीजळी रूपी जोत जागी, तमरां उमगी
आव्यां, मोर तथा देडकांओना शद्ब थवा लाग्या, पूर्व दिशानो थंडो
पवन चालवा लाग्यो, जमीन उपरथी पूर अने आकाशमांथी पाणीना
धोधा धसी आववा लाग्या, हे प्रवीण? एवी वर्षादनी सामग्री जोइने
वियोगी पुरुषनां प्राण बेहाल रहेछे. ॥ २२ ॥

अथ स्मृतीमान् अलंकार ॥ सवैया ॥

ज्यों ज्यों घटा चढि आवत अंबर, त्यों त्यों पटामें छटा
छबि छाई ॥ ज्यों ज्यों दशो दिशकों धत दांमिनि, त्यों
त्यों गजे घनकी गहराई ॥ ज्यों ज्यों यहें धुनि बादर
बादर त्यों त्यों मलार मयूरन गाई ॥ ज्यों ज्यों नवीन
गिर्वान सबे सुर, त्यों त्यों प्रवीन सबी चित आई २३

अर्थ. जेम जेम आकाशनी घटाओ चडी आवी तेम तेम वरामांथी
शोभानी छबी छवाणी, जेम जेम दशे दिशाओमां वीजळी चमकी

तेम तेम मेघनी गंभीर अवाजथी गर्जना गाजी, जेम जेम वादळामांथी वर्षादनी गर्जना थइ, तेम तेम मोरोए मलार राग गाया, जेम जेम मोरो ए नवा स्वरो साध्या तेम तेम प्रवीणनी छबि (तसवीर) चितमां आवी. ॥ २३ ॥

अथ छेकानुप्रास अलंकार ॥ कवित्त ॥

फरर फरर पोंन, थरर थरर कुंज, घरर घरर घोर, झरर झर बद्दर ॥ कहक कहक केकी, लहक लहक लता, चहक चहक झिल्लि, डहक डह दद्दर ॥ चरत करत बीज, फरत फरत कीट, सरित भरित पूर गिरित गिर चद्दर ॥ गहें गहें पांन बीन, चहें चहें गांन लींन, अहें अहे रे प्रवीन, लह री लह कद्दर ॥ २४ ॥

अर्थ. फरर फरर पवन फेलायछे, थरर थरर पवनथी कुंजो कंपेछे, घरर घरर घोर गर्जनाओ थायछे, झरर झरर वादळां झरेछे, कहक कहक एवीरीते मोरो टउका करेछे, लहक लहक लताओ लळकेछे, चहक चहक एवी रीते तमरां चिसो पाडेछे, डहक डहक देडकाओ बोलेछे, वेगथी सळावा करती वीजळियो झळक झळक झळकेछे, फरर फरर पतंगीयाओ चक्रनी पेठे फरेछे, पाणीथी भरपूर नदियो घळळ घळळ छलकती चालेछे, नीलता रूपी लीली चद्दरने तमाम पर्वतो धारण करी रह्याछे, आवा समयमां हाथमां विणा लइ लइने गायनमां गावाने वारे वारे चाहीए छीए अरेरे ?हे प्रवीण? हवेतो कद्दर लियो कदर लियो? ॥ २४ ॥

अथ जातिस्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

आज घटा घन घोर उठी चिहुं ओरन मोरनकी धुनि बागी ॥ भूपर भेक अनेक भरे रव, इंद्र धनूं तडिता द्युति

जागी ॥ फूल सुधा मुकताफल धारत, द्वार बधाइ बजी वडभागी ॥ बान अनंग चिनंग हलाहल, बूंद प्रवीन वियोगनि लागी ॥ २५ ॥

अर्थ. आज वर्षादनी काळी घोर घटाओ गाजी उठी, चारे तरफ मोरोना मधुर शब्द थया, पृथ्वीउपर अनेक देडकांओए स्वर भर्या, इंद्र धनुष तथा वीजळीनी कांति जागृत थइ, लोकोए फूल, सुधारस (सुगंधी रस) अने मोतियो धर्या, अने भाग्यशाळीने द्वारे वधाइओ वागी, पण हे प्रवीण? वियोगीने तो आ वर्षादनां बुंद, कामदेवनां बाण, अग्नीना तणखा अने हळाहळ झेरना बुंद समान लाग्या. ॥ २५ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सोरठा ॥

गरल घटा यह मेह ॥ बूंद बान दामिनि अगन ॥
सीतल सघन सनेह ॥ वरषेगो देखे बदन ॥ २६ ॥

अर्थ. हे प्रिय मित्र प्रवीण? हमणातो हळाहळ झेर रूप घटाथी चडी आवेलो अने वीजळी रूप, अग्नीथी भरपूर, आ वर्षाद बुंद रूपी बाणोथी वरसेछे, पण ज्यारे आपनुं मुख जोशुं त्यारे एज वर्षाद थंडो सुखकारी अने स्नेहथी वरसशे. ॥ २६ ॥

॥ गाहा ॥

नयणा कृत मकरंदी ॥ हंसा गमण गमण सरभरियं ॥
आनन शशि अणुहारे॥पावस गहिय सहिय किंविरही२७

अर्थ. भमरा जेवी आंख्योनी आकृति, हंसनी चाल समान चाल वाळि गति अने चंद्रमाने अणसारे मुख, एओनुंतो आ वर्षादे ग्रहण कर्युं, माटे हे मित्र! आ महाभारत दुःखने वियोगी शरीरे सहन करी शके? ॥ २७ ॥

ऐऐ बालं बालं ॥ प्रति बिंबेण बिंब अवलोकैं ॥
भालं प्रभा रसालं ॥ किं काजेन बंदियं चंदा ॥ २८ ॥

अर्थ. अरे बाळ बुद्धिवाळां लोको! चंद्रना प्रतिबिंबरूप आ बाळाना मुख बिंबने जुवोने! बीजना चंद्र माफीक रसाळ कांतिवाळा कपाळने छोडीने शानेकाजे चंद्रमाने वंदन करोछो. ॥ २८ ॥

॥ सोरठा ॥

सागर मिंत समाज, ब्रषा बिरह चरचा भई ॥
प्रति प्रबीन महाराज, लिखि सु भंखि मन दशा ॥ ३० ॥

अर्थ. महाराजा रससागरे वर्षा ऋतुना विरहनेलीधे जे पोताना मननी दशा थइ तेनी चर्चा मित्रोना समाजमां करीने जे पत्र कळाप्रवीण उपर लखी मोकलाव्यो ते पत्र संबंधी वर्षा ऋतुनी विरह दशानुं वर्णन कह्युं. ॥ ३० ॥

॥ अथ गाहा ॥

सागर बरषा बिरहो ॥ बरनी दशा चिंत मिंतह लय ॥
त्रयतालीश भिधानं ॥ पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ ३१ ॥

अर्थ. सागर कुमारे जे वर्षा ऋतुना विरहनी साथे पोताना मनमां उपजेली दशानुं वर्णन मित्रोने कही संभळाव्युं ते संबंधी प्रवीण सागरनी त्रेतालीशमी लेहेर संपूर्ण थइ ॥ ३१ ॥

इति श्री प्रबीन सागर ग्रंथे रससागर बर्षा बिरह बर्ननो नाम त्रयश्चत्वारिंशतिमो लहरं ॥ ४३ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजमे नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज

कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां त्रिचत्वारिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ४३ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध॥ छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

उत्तर्नां गिरि गव्हरो वन विशे, ज्वाळामुखी स्थानछे ॥
त्यांथी सिद्ध पधारिया प्रकृतिनां, वाक्यो थकी मानछे ॥
आवी शंकर मंदिरे कुंवरना, प्रश्नोतरो वाळिया ॥
चम्मालीशमि लेरमां भगवति, भेदो रुडा पाळिया ॥

अथ सिद्ध प्रसंगो यथा ॥ छप्पय ॥

इहि विधि चरचा चलत, उतें बीती षटहू रित ॥
बढ्यो प्रेम विस्तार, विरह ज्वाला नित बाढित ॥
अंबर भयो अवाज, वहें परतीत सुधारे ॥
निकट ओध निरधार, राह जोगेश निहारे ॥
उरमें उछाह सागर सु अति, जांनत सिद्ध सु आएगे ॥
उरमें विशेष संशय वढे, सो प्रति उत्तर पाएगे ॥ १ ॥

अर्थ. एवीरीते परस्पर चर्चा चालतां, त्यांहां महाराजा रससागरने वाट जोवामांज छये ऋतु वीतिगइ, अने एक वर्ष पुरुं थयुं जेथी करी प्रेमनो विस्तार वधीपड्यो, अने दिवसे दिवसे विरहनी झाळो वधवामां छे, परंतु आकाशमांथी जे इश्वरी अवाज थयो हतो तेनो विश्वास राखेछे, हवेतो मुदत नजीक आवी एम धारीने निरंतर योगेश्वरनी राह जोया करेछे महाराजा रससागर पोताना मनमां अतिशे हर्ष धरीने जाणेछे के थोडा काळमां सिद्ध आवशे, एटले तेमनी पासेथीज घणुं करीने हृदयमां नवी नवेला संशयोनो प्रत्युत्तर पामशुं, ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रस सागर उर धार यह, अति बाढे उच्छाह ॥

आवत ओध समीप ज्यों, त्यों त्यों हेरत राह॥ २ ॥

अर्थ. मनमां एवुं धारवाथी रससागरने आनंद वधेछे, एटलुंज नहीं पण योगीने आववानी मुदत जेम जेम पासे आवती जायछे तेम तेम राह जुवेछे, ॥ २ ॥

ऐसेमें उत्तर दिशा, ज्वालामुखी सु थांन ॥
तासें पर तापस रहें, प्रभानाथ अभिधान ॥ ३ ॥

अर्थ. एवा समयमां उत्तर दिशामां, ज्यांहा ज्वाळामुखीनुं शोभाय मान स्थानकछे तेनें पेहेलेपार एक तपस्वी रहेछे, जेनुं प्रभानाथ एवुं नाम छे. ॥ ३ ॥

॥ छप्पय ॥

तापस वहें पुरांन, सबें बिधि जांनत साधन ॥
उनहु जथा बिधि कीन, अगें ज्वाला आराधन ॥
भवा प्रसन तब भए, दरस जोगेश्वर पाए ॥
देवि पाय वरदांन, पूर्न अभिशेकि कहाये ॥
धारणा ध्यांन फुनि जब धरहि, तब सरूप निरखे नयन
कीजंत अरज कोऊ समय, प्रति उत्तर पावे बयन ॥ ४ ॥

अर्थ. ए तपस्वी घणा प्राचीन अने सघळा साधनोनी विधियोने जाणेछे, एणे आगळ यथाविधीथी ज्वाळामुखीनुं साधन कर्युं हतुं, ते वखते भवानी प्रसन्न थयां जेथी ते योगेश्वर देवीना दर्शनने पाम्या, एटलुंज नहीं पण देवीना वरदानने मेळवीनें पोते पूर्णाभिशेकी केहेवाया, फरीने धारणानी साथे ज्यारे ध्यान धरेछे त्यारे देवीना स्वरूपनें नजरे देखेछे, ने कोइ कोइ वखते अरज करवाथी तेना प्रतिउत्तरनां वचनोने पण पामेछे. ॥ ४ ॥

अथ वह सिद्ध वर्ननं ॥ छंद शंखनारी ॥

प्रभा नाथ नामीं ॥ महा सिद्ध स्वामी ॥ कछू नांहि खावे ॥ पहाडं रहावे ॥ चखं नींद तज्जे ॥ भवा ईश भज्जे ॥ त्रिकालं संमृत्ति ॥ त्रयं पंथ गत्ति ॥ दशं बिद्य ज्ञानी ॥बदे सत्य बानीं ॥ नकें लच्छ छोहे ॥ समं हेंम लोहे ॥ बिनंति न रिज्जें ॥ नकें गारि खिज्जें ॥ बिनंता न लष्षे ॥ समं द्रष्ट रख्खे ॥ नकें मोह माया ॥ दमें आप काया ॥ भवानी अराधे ॥ महा मंत्र साधे ॥ ५ ॥

अर्थ. प्रभानाथ नामे नामांकित म्होटा सिद्धोना स्वामी तपस्वीछे, ते कांइ खाता नथी अने पहाडोमांज निवास करीने रहेछे, नेत्रेथी निद्रा तजीने भवानीशंकरने भजेछे, जेने भूत भविष्य अने वर्त्तमान ए त्रणे कालनुं ज्ञानछे, स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ ए त्रणे मार्गे जवानी गतिछे, दशे महाविद्यानी उपासनाने जाणनाराछे, सत्य वचन बोलेछे, कोइ प्रकारनी लक्ष्मीने अडता नथी, सोना तथा लोढाने सरखुं जाणेछे, विनंति करवाथी रीझता नथी तेम गाळ्यो देवाथी खीजता नथी, स्त्रीओने जोता नथी अने समान द्रष्टी राखेछे, जेने मोह तथा माया (छळ कपट) नथी अने वळी पोताना शरीरने दमेछे एटलुंज नही पण भवानीने आराधेछे ने म्होटा मंत्रोने साधेछे. ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

उन सिध प्रत्य अवाज, एक समें उमया कही ॥
जहँ रससागर राज, उतें सु आप सिधाइए ॥ ६ ॥

अर्थ. एक समये सिद्धने उमयाजीये कह्युं के ज्यांहां रससागरनुं राज्यछे त्यांहां आप सधावो. ॥ ६ ॥

कही सु पूरव बात, ईश श्राप आपे वचन ॥
इतें सु उरवी जात, प्रेम बिरह अंबर उकत ॥ ७ ॥

अर्थ. पछी जगदंबाये कैलासना मेळानी वखते जे महादेवजीये श्राप आपीने वचन कह्यां हतां तें संबंधी पूर्वनी सघळी वात कही संभळावी एटलुंजनहीं पण आ मृत्युं लोकमां अवतार लिधापछी एक बीजांने परस्पर प्रीति बंधाइ गइ अने वियोगने लीधे बने जणाओये शिवालयमांथी जुदां पडती वखते आत्महत्या करवानो मनोरथ कर्यो ते समये जे आकाशमांथी दैवी अवाज थयो हतो त्यांहां सुधीनुं वृत्तांत प्रभानाथने कही बताव्युं. ॥ ७ ॥

उन प्रति कह्यो व्रतंत, उर अंदेश मिटाइयें ॥
दुहु निज घात चहंत, वहें बरज इत आइयें ॥ ८ ॥

अर्थ. ए सिद्धप्रत्ये आ वृत्तांत कह्या पछी देवीए कह्युंके एना मनना अंदेशा मटाडजो अने ए बन्ने जणां आत्मघात करवानुं चाहेछे माटे ते वात बंध पाडीने आंहीं आवजो. ॥ ८ ॥

तबें कही जोगेश, आप हुकुम जावें उतैं ॥
उंन प्रति हम उपदेश, कहें सु पूरन कीजियें ॥ ९ ॥

अर्थ. त्यारे योगेश्वरे देवीने कह्युंके आपना हुकमथी हुं त्यांहां जाउछुं खरो परंतु तेओने जेजे उपदेश कहुं तें आप कृपा करीने पूरण करजो. ॥ ९ ॥

भवा कही भव श्राप, टारचो जिन काहू टरें ॥
यहें बतावें आप, जासें सिध आगें मिलें ॥ १०

अर्थ. त्यारे भवानीये कह्युं के शिवजीनो आपेलो श्राप कोइ माणसथी टाळ्यो टळे एवो नथी तोपण आप एवुं बतावजो के जेथी करीने

तेओने आगळ सिद्धि मळे. ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

कही सिद्ध फुनि एह, करि बंदन कर जोर जुग ॥
कहनहार कहि देह, आपें उहे निभाइयें ॥ ॥ ११ ॥

अर्थ. पछी सिद्धे वंदन करी बे हाथ जोडीने उमयाजीने आ प्रमाणे कयुं के हे देवी! कहेवा वाळोतो कही देशे परंतु तेओने आपे नभाववां जोइये! ॥ ११ ॥

अथ तत्र सिद्धोक्त भवानी स्तुति ॥ सवैया ॥

किंदरनी दरनी अरनी चख पें झरनी झरनी झरनी ॥
गोधरनी धरनी अध ऊरध, भो वरनी वरनी बरनी ॥
खेचरनी चरनी थिरनी थित हे तरनी तरनी तरनी ॥
भै हरनी हरनी जन संकट, श्री करनी करनी करनी ॥
॥ १२ ॥

अर्थ. हे भवानी! तुं कीन्नरीरूप, निद्रारूप, राक्षस्यादिना भयने खंडन करनारी, लाल नेत्रवाळीछो. तथापी हे देवी? अमृत रूप निर्झरणाने झरनारी नदी रूपछो. वळी हे जगदंबा? पृथ्वीने धारनारी तथा निचेनां पाताळादि, तेमज उंचेनां आकाशे सहित स्वर्ग विगेरेने धारण करनारीछो. हे? श्रेष्ट गुणवाळी, तुं वर्ण मात्रिकारूप, तथा नील पीतादि अनेक वर्ण रूपोथी, तेमज ब्राह्मणादि अनेक वर्णोना रूपेथी वर्णवाळी व्यापक रूपछो, हे? खेचरीरूप, तुं आकाशमां फरनारनी गति रूप, तथा स्थिरताथी रहेला प्राणी पदार्थोनी स्थिति रूपछो. हे! तरुण अवस्थावाळी, तुं सूर्य रूपथी प्रकाश करनारी, तथा वाणरूपथी भव सागरने तारनारी, तरणतारणीछो. हे? भगवति, तुं भयने हरनारी, तेमज शरणे आवेला लोकोना संकटने हरनारीछो. हे? श्री विद्या रूप महा

लक्ष्मी तुं लक्ष्मी आपनारी तथा शोभा आपनारी, शुभ कर्णीवाळी तेमज सारीकर्णी करनारने शुभ कर्णी करनारीछो, माटे तुने नमस्कार करुं छुं. ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

यह अस्तुति तापस करी, धार्‌यो उतें पयांन ॥
एते मध्य सरूप भो, उमा सु अंतर ध्यांन ॥ १३ ॥

अर्थ. एवीरीते स्तुति करीने तपस्वीए त्यांहां रससागरपासे जवा प्रयाण धार्युं, एटली वारमांतो उमयाजी अंतरध्यांन थइगयां. ॥ १३

शिवा हुकुम सिद्धा लह्यो, आपें पंथ अकाश ॥
ईशा लय गय अळ भए, षट रितु द्वादश मास ॥ १४ ॥

अर्थ. पार्वतिनी आज्ञाथी सिद्धे आकाशनो पंथ लीधो, अने ते छ ऋतु एटले एक वर्ष वीतिगया पछी नियमसर शिवालयमां प्राप्त थया. ॥ १४ ॥

॥ गाहा ॥

अध निश बहत ब्रतंतं ॥ ईश समीप सिद्ध कीय आसन ॥
प्रगटत प्रभा सु ऋंतं ॥ सेवा उत प्रबेश किय सागर १५

अर्थ. अर्ध रात्रीनो समय व्यतीत थती वखते सिद्धे आवीने शंकरनी पासेज आसन कर्युं, पछी प्रभातने लीधे सूर्यनी रोशनी प्रगट थवाथी महाराजा रससागरे पूजन करवासारु शिवालयमां प्रवेश कर्यो. ॥ १५ ॥

खोलित किलक कपाटं, शिव समीप सिद्ध दरसाए ॥
उर पूरब अभिलापं, करि बंदना लगे बतरावन ॥ १६ ॥

अर्थ. कुंचियोथी मंदिरनांताळां उघाडीने कमाडनी सांकळ तथा आगळीया उघाड्या, त्यांहां शिवजीनी पासे सिद्ध देखाया, एटले

मनमां आगळथीज अभिलाषाछे, माटे तेने सत्कार पुर्वक वंदन करीने रत्नागर वातो करवा लाग्या. ॥ १६ ॥

अथ वह सिद्ध स्वरूप वर्नेनं छंद ॥ सारसी ॥

बद्धं सु जट्टं पीत पट्टं एक लट्टं खुल्लियं॥ तेजं दिनंदं शील चंद्रं मंद्रं मंद्रं वुल्लियं ॥ नेनं कुराला बिंदु लाला रुद्र माला लाहियं ॥ आकाश पथ्थं ईश तथ्थं सिद्धनथ्थं आहियं॥ एकं सु पग्गं लोह लग्गं अंग नग्गं सोहितं ॥ बीभूत चढ्ढं ज्ञान गढ्ढं दीठ द्रढ्ढे जोहितं ॥विद्या बिधानं सत्य बानं शूल पानं साहियं ॥ आकाश पथ्थं ईश तथ्थं सिद्धनथ्थं आहियं ॥ स्वासा सधंतं काल हंतं हेंन भ्रतं पंतियं ॥मंत्रं उचारं सोध सारं रूप धारं गत्तियं ॥ ज्वाला सु जप्पं तेज तप्पं काम कप्पं दाहियं ॥ आकाश पथ्थं ईश तथ्थं सिद्ध नथ्थं आहियं ॥ बाला न ब्रद्धं जून सद्धं कोंन लद्धं उम्मरं॥ आपं उपासी रिद्ध रासी संग वासी अम्मरं ॥ शुद्धं शरीरं गंग नीरं प्रेम पीरं पाहियं ॥ आकाश पथ्थं ईश तथ्थं सिद्ध नथ्थं आहियं ॥ १७ ॥

अर्थ. जेणे मस्तक उपर जटा बांधेलीछे, पीळां वस्त्र पहेर्यांछे ने माथाना वाळनी एक लट खुली राखीछे, जेनु सूर्यना जेवुं तेज, चंद्रमाना जेवो थंडो स्वभाव अने जे म्होढेथी मंद मंद वचनो बोलेछे. जेनी आंखो विकाळछे, कपाळमां सिंदूरनी लाल बिनकी करेलीछे अने कंठमां रुद्राक्षनी माळा पेहेरेलीछे. एवा आकाशने पंथेथी इश्वरनां वचनो साचां करनारा, तीर्थ रूपी सागरना शिवालयमां सर्व सिद्धोना नाथ आव्या. जेणे एक पगमां लोढानुं लंगर पेहेरेलुंछे, अंगे नग्न छतां जे घणा

शोभेछे, शरीरे विभूति चडावेलीछे, ज्ञानमां गंभीर, द्रढ नजरथी जोनारा, सर्व विद्याना विद्यानेने जाणनारा, साची वांणी बोलनारा, जेणे हाथमां त्रिशूल धरेलुंछे. एवा आकाशने मार्गेथी इश्वरनां वचनो सत्य करवासारु तीर्थरूप सागरना शिवालयमां सर्व सिद्धोना नाथ आव्या. स्वासने साधीने अजपानो जप करनारा, काळने जीतनारा, जेने कोइ प्रकारनी भ्रांती नथी, गुरु परंपराने जाणनारा, मंत्रनो उच्चार करनारा, सारने शोधनारा, मननी गती प्रमाणे रूप धरनारा, ज्वाळामुखीने जपनारा, पोताना तेजथी प्रकाश करनारा, कामदेवने कोपीने बाळनारा, एवा आकाशने मार्गेथी इश्वरनां वचनो सत्य करवासारु तीर्थरूप सागरना शिवालयमां सघळा सिद्धोना नाथ आव्या. बाळकछे के वृद्धछे ते काइ मालम पडतु नथी, त्यारे तेनी उम्मरनेतो कोण जाणे? परंतु पोते स्वस्वरूपनी उपासना करनारा रिद्धिना ढगला रूप, देवताओनी साथे वसनारा, शरीरे शुद्ध गंगाजळ जेवा निर्मल, प्रेमनीः पीडाने जाणनारा, एवा आकाशने मार्गेथी इश्वरनां वचनो साचां करवासारु तीर्थरूप सागरना शिवालयमां सघळा सिद्धोना नाथ प्रभानाथ आव्या. ॥ १७ ॥

॥ चोपाई ॥

सागर दरश सिद्धका पाया ॥ वंदन किय हुलास हिय आया ॥ यह जानीं अंदेश उर भग्गे ॥ बैठ समीप बूझने लग्गें ॥ स्वामि तुम केहि ठोर रहाओ ॥ कितलगि कोंन दिशासें आओ ॥ सिध हसि मंद बोलनें लागे॥ हमें रहत ज्वालासें आगें ॥ फुनि कहि ईच्छा आप बुलाये ॥ ओर न काम ईतें लगि आये ॥ सागर तबें सत्य मन मानी॥अर्चन लगे साज बहु आनी ॥ आंन आंन विध असन समाये ॥

जोतो सिद्ध काहु नहिं खाये ॥ किय मनुहारन पट्टन आ या ॥ आसन सिद्ध उहांहि जमाया ॥ कुमर हमेश बंदनें आवे ॥ पुजि महेश सिद्ध चरचावे ॥ तापस बड़ो प्रताप लपावे ॥ प्राति आसय न बूझनें पावे ॥ १८ ॥

अर्थ. रससागर, आ सिद्धनां दर्शन पाम्या, तेथी हृदयमां हुल्लास आव्यो एटले सिद्धने वंदन कर्युं, अने मनमां एम जाण्युं के हवे मनना अंदेशा भांगीजशे पछी पासे बेसीने पूछवा लागा के, हे स्वामीजी! आप कये स्थळे रहोछो? क्यांहां सुधी जवानुं धार्युंछे अने कइ दिशामांथी आवोछो? एटले सिद्ध धिमे धीमे हसीने बोलवा लागा के, अमे ज्वाला मुखीथी परली तरफ रहीयेछीये, वळी पाछुं कह्युं के आपेज इच्छा करीने बोलाव्याछे, आंहीं सुधी आववामां बिजुं कांइ कामनथी, त्यारे मनमां साचुं जाणीने सागर घणीएक सामग्री लावी पूजा करवा लाग्या. पछी जातजातनां स्वादिष्ट भोजन मंगाव्यां, पण तेमांथीतो सिद्धे कांइ खाधु नहीं शेहेरमां आववा विशेनी सत्कार पूर्वक विनंती करी तोपण न आव्या, एटले त्यांहांज सघळी रीतनो बंदोबस्त करीने सागर शेहेरमां आव्या ने सिद्धे तो त्यांहां शिवालयमांज आसन जमाव्यु, पाछा सागर कुंवर हमेशां महादेवजीने दर्शने आवेछे, ते महादेवजीनी पूजा कर्या पछी सिद्धपासे चर्चा करावेछे. परंतु आ तपस्वी म्होटो प्रताप देखाडेछे, तेथी पोताना मनना अभिप्रायना उत्तर संबंधी कांइ पण पूछवा पामता नथी. ॥ १८

॥ दोहा ॥

वह बूझन पावत नहीं, वडो सिद्ध परताप ॥
रस सागर महाराज मन, मुरझत आपहि आप ॥ १९ ॥

अर्थ. सिद्धनो म्होटो प्रतापछे तेथी ओली वात पूछी शकता नथी,

जेथी करी महाराजा रससागर पोताना मनमांने मनमांज मुझाया करे छे. ॥ १९ ॥

भीर भार वासर बनें, बतियां खुले न चित ॥
सागर सुकवि सु सिद्धपें, आए निशि एकंत ॥ २० ॥

अर्थ. दिवसेंतो माणसोनी भीड बनी रहेछे, जेथी चित्तनी वातो प्रगट थती नथी, माटे एक दिवसे सागर तथा भारतीनंद कवि, ए बन्ने जण रात्रीए एकांतने समये सिद्ध पासे आव्या. ॥ २० ॥

॥ छप्पय ॥

सिध समीप महाराज, निशा नित बैठन आवहि ॥
बूझी जाय न बात, व्रती आपें न कहावहि ॥
बहत द्योस दश पंच, निशा पर्बनी सु आई ॥
अंब अराधन काज, जोगि आसव मगवाई ॥
वह ले सु गए सागर सुकवि, उन एकंत अर्चन किये
कीने बिसर्ज सागर कुमर, नीठ बोल तापस लिये ॥ २१

अर्थ. सिद्ध पासे महाराजा रात्रीने वखते हमेशां बेसवा आवेछे, पण वात पूछाती नथी तेम योगी पण पोतानी मेळे केहेता नथी, एवीरीते दस पांच दिवस विती गया पछी, पर्वणीनी रात्री आवी, एटले अंबाजीनुं आराधन करवासारु जोगीये आसव (मदिरा) मगाव्यो, त्यारे ते लइने सागर तथा कवि ए बन्नेजण शिवाळये गया, पछी ते सिद्धे एकांतमां बेशीने अर्चन कर्युं, अने देवताओना विसर्जन पुर्वक पूजानी समाप्ति करीने तपस्वीए सागरने पोतानीपासे बोलावी लीधा. ॥ २१ ॥

॥ सोरठा ॥

जोग रीझ मन जांन, मन बूझन धार्‌यो मतो ॥

उर आसय अनुंमान, कछु मुसकाय कही सु सिध ॥ २२

अर्थ. जोगी मनमां खुशी थयाछे एम जाणीने सागरे पोताना मनमां वात पूछवानो मनसूबो धार्यो, एटली वारमांतो सागरना हृदयना अभिप्रायनुं पोताना मनमां अनुमान करी जरा हसीने सिद्धे आ प्रमाणे कह्युं. ॥ २२ ॥

॥ अथ सिद्धोक्त ॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

तुमें चिंतमें बूझबी बात ठांनीं ॥ महंमाय सिद्धी हमें सो य जांनी ॥ यहें जोगधारी कितो प्रेम देखें ॥ मनंकी परत्तीत ब्रत्ति परेखें ॥ कही कांननीसें कहा प्रेम लाया ॥ यही बातसें कौंनसा सिद्धि पाया ॥ अगें बालके ख्याल लंकेश लग्गा ॥ गवाई मदं मोहसें आप जग्गा ॥ ऋषी नारिसें प्रेम देवेश लाए ॥ भगाकार अंनेक अंगं बनाए ॥ यही नेहसें ध्यांन माहेश छंडे ॥ द्रुहीनं वही रीत कापाल खंडे॥ त्रिया हेत चंदा कलंकी कहावे॥ बिनंता बधे आपदा कों उपावे ॥ कहे सिद्ध मिथ्या सबे बात छंडो ॥ उमा ईश को ध्यान आखंड मंडो ॥ २३ ॥

अर्थ. हे सागर! तमे जे वात पूछवानी मनमां धारीछे ते महामाया नी सिद्धीथी अमे जाणी, पछी ते योगिए धार्युं के आने क्याहाक प्रेम लागेलो देखायछे एम जाणिने सागरना मननी वृत्तीने प्रतीति पुर्वक परखीने मोहोटा वृत्तवाला सिद्ध कहेछे के कोइ स्त्रीनी साथे शुं प्रेम लाग्याछो! अने ए वातथी कोण सिद्धि पाम्युंछे? आगळ बाळानो ख्याल लंकाना पति रावणने लागेलो हतो, तो तेणे मद अने मोहथी पोताना स्थानरूप लंका जेवी राजधानी गुमावी दीधी. वळी गौतमऋषीनी स्त्रीसाथे देवतानो इश्वर

इद्र प्रेम लाग्यो हतो, तेथी तेना अंगमां अनेक भगाकार चिन्ह थयां एज स्नेहथी महादेवे ध्यान छोडयुं, एज रीतथी ब्रह्मानुं कपाळ छेदायुं. स्त्रीयोना कारणथीज चंद्रमा कलंकी केहेवायछे, एवीरीते सघळे ठेकाणे, स्त्रियोज आपत्ति उपजावेछे माटे सिद्ध कहेछे के ए सर्व मिथ्या वातने छोडो अने उमया तथा इश्वरनुं अखंड ध्यान मांडो? ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसें सिधके बचन सुनि, कुमर चिंतमें लाय ॥
कहा प्रसंग कीनो सु यह, मनही मन मुरझाय ॥२४॥

अर्थ. एवां सिद्धनां वचन सांभळीने तेमज तेनो विचार चित्तमां लावीने आते सिद्धे शुं प्रसंग कह्यो! एम कही कहीने कुंवर पोताना मनमांने मनमांज मुंझायछे. २४ ॥

॥ अथ गाहा ॥

सिद्ध सकत संवादं ॥ शिवालये सागरं चर्चा ॥
चंमालीश भिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥२५॥

अर्थ. सिद्ध तथा शक्तीना संवाद समेत शिवाळयमां थएली प्रवीण तथा सागरनी चर्चा संबंधी प्रवीण सागरनी चंमालीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ २५ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे सिद्ध शिवालय आगमनो नाम चतुश्चत्वारिंशतिमो लहरं ॥ ४४ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां चतुश्चत्वारिंशतिमस्तरंगः समाप्तः ॥ ४४ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध॥ छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

पृछ्यो प्रेम प्रमांणनां नृपवरे, जे जे कर्यां प्रीतथी ॥
ते तेना प्रति उत्तरो यति वरे, आप्या रुडी रीतथी ॥
सिंधू सिद्ध समागमे, समपणू छे व्हालने प्रेमनूं ॥
पिस्तालीशमि लेरमां परखशे हेतू खरा हेमनूं ॥

अथ प्रेमाधिकार नीरूपन प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

सागर मन मुरझंत, यहें सिद्धका बचन सुनि ॥
अतिहि उदासी चिंत, प्रत्युतर लागे कहन ॥ १ ॥

अर्थ. एवां निरस अने कठोर सिद्धनां वचनो सांभळीने सागर मनमां मुंझाया एटलुंज नहीं पण, चित्तमां घणी उदासी धरीने प्रत्युत्तर केहेवा लागा. ॥ १ ॥

अहो सिद्ध महाराज, तुमजो कही सो हम लही ॥
अंबर हुवा अवाज, सो हमसें सुनियें सवें ॥ २ ॥

अर्थ. अहो! एम कहीने आश्चर्य पुर्वक कहेछे के, हे सिद्ध महाराज! आपे जे वात कही ते में जाणी, पण आकाशमांथी जे दैवी अवाज थयो हतो तेनुं सघळुं वृत्तांत म्हारी पासेथी सांभळो. ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

हमें ईश आगार, मतो मरबेको कीनो ॥
तबें अद्रष्ट अवाज, एह प्रत्युतर दीनो ॥
बीतत छरितु ब्रतंत, इतें सिद्धा आवेंगें ॥
उत्तर उर अंदेश, आप उनसें पावेंगें ॥
घरजी सु बात धारी वहें, आए आप मिली सु सब ॥
कर प्रेम हीन उत्तर कह्यो, तुम हमकों न जिवाय तब॥३

अर्थ. अमे शिवाळयमां मरवानो मत धार्यो, त्यारे न देखीए एवी रीते एक गेबी अवाज थयो, तेमां एवो प्रत्युत्तर आव्यो के छ रतु वितिगया पछी आंही एक सिद्ध आवशे, एटले ते पासेथी तमो हृदय ना अंदेशाना उत्तर पामशो, एवां वचन सांभळीने अमे मनमां धारेली आतमहत्या करवानी वात तजी दीधी, त्यार पछी आप पधार्या अने सघळी वात मळीआवी, पण ज्यारे प्रेमने हीन गणीने उत्तर कह्यो त्यारे तो तमे भ्रमने जीवाड्या नहींजतो. ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

अति उदास सागर भये, सुनी सु तापस बात ॥
मनमें द्रढ कीनीं तबें, प्रान घात परभात ॥ ४ ॥

अर्थ. तपस्वीनी वात सांभळीने महाराजा अति उदास थया, त्यारे प्रभातेज प्राणघात करवो एवो पोताना मनमां द्रढ विचार धार्यो.॥ ४

यहें धार सिधसें लगे, कहन प्रेम परकार ॥
प्रति उत्तर यह प्रश्नको, कहो बात बिस्तार ॥ ५ ॥

अर्थ. एवीरीते मनमां धारीने सिद्धनी पासे प्रेमना प्रकारनां प्रश्नो करवा लागा, अने सिद्धने कह्युं के, अमारा प्रश्नोना उत्तरसाथे सघळी वात नो विस्तार कहो! । ५ ॥

॥ छप्पय ॥

अहो सिद्ध जोगेश, प्रेमकों हीन बताए ॥
प्रेम बिना तुम इष्ट, साध सिद्धी कह पाए ॥
प्रेम बिना कह पढे, कोंन बिन प्रेम पढावे ॥
प्रेम बिना तजि सृष्टि, कोंनसा भसम चढावे ॥
बिन प्रेम कोंनसी वस्तु प्रिय, कोंन प्रांनि प्रेम न चहे ॥

माहेशरूप कीजें कृपा, यह प्रसंन हमसें कहें ॥ ६ ॥

अर्थ. अहोहो!! हे! सिद्ध हे? योगियोना इश्वर, आपे प्रेमने घणोज हीन (हीणो) बताव्यो, पण प्रेम विना तमो इष्ट साधीने सिद्धि क्यांहाथी पाम्या! तेम प्रेम विना कोण भणे! अने वगरप्रमे कोण भणावे! तथा प्रेम विना तृष्टि तजीने कोण विभूती चढावें! अने वगर प्रेमे कइ वस्तु वाहाली लागे! अने कया प्राणीओ प्रेमने चाहे नहीं, हे! महेश्वर रूप योगी कृपाकरीने एटला प्रश्नोना उत्तर अमने कहो. ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

सागर मुख ऐसी सुनत, पाइ सिद्ध परतीत ॥
कहवेंकों मन भए मुदित, प्रेम नेमकी रीत ॥ ७ ॥

अर्थ. सागरना मुखथी एवी वात सांभळतांज सिद्धने प्रतीति (विश्वास) आवी, एटले प्रेमना नियमनी रीति केहेवासारु मनमां हर्षित थया. ॥ ७ ॥

॥ अथ सिद्धोक्त ॥ छंद महालक्ष्मी ॥

प्रेमको भेद आपें कह्यो॥ सो हमें चिंतहीमें लह्यो ॥ पूरवं प्रेमहीकी कही ॥ सो तुमें चिंत प्रच्छा लही॥पें कही आप सोइ सची ॥ काहु प्रेमं विना नां रची ॥ईश आगें उमासें भनी ॥ एह सृष्टी सु ऐसें वनी ॥ अंवजू सेवकोंसें कही॥ तानसें वात ब्रत्ती लही ॥ सोय ब्रत्ती उचारी गिरा ॥ यों भयो भेद पारं परा ॥ सो कछू वात पावें हमें ॥ तास भेदं सुनावें तुमें ॥ सागरं ईश वानी यहे ॥ चिंतमें सत्य जानों चहें ॥ ८ ॥

अर्थ. हे सागर! आपे जे प्रेमनो भेद कह्यो, ते अमे चित्तमां धारी लीधो, आगळ जे में प्रेमनी निंदा करीने वात कही, ते केवळ तमारा मननी परिक्षा लेवा सारु कही, पण आपे जे वात कही तेज साचीछे. कोइनाथी कांइ प्रेम बिना रचायुंज नथी, प्रेम संबंधी वाणी कहेवा वखते आगळ इश्वरे पार्वतीने कह्युं हतुं के, आ सृष्टी पण एमज बनेलीछे, एटले प्रेमथीज बनेलीछे. इश्वरनी कहेल आ प्रेम संबंधी वाणी अंबाजीए पोताना सेवकोने कही ने तेओए ब्रह्माने कही. सर्व सृष्टीना पिता रूप ब्रह्मा पासेथी मोहोटा व्रतवाला रुषीओए लीधी, जे रुषीओए वाणी रूपे उच्चारीने म्होटा ग्रंथो बांध्या, एवीरीते परंपराथी उत्तरोत्तर भेद थयो. तेमांथी जे कांइक वात हुं पाम्योछुं, तेनो भेद तमोने संभळावुं, ते सांभळो. हे? सागर, आ इश्वरनीज वाणीछे माटे तेने तमे चित्तमां साची जाणो. ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

पूरब भेद सुनाय सिध, कहनलगे फुनि बांन ॥
सागर सत्य सु जांनिए, यहें प्रेम पहिचांन ॥ ९ ॥

अर्थ. प्रथम प्रेमनो भेद संभळावीने पछी सिद्ध वात केहेवालाग्या के, हे! सागर, आ प्रेमनी ओळखाणने साची करी जाणजो. ॥ ९ ॥

॥ अथ तत्र प्रेम भेद बर्ननं॥ माला दीपक अलंकार

॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

अनंतं अभेदं अजातं अलख्खं ॥ न आदी न अंतं न रूपं नरख्खं ॥ तहां जोत रूपं वहें प्रेम सत्ता ॥ प्रकृती निरा कार साकार मत्ता ॥ महंतत्व प्रेमं मिले प्रकरत्ती ॥ भई अंक हंकारकी उत्पत्ती ॥ रवं हं जुरें अंसु प्रेमं प्रका

शं ॥ भयो आदिही तत्व सत्ता अकाशं ॥ वही शुन्यमें शुन्यसो प्रेम सीरा ॥ वियं तत्व रूपं कियंतं समीरा ॥ वहं मारुतं प्रेम रत्तं वहंतं ॥ उतंप्पत्तियं तीसरं तेज तत्तं ॥ प्रकाशं कियं तेजमें प्रेम तप्पं ॥ प्रगट्टं भये चातुरं तत्व अप्पं ॥ जुरे वारके वंवसें प्रेम सथ्थी ॥ भयो तारही पंचमं तत्व प्रथ्थी ॥ मिले पंचही तत्व प्रेमं प्रचंडं ॥ कियो तार विस्तार वैराट इंडं ॥ उअंकार उच्चारकी प्रेम रत्ती ॥ उपंनी महा जोगमाया सकत्ती ॥ सकत्ती भई प्रेमके रूप भिन्नं ॥ उपाए गुनं तीनसें देव तिन्नं॥ त्रयं देवमें प्रेम रूपी समांनी ॥ रमें राजसी सात्विकी तांमसानी ॥ ब्रहंमा मनं कारना प्रेम जग्गे ॥ सवें सृष्टि ऊपावनें आप लग्गे ॥ श्रियं नाथ सो पोषना प्रेम धारे ॥ बनावे ब्रहंमा वही प्रत्य पारे ॥ महारुद्रसो भक्षना प्रेम लावे महा कालके रूपसें सृष्टि खावे॥ अधं धारना प्रेम आधार माया॥परी ऊपरी चौंद लोकं जमाया ॥ उरद्धं परी अंवरं प्रेम छाये ॥ विनां थंभसें लोग प्रेमं रहाये ॥ दिगंपालकों थानकं प्रेम लग्गे ॥ डिगे नांहि सो आपकी छांडि जग्गे ॥ मृजादिक सों सिंधुकों प्रेम धावे ॥ लगे वीरपें तीर पारं न जावे ॥ शशी सूरकों पंथको प्रेम प्यारो ॥ स्त्रवे सीत तापं प्रकाशें उजारो ॥ सुरं राजकों प्रेम भूमी परख्खें ॥ जलं धारिनं मेघ माला वरख्खें ॥परी ब्रह्मके प्रेमकों वेद ढद्धें ॥ वही वेदके प्रेमसें विप्र पढ्ढे ॥ ऋषि जोगके प्रेमसें मंत्र धावे

वही मंत्रके प्रेमसें देव आवे ॥ भये क्षत्रियं आपमें शार मंडे ॥ कुलाचारके प्रेमसें देह खंडे ॥ वईशं अरू शूद्र आपाप धंधे ॥ क्षुधा माहिया कांमना प्रेम बंधे ॥ प्रियं त्रीयकों कामके प्रेम भज्जे॥ त्रिया प्रीयके प्रेमसें रूप सज्जे ॥ सुरं आसुरं मानुषं नाग नग्गे ॥ जछं किन्नरं भूत प्रेमं सु पग्गे ॥ पशू पंछियं प्रेमको रूप जप्पे ॥ थिरं थावरं जंगमं प्रेम थप्पे ॥ परी ब्रह्ममें प्रेमहीको उदोतं ॥ यहें प्रेम सोई परीब्रह्म जोतं ॥ विना प्रेम नां को परीब्रह्म पावे ॥ परीब्रह्म इच्छा विना प्रेम नावे ॥ खरे प्रेमसें सिद्ध पाषान देवे ॥ न पावें कहा मानुषं प्रेम सेवे ॥ न मानें कहेसें वहें मंदमत्ती ॥ नही पूरनं जासमे प्रेम रत्ती ॥ रसं सागरंजू सुनो सिद्ध भंखे ॥ भलो प्रेमको नेंम माराज रंखे ॥ १० ॥

अर्थ. जेनो अंत नथी, ज्यांहा भेद नथी, जे जन्मेलुं नथी, जे लखवामां आवतुं नथी, ने जेने विषे आदि, अंत, मध्य, रूप, अने रेखा नथी ,ते स्थळे केवळ एक ज्योतिरूप प्रेमनीज सत्ताछे. ए सत्तामांथी निराकार अने साकार एवा बे प्रकारनी प्रकृतिरूप माया उत्पन्न थइ. तेमांथी महतत्व थयुं, ते महतत्वमां प्रेमनी साथे प्रकृति मळवाथी त्रण प्रकारना अहंकारोनी उत्पत्ति थइ. ते अहंकारोमां प्रेमना कीरणोनो प्रकाश थवाथी शब्द सत्ताथी जोडाएलुं प्रथम आकाश तत्व थयुं, ते आकाशरूप शून्यमां शब्द साथे शीतळता रूप प्रेम पसरवाथी बीजुं वायु तत्व थयुं, ते वायुमां स्पर्श गुण साथे प्रेम सत्तानो प्रवाह जोडावाथी त्रीजुं तेज तत्व उपज्युं, रूप विषयवाळा तेज तत्वमां प्रेमनी कांतिनो

प्रकाश थवाथी चोथुं जळतत्व प्रगट थयुं, ते जळतत्वना रसगुणनी साथे प्रेमनी सत्ता जोडावाथी तत्काळ गंध गुणवाळुं पांचमुं पृथ्वी तत्व थयुं, ए पांचे तत्वोमां प्रेमनी सत्ता मळवाथी तेणे महा प्रचंड वैराट रूप ब्रह्मांडना इंडानो ओंकार समेत विस्तार कर्यो, ओंकारना उच्चार माहेली अकार उकार अने मकार ए त्रण मात्राओ थइ, जेमां तमाम त्रिपुटीओनो समावेश थायछे, एवी मात्रा रूप प्रेम सत्तामांथी म्होटी जो गमायाकूर शक्ति पेदा थइ जेने गुरुतत्व शक्ति पण कहेछे.

ए शक्ती प्रेम सत्ताथी जूदी जूदी थइ एटलुंज नहीं पण तेणे सत्व रज, अने तम एवा त्रण गुणोमांथी विष्नु, ब्रह्मा, अने रुद्र, एवा त्रण देवोने उपजाव्या. ए त्रणे देवोनी पासे प्रेमने लीधे सरखा रूपवाळी थइने रजोगुणी सावित्रि, सात्विकी लक्ष्मी, अने तामसी रुद्राणी, एवां नामो धरीने त्रण रूपे रमवालागी, ब्रह्माना मनमां कारणात्मक प्रेम जागृत तेथी पोते सघळी सृष्टीने उपजाववा लाग्या, लक्ष्मीना पति विष्णु तो एक पोषण करवानोज प्रेम धरावेछे, तेथी ब्रह्मा उपजावेछे अने ते प्रतिपालन करेछे, महारुद्रतो मात्र भक्षण करवामांज प्रेम राखेछे, माटे ते महाकाळना रूपथी सघळी सृष्टीने खायछे, सर्वने आधार आपनारी प्रेम मायाज नीचे धारण करी रहीछे. एटलुंज नहीं पण जेणे एक उपर एक प्यारीते चउदे लोकने जमाव्यांछे. ए सर्वथी उंचे आकाशनी उपर पण प्रेमज छवरायोछे, तेम वगर थांभले लोको प्रेमथीज रह्यांछे, दिगपाळोने पोताना स्थानकनो प्रेम लागेलोछे, जेथी तेओ पोतानी मूळ जग्योने छोडीने डगता नथी, समुद्रने पोतानो मर्यादानो प्रेम लागेलोछे, जेथी ते पवन लागेछे तोपण कीनाराने उलंघीने आगळ वधी जतो नथी. चंद्रमा तथा सूर्यने पण पंथनोज प्रेम प्यारोछे, जेथी तेओ टाढ तथा तडकाने फेलावी प्रकाशित थइने अजवाळुं करेछे. देवताओनो राजा इंद्र पृथ्वी उपर प्रेम राखेछे, जेथी ते जमीन उपर जळनी धाराथी वर्षादने

वरसावेछे, परब्रह्मना प्रेमने वेद द्रढावेछे, ते वेदना प्रेमथी ब्राह्मणो भणेछे, ऋषीयो योगना प्रेमथी समाधी करीने मंत्र जपेछे, तेज मंत्रोना प्रेमथी देवताओ सन्मुख आवेछे, वळी क्षत्रीयो मांहो मांहे युद्ध करवा मांडेछे, त्यारे तेओ कुळाचारना प्रेमथी एक बीजाना शरीरने छेदेछे, वैश्य अने शूद्रो पण पोत पोताना धंधामां कुशळ थइ द्रव्य मेळववाना प्रेमने लीधे भूख, तरश वेठीने व्यापार तथा सेवानां कामो करेछे, पति कामना प्रेमथी स्त्रीने सेवेछे, अने स्त्री पण पियुना प्रेमथी रूप सजेछे, एवीरीते सुरो, असुरो, मनुष्यो नागो, पर्वतो, यक्षो, किन्नरो अने भूतो विगेरे सघळां प्राणीयो प्रेममां भींजाइने मग्न थयांछे एटलुंज नहीं, पण पशु पक्षी विगेरे पण प्रेमनाज रूपने जपेछे, अने स्थावर जंगमात्मक सघळा पदार्थो प्रेमथीज स्थपाएलाछे, अने तेओ प्रेमनुंज स्थापन करेछे, परब्रह्ममां पण प्रेमनोज उद्योत (प्रकाश) छे, अने ए जे प्रेमछे तेज परब्रह्मनुं ज्योति स्वरूपछे, प्रेम विना कोइ परब्रह्मने पामे नही, तेम परब्रह्मनी इच्छा विना प्रेम पण आवे नहीं, खरेखरा प्रेमथी पाषाणना देवो पण सिद्धि आपेछे, त्यारे प्रेमने सेववाथी माणस शुं न पामे? अर्थात् सर्व पामे. जेओमां परिपूर्ण प्रेमनी रति नथी, एवा मंदबुद्धि वाळा पुरुषो, कहेवाथी पण मानशे नहीं, एवी रीते भाषण करीने सिद्ध रससागरने कहेछे के हे महाराजा, आप घणोज सारो प्रेमनो नियम राखोछो. ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

यहैं प्रेम परकार, महा पुरुप बर्नन कियो ॥
उरमें हरप अपार, सागर सोय सराहियत ॥ ११ ॥

अर्थ. एवीरीते आ प्रेमना प्रकारनुं महा पुरुषे वर्णन कर्युं, ते सांभळवाथी हृदयमां अपार हर्ष थइ गयो, एटले महाराजा, रससागर तेमनुं वखाण करवा लाग्या. ॥ ११ ॥

॥ अथ तत्र सागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

कह्यो प्रेम परिब्रह्मवत, सब घट रहे समांय ॥
एक एक जानें जुगति, क्यों सब समुझत नांय ॥ १२ ॥

अर्थ. हे! सिद्ध प्रेम परब्रह्मनी पेठे सर्वनां घटमां (हृदयमां) समाइने रहेलछे एम जे आपे कयुं पण ते प्रेमनी युक्तीने तो कोइ कोइज जाणेछे, त्यारे तेने सर्व कोइ केम समजता नथी? ॥ १२ ॥

॥ अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर दृष्टांताऽलंकार ॥ छप्पय ॥

कला अगन सब काठ, काठ परसें नाहिं जारे ॥
पावक पथ्थर बीच, पथर पकरें नहिं बारे ॥
बसे काचमें बन्हि, काच करमें पकरिज्जे ॥
मथन लोह झारंत, सूर प्रतिबिंबित छिज्जे ॥
अनुमांन एइ घट घट बसें, प्रेम प्रभा ... जुगत ... उपजावे वीर ब्रह्मवत ॥
सिद्ध वदंत सागर सुनों, जथा जो ... मांज ... जागे जगत ॥ १३ ॥

अर्थ. अग्नीनी कळा सघळां काष्टोमां (सर्वने अ... लाकडांमां) रहेलीछे, पण काष्टोनो स्पर्श करवाथी ते बाळती नथी, व... पण जे... ळी पथरानी वचमां अग्नी रहेलछे, परंतु पथ्थरने पकडवाथी ते बाळती ... उंचे आ... नथी, तेमज काचमां पण अग्नी वसेछे, परंतु ते काच हाथमां पकडी ... थीज रह... शकायछे, लाकडाने मथवाथी, पथराने लोढाना कडावते झाडवाथी ... ओ पोता... ने काचमां सूर्यनुं प्रतिबिंब पाडवाथी तुरत ते अग्नी प्रगट थायछे, ए ... अनुमांनथी परब्रह्मनी पेठे प्रेमनो कांति घटघटमां वसेछे ... सिद्ध कहेछे के ... आगळ वा... हे! सागर, सांभळो के जगतनां ज्यांहां यथायोग्य युक्ती होय त्यांहां, जेथी तेओ ... ज ते प्रेम जागृत थायछे. ॥ १३ ॥

अथ फुनि सागरोक्त प्र... करेछे. देवताअं... श्न ॥ दोहा ॥

जथा जोग दो च्यार जन, भयो ... पर जळनी घा... ेम विस्तार ॥

न्युनाधिक क्यों रहतहें, कहो सिद्ध निरधार ॥ १४ ॥

अर्थ. यथायोग्य रीते बेचार जणमां प्रेमनो प्रकाश (विस्तार)थयो तो ते न्यूनाधिक केम रहेछे हे! सिद्ध तेनो नीर्णय कहो. ॥ १४ ॥

॥ अथ सिद्ध प्रत्युत्तर दृष्टांताऽलंकार ॥ छप्पय ॥

नीक पना मनिं नील, मुकत मानिक विद्रुम मनि ॥
पोखराज लसनीक, फटिक गोबिंद विदुर्ज्जनि ॥
परे सबें इक ठोर, काहु पंथीने पाए ॥
वह किम्मति के लिये, हाट जोहोरीके आए ॥
सब मध्य तेज घट प्रेमबत, जोहोरी करि पारिष लहें ॥
सिद्धा वदंत सागर सुनों, न्यूनाधिक इहि बिधि रहें ॥१५

अर्थ. नीक, पानां, नीलमणी, मुकताफळ, (मोती) मांणीक्य, वीद्रुम, (परवाळां) पोखराज लशणीओ, स्फाटीक, गोमिदमणी, वैडूर्यमणी, ए सघळी ज्ञातनां झवेरो एक ठेकांणे पड्यां हतां, ते कोइ पथीक (वटेमार्गु)ने प्राप्त थयां, एटले तेनी कीम्मत करावासारु ते पंथी झवेरीने हाटे आव्यो त्यारे जेम घट घटमां रहेला न्यूनाधिक प्रेमनी पेठे ते झवेरातमां रहेला ओछा अदका तेज उपरथी झवेरी परिक्षा करीलेछे; तेमज सिद्ध कहेछेके हे! सागर सांभळो के एवीरीते प्रेम न्यूनाधिक रहेछे. ॥१५

अथ फुनि सागरोक्त प्रश्नभेद ॥ दोहा ॥

कह्योजोहेर बत प्रेमको, किंमति जैसी जोत ॥
किधों बढ चतुराइसें, किधों आप उद्योत ॥ १६ ॥

अर्थ. सागर कहेछेके झवेरोनी पेठे प्रेमनी पण जेवी जोत तेवी कीम्मत कही तो ते केम चतुराइथी वधेछे के पोतानी मेळे प्रकाश पामेछे.॥१६

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर दृष्टांतालंकार ॥ छप्पय ॥

नट नाटिक अरु भगल, शस्त्र अस्त्रनको साधन ॥
पशु पंछी वस करन, ओर अनेक अराधन ॥
पटहु शास्त्र पट वांनि, ओर इतिहास बेद बिधि ॥
विद्या कला विधांन सवें, अभ्यास होत सिधि ॥
परि प्रेम वढायो नां वढत, आपहि आप सु बिस्तरत ॥
सिद्धा वदंत सागर सुनो, ज्यों करता सृष्टी करत ॥१७॥

नटविद्या, नाटकना खेल, भगळ(भूगोळविद्या)हथीआर तथा मंत्रोथी चाले एवां आयुधोनां साधन, पशु पक्षीओने वश्य करवाना उपायो, अने बीजां केटलांक हुनरो तथा जूदी जूदी केळवणीनां साधनो, छ शास्त्रो, छ प्रकारनी भाषाओ, इतिहासो, वेदनी विधियो, विद्याओ अने कळानां विधांनो, ए सर्व अभ्यास करवाथी सिद्ध थायछे, पण प्रेम वधार्यो वधतो नथी एतो पोते पोतानीज मेळे विस्तार पामेछे. सिद्ध कहेछे के हे? सागर, जेम जगतकर्ता परमेश्वरमांथी सृष्टी थायछे तेम समजवुं. ॥ १७ ॥

अथ फुनि सागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

करता इच्छावत कह्यो, प्रेंमसो स्वयं प्रकास ॥
यह उरमें अंदेसहे, साधन सवें निरास ॥ १८ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के कर्तानी इच्छा प्रमाणे प्रेमने स्वयंप्रकाश कह्यो त्यारे तो मारा हृदयमां एवी शंका रहेछे के सघळां साधनो निष्फळ थाय. ॥ १८ ॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर दृष्टांतालंकार ॥ छप्पय ॥

प्रेमसो स्वयं प्रकास, आप उद्योतसु वाढत ॥
प्रेमहिके परताप, सवें साधन चित चाढत ॥
इष्ट न विस्मृति होय, ओर उरमें नहि चाहे ॥

कानन पर्यो चिनंग, आपसे ज्यों वन दाहे ॥
करता इष्ट सिद्धी मिलत, पें साधन न विसारियें ॥
सिद्धा वदंत सागर सुनो, प्रेंम नेंम यह धारियें ॥ १९ ॥

अर्थ. प्रेमतो स्वयं प्रकाशछे, अने ते पोताना उदयथीज वधेछे, ने प्रेमना प्रतापथी सघळां साधनो पोताना हृदयमां स्फुरी आवेछे; जेथी इष्टमित्रनुं विस्मर्ण न थतां पोताना हृदयमां बीजाओने चाहे नहीं; जेमके जंगलमां पडेलो अग्नीनो तणखो पोतानी मेळेज बृद्धी पामीने वनने बाळेछे तेम प्रेम पण पोतानी मेळेज वृद्धि पामीने प्रकाशेछे, अने ते कीरतारना इष्टथी सिद्धिरूप मळेछे पण साधन विसारीए नही. सिद्ध कहेछे के हे! सागर एवा प्रेमना नियमने धारी राखीए ॥ १९ ॥

अथ सागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

तन मन प्राणसु प्रेंम चत्र, इक इक विनां न होय ॥
सबही सत्ता ब्रंह्महे, कहो विशेष तुम सोय ॥ २०

अर्थ. सागर कहेछे के तन, मन, प्राण अने प्रेम, ए चार एक एक विनां होयज नहीं, ने ते सर्व ब्रह्मनी सत्तारूपछे तो तेमांथी जे विशेष होय ते तमो कहो ॥ २० ॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर दृष्टांतालंकार ॥ छप्पय ॥

तन मन प्राण सु प्रेंम, बराबर सबें कहावे ॥
इक इक विनां न होय, यहें सिगरो जुग पावे ॥
ज्यों भाजन अरु नेह, बती अरु मिलवें पावक ॥
चारहुंके संजोग, भयो अभिधांन सु दीपक॥
जडताइ भाव वह तीनमे, चैतन वान्हि बखानियें ॥
सिद्धा वदंत सागर सुनो, प्रेंम सोय पहिचांनियें ॥ २१ ॥

अर्थ. तन, मन, प्राण अने प्रेम ए सर्व बरोबर कहेवायछे, अने ते एक एक विनां होतांज नथी एम सर्व जगत जांणेछे, जेम कोडीयुं, तेल, वत्ती अने अग्नि एकठां करीए त्यारे ए चारना संजोगने लीधे दीपक एवुं नाम थाय, परंतु कोडियुं, तेल अने वत्ती ए, त्रणमांतो जडपणुं रह्युंछे ने चेतनपणुं तो एक अग्निमांज रह्युंछे माटे तेने वखाणीए सिद्ध कहेछे-के हे! सागर सांभळो, एवीरीते प्रेमने ओळखी लइए. ॥ २१ ॥

अथ सागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

अलौकीक लौकीक यह, प्रेम कहावे दोय ॥
शुद्धा शुद्ध सिगरे कहे, भिन्नभाव क्यौं होय ॥ २२ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के अलौकीक अने लौकीक एवा भेदथी आ प्रेम बे प्रकारनो केहेवायछे; वळी तेने सघळां लोको शुद्ध अने अशुद्ध पण कहेछे माटे एवो भिन्नभाव केम होयछे ते कहो. ॥ २२ ॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ छप्पय ॥

अलौकीक लौकीक, प्रेमहूके दोउ छंदा ॥
शुद्ध अशुद्धा कहे, सोउ जानो मति मंदा ॥
ज्यों घट पूरन अंबु, कौंन खाली जग्गे तित ॥
सकल सृष्टी परिनांम, ब्रह्म सत्ता यों व्यापित ॥
जिहि ठौर प्रेम थर चर लगें, तहां ब्रह्म ठहराइयें॥
सिद्ध वदंत सागर सुनो, सबें सिद्धि तहां पाइयें ॥ २३ ॥

अर्थ. अलौकीक अने लौकीक एवा बे प्रकारना प्रेमना छंद एटले भेदछे पण तेने जे शुद्ध अने अशुद्ध कहेछे तेनेतो मंद मतिवाळा जाणो, जेम घडो पांणीथी पूरण भर्योछे तेमां कोइ जग्यो खालीछे? अर्थात् कोइ जग्यो खाली नथी तेम एवीरीते सघळी सृष्टीमां परीणामे परीपूर्ण ब्रह्मनी

सत्ता व्यापकछे. स्थावर जंगम रूप, जे स्थळे प्रेम लागे ते स्थळे ब्रह्म जाणीए सिद्ध कहेछे के हे! सागर सांभळो, त्यांहांज सर्व प्रकारनी सिद्धि पामीए. ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

सागर बूझे सिध कहे, प्रश्न उतर परकास ॥
ज्यों ज्यों चरचा चलतहे, त्यों त्यों प्रेंम बिकास ॥ २४

अर्थ. एवी रीते सागर प्रश्नो पूछेछे अने सिद्ध प्रत्युत्तर कहेछे; ए बन्नेनी चरचा जेम जेम चालेछे तेम तेम प्रेम प्रफुल्लित थतो जायछे. ॥ २४ ॥

॥ गाहा ॥

सागर सिद्धसु चरचा, प्रेंम प्रमान प्रश्न प्रतिउत्तरं ॥
पंचचालीस भिधानं, पूर्न प्रबीन सागरो लहरं ॥ २५ ॥

अर्थ. सागर तथा सिद्धनी चर्चाना प्रसंगमां प्रेमना प्रमांण विषे प्रश्नोना प्रतिउत्तर संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी पीस्तालीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥२५ ॥

इतीश्री प्रबीन सागरग्रंथे रससागर सिद्ध चरचा प्रेंमनेम भेदो नाम पंचचत्वारिंशतिमो लहरं ॥ ४५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां पंचचत्वारिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ४५ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

सिंधू सीद्ध प्रसंगमां, प्रथमथी प्रश्नो थया प्रेमना ॥

तेना उत्तर आपतां यतिवरे, भेदो कह्या नेमना ॥
ते प्रेमा मृत कर्ण पांन करता, पात्रो थशे क्षेमना ॥
छेतालीशमी लेरमां, उडि जशे कागो कुडा वेमना ॥

अथ फुनि रससागर सिद्ध चरचा प्रसंग सागरोक्त सोरठा

तुमें प्रश्न जोगेश, हम बूझे सो सो कहे ॥
आप करो उपदेश, प्रेम महीमाको कथन ॥ ॥ १ ॥

अर्थ. हे! योगेश्वर अमे जे जे प्रश्नो पूछ्यां ते ते आपे खुलासाथी कह्यां माटे हवे प्रेमना महिमानुं कथन करीने आप उपदेश करो. ॥१॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ दोहा ॥

दधि मंठा नवनीत घृत, पयसें उतपन होत ॥
परं परा सागर यहें, सबें प्रेंम उद्योत ॥ २ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के दहीं, छाश, माखण अने घी ए सर्व दूधमांथी उत्पन्न थायछे. एवीज परंपराथी हे! सागर आ सघळुं जगत प्रेममांथीज प्रकाश पामेलुंछे. ॥ २ ॥

पय दधि माखन तक्र ज्यों, सेत रंग सब मांहि ॥
त्यों पुरान श्रुति शास्त्र मधि, प्रेम ब्रह्म दरसाहि॥ ३ ॥

अर्थ. दूध, दही, माखण अने छाश ए सर्वमां जेम श्वेत रंग रह्योछे तेम पुराण, वेद अने शास्त्रोमां पण प्रेम रूपी परब्रह्म देखायछे. ॥ ३ ॥

सागर सागर प्रेंमको, सुरत नाव अनुहार ॥
तरेसु डुबेहें खरे, परेसु उतरे पार ॥ ४ ॥

अर्थ. हे! सागर प्रेम रूप समुद्रमां सुरता रूपी वांणछे तेने न अनुसरतां जेओ समुद्रमां तरवा जायछे तेओ डुबेछे पण जेओ ते वांणमां जइ पडेछे ते पार (कीनारे) उतरी जायछे. ॥ ४ ॥

तोल बधे दोउ पथरके, ताकी खब्बर नपाय ॥
आदि अंतकों खोलदे, तो उन भेद लिखाय ॥ ५ ॥

अर्थ. सघळां बे पथरानो तोल वांधेछे तेथी तेने प्रेमनी खबर पडती नथी, पण जो आदी तथा अंतने खोली दीये तो तेनो भेद जोवामां आवीजाय. आनो स्पष्टार्थ आ प्रमांणे छे के पथर पथर ए बे शद्धोने एक लाइनमां साथे लखवा (पथरपथर) एटले बे पथरनो तोल बांध्यो कहेवाय, हवे आदी तथा अंतने खोली देवुं एटले आदीनो अक्षर प छे ते ने अंतनो अक्षर र छे तेने कहाडी नाखवा एम करवाथी (थरपथ) एवुं रह्युं एनो भावार्थ एछे जे आजे प्रेमनो पथ (मार्ग) छे तेज थरपथछे. थर एटले स्थीर, पथ एटले मार्ग, एटले स्थीर मार्गछे. प्रेमी जनोए ते मार्गे स्थीर एटले उभवुं पथ एटले रस्ते अर्थात् ते रस्ते स्थीर थइने उभुं रहेवुं जेथी प्रेमना पंथनो भेद जोवामां आवे. ॥ ५ ॥

॥ अथ संभावना अलंकार सवैया ॥

अंधन उज्जल अंगन भंगन, अमृत मारन बारन आगें ॥
सुख्खन दुख्खन धीर अधीरन, मृत्युन जीवन नींदन जागें॥
शुद्ध बिषुद्धन अद्धन ऊरध, प्रच्छ प्रतच्छ अताग न तागे ॥
सागर प्रेंम प्रतीत परें उन, याबिरती सुरती जिन लागे ॥ ६ ॥

अर्थ. अंधारुं नहीं तेम अजवाळुं पण नहीं, अंगे सांग अखंड नहीं तेम अंग भंग पण नहीं, अमृते नहीं ने झेर पण नहीं, वारे नहीं तेम अवारे नहीं, आगळ नहीं तेम पाछळ पण नहीं, सुखे नहीं तेम दुःख पण नहीं, धीरजे नहीं तेम अधीर पण नहीं, मरेल नहीं तेम जीवित पण नहीं, नीद्राए नहीं ने जागृत पण नहीं, शुधे नहीं तेम बेशुध पण नहीं, नीचे नहीं तेम उचें पण नहीं, परोक्षे नहीं तेम प्रत्यक्ष पण नहीं, अता-

न टळुं नहीं तेम छोडवुं पण नहीं, हे! प्रीयमित्र सागर एवा एवा प्रकारनी वृत्तियोनी जेने प्रिती लागे तेने प्रेमनी प्रतीति पडे. ॥ ६ ॥

॥ अथ चित्रालंकार सवैया ॥

जीवकी जात समाधिकी शोधन, बातको बास सुबासकी छाया ॥ धूमको धाम सुधामकी धारन, धारनकी कह कारन माया ॥ पानीको रंग पियुषको पावस, शुन्यकी धुन्य कहा सुर गाया ॥ पाये वहें वड भागि प्रबीनजु, प्रेंमको रूप प्रकाशकी काया ॥ ७ ॥

अर्थ. जीवनी जात, समाधीनुं शोधन, वायुनो वास, सुगंधीनी छाया धुवाडानुं धाम' धांमने धारण करनार, वस्तुना कारण रूप शुं? माया एटले शुं? पांणीनो रंग, अमृतनो वरशाद, शून्य (आकाश) नी धुन्य शुं? अने स्वरो गवाया ते शुं? एटलां वानां समेत प्रेमना रूपने तथा प्रकाशनी कायाने जे पामे तेज हे? प्रवीण महोटा भाग्य वाळो केहेवाय. आनो स्पष्टार्थ आप्रमांणे छे के, जीवनी जात एटले सघळी जातो जीवने मानीनेछे, शोधन करवुं ते समाधी वडे बनेछे, वास एटले रहेवुं ते प्राण विगेरे वायुना योगे करीने छे, ने छाया पण सुगंधीनीज छे, धांम जे घर ते धुमाडानुंज छे, ने ते धांमने धारण करनारी पृथ्वीछे तेनुं कारण शुं! तो केवळ माया एज तेनुं कारणछे, नील पीत आदी सघळा रंगो पाणीनाछे, अने वरशाद वरसेछे ते केवळ अमृतनोछे, हवे शून्य जे आकाश तेनो ध्वनी एटले शुं? तो जे नीशाद, ऋशभ, गांधार विगेरे स्वरो गवाया ते, एवीरीते हे!प्रीयमित्र प्रवीण जे मोटो भाग्यशाळी होय तेज प्रेमना रूपने तथा प्रकाशनी कायाने पामेछे. ॥ ७ ॥

॥ अथ चित्रालंकार सवैया ॥

सोध समाध लगी सु लगी रहे, गेवकी अंग प्रकाश उजा-

री ॥ आस विलास उदास अहो निश, नीकी बुरीको कहे-
तो कहारी ॥ आपकी आप सबें समुझें, सिगरे जगकी ग-
तिसें गति न्यारी ॥ सागर प्रेम विदेहिके पंथकी, रंम्मत हेंन
करामति भारी ॥ ८ ॥

अर्थ. शोधरूपी समाधी लागीछे, तेतो लागीज रहेछे, अंगमां गेबी अजवाळुं प्रकाशित थइ रहेछे. रात दिवस विलासनी आशाथी उदासीमांज रहेछे, कोइ सारी अथवा नरसी वात कहे तोपण ते भले कहे, एवी जेनी स्थिति थायछे. पोतानी सर्व वातने पोतेंज समजेछे, ने सघळा जगतनी गतिथी जेनी गति न्यारीछे, हे? सागर एवा लक्षण वाळा प्रेमी रूप विदेहीओना पंथनी कांइ रम्मत नथी एनीतो भारे करामात छे. ॥८॥

अथ जातिस्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

कंचन लोह एकें करि जानत, अमृत झेर एकें करि पावे ॥
कीरति गारि एकें अनुमानत, उंचही नीच एकें दरसावे ॥
रंकसु राव एकें कही बोलत, एक सरूप अहोनिश ध्यावे ॥
सागर प्रेम अखंड प्रकाशित, सोजन जीवन मुक्त कहावे॥९॥

अर्थ. सोनाने अने लोढाने एक सरखां करी जाणेछे, अमृतने अने झेरने एक सरखां गणी खायछे, स्तुति अने निंदाने एक सरखां करी मानेछे, उंच अने नीचने एक सरखां देखेछे, रंक अने राजाने एक सरखी रीते बोलावेछे, दिवस अने रात एक स्वरूपनेंज समरेछे, हे? सागर एवीरीते जेओमां अखंड प्रेम प्रकाशित थयो होय, ते माणस जीवन मुक्त केहेवाय. ॥ ९ ॥

अथ अधिकरूपकअलंकार ॥ सवैया ॥

पेंड लगो कोउ डारनमें, कोउ पातनमें भटक्योइ फिर्यो॥

मंजरमें उरझाय रह्यो कोउ, फूल कली रस रीझ भर्यो ॥
माधुरता कहुं काहु कटू फल, जोइ मिल्यो सोइ सिस धर्यो
सागरजू सु प्रवीन कोउ चढि, प्रेम तरू न कबी उतर्यो ॥१०

अर्थ. कोइ थडनी साथे वळगी रह्यो, कोइ डाळयोमां वळगी रह्यो, ने कोइ पानाओमां भटकतो फर्यो, कोइ मंजरीओमां घुंचवाइ रह्यो, कोइ फूल तथा कळीओना सुगंधी रसमां रिझीने भराइ रह्यो, कोइने मिठां अने कोइने कडवां, पण जेने जेवां मळ्यां तेणे तेवां फळ माथे चडाव्यां, हे? सागर अेवी रीते कोइ डाह्यो पुरुष प्रेम रूपी वृक्ष उपर चढीने क्यारेय पाछो उतर्यो नथी. ॥ १० ॥

॥ सवैया ॥

इंद्र अनंत कहागति मारुत, को ग्रह को जमराज कहा जम
अस्त उदे शशि सूर नहीं कल, वेद वदंत इकीस कहा
पावक नीरद नीर कहा, उमया जुत ईश सधंत कहा दम॥
प्रेमको नग्र निहारत सागर, कौंन गली किरतार नहीं गम
॥ ११ ॥

अर्थ. इंद्र शुं, के शेषजी शुं, के पवननी गति शुं, के ग्रहो शुं, के जमना राजा शुं, के जम शुं, के ज्यांहां अस्तोदय करनारा चंद्र तथा सूर्यनी पण कळ पडती नथी. अने जेने वेद अेकविशमा ब्रह्मांडमां रहेला कहेछे, ते मान शुं, अग्नि, वर्षाद अने पाणी शुं, उमयाजी समेत महादेवजी जेने साधेछे ते दम (अजपा) शुं, हे? सागर प्रेमनुं नगर निहारी जोतां कइ गलीमां कर्त्तानो गंम नथी, अर्थात् सर्व गलियोमां छे. ॥११॥

अथ अधिक रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

मोद महीप अखंड सभा, अगनी सुख होम अखंड ब्रहा

भ्रम ॥ साधनसा सुरता कि बजार, विचार बनंज लगे रहें उद्यम ॥ नौंबत नाद सदा गति आयत, शील सधें कुटवाल कला क्रम ॥ प्रेमको नग्र निहारत सागर, कौंन गली किरतार नहीं गम ॥ १२ ॥

अर्थ. मोद (आनंद) रूपी राजा, अने तेनी अखंड सभारूपी अग्नि, सुख रूपी होंम, अखंड विरहरूपी ब्राह्मण, साधनरूपी शाहुकार ने सुरता रूपी बजारमां विचाररूप व्यापार (वणज) नो उद्यम लाग्यो रहेछे, आवता जता श्वासना योगथी थता अनाहत शद्बरूपी नोबतना अवाज थायछे, ज्यांहां शिळ रूपी कोटवाळ कळाना क्रम साधेछे, हे? सागर एवा प्रेमना नगरने निहारी जोतां कइ गलिमां किरतारनी गम नथी. ॥ १२ ॥

॥ सवैया ॥

आसुंनको उमडेबो कहांसें, कहां चिनगे द्रगमें दरसावे ॥ ओंचक अंग चमंक कहांसें, कहा रस रंग रुमंच चढावे ॥ अंक हकार अकार कहाहे, उसासको धाम कहां कहां धावे ॥ प्रेम हुलास उदास तफावत, सागर नागर होय सो पावे ॥ १३ ॥

अर्थ. आंसुनुं उमटवुं क्यांहांथी थायछे, अने आंख्योमां तणखा कोण दरसावेछे, अने ओचींतुं अंग शाथी चमकी उठेछे, नें रसना रंगथी रुंवाडाने कोण चडावेछे, हकार अने यकार ए बे अक्षरो मळीने जे हाय हाय एवा शद्ब थायछे तेने कोण उपजावेछे, नें उसासानुं तेज क्यांहां क्यांहां सुधी दोडेछे. हे? सागर प्रेमना हुलासने लीधे थएली उदासीना तफावतने तो चतूर होय तेज पामे. ॥ १३ ॥

॥ सवैया ॥

भेद कुरांन पुरांन न भाषित, वेद कितेंब बदंत वृथा ॥ प्रौ-ढ लहे सुग्रहे मनके मन, मूढ अरूझत गूढ गथा ॥ जां-नन हार प्रमान न जांनत, जानत जाय वितीत जथा॥ मं-त्र न जंत्र न तंत्र न मंडित, सागर प्रेमकी न्यारी कथा॥१४

अर्थ. जेनो भेद कुरान, तथा पुराणे कह्यो नथी अने वेद तथा किताब कहेछे ते पण जुठो छे. महोटा पुरुषोए लिधेलो छे, परंतु तेओ तो मनमांने मनमांज ग्रहण करी राखी रह्याछे, ने मूढ लोको तो तेनी गूढ वाणिमां मुंझवणनी साथे धुंचाइ रह्याछे; जाणवा वाळा छे तेओ प्रमाणने जाणता नथी, माटे जेने माथे विती होयछे, तेथीज आ भेद यथायोग्य जाण्गो जायछे, मंत्र के जंत्र के तंत्र ए कोइ प्रेंमनुं मंडन करी शकता नथी माटे हे? सागर प्रेंमनी कथातो न्यारीजछे. ॥ १४ ॥

अथ अधिक रूपक अलंकार ॥ कवित्त ॥

गुन हुको नीर सोतो भर्यो चिहुं तीरनमें, धीरज गहीर मध्य ध्यानकी उछार वार ॥ संकलप विकलपके उठत तरंग जहां, मन अभिमानिनके डूबेहे गिरि अपार ॥ मक्र मक्र ध्वज सुरत जिहाज रोके, वाडवा विरह भेद चिंता भ्रामरी विचार ॥ सुर नर नाग जहां, तरि तरि हारे मुनि, प्रेम पारा वार हुको किनहुं न पायो पार ॥ १५ ॥

अर्थ. गुणरूपी पाणी तो चारे तरफना किनारामां भर्युंछे, मांहीं धैर्यतारूपी उंडाइ छे, ने ध्यानरूपी पाणीना उछाळा उछळेछे, ज्यांहां संकल्प विकल्प रूपी लोढ उपजेछे, जेमां अभिमानीओना मनरूपी अनेक पहाडो बुडी गयाछे, जेमां कामदेव रूपी मघरमच्छ सुरतारूपी वाहाणने रोकेछे, वळी जेमां विरह भेदरूपी वडवानल नामनो अग्नि रह्योछे,

अने चितारूपी भमरीओनां चक्र उपजेछे, जेमां विचार रूप सुर, नर, नाग अने मुनीओ विगेरे तरी तरीने हारी गया, पण प्रेमरूपी समुद्रनो पार कोइए पमाणो नहीं. ॥ १५ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

तोयद चाहको तंत्र किये, सुरतानकि डोर ग्रहें करमें कल॥
मक्र बचें बिरहा नलके मुख, सोधत जाय तबेंहि सबें जल॥
शंख समांन तजें सगरो जुग, पावतहें तब लावतहें पल॥
प्रेमके सागर मध्य धसें वह, मिंत सरूप लहें मुकताफल ॥ १६ ॥

अर्थ. तोयद जे मेघ, तेने वहन करनार जे वायु, तेने रोकवानी चाहनानी अथवा तेना स्थाननी चाहनानो तंत्र करीने सुरतारूपी दोरीने कळाथी हाथमां ग्रहण करी राखे, विरहानळ रूपी मघरमच्छना मुखथी बचीने ज्यारे सघळा पाणीने शोधतो जाय, शंखलानी पेठे सघळा जगतने तजीने बरोबर पळ साचवे त्यारे पामे, माटे एवीरीते जे प्रेमना दरियानी वचे धसे ते, मित्ररूपी मुक्ताफळ लिये. ॥ १६ ॥

॥ अथ अन्योन्यालंकार ॥ सवैया ॥

रेनमें जोत उदोतहुमें तम, ज्वालमें सीत तुहीनमें तापन ॥ ऐ मुख अमृत देव तरू विष, कंचन लोहसु लोहमें कुंदन ॥ हंसमें काग कुहामें मुरालसु, नीकमें ऊपळ पथ्थरमें मन ॥ देवमें दानव आसुरमें सुर, सागर प्रेम लहंत लहे इन ॥ १७ ॥

अर्थ. रात्रिमांथी ज्योतिने, प्रकाशमांथी अंधाराने, झाडोमांथी शितलताने; बरफमांथी उष्णताने, नागना मुखमांथी अमृतने, कल्पवृक्ष-

मांथी झेरने, सोनामांथी लोढाने, लोढामांथी कुंदनने, हंसोमांथी कागडाने, कागडाओमांथी हंसने, मणीओमांथी पथ्थरने, पथराओमांथी मणिने, देवोमांथी दानवने, अने असुरोमांथी सुरने, हे? सागर जे प्रेमनेलिये ते एओनेलिये. ॥ १७ ॥

॥ अथ विभावनालंकार ॥ सवैया ॥

मूल विना फल फूल झुके वन, वृच्छ विनां छिति छाह लपा वत ॥ पंख विनां उड जात जनावर, पाउ बिनां पशु पंथहि धावत ॥ टूटगये गन तीरन चूकत, नीर बिनां दधि नाउ चलावत ॥ तार बिनां कर बींन बजावत, सागर प्रेमीं सबें विधि पावत ॥ १८ ॥

अर्थ. मूळ विना फल फुल झुकी रह्यांछे, वन अने वृक्षो विना पृथ्वी उपर छांया देखाडेछे, पांखो विना जनावर उडीजायछे, पग विना पशु पंथे दोडेछे, प्रत्यंचा (पणछ) तुटीगयाथी पण तीर चूकतो नथी, पाणीविना दरियामां वहाणने चलावेछे, अने तारविना हाथथी वीणा वगाडेछे, हे? सागर एवीरीते प्रेमीजन सघळी विधियोने पामेछे. ॥ १८ ॥

॥ अथ विशेषालंकार सवैया ॥

सूर शशिन मरीचि प्रकाशत, आठहु जांम रहें उजियारो॥ जोगन भोग अलोक कला, सुख शोक नहीं तिहुं लोकसें न्यारो ॥ वेद पुरान प्रमान न वांधित, जांनाहिंगो कोउ जानन हारो॥ सागर अंबर हेंन धरा पर, प्रेमहुंको अध बीच अखारो ॥ १९ ॥

अर्थ. ज्यांहां सूर्य चंद्रनां किरणो प्रकाशतां नथी. पण आठे पहोर अजवाळु रहेछे, जोग तथा भोग नथी पण जेनी अलौकीक क[illegible] रह्योछे,

रू तथा शोक नथी ने वळी त्रणे लोकथी न्यारोछे, जेना प्रमाणनें वेद तथा पुराणो पण बांधतां नथी, कोइ जाणवा वाळो हशे तेज जाणशे, हे? सागर एवीरीते आकाशमां नथी तेम पृथ्वीमां पण नथी, प्रेमनोतो अबबच अखाडोछे. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

शूर शशी न समीर गति ॥ अध धर उरध न धार ॥
बेद पुरांन न जांनिहे ॥ प्रेंमी तहां बिहार ॥ २० ॥

अर्थ. ज्यांहां सूर्य चंद्र अने पवननी गति नथी, तेम पृथ्वीनी निचेछे किंवा उंचेछे, एम पण धारवामां आवतुं नथी, अने जे स्थळने वेद तथा पुराणो पण जाणतां नथी, ते स्थळे प्रेंमीजननो विहार थायछे. ॥ २० ॥

प्रेमहुको मद जिन पिया ॥ ताहूको यह भेख ॥
अकर करे नाहिं न डरे ॥ परे कूप द्रग देख ॥ २१ ॥

अर्थ. जेणे प्रेंमनो मद पिधोछे तेनो एवो वेशछे, एटलुंज नहीं पण ते नकरवानुं होय ते करे नें डरे नहीं नें वळी आंखथी जोइने कुवामां पडे. ॥ २१ ॥

अथ विभावनाको द्वितीय भेद ॥ सवैया ॥

प्रेंमहुको मद पांन कियो वह, जो करवेकि नही सो करेंगो ॥ शोच बिचार कियेकि ..., जरबे मरबेसें कछू न डरेंगो ॥ चातुर व्हें गति बाउ...की गहि, दीपक लें कर कूप परेंगो ॥ तेज सबें सटके बटके वह, सागरजू भटक्योइ फिरेंगो ॥ २२ ॥

अर्थ. जेणे प्रेमरूपी मदिरानुं पान करेलुंछे ते जे नहीं करवानुं हशे ते पण करशे, शोक तथा चाडी करवाथीतो शुं, पण बळवाथी के

मरवायी पण कांइ डरशे नहीं, चतुर थइनें दिवानाना जेवी गति ग्रहण करशे, अने हाथमां दिवो लेइने कुवामां पडशे, शरीरनुं सघळुं तेज घटीने जतु रेहेशे, पण हे? सागर तेतो भटकतोज फरशे. ॥ २२ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ दोहा ॥

प्रेमी मन केसर कुसुम ॥ सुरत नीरको संग ॥
ज्यों ज्यों अवटे ब्रह आगिनि, त्यौं त्यौं निकसे रंग ॥ २३

अर्थ. प्रेमीना मनरूपी केसर, तथा कसुंबोछे, ते सुरतरूप पाणीनी साथे मलीने विरहरूप अग्निमां जेम जेम अवटाय तेम तेम तेनो रंग नीकळे. ॥ २३ ॥

नेह नगरके द्वारसें ॥ सूधी विरह बजार ॥
पार परे सो जाएगे ॥ सांईके दरबार ॥ २४ ॥

अर्थ. नेह नगरना दरवाजाथी सिधी जे विरहनी बजारछे, पाछळ जे पडशे ते सांइ (इश्वर)ने दरबार जशे. ॥ २४ ॥

आसिक नट साधन सती ॥ सुरा सहेवो सेल ॥
भरापरिकी बात नहीं ॥ खराखरीको खेल ॥ २५ ॥

अर्थ. आशक, नट, अने सती एओनुं साधन, तेमज शूरवीरे वरछीनुं सहन करवुं ए कांइ भरा परीनी वात नथी, पण खराखरीनो खेलछे. ॥ २५ ॥

मन प्रेमी कुंदन महोर ॥ सुरत प्रकासे जोत ॥
बिरह अनल ज्यों ज्यों तपें ॥ त्यौं त्यौं किंमति होत ॥२६

अर्थ. प्रेमीजनना मनरूपी कुंदननी महोरछे अने तेमां सुरतरूपी जोत प्रकाशेछे, परंतु ते जेम जेम विरह रूपी अग्निमां तपे तेम तेम तेनी किम्मत थाय. ॥ २६ ॥

जैसें निर्मल होतहे ॥ कनक अनलके संग ॥
तैसें प्रेंमी बिरह बल ॥ चढें सुरतको रंग ॥ २७ ॥

अर्थ. जेम अग्निना संगथी सोनुं निर्मल थायछे, तेमज बिरहना बळथी प्रेमीजनने सुरतनो रंग चडेछे. ॥ २७ ॥

ओर रंग उतरें सबें ॥ ज्यों दिन बीतत जाय ॥
बिरह प्रेम बूंटा रचें ॥ दिन दिन बढत सबाय ॥ २८ ॥

अर्थ जेम जेम दिवस वीतता जाय, तेम तेम बीजा सघळा रंग उतरे, परंतु विरहथी रचेला प्रेमना बुंटातो दिवसें दिवसें सवाया वधे. ॥ २८ ॥

॥ सोरठा ॥

दुग्ध एकही होत ॥ जैसें सुरभि बरन बहु ॥
प्रेंम जोत उद्योत ॥ तैसें सबहि शास्त्र महि ॥ २९ ॥

अर्थ. जेम गायोना जूदा जूदा घणा वर्ण (रंग) छे, परंतु दूधतो एक रंग वाळुंज होयछे, तेम सघळां शास्त्रोमां प्रेमनी ज्योतीनोतो एकसर-खोज प्रकाश कहेलोछे. ॥ २९ ॥

बरन बरन बहु रंग ॥ सुरभी शास्त्र पुरान महि ॥
सबें एकही अंग ॥ प्रेम सु पय पलटे नहीं ॥ ३० ॥

अर्थ. जूदा जूदा वर्णवाळी बहुरंगी गायो, शास्त्रो अने पुराणोमां कहेलीछे, पण ते सघळीनुं एक अंग जोतां प्रेमरूपी दूध पलटतुं नथी, अथवा जूदा जूदा वर्णवाळी बहुरंगी गायो अने जूदा जूदा भेदो शास्त्रो अने पुराणोमां कहेलाछे, परंतु ते सघळानुं एक अंग विचारतां प्रेम तथा दूध ए बेय क्यारेय पलटतां नथी. ॥ ३० ॥

प्रेम पथ्थरीमांहि ॥ चित चकमक चेतन झडे ॥
बिरह अनल दरसांय ॥ शील शोषता मुख लगे ॥ ३१ ॥

अर्थ. प्रेमरूपी पथरीमां चित्तरूपी चेतन चकमकनुं कडुं झाडवाथी विरहरूपी अग्नि देखाइ आवे, एटलुंज नहीं पण, तेना मुख उपर शिलता अने शोपणता लागे. ॥ ३१ ॥

॥ कबित्त ॥

प्रेमहीमें परतीत, रस रीत प्रेमहीमें, प्रेमहीमें राजनीत, हार जीत जंगहे ॥ प्रेमहीमें हाव भाव, सहित समूह प्रेम, प्रेमहीमें राग रंग, उमंग अनंगहे ॥ प्रेमहीमें ध्याता ध्येय, ग्याता ग्येय प्रेमहीमें, प्रेमहीमें जोग भोग, पंचभूत अंगहे॥ प्रेमको प्रकाश सोतो, करताकी करामात, जहां देखो तहां एक प्रेमको प्रसंगहें ॥ ३२ ॥

अर्थ. सर्व वातनी प्रतीति अने रसनी रीति पण प्रेममांछे, तेम राजनीति हारवुं, झितवुं अने लढवुं पण प्रेममांजछे, हाव भाव विगेरे ... समुदायो प्रेममांजछे, राग, रंग, उमंग अने कामदेव एपण प्रेममांजछे, ध्यान करनारो, तथा जेनुं ध्यान करवुंछे ते, तेमज जांणनारो, तथा जेनें जांणवोछे, तेपण प्रेममांजछे, जोग भोग, अने पंचमहाभुतनां शरीरो, पण प्रेममांजछे, प्रेमनो प्रकाशछे तेतो जगतकर्त्ता परमेश्वरनींज करामतछे, माटे ज्यांहां जुवो त्यांहां एक प्रेमनोज प्रसंगछे. ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम उपल ईशर करे ॥ ईशर उपल समांन ॥
कोउ प्रेम प्रतीत विन ॥ लहें न पद निरवांन ॥ ३३ ॥

अर्थ. इश्वरनीं मूर्त्तिना पाषाण समानज प्रेमरूपी पाषाण इश्वरें करोछे, माटे कोइ प्रेमनी प्रतीति विना मोक्षपदने पामी शके नहीं. ॥ ३३ ॥

॥ गाहा ॥

निर्गुनं निराकारं ॥ निरामयं व्यापकं नित्यं ॥
निःप्रपंचं शाश्वतं ॥ तं नमस्ते कारणं प्रेमं ॥ ३४ ॥

अर्थ. गुण रहित, आकार रहित, रोग रहित, व्यापक, नाश रहित, प्रपंच रहित, आदि, अखंड; अने स्वतंत्र एवा कारणरूप प्रेमने हुं नमस्कार करुंछुं. ॥ ३४ ॥

सागर सिद्ध प्रसंगं ॥ प्रथक भेद प्रेम बरनावं ॥
षटचालिश अभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ ३५

अर्थ सागर तथा सिद्धना प्रसंगमां जूदा जूदा भेदोथी प्रेमना वर्णन संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी छेतालीशमी लेहेर संपूर्ण थइ. ॥ ३५ ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे सागर सिद्ध प्रश्न प्रत्युत्तर प्रेम प्रथकभेदो नाम षट्चत्वारिंशतिमो लहरं ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाल प्रबोधिनी टीकायां षटचत्वारिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ४६ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

स्वाभावीक प्रमाण प्रेम कहिने, भावीक तेने विशे ॥
जंतूना दइ दाखला नृपतिने, भेदो कह्या योगिशे ॥
स्वप्रेशी शुभ मंत्र दान करतां, जे मंत्र धार्यो शिशे ॥
एओनो इतिहास खास भणशे, आ लेर सडतालिशे॥

अथ फुनि रस सागर सिद्ध चरचा प्रसंगो यथा॥ अथ रससागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

स्वभावीक भावीक यह ॥ प्रेंम भेद परवांन ॥
वढि घटि पावतहें किधों ॥ दोउ सिद्ध समांन ॥ १

अर्थ. हे सिद्ध? स्वाभाविक अने भाविक एवा प्रेमना बे भेदो उपर आपे वाणी कही, तेमांथी कोइ वधवा घटवा पामेछे किंवा बन्ने समतुल्य रहेछे.॥ १ ॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ छप्पय ॥

स्वभावीक साधंत, चित्तका मरम न पावे ॥
मिलंन सहसा मिंत, अंत सिद्धी नहीं जावे ॥
जो सधंत भावीक, सोय जाने सिगरी विध ॥ ॥
एह भेदके लिये, तुरत पावंत वहे सिध ॥
परि कष्ट भाव जामें अधीक, सो विशेष अनुमानियें ॥
सिद्धा वदंत सागर सुनो, यह व्रतंत उर आनिये ॥ २ ॥

अर्थ. स्वाभाविक प्रेम साधवाथी चित्तना मरमनें पामे नहीं, ने तत्काल मित्र पण मळे नहीं, नें वळी अंते सिद्धिने पण पहोचे नहीं, माटे जे भाविक प्रेमने साधे तेज सबळी विधियोने जाणे, एटलुंज नहीं, पण आ भेदने लीधे ते पुरुष तुरत सिद्धिने पामे, पण जेमां अधीक कष्टभाव होय- छे तेना विशेषछे एम अनुमान करवुं, सिद्ध कहेछे के हे! सागर सांभळो? आ जे वृत्तांत कह्युं ते मनमां धारजो. ॥ २ ॥

अथ फुनि सागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

कितें प्रानि यह सृष्टिमें ॥ स्वभावीक साधंत ॥
कौन प्रेम भावीकहें ॥ कहो सिद्ध बरतंत ॥ ३ ॥

अर्थ. सागर कहेछे, हे? सिद्ध आ सृष्टिमां केटलां प्राणियो स्वाभाविक प्रेमने साधेछे, अने केटलां प्राणियो भाविक प्रेमने साधेछे एनुं

वृत्तांत कहो? ॥ ३ ॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ छंद नाराच ॥

प्रकार प्रेम सागरं नरिंद जौंनहो तुमें ॥ प्रसंगके प्रमानकी बिधान ऊक्तकी हमें ॥ अनूप रूप प्रेमके सुभावके अलंकृतं ॥ सुजंतु रीत धारियें चरीत आपके चितं ॥ कुरंग रंग गांनसों बिधांन एह आरधी ॥ परीन कांन तांन चूक पारवांन पारधी ॥ व्रषा न आस आठ मास व्हैं निसास दादुरा जियंत मिंत रीझ भीज गाज वाज बादुरा ॥ मतंग अंग बीभ्रमे नमौंन चिंत लायकें ॥ धरंत खंत बारुनी परंत गाढ जायकें ॥ ग्रहंत कुंभ शुंभ होय कीश मूठ नां खुलें ॥ सहंत मुंड दंड मार द्वार द्वारपें डुलें ॥ निरंतरं धरंत टेक गोह खोंखकों गहे ॥ परंत तूटि तूटिपें निशंक छूटि नांरहें ॥ अवाज गाजसों मयूर पूर प्रेमसों भरे ॥ सँताप सीत तापमें अलापहू न ऊचरे॥चहंत स्वांत चातुकी सु ओर बारि नां पियें ॥ सहे बिसास प्यास व्हें उदास नांमकों लियें ॥ गये बसंत कोकिला कला प्रकाश हींनहे॥सुनंत सोर ओरके रहंत बेठ दीनहे॥मरीचि बीचि नेनयों चकोर लग्न चंदसें॥ प्रकाशहे अमंद मंद जानहीं दिनंदसें ॥ कपोतकों उडायकें कपोतनी करें धरे ॥निहार नार सारकों अचेत आभसों गिरे ॥ अली हुलास प्रेमके विकास कंजमें बसे ॥ कबूल प्रान जानपें न पंखरी वहें ढसे ॥खद्योत जोत दीपकी प्रकाश होतहीं परे॥ सुरंग रंग रीझि एक रंग अंगसें जरे ॥ विशेष प्रेम माधुरी सु माधुरी न छूटहें ॥ तनं तनंत नां तजंत मध्य लंक तूटहें ॥

पनंग पुंग नाद भेद खेद छांडिकें दह्यो ॥ विसार बास एह आस पास गारुडू रह्यो ॥ वहोर यों विचारियें फनींद प्रेम हे मनीं ॥ विहार दूर दूरपें जरूर एह जीविनीं॥ चक्रीश ये व्रतंत प्रेम नेंम लूब्ध चंदनं ॥ तजंत खांन पांनपें भजंत हे निशं दिनं ॥ जुराफ जुग्ल डोर वीछुरंत फेर नां जुरें ॥ करें निहारवो सु प्रीत रीतसें दुहू मरें ॥ मयंक अंक सिंगि व्रत्त चीन्ह जानकों वनें ॥ करें प्रतच्छ दौंर मच्छ तुच्छ देहकों गनें ॥ मरंत मीन दीनव्हें जवें अलींन तीरसें ॥ अनेक जत्नहूं कियें धरेंन धीर छीरसें ॥ प्रसिद्ध प्रेम षानकें चलंत नीरके चरं ॥ भजंत तूलके डरं चहंत मीनहा गरं ॥ कुरंगसारके सनेह देह अंमरं दमे ॥ नमेंन ओर ठोर जाय शीश मितके जमें ॥ रखंत नेंम हारनं सु प्रेम काठमें रमें ॥ धरीक ताय पायसें तजें तो प्रांनकों तज्जें ॥ सनेह वीयें शंकरं महा प्रचंड मंडही ॥ परंत दीठ पीठ त्री चलें निवास छंडही ॥ चमंक संग लोह मोह हें प्रमान त्रै पुरं ॥ नचंत आप चेतव्हें उडे तजंत अंतरं ॥ कपूर दूर तिक्तसें जरूर ठोर नां रहें ॥ सरात प्रीत मंत्र युक्त प्रेम धर्म पारहें ॥ सनेह छीर नीरकों कियो समान आपके ॥ वनं गुनं सु दूध कट जाय आप तापके ॥ मुराल मांन तालकी रसाल पाल लीनता ॥ कदाच वीछुरंत तों मरंत होय छीनता ॥ प्रसून वास पांनसें जरूर प्रेम जानियें॥ चलंत वात संग में अनंग शक्ति मानियें ॥ कुमोद मोद आग्रही जिये न

मूल भाशशी ॥ प्रतीत एह प्रेमकी खुलैं निशंक व्है निशी ॥ दिनंदसों सनेह एह भांतिसें नलीनहें ॥ उदैं अनेक मोदसें बिनां उदैं मलीनहे ॥ निहारिये नबीन रीति प्रीति छीपकी यहें ॥ समंद नीर तीर आय स्वांति बुंदकों ग्रहें ॥ गुलीक जुक्त जांनियें जु रक्त मांद बानसें ॥ बिकंत ओर ठोरपें मिलंत आन ध्यानसें ॥ अलोक प्रीति कोक याहि भांतिसें निभाउरे ॥ करंत केलि घोस वे निशा परंत बाउरे ॥ म्रजाद आद सागरं सनेह एह सोंमसें ॥ मिहीर जोति धीर चांदनी सु लेर व्योमसें ॥ मखींन मोह छूद्रसें मिलाय कुंद कुंदसें ॥ परंत नां मरंत तो फरंत मोद मंदसें ॥ अनेक टेक ईष्टकी बिशेष कष्ट यों सहें ॥ बिधान प्रेंम नेंमके प्रमान बुद्धि के कहें. ॥ ४ ॥

अर्थ. हे? नरना इंद्र रससागर, प्रेमना प्रकारनेतो तमो जाणोछो, परंतु आ प्रसंगोपात्त प्रेम प्रमाणना विधाननी हुं उक्ति करुंछुं, माटे अनूपम प्रेमना स्वरूप, तथा स्वभावथी शणगारेला सारा सारा जंतूओनी रीतिनां चरित्रोने आप हृदयमां धारण करजो, हरणीने गायन साथे रंग लागेलो होयछे, तेथी गायनना विधाननुं आराधन शिकारीओ करेछे, त्यारे ते सांभळवाना लोभथी, आवेली हरणीने पाराधी बाण लेइने आरंपार सोंसरुं उतारेछे, परंतु काने पडेला ताननें सांभळवामां ते चूकती नथी. आठ महीना सुधी वर्षादनी आशाथी देडकांओ प्राण रहित थइने पृथ्वीनी साथे निर्जीव पणे मळी जायछे, परंतु वादळांना गाज अवाजनी साथेंज पोताना मित्रनी रीझथी भींजाइने तेओ सजीवन थायछे, हाथी अंगनी भ्रांतीथी नमुंनो (आकार) चित्तमां लावीने खाडमां

घणी मंगावछे, पण स्वातिंथी बनावटी हाथणीने पकड्या वगर रहेतो नथी. लोटाना घडामांथी वस्तु ग्रहण करतां भले सपडाइ जाय, माथा उपर पडेला लाकडिगोना मारने सहन करे, अने घेर घेर रखडे, परंतु गोदगांनी मूठी खुल्ली थाय नहीं, निरंतर टेकधरीनें गोह (चंदनघो) खींच (मांना) नें ग्रहण करे, ते तूटो तूटीनें पडी जाय, पण शंका रहीत जेम होय तेम छूटो रहे नहीं, चोमासाना दिवसोमां वर्षादनी गर्जनाना प्रेमथी भरपूर थएलो मोर अवाज भरे, अने टाढ तथा तापने सहन करे, पण शियाळा तथा उनाळाना दिवसोमां आलाप (मधुर शब्द) नो उच्चार करेज नहीं. स्वातीना जलनें चाहनारो बपैयो विश्वासथी प्यासने सहन करे, उदास थइनें मित्रना नामनें लिये, परंतु बीजा पाणीनें पियेज नहीं. वसंत रुतु विति गयाथी कोयल कळा तथा प्रकाशथी हीन रहेछे, कूजन नहीं, पण बीजा पक्षीओना सोरबकोरनें सांभळेछे, परंतु पोतेतो बोल्या वगर दीन थइनेंज बेठी रहेछे. चंद्रमानी साथे चकोर पक्षीनी एवी लगनी लागीछे के, ते पोतानां नेत्रोने किरणो सामेज राखी रहेछे, अने उज्वल प्रकाश करनारा सूर्यने पण मंद जाणीने पोते मंद थइ रहेछे, परंतु तेना सामे आंख्योथी जोतुंज नथी. कपोत पक्षीने उड्डाडी करीने कपोतनीने (होलीने) हाथमां पकडीराखे, तो ते कपोत पोतानी गोल गफ्रदाढ गयेली जाणीने तेना प्रेमने लीधे पोते सारकरवा सारु अधीर थइने आकाशमांथी नीचें आवी पडे. भमरो प्रेमना हुलासथी मोहिला कमलमां जइने वसेछे, अने कमळ बीडाइ जायछे, त्यारे पोताना प्राणजवानुं कबूल करेछे, परंतु ते कमलनी पांखडीने कापतो नथी. पतंगियो दीवानी ज्योतीनो प्रकाश थतांज तेमां पडेछे, ने ते दीवाना सुंदर रंगमां रीझिने एक रंग थवा सारु अंगथी बळेछे. जिगरे करीने भमरने फूलना रसमां प्रेम लागेलो होयछे, ते छूटतो नथी ने नमतां नमतां पोतानी कडनो लंक वचेथी तूटी जायछे, पण ते क्षण

मात्र फुलना मधने तजतो नथी. सर्प मोरलीना मधुर अवाजना भेदथी खेद तजी देछे, ने पोताना वासरूप राफडाने विसारीने मोरलीना अवाजनी आशाथी गारडी पासे आवीने हाजर थायछे. घणुंकरीने एम विचारिये तो नागने पण पोताना मणी साथे प्रेम लागेलोछे, जेथी ते मणीने बाहेर मूकीने चारा वास्ते छेटे छेटे विचरेछे, पण मणीने पोताना जीवनरूप जाणीने ते उपरज ध्यांन राखेछे. चक्रीश पांखाळा सर्पनुं एवुं वृत्तांत छे के, ते प्रेमना नियमथी चंदनमां लुब्ध रहेछे, जेथी खांन पांनने तजेछे, परंतु रात दिवस चंदनना वृक्षनेज सेवेछे. जुराफ पक्षियोनां नर मादाना अंगमां रहेला आंकडानी ग्रंथीनो दोरो तूटीने जूदो पड्या पछी, फरीने पाछो जोडातोनथी, जेथीकरी तेओ एकबीजा सामुं जोया करे अने प्रितीनी रीतथी बन्ने मरे, परंतु जूदां रहेज नहीं. चंद्रमा साथे प्रिति राखनार एक सिंगीवृत्त जातिनो मच्छछे, तेने कर्त्रिम चंद्रनुं चिन्ह प्रत्यक्ष देखाडवाथी, चित्तमां तेने साचो चंद्र मानी, पोताना शरिरने तुच्छ गणी ते मच्छ दोडी आवेछे. वळी माछलांने जलनीसाथे प्रेम होयछे,जेथी करी माछलु पाणीना कीनाराथी ज्यारे जूदु थायछे, त्यारे दीन थइने मरेछे, परंतु अनेक यत्न करवाथी के, दूधमां राखवाथी पण धीरजता धरतुं नथी. वळी प्रसिद्ध छे के, खावाना प्रेमथी जलचर प्राणियो चाली नीकळेछे, तेओ सूका पत्तना डरथीतो भागेछे, पण मच्छीमारे काटामां राखेला झेरवाळा पदार्थने चाहीने तेमां भराइ मरेछे. कस्तुरीना स्नेहथी अमर पोताना देहने दमेछे, ते बीजे ठेकाणे न नमतां पोताना मित्रना उपरज जइने जामेछे. हारन पक्षी रंजन थइने लाकडा साथे प्रेमनो नियम राखेछे, माटे ते लाकडुं जो घडीमात्र पगथी वेगळुं थायछे, तो ते पोताना प्राणने तजेछे. शंकरना वीर्यरूप पाराने स्त्रीनी साथे प्रेम लागेलो होयछे, जेथी स्त्री नजरे पडतांज ते पोताना निवासने छोडी, ने

...नीकळेछे. ...तो प्रचंड शब्द करीने उमंगथी तेने पछवाडे चाली नीकळेछे. ...कळ पथरनी साथे मोहने लीधे लोढाने प्रेमछे, जेथी पोते अचेत ...तां चेतनरूप थइ अंतरने छोडीने उडेछे, आ प्रमाण त्रण्ये लोकमां प्रसिद्धछे. कपूर तिखांथी अळगो बीजे ठेकाणे क्यांहांय जरूर रेहेतो ज नथी, तिखांरूप मित्रनी साथे मळेछे, त्यारेज ते प्रेमना धर्मने पाळीने ...छे नहींतो उडी जायछे. वळी आपणनी पेठे दूधने पाणी साथे स्नेहछे, जेथी करी ते पोताना मित्र पाणीने बळतुं जोइने तेना दुःखने लीधे पोते उभराइ जइने तापमां पडेछे. हंसने आम्रादि वृक्षोथी गीच्च स्नवाला मानसरोवरना किनारा साथे लीनताछे, माटे जो कदाचित् वियोग पामेछे, तो ते मरेछे, अथवा दूबलो थइ जायछे. वळी जरूर जाणवुं के, फुलना सुगंधने पवननी साथे प्रेमछे, जेथी ते पोताना ठेकाणा ...ने तजी पोताना मित्र वायुनी साथे चाली नीकळेछे, आ कामनी उक्ति ...छे, तेने साची मानवी. कुमोदानिये हर्शथी एवी टेक पकडीछे के, पोते निर्मल छतां केवळ चंद्रकांतीना आधारथीज जीवेछे, माटे ते प्रेमनी प्रतीतिने लीधे, दिवसे न प्रफुल्लित थतां रातनी वखते पोताना मित्रने जोइने निःशंक पणे खिली आवेछे. एवीज रीते सूरज साथे कमलने स्नेह छे, माटे जो सूर्य उगेछे तो पोतेपण अति आनंदथी खिली आवेछे, ने ...नथी उगतो तो, पोते पण मंद थइने बीडायुंज रहेछे. हवे छीपनी प्रीती-...नी स्वाति नक्षत्रने नीहारी जोइए तो, छीप समुद्रना पाणीथी बाहेर कीनारे आवी स्वातिना बुंदने ग्रहण करेछे. नर मादा मोति अथवा गोळी के वा-...ना फळानी एवी युक्ति छे के ते बीजे ठेकाणे वेचायछे, पण ध्यान क... ...आवी मळेछे. चकवा चकवी पोताना मित्र सूर्य साथे अलौकीक प्रीतीने एवो शेनथी नभावेछे के, दिवसेतो क्रिडा करेछे पण रात पडतां ज पोताना मित्रना अस्तने लीधे दीवानां बनी जायछे. मर्यादा पूर्वक ...थी समूद्रने आ चंद्रमा साथे स्नेहछे, माटे ते सूर्यना अजवाळामांतो-

घीरी रहेछे, पण चांदनीमांतो लेहेरयोने आकाश पर्यंत उछालेछे. माखियोने मधनी साथे स्नेह लागेलोछे, जेथी ते कुंद कुंद एटले जरा जरा रस लेइने मधपोडुं जमावेछे, अने जो ते मधपोडुं पडी जायछे, किंवा विखराइ जायछे, तो ते माखियो मरेछे, अथवा खेदथी दीन थइने फरेछे. हे! सागर एवीरीते अनेक प्राणियो पोताना इष्ट मित्रना प्रेमनी टेकथी विशेषे करीने एवां एवां अनेक कष्टोने सहन करेछे, आ प्रेमना नियमनुं विधान में महारी बुद्धि प्रमाणे कह्युंछे. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

एते आदि अनेकहे ॥ थर चर प्रेंम प्रसंग ॥
स्वभावीक तासे कहे ॥ मिळियत मिंत उमंग ॥ ५ ॥

अर्थ. एओने आदि दइने अनेक स्थावर जंगमनां प्राणियो प्रेमना प्रसंगवाळांछे, जेओ उमंगथी पोताना मित्रने मळेछे, तेनें स्वाभाविक प्रेम कहेछे. ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

सो भावीक कहाय ॥ बरनें सो सागर सुनों ॥
उपजत आपहि आप ॥ कुळ म्रजाद जाकों नही ॥ ६ ॥

हे! सागर हवे जे भाविक प्रेम कहेवायछे, तेनुं वर्णन करुंछुं, माटे ते सांभळो जे पोतानी मेळेज आवीने उपजेछे, अने जेने कुळधर्मनी मर्यादा नथी. ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

संत प्रेंम परि ब्रह्म, ताप सीतहुं तन तावे ॥
स्वामि धर्मके सूर, प्रेंम परि अंग कटावे ॥
सती श्यांमके प्रेंम, अंग अगनीमे जारे ॥

यहै रीतमें प्रीत, सोय भावीक विचारे ॥
साधन विशेष सो सो सरे, चित अनुमांन दृढाइये ॥
सिद्ध वदंत सागर सुनों, प्रेंम नेंम यों पाइयें ॥ ७ ॥

अर्थ संत लोको परब्रह्मना प्रेमथी उनाळाना ताप अने शियाळानी टाढमां पोताना शरीरने तावेछे, शूरवीर युद्धाओ स्वामीना धर्म माटे रण उपर पोताना अंगने कपावेछे, सतीस्त्री स्वामीना प्रेमथी पोताना अंगने अग्निमां बाळेछे, एवीरीतथी ज्यांहां प्रिति होय त्यांहां ते भाविक प्रेमछे. एम विचारवुं पणुंकरीने विशेषे साधनो करवाथी आ भाविक प्रेम सरेछे, ए अनुमान चित्तमां द्रढावजो, सिद्ध कहेछे, हे? सागर सांभळो, के एरीते प्रेमना नियमने पामिये. ॥ ७ ॥

अथ पुनि सागरोक्त प्रश्न ॥ दोहा ॥

निराकार साकार यह ॥ दोऊ प्रेंम अनूप ॥
यहैं सिद्ध समता मिलें ॥ कीधों भिन्न सरूप ॥ ८ ॥

अर्थ सागर कहेछे के, निराकार अने साकार एवा बे प्रकारनो आ अनुपम प्रेम कह्यो, तो हे? सिद्ध एओ समान पणाथी मळतांछे, के एओना जुदा जुदा स्वरूपछे, ते कहो. ॥ ८ ॥

अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ छप्पय ॥

निराकार आराध, वेद वांनी निरधारे ॥
सिद्ध सिद्ध परिब्रह्म, दीप ज्वाला वत डारे ॥
तामें रूप साकार, ब्रह्म सोई ठहरावे ॥
यहै प्रेंम परमांन, सिद्ध इच्छावत पावे ॥
निरधार करो यह वातको, अब तुमकों न बतायगें ॥
सिद्ध वदंत सागर सुनो कहेंगें जब फिरि आयगें ॥ ९ ॥

अर्थ. निराकार प्रेमना आराधननो तो वेदनी वाणी निश्चय करेछे, माटे तेने साधवाथी तत्काल सिद्धिनी साथे परब्रह्म मळेछे, एटलुंज नहीं, पण दिवामांथी झाळ, अने झाळमांथी दिवो, एवा विवेकथी अभेद पणांने पामेछे, हवे जे साकार प्रेमना रूपने साधेछे, तेओ पाषाण तथा धातु विगेरेनी प्रतिमाओमां ब्रह्मने ठरावीने पूजेछे, तेओ पण प्रेमना प्रमाणने लीधे पोतानी इच्छा मुजब सिद्धि पामेछे, आ वातनो मोहोटो विस्तारछे, माटे हमणां तमने बतावशुं नहीं पण सिद्ध कहेछे के हे? सागर सांभळो के ज्यारे फरीने आवशुं त्यारे तमने कही बतावशुं. ॥ ९ ॥

॥ सोरठा ॥

सागर सिद्ध सु बांनि ॥ सुनत चिंत संशय मिटें ॥
बूझ्यो यहें बिधांन ॥ नभ अवाज उत्तर कहा ॥ १० ॥

अर्थ सिद्धनी वाणी सांभळतांज सागरना चित्तना संशयो मटीगया, एटले पछे आवुं वृत्तांत पूछ्युं के हे? सिद्ध! आ जे आकाशमांथी शद्ब थयो तेनो शुं! उत्तरछे. ॥ १० ॥

॥ अथ सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ सोरठा ॥

उच्छव शिव उच्चार ॥ कही सिद्ध पूरव कथा ॥
नाम धाम निर्धार ॥ सागर कलाप्रबीनको ॥११॥

अर्थ. शिवजीना कैलासमां थयेला शिवरात्रीना उत्सवनी वातनो उच्चार करीने सागर अने कळाप्रवीणनां नामो तथा ठेकाणाना निश्चय समेत, सिद्धे पूर्व जन्मनी सघळी कथा कहीं संभळावी. ॥ ११ ॥

अथ फुनि सिद्धोक्त ॥ छंद मनमोदक ॥

कियो आपने एह ऊपाय ॥ बुलाबे प्रबीनंकला आय ॥
उभैंही मिळें ईश आगार ॥ चलं मूरतं एक उच्चार ॥ विछो-

ज्ञांन बांनी वदी बाल ॥ वढी दंपतीकों ब्रहा ज्वाल॥ तुमें
दोउ धारी तजें प्रांन ॥ उमा याद लायें हरबांन ॥ उभै सि-
द्ध दाई कृपा कीन ॥ अवाजं प्रति उत्तरं दीन ॥ हमेंकों ति-
हीं उत्तरं काज ॥ उमाजू पठाये महाराज ॥ कही जो मरें
नं दुहू आप ॥ मिटेगो नही ईशको श्राप ॥ दुखं पाउगे
ओर ओतार ॥ यहें चितमें राखियें धार ॥ हमें जो बतावें
उपदेश ॥ सधो चंडिका त्यौंहि माहेश ॥ वहीसें अगें पा-
ओगे सिद्ध ॥ दिनांही दिनां प्रेमकी वृद्धि ॥ १२ ॥

अर्थ. हे? सागर आपे आ शिवालयना वास्तुनो उपाय कर्यो, अने
तेडुं मोकलीने कळाप्रवीणने बोलाव्यां, जेथी ते आहीं आव्यां त्यारे तमो
बन्ने शिवालयमां मळ्यां, पछी बे घडी सुधी एक बीजानें प्रेमथी वातोना
उच्चार थया, पण ज्यारे बीजी कोइ वाळाए वियोग थवानो वाणि कही
ते सांभळ्यांज दंपतीने विरहाग्निनो झाळो वधी पडी जेथी तमे बेयज-
णांये प्राण तजी दइये एवुं धार्युं, ते वखते उमयाजी शंकरनां वचनो
नी याद लाव्यां, एटलुंज नहीं, पण सिद्धि देनार जगदंबाए तमारा ब-
न्नेना उपर कृपा करीने आकाश वाणीना अवाजथी प्रत्युत्तर आप्यो,
अने हुंने पण ते उत्तर साटेज हे? महाराजा आपनी पासे मोकल्योछे,
अने कहुंछे के जो आप बन्ने जण मरशो, तो पण ईश्वरनो श्राप मटशे
नहीं, ने उलटा बीजा अवतारमां पण दुःख पामशो, आ वात चित्तमां
धारी राखजो, हवे हुं जे उपदेश बतावुं, ते प्रमाणे चंडिका तथा महेश्व-
रने साधो, ए साधनथी आगळ उपर सिद्धि पामशो, अने दिवसें दि-
वसें तमारा प्रेमनी वृद्धी थशे. ॥ १२ ॥

॥ सोरठा ॥

सिवा नई सुनाय. प्रति सागर पूरब कथा ॥

संशय संकल मिटाय, दंपति बरजी घात निज ॥ १३ ॥

अर्थ. सिद्धे रससागरने पूर्व जन्मनी कथा संभळावी दीधी, तेना मनना सघळा संशयो मटाडी दीधा, अने स्त्री पुरुषने जे आत्मघात करवानो विचार हतो, ते बंध पडाव्यो. ॥ १३ ॥

अथ सागरोक्त ॥ सोरठा ॥

कह्यो श्राप माहेश, प्रान घात बरजी तुमें ॥
कहो सिद्ध उपदेश, सोय मिटे प्रेम न घटे ॥ १४ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के हे! सिद्ध तमे महेश्वरनो श्राप कह्यो, अने प्राणघात करवानुं बरजावी दीधुं, माटे हवे उपदेश करो, के जेथी श्राप मटे, अने प्रेम न घटे. ॥ १४ ॥

अथ सिद्धोक्त उपदेश भेद ॥ छप्पय ॥

तुम प्रबीन प्रति अंग, रूप चंडीको ध्यायो ॥
सागरकी स्थापिता, नाम सागरा धरायो ॥
सागर तुम प्रति अंग, रूप ईश्वर वह धारें॥
सो प्रबीन स्थापीत, प्रबीने श्वर उच्चारें ॥
वह रूप ध्यांन धरि प्रेमसें, स्वप्नेश्वरी सु ध्याओगें ॥
तंत्रादि मंत्र यंत्रह क्रिया, स्वप्न सिद्धसें पाओगें ॥ १५ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के तमे प्रवीणना अंगने उद्देशीने चंडीना रूपनुं ध्यान करो, तथा सागरनां स्थापन करेल ते देवीनुं सागरा एवुं नाम धरावो, हे सागर तमारा अंगने उद्देशीने ते कळाप्रवीण ईश्वरना रूपने धारे, अने ते प्रवीणना स्थापित माटे प्रवीणेश्वर एवा नामथी उच्चारे, प्रेमथी ए रूपनुं ध्यान धरीने स्वप्नेश्वरीनुं ध्यान करशो, तो तंत्र शास्त्रना अनुक्रम प्रमाणे मंत्रोद्धार करी यंत्रमां क्रिया करवाथी सोंणानी सिद्धिने

मागशो. ॥ १५ ॥

अथ सागरोक्त ॥ छप्पय ॥

स्वप्नेश्वरी बिधांन, कोंन रुपिराज कहावें ॥
कोंन छंद उच्चार, कोंन देवता बतावें ॥
कोंन सिद्धि दातार, कहा नीयोग सु किजें ॥
कोंन न्यास प्रति अंग, ध्यान केसो सु धरिजें ॥
कहा मंत्र बीज अच्छर कहा, भिन्न भिन्न निज उच्चरें ॥
उपदेश आप कीजें कृपा, सो अराध हम अद्दरें ॥ १६ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के हे? सिद्ध आ स्वप्नेश्वरी देविना विधानना कया रुषिराज केहेवायछे, नें तेमां कया छंदनो उच्चार थायछे, अने तेना देवता कोणछे एटलुंज बतावो एम नहीं पण तेमां सिद्धि देनारु कोण, अने तेनो विनियोग (संकल्प) शारीते करवो, तेमां अंगना न्यास कया, अने केवुं ध्यान धरवुं, तेनो मंत्र कयो, अने बीजना अक्षर शुं शुं छे, ए सर्वे जुदुं जुदुं कही संभळावो एटलुंज नहीं पण जो आप कृपा करीने उपदेश करो तो ते आराधननो हुं आरंभ करुं. ॥ १६ ॥

अथ सिद्ध प्रत्युत्तर ॥ दोहा ॥

स्वप्नेश्वरी बिधांनको ॥ कहो जथा विधि ज्ञान ॥
सूछम साधन है यहें ॥ तरस सिद्धिको दान ॥ १७ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के हे? सागर आ स्वप्नेश्वरीना विधाननुं तमने हुं यथा विधिथी ज्ञान कहुंछुं ते सांभळो; आ साधनतो घणुंज सुक्षमछे, परंतु ते तरत सिद्धि देनारुंछे. ॥ १७ ॥

अथ सिद्धोक्त स्वप्नेश्वरी बिधान ॥ छंद पद्धरी ॥

अस्य श्री स्वप्नेश्वरी मंत्र ॥ रुपिराज पिप्पलादं सु तंत्र ॥

बृहती सु नाम छंद उचार ॥ स्वप्नेश्वरी सु देवता धार ॥
स्वप्नेश धारना देंन सिद्ध ॥ एतादि बानि विनियोग मध्य॥
रुष्यादि मंत्र न्यासांन ठांन॥ एही सरूप लाओ सु ध्यान ॥
धारना एक ध्यानं द्रढाव ॥ आदीक ईष्ट मिश्रिता भाव ॥
आसनं कंज हाटकं पाट ॥ सेतंग बास रूपं निराट ॥
जोती सु चंद मोती सिंगार॥ माधुरी बान पानं सु चार ॥
शुभ्रं सरोज दोऊ सु पांन ॥ एकैं अभैं एकं व्रदांन ॥
बामा सु बाम भाग लसंत ॥ इच्छा सु स्वप्न ईश्वरा कंत ॥
माहेश ज्ञान मुद्रा प्रकाश ॥ सामांन रूप सिंगार बास ॥
रुद्राक्ष दांम पानमें लेह ॥ कीजें सु मंत्र उच्चार एह ॥
प्रंनवं बीज कंजः बदंत ॥ जोरंत स्वप्न ईश्वरी अंत ॥
कारजं मे बदं फेर कीन ॥ ता अंत बन्हि जाया सु दीन ॥
एही सु मंत्र मात्रिका थप्य॥ कीजे अयुत ऐनादि जप्य ॥
जो जो चहंत कामना चिंत ॥ सो मास प्रत्य सिद्धी मिलंत ॥
धारंत ओर सिद्धी जु आस ॥ पावंत फेर दूसरे मास ॥
कीजिये दंपति ए सधंन्न ॥ होयगी जोगमाया प्रसंन्न॥१८॥

अर्थ. आ स्वप्नेश्वरीना मंत्रना तंत्र शास्त्रमां पिप्पलादनामे ऋषिराज कहेलाछे, अने तेमां बृहती एवा नामना छंदनो उच्चार थायछे, तेनां देवता तो स्वप्नेश्वरी देवीजछे एम धारवुं, हे! स्वप्नेश्वरी, धारणा सिद्धि देवावाळी, मारुं कार्य करो इत्यादि वाक्यो मांहे लावीने बिनियोग (संकल्प) करवो, पछी मूळ मंत्रथी ऋष्यादि तथा अंगुष्टादि न्यास करीने आवा स्वरुपनुं ध्यांन करवुं, एक धारणाथी ध्यानने द्रढावीने इष्टदेवनी साथे मिश्रित भाव करवो, एटले देवो भूत्वा, देवं यजेत्(देव थइने देवनुं य-

जन करवुं) सोनाना जडित्र सिंहासन उपर पद्मासन करीने बिराजेलांछे, जेणे अंगमां श्वेत वस्त्र पेहेरेलांछे, अति सुंदर जेनुं रूपछे, शरद पुनमना चंद्रमा जेवी जेनी कांतिछे, अने अंगे मोतीना शणगार धरेलाछे, जेनी मधुर वाणी अने चार हाथछे, तेमां बे हाथमांतो धोळा रंगनां कमळ राखेलांछे, अने त्रीजा बे हाथछे तेमांथी एकमां अभय, अने एकमां वरद, एवी बे मुद्राओ धारण करेलीछे, पोते वाम भाग तरफ शोभेछे, अने जमणी तरफ ते स्वप्नेश्वरीना पति महादेव ज्ञान मुद्राथी प्रकाश करी रह्याछे, ते बन्नेनां शणगार तथा वस्त्रथी सरखांज स्वरूपछे; एवुं ध्यान धर्या पछी रुद्राक्षनी माळा हाथमां लइने आ मंत्रनो उच्चार करवो, पेहेलो प्रणव एटले ॐकार लेवो, पछी कंजा नामनुं बीज कहेवुं, एटले श्रीं बीज लेवुं, तेने अंते स्वप्नेश्वरी एवुं वाक्य जोडवुं, फरीने कार्यं मे वद एटला अक्षरो मेळववा, तेने अंते अग्निनी स्त्री स्वाहाने देवी एटले ॐ, श्रीं, स्वप्नेश्वरी कार्यं मे वद स्वाहा एवो मंत्रोद्धार थयो, ए मंत्रथी मातृका विगेरेनुं स्थापन करीने रात्रिनी वखते दश हजार मंत्रनो जप करवो, जप करनार साधक, पोताना चित्तमां जे जे कामना चाहाय ते ते कामना संबंधी एक मासे सिद्धि मळे, अने जो बीजीवार सिद्धि थवानी आशा धारे तो ते फरीने बीजे महिने सिद्धि पामे, तमे स्त्री पुरुष बन्ने आ साधन करो ए करवाथी जोगमाया प्रसन्न थशे. ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

यथारीत साधन कह्यो ॥ स्वप्नेश्वरी महेश ॥
सिद्ध दह्यो सागर लह्यो ॥ एह मंत्र उपदेश ॥१९॥

स्वप्नेश्वरी तथा महेश्वरनुं यथा विधिथी साधन कह्युं, पछी एज मंत्रनो उपदेश सिद्धे आप्यो अने सागरे ग्रहण कर्यो. ॥ १९ ॥

अथ पुनि सिद्धोक्त प्रत्युत्तर ॥ चोपाइ ॥

सागरसें जु कहन सिध लागे ॥ यह उपदेश सिद्धहें आगें ॥ आपें यहें साधना कीजें ॥ कला प्रबीन पत्र लिखदिजें॥ वहें इष्ट साधना बनांवे ॥ सोऊ सिद्धि आप वत पावे ॥ सागर कही सिद्ध प्रति बांनी ॥ हमें फेर मिलवेकी ठांनी॥ कहो दोउ किहि रीत मिलेंगें ॥ बिरह ज्वाल दिन किते जलेंगें ॥ यहै बात सुनि सिद्ध सु बोले ॥ सबें भेद तुमसे हम खोले ॥ यह उपाय तुंमने जु बनाया ॥ दरस मिंत दो बेरहि पाया ॥ अब उपाय उनसें जु चलेंगें ॥ आप जाय उहि ठोर मिलेंगें ॥ २० ॥

अर्थ. सिद्ध सागरने कहेवा लाग्या के आ उपदेश तमने आगळ उपर सिद्धि दायक थशे, माटे आप आ साधन करो अने कळाप्रवीण उपर पत्रमां लखी मोकलावो एटले एपण इष्ट साधन करे अने ते पण आपनी पेठेज सिद्धिने पामे, त्यारे सागरे सिद्धने एवी वाणी कही के, हे? महाराज अमे फरीने मळवानुं ठरावेलुंछे, माटे बन्ने कइरीते मळशुं, अने आ विरहाग्निनी झाळोमां केटलाक दिवस बळशुं, ते कहो, एवी वात सांभळीने सिद्ध बोल्या के तमारी पासे हुं सघळो भेद प्रगट करुंछुं; आ जे तमे उपाय कर्या तेथी मित्रनां दर्शनने बेवार पाम्या, हवे एनाथी उपाय चालशे एटले आप जइने ते ठेकाणे मळशो. ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

आपें उन उपाय परि ॥ जाय मिलोगे मिंत ॥
बतियां बनिहे जो रचहुं ॥ कछु चतुराई चिंत ॥ २१ ॥

अर्थ. एना करेला उपाय उपरथी आप जइने मित्रने मळशो खरा पण जो कांइक चित्तनी चतुराइ रचशो तो वातचित करवानुं बन-

ॐ. ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

दरसोगे पूरन दशा ॥ फुनि सागर परवींन ॥
चतियां वने कैं नांबने ॥ ज्यों जल झंखत मींन ॥ २२ ॥

अर्थ. पछी सागर तथा प्रवीण ए तमो बन्ने जण विरहनी पूरण दशाथी भरपूर देखाशो अने वातचित करवानुं तो बने अथवा न बने पण पाणी-ने जेम मांछलां झंखे तेम एक बीजाने झंखशो. ॥ २२॥

॥ सोरठा ॥

पैं एते पर आप ॥ साधन करिहो दोउ जन ॥
ताहि सिद्धि परताप ॥ सुपन मिलोंगे मास प्रति ॥ २३ ॥

अर्थ एटला उपर आप बेय जणा साधन करशो त्यारे ते सिद्धिना प्रतापथी एक एक मासे स्वप्नमां मळशो. ॥ २३ ॥

॥ सोरठा ॥

दोउ सम्रति सोय ॥ जो सुपने चरचा चले ॥
उर अभिलाष सु होय ॥ इहि बिधि पूरन उभय जन॥२४

अर्थ. सोणामां जे चर्चा चालशे तेनी बेयने स्मृति रेहेशे अने बन्ने आपना हृदयमां जे अभिलाषा हशे ते एवीरीते स्वप्नद्वारा परिपूर्ण थशे. ॥ २४ ॥

यातें यहै ब्रतंत ॥ उन प्रती लिख पठयो सबे ॥
धरें धीर वह चींत ॥ हमकों बिदा सु दीजियें ॥ २५ ॥

अर्थ. माटे आ सघळुं वृत्तांत ए प्रत्ये आप लखी मोकलावो एटले ए पोताना मनमां धीरज धरे, हे? सागर हवे अमने विदायगिरी आपो. ॥ २५ ॥

तब सागर तिहि बेर ॥ अरज कीन सिधसें यहें ॥
फुनि कब मिलिहो फेर ॥ कहो जोग निश्चै सु करि ॥२६ ॥

अर्थ. एवां वचन कह्यां त्यारे सागरे तेज वखते भावीरीते सिद्धने अरज करी के, हे! योगेश्वर, आप फरीने पाछा क्यारे मळशो? ते निश्चय पूर्वक कहो. ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध कहें मिलिहें सही ॥ कह तहकीक करंत ॥
फल पक्के तरुसें तबें ॥ आपहि आप गिरंत ॥ २७ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के, हे! सागर, काइक उपाय करवाथी पाछो हुं मळीश खरो, ए हुं निश्चयपूर्वक कहुंछुं, केमके ज्यारे फल पाकेछे त्यारे ते पोतानी मेळेज खरी पडेछे. ॥ २७ ॥

एती चरचा चलतहीं ॥ सागर सहर सिधाय ॥
प्रभानाथ निज पथ भये ॥ यह उपदेश बताय ॥ २८ ॥

अर्थ. एटली चर्चा चालतां आज्ञा लइने सागर शेहेरमां गया, अने ए उपदेश बतावीने प्रभानाथ पोताने पंथे पळ्या. ॥ २८

॥ सोरठा ॥

सागर भये प्रभात ॥ सब विधि लिखी प्रवीन प्रति ॥
रहे तहां वह रात ॥ फुनि ग्रह आये कूच करि ॥ २९ ॥

अर्थ. प्रभात थयुं एटले सागरे सघळी विधि प्रवीण प्रत्ये लखी मोकलावी, अने ते रात त्यांहां रह्या पछी बीजे दिवसे कुच करीने घेर आव्या. ॥ २९ ॥

॥ गाहा ॥

सागर सिद्ध संवादं ॥ स्वप्नेश्वरी विधान उपदेशं ॥

सत्तालीशभिधानं ॥ पूर्न प्रवीन सागरो लहरं ॥ ३० ॥

अर्थ. सागर तथा सिद्धना संवादना प्रसंगमां स्वप्नेश्वरीना उपदेश संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी सडतालीशमी लेहेर संपूर्णथइ. ॥ ३० ॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे रससागर सिद्ध संवादे स्वप्नेश्वरी विधानोपदेशो नाम सप्तचत्वारिंशतिमो लहरं

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने नृपदुर्ग पत्तने नृपचक्र चूडामणी राजाधिराज राजेंद्रश्री बावाजीराज राज्याश्रित अदाभाइ भट्टात्मज कवि रणमल्ल विरचित रणमाळ प्रबोधिनी टीकायां सप्तचत्वारिंशतिम स्तरंगः समाप्तः ॥ ४६ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद शार्दूलविक्रीडित ॥

ज्वालाओ विरहाग्निनी प्रगटतां, व्याधी वधी जंगमां॥
एकांते लखि पत्र एक प्रविणे, पोचाडियो संगमां ॥
वांची सागर प्रेमना प्रणयथी, दाझ्या अती अंगमां ॥
अडतालीशमि लेर ते प्रथमथी, केशे रुडा रंगमां ॥

॥ अथ रससागर कलाप्रवीन विरह पत्र प्रसंगो यथा ॥

॥ सोरठा ॥

सागर सिध उपदेश ॥ पठयो पत्र प्रवीन प्रति ॥
साधन शक्ति महेश ॥ करन लगे दंपति प्रनय ॥ १ ॥

अर्थ. सागरे सिद्धे आपेला उपदेशनुं विधान लखीने ते पत्र प्रवीणने मोकलावी दीधो, जेथी ते स्त्री पुरुष बन्ने स्नेहथी शिव शक्तिनुं आराधन करवा लाग्यां. ॥ १ ॥

पाती विरह बनाय ॥ उभय लिखत एकेक प्रति ॥
उर आसय दरसाय ॥ सो बरनन कीजे सबै ॥ २ ॥

अर्थ. वियोगना पत्रो बनावी तेमां हृदयना अभिप्रायो दरसावीने बन्ने जण एकबीजां उपर लखी मोकलावेछे, तेनुं सघळुं वर्णन करुंछुं. ॥ २ ॥

॥ अथ तत्र कलाप्रबीन बिरह पाती बर्नन बिभावनाको दूसरो भेद अलंकार ॥ सवैया ॥

जादिनहिंसें कटाच्छ मिलि दुहु, तादिनसें बरनी हम भादू ॥ चिंत भयोहे समीरके पत्र ज्यों, अंग चढयोहे खरा-द खरादू ॥ आप इलाज करो नकरो तउ, कोंनपें जाय कहुं फरियादू ॥ सागर मिंत बुरो जिन मांनिये, जानतहों अखियानमें जादू ॥ ३ ॥

अर्थ जे दिवसथी बन्ने कटाक्ष मळ्यांछे, ते दिवसथीज अमारी पांपणोमां भादरवो वसेछे, अने चित्ततो पवनें कंपावेला पत्र सरखुं थयुं-छे, अंगमां दुःखने लीधे काटनी पेठे पिलो रंग चडी गयोछे, आप उपाय करनारा थइने उपाय न करो, त्यारे पछे कोनी पासे जइने फरि-याद करुं, हे! मित्र सागर, बुरुं मानशो नहीं, पण हुंतो एम जाणुंछुं जे आपनी आंख्यो मांज जादुछे. ॥ ३ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

बीर चढे चिहुं ओर उडग्गन, कोक द्विरेफनके बिखरे सुख खेंचनराच मरीच चलावत, खंडित पंकजके ब्रजके मुख ॥ काम हरोल चलेहे निशान सु, बाम बिजोगिनकों दुखरे दुख ॥ सागरजु महाराज बिनां यह, आज कहा द्विजरा-ज कियो रुष ॥ ४ ॥

अर्थ. चारे तरफ तारागणरूपी शूरवीरो चढ्या तेणे चकवा चकवी

तथा भमराओनां सुख विखेरी नाख्यां, किरणोरूपी बाणोने खेंचीने चलावेछे, तेथी कमलना समुदायोना सुखने खंडित करी नाख्यां, वळी कामदेव रूपी निशानदार निशांनलइने हरोलथी चालेछे, तेथी वियोगी स्त्रीने तो दुःखनुं दुःखज उपजावेछे, महाराजा सागर विना आज आ ब्राह्मणोना राजा चंद्रमाने शुं, रोष कर्योछे. ॥ ४ ॥

अथ विभावनाको दूसरो भेद अलंकार ॥ सवैया ॥

तादिनसें विसरे न हमें फिर, जा दिनसें तुम चित चढेहो
मूरति मिंत बिलोक कही, हियमें कलमीं चितराम कढेहो॥
नीर भरेसें झरेसें रहे द्रग, मोंन करेसें जियामें गढेहो ॥
सागर एह सुनो अरजी तुम, मोहनी मंत्र कहांते पढेहो ॥ ५ ॥

अर्थ. जे दिवसथी तमे चित्तमां चड्याछो, ते दिवसथीज फरीने अमनेतो विसरता नथी, अने मित्रनी मूर्त्तिने जोवानुं कहियेतो तो आ हृदयमां चितारानी कलमना चितरामणनी पेठे भळखाइ रह्याछो, आंखोमां पाणी भराइ आववाथी के, झरवाथीतो आंखोमांज रहोछो, अने मोन वृत्त धरवाथीतो जीवमां ठसाइ रह्याछो, हे! सागर मारी आ अरजी सांभळो के, तमो आवा मोहनो मंत्र क्यांहांथी भण्याछो. ॥ ५ ॥

अथ एकावली अलंकार ॥ सवैया ॥

मेरें लागि रसनां जक सागर, चातुक ज्यों घन बुंदन टेरें ॥
टेरें निना मनु कोक इकें इक, माधुरताइ मधू गति हेरें ॥
हेरें चकोर शशि ज्यों द्रगें मग, मिंत अहो मिलिहो कब फेरें ॥ फेरें अनंगन चक्र चढ्यो मन, धीरज प्रांन धरें कह मेरें. ॥ ६ ॥

अर्थ. हे? सागर वपैयो जेम मेघना बुंद वास्ते पोकारेछे, तेम मारी जिभे तमारा नामनी जक लागीछे, एटलुंज नहीं पण रातनी वखते जाणे चकवो चकवी एक बीजानें पोकारतां होयनै! तेम पोकारुंछुं, अने भमरो जेम मधुरताने हेरे तेम हेरुंछुं, चकोर पक्षी जेम चंद्रमाने जुवे तेम नेत्रथी तमारा मार्गने जोया करुंछुं, तो अहो हे? मित्र हवे फरीने क्यारे मळशो, आ कामदेवना चक्रने फेरें मारुं मन चडयुंछे, माटे मारां प्राण शुं, धीरज धरे. ॥ ६ ॥

अथ न्यून रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

सागर सिंधु भरयोइ रहे व्रह, मंद्र नगेंद्र ठईहें रही ॥
दानव देव सनेह त्रपा अहि, नेत उसासन एंच ग्रही ॥
जीवन जंतु त्रसें सिगरे सुख, रैंन दिनां झक झोरतही ॥
तेरहु मिंत मिलेंगें कबें, अजहुं तो हलाहल एक भही ॥७॥

अर्थ. हे? सागर, हृदयरूपी समुद्र भर्योछे तेमां विरहरूपी मंदराचळ पर्वत आवीने ठसाइ रह्योछे, अने स्नेह तथा लाजरूपी देव दानवो नीसासा रूप वासुकी नागनां नेत्रां पकडीने खेंचेछे जेथी जीवनरूपी सघळा जीवजंतुओ त्रास पाम्याछे, सुखरूपी पाणीने रात दिवस वलोववाथी हे? मित्र तेर रत्नोतो कोण जाणे क्यारे मळशे पण हजीतो एक हळाहळज (झेर) मळ्युंछे. ॥ ७ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

हे हिय पंजर बीच परेसो, कोउ प्रकार न पावत उड्डन ॥
धीरज तंदुलको चुगबो अरु, अंग बनें नवरंग दिनां दिन॥
श्रोनतको जल पीबो करें वह, कीबो कलोल समारिकें पंखन ॥ सागर ज्यों ज्यों चढें चित ध्यानसु, त्यों त्यों फि-

रैसो करे शुक यामन ॥ ८ ॥

अर्थ. हृदयरूपी पांजरानी वच्चे पड्यो रहेछे, ते कोइ प्रकारे उडवा पामतो नथी, ने धीरजतारूप चोखा चुगवाथी दिवसे दिवसे जेनुं अंग नवा रंगवाळुं बनेछे, ते लोहीरूप पाणीने पीधाज करेछे एटलुंज नहीं पण संकल्प विकल्परूप बन्ने पांखो पसारीने कलोल कर्या करेछे, हे! सागर, जेम जेम चित्तमां ध्यान चडेछे, तेम तेम आ मनरूपी पोपट फर्या करेछे. ॥ ८ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

रससागर सागर रूप भरे, नौंका करि खेवट चाह हकारी ॥ छद्मी मधि रावरे नैंन मिले सु, मिलावत फंद कटाच्छ-की डारी ॥ हलकें भट प्रेम परें उनमें, छलकें जल आय समीप किनारी ॥ रक्तताके पताके चढाय दिये, अंखियान-में आंन फिरिहैं तिहारी ॥ ९ ॥

अर्थ. समुद्ररूप रससागर रसथी भरपुर भरेलाछे, तेमां नेत्ररूपी नौकाने चाहना रूप वाण हांकनार खलासिगे हंकार्युं त्यांहां मध्य दरियामां आपना आपना नेत्ररूपी कपटी चांचिया (दरियाइ चोर) मळ्या तेणे मळतां वेंतज कटाक्षरूपी पाशलो नाख्यो पछी हलकेलो प्रेमरूपी सुभट पूर्ण आवीने कुदी पड्यो अने छलकेलुं जळ किनाराना हद सुधी आव्युं पोतानुं; लाल तंतुओनी रक्तताना पताका चडावी दीधा जेथी आ आंखोमां तमारी आण फरी गइ छे. ॥ ९ ॥

॥ अथ दृष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

मायुरनाइ प्रभंजनसें मधु, कंजन जैसें लगें पखियां ॥ ता-ल मुराल चकोर ज्यों चंद, अनंद ज्यों इंद्र घटा सखियां ॥

धारन बातज गांन उचार, बिहारज्यों बारिनसें झखियां ॥
भाननकी दुति कोक ज्यों सागर, योंलगि आननसें अंखियां
॥ १० ॥

अर्थ. पवननी साथे जेम सुगंध लागे, कमलनी पांखडियो साथे जेम भमरो लागे, मानसरोवर साथे जेम हंसनुं मन लागे, चंद्रमा साथे जेम चकोर पक्षीनी नजर लागे, वर्षादनी घटा साथे जेम मोरने आनंद लागे, गायनना स्वरो साथे जेम हराणिनुं ध्यान लागे, पाणी साथे जेम माछलियो ने रम्मत लागे, सूर्यनी कांती साथे जेम चकवानी द्रष्टि लागे तेमज आपना मुख साथे आ आंख्यो लागीछे. ॥ १० ॥

अथ समस्त लाटानुप्रास अलंकार ॥ सवैया ॥

द्वे द्रग मेरेसु चेरे बने रहे, तेरेही पंथके हेरे करें नित ॥
घेरे रहें बिरहानलके गन, झेरे रहें असुवांन घरी प्रत ॥
रेरे सनेही जरेरे खरे दुख, प्रेम छरे उभरेरे भरे रत ॥
नेरे बसोन घनेरे भये दिन, येरे करेरे भयेहो कहा चित ॥
॥ ११ ॥

अर्थ. माहारां बन्ने नेत्रो दासरूप बनीने हमेशां तमारा पंथने हेर्या करेछे, विरहरूपी अग्निना समुदायथी घेरायां रहेछे, अने घडिये घडिये आंसु झेर्या करेछे, हे? स्नेही खरेखरा दुःखथी बळेछे खरां पण प्रेमनी छोळयोथी उभरायां अने भरायांज रहेछे, घणा दिवसो थया परंतु पासे आवीने वसता नथी तो अरेरे हे? मित्र दिलना आवा कठण शुं थयाछो ॥ ११ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

सास उसास डगे सगरी कसि, तंतसु नाभि परांनस डो

रें ॥ मिंत जरि परलगी गुनकी चित, की चकरी सुफिरी चिहु ओरें ॥ हेंद्रगरी सफरीसें फिरे रसना फरकी श्रुति आंकन जोरें ॥ सागर सापनसी सुरता जुरि, नेंन घरी प्रति देन टकोरें ॥ १२ ॥

अर्थ. तरुणी नाभीनी साथे कसी बांधेला प्राणरूपी दोराना योगथी अनुक्रमे प्रगटेला प्राण तथा अपान वायुमांथी उपजेला सास तथा उसासा मांहीं डगेछे, (हलवा करेछे) ने मित्रना गुणोथी जोडायेली पांखडीओवाळी चित्तरूपी चकरी (चक्र) चारे तरफ फरवा लागीछे, तेने लीधे नेत्र नेभो माछलियोनी पेठे फरेछे, ने जीभ फरकी फरकीने कानना आंकडा जोडेछे, एवीजरीते हे? प्रियमीत्र सागर, सर्पणी (नागणी) सरखी सुरता नेत्ररूपी घडियाळ प्रत्ये जोडाइने घडिये घडिये टकोरा (डंका) दीधा करेछे. ॥ १२ ॥

अथ भाविका लंकार ॥ कवित्त ॥

नाह मेरे येरे आवें, मेंळ मेरे मेरे करि, डेरे नेरे के दिन व, पाइके पठाओगे ॥ केसर गुलाब वारि, गंध सार, घन सार, मान्ना सगार मेरे, भाजन भराओगे ॥ गावन बजावनके, भूषन सुवासनके, रीझन रीझावनके, साज बनवाओगे ॥ मन मनवारे मग, हेर हेर हारे द्रग, सागर दुलारे प्रान प्यारे कब आओगे ॥ १३ ॥

अर्थ, नाहनाथी भेगा नोकरोने मेहेर करीने माहारे मेहेलें आवे ... आनन्द करे दिवसे हुं आवुंछुं एवी वधामणी देवाताह मोकलाशो. केसर, गुलाबजल, मलियागिरी चंदन, कपूर, अने मदिरानां पात्रो माहारे घेर त्यारे भरावशो, गावा, बजाववानां, अने सारां सारां

घरेणां ने वस्त्रोनां अने रीझवा तथा रीझाववानां तरेह तरेहनां साहित्यो क्यारे वनावशो ! हे ? मदमतवाळा, मारगने हेरी हेरीने मारां नेत्रो हारी गयां छे, माटे हे सागर हे ! दुलारा, हे ! प्राण प्यारा; क्यारे आवशो?॥१३॥

अथ परि संख्यालंकार ॥ सवैया ॥

आनन नां दरस्यो तोकहांहें, निरंतर संचर देखत नेनां ॥ बाहिर जो परसो न कबी तो, सबी उर भीतर मींत रहेनां ॥ आमिलिहो, नमिलोतो भले, रसना तव नाम लग्यो बिसरे नां ॥ सागर ज्यु समझो न इते पर, तो बहुरों तुमसें कह केनां ॥१४॥

अर्थ. मुख न देखायुं तो शुं थयुं, पण निरंतर नेत्रोतो तमारा रस्ताने जोया करेछे, जो कदी बाहेर क्यारेय स्पर्ष करो नहीं तो शुं थयुं, पण हृदयनी अंदर मित्रनी छबी रहेजो, आवीने मळो, किंवा न मळो, तो भले, पण जीभे तमारुं नाम लाग्युं छे; ते वीसरतुं नथी; हे! सागरजी एटला उपरथी समजो नहीं, त्यांरे पछी तमने विशेष शुं कहेवुं ॥१४॥

अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

जाम घरी पल धाम नहीं सुख, दाम लहे तुम नाम लिये ॥ बेदरदी करि खेद हने सर, भेद कलेवर छेद किये ॥ सागर प्रीतकि रीत तजो तब, मिंत कहो केहि रीत जिये ॥ धारहियें इत छारहियें, कह हार हियेंपर आ रहियें ॥१५॥

अर्थ. पहोर, घडी के पळमात्र आवासमां सुखचेन पडतुं नथी; जेथी हाथमां माळा लईने तमारुं नाम लीधा करीए छिये. (बेदरदी) दरद विनाना कामदेवे मने खेद पमाडी छे. ने बाण मारी मारी शरीर भेदीने कलेजामां सोंसरा छेद पाडया छे, हे! सागर ज्यारे प्रितनी रितने तजो,

म्हारे दर्शी कहो के हे! मित्र शी रीते जीविये. आ वात मनमां धारीने अमने लगाडीने रहो, किंवा हैया उपर हारनी पेठे आवीने रहो. ॥२५॥

अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

आगें मोहोवत की हमसें तुम, पीछें निगाह करी न दगा-दे ॥ कैसें करार रहे दिल भीतर, दारु किया न जहेर पिवा-दे ॥ जानसें जान रहेंगे तबी जब, भेज हुगे फुरमान लि-खादे ॥ आइ निशा उतरेगि नहीं अब, सागर प्रेम सरा-बसें जादे ॥ १६ ॥

अर्थ. पहेलां तो तमे अमारी साथे महोबत करीने पछी दगो दईने निगाह करी नहीं, तो दीलनी अंदर शी रीते करार (सुख) रहे! अरे दारु करीने झेर न पीवरावी द्यो, जाण्या प्रमाणे जीवतो त्यारे रहेशो के ज्यारे फरमान लखावीने मोकलावी देशो, हे सागर सरापथी (दारुथी) जाने आवेलो प्रेमनो निशो हवे उतरशे नहीं. ॥ २६ ॥

अथ काव्य लिंग अलंकार ॥ सवैया ॥

भोमन व्योमन धोम उठे धग, रोमन रोमनसें जग जारे ॥ गात सिरात नहीं दिन रात सु, बात न जात कछू बिसता-रे ॥ भीतर चीतर मीत रह्यो सो, प्रतीत न थीत रहे जिय धारे ॥ नागरताइ कहा करिये, चितकी तुम सागर जानन हारे ॥ १७ ॥

अर्थ. पृथ्वी अने आकाशमां अग्नि धखी उठ्यो छे, ते रुंवाडे रुंवाडेथी जागृत थईने बाळेछे, रात के दिवस शरीर ठंडुं पडतुंज नथी, आ दुःखनी वात कांइ विसारी जाय एवी नथी; परंतु हृदयनी मायली कोर चित चितराई रह्या छे; तेनीज प्रतितीथी केवळ जीवने स्थिरपणे धारी रहीए

छिये; माटे हे! सागर चतुराई शुं करिये, चित्तनी वातने तो तमे जाणनारा छो. ॥ १७॥

पुनः ॥ सवैया ॥

नेन झरे जल, मेन भरे उर, रेन दिनां सुख चेन नहीं तन॥ आस्य विलोकनके बिसबासनि, दीरघ सासहि लेत छिनां छिन ॥ मंस दह्यो शशि, अंश रह्यो रत, हंस बसे सो सनेहकि साधन ॥ जाय कहो इत लाय लगी, तुम आयसको-तो बचे बिरहीजन ॥ १८ ॥

अर्थ. नेत्रमांथी आंसुनां जळ झरेछे, हृदयमां कामदेव भराई रह्योछे, जेथी रात दिवस शरीरे सुख चेन पडतुं नथी, तो केवळ मोढुं जोवाना विश्वासथीज लांबा श्वास क्षणे क्षणे लहिये छिये मांसतो चंद्रमायेज प्रकाश करीने बाळ्युं छे, अने लोहीतो अंश मात्रज रह्युं छे, पण जे हंस (जीव) वसेछे; तेतो केवळ स्नेहना साधानथीज वसेछे, माटे कोई जईने कहो के आंही लाय लागी छे; जो तमो आवी शको तो विरहीजन बचे. ॥ १८॥

अथ अपन्हव अलंकार ॥ सवैया ॥

बाजको राज विराजे, बजीर कुहानकि आन फिरी हे धरामें॥ न्याय करा सकरा झगरा दो, जुरा लगरा हे अमीर सरामें॥ बेरी कुही कुटवाल बने अरु, बास त्रमंचि कुजाकगिरामें॥ सागर मित यहे सिगरे मिल, सारस मारि धरी पिंजरामें॥१९॥

अर्थ. बाजपक्षीनुं राज विराजे छे, अने पृथ्वीमां कागडारूपी वजीरनी आण फरी गई छे, शकरो, तथा झगरो ए बे न्याय करनारा छे, अने जुरा तथा लगरा ए बे पक्षियो अमिरशाळामां बेसेछे, बेरी तथा कुही ए

नगी कोटवाळ बन्या छे, अने भास तथा तुरमचीपक्षी एओ शिपाईगिरीमां छे, हे! मित्र सागर ए सघळांओए एकठां मळीने आ सारसीने मारीने पांजरामां केद करी राखी छे. ॥१९॥

समरूपक अलंकार ॥ दोहा ॥

उर अनार, चरखी सु चित, फूलझरीसे नेन ॥
गल हलकी आतस समर, सुरत हवाई सेन ॥ २० ॥

अर्थ. हृदय रूपी दाडम (भंभोटीओ) चित्तरूपी चरखी, नेत्र रूपी फूलझरणी, हल्क एटले उत्कंठा रूपी जामगरी, काम रूपी अग्नि, अने सुरतनी ईशारत रूपी हवाई बनी छे.॥२०॥

अथ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥दोहा॥

निश दिन द्रग बरसत रहे, सरसत रहे सनेह ॥
तन परसत तरसत रहे, मानहु चातुक मेह ॥ २१ ॥

अर्थ. रात दिवस आंखो तो बरसतीज रहेछे; ने स्नेह पण रसने लीधे सरस थतोज रहेछे. शरीर स्पर्श करवा माटे तृष्णाथी आतुर रहेछे, ते मानो के बपैयो मेघने चाहतो होय नहीं! ॥ २१ ॥

अथ विनोक्ति अलंकार ॥ दोहा ॥

केसर जावक मलय घन, मंजन मिटेज्युं नाग ॥
मिलन बिना नांहिन मिटे, मिल बिछुरनको दाग ॥२२॥

अर्थ. केसर, अळतो, मळयागिरि चंदन अने कपूर वडे मंजन करवाथी नाग एटले अंजननो डाग मटे, पण मळ्या पछी जे विछडवानो (वियोगनो) डाग पड्यो होय; ते मळ्या विना मटेज नहीं. ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

समर पारधी भमर सर, बिरह झपट किय बाज ॥

सागर नागर हो निपट, याको करहु इलाज ॥२३॥

अर्थ. कामदेव रूपी पाराधी, भमरा रूपी बाणने फेंके छे. अने विरह रूपी बाज झपाटा मारे छे. तो हे! सागर तमे घणा चतुर छो, माटे एनो इलाज करो. मतलब के निपट नागर जे कृष्न तेणे जेम होलानो बचाव कर्यो हतो तेम करो ॥ २३ ॥

॥ गाहा ॥

बिरहा पत्र प्रबीनं, लिखि पठइत सागरं प्रत्ते ॥
अठतालिश अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥२४॥

अर्थ. एवी रीते विरहनो पत्र लखीने प्रवीणे सागर प्रत्ये मोकलाव्यो ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी आ अडताळीशमी लहेर संपूर्ण थइ॥२४॥

इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे कला प्रबीन विरह दशा पत्र भेदो नाम अष्ट चत्वारिंशतिमो लहरं ॥४८॥

इतिश्री प्रवीण सागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां अष्ट चत्वारिंशतमस्तरंगः समाप्तः ॥ ४८ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखा बंध ॥ दोहा ॥

दशा लखी पत्रांतरे, राखी मन निज पेर ॥
प्रविणे निधि प्रति मोकली, उनपंचासमि लहेर ॥

अथ रससागर विरह दशा पत्र भेदो यथा ॥ सोरठा ॥

सागर पत्र अपार, इहि बिधि लिखित प्रबीनके॥
बांचत बिरहा झार, बढी दशा बरनों वहे॥ १ ॥

अर्थ. एवी रीते प्रवीणना लखेला घणा पत्रो वांचवाथी सागरने विरह नी झाळ वधी पडी, तेथी जे दशा थइ, तेनुं वर्णन करूंछुं ॥१॥

सागर उक्ति बनाय, लिखे पत्र परवीन प्रति ॥
भेद भिन्न करि ताय, कछु वरनों संछेपसें ॥ २ ॥

अर्थ. हवे जे सागरे सारी उक्तिथी बनावीने प्रवीण प्रत्ये पत्र लख्यो, तेना भेद जूदा पाडीने खुल्ली रीते कांइक संक्षेपथी वर्णवुं छुं ॥२॥

अथ सागर विरह दशा पत्र उदाहरनं विभावना अलंकार ॥ सोरठा ॥

ताको दारु कोंन, दारूसें दूनो दरद ॥
है अब कैसी होन, पाय न मित प्रवीनज्यु॥३॥

अर्थ. तेनुं ओषड शुं, केजे ओषड करवाथी बमणुं दरद थाय, हवे वळी शुं होवानुं बाकी रह्युं छे के प्रिय मित्र प्रवीणने तो पाम्याज नहीं ॥३॥

अथ विभावना अलंकार ॥ सोरठा ॥

मन नावकको तीर, चल्यो सु पीछो ना फिरे ॥
बेधन हार शरीर, कहोसु बेध्यो कोन विधि ॥४॥

अर्थ. मन छे ते बाणावळीना बाण जेवुं छे, माटे ते चाल्या पछी पाछुं फरतुं नथी, तेम छतां ए शरीर वींधनारा (कामदेवे) ते मनने शी रीते वींध्युं हशे, ते कहो ? ॥ ४ ॥

अथ सागरोक्त मालादीपक अलंकार ॥ सवैया ॥

पानको दीप, दियाको पतंग, पतंगको तेज कहांलों रहेहे ॥
पानको फंद जु, फंदको फंदन, फंदको मोति कहांलो जगेहे॥
पानको बुंदन, बुंद प्रसून, प्रसूनसें बास कहां लगि रैहे ॥
साधन गुंन प्रवीन तजे तब, प्रान कपूर जैसें उडि जैहे॥५॥

अर्थ. पवनमांनो दीवो. अने दीवा पासेनो पतंगियो, अने आगिया जी तेनुं तेज ते क्यां सुधी रहेशे ? पथ्थरनो चाणो, डोलरना फूलनो रथ, अने

जाळामांनुं झाकळनुं मोती, क्यां सुधी झगझगशे? पात्रा उपरनो पाणीनो छांटो, अथवा फूल उपरनो छांटो, के फूलमां सुगंध, क्यां सुधी रहेशे ? तेमज हे प्रवीण साधन रूपी चणोठियो तजशे, त्यारे तो, मारो प्राण कपूरनी पेठे उडी जशे ॥५॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया॥

कंचन जी, हिय भाजनमें, तिनमें कन नेह सुहाग मिलाये ॥ कैला किये सुख, काम हुताशन, दीरघ सास धमा प्रजराये ॥ केते अलीक दगे मलया रस, नेननके मगसें प्रगलाये ॥ मिंत प्रबीन कहो किहि कारन, एह सुनार कला कित पाये ॥६ ॥

अर्थ. जीवरूपी सोनाने हृदयरूपी पात्रमां (कुलडीमां) राखीने तेमां स्नेहना सोहागरूपी टंकण खार मिलाव्यो, सुख रूपी कोयला करीने तेमां कामदेव रूपी अग्नि लगाडी, लांबा स्वासरूपी धमाथी धमीने तेने सळगाव्युं, त्यारे असत्यता रूपी केटलाक मेलने बाळीने ए रसने आंख्योने मारगेथी पीगळाव्यो, हे! प्रिय मित्र प्रवीण ए शा कारणे ते कर्यो? एटलुंज नहीं,पण आवी सोनारनी कळाने तमे क्यांथी पाम्यां? ॥६॥

भाविकालंकार ॥ सवैया ॥

ओधको अंत बनेंगो कबे, कब द्योस गिनंत गिनंत रहेंगे ॥ कोकिलसें सुर साधकबे, इत वायस आय बधाई दहेंगे ॥ आनंदके उमडेगे कबे घन, अमृतके नद नीर बहेंगे ॥ मिंत प्रबीन चहंत यहे कब, चिंतकि बात इकंत कहेंगे ॥ ७ ॥

अर्थ. आपेली अवधीनो अंत क्यारे आवशे! अने क्यारे दिवस गणता गणता रेहेशुं ? कोयलनी पेठे स्वर साधीने क्यारे कागडो अहीं आ-

नीने नयामणी देशे ? आनंदना वरसाद क्यारे चडी आवशे? अमृतनी म-
होटी नदियोनां नीर क्यारे वहेशे ? हे ! मित्र प्रवीण ए चाहिये छिये के
क्यारे एकांत बेशीने चित्तनी वातो कहेशुं? ॥७॥

अथ भाविकालंकार ॥ कवित्त ॥

एइ नेन चाहतहे आपके विलोक वेकों,कीजिये विचार कोऊ
क्षिप्र क्षिप्र पाइयें ॥ वीतत करेरे पल, छिनहू न परे कल.
रह्यो फेल ब्रहा,वन निकट रहाइयें॥ एकही सनेह बीच, जे
कही अनेक भांत, टेकही विशेक धार मन मूरझाइयें ॥ या-
दकी तरंग सोतो, आइ जिय संग जैहे, एरे ये प्रवीन फेर
एक वेर आइयें ॥ ८ ॥

अर्थ. आ नेत्रो आपने जोवाने चाहे छे, माटे कोइ एवो विचार क-
रो के जेथी झट झट जोवाने पामिये. पळतो घणीज कठण वीते छे क्षण
मात्र सुख पडतुं नथी,वळी विरह फेलाई रह्यो छे, तेथी जाणिये छिये के
वनमां जइने रहिये, एक स्नेहनी वच्चे जे अनेक प्रकारनी टेक कही छे, तेने
भारी धारीने मनमां अतिशे मुझाइये छिये, अने यादीनी जे लेहेरो आ-
वीछे तेतो जीवनी साथेज जशे, तो अरेरे हे ! प्रवीण फरीने एकवार तो
आवो ॥ ८ ॥

अथ अधिक रूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

मन मध्य हकीम मिल्यो हमकों, उन औषधि सोधि मनोरथ
पीसी ॥ सुख धीरज काठ समीप धरे, अति दीरघ सास
समीर मुखीसी ॥ विरहा अगनी उमटे, न फटें छतियां सु
भई यह आतस सीसी ॥ रस नेनके जंत्र झयोंइ करे, तउ
सार प्रवीन सनेह नरीसी ॥९॥

अर्थ. अमने कामदेवरूपी वैद्य मळ्यो, तेणे शोधीने मनोरथरूपी औषधी वाटी, पछी ते औषधीने सुख तथा धीरजता रूपी लाकडानी समीपे राखी ने अति लांबा निसासा रूपी पवनथी फुंकी,त्यारे विरहनी अग्नि सळगी उठी, पण छाती फाटी नहीं, केमके ते आतसनी शीशी जेवी थई गई छे, आंखोरूपी यंत्रेथी रस झर्याज करे छे, तोपण हे ! प्रवीण ते शीशी स्नेहरूपी सार (तत्व अथवा चुवा)थी भरीज रेहे छे ॥ ९ ॥

अथ द्रष्टांताऽलंकार ॥सवैया॥

ओ गुनवंत हमें हियरा, अति हो गुनवंत तुमें सु सुधारो ॥ जो पतियां बतियां में कऊ दिन,चूक परीतो सबे हि बिसारो ॥ नीरसें धीर मिटीहे शरीरकि, जो तकसीर भई सु निवारो ॥ सिंधु शिखी, शिव झैर निभावत, मिंत प्रबीन मया न उतारो ॥१०॥

अर्थ. अमारुं हृदय तो अवगुणवाळुं छे, पण तमो अतिशे गुणवानछो, माटे तेने सुधारो, जो कदी पत्र लखवामां अथवा वातोमां कोइ दिवस चूक पडी होय तो ते सघळी रेहेमनी साथे विसारो, संकटथी शरीरनी धीरजता तो मटी गइ छे, माटे जे तकशीर थइ होय, ते माफ करो, केमके समुद्र वडवानळ अग्निने, अने शंकर हळाहळ झेरने, नभावे छे; माटे हे प्रिय मित्र प्रवीण मेहेरबानी न उतारो ॥१०॥

॥ दोहा ॥

वडवा सागर गरल शिव, जो अतिही दुख देत ॥
वडे न संग लियो तजे, तो उन छांडे हेत ॥११॥

अर्थ. वडवानळ अग्नि समुद्रने,अने झेर शंकरने जो कदी अतिशे दुःख देछे, तोपण ते कारणने लीधे तेओ छोडी देता नथी; केमजे मोटा पु-

नथी संगे लीधेल्याने तजता नथी, तो शुं तेना उपरथी हेत छोडे? ॥११॥

अथ उल्लेखालंकार प्रथम भेद ॥कवित॥

पल पुट फेर फेर, तिरी छे सुहेर हेर, वरुनी बिखेर टेर, तलफ तदिनके ॥ मिल लाल शाम सेत, आन आन प्रभा देत, पाये गत प्रेतखेत, कदन मदनके ॥ भरि भरि आये वारि, ढरि ढरि वारि धार, करि करि चाह नित, श्रोनत रदनके ॥ वैद बोल ल्याओ, आओ दरद मिटाओ दाओ, आओरे प्रवीन नेन बाओरे वदनके ॥१२॥

अर्थ. माहारां नेत्र पोपचां फेरवी फेरवीने, वांकी नजरे जोई जोईने, पांपणो विखेरीने, पोकारीने, तेदिवसनां तलफे छे, तेमां. रातो, काळो, धोळो, रंग मळीने जूदा जूदा प्रकारनी कांति आपेछे, कामदेवना मोतना स्मशाननी गति पाम्यांछे, वळी तेमां पाणी भराई भराईने आवेछे, अने ते पाणीनी धार ढळी ढळीने अने नित्य चाहना करी करीने रुदन करवाथी लोहीनुं पाणी थायछे, माटे हे? प्रवीण तमे आवो, ने वैदने बोलावी लावो. अने आ विरह रूपी दाव पटले अग्निनुं दरद मटाडो. तमारूं मुख जोवाने मारां नेत्र दिवानां थयांछे. माटे हे? प्रवीण तमे आवो. ॥१२॥

अथ लोकोक्ति अलंकार ॥सवैया॥

आज हुलों तो वडो अभिलाप हो, ज्योंलो प्रवाह वध्यो पतियांको ॥ जो न मिलो तो प्रवीन संदेशन, कोन निआइ निआओ कहांको ॥ कोनपें जाय कहें सुनि हे कोउ, आप भयो किरतार जो बांको ॥ आयु प्रमानसें जीजतहे अब, जीवन हे गुजरान दिनाको ॥१३॥

अर्थ. आज सुधी तो मोटी अभिलापा हती, के ज्यां सुधी कागळ

पत्र आववा जवानो प्रवाह वध्यो हतो, हे! प्रवीण न मळो तो पछी संधेशो पण नहीं, एवो कोण न्याय करनार, अने ए क्यांनो न्याय कहेवाय, ज्यां पोते किरतारज वांको थयोछे, त्यां केनीपासे जईने आ वात कहिये, अने कोण सांभळशे, हवेतो केवळ आवरदाना प्रमाणथीज जीविये छिये, ने दिवसोनुं गुजरान करिये छिये. ॥ १३ ॥

अथ विभावनाऽलंकार ॥सवैया॥

प्यारे प्रवीन तिहारी प्रभा शुभ, प्रानके संग बसी हिय मांई ॥ याद लगी घनसारकि आतस, नीर समीर बुझे न बुझाई ॥ वेद न भेद प्रकार कितेइ सु, जानत हे जिनहू गति पाई ॥ बासर क्यो भरियें करियें कह, हेतकी होत अबे तो हसाई ॥ १४ ॥

अर्थ. हे! प्राण प्यारी प्रवीण तमारी सुंदर कांति अमारा प्राणनी साथे हृदयमां वसी छे, स्मृति रूपी कपूरनी आतस सळगी छे, ते पाणीथी अने पवनथी पण बुझवी बुझाती नथी, वेदनाना भेदोनातो केटलाएक प्रकारो छे, परंतु जेओ ए गतिने पाम्या छे, तेज जाणे छे, हवे दिवस केम करीने काढिये, अने शुं करिये पण हवे तो हेतनी हांसी थायछे. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

नेन नीर सासा पवन, विविध होत विस्तार॥
उर अंतर उमडी रहे, यादि अगन घनसार ॥ १५ ॥

अर्थ. आंख्योनां पाणी अने निसासाना पवननो विविध प्रकारे विस्तार थाय छे, तोपण हृदयनी अंदर स्मृतिरूपी कपूरनी आग तो उमटीज रहेछे. १५

असंभवाऽलंकार ॥ सवैया ॥

जेसेंइ चित प्रवीन बसे तुम, एसेंइ नेनन बीच बसोगे ॥

ज्यों पतियांन बनाय पठावत, यों बतियांन बनाय हसो-
गे ॥ जेसे एकंत उदास अराधत, तेसे एकंतहि अंत लसो-
गे ॥ ता दिनकों धनरे धनरे तुम, जा दिन आय प्रिया पर
सोगे ॥ १६ ॥

अर्थ. हे? प्रवीण जेवी रीते तमो चित्तमां वसोछो, एवीज रीते नेत्रोमां आवीने वसशो, ने जेम पत्रिका बनावी बनावीने लखी मोकलावो छो, तेमज वातो बनावीने हसशो, वळी जेवी रीते हुं एकांतमां बेशीने उदास थइ आराधन करूंछुं, एवीज रीते एकांतमां मारी पासे शोभशो, अने जे दिवसे हे! प्रिया! तमे आवीने परसशो, ते दिवसने तो धन्य धन्य छे.॥१६॥

अथ विकल्पालंकार ॥सवैया॥

मेर नहीं त्या कुमेर करो नहि, एसे प्रकार कहाहे अनोखे ॥
एकहि वेर दिशा इतकी फिर, रीझ नहींतो निहारिये रोपे॥
पाति नही तब पत्र हलाहल, क्यों पठयोन कहो केहि दो-
पे॥ नेनन पूरी रहेगे प्रवीनज्यु, धूर परेगि कपूरके धोखे॥१७॥

अर्थ. महेरबानी नहीं, तेम कमेरबानी पण करो नहीं, एवी रीते जूदो शो प्रकार धारेलो छे? एकज वार आणी कोरनी दिशा तरफ फरीने रीझथी नहीतो रोषथीज निरखीने जुओ, पत्र नहीं, त्यारे पछी हळाहळ झेरनुं पान भरीने केम मोकलावता नथी? ए अमारो शो दोष ते कहो? हे! प्रवीण शो कपूरने बदले धूळ पडशे. तोपण नेत्रोमां भरी राखशुं.॥१७॥

अथ मिश्रितलाटानुप्रास अलंकार ॥ कवित ॥

बासर नियास हूको, वासन सुहात वास, वासतें उदास
होत, जेसें सास तजनी॥ होत न सहाये कोउ, भेद न क-
हाये कहुं, हाय हाय कहत, विहाय जाय रजनी ॥ नुज

भरी जबलो न, भजोगे भुजंग बेनी, तबलों भजेगी नहि, भुज हुते भजनी ॥ आसकी जो आश की सो,कीजे न निराश कबें, आसकी प्रबीन होतो, इतनी समजनी ॥ १८॥

अर्थ. दिवसे तो घरनो पण निवास गमतो नथी, अने सारा सुगंध के वस्त्रथी पण प्राण रहित थयेला मुडदानी पेठे उदास थईये छिये, कोई सहाय थतुं नथी, तेम क्यांय भेद कहेवातो नथी, जेथी हाय हाय कहेतां रात वीती जाय छे, माटे हे भुजंगवेणी भुजा भरीने ज्यां सुधी सेवशो नहीं, त्यां सुधी हाथमांथी माळा भागशे नहीं, आशके जे आश कीधी होय, त्यारे तेने क्यारेय निराश करिये नहीं, हे! प्रवीण जो आशकी हो तो एटली वात समजजो. ॥ १८ ॥

॥ सबैया ॥

मिंत कहूं किरतार निबाजहे, आसक को इक सेर करेगे ॥
नेहके हाट बजारकी बाटमें, लाज कपाट उघारि धरेगे ॥
नेननके सोहोदा करिके उत, रीझ मिलाय भंडार भरेगे ॥
एहो प्रबीन बियोग बिदा करि, होंस हवेलिनमे बिहरेगे ॥१९॥

अर्थ. हे! मित्र जो कोई वखते आपणा उपर किरतार नवाजशे, तो, आशकोनुं एक शेहेर बनावशुं, अने बजारनी वाटे स्नेहना हाटनां लाज रूपी कमाडने उघाडां मूकशुं, नेत्रोनो सोदो करी, त्यांथी रीझ मेळवीने भंडार भरशुं, ने हे! प्रिय मित्र प्रवीण, वियोगने विदाय करीने होंश रूपी हवेलीमां विराह करशुं. ॥ १९ ॥

अथ समरूपक अलंकार ॥ दोहा ॥

उर निवान सुमती सलिल, सुरत माल गुनग्राह ॥

चढत जात कागद घरी, चढत प्रेम परवाह. ॥ २० ॥

अर्थ. ह्रदय रूपी नवाण, सुमति रूपी पाणी, सुरत रूपी माळ, गुण रूपी चक्र खेंचवानां नाडां, एवा रेंटना योगथी जेम जेम कागळ रूपी घडो चडतो जायछे, तेम तेम प्रेम रूप प्रवाह वधेछे. ॥ २० ॥

अथ यमक अलंकार ॥ दोहा ॥

सुरत सुरत लागी रहत, रागी रहत सनेह ॥
विरह ज्वाल जागी रहत, दागी रहत सुदेह ॥२१॥

अर्थ. तमारी छबीमां मारी नजर लागी रहेछे, अने स्नेह पण प्रीति पूर्वक यथायोग्य रहेछे, विरहनी झाळो जागतीज रहेछे, अने शरीर तो बळतुंज रहेछे. ॥ २१ ॥

॥ सोरठा ॥

इहिविधि लिखे अनेक, पत्रसु एकहि एक प्रति ॥
बानी विरह विवेक, सागर कला प्रवीनज्यु ॥२२॥

अर्थ. एवी रीते सागर तथा कलाप्रवीणे विरह वाणीना विवेकथी भरेला अनेक कागळो एक बीजा प्रत्ये लखी मोकलाव्या. ॥ २२ ॥

प्रेम भेद दुहु पाय, मनके मनहीमें मगन ॥
लागी सुरत सदाय, छिन दंपति विसरे नहीं ॥२३॥

अर्थ. बेय जणां प्रेमना भेदने पामीने मनमांने मनमांज मगन रहे छे, अने निरंतर सुरता लागी रहेवाथी स्त्री पुरुष एक बीजांने क्षण मात्र पण विसारतां नथी. ॥ २३ ॥

दंपति जंपत एह, कब किरता मिलबो करे ॥
लागी सुरत सनेह, अह दिन प्रत दूनी वढे ॥ २४॥

अर्थ. बेये स्त्री पुरुष एज जप्या करेछे, के परमेश्वर क्यारे मिलाप क-

रशे, सुरत (छबी) नो स्नहे लागवाथी दिवसे दिवसे विरह बमणो वधतो जायछे. ॥ २४ ॥

॥ गाहा ॥

सागर प्रत्य प्रबीनं,पठव्वन पत्र बिहर बिसतारं ॥
उन पंचाश अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥२५॥

अर्थ. रस सागरे विरहना विस्तारनो पत्र लखीने प्रवीण प्रत्ये मोकलाव्यो,ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी ओगण पचाशमी लेहेर संपूर्णथइ.२५

आ लेहेरना शिखाबंधनुं त्रीजुं चरण ॥निधिये प्रिय प्रति मोकली॥एम जोइये.

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे रससागर बिरह दशा पत्र भेदो नाम एकोनपंचाशत्तमो लहरं ॥ ४९ ॥

इतिश्री प्रवीण सागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकोनपंचाशत्तमस्तरंगः समाप्तः ॥ ४९ ॥



अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखा बंध ॥ छंद उपजाति ॥

करी प्रवीणे कुसुमावळीथी, करी निधी मित्रनी मंडळीथी ॥
ते सर्व चर्चा विगते वखाणी, आ लेर पंचाशमिमां प्रमाणी ॥

॥ अथ कला प्रबीन कुसुमावली बिरह चर्चा प्रसंगो यथा ॥

॥ सोरठा ॥

कुसुम प्रबिन एकंत, बिरह दशा चरचा चली ॥
बरने वहे ब्रतंत, भेदसु भिन्नहि भिन्न करि ॥ १ ॥

अर्थ. कुसुमावळी तथा कळाप्रवीणने एकांतनी वखते विरहनी दशा संबंधी जे चर्चा चाली ते वृत्तांतना जूदा जूदा भेद करीने वर्णवुं छुं ॥१॥

उर अंतरकी बात, कहे बिना कोउ न लहे ॥

काहू कही न जात, सोवरनों संछेप करि ॥ २ ॥

अर्थ. हृदयमां रहेली वातने कह्या विना कोइ जाणे नहीं, अने ते कोइनी पासे कही पण जाय नहीं, माटे तेनुं संक्षेपथी वर्णन करूं छुं. ॥ २ ॥

॥ अथ तत्र कला प्रवीनोक्त ॥ दोहा ॥

जीसु न लीनो इश पद, देह न दीनो छेह ॥
मन न पायो मेन रस, कुटिल करम गति एह ॥ ३ ॥

अर्थ. आ जीवे इश्वरनुं पद मेळव्युं नहीं, अर्थात् मारो आत्मा परमात्मामां भळीगयो नहीं, अथवा इशपद एटले पटराणीनी पदवीने पाम्यो नहीं, तेम शरीरने पण छे दीधो नहीं अर्थात् मारो देह पडी गयो नहीं, मारा अंतरना कामदेवे कामनो रस पण चाख्यो नहीं, माटे आ कर्मनीत वांकी गति छे. ॥ ३ ॥

॥ अथ रूपक अलंकार ॥ दोहा ॥

चंदन वन तन मितको, प्रेमल प्रेम प्रकाश ॥
मन पन्नग लपट्यो रहे, एहि आस विसवास ॥ ४ ॥

अर्थ. मित्रना शरीर रूपी चंदननुं वन छे, अने तेमां प्रेमना प्रकाश रूपी सुगंध रहे छे, ते सुगंधनी आशाना विश्वासथी मारा मनरूपी नाग तेमां लपटायो रहे छे. ॥४॥

॥ सवैया ॥

प्रेमको मंत्र प्रवेस कियो, यह सिद्ध मनोज दइ गुरु दीच्छा॥
धूनि सदा व्रहकी तपवो, अरु मांगवि मींत सनेहाकि भिच्छा॥
सागर ध्यान हिये धरवो, कछु ओर न राखतहे हम इच्छा ॥
पावकि पूरि कहा वरजे अब, ओन न लागहिगी तुव सिच्छा॥५॥

अर्थ. प्रेमना मंत्रनो प्रवेश करावीने आ कामदेव रूपी सिद्धे गुरुदीक्षा

दीधी छे, जेथी निरंतर विरहरूपी धूणीनुं तापवुं, अने मित्रना स्नेहरूपी भिक्षा मागवी, ने हृदयमां तो केवळ सागरनुंज ध्यान धरवुं, तेशिवाय बीजी कांइ हुं इच्छा राखती नथी, माटे हे! दिवानी सखी शा सारु वारे छे, हवे तारी शिखामण काने लागशे नहीं ॥५॥

अथ एकावली अलंकार ॥ सवैया ॥

बनमें रितुराज प्रभा बिकसी, बिकसी रतिराज प्रभा तनमें॥
तनमें बिरहा प्रगटी दरसे, दरसे रस आवलि आंखनमें ॥
खनमें मन मींत बिना तरसे, तरसे सुख बास अवासनमें॥
सनमें सखि सागर मिंत मिलेके, मिलो बनबर्तनि व्है बनमें ॥ ६ ॥

अर्थ. वनमां रुतुना राजा वसंतनी कांति प्रफुल्लित थइ, ने शरीरमां रतिना राजा कामदेवनी कांति खीली आवी, अंगमां विरह प्रगटेलो देखाय छे, अने आंख्योमां रसनी पंक्ति दर्शाय छे, अर्थात् आंसु वहे छे, क्षणमात्रमां मित्र विना मन तरसे छे, एटलुंज नहीं, पण घरमां सुखे वसतां वसतां मन त्रास पामे छे, हे! सखी समीपमां सागर मित्रने मळुं, के जोगणी थइने वनमां जई मळुं ॥ ६ ॥

॥ अथ समस्त छेकानुप्रास अलंकार ॥ सवैया ॥

नींद मटी, बिरहान कटी, सुहटीरत, सुत्त जटी सुरटी॥
आग दटी, उपटी उरतो उ, नटी न अनंग चटी झपटी ॥
ओध घटी, छतियान फटी, जनु अंतर प्रेम पटी लपटी॥
ए चितकी न मटी न छटी, पिय सागर पें निपटी कपटी॥७॥

अर्थ. मारी उंघ मटी गई, ने विरहनी पीडा कपाई नहीं, अने रत एटले वखत हठी गइ, मतलब के जती रही, अने मित्रनी सुरत मारा

ओने माथे ओढाइ गइ, अने तेनुंज रटन सारी रीते कर्युं, हुं आगमां दटाइ गइ, अने डाग(नेत्र) आंसुना जळनी झडी लागी. अने कामदेवनी चटकी लागी, ते छूटी नहीं, अर्थात् खशी नहीं, मुदत ओछी थई, पण छाती फाटी नहीं. जाणिये के अंतःकरण उपर प्रेमनी पटी लपेटी लीधी होय नहीं. एवी आ चित्तनी गति मटी नहीं. तेम छूटी पण नहीं, पण हे सखी सागर प्रमाण काढी छे. ॥ ७ ॥

॥ अथ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ सोरठा ॥

मइ पत्र पहिचान, मन चाहत मिलन न बने ॥
मनो एह अनुमान, वासुदेवकी शंखधुनि ॥८॥

अर्थ. कागळ पत्रथी ओळखाण थइ, अने मन मळवुं चाहेछे, पण मिलाप बनी शकतो नथी. जेमके ज्यां शंखनो अवाज होय, त्यां वासुदेव होयज, तेम छतां ते अवाज संभळाय, पण प्रभुनो मेळाप थइ शके नहीं, एवी रीते अमारे थयुं छे. ॥८॥

निगम कहतहे नेह, लोकालोक विलोकियत ॥
अगम अलख्य गति एह, निकट रहे मिलवो नहीं ॥९॥

अर्थ. वेद कहे छेके प्रेमनो प्रभाव एवोछे के आ जगतमांनी अने तेनी बहारनी वस्तुने पण देखी शके छे, पण इश्वरनी अगम्य अने अलक्ष्य एटले जाणी न शकाय एवी अने लक्षमां न आवी शके एवी गति छे, तेथी ते इश्वर सर्व व्यापक छे. एटले आपणी पासे छे; पण तेनो मिलाप बनी शकतो नथी, एवी रीते अमारे पण थयुं छे. ॥९॥

॥ दोहा ॥

लहरी घन गाजन पवन, दादुर बादर देख ॥
नीरन सेजनमें हिये, बिपति बिशेष बिशेष ॥१०॥

अर्थ. मेघनी गंभीर गर्जना, पवननुं फेलावुं, देडकांओना शब्दो अने वादळांनी घटा जोइने तथा मोरना सोर सांभळवाथी हृदयमां विशेष विशेष विपत्ति वधती जाय छे. ॥१०॥

फूलन सूलनसें भये, बाग भयानक भेख ॥
गावन नावनसें हिये, बिपति बिशेष बिशेष ॥११॥

अर्थ. फूलतो शूळी समान थयां छे. बगीचा भयानक वेषवाळा देखाय छे, ने गावा तथा नावाथी पण हृदयमां विशेष विशेष विपत्ति वधती जाय छे. ॥ ११ ॥

सरसे लगे संगीत सुर, रहे नेन उन मेख ॥
सागर बिनां सु बीन सुनि, बिपति बिशेष बिशेष॥१२॥

अर्थ. संगितना स्वरो बाण जेवा लागे छे, अने आंख्यो तो मटकुं मार्यां वगर उघाडीज रहे छे; अने सागर विना सुंदर विणा सांभळवाथी पण हृदयमां विशेष विशेष विपत्ति वधती जायछे. ॥१२॥

मनमें सागर मितज्यूं, रोपी बिरहा रेख ॥
अटके त्यों खटके हिये, बिपति बिशेष बिशेष ॥१३॥

अर्थ. मनमां जे सागर मित्रे विरहनी रेख (फांस) रोपी छे, ते जेम जेम अटके छे, तेम तेम हृदयमां खटकेछे, तेथी विशेष विशेष विपत्ति वधती जाय छे. ॥१३॥

बात आत फहरात पट, निपट गात न छुआत ॥
मनहु ज्वाल बिरहा जरत, डरत न छिन ठहरात॥१४॥

अर्थ. आ वपन पेहेरेलां वस्त्रने उडाडीने जतो रहे छे, ते पासे आव्या छतां शरीरने अडतो नथी, केमके तनमां विरहाग्निनी झाळो बळे छे. तेनाथी डरीने क्षण मात्र पण ठेरतो नथी. ॥१४॥

अथ कुसुमोक्त समरूपक अलंकार ॥ कवित ॥

भाल चंद, भोंहे चाप, मीन नेन, नासा मनि, बसत भुजंग सोतो अलक पेचांनीहे॥ कज्जर हला हल, सुधासी हांसी सोहियत, मोती रद, रदच्छद, बिद्रुमसो जानी हे ॥ ग्रीवा शंख, डीठ मद, गति गज, कंज पान, ओरही प्रबीन तेरो रूप रंग पानी हे॥ शुभगुन लैर लागी, जागी रहे शशि निश, आलीरी जुवानी तेरी, दधिसी दिवानीहे ॥१५॥

अर्थ. कुसुमावळी कहे छे के हे! प्रवीण तारी जुवानी समुद्रना जेवी दिवानी छे, केमके समुद्रमां जेटली वस्तुओ जोवामां आवे छे, तेटली तारा शरीरमां देखाय छे. जेमके समुद्रमां जेवो चंद्र छे, तेवुं तारूं कपाळ छे अने समुद्रमां जेवुं सारंग धनुष छे, तेवी तारी भ्रकुटी छे, समुमद्रमां जेम माछलां छे, तेवां तारां नेत्र छे, समुद्रमां जेम कौस्तुभ मणी छे, तेवुं तारूं नाक छे, अने समुद्रमां जेम सर्प रहेछे, तेवो तारो चोटलो जाणिये छिये, समुद्रमां जेवुं कालुं झेर छे, तेवुं तारा नेत्रनुं काजळ छे, अने समुद्रमां जेवुं अमृत छे, तेवुं तारूं हसवुं शोभेछे, समुद्रमां मोती छे, तेवा तारा दांत छे, अने समुद्रमां जेवां परवाळां छे, तेवा तारा होठ जाणिये छिये, समुद्रमां जेम शंखछे, तेवुं तारूं गळुं छे, अने समुद्रमां जेवुं मद्य (दारू) छे, तेवी तारी द्रष्टी छे, समुद्रमां जेवो ऐरावत हाथी छे, तेना जेवी तारी गति छे. समुद्रमां जेवां कमळ छे, तेवा तारा हाथ छे, अने वळी समुद्रमां जेम पाणी छे, तेम तारामां रूप रंग भरेलुं छे, समुद्रमां जेम लेहेरो छे, तेम तारामां सद्गुणनी लेहेरो लागी रही छे, जेम समुद्र चंद्रने जोईने रात्रिये जागृत थायछे, तेम तुं पण रात्रिये जागृत रहेछे, ए रीते समुद्रना जेवा बध गुण तारामां छे. ॥ १५ ॥

अथ उत्प्रेक्षालंकार ॥ सवैया ॥

मद्द दुरद्द चढ्यो ढिग चंचल,ता अस मोद निसान बजाया॥
प्रेम पयद्दल पूर पखे, जब पंच बिषे उमराउ कहाया ॥
जानत आन बखत्त समानहि, चिंत गुमान तखत्त सु पाया॥
ताहि फिरीहे दुहाइ चहू दिश, वाकि कटाच्छ हमाउकि छाया ॥१६॥

अर्थ. हे प्रवीण तारी पासे चंचळपणारूपी हाथी उपर मद नामनो सरदार चड्यो छे, तेना आनंदरूपी अश्व उपर निशान वजाव्युं, अने ज्यारे पायदळना पूरनी पेठे प्रेम चड्यो, त्यारे शब्द स्पर्श आदि पांच विशयो ते फोजना उमराव कहेवाया, अने बीजी बधी रीत पण वखत प्रमाणे जाणीने ते गुमानरूपी सरदार चित्तरूपी तखतने पाम्यो छे, तेनी आणदाण चोतरफ फरीछे, तेनी (कटाक्ष) नजर ते हमाउ पक्षीनी छाया जेवी छे,मतलब के हमाउ पक्षीनी छाया जेना उपर पडे,तेना मनोर्थ सिद्ध थायछे, तेमज प्रेमनो मद तारा चित्तमां चड्यो छे, तेनी दृष्टिथी तारा मनोर्थ सिद्ध थशे. ॥ १६ ॥

अथ अन्योक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

ओसर नाही मिले परबीन, तबे लगि चाह झरी सु झरी ॥
जानि नहीं बरखी सु तबे, अब स्वांत घटा बिखरी सु खरी ॥ बारहु मास पुकार करे वह,चातुक चूक परी सु परी॥
बारहि बार बिचार करे,किरतार बिचार करी सु करी॥१७॥

अर्थ. कहेवुं कोईने ने संभळाववुं बीजाने तेनुं नाम अन्योक्ति अलंकार कहेवाय, आ सवैयामां कुसुमावलिये प्रवीणने लागु पडे, एवी मतलबथी बापैयाने कह्युंछे, हे ? प्रवीण बापैया ! ज्यां सुधी वरसाद आववानो व-

मन नहीं मळे, त्यां सुधी तारा मनमां चाहना भरीने भरीज रहेशे! स्वातिना वरसादनी घटा ज्यारे वरशी हती, त्यारे तें जाणी नहीं, अने हवे तो स्वातिनी घटा विखरी गई, ते विखरी गई, हवे वारे महिना तुं पोकार करेछे, पण प्रथम तारामां चूक पडी ते पडी, हवे वारे वारे शुं विचार करे छे, फिरतारे विचार करीने जे करी ते करी, मतलब के प्रवीणने समजावी के जे वखते सागरनो मेळाप थयो, ते वखते सारी पेठे तें जाण्युं नहीं, अने हवे शुं पोकार करेछे. ॥ १७ ॥

अथ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

वात विचार सबे करि हे, न रहे छुपि ताये कहा परि हे चक॥ प्रेम प्रकाश विकास भयो, मनु हो ज्यु उजास फनूसको दीपक ॥ गैरव पासत घासत भूपन, हेरत होय रह्यो सब हाटक ॥ चिंत प्रवीन तवी करवी कह, एकहि टेक गहो उर आसक ॥ १८ ॥

अर्थ. आ सवैयामां प्रवीणने कुसुमावळिये एवुं कह्युं छे के हवे सागर साथे लागलो तारो प्रेम छानो रही शके एम नथी, तारा प्रेमनी वातनो सर्वो विचार करूंछुं तो लागेछे के हवे ते छानो रहेवानो नथी, तेने चक एटले पडशे पडीने शुं करी शकशे? केमके तारा प्रेमनो प्रकाश फानसना दीवानी पेठे जाहेर थयो छे, मतलब के फानसना काचनो पडदो छतां पण दीवो छूपनो नथी, वळी घरेणाने गेरूनो पास लगावा सारू तेना उपर गेरू चडयो होय, तोपण ते घराणुं जोतां बधुं सोनुं खुल्लुं थई रहेछे. एम छे तोहे! प्रवीण चिंता शी करवी! हवेतो हृदयमां एक आशकनीज टेक राखो. १८

॥सोरठा॥

इहि विध कला प्रवीन, कुसुमावलि चरचा चली॥

सागर मिंतसु कीन, वह बरनन कीजत अवे॥१९॥

अर्थ. एवी रीते कळाप्रवीण अने कुसुमावळीने चर्चा चाली, तेनुं वर्णन कर्युं, हवे सागरे पोताना मित्रो साथे जे चर्चा करी तेनुं वर्णन करुंछुं॥१९॥.

॥ सागर मिंत विरह चर्चा प्रसंगो यथा ॥

॥ अथ जाति स्वभाव अलंकार ॥ कुंडलिया तोटक॥

निश दिन जिय जंपत रहे, मिंत मिंत अरु मिंत॥ हमकों एती वक्कुतहे, चाह न चूकत चिंत, चित चाह न चूकत यागतिहे, हमकों इतनीसु भई अतिहे॥ नित मिंतहि मिंत पुकार करे, निश द्योस प्रबीन नहीं बिसरे॥२०॥

अर्थ. रात दिवस आ जीव मित्र, मित्र, अने मित्र, एम जपतो रहेछे, अमनेतो एटलुं घणुंज छे, पण चित्त चाहना चूकतुं नथी, चित्त चाहना चूकतुं नथी एवी अमारी गति छे, एटली थई तेज अमारे तो घणी छे, हमेशां हे! मित्र हे! मित्र एम पोकार करीए छिये, अने रात के दिवस प्रवीण विसरतां नथी. ॥२०॥

अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

केहेरे दिन बीतहिंगे सु कहांलों, कहांलो वियोग बिथा गेहेरे॥
गेहेरे परबीन सबे सुधले, तबसे हम याद सबी लेहेरे ॥
लेहेरे हमसी उनकों कि नहीं, बिरहान दहे हमसें देहेरे ॥
देहेरे उनके करकी पतियां, बतियां उन आननकी केहेरे॥२१॥

अर्थ. सागर कहेछे हे! मित्र आवा अकराकेरना दिवसो क्यां सुधी वीतशे? अने क्यां सुधी वियोगनी पीडा ग्रहण करशुं! गंभीर बुद्धिवाळां प्रविणे सघळी शुद्ध हरी लीधी छे, त्यारथी अमे तेनी छबीने यादमां लईए छिये, अने अमारा सरखी प्रेमनी लेहेरो एमने हशे के नहीं! अने

तेनो विरह अमने बाळेछे, तेवो तेने बाळतो हशे के नही? अरे एमना हाथनो लखेलो पत्र आप्य, अने एना मुखनी कहेली वात कहे. ॥२१॥

॥अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया॥

रहिये सब सोधि हियेकि हिये, कहिबेकी नहीं सो कहा कहिये ॥ कहिये कह कानि भईहे वियोगकि, भागके जोग सबे सहिये॥ सहिये शिर नीकि बुरी सबही ज्यू,प्रवीनके पान कहू पहिये॥ पहिये नहि प्रेम भरी पतियां, छतियां धरि धीर कहा रहिये ॥ २२ ॥

अर्थ. हैयानी बधी वात हैयामांज तपाशीने रहिये छिये, पण जे केहेवानी नहीं ते क्यां जईने कहिये? अने आ वियोगनी जे काणी थईछे,ते शुं कहिये! नशीबमां भोगववानुं जे लखेलुं ते बधुं सहिये छिये, पण जो प्रवीणनो हाथ क्यांइ पामिये तो सारी के माठी जे माथे आवी पडे,ते बधी सहन करिये, पण ज्यारे तेनो प्रेमनो भरेलो पत्र पण पामिये नहीं, त्यारे छातीमां शुं धीरज धरीने रहिये? ॥ २२ ॥

॥ अथ स्मृति मान अलंकार ॥ कवित ॥

इंद्रकों आराधिये तो आसन गजेंद्र तहां, चंद्रकों आराधे ताय, बासहे कुरंगको ॥ गनपत ध्यान धरे भालहीमें आध चंद,शंकरके ध्यानहीमें भूपन भुजंगको,रामकों उपासिये तो पानमें सरासनहे, कालिकाकों सिंह संग,सारदा विहंगको॥ शक्र, शशि, हेरंबेश, हर, राम, हरा, बानी सबही सधे जो बास व्है प्रवीनसंगको ॥ २३ ॥

अर्थ. हवे जो इंद्रने आराधिये,तो त्यां गजेंद्रनुं वाहन छे, चंद्रने आराधिये,तो त्यां मृगनो निवास छे, गणपतिनुं ध्यान करिये, तो तेना कपा

ळमां अर्ध चंद्र छे, अने शंकरना ध्यानमांतो सर्पनां घरेणां छे, रामनी उपासना करिये, तो तेना हाथमां धनुष छे, कालिका देवीने समरिये, तो तेनी साथे सिंह छे, अने सारदाजीनी पासे हंस पक्षी छे, परंतु जो प्रवीणनी साथेनो निवास थाय, तो ईंद्र, चंद्र, गणपति, शंकर, राम, पार्वति अने सरस्वति ए सघळां साध्य थाय. मतलब के ते बधां प्रवीणना अंगमां छे. ॥ २३ ॥

॥ अथ रूपकालंकार ॥ सवैया ॥

आय अनंग चढयो इंद्रजीतसो, शूर समीर रथी रन जूटी॥
वान प्रसून ब्रषा झर लाइसु, केति अनीक कलेवर फूटी॥
लच्छनहीं मुरझाय रहे, अरु राम अराम वरूथिनि लूटी ॥
मिंत कोउ हनुमंत ज्यों लाउरे,पाय प्रबीन सजीवन बूटी॥२४॥

अर्थ. आज ईंद्रजीत सरखो कामदेव चडी आव्यो छे, तेनी साथे त्रिविधि पवनरूपी शूरो महारथी रणमां जोडाइ रह्यो छे, ते कामदेवे फूलना बाणना वर्षादनी झडी करी, अने केटलीएक सेनानां शरीर विंध्यां,तेथीमारा हइयारूपी लक्ष्मण तो मुर्छा पामी रह्यो छे, अने मारा विश्रामरूपी रामनी सेनाने लूटी लीधी छे, माटे कोइ मित्र हनुमाननी पेठे प्रवीणरूपी सजीवन बुट्टी मेळवीने लावी आपो. ॥२४॥

॥अथ संदेह अलंकार ॥ सवैया ॥

प्रेम सरावके पान तजे, कि भजे बिरहानलके उठि थाने॥
कीधों गुमान भरे गुनके, उन आसकके चल पंथ अघाने ॥
कीधों भये निरदे मितवा, जितवा वहरावे दिवानहि जाने ॥
पंथिक वात बनाय कहो,यह क्यों न प्रबीन लिखे परवाने॥२५॥

अर्थ. शुं ए प्रवीणे प्रेमरूपी मदिरानुं पान तजी दीधुं ? के एना वि-

विरहानलनुं थाणुं उठीने भागी गयुं, के गुणना गुमानथी भराइ गयां, के आशकने पंथे चालीने ते धराइ रह्यां, कींवा ते मित्र निर्दय थइ गयां, के अमने दिवाना जाणीने अमारा जीवने गभरावे छे, हे पंथी वात बनावीने कहो के ए प्रवीण केम पत्र लखतां नथी. ॥ २५ ॥

पुनः ॥ सवैया ॥

या मितवा मितवा हम टेरत, हेरत रा तन तेज तवाने ॥
पीर सबे मनकी मन बूझत, रूझत ना उर बीच घवाने ॥
चित्तको भेद कहूं नहि खोलत, डोलतहे दिन रेन दिवाने॥
पंथिक वात बनाय कहो, अहो क्यों न प्रवीन लिखे परवाने॥
॥ २६ ॥

अर्थ. अमे तो ए मित्रनेज हे? मित्र, हे? मित्र, एम पोकारिये छिये, अने तेनो रस्तो जोइए छिये, अने अमारा शरीरनुं तेज तवाइ गयुं छे, अमारा मननी बधी पीडाने अमारुं मन जाणे छे, अने हृदयनी वच्चे घवाणा छिये, ते रूझाता नथी, तेम दीलना भेदने क्यांइ खुलो करता नथी. अने रात दिवस दिवाना फरिये छिये, माटे हे? पंथी वात बनावीने कहो के प्रवीण केम पत्र लखतां नथी. ॥ २६ ॥

॥ सोरठा ॥

परे प्रान बे हाल, बिछुरे मिंत प्रवीन ज्यू ॥
विरहानलकी ज्वाल ॥ जरबेसें मरबो भलो॥२७॥

अर्थ. प्रिय मित्र प्रवीणना वियोगथी प्राण बेहाल थइ पड्या छे, अने आ विरहाग्नी आलमां बळवा करतां मरवुं ए वणुंज भलुं छे. ॥२७॥

उनमुखकी अनुहार, देखे बिन नेनां दुखी ॥
निश दिन शोच विचार, करबेसें मरबो भलो ॥२८॥

अर्थ. एमना मुखना अणसारा जोया विना मारां नेत्रो दुखियां छे, अने रात दिवस शोक अने विचार करवा करतां मरवुं भलुं छे. ॥२८॥

उनमुख देखन आस, प्यास अजों बूझी नहीं ॥
पल पल प्रान उसास, भरबेसें मरबो भलो ॥२९॥

अर्थ. एमना मुख जोवानी आशानी तरश हजी मटी नहि, अने पळे पळे प्राणथी उसासा निसासा भरवा करतां मरवुं ए घणुंज सारुंछे.॥२९॥

परेन बिरहा पार, मिले न मिंत प्रवीन ज्यू ॥
नेननसें जलधार, झरबेसें मरबो भलो॥ ३०॥

अर्थ. वियोग पार पडतो नथी, अने प्रिय मित्र प्रवीण मळतां नथी, अने आंख्योमांथी आंसुनी धार वर्षाव्या करतां मरवुं भलुं छे. ॥३०॥

कछु न सुहावे मोय, भावेसो पावे नहीं ॥
प्रान दिवाने होय, फरबेसें मरबो भलो ॥३१॥

अर्थ. अमने कांइ गमतुं नथी, अने जे गमे छे, तेने पामता नथी, माटे दीलमां दीवाना थइने फरवा करतां मरवुं भलुं छे. ॥ ३१ ॥

कहियो प्रेम प्रकाश, पंथी जाय प्रवीनसें ॥
यह मुख चंदा आश, नेन चकोरा व्है रहे ॥३२॥

अर्थ. हे? पंथी प्रवीणनी पासे जइने आ प्रेमनो प्रकाश कहेजो; के आपना मुखरूपी चंद्रनी आशाथी आ नेत्र चकोर पक्षीनी माफक थइ रह्यां छे.॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

मन कप द्रग ज्वाला सलग, वुझ्यो त्रपा गुल देह ॥
पद ककरी त्वर लोह करि, भगेतो जगे सनेह ॥ ३३॥

अर्थ. मनरूपी सूत्रनो कप, मित्रना नेत्रनी ज्वाळाथी सळगी उठयो, ते

कळीने रहेवाना देह जेवी लाजरूपी भुंगळीमां बुझाइने रह्यो, हवे कुळनी पदवी, अथवा मोटाइरूपी चकमकनी कांकरी, खरारूपी लोढाना कडाथी भागे, अथवा टीचाय, तो स्नेहनी जोत जागृत थाय, चकमकनी कांकरी, लोढुं अने सुत्रनो कप, तथा भुंगळी होय छे, तेनुं द्रष्टांत आमां छे, मतलब ए छे के आशक माशुकनां प्रथम ज्यारे नेत्र मळे छे, त्यारे एक बीजाना मनमां प्रेमाग्नि उपजे छे, पण कुळनी लाजथी बोली शकतां नथी. पण जो कुळनी लाज रूपी कांकरीने खरारूपी लोढाए करीने झाडे तो स्नेह रूपी अग्नि पाछो जागृत थाय.॥३३॥

॥ सवैया ॥

करियो करजोर के बीनतिज्यू, जिनसें मिलबो निश बासर को ॥ इतनी कह चूक परी हमसें, नहि आवत आंगन या डर को॥ पलके पल कान मिली जबसें, तबसें न बिसारीबो कागरको॥ यह मिंत प्रवीनसें केबो इतो, नित खोजबो प्रेमके सागरको ॥३४॥

अर्थ. अमे रात दिवस जेने मळवानी उमेद राखिये छिये, तेने बेहाथ जोडीने विनंती करजो के, अमाराथी एटली शी चुक पडी छे के, तमे अमारे आंगणे आवतां नथी, तेमां तमारे शो डर छे? ज्यारथी नजरेनजर मळी छे. त्यारथी कागळ लखवानुं तो विसारवुंज नहि, ने प्रिय मित्र प्रवीणने एटलुं कहेजो के हमेशां प्रेमना समुद्रने शोध्या करजो. ॥ ३४ ॥

॥ सोरठा ॥

पाई नहीं ज्यु पाति, बाती बिरहाकी बुरी ॥
लोक कानिकी लाति, जाती घटी घरी घरी ॥३५॥

अर्थ. पत्र पाम्या नहीं ने विरहनी वात तो घणीज बूरी छे,अने हवे

लोकापवादनी लाय ते, मनमांथी घडिये घडिये विसरती जाय छे. ॥३५॥

इहि विधि विरह सनेह, बढत जात चरचा चले॥
उरमहि साधन एह, सागर लिख्यो प्रवीन ज्यू ॥३६॥

अर्थ. एवी रीते चर्चा चालवाथी विरह अने स्नेह वधी जायछे, अने मनमां पण एज साधन राखवानुं सागरे प्रवीणने लख्युं. ॥ ३६ ॥

॥ गाहा ॥

कुसुमसु कलाप्रवीनं, सागर मिंत विरह चरचा विधि ॥
पंचाशत अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥ ३७ ॥

अर्थ. कलाप्रवीणने कुसुमावळी साथे अने सागरने मित्रो साथे चर्चा चाली.ते संबंधी प्रवीसागर ग्रंथनी आ पचासमी लहेर संपूर्ण थई.॥३७॥

इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे कलाप्रबिन रससागर बिरह चर्चा भेदो नाम पंचाशत्तमो लहरं॥ ५० ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां पंचाशत्तमस्तरंगः समाप्तः ॥ ५० ॥

॥ अथ टीकाकारोक्ततरंग शिखाबंध॥ छंद भुजंग प्रयात॥

प्रवीणे कही भिन्नता नायकानी, छबी वर्णवी सागरे स्वप्रियानी ॥
कथा एह एकावनी लेरमां छे, कवीतो रुडां ते रसीलां कह्यां छे ॥

॥ अथ कला प्रवीन कुसुम संवादे ॥ बिरहांतर नायका भेद प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

ज्यों ज्यों नित चरचा चलत, त्यों त्यों प्रेम बढाय ॥
प्रेम बढत पाती लिखत , प्रति उत्तर सुख पाय ॥१॥

अर्थ. हमेशां जेम जेम चर्चा चाले छे, तेम तेम प्रेमने वधारतां जाय

छे, जेम जेम प्रेम वधेछे, तेम तेम एक बीजाने कागळो लखेछे. अने लखेला पत्रना प्रत्युत्तर वांचीने सुख पामेछे. ॥ १ ॥

विरह वढे फुनि कुसुम प्रति, देत प्रवीन सुनाय॥
विरहांतर विधिनायका, सुच्छम भेद बनाय ॥२॥

अर्थ. विरह वधी पडवाथी कळाप्रवीण पाछां कुसुमावळी प्रत्ये विरहना अंतरगत रहेली नायकाओनी विधिनो टुंक मतलबमां भेद बनावीने संभळावी देछे. ॥ २ ॥

॥अथ तत्र प्रथम स्वाधीनपतिका भेद द्रष्टांतालंकार ॥

॥ सवैया ॥

वादिके नाग, सिकारिके बाज ज्यों, प्यारिके पाननमें बिहरेहे ॥ सिद्द सुवा ज्यों, पढे ज्यों पढावत, चंदमुखी मुख फंद परेहे ॥ ओर कहा उपमा कहिये, अध आयससें इक पाय खरेहे ॥ पाय हमे अबकी पतियां महि, सागर काहु अधीन करेहे ॥ ३ ॥

अर्थ. सागरने कोई स्त्रिये वश्य कर्या छे, ते एवी रीते के, वादीना नागनी पेठे, अने शिकारीना बाजनी पेठे, प्यारी स्त्रीना हाथमांज ते रमण करे छे, सिद्धना पोपटनी पेठे ते स्त्री जेम भणावे तेम भणे छे, अने ते चंद्रमुखीना मोढारूपी पासलामां पडेला छे, बीजी तो शी उपमा कहिये? पण अर्धी आज्ञार्थीज एक पगे उभा रहे छे, हमणांना कागळथी अमे जाणना पाम्यां छिये; के सागरने कोइ स्त्रिये स्वाधीन करेला छे. ॥ ३ ॥

॥ अथ अभिसंधिता भेद ॥ संदेहालंकार ॥ सवैया ॥

बीन नवीन मृदंग बजे तिन, मिंत समाजहूमें सुख पाये ॥
कीधों करी विजया बिसरी हम, आसव कीधों असाध पिवाये॥

कीधों मिली कोउ मोहनी कामिनि, अंक लता गलता उरझा-ये ॥ कोन बिचार करेबो अबे, अहो सागर मिंत अज्यों नहि आये ॥ ४ ॥

अर्थ. हे सखी ज्यां नविन वीणा तथा मृदंग विगेरे वाजित्रो वागेछे, त्यां मित्रोनी मंडळीमां सुख पाम्या? कींवा विजयानो निशो कर्यो,? जेथी हुं विसरी गई? कींवा कोइये असाध्य थई जाय, एवी मदिरा पीवरावी? कींवा कोई मोह करनारी स्त्री मळी? के जेणे आलिंगन करिने कंठनी साथे वेलनी पेठे लपटावी राख्या? हवे शो विचार करवो; अहोहो? हजी प्रिय मित्र सागर आव्या नहीं. ॥ ४ ॥

॥ अथ कुसुमोक्त मुदिता भेद ॥ उत्प्रेच्छालंकार ॥ सवैया ॥

चंचलता चपलासि भई गति, रंग भयो मनु केसर रूली ॥ आनन ओप अनोप चढी मनु, पूरन चंद करे कह तूली ॥ रोमहि रोम प्रभा प्रगटी अति, मोद भयो मनु मानहु दू-ली ॥ अंग न मावतहे अंगिया, अब सागर कागर नागर फूली ॥ ५ ॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के सागरना पत्रथी प्रवीणने हर्ष वध्यो. ते एवो के तेनुं चंचळपणुं तो एवुं वधी गयुं के जाणे विजळीनी गति होय नै! शरीरनो रंगतो एवो थई गयो के जाणे केसरमां रोळाइ होय नै! अ-नूपम मोढा उपर चकचकतो एवो ओप चढी आव्यो के चंद्रमा तेनी तु-ल्यता शुं करी शके? रुंवाडे रुंवाडे कांति प्रगटी आवी, अने मनमां तो एटलो बधो हर्ष वधी पड्यो के जाणे परणवा सारु तैयार थएली दूली एटले कन्या होय नै? हवे सागरना कागळथीतो कळाप्रवीण एटली बधी फूलाई गई, के कंचूकीमां अंग पण समातुं नथी. ॥ ५ ॥

॥ अथ विदग्धा भेद ॥ लुप्तोपमालंकार ॥ सवैया ॥

बालसें केफ पुरी कहि बोलत, प्रौढसें जंत्र कहे दरदीको ॥
इष्ट दुहाइ कहे तरुनी प्रति, उत्तर देत सबे सबहीको ॥
हार समारि लगावत हे हिय, नेनन धार समारत टीको ॥
पन्नगकी फनिकी मनि ज्यों करि, राखत सागर कागर नी-
को ॥ ६ ॥

अर्थ. सागरनो पत्र हाथमां लईने पोताथी नानी कंन्याओनेतो आ केफनी पडी छे, एम कहीने बोले छे, अने पोताथी मोटेरी स्त्रियो पासे तो आ दरद मटाडवानो यंत्र छे, एम कहीने समजावे छे, पोता जेवडी तरुण अवस्थानी स्त्रियो पासेतो आमां इष्टदेवना सोगन लख्या छे, माटे देखाडवाथी पाप लागे, एम कहीने फोसलावे छे, एवी रीते सघळी स्त्रियोने प्रतिउत्तर आपेछे. एटलुंज नहीं, पण हारसमो करवाना मसथी हृदयनी साथे लगाडे छे, अने चांदलो समो करवाना बानाथी आंख्यो उपर धारी राखे छे, अने नागनी फणीनी मणीनी पेठे करीने सुंदर सागरना कागळने सावचेतीथी सारी रीते करी राखे छे. ॥६॥

॥अथ वासकसज्या भेद॥ जाति स्वभाव अलंकार ॥सवैया॥

पोप बिछाय बिछायत चांदनि, सेज बनाय तनाय कसेहे ॥
दीपक द्वारहि द्वार धरे, पुनि वारहि वार सिंगार ठसेहे ॥
आसव पास सुबास सुवासित, चदन कासमिहीर घसेहे ॥
पानन आनि समारि धरे, द्रग सागर आननके तरसेहे ॥ ७

अर्थ. चांदनीमां बिछायत करीने तेना उपर फूलना बिछानावाळा पलंगने ओछाडना छेडा सगबंधथी ताणीने बांधे छे, अने बारणे बारणे दीवा प्रगटीने मेलेछे, वारे वारे सणगार ठसावे छे, अने पासे सुगंधे वा-

सेला मंदिराना शीशा तथा चंदन अने केसर घसे छे, नागरवेलनां पान लावीने सुधारी राखे छे, अने तेनां नेत्रतो सागरनुं मुख जोवाने तरश्यां रहे छे. ॥ ७ ॥

॥ अथ प्रवीणोक्त कल्पित अनुशयना भेद ॥ असंभवालंकार ॥ सवैया ॥

साज सहेट कियोज्यु उपव्वन,आय तहां गुरु लोग कहांतें॥
एक दिना हम आये कितो करि,आप न आय सके हरमांतें॥
एबो बने न अबे तो कहुं अब, लोगन घेर रहे चिहुधातें ॥
सागर अंक हमे उलटे, अबतो मिलबोई रह्यो पतियांतें॥८॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के उपवनमां ठेरवेले संकेत स्थळे आववा हुं सज थई, त्यांतो क्यांयथी वडील लोको आवी चड्यां, एक दिवसतो अमे केटलाएक उपायो करीने त्यां आव्यां, परंतु आप (हर्म्य) महेलमांथी आवी शक्या नहीं, हवे तो क्यारेय आववानुं बने नहीं, केमके चारे तरफथी लोको घेरी रह्यां छे, हे? सागर आतो अमारा करमनाज आंकडा अवळा थया छे, माटे हवेतो मात्र कागळ पत्रथीज मळवुं रह्युं. ॥ ८ ॥

॥अथ कुसुमोक्त कल्पित अभिसारिका भेद शिवपूजनव्याज॥ लाटानुप्रास अलंकार ॥ सवैया ॥

नवसात किये, नवसात लिये, नवसात पिये, नवसात पिवाई ॥ नवसात रची, नवसात विधे, नवसात मगे, प्रति सागर आई ॥ नवसात कला, नवसातनकी, नवसातनमें अंचला मुख छाई ॥ नवसात रह्यो नवसातनमें, नवसात छुटी नवसात बताई ॥ ९ ॥

अर्थ. आ सवैयामां प्रवीण महादेवनी पूजा करवाने वाने सागरने

मळना जनी होय एवो कल्पित भाव छे, कुसुमावळी कहेछे के, प्रवीणे सोळ शणगार कर्या, अने सोळ सखियो साथे लीधी, तेणे सोरा, एटले सुगंधी, अने सखियोने पाई, पछी सोळ प्रकारे शिवनी शोडशोपचार पुजा रची, सोर एटले सोडने रस्ते अर्थात् पासेने रस्ते थइने सागर तरफ आवी, सोळ वरसनी प्रवीणनी सोळ कळा छे, ते सोळ सखियोमां, सोदा आडु अंचळ छाईने अर्थात् घुंघटो काढीने चाले छे, ते सोडना रस्तामांपण लोकोनो सोर थई रह्यो हतो, तेथी सोरा एटले सो एटले ते अने रा एटले रस्तो ते रस्तो बतावीने सोळे सखियो तेनाथी छुटी पडी.॥९॥

॥ अथ प्रवीनोक्त खंडिता भेद ॥ जाति स्वभाव अलंकार॥

॥सवैया॥

जाहिको जावक भाल लग्यो, अरु जा मदकी द्रग आरुनता॥
जा कर कंकन रेख भइ भुज, जा गज ओठ अरेखनता॥ जा
तन सोंध सुवास मिल्यो, पुनि जा हरवा उर गाडनता॥ जा
पद जेहर श्रोन सुने तुम, सागर ज्यु धन ता वनिता॥१०॥

अर्थ. आ सवैयामां सागर कोइ नायकाने त्यां रात रहीने आव्या होय तेने प्रवीण टवको देती होय एवो भाव छे, जेना पगना अळतानो रंग तमारा कपाळमां लागेलो छे, अने जेना मदनी तमारी आंख्योमां लाली पडी गई छे, जेना हाथना कंकणनी रेखाओ तमारी भुजामां उठी आवी छे, अने जेनी आंख्योना गज (काजळ) नी काळी रेखाओ तमारा होठ उपर आळेखाई छे, जेना शरीरना सोंधा (चुवा)नो सुगंध तमारा अंगनी साथे मळीने भभकी रह्यो छे, वळी जेना गळाना हारना दवाणथी तमारी छातीमां खाडा पडी गया छे, हे सागरजी जेना पगमां झंझरनो अवाज तमे काने सांभळ्यो ते स्त्रीने धन्यछे. ॥१०॥

॥ अथ प्रवत्सपतिका भेद॥ द्रष्टांत बिरोधाभास संकर अलंकार ॥ सवैया ॥

हीतें भइसु नइ हिलकी, तुम गोनकी बात सुनी तबहीतें ॥
रीतें कछू न सकी रहिबो कहे, भीत भइ असुवा न झरीतें ॥
वीते घरीसो महाविकटी, मन न्यारो भयो सुख साज स-
बीतें ॥ जीतें बेहाल भई सफरी थल, सागरसें कहेवी अर-
जीतें ॥११॥

अर्थ. ज्यारथी तमारा चालवानी वात सांभळी, त्यारथीज मारा हृद-यमांथी नवी हीक (ध्रुज) उपडी आवी छे, कोइ रीते तमने रहेवानुं कही शकी नहीं, अने आंसुनी झडीथी तो भयभीत थई गई छुं, ने जे घडी वीते छे तेतो घणी कठण वीते छे, अने सघळी सुखरूपी सामाग्रियोथी मन जूदूंज थई गयुं छे, पाणीनी मांछली स्थळने पामीने बेहाल थई जाय, एवी रीते जीवथी बेहाल थई गई छुं. हे सखि एटली अरजी तारे सागरने कहेवी. ॥११॥

अथ प्रोषित पतिका भेद द्रष्टांत एकावलि अलंकार ॥ सवैया॥

चारनकों ज्युं उखारत झारन, तारन क्यों अटके वहबारन॥
बारनके ज्यु प्रवाह बहे नद, सो क्युं बंधे सिकतानकी पारन॥
पारन शृंग गिरीन समीरसुं, क्यों रुकिहे मकरीनकि जारन॥
जारन काम सबे जग सागर, क्यों सु समे सियरे उपचारन१२

अर्थ. जे हाथी चाराने सारुं मोटां मोटां झाडोने उखेडी नाखे, ते हाथी तागडाथी केम अटके ? जे मोटी नदियोना पाणीना प्रवाह वह्या जाता होय. ते वेळुनी पाळथी केम बंध रहे ? जे पवन पहाडोनां शिखरोने गबडावी पाडे, ते करोळियानी जाळवते केम करी रोकाय ? तेमज हे

सागर, सघळा जगतने बाळनारो जे कांमदेव छे, ते थंडा उपचारोथी कइ रीते समे ? ॥१२॥

॥ दोहा ॥

विना नियम संछेप करि, कही नायका रीत ॥
चिंत मिंत वाढत विरह, नित नित नईसु प्रीत ॥१३॥

अर्थ. ए रीते वगर नियमे संक्षेपथी नायकाओनी रीत कही, अने चित्तमां जेम जेम मित्रनो विरह वधे छे, तेम तेम दिवसे दिवसे नवीन प्रीति थती जाय छे. ॥१३॥

॥ सोरठा ॥

कुसुमावलि प्रतिमीत, चरचाकला प्रवीन किय ॥
रस सागर वहरीत, कीन मिंत प्रति सो कहे ॥१४॥

अर्थ. जे रीते कुसुमावळी साथे मित्र कळाप्रवीणे चर्चा करी, तेज रीते रससागरे पोताना मित्रो साथे जे चर्चा करी, ते हवे कहिये छिये. ॥१४॥

॥अथ कलाप्रवीन वर्नन ॥रससागर मिंत चर्चा प्रसंगो यथा॥ पदछेकानुप्रास प्रतिपालंकार॥ सवैया ॥

कसमीरहि कीरहि हीर जंबीर, वबीरन रंग बढावहिगे ॥ द्रगलालहि काल मराल प्रवाल सु, व्याल कहा गति लावहिगे ॥ अरविंदहि चंद म्रगेंद्र कुमूदहि, कुंद कहा छबि पावहिगे ॥ मीन हरीन करीन कहा सो, प्रवीन जबे दरसावहिगे ॥१५॥

अर्थ. सागर कहेछे के हे मित्र ? पोताना गुणथी वखणातां जगतमां केटलांएक छे, तेओ प्रवीणनी आगळ शुं वधारे शोभा पामशे ? ते एछेके केसर, पोपट, हीरो, लिंबुवा नारंगी अने धोळुं, शुं पोतानो रंग तेनाथी

वधारी शकशे ? वळी कोयल, काळ, हंस, परवाळां अने सर्प, शुं प्रवीणना गुणनी पदवी लावशे? कमळ, चंद्र, सिंह, पोयणी, अने डोलर, एओ तेना आगळ शुं शोभा पामशे? ज्यारे साक्षात प्रवीण देखाशे, त्यारे मच्छ, हरण अने हाथी, एओ शा हीसाबमां गणाशे? मतलब के प्रवीणनो चोटलो, दांत, स्वर, केड, चाल, काळनी चपळता जेवी चपळतावाळां नेत्र, आदिक जेवां वखणाय छे, तेवां उपर लखेलां ते शुं वखणाशे ? ॥१५॥

॥ अथ संदेहालंकार ॥ सवैया ॥

माधविकेज्यु प्रसून परे रस, भृंग समारतहे पखियां॥ कीधों त्रिबेनि तरंगनमें, कर अंजुलि मेन लई झखियां ॥ खेलत कंजमें खंज, प्रबीन ज्यु पाटकि पास दुहू नखियां ॥ कोन घरी इन आंखिनतेंज्यु, निहारहु नेहभरी अखियां ॥१६॥

अर्थ. आमां नेत्र वर्णन छे,माधवीना पुष्पोना रसमां पडीने भमरो पांखोने समारे छे, किंवा त्रिवेणीना तरंगमां कामदेवे हाथनी अंजळीमां माछलियोने लीधेली छे? के कमळमां बे खंजन पक्षी रमे छे, के प्रवीणे चोपाट रमतां बे पासा नाख्या छे ? हवे कई घडिये आ नेत्रोथी ए स्नेहभरी आंख्योने निहाळीने जोशुं ? ॥१६॥

॥ अथ प्रतिपालंकार ॥कवित॥

अंक न कलंक जाके, राहकी न शंक कछु, जामे बसुधाकी सोध सुधा भरियतुहे ॥ एनतें सरस नेन, पच्छहू घटे न जोति, सोई छबि दिनरेन दूनी धरियतुहे ॥ चकवा सु, भोंर, ओर कंजकों न भयकारी, बिरही बिलोकेसें बियोग हरीयतुहे ॥ आनन प्रबीन आगे, मान न रहेगो शशि, क्योंरे दुखदान तें गुमान करियतुहे ॥१७॥

अर्थ. आमां मुखनुं वर्णन छे. जेने कलंकनुं चिन्हनथी, कांइ राहुनो पण डर नथी, जेमां सघळी पृथ्वीनुं अमृत शोधीने भरेलुं छे, अने जेमां मृगथी पण सरस नेत्रो रह्यां छे, जेनी कळानी जोति कोइ पक्षमां घटती नथी, एतो रात दिवस बमणी शोभा धरेछे, तेम चकवा, भमरा अने कमळने पण भय करनार नथी, जे जोवाथी विरही लोकना वियोगने हरे छे, माटे हे? चंद्रमा प्रवीणना मुख आगळ तारुं मान रहेशे नहीं, तोहे? दुःखने देनारा केमरे तुं गुमान करेछे. ॥ १७ ॥

॥अथ समरूपक अलंकार ॥कवित॥

गज गति चढ्योहे सु, पढ्यो वीर बानविद्या: दुंदभी अवाज नाद नुपुरके गाजको॥ भौंहनको चाप करी, नयन कटाछ सर, अलक पलीता, नेह आतस समाजको ॥ शीशफूल छत्र शिर, बेसरको इतमाम, केसरकी आड किरवान शिरताजको॥ लाजगढ तोरबेकों, मोरबेकों मान मद, कामनी सरूप आयो सेन रतिराजको ॥१८॥

अर्थ. कामदेव प्रवीणनी चालवानी गतिरूप हाथिये चड्यो छे, ने ते शुरवीर, प्रवीणनी वाणीरूपी बाण विद्या भण्यो छे, झांझररूपी नगाराना गाज अवाज थाय छे, भृकुटीरूपी धनुष करीने नेत्रनां कटाक्षरूपी बाण कर्या छे, केशरूपी पलीतामां तेलरूपी अग्निनो समाज राखेलो छे, शिरफूलरूपी माथे छत्र धरेलुं छे, नाकना नकवेसररूपी इतमाम (चमर) छे, केसरनी आडरूपी मुगटधारी कामदेवनी तरवार छे, आशकनी लाजरूपी गढने तोडवा सारुं, अने मान तथा मदने उतारवा सारुं, आ कामनीने रूपे रतिना पति कामदेवनुं सेन आव्युं छे. ॥ १८ ॥

॥ अथ छेकानुप्रास स्मरनालंकार ॥ कवित ॥

नेनन तरंग न,तरंगनासि रंगनकी,अंगन सुरंग रंग ओरे छविकों धरे ॥ कज्जर कटाछनतें सजर भयेहे द्रग, नजर विकल चहे फजर न होहरे ॥ नवलअनंगा रतिरंगा कब संग होय, प्रच्छन प्रगट आये बोल बोलबो परे ॥ ताछिन निहार,वार वार चित धार धार, बंदीजन बीछुवा बिरद बोलबो करे ॥ १९॥

अर्थ. हवे सागर नवल अनंगा नायकारूपी प्रवीणनुं स्मरण करेछे, ते एवी रीते के-जळना तरंगना रंग जेवा तेना नेत्रना तरंग,अने तेना अंगनो जे सारो रंग तेतो जूदाज रंगनी छवीने धरे, अने काजळ तथा कटाक्षथी सजळ थयेलां तेनां नेत्र गभराएली नजरथी हजी प्रभात केम थतुं नथी एवुं चाहे, एवी नवलअनंगा रतिक्रीडाना रंगवाळी प्रवीणनो मारे क्यारे संग थशे? अने ते गुप्त रीते के प्रगट रीते आव्याथी तेनी साथे वचन बोलवां पडे,ते क्षणे वारे वारे निहाळीने चित्तमां धारी धारीने तेना विछवारूपी बंदीजन विरदावळि बोल्या करे. ॥ १९ ॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ कवित ॥

सितकार जासु, अलकावलि निशान छूटे, बेसर बीर ह इतमाम डोलबो करे ॥ अंबक सुभट, नाग सेल तन साजलिये, कुंभी कुच, आंगी अंधियारी झोलबो करे ॥ मनिनके भूपन सो चमकहे शस्त्रनकी, सूत नीवी सामज जंजीर रोलबो करे ॥ रतिरंग चढेहे तिमंगलेश महाराज, बंदी जनबिछुवा विरद बोलबो करे ॥२०॥

अर्थ. वळी सागर रतिक्रीडारूपे कामदेवनी चढाइनुं स्मरण करेछे, ते ए रीते के--रतिक्रीडामां नायकाना मुखना सीतकाररूपी जासुसो बोले

छे, अने चोटलानी लटोरूपी निशान छूटयां छे, नाकना मोतीरूपी शूरवीरनुं चामर डोल्या करे छे, नेत्ररूपी सुभटोये काजळनी रेखारूपी भालां अंगमां सजी लीधेलां छे, स्तनरूपी हाथी उपर कंचुकीरूपी अंधारी एटले मोजाळ झूलया करेछे, मणीओनां घरेणांरूपी हथीआरो चळकेछे, सुत्रनी नाडीरूपी हाथीनुं लंगर रोळाया करे छे, कामदेव महाराज रतिरंगमां चड्या छे, अने वीछवारूपी वंदीजन विरदावळी बोले छे.॥२०॥

॥ अथ लुप्तोपमालंकार ॥ कवित ॥

जावक, ज्यासुत, जपा, किंशुक, कनेर, कंज, बंधुक, बिबूरनको अरून चरनमें ॥ मधुप्री, मजीठ, मेंदी, किर्मज, कुसुंभ, कंकू, संग्रफ सुरोचनकी सुरखी करनमें ॥ मानिक, मंर्जरी, मूंगे, कीरचंच, कलहंस, अरुनी अनार इंद्रवधू अधरनमें ॥ याहिते प्रवीन ज्यु नवीन नेन डोरे लाल, लाल लाल सेत श्याम त्रिविध बरनमें॥२१॥

अर्थ. अळतो, मंगळनो तारो, जासुसनुं फूल, केसुडां, करेण, कमळ, बपोरीआ, अने बिबुरण, (घोलुं) एओनो लालरंग तो जेना पगमां छे, (मधुप) राता मुखवाळो भमरो, मजीठ, मेंदी, किरमज, कसुंबो, कंकु, (संगरफ) हींगळो, (रोचना) गोरोचंदन, एओनी लाली जेना हाथमां छे, माणिक्य, (मंजरी) रातुं कुंपळ, परवाळां, पोपटनी चांच, हंसकल (कलहंस) केतां हंसनां बच्चांना पग अने चांच, दाडम, अने इंद्रवधु एटले चोमासाना राता जीवडा, एओनी लाली जेना होठमां छे, एओना करतां पण प्रवीणना नेत्रना डोळा नवाइ जेवा राता छे, अने ते वळी रातांथी राता ने श्याम अने श्वेत, एवा त्रण प्रकारना रंगमां छे. ॥२२॥

॥ अथ उल्लेखालंकार ॥ सवैया ॥

पांइन मध्य महावर भो, अंगुरी बिछुवा, मुरवा भयो नूपुर॥ किंकनि भो कटिमें, पहुची कर,कान तरब्बन, हार उरूपर॥ नासन बेसर, कज्जर भो चख, केसर आड लिलार हु भ्रूप-र॥ मांग प्रवीन भयो मन बंदन, मंड अखंड रह्यो तन ऊ-पर ॥२२॥

अर्थ. सागर कहेछे के मारुं मन प्रवीणना पगमां (महावर) अळताना रंगरूप थयुं, आंगळियोमां वीछीआरूपे थयुं, घुंटीओमां झांझररूपे थयुं, केडमां कटिमेखळारूप थयुं, हाथमां पोंचीरूप थयुं, कानमां अकोटीरूप थयुं, हृदय उपर हाररूप थयुं, नाकमां नथरूपे थयुं, नेत्रमां काजळरूपे थयुं, भमरथी उपर कपाळमां केसरनी आडरूप थयुं, प्रवीणना सेंथामां सिंदुररूपे थयुं, अने तेना आखा शरीर उपर घरेणारूपे थइने रह्युंछे.॥२२॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

आन बधू मुखचंद, उडग्गन, छांह परे छवि हीन लसेंगे ॥ संकट जंबुकं, त्रास उलूक, दुरीजन चित्त दरीन धसेंगे॥ पं-ख समारहिंगे भ्रकुटी मधु, कोक हिये द्रग शोक नसेंगे॥ कंज हियो बिकसेंगो तबेहि, जबेहि प्रवीन रवी दरसेंगे॥२३॥

अर्थ. प्रवीणना मुखरूपी सूर्यने जोइने बीजी स्त्रीओना मोंढारूपी चंद्रमा अने तारामंडळ उपर छाया वळीने तेओ छवी हीन थइने शोभशे, संकटरूपी शियाळीयां, अने त्रासरूपी घूडो दुष्टजनना चितरूपी गुफाओमां धशी जशे, भृकुटिरूपी भमरा पांखोने पसारशे, नेत्ररूपी चकवाना मननो शोक नाशी जशे, एवी रीते ज्यारे प्रवीणरूपी सूर्य देखाशे. त्यारे अमारा हृदयरूपी कमळ प्रफुल्लित थशे. ॥२३॥

॥ दोहा ॥

इहि विधि चरचा चलतहे, बिरहा उभे वढंत ॥
निशदिन चिंत चहंतहे, मिंत मिंत प्रति मिंत ॥२४॥

अर्थ. एवी रीते बन्नेजणने विरह वधवाथी चर्चा चालेछे, अने रात दिवस चित्तमां मित्र मित्र प्रत्ये मित्रने चाहेछे, अर्थात् परस्पर चाहेछे. ॥२४॥

॥ गाहा ॥

विनता भेद प्रवीनं, सागर किय प्रवीन बर्नन विधि ॥
एकावन अभिधानं, पूर्न प्रविन सागरो लहरं ॥२५॥

अर्थ. प्रवीणनो कहेलो नायकाभेद, अने सागरे कहेलुं प्रवीणनुं वर्णन ए संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी एकावनमी लहेर संपूर्ण थई. ॥२५॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे विरह दशांतर नायका भेद कला प्रवीन बर्ननो नाम एकपंचाशत्तमो लहरं ॥५१॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकपंचाशत्तम स्तरंगः समाप्तः ॥ ५१ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

परवीण चाली द्वारिकां, लै संघ साथे जे समे ॥
सागर बनी गोस्वामि पहोच्या, द्वारिका पुरि ते समे ॥
ए बिगत सघळी वर्णवी, जुगते करी कविजन यथा ॥
आ लेर बाननमां तमे, वांची जुओ एटलि कथा ॥

॥अथश्री द्वारिकानाथ प्रयान प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

चरचा विरह चलंत, एसें दिन बीतत उभे ॥
दंपति चिंत चहंत, कब मिलवो करता करे ॥१॥

अर्थ. एवी रीते चर्चा चालतांज बेयना दिवस वीतेछे, स्त्री पुरुष बंने

पोताना चित्तमां एम चाहेछे केजगतकर्त्ता परमेश्वर हवे क्यारे मेळाप करशे? ॥१॥

मनकी दशा प्रमान, प्रति इकेक पाती लिखत ॥
धरे अहोनिश ध्यान, कब मिलबो करता करे ॥२॥

अर्थ. पोताना मननी दशा प्रमांणे परस्पर एक बीजा उपर कागळो लखी मोकलावेछे, एटलुंज नहीं, पण हवे जगतकर्त्ता परमेश्वर क्यारे मिलाप करावशे, एम रातदिवस ध्यान धर्या करेछे. ॥२॥

॥ जातिस्वभाव अलंकार ॥ छपय ॥

एसे अहर कितेक, बहत मनमे मुरझाने ॥
उभै बिरह बाढंत, मिलनको मन अकुलाने ॥
तबही कला प्रबीन, एह उरसें उपाय किय ॥
मिलन धार उत मिंत, नेम द्वारामतिको लिय ॥
उनबात भांखि आमात प्रति, महाराज सासन मगिय ॥
उन बाकसिद्ध सिद्धा बचन, परि पूरन होवन लगिय॥३॥

अर्थ. एवी रीते केटलाक दिवसो वीतवाथी मनमां मुझायां, अने विरह वधवाथी मळवासारु बन्ने मनमां अकळायां, त्यारे कळाप्रबीणे पोताना मनथी आवो उपाय गोठव्यो, के त्यां मित्रने मळवानुं धारीने द्वारामतीए जवानुं नाम लीधुं, अने तेणे कामदारने वात कही संभळावीने महाराजानी (पितानी) आज्ञा मागी, अने ते वचनसिद्धिवाळा सिद्धनां वचन परिपूर्ण थवा लाग्यां. ॥३॥

॥ सोरठा ॥

कीनी अरज अमात, कुमरि उक्त छितिपाल प्रति ॥
महाराज सुनि बात, यह प्रति उत्तर दीन तब ॥४॥

अर्थ. राजकुंवरीना कह्या प्रमाणे कामदारे जइने महाराजानी हजूरमां अरज करी, त्यारे ते वात सांभळीने महाराजाए आ प्रमाणे प्रतिउत्तर आप्यो. ॥४॥

कुमरी वरजो जाय, क्यों विदेश कीजे गमन ॥
देव दरस इत आय, सो घट घट व्यापी सदा ॥५॥

अर्थ. तमे जइ कुंवरीने वारो, के परदेशमां शुं करवा जावुं जोइये, देव आंही आवीने देखाय छे, केमके ते देवतो निरंतर घट घटमां व्यापछे. ॥५॥

॥ चोपाई ॥

नृप आयसा अमायत मग्गे, कला प्रवीन बर्जने लग्गे ॥
कुमरी तब अमात प्रति बोले, अब चित बात आपसें खोले ॥
जब कुमारिका व्रत हमलीनो, द्वारामती नेम तब कीनो ॥
द्वारकेश सपनें अब आये, विस्मृत बात याद वह लाये ॥
श्रीमुख कही जोन उत आवे, तो कुमारिव्रत सिद्धि न पावे ॥
सो अमात सुनि नृपपें आये, सुपनभेद कहिकें समुझाये ॥
नृपनें सत्यबात तब चीनी, कुमरि गमनकी आयसदीनी ॥
दुजन बुझी शुभ मुहुरत लीनो, निज आराम अवमोचन कीनो ॥ ६ ॥

अर्थ. एवी रीते कारभारीनी मारफते राजानी आज्ञा मागी, त्यारे राजा तो कळाप्रवीणने वारवा लाग्या, त्यारे कुंवरी कामदारनी पासे बोल्यां के हवे हुं मारा हृदयनी वात आप पासे प्रसिद्ध करूंछुं, ते साभळो, ज्यारे में कुमारिका व्रत्त लीधुं, त्यारेज द्वारिका जवानो नियम धार्यो हतो, जेथी हमणां द्वारिकानाथ सोणामां आव्या, अने तेणे भूली गयेली वातनी याद करावी, एटलुंज नहीं, पण श्रीमुखेथी कह्युं के जो तमे त्यां नहीं

आवो तो कुमारिकाव्रत्तनी सिद्धि पामशो नहीं, एवात सांभळी कामदार राजा पासे आव्या, अने तेणे सोणानो भेद कहीने राजाने समजाव्या, त्यारे महाराजाये वात साची जाणीने कुंवरीने जवानी रजा आपी, पछी ब्राह्मणोने पूछीने शुभ मुहूर्त्त लीधुं, ने पोताना बागमां प्रस्थानुं कराव्युं. ॥६॥

॥ दोहा ॥

मुहूरत लखि निज बाग प्रति, उतरे कला प्रवीन ॥
नीत पाल पथ कुमरिके, यहे जावदा कीन ॥ ७ ॥

अर्थ. सारुं मुहूर्त्त जोइने कलाप्रवीण पोताना बगीचामां जइने उतर्यां, एटले नीतिपाळ राजाये मुसाफरीने पंथे कुंवरीनी साथे जवाने आ प्रमाणे जावदो कर्यो. ॥७॥

॥अथ छंद निशानी॥

कुमरी की तेनातमें, दीवान कराया ॥ पेदल पंचहजारका, हूकुम फुरमाया ॥ सातवडे सिरदारसें, परियान कहाया॥ सिलेपोस दोसहस सो, रथ संग चढाया ॥ ब्रह्म मुहूरत सुद्ध करि, प्रस्थान ठराया॥ बृद्ध जनाना राजसें, रथ साथ चलाया ॥ ओही दिन बागातमें, मूकाम द्रढाया ॥ कला प्रवीन अनंत उर, आनंद वढाया ॥ ८ ॥

अर्थ. महाराजाये कुंवरीनी तेनातमां साथे जवा सारुं एक दिवानने मुकरर कराव्यो, पांचहजार पायदळने जवानो हुकम फरमाव्यो, अने सात सामंत सरदारोने पण साथे प्रयांण करवानुं कहाव्युं, बे हजार भालांधारी घोडेस्वारो, ने एकसो रथ साथे चडाव्या, ब्राह्मणोये आपेला शुभ मुहूर्तने साचवीने प्रस्थानुं करवानुं ठराव्युं, पोतानी राजधानीना जनानखानामांथी वृद्ध राणियोने रथ साथे चलावियो, ए दिवसे तो बागानमांज मुकाम कर-

तानुं द्रढ कर्युं, ए प्रमाणे (मनगमतुं काम थवाथी) कळाप्रवीणना हृदयमां आनंद वधी गयो.॥८॥

॥ सोरठा ॥

कीन बिलंब कुमार, प्रति उदान दश पंच दिन ॥
आए लोग अपार, अंतेउर उमराव जुत ॥ ९ ॥

अर्थ. राज कन्याये बागमां दश पांच दिवस विलंब कर्यो, तेथी बीजी राणियो तथा अमीर उमराओ सुद्धां अगणित लोको त्यां आव्या.॥९॥

सुन्यो सु तीरथ नांउ, करत गवन परबीनज्यूं ॥
गांउ गांउ प्रति गांउ, आये उते अनेक जन ॥ १० ॥

अर्थ. कळाप्रवीण तीर्थे गमन करे छे, एवुं नाम सांभळ्युं, के तुरत गामोगाम प्रत्येथी त्यां अनेक लोको आव्या.॥१०॥

॥ छपय ॥

उहि मुकामसें पत्र, कला परबीन एक किय ॥
दिय हलकारन हाथ, नंदभारती नाम लिय ॥
दीजे पाती ताय, यही रसना सु कहावे ॥
हमें कामरू गमम, भयो उत आप सिधावे ॥
तामहि सुवीर सागर पती, सब प्रकार तामहि लिखित॥
औरे विचार उन मुन लहे, अंत सोरठा निज भखित॥११॥

अर्थ. एज मुकामथी कळाप्रवीणे एक पत्र लखीने तैयार कर्यो, ते भारतीनंद कवीनुं नाम कही समजावीने हलकाराना हाथमां आप्यो, ने मोढेथी कयुं के तेने पत्र देजो, ने कहेजो के अमारुं कामरूपीठ तरफ गमन थयुं छे, माटे त्यां आप पण पधारजो, ए भारतीनंद कवीना कागळना बीडामांज सागरनो पत्र बीड्यो, जेमां सर्व प्रकारना समाचार लखेला हता,

बीजा विचारनुंतो मौनपणुं लीधुं, पण मांही एक सोरठो पोतानो रचेलो हतो, ते तेने कही संभळाव्यो.॥११॥

॥अथ वह ॥ सोरठा ॥

देवो पाती मिंत, जेवो उत केवो इतो॥
सेवो सुख दुख चिंत, एवो विसरेवो नहीं ॥१२॥

अर्थ. त्यां जईने मित्रना हाथमां पत्र देवो, अने एटलुं कहेवुं जे सुखदुःख थाय,ते मनमां सहन करवुं, आववानुं विसारवुं नहीं.॥१२॥

पाती पंथिक देह, नेह नगर कीनो बिदा ॥
निज मन वढित सनेह,मिंत मिलन आगम उमंगि॥१३॥

अर्थ. कागळ तो पंथीने आपीने नेहनगर तरफ रवाना कर्यो, अने पोताना मनमां स्नेह वधी गयो, अने मित्रने मळवानुं नजीक आववाथी उमंग पाम्यां.॥१३॥

॥ छपय ॥

कुमरी कलाप्रबीन, साथ अनेक संग लिय ॥
सहज गमन उत्साह, मंद मंदही गमन किय ॥
वहे पत्र हलकार, नेह नगरहि पहुंचाया ॥
वंचत सुकवि सुभेद, चिंत आनंद वढाया ॥
उन प्रति इनाम आपहि वकसि, प्रातसु सागर पत्र लिय॥
उत्साह भरे महराज प्रति, राजद्वार परवेस किय ॥ १४ ॥

अर्थ. राजकुमारी कळाप्रवीण पोतानी साथे अनेक माणसोनो संग लईने सहज गमन करे छे, माटे उत्साहथी धीमे धीमे चालवा लाग्यां, अने ओह्या पत्रने हलकारे जईने नेहनगर पहोंचाड्यो, ने कविना हाथमां आप्यो, तेनो भेद वांचतांज सुकविना मनमां आनंद वधी गयो, तेथी हलकाराने

पोतेने इनाम आप्युं, अने सवारना पहोरमांज सागरनो पत्र हाथमां लई हर्षथी भरपूर थयेला कविराजे महाराजा पासे जवासारूं राजद्वारमां प्रवेश कर्यो. ॥१४॥

॥ दोहा ॥

सागरपें सुकवी गये, आशिष कीन उचार ॥
सनमुख बेठे मुदित मन, मुसकत वारहि वार ॥१५॥

अर्थ. कविराजे सागर पासे जइने आशिर्वादनो उच्चार कर्यो, पछी मनमां आनंद पामीने सनमुख बेठा, अने वारंवार मोढे मरकवा लाग्या. ॥१५॥

॥अथ छंद मुक्तदाम ॥

निहारत भेद वहे जो नरिंद, विचारसु बुझिय तासु कविंद ॥ कह्यो प्रति उत्तर भंखित बेन, निशा महि आज कियो हम सेन ॥ लिख्यो सुपने महि अंब सरूप , उने इक भंखिय गाह अनूप ॥ हमे वह गाहसु मातु शिखाय , कहीसु सुनावहु सागर जाय ॥ तऊपर एक बचंन सुपाउं , तबे वह गाहन भेद सुनाउं ॥ वढी वह बूझन सागर चाह॥ तबे बकसो चर मां कविराह ॥१६ ॥

अर्थ. मरकवानो भेद जोईने नरना ईंद्र रससागरे तेनो विचार ते कविना ईंद्र भारतीनंदने पूछ्यो, त्यारे कविये प्रत्युत्तरमां आ प्रमाणे वचन कह्यां के, आज रात्रिमां में शयन कर्युं, त्यारे सोणामां अंबाजीनुं स्वरूप दीठुं, पण एक अनोपम गाहा कही, अने ते गाहा माताजिये मने शीखवी, ने कह्युं के सागरनी पासे जइने आ गाहा कही संभळावजे, माटे ते उपर जो एक वचन पामुं तो ए गाहानो भेद संभळावुं, ते जाणवानी सागरने इच्छा वधी गई, तेथी ते कविराजने एक वरदान बकशीश कर्युं.॥१६॥

॥ सोरठा ॥

सुकवि पाय बरदान, कहन लगे सागर सु प्रति ॥
आपहि उक्ती बान, वह गाहनको भेद लिय ॥ १७ ॥

अर्थ. एवी रीते कवि वरदान पाम्या, ने महाराजा सागरने कहेवा लाग्या, अने पोतानी उक्तिनी वाणीमां ते गाहानो भेद लावी मूक्यो.॥१७॥

॥ अथ भारतीनंदोक्त वह ॥ गाहा ॥

जिहि घट प्रेम प्रकाशं, आशं पूरंत इशरं तासं ॥
दीपमालिका दिवसे, जे जावंत कामरूपीठे ॥ १८॥

अर्थ. जेना घटमां प्रेमनो प्रकाश छे, ते जो कदी दीवाळीने दिवसे कामरूपीठे जशे, तो तेनी आशा ईश्वर पूर्ण करशे.॥१८॥

॥ अथ सागरोक्त प्रत्युत्तर ॥ गाहा ॥

तुम आराध अदरियं, करियं ध्यान खंडितं सेवा ॥
मन इच्छा नह लहियं, कहियं अंब पंथ प्रतिकूलं ॥१९॥

अर्थ. सागर कविने कहेछे के तमे आराधन आदर्युं हतुं खरुं, पण ध्यान तथा सेवा भाग्यां तुट्यां कर्यां, तेथी मननी ईच्छा प्रमाणे सिद्धि पाम्या नहीं, अने अंबाजिये तमने अवळो रस्तो कह्यो, अथवा मनेच्छापूरीनो रस्तो न लेतां उलटो बताव्यो. ॥१९॥

॥ दोहा ॥

करी अरज कर जोर कवि, यह सत धारो चिंत ॥
हमहीसें सुपने शिवा, कबी न जूठ कहंत ॥२०॥

अर्थ. त्यारे कविये बेहाथ जोडीने अरज करी के, आ वातता मनमां साचीज धारजो, केमके अमने सोणामां भवानी क्यारेय जुठुंतो कहे नहीं. २०

॥ अथ छंद पद्धरी ॥

एती उचार कवि पत्र दीन, महराज भये मन मोद भीन ॥ खोलंत वीर बंच्यो बनाय, कीनो पयान परबीन पाय ॥ बोले सुबानि फुनि सुकवि प्रत्य, सुपने शिवाज्यु भंखी सु सत्य ॥ प्रेमसु प्रकाश मन भो अनंद, एकंत कीन चरचा कविंद ॥ सातहू मिंत उत मिले आय, सागर सु भेद दीनो सुनाय ॥ मनमें द्रढाय जातरह जान, वत प्रथम कीन तजवीज थान ॥ २१ ॥

अर्थ. एटली वात उच्चारीने कवियें पत्र आप्यो, जेथी महाराजा मनमां हर्षथी भींजाइ गया, परवीडियुं खोलीने सारी रीते पत्र वांच्यो, त्यारे प्रवीणे प्रयाण कर्युं, एवा समाचार पाम्या, पछी कवि प्रत्ये वचन बोल्या के, तमने सोणामां जे देवियें कह्युं ते साचुं, पछी प्रेमना प्रकाशने लीधे, मनमां आनंद थयो, जेथी एकांतमां बेशीने कवि साथे चर्चा करवा लाग्या, त्यां साते मित्रो आवी मळ्या, एटले सागरे सघळो भेद संभळावी दीधो, पछी जातराए जवानुं मनमां द्रढावीने पहेलां पोताना संस्थाननी तजवीज करवानी वात करी. ॥२१॥

॥ सोरठा ॥

वरज बडो इतमाम, मिंत न मिलिहे वह लिये ॥
निश अध तजि निज धाम, सात मिंत पथ सर भये॥२२॥

अर्थ. मोटी स्वारीनो डोळ पड्यो मूक्यो, केमके ते साथे लेवाथी मित्र मळशे नहीं एम जाण्युं, पछी अरधी राते पोतानी राजधानी तजीने कोइ न जाणे एवी रीते साते मित्रो रस्तासर थया. ॥२२॥

॥ छपय ॥

रस सागर किय गमन, रहत प्रच्छन निजके पुर ॥

निज जनपद सु उलंघ, अतिहि आनंद बढत उर ॥
ओर नृपति इक सहर, नीठ उपबन मन भाया ॥
लगी सांझ दरसान, उतें अवमोच द्रढाया ॥
कीजत अखेट लागे करन, मिल मनुहार सु पावही ॥
घन घोर घटा अंबर चढी, दामनि दुति दरसावही ॥२३॥

अर्थ. पोताना शहेरमां कोइ कारणने लीधे छांना रहे छे, एवुं ठरावीने कोइ न जाणे एवी रीते रससागरे गमन कर्युं, तेने पोतानो देश उलंघीने जवा पछी हृदयमां अतिशे आनंद वध्यो, अने बीजा राजाना शहेरनी पासे एक बगीचो हतो, ते पोताने गम्यो, अने सांझ पण देखावा लागी, तेथी त्यांज उतारो कर्यो, अने करेला शिकारथी गोठ करवा लाग्या, अने ते जम्या,एटली वारमांतो आकाशमां वरसादनी घोरघटा चडीआवी, अने वीजळीना सबकारा देखावा लाग्या.॥२३॥

॥ दोहा ॥

एतेमें नृप नगर सुत, बिधकर जूथ बुलाय ॥
आय निहारन बाग निज, सागर परसे आय ॥२४॥

अर्थ. एटलामां तेज शहेरना राजाना कुमार पोतानी साथे सिपाइयोनुं टोळुं लइने पोतानो बाग जोवा आव्या, त्यां सागरने जइ मळ्या.॥२४॥

किय पंथिक मनुहार अति, अमल सुरा अचवाय ॥
नित बूझत वह नृप कुमर, को निज थान कहाय ॥२५॥

अर्थ. तेणे मुसाफरोने अमल तथा मदिरा पीवरावीने घणो सत्कार कर्यो, ने ते राजकुमार त्यां पूछवा लाग्या, के आपना रहेवाना स्थानकनुं शुं नाम छे, ते कहो.॥२५॥

॥ अथ सागरोक्त ॥ सोरठा ॥

हमें निकट नहि वास, इतसें वहु अंतर रहे ॥
द्वारामतिकी आस, दीपोत्सव दरसन चहे ॥२६॥

अर्थ. त्यारे सागरे कह्युं के अमारुं रहेवानुं स्थळ नजीक नथी. ने अमे तो अहींथी घणे छेटे रहिये छिये, पण केवळ दीवाळीना उत्सवना दर्शननी चाहनाने लीधे द्वारामती प्रत्ये जवानी आशा राखिये छिये.२६

॥ अथ वह कुंवरोक्त ॥ छंद महालक्ष्मी ॥

परीकर नेनमें आने, वडे जन वाहीने जाने ॥ कहा उन सुभट हे केते, इनोने कह्या हम एते ॥ प्रत्युत्तर एह जब पाये, कुमर अद्भूत उर लाये ॥ वहे बिधि पंथियों जानी, परस्पर भंखितं वानी ॥ गया नृपसूनु निज जग्गे, विचारन पंथि मन लग्गे ॥ यहे सामानसें जावे, बिलोकनहार भरमावे ॥ सबे मिलि एह ठहराया, महेश्वर साधिये माया ॥ निशा महि स्वप्न उच्चारे, सबे वह भेखकों धारे ॥२७॥

अर्थ. राजकुंवरे ते मुसाफरोना समाजने नजरमां लावीने तेओने मोटा अमिर लोक जाण्या, पछी तेणे कह्युं के तमारी साथे केटला युद्धाओ छे, त्यारे आ मुसाफरोये कह्युं के, अमे आटलाज छिये, एवो जवाब मळ्यो, त्यारे कुंवर पोताना मनमां आश्चर्य पामी गया, एवीज रीतना पंथीओ जाणीने परस्पर वातो करी, पछी ते राजकुंवर पोतानी जगोए गया, एटले ते पंथीओ पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के जो आ सामानथी जाशुं तो जोनारवाळा लोक भरमाइ जशे. माटे सघळाये मळीने एवुं ठराव्युं के, महेश्वर तथा महामायाने साधिये, अने ते रात्रिये स्वप्नामां जे वेश करवानुं कहे ते वेश सर्वे धारण करिये.॥२७॥

॥ दोहा ॥

एती कहि सागर सुहे, सुपनेश्वरी उपाय ॥
नेन जुरत आये नजर, माहेश्वर महमाय ॥ २८ ॥

अर्थ. एटली वात कही स्वप्नेश्वरीनी उपासना करीने सागर सुता, तेनी आंख्यो मीचातांज महेश्वर अने महामाया नजरे आव्यां. ॥ २८ ॥

भूतनाथ अभिधान शिव, निश सुपने निरखंत ॥
जेसी बिधि आये नजर, बरनन तास करंत ॥ २९ ॥

अर्थ. भूतनाथ नामना शंकरने रात्रिये सोणामां जोया, अने ते जेवी रीते नजरे आव्या, तेवी रीते वर्णन करे छे. ॥ २९ ॥

॥ अथ शिव बर्नन ॥ छेकानुप्रास ॥ अलंकार ॥ छपय ॥

भाल शशी शिर माल, खाल सुंडाल सु अंबर ॥
ज्वाल नेन बिकराल, व्याल रस काल कंठ धर ॥
ख्याल बीर बैताल, जाल प्रेताल खिलावे ॥
बाल भवा गंग लाल, काल मृगछाल बिछावे ॥
पशुपाल, पाल निजजन निकर, हाल हाल बिजया मगन ॥
बिनकाल, काल सब जगकरन, जय जय शिव शंकर स-
गन ॥ ३० ॥

अर्थ. जेना कपाळमां चंद्रमा शोभेछे, गळामां माथानी माळा पहेरेली छे, हाथीनी खालनां वस्त्र धरेलां छे, त्रीजुं अग्निनेत्र झळके छे, मोटा विकराळ नाग, अने हळाहळ झेर कंठमां धारण करेलुं छे, ख्यालमां वीर, वैताळ, तथा प्रेतपीशाचना जूथने रमाडे छे, बाळारूप भवानीने तथा गंगाने लाड लडावनारा, काळियार मृगनुं चर्म बीछावनारा, पशुओना पाळक, पोताना भक्तोना समुदायनुं पालन करनारा क्षणे क्षणे विजयाना केफमां मग्न रहेनारा, पोते काळ रहित, ने सघळा जगतनो काळ करनारा,

एना हे शिवशंकर तमे तमारा गण सहित जय पामो.॥३०॥

॥ सोरठा ॥

सागर ईश अनूप, ध्यान नजर आया सुपन ॥
करि वंदन उनरूप, बुझ्झिय मन संशय सकल ॥३१॥

अर्थ. एवी रीते सोणामां महाराजा सारगरने अनूपम ईश्वरनुं रूप ध्यानमां नजरे आव्युं, ते स्वरूपने वंदन करीने मनना सघळा संशयो पुछी जोया. ॥३१॥

॥ अथ तत्र शिवोक्त प्रत्युत्तर ॥ दोहा ॥

प्रात प्रथम पाओ दरस, धरो रूप तुम सोय ॥
जुदे चलो संघन मलो, दरस सिद्ध उत होय ॥ ३२॥

अर्थ. महादेवे कह्युं के प्रभातमां जेनां पेहेलां दर्शन पामो, तेनुं रूप तमे धरो, अने जात्रालु संघथी जूदा चालजो, अने तेने मळशो नहीं एटले त्यां दर्शननी सिद्धि थशे ॥३२॥

सुनि उत्तर सागर जगे, कही मिंत प्रति बात ॥
ईश उक्त चित धारि सत, कियो कूच परभात ॥ ३३ ॥

अर्थ. एवो उत्तर सांभळतांज, सागर जागी गया, अने पोताना मित्रोने ते वात कही संभळावी, पछी ईश्वरनुं कहेलुं मनमां साचुं धारीने सवारमां कुच करी पंथसर थया. ॥३३॥

॥अथ छंद चंपकमाल॥

सागर कीनो कूच चलेहे, बाग तजे गोस्वामि मिलेहे ॥ फंदन आसन कीनो आपें, किंकर घेरे आवत तापें ॥ ईश उचारी सो मन चीनो, बाज तजी जा वंदन कीनो ॥ ताही कही प्रना तुम कीजे, मंत्रोपदेश मोहिसु दीजे ॥ दीन दयाकारी

गोस्वामं, मंत्रोपदेश कीनो तामं ॥३४॥

अर्थ. सागर कूच करीने चाल्या, तेंने वगीचो छोडतांज मारगे गुसांइजी महाराज मळ्या, तेमणे पोते रथमां आसन करेलुं हतुं, अने ते रथने घेरीने सेवको चाल्या आवता हता, तेंने जोई ईश्वरनुं कहेलुं साचुं जाणी, घोडा उपरथी उतरी, जइने वंदन कर्युं, अने सागरे ते महाराजने कह्युं के, हे? महाराज, तमो कृपा करीने मने मंत्रनो उपदेश आपो, एवां वचन सांभळीने दीनना उपर दया राखनारा, ते महाराजे तेज वखत सागरने मंत्रोपदेश कर्यो. ॥३४॥

॥ अथ तस्य मंत्रोद्धार ॥ दोहा ॥

तार इंदिराबीज पुनि, कृष्ण अंक शर फेर ॥
बिंदु णकार मकार बिब. दियो मंत्र तिहिबेर ॥ ३५ ॥

अर्थ. तार एटले ॐकार, पछी इंदिराबीज एटले श्रीबीज त्यारपछी कृष्ण एवा अक्षरो करीने वळी शर एवा अक्षर लीधा, पछी बींदु एटले अनुस्वार युक्त णकार अने बेमकार ए रीतनो मंत्र ते वखते आप्यो. ते एके (ॐ श्री कृष्ण शरणं मम). ॥३५॥

॥ अथ छंद सारस्वती ॥

सागरज्युं तितसें चलियं, मिंत मिले परिहास कियं॥ आपन रूप गुसांई धरो, क्यों इन रूप धरे बिचरो ॥ सागर मिंत कही तबही, मो परतीत शिवोक्ति सही॥ याहि हमे निज रूप धरे, पैं तुम शिष्य मलीन करे ॥ पावहिगे मन इच्छ हमे, पैं नहि सिद्ध मिलंत तुमे ॥ एह उचारत हास कथं, कन्यक कानन लीन पथं ॥ सांझ भइ इक सहेर लखे, दूर आराम मुकाम रखे ॥ ३६ ॥

अर्थ. सागर त्यांथी चाल्या, त्यां मित्रो मळीने हास्यविनोद करवा लाग्या, ने कह्युं के आप गोसांइनुं रूप धरो, आवुं रूप धरीने केम फरोछो? त्यारे सागरे मित्रोने कह्युं के मारे ते शिवजीना वचननी साची प्रतीत छे, ने हुं गोसांइना जेवुं मारुं रूप धरुं, पण तमो शिष्य मलिन करी नाखो एवाछो, अमे तो मनना मनोरथने पामशु, पण तमने सिद्धि मळशे नहीं, एवी रीते हास्यनां वचनो बोलतां बोलतां तेओए पासेना वन तरफनो मारग लीधो, सांझ पडी गइ, त्यारे एक शहेर दीठुं, तेथी दूर एक वाडी आवी, तेमां जइ मुकाम राख्यो. ॥३६॥

॥ सोरठा ॥

अरु मुकाम इहि थान, दूजो दिन सागर रहे ॥
गोस्वामी सामान, वृप फंदन आदिक लहे ॥ ३७ ॥

अर्थ. ते वाडीमांज मुकाम करीने बीजो दिवस पण सागर त्यांज रह्या, अने बळद, रथ विगेरे गुसांइजी महाराजने जोइए तेवो सामान लीधो.॥३७॥

किय ब्रजराज सु नाम, सागर गोस्वामी बने॥
और जन इतमाम, सेवकको दीनो सबे॥ ३८॥

अर्थ. पोतानुं बृजराजजी एवुं नाम ठरावीने सागर गोस्वामी बन्या, अने बीजा मित्रजनोने महाराजना सेवकोना जेवो बधो ठाठमाठ आप्यो.॥३८॥

मंदहि मंद पयान, संघागम पहुचे सु तित ॥
निरखि नरोहर थान, अवमोचन उपवन रचिय ॥३९॥

अर्थ. धीमे धीमे प्रयाण करीने संघ आववानी मुदत उपर त्यां जइ पहोंच्या, तेओए नरोहरीना स्थानकने (द्वारकापुरीने) जोइने बागमां उतारो कर्यो. ॥३९॥

॥ गाहा ॥

कला प्रवीन पयानं, सागर मिंत द्वारिका संचर ॥
द्विपंचाश अभिधानं ॥ पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥४०॥

अर्थ. संघ साथे द्वारिका तरफ कळाप्रवीणनुं प्रयाण तेमज मित्रो साथे गोस्वामी महाराज बनीने सागरनुं ते तरफ जवुं, इत्यादि वृत्तांत संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी बावनमी लहेर संपूर्ण थइ.॥४०॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे कलाप्रबीन रससागर द्वारामती पंथ गमनो नाम द्विपंचाशत्तमो लहरं॥ ५२ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां द्विपंचाशत्तमस्तरंगः समाप्तः॥५२॥

॥अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥छंद भूजंग प्रयात॥

गई तीर्थमां स्नान काजे सुजाण, पडी मित्रनी ए स्थळे ओळखाण॥
रूदे तेथकी बेउ राजी थयां छे, कथा तेह त्रेपंनमी लहेरमां छे ॥

॥ अथ द्वारामती प्रवेश प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

सागर बाग विलंब किय, निज जन रच्यो समाज॥
काहू पंथिक मुख सुन्यो, आवन संघ अवाज ॥ १ ॥

अर्थ. सागर बगीचामां रोकाया, अने मित्रोए सभा रची, एटलामां त्यां कोइ जात्राळुना मोढाथी संघ आववानो अवाज सांभळ्यो. ॥१॥

आय विष्नुजन सहरसें, वंदनकों व्रजराज ॥
मंजिय तन साजन लगे, भूषन बसन समाज ॥२ ॥

अर्थ. शहेरमांथी वैष्णव लोको व्रजराजजी महाराजनुं वंदन करवा आव्या, अने महाराज पण न्हाइने पोताने अंगे घरेणां तथा लुगडां पहेरवा लाग्या. ॥२॥

॥ अथ गोस्वामी श्रृंगार वर्नन ॥ छंद चंद्रिका ॥

श्रीमहाराज कुमार गुसांइ बने, ओर भये परगाह सबे अपने ॥ मंजन कै सु पितांबर पेर लिये, केसर चंदनकी चरचा सु किये ॥ भालहुमें भ्रगसारकि रेख करी, कंठहुमें तुलसी-मयि माल धरी ॥ छाप कसुंब सुनेरि धरे झगियां, नीलहि तार किनार शिरे पगियां ॥ सोसनि पाट चिकंन भरे पटके, दोउ बधे कटिसें छहरे लटके ॥ लंगर हाटकके दुहु पाय लगे, कंचनकी मुदरी मध नंग जगे ॥ नौग्रह पोंचिन संग कनंक करे, दोउ भुजा भुजबंध जराव जरे ॥ मोतिनकी उर माल प्रवाल बनी, चोकि लगी लटकंत सु लालमनी ॥ कुंडलमें मुकताफल कान लसे, नीकनको शिरपेच सु पाग कसे ॥ हाथ रंग्यो कसमीर अंगोछ धरे, सेवक मित सरूप समीप खरे ॥ राजतहे ब्रजराज उछीर गदी, बंदन कीजत बिष्नुजनं सु बदी ॥ आवतहे इत संघसु भीर भरे, पट्टनमें महराज प्रवेश करे ॥ ३ ॥

अर्थ. श्रीमहाराज सागरकुमार गुसांइजी बन्या, अने बीजा सघळा मित्रो पोतानी पासे रहेवा लायक सेवको थया, स्नान करीने पीतांबर पहेरी लीधुं, केसरना चंदननी अर्चा करी, कपाळमां कस्तुरीना उर्ध्वपुंड्रनी रेखाओ करी, कंठमां तुळसीनी माळा धरी लीधी, छापवाळो कसुंबीरंगनो सोनेरी जामो पहेर्यो, मस्तक उपर नीला रंगनी सोनेरीना छेडा तथा किनारीदार पाग धरी लीधी, सोसनीरंगनो रेशमी जरीना छेडा तथा किनारीदार पटको (फेंटो) केडे बांधी लीधो, तेना बे छेडा आगळ लटके छे, सोनाना तोडा बे पगमां शोभी रह्या छे, आंगळियोमां पहेरेली

सोनानी विंटियोनां नंग झळके छे, नवेग्रहना नंगोथी जडेली पोंची कडां समेत हाथमां पहेरी,बेय भुजाये जडाउ बाजुबंध बांध्या, हृदय उपर मोती तथा परवाळानी माळा धरी, जेमां लाल रंगना मणियोथी जडेली चोकी लटकवा लागी, काने कुंडळमां मोती शोभे छे, (नीक) रत्न जडेलो शिरपेच पाघडी उपर बांध्यो, हाथमां केसरथी रंगेलो रूमाल धारण कर्यो, अने सघळा मित्रो शेवकने रूपे समीपे उभा रह्या,अने व्रजराजजी महाराज गादीतकिये बिराज्या, वैश्नव लोको जयजय बोलीने चर्णस्पर्श करवा लाग्या, आंही भीड करनार मोटो संघ आवे छे, एवां वचन सांभळीने हवे महाराज शहेरमां प्रवेश करे छे.॥३॥

॥ सोरठा ॥

रथ अरूढ महराज, लगे गान बिष्नौ करन ॥
सेवक चढे सु बाज, बाग निकासि पट्टन चलिय ॥४॥

अर्थ. महाराज रथमां बिराजमान थया, वैश्नव लोको कीर्तन गावा लाग्या, अने सेवको घोडा उपर चड्या, एवी रीते बगीचामांथी नीकळीने शहेर तरफ चाल्या.॥४॥

पुरह गिरद चहु पास, यहे रीत आये नजर ॥
बन घन बाग बिकास, सर सरिता द्विज देव सिध ॥५॥

अर्थ. ते वखत द्वारकापूरीनी फरती चोतरफ आवी रीतनी शोभा नजरे देखाणी, के, वृक्षोथी घाटां वनो, प्रफुल्लित थयेला बगीचाओ, पाणीथी भरेलां तळाव, सुंदर नदी, ब्राह्मणोना जथा, देवनां देवाळयो, तथा सिद्धनां मंडळो, विगेरे जोवामां आव्यां. ॥५॥

॥ छपय ॥

बाट बाट प्रति बाग, बाग बागन खग कूजित ॥

घाट घाट सुरथान, थान थानक द्वुज पूजित ॥
ताल ताल प्रति कंज, कंज कंजन मधु बद्दे ॥
ठोर ठोर मुनि व्रंद, व्रंद व्रंदन तप सद्दे ॥
जित तित चरीत्र श्रीपति कथा, सबन चित्त सतकी व्रती ॥
सुख लोग जोग मुनि आश्रमन, धन्य धाम द्वारामती ॥६॥

अर्थ. वाटे वाटे बगीचा खीलेला छे, अने बगीचे बगीचे पक्षीओ मधुर शब्द करेछे, घाटे घाटे देवाळयो शोभी रह्यां छे, ने देवस्थाने देवस्थाने ब्राह्मणो पूजन करेछे, तळावे तळावे कमळो प्रफुल्लित थयांछे, ने कमळे कमळे गुंजारव करता भमरा प्रेमथी बंधाइ रह्याछे, ठेकाणे ठेकाणे मुनियोनां व्रंद बेठेलां छे, अने व्रंदे व्रंदे तपनुं साधन थायछे, ज्यां जोइए त्यां ठेकाणे ठेकाणे लक्ष्मीना पति श्री कृष्णनां चारित्रोनी कथा थायछे, जेमां सघळा लोकोना चित्तनी सत्य व्रत्तियो छे. एवा सुखना लोक जेवां, जोगीनां अने रुषियोनां आश्रम छे, एवा द्वारामतिना धामने धन्यछे. ॥६॥

॥ दोहा ॥

एहि तरे तजवीज लखि, सहर प्रवेशन कीय ॥
उन अवमोचनकी अटा, तित अवमोचन लीय ॥७॥

अर्थ. एवी रीतनी तजवीज जोइने शेहेरमां प्रवेश कर्यो, अने ए महाराजोने उतरवाने वास्ते जे हवेली हती, तेमां जइने उतारो लीधो. ॥७॥

संघ आय संध्या समय, उप उतरे निधिवार ॥
सोचत कला प्रवीन चित, सागर सुरति सम्हार ॥८॥

अर्थ. त्यारपछी संध्याटाणे संघ आव्यो, अने ते (वारिनिधि) समुद्रने किनारे उतर्यो, पण सागरनी सुरत संभारीने कळाप्रवीण पोताना चित्तमां सोचना करेछे. ॥८॥

॥अथ॥ छंद लक्ष्मीधर॥

खान पानं किये,सेन कीनी निशा॥ मिंत यादं भई,या प्रवीनं दशा॥ चिंत वाढी ब्रहा,मिंत मिंतं भजे॥ बोल ब्रह्मी लई,आप तल्पं तजे॥ ओहि उच्चारसें, दोउ लागे वहां॥ पत्रि भेजी, महाराज नाये इहां॥ बाम बाते भई, काम ज्वाला लगी॥ सेनके ध्यानमें, रेंन सारी जगी॥ व्युढ स्वासा भरे, नेन बारी वहे॥ चिंत धीरं तजी, मिंत आये चहे॥ प्रात नीठं भयो, एह चरचा चली॥ मंजबेके लिये, आय हेतू मिली॥ ९॥

अर्थ. खानपान करीने रात्रिये शयन तो कर्युं खरुं, पण मित्रनी यादिथी प्रवीणनी आ प्रमाणे दशा थइ. चित्तमां विरह वधी गयो, तेथी हे मित्र? हे मित्र? एम मित्रनेज भजेछे, ब्रह्मकुमारी कुसुमावळीने पासे बोलावी लइने पोते पलंग तजी दीधो,अने त्यां बेयजणियो एज वातोना उच्चार करवा लागी, के अरे आपणे पत्र मोकल्यो, पण हजी महाराजा अांही आव्या नहीं, एवी रीतनी वातो करवामां कळाप्रवीण मग्न थइ,के तुरत कामदेवनी झाळो लागी, अने सज्जनना ध्यानमांज आखी रात जागी, मोटा दीर्घ उसासा निसासा भरेछे, आंख्योमांथी पाणी वहेछे, अने चित्तनी धीरजता तजीने मित्रना आगमनने चाहेछे,एज चर्चा चालतां मांड मांड प्रभात थयुं, एटले स्नान करवाने वास्ते हितस्वी सखियो आवी मळी. ॥९॥

॥ दोहा ॥

प्रात प्रभा दरसाइ दुति, मित प्रवीन चित चाय॥
एतेमें मंजन लिये, मिली अली सब आय॥ १०॥

अर्थ. प्रभातना अजवाळानो प्रकाश देखायो, अने प्रवीण पोताना मनमां मित्रने चहायछे, एटलामां तो नावा जवाने वास्ते सघळी सखियो

आवी मळी. ॥१०॥

॥ अथ प्रभात वर्नन॥ जातिस्वभाव अलंकार ॥कवित॥

सुरत संजोगी जागे, जोगी जोग ध्यान लागे, निशिचर जोर भागे, भ्रंग पागे वागमें ॥ चीरियांन सोर ग्रह्यो, चकवा आनंद भयो, चकोरा उदास लह्यो, चुप रहे जागमें॥शंख आदि नाद धुनि, विप्र वेद पढे मुनि, गावत संगीत गुनि, रामकली रागमें ॥ विरह वियोग लीन, दरदी अधीन दीन, चाहत प्रवीनकला सागर समागमें ॥ ११ ॥

अर्थ. सारी प्रीतिवाळां संजोगी लोको जाग्यां, जोगियो जोग ध्यान धरवा लाग्या, रात्रिमां फरनारा प्राणीओनुं जोर भागी गयुं, भमराओ बागमां रसवश थया, चकलीओ सोर बकोर करवा लागी, चकवा चकवीने आनंद थयो. चकोर पक्षीओ उदासी धरीने पोतानी जग्यामां चूप थइ रह्या, शंख विगेरे (नाद) वाजित्रोना शब्द थवा लाग्या, ब्राह्मण तथा मुनियो वेद भणवा लाग्या, गुणीजनो रामकळी रागनुं संगीतना भेदथी गायन करवा लाग्या, वियोगी दरदियो विरहमां लीन थइने दीनताने आधीन थया, ने वखते वियोगने लीधे दुःखमां लीन थयेली, दरदवाळी, दीनताने आधीन थयेली,कलाप्रवीण सागरना समागमने चाहवा लागी. ॥११॥

॥ दोहा ॥

छिन छिन चित मिंता चढे, धरत प्रवीन न धीर ॥
लोग लाजमें मिल अली, मंजन चली सु तीर ॥ १२ ॥

अर्थ. क्षणे क्षणे चित्तमां मित्र चडी आवेछे, तेथी प्रवीण धीरजता धरती नथी, पण लोकलाजने लीधे सखियोने साथे लइने स्नान करवासारुं गोमती किनारे चाली. ॥१२॥

॥ छपय ॥

दोहरि लगी किनात, जटू मिलि मंजन आई ॥
तीरथ तीर सु जाय, गिरद पहेरात कराई ॥
बिधिवत बाला मंज, यथा बिधि दान दिये तित ॥
बपुसुं तजे अघ ब्रंद, याद सागर न तजे चित ॥
कुमरी बिशेष बाढी बिरह, मित बियोग जागी दहन ॥
बोलै सु नीठ कुसुमावली, तास प्रत्य लागी कहन॥१३॥

अर्थ. दासियोनी साथे मळीने स्नान करवा आव्यां, त्यारे बेवडीकना तलगावी दीधी, अने तीर्थने किनारे जइने फरतो चारे तरफ पहेरो बेसारी दीधो, त्यां बाळाये विधिपूर्वक स्नान करीने यथाविधि दान दीधां, जेथी शरीरथी तो पापना समुदाय तजी दीधा, पण चित्त सागरनी यादीने तजतुं नथी, कुंवरीने अति विरह वधी पड्यो, अने मित्रना वियोगनी अग्नि जागी उठी, त्यारे पोतानी पासे कुसुमावळीने बोलावीने तेने आ प्रमाणे कहेवा लागी. ॥१३॥

॥ अथ तत्र कलाप्रबीनोक्त ॥ गाहा ॥

मन क्रत अति उत्साहं, नित बिहरंत गोमती तीरं ॥
अचरिज सिंधु अपुब्बं, किं बिरहेन पच्छतिय लहरं ॥१४॥

अर्थ. आ समुद्रने कांठे अर्थात् पासे मनमां अति उत्साह करे. एवी गोमती नदी हमेशां विहार करेछे, तेम छतां केना विरहथी समुद्र पोतानी लहेरो पछाडतो हशे? ए जोतां मने अपूर्व आश्चर्य उपजेछे. ॥१४॥

॥ अथ तत्र कुसमोक्त प्रत्युत्तर॥ गाहा॥

तीरे तरुणि समूहं, मंजिय कोउ बिरहणी मझ्झे ॥
सागर बिरहा लहियं, उण दुःखेण पच्छतिय अंगं ॥१५॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के--पोताने किनारे स्त्रियोनां टोळां नाहायछे, ते (मझे) मध्ये कोइ विरहणी स्त्री नाइ हशे. जेथी समुद्रे तेनो विरह लीधो हशे, माटे तेना दुःखे करीने पोताना अंगने पछाडेछे. ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

एते मध्य विशेष, भई याद परवीनकों ॥
बासी मिंत विदेश, अजहु न आये कह भयो ॥ १६॥

अर्थ. एवी रीते कुसुमावळिये जवाब दीधो, एटलीवारमां तो प्रवीणना मनमां विशेष यादी थइआवी, जेथी कहेवा लागी के--अरेरे परदेशना वासी मित्र हजी सुधी आव्या नहीं, ते शुं थयुं? ॥१६॥

॥ अथ गाहा ॥

सायं काल समीहे, अरुणाक्रांत नेण उल्लहियं॥
शद्ब परख्खण शंका, गाहियं क्षिप्र माणणी मौणं॥१७॥

अर्थ. एम कह्युं एटली वारमांतो सायंकाळना जेवी लाली आंख्यो-मां चडी आवी, अने शंका उपजे एवी रीते शब्द बोलवामां अटकवा लागी, तेथी तेणे जाण्युं के मारा शब्द परथी परीक्षा करीने कोइ जाणी जशे, एम जाणीने माननी कळाप्रवीणे तुरत मौनपणुं धारण करी लीधुं. ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

उर महि बढित उसास, लाल नेन ज्वाला बिरह ॥
निरखति ब्रह्मनि तास, गोपन दशा उपाय किय ॥१८॥

अर्थ. प्रवीणना हृदयमां उसासा निसासा वधी पड्या, नेत्रो लाल थइ गयां, अने विरहनी झाळो मळगी उठी, तेने जोइने ब्रह्मकुमारी कुसुमावळी ते दशा छुपाववाना उपायो करवा लागी. ॥१८॥

॥ गाहा ॥

कुसुम तत्र उच्चरियं, कुमारि दशा गोपनं कज्जे ॥
मंजहि संगम तीरं, तिहि पूरत सागरं इच्छा ॥१९॥

अर्थ. कुंवरीनी दशा छुपाववाने काजे कुसमावळी आ प्रमाणे बोली के,जे आ संगमने किनारे स्नान करे,तेनी ईच्छा सागर पूर्ण करेछे.॥१९॥

॥ अथ छंद उपजाति ॥

ब्रह्मी गही बांह कला प्रबीनं ॥ सिंधू समीपे रति घात लीनं ॥ नीरं प्रवेशं प्रथमं कराया ॥ नैनं परिहास रसं छटाया ॥ कीनो यहै धीर चित्तं द्रढावे ॥ बाला ब्रिशेषं ब्रहसें दहावे ॥ केती ब्रह्मी वात कही तहांही॥ शिच्छा लगे श्रोन कछूहि नांही ॥ भंखी प्रबीनं तब एह बानी ॥ एती दशा होत हमे अजानी ॥ होवे अजानी सु कहा छिपावे॥ आपे छिपेगी वह मित आवे ॥२०॥

अर्थ. पछी प्रीतिना जखमथी लीन थयेली कळाप्रवीणनो हाथ ग्रहण करीने कुसुमावळी समुद्र समीपे लावी, अने पहेलांतो तेने जळमां प्रवेश कराव्यो, अने पछी मश्करीथी आंख्यो उपर पाणी छांट्युं, एम करीने कुसुमावळी तेना चित्तमां धीरजता द्रढावे छे, पण बाळारूप प्रवीणतो विरहथी विशेष बळे छे, ब्रह्मकुमारी कुसुमावळिये, केटलीक वातो त्यां कही, पण तेनी शिखामण कांइ काने लागी नहीं, त्यारे प्रवीणे एवां वचन कह्यां के मारी आटली दशा वधी पडशे, ते हुं जाणती नहोती, जे अजाणे थाय, ते क्यां छुपाविये, पण ए मित्र आव्येथी ते पोतानी मेळेज छुपी जशे. ॥२०॥

॥पुनि कलाप्रबीनोक्त ॥छपय॥

वहीं याद आवंत, बान लावंत समर मन ॥
बिरह ज्वाल जागंत, अंग दागंत छिना छिन ॥
उर उसास बाढंत, रोम चाढंत घरी प्रत ॥
बदन रंग बदलंत, बात बिचलंत उच्चरत ॥
तन चेन हेन जान्यो न में, नेन नीर धारा झरे॥
बिन मिंत चिंत तलफन लगी, कहो धीर कैसें धरे॥२१॥

अर्थ. वळी प्रवीण कहेछे के, ए मित्रनी यादी आववाथी मनमां कामनां बाण वागे छे, विरहनी झाळो जागी उठे छे, क्षणे क्षणे अंग बळे छे, हृदयमां स्वास वधी आवे छे, ने घडिये घडिये रुंवाडां चडी आवे छे, मोढानो रंग बदलाइ जाय छे, अने बोलतां बोलतां चालती वात वीस्मृतिने लीधे जाती रहे छे, शरीरे सुख नथी, अरे आवुं में जाण्युं नहोतुं, अने नेत्रोमांथी पाणीनी धारा झरे छे, एवी रीते मित्र विना चित्तमां तल्फना लागी छे, माटे कहो के शी रीते धीरज धरुं?॥२१॥

॥ दोहा ॥

मंजत यह चरचा चली, धारे बसन अन्नीन ॥
सिंधु तीर शुभ थान लखि, कीन समाज प्रवीन ॥२२॥

अर्थ. नातां नातां एवी चर्चा चाली, पछी कोरां वस्त्र पहेर्यां, अने समुद्रना किनारानुं सुंदर स्थान जोइने प्रवीणे त्यां सभा करी.॥२२॥

पहेरायत गिरदी प्रथक, नजर बेग बेठाह ॥
समुद्र लेर सब अलि लखे, वह प्रवीन मित राह॥२३॥

अर्थ. पोतानी आजुबाजुना पहेरेगीरोने नजरथी वेगळे जूदा जूदा बेसारी सघळी सखियो समुद्रनी लहेर जुए छे, पण ते प्रवीण तो वे मित्रनी वाट जुए छे. ॥२३॥

॥ छपय ॥

रस सागर निज थान, दशा उनही गति आनी ॥
चरचा चलत प्रवीन, निशा तलफतहि बिहानी॥
वही चाह उर धार, प्रात फंदन आरोहित ॥
तीरथ तीर सुजाय, आप मंजन कीनो तित ॥
एकंत ठोर निरखित उतें, कर बिछात बैठे तहां ॥
चित ध्यान धरत परवीनको, बेग नजर बनिता जहां॥२४॥

अर्थ. पोताने उतारे रससागरे पण प्रवीणना जेवीज दशा आणी, ने प्रवीण संबंधी चर्चा चालतां तलफतांज रात्रि वीती, प्रवीणने मळवानी चाहना हृदयमां धरीने सवारमां रथमां बिराजमान थया, अने तीर्थने किनारे जइने पोते त्यां स्नान कर्युं पछी ए ठेकाणे एकांत स्थळ जोइने त्यां बिछायत करावीने बिराज्या, नजर वेगे ज्यां वनितानुं टोळुं छे, ते सामुं जोइने चित्तमां प्रवीणनुंज ध्यान धरे छे. ॥२४॥

॥सोरठा॥

बर्नन तहां बनाय, कियो सु तीरथ तीरको॥
दीनो सुकबि सुनाय, गोस्वामी व्रजराज प्रति ॥ २५॥

अर्थ. त्यां भारतीनंद कवियें तीर्थना किनारानुं सुंदर कवितामां वर्णन बनावीने गोस्वामी व्रजराजजीने संभळावी दीधुं.॥२५॥

॥ अथ वह बर्नन उदाहरन ॥ छंद सेनिका ॥

प्रात भानको प्रताप फुट्टियं, संगमं समुद्र लैर जुट्टियं ॥ गोमती कलूष वृंद गंजितं॥ ठोर ठोर मानुषं सु मंजितं॥ तीर तीर देहरे सु मंदिरं॥ भिन्न भिन्न रूप देव अंदरं॥ देव सेवभेव ब्रह्म अहरे॥ वेद भेद आन आन उच्चरे॥ तापसं सु साधितं

उपासनं ॥ एक एकको अनेक आसनं ॥ शंख झल्लरी सु घंट वज्जियं॥ कामनी सिंगार साज सज्जियं ॥ थान थान ध्यान आन नंमियं ॥ आप आपके उछाह रंमियं ॥ आसनं कियो बिछान नक्खियं ॥ एह रीत व्रज्जराज लक्खियं ॥ २६ ॥

अर्थ. प्रभात थवाथी सूर्यनां प्रकाशित कीरणो प्रगट थयां, संगमने स्थळे समुद्रनी लहेरो जोडावा लागी, एवी पापना जथाने गंजन करनारी गोमतीने किनारे ठेकाणे ठेकाणे माणसोनां टोळां नहायछे, किनारे किनारे देरां अने मंदिरो शोभी रह्यांछे, तेमां जूदा जूदा रूपवाळा देवो बिराजेछे, ब्राह्मणो शास्त्रना भेदथी देवपूजा आदरेछे, अने जूदा जूदा पद क्रमना भेदथी वेदना उच्चार करेछे, तपस्वी लोको उपासनाने साधेछे, ते प्रत्येक जोगी अनेक आसन वाळेछे, शंख, झालर, तथा घंटो वागेछे, स्त्रियो जात जातना शणगार सजीने ठेकाणे ठेकाणे ध्यांन पूर्वक नमेछे, सौ पोत पोताना आनंदथी इच्छा प्रमाणे रमेछे, एवी रीतनी शोभा जोइ व्रजराजजिये बिछायत करावीने ते उपर आसन कर्युं. ॥२६॥

॥ सोरठा ॥

उत महराज लखात, कुसुम द्रष्टि कीनी तहां ॥
जाने वहे न जात, पें कहि कलाप्रवीन प्रति ॥ २७ ॥

अर्थ. त्यां महाराजा बिराज्या देखायछे, ते तरफ कुसुमावळिये नजर करी, तो ते ओळखी शकाता नथी, पण कळाप्रवीणने आ प्रमाणे कह्युं. ॥२७॥

दूरध्यान मगवाय, निहचे ठोर निहारिये ॥
आप कबे इत आय, देखहुगे सागर दशा ॥ २८ ॥

अर्थ. दूरबीन मगावीने निश्चय करवाने ते ठेकाणुं आपणे निहाळी जोइये, केमके पछी आप क्यारे आंही आवीने सागरनी दशा जोशो, ॥२८॥

सुनियत नृपति कुमारि. जो सहचरि सनमुख खरी ॥
तासें कही उचारि; दूरबीन इत लाइये ॥ २९ ॥

अर्थ. कुसुमावळीनां वचन सांभळीने राजकन्याये जे सखी पोतानी सांमे उभी हती; तेनेज कह्युं के आंही दूरबीन लाव्य. ॥२९॥

किंकरि हुकुम प्रमान, दूरबीन लै उत गई ॥
प्रथम कुसुम लै पान; लखि समुंद सागर लखत ॥३०॥

अर्थ. हुकम प्रमाणे दासी दूरबीन लेइने त्यां गई, एटले प्रथम कुसुमावळी पोताना हाथमां ते दूरबीन लइ समुद्रने जोइ सागरने जोवालागी.॥३०॥

॥ अथ ॥ छंद हाकली ॥

दुज नंदा दधि लहर लखे ॥ पुनि स्त्रोता पुलिनं निरखे ॥ व्रजराजं निज धरम द्रढे ॥ चित देखे वह चाह चढे ॥ तित ब्रह्मी द्रग सुरत परे ॥ पुनि वेही तह कीक करे ॥ कछु पहिचान भ्नई न भ्नई ॥ परबीनं दुरबीन लई ॥ तब ब्रह्मी यह बानि कही ॥ सरिता तीर फिरंग वही ॥ जिहि कीनो सु निदान तुमें ॥ वह हे धारत यह उरमें ॥ निज वोही दिशकों लखिये ॥ हम कीनी परिखा प्रखिये ॥ ३१ ॥

अर्थ. ब्रह्मपुत्री कुसुमावळी समुद्रनी लहेरोने जुएछे, अने ते पाछी गोमती नदीना किनारा उपर जुएछे, व्रजराजजी पोताना धर्मने द्रढावेछे, तेने देखवानी चाहना चित्तमां चडी, त्यां ते तरफ कुसुमावळीना नेत्रनी द्रष्टि पडी खरी, पण एज छेके नहीं, ते नकी करेछे, कांइक ओळखाण पडी न पडी, एटलीवारमां तो प्रवीणे दूरबीन लइ लीधी, त्यारे कुसुमावळिये एवी वाणी कही के नदीने किनारे ओहया फिरंगी, जेणे तमारुं वैदुं कर्युं हतुं तेजछे, एम हुं मारा हृदयमां नकी धारुंछुं, माटे तमे ए दिशा तरफ

जुओ, में तो परीक्षा करी, पण हवे आप पारखो. ॥३१॥

॥अथ तत्र कलाप्रवीनोक्त ॥ गाहा॥

मम चित्ते नह सत्यं, इह समये आगमं मिंता॥
दावानल प्रज्वलितं, क्यों अवसरे मेह उल्लहियं॥३२॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के आवे समये मित्रनुं आववुं थाय, ए मारा मनमां साचुं भासतुं नथी, केमके दावानळ सळगी उठे, ते वखते कांइ वरसाद थाय? ॥३२॥

॥अथ कुसुमोक्त॥ छंद आभीर॥

बानी कुसुम कहंत, तुमहि सत्य उचरंत॥ एसा समय व्रतंत, मिलहि न चाहत मिंत॥ पें देखहु दुरबीन, कहा सागर छबि कीन॥ एती सुनत कुमारि, लखन लगी निधिबारि॥ निरखत सागर नीर, सुरत सरितके तीर॥ वहे भेख बदलंत, दूरन भासत चिंत॥ छिन छिन देखत सोय, पें पहिचान न होय॥ भ्रमानि नजर पुनि दीन, तबहि सत्य उन कीन॥ कुसुम प्रवीन सुनाय, सहचरि उभय पठाय॥ खबर मगावे सोय, कोन पुलिन पर होय॥ कुमरि सु आयस दीन, किंकरि गमनहि कीन॥ आइ गुसांइन पास, तब कहि कर्यो प्रकास॥ निरखो न्यारी होय, कह कारन तुम सोय॥ मंत्र जपत महराज, निकट न जाने काज॥ किते रहो कित जात, कोन तुमे कहो बात॥ कित लग काम ज्यु आय, दीजे हमहि सुनाय॥३३॥

अर्थ. कुसुमावळी वाणी कहेछे के तमे कहोछो ते साचुंछे, समय तो एवो बनेछे के चाहिये त्यारे मित्र मळे नहीं, पण दूरबीन लइने जुओ के

सागरे केवी छवी धरीछे,एटलुं सांभळतांज राजकंन्या(वारिनिधि) सागरने जोवा लाग्यां, वळी समुद्रना पाणीने जुएछे, पण सुरत तो नदीने किनारेज लागी रहेली छे, पण तेओए वेश बदलेलो छे, ने वळी घणे दूरछे, तेथी चित्तमां भासता नथी, क्षणे क्षणे तेमने जुएछे, पण तेनी ओळखाण पडती नथी, त्यारे (नळ) दूरबीन लइने पाछी कुसुमावळीना हाथमां आपी, एटले तेणे जोइने नकी कर्युं. एटलुंज नहीं, पण कुसुमावळिये पाछुं प्रवीणने संभळाव्युं के बे दासियोने मोकलावीने तेओनी खबर मंगाविये. के किनारा उपर कोणछे, एवां वचन सांभळीने राजकंन्याये दासियोने जवानी आज्ञा आपी. एटले बे दासियो चालीने गुसांइजीनी पासे आवी, त्यारे भारतीनंद कविये खुल्लिरीते कह्युं के छेटे उभा रहीने जुओ,ने तमारे जे कारण होय ते कहो. हमणां महाराज मंत्र जपेछे, माटे पासे जवानुं काम नथी. तमो क्यां रहोछो, अने क्यां जाओछो, ए सघळुं अमने कही बतावो. ॥३३॥

॥ तत्र किंकरी प्रत्युत्तर ॥ सोरठा ॥

हम मंछापुर थान; किंकरि कलाप्रवीनकी ॥
महाराज पहिचान; उन आयस आई इतें ॥ ३४ ॥

अर्थ. मनछापुरी अमारुं रहेवानुं स्थान छे. अने कळाप्रवीणनी किंकरियो छिये, महाराजने ओळखवासारुं तेनी आज्ञाथी आंही आव्यां छिये. ॥३४॥

कोन थान कह जात; कहा नाम इत काम कह ॥
एती कहोज्यु बात; कछु न काज पीछी फिरे ॥ ३५ ॥

अर्थ. महाराजनुं कयुं स्थान छे, अने ते क्यां सुधी जायछे, ने तेनुं शुं नामछे, आंही शुं प्रयोजन छे, एटली वात कहो तो पछी बीजुं कांइ काम नथी. तुरत अमे पाछां फरी जइये. ॥३५॥

॥ अथ तत्र भारतीनंदोक्त प्रत्युत्तर ॥ छपय ॥

सकल सृष्टि परसिद्ध; धाम व्रजकुंज रहावे ॥
गोस्वामी पद विरद; नाम व्रजराज कहावे ॥
दीपमालके समय, इते महाराज पधारे ॥
सधत मंत्र गायत्रि, तीर तीरथ सु निहारे ॥
पाखंड मत्त खंडन प्रथी, दुरित व्रंद जन छय करन॥
महाराज महत महिमा कथन, कृष्ण राधिकाके चरन॥३६॥

अर्थ. भारतीनंद कहेछे के सघळी सृष्टिमां प्रख्यात एवा व्रजकुंज नामना धाममां रहेछे, अने गोस्वामी एवी एमनी पदवी तथा बिरदछे, ने व्रजराजजी एवुं एमनुं नाम कहेवायछे, ने ते दीवाळीना समयने लीधे आंही पधारेला छे, ते हमणां गायत्रिने साधेछे, ने तीर्थना किनाराने जुएछे, पृथ्वीमां उपजेला पाखंड मतनुं खंडन करवाने, लोकोना पापना समुदायने नाश करनारा, मोटा महीमावाळा, एवा आ महाराजा केवळ राधाकृष्णना चरणारविंदनी कथानुं कथन करवामां मगन रहेछे. ॥३६॥

॥ अथ छंद मोहनी ॥

सहचरि पीछी फिरीसो उत्तर पाय॥ भारति नंद कविदहि लीन बुलाय ॥ तुमें कलापरवीनहि नीठ रहंत॥ दुजनंदा कुसुमावलि ताहि लहंत ॥ उन कहेवी तुम जोय दई उपदेश॥ सोय मिले सन्यासहि कही श्रदेश॥सुनत सहचरी फिरिय कुंवरि प्रति जाय॥ गोस्वामीकी कथा सु दई सुनाय॥यह सुनियन सब बात कुंवरि मुरझंत ॥ तेते माहि किंकरी कुसूम कहंत ॥ तुमहि दीन उपदेशहि जोगिसु आय॥ उन निज मुख आशिषा ज्यु दिन्ह सुनाय ॥ उरमें भये ज्यु मुदित सुनत यह

फेर ॥ इक इक प्रति परिहास लगी तिहि बेर ॥ ३७॥

अर्थ. एवा उत्तरने पामीने दासियो पाछी फरियो, त्यारे भारतीनंद कविये, तेओने पोता पासे बोलावी लइने कह्युं के, तमे कळाप्रवीण पासे रहो छो, तो त्यां एक ब्राह्मणनी कंन्या कुसुमावळी रहे छे, तेने तमे जाणो छो ? जो जाणतां हो तो एने कहेवुं के तमने जेणे उपदेश दीधो हतो, ते सन्यासी मळ्या हता, तेणे तमने आदेश कही छे, एवां वचन सांभळीने पाछी फरेली ते दासियोये राजकुंवरी पासे जइ, गोस्वामी संबंधी सघळी कथा संभळावी दीधी, आ सर्व वात सांभळीने कुंवरी मुझावा लाग्यां, एटली वारमां तो दासियो कुसुमावळीने कहेवा लागी के तमने जेणे उपदेश दीधो हतो, ते जोगी आंही आवेला छे, एणे पोताना मुखथी तमने आशिर्वाद कहेला छे, फरीने आ वात सांभळतांज कळाप्रवीण तथा कुसुमावळी ए बन्ने पोताना मनमां आनंद पाम्यां, एटलुंज नहीं पण तेज वखते परस्पर एक बीजानी मश्करी करवा लाग्यां. ॥३७॥

॥ अथ गाहा ॥

दिनकर प्रेम प्रकाशं, भइ सुरभोग सागरं लहरं ॥
किंचित कृत परिहासं, निज थानक उठियं नारी ॥३८॥

अर्थ. प्रेमनो सूर्य उदय थयो, समुद्रनी लहेरोतो (सुरभोग) अमृत जेवी थई पडी, एटले पछी परस्पर थोडुंक हास्य करीने पोताने स्थानके जवा सारु प्रवीण उठ्यां. ॥३८॥

॥ दोहा ॥

कलाप्रवीन सबीर प्रति, पुग्गिय मुख मुसकंत ॥
गोस्वामी थानक गये, चाहत मिलबो चंत ॥ ३९ ॥

अर्थ. मरकते मुखे कळाप्रवीण पोताना तंबु प्रत्ये गयां, अने गोस्वामी

पोताने उतारे गया, पण मनमां मळवानुं चाहेछे.॥३९॥

॥ गाहा ॥

मंज्जन कलाप्रवीनं, तीरथ तीरे परंन पहिचानं ॥
त्रिपंचाश अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥४०॥

अर्थ. कळाप्रवीण स्नान करवा गयां हतां, त्यां तीरथने किनारे महाराजनी ओळखाण पडी, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी त्रेपनमी लहेर संपूर्ण थई.॥४०॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे दंपति समुद्र तीर दर्शनोनाम त्रिपंचाशत्तमो लहरं ॥ ५३ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां त्रिपंचाशत्तम स्तरंगः समाप्तः॥५३॥



॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

प्रविणे लखेला पत्रनो, उत्तर लखीने सागरे ॥
कुसुमावळीनी साथ ते, मोकल्यो गुण रत्नागरे ॥
के एटलु वृत्तांत सुंदर, लिखित कविता पेरमां ॥
जन चतुर सौ वांचो सुणो, चोपंनमी आ लहेरमां ॥

॥ अथ कलाप्रवीन रस सागर प्रति मनुहार पत्र प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

निज थानक व्रज राज ज्यू, नित वंचत इतिहास ॥
मनमें बढी प्रवीनके, आस्य विलोकन आस ॥ १ ॥

अर्थ. पोताने स्थानके व्रजराजजी महाराज नित्य इतिहास वांचेछे, परंतु तेना मनमां प्रवीणना मुखने जोवानी आशा वधती जायछे. ॥१॥

देव दरस सब संघ किय; संजुत कलाप्रबीन॥
सो सागर अवमोच सुनि; उर उदास अति लीन ॥२॥

अर्थ. कळाप्रवीण समेत सघळे संघे देवनां दर्शन कीधां, ते वात सागरे पोताने उतारे सांभळीने हृदयमां अतिशे उदासी धारण करी. ॥२॥

॥ छपय ॥

दूजे दिन महाराज, कथा मंदिर महि ठानी ॥
फिर आवेंगे दरस, एह मनमें अनुमानी ॥
उत प्रबीन वह चहत, अदब गुर लोग रहावे ॥
उरमें अति अभिलाष, फेर आवन नहि पावे ॥
मुरझाय चिंत कीनो मतो, कुसुम प्रत्य ऐसें कही ॥
मनुहार पत्र पहुच्यो नहीं, आय बुलाये हे वही ॥३॥

अर्थ. फरीने दर्शन करवा आवशे, एवुं मनमां धारीने महाराजाये बीजे दिवसे मंदिरमांज कथा करवानो ठराव कर्यो. पणे प्रवीण पण एमज मळवा चाहेछे, तथापि वडीलोनी अदबने लीधे रही जायछे, हृदयमां मळवानी अति अभिलाषा छे, परंतु फरी आववाने पामतां नथी, पछी चित्तमां मुझाइने मनसुबो कर्यो, अने कुसुमावळीने आ प्रमाणे कह्युं के--हे कुसुमावळी आपणा बोलाववाथी एओ आंही आव्या, पण हजी सुधी आपणी तरफथी आदर सत्कारनो पत्र मोकली शकायो नहीं. ॥३॥

॥ सोरठा ॥

पाती लिखी प्रबीन, मित सागर मनुहारकी ॥
कुसमावलि कर दीन, कहि प्रच्छन पहुचाउ उत ॥४॥

अर्थ. पछी प्रवीणे पोताना प्रिय मित्र सागर उपर आदर सत्कारनो पत्र लख्यो, अने ते कुसुमावळीना हाथमां आपीने कह्युं के आ पत्र त्यां

गुप्त रीते पहोंचाडो. ॥४॥

॥ अथ छंद माणवकाक्रीड ॥

पत्र प्रवीनं सु किये॥ ब्रह्मसुता पान दिये ॥ मिंत प्रती जाय दहे ॥ एह पुनी बानि कहे ॥ विप्रसुता उठी तबे॥ बानि सुनाई ज्यु सबे ॥ आप इतें आय बसे ॥ एक समे देव प्रसे॥ उद्‌भवं ब्रह्म हमे ॥ देव नितं जायनमे ॥ आप मगायो सु रथं ॥ लीन कुजाकं सु सथं ॥ गोजुपुरे गोन किये ॥ सिंधु मिले चाहहिये ॥ देव प्रती थान गई॥ छांड रथं गोन लई॥५॥

अर्थ. प्रवीणे पत्र लख्यो ते कुसुमावळीना हाथमां दइने वळी आवुं वचन कह्युं के आ पत्र मित्रनी पासे जईने देजो, त्यारे ब्रह्मपुत्री कुसुमावळी उठी, अने तेणे सर्व जनानी लोकोने आ प्रमाणे वात संभळावी के आप आंहीं आवीने वश्यां, पण एकजवार देवनां दर्शन करीने परश्यां, परंतु अमारेतो ब्राह्मणना कुळमां जन्म छे, माटे अमारेतो रोजरोज जइने देवने नमवुं जोइये, एम कहीने पोते रथ मगाव्यो, साथे पाळा लीधा, गामना (गोपुर) दरवाजा तरफ गमन कर्युं, ने हृदयमां सागरने मळवानी चाहना धरीने देवना स्थानक प्रत्ये गइ, एटले ते रथमांथी उतरीने पगे चालवा लागी. ॥५॥

॥ सोरठा ॥

देवालय प्रति जाय, अंदर कुसुम प्रवेश किय ॥
सागर दरस सु पाय, चितमें अति हरखित भई ॥ ६ ॥

अर्थ. देवालय प्रत्ये जइने कुसुमावळिये अंदर प्रवेश कर्यो. त्यां सागरना दर्शनने पामी, ने मनमां अति हर्षित थई.॥६॥

श्री पति वंदन कीन, पुनि गोस्वामी प्रति गई ॥

पाती पान प्रवीन, बीरि व्याज आगे धरी ॥ ७ ॥

अर्थ. लक्ष्मीनापति द्वारकानाथनुं वंदन करीने, पाछी गोस्वामी पासे गई, त्यां पाननी बीडीना मसथी प्रवीणना हाथनो लखेलो पत्र महाराजनी आगळ धर्यो. ॥७॥

॥ चोपाई ॥

तब महाराज कहन तिहि लग्गे, तुम को रहत कोनसी जग्गे ॥
उन कहि हमही विप्र कहावे, मनछापुरी सु मध्य रहावे ॥
कलाप्रवीन संग इत आई, बडे भाग दरशन निज पाई ॥
मंद मंद दोऊ मुस काये, महाराज इतिहास चलाये ॥
पूरन एह प्रसंग ज्यु कीनो, प्रच्छन पत्र बीरिसें लीनो ॥८॥

अर्थ. त्यारे तेने महाराज केहेवा लाग्या के तमे कोणछो, अने कये स्थळे रहोछो, त्यारे कुसुमावळिये कह्युं जे, अमे ब्राह्मण छिये, अने मनछापुरिये रहिये छिये, कळाप्रवीणनी साथे हुं आंही आवीछुं. तो मोटा भाग्यथी आपनां दर्शन पामी, एवुं कह्या पछी बन्नेजण परस्पर मंदहास्य करीने मरक्यां, पछी महाराजे इतिहासनी कथा चलावी, ते प्रसंग पूरो करीने, तरत बीडीमांथी गुप्तपत्र लीधो. ॥८॥

॥ सोरठा ॥

वह पाती कर धार, बचन लगे व्रजराज ज्यू ॥
उर आसय मनुहार, लखियत कलाप्रवीन ज्यू ॥ ९ ॥

अर्थ. ते कागळ हाथमां राखीने व्रजराजजी महाराज वांचवा लाग्या, तेमां प्रवीणे हृदयमां आदर सत्कार करवानो अभिप्राय धारिने ते कागळमां आ प्रमाणे लखेलुं हतुं. ॥९॥

॥ अथ वहपाती किंचित उदाहरनं ॥ दोहा ॥

सुरत सुरत लागी रहत, पागी रहत सनेह ॥
विरह ज्वाल जागी रहत, दागी रहत सुदेह ॥१०॥

अर्थ. तमारी सुरतमां मारी सुरत लागी रहेछे, अने स्नेहमां भरपूर रहेछे, विरहाग्निनी झाळो जागी रहेछे, अने शरीरपण बळतुं रहेछे.॥१०॥

॥ अथ यथा संख्यालंकार सवैया ॥

नेनन नीर सने ब्रह संकट, साधन ओध उदास उसासी ॥ धीरजता ज्यूं प्रभा सुख सेज, विचच्छनता अरुप्रच्छन हासी॥गान विधान क्रिया मदपान, ब्रषा घन चंदन चंद प्रकासी ॥ सागर मिंत बढेहे घटे हे, भए न सुहावत प्रान बिनासी ॥११॥

अर्थ. हे सागर मित्र तमारा वियोगथी मारां आठ वानां वधेछे, अने ते प्रत्येकथी आठवानां घटेछे, अने चार वानां तो मारो प्राण नाश करे. एवां (भये) थई पड्यां छे, तेथी मने गमतां नथी, ते एछे के.--आंखनां आंसु, स्नेह, विरह, संकट, साधन, अवधी, उदासी, अने उसासा, ए आठथी, धीरजता, कांति, सज्यानुं सुख, विचक्षणता, गुप्तहांसी, गायननां विधान, कामकाज, अने मद्यपान, एवां आठवानां घटेछे; वर्षाद, कपूर, चंदन, अने चंद्रप्रकाश, ए चारवानां प्राण नाश करे एवां थई पड्यां छे, तेथी गमतां नथी. ॥११॥

॥ लोकोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

याद सबी न कबी बिसरे अरु,जो करतार करी सु सहेहे॥भागमें या गति जो लों लखीहे, तबे लगि अंग अनंग दहेहे ॥ प्रान पयान कियो नित चाहत,आस्य विलोकन आस रहेहे नेनन सों न लखी बनिहे, अहो सागर मिंत मिलंत कहे-

हे ॥ १२ ॥

अर्थ. आपनी छबिनी यादि क्यारेय विसरती नथी, अने जगत्कर्त्ता परमेश्वर जे करेछे, ते सहिये छिये, अमारा भाग्यमां ज्यां सुधी आवी गति लखीछे, त्यां सुधी कामदेव अंगने बाळशे, हमेशां प्राणतो प्रयाण करवानुं चाहेछे, पण आपनुं मुख जोवानी आशाये रह्याछे, जेजे वितेछे, ते लखवाथी बने एम नथी, पण अरेरे हे मित्र सागर? तमो क्यां मळशो?॥१२॥

॥ दोहा ॥

नेनां चाहत निरखवो, श्रवन सु चाहत बात ॥
कर चाहत पद परसवो, यह बिधि निशदिन जात॥१३॥

अर्थ. मारां नेत्रो तमने जोवाने चाहेछे, कान वातो सांभळवाने चहायछे, अने हाथ, पगने परसवाने चाहेछे, एवी रीते रात दिवस जायछे.॥१३॥

पाती लिखित प्रवीन बचि, मानी सब मनुहार ॥
कहियत नाम सिलोकको, आपे लिखी उदार ॥ १४ ॥

अर्थ. प्रवीणनो लखेलो पत्र वांचीने सर्व प्रकारनो आदर सत्कार मानी लीधो, पछी पोते श्लोक लखवानुं नाम लईने उदार मनथी पत्री लखी.॥१४॥

॥ छपय ॥

आप प्रसादी बसन, पत्र छेहरे सु कीनो ॥
कुसुम विदा जब कीन, तवे उनकों वह दीनो ॥
बंदन किय ब्रजराज, बाल अवमोचन आई ॥
प्रच्छन भेद प्रवीन, पान पाती वकसाई ॥
ब्रजराज रूप वर्नन कियो, जब इकंत चरचा जगी ॥
अभिलाष चिंत आनंद भरि, बाला उन वंचन लगी॥१५॥

अर्थ. ते पत्र पोतानी प्रसादीनुं वस्त्र (उपरणाने) छेडे बांध्यो, अने

ज्यारे कुसुमावळीने विदाय करी, त्यारे उपरणा समेत ते पत्र तेना हाथमां दीधो, एटले व्रजराजजीने वंदन करीने कुसुमावळी उतारे आवी. अने गुप्त भेदवाळो पत्र लइने छानी रीते प्रवीणना हाथमां बकश्यो, पछी ज्यारे एकांत समयमां चर्चा चाली, त्यारे व्रजराजजीना रूपनुं वर्णन कर्युं. ते सांभळीने मनमां अभिलाषा तथा आनंदथी भरपूर थयेली बाळारूप प्रवीण ते पत्र वांचवा लागी. ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

वांच्यो सह बिसतार, पाती भेद प्रबीन ज्यू ॥
उनको कछू उदार, कहु प्रकार संछेप करि ॥ १६ ॥

अर्थ. कळाप्रवीणे विस्तार सहित जे कागळनो भेद वांच्यो, तेना कांइक उदाहरणनो प्रकार टुंकी मतलबमां कहुंछुं. ॥१६॥

॥ अथ वह पाती भेद समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

टंक कुठार मलेछ करे विधि, सोधत मूल सबे सुख छीने ॥
अंककि धातु ढराय तहीं, परि ग्राव विचार चुनाय गचीने ॥
प्राततें रात भये लों करे यह, राततें प्रात प्रभा पुनि कीने ॥
पल्लव चाह वढे प्रति बासर, प्रेम प्रयाग प्रवीन नवीने ॥ १७ ॥

अर्थ. एवी वात चालेछे के हिंदुना देवस्थान पाडनारा अल्लाउदीन खुनिये एवुं सांभळ्युं के--हिंदुओनां प्रागवडमां एवुं दैवतछे के--ते वडनो नाश थइ शकेज नहीं, त्यारे ते खुनिये त्यां जइने ते वडने कपाव्यो, ने उपर सीसुं ढळाव्युं, अने ते उपर पथरानुं गीच चणतर करावी लीधुं, तो पण बीजे दहाडे प्रभात थायके ते वड पाछो तेवडोने तेवडो उगी नीकळे, वळी सवारथी ते सांझ सुधी मजुरो लगाडीने पाछो कपावी नाखीने एज प्रमाणे घणा दिवस कर्युं, तोपण वड नाश पाम्यो नहीं, तेथी ते म्लेछ थाकीने

पाछो गयो, तेनुं द्रष्टांत आमांछे. सागर कहेछे के हे प्रवीण? मारा प्रेमरूपी प्रागवड ने ब्रह्मारूपी म्लेच्छ (टंक) काळरूपी कुहाडाये करीने कापी नाखीने अने सुखरूपी तेनां मूळ बधां शोधी शोधीने छेदन करेछे, तेना उपर नशीवना आंकडारूपी (धातु) सीसुं ढळावीने वळी तेना उपर विचाररूपी पथ्थर अने चुनाथी चणतर मजबूत करेछे, ए रीते सवारथी ते सांझसुधी करेछे, पण रातथी ते प्रभात सुधीमां ते वडनी (प्रभा) कांति पाछी प्रगट थइ आवेछे, अने दररोज चाहनारूपी पांदडां वध्यां जायछे, एवी रीते मारो प्रेमरूपी प्रागवड नवोने नवोज रहेछे. ॥१७॥

॥ अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

पतियां न विधान किते पठऊं, पथ बान ज्यों प्रान बढे रतियां ॥ रतियां दिन ध्यान धरे रहिये, सहिये बिधि अंकनकी गतियां ॥ गतियां वह जान हिगो न हहा, जिनके नहि छेद भये छतियां ॥ छतियांकि सबे बतियां तुम जानत, कैसें प्रवीन लिखों पतियां ॥ १८ ॥

अर्थ. केटला प्रकारना कागळो लखी मोकलावुं, (पार्थ) अर्जुनना बाणनी पेठे प्राणमां रति तो वधतीज जाय छे,रातादिवस ध्यान धरी रहिये छिये. ने विधाताना मांडेला आंकडाना दुःखनी गतिने सहिये छिये, जेनी छातीमां छेद पड्या नथी, अरे हायहाय ते जन आ गतिने जाणशे नहीं, पण हे प्रवीण हृदयनी सघळी वातने तो तमो जाणो छो, माटे पत्रमां केम लखिये? ॥१८॥

॥ अथ छेकानुप्रास अलंकार ॥ कवित ॥

जवतें मिल्यो हे मन, तवतें निवास वन, सवतें उदास मुरझाय रही मतियां ॥ थर्क थर्क अंग रोम, भर्क भर्क ज्वाला

जगे, सर्क सर्क प्रान होत, धर्क धर्क छतियां ॥ पीरको नि-
दान काहु, आनपें न कह्यो जात, रह्यो हे ज्यू प्रान कल्म,
रोसनाइ, पतियां ॥ कहो होहो चिंतकी, प्रवीन ज्यु कहोगे
कब, अहो होहो मिंतरे एकंत बेठि बतियां ॥ १९ ॥

अर्थ. ज्यारथी मन मळ्युं छे, त्यारथीज घर जंगल जेवुं लागेछे, अने सर्व लोकोथी उदासी धरीने बुद्धि मुंझाइ रहीछे, अंगनां रुंवाडां थरर थरर थरेरे छे, भडक भडक झाळो जागी उठे छे, प्राण सरर सरर सरकेछे, छाती धडक धडक धडके छे, पीडानुं कारण कोइ बीजा पासे कह्युं जाय एवुं नथी, अने प्राणतो केवळ कलम, शाही, तथा पत्रमांज रह्योछे. तोहे प्रवीण ? चित्तनी वात कहो के अहो हे मित्र ? हवे एकांतमां बेशीने क्यारे वातो करशो. ॥१९॥

॥ अथ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

आजहुलों बहरावतहो कहा, आगेकि याद करो सिगरी ॥
चातुरहो सु विचार धरो तुम, ओसर आवहिगो न फिरी ॥
केवनहार पुकार कहे, अब बीतत सोय घरी गुजरी ॥ मिंत
प्रवीन कहो किहि कारन, प्रेमकि बात बिसार धरी ॥२०॥

अर्थ. आज सुधी केम भरमाव्या करोछो, आगळनी सघळी वातो याद करो, तमे चतुर छो, माटे विचार करो, जे फरीने आवो वखत आवशे नहीं, घडी भराइ एम कहेवावाळो तो पोकारीने कहे छे, के हवे ते घडी वीती ने जती रही छे, हे मित्र प्रवीण? कहो के शा कारणे प्रेमनी वात विसारी मूकीछे. ॥ २० ॥

॥ अथ शिक्षाक्षेप अलंकार ॥ सवैया ॥

तापर या उपचार कियो, तुम आवनकी पठई ज्यु लिखावे ॥

आये न आये रहे अजहु लगि, नेह कहो किहि भाति नि भावे ॥ गोख झरोखन टेरत हेरत, आनन बानि कहू नहि पावे ॥ अमृत बीच जहेर करो कह, मिंत प्रवीन मेहेर न आवे ॥ २१ ॥

अर्थ. तमे आंही आववा विषेनो पत्र लखी मोकलाव्यो, ते उपर अमे आ उपाय कर्यो, पण हजी सुधीतो आव्या ते न आव्या जेवा थइ रह्या छिये, माटे कहो के हवे शी रीते स्नेह नभाविये, गोख, तथा झरुखामांथी पुकारिये छिये, ने जोया करिये छिये, परंतु क्यांय तमारा मुखनी वाणीने पामता नथी, हवे अमृतनी वचमां जहेर शुं करवा करो छो, हे मित्र प्रवीण? तमने महेर नथी आवती. ॥ २१ ॥

॥ अथ अनन्यवयालंकार ॥ सवैया ॥

अंतर बूझ बिबेक रहे, चित टेक अरूझ रहे अपनीमें ॥ साधनमें भरपूर रहे, चकचूर रहे मनकी मगनीमें ॥ प्रेम प्रभा बिसतार रहे, निरधार रहे, श्रुति शुन्य धुनीमें ॥ शोधत ओर मिल्यो न हमें कोउ, मिंत प्रवीन प्रवीन दुनीमें॥२२॥

अर्थ. अंतःकरणमां विवेकथी समजीने रहिये छिये, ने चितमां पोतानी टेकमां मुंझाई रहिये छिये, साधन करवामां भरपूर रहिये छिये, ने प्रेमना तेजने फेलावी रहिये छिये, आकाशना शब्दमां कानने धारी रहिये छिये, एवी रीते अंतःकरणमां शोधी जोतां अमने कोइ बीजो प्रवीण सरखो चतुर मित्र दुनीआमां मळ्यो नहीं॥२२॥

॥ द्रष्टांतालंकार ॥ दोहा ॥

लिखवेमें जानी परत, प्रेम पुरानी बात ॥
एसेमें जल कमल गति, अवधि बढी कह जात ॥ २३॥

अर्थ. तमारा लखवामां तो तमारा जूना प्रेमनी वात जणाइ आवेछे, एम छतां पण जळमां रहेला कमळनी पेठे, (अवधी)मुदत केम वधती जायछे? अर्थात् जेम पाणी वधतुं जायछे, तेम कमळ पण ते साथे वधतुं जाय छे, तेम प्रेम वधतो जाय छे, ते साथे मळवानी अवधी पण केम लांबी थती जाय छे?॥२३॥

॥ अथ विनोक्ति अलंकार ॥ दोहा ॥

चातुक तलफत बुंद बिन, जल बिन तलफे मीन ॥
चकित चकोरा चंद बिन, यों बिन दरस प्रबीन ॥ २४ ॥

अर्थ. स्वातिना बुंद विना जेम बपैयो तलफे, पाणी विना जेम माछलुं तलफे, अने चंद्रमा विना जेम चकोरपक्षी चकित थइने तलफे तेम अमे प्रविणना दर्शन विना तलफिये छिये.॥२४॥

ज्यों ज्यों अति बीतत बिपति, त्यों त्यों दहियत देह ॥
चहियत कब मुख देखहूं ॥ नेनन भरे सनेह ॥ २५ ॥

अर्थ. जेम जेम अति विपत्ति वीते छे, तेम तेम देह बळे छे, अने चाहिये छिये के स्नेहथी भरेलां नेत्रोवाळुं तमारुं मुख क्यारे देखशुं।२५।

॥ सोरठा ॥

नात बिचारक्कु चिंत, प्रेम पंथ लाओ सुरत ॥
नात भई अब मिंत, मन ज्यों तन मिलवन नहीं ॥२६॥

अर्थ. चित्तमां नात विचारीने प्रेमने पंथे नजर लावो हे मित्र? हवे तो थयुं भयुं केमके मननी पेठे शरीरने मळवानुं थतुं नथी.॥२६॥

सुरत माल गुन ग्राह, उरनिवान सुमती सलिल ॥
बढत प्रेम परवाह, चढत जात कागद घरी ॥२७॥

अर्थ. सुरतरूपी घटमाळना दोरडावडे ग्रहण करेली अथात् बांधेली

कागळरूपी घडो जेम जेम चडती जायछे, तेम तेम हृदयरूपी नवाणमांथी सुमतिरूपी पाणीनो, प्रेमरूपी प्रवाह वधेछे. ॥२७॥

सागर पत्र प्रवीन, बांचत भये सु बाउरे ॥
दशा सु बन विन मीन, कब मिलवन करता करे ॥२८॥

अर्थ. एवीरीते सागरनो पत्र वांचतांज प्रवीण दिवानां थइ गयां, एटलुंज नहीं, पण तेनी दशातो पाणी वगरनी माछलीना जेवी थइ गई, जेथी मनमां धारवा लाग्यां के हवे जगतकर्त्ता परमेश्वर क्यारे मिलाप करशे.॥२८॥

उर उसास वढि आय, छिन छिन जल दरसित द्रगन ॥
धीरज कुसुम द्रढाय, बतियांकों लगवत बहुर ॥ २९ ॥

अर्थ. हृदयमां श्वास वधी आव्यो, क्षणे क्षणे आंख्योमां जळ दरसावा लाग्यां, जेथी कुसुमावळी घणीएक वातोमां चडावीने मजबुतीथी धीरजता ठसावा लागी. ॥२९॥

॥ गाहा ॥

पठवन पत्र प्रवीनं, सागर कुसुम संग प्रति उत्तर ॥
चहुपचाश अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥ ३० ॥

अर्थ. प्रवीणना लखेला पत्रनो सागरे कुसुमावळीनी साथेज प्रत्युत्तर लखी मोकलाव्यो, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी चोपनमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३०॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे कलाप्रबीन रससागर मनुहार पत्र भेदो नाम चतुः पंचाशत्तमो लहरं ॥ ५४ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां चतुः पंचाशत्तम स्तरंगः समाप्तः ॥५४॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद ईंद्रवज्रा ॥

दीपोत्सवे दंपति देव देरे, अन्योन्य हेते धरि दृष्टि हेरे ॥
तेथी रुदे दंपति रीझियां छे ते वात पंचावनि लेरमां छे ॥

॥अथ देवालये कलाप्रवीन रससागर मिलन प्रसंगो यथा॥

॥ सोरठा ॥

इहि विधि दुहु तलफंत, बढत विरह दूनी दशा ॥
उच्छव अहर व्रतंत, मिलवो द्रढ मंदिर सु किय ॥ १ ॥

अर्थ. एवीरीते बेय तलफेछे, ने विरहनी दशा बमणी वधती जायछे, तेथी उत्सवनो दिवस नजीक आव्यो जाणीने मंदिरमां मळवानो द्रढ निश्चय कर्यो. ॥१॥

॥ छपय ॥

यहे चित्त धारंत, द्योस आगम सु विहाये॥
जन जन मन हरखंत, दीपउत्सव दिन आये ॥
घाट घाट प्रति प्रात, लोग गुरुजन दुज जज्जे॥
दर, झल्लर, अरु घंट, नाद नोबतिके वज्जे ॥
उत्साह चाह अभिलाखियन, चढत द्योस त्यों त्यों चढे ॥
सागर सु ओर परवीन उर, उप परसन आशा द्रढे ॥२॥

अर्थ. मनमां एवुं धारतां आगळना दिवसो वीती गया, अने दीवाळीनो दिवस आववाथी माणसे माणसोनां मन हर्षित थयां, घाटे घाटे प्रभात समये लोको, गुरुजनो, अने ब्राह्मणो, पूजन करवा लाग्या, शंख, झालर, घंटा तथा नोबत विगेरे वाजित्रो वागवा लाग्यां, जेम दिवस चढेछे, तेम तेम अभिलाषावाळा लोकोना मनमां उत्साह तथा चाहना चढेछे, तेमज सागर तथा प्रवीण पोताना हृदयमां समीपे-जइ एक बीजानो स्पर्श करवा-

नी आशा दृढाविछे. ॥२॥

॥ सोरठा ॥

निज निज सजत निवास, पुरजन मन आनंद अति ॥
होत कुलाहल हास, दिनमनि नय संध्या दिसत ॥३॥

अर्थ. शहेरना लोको पोताना मनमां अति आनंद धरीने पोत पोतानां घरोने शणगारेछे, सूर्यना नमवाने लीधे संध्याकाळ देखातां कोळाहळ तथा हास्य थायछे. ॥३॥

॥ अथ सहोक्ति अलंकार ॥ छंद पद्धरी ॥

ज्यों ज्यों दुरंत दिनकर प्रताप ॥ त्यों त्यों घटंत बिरहा प्रलाप ॥ ज्यों ज्यों सुरंग अंबर प्रकाश ॥ त्यों त्यों शरीर शोभा विकाश ॥ ज्यों ज्यों विकाश बन बेलि बाग ॥ त्यों त्यों उजास प्रेमानुराग ॥ ज्यों ज्यों सरोज कुमलात जात ॥ त्यों त्यों बिजोग मनसें बिलात ॥ ज्यों ज्यों लगंत चिरियां उचार ॥ त्यों त्यों सजंत कुमरी सिंगार ॥ ज्यों ज्यों बजंत शखान राव ॥ त्यों त्यों सधंत रस हावभाव ॥ ज्यों ज्यों झनंक झल्लरिय होत ॥ त्यों त्यों चढंत तन रूप जोत ॥ ज्यों ज्यों प्रकाश तारिका कीन ॥ त्यों त्यों अनंग रस रंग लीन ॥ ज्यों-ज्यों चिराक जग्गे उजास ॥ त्यों त्यों समीप धारंत आस ॥४॥

अर्थ. जेम जेम सूर्यनुं तेज ढंकातुं जायछे, तेम तेम विरहनो विलाप घटतो जायछे, जेम जेम आकाशमां सारा रंगनो प्रकाश थायछे, तेम तेम शरीरनी शोभा खीलती आवेछे, जेम जेम वन, वेल्यो, तथा बगीचा प्रफुल्लित थता जायछे, तेम तेम प्रेमना अनुरागनो उजास थतो जायछे, जेम जेम कमळो करमातां जायछे, तेम तेम मनमांथी वियोग क्षीण थतो जायछे,

जेम जेम चकलियो उच्चार करवा लागेछे तेम तेम राजकुंवरी शणगार सजेछे, जेम जेम शंखना अवाज थायछे, तेम तेम रसथी हावभाव साधेछे, जेम जेम झालरोना झणकार थायछे, तेम तेम शरीरमां रूपनी जोति चडती आवेछे, जेम जेम ताराओ प्रकाश करेछे, तेम तेम दंपति कामदेवना रसरंगथी भींजातां जायछे, जेम जेम दीवाओनुं अजवाळुं जागेछे तेम तेम मित्र समीपे जवानी आशा धारण करेछे. ॥४॥

॥ दोहा ॥

सांझ भई श्रीपति सदन, दीपमाल जागि जोत ॥
भीर भार दरसन भई, कोलाहल जन होत ॥ ५ ॥

अर्थ. सांझ थइ एटले श्री द्वारकानाथना मंदिरमां दीपमाळानी जोत जागी, अने दर्शन वास्ते भारे भीड मची, जेथी लोकोना (कोळाहळ) घोंघाट थवा लाग्या. ॥५॥

कछुक भीर दरसी सु कम, आय तहां व्रजराज ॥
सोर वरज कीनो तहां, नाटिक गान समाज ॥ ६ ॥

अर्थ. कांइक माणसोनी भीड कम देखाणी, ते वखते त्यां व्रजराजजी महाराज पधार्या. एटले लोकोना सोरबकोर बंध करावीने नाटक तथा गायनना समाजनी धामधूम थवा लागी. ॥६॥

श्रीपतिके प्रविशत सदन, अस्तुति करी वनाय ॥
दश अवतार चरित्र शुभ, छंद त्रिभंगी लाय ॥ ७॥

अर्थ. श्री द्वारकानाथना मंदिरमां प्रवेश करती वखते महाराजे दश अवतारोनां शुभ चरित्रने त्रिभंगी छंदमां लावी नवीन कविता बनावी आ प्रमाणे स्तुति करी. ॥७॥

॥ अथ रस सागरोक्त श्रीपति स्तुति ॥ छंद त्रिभंगी ॥

मीनाक्रति धारा, शोधिय वारा, शंख प्रकारा, रिपु मारा ॥ वेधा किय सारा, खेध अपारा, लच्छ निहारा, श्रुति बारा॥ इच्छा निज चिंतं, कोला क्रंतं, अंबु अनंतं, शोधंतं ॥ दानव पति हंतं, जुद्ध जियंतं, धर धारंतं, निज दंतं ॥ कोरंभ कहाया, आसुर माया, देव बुलाया, सब आया ॥ सिंधू मथ वाया, श्रम्म कराया, रतन उपाया, बंटाया ॥ सिंहा तनु धारं, थंभा फारं, कश्यपु मारं, नखरारं ॥ प्रल्हाद उगारं, मुक्ति दतारं, जय मुनि सारं, उच्चारं ॥ राजा बलि जग्गं, धारिय तग्गं, भुवपति अग्गं, भुव मग्गं ॥ किय रूप अथग्गं, ब्रहमँड लग्गं, त्रिभुवन पग्गं, त्रय डग्गं॥ रूप मुनि सद्दं, फरसा युद्धं, शस्त्रा बद्धं, किय युद्धं ॥ मंडल महि मद्दं, क्षत्रि विरुद्धं, बसुधा लद्धं, दुज दद्धं ॥ राघो कुल ग्यानं, नीति द्रढानं, सीत हरानं, धर बानं ॥ सागर हतमानं, कपि रिच्छानं, रावन थानं, उथियानं ॥ जासों उजयासं, प्रेम प्रकाशं, त्रिबिध विलासं, ब्रज वासं॥ कंसादिक नाशं, पंडव दासं, बिषय निकासं, द्रढ तासं ॥ बुद्धा व्रतमानं, धत निज ध्यानं, गैब गिनानं, उदयानं॥ सेवा चरचानं, अस्तुति बानं, सुनत न कानं, अशुभानं ॥ निकलंक चरित्तं, श्रुति समरित्तं, मुनि गन गित्तं, ग्यापित्तं॥ अदली क्रत नित्तं, दमन दइत्तं, निज जन हित्तं, राखित्तं ॥ सृष्टि महि सरक्खं, अगम अलक्खं, प्रक्रति पुरुक्खं, श्रव मक्खं ॥ पंखा नन पक्खं, दलियत दक्खं, निगम निरक्खं, परतक्खं ॥ सुंदरवर शासं,

गरुडागामं, कौस्तुभ दामं, अभिरामं ॥ श्री मन विश्रामं, धुनि रस धामं, कृत मम कामं, शिर नामं ॥ ८ ॥

अर्थ. मांछला जेवी आकृतिथी मच्छावतार धरी, पाणीमां शोधीने शंखना आकारवाळा शंखासुर नामना शत्रुने मार्यो, एटलुंज नहीं, पण अति खेदथी ब्रह्मानी सहायताने लीधे अपार समुद्रमां पेशी लक्षण जोइने वेदोने लाव्या, पछी पोताना चित्तनी इच्छा प्रमाणे (कोल) वराहना जेवी आकृति करीने वाराह अवतार धरीने अगाध समुद्रना अपार पाणीने शोध्युं, एटलुंज नहीं, पण युद्धमां जीतेला दानवना पति हिरणाक्षने युद्ध करीने मार्यो, अने पोतानी दाढमां पृथ्वीनुं धारण कर्युं, त्यार पछी काचवाना जेवा रूपथी कूर्मावतार धरीने पोतानी मायाथी असुर तथा देवोने बोलाव्या, ते सघळा आव्या, एटले तेओनी पासे महेनत करावीने समुद्र मंथन कराव्युं, अने तेमांथी चौद रत्नो काढीने वहेंचावी आप्यां, वळी सिंहना जेवा स्वरूपथी नृसिंह अवतार धरीने स्थंभ फोडीने प्रगट थया, ने पोताना कठोर नखथी छाती फाडीने हिरणकश्यपने मार्यो, अने पोताना भक्त प्रहलादने उगारी लीधो, त्यारे एवा मुक्तिदायक ईश्वरनी स्तुति करवा माटे मुनियोये आवीने सारी रीते जय जय एवा उच्चार कर्या, (त्यार पछी वळीराजा पासेथी राज लइने इंद्रने देवा सारूं) पोते वामन अवतार धरीने तेना यज्ञमां गया, ने दान लेवानुं धारीने पृथ्वीपति वळीराजा पासे त्रण पगलां पृथ्वी मागी, (जेथी ते राजाये त्रण पगलां पृथ्वीनुं दान आप्युं के) तुरत पोते अति अद्भुत वैराटरूप धारण करीने आखा ब्रह्मांडमां व्यापी गया, एटलुंज नहीं पण त्रण डगलामां त्रणेलोक लइ लीधां, पछी मुनिना वंशमां प्रगट थइ फरशुरामनो अवतार धरी, फरशीनुं आयुद्ध लइ शस्त्र बांधीने सहस्त्रार्जुन राजा साथे युद्ध कर्युं, अने आ महिमंडळमां क्षत्रिना विरुद्ध थइने पृथ्वी लइने ब्राह्मणोने आपी दीधी, पछी रघुराजाना कुळमां सूर्यनी पेठे प्रगट

थई रामावतार धरीने नीति द्रढ करी. पछी ज्यारे सीता हराणां, एटले धनुषबाण धारण कर्युं, ने पछी समुद्रना मानने उतारीने वानर तथा रीछो पासे रावणना स्थानकरूप लंकाने उथापी नखावी, वळी ज्यारे कृष्णावतार लीधो त्यारे जेना मनमां प्रेमनो प्रकाश हतो, एवा व्रजवासियो साथे विविध प्रकारनो विलास कर्यो, वळी कंसादिकनो नाश कर्यो, अने पोताना दास पांडवोना विपय दूर करीने द्रढता करावी, त्यार पछी बुद्धावतार धरीने पोताना ध्यानमां मग्न थया, अने गेबी ज्ञाननो उदय कर्यो, अने सेवानी चर्चा तथा स्तुतिनी वाणीने, के अशुभ वाणीने काने सांभळता नथी, हवे पछी जे निकलंकी अवतार थवानो छे, तेनां चरित्रोने वेदो समरे छे, मुनियोना समुदाय तेनां गीत बोले छे, के ते अदल नीति स्थापीने दैत्योनो नाश करशे, अने पोताना भक्तोनां कल्याण करीने रक्षा करशे, एवा (अगम्य) (अलख) जाणवामां न आवे, तथा लक्षमां न आवे, एवा सृष्टिना सखारूपे, सगुण अवतार धरे छे, तेज निर्गुणरूपे, प्रकृति पुरूषरूप, सर्व यज्ञरूप, वगर पक्षवाळाना पक्षरूप, दुःखने दळनारा, वेदो जेने प्रत्यक्ष जोइ शके छे, एवा सुंदरवर, श्यामरूप, गरूड उपर बेशीने गति करनारा, सुंदर कौस्तुभमणिनी माळा पहेरनारा, लक्ष्मीना मनना विश्रामरूप, रसनी नदीना धामरूप, मननी कामनाने पूर्ण करनारा, हे? द्वारकापति तमने हुं शिर नमावीने नमस्कार करूंछुं.॥८॥

॥ सोरठा ॥

पूजन किय गोस्वाम, हरि वंदित अस्तुति करी ॥
द्वार निकट उन धाम, आसन किय व्रजराज ज्यू ॥९॥

अर्थ. पछी ते गोस्वामी व्रजराजजिये पूजन करी, हरिनुं वंदन करीने स्तुति करी, पछी तेज धामना द्वार पासे आसन करावी विराजमान थया.९

नट नाटिक सु समग्र, दीपमाल दिश दिश जगी ॥
आपहि हे सिध नग्र, उपमा कह ताकी कहे ॥१०॥

अर्थ. त्यां नट नाटक विगरे सघळा खेल थवा लाग्या, ने दिशाये दिशाये दीपमाळा प्रगट थई, ते द्वारकापुरी पोतेज सिद्धिनुं नगर छे, माटे तेनी उपमा शुं कहिये. ॥१०॥

यहाँ वखत परवीन, आवन दरससु अद्दरिय ॥
मासन मंत्रिय लीन, सजन लगे सिंगार तन ॥ ११ ॥

अर्थ. ए वखते प्रवीणे दर्शने आववानो आदर कर्यो, ने पोताना कामदारनी आज्ञा लइने, अंगे शणगार सजवा लाग्यां.॥११॥

॥ अथ कलाप्रवीन सिंगार वर्नन ॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

किये मंजनं नारि सिंगार सज्जे॥ सुरी आसुरी रूप आलोकि लज्जे ॥ लहेंगा लसें सोसनी तार गत्ती ॥ कसें अंगिया नील मुक्तरी जत्ती ॥ कसुंबी धरे तारिका चंद्रसारी ॥ जरे छहेर तार सारं किनारी ॥ नखंते शिखा हेम सिंगार बन्ने जरे मानिकं मोतीयं हीर पन्ने ॥ लगे बीछुवा जेब मंजीर वज्जे, धुनी किंकनी घुघरु घोर गज्जे ॥ उरं बीच उत्साह आनंद बढ़े, चली देवके देहरे चक्रि चढ़े ॥ सहेली सबे आपके संग लीने, किये जावदा साथ पेयान कीने ॥ महाराजके थान नाजीक आये, इते चेरियां जाय आगे सुनाये ॥ अगाउं यहे ब्रह्मचारं सुनावे, जनाना इते वंदनं काज आवे ॥ सबे लोगमें ब्रह्मचारी उचारे, करो चोक खाली जनाना पधारे ॥ लगे चोपदारं सबे लोग कढ़े, गुसांई बिराजे ब्रह्मचारी ठढ़े ॥ १२ ॥

अर्थ. स्नान करीने प्रवीण शणगार सजे छे, त्यारे तेना रूपने जोइने देवांगनाओ तथा असुरनी स्त्रियो पण लाजे छे, शोषनी रंगनो सोनेरी तारथी भरेलो किनारीदार (लेंघो) घाघरो शोभे छे, सोनेरी भरतथी भरेली लीला रंगनी जरीनी कंचुकी कसीने पहेरी,ताराटपकीवाळी चंद्रकळा नामनी कसुंबी साडी धारण करी, जेना छेडा तथा किनारीमां सारा सोनेरी तार भरेला छे, अने नखथी ते शिखा पर्यंत सोनाना शणगार बनी रह्या छे, तेमां माणिक्य, मोती, हीरा अने पानां जडेलां छे, पगमां धारण करेला वींछिया लंघर तथा झांझरना झणकारा थवा लाग्या, कटिमेखळाना घूघराना शब्द गाज्या,हृदयनी अंदर उत्साह तथा आनंद वधवाथी रथमां बेशीने दर्शन करवा सारु देवने देरे चाल्यां, सघळी साहेलिओने पोतानी साथे लीधी, तेओए जाबदो करीने साथे प्रयाण कर्यु, अने महाराजना स्थानक समीपे आव्यां, एटलामां दासियो आगळथी संभळावा गई, तेओए मंदिरना ब्रह्मचारीने एवो शब्द संभळाव्यो, के आंही जनानुं वंदन करवा आवे छे, एवां वचन सांभळीने, ब्रह्मचारी सर्व लोकोने कहेवा लाग्या के आंही जनानुं पधारे छे, माटे चोक खाली करो, वळी चोपदारो सर्व लोकोने काढवा लाग्या, पण गुसांइजी महाराज बिराजी रह्या, अने ब्रह्मचारी उभा रह्या. ॥१२॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मचारि बोले बहुरि, निर्जन किय हरि थान ॥
किंकरि जाय बुलाइये, आवे अबे जनान ॥ १३ ॥

अर्थ. पछी ब्रह्मचारी बोल्या के माणसोने काढी आ हरीनुं मंदिर खाली कराव्युं छे, माटे हे? दासियो तमे जइने बोलावो, हवे भले जनानुं आवे.॥१३॥

॥ छपय ॥

ब्रह्मचारि सुनि वानि, सहचरी कुमरि सुनाई॥
चली उतरि चकडोल, गिरद जवनिका तनाई ॥
वनिता मिलेसु व्रंद, करत परिहास इके इक ॥
सजित सकल सिंगार, नेन सायक रतिनायक ॥
कुल रूप भेख समान सह, द्वार चोक मिल नेहरे॥
गुरुजन जनान भखी तितें, वहुरि निहारो देहरे ॥ १४ ॥

अर्थ. ब्रह्मचारीनी वात सांभळीने दासियोये जइने कुंवरीने संभळाव्युं, त्यारे रथमांथी उतरीने चालवा लाग्यां, अने चारे तरफ कनात तणावि लीधी, सखियो टोळे मळीने परस्पर हास्यविनोद करवा लागी, ते सर्वे ये सणगार सजेला छे, रतिनापति कामदेवना वाण जेवां तो जेओनां नेत्रछे, कुळ, रूप, तथा वेषथी सरखे सरखी साथे मळीने चोकना दर्वाजा पासे उभी रही, त्यारे वडिल एवी वृद्ध राणियोये, कह्युं के फरीथी मंदीरमां जोनरानो. ॥१४॥

॥ अथ छंद इंद्रवज्रा ॥

वानी सुनी ब्रह्मसुता उचारे, ठाढे रहो जाय हमें निहारे ॥
वाला सवे ताम विलंव कीनी, ब्रह्मनिसें जाय विदाय दीनी॥
कीनो प्रवेशं कुसुमं सु डेरे, देवं दुहारं व्रजराज हेरे ॥
अंद्रं ब्रह्मचार निजं सु ठढ़े, ब्रह्मी मतो कीन उने सु कढ़े ॥
जंवी उभे मध्य इकं रहावे, देवालये ताम जनान आवे॥
वानी तवे ब्रह्मचरं सुनाई, एसें इमानं इत क्यों सु आई ॥
श्रीनाथके नीठ हमें रहावे, गोस्वामि आपें उन विर्द कावे ॥
तासें कहो एक वहीर जाओ, जावे कितें आप न आओ-

आओ ॥ गोस्वामिसें व्रह्मनि सेन कीनी, आपें न जावे सु व्रजेश चीनी ॥ पीछी फिरी वाल जनान आई, एसी कथा व्रद्ध जनी सुनाई ॥१५॥

अर्थ. एवी वात सांभळीने ब्रह्मसुता कुसुमावळी कहेवा लागी के तमे आंही उभां रहो, एटले हुं जइने जोइ आवुं, जेथी सघळी स्त्रीओ त्यां रोकाई, अने कुसुमावळीने जवानी आज्ञा आपी, त्यारे कुसुमावळिये देरामां प्रवेश कर्यो, त्यां देवना द्वार आगळ व्रजराजजी महाराजने जोया, ने अंदर जुएछे, त्यां एक ब्रह्मचारी पोते उभेला छे, त्यारे कुसुमावळीये पोताना मनमां मनसुबो कर्यो के आने तो आंहींथी काढिये, एम विचारीने कुसुमावळिये तेने कह्युं जे एकजण रहो तो आंही जनानुं आवे, त्यारे ब्रह्मचारिये वात संभळावी के एवुं इमान छे, त्यारे आंही केम आव्यां, अमे तो श्री द्वारकानाथनी पासेज रहिये छिये, अने आ गोस्वामी महाराज छे, ते तो आप एनुंज रूप कहेवायछे, तेने कहोछो जे एकजण बहार जाओ, आप आवो, अथवा न आवो, पण अमे क्यां जइए? एवुं सांभळीने कुसुमावळिये महाराजने सान करी के आपे जवुं नहीं, ते सानने व्रजेशे जाणि, पछी त्यांथी पाछी फरीने कुसुमावळी जनाना पासे आवी अने व्रद्ध राणियोने आ प्रमाणे कथा संभळाववा लागी. ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

गोस्वामी व्रजराज, एक व्रह्मचारी उते ॥
श्रीपति विरद समाज, वह समीप नित प्रति रहे ॥१६॥

अर्थ. त्यां व्रजराजजी महाराज ने एक ब्रह्मचारी छे, ते महाराज श्री द्वारकानाथना समाजनुं विरद धरेछे, अने ब्रह्मचारी देवनीपासेज रहेछे.॥१६॥

दरशन लायक दोय, वंदि विष्नु उन वंदिये ॥

चलहु आशु अब होय, प्रविशत पूरब अघ कटे ॥१७॥

अर्थ. ए वेय दर्शन करवा लायक छे, माटे विस्नुने वंदन करीने एओने नमस्कार करिये, माटे हवे उतावळां थइने चालो, एटले प्रवेश कर्याथी पूर्व जन्मनां पाप कपाय. ॥१७॥

॥ अथ उत्प्रेक्षालंकार ॥ गाहा ॥

उर हुल्लास उल्लहियं, चहियं देव चिंत मिंत प्रती ॥
बहु दिन हंस बिछो हे, मानहु गमण मानसर तीरे॥१८॥

अर्थ. जेने चित्तमां चाहेछे तेज मित्र देवनी पासे बिराजेछे, एवी वात सांभळतांज प्रवीणना हृदयमां हुल्लास उलटी आव्यो, एवो के जाणे घणा दिवसना वियोगवाळा हंसनुं मानसरोवरना किनारा तरफ गमन थतुं होय नहीं, ॥१८॥

॥ अथ लुप्तोपमालंकार ॥ छंद प्रमानिका ॥

सखी समूह मल्लियं, मराल गत्ति चल्लियं ॥ खनंक राव नेहरी, अनंक जेव जेहरी ॥ ठमंक बीछुवानकी, घमंक घूघरानकी ॥ बजे अनेक गत्तियं, मनों संगीत नृत्तियं ॥ इकेक पान ग्राहियं, चलंत चोक आहियं ॥ उजास अंग कामनी, प्रकाश कोटि दामनी ॥ मुखारविंद मुद्दितं, अनेक चंद उद्दितं ॥ भुजा सु अंक मेलियं, लसंत हेम वेलियं॥ जराव नंग मुत्तियं, अगार दीप दुत्तियं ॥ विचित्र वास झुल्लियं, वसंत बाग फुल्लियं ॥ सुवास डोर फुट्टियं, मधूप ब्रंद जुट्टियं ॥ मधूर बान साजितं, परिभ्रतं सु लाजितं ॥ करतं सुहास छंदियं, दुहारकेश वंदियं ॥ १९ ॥

अर्थ. सर्व सखियो टोळे मळीने हंसना जेवी गतिथी चाली, त्यारे

झांझरना शब्द खणकेछे, (जेव) शोभित लंघर झमकेछे, विंछिया ठमकेछे, घुघरानो घमघमाट अनेक प्रकारनी गतिथी थायछे, ते जाणे संगितशास्त्रना नियमथी नृत्य थतुं होय नहीं, एक बीजाना हाथ ग्रहण करी चालीने चोकमां आवी. ते स्त्रियोना अंगनो एवो उजास छेके जाणे करोडो वीजळियोनो प्रकाश होय नहीं, हर्षथी तेओनां मोढां एवां खीली रह्यांछे के जाणे अनेक चंद्र उदय थया होय नहीं, खोळामां हाथ राखीने नमेछे, ते जाणे सोनानी वेल्यो लळकती होय नहीं, जडित्र घरेणानां नंग अने मोतियो एवां चळकेछे के जाणे दीवानी कांति झगारा मारती होय नहीं, भात भातनां पहेरेलां वस्त्र एवां झुकी रह्यांछे के जाणे वसंत रुतुनो बगीचो फूल्यो होय नहीं, जेना शरीरना सुगंधनी लहेरो भभकवाथी भमराओनां टोळां आवीने जोडाइ गयाछे, अने ते स्त्रियो एवी मधुर वाणी बोलेछे के जे सांभळीने कोयलो पण लाजी जायछे, एवी रीते हस्तेमोढे अनेक छंद करती सर्व स्त्रीओये आवीने द्वारकानाथने वंदन कर्युं. ॥१९॥

॥सोरठा॥

श्री पति वंदन साज, गइ समीप गोस्वामिके ॥
किय अस्तुति महराज, कुंवरी कलाप्रवीन ज्यू ॥२०॥

अर्थ. लक्ष्मीपतिने वंदन करवासारु सज थइ, गोस्वामीनी पासे उभां रहीने कळाप्रवीण कुंवरिये आ प्रमाणे श्री द्वारकानाथनी स्तुति करी.२०

॥ गाहा ॥

कलमष दहन समूहं, पादां बुज श्री क्रतं सेवं ॥
सुर वंदितं सुरेशं, क्रत कामना पूरनं इच्छा ॥२१॥

अर्थ. जे पापना जथाने बाळनारा, लक्ष्मीजिये जेना चरणारवींदनी सेवा करेली छे, देवे जेनुं वंदन करेलुं छे एवा, देवना ईश्वर, धारेली का-

मनाने इच्छा प्रमाणे पूरण करनारा, तेने हुं नमस्कार करुंछुं. ॥२१॥

एते कुसुम कहाई, वाला इत स्वामिगोवंदहु ॥
श्री महाराज समीपे, यह महाराज बिरद ब्रजराजं ॥२२॥

अर्थ. ए वखते कुसुमावळिये कह्युं के हे वाइ आंही गोस्वामीजीने, वंदन करो, केमके श्री द्वारकानाथनी समीपे वीराजेला श्री ब्रजराजजी महाराज पण तेवुंज वीरद धारे छे.॥२२॥

॥ उत्प्रेच्छालंकार ॥ गाहा ॥

कोमल नमित शरीरं, पुनि ब्रजराज वंदियं बाला ॥
मानहु झपट मरूतें, झुकियं भूमि कुंदनं बेली ॥२३॥

अर्थ. एवां वचन सांभळी कोमळ अंगने नमावीने बाळारूप प्रवीणे पाछुं ब्रजराजजीने वंदन कर्युं, त्यारे तेनी एवी शोभा प्रगटी के जाणे पवनना झपाटाथी सोनानी वेल पृथ्वी उपर झुकी रही होय नहीं. ॥२३॥

॥ अथ छंद तोटक ॥

नमि नेमहि नारि गुसांइ लखे, ब्रजराज सुराज वधू निरखे ॥
गुरु लोगनको मन शोच लहे, रस रीझ दुहूजन भींज रहे ॥
मरजाद लिये मुख नां उचरे, मन नेन दुहूनके बात करे ॥
महाराज समीप सबे दरसे, इत दंपति नेन दुहू तरसे ॥
कुसुमावलि भेद विचार कहे, हरि पूजनको उपचार लहे ॥
कुंवरी अब मंदिर पाओ धरो, महपूजन श्री महाराज करो ॥२४॥

अर्थ. नियमथी नमीने कळाप्रवीण गोसांइजीने जुएछे, अने ब्रजराजजी पण नारियोने निरखीने जुएछे, मनमां वडील लोकोनी शंका आणेछे, ने रसना प्रथीज बन्नेजण भींजाइ रह्यांछे, परंतु मर्यादाने लीधे मोढेथी बोली

शकतां नथी, पण बेयनां मन अने आंख्यो वातो करेछे, महाराजनी सम
आवीने सर्व स्त्रियो देखावा लागियो, पण आंही तो बेय स्त्री पुरुषनां
तरफ्यां छे, त्यारे कुसुमावळीए तेनो मर्म विचारीने पोताना हाथमां भग
तनी पूजानो सामान लइने कहेवा लागी के कुंवरी, हवे मंदिरमां पधार
श्री द्वारकानाथजीनुं महापूजन करो. ॥२४॥

॥ सोरठा ॥

सुनियत ब्रह्मनि बान, कुमरी चित चंचल भई ॥
धरियत मिंतसु ध्यान, शोक हरख दुहु सम भये ॥२५

अर्थ. कुसुमावळीनुं वचन सांभळीने राजकुंवरी पोताना चित्तमां च
चळ थइने मित्रनुं ध्यान धरवा लागी, जेथी तेने शोक तथा हर्ष बन्ने स
रखां थयां. ॥२५॥

॥ गाहा ॥

दीपोत्सव देवालं, दरशन देव दंपति द्रग जुरनं ॥
पंच पचाश अभिधानं, पूर्न प्रविन सागरो लहरं॥२६॥

अर्थ. दिवाळीना उत्सवने दिवसे देवाळयमां दर्शन वखते बन्ने स्त्रि पु
रुषनां नेत्र सामसामां जोडायां, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी पंचावनम
लहेर संपूर्ण थई. ॥२६॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे देवालये कलाप्रवीन रससा
गर दरस भेदो नाम पंचपंचाशत्तमो लहरं॥ ५५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां पंचपंचाशत्त
स्तरंगः समाप्तः ॥५५॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद दोहा ॥

दंपतिये चरचा करी, देवालयमां जेह ॥
आ छप्पनमी लहरमां, वर्णन करशे तेह ॥

॥ अथ देवालये कलाप्रवीन रससागर चरचा भेद प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

व्है उदास ठाढी भई, कुंवरीसु आयस पाय ॥
बुधि विचार व्रजराज किय, सिद्ध बचन चित लाय ॥१॥

अर्थ. (देवनी पूजा करवा चालो) एवी आज्ञा पामीने राजकुंवरी उदास थइ उभां थयां. त्यारे (ले. ४७ छंद. २१ मां सिद्धे कहेलुं छेके जो कांइ चतुराइ रचशो तो वातो करवानुं बनशे ते) सिद्धनां वचन चित्तमां संभारीने व्रजराजजिये पोतानी बुद्धिमां विचार कर्यो. ॥१॥

॥ छपय ॥

कियो सोच व्रजराज, महा पूजनकों जावे ॥
तबतो सब फिरि जाय, समय एकंत न पावे ॥
अगम पंथ आदरे, जास कारन इत आये ॥
तासें भई न बात, कहा तीरथ फल पाये ॥
मन शोध शोध कीनो मतो, महापूजन कीजे मने ॥
चतुराइ ज्ञान चरचा चले, तो वरीक बतियां बने ॥२॥

अर्थ. व्रजराजजी फिकर करवा लाग्या के महापूजन करवा जाय, त्यारे तो सर्व पाछां फरी जाय, ने पछी आवा एकांत समयने पामिये नहीं, जेणे अगम पंथने आदरीने जेने कारणे आंही सुधी आव्या, ने तेनी साथे वातचित थइ नहीं. त्यारे पछी तीर्थनुं फळ शुं पाम्या, पछी मनमां शोधी शोधीने एवो मत ठराव्यो के महापूजन करवानी मना करिये, अने चतुराइथी

ज्ञान चर्चा, चलाविये, तो घडिक वातो करवानुं बनी आवे. ॥२॥

॥ सोरठा ॥

यह बिचार चित लाय, बोले तब व्रजराज ज्यू ॥
केसें करिहो जाय, महपूजन महाराजको ॥ ३ ॥

अर्थ. त्यारे चित्तमां एवो विचार लावीने व्रजराजजी महाराज बोल्या के तमे जइने श्री द्वारकानाथजीनुं महापूजन कई रीते करशो? ॥३॥

॥ छपय ॥

क्यों मह पूजन करो, भेद हमकों सु बताओ ॥
कोन बेदके मंत्र, कहा उपचार चढाओ ॥
कोन सम्रती पढो, ध्यान केसो उर धारो ॥
क्यों शरीर शुध करो, कहा अस्तुती उचारो ॥
पूरब सिंगार क्यों उत्तरे, क्यों नबीन फिर लाइये ॥
एते बिधान जानंत जो, तो हरि निकट सिधाइये ॥४॥

अर्थ. कइ रीते महापूजन करशो? तेनो भेद अमने बतावो, कया वेदना मंत्रथी शुं शुं उपचार चडावशो? कइ स्मृति भणशो? हृदयमां केवुं ध्यान धरशो? शी रीते शरीरने शुद्ध करशो? ने केवी स्तुति उच्चारशो? प्रथम धरावेला शणगार शी रीते उतरे? ने नवा शणगार शी रीते चडावाय? जो एटली विधिने जाणतां हो तो हरिनी पासे सिधावो.॥४॥

॥ सोरठा ॥

एतो सुनत उचार, कुसुम कही व्रजराज प्रति ॥
पूजन चहत कुमार, आप बताओ त्यों करे ॥ ५ ॥

अर्थ. एवां वचन सांभळीने कुसुमावळिये व्रजराजजीने कह्युं के आ राजकुंवरी पूजा करवा चहाय छे, माटे आप जेम बतावो तेम करे.॥५॥

आपें कहे अनेक, भेद कहा विनता लहे ॥
सेवा सकल विवेक, महाराज कहे त्यों करे ॥६॥

अर्थ. आपे अनेक भेदो कह्या, ते स्त्रियो शुं जाणे, माटे सेवा करवानो सर्व प्रकारनो विवेक जे महाराज कहे तेम करिये.॥६॥

॥ छपय ॥

सुनियत व्रझनि वानि, एह व्रजराज कही तित॥
जो चहंत तुम क्रिया, वाल वेठो सबही इत॥
करन सेव अधिकार, हमें संछेप सुनावे ॥
सव शरीर शुध होय, वहुरि पूजनकों जावे ॥
एती उचार सव तिय सुनत, उप व्रजराज समाज किय॥
महाराज भये मनमें मुदित, पूजनको अधिकार लिय ॥७॥

अर्थ व्रह्मसुता कुसुमावळीनी वात सांभळीने त्यां व्रजराजाजिये आ प्रमाणे कह्युं के जो तमो क्रिया करवाने चहातां होतो, सघळी स्त्रियो आंहीं वेसो, एटले अमे संक्षेपथी सेवा करवानो अधिकार संभळावियें, ते सांभळवाथी सर्वेनां शरीर शुद्ध थाय, एटले पछी महापूजा करवा जाओ, एवां वचन सांभळीने सर्व स्त्रियोये महाराजनी समीपेज सभा करी, तेथी महाराज पोताना मनमां आनंद पाम्या, अने पूजननो अधिकार कहेवा लाग्या.७

॥ अथ व्रजराजोक्त पूजाधिकार ॥ छंद सारसी ॥

जो राज मंडे, नीति खंडे, लाय दंडे दीनसें ॥ जो ग्रंथ रच्चे, मत्त कच्चे, जाय जच्चे, हीनसें ॥ जो आप धंमं, छांड क्रंमं, और भ्रंमं, धावतं॥ त्रैलोक देवा, तास सेवा, नां करे अंगी-कर्नं ॥ जो धाम तज्जे, ध्यान सज्जे, दीठ भज्जे, भामसें ॥ टीका समारे, छाप धारे, दाम प्यारे, रामसें ॥ जो धोस जो-

गं, सिद्ध लोगं, रेन भोगं, साजितं ॥ त्रैलोक देवा, तास सेवा, नां करे अंगीकृतं ॥ माया न रख्खे, सर्व भख्खे, नां परख्खे, ब्रह्मकों ॥ देहं मलीनं, आर छीनं, देख कीनं, धंमकों॥ भाषंत बेदं, मंत्र भेदं, पें निखेदं, हे व्रत्तं॥ त्रैलोक देवा, तास सेवा, नां करे अंगीक्रतं ॥ जो बास धग्गे, ताज लग्गे, लोग ठग्गे, आससें ॥ जो ब्रह्मचारी, दंड धारी, क्रोधकारी, हाससें ॥ जो आप मत्तं, सत्य ध्रत्तं, नां बदत्तं, संम्रतं ॥ त्रैलोक देवा, तास सेवा, नां करे अंगीकृतं ॥ जो जंत्र थप्पे, मंत्र जप्पे, तेज तप्पे, तंतरं ॥ जो जात्र जावे, भिन्न भावे, चिंत लावे, अंतरं ॥ एसी एनेकं, लाय टेकं, प्रेम एकं नां थितं॥ त्रैलोक देवा तास सेवा नां करे अंगीकृतं ॥ ८॥

अर्थ. जे राजा राजगादिये बेशीने राजनीतिनुं खंडन करे, अने वगर अपराधे दीन लोकोने लावीने दंडे, अने जे कवि काची मतिथी काव्य रचे, ने नीच लोको पासे जईने जाचे, अने जे ब्राह्मण पोताना धर्म तथा कर्मने छोडी दइने बीजाना धर्मरूपी भ्रांतीमां दोडी जाय, तो त्रैलोकना देव परमेश्वर तेओनी सेवा अंगीकार करे नहीं, जे वैरागी घरबार तजे, ध्यान करे, अने स्त्रियोनी तरफ नजर दोडावे, वळी तिलक सुधारीने करे, अने शरीरमां छापो धारण करे, पण रामना करतां (दाम) पैसा वहाला होय, जे जोगी दिवसे जोग साधे, अने लोकमां सिद्धाइ देखाडे, अने रात्रिये तो भोगने साधे, तो त्रैलोकना देव परमेश्वर तेओनी सेवा अंगीकार करे नहीं, जे त्यागी माया राखे नहीं, अने सर्वनुं खाय पण ईश्वरने ओळखे नहीं. देहे मलीन रहे, अहार थोडो करे, अने देखाडवाने धर्म पाळे, वळी जे ब्राह्मण, वेद भणे, मंत्रना भेद जाणे, पण जेनी वर्तणुक खराब

होय, तो त्रैलोकना देव परमेश्वर तेओनी सेवा अंगीकार करे नहीं, जे नागा दूगडां वाळे, त्यागी जेवा लागे, पण आशाथी लोकोने ठगे, अने जे ब्रह्मचारी दंड धारे, पण क्रोध करे, अने हांसी करावे, जे आचार्य, पोतानुं मत सत्य धारण करीने, स्मृतियो प्रमाणे बोले नहीं, तो त्रैलोकना देव परमेश्वर तेओनी सेवा अंगीकार करे नहीं, जे उपासक, यंत्र स्थापीने, मंत्र जपे, तेजस्वी देखाय, अने तंत्रविद्या जाणे, जे जात्राळुं, जात्राये जाय, भीन्न भाव राखे, अने मनमां जूदाइ लावे, उपर लख्या प्रमाणे एवी अनेक टेक लावे पण एक ठेकाणे जेनो प्रेमस्थिर न होय, तो त्रैलोकना देव परमेश्वर तेओनी सेवा अंगीकार करे नहीं.।८।

॥ सोरठा ॥

ऐसें मत सु अनेक, करि खंडन बरनन कियो ॥
प्रेम द्रढाये एक, वाल सुनायो व्रजपती ॥ ९ ॥

अर्थ. एवी रीते अनेक मतोनुं खंडन करीने वर्णन कर्युं, ने केवळ एक प्रेम द्रढ करवानुंज सर्व स्त्रियोंने व्रजराजजी महाराजे कही संभळाव्युं.॥९॥

॥ अथ छंद संजुक्ता ॥

व्रजराज फेर कहंतहे, तुम देव सेव चहंतहे ॥ परिहीन क्रीय सु ध्याइये.मन इच्छ सिद्धि न पाइये॥ तब फेर व्रह्मनि यों कही, उपदेश आप करे वही ॥ महाराज एह कृपा करे, तिहि रीत पूजन अदरे ॥ गुरु लोग व्रह्मनि भाखियं; सब सत्य एह सु आखियं॥ उपदेश स्वामि सु दीजिये, उन रीत पूजन कीजिये ॥१०॥

अर्थ. फरीने व्रजराजजी कहेछे के--तमो देवनी सेवा करवाने चाहो

छो, परंतु हीन क्रियाथी पूजा के ध्यान करियेतो, मननी इच्छा प्रमाणे सिद्धिनें पामिये नहि, आवां वचन सांभळीने पाछुं कुसुमावळिये एम कह्युं के, हे महाराज एटली कृपा करो ने अमने उपदेश करो, ते रीते पूजन करवानुं आदरे, ए रीते ब्रह्मपुत्रिये जे भाषण कर्युं,ते सांभळीने सर्व वडील राणियोये पण साचुं छे, एवो अनुमत आपीने कह्युं के--हे स्वामि जेवी रीते उपदेश दियो, तेवी रीते पूजन करिये. ॥१०॥

॥ दोहा ॥

पुनि ब्रमनि लागी कहन, गुरुजन बूझ ब्रतंत ॥
हे महाराज मया करो, सबही एह चहंत ॥ ११ ॥

अर्थ. वडिल राणियोनुं व्रत्तांत जाणीने पाछी कुसुमावळी कहेवा लागी के हे महाराज ? उपदेश देवानी महेरबानी करो, केमके सघळां एज चहाय छे. ॥११॥

॥ अथ छंद कंद ॥

महाराजसें ब्रह्मनी फेरि भाखंत, अन्नालक्ष बाला सबे एह राखंत ॥ क्रियाको बतावे महाराज ज्युं भेव, करे राजकूमारि वाही तरे सेव ॥ गुसांइ हसी मंद बानी उचारंत , महा सिद्ध दाई हमें मंत्र जानंत ॥ वहे मंत्रको प्रेम प्रकासितं नाम, सधे मंत्र तो कामना पूरितं साम ॥ जिही मंत्रसें राधिका श्री हरी संग, जिही मंत्र गौरी हरं धारितं गंग ॥ जिहि मंत्रसें पाये अन्नेक उद्धार; वहे मंत्र केसें सिखावे हमें नार ॥ महामा सुनी मंत्रको बाल भाखंत; महाराज एतो कहा अंत्र राखंत ॥ व्रजंराज बोले लियो जो तुमे वाद; सिखावे रहेगी निशानी लिये याद ॥ वतावे वही मंत्र तो एकही कान, सुने

नांहि जो दूसरी साधना वान ॥ परेखी व्रह्मी मेर माराजकी दीठ; कुमारी करं साय लीनी तवे नीठ॥ सवे आन बाला सु वेठी तवे दूर; महाराजसें राज कन्या सु हज्जूर॥ लगे प्रेम प्रकासके मंत्र उच्चार; न जाने सवे भेद वेठी वहे नार ॥ वही प्रेमकी उपमा क्यों कही जात, उन्हे ओहि जानेकि जाने ह-री वात ॥ १२ ॥

अर्थ. वळी पाछी कुसुमावळी महाराज पासे कहेछे के हे महाराज ? सर्व स्त्रियो एज अभिलाषा राखे छे,के जे प्रमाणे महाराजा क्रियानो भेद वतावे ते प्रमाणे राजकुंवरी सेवा करे, त्यारे धीमे वाणी उच्चारीने गुसां-ईजी महाराज हस्या, ने कहेवा लाग्या के अमे महासिद्धिदायक मंत्र जा-णिये छिये, ए मंत्रनुं प्रेमप्रकाश एवुं नाम छे, जो ते मंत्र साधे तो तेना मननी कामना श्री कृष्ण पूरे, जे मंत्रथी राधाजी श्री कृष्ण संगे रह्यां छे, ने जे मंत्रथी महादेवे अर्धांगमां गौरी तथा जटामां गंगाने धारेलां छे,ने वळी जे मंत्रथी अनेक प्राणियो उद्धार पामेला छे, ए मंत्र अमे स्त्रीजातिने केम शीखवियें, ए प्रमाणे मंत्रनो महिमा सांभळीने बाळा कहे छे, के हे महा राज? एटलो बधो अंतर शा वास्ते राखो छो ? त्यारे व्रजराजजी बोल्या के जो तमे आग्रह करोछोतो शीखवुं छुं, केमके ते निशानीने लीधे अ-मारी याद तमने रहेशे, पण ए मंत्रतो एकनेज कांने संभळावाय,आ सा-धनानी वाणीने बीजी कोइ स्त्री सांभळे नहीं, एम कहेवाथी महाराजनी रसायुक्त दृष्टिने कुसुमावळिये परखी लीधी, अने ते वखते राजकुंवरीने हाथे साहीने महाराजनी पासे लीधी,त्यारे बीजी,सघळी स्त्रियो दूर जइने बेठियो, अने महाराजनी पासे राज कन्या आवीने हजूरमां रह्यां, जेथी बन्ने जणां प्रेमप्रकाशना मंत्रो उच्चारवा लाग्यां, दूर बेठेली सर्व स्त्रियो ए भेदने

जाणती नथी, ए प्रेमनी उपमातो शी रीते कही जाय, ए वातनेतो ए बे स्त्रि पुरुषज जाणे, कींवा हरी जाणे. ॥१२॥

॥अथ गूढोक्ति अलंकार॥ गाहा॥

बढ्ढिय प्रेम प्रकाशं; दंपति मंत्र साधना मझ्झे॥
किंचित क्रत मुख हासं; भ्रुव भेदान बह्मनी लहियं॥१३॥

अर्थ. स्त्री पुरुष बन्ने मंत्र साधना करवा मंड्यां, तेमां प्रेमनो प्रकाश वधी पड्यो, एटले मोढेथी जरा मंदहास्य कर्युं, तेथी कुसुमावळिये तेनी भृकुटीना अणसाराथी भेद जाणी लीधो. ॥१३॥

मोद ब्रषा झर मंडे; प्रेम प्रबाह पूर नद बहियं॥
अमृत दधि उल्लहियं; दंपति करत श्री मुखं चर्चा॥१४॥

अर्थ. ज्यारे स्त्री पुरुष परस्पर श्रीमुखथी चर्चा करवा लाग्यां, त्यारे आनंदना वरसादनी झडी मंडाणी, प्रेमनी मोटी नदियोना प्रवाह वहेवा लाग्या, अने अमृतनो समुद्र उलटी आव्यो. ॥१४॥

॥ दोहा ॥

दुहु श्री मुख चरचा भई, न सुने कोन लहंत॥
सो बरनन आशय लिये, करि संछेप कहंत॥ १५॥

अर्थ. सागर तथा प्रवीण ए बन्नेने जे श्रीमुखथी चर्चा थइ, तेने वगर सांभळे कोण जाणी शके? पण तेओना अभिप्राय लइने तेनुं वर्णन कांइक संक्षेपे करी कहुंछुं. ॥१५॥

॥ अथ तत्र प्रथम रससागर श्री मुख चर्चा भेद॥

रूपकालंकार ॥ सोरठा ॥

सूरज किरण सनेह, मन प्रवीन चसमो मंड्यो॥
डगे न सलगे देह, लगे जगे बिरहा अगन॥ १६ ॥

अर्थ. सागर कहे छे के हे प्रवीण स्नेहरूपी सूर्यना कीरणोनी सामे मनरूपी चसमुं मांड्युं, तेथी विरहरूपी अग्नि जाग्रत थवा लाग्यो, तेथी शरीर बळेछे, तोपण डगतुं नथी. ॥१६॥

॥ अथ ऐतिह्यालंकार ॥सवैया॥

आगे मिलि पतियां बतियां पुनि, नेन बिलोकन चाह चुरानी॥ प्रेम पतंग प्रभा प्रगटी यह लाजकि बाज दबे न दुरानी ॥ या गति होय नहीं इनही जुग, बुझिये बेद कितेब कुरानी ॥ मिंत प्रवीन तबे अनुमानिये, आय मिली पहिचान पुरानी ॥ १७ ॥

अर्थ. प्रथम पत्रथी मेळाप थयो, पछी वातना संदेसाथी थयो, अने नेत्रथी जोवानी चाहना तो मनमां चोराइने रही, अर्थात गुप्त रही, अने प्रेमरूपी सूर्यनो प्रकाश जे प्रगट थयो, ते कांइ लाजरूपी छाबडीथी दबाय नहीं, अने ढंकाय पण नहीं, वेदमां के कुराननी कितावोमां जोइये तो एम जणायछे के, आवी गति आ जुगमां तो कोयनी होय नहीं, त्यारे हे प्रवीण मित्र? एवुं अनुमान थायछे, के आतो कोइ जुनी ओळखाण आवी मळी. ॥ १७ ॥

॥ विधि अलंकार ॥ सवैया ॥

पत्रमें चित्र लिखे चतुराइसें, चिंतकी सोंहे कियै अवरेखियें॥ पूरन प्रेम किधों वहरावत, पेच बनाय पटंतर पेखियें ॥ कैतब साच दुधं जळ हंस ज्यों, प्यारे प्रवीन सनेह परेखियें ॥ अम्रत व्हेंहे किधों विपको विप, बेनि भुजंग गरे धरि देखियें ॥ १८ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के, में कागळोमां मारी प्रितिनां कवितरूपी चित्र

चतुराइथी लख्यां हतां,ने विशे हुं तमने सोगन दइने कहुंछुं के मारा मननी प्रिति जोइ ल्यो, के, मारा मनमां पूर्ण प्रेमछे ? के हुं तमने भरमावुंछुं? ते कांइ जुक्ति करीने दाखलाथी जोइ ल्यो, जेम हंस दूध तथा पाणीनी परीक्षा करेछे, तेम हे प्यारां प्रवीण? मारो स्नेह ठगाइनोछे, के साचोछे, तेनी परीक्षा करो, तमारा चोटलारूपी सर्प मारा गळामां नाखीने जूओ के तेमां अमृत थायछे के झेरनुं झेर रहेछे, मतलब के मने कडवां वचन कही जुओ के तेथी कडवाशनी कडवाश रहेछे,के, मीठाश थायछे.॥१८॥

॥ अथ संन्भावनालंकार ॥ सवैया ॥

कोन दिनां कहेगो कोउ पंथिक, मिंतके आवन मंगलकी॥
देखहु कोन दिनां अखियां फिर, प्रेमके न्भार झुके पलकी ॥
कोन दिनां मुसकायनकी, बतियां रद रेख लखों झलकी ॥
एहो प्रबीन बजेगि कहीदिन, काननमें धुनि पायलकी॥१९॥

अर्थ. सागर कहेछे के मारा मनमां सदाय एवी इच्छा रहेछे के, कये दिवसे कोइएक पंथी आवीने मित्रना आववानी मंगळरूप वधामणी कहेशे! कये दिवसे फरीने पाछी प्रेमना बोजाथी झुकेली पांपणवाळी आंख्योने जोशुं? अने कये दिवसे मंदहास्यथी मरकते मुखे वातो करतां चळकता दांतनी रेखाओनी झलकने जोशुं? अरेरे हे प्रवीण? कये दिवसे आ कानमां पगना झम झमतां झांझरना शब्दो वागशे? ॥१९॥

॥ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

रखबी इक याद इती अरजी तुम, जानतहो विरहा सखबी॥
सख बीत गयो तो भयोहे कहा,शिर लाय रखेगे हमें दखबी॥
दख बीसरहे न कबेहि हमें,तिहि कारन फेर पती लखबी ॥
लखबी न बने पतियांज्यु किहि विध,मिंत प्रबीन मया रख-

वी ॥ २० ॥

अर्थ. हे प्रवीण तमो (सखि) विरहाग्निनी खुबीने जाणोछो, माटे एक आ आटली अरजी याद राखवी के सुख विति गयुं तो शुं थयुं, अमे तो दुःखनी लाय माथे चडावी राखशुं, अमने तो क्यारेय दुःख विसरशे नहीं ने कारणे फरी पत्रिका लखवी, अने कोइ प्रकारेथी पत्रिका लखवानुं जो न बने तोपण हे मित्र प्रवीण? माया तो राखवीज. ॥२०॥

× ॥ दोहा ॥

रखवी अरजी याद यह, लखवी पाती मिंत ॥
जो लखवी न बने कहु, मेर न टारहु चिंत ॥ २१ ॥

अर्थ. हे मित्र आ अरजी याद राखीने पत्रिका लखवी. ने जो कोइ उपायथी पत्रिका लखवानुं न बने तोय चित्तमांथी महेरबानी टाळवी नहीं. ॥२१॥

॥ अथ पुनि तत्र कलाप्रवीन श्रीमुख चर्चा भेद ॥

॥ जातिस्वभाव अलंकार सवैया ॥

भागमें आग लगीहे तिही दिन, नेवन नीर चढ्यो मगरी ॥
ता दिनसें इन नेनसें सब, शुन्य निहारतहों नगरी ॥
कोटि कला करिये मरिये जरि, बात कहा सुधरे बगरी ॥
सागर मिंत कहा कहिये, तुम जानतहो चितकी सगरी ॥२२॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के भाग्यमां आग लागी ते दिवसथीज नेत्रानां पाणी मोभे चड्यां ने ते दिवसथीज आ नेत्रोथी सघळा नगरने उजड जोइये छिये. करोडो उपाय करिये, करोडो युक्तिओ करिये, के बळी मरिये, तो पण बगडेली वात शुं सुधरे? माटे हे मित्र सागर शुं कहिये, चितनी सघळी वातने तो तमो जाणोछो. ॥२२॥

॥ दृष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

सुर उदे तो कहाहे चकोरकों, चंद प्रकाश कहा चकवाकों॥
फूले बसंत तो चातुककों कह, बारकि धार कहा भ्रमराकों ॥
सिंधु भ्रयों तो पतंगनकों कह, दीपक जोत कहाहे झखाकों॥
सागर योंहि जरे सिगरे सुख, चाहत रावरि प्रेम प्रभाकों॥२३॥

अर्थ. सूर्य उगे तो चकोरने शुं? चंद्रमानो प्रकाश थाय,तेमां चकवाने शुं? वसंत रुतु खीली आवे तो बपैयाने शुं? वर्षादनी धारा पडे तेमां भमराने शुं? समूद्र भर्योंछे तो पतंगने शुं? दीवानी जोत प्रकाशे ते माछलाने शा कामनी? तेमज हे मित्र सागर! बळ्यां सघळा सुख, हुतो केवळ आपना प्रेमना प्रकाशनेज चाहुंछुं. ॥२३॥

॥ अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

पियरे परि जातहे गात सबे, उझकी नित आवतहे हियरे ॥
हियरे भ्ररि सास निसास भ्रई, तलफे थलकी सफरी जियरे॥
जियरे धरि धीर कहा रहिये, अशरीर सु तीर हने तियरे ॥ तियरे असुवान झरी उलहे, फिर कोन घरी मिलिहो पियरे ॥२४॥

अर्थ. (तम विना) मारां सघळां गात्र पीळां पडी जायछे, ने हमेशां छाती धडकी आवेछे, हृदयमां उसासा नीसासा भराइ आववाथी पाणी बाहेर स्थळमां पडेला माछलानो जीव तलफेछे तेवी हुं थाउंछुं, जीवमां धीरजता धरीने शी रीते रहिये, मने स्त्री जातिने अथात् अबळाने कामदेव बाण मारेछे, त्यारे आंसुडांनी झडी उलटी आवेछे, माटे हे पियु? फरी पाछा कइ घडिये मळशो? ॥२४॥

॥ विरोधाभास आक्षेपालंकार ॥सवैया ॥

सेवो महा दुखसागर ज्यु, उत शुन्य भ्रटा अटवी सु बसेवो॥

कैवो कहा तुम जानतहो, निस वासर अंग अनंग सुकेवो ॥ रेवो सदा धरि ध्यान हिये, अखियां असु आन उसास भरेवो॥ खेवो नहीं विन कंत बिरी, अहो अंत बनेगो हलाहल सेवो ॥२५॥

अर्थ. हे सागर मोटां दुःखो सहेवां, ने त्यां उजड अटालिकारूप जंगलमां वसिये छिये, एमां कहेवुं शुं; तमे जाणोछो के रातदिवस कामदेवनी पीडाने लीधे अंगे सुकावुं, ने हृदयमां ध्यान धरीने निरंतर रहेवुं, आंख्योमां आंसु आणीने छातीमांथी उसासा निसासा भरवा, अने कंथ विना पाननी बीडी खावानुं पण नहीं, अरेरे ते ठेकाणे अंते हळाहळ झेर खावानुं बनशे. ॥२५॥

॥ दोहा ॥

नेनां चाह लगी सु नित; उर परसनकी आस ॥
मिंत भले आये इतें; यह छिन मिटी उदास ॥२६॥

अर्थ. हमेशां अमारां नेत्रोने निरखवानी चाहना हती, अने हृदयमां परसवानी आशा हती माटे हे मित्र! आंही भले आव्या, केमके आ क्षणे तो उदासी मटी, ॥२६॥

॥ अथ मिश्रित पद लाटानुप्रास अलंकार ॥ कवित ॥

करी करी कोउ आस, धरी करी सो न पास; झरी झरी आंसु सास; व्हे उदास रोयगो ॥ उर वढी आवे मेन; पलहू न परे चेन; नेनहीं न नींद, सुख सेनहीं न सोयगो ॥ धारी धारी घट ध्यान; घट घटजात जोति; रट रट मिंत चिंत; सदा पंथ जोयगो ॥ विविध विचार ताको; सागर न पावे पार जाहिको प्रकाश प्रेम ताहि, एसो होयगो ॥२७॥

अर्थ. कोइ मित्र पोताना मित्रने मळवानी आशा करी करीने, ते पोतानी पासे नथी एम धारी करीने, आंसुने उस्वास भरी भरीने उदास थइने रोशे, तेनी छातीमां काम भराइ आवशे, अने तेथी पळमात्र सुख पडशे नहीं, अने आंखमां निद्रा आवशे नहीं, तेथी सज्यामां सुखे करीने सुशे नहीं, तेना शरीरनुं ध्यान धरी धरीने पोताना शरीरनुं तेज घटतुं जशे, अने मनमां मित्रने रटी रटीने निरंतर वाट जोशे, हे सागर? तेना तरेह तरेहना विचारनो कोइ पार पामशे नहीं, जेने प्रेमनो प्रकाश हशे,तेने एवुं थाशे. ॥२७॥

॥ गुढोक्ती अलंकार ॥ दोहा ॥

हिय भूषन हियतें रहे; शिर भूषन सु निहारि ॥
कटि भूषन केसें कहों, बारहि बार पुकारि ॥ २८ ॥

अर्थ. तमारी वाट जोइ जोइने हैयाथी हार पामि रह्यां छिये, ते वारे वारे जीभे पोकारीने शुं कहिये, एमांना शब्दोना पर्याय निचे प्रमाणे छे, शिरभूषण सेंथो, एटले मांग, अर्थात माग, मार्ग,अथवा वाट, हैयानुं भूषण हार, अर्थात् हारी जवुं ते, केडना भूषणनुं नाम कटिमेखळा, तेनुं बीजुं नाम रसना छे, तेमज रसना एवुं जीभनुं नाम पणछे. ॥२८॥

॥ दोहा ॥

सागर ओर प्रवीन ज्यूं; श्री मुख चरचा कीन ॥
सोय वात संच्छेप किय; उन मन दशा सु लीन॥२९॥

अर्थ. सागर तथा प्रवीणे श्री मुखथी जे चर्चा करी, तेओना चित्तनी दशा उपरथी जाणी लइने ते शंक्षेपथी वर्णन करी. ॥२९॥

॥ गाहा॥

दीपोत्सव उत्साहं, देवालय दंपती चरचा ॥

षटपंचाश अभिधानं, पूर्न प्रविन सागरो लहरं ॥३०॥

अर्थ. दीवालीना उत्सवने दिवसे देवालयमां स्त्री पुरुषे जे परस्पर चर्चा करी. ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी छप्पनमी लेहेर संपूर्ण थई.॥३०॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे दीपोत्सवे दंपति श्रीमुख चर्चा भेदो नाम षटपंचाशत्तमो लहरं ॥ ५६ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां षट्पंचाशत्तम स्तरंगः समाप्तः ॥५६॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद वसंततिलका ॥

कीधी परस्पर तणी छबि चीतरीने, लैने स्वदेश विचर्या तँहिथी फरीने ॥
अन्योन्कि भेद रचि पत्र पछी लख्याछे, सत्तावनी लहरमां शुभ ते कथाछे॥

॥अथ कलाप्रवीन मंत्रोपदेश श्रीपति पूजन भेद॥

प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

प्रेम प्रवीन प्रकार, शीखत बेर भई सु कह ॥
सुनत तियन उच्चार, कुसमावलि कुमरी कहे ॥ १ ॥

अर्थ. कलाप्रवीणने प्रेमप्रकाश शीखतां आटली बधी वार केम लागी, एवां बीजी स्त्रियोनां वचन सांभळीने कुसुमावळी राजकन्या प्रत्ये कहेछे.१

॥ छंद मुक्तदाम ॥

कहे कुसुमावलि राजकुमार, लगे इतनी कह सीखत बार॥ त्रियो अतिउग्र कलापरबीन, यहे सब अच्छर मिश्रित भीन॥ यहो महाराज सबे श्रुति सोध, सुने वह जानहिगो यह बोध ॥ कहे डर नांहि रहे यह बान , लखे इत लाउ सु कलमदान ॥ सुने कुसुमावलि एह उचार; लियो कर पत्र सु

कल्लम धार ॥ उठे उत जाय समीप सु कीन;लही कलम कर प्रेम प्रवीन ॥ लिखे महराज वदे मनुहार; करी तसबीर वही अनुसार ॥ लहे महाराज तबे कर पत्र, कहे यह शुद्ध लिखे हम अत्र॥ शिखा नख लों त्रिय हेर अनूप; कियो चितरामन बाल सरूप ; इके इक देखत ले कर न्हाउ ॥ बने तहकीक उभेहि लखाउ ॥ दुहूजन रीझत आप सयान; वधू इक ओर कही तब बान ॥ उठो महपूजन होत श्रवार;इते महि नेन दुहु जल धार॥ भई तनकी गति नां कहिजात; दुहू मनके मनमें मुरझात ॥ श्रहा तन चिन्ह छुपावन काज ; उठी कहि मेर रखे महाराज॥ कहे महाराज बिलोकित बंक, लिखे बिधिना उलटे दुहु अंक ॥ २ ॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे हे बाइसाहेब ? मंत्र शीखतां आटलीबधी वार केम लागे छे, त्यारे कळाप्रवीणे प्रत्युत्तर आप्यो के, आ सघळा अक्षरो वेवडात्रेवडा जोडायेला अने जूदा जूदाछे, एटलुंज,नहीं पण महाराजे सर्व वेदोने शोधीने तेनुं ज्ञान आ मंत्रोना वर्णोमां ग्रहण करी राखेलुं छे, माटे जे सांभळशे, तेज आ बोधने जाणशे, वळी जे वाणी तेओ कहे छे, ते मारा हृदयमां रहेती नथी, वास्ते आंही कलमदान तथा कागळ लावो तो लखी लइये, एवां वचन सांभळीने कुसुमावळिये पोताना हाथमां कागळ तथा कलम लीधां, अने उठी त्यां जइने कागळ तथा साइ कलम प्रवीणनी पासे धर्यां, एटले ते लइ कळाप्रवीण प्रेमथी कलम ग्रहण करीने महाराजने नमस्कार करीने नम्रतापूर्वक लखवा लाग्यां, तेणे महाराजना अणसारा प्रमाणे तसवीर करी, त्यारे महाराजे पण हाथमां कागळ लइने कह्युं के आमां अमे शुद्ध मंत्र लखिये, एम कहीने शीखाथी

ते नग्न पर्यंत ते अनुपम स्त्रीने जोइने वाळारूप प्रवीणनुं चित्रामण कर्युं. पछी एक बीजाना हाथमांथी कागळ लइने मित्रना भावने जोवा लाग्यां, बेयनां काढेलां चित्रोनुं लखाण बरोबर बन्युंछे, तेथी शाणां अचंबामां पड्यां, त्यारे एक बीजी राणिये आवां वचन कह्यां के, हवे उठो महापूजन करवाने वार थाय छे, एटलामां तो बेयनी आंख्योमांथी जळनी धार थवा लागी, अने शरीरनी तो एवी हालत थइ गइ के ते कही शकाय नहीं, बेय मनमांने मनमां मुंझाय छे, पछी अंगमां प्रगटेलां विरहनां चिन्ह छुपाववा माटे उठीने प्रवीण कहेवा लाग्यां के, हे महाराज ? हवे महेरबानी राखजो, त्यारे वांकी नजरथी जोइने महाराज कहेछे के आपणा बेयना कपाळमां विधाताये अवळा आंकडा लखेलाछे. बीजो अर्थ एवोछे के आम लख्युंछे, ते रीतथी बे अक्षर उलटा थई जाय नहीं हो ? ॥२॥

॥ गाहा ॥

श्रीमहाराज समीपे; किय प्रवीन मंद्र परवेशं ॥
विय महियं दिय पिठं; विरहा कीन गोपनं वाला ॥ ३॥

अर्थ. पछी महाराज पासेथी द्वारकानाथ पासे जवा प्रवीणे मंदिरमां प्रवेश कर्यो, एटलुंज नहीं, पण बीजी सखियोने पीठ दइने बाळाये विरहनुं (गोपन)छुपाववानुं कर्युं. ॥३॥

कुसुमावलि उपहारं, सहि लहि गइ देव सामीपं ॥
जग्गिय विरहा ज्वालं; लग्गिय नाथ पूज परवीनं ॥४॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळी पण पोताना हाथमां पूजानो सामान लइने तेनी साथेज देवनी पासे गयां, एटले जेने विरहनी झाळो लागीछे, एवां प्रवीण द्वारकानाथनुं पूजन करवा लाग्यां. ॥४॥

॥ अथ कलाप्रवीन श्रीपति पूजन भेद छंद हनुफाल ॥

महाराज पूज लगंत, व्रजराज संग मगंत ॥ जमुनां जलं शिर धार, वह मिंत मग्गे नार ॥ श्रियनाथ धारित बास, रससागरं धरि आस ॥ श्रीखंड केसर साज, मिलबो मगे महाराज ॥ सिंगार भूषन लाय, वह प्रीय देखन चाय ॥ सोंधो लगावत गात, मंगे सुने उन बात ॥ पुनि अग्र धारत धूप, मागंत मिंत सरूप ॥ व्रंदा कुसुम धरि माल, वह ईठ मग्गे बाल ॥ पुनि आरती उतरंत, उनकी छबि सुमरंत ॥ श्री श्याम बंदन कीन, मंग्यो यही परवीन ॥ महराज दीजे एह ॥ उन हम अखंडित नेह ॥५॥

अर्थ. द्वारकानाथनी पूजा करवा लागतांज व्रजराजजीना संगने मागे छे, विष्णुने माथे जमुनांनुं जळ चडावीने स्त्री ते मित्रने मागे छे, लक्ष्मीना पति भगवानने वस्त्र वाघा धरावीने रससागरनी आशा धारे छे, चंदन तथा केसर चर्चिने महाराजने मळवानुं चाहे छे, शणगार तथा घरेणां धरावीने ते पोताना प्रियपतिने देखवानुं चहाय छे, (सोंधा) चुवा विगरे सुगंधि द्रव्यो भगवानना अंगमां लगावतां एनी वातो सांभळवानुं मागे छे, पछी ठाकोरजीनी पासे अगरवत्तीनो धूप धरतां मित्रना स्वरूपने मागे छे, तुलसी तथा फूलनी माळा पहेरावीने वळी ते पोताना इष्ट मित्रने मागे छे, पछी आरती उतारतां एनी छबिने समरे छे, पछी लक्ष्मी समेत लक्ष्मीना पतिने नमस्कार करीने प्रवीणे आ प्रमाणे माग्युं, के हे महाराज? एज आपो के एमने ने मारे अखंडित स्नेह रहे. ॥५॥

॥ सोरठा ॥

पूजन कियो प्रवीन, करि वंदन अस्तुति करी ॥
एह उराहन दीन, महाराज सन्मुख खरी ॥६॥

अर्थ. प्रवीणे पूजा कर्या पछी नमस्कार करीने स्तुति करी. अने द्वारकानाथ सामे उभां रहीने आ प्रमाणे ठबको दीधो. ॥६॥

॥ ऐतीह्यालंकार स्तुति भेद ॥ दोहा ॥

गज गनिका अहल्या गिरध, चंद्रहास ध्रुव बार ॥
पंडुत्रिया प्रहलाद ज्यौं, सुनिये परम पुकार ॥७॥

अर्थ. हाथी, पिंगळावेश्या, गौतमनी स्त्री अहल्या, जटायुगीध, राजा चंद्रहास, राजानो बाळक ध्रुव, पांडवोनी स्त्री द्रोपदी, अने प्रहलादजी, एओना पोकारनी पेठे हे परमात्मा? अमारो पोकार सांभळो. ॥७॥

॥ उराहनो ऐतिह्यालंकार ॥ सवैया ॥

आगे भयो चंद्रहास महीपति, क्यों विषकी विषया वह पायो॥ क्षीर सरोवरमें गजराज, अरी हकरी हरि धाय बचायो ॥ आसुर एकहि राम उचारत, राम विचार विमान चढायो॥ सागर मिंत विजोग हमें यह, क्यों न वकार सकार बनायो ॥८॥

अर्थ. आगळ चंद्रहास राजा थइ गयो, ते (विष) झेरने बदले विषया नामनी कामदारनी कन्याने केम पाम्यो, हे हरी? तमे दोडीने क्षीरसमुद्रना कांठाना सरोवरमां तेना शत्रुझुडने हत करीने अर्थात मारीने हाथीने केम बचाव्यो? एक राक्षसे मरती वखते रामनामनो उच्चार कर्यो, तेने रामरूपे तमे विचारिने वैमानमां केम चडाव्यो? हे प्रभु? अमारा ने रससागरना आ वियोगना वकारनो, सकार केम न बनाव्यो? अर्थात वियोग मटाडीने संजोग केम न कर्यो. ॥८॥

॥ सवैया ॥

मीन हुतीनकि वेर भये तुम, कोल धरा किय आसुर

वीरुध ॥ दाव धरं द्विजकों, प्रहलादन, जच्छ नये, हिरण्याख्य कियो जुध॥ राम कपी जन सीत विभिषन, देवन कच्छ, दुजेश भये शुध॥ पांडव गोप रु रुक्मनि कृष्नहि,वेर हमारि भयेहो कहा वुध ॥ ९ ॥

अर्थ. ब्रह्माना दुःखनी वेळाये तो तमे मच्छरूप थया,अने पृथ्वीने वास्ते वाराहरूप धरीने हिरणाक्ष असुर साथे विरोध कर्यो, अने ब्राह्मणोने वास्ते तमे फरशी धरनार थया, अने प्रहलादने वास्ते (हर्यक्ष) सिंहरूपे थइने हिरण्यकश्यपु नामना असुर साथे युद्ध कर्युं, वानरजन,सीता, अने विभीषणने वास्ते तमे रामरूपे थया, पांडवो, गोप अने रुकमणीने वास्ते कृष्णरूपे थया, अने अमारी वेळाये बुद्धरूपे थइने केम बेठाछो? ॥९॥

॥ सोरठा ॥

यहे उराहन दीन, श्रीपति प्रति सन्मुख खरे ॥
वंदित फिरी प्रबीन, प्रनति कीन ब्रजराज ज्यु ॥ १० ॥

अर्थ. सामे उभां रहीने लक्ष्मीपतिने एवो ठबको दीधो, अने वंदन करीने पाछां फर्यां, त्यारे प्रवीणे ब्रजराजजी महाराजने प्रणाम कर्यां. ॥१०॥

॥ छंद निशिपालिका ॥

बार निकसीय परबीन हरि द्वारतें, राजब्रज वंद नय प्रेम न्नरिकें चितें ॥ आप मुख उच्चरिय मंत्र तुमनें दयो, तास परन्नाव मन काज सवही भयो ॥ आप दिन काहु अनुकंप उर धारियें, धाम हम आवनकु चिंत सु विचारियें॥ एह अरजी हमकु नाथ सुनि लीजियें, काहु दिन खामखकु आय दरसीजियें ॥ प्रेम कर पत्र महाराज लिखवे सदा, वंचतहु चिंत हम होय नितही मुदा ॥ जात अवमोच यह मंग उन

आयसा, चाल पलटी तबहि दोय बदली दशा ॥ जूथ बि- नता निजहि आय अवमोचनं, थान निज राजब्रज आय कत शोचनं ॥ दोउ बिरहा बढहि नेन भरि नीरहे, व्यूढ भरि स्वास मन धारत न धीर हे ॥ नेन तजि नींद निश दोउ तलफे घने, फेर मिलिहे कबहु सो समय क्यों बने ॥ चिंत उनको सु गति ओहि मनमें लहे, जाहि नहि बीति बह नां लहतहे कहे ॥ बीछुरत मिंत जुगही लखित बाउरे, स्रोत जन संगमित शोक बन पाउरे ॥ ११ ॥

अर्थ. हरिना द्वारमांथी प्रवीण बाहेर नीकळ्यां, अने तेणे नम्रता तथा प्रेम करीने भरपूर थयेला चित्तथी व्रजराजजीने वंदन कर्युं. पछी पोताना मुखथी कहेवा लाग्यां के हे कृपानाथ? तमे मंत्रनो उपदेश दीधो, तेना प्र- तापथी मनना सघळां कार्य थयां, हवे आप कोक दिवसे दिलमां दया धरीने अमारी राजधानी तरफ आववानुं मनमां विचारजो, हे नाथ? एटली आ मारी अरजी सांभळीने कोइ दिवसे खामुखां आवीने दर्शन देजो, हे महाराज निरंतर तमारा हाथथी प्रेमना पत्रो लखता रहेजो, जे वांचवाथी हमेशां अमारा चित्तमां हर्ष उपजे, हवे तो अमे उतारे जैए छिये, एवी रीते महाराजनी आज्ञा मागीने बाळारूप कळाप्रवीण पाछां फरीने चाल्यां, त्यारे महाराज तथा तेनी वेयनी दशा बदलाइ गइ, स्त्रियोना जथ्थासमेत सहित पोताने उतारे आव्यां, अने व्रजराजजी महाराज पण पोताने स्था- नके आवीने शोक करवा लाग्या, वेयजणांना मनमां विरह दुःख वधी पड- वाथी नेत्रोमां आंसुनां पाणी भरावा लाग्यां, एटलुंज नहीं, पण विस्तीर्ण श्वास भराइ आववाथी हृदयमां धीरज धरतां नथी, आंखथी नीद्रा तजीने रात्रमां बन्ने वेयजणां अतिशे तलफेछे, हवे फरीने पाछां क्यारे मळशुं,

अने ते मळवानो समय केम बने, एवा विचार करेछे, एमना चित्तनी गतिने तो एज मनमां जाणे, जेने वीतेलुं नथी, ते कांइ जाणे नहीं, बेय मित्र जूदां पडतांज दिवानां सरखां देखावा लाग्यां, गोमती नदीने कांठे घणां माणसो साथे मळेलां छे,तोपण जाणेछे के शोकना वनने पाम्यां छिये.॥११॥

॥ दोहा ॥

दिन दश पांच रहे बहुरि, आप आपके थान॥
दंपति मिलन न फिर भयो, चरचा चली पयान ॥१२॥

अर्थ. वळी पांच दश दिवस पोत पोताने स्थानके रह्यां, परंतु स्त्री पुरुषने फरी पाछुं मळवानुं बन्युं नहीं, अने प्रयाण करवानी वातो चालवा लागी. ॥१२॥

॥ छंद समानिका ॥

गोंनकी उपाहितं, शोच दंपती चितं ॥ कोनपें कहे वहे, आपही सबे सहे ॥ मित्र चित्र जो करे; आप पानिमें धरे ॥ प्रेम फेर व्है नयो; कूच संघको भयो ॥ बिछुरंत बालिका; ब्रेह बाढि ज्वालिका ॥ स्वामिगो वही दशा, अंसुवां बढे स्वसा ॥ दोउ तल्फना करी, सो सही हरी करी ॥ सागरं समानहो, तीरथं दूजंद हो ॥ बाज बाहनं किये, आप गो पथं लिये ॥ गोन की दिनं दिनं, अंतरं दुहू जनं ॥ आप नग्र पुग्गियं; भीतरं प्रवेशियं ॥ १३ ॥

अर्थ. चालवानो उद्योग थवाथी बन्ने स्त्री पुरुपना मनमां शोक उपज्यो, पण तेओ कोनी पासे कहे? माटे पोतेज सघळुं सहन करेछे, मित्रनां जे परस्पर चित्र करेलां छे, तेने बेय पोताना हाथमांज राखेछे, फरीने नवो प्रेम थयो, पण एटलीवारमां तो संघने पण कुच करीने चालवानुं थयुं,

त्यांथी जूदां पडतांज वाळारूप प्रवीणने विरहना अग्निनी झाळो वधी पडी, गोस्वामी महाराजनी पण एवीज हालत थइ जवाथी तेने आंसु अने श्वास वधी गयो, पछी तलफीने वेय कहेवा लाग्यां के हे हरी तमे जे कर्युं ते सर्व; तमे समुद्र सरखा गंभीर अने तीर्थना चंद्ररूपी छो, एम कही सागरे घोडा उपर स्वारी करी; ने पोते पोतानी पृथ्वी तरफनो मार्ग लीधो, दिवसे दिवसे चालवाथी वेय जणांने घणो अंतर पडी गयो, त्यारे केटलेक दिवसे पोते पोताना शहेरमां पहोची गयां, अने राजद्वारमां प्रवेश कर्यो. ॥१३॥

॥ छपय ॥

सागर कलाप्रवीन, दोउ निज पट्टन पुग्गिय ॥
गुपत प्रगट कर भेद, निशा दिन पोर प्रवेशिय ॥
व्याधि मिटन उत्साह, उते तीरथ उत्सव जन॥
सविता उभय नरेश, मोद प्रगटित लोगन मन ॥
दंपति सु चिंत विरहा दुखित, कृश अति भये शरीर तब॥
छिन छिन सु याद इक इक करत, धरत नहीं मन धीर कब ॥ १४ ॥

अर्थ. सागर तथा कळाप्रवीण ए वेय पोतपोताना नगरमां पहोच्यां, पछी सागरे गुप्तरीते करीने, अने प्रवीणे प्रगटरीते करीने, सागरे रातनी वखते, अने प्रवीणे दिवसनी वखते, पोते पोतानी पोळमां प्रवेश कर्यो, लोको जाणता हता के सागरने कांइक रोगछे, तेथी हाल देखाता नथी. ते व्याधी मटवानो उत्साह तेह नगरमां, अने पणे मनछापुरीमां प्रवीण जात्रा करी आव्यां, तेनो उत्साह लोकोने थयो, वेयना पिता वेय राजाओने तथा लोकोने मनमां हर्ष थयो, त्यारे चित्तमां विरहनुं दुःख पेदा थवाथी वेय स्त्री पुरु-

षनां शरीर अति दुबळां थइ गयां, पण क्षणे क्षणे एक एकने याद करेछे, अने मनमां क्यारेयपण धीरज धरतां नथी. ॥१४॥

॥ दोहा ॥

इक इक मन शोचत रहत, नित नित बिरह बढंत ॥
दुजि प्रवीन सागर सु मित, चर्चित प्रति एकंत ॥१५॥

अर्थ. एक एकने वास्ते मनमां शोक करतां रहेछे, अने बेयने नित नित विरह वधेछे, जेथी प्रवीण ब्रह्मसुता कुसुमावळी साथे, अने सागर पोताना मित्रो साथे, एकांतमां चर्चा चलावेछे. ॥१५॥

अन्योक्ती आपें दशा, बरनी श्रीमुख दोय ॥
पुनि पठई निज मिंत प्रति, कहुं उदार अब सोय ॥१६॥

अर्थ. सागर तथा प्रवीण ए बन्ने जणांये पोताना मोढाथी बीजां पक्षी विगेरेनी उक्ति लावीने पोतानी दशाने वर्णवी, तथा पोताना मित्र तरफ परस्पर जे पत्रो लखी मोकल्या, तेनां उदाहरण हवे कहियें छियें. ॥१६॥

॥ तत्र कलाप्रवीन अन्योक्ति भेद ॥ प्रथम कोकिला अन्योक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

केते कहे पकरो पकरो इन, अंजन यातें घनो उतरेगो ॥
केते कहे इनके द्रग छेदहु, भंजत गुंजको पुंज झरेगो ॥
चातक कीर मयूर मरालन, सागर तेसे कहा गुजरेगो ॥
कुरकट ओर उलूकको राजहे, कोनपें जाय पुकार करेगो ॥१७॥

अर्थ. कोयलने जोइने केटलाक कहेछे के एने पकडो पकडो केमके तेनो काळो रंगछे, माटे तेमांथी घणुंक आंजण उतरशे; केटलाक कहेछे के एनी आंख्योने छेदो, केमके ते आंख्योने भागवाथी चणोठियोना ढगला झरशे, हे सागर ज्यां बपैया, पोपट, मोर तथा हंसो नथी. तेवे स्थळे

तेना उपर शुं गुजरशे, ते कही शकातुं नथी, वळी कूकडा तथा घुडोनुं गाजरछे, माटे कोना पासे जइने ते कोयल पोकार करशे, मतलब के गारी आसपास माराथी विरुद्ध माणसोछे, माटे मारे माथे हजी केवी दशा वीतशे, ते कहेवातुं नथी. ॥१७॥

॥ कीरअन्योक्ति ॥ सवैया ॥

कीर समीरकि लेर लगी सो, करीरके कंटकमें अटकानो ॥ पंख समार निवारत डार, उड्यो न बने अतिही अकुलानो ॥ नारिंग, बिंब, अनार, मिले कहां, यों कहिकें मनमें मुरझानो ॥ उंच उसास लिये अखियां भरि, सागर यातें चलो जिय जानो ॥ १८ ॥

अर्थ. पोपटने पवननी लहेरनो झपाटो वागवाथी ते केरडाना कांटामां अटकी भराइ गयो, तेथी पांखो समारी कांटावाळी डाळ्यो आघी पाछी करीने उडवानुं बननुं नथी. तेथी अतिशे अकळाइ गयो, अरे आंही नारंगी, (बिंब), घोलुं तथा दाडम क्यांथी मळे, एवां एवां वचनो कहीने ते पोताना मनमां मुंझाइ गयो, अने उंचुं मोढुं करीने उसासा निसासा लेवा, ते आंख्योमांथी आंसु भरवां, तेना करतां हे सागर तेनो जीव जाय ते सारुं. ॥१८॥

॥पतंग अन्योक्ति ॥कवित॥

तो पतंगको दीपदान, नेहकी, अखंड व्रत्ति, पूरन प्रकाश ख्याल, दीपक धर्योरहे ॥ पोंचत न पास नेक, आसहु न छो- री जाय, विविध विलासहूको ध्यानही धर्योरहे ॥ चाहतहे अंग मानि अंगमें मिलायो रंग, बनेहे न संग यातें, निकट फिर्योरहे ॥ जानहूको जान ताको जानत न सागर ज्यु,

प्रानहे पतंग सोतो जीवत जर्योरहे ॥ १९ ॥

अर्थ. तमारा पगरूपी दीवीमां, मारा स्नेहरूपी दीवेल, अने तेमां मारा मननी अखंड वृत्तिरूपी दीवटथी प्रेमना प्रकाशरूपी जोतनो दीवो बळतो रहे छे, मारो प्राणरूपी पतंग तेनी पासे जराये पहोंची शकतो नथी, अने आशा पण छोडी शकातो नथी, तमारी साथे तरेह तरेहना विलास करवानुं ध्यान धरतोज रहेछे, अने तमारा अंगप्रत्ये पोताना अंगना रंगने मेळववाने चाहे छे, अने संग बनतो नथी, तेथी आसपास फरतो रहे छे, जीवना जोखमने तो हे सागर? ते जाणतो नथी, अने एतो जीवतांसुधी बळतोज रहेछे. ॥१९॥

॥ अथ सागरोक्त हंस अन्योक्ति ॥सवैया॥

पंक जिहां मनि मोतिनके, तिनकी गति सो तितही गहेबी॥
भालमें छिल्लर ताल प्रवीन, तबें गुजरान तसी लहेबी ॥
मोनहि मोन मराल रहो, कगसें बगसें न कछू कहेबी ॥
मानसरोवरसें बिछुरे; किरतार करेसो सबे सहेबी ॥२०॥

अर्थ. रससागर पोतानी प्रिया प्रवीणरूपी हंसने कहेछे के हे प्रवीण-हंस? ज्यां मणिने मोतीनो कादव छे, एवा मानसरोवरमां हैये, त्यारे त्यांनी रीत त्यां राखवी, पण ज्यारे नशीबमां छीछरा तळावमां रहेवानुं लख्युं, त्यारे त्यां तेवीज रीते गुजरान करी लेवुं, हवे तो चुपाचुप थइने रहो, अने कागडा जेवा, के बगला जेवाने कांइ वात कहेवी नहीं. ज्यारे मानसरोवर-थी वियोग पड्यो. त्यारे जगतकर्त्ता जेवी स्थिति करे, ते बधी सहन करवी. ॥२०॥

॥ अथ नट अन्योक्ति ॥ सवैया ॥

डोर प्रवीन चढयो नटवा, उन घातकि बात निघात करी॥

वंश गयो पें कुलांट वनीन, तवेन वदों न वदों उचरी॥ देखनहार पुकार कहे, अहो खेल न हार धरी गुजरी ॥ फेर सबे बिधि साध रहो, अवतो यह वाजि संकेल धरी ॥२१॥

अर्थ. हे प्रवीण ? एक नट दोर उपर चड्यो, तेणे पोताना जीवनी ज्यान थाय एवी अथाग वात करी, अर्थात एवो खेल कर्यो, वांसडासुधी गयो, पण गुलांट खावानुं वन्युं नहीं, त्यारे नीचे उभेला नटे नवदुं नवदुं एवी वाणी कही, मतलब के तारी चतुराइ हुं कबुळ करतो नथी, करतो नथी, एम कयुं, पण तमासो जोनार लोको पोकारीने कहेवा लाग्या के--ते खेलनारने तो मोतनी घडी गुजरी, ते वाजीतो वधी हवे संकेली मुकी. माटे हवे फरीथी ते सर्व प्रकारना साधननी तजवीरमां रहो. मतलब के तमे नटनी पेठे अमारा शरीररूपी वांससुधी मोतनी घडी आगमीने आव्यां. पण सारी पेठे मार्ग बनी शक्यो नहीं. तेथी वीजा आशकीरूपी खेलाडी एम कहेशे के खेल करनार काचां छे, पण खरी नजरथी जोनारातो कहेशे के मोतनी घडी गुजरी छे, हवे ते वांमनो वियोग थयो, अने ते थई गयेल मेळापनी वाजीनो पूरी थई, माटे हवे फरीथी मेळाप करवाना साधनमां तत्पर रहो. २१

॥ भ्रमर अन्योक्ति ॥ कवित ॥

प्रगट्यो वसंत तव मोहोरे अनंत वन, लावत न कहूं तन मन छटक्यो रहे ॥ तरन तरन पोप अरुन अरुन रंग, वरन वरन वास चित्त चटक्यो रहे ॥ जल, जलजातहांकों, छांडी हुन जात नेक, पल पल पातनपें सीस पटक्यो रहे ॥ कुंन कुंन पुंज पुंज गुंज गुंज आवतहे, फूलत न कंज याते भोर भटक्यो रहे ॥२२॥

अर्थ. "हे प्रवीण? एक भमरो" ज्यारे वसंतऋतु प्रगट्यो अने अनेक

झाड फूल्यां त्यारे तेनी साथे कांइपण शरीर मेळवतो नथी, अने मनथी छटकतो रहे छे, ते प्रत्येक झाडे रातांरातां तथा रंगरंगनां फूलना सुगंधथी तेनुं मन चटकतुं रहे छे, मतलब के जूदुं रहे छे, अने पाणीने के कमळने लगारे छोडीने जतो नथी, अने पळे पळे तेनां पांदडा साथे माथुं पटकतो रहे छे "पण ज्यारे जळ सुकाइ गयुं" त्यारे झाडना कुंजे कुंजे, अने फूलने जथ्थे जथ्थे गुंजार करतो करतो आवे छे, अने कमळ फूलतां नथी,तेथी ते भमरो भटकतो रहे छे, मतलब के आपणो मेळाप थाय छे, ते वखते तमे अमारी साथे शरीर मेळवता नथी, अने लोकलाजरूपी कमळमां भराइ रहो छो, अने हवे ते वखत गयो, एटले तमारा मनरूपी भमरो अमारी तरफ भटकतो रहे छे. ॥२२॥

॥ दोहा ॥

दंपति भेद अन्योकती, इहि विधि कहे बनाय ॥
वह जाने उनकी दशा, अविदित कही न जाय ॥ २३ ॥

अर्थ. एवी रीते बन्ने स्त्रीपुरुषे अन्योक्तिना भेदो बनावीने कह्या,परंतु एमनी दशाने तो एओज जाणे,कारण के ते दशा अविदित,एटले अजाणी छे, तेथी कही जाय एवी नथी. ॥२३॥

॥ गाहा ॥

द्वारामति ग्रह गमनं, दंपति उत भेद अन्योक्ती ॥
सप्तपंचाश अभिधानं, पूर्न प्रविन सागरो लहरं ॥ २४॥

अर्थ. द्वारकानी यात्रा करीने पोतपोताने घेर गयां,पछी त्यां स्त्रिपुरुषे बीजां पक्षीयो विगेरेनी उक्ति बनावी ते संबंधी, प्रवीणसागर ग्रंथनी सत्तावनमी लहेर संपूर्ण थई. ॥२४॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे कलाप्रवीन रससागर यात्रा

इत श्री अन्योक्ति भेदो नाम सप्तपंचाशत्तमो लहरं ॥५७॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां सप्त पंचाशत्तम तरंगः समाप्तः ॥५७॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

दंपति मन शिक्षा तथा, प्रेम पंथ वन बाग ॥
अठ्ठावनमी लहेरमां, वर्णवशे अनुराग ॥

॥ अथ दंपति विरह दशा मन सिच्छा भेद प्रसंग ॥ सोरठा ॥

दोउनकों दिन रेन, सुख न चेन दुख मेन बढ ॥
निज मन सिच्छा देन, लगे सु बरनि बताइयत ॥ १ ॥

अर्थ. सागर तथा प्रवीण ए बेयने दुःख तथा काम वधवाथी दिवस अने रात्रिये सुखचेन पडतुं नथी, तेनी दीलगिरीने लीधे तेओ जे पोते पोताना मनने शिखामण देवा लाग्यां, तेनुं हवे वर्णन करी बतावुंछुं. ॥१॥

॥ तत्र कलाप्रवीन मन सिच्छा भेद ॥ दोहा ॥

लाज सराहतहे सबे, एकहि वार निवार ॥
सोनेको परिहरि रच्यो, सो नेको उर हार ॥ २ ॥

अर्थ. हे मन सघळा लोको लाजने वखाणेछे, पण तेने एकवार छोडी दे. अने जेम सोनाने तजीने अथात् तोडीने आ छातीनो सारो हार रच्यो छे, मतलबके सोना जेवी किमती लाजछे, तो पण तेने तोडीने मित्रना मेळापनो हार करवो जोइये. तेमांना शब्दना परियाय निचे प्रमाणे सोनेको, सो नेको ते नीको कहतां सारो. ॥२॥

आय सके तो आयले, आसकके मेदान ॥
भूख प्यास सहिबो विषम, मिलहे मिंत निदान ॥ ३ ॥

अर्थ. हे मन जो आवी शके तो आ आशकना मेदानमां आवीजा. त्यां तडकाने अने तरसने, सहेवी एतो घणुंज (विषम) कठण छे, परंतु अंते जरूर मित्र मळशे. ॥३॥

॥ ऐतिह्यालंकार ॥ सवैया ॥

मालति, हीर हूसेन सु सोइ सुजान, शरीन,सभा जो बनाई॥ हाजरहे रंगरेजि जिहांहि, जिहां पदमावतिकी कविताई ॥ नृत्य संगीत करे नवनंदिनि कुंदलकाम मृदंग बजाई॥ सागर मिंत मिलेगे तहां चलरे चित लेलि जहां पतसाई ॥४॥

अर्थ. हवे असल थइ गयेली इशकी स्त्रियोने संभारीने प्रवीण पोताना मनने कहेछे के--ए इशकियोनी सभामां हे मन तुं चाल मतलबके तेओए कर्युं तेम कर. एटले त्यां तने सागर मित्र मळशे. ते सभानी विगत जे. एक मालती, बीजी हीर, त्रीजी हुसेन तथा चोथी डाहीशीरीन जेवीयोए ज्यां सभा बनावी छे, अने पांचमी रंगरेजी पण ज्यां हाजर छे; अने छट्टी पद्मावतीनी ज्यां कविता बोलायछे. त्यां सातमी नवनंदिनी ज्यां नाच करेछे. अने आठमी कामकुंदला मृदंग बजावेछे. अने नवमी लेलानी ज्यां पादशाहीछे. हे मन तुं त्यां चाल. एटले तने त्यां सागर मित्र मळशे. खुलासो जे--(१) मधुमालतीनी वारता लखीछे ते (२) हीर तथा रांझानी वारता देशी भाषामां छे,(३) हुसेननो किस्सो तथा (४) शीरनि अने फरहादनो, (५) रंगरेजीनो ए रीते त्रणे किस्सा उरदुमां छे (६) पद्मावतीनी ने पुष्पसेननी वार्ता संस्कृत उपरथी सामळभटे गुजरातीमां करेलीछे, तेमां कवितानी चतुराइ घणीछे (७) नवनंदिनीनी वारता संस्कृतमां छे, (८) कामकुंदला अने माधवानळनी वारता पण संस्कृतमां छे, ते उपरथी सामळभटे गुजरातीमां करीछे.(९) लेली अने मजनुनो किस्सो फारसीमां छे, आ स-

...यामां तेम मातुकोना नाम गणाव्यां छे तेमज आ लेहेरना पंदरमा कवितमां तथा ७०मी लेहेरना सोळमा सवैयामां आशक पुरुषोना नाम गणेलांछे.॥४॥

॥ जातिस्वभाव मिश्रित लाटानुप्रास अलंकार कवित ॥

कीयबो कछुन अब, हीय वो विचार चढे, जीयबो भलो न, विष पीयबो सहलहे ॥ सहेनो सबेहि दुख, कहेनो न काहू हीसें, वहेनो मजादहिसें, रहेनो सुफलहे ॥ करिये न सोच कछु, डरिये न लोगहीतें, धरिये सु प्रीत रीत, मरिये सु पल है ॥ पार न परेगो प्रान, एह देह डारदेरे, एसें चित्त धार तब सागरज्यू मलहे ॥ ५ ॥

अर्थ. हवे कांइ करवुं नहीं, केमके हृदयमां बहु विचार चडि आव्योछे, के जीववुं ए मारुं नथी, अने झेर पीवुं ते सहेलछे, सघळां दुःख सहेवां पण कोइनी पासे कांइ कहेवुं नहीं, अने मर्यादा प्रमाणे चालीने रहेवुं, तेमां मारुं फळछे, कांइ जरामात्र शोक करिये नहीं, तेम लोकोथी डरिये नहीं, अने प्रीतिनी रीतिने धारीने मरिये, ते सारी पळछे, प्राण पार पडशे नहीं, माटे आ शरीरने दरकार कर्या विना नाखी दे, हे चित्त! ज्यारे एवुं धारीश, त्यांरेज सागरजी मळशे. ॥५॥

॥ मिश्रित लाटानुप्रास जातिस्वभाव अलंकार ॥ कवित ॥

जाहिको निरंतर तुं घरी घरी ध्यान रहे, ताहिसें दिगंतरसें अंतर निपटरे ॥ जरी जरी ज्वाल मेन, झरी झरी आवे नेन, फरी फरी फेरे पर सागरज्यू रटरे ॥ पल पल तलफ तलफ, मिल मिल चहे हंस, मिलबो न बने पंथ चलबो विकटरे ॥ रतियां भरहि जोति, छतियां उसास संग, फटी फटी जात नहि, किट हो निपटरे ॥ ६ ॥

अर्थ. हे हृदय जेनुं तुं निरंतर ध्यान धरीने रहेछे,तेनी साथे दिशाना अंतरथी घणुं छेटुंछे, अने कामदेवनी झाळमां बळी बळीने, आंख्यो आंसुथी भराइ भराइ आवेछे, ते उपरांत फरी फरीने वळी सागरने रटने? पळे पळे तलफी तलफीने (हंस) जीव मळिये मळिये एम चाहेछे, पण मळवानुं बनतुं नथी, ने पंथे चालवानुं तो मुश्केल छे, जेम प्रीतिनी कांति भरपूर भरीछे, तेम हे छाती? तुं उसासा निसासा भरवानी साथे फाटी फाटी जती नथी, माटे हे नफट? तने फटकार छे. ॥६॥

॥ मिश्रित लाटानुप्रास लोकोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

मिंत बिलोकनकों तरसो, बरसो असुवांन झरी सु झरी ॥
सागरज्यू बिछुरे तबसें, अखियां ब्रह ज्वाल झरी सु झरी ॥
एरे झुको उझको बरुनी,करनी महि चूक परी सु परी ॥ क्यों
ब्ररषो, मुरझो, उरझो अब, जो किरतार करी सु करी॥७॥

अर्थ. हे नेत्र? तमे मित्रने जोवा सारु तलखो, अने आंसु भरी भरीने वरसो, अने ज्यारथी सागर जूदा पड्या, त्यारथी तमारामां विरहनी झाळो जागी ते जागीज, अने आ पांपणो पडो, ने उपडो, परंतु करणीमां चूक पडी ते पडी, हवे शुं करवा वसोछो, शुं करवा मुंझाओछो,अने शुं करवा अचकाओछो, जगतकर्त्ता परमेश्वरे जे करी ते खरी. ॥७॥

॥दोहा॥

जिय तुं अब कैसें जिये, हिय तुं दरकत नांहि ॥
वे अब इत आवत नहीं, तें उत गयो न जाहि ॥ ८ ॥

अर्थ! हे जीव? तुं हवे केम जीवेछे, हे हृदय? तुं हजी केम फाटतुं नथी,केमके ए मित्र हवे आंही आवता नथी,तेम ताराथी त्यां जइ शकातुं नथी. ॥८॥

॥ द्रष्टांतालंकार ॥ दोहा ॥

सदा सु मनमें राखिये, मिंत मिलनको ध्यान ॥
पय घृत शुचि जल मंत्र सुर, मरुत गंध अनुमान ॥९॥

अर्थ. हे हृदय? जेम दूधमां घी, जळमां पवित्रपणुं, मंत्रमां दैवत, अने पवनमां सुगंध रहेछे, एवीरीते तुं निरंतर मनमां मित्रने मळवानुंध्यानराख.॥९॥

॥गुढोक्ति अलंकार ॥दोहा॥

बोलत होय न बाउरो, चलविचल न व्हे चिंत ॥
जो चाहत अबही जियो, बस वरुनायुध मिंत ॥ १० ॥

अर्थ. हे मन बोल्तां बोलतां बावरूं थामां, तेम चळविचळ पण थामां, अने हवे जो जिववाने चाहतुं हो, तो मित्रनी पासे वश! मतलबके वरूणनुं आयुद्ध पाश अथात् पासे. ॥१०॥

॥ अथ सागर मनासिच्छा भेद समरूपक अलंकार ॥ दोहा ॥

नेन नीर विरहा बटन, उर तर पथ्थर पीन ॥
मन मेंदी अवटे विना, परस न पाय प्रवीन ॥११॥

अर्थ. आंख्योना आंसुरूपी पाणी नाखीने विरहरूपी उपरवटणाथी हृदयरूपी कठण छीपर उपर मनरूपी मेंदी वाट्याविना प्रवीणना स्पर्शने पामतो नथी, मतलबके जेम मेंदी वटाया वगर प्रवीणनो स्पर्श पामती नथी, तेमज हे मन? तुं पण अवटाया वगर प्रवीणनो स्पर्श नहीं पामे. ॥११॥

॥ अथ विनोक्ति अलंकार ॥ दोहा ॥

चिंत मिंत जोही बसे, तजो न ताको संग ॥
देखो गुन विन धनुप गति, उलट विकट सम अंग ॥१२॥

अर्थ. हे मन चित्तमां जे मित्र वसेछे, तेनो संग तजीश नहीं, तुं धनुष्यनी गति जोके गुण पडले पणछ विना तेनुं वांकुं अंग जोइये ते उलटीने

पांशरुं थइ जायछे, अर्थात नकामुं थायछे. ॥१२॥

॥ अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

करेरे उनके गुनकी गुननी; शुभ ध्यान हमेश हिये धररे ॥
धररे इन मूरति आंखनमें, अबहि सु गयो सुख बीसररे ॥
सररे उन आयस राखि चढाये ज्यू, एसी करिहे बिशंभररे ॥
भररे अति सास उदास भये, जिय याद प्रवीन प्रभा
कररे ॥ १३ ॥

अर्थ. हे जीव ए मित्रना गुणनी माळा हाथमां लइने हमेशां हृदयमां एनाज शुभ ध्यानने धर, आंखोमां पण एनीज मूर्तिने धार, हवे सुख तो विसरी गयुंछे, अने विश्वंभरे एवी करी. ते एनी आज्ञा माथे चडावी राख, अति उसासा भरी भरीने उदास थयोछे. माटे हे जीव प्रवीणनी कांतिने याद कर. ॥१३॥

॥ अथ समरूपकालंकार ॥ सवैया ॥

कानन डाक सुनी चरचा, तबतें उर आइ इमानकी धीर ॥
दैवत मिंत प्रवीन निहारत, चाहको चिंत चढ्यो रहे बीर ॥
पूजनहार मनोज महंत, सनेहको नेत बध्यो सर तीर॥ प्रान
गयो बिरहा गिररे, पररे कररे चकचूर शरीर ॥ १४ ॥

अर्थ. ज्यारथी काने चर्चारूपी डाकलां सांभळ्यां, त्यारथी हृदयमां इमानरूपी धीरजता आवीछे, प्रिय मित्र प्रवीणरूपी देवताने जोयां, त्यारथी चाहनारूपी वीर तो चित्तमां चड्योज रहेछे, अने कामदेवरूपी महंत ते देवने पूजनारो छे, तेणे स्नेहनो दोरो माथे बांध्यो छे, हवे हे प्राण ? विरहरूपी पर्वत उपर जइने पडतुं मुक्य. अने शरीरने चकचूर कर. ॥१४॥

॥ ऐतिह्यालंकार ॥ कवित ॥

वेहेरामसे वजीर, वकसी फरास जेसे, फूल फरमानी, घनआनंद कुजाईकी ॥ पुनासे प्रचंड मीर, रांझनसे वीर जहां, आलमके हाथ दीनी कलम लिखाईकी ॥ अनहद नाद बाजे, साजे रस रीत सबे, वाहनी विराजे शीश विगर सिपाईकी ॥ अभिलापवंत, तहां पायेगो प्रवीन मिंत, चल चल चिंत जिहां मजनु दुहाई की ॥ १५ ॥

अर्थ. ज्यां वेहेराम सरखा वजीर छे, फरास जेवा ज्यां वखशी छे, फूल सरखातो ज्यां हुकमदार छे, घनानंद सरखातो ज्यां पाळाओना उपरी छे, पुना सरखा ज्यां मोटा अमिरो छे, रांझा सरखातो ज्यां शुरवीरो छे. आलमशाहना हाथमां तो ज्यां लखवानी कलम दीधेलीछे, ज्यां अनहद वाजांना नाद वागे छे, अने ज्यां सघळा रसनी रीतने धारे छे, अने ज्यां माथा वगरना सिपाइयोनी फोज शोभे छे, हे अभिलाशावाळा चित्त ज्यां मजनुए दुहाइ करी छे, त्यां चाल्य, त्यां तुं प्रवीण मित्रने पामीश, ए कवितमां असल जे आशको थइ गया, अने जेओना किस्सा कहाणियो चाले छे,तेओनां नाम छे, अने भावार्थ ए छे जे एओनी सभामां दाखल थवाथी मित्र मळशे, अर्थात तेओये कर्युं हतुं तेम कर.॥१५॥

॥ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

नेहके चोक कियो नृत चाहे तो, लाज परेच परे धररे ॥
मागनको अभिलाप मठा रस, दोहनि देखि कहा डररे ॥
आगेहि पाछे जबे मरबो तब, मूह मलीन कहा कररे ॥
प्यारे प्रवीनके प्रेमकि जोतमें, प्रान पतंग जेसे पररे॥१६॥

अर्थ. हे मन स्नेहना चोकमां नाच करवाने चाहातुं हो तो लाजना पडदाने परो धरी दे. छाश मागवानी अभिलापा होय तो दोणीने जोइने

शुं करवा डरेछे, मतलब के छाश लेवा जावुं त्यारे दोणी शुं संताडवी, ज्यारे आगळ किंवा पाछळ मरवुं छे, त्यारे मुख मलिन शुं करवा करे छे, अरे मन प्राणप्यारी प्रवीणना प्रेमनी जोतमां पतंगियानी पेठे पड.॥१६॥

॥ जाति स्वभाव अलंकार ॥ सवैया ॥

कह सोवतमें दिन खोवतहे,हितकी नित जो चित चाह तबे॥
रुख छोरत नांही बलीभुककी, सुख मानतसो दुखदाइ सबे॥
फररे कहा कुरके फंदनमें, कररे उपचार कछूक अबे ॥
परबीन मिलेगे अखंड प्रभा, जक लागहिगी तुंहि तूंहि जबे ॥ १७ ॥

अर्थ. हे मन जो हमेशां चित्तमां तारा हितनी चाहना होय, तो सुइ रहेवामां शुं दिवस गुमावे छे, कागडो आवीने कांइ वधामणी आपे, एवी इच्छा तुं छोडतुं नथी. अने जेमा तुं सुख मानेछे, तेतो सघळां दुःखदायक छे, माटे पाछुं कूडना पासमां शुं फरे छे, हवे कांइक उपाय कर्य, अने ज्यारे तुंही तुंही एवी अखंड जक लागशे, त्यारेज तने प्रवीणनी छबी मळशे. ॥१७॥

॥ यमकानुप्रास ॥ दोहा ॥

परम न पावे धरम तजि, चरम न रहे निहार ॥
भरम न भटके शरम भजि, कर मन करम विचार॥१८॥

अर्थ. धरम तजवाथी परमात्माने पामिये नहीं, माटे शरीरना चामडाने जोइने रहीश नहीं, भरममां भटकमां ने शरम राखीने हे मन ? करमनो विचार कर्य. एनो वीजो अर्थ एवोछे के हे मन मित्रनुं ध्यान करवानो जे तारो धर्म छे, ते तजवाथी तुं परम मित्रने पामी शकीश नहीं, अने तारा शरीरना चामडाने शुं जोइने रह्यो छे, अर्थात देहने तुच्छ

गण, अने भरममां भटकीश नहीं, ने शरम राखीने तुं तारा नशीबनो विचार कर, अथवा तारे हवे शुं काम करवुं जोइये तेनो विचार कर. १८

R ॥ दोहा ॥

प्रिया पीय विरहा प्रकृति, मन सिच्छा किय एह ॥
समरन प्रति लागत सुरत, दिन दिन बढत सनेह ॥१९॥

अर्थ. विरहनीदशाथी स्त्रीपुरुषे पोतपोताना मनने एवी शिखामण आपी, परंतु एक वीजाना स्मरण प्रत्ये सुरत लागवाथी दिवसे दिवसे स्नेह वधवा लाग्यो. ॥१९॥

॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ सोरठा ॥

लागी सुरत सनेह, मानहु ज्यों दुरबीन द्रग ॥
दरसत निकट न देह, दूर बसत मिंता लखे ॥ २० ॥

अर्थ. बंनेनी सुरत स्नेहमां लागी रहेछे, ते जाणे के दूरबीनमां नेत्र जोड्यां होय, तेथी पोतानां शरीर पासे छे, तेने देखतां नथी. पण दूर वसनार मित्रने देखेछे, मतलब के पोताना शरीरनुं भान नथी. अने मित्रमां जीव लागी रह्यो छे. ॥२०॥

॥ दूरबीन द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

या तो दुहून जराउ ले आतस, या तो गडो गहि गाड जमी-सें ॥ या तो हनो उर बीचहि तोमर, या तो कटो सिर खेंच असीसें ॥ आवत कोउ न दीठ इतें उत, मिंत विदेश वसे वह दीसे॥ प्रेमहुके चसमे अटके यह, नेन सु ता दूरबीन न-रीसें ॥ २१ ॥

अर्थ. गमेतो अमने वेगने लइने अग्निमां बाळो, किंवा पकडीने ऊंडी खाडबाळी जमीनमां डाटो, किंवा हृदयनी वच्चे भालाना घा मारो, किंवा

तरवार खेंचीने अमारां मस्तक कापो, पण मित्र परदेश वसेछे,ते दिशा तरफ जोतां आंही के त्यां वीजुं कांइ अमारी नजरे आवतुं नथी, अने अमारा प्रेमरूपी जोवाना काचवाळी ते दूरवीननी नळीमां आ अमारां नेत्र अटकी रह्यां छे, ते छूटवानां नथी. ॥२१॥

॥ अथ अतिशयोक्ति अलंकार ॥ कवित ॥

पुंडरीक जूथ पंथ पलके अहार देदे, प्रेतहुके खेतकों उलंघ आगे जावेगा ॥ पावकके प्रबल पहार पार परबोहे, प्यास लिये पीवनकों बिख ना बतावेगा ॥ शीशहूको फूंदा लहे,दरवीकी दोर गहे, सार धार सीढीपें निशंक होय धावेगा ॥ सुरत दिवानखाने, राजत सनेह साह, पावेगा प्रबीन मन या मग जो आवेगा ॥२२॥

अर्थ. हे मन प्रवीणने मळवा जवानो रस्तो एवो विकटछे के--ते रस्तामां वाघनां टोळां छे, तेओने (तारा शरीरना)मांसनो अहार दइदइने, अने वळी स्मशान आडा आवशे, तेने उलंघीने ज्यारे आगळ जइश, त्यां अग्निना मोटा पर्वतने पार पडवानुं छे, अने त्यां तरशने लीधे, तारे पीवाने जळने वदले झेर पण कोइ वतावशे नहीं, पछी तारा मायारूपी दोरडानुं फूमकुं हाथमां पकडीने काळा सरपरूपी दोरडुं झालीने ज्यारे तुं एक निष्टारूपी नीसरणी उपर निःशंक थइने दोडीश, त्यारे त्यां सुरतारूपी दीवानखानामां, स्नेहरूपी पादशाह विराजे छे,ते मार्गे ज्यारे आवीश, त्यारे तुं प्रवीण मित्रने पामीश. ॥२२॥

॥ अद्भुतोपमालंकार ॥ कवित ॥

वार मास अंवरमें वरखा वनाय रही, कुंज कुंज पुंजनमें रतुराज रास किय ॥ वातज, पतंग, भ्रंग, चातुक, चकोर

मोर, हारन जराफा, कोक, सारस, निवास किय ॥ सूर श-
शि विना जोत, विना वारके फुहारे, फल फूल, झूल रहे
अथवा अकास किय ॥ पोंनकी गति न जहां, वक्रता रती
न चले, सागर प्रवीन पाओ एसे बाग आसकिय ॥२३॥

अर्थ. आशकनो बाग एवोछे के ज्यां बारे मास आकाशमां अथवा वस्त्रमां वर्षाद वनी रह्योछे, अने कुंज कुंजना समुदायमां वसंत रितु अथवा रतिनो राजा कामदेव रासक्रीडा करेछे, अने ज्यां (वातज) मृग पतंग, भमरा, बपैया, चकोर; मोर, हारनपक्षी, जुराफा, चकवा, अने सारस निवास करी रह्यां छे, सूर्य तथा चंद्रमा विना ज्यां जोत प्रकाशे छे, पाणी वगरना फूवारा उछळे छे, अने आकाशनी अधवचाळे फळफूल झुकी रह्यांछे, अने ज्यां पवननी गति नथी, एठलुंज नहीं पण ज्यां जरा मात्र कुटिलता चालती नथी. सागर कहेछे हे मन तुं एवा आशकना बागमां जइने प्रवीणने पाम, एमां प्रवीणना शरीरने आशकनो बाग कलप्योछे, अने तेमां उपर कहेला वधा गुणछे. ॥२३॥

॥ दोहा ॥

दंपति मन सिच्छा कही, सुरत प्रेम अनुमान ॥
प्रेम पंथकी विपमता, उपमा प्रेम उदान ॥२४॥

अर्थ. ए रीते प्रेमना मारगनी कठणाई तथा प्रेमना बगीचानी उपमा साथे सुरता तथा प्रेमना अनुमानथी स्त्री पुरुषे पोतपोताना मनने शीखामण कही बतावी. ॥२४॥

मन सु पवनकी लहरहे, क्यों कर पकरे ताय ॥
जहाँ जानेकी सुरत तहाँ, जाय जाय पुनि जाय ॥२५॥

अर्थ. मन छे ते पवननी लहेर छे, तेने केम करीने पकडिये, तेने ज्यां

जत्रानी इच्छा होय, त्यांज फरीफरीने जाय जाय अने जाय. ॥२५॥

मन पथ्थर हरि हर करे, मन सु ब्रह्मको अंग ॥
मन बिजयी तिहु लोकको, चलत प्रेमके संग ॥ २६ ॥

अर्थ. मन छे ते पथराने हरी हर बनावे, केमके ते परब्रह्मनुं अंग छे, एटलुंज नहीं, पण त्रणे लोकने जीतनारुं मन छे, अने ते प्रेमनी साथे चाले छे. ॥२६॥

॥ गाहा ॥

दंपति निज मन सिच्छा, सुरता प्रेम पंथ उपवन विधी ॥
अठपचाश अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥ २७ ॥

अर्थ. सागर तथा प्रवीण ए बन्ने स्त्रीपुरुषे पोतपोताना मनने शीखामण आपी, ने प्रेमना पंथनुं, तथा बगीचानुं वर्णन कर्युं, ए संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ अट्ठावनमी लहेर संपूर्ण थई. ॥२७॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे दंपति मन सिच्छा प्रेम पंथ भेदो नाम अष्टपंचाशत्तमो लहरं ॥ ५८ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां अष्टपंचाशत्तमस्तरंगः समाप्तः ॥५८॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

पत्र भेद दंपति तणा, लखी समझ्या जेह ॥
ओगणसाठमि लहेरमां, कहुं संक्षेपे तेह ॥

॥ अथ दंपति पत्र भेद समझ्या प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

बिरहा नित संतात, मनही मन जानंत दुहु ॥
कछु संछेप सु बात, लहत मिंत कुसुमावली ॥ १ ॥

अर्थ. हररोज विरह संतापेछे. तेने बन्नेजणां मनमांने मनमांज जाणेछे. ए वातने कांइक संक्षेपथी सागरना मित्रो तथा कुसुमावळी जाणेछे. ॥१॥

वहु दिन न्नये वहोर, दोऊ जन बिछुवा बने ॥
प्रान रहत तिहि ठोर, मास मास पाती मिले ॥ २ ॥

अर्थ. बन्ने जणांने वियोग थयाने वळी घणा दिवसो थया, परंतु महिने महिने एक बीजांने ते ठेकाणे कागळो मळेछे, तेथी बन्नेना प्राण रेहेछे. ॥२॥

पाती न्नेद प्रकार, करि केते आगे कहे ॥
बिछुरे न्नई अवार, कहत बहुरि सुनिये कथा ॥ ३ ॥

अर्थ. पत्रना भेदना केटलाएक प्रकार करीने आगळ कह्या, पण जूदां पडवाने घणीवार थइ, माटे वळी जे थयुं ते हुं कहुंछुं ते कथा सांभळो. ॥३॥

॥ तत्र प्रथम कलाप्रवीन पत्र भेद ॥ सोरठा ॥

कर कंपन द्रग नीर, प्रथुल स्वास ज्वाला जगे ॥
चहले परे सु चीर, कहु कागद कैसें लिखें ॥४॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के हाथ कंपेछे, आंखोमांथी पाणी झरेछे, लांबा अने मोटा श्वासनी साथे हृदयमांथी विरहनी झाळो जागी उठेछे. अने आंसुना छांटाना डाग चीर उपर पडेछे. माटे कहो के कागळ कइ रीते लखीए. ॥४॥

॥ जातिस्वन्नाव अलंकार ॥ सवैया ॥

अंगहि अंग सबे थरके, धरके कलमे कर कैसें रखे ॥ चीरपरे चहले सिगरे, जल धार धरें वरपे सु चखे॥ दीरघ सास उठे इतने पर, मानहु ज्वाल भुजंग नखे ॥ नागरताइ कहा करियें, कहो सागर कागर क्यों सु लखे ॥ ५ ॥

अर्थ. (मारां) सघळां अंगे अंग थडकेछे. ने हाथ पण (थडके छे.) धुजेछे माटे तेमां कलम कइ रीते राखीए? आखा चीरमां आंखना

काजळना डाघपडी गयाछे,अने नेत्रेथी जळनी धारा पृथ्वी उपर वरसेछे; वळी एटला उपरांत जाणे के सर्प मुखमांथी ज्वाळा नाखतो होय, तेम लांबा श्वास उठेछे. माटे चतुराई शी करिये? अने हे सागर कहो, के कागळ शी रीते लखिये, ॥५॥

॥ संदेहालंकार ॥ सवैया ॥

काल करोडको राजतहे रद, सूरज वाहन शृंगनकी शख ॥ मीन व्रही जनकी बिडसी, किधों काम धजा, ॐकार कियो लख ॥ कातरनी अभिलाप किधों, किरवान विदारनकी स-गरे सख ॥ सागर दूज हुको दुजराज, किधों यह नाहरको निकस्यो नख ॥ ६ ॥

अर्थ.बीजना चंद्रने जोइने प्रवीण कहेछे के आते काळरूपी वराहनो दांत शोभेछे? के उदयाचळ पर्वतना शिखरनी (शिखा) अणीछे! के वियोगी जनरूपी माछलांने पकडवानो कांटोछे? के कामदेवनी धजा छे? के ल-खीने ॐकार कर्यो छे? किंवा अभिलाशने कापवानी कातर छे? के बधां सूखने कापनानी तरवार छे? हे सागर आ बीजनो चंद्रमा छे, के आ वा-घनो नख नीकळ्यो छे? ॥६॥

॥ जातिस्वभाव अलंकार कुसुमोक्त ॥ सवैया ॥

एक समे सगरी सखियां मिल, नीठ सुवाइ, विचार विचार-त ॥ सागर मिंत मिले सुपने महि, पान खवाइ गरे भुज डारत ॥ बात कछू कहिबेकु भई तब, नाहि लखे अखियां-न उघारत ॥ सोवतसें उठ रोवत जोवत, पोसपलंगपें पान पछारत ॥७॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के एक समये बधी सखियोए मळीने (प्रवी-

शिखंडिज एटले बृहस्पति अथवा जीव, छंद एटले श्रुति अथवा कान, समीर एटले वायु अथवा वात, जोतिष एटले काळ अथवा वखत, मयूर एटले बर्हि अथवा विरही. हेमगिरि एटले मेरु अथवा मेहेर, आरसी एटले आदर्श अथवा आवीने दर्शन, सोगन एटले सपथ अथवा ते रस्तो. सुर एटले सूर्य अथवा मित्र. भोम एटले लोहितांग अथवा राता अंगवाळां नेत्र, मंगन एटले दीन अथवा दिवस. ॥१२॥

॥ एकावलि अलंकार ॥सवैय॥॥

परसे बिनहि छिनही छिनही, मनमें दुख होत बडे गरसें ॥
गरसें वह जानत जाय परे. सु जरे बिरहा नलकी झरसें ॥
झरसें नितही तन छीवतहे, जिय जीवत देखनकी हरसें ॥
हरसें यह माँगत वानि सदाहि; प्रबीनके पायनसें परसे ॥ १३ ॥

अर्थ. हे प्रवीण तमने स्पर्श्या वगर क्षणे क्षणे मनमां मोटा पर्वत जेवां दुःख अमने थाय छे. अने एवुं जाणिये छिये के पर्वत उपर जईने पडिये. केमके विरहाग्निनी झाळथी बळिये छिये. अने रोज झरी झरीने अर्थात् क्षीण थइ थइने शरीर खवातुं जाय छे. पण तमने देखवाना हरखथी मारो जीव जीवे छे. अने शिवनी पासे हमेशां एवुं वचन मागिये छिये के प्रवीणना चरण साथे स्पर्श करिये. ॥१३॥

॥ संभावनालंकार ॥ सवैया ॥

पत्र हमें पठयो तुमकों, वह धोस दसो दसद्वैमें दहेगो॥ ताको बिचार करो बिसतार ज्यू, पानिको पानि कहांलों रहेगो॥
मासहू जो न मिल्यो प्रति उत्तर, हंस बयार के संग बहेगो ॥ सास उसास लगे पलही पल, कोन प्रबीन प्रबीन

कहेगो ॥ १४ ॥

अर्थ. हे प्रवीण? अमे तमने पत्र जेनी साथे मोकल्यो छे. ते दस अथवा दसने बे एटले बार दिवसमां तमने देशे, तेनो विस्तारथी विचार करजो; के अंजळीमांनुं पाणी क्यांसुधी रहेशे ? जो महिनामां तेनो प्रतिउत्तर नहीं मळे, तो मारो जीव पवनना सपाटा साथे वह्यो जशे, केमके मने पळे पळे श्वासोश्वास लागी रह्यो छे. तो हे प्रवीण? तमने डाह्यां कोण कहेशे ? ॥१४॥

॥ स्मरनालंकार ॥ सवैया ॥

वाहि उछीर, वही गति बेठबो, वाहि सुरा, गति वाहि पिवावे ॥ वा मुसकान, वहे सिसकी, अरु वाहि तरे अरजीसें रिझावे ॥ प्रछन भेद सुने बतियांनके, यों परतच्छ बनाय सुनावे ॥ हे न हितू जग मध्य प्रबीन ज्यु, रेन भई सोइ नेन दिखावे ॥ १५ ॥

अर्थ. हे प्रवीण ? स्वप्नामां जे देखिये छिये. एज तकियो अने एज रीतनुं बेसवुं, अने एज मदिरा, एज रीते मने प्रवीण पाय, एज मरकवुं, अने एज शीशकारो, अने एज प्रकारथी विनती करीने मने रीझावे, अने वातोना गुप्त भेद सांभळिये छिये, ते एज रीते प्रत्यक्ष बनावीने संभळावे. ए रीते रात्रिमां जे वात बनेली, ते नजरे देखाडे एवो कोइ वालेश्री जगतमां नथी. ॥१५॥

॥ दोहा ॥

पाती छाती लाय नित, दंपति जपत सयान ॥
जानत सागर प्रान सम, उन प्रवीन वह प्रान ॥१६॥

अर्थ. ते डाह्यां स्त्री पुरुष एक बीजाना पत्र नित्य छाती साथे लगा-

बीने एक बीजाने जपेछे. ते सागर, प्रवीणने प्राण जेवो जाणे छे, अने प्रवीण सागरने प्राण जेवा जाणेछे. ॥१६॥

पाती महि लखियत उन्नय, भेद समश्या लाय ॥
दरसत दुन महि निज दशा, सो कछु कहों सुनाय ॥१७॥

अर्थ. ते बन्ने जणां समश्याना भेद लावीने पत्रमां लखे छे. अने ते पोतानी दशा पोतपोताना पत्रोमां लखी देखाडे छे. ते हवे कांईक संभळावीने कहुंछुं. ॥१७॥

॥ तत्र कलाप्रवीनोक्त समश्या ॥ सोरठा ॥

सोधहु सागर मित, बावन अच्छर भेद यह ॥
प्रेम सु काहि कहंत, बरन जात अभिधान कह ॥१८॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के-हे सागर मित्र? आ बावन अक्षरना भेद शोधी जुवो, तेमां प्रेम केने कहे छे,? तेना वर्ण,जाति अने नाम ते शुंछे.॥१८॥

॥ कवित ॥

ले कर तराजु गुन, अच्छर प्रमान करो, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, भेद व्यंजन विचारिये ॥ ओमनमो एक विंश, कादि पंचतीश अंक, छप्पनको बार भेद, पंगति बिठारिये ॥ कोन तामें ब्राह्मन हे, छत्री वैश्य, शुद्र, कोन कीजिये निवेरो, रंग रूपहि निहारिये ॥ सबमें बसंत एक, एकमें अनेक रूप, अहो मित सागरज्यू प्रेम नेम पारिये ॥१९॥

अर्थ. हे सागर? हाथमां त्राजवुं लइने अक्षरनी गणत्री करीने तेनो तोल करो. अने तेमांना ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, एवा स्वरना भेद तथा व्यंजननो विचार करो. ॐ नमः आदि एकवीश तथा कथी क्ष सुधीना ३५ मळीने छप्पन अक्षर थया. तेमांना व्यंजन अक्षरोना लोक व्यवहारमां

प्रत्येकना बार बार भेद बाराखडीमां थाय छे, ते रीते जूदी जूदी पं-क्तिमां बेसारिये. तेओमां कोण ब्राह्मण छे. अने क्षत्री, वैश्य, तथा शूद्र कोणछे. तेना रूप रंग जोइने नीवेडो करो. मतलब के एमां जूदुं जूदुं कांइ नथी. सर्वमां एकज व्यापक छे, अने ते एकमांज अनेक रूप देखायछे. एवो एक ॐकारछे. एज रीते सर्व सचराचरमां प्रेम व्यापक छे. अने तेनाज जूदा जूदा रंग तथा आकार देखाय छे. तेनो नियम पाळजो. अर्थात् प्रेमरूपी ईश्वर सर्वत्र व्यापकछे.माटे जे ठेकाणे प्रेम लागे, त्यां ईश्वर छे एम धारजो. आ कवितमां गणावेला अक्षरनी विगत जे" ॐ नमः सिद्धं,"अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः" ए रीते २१ अक्षर थया. "क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण,त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व श ष स ह ळं क्षः"ए रीते व्यंजननाक्षरो ३५ थया ॥१९॥

॥ कवित ॥

कीजिये विचार न्यारी, मोटे अरु छोटे कोन, कोन उर, कंठ, तालु, रसना, दसन हे ॥ नासिका सुमार केते, मस्तक उ-चार ओठ, भीषम जुगल बानी, निगम बचन हे॥ अर्धमात्र, अ, उ, म्, मिल एक भयो सबे आदि,उनके उचार तार,जो-गिया जपन हे॥ शोधो शास्त्र बेद मत, बोध कांड तीनहूको, सागरज्यू प्रेम यामें किधों रूप अन्यहे ॥२०॥

अर्थ. भारे विचार करो के एमां गुरु अने लघु कया छे. अने उर स्थानी, कंठस्थानी, तालुस्थानी जिह्वामूळस्थानी, दंतस्थानी अने नासिका स्थानी गणन्निये केटला छे. मुर्धास्थानी तथा होठथी केटलानो उच्चार थाय छे. अने तेमां भीष्म कहेतां कठोर, अर्थात् घोषाक्षर, तथा अघोष

अक्षर वेदना वचन प्रमाणे कयाछे?ते सर्व अक्षरोथी पहेलो अर्ध मात्रावाळा मकार साथे अ ऊ मळीने ॐ अक्षर थयो. तेनो उच्चार तार एवे नामे कहेवाय छे, अने ते जोगियोने जपवानो छे. ए विषे छ शास्त्रनुं मत, तथा त्रण कांडवाळा वेदनो उपदेश शोधी जुओ,हे सागर ए बधायमां एक प्रेमनुंज रूपछे? के कांइ बीजुं छे? आमां बतावेला अक्षरोना स्थाननो खुलासो, यरलव हञणनङम उरस्थानी. अ तथा क वर्ग,ह, तथा विसर्ग,कंठस्थानी. इ, च वर्ग, य, श, तालुस्थानी. ऋ, ट वर्ग, र, ष, मुर्धास्थानी. ऌ,त वर्ग,ल,स, दंतस्थानी. उ, प वर्ग,अने उपध्मानीय,ओष्ठस्थानी. ञणनङम नासिकास्थानी. अर्ध विसर्ग जिंव्हामूळ स्थानी छे. प्रत्येक वर्गना पहेला वचे अक्षरो तथा श ष स एटला अघोष्ट अक्षर छे. अने स्वर सुद्धां बाकीना घोषाक्षरछे ॥२०॥

॥ दोहा ॥

घोप रेफ व्यंजन अधर, कंठ तालु सुर जान ॥
नासा विन उच्चार यह, कहा प्रेम पहिचान ॥ २१ ॥

अर्थ. घोप, रेफ, अने व्यंजन वगेरनां होठ, कंठ, ताळवुं अने उर तथा नासिका इत्यादि स्थानक छे, ते विना जेनो उच्चार थाय छे. तेने ओळखवो एज प्रेमनी ओळखाण कहीछे,मतलबके ॐकारने ओळखवो.२१

॥चित्रालंकार ॥ कवित ॥

सवालच्छ भारत हे,कंध बारा भागवत, रामायन सप्त कांड रूपिने वखानि हे ॥ बावन उपनिषद, श्रुति, समृती विचार, गीताको अरथ कियो सवही प्रमानी हे ॥ दर्श पटकेउ मुनि, निज निज लगे बोध, जूदे जूदे भेद कर उने उर आनि हे ॥ सागरज्यु प्रेम सिंधु लहर मिलंत मुक्ति, सोय भेद पावत

क्यों; "आवत न वानी हे" ॥ २२ ॥

अर्थ. सवालाख श्लोकनुं भारत छे. अने बार स्कंधनुं भागवत् छे. अने सात कांडनी रामायण ऋषिये वखाणीछे. बावन उपनिषद श्रुति तथा स्मृतियो विचारीने ते सर्वनो अर्थ लावीने गीता करी. ते सौये प्रमाण करीछे. अने ते गीताथी छ दर्शनवाळा केटलाएक ऋषियो पोत पोताना मतनो उपदेश करवा लाग्या. ने जूदा जूदा भेदे करीने एओए मनमां धारी छे. हे सागरजी प्रेमना समुद्रनी लहेरथी जे मुक्ति मळेछे. ते उपर लखेला भेदवाळाओ पामेछे? के "तेओनी वाणीमां ते वात आवती नथी"? तेनो उत्तर एछे के "तेओनी वाणीमां ते वात आवती नथी." मतलब के प्रेमनी लहेर तो अनुभवी ज्ञानवाळाज पामेछे. वाणी कथनारा पामता नथी. प्रश्न अने उत्तर एकज वाक्यमां होय, ते चित्रालंकार कहेवायछे.॥२२॥

॥ अथ अतिशयोक्ति विभावनालंकार ॥ सवैया ॥

वद्दरहे न, लवे कहुं दद्दर, अद्दर मोरनके दरसी ॥ घोर घटा नहि, सोर भयो, चपाला चिहु ओरन, गो परसी ॥ धूर धसे, मघवा न लसे, धनु सूर कला सरसे सरसी॥ गिरिराजके तुंगन नीर वह्यो सु, न जानत कोन घटा वरसी ॥ २३ ॥

अर्थ. वळी प्रवीण समझ्या लखेछे के आंही, वादळां चड्यां नथी. अने कोइ ठेकाणे देडकां बोलेछे. अने तेनी अंदर मोरनी वाणी पण देखायछे. घोरघटा चडी नथी, पण सोर थायछे, अने चारे तरफथी वीजळी दिशाओने स्पर्श करेछे, वर्षाद शोभतो नथी. अथात् चड्यो नथी, अने वर्षादना वरा धसेछे. अने देवना धनुपनी कळा सारे सारी देखायछे, पर्वतना शिखर उपरथी पाणी वह्युं. ते हुं जाणती नथी, के ए ते कइ वादळी वरशी? ए समझ्यानो भावार्थ एछे जे देडकानी पेठे, अने मोरनी पेठे

हुं आलाप करूंछुं. विजळीनी पेठे मारी चपळ दृष्टि आपनी दिशा तरफ दोडेछे, ने वरसादना वरानी पेठे मारी आंखमांथी आंसु धशी आवेछे. मारी भमरो इंद्र धनुषनी पेठे चडी रहेछे. अने मारा स्तनरूपी पर्वतना शिखर उपर ते आंसुनो प्रवाह वहेछे. ॥२३॥

॥ सोरठा ॥

यहे समश्या आन, पाती लखी प्रबीन ज्यू ॥
सागर अतिहि सयान, बांचतही बूझी सबे ॥ २४ ॥

अर्थ. एवी समश्या आणीने प्रवीणे पत्र लख्यो. रससागर महा डाह्या छे. माटे ते बांचतांज बधी वात समजी गया. ॥२४॥

॥पुनःसागरोक्त समश्या भेद ॥ सोरठा ॥

भेद समश्या लाय, सागर लिखे प्रबीन प्रति ॥
सो अब कहत बनाय, जानहि जाननहार जन ॥२५ ॥

अर्थ. हवे समश्यानो भेद लावीने सागरे जे प्रवीणने पत्र लख्यो. ते बनावीने कहुंछुं. ते जाणनारा जन जाणी लेशे. ॥२५॥

॥ सवैया ॥

मांग बजार किधों चढिकें, यह केश मयूर ठग्योहे ठगारो ॥
हार हिंडोर किधों तपिकें, कुचकी रुच मांग लई निरधारो॥
बेसर खेलि किधों नटवा, द्रग कज्जर रीझ लई सु निहारो॥
एहो प्रबीन परेख कहो यह, एसे भयो मुकता अधिकारो ॥२६॥

अर्थ. हे प्रवीण नमे आवीने परीक्षा करीने कहो के जेनो आवो अधिकार थयोछे. ते मोती कयुं हशे. सेंथारूपी बजारमां जइने चोटलारूपी ठगारा मोरे तेने ठगी लीधुं छे, किंवा हाररूपी हींडोळाना दोरडा उपर ऊंधे माथे

तप करीने स्तन उपर रहेवानी रूची नकी तेणे मागी लीधी छे. किंवा नाकनी वाळीमां नटरूपे नाचीने नेत्रना काजळनी मोज लीधी छे. ते जुओ. मतलब के मारूं मन मोतीनी पेठे तमारा अंग साथे मळीने रेहेछे. ॥२६॥

॥चित्रालंकार ॥ सवैया ॥

एक नवीन समीर चल्यो, तिनसें जल धार घटा बरसे ॥
वे जल धार परी तिनसें, इक पावक ज्वाल घनी दरसे ॥
पावक ज्वाल भई तिनसें, इक बेल हरीहि हरी सरसे ॥
कोनहि बेल,भइहे कहां,कहि ठोर,"प्रबीन रहे परसे"॥२७॥

अर्थ. एक नवा प्रकारनो पवन चाल्यो, तेथी घटामांथी जळनी धार वरसवा लागी, ते जळनी धारा पडी, तेथी एक अग्निनी झाळ घणी देखाई. ते झाळमांथी लीलो लीलो एक वेलो सरस प्रगट्यो, ते कयो वेलो? कये ठेकाणे थयो,? अने हे प्रवीण? कये ठेकाणे स्पर्श करीने रह्योछे! ते कहो. मतलब के इश्कनो पवन चाल्यो, तेथी आंखोमांथी धारा चाली,अने तेथी विरहनी झाळ लागी.अने तेमांथी प्रेमनी वेल प्रगटी.ते मारा अंतःकरणमांथी प्रगटी, अने तमारा उपर वळगी रहीछे. आ आखो सवैयो प्रश्नरूपे छे. पण तेमांथीज उत्तर नीकळेछे के "प्रवीन रहे परसे" प्रवीणने स्पर्श करीने रहीछे. ॥२७॥

॥ पुनःचित्रालंकार ॥ दोहा ॥

घट राखत पानी ढरे, रहे सु एक रती न॥
घट फूटे पानी रहे, कारन कोन प्रवीन ॥ २८॥

अर्थ. प्रश्न--घडो राखवाथी पाणी ढोळाई जाय. ने एक रतिमात्र पण रहे नहीं. पण घडो फूटे तो पाणी रहे. हे प्रवीण? एनुं कारण शुं हशे? एनो उत्तर एमांज छेके देह राखवाथी पाणी एटले टेक जती रहेछे,अने एक

प्रीति पण रहे नहीं. पण जो शरीर नाश पामे तो टेक रहे? एज एनुं कारण छे. ते कोण चतुर जाणतो नथी? ॥२८॥

वाजीगर वाजी बिहद, खेलत करत कमीन ॥
देखनहारे उठ चले, कारन कोन प्रवीन ॥ २९ ॥

अर्थ. प्रश्न. एक बाजीगरे बेहद बाजी रची. अने खेल करेछे, तेमां कांइ खामी नथी. पण जोनारा उठीने चाली नीकळ्या. हे प्रवीण तेनुं कारण शुं हशे? एनो उत्तर पण एमांज छे, ते ए रीते के ईश्वररूपी बाजीगरे दुनियांरूपी बेहद बाजी रचीछे, तेना खेलमां कांइ खामी नथी. पण मारां नेत्ररूपी जोनारां ते जोवाने चहातां नथी, तेनुं कारण कोण जाणवामां प्रवीण नथी? अथात् सौ जाणेछे. ॥२९॥

वांस कटे वंधे बरत, अंबरहे न जमी न ॥
नटवा चढि उतरत नहीं, कारन कोन प्रवीन ॥ ३० ॥

अर्थ. प्रश्न. दोरडां वांधेलो वांस कपाइ गयो. ते आकाशमां के पृथ्वीमां जणातो नथी. पण ते उपर जे नट चडेलो, ते उतरतो नथी. हे प्रवीण तेनुं कारण शुं हशे? एनो उत्तर एमांज छे के मारा मननी वृत्ति वडे बांधेलो आशारूपी वांसडो कपाई गयो. पण ते आशा उपर चडेलुं मारुं मन उतरतुं नथी. तेनुं कारण जाणवामां कोण प्रवीण नथी? ॥३०॥

हंसा मंसाकों चुगे, सूके सरवर मीन ॥
जल वरपे अगनी झरे, कारन कोन प्रवीन ॥ ३१ ॥

अर्थ. प्रश्न एक हंस मांस खाय छे, अने सुका तळावमां माछलां छे, वळी पाणी वरसे छे, अने आग झरेछे, हे? प्रवीण तेनुं कारण शुं हशे?

उत्तर--मारो जीव मारा शरीरना मांसने खायछे. अर्थात् शोषण करेछे; मारी आंख्योमांथी पाणी सुकाइ गयां छे. पण डोळारूपी माछलां

तरफडे छे. तोपण आंख्योमांथी आंसु वरसे छे. अने विरहनी आग झरे छे. तेनुं कारण जाणवाने कोण प्रवीण नथी? ॥३१॥

॥ अथ अनन्वयालंकार ॥सोरठा॥

इहि विधि भेद अनेक, दुहु लखंत जानंत दुहु ॥
बानी बिबिध विवेक, उनहीके उनही बने ॥ ३२ ॥

अर्थ. ए प्रकारे समझ्याना अनेक भेदथी बन्ने जणां लखेछे, अने तेओ बन्ने जाणेछे. तेमज एओनी वाणीना तरेह तरेहना विवेक पण एओनाथीज बनी शके. ॥३२॥

आवत पत्र अपार, सबे भेद कहत न बने ॥
शंक ग्रंथ विस्तार, बढन लिये संछेप किय ॥३३॥

अर्थ. ए रीते अनेक पत्र आवे छे, तेना बधा भेद कहेतां बनी शके नहीं. आ ग्रंथनो विस्तार वधी जवानी शंकाथी संक्षेपमां कह्या. ॥३३॥

॥ गाहा ॥

दंपति पत्रसु भेदं, करि संच्छेप समझ्या भंखिय ॥
उनषष्ठि अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥ ३४ ॥

अर्थ. स्त्री पुरुषना पत्रना भेदनी संक्षेपे करीने समझ्याओ कही, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी ओगणसाठमी लहेर संपूर्णथई. ॥३४॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे दंपति पत्र समझ्या भेद बर्ननो नाम एकोनषष्ठितमो लहरं ॥ ५९ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकोनषष्ठीतमस्तरंगः समाप्तः ॥५९॥

॥अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध॥छंद भुजंग प्रयात॥

कर्यो प्रेम द्रढाव जे दंपतिये, लख्या पत्र अन्योन्य प्रीती अतीये ॥
रचीने नवां काव्य रुडां लख्यां छे, कथा एटली साठमी लेरमांछे ॥

॥अथ श्री दंपति प्रेम दढाव पत्र भेद प्रसंगो यथा ॥सोरठा॥

दंपति विरह वढंत, पत्र लिखिय पूरन दशा ॥
प्रेम द्रढावन चंत, उर आशय अनुमान किय ॥१ ॥

अर्थ. विरह वधवाथी स्त्री पुरुष एक बीजाना मनमां प्रेम द्रढावासारुं हृदयना अभिप्राय प्रमाणे अनुमान करीने पूर्ण दशाना पत्रो परस्पर लखी मोकलावे छे. ॥१॥

॥ तत्र कलाप्रवीनोक्त प्रेम द्रढावन पत्र भेद ॥
॥ द्रष्टांतालंकार ॥दोहा॥

दीपक जोत उद्योत लखि, प्रेम न कीनो भंग ॥
देखो अंग पतंगको, रह्यो रंग मिल रंग ॥ २ ॥

अर्थ. दीवानी जोतिना प्रकाशने जोईने जेणे प्रेमनो भंग कीधो नहीं. अने दीवाना रंगनी साथे जेनो रंग मळी रह्यो छे. एवा पतंगना अंगने जुओ. ॥२॥

॥अथ रूपकालंकार ॥दोहा॥

सागर सागर प्रेमको सुरत लहर चढि चाहि ॥
लाज ज्वाल हटकत अटकि, यों निशबासर जाहि ॥३॥

अर्थ. हे सागर प्रेमना समुद्रमां सुरतरूपी लहेर उपर मारी चाहना चढेछे. पण ते लाजरूपी जुवाळ एटले वेळथी हठीने अटकी रहेछे. अने एज रीते रातने दहाडा वीतेछे. ॥३॥

॥ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

बारहि मास उदास रहे सु, बिलास न चाहत नीर तटे ॥ सिंधु भरे सरिता सर कूप सु, चंचहु बारि कबू न चटे ॥ स्वांतहुको बिशवास गहे, निसबासरही पिय पीय रटे ॥ सागर प्रेमहुकी परखा, बरषा बरषे तरषा न मटे ॥ ४ ॥

अर्थ. बपैयो बारेमास उदास रहेछे, परंतु जळाशयने किनारे जईने विलास करवाने चाहतो नथी. अने स्वातिनो विश्वास धारीने रातदिवस पियु, पियु, एवी रीते रट्या करेछे, हे सागर प्रेमनी परीक्षा जुओ, के वर्षाद वरसे छे, तोपण तेनी तरश मटती नथी. ॥४॥

॥ अनन्वयालंकार ॥ सवैया ॥

आसत नासत हू नहि पावत, पीर फकीर कितेब कुरानी ॥ साधक सिद्ध सबे मिलि शोधत, बोधत बेद पुरानहि बानी ॥ मंत्रक जंत्रक तंत्रक भेद, निरंत्रक काहु नहीं पहिचानी ॥ ब्रेह बिथा किरतार करामत, सागर जानन हारन जानी ॥ ५ ॥

अर्थ. हे सागर विरहनी पीडाना भेदनी वात एवीछे के तेने आस्तिक, नास्तिक, पीर, फकीर, किताबी, अने कुरानी कोइ जाणवाने पामता नथी. वळी साधक सिद्ध सर्वे मळीने शोधे छे. अने वेदने पुराणनी वाणीनुं जे ज्ञान मेळवे छे, वळी जेओ मंत्र, जंत्र, ने तंत्रना भेद निरंतर करेछे. पण तेमांना कोई जाणी शकता नथी. एतो जगतकर्त्तानी करामत छे. ते जाणवावाळाएज जाणीछे. ॥५॥

॥ रूपकालंकार ॥ सवैया ॥

प्रान समाध लई करता, सुरता नल नाभि सरोज वढायो ॥ ब्रह्म भयो उतपंन सनेह, वहे बिरहा जलमें मुरझायो ॥ शोधत बाहिरको निकस्यो, परि पार न काहु विचारसें पायो ॥

ध्यान धर्यो बहुरचों, उनकों, सिगरेमहि सागर रूपजनायो ॥६॥

अर्थ. हे सागर, मारा प्राणरूपी करतारे समाधी लीधी, अने मारी नाभिमांथी अर्थात् अंत:करणमांथी सुरतारूपी कमळनी दांडी वधारी तेमांथी स्नेहरूपी ब्रह्मा उत्पन थयो, ते विरहरूपी जळमां मुझायो. पछी शोध करतां वहारतो नाकळ्यो. पण कोई विचारथी तेनो पार पाम्यो नहीं. पछी ज्यारे तेणे ध्यान धर्युं, त्यारे सर्व ठेकाणामां सागरनुं रूप जणायुं. अर्थात् ब्रह्माने जेम सघळे ठेकाणे समुद्रनुं जळ देखायुं, तेमज मारा स्नेहे सघळे ठेकाणे तमारुं रूप दीठुं छे. ॥६॥

॥ पंथिक अन्योक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

पंथिक सागर एक चल्यो, रितु ग्रीषमकी कछु राह न जानी॥
कच्छ करीर किते गिर लंघत, देह दिनेश मरीच तचानी ॥
पावकसी ज्यु बयार इतेपर, केति व्यथाकि गईहे कहानी ॥
डोर नही ज्यु नही अवरोहनि, प्यास लगी अरु कूपमें पानी ॥ ७ ॥

अर्थ. हे सागर एक मुसाफर चाल्यो, तेणे उनाळाना तापना रस्तानी कांइ वात जाणी नहीं, वेट, अने केरडानां वन तथा केटलाएक पर्वत उलंघतां तेनुं शरीर सूरजना किरणोथी दाझ्युं, एटला उपरांत वळी आग जेवा पवननी पीडानी केटलीएक कहाणी वीती, तेनी पासे दोरी नहोती. तेम कुवामां उतरवानां पगथीयां नहोतां. अने तेने तरश लागी हती. पण पाणी कुवामां हतुं. मतलबके मारा अभिलाषरूपी मुसाफर तमारा मेळापरूपी पाणीने चाहेछे, पण तेमां आडां अनेक संकटोछे. ॥७॥

॥ दृष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

जाय समीर मिल्यो हे समीरसें, तेज सु तेजहुमें मिल टूको॥

अंबुमें अंबु, अकाश अकाशमें, भाग पर्योइ रह्यो भुव भूको॥ पंचहू छांड चले मग आपके, काहु न संग लियोहे जिऊको॥ सागर एह दशा अनुमानहु, प्रेम सही इक प्रान लोहूको॥८॥

अर्थ. हे सागर, मारा शरीरमांथी पवन जइने पवनने मळ्यो. अने तेज तेजमां ढुकडुं थईने मळ्युंछे, जळमां जळ अने आकाशनो भाग आकाशमां अने पृथ्वीनो भाग पृथ्वीमां पड्यो रह्योछे. ए रीते पांचे तत्व मने छोडीने पोतपोताने रस्ते गयां. पण कोइए जीवनो साथ कर्यो नहीं. हे सागर मारी एवी दशानुं अनुमान करजो. अने प्राणनो अने लोहीनो साथी एक प्रेम रह्योछे. ॥८॥

॥ अथ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

वेधनकों न विचारतहे अरु, बीनको नाद सुनी मृग मोहे॥ पंकज बंध सहे ज्यु मधूकर, चातुक स्वांत विना तरस्योहे॥ चंद विना ज्यु चकोर चुगे शिखि, दीपक देखि पतंग जर्योहे॥ प्रान गुमावनकी न परे कल, सागर प्रेमको नेम असोहे ॥९॥

अर्थ. मृग वेधाइ जवानो विचार करतो नथी. अने वीणानो नाद सांभळी ने मोह पामेछे. तेमज भमरो कमळना बंधनने सहेछे. अने बपैयो स्वाति विना तरड्यो रहेछे. वळी चकोर चंद्र विना अग्निने चुगेछे. अने दीवाने जोइने पतंगियो बळी मरेछे. हे सागर प्रेमनो नियम एवो छेके तेने प्राण गुमाववानी खबर पडती नथी. ॥९॥

॥ सवैया ॥

विप्र जो वेद पढेतो कहा, जब जानि परी नहि वेदकि बानी ॥ गानक गान कियो तो कहा, उन राग कला सुर तान

न आनी॥ जोगि विभूति चढाई कहा, जब जोग कला न हिये अनुमानी ॥ सागर प्रीत करी तो कहा, जबलौं जिय प्रीतकि रीत न जानी ॥ १० ॥

अर्थ. जो वेदनी वाणी समजवामां आवी नहीं, तो ब्राह्मण वेद भणे तेथी शुं? जो राग कळामां स्वर ताळ आणी शकायां नहीं, तो गानारे गान कर्यु तो शुं ? जो जोगकळानो हैयामां अनुभव कर्यो नहीं, तो जोगिये विभूति चडावी तो शुं ? तेमज हे सागर ज्यांसुधी जीवमां प्रीतनी रीत जाणी नहीं, तो प्रीत करी तो शुं? ॥१०॥

॥ उपमालंकार ॥ कवित ॥

प्रान पशु पतिकी जटासें मन मेर गिर; सकुच सुरंग साखी, फोर तोर फहरे ॥ बिरहा मिहीर तेज,तपत तुहीन जिय, प्रगल प्रवाह प्रेम पूर लगी लहरे॥ मकर मनोज भेद, करत कलोल मोद, अभिलाष रंग रंग कंज पुंज ठहरे॥ सागर समीप स्रोत होयकें हजार धार, गंगके तरंग ज्यौं उमंग मिली गहरे ॥ ११ ॥

अर्थ. हे सागर मारा प्रेमरूपी गंगा, प्राणरूपी शिवनी जटामांथी मनरूपी मेरु पर्वत उपर लाजरूपी सरंगने तथा झाडोने फोडी तोडीने फेलाई. तेमां वळी विरहरूपी सूरजना तेजथी मारा जीवरूपी बरफ तप्याथी पीगळीने प्रेमरूपी प्रवाहना पूरनी लहेरो लागी. तेमां कामदेवरूपी मगर अनेक भेदरूपी कलोल ने आनंद करेछे, अने अभिलाषरूपी रंगबेरंगी कमळना समुदाय ठर्याछे, अने मारी सुरत हजार धाराओरूपे थईने तमारा समीपमां गंगाना तरंगनी पेठे गंभीर उमंगथी मळेछे. ॥११॥

॥रूपकालंकार ॥ दोहा ॥

खेल सेलके बांस पर, वरत धार तरवार ॥ 1
मन नटवा साची सुरत, चढे तो उतरे पार ॥१२॥

अर्थ. भालारूपी वांस, तरवारनी धाररूपी दोर उपर खेलवाने मनरूपी नट, खरेखरी सुरत राखीने चडे, तो पार उतरे. ॥१२॥

॥अथ रस सागरोक्त प्रेम द्रढाव भेद विरोधा भास॥
अलंकार ॥दोहा॥

प्रेम कुंड पावक नयों, मनों सु यह अनुमान॥ 2
पर पर कह्यो प्रवीन ज्यु, पर पर समज्यो प्रान ॥१३॥

अर्थ, हवे सागर कहेछे के अग्निथी भरेलो कुंड होय, जाणे के एज प्रकारनो प्रेम पण छे; माटे समजुये कह्युं के तेथी वेगळो रहे; पण मारो प्राण एम समज्यो के तेमां पड पड एम कहेछे. ॥१३॥

॥ जातिस्वभाव अलंकार ॥ दोहा॥ 3

बे दरदी जरदी समर, ताकों लगे न तीर ॥
दरदी घट पट हे नहीं, कैसें बचे शरीर ॥ १४ ॥

अर्थ. जे इशकना दरदी नथी, तेओने अंगे अजाणपणारूपी बखतर छे. माटे तेओने कामनां बाण वागतां नथी. पण दरदीना शरीर उपर ते पडदो नथी, माटे तेनुं शरीर शी रीते बचे? ॥१४॥

॥अथ शिक्षाक्षेप अलंकार ॥ सवैया॥

तूंहिय तुंहि जपे रितु सीतमें, तूंहिन तुंगन त्यूंहि गलेगा ॥
तापनमें करि तापन तापनि, आपन या पन धारि जलेगा॥
पावस एकहि पाव स व्है,परवीन धुनी रससें न डुलेगा॥ प्रेमको थान निदान मिले तह,जो जन को इहि राह चलेगा १५

अर्थ. जे शियाळामां तुंही तुंही एम जपशे. तेमज हिमालयना शिख-

रमां जइने गळशे. अने उनाळामां तापणीनो ताप करीने पोते एज प्रतिज्ञा धरीने बळशे. अने चोमासामां ते एक पगे थइने बीजाकोइ सोबती विना रहीने नदीना पाणीथी डगशे नहीं, जो कोइ माणस ए रस्ते चालशे, तो त्यां तेने प्रेमनुं ठेकाणुं नक्की मळशे. ॥१५॥

॥ दोहा ॥

सीत घाम जलमें सदा, तपे जपे मुख नाम ॥
चले ज्यु याही रीतसें, मिले प्रेमको धाम ॥ १६ ॥

अर्थ. टाढमां, तापमां, अने जळमां निरंतर तपे. अने मोढे नाम जपे. ए रीते जो चाले तो प्रेमनुं ठेकाणुं मळे. मतलब के जे जे संकट पडे, ते सहन करे, त्यारे प्रेमी मळे. ॥१६॥

॥ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

दीपसें प्रेम पतंगनको, अरु पंकज भ्रंगनको सुख पूरत॥ चं-
दसें प्रेम चकोरनको, घनघोरनसें नित मोरनको रत॥ चातु-
क प्रेमहि बुंदनसें, जलजातको प्रेमहे सूरकि सूरत ॥ जान-
तहे इहि रीत सदा हम, प्रेमको रूप प्रबीनकि मूरत॥१७॥

अर्थ. जेम दीवानी साथे पतंगियानो प्रेम छे. अने कमळ भमरानुं सुख पूरण करेछे. चंद्र साथे चकोरनो प्रेमछे. अने वर्षादनी गर्जना साथे हमेशां मोरनो प्रेम छे. चातुकनो प्रेम (स्वातिना) बुंद साथे छे. अने कमळनो प्रेम सूरजनी सुरत साथेछे. एज रीते अमे निरंतर प्रवीणनी मूर्तिनेज प्रेमनुं रूप जाणिये छिये. ॥१७॥

॥ समरूपकालंकार ॥ सवैया ॥

शोच पहाण संकोचदे आरण, मोहदी सीह दा दाहको ने-
दा ॥ दीददि प्यास सहंदे वहंदे, दुखाणदि खोह पयाणनि

तेडा ॥ मिंतदा ध्यान विहंगदि नंखण, झोला झुटा बीरहाणदा वेडा ॥ लाजदि गंग आतंकदे खांडणु, प्रेमदा पंथ केदारदा पेडा ॥ १८ ॥

अर्थ. "जेम केदारनाथना रस्तामां विकट जग्या, तथा शींकामां पग मुकीने पगे ध्यान अने मुखे राम राखीने कुदीने जवुं पडेछे. प्रेमनो पंथ पण एवोज विकट छे."--के सोचनारूपी पथरा, संकोचरूपी अरण्य एटले जंगल मोहरूपी सिंहण, अने प्रेमरूपी दावानळनुं बळवुं. दर्शननी इच्छारूपी तरश सहन करीने चालवुं, अने दुःखरूपी गुफा, अने चालवानो रस्तो वांकोछे. मित्रना ध्यानरूपी पक्षियोनुं बोलवुं, अने विरहरूपी मछवाना झोला एटले शींकां झूली रह्यांछे. अने लाजरूपी गंगा उतरवी. अने भयनुं खंडन करवुं. अथात् निर्भय थइने चालवुं. एटलां संकट केदारना रस्तामां छे. तेमज प्रेमनो पंथ पण केदारना रस्ता जेवोछे. ॥१८॥

॥ सहोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

जल धारके संग कला चपला, अरु नीरके संग कुमोद नरी॥ अहि नच्छन संग हलाहलको बल, प्रेमल पोन लगी विहरी ॥ विसतार हुताशन संग धुंवा, यह रीत प्रवीन वनाय धरी ॥ बिरहा दुख दान सनेहके संग, बढे मनु बामनकी लकरी ॥ १९ ॥

अर्थ. वरसादनी साथे विजळीनी कळा वधे. अने पाणी वधवानी साथे पोयणीनी डांडी वधे. अने सर्प जेम जेम खोराक करे, तेम तेम तेनी साथे तेना मुखमां झेरनुं बळ वधे. अने पवननो विहार जेम लांबो वधे. ते साथे लागीने सुगंध पण वधारे फेलाय. अने अग्निना विस्तार साथे धुंवाडानो पण विस्तार थाय. हे प्रवीण? इश्वरे एवीज रीत बनावी राखीछे. अने जाणे

के वामनजीनुं शरीर वध्युं, तेनी साथे तेनी लाकडी वधती जती होय, ते-मज जेम जेम मारो स्नेह वधतो जायछे, तेम तेम दुःखदायक विरह पण वधेछे. ॥१९॥

॥ द्रष्टांतालंकार ॥ कवित ॥

वेध्यो जो शरीर तीर, पलहु न धरे धीर, सुध न तमासगीर, उ-
न्न है के सीराहे॥ गिरिके अताग पानी, तरीकें तिसानी बाट,
गईहे न जानी बिन चले एसी ईराहे॥ जो न नेन देखीहे सो,
लेखीहे सबे समान, पथ्थरके पुंजमें परेखी हे न हीराहे॥ तन
मन नेन जोई, बीतत है पावे सोइ, पाय न प्रवीन प्रेमी बिना
कोउ पीराहे ॥२०॥

अर्थ. जेनुं शरीर तीरथी वींधायुं होय, ते पळ मात्र धीरज धरीशके नहीं. पण ते तीरनो घा उनोछे, के टाढो, तेनी खबर (तमासगीर) जो-नाराने पडती नथी. जे (इरा) पृथ्वीमां जे चालीने गया नथी. तेओने खबर नथी. के त्यां पर्वतछे के अथाग पाणीछे. झाडछे, के तरशे मरिये एवो म्हारोपाट छे. जेओ नजरे देखता नथी, तेओ सघळुं सरखुं जाणशे, अने पथ्थरना ढगलामां पडेला हीराने परखी शके नहीं. तेमज प्रेमनी पीडा जेने वीती होय, तेज शरीर मन अने नेत्रोने जोईने जाणी ले, पण प्रेमी विना कोइ जाणी शके नहीं. ॥२०॥

॥अथ अनन्वयालंकार॥ कवित ॥

चातुर्कीकों बुझो बुंद पाये बिना कहा होत, कहा होत मींन
बुझो बिछुरे जो नीराहे॥ बुझिये चकोरकों जो चंद बिना उ-
ने कहा, बुझिये मधूप कहा होत कंज बीराहे॥ हारनकों बु-
झिये जो काठ छांडिये तो कहा, बूझीये पतंग कहा दीपकमें

सीराहे ॥ जाय वीती सोय जाने प्रेम नां पिछाने और, ही-
राकी सलाख ज्यों प्रवीन एक हीराहे ॥२१॥

अर्थ. बपैयाने पुछो के स्वातिनुं बुंद पाम्या विना शुं थाय ? माछ-
लांने पुछो के पाणीथी जुदां पड्ये शुं थाय ? चकोरने पुछो के चंद्रना उ-
ग्या विना शुं थाय? अने भमराने पुछो के कमळ बीडाइ गयुं तो शुं थाय?
हारण पक्षीने पुछो के लाकडुं मुंकी दईये तो शुं थाय ? पतंगियाने पुछो
के दीवामां एवडी बधी शी थंडक छे ? हे प्रवीण ? जेम हीरानी परीक्षा
करवानी शायडी एक हीरानीज होयछे, तेमज जेने वीती होय, तेज जाणे,
प्रेमनी पीडा बीजो कोइ जाणे नहीं. ॥२१॥

॥ अथ स्मृतिमान अन्योक्ति अलंकार ॥ कवित ॥

आगेहे चकर, पाछे मकर निकर लागे, दोउ ओर आवनके
अगहन गरहे ॥ खुटे खान पान, टुटे नांगर निशान डोर,
एतेपें स्वसानहुकी उलटी अखरहे ॥ मालुम भयोहे अंध,
रोधकी न शोध कहुं, फूट गयो नाव सो कहांलों दधि तरहे॥
कीजिये उपाय आय, लीजिये प्रवीन सुधि, हाय हाय जायकें
पुकार कोउ करहे ॥ २२ ॥

अर्थ. डोलता वहाणनो दाखलो--आगळ चकर एटले पाणीनी मोटी
भमरियो पडेछे. अने पाछळ मगरनो समुदाय लाग्योछे. अने बन्ने तरफ
पथ्थरना दुर्गम पर्वतो छे. खावापीवानुं खुटी गयुं छे. अने नांगर, तथ नि-
शानना दोर तुटी गया छे. एटला उपरांत वळी पवननी आखर उलटीछे.
अने टंडेल आंधळो थयो छे. किनारानो तो क्यांय शोध लागतो नथी. अने
वहाळ फूटी गयुं, ते हवे समुद्रमां क्यां सुधी तरशे? माटे हे प्रवीण? आ-
वीने कांइ उपाय करो. अने संभाळ ल्यो, अरे हाय हाय? एवो पुकार

कोइ जईने करशे? ॥२२॥

॥ रूपकालंकार ॥ दोहा ॥

वन विचार मन मानसर, भर्यो प्रेम बहु बार ॥
सुख मुगता हंसा बिरह, निश दिन चुगत किनार ॥२३॥

अर्थ. विचाररूपी वनमां मनरूपी मानसरोवरछे.तेमां प्रेमरूपी वणुं पाणी भर्युंछे. तेने किनारे रहेलो विरहरूपी हंस रात दिवस सुखरूपी मोतीने चुगे छे. ॥२३॥

॥ सोरठा ॥

मन पाटी गुन मेख; प्रेम कडी उतरे चढे ॥
सिधगज बिरह बिशेष, घट गोरखधंधा भयो ॥२४॥

अर्थ. (जोगी लोको लोढांनो गोरखधंधो राखेछे. तेमां लोढानी पाटी तथा घणी कडीयो होयछे. तेमां लोढानो एक गज होय छे. तेनुं नाम सि-द्धगज कहेवाय छे. ते कडियोमां गुथायेला होय छे. अने ते कडियोनी चालवणी करतां आवडती होय, तेज छूटो पाडी शकेछे. तेनो आमां दा-खलो छे.) मनरूपी लोढानी पाटी छे,अने गुणरूपी तेमां खीलियो होयछे, अने प्रेमरूपी कडी चडेछे, ने उतरे छे. अने वधारे विरहरूपी सिद्धगजछे. ए रीने आ मारुं शरीर गोरख धंधा रूपे थयुं छे. ॥२४॥

॥ दृष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

बधक एक प्रवीन चल्यो, उनही मनमें उपचार कर्यो॥ गा-नके रंग कुरंग चढे जहाँ नेहको दीप जगाय धर्यो ॥ एनकों सूझतहे न कछु, कर पारधि ले सर पार कर्यो ॥ बीनको नाद सुनेगो कहां, इतनी कहिकें मुरझाय पर्यो ॥ २५ ॥

अर्थ. हे प्रवीण ? एक पारधी चाल्यो,तेणे पोताना मनथी उपाय गो-

ळ्यो. ते एवी रीते के जे ठेकाणे हरण गायनना रंगमां चडे. ते ठेकाणे तेलनो दीवो प्रगटीने मुक्यो.ते जोइने हरणने तो कांइ सुज पडी नहीं,अने पारधिये हाथमां तीर लइने आरपार कर्यो, त्यारे ते मृग अरे हवे वीणा-नो नाद क्यां सांभळीश. एटलुं कहीने मुंझाइने पड्यो. मतलबके मारा मनरूपी मृगने तमे शिकारीरूपे मधुरवाणी संभळावीने नेहनो दीवो देखाडीने कटाक्षरूपी बाणे विंधी नाख्युंछे.तो पण ते मधुरवाणी हुं क्यां सांभळीश. एम कहीने मुझवणमां पड्युंछे. ॥२५॥

॥ सोरठा ॥

इहि बिधि प्रेम द्रढाय, पाती लिखि एकेक प्रति ॥
त्यों त्यों बिरह बढाय, ज्यों ज्यों बंचत भेद वह ॥२६॥

अर्थ. एवी रीते प्रेम द्रढावीने एकबीजाना उपर पत्रो लख्या, ते बन्ने जणां जेमजेम कागळना भेद वांचे छे. तेम तेम विरह वधतो जायछे.॥२६॥

॥ गाहा॥

दंपति प्रेम बिधानं, प्रति एकेकं पठावनं पत्रं ॥
षष्ठिअंक अभिधानं पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥ २७॥

अर्थ. बन्ने स्त्री पुरुषे परस्पर एक बीजा उपर प्रेमना विधानना पत्रो लखी मोकल्या.ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी साठमी लहेर संपूर्ण थई.२७

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे कलाप्रवीन रससागर प्रेम द्रढाव,पत्र भेदो नाम षष्ठितमो लहरं ॥ ६०॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां षष्ठितम स्तरंगः समाप्तः ॥६०॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

बहिरंतर्लापिक कवित, कर्या स्त्रि पुरुषे जेह ॥
एकसठमी आ लहेरमां, विगते कहेशे तेह ॥

॥ अथ दंपति श्रीमुखोक्त बहिर्लापिका, अंतर्लापिका भेद ॥

॥ प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

प्रेम विरह चित चातुरी, दंपति भये बिकास ॥
श्रीमुख उक्ती मित लिखित, सो अब कहे प्रकास ॥१॥

अर्थ. ते स्त्री पुरुपना चित्तमां प्रेम विरह अने चतुराइनो प्रकाश थयो. तथा तेओ बन्नेना शोभायमान मुखनी जे वाणी परस्पर मित्र प्रत्ये लखी मोकली, ते हवे प्रसिद्ध रीते कहिये छिये. ॥१॥

॥ सहोक्ति अलंकार ॥ छपय ॥

ज्यों बिछुरन दिन बढत, बढत बिरहानलको बल ॥
बढत प्रेम परवाह, बढत स्मर त्यों मन निर्मल ॥
बढत चाह मित मिलन, बढत चितमें चतुराई ॥
बढत साध सोधना, बढत उक्ती उर आई ॥
दंपति बढंत एसी दशा, सागर कलाप्रवीन जिय ॥
लापिका बहिर अंतर सु तब, श्रीमुख चित्र सुकाव्य किय ॥२॥

अर्थ. जेम जेम वियोगना दिवस वधता जायछे. तेम तेम विरहाग्निनुं बळ वधतुं जायछे. अने जेम जेम प्रेमनो प्रवाह वधतो जायछे. तेम तेम बन्नेना निर्मळ मनमां कामदेव वधतो जायछे. जेम जेम मित्रने मळवानी चाहना वधती जायछे. तेम तेम चित्तमां चतुराई वधती जायछे. अने जेम जेम मळवाना साधननुं शोधन वधतुं जायछे. तेम तेम अंतःकरणमा आ-वीने वाणी वधती जायछे. ए रीते सागर ने कळाप्रवीण पोत पोताना जी-

वनी दशा ड्यारे वधती गइ. त्यारे अंतर्लापिका अने बहिर्लापिका तथा चित्र कविता शोभायमान मुखे करी. लापिका एटले चतुराई, जे छंदना अक्षरोमांज युक्ति होय, ते अंतर्लापिका कहेवाय. अने छंद बहारथी अक्षर लेवा पडता होय, ते बहिर्लापिका कहेवाय. ॥२॥

॥ अथ कलाप्रबीन श्रीमुखोक्त बर्नभेद बहिर्लापिका ॥

॥ सवैया ॥

पंचहु अच्छर सागर हो ;	मं हिं रां मं नं.
गिनती करि भेद सबे गहिये ॥	
द्रु दुसरे अरु अंत करी यह ;	द्रुहिन.
जो कहिबी सो उने कहिये ॥	
ने अरु अंत अखंड लगे मग ;	नेन.
अंत दुहूके दुहू मिलिये ॥	मन.
आदिके अंत ले मांगत हे हम ;	मले.
हे बिन हेकि दुहाइ किये ॥ ३ ॥	राम.

अर्थ. हे सागर तमे पांच अक्षरना नामवाळा छो, ते ए छेके "मंहिं-रांमंनं" ते अक्षरो उपरथी गणतरी करीने जे हुं भेद कहुं, ते ग्रहण करी लेशो, तेनी विगत जे "द्रु" अक्षर पछी बीजो ने छेल्लो अक्षर करीने जे कांइ कहेवुं घटे, ते तेने कहेवुं जोइये. मतलब के "द्रुहिन" कहेतां ब्रह्माये आपणुं एवुंज नशीब लख्युं. माटे तेने ठबको देवो घटे छे. वळी "ने" अने तमारा नामनो छेल्लो अक्षर "न" एटले "नेन" अखंड तमारा मारग सामां लागी रह्यां छे. अने तमारा नामना छेल्ला बे अक्षर "मन" ते आपणां बेयनां साथे मेळविये. तमारा नामना आदी अक्षरनेज छेडे "ले" एटले "मले" अथात् मळवाने अमे चाहिये छिये. ते तमारा ना-

मना पहेला बे अक्षर विना बे अक्षर "राम"नी दुहाइ खाईने कहुंछुं. ए सवैयामां "महिरामन" एवुं नाम नथी. ते बहारथी लेवुं पडेछे, माटे ते बहिर्लापिका भेदछे ॥३॥

॥ अथ आद्यक्षरी अंतर्लापिका ॥ दोहा ॥

स	र वेधतहे चतुर बिन,	समर
म	ध्य त्रतिय बिन आय ॥	समन
र	ज मुख मांगत दुतिय बिन,	सरन
न	कट आदि बिन चाय ॥४॥	मरन

अर्थ. हे सागर ? आ दोहराना प्रत्येक चरणना आदि अक्षर एटले "स॑म॒र॓न॔" हुं तमारुं राखुंछुं. तेना चोथा अक्षर "न" वगरनो "समर" एटले कामदेव बाणथी मने विंधेछे. अने त्रीजा अक्षर "र" विना "समन"एटले ते मनमां आवीने वींधेछे. अने बीजा अक्षर"म" विना अर्थात् तमारा "शरण" विना मोढामां धूळ खावाने चाहुंछुं. अने आदि अक्षर "स" विना अर्थात् "मरन" ढुकडुं चाहुंछुं. ॥४॥

॥ पुनः दोहा ॥ स॑ म॒ र॓ न॔

हनत बिजोगी अंत बिन,
त्रतिय बिनामें आय ॥
द्वितिय बिना मांगत तुमे;
प्रथम बिना लगि पाय ॥५॥

समर
समन
सरन
मरन

अर्थ. "हे सागर तमारुं जे हुं राखुंछुं. ते एछे के "स॑म॒र॓न॔" एना छेल्ला अक्षर "न" विना अर्थात "समर" कामदेव मने वियोगणने त्रीजा अक्षर "र" विना एटले "समन" अर्थात् (स) ते मनमां आवीने मारे छे. वळी बीजा अक्षर "म" विना एटले हुं तमारा "शरण" विना प-

हेला अक्षर "स" वगरनुं एटले "मरण" मागुंछुं. ॥५॥

॥ अथ वहिर्लापिका प्रश्नोत्तर भेद ॥ छपय ॥

पाओ बिना कर नांहि,	अ	रुण
उदर गुरु नांहि छुधातुर ॥	पु	ष्कर
रसनावती सुने न,	ने	पुर
श्रवन दो तास नयन सुर ॥	द	रवी
नाथ बाघ आकार,	र	मा
नाइ कर नीच मिलावे ॥	स	विता
वेधासुत कुन वक्र,	की	श
रसिक अति भूप रिझावे ॥	चा	रन
ले हार काळ भूषन करहि,	ह	र
सन्ना मध्य को उच्चरे ॥	त	कवादी
खट तीस होतहे नारि नर,	रा	ग,रागणी
अरथ एह सागर करे ॥ ६ ॥		

अर्थ. प्रश्न.	उत्तर.
पग वगरनो छे. अने हाथ पण नथी, ते कोण हशे?	अरुण.
जेनुं पेट मोटुंछे, पण क्षुधातुर नथी, ते कोण हशे?	पुष्कर, आकाश,
जे जीभवाळी छे, अर्थात् उच्चारण शक्ति तेनामां छे. पण ते पोते सांभळती नथी, ते कोण हशे?	नेपुर, झांझरी.
एवो कोण छे के तेनी बे आंख्यो स्वर सांभळेछे?	दरवी, सर्प, चक्षुश्रवा.
जेनो नाथ वाघने आकारे थयो, ते कोण हशे?	रमा, लक्ष्मी
पोताना कर नमावीने नीचनी साथे पण मेळवेछे, ते कोण हशे?	सविता, सूरज.
ब्रह्माना पूत्र नारदनुं मुख केना जेवुं थयुं?	कीश, वानरना जेवुं.

रसीकताथी अति भूपने रीझावे छे, ते कोण हशे? चारण.
सर्पने लइने हार विगेरेना भूपण करेछे. ते कोण हशे? हर.
सभामां बोले ते कोण हशे? तर्कवादी.
स्त्री पुरुषो मळीने छत्रीश थाय, ते कोण हशे? राग रागणी.

हे सागर एनो अर्थ करो. ए छपयमां अगियार प्रश्न छे. तेना अगियार उत्तरना आदि अक्षर लेतां एवुं वाक्य नीकलेछे के "अपुने दरसकी चाहतरा" मतलब के आपना दर्शननी राह जोउंछुं. ए छपयना दरेक चरणना पहेला अक्षरो लेतां एवुं वाक्य नीकळेछे के "पार नावे लेख" मतलब के तेनो लखतां पार आवे नहीं. ॥६॥

॥ अथ बहिर्लापिका अंक भेद ॥ छपय ॥

	वर्ग	वर्ण	स्वर	
अष्ट चत्र अरू एक,	८	४	१	ह
षष्ट अरु पंच एक कहि ॥	६	५	१	म
पंच एक अरू एक,	५	१	१	त
षटःपंचह एकह वहि ॥	६	५	१	म
उभय एक अरु पंच,	२	१	५	कु
एक एकह एकह पुनि ॥	१	१	१	अ
पंच एक अरु तीन,	५	१	३	ति
तीन एकही युगल सुनि ॥	३	१	२	चा
पुनि अष्ट चत्र अरु एक गनि,	८	४	१	ह
पंच एक एकहु गहे ॥	५	१	३	त
अठ चत्र सप्त अंकह परखि,	८	४	७	हे
यों प्रवीन सागर कहे ॥७॥				

अर्थ. आठमा वर्गना चोथा चरणमां पहेलो स्वर मळे, एटले "ह" छठा वर्गना पांचमा वर्णमां पहेलो स्वर मळे, एटले "म" पांचमा वर्गना पहेला वर्णमां पहेलो स्वर मळे, एटले "त" वळी छठ्ठा वर्गना पांचमा वर्णमां पहेलो स्वर मळे, एटले "म" बीजा वर्गना पहेला वर्णमां पांचमो स्वर मळे, एटले "कु" पहेला वर्गनो पहेलो वर्ण, एने पहेलो स्वर, एटले "अ" पांचमा वर्गना पहेला वर्णमां त्रीजो स्वर मळे, एटले "ति" त्रीजा वर्गना पहेला वर्णमां बीजो स्वर मळे एटले "चा" वळी आठमा वर्गना चोथा वर्णमां पहेलो स्वर गणिये एटले "ह" पांचमा वर्गना पहेला वर्णमां पहेलो स्वर ग्रहण करिये, एटले "त" आठमा वर्गना चोथा वर्णमां सातमो स्वर मळे, एटले "हे" ए रीतना अक्षरोनी परीक्षा करो. प्रवीण कहेछे के हे सागर, अमे तमने इछिये छिये. अर्थात् "हम तमकु अति चाहतहे." ॥७॥

॥ पुनःअंक भेद बहिर्लापिका ॥ सवैया ॥

	वर्ग	वर्ण	स्वर	
एकहि एककुं सात मिलायके,	१	१	७	ए
दोयकुं एकहि एक ज्यु दीजे ॥	२	१	१	क
षष्ठ अरू इक पंच करो पुनि,	६	१	५	पु
सात दुहू अरू एक गनीजे ॥	७	२	१	र
छे पर तीन दुहू धरिकें फिर,	६	३	२	वा
आठ तिहु इकही गनि लीजे ॥	८	३	१	स
अंकके सागर भेद लहो यह,				
जो गिनतिमें कह्यो सोइ कीजे ॥ ८ ॥				

अर्थ. पहेलावर्गना पहेलावर्णमां सातमो स्वर मेळवो, एटले "ए" बीजावर्गना पहेलावर्णमां पहेलो स्वर देये. एटले "क" वळी छठ्ठावर्गना

पहेलावर्णमां पांचमो स्वर करो, एटले "पु" सातमावर्गना बीजावर्णमां पहेलो स्वर गणिये, एटले "र" छठ्ठावर्गना त्रीजावर्णमां बीजो स्वर मेळविये, एटले "बा" आठमावर्गना त्रीजावर्णमां पहेलो स्वर गणीने ल्यो, एटले "स" हे सागर ए आंकडाना भेद ल्यो. तेनी गणतीमां जे कह्युं ते करो, अर्थात् "एकपुरबास" करो. ॥८॥

॥ अथ उलट भेद अंतर्लापिका ॥ कवित ॥

सप्त सुरमें 'निखादु' नव ग्रह बीते 'शनि', सप्त तुंग 'केलास' समरही दुखदरे ॥ अष्टगिर 'मेरु' साठ आठमें 'गया' विजोग, उनहिको अंग अंग अतिहि दरदरे॥ द्वादश कलामें 'रवि' विद्याहू न जान परी, अष्टदश बन यामें 'नींब' सो विहदरे ॥ नवकुल नाग 'काली', सागर न जात लंघी, षट ऋतु चाह नेन, उलटी 'शरद' रे ॥ ९ ॥

अर्थ. हे सागर अमारे (निशा) रात्रि दुखाळी वीते छे. अने कामदेव (सलाके) दुःखदायक शारडिये छाती वींधेछे. अने विजोगनी आग (रुमे) रोमेरोमे प्रगटवाथी तेनुं दरद अंगोअंगे अतिशे थाय छे. तमारी वीर विद्या माराथी जाणी शकाइ नहीं. अने जे वात बनी ते बेहद बनीछे.अने हे सागर लोकलाजनी (लीका) लीटी उलंघी जाती नथी. अने मारां नेत्र तमारा दर्शननी चाहना राखेछे. उपरना सवैयामां आवेला शब्दोनो खुल्लासो नीचे प्रमाणे सात स्वरमांथी "नीखादु"नुं नाम उलटाविये. एटले "दुखानि" अर्थात् दुःखवाळी अने नवग्रहमांना "शनि"नुं नाम उलटाविये एटले "निशा" अर्थात् रात्रि. सात पर्वतमांना "केलास" ने उलटाविये,एटले "सलाके" अर्थात् शारडी वडे.अष्टकुळ पर्वतमांना मेरुना नामने उलटाविये एटले. "रुमे" अर्थात् रोमे. अने साठने आठ अडसठ

तीर्थमांना "गया" तीर्थना नामने उलटाविये, एटले 'आग' अर्थात् अग्नि. बार कळावाळा "रवी" नुं नाम उलटाविये, एटले "वीर" अथात् वीर-विद्या. अढार भार वनस्पतिमांना "नीब" शब्दने उलटाविये, एटले "बनी" नीब एटले लींबडो. अने नवकुळ नागमांना "काली" नागना नामने उलटाविये, एटले "लीका" अर्थात् "लीटी." अने छ ऋतुमांनी "शरद" ऋतुने उलटाविये, एटले दरश अर्थात् दर्शन. ॥९॥

॥ पुनःउलट भेद अंतर्लापिका ॥ दोहा ॥

'सरत' उलट जागी हमें, 'तन' उलटे दुखदान ॥
'मींतु' उलट नां मिल रहो, 'गल' उटले अभिधान ॥१०॥

अर्थ. हे ? सागर तमारा दरशननी तरस अमने (नत) नित्य दुःख-दायक जागी रही छे. माटे (तुमीं) तमे (लग) पासे केम मळीने रहेता नथी. ए दोहरामांना शब्दोनो खुलासो जे. एमां "सरत" 'तन' "मींतु" 'गल' ए चार अभिधान एटले नाम छे, तेओने उलटाविये, एटले "तरस" "नत" "तुमीं" "लग" एम थाय. ॥१०॥

॥ अथ अंतर्लापिका प्रश्नोत्तर भेद ॥ कवित ॥

प्रश्न	उत्तर
सुरपति वाहन को?	गंज
कहा अधिपति नाम?	राज
कहा मेन आयुध हे?	सर
कोन मझ नांहि मल?	जल
वनिता सिंगार कहा?	लज
कहा कवि वर्नत हे?	रस
काल प्रति बिंब कहा?	जरा

कहा दोउ सार चल!	जं[२]गं[१]
कहा विधिसुता नाम?	गं[१]रां[३]
करत कहा कृपान	सं[५]जं[७]
दानसों वढावे कहा?	जं[२]सं[५]
गंध्रव उचारे कल?	रां[३]गं[१]
कंठ नाम?	गं[१]लं[८]
जपनाम?	जं[२]जं[७]
कहादेव दानवकों?	रां[३]रं[६]
कोन काज सार्यों हरी! गजराज सरजल! ॥११॥	गं[१]जं[२]रां[३]जं[४]सं[५]रं[६]जं[७]लं[८]

अर्थ. आ कवितने छेडे "गं[१]जं[२]रां[३]जं[४] सं[५]रं[६]जं[७]लं[८]" एवा आठ अक्षर छे. तेमाथीज आमां पुछेला सोळ प्रश्नना उत्तर मळी आवशे. ते तर्त समजवा-सारुं अक्षरना उपर नंबर लख्या छे.

प्रश्न.	उत्तर.
प्रवीण कहेछे के—	
१ ईंद्रनुं वाहन शुं?	गं[१]जं[२] एटले ऐरावत हाथी.
२ अश्विपतिनुं नाम शुं?	रां[३]जं[४].
३ कामदेवनुं हथियार शुंछे?	सं[५]रं[६] एटले बाण.
४ केनामां मळ नथी?	जं[७]लं[८],
५ स्त्रीनो शणगार शुं?	लं[८]जं[७] एटले लज्जा.
६ कवि शुं वर्णन करे?	रं[६]सं[५] शृंगारादिक नवरस.
७ काळनुं प्रतिबिंब शुं?	जं[२]रां[३] एटले घडपण.
८ बे सोगठियां मळीने चाले ते शुं कहेवाय?	जं[२]गं[१] एटले मळे तो जुग.
९ ब्रह्मानी पुत्रीनुं नाम शुं?	गं[१]रां[३] एटले गिरा, सरस्वति.

१० तरवारने शुं करेछे?	सँजँ साफ, चळकती.
११ दानथी शुं वधाराय?	जँसँ.
१२ गांधर्व शी कळा उच्चारे?	राँगँ.
१३ कंठनुं नाम शुं?	गँलँ एटले गळुं.
१४ जपनुं नाम शुं?	जँजँ एटले यजवुं.
१५ देवने ने दैत्यने शुंछे?	राँरँ, राड अथवा लडाई.
१६ हरिये केनुं कारज सार्युं?	"गँजँराँजँ सँरँजँलँ."

एटले तळावना पाणीमां गजराजनुं कारज सार्युं. ए कवित प्रवीणे ल-ख्युं. तेनी मतलव एवी जणायछे के जेम हरिये गजराजनुं कारज सार्युं. तेम आपणुं सारशे. ॥११॥

॥ अथ सागरोक्त आद्यक्षरी अंतर्लापिका भेद ॥ दोहा ॥

सु	वत सेज मन सिज सरन,	जा	गति आगति आग ॥
न	त जग्गे मुचकंद गति,	आ	दि लई जिय लाग ॥१२॥

अर्थ. सागर कहेछे के कामदेवनां वाण एटले फूल. तेनी सज्यामां सूतां मारी आवी गतिनी आग जागृत थायछे. अने नित्य मुचकंद राजानी पेठे झव-कीने जागुंछुं. अने आ दोहराना प्रत्येक चरणना आदि अक्षर लईने जी-वमां लगाडी राखुंछुं. मतलब के "सुजान आव्य" एम रटुंछुं. ॥१२॥

॥ अथ आद्यक्षरी अंतर्लापिका भेद ॥ सवैया ॥

सू	लि	से जान तजे सव भूषन, फूलन हार विखेर दहे॥
जा	र	तहु न उचारतहे, उर धार कछूसु कहा करहे ॥
न	व	हि केसर कुंकुम चंदन, वास सुवास न जात सहे॥
के	न	रसे यह केसे तजे नहि, प्रान प्रवीन गहे सु गहे॥१३॥

अर्थ. सागर कहेछे के में वधां घरेणां सूळी जेवां जाणीने तज्यां छे.

अने फूलना हार वीखेरी दीधा. अने काम मने बाळेछे. ते कांइ बोलतो नथी. कोणजाणे के ते मनमां कांइ धारीने शुं करशे. केसर कुंकुम, अने चंदनने हुं चहातो नथी. अने सारां वस्त्र के सुगंध सहन थई शकतां नथी. तोपण हे प्रवीण में मारो प्राण पकडी राख्यो छे. ते पकडी राख्यो छे. ते कया रसथी अने शा वास्ते हुं तजतो नथी ? तो "सुजान केली रचन" मतलब के सुजाण साथे खेल करवा सारुं. ए सवैयाना प्रत्येक चरणमांथी प्रथम पहेलो पहेलो अने पछी बीजो बीजो अक्षर लेवाथी उपर लखेलो उत्तर थायछे. ॥१३॥

॥ पुनः वह भेद ॥दोहा॥

| सु | मन विकास वसंतके, | जा | त बेल बिस्तार॥
| न | ज हांसी मनु करतहे, | वा | ह पसार पसार ॥१४॥

अर्थ. वसंतनां फूल खीलयां छे. अने जुइनी वेल विस्तार पामीछे. ते जाणे के लांबा हाथ करी करीने (नीज) आपणी मश्करी करती होय नहीं. एना प्रत्येक चरणना ओकेक अक्षर लेतां "सुजानबा" एवा अक्षर नीकळेछे. ते संबोधन छे. ॥१४॥

॥ पुनः अंतर्लापिका भेद ॥दोहा॥

प्रथम सुपारी जायफळ, पाछे पानँ बदामँ ॥
मध्य इलाची जायत्री, लेले टेरत नाम ॥ १५ ॥

अर्थ. सुपारी ने जायफळना पहेला अक्षरो, पान ने बदामना पाछला अक्षरो, इलाची अने जायत्रीना वचला अक्षरो, लइ लइने ते नाम पोकारुंछुं. मतलब के "सुजान मळाय" एटले सुजान मेळवो, सुजान मेळवो. एम पोकारुंछुं. ॥१५॥

॥ अथ अंतर्लापिका प्रश्नोत्तर भेद ॥दोहा॥

प्रश्न.	उत्तर.
संन्यासी शोधत कहा ?	प[1] र[2]
को प्रकाश छिति कौन ?	र[2] बी[3]
भारति नारद नाद्य कह?	बी[3] नं[4]

परखे वह परवीन ॥१६॥

अर्थ. आ दोहरामां चार प्रश्नछे.तेना उत्तर "प[1]र[2]बी[3]न[4] ए चार अक्षरमांथी नीकळे छे. ते साफ समजवा सारुं अक्षरो उपर नंबर मुक्या छे. ते नाम बेवार वंचायछे.

प्रश्न.	उत्तर.
१ सन्यासी शुं शोधेछे?	प[1]र[2] एटले परमात्मा.
२ पृथ्वी उपर प्रकाश कोण करेछे!	र[2]वी[3] एटले सूर्य.
३ सरस्वतिनुं अने नारदनुं वाजुं शुं?	बी[3]न[4] एटले वीणा.
४ ए परीक्षा करे एवुं चतुर कोण ?	"परबीन" ॥१६॥

॥ अथ आद्यक्षरी अंतर्लापिका ईश्वर स्तुति ॥ सवैया ॥

मे	र करो वह आदिहु अच्छर,
हे	म गिरब्बर आदि मिले तक ॥
रु	द्र कह्यो पुनि जोइ भयो सब,
वा	र न लायक औ कछु वायक ॥
नी	रज नंदन याहिको भेद सु,
रा	तपती जरवो उर धारक ॥
खी	रसरोवर बीच प्रवीन, लि
ये	पति लायक हो सुखदायक ॥ १७ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के जे ईश्वर जगतना आदि अने अक्षर कहेतां अविनाशी छे. अथवा आदि अक्षर एटले ॐकाररूपेछे, अने जे पहेली तकमां अमने मेरूपर्वत उपर अर्थात् मेरूना कैलास शिखर उपर मळ्या हता. ते ईश्वर अमारा उपर महेर करो. वळी ते महारूद्रे जे कह्युं हतुं. ते बधुं थयुं. केमके तेमनां वाक्य एवां हतां के कांइ विलंब थवा लायक नहोतां. हवे कमळना पूत्र ब्रह्माछे. तेना लेखना भेदथी रातनो पति जे चंद्रमा तेतो मारी छातीमां बळतरा धरनारो थइ पड्योछे. क्षीरसरोवर वचे प्रवीण गजराजे जेवा पति लीधा. तेवाज लायक अने सुखदायक तमे अमारा पति छो. आ सवैयाना चोथा चरणमां रससागरे प्रवीणनुं नाम सुचवीने वळी गुप्त रीते एटले प्रत्येक चरणना पहेलाने तेरमा अक्षरो लेतां आठ अक्षरोथी जणाव्युं के "महेरूबानी राखीये." ॥१७॥

॥ अथ रागोपरि अंतर्लापिका भेद ॥ सवैया ॥

एक करो सुघराइ, पंजाब दो, तीजो कल्यानको चिंत धरेरे ॥ सारंग आदि, विहागकि अंत ले, भेरव मध्य बिहाल परेरे ॥ नाइकी ओर मलारहि गूजरि, ता बिचले हितु व्हैसो करेरे ॥ जाय प्रवीन झरोखनमें इतनी कोउ गानकला उचरेरे ॥ १८ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के कोइ एटली सुघडाइ एटले चतुराइ करो, के सुघडाइनो अथवा सुघराइ नामना रागनो पहेलो अक्षर (सु)अने पंजाबनो बीजो अक्षर (जां) अने कल्याणनो त्रीजो अक्षर (नैं) एटले सुजानने चित्तमां धरीने सारंगनो आदि अक्षर, (सां) अने विहागनो अंत अक्षर (गं) लइने भैरवनो मध्य अक्षर (रं) एटले "सागर" वेहाल थइने पड्योछे. माटे 'नाइकी,' 'मलार,' अने 'गुजरी,' ए त्रण रागना वचला

अक्षरो लइने "इलाज" जे हितस्वी, होय ते करे. प्रवीणना झरोखामां जइने कोइ एटली गानकळा उचारे ? एमां सार एटलोछे के सुजाणने मनमां धरीने सागर वेहाल पड्या छे.माटे कोइ हेतु होय, ते इलाज करे, एटली मतलब प्रवीणनी पासे कोइ जइने गाय? ॥१८॥

॥ अथ चतुराक्षरे दोहा भेद अंतर्लापिका शीव स्तुती॥कवित॥

नाद्य	व	जे	नये	न	ए	अंग	दी	ऐ	भूति	ब	ने	
कुंज	ब	से	बीच	ब	न	संग	ल	से	भूत	प्रे	त	॥
मुंड	दा	म	सेत	छ	बी	देह	द	मिं	दान	द	हे	
भाल	बि	धू	दाह	मे	न	जंग	जी	त	तीन	ने	त	॥
पालप		सु	पान	चा	प	दीन	क्षि	प्र	ही	निवा	जु	
रुढस		बा	रीझ	वा	र	छत्र	छ	बी	गंग	दे	त	॥
ग्यान	रा	स	सिंधु	द	आ	शूल	पा	न	नंदि	ध्व	जा	
जोग	थ	पें	प्रीत	री	त	पंक	कं	पें	नाम	ले	त	॥१९॥

अर्थ. शिवनुं वर्णन; जेनी आगळ नवां नवां वाजित्र वागेछे. अने अंगे विभूति चडावी दइने बनेलाछे. अने वननी वचे कुंजमां बसेछे. जेनी साथे भूतप्रेत शोभेछे. जेना कंठमां मस्तकनी माळाछे. अने जेनी छावि श्वेतछे. देहनुं दमन करीने दान देछे. कपाळमां चंद्रछे. कामदेवने बाळनारा, युद्धमां जीतनारा अने त्रण नेत्र वाळाछे. पशुना पाळनार, जेना हाथमां धनुपछे. अने गरीबने तरत निवाजेछे. शबछे वाहन जेनुं, एवी शबारुढ काळीकादेवीने रीझावनारा अने जेना मस्तक उपर गंगाजी छत्रना जेवी शोभा आपेछे. अने ज्ञानना राशि एटले समुदायरूप, दयाना समुद्र, जेना हाथमां त्रिशूळछे,जेनी धजामा नंदीनुं चिन्हछे. जोगनुं स्थापन करनारा, प्रीतनी रीति स्थापन करनारा. अने जेनुं नाम लेतां पाप कंपेछे. एवा शंकरनुं स्मरण करुंछुं; उपला कवितमांथी चोथो चोथो अ-

क्षर लेतां जे दोहरो नीकळी आवेछे. तेनो अर्थ नीचे प्रमाणे. ॥१९॥

॥ वह कवितांतर्गत ॥ दोहा ॥

जेसे मधू सुवासपें, एन बीन पर आत ॥
ऐसें मिंत प्रबीनपें, नेत हेंत जुत जात ॥ २० ॥

अर्थ. सागर कहेछे के जेम भमरो सुगंध उपर, अने मृग वीणाना स्वर उपर आवेछे. तेमज प्रवीणमित्र उपर मारां नेत्र स्नेह सहित जायछे. ॥२०॥

॥अथ वर्न भेद बहिर्लापिका ॥सवैया॥

वसुधा रघुंवीर नकारसु नाम, उने नहिं यादि घरी बिसरेरे उशनाध्वेंज अच्छर आदि बिना, शशि आदिके संजुत चाह भरेरे ॥ तिनसें भव भाजंन नां पठयो, रिपुँ नीरज धीरज केसें धरेरे ॥ परबीनके जाय झरोखनमें इतनी कोउ मिंत पुकार करेरे ॥ २१ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के अरे मारुं नाम तो ते प्रवीणने याद नहीं होय. अने घडिकमां वीसरी जतुं हशे. पण हुं तो तेना दर्शननी चाहनाथी भरेलो छुं. तेवा तरफ तेणे पत्र मोकल्यो नहीं. तो हवे जीव शी रीते धीरज धरे. अरेरे प्रवीणने झरोखे जइने कोइ मित्र एटलो पुकार करे? उपला सवैयाना शब्दोना अर्थ "वसुधा" कहेतां "महि, राम, तथा न" कारथी जे नाम थायछे, ते "महिरामन." "उशना" एटले शुक्र तेनी धजामां देडको छे. एटले "दादर" ते नामना पहेला अक्षर "दा" विना. अने "शशी" ना पहेला अक्षर "श" सहितनी अर्थात् "दरशनी" चाहना छे. "भव" कहेतां शंकर. तेनुं भाजन. एटले जमवानुं वासण. जे पत्र अर्थात् कागळ न मोकल्यो. "नीरज" कहेतां कमळ, तेनो शत्रु हंस एटले जीव धीरज केम धरे. ॥२१॥

॥पुनःवर्न भेद बहिर्लापिका ॥ सवैया ॥

आदिके आदि 'अ'कार न सूकत,	असु
अंतके अंत मिलाय 'त'ही ॥	नत
अंतके आदि 'द'कार वृथा सब,	दन
आदिके अंत 'ध'कार नही ॥	सुध
मध्य मकार हमें जुगसें तुम ,	जाम
अंतके आदि 'बि'कार दही ॥	बिन
तीन प्रबीनके अच्छरहे ,	सुजान
उनकी गिनती मनमें ज्यु गही ॥ २२ ॥	

अर्थ. सागर कहेछे के हे प्रवीण? नित्य अमारां आंसु सुकातां नथी. अने बधा दिवसो व्यर्थ जायछे. तेनी शुद्ध रहेती नथी. तमारा विना एक पहोर अमारे जुग जेवो जायछे. अने प्रवीणना नामना त्रण अक्षर छे. तेनी गणत्री अमे मनमां राखी छे. उपला सवैयामांना शब्दोनो खुलासो नीचे प्रमाणे. प्रवीणना नामना "सुजान" एवा त्रण अक्षर छे. तेमांना पहेला अक्षरनी आगळ अकार मुकिये. एटले "असु" अर्थात् आंसु. अने अंत अक्षर नकारनी साथे "त"मेळविये एटले "नत" अर्थात् "नित्य." छेल्ला अक्षरनी आगळ "द" कार मुकिये एटले "दन" अर्थात् दिवस. आदि अक्षर "सु" ते पछी "ध" मुकिये एटले "सुध" वचलो अक्षर "जा" पछी "म" एटले "जाम." अर्थात् पहोर. अने अंत अक्षर "न" नी आगळ "वि" मुकिये. एटले "विन" अर्थात् विना. ॥२२॥

॥ अथ अंतर्बहिर्लापिका दोहांतर्गत ॥ कवित ॥

प्रश्न				उत्तर	
जो	गीको	सु	रतकहां?	ना	रायनमें
तुं	गन	जा	सुंहनन?	आ	खंडल
चं	चला	न	मोदकोन?	के	की
त	र र	तु	कहा होत?	फ	ल
प्र	स्वत	म	यंक कहा?	र	स
वि	प्रसु	क	हापढंत?	बे	द
न	द वै	हु	जात कहां?	द	धिमें
हे	दधि	म	हींसुबोत?	ले	हेर
तो	मर	स	रस कोन?	की	शध्वज
अ	हि न	ए	हरे कहा?	जे	हेर
न	गन	क	हासुबास?	म	लय
ल	गे स	बे	कहा जोत?	न	यन
नं	अधु	र	प्रभा केसी?	न	लिनी
त्रि	कसे	आ	रामकब?	र	तुराजमें
चा	तुकी	इ	च्छत कहा?	धा	राधर
र	हे सो	ये	कोनगोतर२३	र	जतगिरि

अर्थ. प्रश्न. उत्तर.

१. जोगिनी सुरत क्यां होय? — नारायणमां.

२. जेनाथी पर्वत हणाया, अर्थात् पांखो छेदाई ते कोण? — आखंडल, इंद्र.

३ विजळीओथी आनंद कोण पामे?	केकी एटले मोर.
४ रत आवे झाडमां शुं थाय?	फळ.
५ चंद्रथी शुं स्रवेछे?	रस एटले अमृत.
६ ब्राह्मण शुं भणे?	वेद.
७ नदियो वहीने क्यां जायछे?	दधिमां एटले समुद्रमां.
८ समुद्रमां बहु शुं छे?	लेहेर.
९ भालुं फेंकवामां सरस कोण?	किशध्वज एटले अर्जुन.
१० सर्प नमीने शुं ले छे?	जेहेर.
११ पर्वतमां सुगंध शेनो छे?	मलियागरनो.
१२ सर्व ठेकाणे शेनी जोत लागेछे?	नयन अर्थात् आंख्योनी.
१३ होठनी कांति केवी छे?	नलीनी जेवी. एटले राता कमळ जेवी.
१४ बाग क्यारे खीले?	रतुराजमां एटले वसंतमां.
१५ बपैयानी मादा शुं इच्छेछे?	धाराधर एटले वरसाद.
१६ कियो पर्वत सुई रह्यो छे?	रजतगिरि एटले विंध्याचल.

ए कवितमांना सोळ प्रश्नमांना आदि अक्षर तथा उत्तरना आदि अक्षर लेतां जे दोहरो नीकळे छे. ते नीचे प्रमाणे. ॥२३॥

॥ यह कवितमें तुकादि तथा प्रश्नके उत्तरादि वर्न ॥ दोहा ॥

॥पुनः वह कवितांतर्गत वाक्य यथा ॥
॥सुजान तुम कहु मस एक वेर आइये॥

जो	तूं	चं	त	प्र	वी	न	हे	
तो	अ	न	ल	हे	वि	चा	र	
ना	आ	के	फ	र	वे	द	ले	
की	जे	म	न	न	र	धा	र	२४

अर्थ. सागर कहेछे के हे प्रवीण जोतुं चित्तमां डाहीछुं. तो आनो अर्थात् आ कवितानो विचार ले. अर्थात् विचार कर. नहीं तो फरीथी आवीने आ वेदिली (उदासी) विशे मनमां कांइ निरधार करो. ते माटे "सुजान तुम कउमस एकवेर आइय," हे? सुजाण तमे कोइ मिशे एकवार आवो. उपला कवितमांना प्रश्नोना चोथा चोथा अक्षर लेवाथी ए वाक्य नीकळे छे. ॥२४॥

॥ त्रिपादे चतुर्थ पाद गुप्त ॥ दोहा ॥

वरनं चंपं चख मींन मृग, रंव बीना नंव बाल॥
विंरहाजलं वह रटत दधि, वन परबीन बिंहालं ॥२५॥

अर्थ. सागर कहेछे के जेना शरीरनो वर्ण चंपाना जेवो छे. अने नेत्रो मांछलां तथा हरणना जेवां छे. जेनो स्वर वीणाना जेवोछे, एवी नवीन बाळाने अमे विरहनां आंसु वहन थतां नित्य रटिये छिये, के एवां प्रवीण विना अमे वेहाल छिंये. ए दोहराना त्रण चरणमांथी चोथुं चरण नीकळे छे. ते साफ समजवा सारुं ते अक्षरो उपर नंबर लख्या छे.॥२५॥

॥ दोहा ॥

इहि विधि अंतर्लापिका, बहिर्लापिका कीन ॥
दंपति चित्रसु काव्य पुनि, सागर करहि प्रबीन ॥२६॥

अर्थ. ए रीते अंतर्लापिका तथा वहिर्लापिकाना भेद कर्या पछी सागर तथा कळाप्रवीण ए दंपतिये चित्र कविता करी. ते हवे कहेशुं. ॥२६॥

॥ गाहा ॥

अंतर्लापिक उक्ती, बहुरि बहिर्लापिका भेदं ॥
एकषष्टि आभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥२७॥

अर्थ. ए रीते अंतर्लापिकानी उक्ति तथा वहिर्लापिकाना भेद संबंधी

प्रवीण सागर ग्रंथनी आ एकसठमी लहेर संपूर्ण थई ॥२७॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे दंपति अंतर्लापिका बहिर्लापिका वर्णनं नाम एकषष्ठितमो लहरं ॥ ६१ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकषष्ठीतमस्तरंगः समाप्तः ॥६१॥



॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

प्रविणे चित्र कवित लख्यां, गोमुत्रिकादि जेह;
आबासठमी लहेरमां, कहेशे विगते तेह ॥

॥ अथ कलाप्रबीनोक्त गोमूत्रिकादि चित्र भेद ॥ दोहा ॥

सागर कला प्रबीनकों, जग्यो सु प्रेम पवित्र॥
मित्र मित्र जंपत जुगल, बरनत चित्र बिचित्र ॥१॥

अर्थ. सागर तथा कळाप्रवीणने पवित्र प्रेम जागृत थयो. तेथी ते बन्ने हे मित्र! हे मित्र! एम जपेछे. अने नाना प्रकारना चित्रमां ते प्रेमनुं वर्णन करेछे. ॥१॥

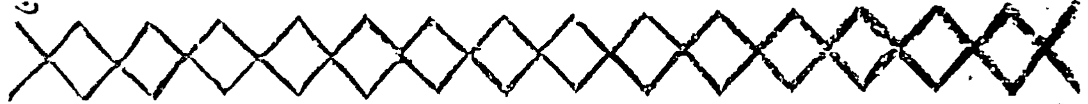
॥ द्विपदी गोमूत्रिका ॥ सोरठा ॥ चित्र १ ॥

जुक्ति रीत रस रास, मंत्र वेद माने सहे ॥
उक्ति प्रीत बस जास, चित्र भेद जाने वहे ॥ २ ॥

अर्थ, रसना समुदायनी युक्तिनी रीत, तथा तेना मंत्र एटले गुप्त विचारनी विद्याने जे साची माने, अने जेनी वाणी प्रेमने वश होय, ते आ चित्र कविताना भेदने जाणे. आ सोरठो सीधी लीटीओमां पण वंचाय. अने गोमूत्रिका, एटले बळद मुतरणाना आकारमां पण वंचाय छे. बीजा

प्रकारनी गोमूत्रिकामां त्रण लीटियो छे. तेमांथी पण एज सोरठो आखो वंचाय छे. अश्वगति बंध चार लींटियोमां लखेलो छे. तेमां शेतरंजीनो घोडो जे रीते अढी घर चाले छे. एज रीते आखो सोरठो वंचायछे. ते अक्षरो वांचवाना अनुक्रम प्रमाणे. एकथी ते बत्रीश सुधी नंबर लख्या छे. ते प्रमाणे वांचवा. त्रिपदीमांथी पण एज सोरठो वंचायछे. कपाट एटले कमाडनुं चित्र छे. तेमांथी पण एज आखो सोरठो वंचाय छे. ॥२॥

जु क्ति री त र स रा स, मं त्र बे द मा ने स हे॥



उ क्ति प्री त व स जा स, चि त्र भे द जा ने व हे॥

॥अथ गोमूत्रिका कोदुजो भेद॥ चित्र २.

जु	री	र	रा	मं	बे	मा	स
क्ति	त	स	स	त्र	द	ने	हे
उ	प्री	व	जा	चि	भे	जा	व

॥अथ अश्वगति॥ चित्र ३.

जु १	क्ति १८	री ३	त २०	र ५	स २२	रा ७	स २४
मं ९	त्र २६	बे ११	द २८	मा १३	ने ३०	स १५	हे ३२
उ १७	क्ति २	प्री १९	त ४	व २१	स ६	जा २३	स ८
चि २५	त्र १०	भे २७	द १२	जा २९	ने १४	व ३१	हे १६

॥अथ त्रिपदी भेद॥ चित्र ४.

जु	री	र	रा	मं	बे	मा	स
क्ति	त	स	स	त्र	द	ने	हे
उ	प्री	ब	जा	चि	त्ते	जा	व

अथ कपाट बंध ॥ सोरठा ॥ चित्र ५.

जु	क्ति
री	त
र	स
रा	स
मं	त्र
बे	द
मां	ने
स	हे

क्ति	उ
त	प्री
स	ब
स	जा
त्र	चि
द	त्ते
ने	जां
हे	व

॥अथ त्रिपादे चतु:पाद मध्य तुक गतागत भेद दोहा॥चित्र॥६॥

॥ बिधु चकोर मधु मन मधू ॥

त	मीं	व	स	हु	न	त	चो	त

आवे विरह दुख देत अति

" तची तनहु सब मीत ॥" ॥ ३॥

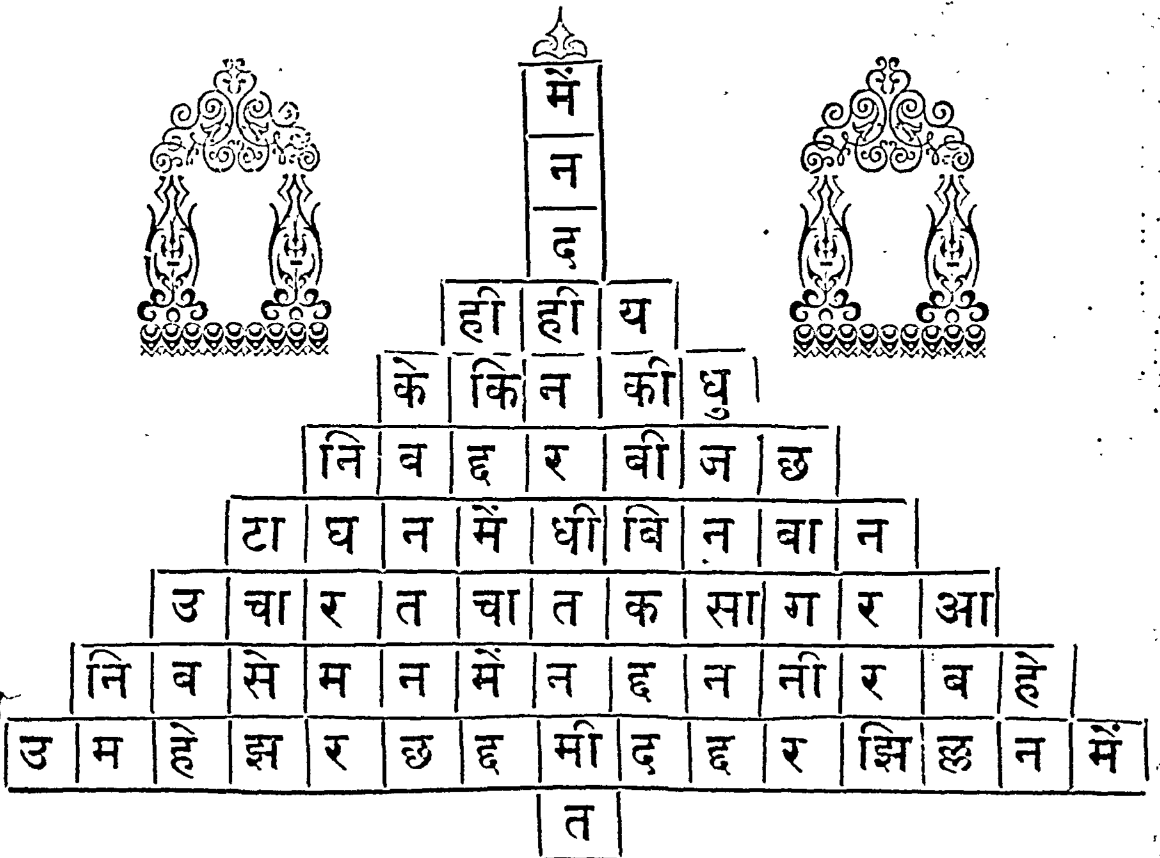
अर्थ. प्रवीण कहेछे के जेम चकोरनुं मन चंद्रने अने भमरानुं मन मधने वश छे. तेम अमारुं चित्त तमारे वश छे. तेथी हवे विरह अतिशे दुःख देछे, अने हे मित्र सघळे शरीरे तपी उठीछुं. आ दोहरामां चमत्कार एटलो छेके बीजा चरणने उलटुं वांचिये, एटले चोथुं चरण थायछे, ३॥

॥अथ पर्वतबंध भेद ॥ चरनगुप्त सवैया ॥

मेंन दही हिय केकिनकी धुनि, बद्दर बीज छटा घनमें ॥
धी बिन बान उचारत चातक, सागर आनि बसे मनमें ॥
नद्दन नीर वहे उमहे झर, छद्दमि दद्दर झिल्लनमें ॥
मेंन दही न रथी तन मींत, तमी नत धीर नहीं दनमें ॥ ४॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के वर्षाऋतु आवतां मोरना सोररूपे थइने कामदेवे मने हैयामां बाळी, अने वर्षादना वादळामां वीजळीनी छटारूपे थइने मने बाळी. अने बुद्धि वगरनो बपैयो वाणी उच्चारे छे. तेणे सागरने लावीने मारा मनमां वसाव्या छे. नदियोनां पाणी वहेछे, तेम झडी मंडाय छे, अने ते कपटी कामदेव देडकामां अने तमरामां रहीने बोलेछे. अने हे मित्र? एरीते मने कामदेवे बाळी तेथी मारा तनमां (रिद्धि)दैवत रह्युं नथी. तमी एटले रात्रिमां धीरज नथी. तेम दिवसमा पण मने धीरज रहेती नथी. ॥४॥

॥ अथ पर्वतबंध भेद ॥ चरनगुप्त ॥ सवैया ॥ चित्र ॥ ७ ॥

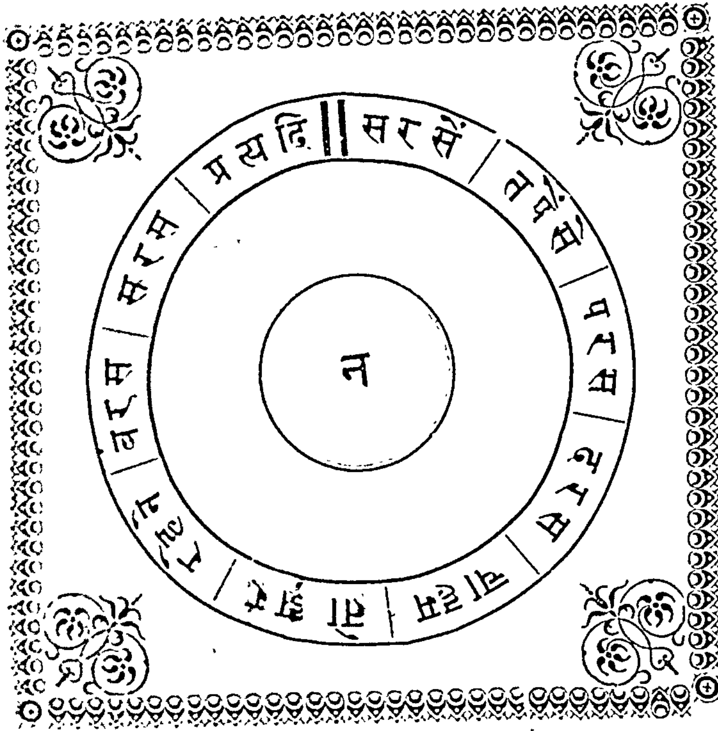


॥ अथ त्रिवर्न चक्राकार चित्र भेद ॥ सोरठा ॥

सरसें नतपें सेन, परसन दरसन चाह मन ॥
तो झरन रहे नेन, बरसन सरसन प्रत्य दिन ॥५॥

अर्थ. हे सागर नित्य प्रत्ये सझ्या तो बाणजेवी लागेछे. अने मनमां तमारो स्पर्श करवानी तथा दर्शन करवानी चाहना रहेछे, अने नेत्रे (तोय) जळ झरतां रहेछे. तेतुं रोज वरसवुं सारुं लागतुं नथी. ॥५॥

॥ अथ त्रिवर्न चक्र भेद ॥ सोरठा ॥ चित्र ८ ॥



॥ अथ आरोहावरोह चक्राकृति गति चित्र

॥ शिव विश्नु स्मर्ण ॥ सोरठा ॥

मसान बनहे वास, रे भसमन तन अति रची ॥
मुदा अहिन गुन दास, तिलक धूम सिर सुरसरी ॥६॥

अर्थ. मसाण तथा जंगलमां जेनो वास छे, अने अरे शरीरे अति भस्म चर्चि छे, अने जेणे आनंदथी सर्पना गणने दास कर्या छे. त्रीजा अग्नि नेत्रनो धूम्र तिलकने ठकाणेछे, अने माथे गंगाजीछे, ए रीते शिवनुं स्मरण करीने ते सोरठाने उलटावीने दोहामां कृष्णनुं स्मरण करेछे ॥६॥

॥ अवरोहे ॥ दोहा ॥

री सरसुरसी मधु कलति, सदा नगुन हिअ दामु ॥

चीर तिय नतन मस न्नरे, स वाँ हे न बन साम ॥७॥

अर्थ. रासक्रीडामां कृष्ण अदर्श थइ गया, तेने गोपियोनां टोळां जुदां पडीने शोधतां हतां, "त्यारे एक गोपीए बीजीने कह्युं के" (रि) संबोधन. हे सखी सर सुरसी एटले (सुर सरी) गंगा जेवी अने पुष्प रसने धारण करती एवी निगुर्ण माळा हमेशां जेना हैया उपर छे. अने चिरंकाळ (नतन) कामदेवने मिशे स्त्रियोमां भरपूर रहे छे, ते कृष्ण वनमां वां एटले ते ठकाणे नथी. ए रीते कृष्णनी लीलानुं स्मरण कर्युं. तेमां भावार्थ ए जणाव्यो के जेम गोपियोने कृष्णनो वियोग पड्यो हतो, तेम अमारे तमारो वियोग छे. ॥७॥

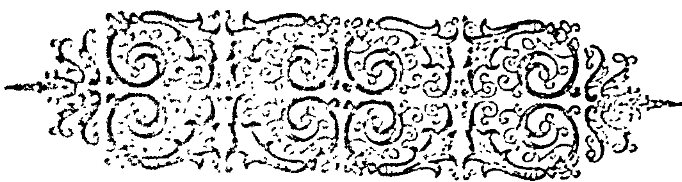
॥ चित्र १ ॥



॥अथ कपाट बंध ॥ सवैया ॥

ध्यान धरे चित, नेन झरे जल, नाग रही गुन पाग रही॥
वान करे नित मेन फरे दल, दाग रही बिन कागरही ॥
भान जरे गत, रे नपरे कल, ताग रही दिन आग रही ॥
कान हरे हितसें न टरे पल, सागरही धुनि लाग रही॥८॥

अर्थ. हे सागर मारुं चित्त तमारुं ध्यान धरेछे. अने आंखे आंसु झरे छे. अने हे नागर? अर्थात् हे चतुर? तमारा गुणमां भिंजाइ रहीछुं. कामदेव हाथमां वाण लइने नित्ये फरेछे. अने तमारा कागळ वगर हुं दिलमां बळी रहीछुं. सूरजनी गति तपे छे. अरे तेथी कळ पडती नथी. ते दिवसने हुं तागी रही. अर्थात् दिवस गुजार्यो. तो पण विरहनी आग तो बळतीने बळती रही. अने समुद्रनी ध्वनी एवी लागी रहीछे के मारा काननी वृत्तिने हरी लेछे. अने एक पळमात्र पण मारा हितथी वितती नथी. अथवा हे सागर? हे सागर? एवी ध्वनी मारे मुखे लागी रहीछे.ते मारा हेतमांथी पळमात्र टळती नथी.आ सवैयो अश्वगति,गोमूत्रिका,अने त्रिपदीमां पण लखाय छे. ॥८॥



॥ अथ कपाट बंध ॥ सवैया ॥ चित्र १० ॥

ध्या	न	वा	का	न	न्हा
ध	रे	क	ह	रे	ज
चि	त	नि	हि	त	ग
ने	न	मे	सें	न	रे
झ	रे	फ	ट	रे	प
ज	ल	द	प	ल	क
ना	ग	दा	सा	ग	ता
र	ही	र	र	ही	र
गु	न	वि	धु	न	दि
पा	ग	का	ला	ग	आ
र	ही	र	र	ही	र

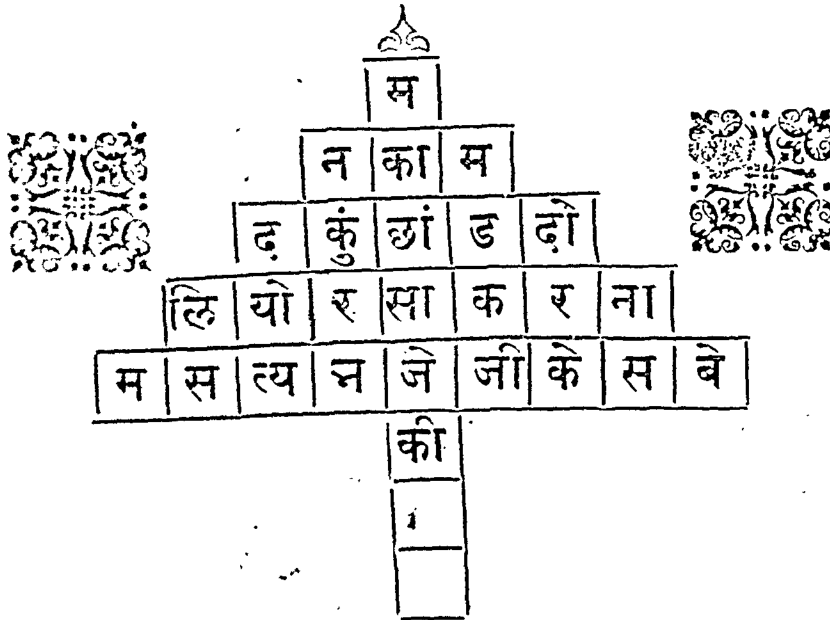
॥ अथ शिखरबंध चित्र आत्मसिच्छा ॥ दोहा ॥

मनका मदकुं छांडदो, लियो रसाकर नाम ॥
सत्य भजे जीके सबे, कीजे साछा काम ॥ १ ॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के हे जीव तुं मनना मदने छोडी दे. अने रसा-

कर एटले कृष्ण अथवा रससागरनुं नाम छे. तेने साची रीते भजवाथी जीवनां सर्वे साक्षात काम करी लइये. ॥९॥

॥ चित्र ११ ॥



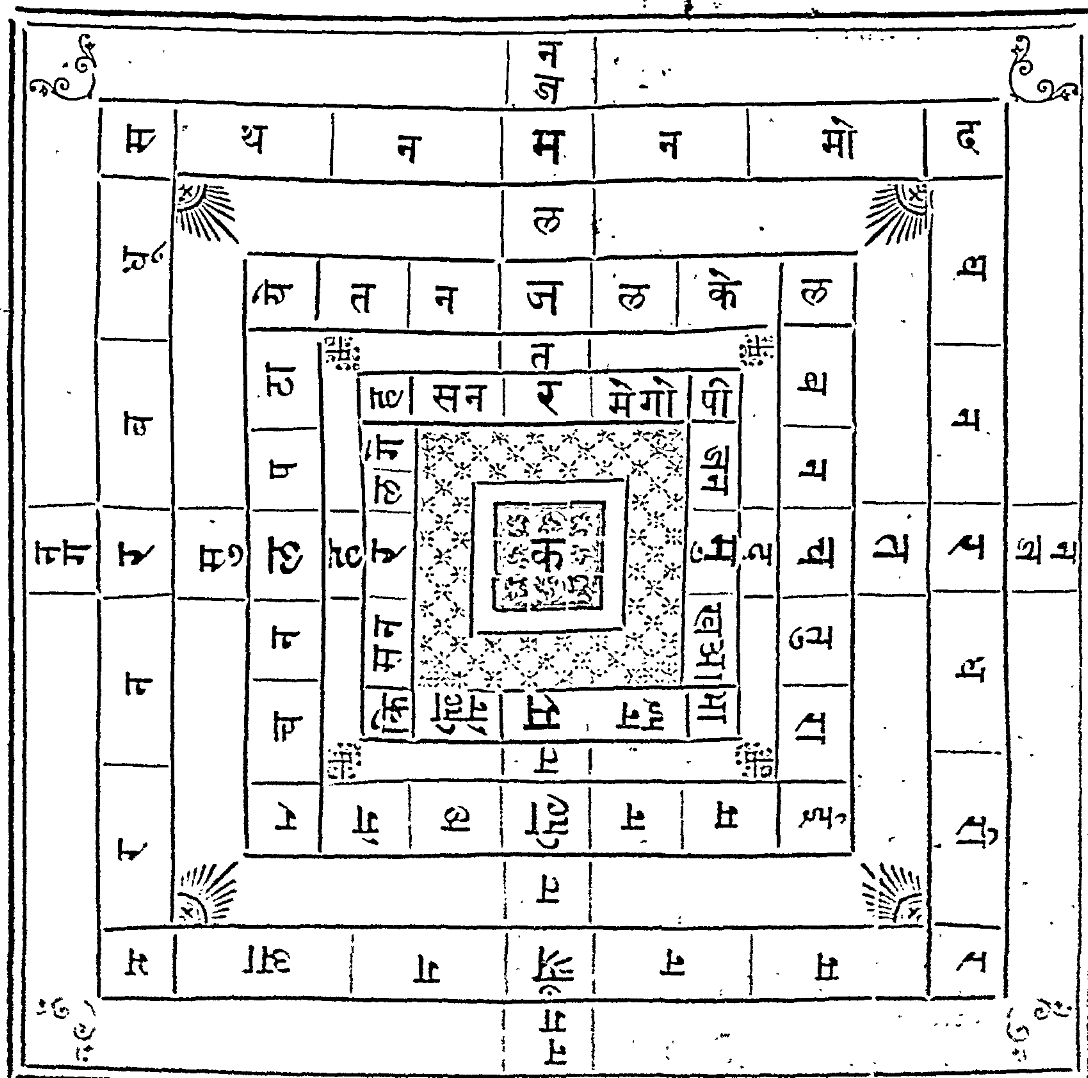
॥अथ होजबंध चित्र भेद ॥ श्रीकृष्ण जलकेली बर्नन कवित॥

नज मन मोद घन, नजर धरी रमन, नग अंग आभरन, नगर वधू सथन ॥ मल जल केल बन, रत चतुराइ मन, अतही लगे रचन, रसु लपटाये तन ॥ जत रमे गोपीजन, चंद मुख आन्ना इन, हित सनेही किसन,लहर लगे हसन॥ करत जल मजन, कमुद चंत रजन, कसत हित अंगन, करहल सुर गन ॥१०॥

अर्थ. प्रवीण पोताना दुखना निवारण वास्ते कृष्णनी जळकेलीरूप लीलानुं स्मरण करेछे. ते कृष्ण केवाछे. तो पोताना मनमां घणो आनंद छे. अने दृष्टि धरीने रमण करेछे. अने अंगे नंग जडित घरेणां पहेर्यां छे.

अने नगरनी स्त्रियो साथे मळीने (वन) जळमां जळक्रीडा करेछे. चतुराइथी रंगायेला मनथी अतिशे रचना करवा लाग्या, रसथी लपटायेला शरीरवाळां गोपीजन (जीत) ज्यां रमेछे. एओना मुखनी कांति चंद्रना जेवीछे. तेओ पोताना स्नेही कृष्ण साथे हितथी ते जळनी लहेरोमां हसवा लागी. ते जळमां मंजन एटले स्नान करेछे. तेओनां मुख कुमुदनीना चित्तने रंजन करेछे. तेओ हेतथी परस्पर, एक बीजाना अंगसाथे (कसत) वळगी रह्यां छे. ते जोइने देवताओना समुदाय, कोळाहळ करेछे. ॥१०॥

॥ चित्र १२ ॥



॥ दोहा ॥

ऐसे कृष्ण कृपानिधी, कृत गोपीजन हीत ॥
मेर करी मोकुं अवे, मिलाउ सागर मीत ॥ ११ ॥

अर्थ. ए रीते दयाना समुद्र श्री कृष्णे गोपीजननुं हित कर्युं. तेमज महेरबानी करीने हवे मने सागर मित्रनो मेळाप करावो. ॥११॥

॥ अथ सर्वतो भद्र गति भेद चित्र यथा ॥ अनुष्टुप वृत्त ॥

माधू मीत तमी धूमा, धूम नौत तनौ मधू ॥
मीनौ प्रसेसे प्रनौमी, ततःसेत तसे ततः ॥१२ ॥

अर्थ. हे माधव मित्र (तमी) अज्ञानियोना धुम्ररूप अर्थात् अज्ञानियोनी दृष्टी जेने जोवाने उघडती नथी. एवा नौत कहेतां नवीन धूम्र अर्थात् नवीन वादळां जेवुं जेनुं शरीर छे, अने ते वळी माधुर्यवाळुं छे. एवा अने जे मच्छ आदिकरूपे प्रसव्या. अर्थात् उतपन्न थया. तेने नमस्कार करुंछुं. ते ईश्वरथी श्वेतता एटले उज्वळता अर्थात् प्रेमनो प्रकाश उत्पन्न थयो. अने ते प्रकाशथी तेवीज शृष्टि उत्पन्न थइ. ए श्लोक चारे तरफथी अवळो सवळो वंचाय छे. ॥१२॥

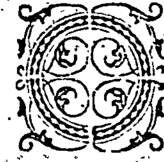
॥ चित्र १३ ॥

मा	धू	मी	त	त	मी	धू	मा
धू	म	नौ	त	त	नौ	म	धू
मी	नौ	प्र	से	से	प्र	नौ	मी
त	त	से	त	त	से	त	त

पुनःपादानुपाद सर्वतोभद्र गतागत ॥ चित्र १४ ॥



मा	धू	मी	त
धू	म	नौ	त
मी	नौ	प्र	से
त	त	से	त



"चित्र नंबर बारमा होजबंधमां लखेलुं कवित अष्टदल कमलमां पण लखाय छे"

॥ अथ गतागत ॥ स्वस्तिक गति चित्र. यथा ॥सवैया॥

मेरन प्रागट गोम घटास, सटा घमगोटग प्रान रमे ॥ में भटु लागु सु तीय महीस,सही मय तीसु गुलाट भमे॥ मे न कमं झल मोय मलीस, स ली मय मोल झमंकनमे ॥ मे दह व्रेह प्रवीन सदा स, सदा सन वीप्रह व्रेह दमे ॥१३॥

अर्थ. कुसुमावळी सागरप्रत्ये लखेछे के प्रगट मेरु जणातो नथी. अने आकाशमां घटा पण जणाती नथी . पण घमघोर वरसादना गोटामां गयेली झटा एटले वीजळीनी पेठे तेना (प्रविणना) प्राण रमेछे. अने हुं तो (तमो) राजानी स्त्री (प्रवीण) नी भटु एटले सखी लागुंछुं, पण ते मारी सही एटले वेनपणी स्त्री गुलांट खाती होय. एम भ्रमणामां पडीछे. अने माराथी तेना मननी झाळ कमी थती नथी. ते प्रवीण मने मळी छे. अने

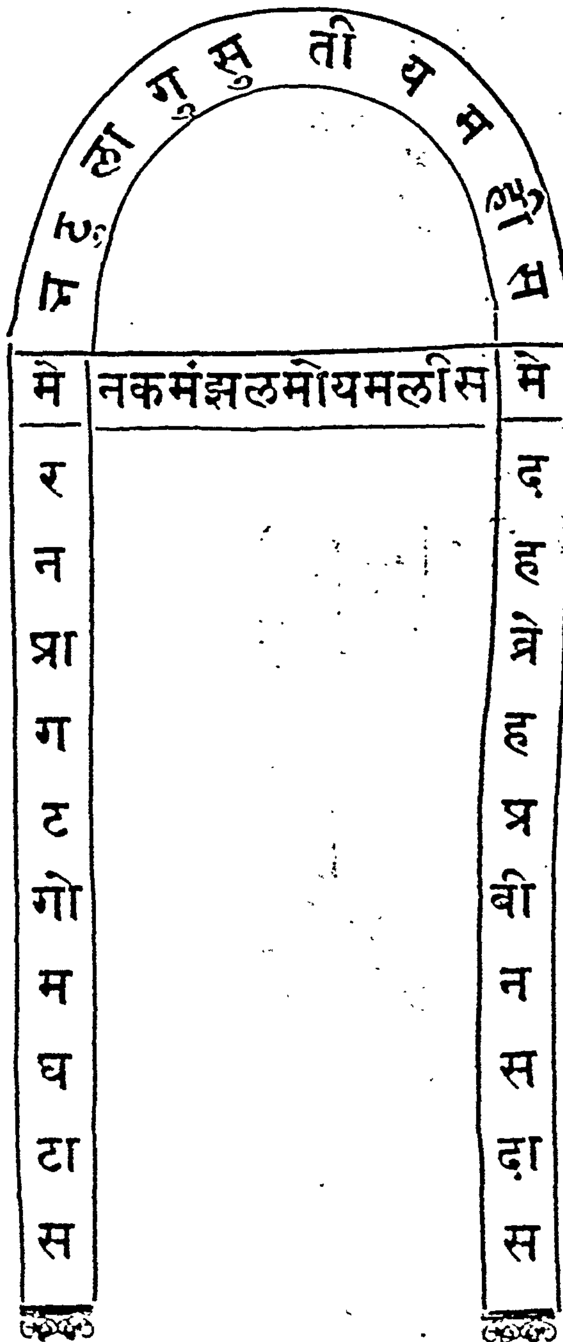
तेना झांझरना झमकाराना मूळमांज तेणे मने लीधी. अने ते प्रवीणनुं म एटले मेद अथवा मांस ते विरहथी हमेशां बळेछे. अने हमेशां हुं श्रामणी तेना सन एटले पासे रहुंछुं. तेथी खात्रीथी कहुंछुं के तेने विरह बहु दमेछे. एज सवैयो सरोता एटले सुह्रदीनी चित्रमांथी पण वंचायछे. ॥१३॥

॥अथ चतुःपूर्वार्धे चतुर उत्तरार्ध गतागत सागर प्रति कुसुमोक्त ॥ चित्र १५ ॥

स	टा	घ	म	गो

प्र	ह	त्रे	ह	द	मे

॥ अथ सरोता बंध वह ॥ सवैया ॥ चित्र १६॥



॥ अथ प्रवीनोक्त स्वस्तिकाकृति शिव स्तुती ॥

॥ चित्र भेद यथा ॥ कवित ॥

मदनहा हासहरा, राजराज जयं अजा, जातुधान नमे

प्रेत, तप साजी जीव भाय॥ महामुन नमे जाहि, हित कामु
मुदा दान, नव दामुं मुंड धार, रत रीझा झार लाय ॥ महा-
मंत्र त्रसे सवी, वीषपाना नादबिदा, दास प्रेहं हंशब्रत त-
म दाही हीय ध्याय॥मंड व्याल लसे भूत,तनार्जुन नग्नदसा
साथ गंग गजांबर रहो हिआ आपु आय ॥ १४ ॥

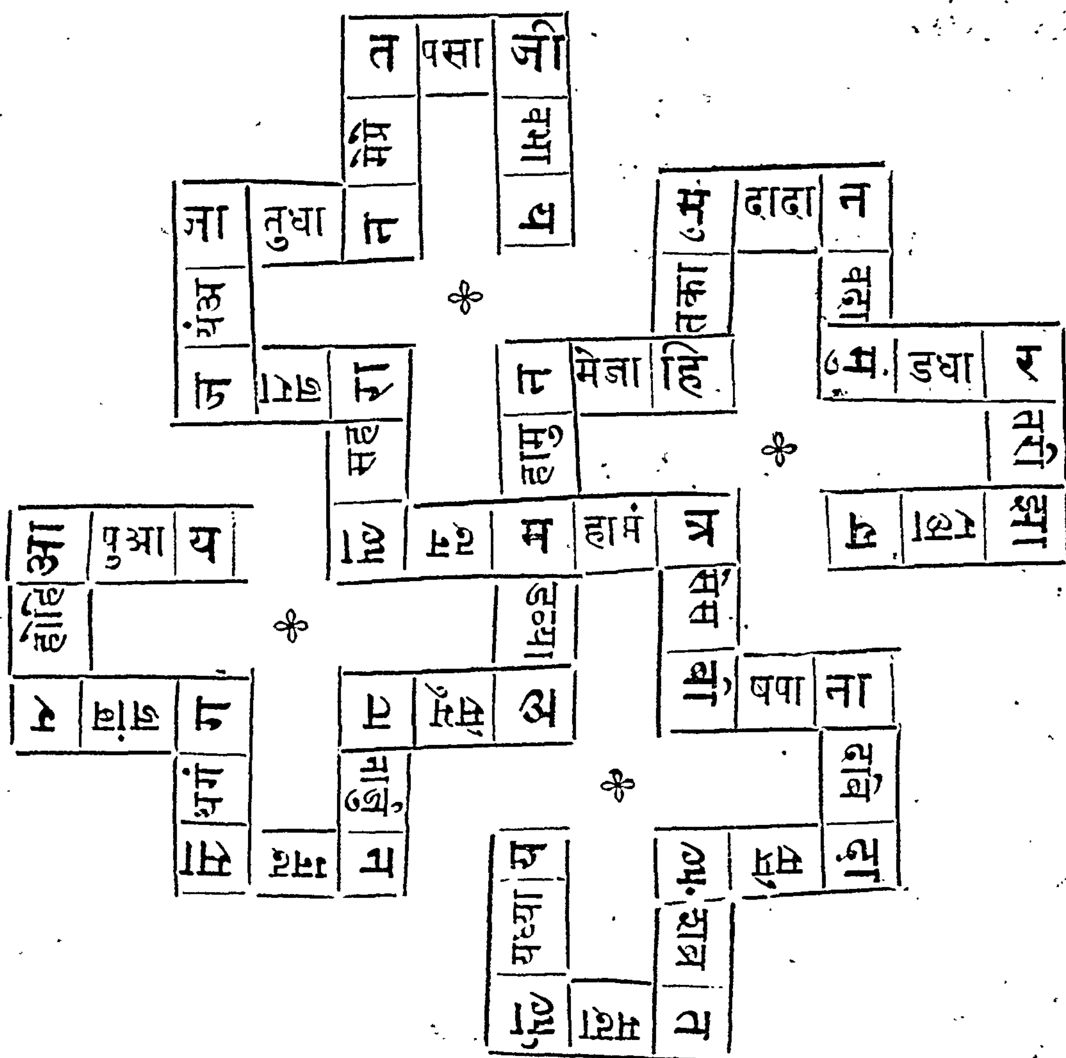
अर्थ. "प्रवीण शिवनी स्तुति करेछे. ते शिव केवा छे, तो" कामदेव ने हणनारा. अने हास्य रसने धारण करनारा, राजाना राजा, अने (अजा) मायाने जीतनारा छे.अने जेने राक्षसो तथा प्रेत नमेछे.अने जेनेतप सजवानुं जीवमां भावेछे. अने जेने मोटा मुनियो नमेछे. अने भक्तोना हितनी कामनानुं आनंदथी दान करेछे. अने नविन मस्तकनी माळा धरी छे. अने रीझेला रहेछे. अर्थात् प्रसंन रहेछे. अने त्रीजा नेत्रमां ज्वाळा लीधी छे. अर्थात् धारण करीछे, अने जेन्न महामंत्रथी सर्वे वीता रहेछे. अने जेणे विशपान कर्युंछे, अने स्वरनी विद्याना जाणनारा छे. अने दासना प्रियछे. अने परम हंसनुं व्रत धरनारा छे, अज्ञानने बाळनारा छे. तेनुं हुं हैयामां ध्यान करूंछुं. जेने सर्पनां तथा विभूतिनां (मंडन) भूषण शोभेछे, अने जेनुं शरीर श्वेत छे, अने जेनी स्थीति नग्न छे. जेनी साथे गंगाजी छे, अने हाथीनुं चर्म ओढ्युंछे, एवा हे शंकर तमे आपे आवीने मारा हैयामां रहो.॥१४॥

॥ तन्मध्य गत ॥ दोहा ॥ यथा

महाराज जानंत जिय, मनही मुन मुरझाय ॥
मत्र विना दाहंत हिय, मलत न सागर आय ॥ १५ ॥

अर्थ. हे महाराज तमे मारा जीवनी वात जाणोछो, के हुं मनमां ने मनमां मुंझाउंछुं अने सागर मित्र विना मारुं हृदय बळेछे, ने ते मित्र आवीने मळता नथी. ॥१५॥

॥ चित्र १७ ॥

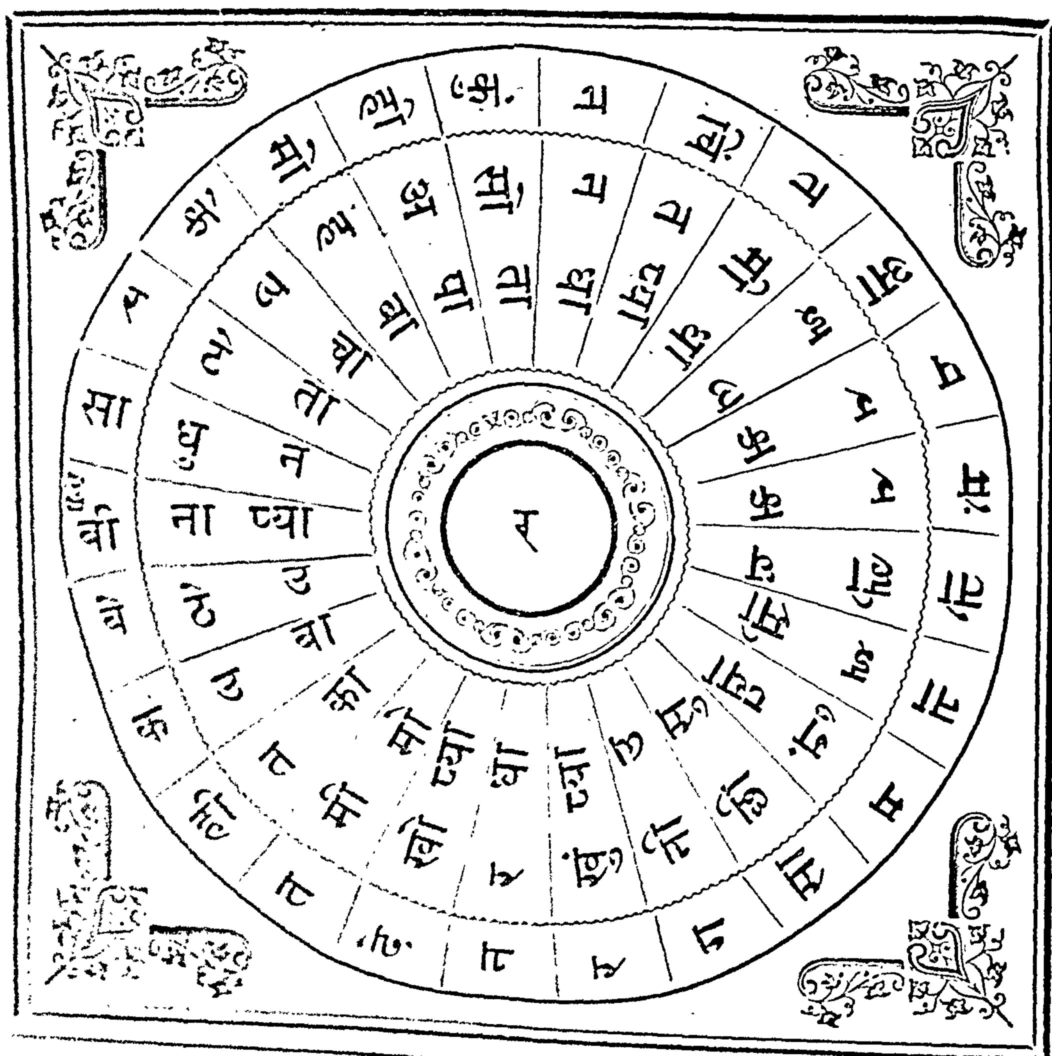


॥ अथ चक्र प्रबंध भेद कवित यथा ॥

बीना प्यार साधु नर, रटे तारके उचार, मोह बारही अपार-कुं सो तारन न धार ॥ चित्त प्यार तमीं धार, आइ उर पर कर, मेर कर तोहि घर, नाइ सीर मगुं प्यार ॥ साछी सुर गनी उर, रखुं प्यार नरधार, देखो प्यार तमी मोर, हितकार कउवार ॥ बेठे उर बिसारके मोहीकुं नचिंत आप, मेंतो नाम सागर न देतही कबे बिसार ॥ १६ ॥

अर्थ. हे सागर कोइ साधुजन प्यार विना ॐकारनो उच्चार रटे, तेथी मोहरूपी अपार जळने तारनारने धारी शकाय नहीं, माटे तमे चित्तमां प्यार धारीने आवीने मारी छाती उपर महेर करीने तमारो हाथ धरो. केमके हुं मस्तक नमावीने प्यार मागुंछुं. मारा मनमां सूरजदेवने साक्षी गणीने हुं निश्चे प्यार राखुंछुं. माटे हे हितकारी तमे कोइ वार मारो प्यार जुओ, आप तो मने विसारीने मनमां निश्चित थइने बेठाछो, अने हुं तो सागर एवुं नाम क्यारे पण वीसारी देती नथी.॥१६॥

॥ चित्र १८ ॥



॥ गाहा ॥

गोमूत्रिकादि भेदं, चित्र कवित शुभ कला प्रवीनोक्तं ॥
द्वयषष्ठी अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥ १७ ॥

अर्थ. ए रीते गोमूत्रिकादिक चित्रना भेदवाळी सारी चित्र कविता प्रवीणे कही, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ बासठमी लहेर संपूर्ण थइ. १७

इतीश्री प्रवीनसागर ग्रंथे कलाप्रबीनोक्त गोमूत्रिकादि चित्र कवित वर्णनो नाम द्विषष्ठितमो लहरं॥ ६२ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां द्विषष्ठितमस्तरंगः समाप्तः ॥६२॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

हवे कर्यां रससागरे, गोमूत्रिकादि चित्र ॥
आ त्रेसठमी लहरिमां, कहेशे परम पवित्र ॥

॥ अथ रस सागरोक्त गोमुत्रिकादि चित्र भेद ॥दोहा॥

चित्र लिखित परबीनके, गोमूत्रिकादि रीत ॥
बांचत रससागर रिझे, किये सुचित्र कवीत ॥१॥

अर्थ. कळाप्रवीणना करेलां गोमूत्रिकादि चित्रभेदनां कवित वांचीने रससागर रीझ्या, तेथी तेमणे पण गोमूत्रिकादिक चित्र भेदनी कविता रचीने प्रवीण तरफ मोकली ते हवे कहिये छिये. ॥१॥

॥ अथ गोमूत्रिकाबधं भेद. रामस्मरन ॥ सवैया॥

यहे कुल भान, हरी सुलभान, दहे दुलभान, प्रभा नभ भान ॥स हे अलभान, करी वलभान, रहे नल भान, सभा शुभ भान ॥ व्रहे शलभान, अरी जल भान, चहे चल भान,अभान न भान॥ कहेज लभान, परीत लभान, यहे

थल भान, लन्ना अभ भान ॥ २ ॥

अर्थ. रससागर रामचंद्रजीनुं स्मरण करेछे, ते रामचंद्रजी केवाछे, तो जे सूर्यवंशी छे, अने ते हरी दुर्लभ वस्तु जे होय तेने पण सुलभ करी देछे. आकाशना सूरजना जेवी जेनी कांति छे, अने (स) ते प्रभु अलभ्य एटले न मळी शके एवाछे, अने गजेंद्रना वल्लभ छे, अने नळराजाना ज्ञानमां पण रह्या छे. सभाना रुडा सूर्यरूप छे, विरहरूपी पतंगियाना तथा शत्रुरूपी जळना सुर्यरूप छे, अर्थात् पतंगियो जेम सूर्यना प्रतापथी छुपी जायछे, तेम विरहीजननो विरह ते ईश्वरना प्रतापथी छुपी जाय, अने जेम सूरज जळने शोशी लेछे, तेम शत्रुने शोषण करनारा रामछे, जेने शरीरनुं भान चलित थयुं छे, एवा विदेही जेने चाहेछे, अभान एटले अज्ञानरूपी नक्षत्रने ढांकी देनारा सूर्यरूप छे, एम जेओने ते लभ्य थया छे, अर्थात् मळ्या छे, तेओ कहेछे, ते ईश्वर प्रितिथी मळेछे, अने ते ज्ञानना स्थळमां समाय छे, एवा चिदाकाशरूपी ईश्वरनुं भान अर्थात् ज्ञान अमने मळ्युं, आ सवैयो गोमुत्रिका अश्वगति त्रिपदी कपाटबंध तथा शोडशदल कमळबंधमां पण वंचायछे. ॥२॥

॥ अथ दूजो भेद गोमूत्रिकाबंध ॥ सवैया ॥ चित्र १९ ॥

य	हे	कु	ल	भा	न	ह	री	सु	ल	भा	न	द	हे	दु	ल	भा	न	प्र	भा	न	भ	भा	न
स	हे	अ	ल	भा	न	क	री	व	ल	भा	न	र	हे	न	ल	भा	न	स	भा	गु	भ	भा	न
व्र	हे	ग्र	ल	भा	ने	अ	री	ज	ल	भा	न	च	हे	च	ल	भा	न	अ	भा	न	भ	भा	न
क	हे	जो	ल	भा	न	प	री	त	ल	भा	न	प	हे	थ	ल	भा	न	ल	भा	अ	भ	भा	न

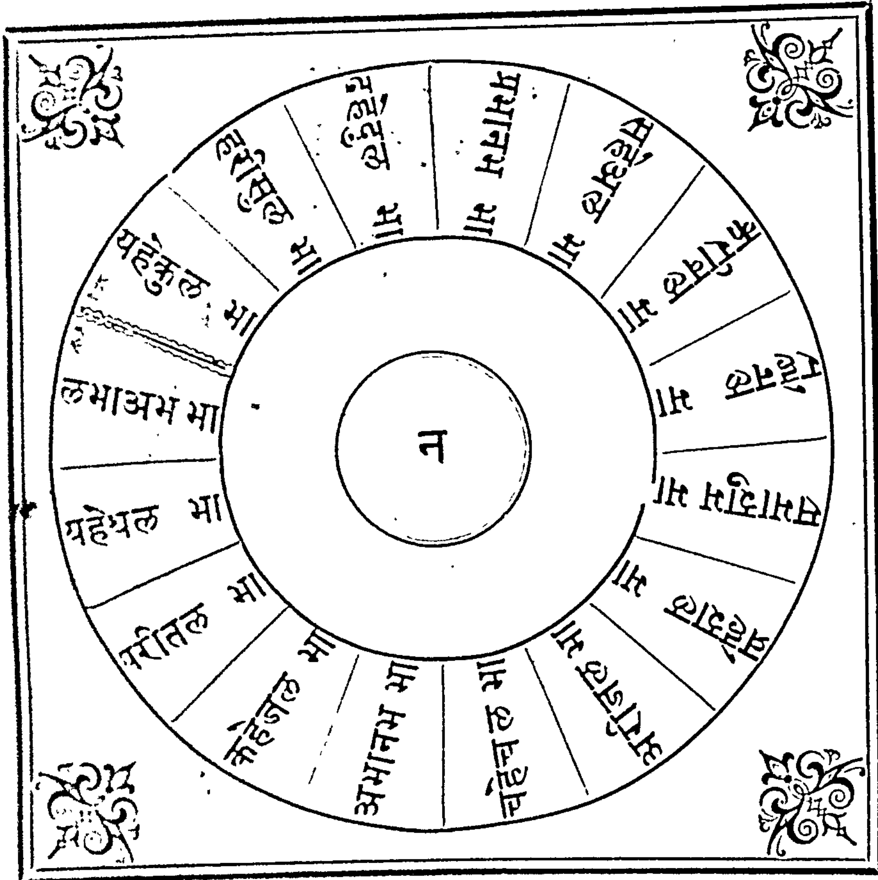
॥ अथ अश्वगति भेद॥सवैया॥चित्र २०॥

य	हे	कु	ल	भा	न	ह	री	सु	ल	भा	न	द	हे	दु	ल	भा	न	प्र	भा	न	ज्ञ	भा	न
स	हे	अ	ल	भा	न	क	री	व	ल	भा	न	र	हे	न	ल	भा	न	स	भा	शु	ज्ञ	भा	न
त्र	हे	श	ल	भा	न	श्र	री	ज	ल	भा	न	च	हे	च	ल	भा	न	अ	भा	न	ज्ञ	भा	न
क	हे	ज	ल	भा	न	प	री	त	ल	भा	न	प	हे	थ	ल	भा	न	ल	भा	श्र	ज्ञ	भा	न

॥अथ त्रिपदी भेद ॥ सवैया ॥ चित्र २१ ॥ वह सवैया कपाटबंधमें भी लिखा जाताहे॥

य	कु	भा	ह	सु	भा	द	दु	भा	प्र	न	भा	स	श्र	भा	क	व	भा	र	न	भा	स	शु	भा
हे	ल	न	री	ल	न	हे	ल	न	भा	ज्ञ	न	हे	ल	न	री	ल	न	हे	ल	न	भा	ज्ञ	न
त्र	श	भा	अ	ज	भा	च	च	भा	अ	न	भा	क	ज	भा	प	त	भा	घ	थ	भा	ल	श्र	भा

॥अथ शोडशदल कमलप्रबंध, वह कवित ॥चित्र २२॥



॥ दोहा ॥

चिदाकाश सम रामसो, उर धरि अरजी आप,
परम प्रेमि परवीन को, मोकु कराउ मिलाप॥३॥

अर्थ. चिदाकाश जेवा ते प्रभु रामचंद्र पोते मारी अरजी मनमां धरीने उत्कृष्ट प्रेमवाळां प्रवीणनो मने मेळाप करावो. ॥३॥

॥ छपय ॥

उंचि अटाकी छटा, घटा घन जैसि घटितहे ॥
मानिक मनी अमोल, जवाहिर जहां जटितहे ॥

बैठे सज्जन सात, कहे सागर सु बिचारी ॥
बिषधर सम यह बिरह, कोन इन कृत दुःख हारी ॥
तब कहे मित्र, कालीदमन, सो धरहु अब ध्यानमें ॥
तिन ध्यान धर्यो सागर तबे, भइ दृढ वृति भगवानमें॥४॥

अर्थ. उंची अगाशीनी शोभा वरसादनी घटाना जेवी घडेली अर्थात् बनावेली छे. ज्यां अमुल्य माणक मणी वगेरे जवाहीर जडेलां छे. त्यां साते मित्र बेठा हता, त्यारे सागरे बिचारीने कह्युं के सर्प जेवो आ विरह छे, तेना करेला दुःखनो हरनार कोण हशे ? त्यारे मित्रोये कह्युं के काळी नागनुं दमन करनार कृष्णनुं स्वरूप ध्यानमां धरो. त्यारे सागरे ते स्वरूपनुं ध्यान धर्युं. अने तेना मननी वृत्ति भगवानमां दृढ थइ. ॥४॥

॥ दोहा ॥

दिश दिशके आकाशमें, पुनि नग उपरि अनूप ॥
जित देखत तित कालि सिर, देखे कृष्न स्वरूप ॥५॥

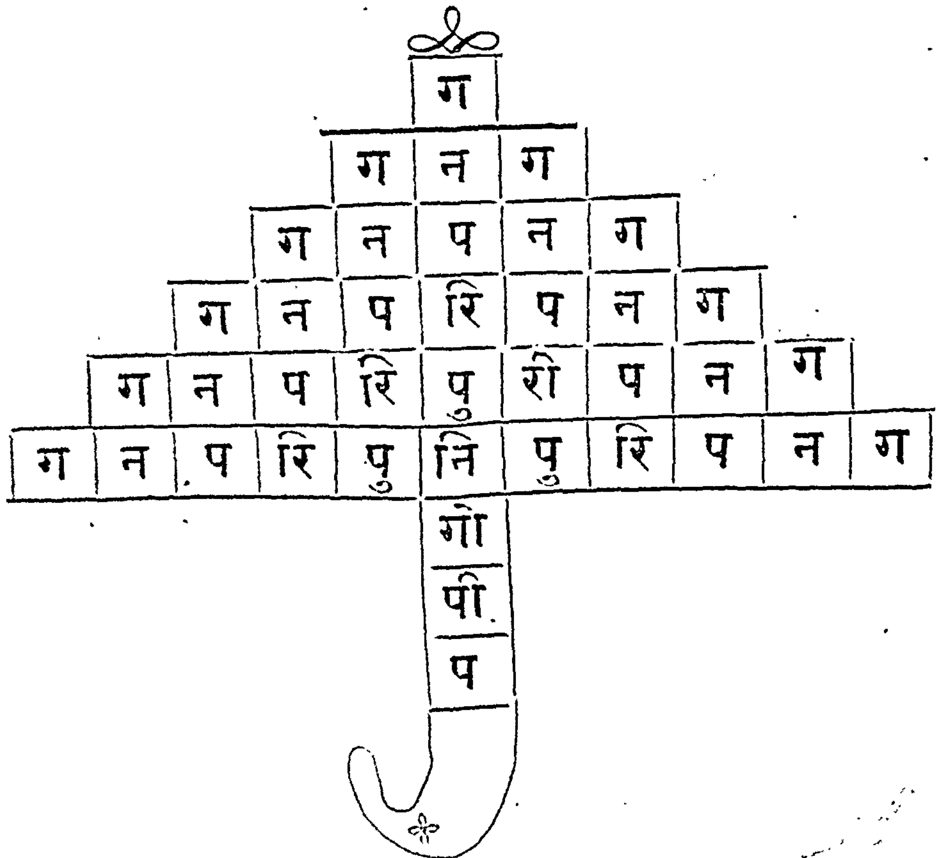
अर्थ. त्यारे प्रत्येक दिशाना आकाशना भागमां तथा नग एटले पर्वत झाड तथा घरो उपर पण उपमा न अपाय एवा कृष्णनां अनेक रूप काळी नागने माथे, ज्यां ज्यां जुए त्यां दीठां ॥५॥

॥ अथ छात्रि प्रबंध चतुर्थ पद सर्वतो भद्र ॥ दोहा ॥

गगन गगन पनग गन परि, पनग गनप रिपु रीप ॥
नग गन परि पुनि पुरि पनग, गन परि पुनि गोपीप॥६॥

अर्थ. आकाश आकाशमां सर्पना समुदाय उपर, सर्पना समुदायना पति जे शेषनाग तेनो शत्रु हीरण्याक्ष "जे शेषने माथेथी पृथ्वी लइ जतो हतो ते" तेना शत्रु विष्णुने दीठा. अने वळी नग एटले पर्वत झाड अने घरोना समुदाय उपर वळी गोपीना पतिने दीठा. ॥ ६ ॥

॥ चित्र २३ ॥



॥ दोहा ॥

कृष्ण कहे दुहु वर्षमें, होवहि बिरह विनाश ॥
सिद्ध कथित त्यों करहि तव, पावहि पद कैलास ॥७॥

अर्थ. ते कृष्णे कह्युं के हवे बे वरसमां तमारा विरहनो नाश थशे. पण सिद्धे तमने कह्युं छे. ते प्रमाणे करशो त्यारे कैलास धाम पामशो॥७॥

॥ अथ जुगल दोहांतर्गत चरन गुप्त जाली प्रबंध ॥

पंथी जाय कहो सु निज, नहीं मिलन विन चेन ॥
भरे उसासा द्रग झरे, बीतत दिन दुख देन ॥८॥

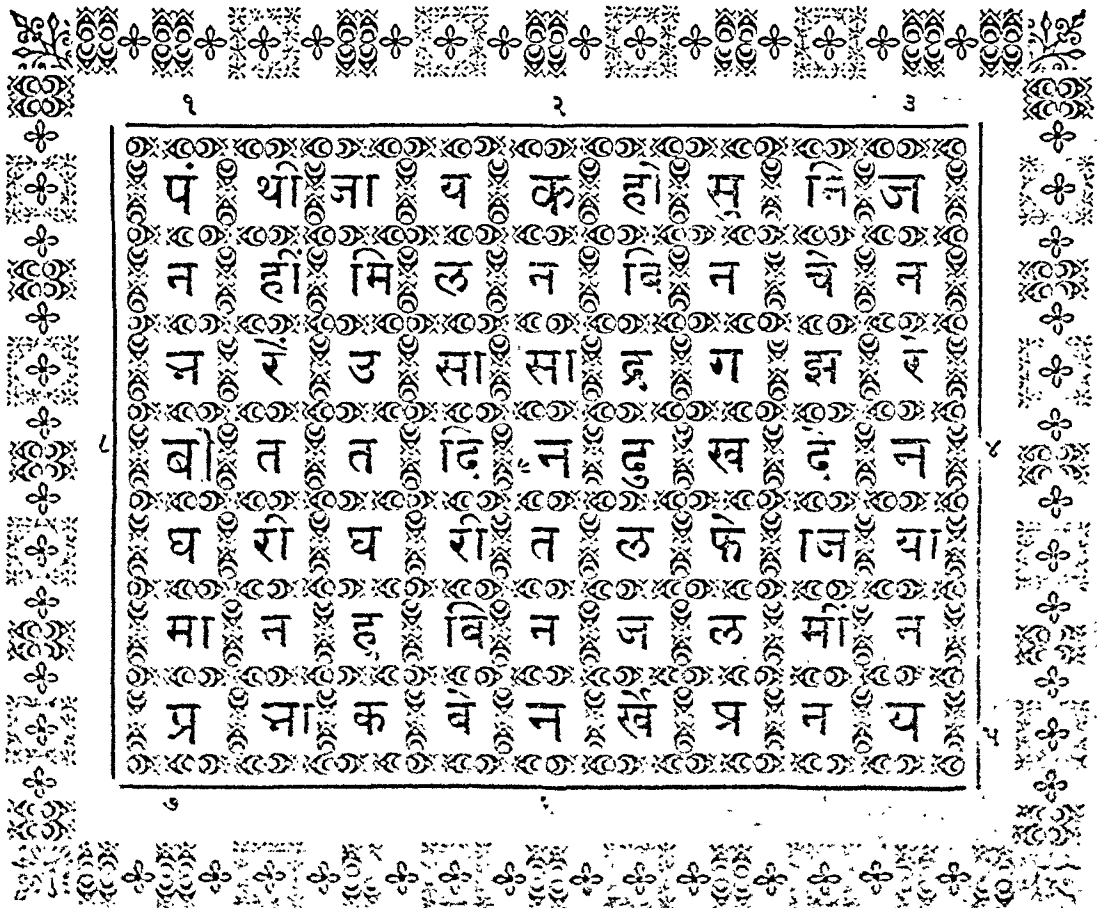
घरी घरी तलफे जिया, मानहुं बिन जल मीन ॥
प्रभा कवे नखें प्रनय, पंकज नयन प्रवीन ॥९॥

अर्थ. कोई मुसाफर प्रवीणने जइने कहो के तमने मळ्या विना सागरने चेन पडतुं नथी, अने उसासा भरेछे, ने नेत्रथी आंसु झरेछे, अने दिवस दुखदायक वीतेछे. ॥८॥

अर्थ. जाणे के पाणी वगरनुं माछलुं होय, तेम घडिये घडिये जीव तलफेछे, अने एवुं चाहेछे के नम्रता भरेलां प्रवीणनां कमळ जेवां नेत्रनी कांति क्यारे निरखिये? ॥९॥

॥ अथ जुगल दोहांतर्गते चर्नगुप्त जाली प्रबंध भेद ॥

॥ चित्र २४ ॥



॥ अथ अष्टकोण वर्त्तुलाकार प्रबंध आरोहावरोह
यथा ॥कवित ॥ चित्र २५ ॥

नवन वि प्रत रसु दामनि दुती दरसु, धुरवा धरा परसु,
इच्छाही दहत छन॥ नछतह दही छाइ, दादुर धुनी बढाइ,
घटा घोर चढी आइ, नरहे सहे न मन॥ नमनहे सहे रन,
ग्रहे रव झिल्लि गन, चातुकी करे भ्रमन, मेन रपू रेनी दन॥
नद नीरे पूर नमे, मरुत वघूरनमें, बोलत मयूरनमें, सुरत
प्रवीन वन ॥ १० ॥

अर्थ. सागर कहेछे के वर्षाऋतु आववाथी (वि) आकाशप्रत्ये नवीन (रस) जळ चढयुं छे, तेमां विजळीनी कांति देखायछे, अने वरसादना वरा पृथ्वीने अड्याछे. ते मारी अभिलाशाने क्षणमां दहन करेछे, नक्षत्रोने ढांकी दीधांछे, अने देडकाए सोर वधारी मुक्योछे, अने मेघनी भयंकर घटा चडी आवीछे, ते मारुं मन सहन करी रहेतुं नथी, ए वर्षादनी (सेहेरो) धाराओ नमेली छे, अने तमराना जथाए शब्द ग्रहण कर्योछे, अर्थात् लीधोछे, बपैयानी मादा भ्रमण करेछे, तेमज कामदेवरूपी शत्रु पण रात दिवस भम्या करेछे, नदियो पाणीवडे भरेली नमेछे, अर्थात् वहेछे, पवन घुमरीओ खायछे, अने मोर बोलेछे, तेमां मारी सुरता तो प्रवीणमांज बनी रहीछे. ॥१०॥





॥ अथ चोपर प्रबंध वह ॥कवित ॥ चित्र २६ ॥

॥अथ चोकी प्रबंध भेद ॥सवैया॥ ॥चित्र ॥२७॥

रे जन बीसरहो हमकों तुम, प्रेम भरे हितुके समरे ॥
रे मम केउ मिलो न तबे लगि, दाउ विजोग दहे तनरे ॥
रे नत है ज्यु तिहारोइ साधन, नेन हरे सुरबीर परे॥
रे परबीन हमें तुम चाहत, तो पठवो सुसबी नजरे ॥११॥

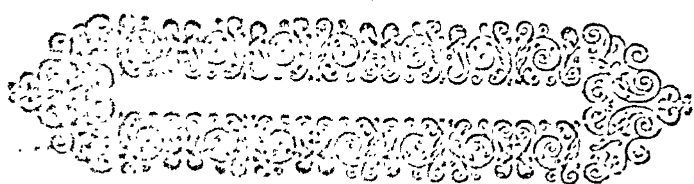
अर्थ. सागर कहेछे के अरे प्रवीण तमे प्रेमनां तथा अमारा सघळा हितनां भरेलांछो, ते तमे अमने विसरशो (जानि) नहीं, अरे कोइ मिशे मळशो नहीं, त्यां सुधी विजोगनो दव मारा शरीरने बाळशे, अरे नित्य तमारुंज साधन छे, अने नेत्र शुरवीरनी पेठे तमारी तरफ हालेछे, अर्थात् दोडेछे, अरे प्रवीण अमे तमने चाहिये छिये, ते माटे तमारी सारी छबी अमारी नजर आगळ मोकलो. ॥२१॥

जि	स	र	हो	ह	म	को	तु	म	प्रे	म	न	रे	हि	तु

॥ अथ चतुर्पादगर्न्नांतर्गत अंत्यतुक गुप्तांतर्लापिका ॥
॥सीढीबंध नेद ॥ कवित ॥

एइ नेन चाहतहे तेरेई बिलोकबेकों, नेरे एक आय केसें क्षिप्र क्षिप्र पाइयेन ॥ बीतत कररे पल छिनहू न परे कल, रही फेल ब्रहा यातें निकट रहाइयेन ॥ एकही सनेह बीच, जे कही अनेक टेक, ताइ दहनो बिसेक निज मन चाइये न॥ आदकी तरंग सो तो आइ जिय संग जैहे एरे ये प्रबीन फेर एक दन आइयेन ॥१२॥

अर्थ. सागर कहे छे के हे प्रवीण? आ अमारां नेत्र एक तमारान निरखवाने चाहे छे. माटे एकवार जलदी जलदी पासे आववाने केम पामतां नथी? अमने कठण पळ वीते छे. अने क्षणमात्र कळ पडती नथी. अने विरह फेलाइ रह्यो छे. माटे पासे आवीने केम रहेतां नथी. अमे एक स्नेह वच्चे जे अनेक टेक कही छे. अर्थात् धरी छे. तेने विशेषे बाळवाने पोताना मनमां चाहीए नहीं. प्रथमनो प्रेमनो तरंग जे आव्यो छे. ते तो जीवनी साथे जाशे. माटे अरे ओ प्रवीण फरीथी एक दिवस केम आवतां नथी. एमां छेली तुकना सोळ अक्षर एटले "एरेए प्रबीन फेर एक दन आइये न" पगथियाने आकारे वांचतां एज कवितमांथी नीकळे छे॥१२॥



॥ चित्र २८ ॥

ए	इनेन चाह	तहे	
ते	रे	ईबिलो	कबेकों
नेरे	ए	कआ	यकेसें
क्षिप्रक्षि	प्र	पइयेन	
वां	तत करेरे	पल	
छि	न	हूनप	रे कल
रही	फे	ल	ब्रहा यातें
निकट	र	हाइयेन	
ए	कही सनेह	बीच	
जे	क	हीअने	क टेक
ताइ	द	ह	नाविसेक
निज म	न	चाइयेन	
आ	दकीतरंग	सोतो	
आ	इ	जियसं	ग जैहे
एरे	ये	प्र	वीन फेर
एक द	न	आइयेन	

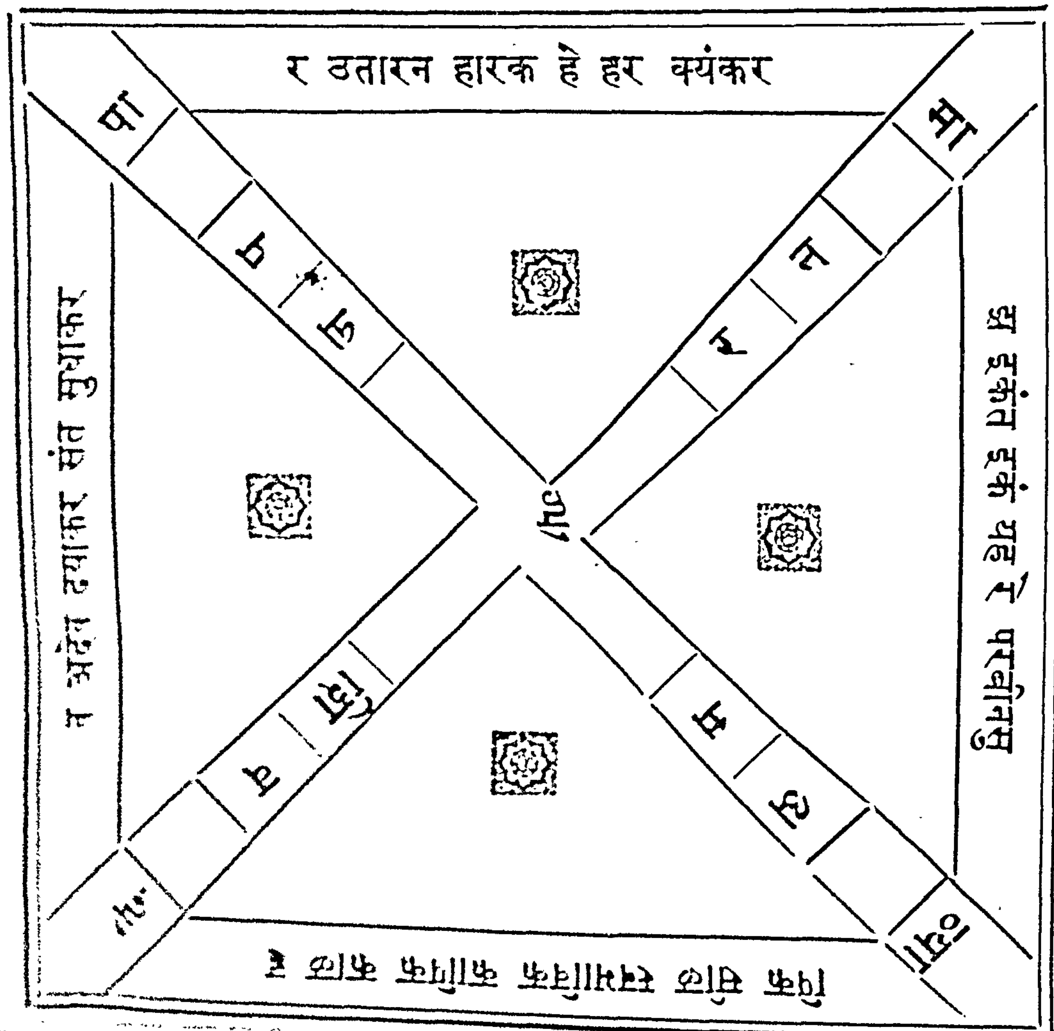
॥ अथ शिवोपरी चित्त दृढाव बोध ॥ सवैया चोकी प्रबंध ॥

हे जप पार उतारन हारक, हे हर क्यं कर मान रहे ॥ हे रनमांझ इकंत इंक यह, रे परवीन सु व्याल महे ॥ हे मल व्यापिक सील स्वभाविक, कापिक काल हदे वशिहे ॥ हे शि-

व देव अदेव दया कर, संत सुधाकर पाप जहे ॥१३॥

अर्थ. सागर कहे छे के, शिवजी एवा छे के, जेनो जप करवाथी दुःखना पारने उतारनारा छे.अने ते शिवना किंकर एवा छे के,तेओ सन्मान पामेला रहेछे.अने ते शिव रणमां एटले वनमां एकांते एकला छे,अने अरे प्रवीण तेमनी पासे मोटा सर्प छे. अने ते शिव मायामां मळीने सर्वत्र व्यापक छे. अने स्वभावे शीळा छे. काळने कापनारा छे, ते आपणा अंतरमां वसशे, ते शिव देव अने दैत उपर दया करनारा छे. अने संत जनने अमृतनी खाण जेवा छे. अने पापने हणनारा छे. माटे तेमनुं स्मरण करो ॥ १३ ॥

॥ चित्र २९ ॥



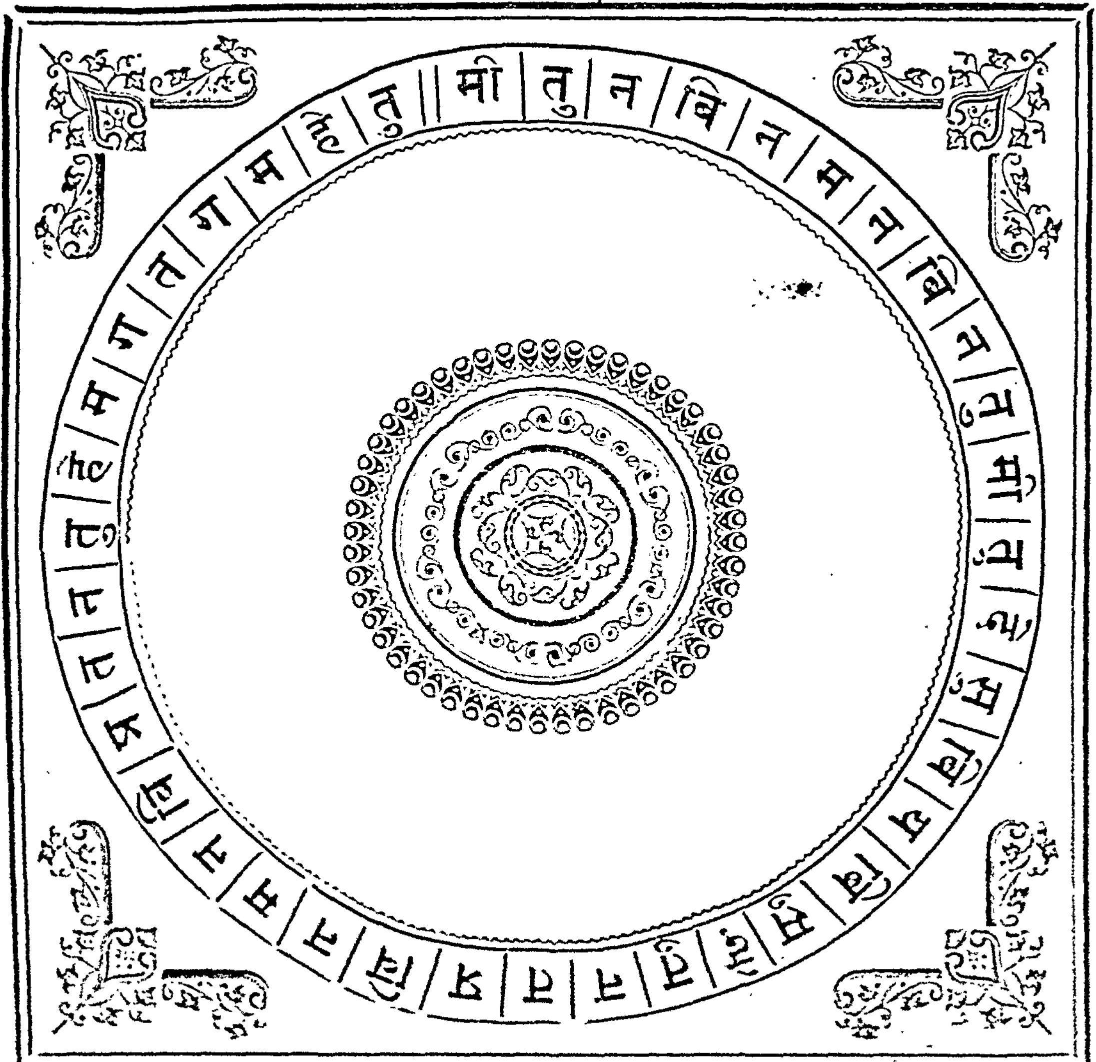
॥ अथ आरोह्यावरोह एक कवितार्थ ॥ दोहा ॥

मीतु नविन मन बिन तुमी, तुदे सु विय विसु देतु ॥
नत प्रवीन मन बीप्रतन, तुहे मगत गम हेतु ॥ १४ ॥

उलट भेद ॥ सोरठा ॥ चित्र ३० ॥

तुहेम गत गम हेतु, नत प्रवीन मन बिप्र तन ॥
तुदेसु विय विसु देतु, मीतु न बिन मन बिन तुमी ॥ १५ ॥

अर्थ. हे नवीन मित्र तमारा विनां मारुं मन वियोगी छे वळी (तुदे) पेटमां बीजुं विष आपो छो, हे प्रवीण नित्य ते मन विप्रसुतनी पेठे हे हितस्वी तमारुं आगमन (भीक्षा) मागे छे. १४-१५



॥ अथ कपाटप्रबंध दोहा ॥

वान ठान वेधे हिये, पांचो बन परवीन ॥
ध्यान आन सोधे जिये, राचो मन जर मीन ॥ १६ ॥

अर्थ. सागर कहे छे के प्रवीण विना "कामदेवे" पांचे बाण ठरावीने हैयुं वींधी नाख्युं छे. पण ते प्रवीणनुं ध्यान जीवमां लावीने तपास कर्यो. तो जेम जळमां माछलुं रीझे, तेम मारुं मन प्रवीणमां रीझ्युं. आ दोहरो गोमूत्रिका अश्वगति अने त्रिपदीमां पण लखाय छे ॥ १६ ॥

॥ अथ कपाट प्रबंध भेद दोहा ॥ चित्र ३१ ॥

वा	न		न	ध्या
ठा	न		न	आ
वे	धे		धे	सो
हि	ये		ये	जि
पां	चो		चो	रा
ब	न		न	म
प	र		र	ज
वी	न		न	मी

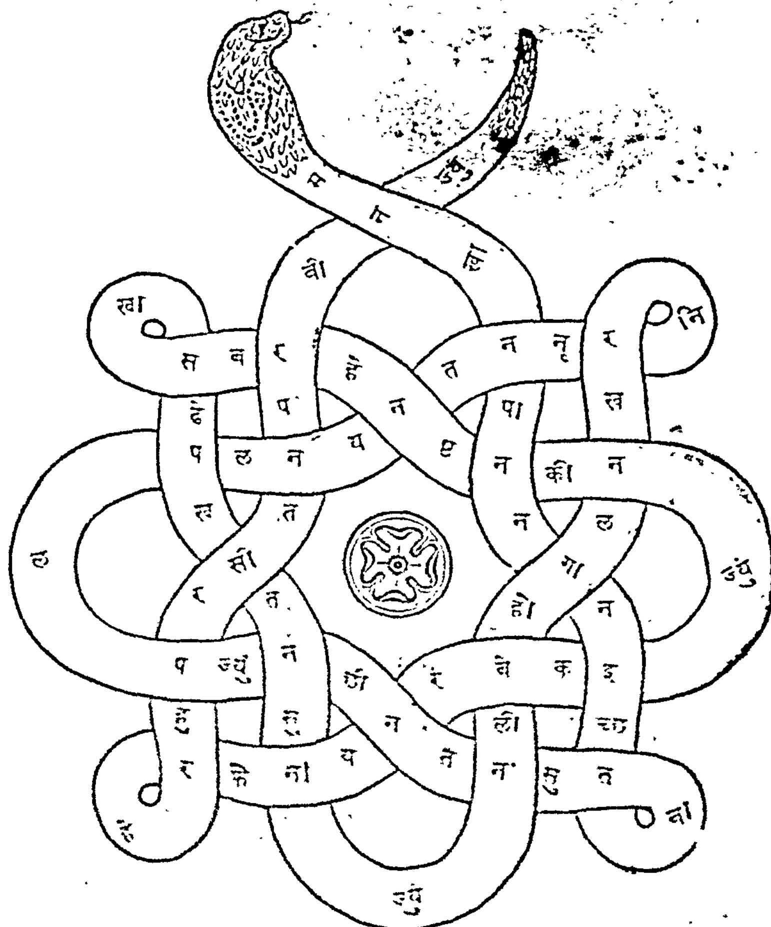
॥ नागपाश प्रबंध हरिगीत छंद ॥

मन खान पान न गान इच्छत, बात सुनत न छीन ज्युं;
पल पल नयन तन नूर निरखन, लगा होवे लीन ज्युं; नां

सुनत सीख पढे सखा सब, रहे नष्ट न कीन ज्युं; इक बेर नयनां फेर हेरहु, परसि तन परबीन ज्युं ॥ १७॥

अर्थ. सागर कहे छे के हे प्रवीण मारुं मन खानपान अने गानने चाहातुं नथी. अने क्षणमात्र कोइनी वात पण सांभळतुं नथी. अने पळेपळे मारां नेत्र तमारा शरीरनी कांति निरखवाने लीन थयां होय; एम लाग्यां रहे छे. मारा बधा मित्रो शीखामण कहे छे, पण मारुं मन सांभळतुं नथी. अने ते शिखामणतो जाणे कहीज न होय. एम (नष्ट) अदर्श थइने रहे छे, माटे हे प्रवीण मारा शरीरनो स्पर्श करीने नेत्र फेरीथी एकवार जुओ ॥ १७ ॥

॥ चित्र ३२ ॥



॥ गाहा ॥

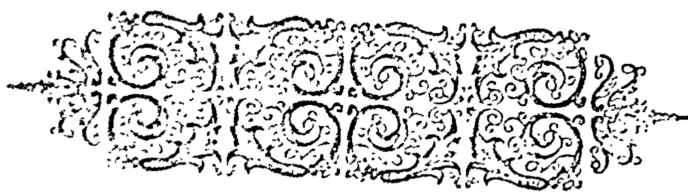
गोमूत्रिकादि युक्ति, रस सागर रचि प्रवीनपें भेजी ॥
त्रयषष्ठी अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥ १८ ॥

. अर्थ. रस सागरे गोमूत्रिकादिक चित्र भेदनी युक्ति रचीने प्रवीण तरफ मोकली ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी त्रेसठमी लेहेर संपूर्ण थइ ॥ १८ ॥



इतिश्री प्रवीन सागर ग्रंथे रससागर कृत गोमूत्रिकादि चित्र भेद वर्ननं नाम त्रिपष्ठितमो लहरं ॥ ६३ ॥

इतिश्री प्रवीण सागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूजरी टीकायां त्रिषष्ठितम स्तरंगः समाप्तः ॥ ६३ ॥



॥ अथ प्रवीनोक्त कमलादिक विविध चित्र भेद वर्णन यथा ॥

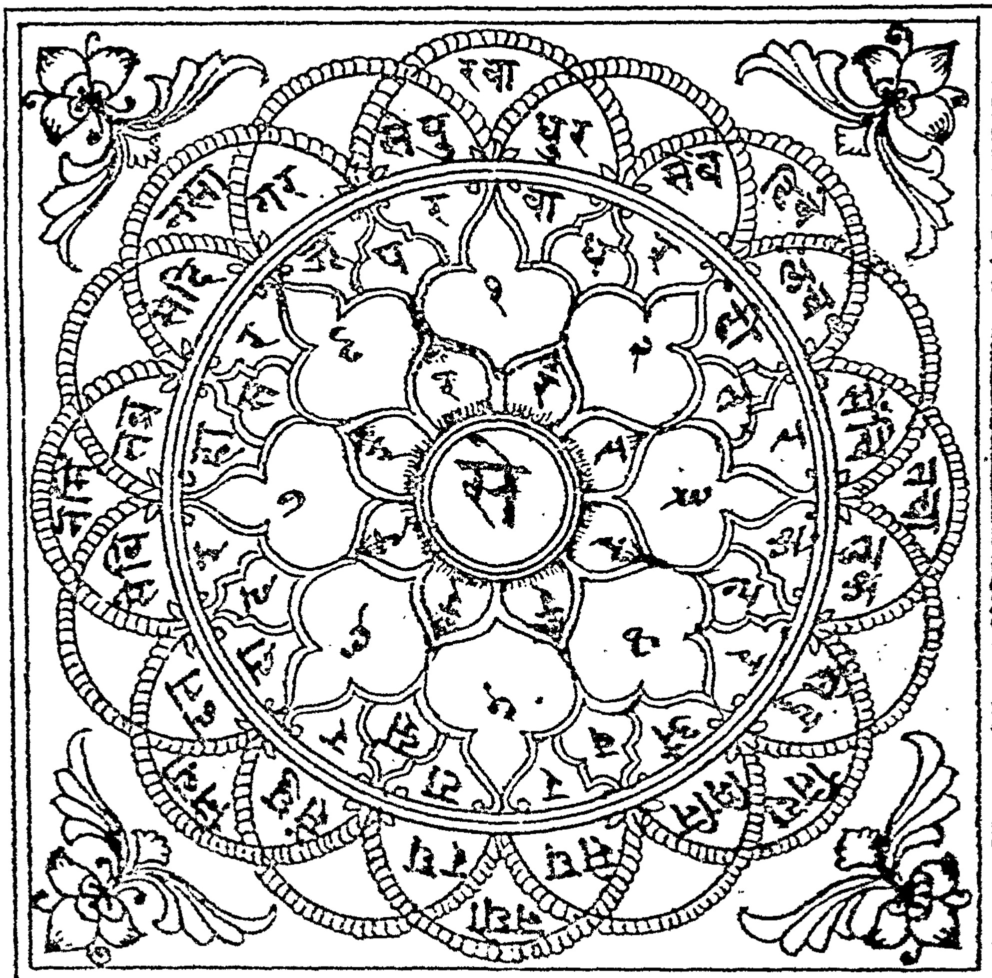
॥ दोहा ॥

कमलादिक आकारमें, कबिता करी प्रवीन ॥
सो अब वर्नन करत हे, प्रेम सुधारस भीन ॥ १ ॥

॥ अथ कर्निकाद्य मध्यांत कमल प्रबंध भेद ॥ सवैया ॥

परसे पुरवा धुरवा धरसें, धरसें बढिवेल चढी तरसें ॥
तरसें चित चातुकके हरसे, हरसे दुति दामिनि अंबरसें ॥
बरसे घनघोर घटा झरसें, झरसें धुनि बाद्दल दादरसें ॥
दरसे बिन मित ग्रहा सरसे, सरसे दिन सागर जू परसें ॥ २ ॥

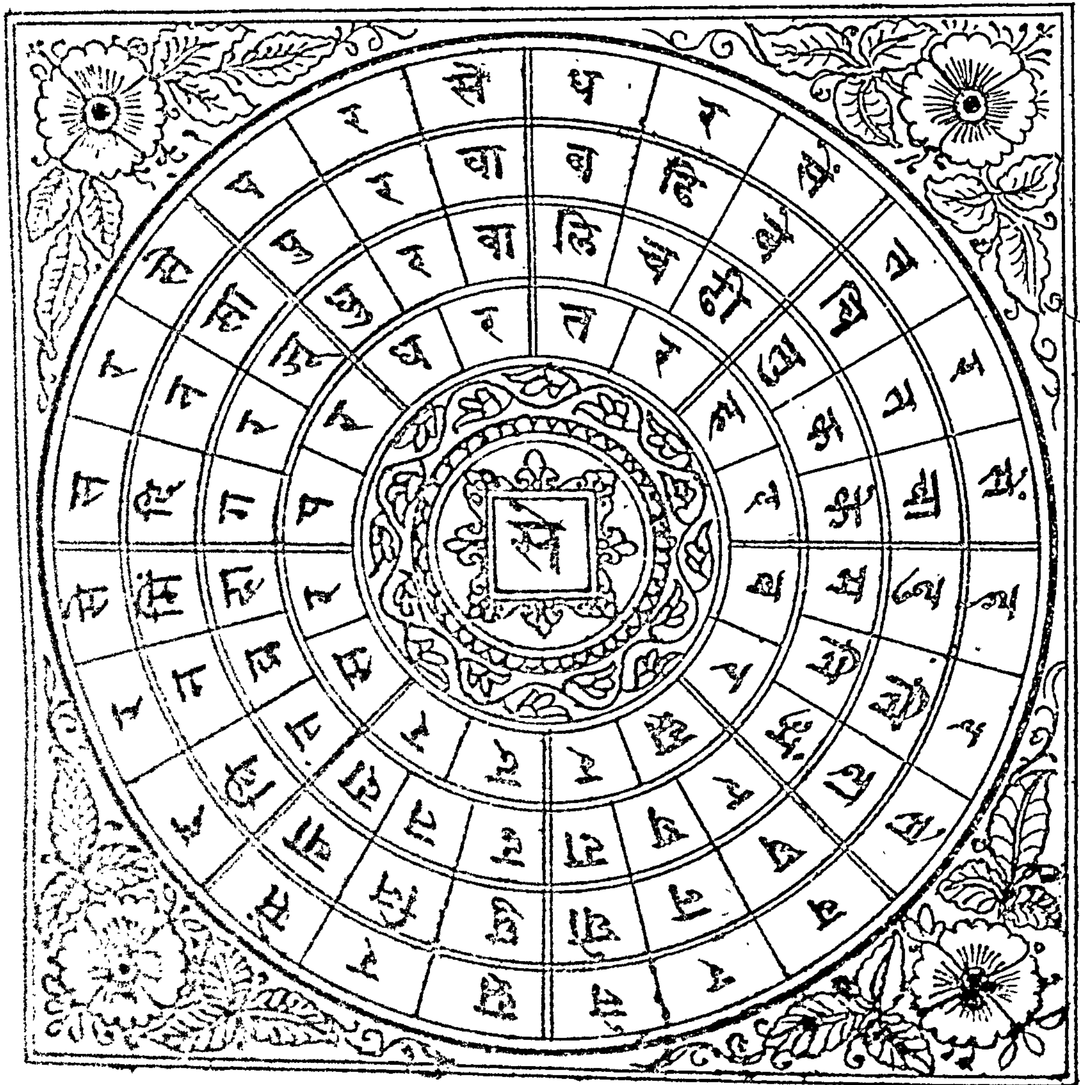
॥ चित्र ॥ ३३ ॥



॥अथ पंच चक्र प्रबंध वद॥सवैया॥

परसे पुरवा धुरवा धरसें, धरसें बढि बेल चढी तरसें ॥
तरसें चित चातुकके हरसे, हरसे दुति दामिनि अंबरसें ॥
वरसे घनघोर घटा झरसें, झरसें धुनि वादत्त दादरसें ॥
दरसें विन मिंत ग्रहा सरसे, सरसे दिन सागर जूपरसें॥२॥

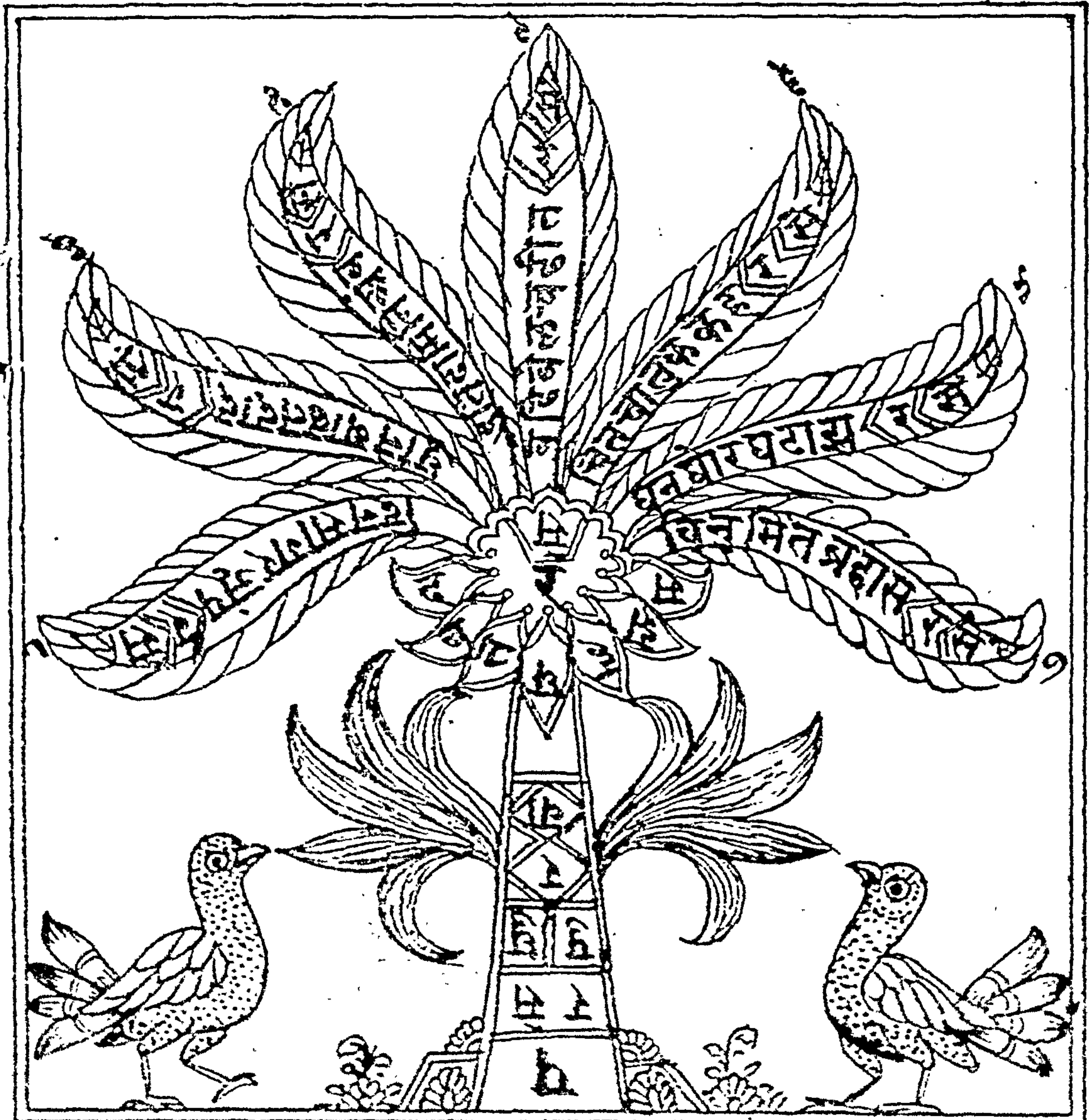
॥ चित्र ॥ ३४ ॥



॥अथ नालिकेरी प्रबंध ॥ वह सवैया॥

परसे पुरवा धुरवा धरसें, धरसें बढि बेल चढी तरसें ॥
तरसें चित चातुकके हरसे, हरसे दुति दामिनि अंबरसें॥
बरसे घनघोर घटा झरसें, झरसें धुनि बादत दादरसें ॥
दरसे बिन मित ब्रहा सरसे, सरसे दिन सागर जू परसें ॥२॥

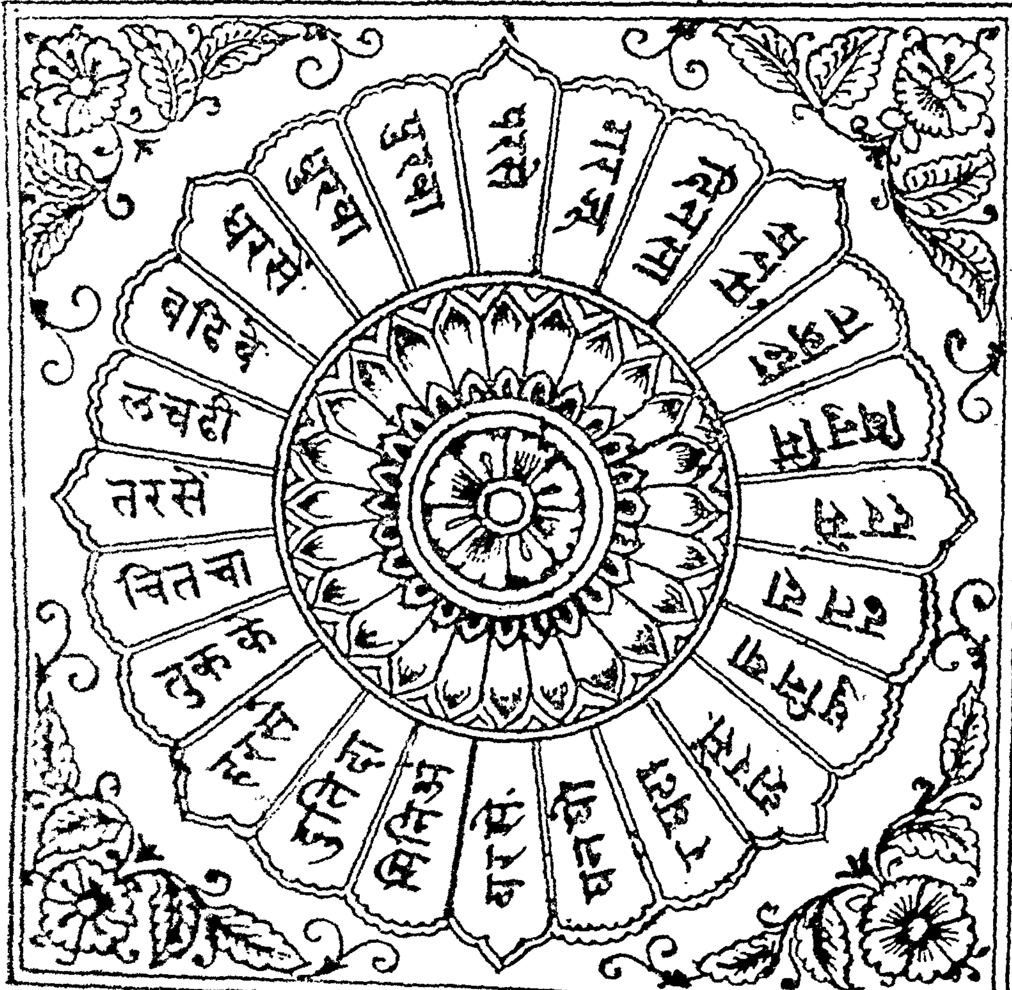
॥चित्र॥३५॥



॥ अथ रथ चक्र प्रबंध वह ॥ सवैया ॥

परसे पुरवा धुरवा धरसें, धरसें बढि बेल चढी तरसें ॥
तरसें चित चातुक के हरसें, हरसे दुति दामिनि अंबरसे ॥
बरसे घनघोर घटा झरसें, झरसें धुनि बाहत दादरसें ॥
दरसे विन मिंत महा सरसे, सरसे दिन सागर जू परसें ॥२॥

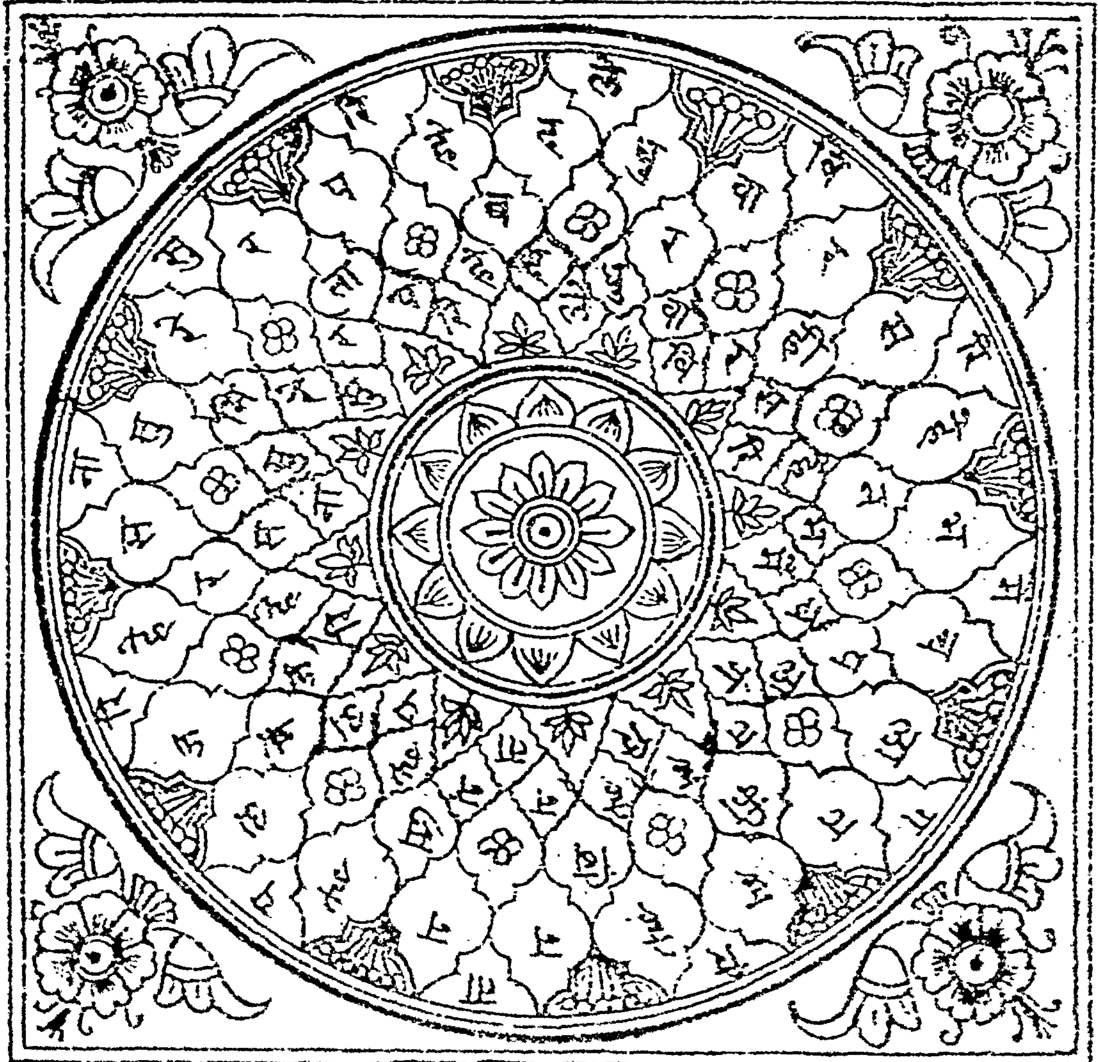
॥ चित्र ॥ ३६ ॥



॥ अथ कमळ प्रबंध चित्रभेद यथा ॥ सवैया ॥

बदले बदले धुरवा धुरवा, बिरही बिरही सरिहे सरिहे ॥
नभमें नभमें चपला चपला, गतकी गतकी हरिहे हरिहे ॥
बिनता बिनता न सुहे न सुहे, पलमें पलमें जरिहे जरिहे ॥
रसना रसना सुमिरे सुमिरे, सुरता सुरता परिहे परिहे ॥१॥

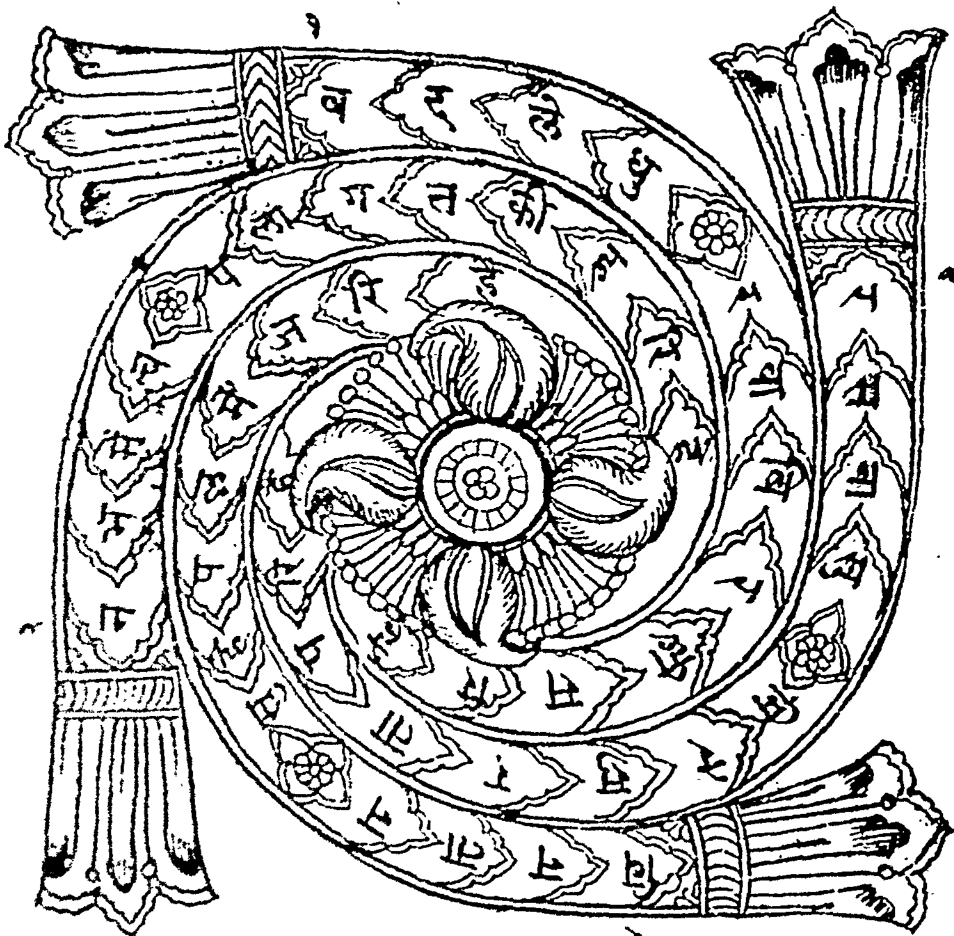
॥ चित्र ॥ ३७ ॥



॥अथ चतुर्गुच्छ प्रबंध॥ सवैया॥

वदले वदले धुरवा धुरवा, बिरही बिरही सरिहे सरिहे॥
नभमें नभमें चपला चपला, गतकी गतकी हरिहे हरिहे॥
बिनता बिनता न सुहे न सुहे, पलमें पलमें जरिहे जरिहे॥
रसना रसना सुमिरे सुमिरे, सुरता सुरता परिहे परिहे॥

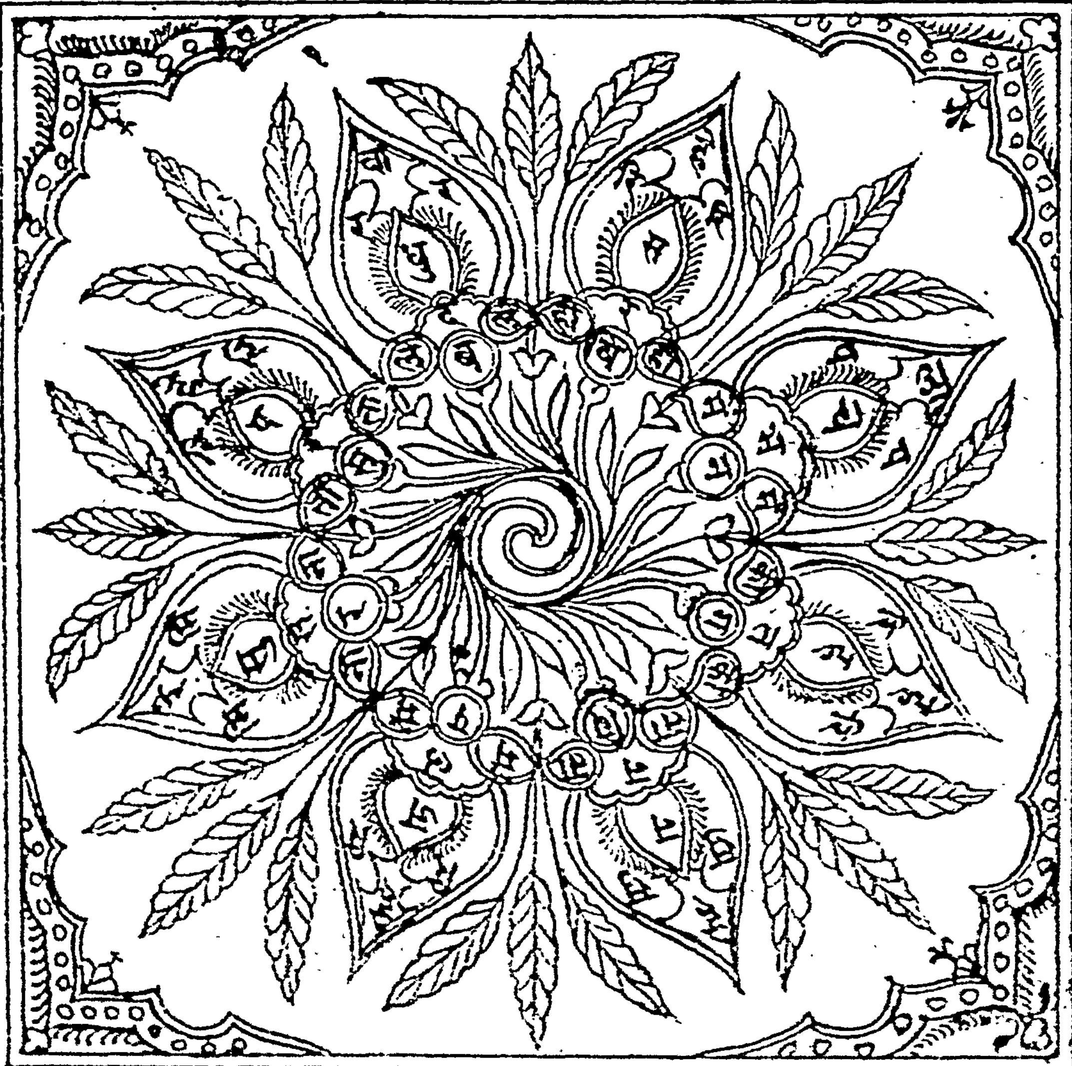
॥चित्र॥३८॥



॥ अथ अष्टदळ कमळ प्रबंध ॥ सवैया ॥

बदले बदले धुरवा धुरवा, बिरही बिरही सरिहे सरिहे ॥
नभमें नभमें चपला चपला, गत की गतकी हरिहे हरिहे ॥
बिन ता बिनता न सुहे नसुहे, पलमें पलमें जरिहे जरिहे ॥
रसना रसना सुमिरे सुमिरे, सुरता सुरता परिहे परिहे ॥

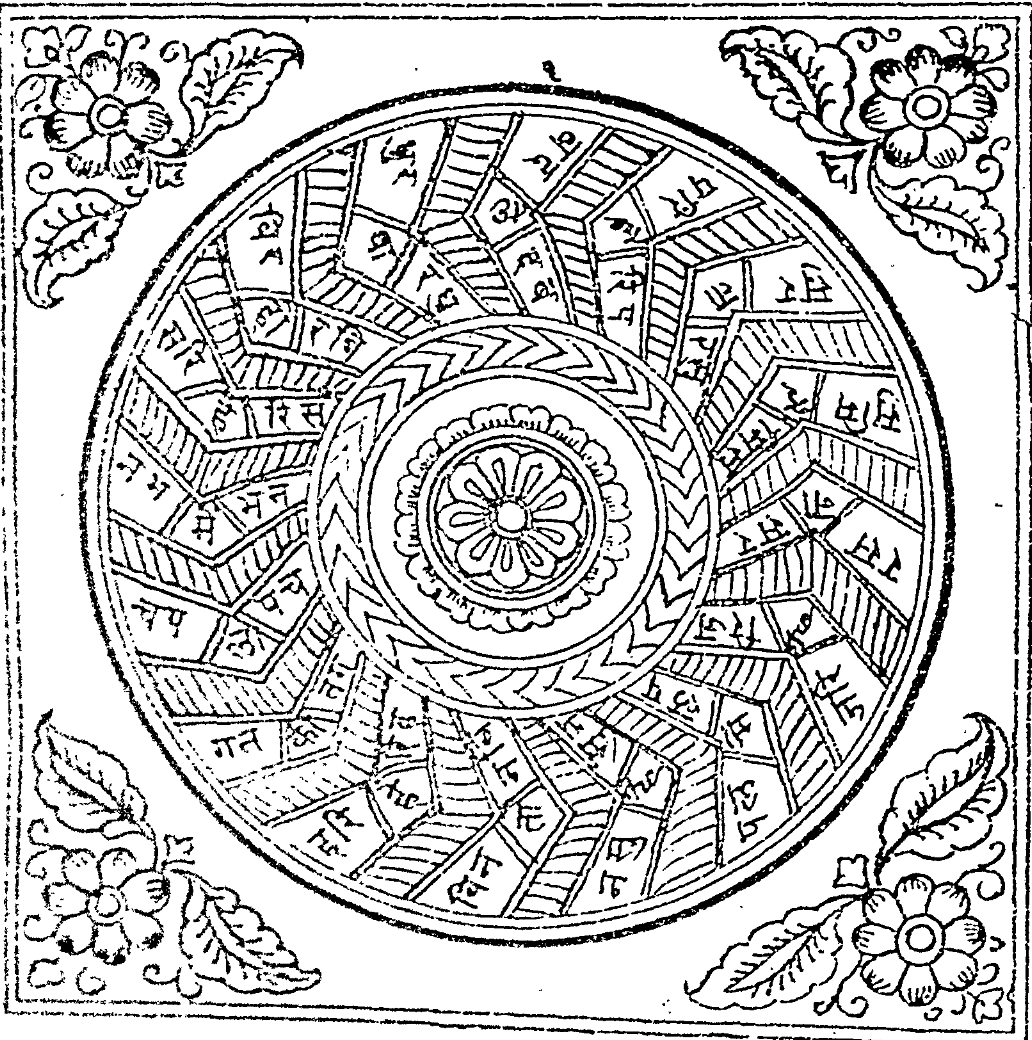
॥ चित्र ॥ ३९ ॥



॥ अथ लहरी प्रबंध ॥ सवैया ॥

चदले चदले धुरवा धुरवा, बिरही बिरही सरिहे सरिहे ॥
नभमें नभमें चपला चपला, गतकी गतकी हरिहे हरिहे ॥
छिनता छिनता न सुहे न सुहे, पलमें पलमें जरिहे जरिहे ॥
रसना रसना सुमिरे सुमिरे, सुरता सुरता परिहे परिहे ॥

॥ चित्र ॥ ४० ॥



॥अथ केसराद्य मध्यांत गत चतुर्दल कर्णिका कमळ प्रबंध॥

कुसुमोक्त ॥सवैया॥

बनकी जु लता फहेरान लगी, गहेरान लगी सु घटा घनकी॥
घनकी ददरा डहरान लगी, सहेरान लगी छबि दामनकी॥
मनकी गति सो हहेरान लगी, जहेरान लगी कन बुंदनकी॥
दनकी जुगसी पहेरान लगी, कहेरान लगी उन आवनकी॥५

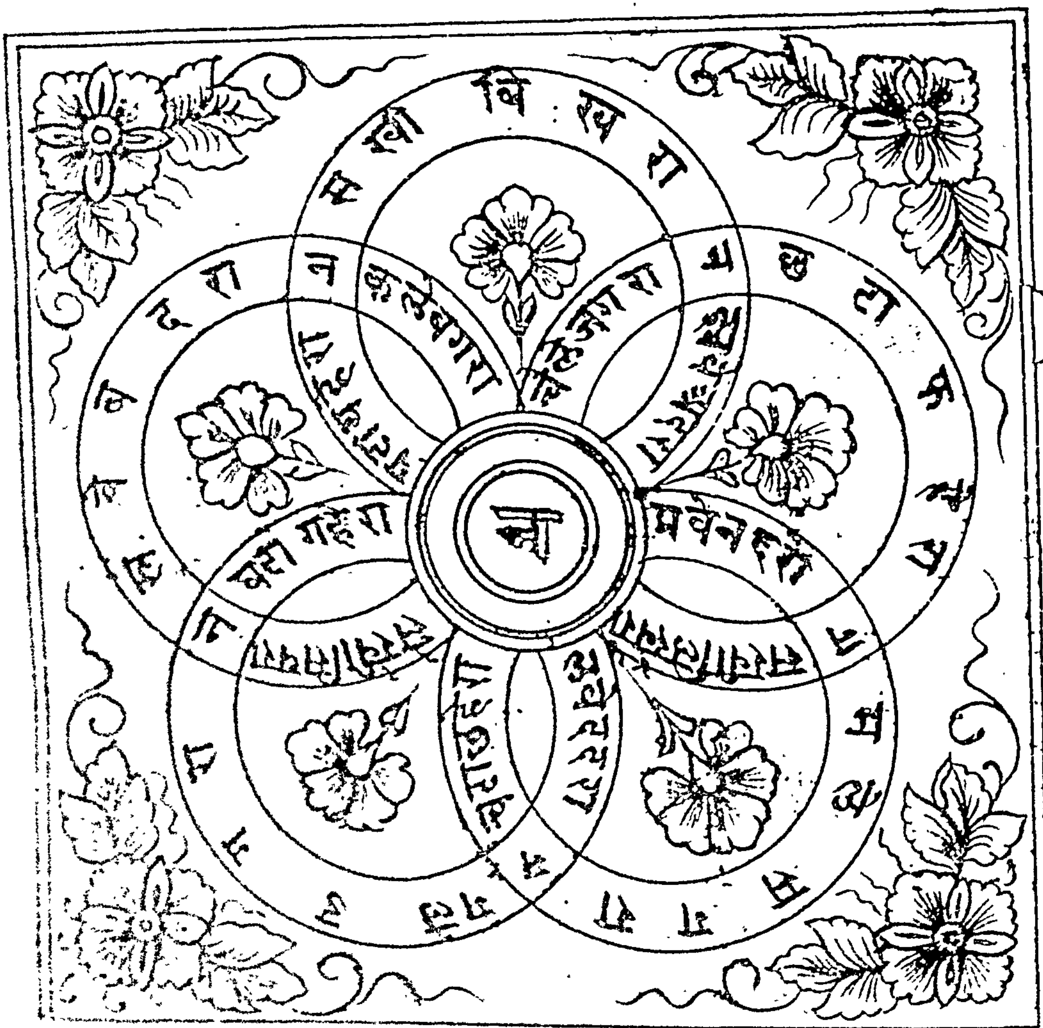
॥चित्र॥४१॥



॥ अथ सुमन प्रबंध ॥ सवैया ॥ प्रबीनोक्त॥

लवे ददरान, गले डगरान, घटा गहेरान, सखी सिखरान ॥
खवे बदरान, कले बग रान, पटा थहे रान, सखी बिखरान ॥
स्त्रवे अदरान, चले जगरान, छटा फहेरान, सखी लिखरान ॥
प्रवे नद रान, मले सगरान, चटा छहेरान, सखी चेरघेरान ॥ ५॥

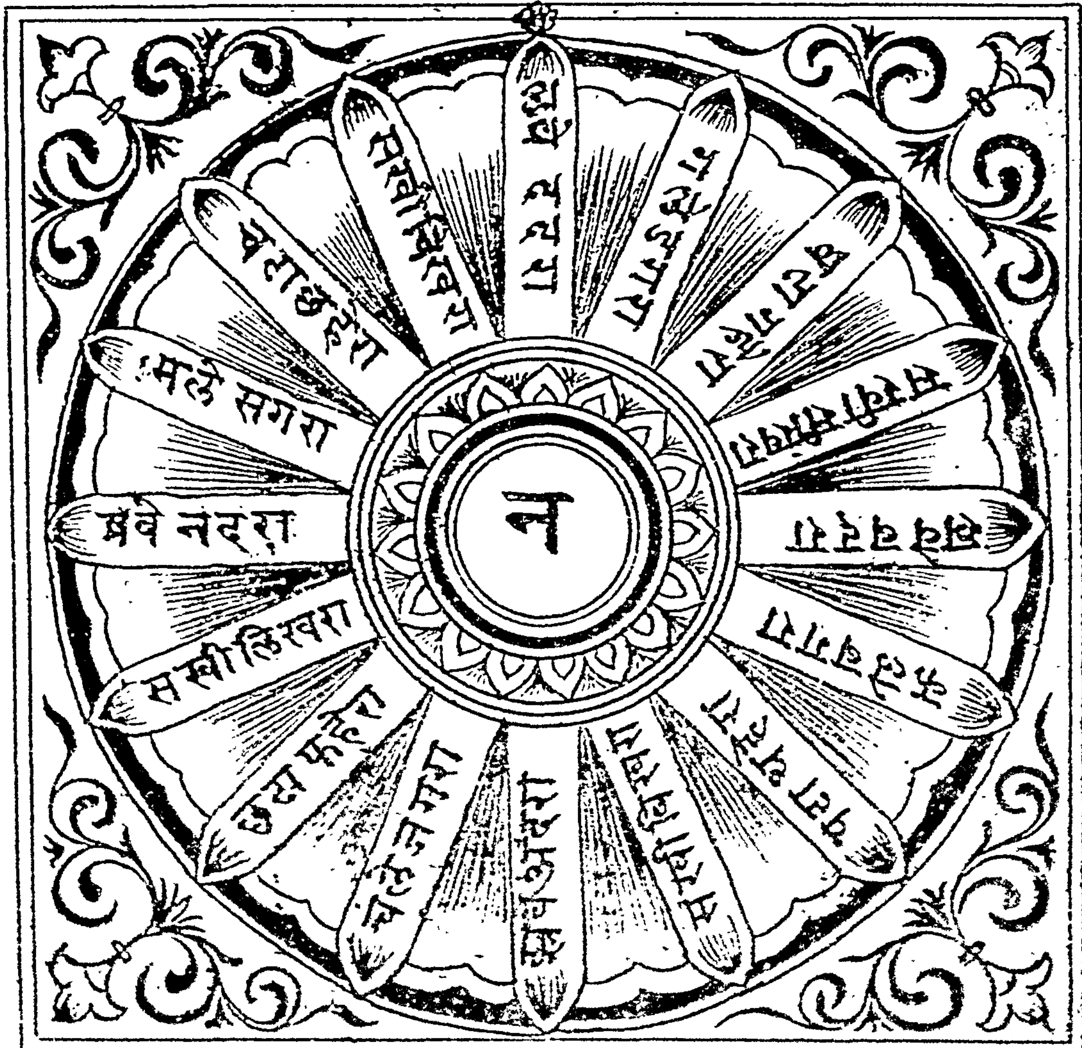
॥ चित्र ॥ ४२॥



॥अथ कुसुमप्रबंध बद्ध॥सवैया॥

लवे ददरान, गले डगरान, घटा गहेरान, सखी सिखरान॥
क्षवे बदरान, कले बगरान, पटा थहेरान, सखी बिखरान॥
झवे अदरान, चले जगरान, छटा फहेरान, सखी लिखरान॥
प्रवे नदरान, मले सगरान, चटा छहेरान, सखी चखरान॥

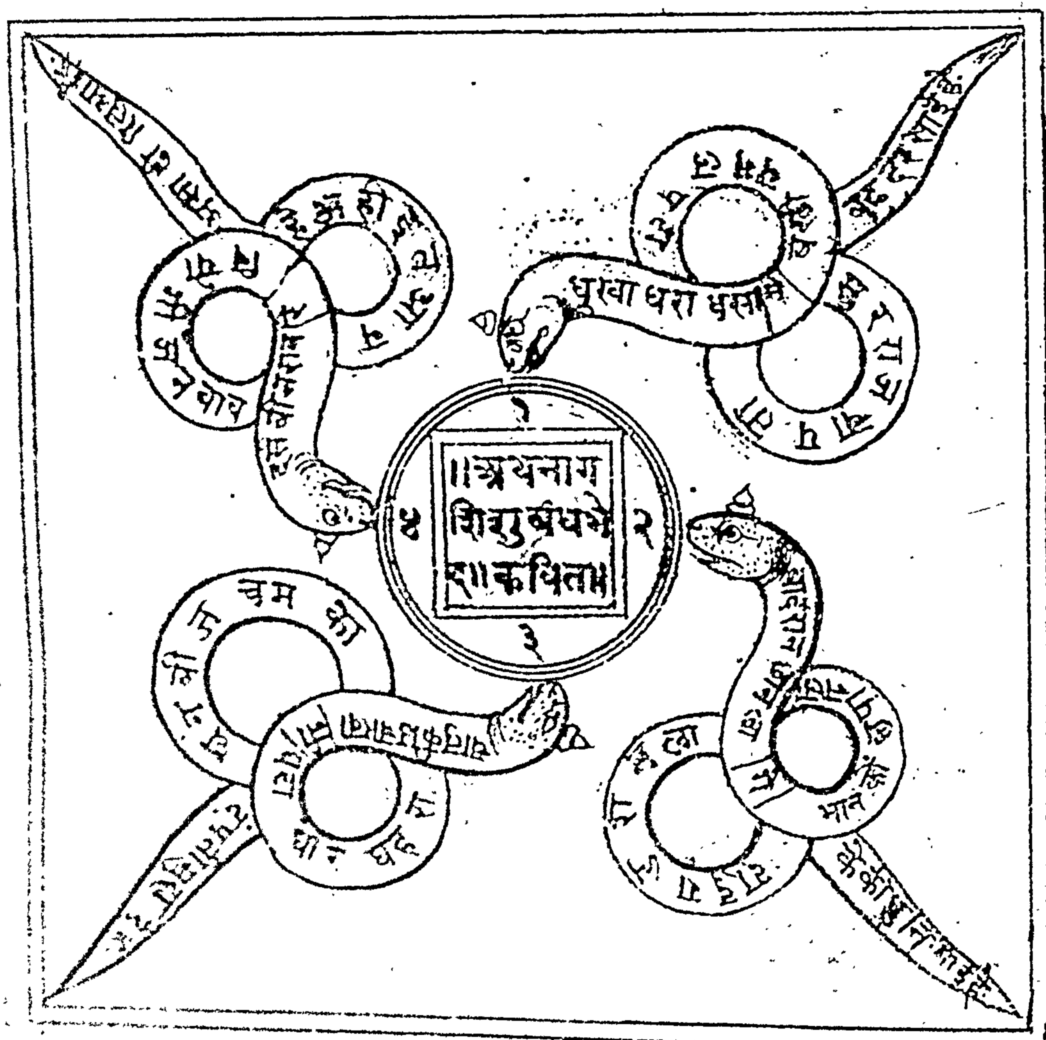
॥चित्र॥ ४३॥



॥ अथ नाग शिशुप्रबंध भेद ॥ कवित ॥

धुरवा धरा धसाने, बेलि बन लपटाने, सुरराज चाप ताने, बूंद दरसाईहे ॥ बादरान छान लागे, भानकों छपान लागे, दादुराउ रान लागे, केकी धुनि गाईहे ॥ चातुकी उचार बानी, घटा घोर गहरानी, घन बीज चमकानी, दंपति सुहाईहे ॥ दर्से बिनरावरे, बियोगी जन बावरे, हे अहो इत आवरे, असाढी रितु आईहे ॥

॥ चित्र ॥ ४५ ॥



॥अथ नव फणा नाग प्रबंध॥ कवित॥ मध्ये सोरठा ॥

दामनी दिसा नचान, तरु लता लपरान, नझर लगे बहान, दरता भये गिरान॥ सेहरे लगी अरवान, मोद मन दादरान, सोम छाये भासमान, नभ सूर चाप तान॥ न तह मो नर देर, सत पपीहे दाहेन-भन गहेरी गति गजत उमंडी ही आन॥ नयन अरवंत बार केकी रव ग्रहि सु धुन, बगन सेत लखिए सब सोसे नदान।७॥

॥तन मध्ये मध्य पंक्ति उदरांतर्गत ॥ सोरठा ॥

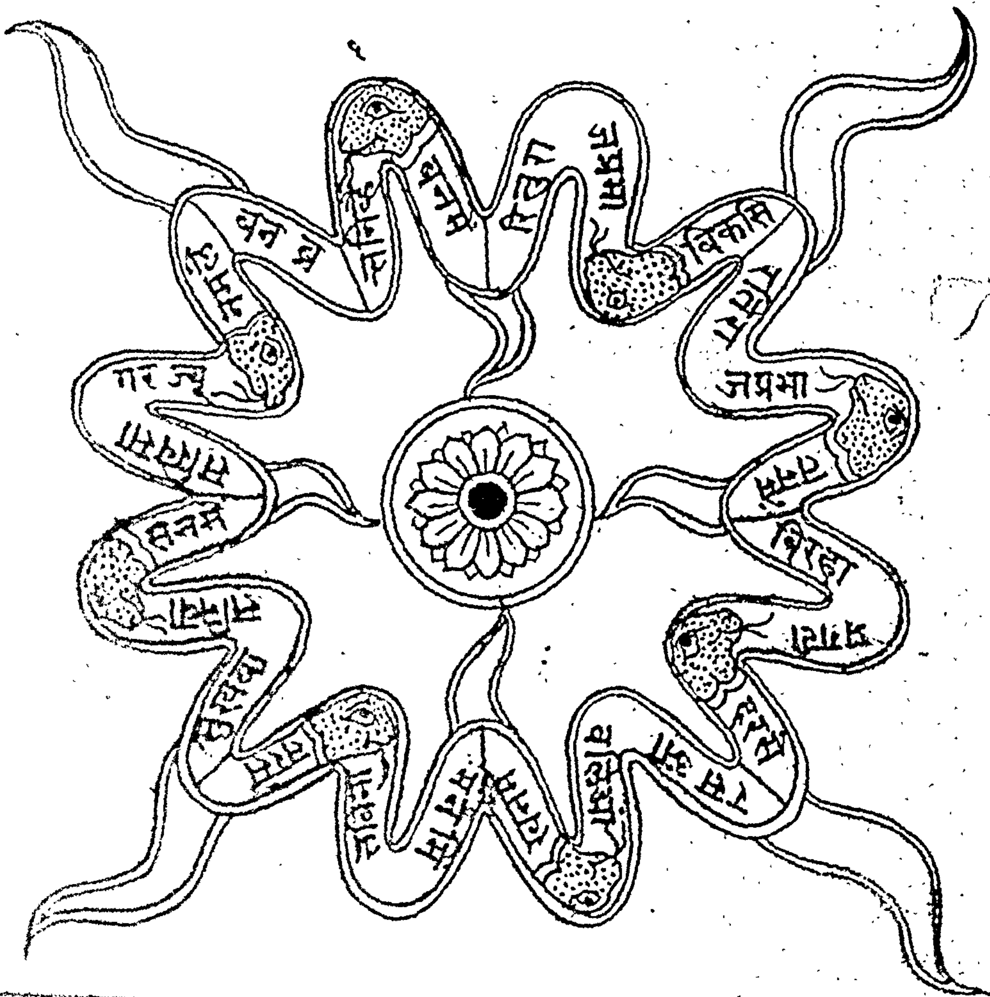
नत दाहन मो सेन, सोर वदे सर ए सखि॥ तलप नपी सेदे न, दाग हे बन नभ धुन सु गहि॥८॥ ॥चित्र॥४५॥



॥अथ अष्टनागशिशुप्रबंधभेद॥सवैया॥ बसंत बिरह बर्नन॥

बनमें रितुराज प्रभा बिकसी, बिकसी रतिराज प्रभा तनमें॥
तनमें बिरहा प्रगटी दरसे, दरसे रस आवलि आंखनमें॥
खनमें मन मीत बिना तरसे, तरसे सुरभ बास निबासनमें॥
सनमें सखि सागर ज्यूं न मले, न मले बन ब्रत्तनि ह्वै बनमें॥१॥

॥चित्र॥४६॥



॥अथ केतकी प्रबंध॥कवित॥चित्र॥६७॥

बन घन छई बेल, घन तन रह्यो खेल, तन मन चहे केल, मन जन ए परहूं ॥

चर धर मोद अंग, धर तर फूल भ्रंग, तर दर भयो रंग, दरद न छेकरहू ॥

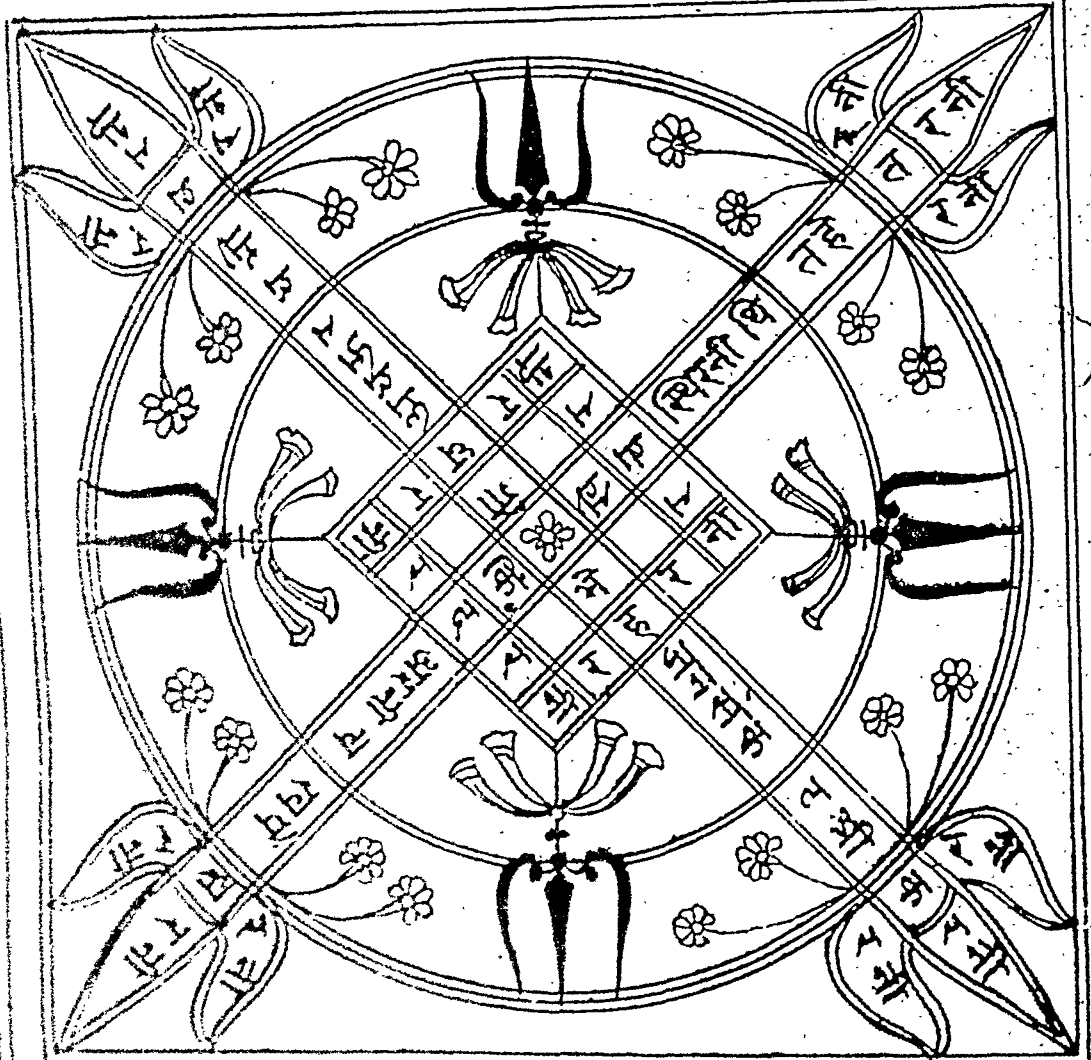
छल मिल कोक पंत, मिल चल मिंतमिंत, चल दल भयो चिंत, दलहू न बिसरहू ॥

ग्रग लग रहे आप, लगभग ह्यो ताप, भग सग रे प्रलाप, सगर सदा हरहू ॥१०॥

॥अथ चतुः त्रिशूलप्रबंध॥भवानीस्तुति॥सवैया॥

किं दरनी, दरनी अरनी, चखपें झर नीझरनी झरनी॥
गो धरनी, धरनी अध ऊरध, भो बरनी, बरनी बरनी॥
ले चरनी, चरनी स्थिरनी थितहे, तरनी तरनी तरनी॥
भे हरनी, हरनी जन संकर, श्री करनी करनी करनी॥११॥

॥चित्र॥ ४८॥



॥ अथ चतुर वर्ण चक्र प्रबंध ॥ सोरठा ॥

प्रेम नेम प्रम धाम, क्यौं न ध्यान उन आन मन ॥
ताम नाम दम दाम, फेर धार उर हार कर ॥ १२ ॥



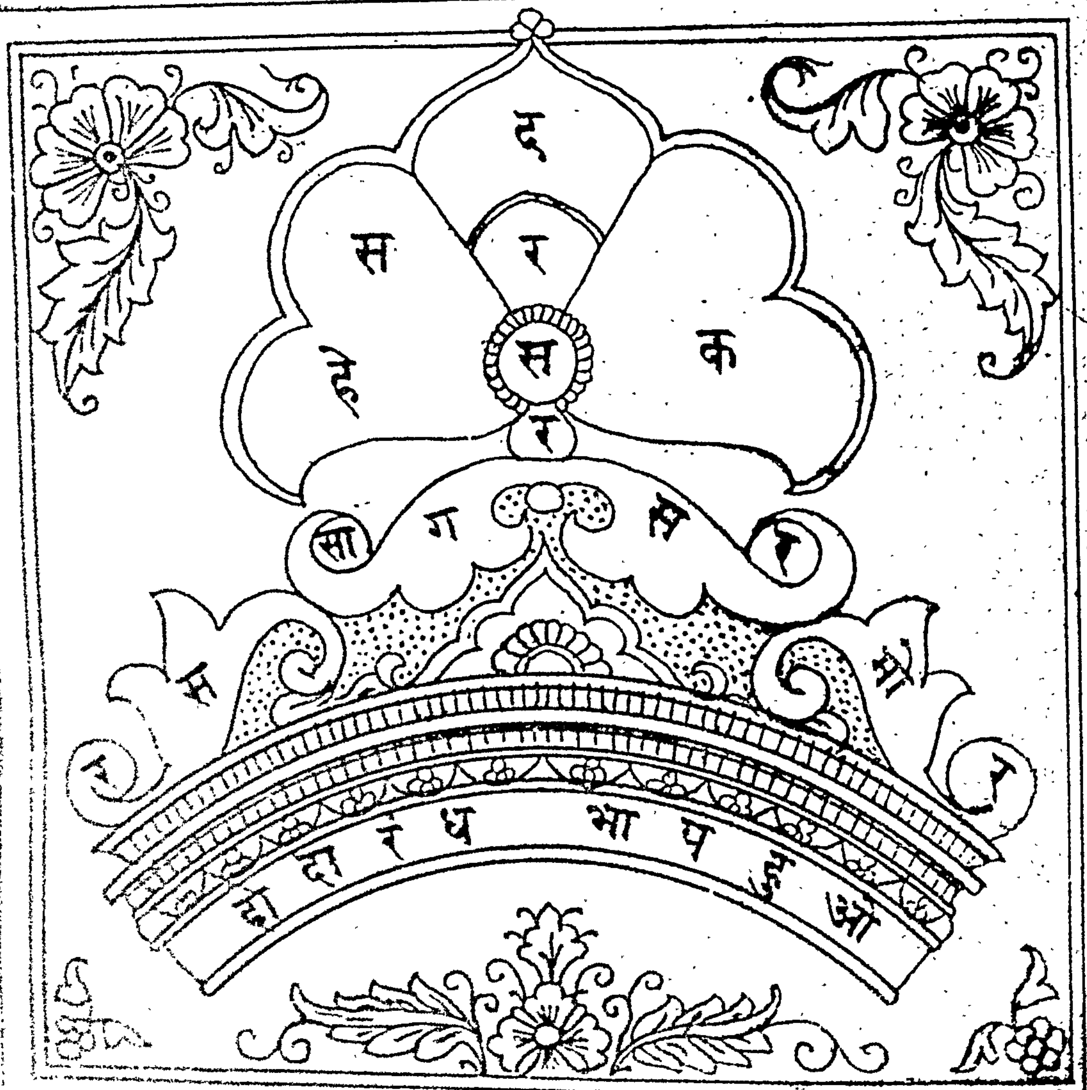
॥ चित्र ॥ ४९ ॥

॥ अथ मुगट प्रबंध ॥

॥ दोहा ॥

दरस सरस हे रस करस, रस सागर सर मोर ॥
रहो सदा सारंग धर, भास परहु मो ओर ॥ १३ ॥

॥ चित्र ॥ ५० ॥



॥अथ नराकार धनुष प्रबंध भेद ॥

॥ सोरठा ॥

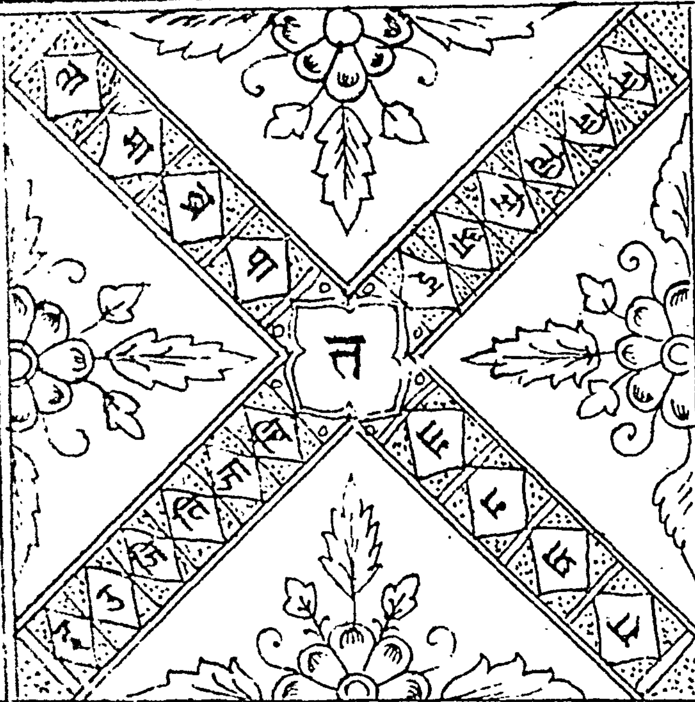
तात मात भ्रत पात, इत उत जित तित जात चित ॥
रात प्रात गत गात, नित नित चित मित आत इत ॥१४

॥चित्र॥५१॥



॥ अथ चोकी प्रबंध भेद ॥ गती चित्र ॥ सोरठा ॥ चित्र ॥ ५२ ॥

नात मात अत पात, इत उत जित तित जात चित;
रात प्रात गत गात, नित नित चित भिंत आनइला॥५



॥ वह सोरठा ॥ गोमूत्रिका, अश्वगति, तथा
कपाट बंधमें भी लीखा जाता हे ॥

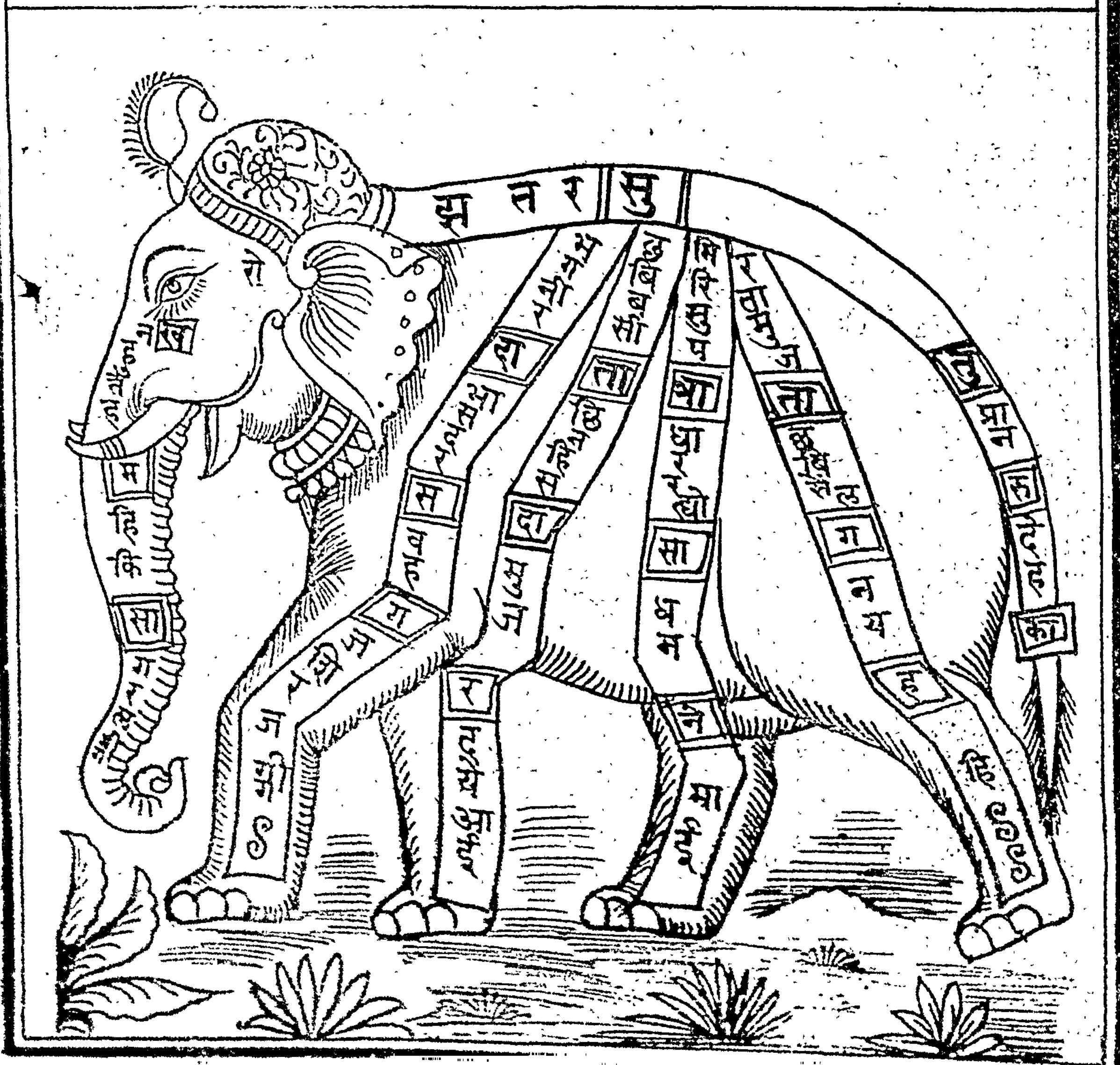
॥ पुनः चक्राकृति भेदप्रबंध ॥ चित्रयथा ॥ सोरठा ॥ चित्र ॥ ५३



॥ अथ हस्ती प्रबंध ॥ छपय ॥

सुरत झरोखन हुतें, हमहि की सागर लग्गी ॥
सुभग नीरदाभास, दरस वह गजशिर जग्गी ॥
सु छबि बसी ता छिनहि, सदा मुज रदये आई ॥
सु मिरि सुपन्नाधार, रह्यो साधन नेमाई ॥
सुरता मुज ता छबिसें लगन, यह हितु प्रान रु देहका ॥
सुखदाता भ्राता तुम सदा, सागरु सागर नेहका ॥१५

॥चित्र॥५४॥



॥आद्यंत मुख सर्प प्रबंध गतागते हरि हर स्तुति॥

॥सवैया॥

रे मन तुंहारि बासु कइ वल, सो न भजे पद किंकरता॥
रे मत नेह तजो जग तारक, तारहि ताहि रटे सुरता॥
रे मग हिन दवे तच बारहि, जापत श्याम सधे बरता॥
रे मद जो भजु वा वसि दास, सदा हित शंक समे हरता॥१६



॥वह उलट भेद सवैया॥

॥शिव स्तुति॥

तार हमेसक संत हि दास, सदाशि व वाजु भजो दमरे॥
तार वधे समश्या तप जाहिर, बांचत बेद नहीं गमरे॥
तार सु टेरहि ताहिरता, करता गज जोत हने तमरे॥
तारक किंदपजे भनसो लव इकसु बारिह तुंनमरे॥१७॥

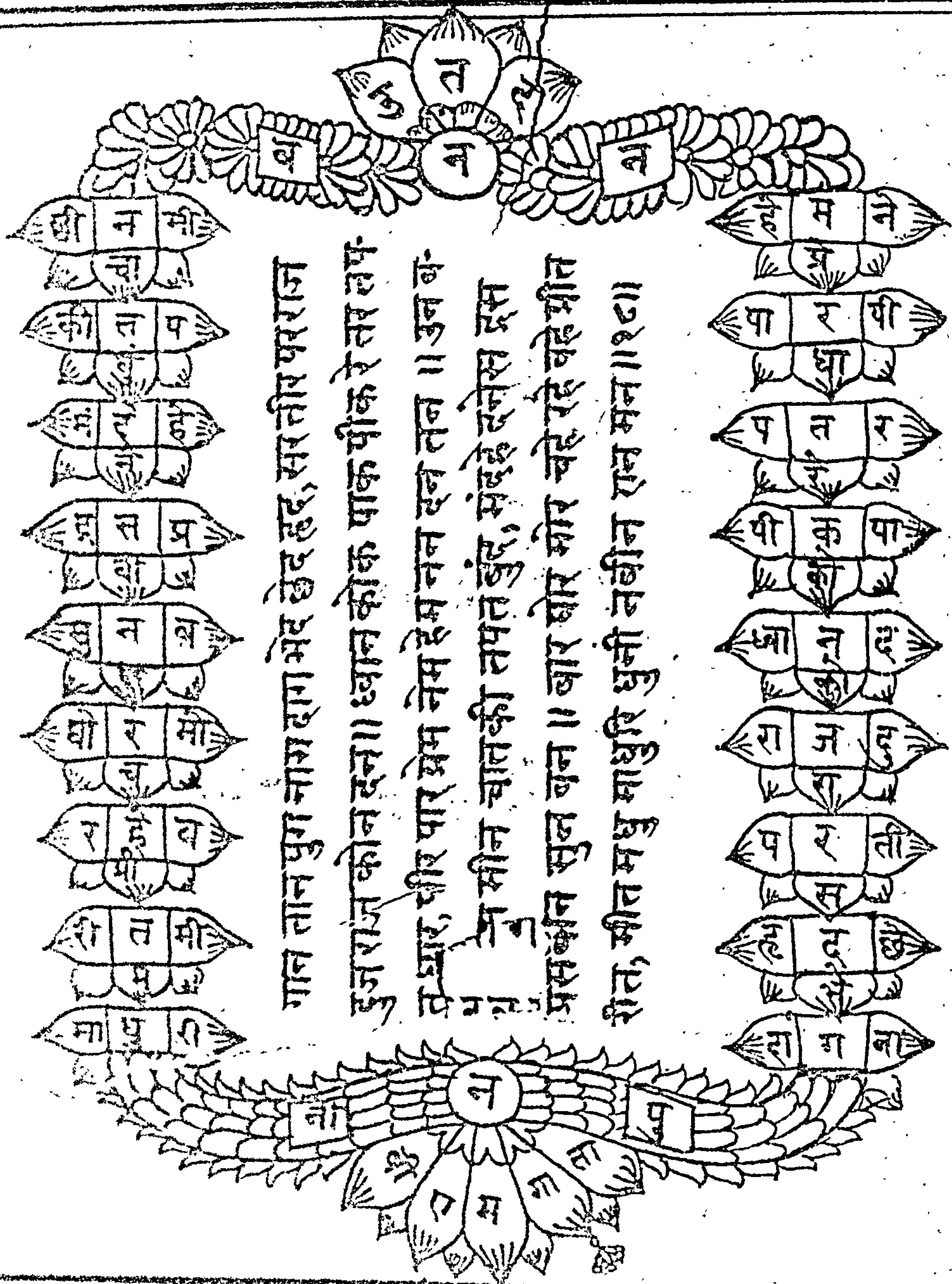


॥ आद्यंत मुख सर्प प्रबंध गतागते हरिहरस्तुति ॥

॥ द्वि ॥ सवैया ॥ चित्र ॥ ५५ ॥



॥अथ हार प्रबंध॥कवित्त॥ चित्र॥५६॥



गाहा — चित्र कवित्त कमलादिक, सागर प्रति रचि प्रवीनने भेजे॥
चतुःषष्ठि अभिधानं, पूर्ण प्रवीनसागरो लहरं ॥२९॥

इति श्री प्रवीनसागर ग्रंथे प्रवीन कृत कमलादिक चित्र कवित्त भेदो नाम चतुःषष्ठितमो लहरं ॥६४॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

कविता कमळादिक विषे, रची प्रवीणे जेह;
आ चोसठमी लहेरमां, कहेशे विगते तेह॥

अर्थ. हवे कमळ आदिक चित्रना आकारमां प्रवीणे जे प्रेमामृतमां भींजाएली कविता करी, ते वर्णन करुंछुं. ॥१॥

॥ कर्निकाद्य मध्यांत कमळ प्रबंध सवैयानो अर्थ. ॥

आनो अर्थ लहेर ४२ छंद २२ मे छापेलो छे त्यां जोवो. आ छंद कर्निकाद्यमध्यांतकमळप्रबंध, पंचचक्रप्रबंध, नालिकेरीप्रबंध, अने रथचक्रप्रबंधमांथी पण वंचाय छे. ॥ २ ॥

॥ कमळ प्रबंध चित्र सवैयानो अर्थ. ॥

प्रवीण कहेछे के वर्षारुतु आवतां वादळे वादळां चड्यां, अने तेमांथी वरसादना वराए वरा धर्या, तेथी मोरना स्वर थया, ते विरही जनोने बाण जेवा लागे छे. आकाशे आकाशे चपळ वीजळी थायछे. तेनी झडपे झडपनी पीळाशज पीळाश छे ते, तेना विना अर्थात् पति विना स्त्रीने नथी गमती, नथी गमती. अने पळ पळमां वळी उठेछे. अने क्षीण थायछे. अने तेने जीभे जीभे संभारे छे, संभारे छे. अने मित्रनी सुरत एटले छबि उपर तेनी सुरत पडेछे. आ छंद लहरीप्रबंध, चतुरगुच्छ, अष्टदळ-कमळप्रबंध अने वर्तुळाकारमांथी पण वंचाय छे. ॥३॥

॥ केसराद्य मध्यांतगत चतुर्दळ कर्निका प्रबंध सवैयानो अर्थ. ॥

कुसुमावळी कहेछे के वननी लताओ फरकवा लागी. सारी वरसादनी घटा गरजवा लागी. वरसादनी देडकियो डहकवा लागी. अने वीजळीनी छबी सळकवा लागी. ते जोइने प्रवीणना मननी गति हरेरी जवा लागी, अने वरसादना छांटानी कणियो झरवा लागी. अने दिवसनो

पहोर जुग जेवो लाग्यो, अने एने एटले सागरने आववाना संदेशानी वात कहावावा लागी. ॥ ४ ॥

॥ सुमन प्रबंध सवैयानो अर्थ. ॥

प्रवीण कहेछे के हे कुसुमावळी वर्षारीतु आववाथी देडकां बोलेछे. रस्ते रस्ते प्रवाह चालेछे. वर्षादनी घटा गाजी रही छे. अने पर्वतना शिखरो उपर (शींखी) मोर गाजी रह्याछे. वादळीओ वरसे छे. रानमां बगला बोलेछे. अने हे सखी वर्षादना पटा विखराइने कंपेछे. आरद्रा नक्षत्र (आर्द्रा) वरसेछे, अने पर्वतो उपरथी जळ चालेछे. हे सखी ? रान एटले जंगल जो के तेनी छटा फर फरी रहीछे. वळी रानमां नदियो वहे छे. ते नदीने सागरने मळेछे. अने हे सखी कोइ ठेकाणे अच्छी एटले सारी लीलाशनी चटकी अने कोइ ठेकाणे चिखल एटले कादव छे. आ सवैयो कमळप्रबंध, कुसुमप्रबंध, गोमुत्रिका, अश्वगति, त्रिपदि, तथा कपाटबंधमां लखायुछे. ॥ ५ ॥

॥ नागशीशु प्रबंध कवितनो अर्थ.॥

आ कवितनो अर्थ लहेर ४२ मां छंद नंबर ९ मे छापेल छे माटे त्यां जोवो. ॥ ६ ॥

॥ नवफणा नाग प्रबंध कवितनो अर्थ. ॥

प्रवीण कहेछे के दिशाओमां विजळी नाची रहीछे. झाड उपर वेला लपटाइ गया छे. झरणां वहेवा लाग्यां छे. पर्वतो उपर लीलाश थइ गइ छे. जळनी धाराओ वरसवा लागी. देडकांना मनने आनंद थयो. मकाशगान चंद्रने ढांकी दीधो छे आकाशमां इंद्रधनुष ताण्युं छे. (नह) ते (देर) वखते मारो (नर) स्वामी नथी, अने खरेखरा बपैया मने बाळे छे. अने आकाशमां गंभीर गतीथी वर्षाद चडी आवीने गाजे छे. मारां नेत्रोमांथी जळ वरसे छे. मोरे शब्दनी ध्वनी लीधी छे. अर्थात्

करवा मांडी छे. धोळा बगला देखाय छे. ए सर्वे निदान मने शोषण करे छे ॥ ७ ॥

अर्थ. नित्य मारा जेवांने बाळवा सारूं आ (शिखि) मोर सोर करे छे. तप्त थयेली शय्या सहन थइ शक्ती नथी. अने वने पक्षिओथी तथा आकाशे मेघथी गर्जना करी छे. ते मने बाळे छे. ॥ ८ ॥

॥ अष्टनाग शीशु प्रबंध सवैयानो अर्थ. ॥

अर्थ. आ सवैयानो अर्थ लहेर ५० छंद नंबर ६ ठे छपाई गयेल छे, पण चोथा चरणनो नीचे प्रमाणे--हे सखी समीपमां सागरजी मळता नथी. ते नही मळे तो वनवर्त्तिनी एटले वनवासिनी वनमां थइश. ॥ ९ ॥

॥ केतकी प्रबंध कवितनो अर्थ. ॥

आ कवितनो अर्थ लहेर ४० मां छंद नंबर त्रीजे छपाइ गयो छे. माटे त्यांथी वांचवो. ॥ १० ॥

॥ चतुःत्रिशूळ प्रबंध सवैयानो अर्थ. ॥

आ सवैयानो अर्थ लहेर ४४ मां छंद नंबर १२ मे छे. माटे त्यांथी वांचवो. तेमां आ ठेकाणे प्रवीणे भवानीनी स्तुति करी छे. ॥ ११ ॥

॥ चतुर्वर्ण चक्र प्रबंध सोरठानो अर्थ.॥

प्रवीण पोताना जीवने कहेछे. के हे जीव जे प्रेमना नेमनुं परम धाम छे. अर्थात् प्रेमना नियम बधा पाळे छे. एवा रस सागरनुं अथवा ईश्वरनुं ध्यान तुं मनमां केम आणतो नथी. तेनुं नाम श्वासोश्वासरूपी माळा फेरवतां धार्य, अने छातीनो हार करीने राख. ॥ १२ ॥

॥ मुगट प्रबंध दोहानो अर्थ. ॥

हे सारंगधर, हे भगवान,रस सागरने माथे मुगट सदा अखंड रहो.ते मुगट केवो छे? तो जेनो देखाव सरस अमृतना कळश जेवो छे. तेनो भास एटले प्रकाश मारी तरफ पडो. ॥ १३ ॥

॥ नराकार धनुष प्रबंध सोरठानो अर्थ. ॥

प्रवीण कहे छे के. हे कुसुमावळी मारां माबाप मारुं व्रत एटले नालेचलगतने जाणी गयां छे. अने मारुं चित्त आंही तही ज्यां त्यां दोडतुं फरे छे. रातने दहाडो मारां गात्र गळतां जायछे. अने रोज रोज आंही मारा चित्तमां मित्र सांभरी आवेछे. आ सोरठो नराकार धनुषबंध, चोकीबंध तथा चक्राकृतिमां पण वंचाय छे. ॥ १४ ॥

॥ हस्ती प्रबंध छपयनो अर्थ.॥

हे सागर मारी सुरत झरोखामांथी तमारी तरफ लागी. अने सरस वर्णादना जेवी कांति जेवा देखावना ते हाथीने मांथे जागी. ते तमारी छबि तेज क्षणथी हमेशां मारा हृदयमां आवीने वशीछे. तेनुं स्मरण तथा आपना पत्रनो आधार एज साधान निमाई रह्युं छे. अर्थात् निश्चे थई रह्युं छे. ते छबि साथे मारी सुरतनुं लागवुं. एज मारा प्राणनो तथा शरीरनो हेतु छे. हे स्नेहना सागर सागरजी तमे मारा सुखना दाता तथा हमेशां रक्षण करनारा छो. ॥ १५ ॥

॥ आद्यंतमुख सर्प प्रबंध गतागत हरीहर स्तुती द्वी सवैयानो अर्थ.

प्रवीण कहे छे के हे मन तुं कैवल्य वासमां जे हरी रहे छे. तेना चरणने दासपणाथी केम भजतुं नथी. अने ए जगतना तारनार ते प्रभु उपरथी स्नेह तजीश नहीं. केमके जोगियो सुरता राखीने ॐकारवडे तेनेज रटे छे, अने ते जोगियो कांइ न मागतां अर्थात् निष्काम भावथी (तने) पंचाग्निमां चामडीने बाळे छे, अने कृष्णनो जाप जपे छे. ने व्रत साधे छे. अरे अहंकार जो तु (वा) तेने दासपणे रहीने भज. तो ते हरी सर्वने नखते हित करनारा, अने शंकाना हणनारा छे. ॥ १६ ॥

अर्थ. हे जीव जे सदाशिव हमेशां ओंकार रूपे छे. अने संतजन जे-

ना दास छे. (वा) ते शिवने श्वासोश्वासे भज. जेम तार बांध्यो होय, तेम अर्थात् सूत्रात्मारूपे जेनुं शांतपणुं जाहिर छे. पण वेद वांचवाथी तेनुं यथार्थ ज्ञान थतुं नथी. अने तेने विषे रता एटले प्रीतिवाळा जोगियो. ओंकार वडे करीने तेने पोकारे छे. ने त्याग एटले सन्यासना प्रकाशथी ते जोगियो अज्ञानने हणे छे. (माटे हे जीव) (कंदर्प) कामदेवने ताडन करनारा शिवने जीभ वडे(लव)भज. अने तेने एकवार तुं नमस्कार कर.॥१७॥

॥हारप्रबंध कवितनो अर्थ.॥

प्रवीण कहेछे के गान तान सोपारी आदिक मुखवास तथा काजळ आदिकनो शणगार. ते तो मने डाग जेवुं. अने हृदने भेदन तथा छेदन करनारां लागेछे. अने तळावना कांठा उपर बिराजेला (पक्षिराज) हंसनुं बोलवुं तथा चकवा चकवी अने पवित्र कोयल तरूमां रहीने ध्वान एटले शब्द करेछे. ते काने धारतां मने तपावे छे. ते पीडानो पार पमाडनार प्रेमनो नियम तथा दिवसमां तेनुं (मित्रनुं) मनन एटले स्मरण छे, अने जेम ओछा थएला पाणीमां माछलुं क्षिणता पामी जाय. अने बापैयानी मादा स्वाति शिवायना बुंदथी तपे. तथा सूरजने दीठा विना ने तेनी किरणोनो स्पर्श थया विना (बनसुनु) कमळ जेम मंद थइ जाय छे. वळी जुओके वर्शादनी गर्जनाने मोर चाहे छे. अने भमरीनुं मध साथे अने हरणनुं मन विणानी ध्वनी साथे बंधायुं रहे छे. हे मित्र प्रीतनी रीत एवी छे. अर्थात् अमारुं मन पण एज रीते तम साथे लागी रह्युं छे. ॥ १८ ॥

अर्थ. प्रवीणे कमळ प्रबंधादिक चित्र कविता रचीने सागर तरफ मोकली ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी चोसठमी लहेर संपूर्ण थई.॥१९॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां चतुःषष्ठितम स्तरंगःसमाप्तः ॥ ६४ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

लखि कमळादिक चित्रमां, सागर कविता जेह ॥
आ पांसठमी लहेरमां, कहेशे विगते तेह ॥

अर्थ. प्रवीणनां करेलां कमळादिक चित्रनां कवित सागरे वांच्या पछी पोते पण कमळादिक चित्रमां पवित्र कविता रचीने प्रवीण तरफ मोकेली ते हवे कहेशे. ॥ १ ॥

॥ शोडशदळ कमळ प्रबंध कवितनो अर्थ. ॥

सागर हरि हरनुं स्मरण करेछे. ते हरि लक्ष्मिजी साथे रमण करनारा छे. अने शिवे पार्वतीजीने अर्धांगे धारण कर्याछे. हरि पहेलो रस एटले शृंगार रसना उदार छे. अने शंकर शांत रसना तत्वना (राशी) समूह रूप छे. शामरूप हरि. समुद्रने मथन करनारा, अने श्वेतरूप शिव प्रेतादिकने रमाडनारा छे. हरिने माथे चारु एटले सुंदर मुगट छे. शंकरना शरीर उपर अर्थात् मस्तक उपर जटाजुटनो भार छे. हरि व्रजनी गोपियोना प्रेमथी तेने तारनारा. अने शिव देवोने वंदन करवा योग्य. तथा विभूति धारण करेछे. हरि जसने वसवाना घररूप छे. अने शंकर दासने सुख करनारा छे. हरिनुं नाम पापने बाळनारुं छे--अने शिवना नामनी माळा लेवाथी. अर्थात् जपवाथी दुःखने टाळनारा छे. हरि देवनी वारे चडीने दैत्योने बाळनारा. अने शंकर कामदेव जेवा शत्रुने मारनारा छे. ॥ २ ॥

ए कमळमांथी नीकळता सोरठानो अर्थ. हरी ने हर ए बे लक्ष्मीजीने अने पार्वतीजीने रसना समुदायरूप छे. अने एकनुं शाम अने एकनुं श्वेत शरीर शोभे छे. एकनी गोपिकाओ अने बीजाना देव दास छे. ते बंनेनां नाम लेतां अमारा विरहरुपी शत्रु बळशे, ए सोरठो गोमूत्रिका, अश्वगतिबंध, त्रिपदि तथा कपाटबंधमां पण लखी शकाय छे. ॥ ३ ॥

॥अष्टदळ कमळ प्रबंध कवितनो अर्थ.॥

सागर पोताना जीवने कहे छे के परमेश्वरनुं पोतानुं शरीर नवीन वर्षाद जेवुं छे. अने जेनामां झेर नथी, अर्थात् द्वेशभाव नथी. अने ते चळे एवा नथी. अथवा तेने पग नथी. तथा ग्रहण करी शकाय एवा नथी अथवा तेने हाथ नथी. अने कळी शकाय नही एवा छे. तेने कोइनो डर नथी. तथा कशुं बंधन नथी. अने सर्व पूरूषोना मनमां आवी शके एवा नथी. अर्थात् भक्तोना मनमांज आवे छे. जेने जन्म जरा अने मृत्यु, अथवा बाळ जोवन अने वृद्धपणुं ए त्रण नथी. अने कोइनो लाल एटले पूत्र नथी. अने जेना उपर दहाडो के रात्रि ढळती नथी. अर्थात् पडती नथी, अने ते क्यांय एकज ठेकाणे घर करीने रहेता नथी. अर्थात् एक देशी नथी. अने ते हठता नथी. अने टळता नथी. अने नित्य प्राणियोना मनने नचावे छे. अने ते तरखलारूपे नथी. तेम पूष्परूपे नथी. ते कहेवामां आवे एवा नथी. ने चिदाकाशरूप छे. अने तेने कांइ सुख दुःख आदिक सहन करवुं पडतुं नथी. तेने कांइ मतभेद नथी. ते कोइनी पासेथी कांइ लेवाने चहाता नथी. तेम पूजावाने चहाता नथी. अर्थात् पूर्ण काम छे. जेनो कोई गुरु नथी. ने कोइनी वाणीमां पण आवता नथी ते नमस्कार करवा योग्य छे. माटे हे जीव तुं तेने नमस्कार कर. आ कवित अष्टदळ कमळबंध, वर्तूळाकार, द्वादशखंडस्वास्तिक बंध, शोडशदळ कमळ बंध, जळागार प्रबंध, वृक्ष प्रबंध, तथा चोकीबंधमां पण वंचाय छे. ॥ ४ ॥

॥ सर्वतोभद्र प्रबंध सवैयानो अर्थ. ॥

सागर कहे छे के हे लक्ष्मीपति, गजेंद्रने ग्रहण करनारा, सर्व कारणोना अग्रेसर, नटोमां दीपनारा अर्थात् नटनागर, सर्व भेदना धारण

करनारा, परमहंसोने चहानारा, धीरजना आपनारा, सुभटोना स्वामी, नरकना दुःखने छेदनारा, अने कंसने बाळनारा, सेवकने तारनारा, जेनुं भजन दिप्तमान छे एवा अने पृथ्वीने तारनारा, अर्थात् बचावनारा, तथा पुरुषोने अने पथरने पण तारनारा एवा विष्णुनुं हुं स्मरण करुं छुं. ॥५॥

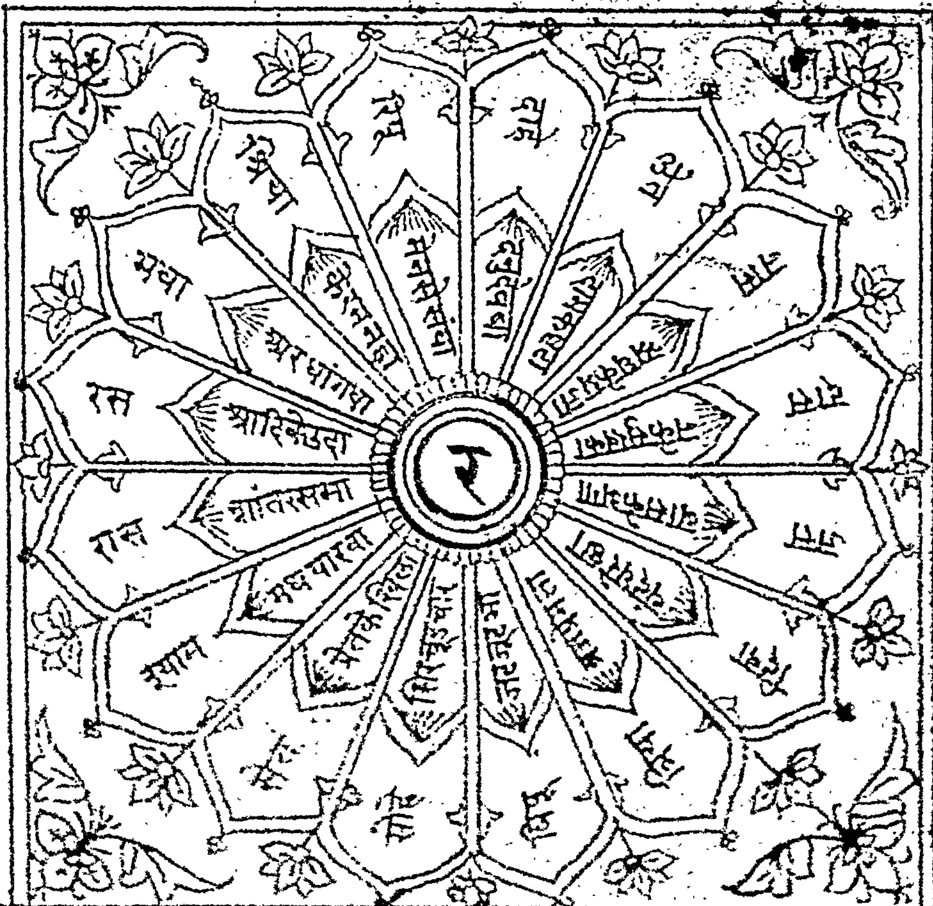
॥ चोकी प्रबंध कवितनो अर्थ. ॥

सागर कहेछे के नविन राजाधिराज अर्थात् द्वारिकामां नविन राज स्थापनारा, अने जादवरूपे जगतमां रहेनारा, एवा हे समुद्रनी पुत्री लक्ष्मिना स्वामि, कृष्ण, तमे चरित्र वडे कान पवित्र करनारा, जेनी पासे स्वाधिन पतिकारूपे रुकमणीजी निरखिये छिये एवा. जेनी गतिने वेद जाणी शकता नथी एवा, लक्ष्मीसाथे रमण करनारा, अने लक्ष्मीना स्वामी एवा. अने जेनुं पोतानुं ध्यान ब्रह्मा धरेछे, माणसो, देवो, अने नागने तारनारा, शठ कंसना कालरूप कृष्ण. एवा हे गोविंद. दयाळु प्यारा, तमे तानमां ताळ चुकता नथी. अने गोपना उपरी, नंद सुनंदादिकनां वृंद जेने नमेछे. जेनां अंग निरंतर शितळ छे. एवा हे गोवर्धन पर्वतना नाथ. तमे सर्व वातमां शाणाछो. तेम छतां मने प्रवीणनुं दान केम देता नथी. ॥ ६ ॥

॥ कमळाकार पुष्पांतरे चक्राकृति प्रबंध छपयनो अर्थ. ॥

सागर कहेछे के हे मन कृष्ण केवाछे तो शृंगार आदिक नव रस मयछे, दैत्यने दळनारा, अने कमळथी उत्पंन थयेला ब्रह्मा, जेना प्रत्ये वंदन करेछे, ते कृष्ण सुंदर नटनी पेठे विहार करेछे, जेने शंकर चित्तमा स्नेह धरीने नमेछे. अने घणी वर्षादनी झडी वरसतां गोवरधन पर्वत धारण करीने ते वर्षादनी धाराथी निर्भय रह्या, मधुवन मध्ये नृत्य करेछे, अने सर्वे गोपीजन तेनी पासे रहेछे, एवा नविन लक्ष्मीना नाथ, स्त्रियो साथे रमण करनारा. अने नरदेहरूप, तेने हे मन तुं निश्चे नित्यप्रत्ये विसारीश नहीं. वळी ते प्रभु केवा छे. तो जेने पोतानी वेणुनी ध्वनीमां वेदनुं वर्णन कर्युंछे. ॥७॥

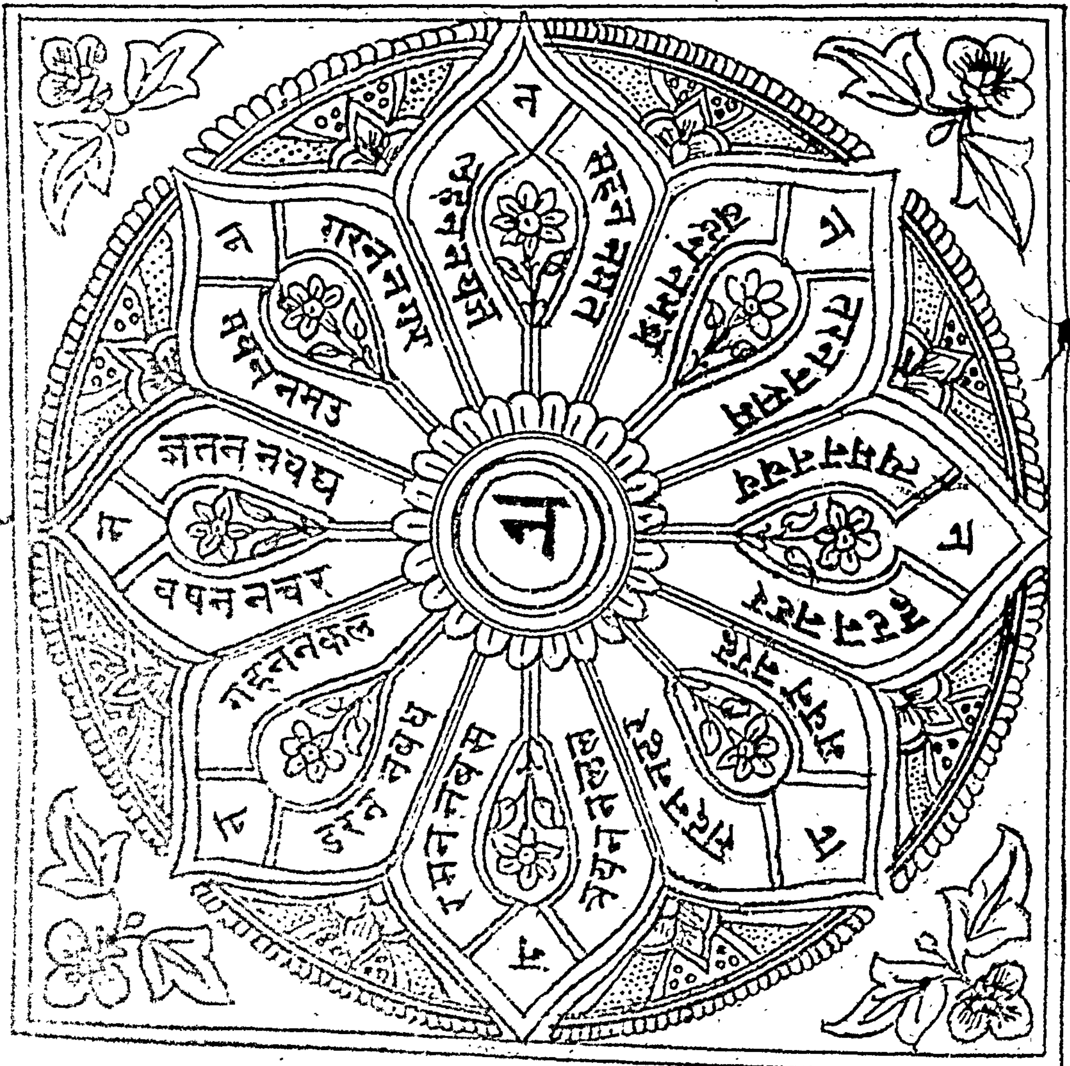
॥अथ सागरोक्त कमलादिक चित्र भेद वर्नन यथा ॥दोहा॥
कमलादिक परबीन कृत, षांचे सागर चित्र ॥
पुनि वह आप बनायके, पठये कवित पवित्र ॥१॥
॥अथ शोडश दल कमल प्रबंध हरिहर स्तुति ॥कवित॥
श्रिया के रमनहार, भवा अरधांग धार, रस आदिके उदार, रास शांत रस सार ॥ श्याम मथ पारवार, सेत प्रेतके खिलार, सोहे सिर चूड चार, बिपू जटजूट भार ॥ त्रिया व्रज प्रेम तार, दिवा बंद धरे छार, जस बासके अगार, दासनके सखकार ॥ नाम अघके प्रजार, लेत दाम कष्टटार, दाहे दनु देव बार, रिपु मेनसे संघार ॥२॥
॥अथ तदंतर गत ॥ सोरठा ॥ यथा ॥
श्रिया भवा रस रास, श्याम सेत सोहे बिपू ॥
त्रिया दिवा जस दास, नाम लेत दाहे रिपू ॥३॥ चित्र॥५७॥



॥अथ अष्टदल कमल प्रबंध एक स्वर ॥कवित॥

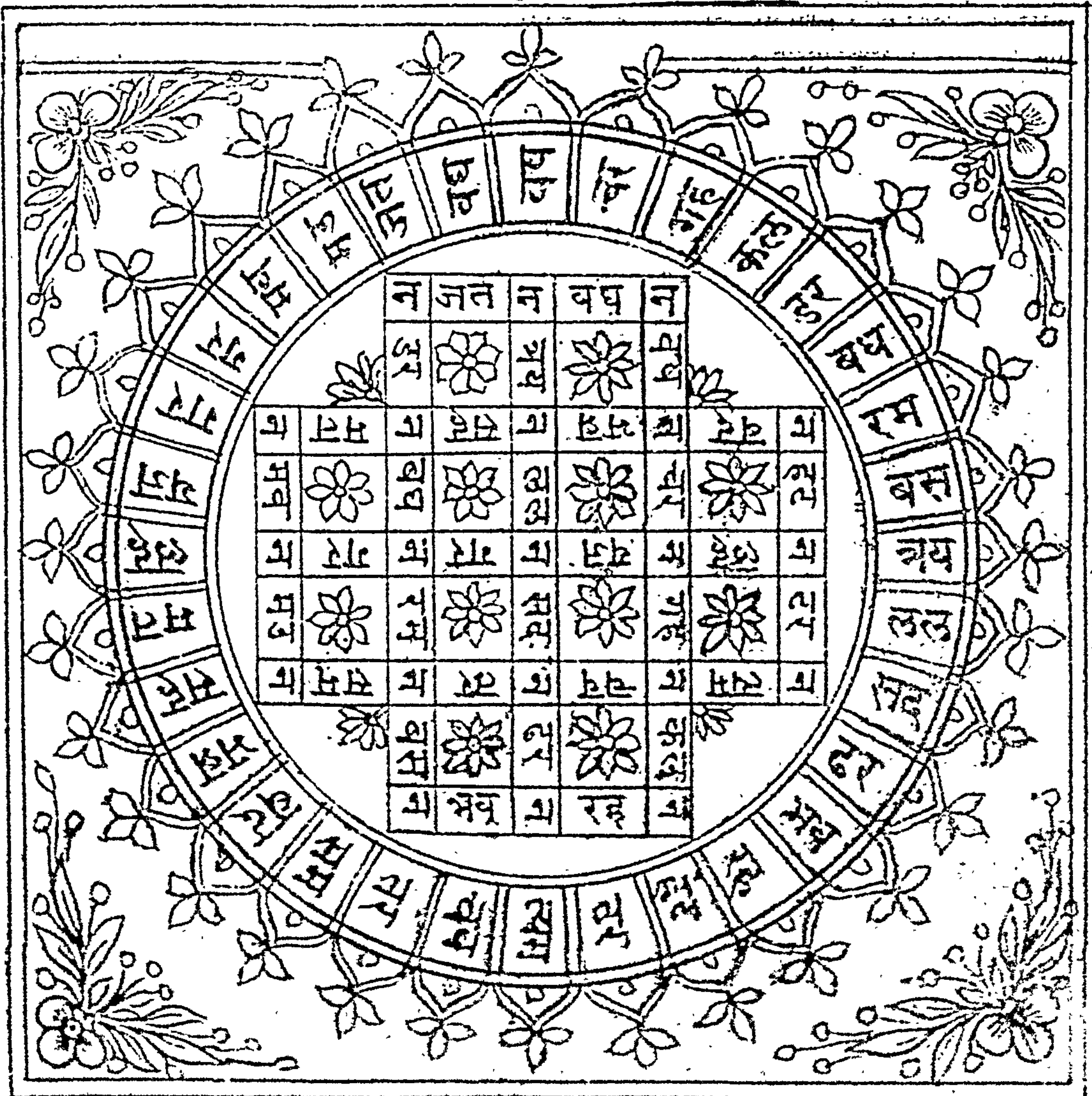
॥ इश्वर स्वरूप वर्णन॥

नज तन नव घन न वषन न चरन नगहन न कलन नडरन न
वधन ॥ नर मन न बसन न त्रयन नललन नसदन न हरन न भ-
वन न रहन॥ न हरन नटरन नत्य मन नच्चवन न तरन न सम
न न वदन नभभ्रन॥ न सहन नमतन न लहन नयजन न गर
न न गरन नमवन नम उन ॥४॥ ॥चित्र॥५८॥



॥अथ वर्तुलाकार द्वादश खंड स्वस्तिक प्रबंध ॥वह कवित॥
नज तन नव घन नवषन नचरन न गहन नकलन नडरन नब-
धन ॥ नरमन नबसन न त्रयन नललन नसदन नहरन
न भवन नरहन ॥ नहटन नटरन नत्य मन नच्चवन न तरन
न समन नबदन न भव्रन ॥ न सदन नम तन न लहन नयज-
न नगरन न गरन नमचन नमगुन॥

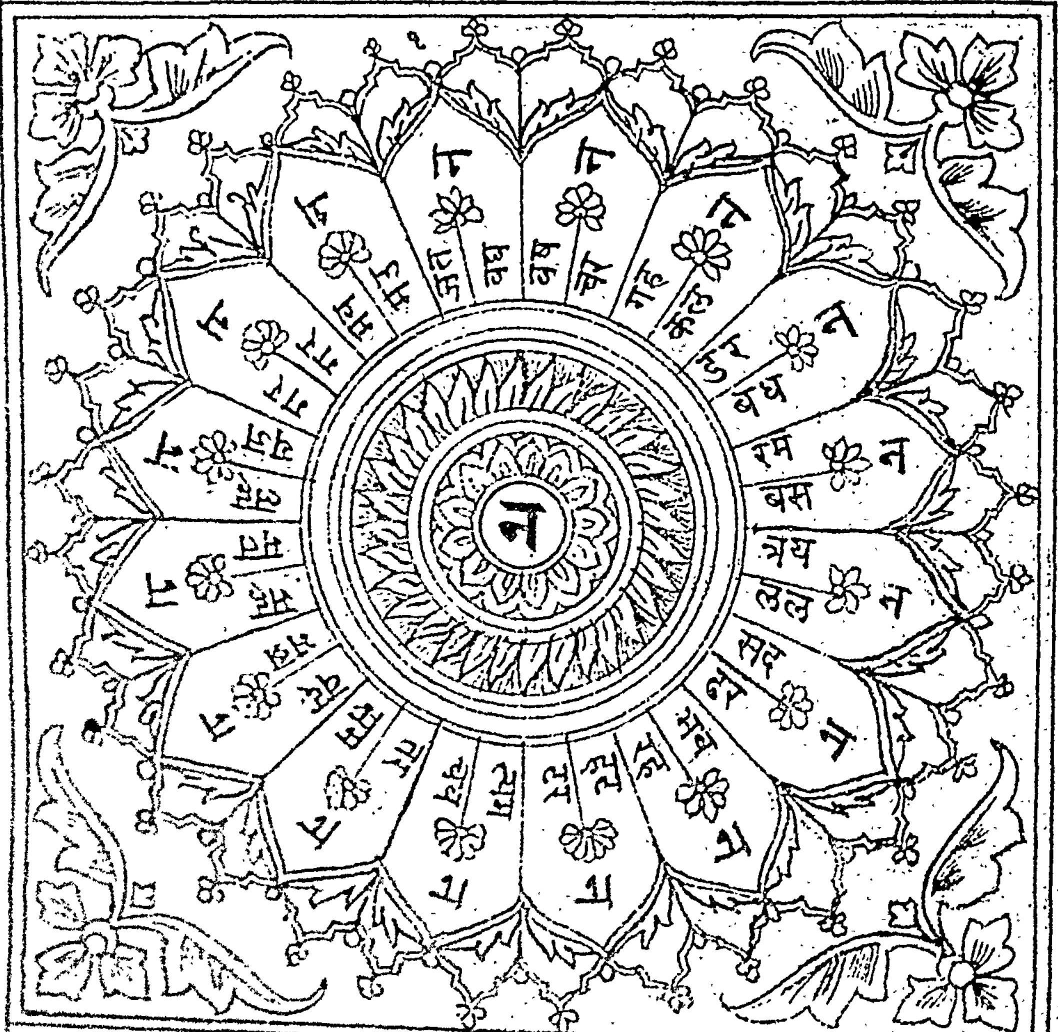
॥चित्र॥५९॥



॥अथ शोडश दल कमल प्रबंध॥वह कवित॥

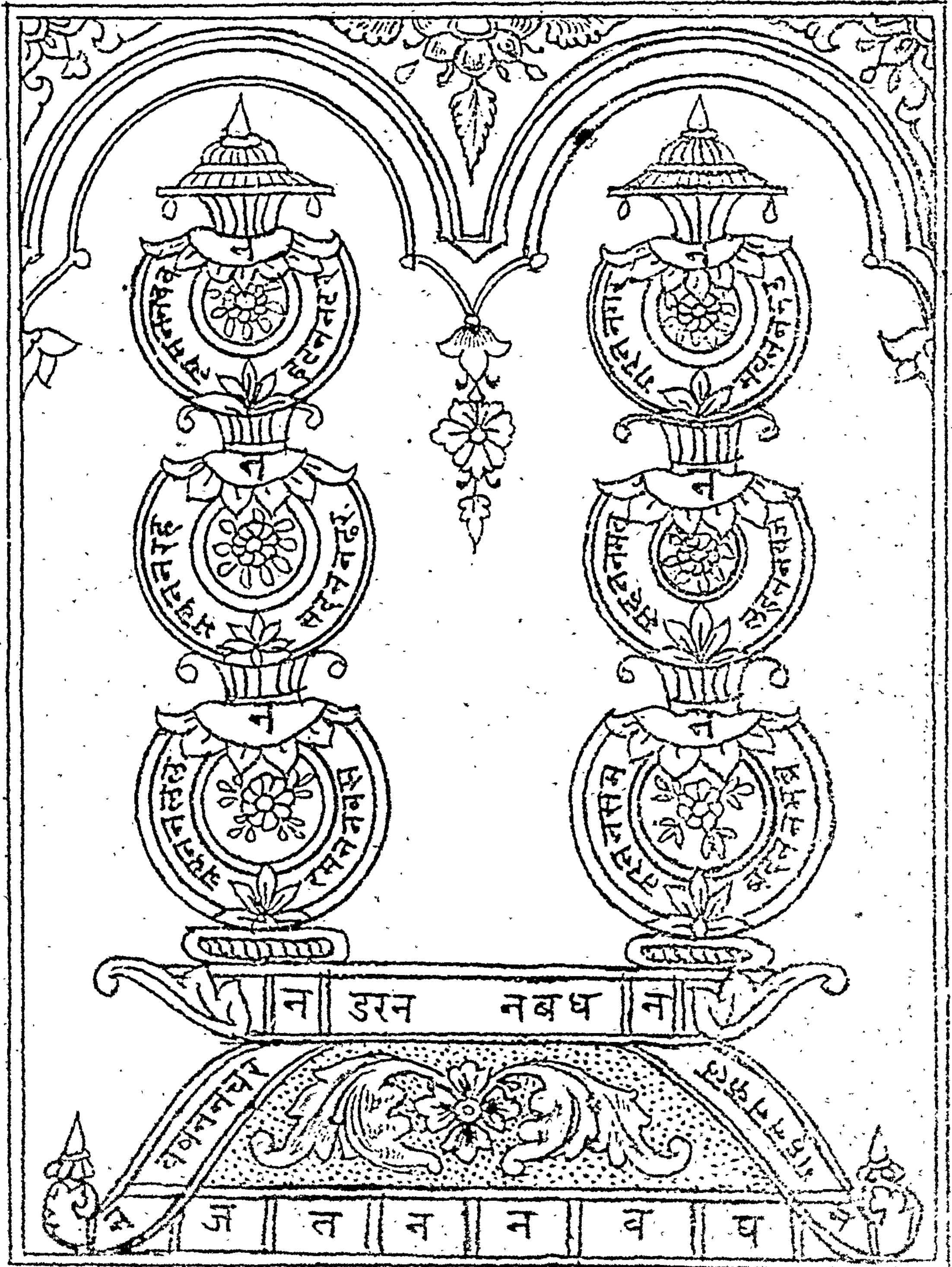
नज तन नव घन नव षन, न चरन न गहन न कलन न डरन न बध न ॥ नरमन नसबन न त्रयन न ललन नसदन न हरन नभवन न रहन ॥ न हटन नटरन नत्थ मन न चवन न तरन न समन न वरन नभ अन ॥ न सकन न मतन न लहन नयजन न गरन नगरन नमथन नम उन ॥

॥चित्र॥ ६०



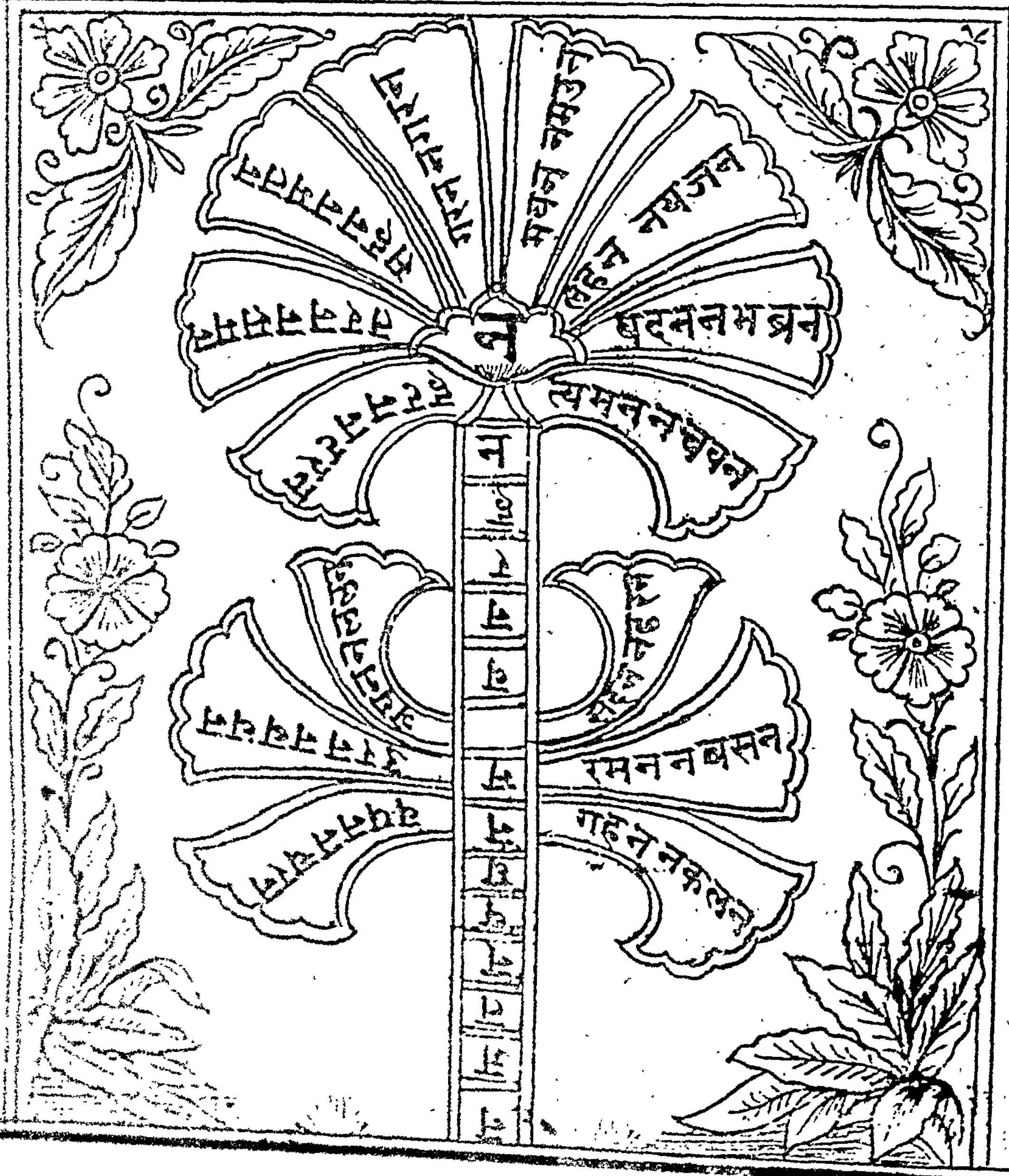
॥ अथ जव्वागार प्रबंध ॥ वह्कवित ॥

॥ चित्र ॥ ६१ ॥



॥ अथ वृक्ष प्रबंध भेद ॥ कवित्त ॥

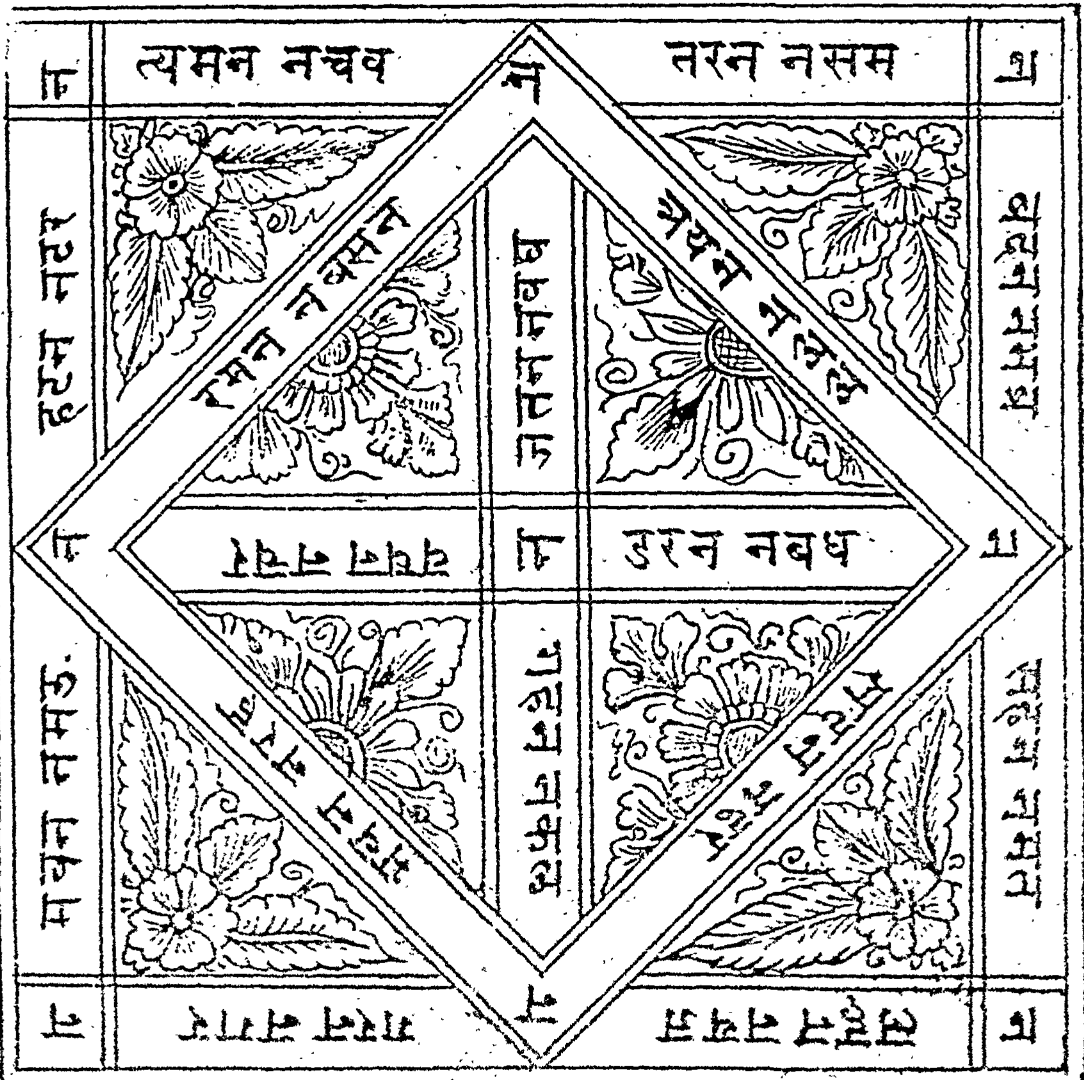
नम तन नव घन न चषन नचरन न गहन न कलन नडरन नबधन ॥ नर मन न बसन नत्रयन न ललन नसदन न ढरन न भवन न रहन ॥ न हटन नटरन नत्यमन नच्चवन न तरन न समन न छदन नभ ब्रन ॥ न सहन न मतन न लहन न यजन न गरन न गरन नसवन नम डन ॥ ॥ चित्र ॥ ६२ ॥



॥ अथ चोकी प्रबंध ॥ वह कवित ॥

नज तन नव घन न वषन न चरन न गहन न कलन नडरन नबधन ॥ नर मन न बसन न त्रयन न ललन नसदन न ढरन न भवन न रहन ॥ न हटन न टरन नत्य मन न चवन न तरन न समन न बदन नभ ब्रन ॥ न सहन नम तन न लहन न यजन न गरन नगरन नमवन नमउन ॥

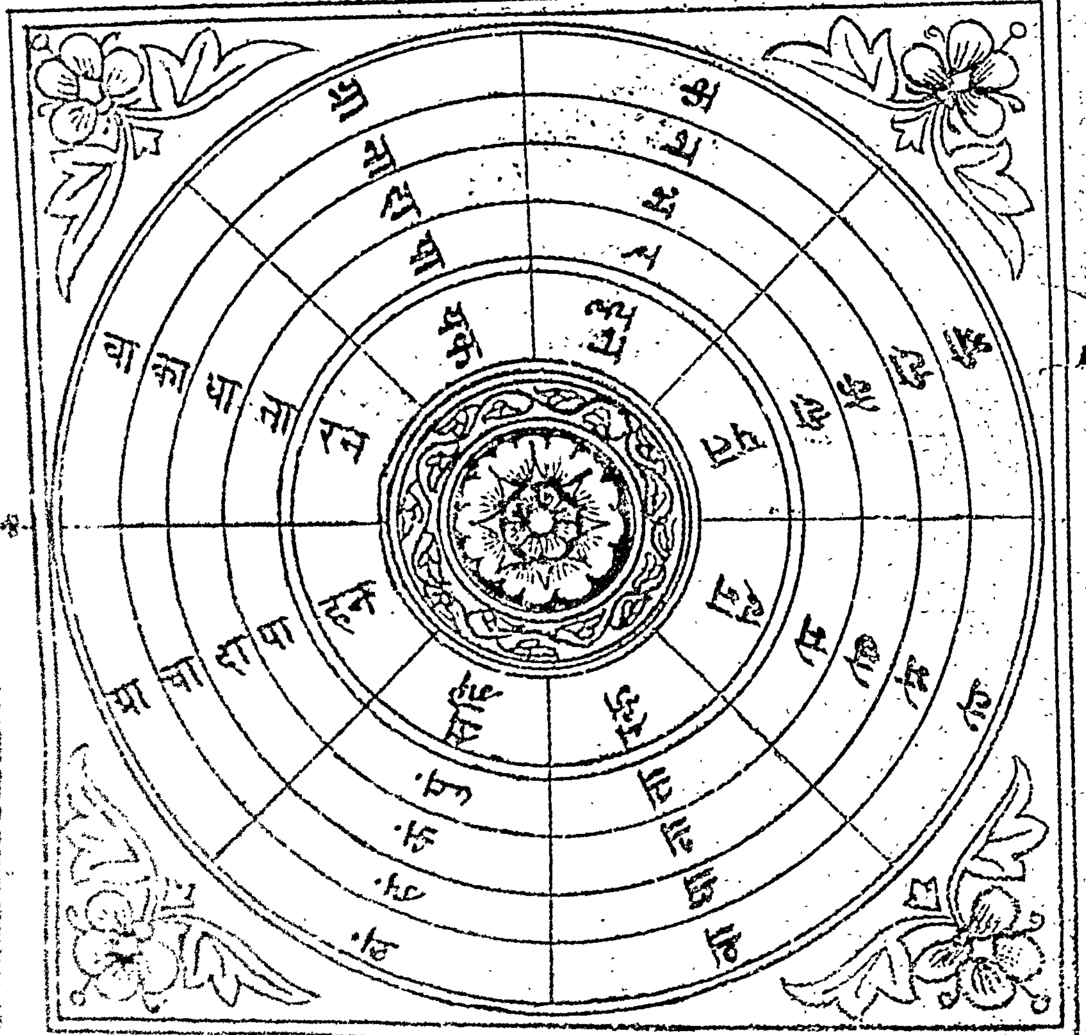
॥ चित्र ॥ ६३ ॥



॥ अथ सर्वतोभद्र प्रबंध विष्णु स्तुति ॥ सवैया ॥

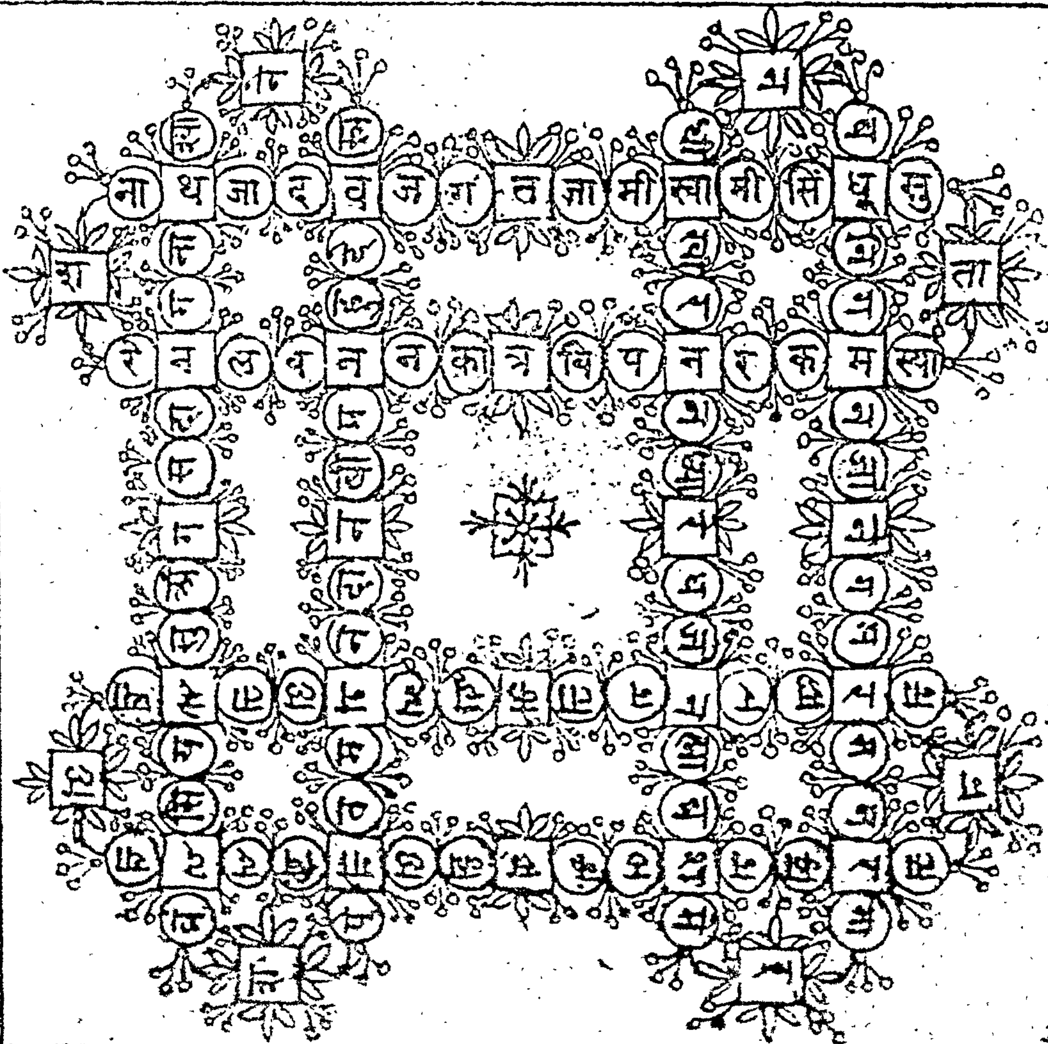
वारन आयक, कद्दन श्रीपत, बेदन वारक, कंसहि ग्राहन ॥
कारन नायक, नद्दन दीपत, भेदन धारक, हंसहि चाहन ॥
धारन दायक, भद्दन के पत, छेदन नारक, कंसहि दाहन ॥
तारन पायक, रद्दन दीपत, भेदन तारक, पुंसहि पाहन ॥ ५

॥ चित्र ॥ ६४ ॥



॥ अथ चौकी प्रबंध भेद चित्र यथा ॥ कवित ॥

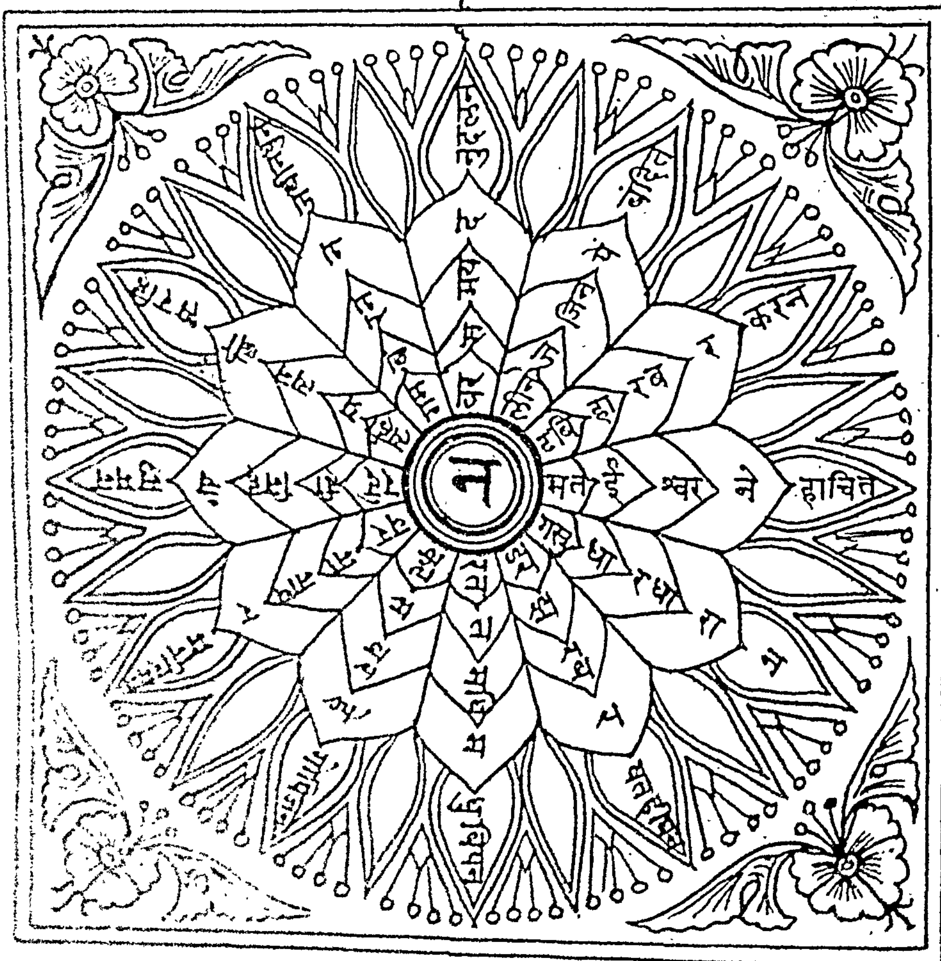
नवल नरेश नाथ, जादव जगत जामी, स्वामी सिंधू सुता श्याम,
करन पवित्र कान ॥ नरखी स्वाधीन बधू, निगम न जाने गम,
रमन रमा रमेश, ब्रह्मा नज धरे ध्यान ॥ नर सुर नाग तार, कान्ह
शठ कंस काल, गोविंद दयाल प्यारो, ताल नह चूके तान ॥
नमत गोपेश वृंद, तिथरे सु अंग सदा, न ग नाथ श्याने सब,
देह न प्रबीन दान ॥ ६ ॥ ॥ चित्र ॥ ६५ ॥



॥अथ कमलाकार पुष्पांतरे चक्राकृति भेद॥ छपय॥
नव रसमय दनु दलन, नलीनज जिनपें बंदित ॥ नट बिहार बर करन, नमत ईश्वर नेहा चित॥ नगसु धार धारान नडर झर बरषतही घन ॥ नरतत सधि मधु बिपन, नकर सब रहे गोपिजन॥ नव रमानाथ रमनी रमन, नरदेही निहचे सुमन ॥ नत्यही प्रत्य नह्वीसरहि, नगम बरन नज बीन धुन ॥७॥

॥अथ वह छप्पयांतर्गत चक्राकृति भेद॥सोरठा॥
नसदन जपे नहार, नई नेन धारा नझर॥
नत मन सहे न मार, नही चेन प्रबीन बन॥८॥

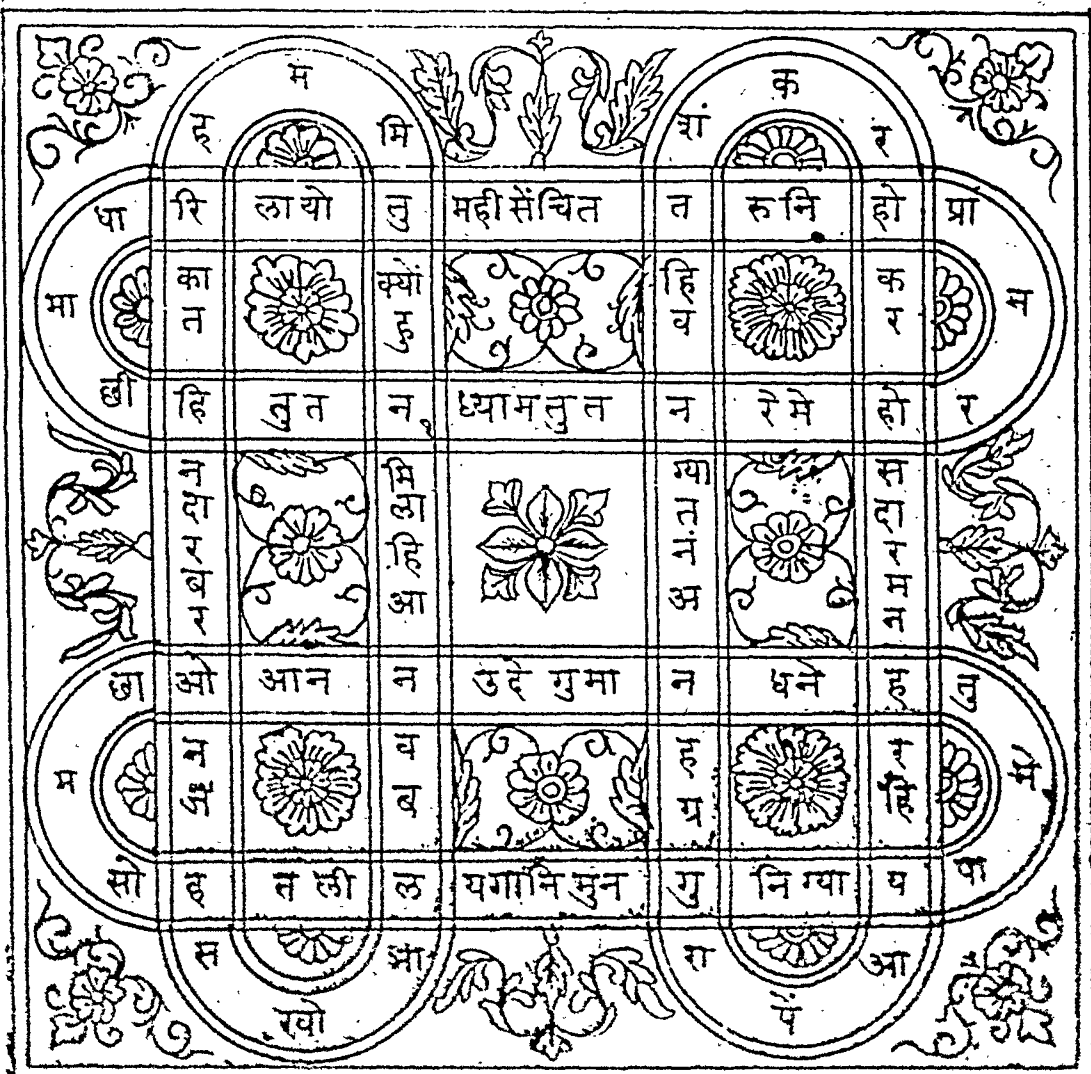
॥चित्र॥६६॥



॥ अथ मनिमाल चोसर प्रबंध ॥ शक्ति बर्नन ॥ कवित्त ॥

नत तुंहि छिमा धारि, लायो तुमहिसें चित, तरुनि हो प्रान रहो, मेरेनन तुम ध्यान ॥ नव हित शंकर हो, करहो सदा रमन, हर हिय आपे रागु, ग्रहन अनंत ग्यान ॥ नध नेह तुमे पाय, ग्यानि गुन मुनि गाय, ललितह सोम छाओ, आनन उदे गुमान ॥ नव बल मारवो सह, जन ओर बरदान, हितकारि हम मितु क्योंहु न मिलाहि आ-न ॥ १ ॥

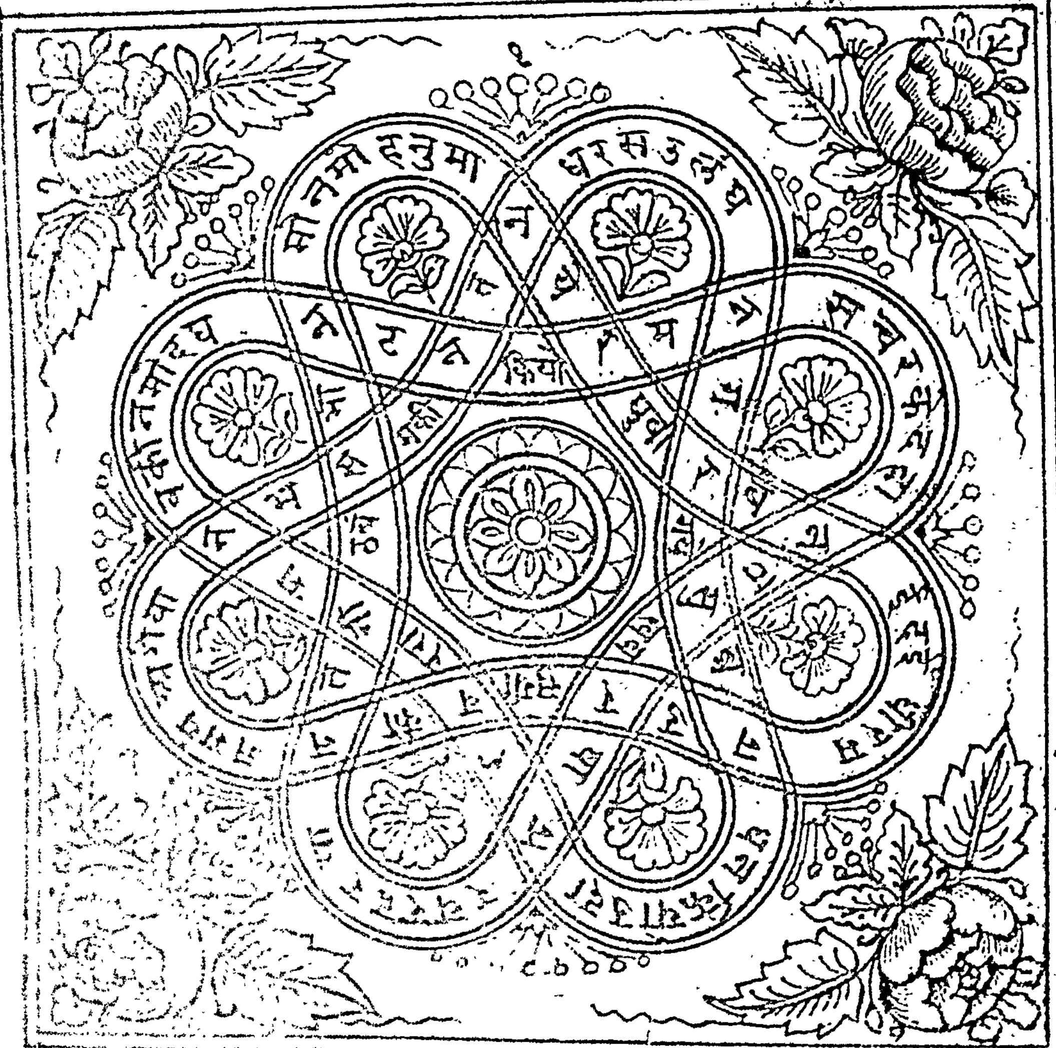
॥ चित्र ॥ ६७ ॥



॥अथ अष्ट दल उछीर प्रबंध चित्र भेद यथा ॥ कवित॥

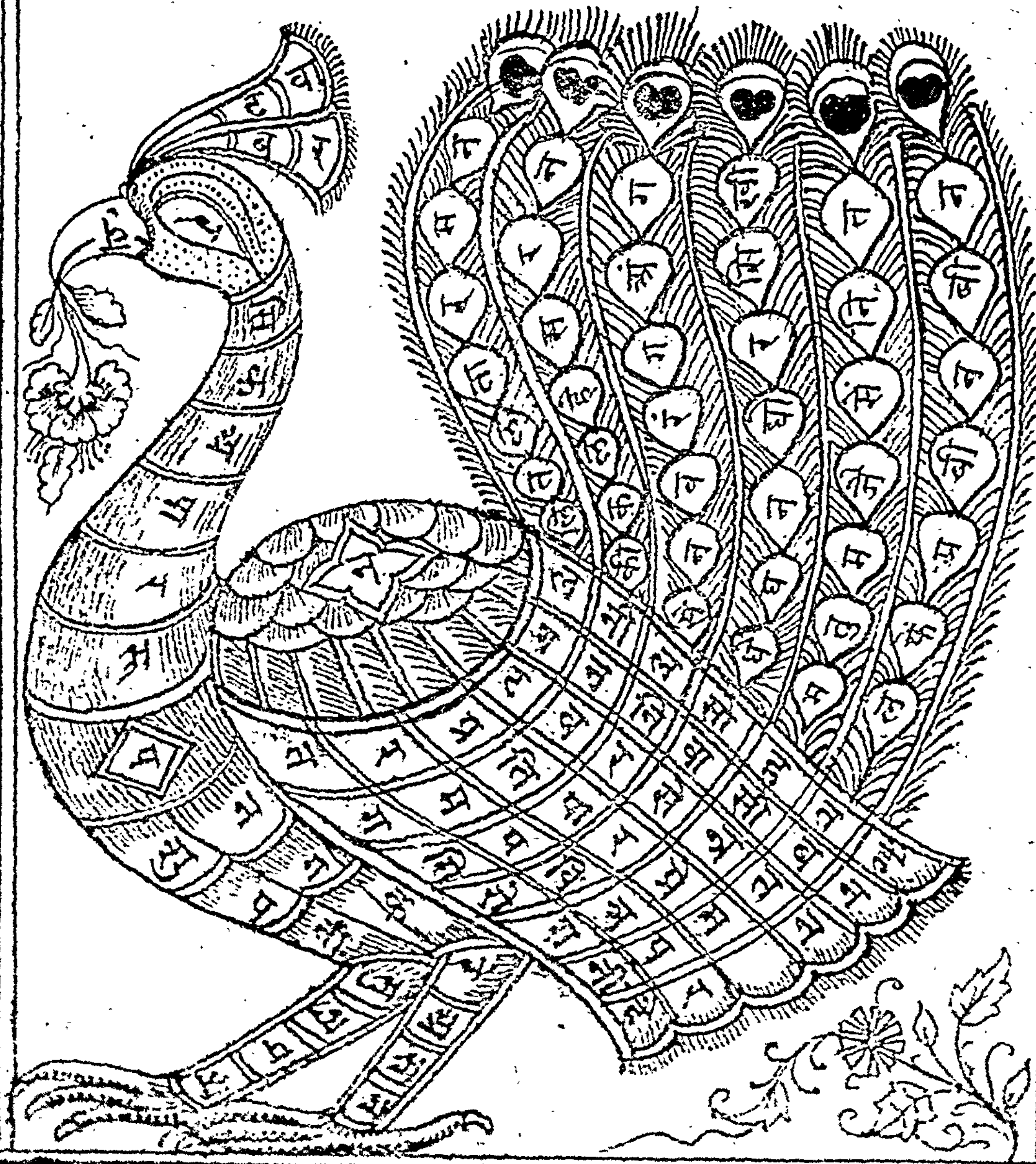
॥हनुमान स्तुति॥

नचे रघुवीर बन, मई दई धीर मन, नडर सुग्रीव कीन, नज भये अगेवा-न॥ नभ सम कीन तन, नध रस उलंघन, नगर गये सुब्रन, नधन कि-यो उदान ॥ नरवर रानी मन, नव कीन मोद घन, नटन कियो रमन, नसन्चर के दहान ॥ नत सुख बरषान, नरबर हरषान, नत नीठ वंस भान, नमो नमो हनुमान ॥१०॥ ॥चित्र॥६८॥

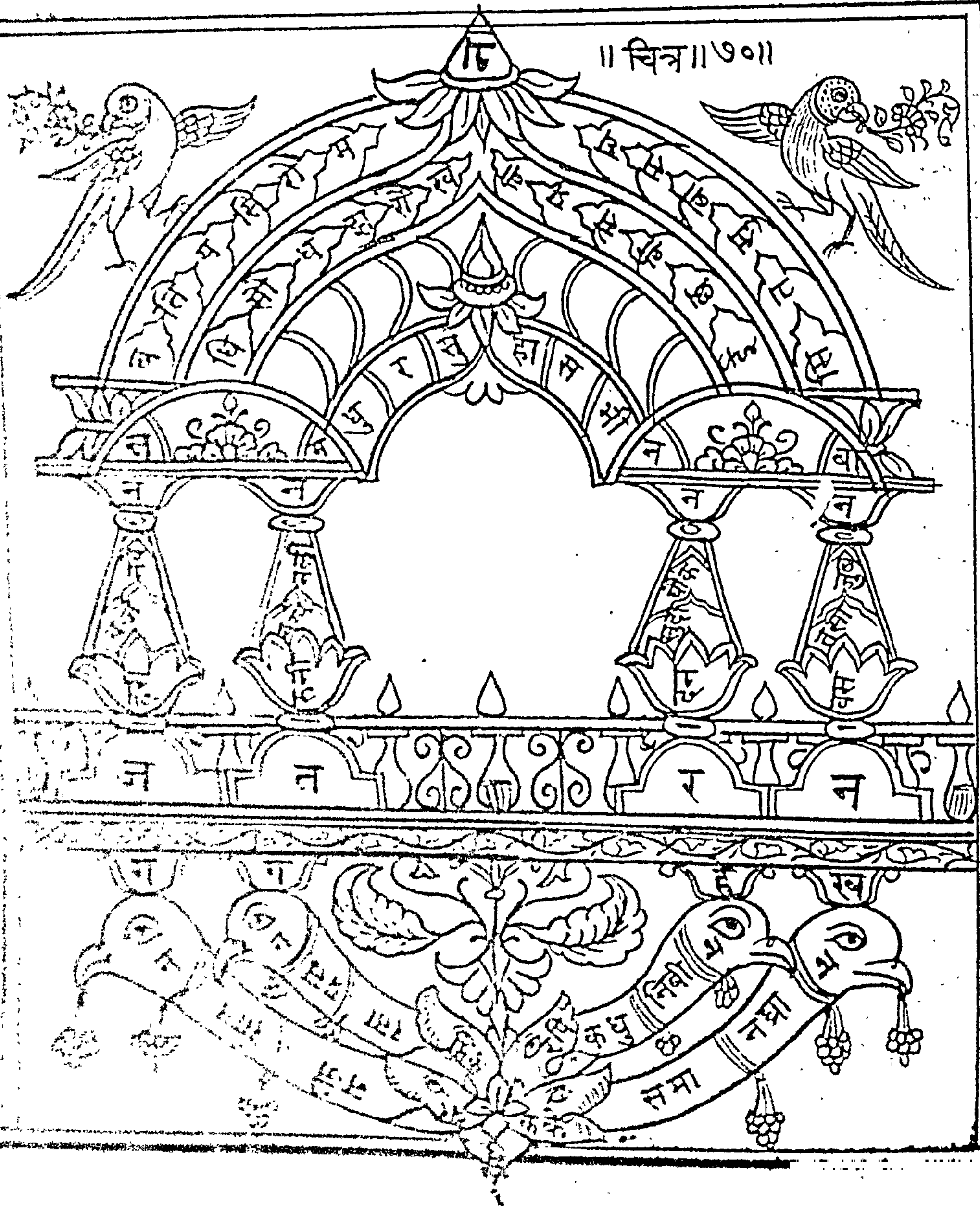


॥ अथ मयूर प्रबंध ॥ मयूर प्रति उक्ति ॥ कवित्त ॥

रव रटवार बर, रसिक अपार रूप, पशुपती सुनु पन्न, पनग करै असन॥ पतग सिरोमनी है, परम पवित्र पर, पन प्रति पार प्रेम, नखरसें नूतन, नगन निवासी बन ॥ नलनील सोहत है, ललित लता रमन, नीकीक लहे सरन ॥ लसे नवरंग अंग, सोधे घनघोर सिखि, हम तुम जेसें नित, तलफे प्रबिन बिन ॥ ११ ॥ ॥ चित्र ॥ ६१ ॥



॥ अथ गान्य प्रबंध भेद चित्र यथा॥ स्मृतिमान अलंकार ॥ कवित्त॥
सुबरन जैसो तन, सुकके समान घ्रान, सुकुमारता प्रसून, सुर
बीक धुनी बीन ॥ नग नग हे नरवन, गज गत हे ररवन, जहरी ब-
जंत बेन, नरुनी चरवे न लीन॥ रदन सु दार्यों कन, नव सत
साजु घन, न समन न बानन, मधुर सुहास भीन॥ सब तिय
सिरोमन, मधी सौध झरोरवन, बासित सुवास घन, नई छबि सें प्रबीन
॥१२

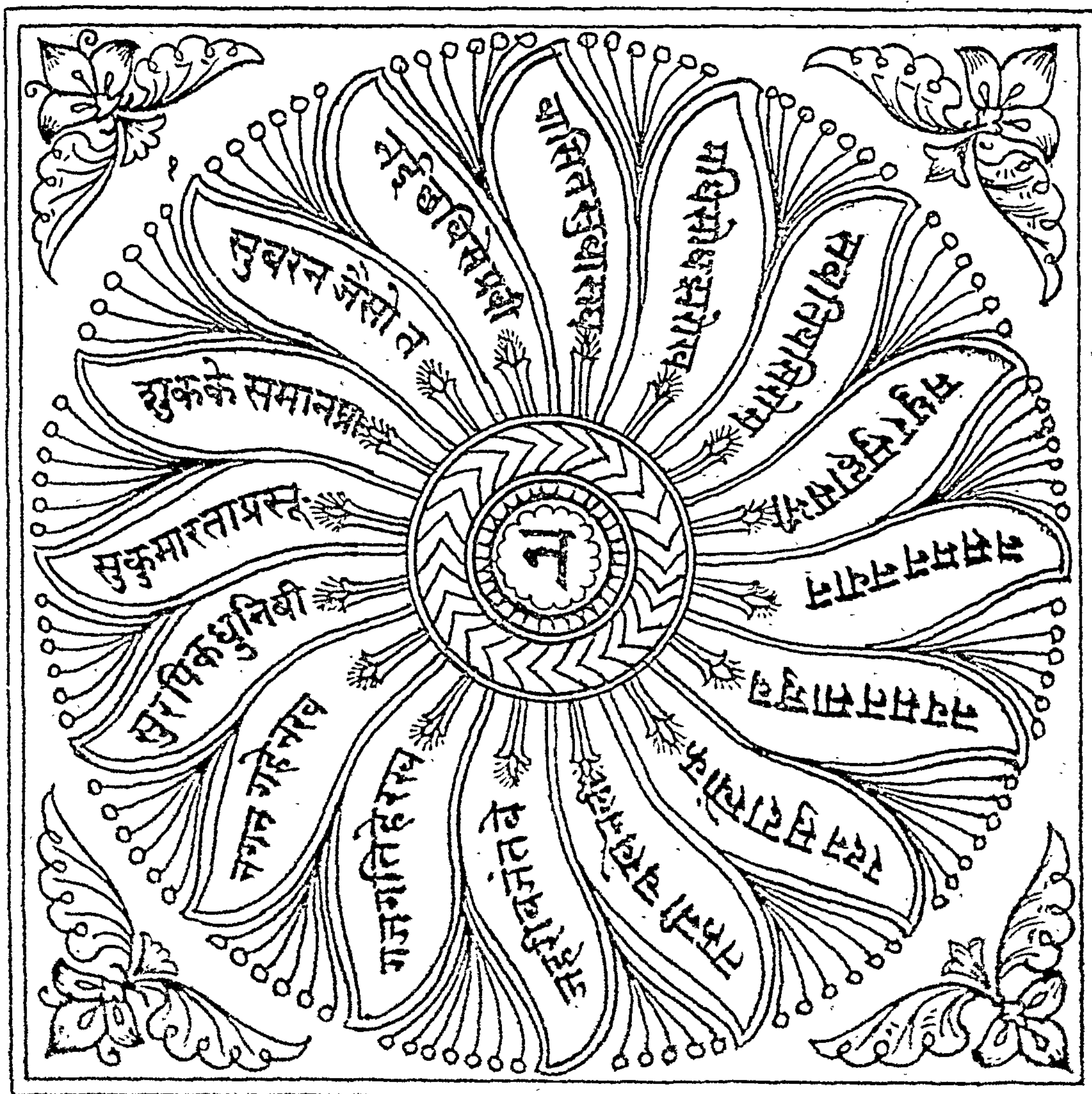


॥ चित्र ॥ ७०॥

॥अथ षोडश दल कमल प्रबंध॥वह कवित॥

सुबरन जैसो तन, शुकके समान घ्रान, सुकुमारता प्रसून, सुरपीक
धुनी बीन॥ नग नग हे नरखन, गज गत हे ररवन, गहरी बजंत बेन,
तरुनी चखे न लीन॥ रदन सु दार्यो कन, नय सत साजु बन, न स-
मन नषानन, मधुर सुहास मीन॥ सब तिय सिरोमन, मधी
सोध झरोखन, बासित सुवास घन, नई छबि से प्रबीन॥१२॥

॥चित्र॥७१॥



॥अथ धनुष प्रबंध नराकार चित्र॥सोरठा॥

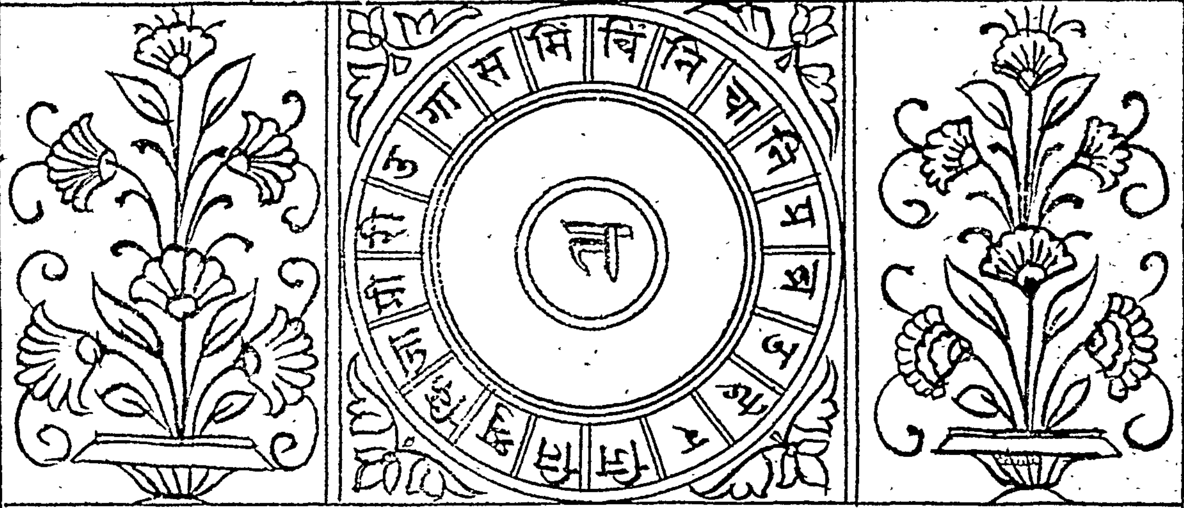
नित चिंत नित चात, नित प्रन ब्रत उत हेत रत॥
जित नित श्रुत कितजात, प्रीन रीत उत गात सत॥१३॥

॥चित्र॥७२॥



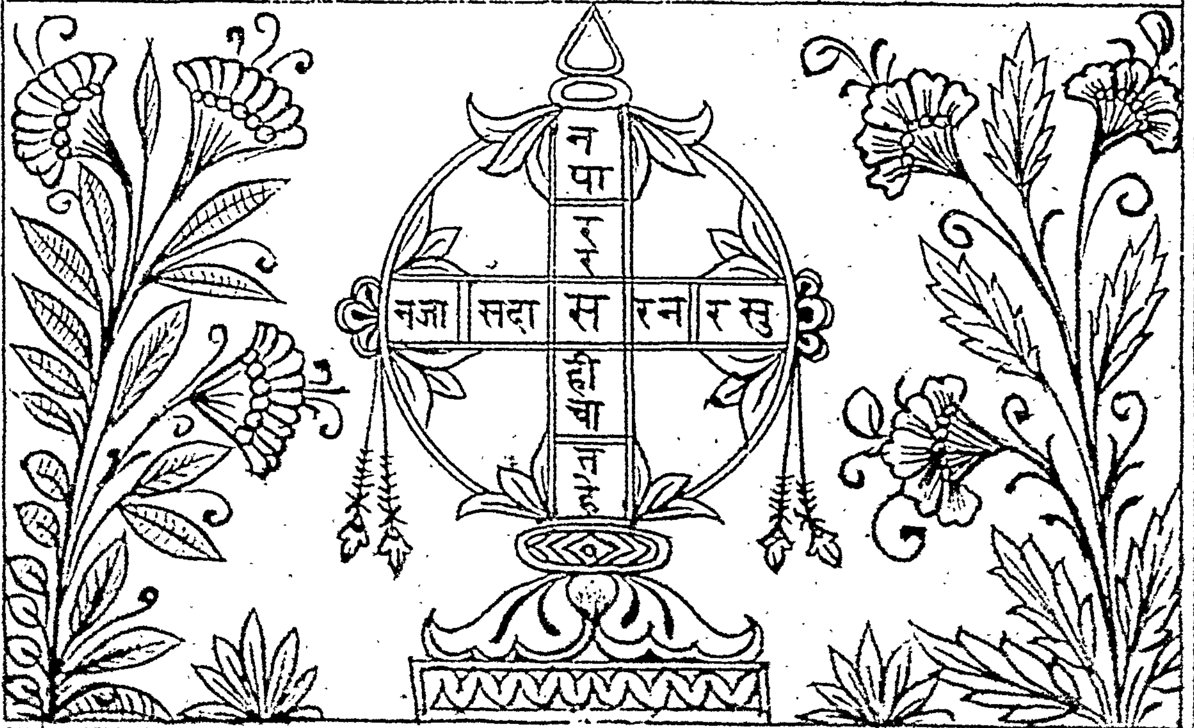
॥ अथ चक्राकार चित्र बद्ध सोरठा ॥

मिंत चिंत नित चात, नित प्रत ब्रत उत हेत रत ॥
जित तित श्रुति कित जात, प्रीत रीत उत गात सत॥ चित्र॥७३



॥ अथ अमृत कलश प्रबंध पूर्वार्ध उत्तरार्ध गुप्त ॥ दोहा॥

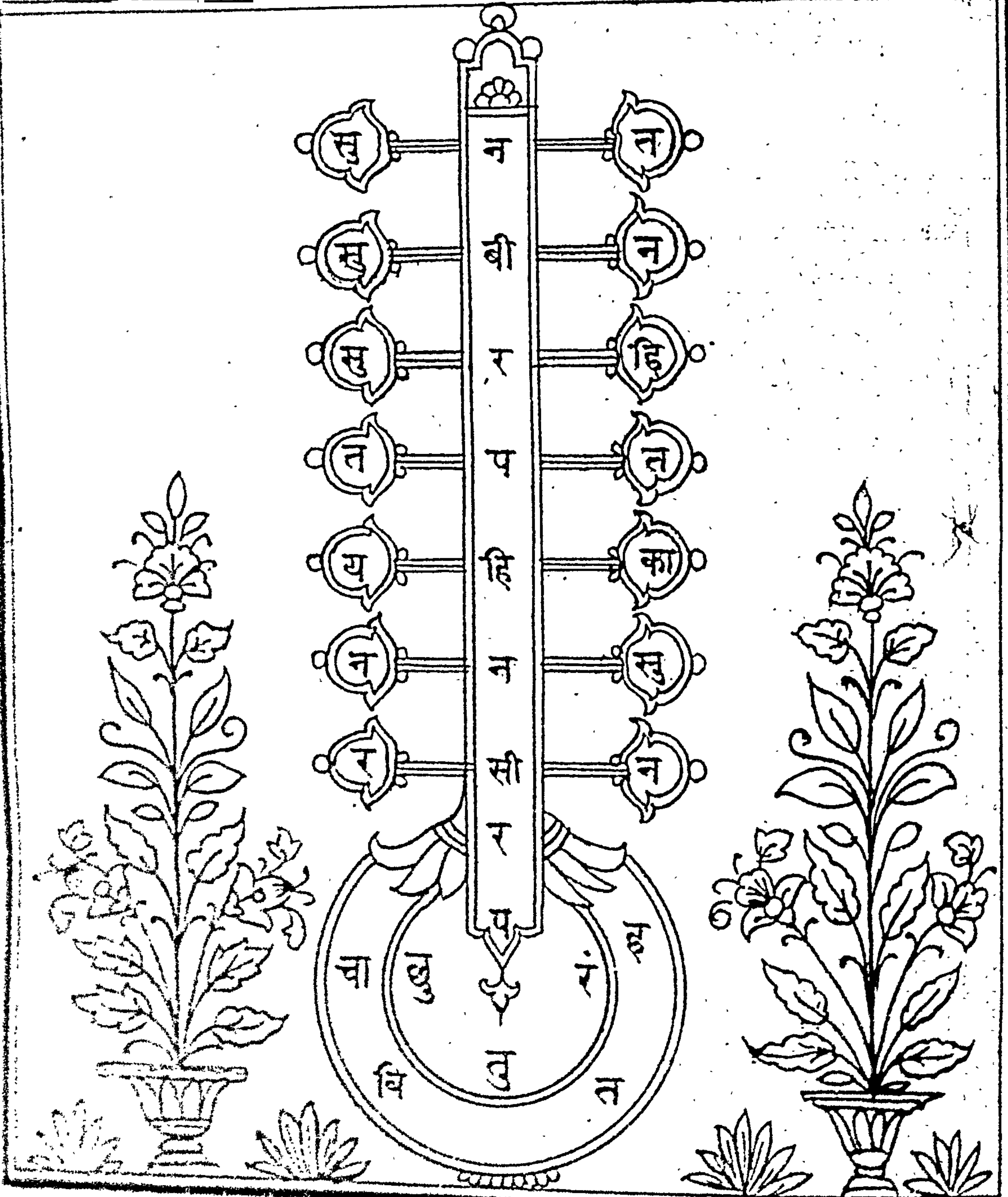
न पार रसही चातहे, सुरनर सदा सजान ॥
सर रसदा चाही नरस, जानत हे रसुपान ॥१४॥ चित्र॥७४



॥ अथ वीणा प्रबंध ॥ दोहा ॥

सुनत सुबीन सुरही तपत, यहि कानन सुरसीन;
रहन विचार परंतु छुप, परसी नहि परबीन ॥९५॥

॥चित्र॥ ७५॥

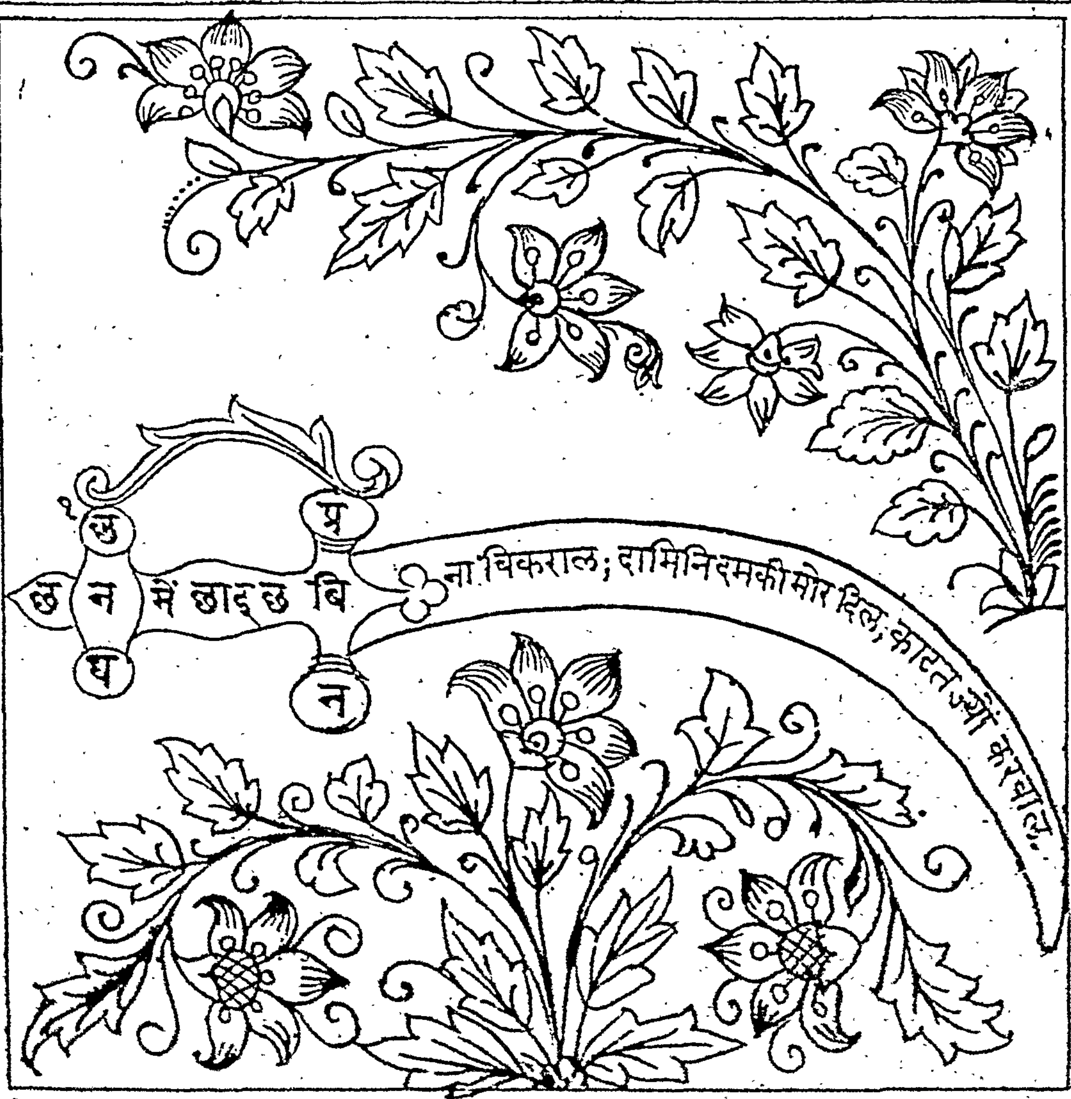


॥ अथ खड्ग प्रबंध ॥ चित्र ॥

॥ दोहा ॥

छन छन घनमें छाइ छबि, प्रबीन बिना ब्रिकराल ॥
दामिनि दमकी मोर दिल, काटत ज्यों करवाल ॥ १६ ॥

॥ चित्र ॥ ७६ ॥



॥ अथ कटार प्रबंध ॥ रोला छंद॥

यह दुतिया दुजराज, भयंकर मोमन भासत;
जगत पती जदु राज, नाम भारवत भय नासत;
नासत नहिं ग्रह पीर, धीर तजि प्रेम प्रकासत;
भासत कटन कटार, प्रिया बिन इंदु उजासत.॥१७॥

॥ चित्र ॥७७॥



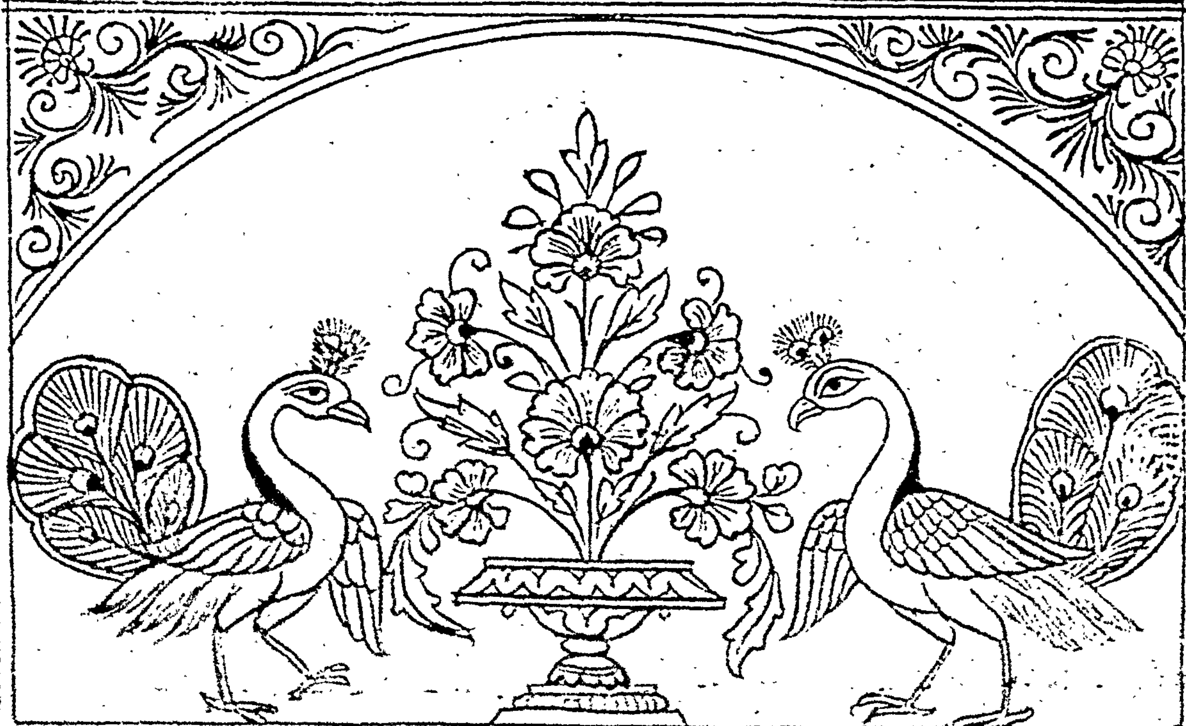
॥अथ अश्व प्रबंध॥

॥ छपय ॥

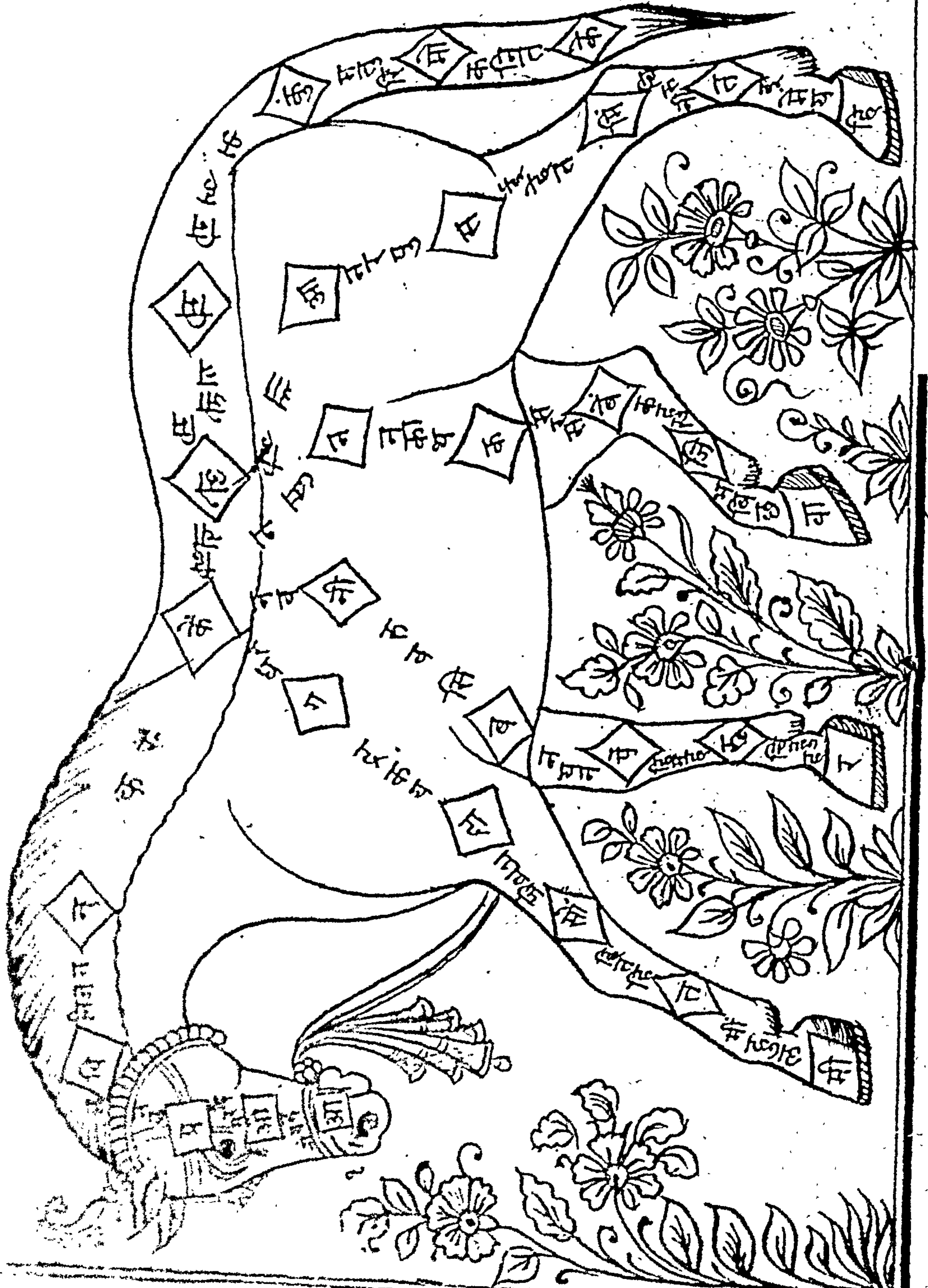
आनां यह ओसर हि, प्रछन छबि निज तन करकें ॥
मिलहु मीत हित हिसो, जिवन दायक द्रग धरकें ॥
रहहु चिरूहम हिंपें, नयन बसि बरुनी बनकें ॥
वा छबि भजि रहुं कबे, सरस कथ कानन सुनकें ॥
हियमें इतनी रुचि मींतहे, ईस पुरन आशा हिकें ॥
केतनिक मोरि तुमकुं कहनि, मित्र जो मिलो चाहिकें ॥१८॥

॥ तदंतर गत ॥ सोरठा यथा ॥

आओ प्रबीन मीत, सोदागर रूपें बनी ॥
वाजी बेकन हीत, मित्र आके मोकुं मिलो ॥१९॥



॥अथ अश्वप्रबंध ॥ छपय ॥ चित्र ॥७८॥



॥अथ पताका प्रबंध॥ कवित॥

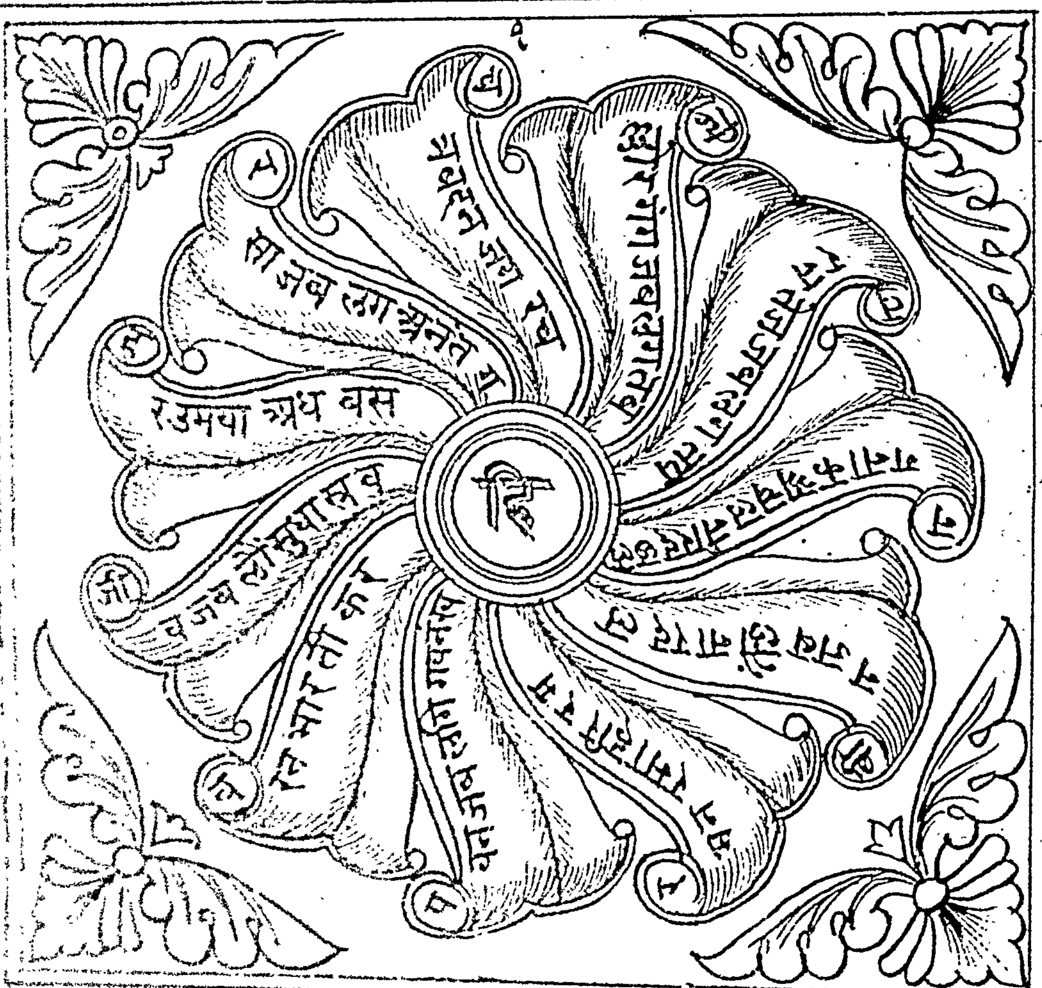
नबी रती पही चानी, बनीहै बामा सयानी, नर लोकमें छबी न ऐसी है नारीनकी ॥ देव दुनीमें जहां, स्र देविका दिसे अनेक, प्रबीनकी लेश छबि लिये नहीं इनकी ॥ शिव शिर छाइ गंगा, सेना सिर पताका ज्यु, भूपालिका सबे शिर, जानि जोति जीनकी ॥ गीरा सब सर सोहे, हेसो रस बस रागी, पाइये कहां नबीन, बानी परबीनकी ॥२०॥

॥चित्र॥७१॥

१ न

बी													
र	ती												
प	ही	चा											
नी	ब	नी	है										
बा	मा	स	या	नी									
न	र	लो	क	में	छ								
बी	न	ऐ	सी	है	ना	री							
न	की	दे	व	दु	नी	में	ज						
हां	स्र	दे	वि	का	दि	से	अ	ने					
क	प्र	बी	न	की	ले	श	छ	बि	लि				
ये	न	हीं	इ	न	की	शि	व	शि	र	छा			
इ	गं	गा	से	ना	सि	र	प	ता	का	ज्यु	भू		
पा	लि	का	स	बे	शि	र	जा	नि	जो	ति	जी	न	की
जी													
रा													
स													
ब													
स													
र													
सो													
हे													

॥अथ प्रतिपद आद्य सरी॥अंततुक गुप्त कमल प्रबंध॥ छपय ॥
चत्र चदन जग रचहि, रसा जब लग अनंत गहि ॥ हर उमया अध बस हि,
जीव जब लौं सुधा स्रवहि॥ बरन भारती करहि, पवन जब लगि गवन रव
हि॥ रमन रमा दरि रस हि, बीन जब लौं नारद लहि॥ नग नाक अचल नीरद
लहही, तरन तेजजबलग तपहि॥ हिल्लोर गंग जब लग तबहि, चरह जीव प-
रबीन तुहि ॥२१॥ ॥चित्र॥८०॥



॥गाहा॥ कमलादिक सागर कृत, चित्र कवितशुभ प्रबीनपें पठये ॥
पंचगशि अभिधानं पूर्न प्रबिन सागरो लहरं॥२२॥
इतिश्री प्रबीन सागर ग्रंथे कमलादिक सागर कृत चित्र भेदो नाम पंचशाष्टीत्तमो लहरं
॥६५॥

सातमा छपयनी अंदरथी नीकळता सोरठानो अर्थ. नीचे प्रमाणे--
रात दिवस वाट जोइ रहीने नाम जपिये छिये, अने नेत्रथी झरणनी धारा नमीछे, अने नित्य मन कामनी पीडा सहन करी शकतुं नथी.अने प्रवीण विना चेन पडतुं नथी. ॥८॥

॥ मनिमाळ चोकी प्रबंध कवितनो अर्थ. ॥

सागर कहे छे के हे देवि? तमे नित्य क्षमा धरनारां छो. में तमारी साथे मन जोड्युं छे, तमे सदा तरुण छो. मारा प्राणमां तमारुं नित्य ध्यान रहो. तमे शंकरनां नविन स्नेही छो. अने तेनी साथे सदा रमण करो छो. तमे पोते शिव साथे हैयामां (राग) स्नेह राखो छो.अने अनंत ज्ञाननुं ग्रहण करो छो. तमे स्नेहनुं निधान ऐटले भंडार पाम्यांछो. अने ज्ञानी मुनियो तमारा गुण गाय छे. तमारा सुंदर मुखचंद्रवडे चंद्रोदयनुं अभिमान ढांकी द्योछो, निर्बळ जन तरफ सही एटले नकी वरदाननुं वाक्य बोलोछो, तेमछतां अमारां हितकारी मित्र (प्रवीण) ने केम लावीने मेळवतां नथी? ॥९॥

॥ अष्टदल उछीर प्रबंध (ओशीकु) कवितनो अर्थ. ॥

सागर कहेछे के हे हनुमानजी? तमे नविन रघुनाथजीने नविन वनमां नविन धीरज मनमां आपी. सुग्रीवने निर्भय कर्यो. ने पोते आगेवान थई, आकाश जेवडुं शरीर वधारीने (निधि) समुद्रना जळनुं उलंघन करीने सोनाना शहेर लंकामां गया. अने रावणना बागनो (निधन) नाश कर्यो, अने राम राजानी राणीना मनमां नविन आनंदनो वर्षाद कर्यो, अने नटनी पेठे त्यां लंकामां रमण करीने राक्षसोने बाळी नांख्या, नित्य सुख उपजावीने रामराजाने हरखावनारा, अने ते सूरजवंशीना समीपमां रहेनारा, एवा हे हनुमानजी? तमने नमस्कार नमस्कार करुंछुं.॥१०॥

॥ मयूर प्रबंध कावितनो अर्थ. ॥

सागर एक मोरने जोइने कहेछे के हे सारा स्वरना उच्चारनार, तमारूं रूप अपार रसवाळुं छे, तमे शंकरना पूत्र कार्तिकस्वामीना वाहन छो, सर्पनुं भक्षण करोछो, पक्षियोना शिरोमणि छो, अने तमे परम पवित्र (वर्षाद) उपर प्रेमनी प्रतिज्ञाने पाळोछो, नटवरनी पेठे नाचोछो. पर्वतोमां तथा वनमां वसोछो. तमारूं गळुं लीला रंगनु शोभेछे, सुंदर लताओमां रमोछो, तमारे माथे सुंदर कलगी छे, तमारूं अंग नवरंगथी शोभे छे, अने तमे जेम वर्षादनी गर्जनाने शोधोछो. हे मोर? तेमज अमे पण तमारी पेठे प्रवीण विना नित्य तलफिये छिये. ॥११॥

॥ गोख प्रबंध कावितनो अर्थ. ॥

सागर गोखमां दीठेली प्रवीणने संभारेछे, ते एवी के जेनुं शरीर सोना जेवुं छे. पोपटना जेवुं जेनुं नाकछे. फूलना जेवी कोमळता छे, अने जेनो स्वर कोयलना तथा वीणाना अवाज जेवो छे, जेना नख पर्वतमां उपजेला हीरा जेवा छे. हाथीना जेवी चाल राखनारी छे. जेनां झांझर वीणाना जेवां वागेछे. ते तरुणीनां नेत्रो कमळ जेवां छे. दांत दाडमनी कळियो जेवाछे. नखने सात सोळ शणगार सजीने बनेली छे, जेना नबिन मुख उपर नाकनी वाळीनो मणि छे, मधुर हास्यथी भींजाएली छे; सर्व स्त्रियोमां शिरोमणी छे. हवेलीना झरोखा मध्ये कपूरनो सुगंध लगावीने नवी शोभाथी ते प्रवीण बिराजे छे, आ कवित गोखबंध, तथा शोडश दल कमलबंधमांथी पण वांची शकायछे. ॥१२॥

॥ धनुंषबंध नराकार सोरटानो अर्थ. ॥

मारूं चित्त प्रवीण मित्रने नित्य चाहेछे, अने नित्यप्रत्ये एना हितने सीधे चित्तनी वृत्ति त्यां रहेछे, तेमछतां हे मारा कान, तुं ज्यां त्यां

क्यां जायछे? जो सर्व गात्रनी सुरता त्यांज रहे तोज प्रीतनी रीत साची कहेवाय. आ सोरठो धनुषबंध, नराकार, चक्रबंध, कपाटबंध, गोमूत्रिका, अश्वगति, अने त्रिपदिमां पण लखी शकाय छे. ॥१३॥

॥ अमृत कळशप्रबंध दोहानो अर्थ. ॥

सागर कहेछे के हे सुजान पार वगरना देवो, ने नरो (रस) अमृतने चाहेछे, पण (सर) सर्वोपरी रसनी देनारी एवी स्त्रीने चाहनार तो (रसुपान) अमृत पानने नरस जाणेछे. ॥१४॥

॥ वीणा प्रबंध दोहानो अर्थ. ॥

सागर कहेछे के सारी वीणानो स्वर सांभळतां अमारा कान तपे छे. अने सरस लागती नथी. परंतु गुप्त विचार एवो रहेछे के. अरे प्रवीणनो स्पर्श थयो नहीं. ॥१५॥

॥ खडग प्रबंध दोहानो अर्थ. ॥

क्षणे क्षणे वीजळीनी कांति वर्षादमां छवाइ रहेछे. ते प्रवीण-विना मने भयंकर लागेछे, ते चमकीने मारा मनने तरवारनी पेठे कापेछे. १६

॥ कटार प्रबंध रोलाछंदनो अर्थ. ॥

आ बीजनो चंद्रमा मारा मनने भयंकर भासेछे, जगतना पति जदुराज, जेनुं नाम लेतां भय नासी जाय, तेमछतां मारा विरहनी पीडा तो नासती नथी, अने धीरज तजीने प्रेमनो प्रकाश थायछे, अने ए चंद्र जे उजास करेछे, ते प्रिया विना मारा मनने कापनारा कटार जेवो लागेछे. ॥१७॥

॥ अश्व प्रबंध छपयनो अर्थ. ॥

हे प्रवीण तमे पोताना शरीरनी छबि गुप्त करीने अर्थात् वेश बदलीने, आ अवसरे आवो, अने हे मित्र--जीवन आपनार दृष्टि धरीने हेतथी आवीने मळो, अने अमारां नेत्र समिप पापणोरूपे बनीने अमारी पासे चिरंकाळ रहो. अने तमारां रसिलां कथन (वचन) काने सांभळीने

ते तमारी छबि, भजीने हुं क्यारे रहीश ? हे मित्र मारा हैयामां एटली रुची छे, पण ते आशाना पूर्ण करनार तो ईश्वर छे, अने हे मित्र जो चाहिने मळो तो मारी केटलीएक वात तमने कहेवानी छे. ॥१८॥

तेमांथी निकळता सोरठानो अर्थ. हे प्रवीण मित्र? सोदागररूपे बनीने तमे आवो, ने घोडा वेचवाना हेतुना मिशथी आवीने मने मळो.॥१९॥

॥ पताका प्रबंध कवितनो अर्थ. ॥

सागर कहेछे के प्रवीण केवांछे, तो जाणे के कामदेवनी स्त्री नवीन एटले बीजी रती होयने शुं? एवी सुजाण स्त्री बनेली छे, आ नरलोकमां कोइ स्त्रीनी छबि तेना जेवी नथी. देवनी दुनियामां एटले स्वर्गमां अनेक देवियो देखाय छे, तेनी छबि प्रवीणनी लेशमात्र शोभा लइ शकती नथी, जेवी शंकरने माथे गंगा शोभे, अने सेनाने माथे पताका शोभे, तेमज सर्व राणियोने माथे जेनुं तेज जाणवामां आव्युंछे. अने जेनी वाणी सर्वोपरि शोभेछे, अने वळी ते रस एटले प्रेमने वश रंगाएलीछे, अथवा प्रीतिमां रसबस छे, एवी प्रवीणनी नवीन वाणी ते क्यां पामिये. ॥२०॥

॥ प्रतिपद आद्यक्षरी कमळ प्रबंध छपयनो अर्थ. ॥

आ कमळप्रबंध छपयमां सागरे प्रवीणने आशिर्वचन लखी मोकल्युं छे, एनो अर्थ अठावीशमी लहेरमां छंद नंबर चौदमे छे. त्यांथी वांचजो. ॥२१॥

अर्थ. कमळप्रबंध आदिक सारी चित्र कविता सागरे रचीने प्रवीण तरफ मोकली ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी पांसठमी लहेर संपूर्ण थई॥.२२॥

इतिश्री प्रवीण सागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां पंचपष्ठीतम स्तरंगः समाप्तः ॥ ६५ ॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद शार्दूलविक्रीडित वृत्त ॥

श्लेशार्थी कविता बनावि प्रविणे, मित्र प्रती मोकली ॥
तेना उत्तर मांहि तेवि कविता, त्यां मोकलीने भली ॥
आवी नेनतरंग शंभु सामिपे, कीधी स्थिती सागरे ॥
छे छासट्ठमि लेरमां विगत ते, आ प्रेम रत्नागरे ॥

॥ अथ दंपति उक्त श्लेष भेद प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

दंपति प्रेम बिशेष बढि, सागर कला प्रबीन ॥
श्लेष भेद बिस्तार करि, कीनी काव्य नबीन ॥१॥

अर्थ. रससागर अने कळाप्रवीण, ए स्त्री पुरुषने वधारे प्रेम वधवाथी श्लेष भेद एटले एकमांथी अनेक अर्थ नीकळे एवी नवीन कविता रची ते कहिये छिये ॥ १ ॥

॥अथ तत्र कलाप्रबीनोक्त अभिन्नपद श्लेषालंकार॥सवैया॥

मेदनि तीरनसें अवगाहत, मक्रनिकेत ज्युं हेत रता ॥ आयत व्यूढ तरंग सदागति, नेति निरझ्झर नंगरता ॥ मोद बढावतहे मन साधन, होत नही छिनही थरता ॥ आन जुरी सु परी न जुदी फिर, सागर सागरमें सरता॥२॥

अर्थ. अभिन्नपद एटले एक शब्दना अक्षर जुदा पाड्या वगर बेअर्थ नीकळे, एवो आ सवैयो छे. तेमां एक अर्थ समुद्र तथा नदीने लागु पडे छे, अने बीजो अर्थ रससागरने अने प्रवीणने लागु पडे छे. तेमां समुद्र विषे एवी रीते छे के प्रवीण लखे छे के, नदी पृथ्वीने किनारे थइने समुद्रमां प्रवेश करे छे. अने मक्रानिकेत एटले मगरने रहेवाना स्थानकरूप समुद्र साथे हेतथी आसक्त थाय छे. निरंतर गतिवाळी मोटा तरंग

साथे आवे छे. अने तेनां झरण अटकाव न थाय एवां (न इति) अपार छे. ते नदी साधु जनना मनने आनंद वधारे छे. अने क्षणमात्र पण स्थिर रहेती नथी. हे सागर? एवी रीते सागरमां आवीने जोडाइ. ते फरीथी जूदी पडती नथी. ॥

बीजो अर्थ. प्रवीण कहे छे के हे सागर?मारी सुरता मकानिकेत एटले सागर छे नाम जेनुं तेनामां, मारा भेद एटले मांस पिंड रूपी शरीरमांथी नीकळीने तीरनी पेठे प्रवेश करे छे. ने तमारा हेतथी आसक्त थाय छे. अने सदागति एटले त्रिविधि पवनना विस्तारवाळी मोटी लहेरो आवे छे. तेथी मारी आंख्योमांथी जे झरण वहे छे तेने नांगळपणुं नथी अर्थात् अटकाव नथी. अने जे सिद्धे बतावेलुं साधन करुं छुं तेथी आनंद वधारे छे. पण मनने क्षण मात्र स्थिरता थती नथी. हे सागर? जे मारी सुरता तमारामां आवीने जोडाइ छे ते फरीथी जूदी पडती नथी ॥२॥

॥ अथ अभिन्नपद श्लेषालंकार ॥ सवैया ॥

चातुक दद्दर सोर सखीनह्न, कोकहि हंसनकों उरझावन ॥
धीर समीर हरे गिर झंगर, कुंज लता सु कुमोद बढावन ॥
ताल सरीत लहेर लगावत, खेंच धनंप छटा चमकावन ॥
सागर ज्यु वहरे सिगरे सुख, आज घटा नवरंगहि श्रावन ॥ ३ ॥

अर्थ. प्रवीण कहे छे के बपैयाना, देडकाना, अने मोरना सोर थायछे. अने चकवा चकवीने तथा हंसने मुझावे छे. अने धीरो धीरो पवन वाय छे. पर्वत तथा वन लीलां थयां छे. अने कुंजनी लताओ तथा कुमोदनीने वधारे छे. तळावमां अने नदियोमां लहेरो लगावे छे. अने आकाशमां इंद्रधनुष मेघने नीकळीने चमकावे छे. हे सागरजी ! ए सघळां सुख आपे

एवी आज नवा रंगनी श्रावण मासनी वर्षादनी घटा चडी छे.॥

बीजो अर्थ. आ मारी सखियो बपैया ने देडकानी पेठे सोर करे छे. अने मारा हंसने एटले जीवने कोकशास्त्रनी कळा मुझावे छे. पवन, पर्वत, ने वन मारी धीरजने हरी ले छे. अने आ कुंजनी लताओ मने कुमोद एटले कुत्सित मोद अर्थात् क्लेश वधारे छे. अने गानना ताळतो सर्पना जेवी लहेरो लगावे छे. अने आ खेंचेलुं इंद्रधनुष तथा विजळी मने चमकावे छे. हे सागरजी? आ नवीन रंगनी घटा स्रववा लागी छे. अर्थात् आंसु वरसवा लाग्यां छे, ते साथे मारां सघळां सुख वही गयां छे ॥३॥

॥ अथ श्लेष अभिन्नपद ॥ कवित ॥

जागत पतंग जोत, सरस सुढार छुटे, चंदन न सोहियत, घननके आडंबर ॥ अंबरन ठोर ठोर, कज्जरन छये रंग, दीश दीश देखीयत, अंब कन लागी झर ॥ वपु लाय हरी प्रभा, सोधत सयाने पंथ, चातुक रटे ज्यु सुर, मोर गाये गीरपर ॥ मारुत अकाल किया, बाढत न सामे मेन, बीरही न हंस देखो, सागर भरेहे सर ॥ ४ ॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के चोमासु आववाथी आगिया जीवडानी जोत जागी रही छे. अने सारा रस एटले जळनां वादळां सुंढने आकारे छुटयां छे. अने वर्षादना आडंबरथी चंद्र शोभतो नथी. आकाशमां ठेकाणे ठेकाणे काजळना जेवो रंग छवायो छे, अने दिशाये दिशाओमां जोईये छिये तो जळना कणनी झडी लागी रही छे. अने विपुला एटले पृथ्विये पण लीला रंगनी कांति लीधी छे. डाह्या माणसो पण रस्तो शोधे छे. अर्थात् घासथी रस्ता ढंकाई गया छे. अने बपैयो स्वर बोलेछे. अने पर्वत उपर मोर गायछे. पवने आ काळे एवुं कर्युंछे के ते मेनाक पर्वतना

सामो वधतो नथी. अर्थात् मैनाक पर्वत दक्षिणसमुद्रमां डुबेलो छे. ते तरफ जतो नथी पण इशान तरफ जाय छे. अने हे सागर तळाव भरेलां छे. पण विजोगी हंस देखाता नथी. अर्थात् मानसरोवर तरफ जता रह्या छे.॥

बीजो अर्थ--सूरजनो प्रकाश लागे छे. ते जाणेके मारा माथा उपर मदेलो हाथी छूटयो होय, एम लागे छे. मने चंदननो के कपूरनो लेप सेहेवातो नथी. मारा लूगडामां ठेकाणे ठेकाणे आंखना काजळनो रंग छवाइ रह्यो छे. अने दिशाये दिशाओमां जोउंछुं तो आंखमांथी आंसुनी झडी लागी छे. मारे शरीरे हरताळना जेवी पीळी कांति लीधी छे. अने मारी आशपाशना डाह्या माणसो मने सुख थवानो रस्तो शोधे छे. अने बपैयो जेम पियु पियु सोर रटे. तेम हुं पियु पियु रटुंछुं अने मारी (गिरा) वाणी गातां पडी जायछे. अर्थात् बोलतां अटकी जवाय छे. अने त्रिविधि पवने मने अकळामण करीछे. अने रात्रिमां काम वधेछे. हे सागर तमे आवीने जुओ. आ मारो जीव विरहना वाणथी भराइ रह्यो छे. ॥४॥

॥ पुनः श्लेप भेद अभिन्नपद ॥ सवैया ॥

शोधत बोध सरूप अहो निश, बेदन भेद बितीथ बिनाशन ॥ नीत अनीत बीचारत धारत, शासन संकट शिष्ट प्रकाशन ॥ ब्रंन विवेक सबे बिसतारत, साज बिकास अनेक उपासन ॥ सागर ज्यु मन ब्रंह्म भयो रहे, रावरे पाय सरोज निवासन ॥५॥ इति द्वयार्थ॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के महा योगेश्वर रात दिवस ज्ञानवडे आत्माना स्वरूपने शोधेछे. अने ते वितिथि एटले अतिथि अर्थात् योगी कांइ खाधा विना वेदना भेद तपासे छे. शी वस्तु नित्य अर्थात् अविनाशी छे. अने शी वस्तु अनित्य अर्थात् नाशवंत छे, ते विचारे छे, अने धारे छे, अने शिष्ट

एटले महात्माओए जे आज्ञा प्रकाश करेली, ते संकट सहीने पाळे छे. अने ॐकार आदिक अक्षरना विवेकने विस्तारे छे. अने अनेक प्रकारथी उपासनाना प्रकाशने सजेछे. अने हे सागरजी तेनुं मन ब्रह्मरूपे थइने राव एटले ईश्वरना चरण कमळमां निवास करीने रहेछे. ॥

अर्थ--बीजो प्रवीण कहेछे के मारुं मन मारी वेदनाना भेद (वितिथि) अनियमित छे तेनो नाश करवाने वास्ते सिद्धना उपदेश प्रमाणे तमारा स्वरूपने अहोनिश शोधे छे, शुं करवुं ते नीति छे, अने शुं करवुं ते अनीति छे. ते विचारे छे. अने धारेछे. अने वडीलो जे आज्ञा प्रकाशे छे. तेथी मनने संकट थायछे. तमारा शरीरना रंगनो बधो विवेक विस्तारे छे. अने सिद्धे बतावेली उपासनानी अनेक सामग्री मेळवे छे. ए रीते हे सागरजी मारुं मन तमारा चरण कमळमां ब्रह्मारूपे थइने निवास करवा सारुं रहे छे. अर्थात् ब्रह्मा जेम कमळमां रहेता हता. तेम मारुं मन तमारा चरण रूपी कमळमां रहे छे ॥५ ॥

॥ अथ सप्तार्थ श्लेष भेद ॥ कवित ॥

सकल भरेहे रस, पुरन सदाहि रहे, जुतही तरंगन समीप शब्द गहरे ॥ अगन डुबावन हे, पावन प्रसिद्ध जग, मनही मिलावन, मजादहीपें ठहरे ॥ अथुल प्रमान, कोउ पारहुं न पावतहे, रमनीय रूप जाको हेर हीय हहरे ॥ सुरराज सभा, शंभु, सरसति, श्रीपती हे, सागर, सघन, किधों सिंधुहुकी लहरे ॥ ६ ॥

आ कवितना सात अर्थ थाय छे.

अर्थ पहेलो. ईंद्रनी सभा विषे. प्रवीण कहेछे के ईंद्रनी सभामां सारा कुळवान सभासदो रस एटले अमृतथी पूर्ण भरेला सदाय रहे छे, अने

तेना समीपमां जळतरंग सहित वाजाना गंभीर शब्द थाय छे. दुर्गुणने डुबावनार, ने जगतने पवित्र करनार ते सभा प्रसिद्ध छे. परस्पर मन मेळवीने मर्यादामां रहे छे. ते सभानुं प्रमाण मोटुं छे. तेनो कोइ पार पामतुं नथी त्यां सुंदर अप्सराओ छे. ते एवी के जेनुं रूप जोइने हैयुं हर्षित थाय. एवी ईंद्रनी सभा छे ॥

अर्थ बीजो. शंकर विषे. शंकर सर्व ठेकाणे भरेला छे, अर्थात् सर्वत्र व्यापक छे, अने निरंतर रस एटले आनंदथी पूर्ण रहे छे. अने तेमना समीपमां तरंगिणी एटले गंगा गंभीर शब्द सहित रहे छे. ने ते शिवजी त्रीजा नेत्रमां अग्निने डुबावीने अर्थात् ढांकीने राखेछे. जगतने पवित्र करनार प्रसिद्ध छे; तेमनी साथे मनने मेळवनारा सेवको (मर्याद) अदबथी रह्या छे. जेनुं मान अर्थात् मान्य मोटुं छे. अने तेनी गतिना पारने कोइ पामतुं नथी. तेमनी साथे रमण करनारां पार्वतीजी छे. जेनुं रूप जोइने हैयुं हर्ष पामे एवा शंकर छे.॥

अर्थ त्रीजो. सरस्वति विषे. सरस्वतिमां सघळा रस एटले मधुरता भरेली छे. तेथी सदा संपूर्ण रहे छे. अने तरंग एटले मनना तर्क सहित तेना समीपमां गंभीर शब्दो छे. अवगुणने डुबावनारां छे. अने सर्व जगत जेने प्रसिद्ध रीते पामे छे. अर्थात् वाणी सर्वने प्राप्त थाय छे. पण तेमां मन जोडनारा कवियो व्याकरणनी तथा पिंगळनी मर्यादा उपर रह छे. ते सरस्वतिनुं प्रमाण मोटुं छे. अर्थात् शब्द सागर अथवा शब्द ब्रह्म अपार छे. तेना पारने कोइ पामतुं नथी. ते सरस्वतिनुं सुंदर रूप छे. जेने जोइनेहैयुं हरखे छे. एवां सरस्वति छे. ॥

अर्थ चोथो. विष्णु विषे. विष्णुमां शृंगारादिक बधा नवे रस भरेला छे. तेथी सदा ते पूर्ण रहे छे. अर्थात् पूर्ण काम कहेवाय छे. जेना समीपमां

हित एटले कल्याणकारी रंगन एटले रंजन करनार गंभीर शब्दो छे; जेणे अग एटले पर्वतने न डुबवा दीधा, अर्थात् पर्वतोने तारीने पाज बांधी, एवा जेनो पात्र एटले पग जगतमां प्रसिद्ध छे. अर्थात् जे पगले त्रैलोक्य भरी लीधुं. अने मुनियोने मेळवीने तेनी आगळ मर्यादाथी एटले नम्रताथी उभा रहे छे. जेनुं प्रमाण मोटुं छे. अर्थात् वैराट रूपछे. तेनो कोइ पार पामतुं नथी. जेनुं रूप रम एटले सर्वत्र रमण करनार अने निय एटले नियंतापणुं धरावे छे. ते विषे नजर पहोचाडतां हैयुं थरथरी जाय छे. अर्थात् अकळित छे. एवा लक्ष्मीना पति विष्नु छे. ॥

अर्थ पांचमो. रस सागर विषे. प्रवीण कहे छे के रस सागर केवाछे, तो (कल) चोसठ कळा सहित छे, अने रस एटले प्रीतिथी भरेला छे. अने नेहनगर नामना पूरमां सदाय रहे छे. जेना समीपे तरंग एटले कविताना तर्क सहित गंभीर शब्दो उचराय छे. अवगुणने ढांकनारा छे.अर्थात् अमारा अवगुण सामुं जोता नथी. जेनी पदवी जगतमां प्रसिद्ध छे. स्नेही साथे मन मेळवनारा छे. ने मर्याद एटले अदबमां रहे छे. पृथुला एटले जेनी पृथ्वीनुं प्रमाण एवुं छे के तेनो कोइ पार पामतुं नथी. अर्थात् जेनुं मोटुं राज्य छे. जेनुं स्वरूप सुंदर छे ते जोइने हैयुं हरखे छे. एवा रससागर छे ॥

अर्थ छठ्ठो. वर्षाद विषे. वर्षादमां सघळुं पाणी भरेलुं छे. तेथी निरंतर पूर्ण रहे छे. जळना तरंग सहित छे. जेना समीपमां गंभीर शब्द थाय छे. अर्थात् गर्जना थाय छे. अग्निने डुबावनार अर्थात् शांत करनारछे. जगतमां पवित्र करनार प्रसिद्ध छे. अथवा जगत जेने प्रसिद्ध रीते मानेछे मन इच्छित् सर्व वस्तुने मेळवी आपनार छे. अने मर्यादाथी आकाशमां ठरी रहे छे, जेनुं मोटुं प्रमाण छे. तेनो कोइ पार पामतुं नथी. जेनुं स्वरूप

सुंदर छे. ते जोइने हैयुं हर्ष पामे छे. एवो वर्षाद छे ॥

अर्थ सातमो समुद्रनी लहेरो विषे. समुद्रनी लहेरोमां सर्व जळ भरेलुं छे. तेथी हमेशां पूर एटले भरती ओटमां सदाय रहे छे अने तरंगिनि एटले नदियोये सहित छे. तेथी जेना समीपमां गंभीर शब्द थाय छे. पर्वतोने डुबावी देछे. अने जगतमां पवित्र प्रसिद्ध छे. अने कौस्तुभ मणि आदिक मणियोने मेळवी आपनार. पोतानी मर्यादामां एटले हदमां रहे छे. जेना विस्तारनुं प्रमाण मोटुं छे. तेना पार एटले किनाराने कोइ पामतुं नथी अर्थात् सामा पारने कोइ पामतुं नथी. जेनुं सुंदर रूप छे. ते जोइने हृदय कंपी जाय छे. ए रीते आ कवितमां जेनुं वर्णन कर्युं, ए ते इंद्रनी सभा छे? किंवा शंकर छे? किंवा सरस्वति छे? किंवा लक्ष्मीपतिछे? किंवा रस सागर छे? किंवा वर्षाद छे? किंवा समुद्रनी लहेरो छे? ॥६॥

॥ अथ द्व्यार्थ रस सागरोक्त श्लेष भेद ॥ सवैया ॥

राजतहे सब भूषन संजुत, भाल शशी गउरी छबि पावे ॥ किन्नरनी, बरुनी, सुप्रभा, अरु जच्छनि लच्छ गुनी बनि आवे ॥ प्रेम लता तरुनी रस रंजित, गुंजित भ्रंग बिलोकत भावे नीको सबे कइलास कहेपें, हमें सु बिलास प्रबीन सुहावे ॥ ७ ॥

अर्थ पहेलो. कैलास पर्वत विषे. सागर कहे छे के जे कैलासमां सर्व आभूषण सहित कपाळमां चंद्र धरनार शंकर बिराजे छे. अने पार्वतीजी रहे जे कैलास शोभा पामे छे, अने ज्यां किन्नरनी स्त्रियो तथा वरुणनी स्त्रि तथा सुप्रभा नामनी कुबेरनी स्त्रि, तथा बीजा यक्षनी स्त्रियो, लाखो गुणवान बनी आवे छे. वळी जे कैलासमां प्रेम उपजावे एवी तरुण लताओ सुगंधना रसथी रंगाएली छे. तेनी आसपास भमरा गुंजारव करेछे.

ते जोतां मनने गमे छे, एवो कैलास छे ॥

अर्थ बीजो. प्रवीणना विलास विषे. जे प्रवीण सर्व आभूषण सहित शोभे छे. जेना कपाळमां चांदलो छे. अथवा जेनुं कपाळ चंद्र जेवुं छे.अने ते गौरवर्णनी, शोभा पामे छे. किन्नरनी स्त्री तथा वरूणनी स्त्रीना करतां पण जेनी प्रभा एटले कांति सारी छे. अने यक्षनी स्त्रीथी लाख गणी शोभित बनीने आवे छे. ते तरूणी प्रेमनी लता जेवी छे. अने प्रेमना रसमां रंगायेली छे. जेनी आसपास भमरा गुंजारव करे छे. ते जोतां मनने गमे एवी प्रवीण छे. सर्व लोको कैलासने सारो कहे छे पण मने तो प्रवीणनो सारो विलास शोभित लागे छे ॥ ७ ॥

॥ अथ श्लेष भेद अलंकार ॥ कवित ॥

सुवरन देह छबी, ठोर ठोरपें जराव, मोहन अशेष कांति केसव रचतहे॥ सबही समीप जन, रहत सदाही रीझे, नयन बिकास श्री कमोद मोद रतहे॥ चरचा बिचित्र चत्र सुखसें लगी रहंत, धरत अखंड ध्यान आनंद अनंतहे ॥ सब जग जैसें बइकुंठकुं सराहतहे, हम त्यों हमेस बइ कंठकों चहतहे ॥८॥ इति द्वयार्थ ॥

अर्थ.पहेलो वैकुंठ धाम विषे.सागर कहे छे के वैकुंठ धाम केवुं छे,तो ज्यां सोनुं अथवा सारो रंग शोभा दे छे. अने ठेकाणे ठेकाणे जवाहिर छे. अने ज्यां केशव एटले विष्णु, मोह पमाडे, एवी अपार कांतिनी रचना करे छे, अने सर्वे जनो निरंतर तेना पासे रीझीने रहे छे. अने ज्यां लक्ष्मी नजर पसारीने क मोद एटले उदासीवाळाने आनंद देवामां प्रीतियुक्त रहे छे. ब्रह्माना चारे मुखथी विचित्र प्रकारनी चर्चा ज्यां लागी रहे छे.ज्यां अनंत एटले शेषनाग ध्यान धरे छे, ने आनंद पामे छे. एवुं वैकुंठ छे॥

अर्थ बीजो. प्रवीण विषे. जे प्रवीणना देहनी छबी सोना जेवी छे. तेना शरीर उपर ठेकाणे ठेकाणे जडाव भूषण छे. व एटले ते पोताना केशनी एटले चोटलानी कांति मोह पमाडे एवी रचे छे. तेनी पासे रहेनारां सखिजन आदिक जोइने सदा रीझी रहे छे, अने तेनां नेत्रना खीलवानी श्री एटले शोभाथी कुमोदनीने पण आनंद रहे छे. ते चतुर स्त्रीना मुखथी विचित्र प्रकारनी चर्चा लागीज रहे छे, तेनुं हुं अखंड ध्यान धरुं छुं. तेथी मने अपार आनंद थाय छे सर्वे लोको जेम पहेला अर्थमां कहेला वैकुंठने वखाणे छे. तेम अमे तो निरंतर ते प्रवीणना कंठने चाहिये छिये ॥ ८ ॥

॥ अथ त्रयार्थ श्लेष भेद ॥ कवित ॥

प्रवल प्रकास आस, पूरन उदासी हरे, लोयन लगायसें अमीर होत दीन ज्यु॥ तोलहु न कियो जाय, अतिहि अमोल यह, अरथ उपावत अनेक भेद भीन ज्यु ॥ दुषन रहित सब भूषन सजात गात, छाजत समीप सब सुभ छवि लीन ज्यु ॥ अमल अशेष रेख रूपकीसी राजतहे, सारदाकी कला, कींधौं पारस, प्रवीन ज्यु ॥९॥

अर्थ पहेलो. सरस्वतिनी कळा एटले कविता विषे. सारदानी कळा केवी छे, तो जेनो प्रकाश बळवान छे. आशाने पूर्ण करनारी ने उदासपणाने हरनारी छे दृष्टि लगाडवाथी दीन होय ते अमीर बनी जाय छे. ते एवी अतिशे अमुल्य छे के तेनी साथे कोइनी तुलना करी जाय नहि. अने जूदा जूदा अनेक भेदमांथी अनेक अर्थ उपजे छे. दोष रहित छे. अने सर्व अलंकार तेने अंगे सजाय छे सारी शोभा जेओए लीधी होय, एवा सज्जनोनी पासे ते शोभे छे. अने निर्मळ कांइ बाकी नहि एवा रूपनी रेखा

जेवी ते शोभे छे. एवी सरस्वतिनी कळा एटले कविता छे ॥

अर्थ बीजो. पारसमणि विषे. पारसमणि केवो छे, तो जेनो प्रकाश जोरावर छे. आशाने पूरण करेछे ने उदासीने हरे छे. तेनी साथे लोढाने लगाडवाथी दीन होय ते अमीर थइ जाय, ते अतिशे अमुल्य छे. अने तेनुं वजन करी शकातुं नथी. अनेक भेद एटले प्रकारनां जूदां जूदां द्रव्य उपजावे छे, एनाथी दुःख रहित थवाय, अने शरीरनी सर्व प्रकारनी भूख नाशी जाय, अने ते जेनी पासे होय, ते एवो शोभे छे के जाणे सर्व शोभा तेणेज लीधी छे. कांइ बाकी नाहि. एटलो अमल एटले हुकमनो आपनारो छे. अने रूपनी रेखा जेवी शोभे, तेवो ते शोभे छे. एवो पारस मणि छे ॥

अर्थ त्रीजो. प्रवीण विषे. प्रवीण केवां छे तो जेना (आस्य) एटले मुखनो प्रकाश प्रबळ छे. पूर्ण कहेतां वर्तूळाकार छे. अने उदासीने हरे छे. अने तेनी साथे नेत्र लगाडवाथी (अमिल) मारा जेवा वियोगी दीन थइ जाय छे. ते अतिशे अमुल्य छे. तेनी तुलना कोइ साथे कही जाय नहि. अनेक प्रकारना जूदा जूदा अर्थोने उपजावे छे. दूषण रहित् छे. ने सर्व अंगे आभूषण सजे छे. अने जेओये सारी शोभा लीधी छे. एवीज सखियो तेनी पासे शोभे छे. निर्मळ छे. अने कांइ बाकी नाहि. एवा रूपनी रेखा जेवी शोभे छे. ए ते सारदानी कळा एटले कविता ? किंवा पारसमणि? किंवा कळाप्रवीण छे? ॥९॥

॥ अथ पंचार्थ श्लेष ॥कवित॥

अगम अपार पंथ, निगम न पावतहे, सोधत सरुप मंत्र,
मुनि ध्यान धरि धरि॥ तपनीय तेज छबि, विपन विराजतहे, सरता मिलाप होत, अंबकन झरि झरि ॥ गुनी गीत

गावतहे अच्छर अनेक भेद, सरन सुभाव देखीयत हंस थ-रि थरि॥ समर प्रहार कारी, शाम तन सोहतहे, प्रान चढ्यो प्रेम, के प्रवीन, हेमागिरि परि॥ १०॥

अर्थ पहेलो. महादेव विषे. महादेवजी केवा छे, तो जेनो मार्ग आगम एटले शास्त्रने तो अपार लागे छे. अने वेद पण पामी शकता नथी. मुनियो मंत्र जपी ध्यान धरी धरीने तेना स्वरुपने शोधे छे. जेनी छबि तपस्वीना जेवी अने तेजस्वी छे, अने जे वनमां बिराजे छे. जेना उपर स्वर्गमांथी जळना कण झरी झरीने गंगाजीनो मेळाप थाय छे. अने अक्षर एटले मुक्त पुरुषो अनेक भेदथी जेना गुणनां गीत गाय छे. शरणागत उपर सारो भाव राखनारा छे. तेने परमहंसो स्थिर थइ थइने निरखे छे. अर्थात् समाधि करीने, एवा शंकर कामदेवने मारनारा छे ॥

अर्थ बीजो. श्रीकृष्न विषे. कृष्न केवा छे तो [illegible] स्वरूप अगम्य एटले जाणी शकाय नहि एवुं छे. अने शट दर्शनादिक [illegible]ना अनेक पंथ छे. ते पंथवाळा जेओने गम नथी, तेओ तेने पामी शक[illegible] नथी. ऋषियो मंत्र एटले गुप्त विचारथी ध्यान धरी धरीने तेना स्वरूपने [illegible]धे छे. जेनी छबिनुं तेज तपवडे नियं एटले पामी शकाय, एवा छे. वृंद्रावनमां बिराजेछे अने सु(रता) एटले तेने विषे सारी पेठे आसक्त थयेली गोपियोने आंखेथी आंसु झरी झरीने तेनो मेळाप थयो. अर्थात् [illegible] लीलामां गोपियोने घणी रोनरावीने मेळाप कर्यो. अक्षर एटले स्वर तथा व्यंजनादिकना अनेक भेदथी तेना गुणनुं गान कराय छे. अने शरणागत गोपियोना भावने तेओना आत्माने थरथरावीने जुए छे. एवा शाम शरीरवाळा कृष्ण शोभेछे.

अर्थ त्रीजो. प्राण उपर चडेला प्रेम विषे. प्रेम केवो छे, तो तेनो रस्तो अगम्य एटले जाणी शकाय एवो नथी. ने अपार छे. तेने अज्ञानी

पामता नथी, तेना स्वरूपने प्रेमी मनमां ध्यान धरी धरीने गुप्त विचारथी शोधे छे. ते प्रेमनी छबीनुं तेज जीवने तपावे एवुं छे. तेथी तेनुं वपु एटले शरीर शोभे नहि. एवुं थइ जाय छे. आंखेथी आंसु झरीझरीने सुरता एटले मनोवृत्तिथी मेळाप थाय छे, अक्षरना अनेक भेदथी मित्रना गुणनां गीत गाय छे, ते प्रेमनो भाव बाण जेवो देखीने आत्मा थरथरे छे, एवो प्राण उपर चहेलो प्रेम छे ॥

अर्थ चोथो. प्रवीण विषे. प्रवीण केवां छे, तो तेने मळवानो रस्तो जाणी शकाय नहिं, एवो तथा अपार छे. ते अजाण्या पामता नथी. ते मित्रनुं मनमां ध्यान धरी धरीने तेना स्वरूपने शोधिये छिये. तेना वपु एटले शरीरनी छबिनुं तेज सोना जेवुं शोभे छे. मारी आंखे आंसु झरी झरीने मारी सुरतावडे तेनो मेळाप थाय छे. अछल एटले निष्कपट पणे अनेक भेदथी अमे तेना गुणनां गीत गाइए छिये, अने ते प्रवीणना चालवाना सारा भावने हंसो स्थिर थइ थइने जुए छे एवां प्रवीण छे ॥

अर्थ पांचमो. मेरु पर्वत विषे. मेरु केवो छे, तो जेना उपर जवानो मार्ग जाणी शकाय नहि एवो, अने अपार छे. ते अजाण्या पामता नथी. जेना उपर मुनिजनो मंत्र जपी जपीने ध्यान धरी धरीने आत्मस्वरूपने शोधे छे. ते मेरु सोनानो छे. अने तेनी छबि तेजस्वी छे. तेना उपर घणां क वन शोभे छे. तेना उपरथी जळना कण झरीझरीने ते मळीने नदियो थाय छे. त्यां शिवना गण अने अप्सराओ अनेक भेदथी गात गाय छे. अने ते पर्वतना निवासियो स्थिर थइ थइने (हंस) सूरजनी गतिनो भाव जुए छे. आ कवितमां जेनुं वर्णन कर्युं छे ते शंकर ? किंवा श्रीकृष्ण छे ? किंवा प्रेम छे ? के कळाप्रवीण छे ? किंवा मेरुनो उपल्यो भाग एटले शिखर छे ॥१०॥

॥ श्लेषालंकार ॥ दोहा ॥

समज सर हिया जब दियो, अंतरको पट खोल ॥
अहो प्रविन तब तोल कर, कह सीसनको मोल ॥ ११ ॥

अर्थ पहेलो. अहो चतुर सरैया, तुं समज के ज्यारे तें अत्तरनी शीशीनो पडदो खुल्लो करी दीधो. त्यारे हवे तेनो तोल कर? अथवा आखी शीशीनुं मूल कहे ?

अर्थ बीजो. अहो प्रवीण तमे समजो के ज्यारे तमे हैयामां प्रेमनुं बाण मारी दीधुं, अने अंतरनो पडदो खुल्लो कर्यो. त्यारे तोल करो, अर्थात् विचार करो के हवे माथानी किंमत ते शी छे ?

भावार्थ के मित्रने मळवा जतां माथुं जाय तो ते शा लेखामां छे? ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

एसे भेद अनंत, श्लेष उकति दंपति कहे ॥
पूरन प्रेम बढंत, भइ सु दशा अब बरनिये ॥ १२ ॥

अर्थ. एवी रीते अनंत भेदो श्लेषनी उक्तिथी स्त्रीपुरुषे कह्या. तेथी संपूर्ण प्रेम वधी जतां जे दशा थइ, ते हवे वर्णवुंछुं. ॥ १२ ॥

सागर द्योस किलेक, बिछुहा भये बिरहा बढे ॥
लाय एक उर टेक, प्रेम ग्यान पहिचान किय ॥ १३ ॥

अर्थ. रससागरने केटलाएक दिवसोनो वियोग थवाथी विरह वध्यो एटले हृदयमां एकज टेक धारीने प्रेमना ज्ञाननी ओळखाण करी. ॥ १३ ॥

॥ अथ सागर पूरन प्रेम दशा बरनन ॥ छंद मुक्तदाम ॥

भयो परिपूरन प्रेम प्रकास ॥ लयो उर अंतर न्याव उदास ॥ जग्यो मन मध्य अखंडित बोध ॥ लग्यो परिब्रह्म कला मन सोध ॥ सबे जगकी थितकों अनुमान ॥ प्रमानत ज्यों प्रति-

बिंब विधान ॥ नही थिर जानलियो परिनाम ॥ चहे मन सोध अखंडित धाम ॥ कहे यह प्रानहुसें उपदेश ॥ करे दुख द्वंद्व कहा परवेश ॥ दिनांभर काटत आयुष काल ॥ न छूटत काहे महातम जाल ॥ रह्यो बहुकाल रम्यो रजधान ॥ अबे कर हीमतको अवसान॥ तजो सब मोह मृषा मद तोर॥ महा सुखको मिलहे तब ठोर॥ किते दिनलों वह बात बिचार॥ कियो मन मध्य मतो निरधार ॥१४॥

अर्थ. परिपूर्ण प्रेमनो प्रकाश थयो, तेथी हृदयमां उदासीभाव धारण कर्यो, ने मन परिब्रह्मनी कळा शोधवा लाग्युं, जेथी मनमां अखंडित ज्ञान जागृत थयुं, एटले पछी सघळा जगतनी स्थितिनुं अनुमान करीने तेने (प्रतिबिंब) प्रतिरूपना विधाननी पेठे मिथ्या जेवुं प्रमाणवा लाग्या, (परिणामे) अंते आ जगत तथा पदार्थो स्थिर नथी. एम जाणी लीधुं. पछी मनमां अखंडधाम शोधवाने चाहेछे, ने पोताना आत्माने आ प्रमाणे उपदेश कहेछे, अरे हे जीव? तुं आ दुःख सुखना द्वंद्वमां शुं करवा प्रवेश करेछे, काळ आखो दिवस आयुष्यने काप्या करेछे, तोय मोटा अज्ञाननी जाळमांथी केम छूटतो नथी ? घणाकाळ सुधी रह्यो, ने राजधानीमां रजोगुणना आनंदथी रम्यो, पण हवे हिंमत करवानो (अवसान) छेवटनो समय छे, माटे हिंमत कर, ने मोह असत्य तथा मदनो सघळो तोर तजी दे. एवी स्थितिने धारीश, त्यारे अंते मोटा सुखनुं स्थानक मळशे. एवी रीते केटलाएक दिवस पर्यंत आ वात विचारीने सागरे पोताना मनमां त्याग करवानो मत धार्यो॥१४॥

॥ सोरठा ॥

तज्यो चहे सुख साज, सागर मन सोधत रहे ॥
बूझे प्रति महाराज, मित परखित बदलित दशा ॥१५॥

अर्थ. सुख सामग्री तजवानी चाहनाथी सागर पोताना मनमां शोध्या करेछे, एवा समयमां बदली गयेली दशा परखीने मित्रो महाराजा प्रत्ये आ प्रमाणे पूछवा लाग्या. ॥१५॥

एसी कबे न होय, कोन दशा लीनी तुमें ॥
आप बतावे सोय, महाराज कीजे कृपा ॥१६॥

अर्थ आवी क्यारेय थती नथी, एवी कई दशाने तमे लीधीछे? हे महाराज कृपा करीने ते आप बतावो. ॥१६॥

॥ चोपाइ ॥

महाराज प्रेम मन जग्गे॥ बानी बदन मिंत प्रति लग्गे ॥ गोप कीन निज दशा कहावे॥ अहो मिंत एसी चित आवे॥ निज प्रतिष्ठ शिव थानक जैहे॥ परसत परम उदास मिटैहे॥ बहु दिन भये दरस नहि पाया॥ यह तुम भाव उदास लखाया॥ सबहि कह्या महाराज सिधावे॥ हुकम वेग वाहनी कहावे॥ सागर तब आज्ञाधर आखी ॥ आयसधर प्रतना प्रति भाखी ॥ महाराज आखेटक धारी॥ कियो हुकुम छोटी असवारी ॥१७॥

अर्थ. एवुं सांभळीने महाराजाना मनमां प्रेम जाग्यो, एटले पछी मित्रो प्रत्ये वात कहेवा लाग्या, अने पोताने उपजेली दशा गुप्त करीने कहेछे के हे मित्रो मारा चित्तमां एवुं आवेछे के, जेनी आपणेज प्रतिष्ठा करीछे, एवा महादेव ज्यां छे, ते आपणा स्थानक प्रत्ये जइए ने त्यां परमेश्वरनो स्पर्श करवाथी उदासी मटशे, घणाक दिवसो थया दर्शन पाम्या नथी, तेथी तमोने आ उदासी भाव जोवामां आव्यो, त्यारे सघळा मित्रोए कह्युं के म-

हाराजा आपनी इच्छा होय तो सधाविये. अने जलदी सेनाने हुकम केहेवराविये एवां वचन कह्यां, त्यारे सागरे (आज्ञाधरने) चोपदारने कह्युं, ने चोपदारे सेनाप्रत्ये कह्युं, के महाराजे शिकारे जवा धार्युं छे. माटे छोटी स्वारी चडवानो हुकम कर्यो छे. ॥१७॥

॥ दोहा ॥

आयसधर आखिय चमुं, सासन वत माहाराज ॥
पय सबीर फंदन सिबिक, लगे बाज गज साज ॥१८॥

अर्थ. महाराजानी आज्ञा प्रमाणे चोपदारे सर्व फोजने कह्युं तेथी, पायदल, डेरा, तंबु, रथ, पालखी, घोडा तथा हाथी विगेरेने सजवा लाग्या. १८

॥ छपय ॥

आखेटक माहाराज, चमू चढ्ढन फुरमाये ॥
आयस मनि उमराओ, राजद्वारहि चढि आये ॥
रससागर गज चढिय, सबे जन सलाम निज लिय ॥
बजि निशान गुनि बिरद, पढत पुर बहिर निकसिय॥
केते अमात उमराओ सुत, हय गय फंदन पय चलिय ॥
सामान संग आखेट सह, पशु पंछी बेधक सु लिय ॥१९॥

अर्थ. शिकार वास्ते महाराजाए सेनाने चडवानुं फरमाव्युं, ते हुकम मानीने अमीर उमरावो राजद्वार प्रत्ये चडी आव्या, त्यारे रससागरे हाथी उपर चडीने सघळा लोकोनी सलाम पोते लीधी, ने वागतां नगारां निशान तथा बंदीजनोना भणवानी साथे शहेर बहार नीकळ्या. त्यारे केटलाक प्रधानोना अने अमीर उमरावोना पुत्रो तथा घोडा, हाथी, रथ, अने पायदळ ए सघळुं चालवा लाग्युं. एटलुंज नहीं, पण शिकारमां उपयोग आवे एवा सामान समेत शिकारी पशु, पंखी, तथा पारधिओने पण

साथे लीधा. ॥१९॥

॥ दोहा ॥

सागर जुत सामान यह, निकसे नगर बहीर ॥
जोजन चलि निज निज मिसल, किय सबीर सर तीर॥२०॥

अर्थ, एटलो सामान लेईने सागर समेत सेना नगर बहार नीकळी, ते एक योजन चालीने पोते पोतानी मिसल मुजब तळावने किनारे डेरा तंबु नखावीने उतरी. ॥२०॥

॥ छंद कुरंग ॥

आपके समान ऊमरावके कुमार ॥ सो सबेय साथ लीन सागरं सिकार॥ ताल तीरसें सबीर प्रात कूच कीन ॥ नेनरंग सेनदाह थान पंथ लीन॥पांचसें सिलेत हे ढलेत सो पचास॥ साधितं सिकारकों उजार आसपास ॥ रेनमें अरन्यमें करंतहे मुकाम ॥ होतहे अनेक राग रंग धूमधाम ॥ सेन पंच सातही सहस्रहे समग्र ॥ नेनरंग नीठ लेत पीठ नेहनग्र ॥ कोस द्वादशं दशं सपंत ईस थान॥ बाहिरं मुकाम आप ऊतरे उदान ॥ २१ ॥

अर्थ, पोता जेवडा सरखे सरखा उमरावोना सघळा कुमारोने शिकारे जवामां साथे लेईने सवारमांज महाराजा रससागरे तळावना किनाराना तंबुआंथी कुच करीने नेन तरंग नामना शिवना स्थानकनो पंथ लीधो, पांचसें भालावाळा तथा सो पचाशेक ढालवाळा छे, ते समेत आसपासनी उजाडमां शिकार खेलता आवे छे रात्री पडे छे एटले अरण्यमांज मुकाम करे छे, त्यां अनेक प्रकारना राग रंगनी धामधूम थायछे. वधु मळीने पांचसात हजार सेन छे, ते सघळुं नेनतरंगने नजीक लेतुं आवे छे, अने

नेह नगरने पाछळ मेलतुं आवेछे, एवी रीते दशबार दिवसे शंकरने स्थानके पहोंच्या, एटले सेनानुं बहार मुकाम करावीने आप बगीचामां जई उतर्या. ॥ २१ ॥

॥ सोरठा ॥

उपवन गिरद मुकाम, हय गय पय प्रतना परिय ॥
सागर कृत शिव धाम, ईश बंदि अवमोचाकिय ॥ २२ ॥

अर्थ.उपवनने घेरीने चोतरफ घोडा,हाथी,पायदळ, वगेरे सेना मुकाम करीने पडी, अने सागरे पण पोताना बनावेला देवालयमां जई ईश्वरने वंदन करीने उतारो कर्यो. ॥२२॥

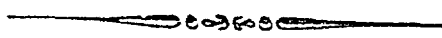
॥ गाहा ॥

श्लेषालंकृत भेदं,सागर शिवह थान आवन बिधि ॥
षट षष्ठी अभिधानं, पूर्न प्रबिन सागरो लहरं ॥ २३॥

अर्थ. श्लेषालंकारना भेदो तथा सागर शिवना स्थानक प्रत्ये आव्या. ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ छासठमी लहेर संपूर्ण थई. ॥२३॥

॥ इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे श्लेष भेद सागर शिवथान पयानो नाम षटषष्ठितमो लहरं ॥ ६६ ॥

इतिश्री प्रविणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां षट्षष्ठितम स्तरंग: समाप्तः ॥६६॥



॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध छंद ॥ हरिगीत ॥

ज्यां वाग नेन तरंगनो त्यां, सज्जनो साते मळी ॥
कहि रीत प्रेम प्रकाशनी, संसार तजवानुं वळी ॥
शिक्षा कही मनने निर्धीये, डोलतुं मन दृढ कर्युं ॥

सडसठ्ठमी आ लहेरमां, वृत्तांत एछे उच्चर्युं ॥

॥ अथ रस सागर मित चरचा प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

वाग महल महराज ज्यु, राजत रेन समाज ॥
राग रंग खूबी खुशि, होत सबे सुख साज ॥ १ ॥

अर्थ. रात्रीए वागनी अंदरना मेहेलमां सभा सहित महाराज बिराज्या ने त्यां रागरंगनी खुबीथी खुशी तथा सघळी सुखरूप सामग्रीओ थायछे.॥१॥

निशि बीती बीत्यो अहर, दूजी निश दरसात ॥
सोधी इकंत सात मित, करन लगे निज बात ॥२॥

अर्थ. एवीरीते एक रात तथा एक दिवस वित्यो, ने बीजी रात्रि देखातां साते मित्रो एकांत शोधीने पोतानी वातो करवा लाग्या. ॥२॥

॥ चोपाई ॥

चरचा मित चलत निज वानी, गानकला गावत गुन ज्ञानी॥ एते मध्य मेघ चढि आयो, गहरे घोष गगन गरजायो॥ दामनि दमकि बुंद झर मंडिय, गिरवर शिखर नहर झर छंडिय ॥ दादुर मोर सोर उच्चारिय, जामनि बहत जाम जुग कारिय॥ सुरापान पीवन सब लागे, महाराज प्रेम मन जागे॥ मित प्रकाश करन मन ठानी, बोलन लगे प्रानप्रति वानी॥३॥

अर्थ. पोतपोतानी सुंदर वाणीथी मित्रोनी परस्पर चर्चा चालतां गुणना ज्ञानवाळा अर्थात् गुणीजनो गान कळाथी गायछे, एटली वारमां तो मेघ चढी आव्यो, ने तेणे गंभीर अवाजथी आकाशने गजावी मुक्युं, विजळीयोना सळावा तथा जळना विंदुनी झडी मंडाणी, पहाडोना शिखरो उपरथी नेहेरोमांथी झरणां छूट्यां, देडकां तथा मोर सोर करवा लाग्या, ए समये वे पहोर रात्रि जवाथी सघळा मित्रो साथे मळीने सुरापान

करवा लाग्या, ने महाराजाना मनमां प्रेम जागृत थयो, ते मित्रोनी पासे प्रकाश करवानुं मनमां धारीने पोताना प्राण (जीव) प्रत्ये आ प्रमाणे वाणी बोलवा लाग्या॥३॥

॥ अथ सागरोक्त मन द्रढाव अन्योक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

मानि नही बरजी सु तबे, यह लच्छ सबे अब जान परेगो॥
एकहि टेक गही सु गही, अबके ज्यु रही तो अचूक गिरेगो॥
भैरव ध्यान बिधान यहे, दोउ ओर सियार दरार करेगो ॥
अग्र चढयो सब नग्र निहारत, क्यौं बदनाम नयो उतरेगो॥४॥

अर्थ. भेरवजप खावाने शिखर उपर चडेला कोइएक पुरुषने कहे छे के--ज्यारे तने लोकोये चढतां वार्यो त्यारे तें वात मानी नहीं, पण हवे लक्ष एटले विचारवाथी बधुं जाणवामां आवशे, अने तें जे एक टेक पकडी ते पकडी पण हजी जो ते टेकमां रहीश, तो जरूर भेरवजपमां पडीश, आ तें धारेलुं ध्यांन, तथा करवा मांडेली रीत भयंकर छे, हवे तने बन्ने तरफथी शियाळीयां (दडाव) गबडावी पाडवानुं करशे, तुं छेक टोचे चड्योछे ते आखुं शहेर जुए छे, हवे बदनाम थइने शी रीते उतरीश? मतलब के सागर पोताना जीवने समजावेछे के संसार त्याग करवारूपी भेरवजप खावाने तैयार थयो, ते वात लोकोये जाणी छे, माटे हवे शी रीते पाछो फरी शकीश.॥४॥

॥ अथ अनुमानालंकार ॥ सवैया॥

बेधकसे निरदे हिरदे, कह फेर समारत नां सर दे ॥
आजहुतें अनुमानतहे, इन प्याला पिया सो हमें नरदे ॥
प्रेमके सिंधु बुडावे प्रवीन, छुडावे कहा करमें कर दे ॥
खेलको जात अबेको समो, अजहु कह मित रमो परदे॥५॥

अर्थ. सागर प्रवीणनुं स्मरण करीने कहेछे के--कसाइ जेवा निर्दय हृदयवाळा पण बाण मारीने शुं फरीथी तेनी संभाळ लेता नथी? मतलब वो लेछे, तेम छतां तमे आजसुधी हजी अमारा विषे शुं अनुमान करो छो, तमे जे प्यालो पीधो छे, ते अमने पण भरी द्यो, मतलब के तमारो जे विचार होय ते अमने कहो, अने हे प्रवीण आ प्रेमना समुद्रमां अमने डुबाडशो के, हाथमां हाथ दइने छोडावशो? हालनो समो खेलवानो जाय छे, तो पण हे मित्र हजी सुधी पडदे शुं रमो छो? ॥५॥

॥ दोहा॥

मोर सोर घन घोर सुनि, दद्दर झिल्लि झिंगोर ॥
मित सुनाय चितकी उकति, बोलन लगे बहोर ॥ ६ ॥

अर्थ. मोरोना सोर, मेघनी गर्जना, देडकां तथा तमरांना अवाज, सांभळीने महाराजा रस सागर पोताना चित्तनी उक्ति मित्रोने संभळाववा सारुं वळी बोलवा लाग्या.॥६॥

चढी आइ कारी घटा, घोर मोर सुर कीन;
पहु दिश बोले चातुकी, चाहत चिंत प्रबीन ॥७॥

अर्थ. सागर कहेछे के आ समे वर्षादनी काळी घोर घटाओ चढी आवीछे, मोरो भयंकर टौका करे छे, अने चोतरफ बपैयानी मादा बोले छे तेथी मारुं चित्त प्रवीणने चाहे छे.॥७॥

॥ अथ यथा संख्या तथा विकल्पालंकार सवैया ॥

नीरज धीरज तुं धररे, इत आवरे कोक पयान करेंगे ॥ चातुक, मोर, चकोर, सबे मिलि, जाय मुरारिके पाय परेंगे ॥ प्यारे प्रवीन दिनेश, घटा, शशि, रीझहितो द्रग तें न टरेंगे ॥ अंक इतेपर जो उलटे तो, सबें मिलि, एकहि बेर

मरेंगे ॥ ८ ॥

अर्थ. सागर कहेछे के सूर्यना वियोगी, हे कमळ? तुं धीरज धर, अने हे चकवा? तुं आंहीं आव्य.एटले आपणे परियाण करशुं. वर्षादनो वियोगी बपैयो,तथा मोर अने चंद्रनो वियोगी चकोर,ए सर्व मळीने आपणे जइने विष्नुने पगे पडशुं. एटले जो ते प्रभु रीझशे, तो मारी नजरेथी प्यारी प्रवीण, कमळ तथा चकवानी नजरथी सूर्य, अने बपैया तथा मोरनी नजरेथी वर्षादनी घटा, अने चकोरनी नजरेथी चंद्र टळशेज नहीं. तेमछतां जो नशीबना आंक अवळा पडशे, तो आपणे सर्व मळीने एक वखतेज मरशुं.॥८॥

॥ सोरठा ॥

मन सिच्छा महाराज, कही सुनाई मिंत प्रति ॥
मतो प्रकासन काज, प्रगट प्रेम पूरन दशा ॥ ९ ॥

अर्थ. प्रगट थएला प्रेमनी पुर्ण दशानो मत प्रकाश करवा माटे महाराजाए पोताना मनने दीधेली शिक्षा मित्रो प्रत्ये कही संभळावी.॥९॥

सुनी मींत यह बान, कहन लगे महाराज प्रति ॥
आज दरासियत आन, दशा न निज जानी परे ॥१०॥

अर्थ. ते वाणी सांभळीने मित्रो महाराज पत्ये कहेवा लाग्या के आज आपनी जुदीज (दशा) हालत दर्शायछे ते जाणवामां आवती नथी.॥१०॥

॥ दोहा ॥

पुनि बूझत माहाराज प्रति, मींत उभे कर जोर ॥
सागर चित चाहत तुमे, कहो कहंत निहोर ॥११॥

अर्थ. वळी पाछा मित्रो बन्ने हाथ जोडीने महाराजा प्रत्ये पुछवा लाग्या के हे सागर? तमो जे करवाने चित्तमां चाहाता हो ते स्नेह पूर्वक

विनति करिये छिये माटे कृपा करीने कही वतावो.॥११॥

॥ छंद दोधक ॥

बूझत फेरहि मिंत निहोरे, सागर चाहि जवंनिक छोरे ॥
आप वहोरि कहन्न सु लग्गे, प्रेम प्रकास हमे उर जग्गे ॥
अंतर मिंत हुसे कह रख्खे, एह उरं धरकें यह भख्खे॥ रा-
जहि साज चहे हम तज्जे, कौ तुम सोउ मतो न बरज्जे ॥
जो ब्रजनो तुम चिंत धरेगे, माननहार मने न मरेगे ॥
मिंत लही वरजीहु न माने, ओर सयान चले मृत ठाने ॥
क्यों वरजे मरनों न उपावे, हींमत श्री माहाराज द्रढावे ॥
सातहु संग चले यह ठानी, सागर प्रत्य बदे पुनि बानी॥१२॥

अर्थ. फरी पाछुं मित्रोए पुछवा मांड्युं त्यारे सागरे चाह्युं के हवे पडदो छोडी दइए, वळी पोते कहेवा लाग्या के मारा हृदयमां प्रेमनो प्रकाश जागृत थयो छे, अने तम जेवा मित्रोनी साथे अंतर शुं राखवो, एम हृदयमां धारीने ते वात हुं कहुंछुं, के हुं हवे राज तथा राज सामग्री तजवाने चाहुंछुं माटे कोई, ए मत प्रमाणे चालवानी मना करशो नहीं, अने जो वारवानुं तमो चित्तमां धारशो तोय माननार मानशे नहीं, ने मरशे. त्यारे मित्रोए जाण्युं के हवे वरजवुं मानशे नहीं, ने ज्यां मरवानुं ठराव्युंछे ते ठेकाणे आपणुं बीजुं शाणपणुं शुं चाले, माटे केवी रीते वारिये? के ते मोत उपजावे नहीं? हवे तो श्री महाराजाने हिंमत द्रढाविये, ने साते जण साथे चालिये,एम धारीने पछी सागर प्रत्ये आ प्रमाणे वाणी बोलवा लाग्या.१२.

॥ छपय ॥

भली कही माहाराज, आप एही विध ठाने ॥
चहे प्रेम उपदेश, मूक जन केसें जाने ॥

सकल म्रषा संसार, तृषा मृगजलकों धावे ॥
ठोर ठोर भटकंत, कहुं विश्राम न पावे ॥
सागर संन्यस लीजें दशा, हमें संग शिष धारियें
परिब्रह्म बोध सोधन प्रकृति, प्रेम नेम प्रति पारियें॥१३॥

अर्थ. हे महाराजा आपे घणीज सारी वात कही, आपणे एवीज रीत करिये, आ प्रेमना उपदेशने मुंगा (अज्ञानी) लोकों शी रीते जाणे जे आ सघळो संसार मिथ्या छे, तरस्यो होय ते झांझवाना पाणी वास्ते दोडे, ने ठेकाणे ठेकाणे भटके पण क्यांय विश्रांति पामे नहीं, माटे हे सागर संन्यास दशा धारण करो, अने अमने शिष्य बनावीने साथे ल्यो एटले परब्रह्मना ज्ञानने शोधवाना स्वभाववाळा थैने प्रेमना नियमनुं प्रतिपालन करिये. ॥१३॥

॥ सोरठा ॥

सागर कही सु तास, शिष्य भयो चाहत तुमे ॥
जो जिहि प्रेम प्रकास, लह्यो सु कहो सुनाय हम ॥१४॥

अर्थ. त्यारे सागरे तेओने कह्युं के जो तमो शिष्य थवाने चाहो छो, तो जेवो जेणे प्रेमनो प्रकाश लीधेलो होय ते मने संभळावीने कहो.॥१४॥

सदा सु सागर पास, रहत प्रेम जाने प्रकृति ॥
आप उकति वर आस, जन जन प्रति गाहा कहे ॥१५॥

अर्थ. तेओ निरंतर सागर पासे रहे छे, तेथी प्रेमना स्वभावने जाणे छे, जेथी पोताना सुंदर (आस्य) मुखनी उक्तिथी प्रत्येक जणे अकेकी गाहा (गीति) कही.॥१५॥

॥ अथ मित्रोक्त प्रेमसरूप वर्नन, समरूपक अलंकार ॥

॥ गाहा ॥

तन ओषधी समीहं, मन अभिलाष अंकुरित शाखा ॥
सुख फल फूल झुकंते, स्त्रवित सुधा प्रेम शशि धारा ॥१६॥

अर्थ. शरीर एक वृक्षरूपीछे, अने मन तथा अभिलाष रूप अंकुर तथा डाळो छे, तेमां सुखरूपी फळफुल झुकी रह्यां छे, ते उपर प्रेमरूपी चंद्रमा अमृतनी धारा स्त्रवे छे.॥१६॥

॥ समरूपक अलंकार ॥ गाहा ॥

सुख दुःख स्मृति समूहं, प्राणा शिष्ट क्लिष्ट परिणामी ॥
उर वीकल्प अनंतं, ज्वालावत प्रज्वलित प्रेमं ॥१७॥

अर्थ. सुखदुःख तथा स्मृतिना समुहथी प्राण (अशिष्ट) बाकी नहीं एवा क्लेशना परिणामवाळा छे, अने हृदय अनंत संकल्प विकल्पो करेछे. तेमां अग्निनी ज्वाळानी पेठे प्रेम प्रकाशे छे. ॥१७॥

उद्भिज्जह उत्पण्णे, जर सेदाण इंड चत्र खाणं ॥
प्राणा चख आकारं, तद सर्वेण तारिका प्रेमं ॥१८॥

अर्थ. उद्भिज एटले वनस्पतिनी जातीमां उपजेला जीवो, जरायुज एटले ओरमांथी उतपन्न थयेला जीवो, स्वेदाण एटले परसेवामांथी थयेला जीवो, ने अंडज एटले इंडामांथी थयेला जीवो, एवी रीते चार प्रकारनी खाणोना प्राणीओ छे, तेओने प्राणरूपी चक्षु छे,अने ते सघळाने प्रेमरूपी कीकी छे. ॥१८॥

जंजं गमण करंतं, नौका वा विमाण आरोहे ॥
तंतं उरध अद्धे, वत नम्न भूमि प्रेम परब्रह्मं॥१९॥

अर्थ. नावमां अथवा विमानमां बेसनारा जेम जेम गति करे तेम तेम उंचेने नीचे जेम आकाश अने पृथ्वीज देखायछे, तेम प्रेम उपर चडनारने

प्रेमरूपी परिब्रह्म सर्वत्र देखायछे. ॥१९॥

॥ पुनः अन्योक्ति दृष्टांतालंकार ॥ गाहा ॥

थर चर अध ऊरद्धे, दिस विदिसेण अतरं मध्यं ॥
वरणा वरण प्रसंगे, उँकारं अंकवत प्रेमं ॥२०॥

अर्थ. स्थावर जंगममां तथा नीचे, ऊंचे, दिशा विदिशाना अंतर अने मध्यमां जेम स्वर तथा व्यंजन वगेरे अक्षरोना प्रसंगमां एक ॐकारना अंकनोज प्रसारछे, तेम सघळा प्राणी पदार्थोमां एक प्रेमनोज प्रसारछे.॥२०

॥ अन्योक्ति द्रष्टांतालंकार ॥ गाहा ॥

भख्खण त्रसण विषयणं, निद्रा यस्य प्राणि चत्र एही ॥
तस्यात्मेण प्रवर्त्ते, वत चैतन्य प्रेम परिब्रह्मं ॥ २१ ॥

अर्थ. अहार, भय, मैथुन, अने निंद्रा ए चार विषयवाळा प्राणीओ जेम आत्माना चैतन्यथी प्रवर्त्ते छे, तेमज आ सघळुं जगत प्रेमरूपी परिब्रह्मना चैतन्यथी प्रवर्त्ते छे. ॥२१॥

॥ सोरठा ॥

सागर कह्यो सु मिंत, जो जिहि जानत प्रेम विधि ॥
आपें कह्यो वृतंत, सोय सत्य धारो सकल ॥ २२ ॥

अर्थ. एवुं वर्णन सांभळीने सागरे मित्रोने कह्युं के जे प्रमाणे जेणे प्रेमनी विधि जाणीछे, ते प्रमाणे आपें जे वृत्तांत कह्युं ते सघळाने हुं सत्य मानुंछुं. ॥२२॥

॥ अथ सागरोक्त समरुपक अलंकार ॥ गाहा ॥

निराकार निर्लेपं, जस्य स्तुति उचारितं वेदं ॥
जोत प्रकाश जपंतं, सत्ता प्रेम भासितं ब्रह्मं ॥ २३ ॥

अर्थ. जे निराकार एटले आकार रहित छे, ने निर्लेप एटले जे

कोईमां लेपाता नथी, अने जेनी स्तुति वेदो उच्चारे छे, तथा जेनी ज्योतिना प्रकाशने सर्व जपे छे, एवा प्रेमरूप ब्रह्म पोतानी सत्ताथी भासे छे. ॥२३॥

॥ अथ छंद प्रिया ॥

एक एकं कही, चित्त वृत्ती लही ॥ प्रेम पाये द्रढे, जोति दूनी चढे ॥ मध्य रेनी गली, एह चरचा चली ॥ जोग ठानी सची, राज सज्या रची ॥ रेन सारी गही, आध जामं रही ॥ साज साजे गुनी, धार भैरो धुनी ॥ नाद लागे श्रुतं, सागरं जाग्रतं ॥ मोद लावे हिया, नित्य कीनी क्रिया ॥ आप बेठे जहां, मिंत आये तहां ॥ २४ ॥

अर्थ. एवी रीते प्रत्येक जणे अकेकी गीति कही, ते उपरथी तेओना चित्तनी वृत्ति जाणी लीधी, अने सघळा द्रढ प्रेमने पाम्या, तेथी बमणुं तेज वधी गयुं, एम करतां मध्य रात्रि वीती गई, त्यां सुधी एज चरचा चाली अंते जोग धारण करवानो साचो ठराव करीने राज सज्जा रचावीने महाराजाए शयन कर्युं, एटले मित्रो पोत पोताना आसन उपर गया, आखी रात गई ने बाकी अरधो पहोर रही, त्यारे गायन करनारा गुणी जनो पोताना साज तैयार करी मधुर सुरथी भैरव राग गावा लाग्या. जेनो नाद काने लागतांज महाराजा सागर जागृत थया, तेणे हृदयमां आनंद लावीने नित्य क्रिया करी, एटलीवारमां ज्यां आप बेठा हता त्यां मित्रो आव्या. ॥२४॥

॥ सोरठा ॥

चार घरी रहि रेन, सागर नित कीनी क्रिया ॥
आय इते महि सेन, प्रेम प्रज्ञा प्रगटित सकल ॥२५॥

अर्थ पाछली चार घडी रात्रि रहेतां सागरे नित्यक्रिया करी, एटली

वारमां तो जेओने प्रेमनी कांति प्रगटेली छे. एवा सघळा (सेन) सज्जनो हाजर थया. ॥२५॥

॥ छंद झंपताल ॥

सागरं अंग आभूषनं साजियं, भान कोटी कळा कंद्रपं ला-जियं॥ आपही आसनं हेम चोकी रजे॥ मींतकी आवली आ-बरत्तं सजे ॥ आदरस्सं निजं पानिहींमें लिये ॥ देखितं है प्रतीबिंब नेनां दिये ॥ अंगको रूप सो अद्भूतं लसे ॥ मित-कों चिंतितं मंदमंदं हसे ॥ प्रान रूपं यहे राखवो धारितं ॥ सागरं एह सिच्छा सु उच्चारितं ॥ २६ ॥

अर्थ. पछी सागरे पोताना अंगमां आभुषणो सज्यां जेथी करोडो कळावाळा सूर्य तथा कामदेव लजवाया, ए वखते आप सोनाना जडित्र बाजोठ उपर आसन करी बिराजेला शोभेछे, ने चोतरफ मित्रोनी पंक्ति बंधाई गई छे, त्यारे पोताना हाथमां अरीसो लेई नेत्र लगाडीने पोतानुं प्रतिबिंब जुएछे त्यांतो पोताना अंगनुं अदभूत रूप शोभेछे ते जोई,मित्रोने जोईने धीमे धीमे हसेछे,अने पोताना प्राण एटले जीव तो एवुंज रूप राख-वाने धारेछे, तेथी सागरे पोताना जीवने आ प्रमाणे शिक्षा कही. ॥२६॥

॥ अथ सागरोक्त मनसिच्छा अनुमानालंकार ॥सवैया ॥

कागर नाव चल्यो सु गल्यो, अब सागर क्यौं तरिहे कर जोरा ॥ होनि सु होय न होनि न होयगि, क्यौंरे तपे तलफे मन मोरा ॥ आयो अगे अघ कीन अराधन, पायो सबे क-रनी फल तोरा ॥ मित प्रवीन अजों न मिले तब, भागमें आग विभूतिको गोरा ॥ २७ ॥

अर्थ. अरे कागळनुं वहाण चाल्युं तेतो गळी गयुं. हवे हाथना जोर-

थी समुद्रने शी रीते तरी शकीश, होवानी होय तेज होय, अने न होवानी न होय, माटे हे मारा मन? शा माटे तपीने तलफेछे, आगळ अरधुं आराधन करीने आव्युं, तेथी तुं तारी करणीनां सघळां फळ पाम्युं, अने हजी सुधी प्रियमित्र प्रवीण न मळ्यां. त्यारे तो हवे भाग्यमां केवळ धुणी तापवानी अग्नि, अने विभूतीना गोळा रह्या. ॥२७॥

॥ दोहा ॥

सागर मन सिच्छा दई, डिगत कियो थिर जूप ॥
उनपें अंवारत करन, धार्यो जोग सरूप ॥ २८ ॥

अर्थ. एवी-रीते सागरे डगता पोताना मनने शिक्षा आपीने यज्ञना स्तंभनी पेठे द्रढ कर्युं, हवे एना उपर योगीना स्वरूपरूपी इमारत करवानुं धार्युं. २८॥

॥ गाहा ॥

सागर उकति सु मिंता, प्रच्छा प्रेम रूप मन द्रढवंन ॥
सप्त पष्ठि अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥ २९ ॥

अर्थ. मित्रोने प्रेमनुं रूप पूछतां सागरे पोतानी उक्तिथी प्रेमनुं तत्व द्रढ करी राखवानी मनने जे शिखामण दीधी, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ सडसठमी लेहेर संपूर्ण थई. ॥२९॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे रससागर मिंत चर्चा मन द्रढावन प्रेम प्रथक भेदो नाम सप्त पष्ठितमो लहरं ॥६७॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां सप्तषष्ठितम स्तरंगः समाप्तः॥६७॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद हरिगीत ॥

सागरें जोगी रूप लइ, तजि दूर शोभा देहथी ॥
दश महाविद्यानी तथा, शिवनी स्तुति करि स्नेहथी ॥
पछि पंथ जातां शुकननी रीती कही नवि पेरमां ॥
कहेशे कथा शुभ एटली, अडसठमी आ लेहेरमां ॥

॥ अथ रससागर योगी स्वरूप प्रसंगो यथा ॥ सोरठा ॥

सागर मन सु द्रढाय, साथ सयन चहले न्नये ॥
चले सु मित बुलाय, भुज अकेक अवतंस धरि ॥ १ ॥

अर्थ. एवी रीते सागरे पोताना मनने द्रढाव्युं अने तेनी साथे मित्रो चेला थया, पछी सर्वे मित्रोने बोलावीने प्रत्येक जणाये पोतानो हाथ (अवतंस) तोराने ठेकाणे धरीने अर्थात् सलाम करीने चाल्या. ॥१॥

॥ अथ छेकानुप्रास अलंकार ॥ सोरठा ॥

मनमहि मोद प्रकाश, आस्य हास दरसित तनक ॥
आवत ईस निवास, पास रास वैरागि व्है ॥ २ ॥

अर्थ. मनमां आनंदनो प्रकाश छे. अने मोढां मंद मंद हसतां देखायछे, अने वैराग्य पामेला मित्रोनी (राशी) मंडळी थइने शंकरना देरालय पासे आवेछे. ॥२॥

॥ छंद मुक्तदाम ॥

गये रससागर थानक ईश, अभूषन ब्रह्म किये बकसीस ॥
तजे जर कंबर अंबर साज, दिगंबर भेख लियो महाराज ॥
सु वासन रंजित हे जिहि संग, बिभूतिय धार लई तिहि अंग ॥ नव ग्रह पाग ज्यु पेच लसंत, वहे जट जूट सु बंध कसंत ॥ हरं हर उच्चरितं मुख बान, धरे महमाय महेश्वर

ध्यान ॥ करे वह रूप तहां षट मिंत, भवा भव अस्तुति आप वदंत ॥ ३ ॥

अर्थ. एवी रीते रससागर ईश्वरने स्थानके गया, अने आभूषणो उतारीने ब्राह्मणोने दानमां अर्पण कर्या, अने जरीना शाल दुशाळा तथा जरीनां वस्त्रोनी सामग्री तजी देईने महाराजाए दिगंबरनो वेश धारण करी लीधो, अने जे अंग साथे सुगंधी पदार्थो लगावेला छे, ते अंगमां बिभूति धारण करी लीधी, अने जे मस्तकना केश उपर नव ग्रहोना रत्नोवाळी पाघ झुकी रही हती, ते केशनो जटाजूट करीने बांध्यो, अने मोढेथी हर हर एवी वाणी उच्चारीने महेश्वर तथा महामायानुं ध्यान थयुं, त्यां छये मित्रोए तेवांज रूप कर्या, एटले महाराजा सागरे पोते शिव तथा भवानीनी स्तुति करी. ॥३॥

॥ दोहा ॥

सागर भेप मुनेश धरि, गिरजा हर पद बंद ॥
दश सरूप माया दरसि, भंखिय अस्तुति छंद ॥ ४ ॥

अर्थ. सागरे मुनीश्वरनो वेष धारण करी, गिरजा तथा शंकरना पगने वंदन करीने दश रूपे जे माया दर्शाइ छे, ते दश महाविद्यानी भुजंगप्रयात छंदनी कवितामां नीचे प्रमाणे स्तुति करी॥४॥

॥अथ रस सागरोक्त दश महाविद्या ध्यान भेद ॥ शिवा स्तुति॥ जातिस्वभाव अलंकार ॥छंद भुजंगप्रयात॥

माहा कालिका मालिका मुंड धारा, शवं श्रोन, शीशं करं मुक्त वारा॥ वरं, निर्भयं, ग्राहिनी नग्ग खग्गा, ज्वलंती चितामें शवारूढ नग्गा॥ महाकाल विप्रीत रत्ती रमस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ भवा नील आभा जटा जूट, तारा,

करत्री कपालं, असी कंज धारा ॥ दढा क्रूर, वाघंबरं, जो-
ग, तप्पे, तनं आभ्रनं, दंतकी दाम जप्पे ॥ हरं मोहितं,
सोहितं कंज मस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ महा-
विद्यया राजितं रक्त बिंबा, सधे जोग जोती अलोकीक अं-
बा ॥ त्रिनेनं सरोजं करं नील सज्जे, कुचं गौर सुख्खं कला
चंद्र लज्जे ॥ महारुद्र चित्तं कटाक्षं भ्रमस्ते, नमस्ते नमस्ते
नमस्ते नमस्ते ॥ श्रियं, शोभ भानं, प्रभात प्रकासा, शशी
भाल, त्रीनेत्र आरून वासा ॥ धनू, बान, पाशं, श्रनी, पा-
नि लीने, सबे अंग सोहंत संगार कीने ॥ शिवं शंकरं बाम
भागं सु बस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ भुवंनेश्वरी,
चंद्ररूपा रसाला, धरे कुंडलं, हेम मुत्ती सु माला ॥ बधे
बार जूरा, सु सिंगार सज्जे, कटी किंकनी, जेहरी पाय ब-
ज्जे ॥ रसं रंजितं नेन शंभू समस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते
नमस्ते ॥ बगला कनंकासनं, हेम अंगा, किरीटं शशी, अं-
बरं पीत रंगा ॥ कुलीशं, गदा, पास, जीहा धरंती, गरे चं-
पकं जूहिकी वैजयंती ॥ महादेव संगा, उछंगा बिलस्ते,
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ छिनंमस्तिका, हस्तिका
रक्तपत्रा, धरं शीश, शीशं बितं छाय छत्रा ॥ करे श्रोनितं
पान, छूटे सु बारा, दमे डाकिनी शाकिनी संग धारा ॥ शिवं
संगियं रंगियं मोद मस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
महंमाय धूमावती, धूम देहा, कराला कला चंचला ज्वाल
मेहा ॥ भयंकार दढ्ढा, जयंकार प्रेता, उरं पीन, छीनं कटी,
दीन हेता ॥ भवा, भीस जोगा, न भोगा त्रपस्ते, नमस्ते नमस्ते

नमस्ते नमस्ते ॥ मतंगी, घनं डंबरं, अंग दीठं, रकत्तं धरे अंबरं, रत्न पीठं ॥ सुरं दानवं, मानवं, कंज थत्ता, करं कुंम्न पत्रं, सुरापान मत्ता ॥ महेशं पिवावंत, आपं पिबस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ वराही, रुची राजितं बीज वाला, सकत्ती, गदा, अंकुशं, नेत्र ज्वाला ॥ सरोजं लिये पानमें, रंग रत्तं, जपंतं जयं, शत्रवं हीन कत्तं ॥ जटा धारियं, धारियं ग्रीव हस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ जयो योगिनी, जोगिनी, जासु संगे, जयो जोगियं जोगियं जास रंगे ॥ जयो दंपती, जोग हासं विलासं, जयोकारना रूप, प्रेमं प्रकासं ॥ रखे लाज, माराज, जोगं सधस्ते, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ९ ॥

अर्थ. (मंत्र महोदधिमां दशमहा विद्यानां रूप वर्णव्यांछे, तेमांनुं कांइ बाकी रहेलुं ते पण आ टीकामां लखी जणाव्युंछे.) जे (आद्या) महाकालिका कहेवाय, अने जेणे मुंडनी माळा धारण करेलीछे, बंने कानमां मडां लटकावीने छुटा केश राखेला छे, ताजुं कापेलुं मस्तक, वरद,अभय, तथा खुलुं खड्ग,ए चारवानां चार हाथमां ग्रहण करेलांछे. बळती चितामां शब उपर नग्न थइने बेठेलां (श्याम वर्णवाळां, भयंकरछे मुख जेनुं, रुधिरना प्रवाहथी लालछे होठ जेना) महाकाळनी साथे विपरीत रतिथी रमण करनारां हे महाकाळी ? तमने वारंवार नमस्कार छे. बीजां तारा नामनां देवी-भवानी रूप, श्यामछे कांति जेनी,मस्तक उपर जटाजुट धारण करनारां, करवती, कपाळ,तरवार,तथा (नीला) कमळने हाथमां धरनारां, कुरछे दाढो जेनी, वाघंबर बिछावीने योग तप करनारां, अंगे पहेरेलां (कुंडल, कटिमेखला, कंकण, हार, तथा नाग विगेरे) आभूष-

णोथी शोभितां, दांतनी माळा हाथमां राखी जप करनारां, (त्रणछे नेत्र जेने एवा महादेवने मोह उपजावनारां, कमळ उपर बिराजेलां एवां) हे तारा? तमने वारंवार नमस्कार छे. त्रीजां महाविद्या नामेछे, ते (बिंब) घोळा जेवा राता रंगवाळा अंगथी शोभितां, जोगने साधनारां, अलौकिक तेजनी ज्योतने धारण करनारां माता, त्रण छे नेत्रो जेने, ने लीला रंगनां कमळ हाथमां लीधां छे, सुंदर कठीण (कुच) स्तन "तथा मनोहर छे केश जेना" अने गोरा मुखनी छवि जोइने चंद्रनी कळा पण लाजी जाय छे. अने जे नेत्रना कटाक्षथी महारुद्रना चित्तने पण भमावे छे, एवां हे महा विद्या देवी? तमने वारंवार नमस्कारछे. चोथां श्रीविद्या प्रभातना सूर्य जेवा प्रकाशथी शोभितां, चंद्रमाछे कपाळमां जेने, त्रण नेत्र, तथा रातां छे वस्त्र जेनां, धनुष, बाण, पाश, अने अंकुश, ए चार आयुधो चार हाथमां धारण कर्यां छे, अने सर्व अंगमां शोभिता शणगार सज्याछे, एवां शंकरना वामभागमां वसनारां हे श्रीविद्या, तमने वारंवार नमस्कार छे. पांचमां भुवनेश्वरि जेनुं चंद्रमाना जेवुं रूप तथा रंगछे, रसना रंगथी रसं वाळां, जडित्र कुंडळ, सोनाना हार, तथा मोतीनी माळा पहेरेली छे, मस्तक उपर वाळनो अंबोडो बांधीने जेणे सघळा शणगार सजेला छे, केडे मेखलानी घुघरीओ ने पगमां झांझर तथा लंगरना अवाज थायछे, नेत्रोना रसथी जेणे शंकरने सर्व प्रकारे रंजन करेला छे, एवां हे भुवनेश्वरी देवी ? तमने वारंवार नमस्कार छे. छट्ठां बगलामुखी, जे सोनाना आसन उपर बिराजेलां छे, अने सुवर्णना सरखी जेना अंगनी कांति छे, मुकुटमां चंद्रमा, ने अंगमां पीळारंगनां वस्त्रो धारण करेलां छे, वज्र, गदा, पाश, अने शत्रुनी जिव्हाने हाथमां धारण करनारां, गळामां चंपानी तथा जुईनी वैजयंती एटले गळाथी पगसुधी पहोंचे, एवी माळा पहेरनारां, महा-

देवना खोळामां वेशीने विलास करनारां, हे बगलामुखी देवी? तमने वारंवार नमस्कार छे. सातमां छिन्नमास्तिका, जेणे हाथमां रुधिरनुं पात्र, तथा "कापेलुं पोतानुं" मस्तक धारण कर्युं छे, अने माथे विस्तारवाळा छत्रनी छाया धरीछे, छुटा केश राखीने "पोताना गळामांथी झरतां" रुधिरनुं पान करनारां, दमन करनार डाकिनी, तथा शाकिनी वगेरे देवियोने साथे राखनारां, शंकरनी साथे रहीने तेने आनंदना रंगथी मस्त करनारां, "सूर्य सरखा प्रकाशित मंडलमां रहेनारां" हे छिन्नमस्ता देवी? तमने वारंवार नमस्कार छे. आठमां धुमावति महामाया, जेना शरीरनो रंग धुमाडा जेवो छे. अति विकराळ, "सूर्य छे उदरमां जेने," काळाने धारण करनारां, चंचळ, जेना अंगमांथी झाळोनी वृष्टि थाय छे, "मेलांछे वस्त्र जेनां, अति उंचां, सर्वे लोकोने उद्वेग पमाडनारां," भयंकर छे दाढो जेनी, प्रेत भूतादि जेनो जय बोले छे, कठिन स्तन, तथा कटिछे पातळी जेनी, दीन भक्तोनुं कल्याण करनारां, एवां भवांनी (भीम) महादेवनी साथे जोग करनारां, भोगथी तृप्त थतां नथी, एवां हे धुमावती? तमने वारवार नमस्कार छे. नवमां मातंगी, मेघना आडंबर जेवुं जेनुं श्याम अंग देखाय छे, ने रातां वस्त्र धरीने रत्नना पीठ उपर विराजेलां छे, अने कमळ उपर "बे पग राखीने" बेठेलां 'देव,' दैत्य, तथा मनुष्य, वगेरेने वरदान देनारां, एक हाथमां सुरानो कुंभ तथा बीजा हाथमां पात्र लेईने महादेवने पान करावी पोते पान करी मस्त थएलां, 'वीणा वगाडनारां,' हे मातंगी देवी? तमने वारंवार नमस्कार छे. दसमां वाराही बीजना, चंद्रजेवी कांतिथी शोभितां, बालरूप, जेना नेत्रोमांथी अग्निनी ज्वाळा नीकळेछे, अने जेणे शक्ति, गदा, अंकुश, तथा राता रंगनुं कमळ, चार हाथमां धारण करेलां छे. जप करनाराने जय आपनारां, अने शत्रुने नाश करनारां, जटाधर महादेवना

कंठमां हाथ नाखीने बिराजेलां हे वाराही देवी?तमने वारंवार नमस्कार छे. 'ए रीते दशमहाविद्यानी स्तुति करीने हवे शिवनी स्तुति करेछे." जयजय बोलनारी योगणी तथा भोगणी जेने संगेछे,तेमज जयजय उच्चार करनारा योगी तथा भोगी जेना रंगमां रंगाएला छे, प्रकृति तथा पुरुषरूप,दंपतिनां जोडलांथी योग तथा हास्य विलास करीने जय पामनारा, तेमज कारणरूप प्रेमने प्रकाशनारा, शक्ति साथे रहेला हे शंकर! तमने वारंवार नमस्कार करीने हुं जोग साधुंछुं. माटे कृपा करीने हे महाराज?मारी लाज राखजो.५

॥ सोरठा ॥

उमया ईश उचार, अस्तुति पुनि बंदन सु किय ॥
मन महि बोध बिचार, कहन लगे सागर कुमर ॥ ६ ॥

अर्थ. एवी रीते उमया तथा ईश्वरनी स्तुति उच्चारीने तेमने वंदन कर्युं, पछी रससागर राजकुमार पोताना मनने ज्ञाननो विचार केहेवा लाग्या. ॥ ६ ॥

॥ जमकाऽलंकार सोरठा ॥

जर जर जात जहान, फर फर झूठे जगत महि ॥
धर धर रे हिय ध्यान, कर कर याद प्रवीनकों ॥ ७ ॥

अर्थ. आ जूठा जगतमां फरी फरीने, जीव वारंवार बळी जाय छे, माटे हे, हृदय? प्रवीणने याद कर, कर, ने तेनुं ध्यान धर, धर. ॥ ७ ॥

॥ छपय ॥

जोगि रूप माहाराज, सहर प्रतना सब पाये ॥
गुरुजन मनमहि धारि, आय सागर बरजाये ॥
कहे तास प्रति उत्र, इष्ट साधन हम लीने ॥
करहु क्रिया इक वर्ष, बहुरि यह रूप सु छीने ॥

माने न कह्यो वरजत बहुरि, मन उदास सब लोग लिय॥
महराज महत आमात प्रति, दरकबाह आयस सु दिय॥८॥

अर्थ. महाराजे जोगीनुं रूप धारण कर्युं, ते वातनी खबर नेनतरंग नामना शेहेरमां तथा सर्व सेनामां थई, एटले मोटा लोकोए ते वात मनमां धारी. ने त्यां आवी सागरने मना करी, त्यारे तेणे प्रतिउत्तर कह्यो, के में ईष्ट साधन करवा सारु आ रूप लीधुं छे, ते घणुं करीने एक वर्ष क्रिया कर्या पछी तजी दईश. तोय पण फरीथी सर्वे घणीक रीते वारे छे, परंतु ते मानता नथी, जेथी सघळा लोकोए उदासी धारण करी, ने ते मोटा जनोए महाराजा प्रदीपने तथा मुख्य प्रधानने जइने खबर आपवा सारुं एक उंटस्वारने आज्ञा आपी.॥८॥

॥अथ छंद मृगेंद्र॥

कमाल चलाय, सु सागर पाय॥ भई जब रेन, कहे मित बेन॥ गई ग्रह बात, इतें नृप आत॥ सबे जन आय, लगे वरजाय॥ दशा हम कीय, लगी संग जीय॥ सु खंडित वात, तजी नहि जात॥ लगेहि बिबाद, सु नाहि सवाद॥ सु कारन एह, नही थिर देह॥ यहे हम जान, तजों शिव थान॥ कहे तब मींत, निशा ज्यु बहंत॥ चमू मग होय, निवारहु सोय॥ पती लिख लीन, पुजारिय दीन॥ लिखी हम राह, न सोधहु काह॥ कदा उत आउ, हमे न जिवाउ॥ सबे जन सोय, चले मग होय॥ जपे हरवान, कियो सु पयान॥९॥

अर्थ. उंटस्वार चलाव्यो, ते वातनी खबर सागरने मळी, पछी ज्यारे रात्रि थई, त्यारे मित्रोने वचन कह्यां के आ वात घेर जशे, के तुरत

महाराज़ा अहीं आवशे, तेमज सघळा कुटंबी लोको आवीने मना करवा लागशे, पण में जे आ दशा करी छे, तेतो मारा जीवनी साथे लागेली छे, जेथी ए वातनुं खंडन करशे, तोय ते तजी जाशे नहीं, अने उलटो वाद विवाद थशे, एमां कांइ स्वाद नथी, एनुं कारण एछे जे, आ देह कांई स्थिर नथी. एम जाणीने आ शिवनुं स्थानक तजी देवाने हुं चाहुंछुं, त्यारे मित्रोए कह्युं के, रात वीतशे, के आपणे मार्गे आंहीं सेना (आडी) आवशे, माटे तेनुं निवारण करो, एवां वचन सांभळी एक चीठी लखीने पूजारीने आपी, तेमां लख्युं के अमारो मार्ग कोई शोधशो नहीं, कदाचित त्यां आवशो तो, उलटा अमने जीवाडशो नहीं. पछी ते सघळा मित्रो रस्ते थई चाल्या, तेओए हर हर एवी वाणी जपीने प्रयाण कर्युं. ॥९॥

॥ सोरठा ॥

दरसित देव बिहान, जन जन प्रति पाई खबर ॥
सागर कीन पयान, चमू चढन चंचल भई ॥ १० ॥

अर्थ. पछी ज्यारे सवार थतां सूर्य देखायो त्यारे सागरे प्रयाणकर्युं, ए वातनी प्रत्येक जणने खबर थई, तेथी वांसे चढवा सेना चंचळ थई. ॥१०॥

पाती लेहि पुजार, ततेमहिं आये तिहां ॥
बूझ्यो अंत बिचार, गुरुजन सब बरजी चढन ॥ ११ ॥

अर्थ. एटलीबारमां तो पूजारी पत्रिका लेईने त्यां आव्यो, एटले सागरनो छेल्लो विचार जाणीने वडीलोए सौने चढवानुं बंध कराव्युं. ॥११॥

कोलाहल सह कीन, नेह नगर कन्यक फिरे ॥
जोगि अरन पथ लीन, हर हर कर कीनो गमन ॥ १२ ॥

अर्थ. त्यारे सघळा लोको शोकनी साथे कोलाहळ करीने नेहनगर तरफ पाछा फर्या. अने जोगियोए हरहर उच्चार साथे गमन करीने अर-

पणनो मार्ग लीधो. ॥१२॥

॥ दोहा ॥

प्रभा प्रभाकर भइ प्रगट, वन बन लवत बिहंग ॥
कवि मींतसु प्रति सुकनको, पूछन लगे प्रसंग ॥१३॥

अर्थ. सूर्यनी कांति प्रगट थई, अने वन वनने विषे पक्षियो बोलवा लाग्यां. एवा समयमां सुकवि भारतीनंद पोताना मित्र सागरप्रत्ये शुकन प्रसंगनो भेद पूछवा लाग्या. ॥१३॥

॥ छपय ॥

सुनि सागर वह वचन, भेद निज उकति सु धार्यो ॥
सुकन भेद यह सुनो, मिंत हम सोधि निहार्यो ॥
करनहार किरतार,सुकवि बल बुधि विस्तारत ॥
इष्टदेव परसंन, सोय सब सत करि डारत ॥
गुरु प्रेम इष्ट हम सत्यहे, तो कबहु न बानी फिरहि ॥
शुभ अशुभ भेद हमसें सुनो,सुकन प्रेंम रस अनुसरहि॥१४॥

अर्थ. ते वचन सांभळीने सागरे पोतानी उक्तिथी शुकनभेद कहेवानुं धार्युं, अने कहेवा लाग्या के हे मित्रो?आ मारो शोधी काढेलो शुकनभेद तमो सांभळो, करवावाळा तो जगतकर्त्ता परमेश्वर छे, पण सारा सारा कवियो पोतानी बुद्धिना बळथी ते विस्तारे छे, अने जेओने इष्टदेव प्रसन्न होयछे, तेओ सर्व वात साची करी मेलेछे, तेमज मारे पण प्रेमरूपी गुरु तथा इष्टदेव सत्य छे, तो मारी वाणी क्यारेय फरशे नहीं, माटे तमो सघळा शुकनना शुभ अशुभ भेदोने सांभळी ल्यो,ते शुकन पण प्रेमरसने अनुसरे छे. ॥१४॥

॥ अथ रस सागरोक्त नवीन शुकन भेद ॥ छपय ॥

सुकन भेद बहु बिद्ध, वेद लिहि कहत प्रसिद्धहि ॥
जल थल खेचर जीव, प्रगट इश्वर सब मध्यहि ॥
तावानी बुधवंत, श्रवन सुनि चित्त सु धारहि ॥
मत मतंत बहु भंत, कृपा गुरु अर्थ विचारहि ॥
जग आदि अंत इहि विधि सकल, ग्यानी बुध बल फललहत॥
शुभ अशुभ कर्म सब प्रानिके, सुगन ब्याज किरता कहत १५॥

अर्थ. घणीक रीतना शुकनना भेदो छे, जेने वेद प्रसिद्ध कहेछे, तेमां मुख्यत्वे, जळ, स्थळ, तथा आकाशमां गति करनारा जीवोनी वाणीछे, ते सर्वने विषे पण ईश्वर प्रगट रह्या छे, तेथी ते वाणी काने सांभळीने बुद्धिवाळा पुरूषो तेना भेदो पोताना चित्तमां धारी लेछे, परंतु तेमां घणीक भातना मत मतांतरो छे, तोय गुरु कृपाथी तेना अर्थो विचारी लेछे, एटलुंज नहीं, पण आ सघळा जगतमां आदिथी ते अंत सुधी एज रीती चाली आवीछे, माटे ज्ञानी पुरूषो बुद्धिना बळथी तेना फळने समजे छे, हवे एमां जाणवानुं एटलुंज छे के, प्राणीओना सारा नरसा कर्मने अनुसारे शुकनना मिषथी जगतकर्त्ता परमेश्वर कही आपेछे, ॥१५॥

॥ छपय ॥

पंच तत्वमय पिंड, सोय ब्रह्मांड प्रसिद्धहि ॥
छिति नभ सिखि जल अनिल, रूप रस प्रस रव गंधहि॥
निराकारहे शब्द, अवर आकार सु धारिय ॥
सबको कारन शब्द, शब्द माया विस्तारिय ॥
सो शब्द विविधहे जगतमें, जिहि सु भेद बिरला लहे॥
शुभ शब्द ग्यान अनुमान सब, सो प्रवीन सागर कहे॥१६॥

अर्थ. आ (पिंड) शरिर तथा ब्रह्मांड पंचतत्व मयछे, ए वात आखा

जगतमां प्रसिद्ध छे, पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जळ, अने वायु, तथा तेना गुण, रूप, रस, स्पर्श, शब्द अने गंध एओनो सर्वमां प्रसार छे, तेमां शब्द छे ते निराकार छे, अने बीजां सर्व तत्वो आकारवाळां छे, एम धारो, अने ते सर्वना कारणरूप शब्द छे, अने शब्देज मायाने विस्तारी छे, ते शब्दो जगतमां विविध प्रकारना छे, जेना भेदने विरला जाणे छे, माटे सागर कहेछे के, ते शब्दना ज्ञानना अनुमानने जे जाणे, ते चतुर कहेवाय. ॥१६॥

अथ शब्द ब्रह्म निरूपन ॥ श्लोकः॥

रसनायां तु यासीना। वृत्त मानेन ग्रंथिता ॥
यया प्रकाशिताः शब्दाः। सारदायै नमोस्तु ते ॥ १७ ॥

अर्थ. जभिमां जे निवास करीने रहेलां छे. जे छंदना वृत्तना मापथी गुथायेलां छे, अने जेणे शब्दो प्रकाश्या छे. एवां हे सारदा देवी? तमने नमस्कार हो. ॥१७॥

प्रणवो यस्य प्राण स्या। द्वर्णा यस्य च विग्रहः ॥
व्यापितः सर्व भूतेषु। शब्द ब्रह्म नमोस्तु ते ॥१८॥

अर्थ. ॐकार जेनो प्राण छे. अक्षरो जेनुं शरीर छे, अने जे सर्वभूत प्राणीमात्रमां व्यापक छे. एवा हे शब्दरूपी ब्रह्म? तमने नमस्कार हो. ॥१८॥

प्रणवो विस्तरः प्रायो । द्विपंचाश त्समाव्हयः॥
द्वादशा स्तस्य चोच्चारा। रस्व दीर्घ स्वरान्विताः १९॥

अर्थ. ॐकार विस्तार पामीने एक ॐकार, सोळस्वर, तथा कथी क्ष सुधीना पांत्रिश ए रीते बावन नामवाळो थयो. तेमांथी लोक व्यवहारमां ह्रस्व, तथा दीर्घ स्वरो मळीने बाराखडीना वारवार उच्चार थया. ॥१९॥

सा वर्णमात्रिका यत्र । भिन्ना भिन्ना च योजिता ॥
यद्रुपं तत्र व्याप्नोति। तेनेदं व्यापितं जगत् ॥ २० ॥

अर्थ. ते वर्ण मात्रिका जे ॐकारमां जूदा जूदा रूपथी जोडाई. तेमां जे श्रेष्ठरूपी ॐकारनुं रूप व्यापेछे, ते वडेज आ सर्व जगत व्यापेलुंछे. ॥२०॥

॥ दोहा ॥

शुकन विचार अनेकहे, मत मतके अनुसार ॥
प्रथम सु जोतिषसें कहत, ग्रह बल लगन निहार ॥२१॥

अर्थ. सागर कहेछे के,मत मतांतरना अनुसारथी शुकनना अनेक प्रकारना विचारो छे, तेमां प्रथम ग्रहोना बळाबळ तथा लग्नने जोईने ज्योतिषशास्त्र शुकन कहेछे. ॥२१॥

ओर स्वरोदयके शुकन, पासा रमल प्रमान ॥
केई अंकसु जंत्रके, के पशु खग सुनि बान ॥ २२ ॥

अर्थ. केटलाएक स्वरोदयनां शुकन कहेछे, ने केटलाक रमळना पासा नाखीने ते प्रमाणे शुकन बतावे छे, केटलाक यंत्रोना अंक मुजब शुकन समजावेछे, अने केटलाक पशु तथा पक्षिनी भाषा सांभळीने शुकन कही आपेछे. ॥२२॥

एसे विविध प्रकारहे, शुकन ग्रंथ मत लीन ॥
श्रेष्ट नेष्ट फल जो कहे, सो ईश्वर आधीन ॥ २३ ॥

अर्थ. एवी रीते शुकनना विविध प्रकार छे, जेथी शुकनना ग्रंथोना मतने लेईने विद्वानो (श्रेष्ट) सारां (नेष्ट) नरसां फळ कहेछे, परंतु ते सर्व ईश्वरने आधीन रहेलुं छे. ॥२३॥

अथ नवीन शुकन भेद कवित ॥

कोउ नर प्रच्छक सो पूछे प्रश्न कारजको, ताके मुख बानी के बरन गनी लीजिये ॥ चैत्रादिक मास जोउ, द्वितीयासें तिथि सोउ, सूरजसें वार ताके अंक एक कीजिये ॥ प्रच्छकको

नाम तासें, मिलाये प्रवीन अंक, सबहीकों एक करी दुगन थपीजिये ॥ ताको रस भाग अंक दीजिये बढेज्युं रस, नौरसमें जोइ रस आवेसो गहीजिये ॥ २४ ॥

अर्थ. कोई प्रश्न पूछनार आवीने पोताना कामनुं प्रश्न पूछे, त्यारे तेना मोढानी वाणीना अक्षरो गणी लेवा, अने चैत्रथी चालता महिना सुधीनो आंकडो, तथा बीजथी चालती तिथि सुधीनो आंकडो, तेमज रविवारथी चालता वार सुधीनो आंकडो, तेमां मेळवीने भेळा करवा, अने पूछवावाळाना नामना अक्षरो पण तेनी साथे मेळववा, चतुर पुरुषे ते सघळा अंकोने एकठा करीने पछी तेने बमणा करवा, ने तेने नवरस छे, माटे नवे भाग देवो, तेम करतां जे वधे तेने नवरस मांहेलो रस जाणीने जे रस आवे तेने ग्रहण करवो. ॥२४॥

॥ अथ नव रस नाम चोपाई ॥

प्रथम सिंगार हास्यरस दूजे, करुना त्रतिय अद्भुत अष्टे ॥ पंचम वीर भयानक षष्ठे, ना, ए नवरस जगमाहि बिख्या- नवमे शांत महा सुखदा र बखानो, अद्भुत शांत पंच ता ॥ हास्य सिं... ... गुन जानो ॥ रुद्र भयानक बिभच्छ करुना, अशुभ चार इहि पंडित बरना ॥ जो रस तेहि स्वामि गुन धारो, एते पर बहु बुधि बिस्तारो ॥ वाहन बसन रूप रंग एही, रसके स्वामीके गुन जेही ॥ सब विचार मनमें फल गहिये, प्रच्छक नरकों उत्तर कहिये ॥ २५ ॥

अर्थ. पहेलो शृंगाररस, बीजो हास्यरस, त्रीजो करुणा, चोथो रुद्र, पांचमो वीर, छठो भयानक, सातमो बिभत्स, आठमो अद्भूत, ने नवमो

मोटां सुख आपनारो शांतरस,छे ए नवे रसो जगतमां प्रख्यात छे, तेमां हास्य, शृंगार, वीर, अद्भूत, अने शांत ए पांच शुभ फळने आपनारा सारा जाणो, अने रुद्र. भयानक, बिभत्स, अने करुणा, ए चार रसोने पंडितोए अशुभ कहीने वर्णवेलाछे, जे रस आवेलो होय, तेना स्वामीना गुण धारण करीने तेना उपर घणो बुद्धिनो विस्तार करवो, रसना स्वामीनां वाहन, वस्त्र, रूप,रंग,अने जे गुण होय,ते सघळानो विचार करीने पोताना मनमां तेनुं फळ ग्रहण करी लेवुं, अने पछी पूछनार पुरुषने उत्तर आपवो रसना स्वामी वगेरे बीजी लेरना सातमा छंदमां जोवां॥२५॥

॥ सोरठा ॥

आपें शुकन उपाय, बिन बूझे देखन चहै ॥
अन्य प्रति अंक कराय, इन गनती तापर करहु ॥२६॥

अर्थ. पोतानी मेळे शुकन उपजावीने वगर पूछे जे जोवाने चाहे, तो तेणे बीजानी पासे तेनी मरजी प्रमाणे संख्यानो आंकडो बोलावीने तेना उपर आगळ कह्या प्रमाणे गणतरी करी लेवी.॥२६॥

एक द्योस प्रति एक, बूझत सो बानी मिलहि ॥
प्रच्छक उकति अनेक, बूझहि पें पुनि नां बदहु ॥ २७ ॥

अर्थ. एक दिवसे एकज प्रश्न पूछे, तो ते वात मळे, पण जो घणा पूछवावाळा एकथी वधारे वार पूछे तो तेने पछी कहेवुंज नहीं.॥२७॥

॥ दोहा ॥

सागर शुकन नवीन किय, दीनो मिंत सुनाय ॥
मन द्रढ करि सोधहु शबद, बानी व्रथा न जाय ॥ २८॥

अर्थ. एवी रीते सागरे नवीन शुकन जोवानी रीत बनावीने मित्रोने संभळावी दीधी, अने कह्युं के एम जो मन द्रढ करीने शब्दने शोधशो?

तो वांणी (मिथ्या) खाली जशे नहीं.॥२८॥

सुनत मिंत सब सत्य किय, उरमें भरे उछाह ॥
बोध शांतरस सोध बढ, बिपन गवन किय राह ॥२९॥

अर्थ. सर्वे मित्रोए सांभळीने कह्युं के ए वात साचीछे. पछी मनमां उत्साह भरीने ते बोध प्रमाणे शुकननो शोध कर्यो. तो शांतरस वध्यो, तेथी जंगलने रस्ते गमन कर्युं.॥२९॥

॥ गाहा ॥

सागर जोग सरूपं, अस्तुति इष्ट शुकन नौतम बिधि ॥
अष्टषष्ठि अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥३०॥

अर्थ. महाराजा सागरे लीधेला योगीना स्वरूपनी साथे दशमहा वि-द्यानी स्तुति, तथा नवीन शुकनना वर्णन संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ अडसठमी लेहेर संपूर्ण थई.॥३०॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे रससागर जोग सरूप शिव शक्ति स्तुति नवीन शुकन भेदो नाम अष्टषष्ठितमो ल-हरं ॥ ६८ ॥

इतिश्री प्रवीण सागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गुर्जरी टीकायां अष्टषष्ठितम स्तरंगःसमाप्तः॥६८॥

अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥छंद॥हरिगीत॥

वन तरफ जोगी चालिया, तप साधता वनमां रही॥
पहोच्या प्रवीणना बागमां, कुसुमावळी आवी तहीं॥
परवीण दिन गुजरान, शी रीते करेछे ते कह्युं॥
आ लहरि अगनो तेरमीमां, एटलुं वर्णन रह्युं.॥

॥ अथ योगी प्रयान क्रिया प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

जोगी यह साधत क्रिया, कीन गमन कांतार ॥
पुर तजि उर अभिलाष प्रिय, निरजन चलत निहार॥१॥

अर्थ. एवी रीते ते जोगियोये प्रीय मित्रने मळवानी अभिलाषाथी शहेर तजी दइने क्रिया साधवासारुं वनमां गमन कर्युं ने उजड रस्तो जोता चाले छे.॥१॥

॥ अथ छंद दुमिलिया ॥

उठि प्रात सु मंजिय, दूरित गंजिय, भूति सु रंजिय, ग्यान गढे ॥ बघ चंमर डारिय, आसन बारिय, नासु निहारिय, ध्यान द्रढे ॥ मरुतागति रोधिय, पूरन बोधिय, शंकर शोधिय, वृत्ति जमे ॥ जटधार सु जोगिय, पूरव भोगिय, प्रेम प्रयोगिय, देह दमे ॥ इक पोर सु तप्पिय, जंत्र सु थप्पिय, मंत्रहि जप्पिय, तंत्र जथा ॥ जुग जाम सु बित्तहि, सेव उथित्तहि तत्र कथित्तहि, प्रेम कथा ॥ सहजावत भक्खिय, इच्छन अक्खिय, नेह नरक्खिय, प्रेम क्रमे ॥ जटधार सु जोगिय, पूरव भोगिय, प्रेम प्रयोगिय, देह दमे ॥ उवटावट सद्धिय, त्यागत रद्धिय, शील सु बुद्धिय, चित्त सजे ॥ थर ठोर भयंकर, घाट गिरव्वर, झंगर अंबर, सोय रजे ॥ बनराय सु झुक्किय, पंख प्रलंबिय, रिच्छ मृगं सिय, तत्र रमे ॥ जटधार सु जोगिय, पूरव भोगिय, प्रेम प्रयोगिय, देह दमे ॥ जहाँ भूत पिशाचनि, डाकनि शाकनि, प्रेत पूरातनि, ज्वाल घखे ॥ सिगरे वह साधत, ईश अराधत, मोदसु बाढत, खेल लखे ॥ अगमागम कीनिह, एक महीनिह, बाग प्रवी-

नहमें विलमें ॥ जटधार सु जोगिय, पूरव भोगिय, प्रेम पयोगिय, देह दमे ॥ २ ॥

अर्थ. सवारना पहोरमां उठी स्नान करी, पापनो नाश करी, शरिरे विभूति चडावीने, ज्ञानमां मग्न थाय छे. वाघनुं चर्म बिछावी ते उपर आसन वाळीने नाक सामे जोइ रहीने ध्यानने द्रढावे छे, प्राण वायुना आववा जवानी गतिने रुंधी, पूर्ण ज्ञानथी बुद्धि वडे, शंकरना स्वरूपने शोधीने तेमां मननी वृत्तिओने जमावे छे. एवी रीते जटा धारण करनारा पूर्वना भोगी प्रेमना प्रयोगवाळा जोगियो देहने दमेछे. एक पहोरसुधी तपस्या कर्या पछी तंत्रशास्त्रमां कह्या प्रमाणे, यंत्रनी स्थापना करीने मंत्रनो जप करे छे; एम बे पहोर वीती गया पछी सेवामांथी उठीने त्यां प्रेम संबंधी कथा करे छे. सेहेजे आवी मळेला पदार्थोनुं भोजन करेछे. नेत्रोथी पण कांइ जोवानो स्नेह राखता नथी. अने प्रेमना अनुक्रमथी वर्त्ते छे एवी रीते जटा धारण करनारा पूर्वना भोगी प्रेमना प्रयोगवाळा जोगियो देहने दमेछे.वाटे उचाटे चालतां साधन करे छे, ते सर्व प्रकारनी रिद्धि (दोलत) नो त्याग करीने सारां शिळ तथा सद्बुद्धिने चित्तमां धारण करेछे, अने भयंकर ठेकाणां होय छे, त्यां स्थिति करेछे,अने पर्वतोना घाट तथा झाडी अने उंचे आकाशान होय,तेज जग्या पोताने गमे छे, ते ठेकाणे वनस्पति झुकी रहेली होयछे, ने मोटां पक्षियो अने रिछ, मृग, अने शिआळियां रमे छे, एवी रीते जटा धारण करनारा पूर्वना भोगी प्रेमना प्रयोगवाळा जोगियो देहने दमे छे, ज्यां भूतो तथा पिशाचणियो डाकणो, तथा -णियो वसे छे, ने प्राचीन काळनां प्रेतो एटले मडांओनी चितानी झाळो सळगी रहेली होय,त्यां सघळा ते जोगियो साधन करता करता तथा ईश्वरनुं आराधन करता करता आवीने हर्षथी तेओना खेलने जुएछे, ए

प्रमाणे अगम्य मारगे गमन करीने एक महिने प्रवीणना बागमां आवी रह्या, एवी रीते जटाने धारण करनारा पूर्वना भोगी प्रेमना प्रयोगवाळा जोगियो देहने दमे छे. ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

इहि बिधि गमनसु कीन, जोगी निज साधत क्रिया ॥
बिलमित बाग प्रबीन, एक मास अटवी सपत ॥ ३ ॥

अर्थ. ए प्रमाणे गमन करीने पोतानी क्रिया साधता जोगियो वनमां थइने एक महिने प्रवीणना बागमां (सपत) पहोच्या,ने त्यां विश्राम कर्यो. ३

किय मनछा विश्राम, नयन लाय मनछा पुरी ॥
सुधि आवत सुर धाम, धाम धाम केतू कलस ॥ ४ ॥

अर्थ. मनछापूरी नजरमां लावीने त्यां विश्राम करवानी इच्छा करी, ते शाहेरना घरो घर उपरनी धजाओ, तथा कळस जोतां देवना धामनी याद आवे छे. ॥ ४ ॥

मीत्रं प्रजा पुर देश, बिनता सुत आमात भ्रत ॥
नीतहि पाल नरेश, सोहे संपति सप्त जुत ॥ ५ ॥

अर्थ. मित्रो, शाहेरनी प्रजा, देश, स्त्रियो, पुत्रो, प्रधानो, अने नोकरो, एवी सात प्रकारनी संपत्तिथी नीतिपाल राजा त्यां शोभेछे. ॥५॥

॥ तत्र कला प्रबीन दशा बर्नन ॥ जातिस्वभाव अलंकार॥

॥ छपय ॥

कुमरी कला प्रबीन, छिनहु मन तन न परे सुख ॥
बिरह बिकल दिन रेन, जपे सागर सागर मुख ॥
पुर निज बाग पुरान, फूल फल मालिनि लावे ॥
निज न सुहावत सोय, सखी जनसें बकसावे ॥

दरसाइ सांझ चुनवे सुमन, मालिनि चलि उपबन गही ॥
संन्यास सप्त आसन रचित, बीच कुंज दरसे बही ॥ ६ ॥

अर्थ. कळाप्रवीण कुंवरीने क्षणमात्र पण मन तथा शरीरे सुख पडतुं नथी, ने वियोगनी विकळताने लीधे रातदिवस मोढेथी हे सागर! हे सागर! एम जपेछे, अने शहेर पासे पोतानो एक जूनो बाग छे, तेमांथी मालण फळफूल लावेछे, ते पोताने गमतां नथी, जेथी ते सखियोने बक्षीश करी देछे, "हमेशांनी रीत प्रमाणे ते दिवसे सांज पडी एटले फूल वीणवा सारुं मालण चालीने वाडीए गइ, त्यां तो कुंजनी वच्चे आसन रचीने बेठेला ते साते सन्यासियो देखाया. ॥६॥

॥ दोहा ॥

मालिनि सन्यासी दरसि, परसी आय सु पाय॥
सुभग रूप शिशुता सु बय, लखि अद्भूत सु लाय ॥ ७ ॥

अर्थ. सन्यासियोने जोतांज मालणे आवीने तेओना पगनो स्पर्श कर्यो. पण तेमनां सुंदर रूप तथा वालक अवस्था जोइने पोते आश्चर्य पामी गई. ॥७॥

॥ चोपाइ ॥

मालिनि जोगि बुझने लग्गे, तुम ले सुमन जाहु किहि जग्गे॥
मालाकार कही तब नारी, कलाप्रवीन कीन फुलवारी ॥
ले फल फूल उहाँ नित जावे, अंदरकी देहरी रहावे ॥
दुज दुहिता कुसमावलि जोहि, रहे प्रवीन पास नित सोही॥
समय पिछान देहुरी आवे, सोय हजूर सुमन पहुंचावे ॥
पहुच वात जोगि जिय चीनो, निज निज माहि बिबाद यह लीनो ॥ एक कहे वह हमें पिछाने, बडे लोग इक कहे कह

जाने ॥ सुनि बिवाद मालनी कहाई, आपे दरस वहे कह पाई ॥ जोगि कहे द्वारिका सिधाये, संगमघाट दरस उन पाये ॥ ओर कही इन संग कहाओ, ब्रह्मनि तुम आशिषा सुनाओ॥ कहिहो? हा,मालनी कहीजे,उन प्रति हमें आशि-षा दीजे ॥ द्वारामतिकी देहु निशानी, उनकों तबहि परेगी जानी ॥ मालनि कहे काल फिर आवें, तब तहकीक खबर सब लावें ॥ चुनि फल फूल बाज महि लीने, सहर प्रबेश मालनी कीने ॥ ८ ॥

अर्थ. पछी जोगियो मालणने पूछवा लाग्या, के तमे पुष्पो लइने कइ नग्याये जशो? त्यारे माळीनी स्त्रिये कह्युं के राजकुंवरी कळाप्र-वीणे आ फूलवाडी करावीछे.माटे हमेशां हुं फळ फूल लइने त्यां जाउंछुं. ने दरबार मांहेनी दोढिये जइने उभी रहुं छुं. त्यां ब्राह्मणनी दीकरी कुसु-मावळी छे, ते निरंतर प्रवीणनी पासेज रहे छे. ते समय जाणीने दोढिये आवे छे. ने मारी पासेथी फूल लइने हजूरमां पहोचाडे छे. एवी वात सांभळीने जोगियोये मनमां जाण्युं के आनी मारफते आपणी वात त्यां पहोचशे. पछी पोतामां परस्पर आ प्रमाणे विवाद चलाव्यो. एके कह्युं के ते कुसुमावळी मने ओळखेछे. त्यारे एके कहयुं के मोटा लोक ते वळी शुं पिछाणने जाणे ? एवो विवाद सांभळीने माळणे कहयुं के आपे एमने क्यां दीठा हता. त्यारे जोगिये कहयुं के अमे द्वारिका गया हता, त्यारे संगमघाट उपर तेमने जोवा पाम्या हता. त्यारे एक बीजा जोगिये कह्युं के एम होय तो आनी साथेज ते ब्रह्मपुत्री कुसुमावळीने तमारा आशिर्वाद कहेवरावी मोकलावो. पछी ते जोगिये माळणने कह्युं के केम तमे अमारा आशिर्वाद कहेशो ? त्यारे माळणे कह्युं के हा कहीश.पछी जोगिये कह्युं

के ते कुसुमावळीने अमारा आशिर्वाद कही देजो. अने तेने द्वारामतिनी निशानी देजो. एटले तेना जाणवामां आवी जशे. पछी माळणे कह्युं के काले हुं फरीने आवीश त्यारे विगतवार बधी खबर लावीश. पछी फळ-फूल वीणी छाबमां लइने माळणे शहेरमां प्रवेश कर्यो.॥८॥

॥ दोहा ॥

मालिनि सहर प्रवेश किय, लिये सुमन फल बाज ॥
यूथ लंघि पहिराय तन, गई देहुरी राज ॥ ९ ॥

अर्थ. फूल तथा फळ छाबमां लइने माळणे शहेरमां प्रवेश कर्यो. ते पहेरेगिरोना समुदायनुं उलंघन करीने राजद्वारनी दोढिये गई.॥९॥

छंद निशि पालिका

मालनहि राज नवमी सपत देहरी,बानि सुनि तास गइ अं-द्र इक चेहरी ॥ ज्ञापतहि नीठ परबीन कुसुमावलि, बात सुनि ब्रह्म उठि पुष्प लहने चली ॥ आइ निज देहुरीहि मालनिहि देखही, बाज वह फूल निज हस्त अपने लहि ॥ बाग प्रतिपाल चिनता तबहु ये कही,आज निज बाग अव-धूत अय आतही॥आशिषहि आप उनमध्य इकही कही,बारि निधियें मिलित याद तुम यों दही ॥ फेर संनियास चरचा सु नखही सबे, चिंत कुसुमावलिहि चट्ट सु लगी तबे॥ कौंन उन जानिम्त जोगि उत हे घने, फेर यह केत अनुहार दि-खतें बने ॥ काल्ह प्राति सांझ हम बागमहि आयगे,बाद्द सं-नियास दरशंत सु मिटायगे॥यों कहिहि मालनिहि थान बि-दया करी, फूल लहि आप दरबार अंदर फरी ॥ १० ॥

अर्थ. माळण दरबारनी नवमी दोढिये पहोंची, त्यारे तेनी वाणी

सांभळीने एक दासी अंदर गइ.ने त्यां कळाप्रवीण तथा कुसुमावळी पासे आवीने कह्युं. ते वात सांभळीने ब्रह्मपुत्रि कुसुमावळी उठीने फूल लेवा चाली, ने पोते दोढिये आवी,त्यां माळणने दीठी. एटले तेनी पासेथी फूलनी छाब पोताना हाथमां लीधी.त्यारे बागनुं प्रतिपालन करनारा माळीनी स्त्रिये एम कह्युं के आज आपणा बागमां सात अबधूतो आवेलाछे.तेमांथी एके आपने आशिष कहीछे. ने द्वारकामां समुद्रने किनारे तमने मळ्या हता. एवी यादी आपी छे. एम कही वळी सन्यासियोनी बधी चर्चा कही संभळावी, त्यारे कुसुमावळीना चित्तमां चटक लागी गई. पण कह्युं के कोण एने जाणे, त्यां तो घणाय जोगियो छे. फरी पाछुं कह्युं के ऋणसारे जोयाथी मालुम पडे.माटे काल सांझनी वखते हुं बागमां आवीश. ने ते सन्यासियोने जोइने तेओनो वाद मटाडीश. एम कहीने माळणने तेने ठेकाणे विदाय करी. अने पोते फूल लइने दरबारमां पाछी गई.॥१०॥

॥ सोरठा ॥

कुसुम कुसुम ले पान, कला प्रबीन हजूर किय ॥
बदी न मालनि बान, मनही मन सोधत मतो ॥११॥

अर्थ. कुसुमावळिये फूल हाथमां लइने प्रवीणनी हजूरमां रजु कर्यां, पण माळणनी कहेली वात कही नहीं. ने पोते पोताना मनमांज मत शोधवा लागी.॥११॥

शर्वरि बहत ब्रतंत, मालिनि गई सु बाग महि॥
चरचा जोग चलंत, कही कुसुम उक्ती तहां ॥१२॥

अर्थ. ते दिवसनी रात्रि वीती गया पछी माळण बागमां गई. त्यां तेणे जोगियोनी साथे चर्चा चालतां कुसुमावळीनी वाणी कही संभळावी.१२

द्रढ मन कियो सन्यास, वह दिन बाग बिलंब किय ॥
कुसुम बिलोकन आस, दिनकर नय दूनी बढत ॥ १३ ॥

अर्थ. तेथी सन्यासियो द्रढ मन करीने बागमां रोकाणा, ने जेम जेम सूरज नमतो गयो. तेम तेम तेओने कुसुमावळीने जोवानी आशा बमणी वधती गई. ॥२३॥

॥ छपय ॥

दिनकर नय दरसंत, कुसुम परबीन अरज किय ॥
विनय कींन्ह बहु बार, लखन उपवन सासन लिय ॥
कही चलत मुसकाय, बाग जोगी कोउ आये ॥
उन मेरी करि याद, आशिष बचन पठाये ॥
पहिचान परे उनकी सु उत, एक पंथ दुहु काजहे ॥
फिर द्वार आय फंदन चढी, उन्नय सजे जिहि बाजहे १४

अर्थ. दिवसने नमतो जोइने कुसुमावळिये प्रवीणने अरज करी. घणी वार विनय करीने बाग जोवानी आज्ञा लीधी. पछी चालती वखते मरकीने कह्युं के बागमां कोइ जोगियो आव्याछे. तेणे मारी याद करीने आशिर्वादनुं वचन कही मोकलाव्युंछे. माटे त्यां जवाथी तेओनी ओळखाण पण पडे. ए रीते एक पंथ ने बे काम छे. पछी दरवाजे आवीने जेने बे घोडा जोडेला छे. एवा रथ उपर चढी. ॥२४॥

॥ दोहा ॥

बाज जोरि चक्री सु चढि, लिय कुजाक निज संग ॥
कुसुम सु पुग्गिय कुसुमवन, परसत धरानि पतंग ॥ १५॥

अर्थ. ए रीते घोडा जोडेला रथ उपर चडीने पोतानी साथे पाळा लीधा. सूर्य पृथ्वीने अडतां अर्थात् अस्त पामवानी वखते कुसुमावळी फूलवाडिये पहोंची. ॥२५॥

॥ चोपाई ॥

बाग दुहार कुजाक बेठाई, आप कुसुम उपवन प्रति आई॥ दरश पाय जोगेश्वर चीने, आय नीठ अभिबंदन कीने॥ब्रह्मनि म्रदु मुसकाय कहायो, बहुरि कहा परपंच बनायो ॥ जोगी कही प्रपंच न कीनो, अब के सत्य जोग हम लीनो ॥ सुनि-यत कुसुम नेन भरि आये, बहुरि बानि बोलीहु न जाये ॥ जोगि ब्रह्मनी धीर द्रढाई, नीठ नीठ चरचा सु चलाई॥ दुज दुहिता बतियन पुनि लग्गी, कलाप्रबीन खबर उनम-ग्गी ॥ ब्रह्मनि आप बतावे सोई, कलाप्रबीन गूजर क्यों होई ॥ १६ ॥

अर्थ. बागने दरवाजे पाळाने बेसारीने कुसुमावळी पोते बागमां आवी. जोगीनां दर्शन पामीने तेओने ओळख्या. अने पासे जइने नमस्कार कर्या. अने ते ब्राह्मणिये कोमळताथी मरकीने कह्युं के वळी आ प्रपंच शो ब-नाव्या छे? त्यारे जोगिये कह्युं के अमे प्रपंच कर्यो नथी, आ फेरे तो खरे खरो अमे जोग लीधो छे. ते सांभळतांज कुसुमावळीनी आंख्यो भराई आवी. ने फरीथी कांइ वाणी बोली शकी नहीं. त्यारे जोगियोये ते ब्राह्म-णीने धीरज द्रढ करावी. ने मांडमांड तेनी साथे चर्चा चलावी. त्यारे ब्राह्मणनी दीकरी वळी वातो करवा लागी, त्यारे ते जोगियोये कळाप्रवी-णनी खबर मागी. अने कह्युं के कळाप्रवीणनो दिवस गुजारो शी रीते थाय छे. ते हे ब्रह्मकुमारी ! तमे अमने बतावो.॥१६॥

॥ दोहा॥

संन्यासी मुख बानि सुनि, कुसुम सु कही उचार॥
आठ जाम अठ अठ घरी, यों परबीन गुजार ॥ १७॥

अर्थ. संन्यासीना मोढानी वाणी सांभळीने कुसुमावळिये उच्चार करीने कह्युं के आठ पहोरनी आठ आठ घडियो कळाप्रवीणनी एवी रीते गुजरेछे के; ॥ १७ ॥

॥ अथ कुसुमावलि उक्त कलाप्रवीन दशा बर्नन ॥

॥ छंद तोटक ॥

अथ जाम निशा उठ मंज तनं, इक आसनसें द्रढ लाय मनं ॥ प्रतिमा उमया शिवकी ज्यु थपे, अरचा चरचा कर मंत्र जपे ॥ इक जाम सु सागर ध्यान धरे, गुजरान युंही परवीन करे ॥ उथपे अरचा चरचा सु चले ॥ इतने महि ब्रंद सखी सु मिले,बतियां सब बोलत इच्छ जथा ॥ वह प्रेम उचारत गूढ गथा ॥ इक जाम सु गोप उसास भरे, गुजरान युंही परवीन करे ॥ असनं बिविधं विध होत तबे, मन इच्छ अरोगत ओर सबे ॥ इतने महि याद लगे मनमें, उठ बैठत दूर जमे न जमे ॥ मिश नीद सुवे इक जाम जरे ॥ गुजरान युंही परवीन करे ॥ पुनि बैठत सोच करे चितमें, सहियां फिर आय जुरे तितमें॥ बिविधं बिनता जन खेल लगे ॥ उनकी सुरता सु लगी न डगे॥इक जाम लगे न घरी बिसरे॥ गुजरान युंही परवीन करे ॥ उत आप समान सबे अवला, तहां गायन साधत गानकला ॥ सब रीझत गान संगीत लखे, उनकों बिरहा सु कसी न रखे ॥इक बीतत जाम बडे कहरे, गुजरान युंही परवीन करे ॥ तितहि फिर भोजन आवतहे, अन्य खावत आप न पावतहे॥ बिनता अपने ग्रह जाय रहे, उतमें उठ आप इकंत ग्रहे ॥ समरंत सु मिंत पहेर

परे॥ गुजरान युंही परबीन करे॥ उर मानसि मिंत समीप भजे, अग्निसार दशा गहि अंग सजे॥ चितराम लिखंत अनंग बढे॥ लहि जोगिनि रूप बिभूति चढे ॥ सुपनेश्वरि जाम जपं उचरे, गुजरान युंही परबीन करे॥ बिरहा रस रीत कवीत कहे ॥ हम गावत तान सु बीन गहे॥ चरचा निज मिंत करे मुखसें, असुआन झरी उलटे चखसें ॥ मुरझायत सोय पहेर गरे, गुजरान युंही परबीन करे ॥ अठ पोर सु प्रेम प्रसंग सधे, दिनहु दिन व्याध असाध बधे ॥ छिनही छिन देह दशा पलटे॥ बिरहा सु बढे तन जोत घटे॥ कुसुमं सु कहे हम देख जरे॥ गुजरान युंही परबीन करे१८

अर्थ. चारघडी पाछली रात रहे, त्यारे उठीने शरीरे न्हायछे. पछी एक आसन उपर बेशीने मनने द्रढ करेछे. पछी उमा माहेश्वरनी प्रतिमानुं स्थापन करेछे. तेनी पूजा अर्चा करीने मंत्र जपेछे. एक पहोर सुधी रससागरनुं ध्यान धरेछे. एवी रीते कळाप्रवीण वखत गुजारे छे. पछी ए पूजा उथ्थापीने चर्चा चलावेछे. एटलामां तो सखियोनी टोळी आवीने मळे छे. अने पोतपोतानी इच्छा प्रमाणे सौ वातो करेछे. अने ते प्रवीण तो प्रेमनी गूढार्थ गाथाओ बोलेछे.अने एक पहोर सुधी तो. गुप्त रीते उसासा भरेछे. एवी रीते कळाप्रवीण गुजरान करेछे. त्यांतो विविध प्रकारनुं भोजन तैयार थायछे. एटले बीजां सर्वे जनो मननी इच्छा प्रमाण आरोगे छे.एटलामां तो प्रवीणना मनमां मित्रनी याद आवेछे. एटले कांइ जमी न जमी उठीने वेगळे वेसेछे. पछी उंघवाने मिशेथी सुएछे. पण एक पहोर सुधी सुती सुती बळयाज करेछे. एवी रीते प्रवीण गुजरान करेछे. पछी बेठी थइने चित्तमां शोचना करेछे. एटलामां तो पाछी सखियो आवीने एकठी थायछे. ते स्त्री

ज्ञन विविध प्रकारना खेल करवा लागेछे. पण एनी तो सुरता मित्रमां लागी होय, ते डगती नथी. पण पहोर सुधी एवी स्थितिमां रहेछे. ने घडिएक मित्र विसरता नथी. ए रीते प्रवीण गुजरान करेछे. त्यां पोतानी बरोबरीनी सर्वे सखियो मळीने गानकळाथी गान साधेछे. ते संगित गान जोइने सर्व रीझेछे. पण एने तो विरह कांइ बाकी राखतो नथी. ए रीते एक पहोर मोटा केरथी वीतेछे. ए रीते प्रवीण गुजरान करेछे. एटलामां वळी भोजननो थाळ आवेछे. ते बीजां खायछे, पण पोते खाती नथी. पछी सखियो पोताने घेर जती रहेछे. त्यारे प्रवीण त्यांथी उठीने एकांत पकडेछे. ने एक पहोरसुधी मित्रनुं स्मरण करेछे. ए रीते प्रवीण गुजरान करेछे. हृदयमां मित्रना मानसिक मेळापने भजेछे. पछी अभिसारिकानी दशा ग्रहण करीने अर्थात् स्वामीने मळवा जती होय, एवा श्रृंगार शरीरे सजेछे. ने मित्रनुं चित्रामण जोइने तेने काम वधेछे. पछी जोगिणीनुं रूप लइने शरीरे विभूति चडावे छे. अने एक पहोरसुधी स्वप्नेश्वरीना मंत्रनो जप करे छे. ए रीते प्रवीण गुजरान करे छे. पछी विरहना रसनी रीतनां कवित कहे छे. अने हुं वीणा लइने ते कवित तानमां गाउंछुं, अने प्रवीण पोताना मुखथी मित्रनी चर्चा करे छे. तेनी आंख्योमांथी आंसुनी धारा चलटेछे. पछी एक पहोरसुधी मुरछा खाइने पडेछे. ए रीते प्रवीण गुजरान करेछे. ए रीते आठे पहोर प्रेमनो प्रसंग साधेछे. दिवसे दिवसे असाध्य व्याधि बधनी जाय छे. क्षणे क्षणे तेना शरीरनी दशा बदलाय छे. विरह वधे छे. अने शरीरनुं तेज घटी जायछे. कुसुमावळी कहेछे के ते जोइने हुं बळुंछुं. ए प्रमाणे प्रवीण गुजरान करेछे.॥२८॥

॥ दोहा ॥

कहा प्रवीन दशा कही, कुसुमावली बनाय ॥

यहे गुजर उनको सदा, जपत मिंत दिन जाय ॥१९॥

अर्थ. ए रीते कुसुमावळिये बनावीने कळाप्रवीणनी दशा कही. ने कह्युं के एवी रीते निरंतर एनुं गुजरानछे. ने मित्रनुं नाम जपतां एना दहाडा जाय छे.॥१९॥

॥ गाहा ॥

जोगि गमन उद्यानं, ब्रह्मनि उकाति प्रबीन गुजर बिधि ॥
नव षष्ठी अभिधानं पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥२०॥

अर्थ. जोगियो प्रवीणना बागमां गया. अने प्रवीणना गुजराननी रीत कुसुमावळिये तेओने कही. ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी अगनोतेरमी लहेर संपूर्ण थई. ॥२०॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे जोगी उपबनागत कुसुमावलि चर्चा भेदो नाम नव षष्ठितमो लहरं ॥६९॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां उनसप्ततितम स्तरंगः समाप्तः॥६९॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद चोपाई ॥

कुसुमावळि जोगीने मळी, पत्र जोगिनो लइने वळी ॥
दिधो प्रविणने वांच्यो सही, ते शितेरमी लेहेरे कही ॥

॥ अथ बाग वनर्न रससागर कलाप्रबीन प्रसंगो यथा ॥

॥ दोहा ॥

कहत तबे कुसुमावली, आय भले संन्यास ॥
उर मांहि उन अनुराग भरि, कीजहु बाग निवास ॥ १ ॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळी कहेछे के हे संन्यासी? तमे भले आव्या. ने

मनमां प्रवीण उपर प्रीति राखीने आ बागमां निवास करो. ॥१॥

॥ पुनःकुसुमावलि उक्त शिक्षाक्षेप अलंकार ॥कवित॥

कुंद जपा केसरहे, झिल्लि दादुरा उचारे, खेलत मराल रंभा, पीपर सुहावने॥ कुसुम अनेक नागबेल चंपा नारंगन अंब बिंबहे अनार, कोकिल लवे घने॥ कीर आलि उच्छव, अंगूर पुंग लोंग एला, खंज कंज मधुक मयूर सारसा गने॥ कीश इश बंदिये ज्यु नंदिये मरालनाथ, उन अभिलाप आप, बागमें रहे बने॥२॥

अर्थ. वळी कुसुमावळी कहेछे के आ बागमां डोलर, जासुस, अने केसर छे. तमरां तथा देडकां बोलेछे. हंस रमेछे. केळो अने पींपळा शोभीता छे. अनेक प्रकारनां फूल छे. नागरवेल, चंपा, नारंगी, आंबा, घोलां, अने दाडम छे. अने घणी कोयलो बोलेछे. पोपट ने भमरा उच्छव करेछे. (अंगुर) लीली द्राख, सोपारी, लवींग, अने इलायची छे. खंजन पक्षी, कमळ, महुडा. तेम मोरने सारसना गण एटले जथा पण छे. माटे वांदराना ईश रामचंद्रजीने पगे लागीने हंसना पति ब्रह्माने निंदीने आप बागमां रहेवाथी ए प्रवीणनो अभिलाष पूरो थशे. ॥२॥

॥ अथ पूर्नोपमालंकार ॥ सवैया ॥

कोकिल रंभन थंभन कूजित, अंब कदंब गुलावहि फूले॥
छूटतहे जलजंत्र चहू दिश, ताल तमाल लता तर झूले॥
केसर मालति कुंद जुही पर, डोले मधूकर भूलेइ भूले॥ या
छबि बाग प्रवीन बसो इत, जोग सदा कइलासहि तूले. ३

अर्थ. केळोना थंभो उपर कोयलो शब्द करेछे. आंबा, कदंब. अने गुलाब प्रफुल्लित थयाछे. चारे दिशाओमां फुवारा छुटेछे. ताड अने तमाल

छे. अने वृक्षो उपर वेलो झूलेछे. केसर, मोगरा, डोलर तथा जुई, उपर भमरा भूली भूलीने भमेछे. एवी शोभावाळो आ प्रवीणनो बाग कैलास तुल्य छे. माटे हे जोगियो? आप हमेशां आंही वसो.॥३॥

॥ सोरठा ॥

बाग सु बर्नन कीन, बसवेकी ब्रह्मनि कही॥
तब प्रतिउत्तर दीन, सागर श्रीमुख कुसुमसें ॥ ४ ॥

अर्थ. एवी रीते बागनुं वर्णन करीने ब्रह्मपुत्रिये जोगिने त्यां निवास करवानुं कह्युं. त्यारे सागरे श्रीमुखथी ते कुसुमावळीने आ प्रमाणे प्रत्युत्तर दीधो. ॥४॥

॥ अथ स्मरनालंकार ॥ सवैया ॥

बिंब अनार दराख मिलावत, कीरहि टेरत क्यों न चरे॥ नारिंग ताल जह्मीरनके फल, पंकज पत्र लपेट करे ॥ फूले प्रसून गुलाबन लाल, हजारिकि ले पखरी बिखरे ॥ बासर बाग बितावत यों, हम प्यारि प्रवीनकि चाह भरे ॥ ५ ॥

अर्थ. घोलां, दाडम अने द्राक्ष एकठां करिये छिये. पण कांइ खाता नथी. अने पोपटने बोलाविये छिये. नारंगी, ताडनां फळ, अने लींबुनां फळ लईने कमळनां पत्रमां लपेटीने राखिये छिये. फूलेलां फूल, गुलाब अने रातां रंगवाळी हजारी लइने तेनी पांखडियो विखेरिये छिये. एवी रीते अमे प्राणप्रिय प्रवीणनी चाहनाथी भरपूर थइने आ बगीचामां दिवस गुजारिये छिये. ॥५॥

॥ अथ जमकोत्प्रेच्छालंकार ॥ सोरठा ॥

यहहे बाग अलोक, अवलोकत शिवलोक सुख ॥
विन परबीन सशोक, मनहु कोक दिनमनि विहिन ॥ ६ ॥

अर्थ. आ बाग अलौकिक छे. ते जोतां कैलासना जेवुं सुख उपजे. पण प्रवीण विना अमने शोकवाळो लागेछे.जाणे के सूरज विना चकवो होय.।६।

॥ छेकोक्ति अलंकार ॥ सोरठा ॥

सबे कहत सन्यास, गहन रहन नांहिन निकट ॥
प्रान प्रेम वस पास, कहा अंग अंतर भयो ॥ ७ ॥

अर्थ. सर्व लोको कहेछे के सन्यासिये जंगलमां रहेवुं. ने वस्तीनी नजीक रहेवुं नहीं. पण शुं करिये? अमारा प्राण तो प्रेमने वश थइने प्रवीणनी पासे वसेछे. अने अरे आ शरीरनो अंतर शा वास्ते थयो! ॥७॥

॥ छपय ॥

एती कहि सन्यास, एक पाती लिख लीनी ॥
पठवन कलाप्रवीन, करे कुसमावलि दीनी ॥
इन प्रति उत्र लिखाय, काल उपबन फिर आओ ॥
उत्तर आनन उक्ति, आप उनके सब लाओ ॥
धारवो धीर उनके सु मन, याद अंतर भव कीजिये ॥
उन प्रति अरजी कीजे इती, हम बिदाय सू दीजिये ॥८॥

अर्थ. संन्यासिये एटली वात कहीने एक पत्र लखीने तैयार कर्यो. अने ते कळाप्रवीण तरफ मोकलवाने कुसुमावळीना हाथमां दीधो. अने कह्युं के आनो प्रतिउत्तर लखावीने पाछां काल आ बागमां आवजो. वळी एमना मोढानो कहेलो उत्तर पण सर्व आप लावजो. अने एमना मनमां धीरज धरावजो. अने कहेजो के अंतःकरणमां शंकरनुं स्मरण करो. वळी एमनी पासे एटली अरजी करजो के. अमने जवानी रजा आपे. ॥८॥

॥ दोहा ॥

प्रेम उमासा उर भरे, नेन नीर भर आय ॥

रससागर पाती दई, ब्रह्मनि भेद सुनाय ॥ ९ ॥

अर्थ. एवुं कहेतां सागरने छातीमां प्रेमना उसासा भराई आव्या. अने आंख्योमां आंसु भराई आव्यां. अने कुसुमावळीने बधो भेद संभळावीने कागळ आप्यो. ॥९॥

॥ अथ वह पाती उदाहरन ॥ छंद भुजंगी ॥

परब्बीन प्रेमं कला आप जानो;उरं बीच काहू उदासी न आनो ॥ तुमें जा दिनांसें वही ब्रत्त लीया ॥ दीनां वाहीसें जोग आराध कीया ॥ हमें आजसें साधनाकों बनावे,वही वातका आप धोखा न लावे ॥ लिखा भागमें सो न कोऊ उथप्पे, अगे पंडवं राम आरन्य तप्पे ॥ वसे चिंत दूरंतरे सो न जानो, शशी सूर कूमोद कंज प्रमानो ॥ जहां जायकें जोग धूनी तपेगे ॥ तहां आपके नाम दामं जपेगे ॥ सधंते वही साधना आप लावे, हमें आप आराधसें सिद्धि पावे ॥ वही चिंतमें ईश उच्चार धारे, हमें सोंह जो आप ऊनी विचारे ॥ सुपंने मिलेंगे प्रती मास दोऊ॥ सुरत्ता लगाओ सु आधार सोऊ ॥ मिलेंगे नहीं ए अंदेसा न रक्खे॥इतें आयगे प्रत्य एके बरक्खे ॥ हमें जोग साधे महा सिद्धि लीजे ॥धरे धारनाकों बिदागीरि दीजे ॥ झरे नीर नेनां भरी आइ छत्ती ॥ दई सागरे ब्रह्मनी पान पत्ती ॥ १० ॥

अर्थ. ते पत्रमां लख्युं के हे प्रवीण ! तमे प्रेमनी कळाने जाणो छो. माटे मनमां कांइ उदासी लावशो नहीं. तमे जे दिवसथी कुमारिका व्रत लीधुं छे. ते दिवसथी जोगसाधना करोछो. अने अमे आजथी जोगसाधना

करशुं. माटे ते वातनो आप कांइ धोखो लगाडशो नहीं, जे नशीबमां लख्युं होय, ते कोइ उथ्थापी शके नहीं, आगळना वखतमां पांडवोए, अने रामे पण वनमां जइने तप कर्यु हतुं. जे मनमां वसेछे. ते वेगळे छे के तेना वच्चे अंतर छे. एम जाणवुं नहीं. जेमके चंद्रथी ने सूरजथी कुमुदनी ने कमळ ते कांइ छेटे नथी, एम मानो. तेमज अमे ज्यां जइने जोगधूणी तापशुं. त्यां आपना नामनी माळा जपशुं. आप जे साधन करोछो, तेनी सिद्धि आप पामशो. अने अमे आपनी आराधनाथी सिद्धि पामशुं. ईश्वरनुं नाम उच्चारीने अमे मनमां एज धार्युं छे. माटे आप कांइ मनमां ओछुं आणो तो तमने अमारा सम छे. दरमहिने आपणे बेय स्वप्नामां मळशुं. अने सुरता लगावीने रहेवुं. एज आपणे आधार छे. आपणे मळशुं नहीं, एवो संशय राखशो नहीं. केमके एक वर्ष पछी अमे आंही आवशुं. माटे अमे जोगसाधना करीने महासिद्धि पामिये, एवी धारणा राखी छे. ते वास्ते अमने रजा आपो. ए रीते लखीने पोतानी आंखमांथी आंसुं पडतां ने छाती भराइ आवतां. सागरे कुसुमावळीना हाथमां पत्र आप्यो. ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

कुसुम सु पाती दीन, प्रेम भरे पीछी लही ॥
काव्य नवीन सु कीन, तासु अंत पुनि लिखतहे ॥११॥

अर्थ. कुसुमावळीने पत्र आपीने वळी प्रेम भराई आववाथी पाछो लीधो. अने नवी कविता करीने वळी तेमां छेवट लखेछे; के. ॥११॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सोरठा ॥

जोगी काम कराल, तन तीरथमें मन मढी ॥
प्रेम पाहुरी ज्वाल, व्रह धूनी दूनी जगे ॥१२॥

अर्थ. कामदेवरूपी विकराळ जोगी शरीररूपी तीरथमां मनरूपी म-

ढीमां रहेछे. तेनी पासे प्रेमरूपी पावडी तथा विरहरूपी झाळवाळी धूणी धमणी जागेछे. ॥१२॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

नाभिके कुंड अहोनिश मंजत, लूंठत घाट त्रिकाल ठह्यो ॥
आवलि संचरसें चढिकें, उत चोकि बघंबर ध्यान ग्रह्यो ॥
झूलत हार हिंडोरनसें, कुचके गिरि आसन बार रह्यो ॥ का-
नन मिंत प्रवीन तुमें तन, या मननें मुनि भेख लह्यो ॥१३॥

अर्थ. मारूं मन जोगीरूपे थइने तमारी नाभीरूपी कुंडमां रात दिवस नायछे. अने तेना किनारा उपर त्रिवळीमां ठरीने त्रणेकाळ आळोटेछे. पछी रोमावळीने मार्गे चडीने छाती उपर पहेरेली चोकीरूपी वाघांबर उपर बेशीने ध्यान धरेछे.ने हाररूपी तपसीना हींडोळा उपर झूलेछे. कुचरूपी पर्वत उपर आसन वाळीने रहेछे. अने हे! प्रियमित्र प्रवीण! तमारा शरीररूपी जंगलमां रहेवासारुं आ मारा मने मुनिनो भेख लीधोछे. ॥१३॥

॥ अथ द्रष्टांतालंकार ॥ सोरठा ॥

मित मिलनको अंग, सहज सुभागहि पाइये ॥
रहत एक यों रंग; पय घ्रत दधि नवनित मठा ॥१४॥

अर्थ. मित्रना अंग साथे मळवानुं तो सारा भाग्यथी सहेजे पामिये. पण जेवी रीते दूध, घी, दहीं, मांखण, अने छाशमां धोळो रंग एकज छे,तेमज प्रेमनो रंग बंन्ने मित्रमां एकज प्रकारनो रहेछे. ॥१४॥

॥ रूपकालंकार ॥ सोरठा ॥

प्रेम परोहे तार; मन मोती गुन ग्रंथ करि ॥
हुओ मिंत उर हार; सो निशदिन लटकत रहे ॥१५॥

अर्थ. प्रेमना तारमां परोवाइने मनरूपी मोती गुणरूपी गांठथी मित्रनी

छातीनो हार थइने रातदिवस लटकतो रहेछे. ॥१५॥

॥ अथ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

प्रेमसें दारा भयो दरवेसहि, पैक सिकंदर प्रेम लपट्टा ॥
प्रेमसें फूल फकीर भये, पुनि प्रेमसें साह पने परिहट्टा ॥
किंकर प्रेम भयो गजनव्विय, प्रेम चिते बहराम उलट्टा ॥
प्रेम प्रवीन नवीन कला, यह प्रेम करी मजनू शिर जट्टा १६

अर्थ. प्रेमथी दाराशाह फकीर थयो. तेमज शीकंदर पादशाह (पैक फारशी शब्द छे) खास संदेसो लेई जनार नोकर साथे प्रेममां लपटायो हतो. "अने एक शाहजादी नौशावा साथे पण तेने दोस्ती थई हती" प्रेमथी फूल फकीर थयो, वळी प्रेमथी पन्नाशाह पादशाहीथी हठ्यो. अर्थात् छोडी दीधी. महमद गीजनवीने पोताना गुलाम (अयाज) साथे प्रेम थयो हतो. वहेरामना चित्तमां पण प्रेम उलट्यो हतो. हे प्रवीण! ए प्रेमनी कळा नविन छे. केमके मजनूये पण प्रेमथी माथे जटा करी हती आमां जेम आशकोनां नाम गणाव्यां छे तेमज—लेहेर ५८ मीना सवैया ४ तथा १५ मां माशुकोनां तथा आशकोनां नाम लख्यां छे. ॥१६॥

॥ दोहा ॥

दारा ओर सिकंदरहि, फूल पना सह मद्द ॥
बहरामरु मजनूं कियो, प्रेम सु हद बेहद्द ॥१७॥

अर्थ. ए रीते दारा, सिकंदर, फूल, पन्ना, महमद, वेहेराम, अने मजनु एओए बेहद प्रेम कर्यो हतो. ॥१७॥

॥ अथ द्दष्टांतालंकार ॥ छपय ॥

प्रेमसु हद बेहद, किया लेलां अरु वानां ॥
सुचित्र प्रेम सरसाय, सोय परिहद्दनि जानां ॥

भोरी जोरी प्रीत, मीत सावेनां बहरां ॥
जुगल रीतकी नीत, चित्त पाई गुलजहरां ॥
यह देह नेह एसे सुने, छेह भये जुग जाय छन ॥
परबीन दीन सब प्रेम वस, महत पुरुष उदार मन ॥ १८॥

अर्थ. लेलीये अने बानाये हद बेहद प्रेम कर्यो हतो. प्रेम प्रवित्र वखणाय छे. ते रंगरेजिये जाण्यो हतो. भोळी सावेना तथा बहरांये मित्र साथे प्रीत जोडी हती. ए बेनी नीतिनी रीत गुलचहेरा मनमां पामी हती. आ शरीरे एवां एवांना स्नेह सांभळ्या छे. के जेओने जुदां पडवाथी जुग जेवी क्षण जती हती. तेमज हे प्रवीण! उदार मनवाळा बधा मोटा पुरूषो पण प्रेमने वश्य दीन थइ गया छे. ॥१८॥

॥ सवैया ॥

आपहिके अभिधानके, अंकसु, सात गुने करि दोय समे ॥
बीस गुने करि चत्रदश हर, शेष रहे सो ग्रहे मनमें ॥
नोगुन नेक बिचार उने, परबीन कियो परमान हमें ॥
जेते भयेहे तिते जुगलों, अहो मिंत रहो चिरजीव तुमें ॥१९॥

अर्थ. आपना नामना जेटला अक्षर छे. (३) तेने साते गुणीने तेमां बे मेळववा (२३) पछी तेने वीश गुणा (४६०) करीने तेने चौदे भागवा. पछी जे बाकी (१२) रहे ते मनमां राखिये छिये. अर्थात् बारे मास तमने मनमां राखिये छिये. पछी तेने नव गुणा (१०८) करिये. हे प्रवीण? अमे एटलुं प्रमाण कर्युं छे. के ते जेटला थया, तेटला जुग सुधी हे मित्र? तमे चिरंजिव रहो. ॥१९॥

॥ सोरठा ॥

जिनहूको अभिधान, तिन अच्छर गिनती करो ॥

निकसत एह निदान ॥ आयुष जुग सत अष्टकी ॥२०॥

अर्थ. ए गणतरीमां एवो चमत्कार छेके हरकोइना नामना गमे तेट-ला अक्षर होय तेनी उपर प्रमाणे गणतरी करो,तो छेवट एज निकळवानुं, के तेनुं आयुष्य एकसोने आठ जुगनुं थाय. ॥२०॥

फिर पाति लिख एह, भई प्रेम पूरन दशा ॥
ब्रह्मनि पानि सु देह, कीन विदा परवीन प्रति ॥२१॥

अर्थ. ए प्रमाणे फरीथी पत्रमां लखीने प्रेमनी संपूर्ण दशा थई, अने ते पत्र कुसुमावळीना हाथमां आपीने प्रवीण तरफ विदाय करी. ॥२१॥

॥ अथ छंद धारा ॥

सागरं पती सु दीन, ब्रह्मनी सु पान लीन ॥ लेत सास नेन नीर, चित्तकी छुटी सु धीर ॥ फेर जोगि शीश नाय,मालनी मिलि बुलाय ॥ फंदनं चढी सु आन, कीन पट्टनं पयान ॥ आप व्हे गई उदास, आइहे प्रवीन पास ॥ देखितं दशा कुमार, बूझतं सु वार बार ॥ बाल ब्रंद भीर जान, ब्रह्मनी वदे न वान ॥ सो लही कलाप्रवीन, बालिका बिदाय दीन ॥ रेनकी इकंत धार, बूझने लगी विचार॥ आप आपही बिलाय, ब्रह्मनी वदी न जाय ॥ अंसुवा भरे उसास पत्रिका दई निकास ॥२२॥

अर्थ. सागरे पत्र आप्यो, ते कुसुमावलिये हाथमां लीधो, ने श्वास भरवा लागी, ने आंखमां आंसु आव्यां, अने मननी धीरज छूटी गई. फरी जोगीने मस्तक नमावीने मालणने बोलावीने मळी. पछी आवीने रथमां चढी बेठी. ने शहेरमां प्रयाण कर्युं. पोते उदास थई गई, ने प्रवीण पासे आवी. तेनी दशा जोईने कुंवरी वारे वारे पूछवा लागी, पण सखियोनां

टोळांनी भीड जाणीने कुसुमावळी कांइ वचन बोलती नहोती, ते वात कलाप्रवीण समजी गई,एटले तेणे सखियोने रजा आपी, पछी रातनी एकांत धारीने ते विचार पुछवा लागी. ते बंन्ने पोत पोताना मनमां विलखवा लाग्यां, पण कुसुमावळीथी कांइ बोली शकातुं नहोतुं. तेणे उसासा भरीने आंखमां आंसु लावीने कागळ काढीने आप्यो. ॥२२॥

॥ सोरठा ॥

पाती कुसुम सु दीन,बोली जात न बात कछु ॥
बंचे बिना प्रबीन, उर उदास आई अगम ॥२३॥

अर्थ. कुसुमावळिये पत्र आप्यो, पण तेनाथी कांइ वात बोली शकाती नहोती. तेथी प्रवीणने कागळ वांच्या वगर आगळथीज मनमां उदासी आवी. ॥२३॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

लई पतियां कर बंचत नार, इतैमहि नेन भई जल धार ॥ गरो भरि आयगयो तिहि काल, नहीं कछु बोलनकी सुध बाल ॥ भरे दुख गूढ सु प्रौढ उसास, जरे उन ज्वाल सु ज्योम अकास ॥ अटा अनुमानतहे सु उजार, तपे तलफे तन बारहि बार ॥ गई जुग ग्रंथ जुराफन छूटि, किधों लकरी गइ हारन तूटि ॥ लई गति सोय समे परबीन, किधों बिछुरे सु महाजल मीन ॥ लगे घन घोर चहू दिश गाज, किधों अकुलाय उठे म्रगराज ॥ खमां कहि ब्रह्मनि धारति धीर, इते महि होत असाध शरीर ॥ चई सुध मूरत एक बहंत, तबे कुसुमावलि एह कहंत ॥ कहा मुरझाय रहो निज चिंत, सुनो उनके सु कहें बरतंत ॥ फितो समुझावत ब्रह्मकुमार,

लखाइ सु नीठहि नीठ उचार ॥२४॥

अर्थ. त्यारे प्रवीणे हाथमां कागळ लइने वांचवा मांड्यो. एटलामां तो तेनी आंखेथी आंसुनी धारा थवा लागी.अने ते वखते तेनुं गळुं भराई आव्युं. ने ते वाळाने कांई बोलवानी शुध रही नहीं. गुप्त दुःखथी मोटा उसासा भरवा लागी. तेनी ज्वाळाथी पृथ्वी ने आकाश बळवा लाग्यां. हवेलीने तो ते उजड जेवी जाणवा लागी. तेनुं शरीर वारे वारे तपवा ने तलफवा लाग्युं. जाणे के सुराफ पक्षीना जोडानी गांठ छुटी गई. किंवा हारल पक्षीना पगमांनी लाकडी तुटी गई, एवी गति ते वखते प्रवीणे लीधी. जाणे के महा जळमांथी माछलुं जुदुं पड्युं. किंवा आकाशमां वर्षादनी घोर गर्जना थवाथी सिंह अकळाइने उठ्यो. त्यारे कुसुमावळी खमा खमा कहीने तेने धीरज धरावा लागी. एटलामां तो तेनुं शरीर असाध्य थई गयुं. ने बे घडी गया पछी तेने भान आव्युं. त्यारे कुसुमावळी एवी रीते कहेवा लागी, के तमे पोताना मनमां मुंझाइने शुं रहो छो, ए जोगीनुं वृत्तांत कहुं ते सांभळो. एम कहीने कुसुमावळी केटलीक रीते समजावीने मांड मांड बोलावा लागी.॥२४॥

॥ दोहा ॥

नीठ नीठ चरचा चली, धीर द्रढाई चेत ॥
कुसुम कहि सन्यास विध, आदि अंत परजंत ॥२५॥

अर्थ. मांड मांड चर्चा चलावीने तेना मनमां धीरज द्रढावी, पछी कुसुमावळिये ते जोगीनुं आदिथी ते अंत सुधीनुं वृत्तांत कह्युं.॥२५॥

आध निशा अनुमान भो, नित उत समो निहारि ॥
जोगिनि रूप प्रवीन लिय, बीन सु ब्रह्मकुमारि ॥२६॥

अर्थ. आशरे अरधीरात्रिनो समय थयो, ते जोइने रोजनी पेठे, त्यां

प्रवीणे जोगिणीनुं रूप लीधुं, अने कुसुमावळिये वीणा लीधी.॥२६॥

॥ सोरठा ॥

पूजन कीन प्रकार, छिन छिन तलफत मिंत बिन ॥
पावक बिरह अपार, रोम रोम लागी रमन ॥२७॥

अर्थ. पछी पूजानो प्रकार कर्यो. पण मित्र विना क्षणे क्षणे तलफेछे. अने अपार विरहाग्नि रुंवाडे रुंवाडे रमवा लाग्यो.॥२७॥

॥ समरूपक अलंकार ॥ सोरठा ॥

सुरत व्रत्त वृति धार, मन मित प्रत करियत गमन ॥
न बदों शब्द उचार, बंश कुलट विधना बदत ॥ २८॥

अर्थ. पोतानी सुरतरूपी नटना दोरडा उपर वृत्ति धरी राखीने तेनुं मन मित्र तरफ गमन करवा लाग्युं, अने प्रेम रूपी वांस उपर गुलांट खावा लाग्युं. पण विधाता नबदुं नबदुं एवो शब्द उच्चारवा लाग्यो.॥२८॥

॥ गाहा ॥

कुसुम जोग पहिचानं, पाती व्रति प्रबीन बंचन बिधि॥
सित्तरमो अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥२९॥

अर्थ. ए रीते कुसुमावळी अने जोगीनी ओळखाण थई. तथा जोगीनो कागळ प्रवीणे वांच्यो ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ शीतेरमी लहेर संपूर्ण थई॥२९॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे सन्यास कुसमावलि चरचा कलाप्रवीन पत्र पठन भेदो नाम सित्तरमो लहरं ॥७०॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां सप्ततितम स्तरंगः समाप्तः॥७०॥



॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद मोतीदाम॥

परस्पर पत्र लख्या रति लावि, जई पछी जोगि अलेख जगावि॥
सु उक्तिनि जुक्ति थकी रचि जेह, इकोतरमी लहरी कहु एह॥

॥ अथ जोगेश्वर चरचा फेरी गमन प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

बाग वसत सन्यास वह, लगे सु निज बतरान ॥
जाय न जच्चे ओर पुर, जगे अलख इहि थान ॥१॥

अर्थ. बागमां वसता ते सन्यासियो पोते वातो करवा लाग्या, त्यारे सागरे कह्युं के बीजा शहेरमां जइने जाचवुं नहीं. पण आ ठेकाणे तो अलेख जगावियें.॥१॥

॥ अथ छंद तिलक ॥

यह जोग वहे, निज बात कहे; नहि ओर रचें, नन आन जचें ॥ जेहि प्रेम हिया, निज जोग लिया; तिहि प्रत्ति मगे, अलखं ज्यु जगे ॥ सब सत्य कह्या, उठ पंथ लह्या; किय मोद उरं, परबेस पुरं; निश आध वही, मुख बान लही ॥ गलि आन फिरे, सु उचार करे ॥ २ ॥

अर्थ. वळी ते जोगी एटले सागर मोढेथी पोतानी वात कहेछे के बीजे ठेकाणे कांइ नहीं करियें. अने बीजाने नहीं जाचियें. पण हैयामां जेना प्रेमथी में जोग लीधो छे, तेना प्रत्ये जइने मागियें, अने अलेख एटले अलक्ष्य, लक्षमां न आवे एवा ईश्वरने जगावियें. त्यारे बधाये कह्युं के ठीक छे. पछी उठीने मारगे रस्तो लीधो. ने मनमां आनंद लावीने पुरमां प्रवेश कर्यो. त्यारे अरधीरात्रि गइ, त्यारे मोढेथी वाणी कहेवा मांडी. अने शेरियेशेरिये फरीने मारगे उच्चार करवा मांड्यो.॥२॥

॥ दोहा ॥

पुर पंथन परबेस किय, प्रेम बिबस सन्यास ॥
गहरी धुनि भंखित सबद, मिंत बिलोकन आस ॥ ३ ॥

अर्थ. प्रेमने वश्य थई गयेला ते सन्यासिये शहेरना रस्ताओमां प्रवेश कर्यो,अने मित्रने जोवानी आशाथी गंभिर ध्वनीथी शब्द बोलवा लाग्या.३

॥ अथ वह शब्दोदाहरनं ॥ गूढोक्ति असंगति संकर अ-
लंकार ॥ छंद चिंतामनि ॥

जगीहे जोगकी धूनी, बरष्षत बुंदसें दूनी ॥ विना लकरे सु नां बूझे, नयनसें जोत नां सूझे ॥ निकटसें ताप नां लागे, सन्यासी दूरसें दागे ॥ पियाला प्रेमका पीया ॥ उनोने मायना लीया ॥ सरोवर अंतरिछ नीरा, चले चहु ओर जल सीरा ॥ बसतहे तीरपर हंसा, न लोहू हाड अरु मंसा ॥ भरे परिपूर बिन मेहा, तहांहे जोगिको नेहा॥ पियाला प्रेमका पीया, उनोने मायना लीया ॥ गिरब्बर श्रृंग नवरंगी, शिखर शिर कंजमें भ्रंगी॥ न पोचे पाव परवारा, अपंगीका सु अस्वारा ॥ बिना सिर बासके भोगी, लगेहे साधना जोगी ॥ पियाला प्रेमका पीया, उनोने मायना लीया ॥ सुचीका सेलकी अग्रा, चहु दिश बार हे नग्रा ॥ उनो मध देवका डेरा, त्रिवेनी तासके फेरा ॥ करे तन खंड सो जावे, सुरत जोगी तहां लावे॥ पियाला प्रेमका पीया, उनोने मायना लीया ॥ महल अजगेबकी माया,झरोखा व्योमसें लाया ॥ न पहुचे चंद अरु सूरा, उनोसें सहस गुन नूरा ॥ मनी मानंक जहँ थापे, तहां सन्यास तन तापे ॥ पियाला प्रेमका पीया, उनोने मायना लीया ॥ जमीमें बीज लगवाया,

विरस्त ब्रहमंडमें छाया ॥ परंदा पांख विन आये, मधू बिसराम ठहराये ॥ वही फल फूलकी आशा, कियाहे जोगिने वासा ॥ पियाला प्रेमका पीया, उनोने मायना लीया॥ हला हल सिंधुके धारा, अगिनका द्वीपहे सारा ॥ ब्रखा खग धारसें पाते, कटे उसराहकों जाते ॥ मुनी तहां डार म्रगछाला, जपे निज नेनकी माला ॥ पियाला प्रेमका पीया, उनोने मायना लीया ॥४॥

अर्थ. एकने कहीने बीजाने संभळाववुं, तेनुं नाम गुढोक्ति अलंकार छे. ते प्रमाणे आ छंदमां जोगीने लागु पडता शब्दो लोकोमां कहीने प्रवीणने संभळाव्या छे. कारणथी उलटे ठेकाणे कारज उपजे अर्थात् विरुद्ध क्रिया थाय, तेनुं नाम असंगति अलंकार कहेवाय. ए रीते ए बे अलंकार संकर कहेतां मिश्रित आमांछे.

जोगी विषे--जोगीनी धूणी बळेछे. ते वरसादनां फोरां वरसवाथी वधारो थायछे. तेमां लाकडां नथी, तो पण ओलाती नथी. तेनुं तेज आंख देखातुं नथी. तेना समिपमां ताप लागतो नथी. पण सन्यासी वेगळेथी दाझे छे. जेणे प्रेमनो प्यालो पीधो होय, तेणे तेनो अर्थ समजी लीधो छे.

मनलख के चिदानंद ब्रह्मरूपी धूणी जागृतछे. अने तेमांथीज दुनियामां सृष्टि थायछे. तेमां बळतण नाखवुं पडतुं नथी. तेम छतां ते जोत बुझाइ जती नथी. अने चर्मचक्षुथी ते जोत देखवामां आवती नथी. अने ते सर्वत्र व्यापक छे. तो पण तेनो ताप लागतो नथी. पण तेनुं साधन करनारा सन्यासियो तेना वियोगथी अर्थात् दर्शन कर्या विना मनमां दाझेछे.

प्रवीण विषे--सागर कहेछे के प्रवीणरूपी जोगिनी धूणी विरहाग्निथी सळगती

रहीछे. ते आंसुनां बिंदु वरसवाथी बमणी सळगे छे. एमां लाकडां नाख्या विना पण ओलाइ जती नथी. तेनो भडको नजरथी जोवामां आवतो नथी. जो तेना समिपमां होइये, तो ताप लागे नहीं; पण तेनाथी दूर पडवाथी आ सन्यासी दाझेछे. जेणे प्रेमनो प्यालो पीधोछे, तेणे तेनो अर्थ समजी लीधो छे.

जोगि विषे--एक अंत्रिक्षे जळ भरेलुं सरोवर छे. तेमांथी चारे तरफ पाणीनी सेर्यो चाले छे. तेना कांठा उपर हंस वसेछे.तेना शरीरमां लोही, हाडकां के मांस नथी. वर्षाद विना ते सरोवर भरपूर रहेछे. त्यां जोगीनो स्नेह छे. जेणे प्रेमनो०॥

मतलब के जे जळथी आ सृष्टि उत्पन्न थइछे. ते जळ भरेला सरोवररूप ब्रह्म ते आकाशमां व्यापक छे. तेमांथी चारे तरफ नीरनी सेर्यो चालेछे. अर्थात् एमांथी बधे व्याप्त थाय छे, (हंस) आत्मा तेना समीपमां रहेछे. ते आत्मामां लोही, हाडकां के मांस नथी. वर्षाद विना अर्थात् तेमां कांइ पूरवणी मळ्या वगर ते ब्रह्मरूपी सरोवर परिपूर्ण रहेछे. जोगी लोको त्यां प्रेम लगाडेछे. जेणे प्रेमनो०॥

प्रवीण विषे--प्रवीणनी आंख्योरूपी सरोवर अंतरिक्ष एटले अधरछे, ते पाणीथी भरपूर छे, तेमांथी चारे तरफ जळनी सहेर्यो चालेछे, तेना किनारा उपर मारो (हंस) जीव वसेछे, तेमां लोही हाडकां के मांस नथी, अने ते आंख्योरूपी सरोवर वर्षाद वगर जळथी परिपूर्ण भरेलुं छे, तेमां आ जोगीनो स्नेह लाग्योछे. जेणे प्रेमनो०॥

जोगी विषे--नविन रंगनुं पर्वतनुं शिखरछे,ते शिखर उपर कमळमां भमरो रहेछे. त्यां पगवाळा के पांखोवाळा पहोंची शके नहीं, त्यां पग वगरनानोज अखाडो छे. अने जे माथा वगरनो होय, ते कमळनो वास

लेवानो भोगी छे,जोगी तेनी साधना करवा लाग्या छे,जेणे प्रेमनो०॥

मतलब के देहरूपी पर्वतना शिखररूपी ब्रह्मरंध्र उपर (हजार पांखडीनुं) कमळ छे, तेमां आत्मारूपी भमरो रहेछे, त्यां पगनी गतिवाळा के पांखोनी गतिवाळा पहोची शके नहीं, पण पग वगरना अनुभवीनो त्यां अखाडो छे, अने माथा वगरना अर्थात् विदेही जनो तेनी वासना लेवाना भोगी छे, जोगियो तेनी साधना करवा लाग्या छे, जेणे प्रेमनो प्यालो०॥

प्रवीण विषे--प्रवीणना स्तनरूपी नविन रंगनुं शिखर छे, ते शिखरना उपर कमळरूपी दीटडीमां शामतारूपी भमरो छे. त्यां पगवाळा के पांखोवाळा कोई पहोची शके नहीं. पण पग वगरना मारा मननो त्यां अखाडो एटले निवास छे. हुं माथा वगरनो थइने तेनी सुगंध लेवानो भोगी थयो छुं, अने जोगसाधना करवा लाग्यो छुं, जेणे प्रेमनो०॥

जोगी विषे--सोयनी अणीना अग्र उपर चारे तरफ चार शहेर वसेलां छे, ते वच्चे देवनुं देवळ छे, तेने फरती गंगा जमनां अने सरस्वति ए त्रण नदियो छे. जे शरीरनो नाश करे, ते त्यां जइ शके. जोगियो त्यां सुरत लगावे छे, जेणे प्रेमनो०॥

मतलब के सोयनी अणीना अग्रथी पण सुक्ष्म चिद्ब्रह्म छे. तेमां चारे तरफ उद्भिज, अंडज, स्वेदज, जरायुज, एवी चार खाणोरूपी चार शहेर वसेल्लांछे,तेमां ब्रह्मनुं स्थानक छे,अने तेना फरती जीव इश्वर ने मायारूपी त्रिपुटी छे, जेणे प्रेमनो प्यालो०॥

प्रवीण विषे--सोयनी अणीना अग्र जेवी प्रवीणनी दृष्टि छे. तेना उपर मारां मन, बुधि, चित्त अहंकार, ए चारे अंतःकरणरूपी चार शहेर वसी रह्यां छे. तेमां प्रेमरूपी देवनुं स्थानक छे. ते दृष्टिनी चोतरफ श्वेततारूपी गंगा,रक्तारूपी सरस्वति, अने शामतारूपी यमुनां छे. जे पोताना शरीरना

चूरे चूरा करे, ते त्यां सुधी जइ शके, आ जोगी त्यां सुरत लगाडी रहेछे. जेणे प्रेमनो प्यालो०॥

जोगी विषे--अजायेब जेवा गेबी महेलनी माया छे. तेना झरुखा आकाश साथे लाग्या छे. ज्यां सूरज के चंद्र पहोची शकता नथी, केमके तेनाथी पण हजारगणुं तेज छे. एवा मणी ने माणेक ज्यां स्थापेला छे. सन्यासियो त्यां रहीने शरीरे तप करेछे. जेणे प्रेमनो प्यालो पीधो होय०॥

मतलब के गेबी (गुप्त) शरीररूपी महेल छे. तेनी माया अजायेब जेवीछे. दश द्वाररूपी तेनां झरोखा आकाश तरफ लागी रह्यां छे. ते ब्रह्मरंध्रमां सूर्यनो के चंद्रनो प्रकाश पहोची शकतो नथी. अने तेनाथी हजार गणा तेजवाळां जीव इश्वररूपी मणी माणक ज्यां रहेलां छे, त्यां मननी स्थीति राखीने सन्यासी शरीरे तप करे छे. जेणे प्रेमनो०॥

प्रवीण विषे--प्रवीणना गेबी महेलनी अजायेब जेवी रचना छे, तेना झरोखा आकाश सुधी लागेला छे, तेमां चंद्र अने सूरज जेवा पण पहोची शकता नथी, अने तेनाथी हजार गणां तेजवाळां प्रवीणनां नेत्ररूपी मणी माणक ज्यां रहेलां छे, आ सन्यासी त्यां मन राखीने शरीरे तप करेछे, जेणे प्रेमनो०॥

जोगी विषे--पृथ्वीमां बीज रोप्युं, अने तेमांथी उगेलुं वृक्ष आखा ब्रह्मांडमां छवरायुं त्यां पांख विनाना पक्षी भमराये आवीने विश्राम ठराव्यो. ते झाडनां फळ फूलनी आशाये जोगिये निवास कर्यो छे. जेणेप्रेमनो०॥

मतलब के मायारूपी पृथ्वीमां चैतन्यरूपी बीज वाव्युं, तेमांथी वैराटरूपी वृक्ष उगीने आखा ब्रह्मांडमां छवरायुं, त्यां परमात्मारूपी पांख वगरना भमराये निवास कर्यो. ते झाडना फळ फूलरूपी मोक्षनी आशाथी जोगियो निवास करेछे. जेणे प्रेमनो०॥

प्रवीण विषे--प्रवीणनी छातीरूपी पृथ्वीमां प्रेमनु बीज वाव्युं, तेनुं झाड उगीने अर्थात् विस्तार पामीने आखा शरीरमां व्यापी गयुं. त्यां पांख वगरना भमरारूपी मारा मने आवीने निवास कर्यो, ए झाडना फळ फूलनी आशाथी आ जोगिये निवास कर्योछे. जेणे प्रेमनो०॥

जोगी विषे--झेरना दरियाने पार बधो अग्निनो बेटछे. त्यां तरवारनी धार जेवां पांदडावाळां झाडछे. तेने जे कापी शके, ते ए रस्ते जाय.त्यां मुनि मृगचर्म पाथरीने पोताना नेत्रनी माळा जपेछे. जेणे प्रेमनो०॥

मनलब के संसाररूपी झेरना समुद्रने पार गया,एटले वळी ते तज-वाना परितापरूपी अग्निनो बेट आवेछे, ते उपर अनेक प्रकारना विघ्नरूपी तरवारनी धार जेवां पादडानां झाडछे. तेने कापी शके, ते मोक्षने रस्ते जाय,ने रस्तामां मृगचर्म बिछावीने मुनियो पोतानी अंतर दृष्टिरूपी माळा जपेछे. जेणे प्रेमनो०॥

प्रवीण विषे--लोक लज्जा अथवा लोकोनी अदेखाइरूपी झेरना दरियाने पार जइए त्यां वडीलोना क्रोधरूपी अग्निनो बेट आवेछे. ते उपर तरवार जेवां पांदडावाळां अनेक हरकतोरूपी झाडछे. ते झाडने कापे ते मित्रना मेळापने रस्ते जइ शके, त्यां हुं सन्यासी मृगचर्म बिछावीने मारा नेत्ररूपी माळा जपुछुं, अर्थात् मारां नेत्र वारंवार तमारी तरफ लगाडुछुं, जेणे प्रेमनो प्यालो पीधो होय तेणे आनो अर्थ समजी लीधोछे॥४॥

॥ सोरठा ॥

इहि विधि शबद उचार, करत आय जोगी तहां ॥
जहां प्रवीन अटार, झुकित झरोखा प्रति गली ॥५॥

अर्थ. ज्यां प्रवीणनी हवेलीना झरुखा झूकी रह्याछे, ते शेरी प्रत्ये जोगी ए प्रकारना शब्दनो उच्चार करता आव्या.॥५॥

॥ गाहा ॥

स्वामी सबद उचारं, कलाप्रबीन कान सुर पहियं ॥
विरहा लहर उमहियं, लहियं तन विदेह गति बाला॥६॥

अर्थ. ते स्वामीना शब्दना उच्चारनो स्वर कळाप्रवीणना कानमां पड्यो, तेथी विरहनी लहेर उलटी आवी, ने ते बाळाये शरीरे विदेहीनी दशा लीधी, अर्थात् बेभान थई गई.॥६॥

तबहि कुसुम उच्चरियं, हांहां मनमें द्रढाव अब रक्खे ॥
आय समय मनुहारं, वह सन्यासं करीहु सनमानं ॥७॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळी बोली के हां हां आ बखते मनमां द्रढाव राखो, अने आ सत्कार करवानो वखत आव्यो छे, माटे ते सन्यासीनुं सनमान करो. ॥७॥

मिंत भेख सन्यासं, आय प्रथम अलख्ख इत जग्गे ॥
कछु मनुहार उपायें, आशाभर निराश जनि जाये ॥८॥

अर्थ. तमारा मित्रे सन्यासीनो वेष लेईने प्रथम आंही आवीने अलेक जगावी छे, माटे कांइ सनमान करिये. केमके ते आशा भरेला छे, ते निराश न जाय. ॥८॥

॥ सोरठा ॥

कुमरि धीर मनु धार, करन लिये मनुहारके ॥
कुसुम कही तिहि बार, इत इनकों ठहराइये ॥९॥

अर्थ. त्यारे कुंवरिये मनमां धीरज धारीने सनमान करवा वास्ते ते वखते कुसुमावळीने कह्युं के आंही एमने उभाराखो. ॥९॥

॥ चोपाई ॥

कहि प्रबीन झांखी उठ जाओ,तर झरोख सन्यास बुलाओ॥

तो मनुहार कछू पहुचावे, प्रथम शब्द खाली जनि जावे ॥ सुनियत कुसुम झरोखन आई, करि पुकार पहिरात सुनाई ॥ कहो निकट सन्यासी आवे, भिच्छा कुमरि ताहि बकसावे ॥ सुनत एह पहरात कहाये, अटा नीठ सन्यास ज्यु आये ॥ उलटित प्रेम मोद मन बाढे ॥ जोगि झरोख जाय तर ठाढे ॥ १० ॥

अर्थ. प्रवीणें कह्युं के तमे उठीने जइने जुओ. अने आपणा झरोखानी नीचे सन्यासीने बोलावो. तो आपणे कांइक सनमान दाखल तेमने पहोचाडिये. केमके तेमणे आंही प्रथम शब्द कर्यो, ते खाली जाय नहीं. एवुं सांभळीने कुसुमावळी झरोखामां आवी, अने तेणे पोकार करीने पहेरेगिरने संभळाव्युं जे, कहो के ते सन्यासी महेलनी पासे आवे. एटले कुवरी तेने भिक्षा आपे, एवुं सांभळीने पहेरेदारे जोगीने कह्युं, तेथी हवेलीनी पा ते सन्यासी आव्या, अने तेना मनमां प्रेम उलट्यो, तथा आनंद वध्यो, रीते जोगी जइने झरोखा नीचे उभा रह्या. ॥२०॥

॥ दोहा ॥

जोगि ठढाय झरोखतर, कुसुम सु कही प्रवीन ॥
बाज उठी बाला सु तित, अति अभिलाष सु लीन ॥११॥

अर्थ. जोगीने झरोखा तळे उभा राखीने कुसुमावळिये प्रवीणने कह्युं. एटले त्यांथी ते बाळा वेगथी उठी, अने जोवानी अभिलाषामां अतिशे लीन थइ गइ. ॥२१॥

॥ अथ छंद नाराच ॥

प्रवीन देव सेवको समान लीन हाथसें ॥ झरोख आय झंखिपं लगी अराध नाथसें॥ गुलाब नीर चंदनं चुआ गुलाल अ-

त्तरं ॥अबीर फूल केसरं झरोखसें लगी झरं॥ करंत सेव सिद्धकी परे कुमारिका चहे॥महेश बानि याद लाय ब्रह्मनी करं ग्रहे ॥ गई सु ध्यान चूकिकें उसास बालिका भरे॥ झरंत नेन नीर सो सन्यास अंगपें परे॥सबे सु सीत स्त्राव मध्य एक धार तप्पियं,परेख कीन प्रेम लीन जोगि तार जप्पियं.।१२।

अर्थ. प्रवीणे देवनी सेवानो सामान हाथमां लीधो,अने झरोखे आवीने, जोइने,नाथनी आराधना करवा लागी, गुलाबजळ, चंदन, चुवा, गुलाल, अत्तर, अबीर, फूल अने केसरनी झरोखेथी झडी करवा लागी. ए रीते सिद्धनी सेवा करतां ते कुमारिकाये त्यांथी पडतुं मुकवानुं धार्युं, त्यां शीवे देरामां कह्युं हतुं, जे आत्मघात करशो नहीं; ते वाणीनुं स्मरण करीने कुसुमावळिये तेनो हाथ पकड्यो,एटले ते बालिका पडवानुं ध्यान चूकी गई, ने उसासा भरवा लागी, अने तेनी आंखेथी जे आंसु खर्यां, ते सन्यासीना शरीर उपर पड्यां, त्यारे गुलाबजळ आदिक सर्वे थंडी धाराओ थती हती, तेमां एक आंसुनी उनी धारा पडी,ते उपरथी तेना प्रेमनी परिक्षा करीने जोगिये ॐकारनो उच्चार कर्यो, अर्थात् ईश्वरनुं नाम लीधुं. ॥१२॥

॥ प्रथम भेद विषमालंकार सागरोक्त गाहा ॥

शीतल सुखद सुबासा, अमृत धार मेघ झर मंडिय ॥
इहि नयरे अचरिज्जं,तद अंतरेण तपीत विषधारा ॥१३॥

अर्थ. सागरे कह्युं के आ नगरमां एक आश्चर्य जेवुं छेके,सीतळ सुख आपे एवी,अने सुगंधीवान अमृतनी धाराथी वर्षादनी झडी मंडाई, तेनी अंदर तपेली झेरनी धारा वरसे छे?? ॥१३॥

॥ अथ छंद मल्लिका ॥

जोगि गाहनी बदंत,गोंनकी चहंत चंत॥भेद सो प्रबीन पा-

य, ठोरसें उठ्यो न जाय॥ ब्रह्मनी भरी सयान, संकसें तजे न पान॥ आयेहे न्नरे ज्यु आश, जाय क्यों वहे निरास॥ एह धारितं सु बाल, कंठकी गुलीक माल॥ प्यालिका जराव एक, छेहरे अँगोछ टेक॥ नीक बिंदवा प्रबीन, जोग नीठ हार दीन॥ तापसं हुलास लाय, जायके लये उठाय॥कीन गोन बाल वंद, लीन फेर बानि छंद॥१४॥

अर्थ, पछी ते जोगी गाथिनी एटले गाथा बोलता बोलता त्यांथी जवानी इच्छा चित्तमां करेछे, ते मर्म प्रवीणे जाण्यो; तेथी ते ठेकाणेथी तेनाथी उठी शकातुं नथी, अने डहापणनी भरेली कुसुमावळी प्रवीण आहीथी पडतुं मुकशे, एवी शंकाथी तेनो हाथ छोडती नथी, त्यारे प्रवीणे धार्युं के जे आशा भरेला आव्या छे, ते निराश केम जाय, पछी पोताना गळानी मोतीनी माळा, अने एक जडाउ प्याली, तथा नीक नामना जवाहीरथी जडेली बिंदली, एटलां वानां अंगुचाना छेडामां बांधीने जोगीनी आगळ नाखी दीधां,तेथी एवो मर्म जणाव्यो के तमे मारा हैयाना हारछो, मारा जीवननुं पात्रछो, अने मारा भाग्योदयना मणी अर्थात् दिनमणी एटले सूर्यरूप छो. त्यारे ते तपसिये आनंद लावीने जइने उपाडी लीधां, अने एमनाने सळाम करीने चालवा लाग्या, अने मोढेथी फरीने छंदनी वाणी बोलवा लाग्या. ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

गोन सन्यासी कीन, सहर गली उचरित सबद ॥
बिकल भये परबीन, धीर द्रढावत ब्रह्मनी॥ १५॥

अर्थ. शहेरनी गलियोमां शब्द उचारतां जोगिये गमन कर्युं, त्यारे प्रवीण बेहोश थई गई,एटले कुसुमावळी तेने धीरज द्रढावा लागी. ॥१५॥

॥ अथ छंद मुक्तदाम ॥

चले कर जोगिय बानि उचार, कलापरबीन बढी ब्रह झा-र ॥ भयो दुहु पूरन प्रेम प्रकास, उभे उर छंडत दीह उसा-स ॥ असू द्रग दोय न सूकत धार, बिलोकत संचर बारहि बार ॥ अगे पग जोग सु नीठ धरंत, इते महि बाल बिहाल परंत ॥ गली वह जोग उलंघित जाहि, इतेमहिं राजसुता सुधि नांहि ॥ धरे कुसुमावलि धीर प्रबीन, शबद उचार सन्यासिय लीन ॥१६॥

अर्थ. जोगी वाणीनो उच्चार करता चाल्या, त्यारे कळाप्रवीणने विरहनी झाळ वधी, ते बन्नेने प्रेमनो संपूर्ण प्रकाश थयो, अने बंन्नेजणां छातीमांथी लांबा उस्वास नाखेछे, बेयनी आंखमांथी आंसुनी धारा सुकाती नथी, वारे वारे ते रस्ता सामुं जुएछे, जोगी मुशकेलीथी आगळ पगलुं धरेछे, एटलामां तो प्रवीण बेहाल थइने पडी, अने ए शेरी उलंघीने जोगी गया, एटलामां तो राजकुंवरीने कांइ सुध रही नहीं, त्यारे कुसुमावळी प्रवीणने धीरज धरावा लागी, अने सन्यासिये नीचे लख्या प्रमाणे शब्दनो उच्चार लीधो. ॥ १६ ॥

॥ अथ वह शब्द उदाहरनं ॥ छंद ॥

॥रूपकातिशयोक्ति अलंकार ॥

कोइ अजब तमासा देखा, जहाँ रूप रंगकी रेखा ॥ अजब गैबि इक मेहेल बन्याहे, सब दुनियासें न्यारा ॥ चंद सूरकी किरन न पहुचें, अखंड ज़ोत उजियारा ॥ कोइ अजब तमासा देखा, जहाँ रूप रंगकी रेखा ॥ बिना मूलका बाग बन्याहे, चहुं दिश लगे फुवारे ॥ बिना पांखके भ्रवरा बेठा,

मगन प्रेम मतवारे ॥ कोइ अजब तमासा देखा, जहाँ रूप रंगकी रेखा ॥ अधर सरोवर अम्रत भरिया, वापर बेठे हंसा ॥ मुगताफलकों चुग चुग खावे, वाकों लोहु न मंसा ॥ कोइ अजब तमासा देखा, जहाँ रूप रंगकी रेखा ॥ बाननवाला बान चलावे, अधर निशान उडावे ॥ पाडे सो तो जुग जुग जीवे, चूकेसो मरजावे ॥ कोइ अजब तमासा देखा, जहाँ रूप रंगकी रेखा ॥ बिना बादरे मेह मंडाना, धरती परे न पानी ॥ जाननहारे भेद विचारे, एह प्रवीन निशानी ॥ कोइ अजब तमासा देखा, जहाँ रूप रंगकी रेखा. ॥१७॥

अर्थ. में कोई अजाएब जेवो तमासो दीठो, के ज्यां रूप ने रंगनी रेखा छे, त्यां अजायेब जेवो गेबी एक महेल बनेलो छे, ते बधी दुनियांथी न्यारो छे, त्यां चंद्रने सूरजनी किरणो पहोचती नथी, अने अखंड जोतनुं अजवाळुं छे. में कोई अजायेब जेवो०॥

मतलब के रूप ने रंगनी रेखा जेवी पंचभूतात्मक माया छे, तेमां अजायेब जेवो एक तमासो देखाय छे. ते एके ते बधी मायाथी जूदो अजायेब जेवो एक चिद्ब्रह्मरूपी गुप्त महेल बनेलो छे. त्यां चंद्र ने सूर्यनी किरणो पहोचती नथी. पण अखंड जोतनुं अजवाळुं छे. में कोई अजायेब०॥

प्रवीण विषे--में कोई अजायेब जेवो तमासो दीठो, ते एछे के ज्यां रूप रंगनी रेखा जेवी प्रवीण छे, एवो आश्चर्य उपजावनार गेबी एटले गुप्तस्थळवाळो महेल बनेलो छे. अने ते आखी दुनियांथी जूदा प्रकारनो छे. तेमां चंद्र सूर्यनी किरणो पण पहोचती नथी. मतलब के त्यां कोइ जइ शकतुं नथी. अने त्यां प्रवीणना मुखनी अखंड जोतनुं अजवाळुं छे. में कोई अजायेब०॥

ब्रह्मांड विषे--मूळ वगरनो एक बाग बनेलो छे. तेने चारे तरफ फूवारा लाग्या छे, त्यां पांखो वगरनो भमरो प्रेममां मगन अने मतवालो थईने बेठो छे. में कोई अजायेब जेवो०॥

मतलब के आ सृष्टिरूपी बाग एवो बनेलो छेके जेनुं मूळ कई तरफ छे.ते जणातुं नथी. तेमां चारे तरफ पंचविशयात्मक फूवारा लागी रह्याछे. तेमां पांख वगरनो आत्मारूपी भमरो प्रेममां मगन अने मतवालो थईने बिराजेछे. में कोई अजायेब०॥

प्रवीण विषे--प्रवीणना शरीररूपी एक मूळ वगरनो बाग बनेलो छे, तेमां चारे तरफ तेना आंसुना फूवारा लागी रह्याछे,ते बागमा मारा मन-रूपी पांख वगरनो भमरो प्रेममां मगन अने मतवालो थइने बेठोछे. में कोई अजायेब जेवो तमासो०॥

ब्रह्मांड विषे--अमृतनुं सरोवर अंतरिक्ष भरेलुं छे. ते उपर हंस बेठोछे. तेना शरीरमां लोही के मांस नथी. अने ते मोतीने वीणी वीणीने खायछे. में कोई अजायेब०॥

मतलब के चैतन्यरूपी अमृतनुं सरोवर निराधार भरेलुं छे. ते उपर आत्मारूपी हंस बिराजेछे. तेना शरीरमां लोही के मांस नथी. अने ते मु-क्तिरूपी फळने वीणी वीणीने खायछे.अर्थात् मुक्ति पामेछे.में कोई अजायेब०॥

प्रवीण विषे--प्रवीणना होठरूपी अमृतनुं सरोवर भरेलुंछे. ते उपर मारो जीव वळगी रह्योछे. तेना वेसरना मोतीने वीणी वीणीने पोतानी वृत्तिमां उतारे छे. ते जीवमां लोही के मांस नथी. में कोई अजायेब०॥

गुरुना बोधविषे- बाणावळी बाण चलावे छे, ते अधर मांडेलुं नि-शान उडाडी देछे, ते जेने विंधीने पाडेछे, ते जुगोजुग जीवतुं रहेछे. अने जेने चुकी जायछे, ते मरी जायछे. में कोइ अजायेब तमासो०॥

मतलब के उपदेश करवानी वाणीवाळो तमासा देखा, जहाँ रूप वेछे, अने अस्थिर मनवाळा शिष्योरूपी निशाना. वापर बेठे हं- उडाडी शुके छे, अर्थात् मोक्ष पमाडेछे, अने तेओ वाणीथी विंधीने जेने पाडेछे, ते अमर थायछे, अने तेनी वाणीनी चोटमां जे आवता नथी. ते वारे वारे जन्म मरण पामेछे, में कोइ अजायेब तमासो०॥

प्रवीण विषे--तिक्षण दृष्टिरूपी वाणवाळां प्रवीणनां नेत्र कटाक्षरूपी वाण चलावेछे, ते निराधार रहेला मित्रना मनरूपी निशानने उडावेछे, ते कटाक्ष जेने पाडे, अर्थात् लागे. तो ते घणा काळ जीवे मतलब के तेनी दृष्टि साथे दृष्टि मळे तो मित्र जीवतो रहे, अने ते दृष्टिना वियोगथी मित्रनुं मन मरणतुल्य थायछे. में कोइ अजायेब०॥

ब्रह्मविषे--वादळां वगर वरसाद मंडाणोछे, अने तेनुं पाणी पृथ्वी उपर पडतुं नथी. जे जाणनारा होय, तेज एनो भेद विचारे. अने एज चतुरनी निशानी छे. में कोइ अजायेब०॥

मतलब के चैतन्यरूपी जळनी वृष्टि थायछे, पण ते कया वादळा- मांथी आवे छे, ते जणातुं नथी, तेम पृथ्वी उपर पडेलुं जणातुं नथी, तेने अनुभवी पुरुषो जाणे अने एज ज्ञानीनी निशानीछे,में कोइ अजायेब०॥

प्रवीण विषे--वादळुं चडी आव्या वगर प्रवीणनी आंख्यमांथी आंसुनो वरसाद मंडाणोछे, तेनुं पाणी पृथ्वी उपर पडतुं नथी, अर्थात् वस्त्र भिंजाइ जायछे, आ वातने जाणनारा होय, ते तेनो मर्म विचारे अने प्रवीणने ओळखवानी एज निशानीछे. में कोइ अजायेब जेवो तमासो दीठो के ज्यां रूप ने रंगनी रेखाछे.॥२७॥

॥ छपय ॥

यह सन्यास उचार, करत आसन प्रति आये ॥

ब्रह्मांड विषे--मूळ वगर, नेन जुरने नाहि पाये ॥

लाग्या छे, त्यां पांखो न रबीन, सेज बेहोस सुवाई ॥

मानहु बिनु जल मीन, रेन तलफंत बिहाई ॥

निशचर निवार दिनचर सु धुन, पशु पंच्छी लागे चरन॥

भापंत बिरद ब्रह्मनि कुमरि, क्रिया लगाई नित करन॥१८॥

अर्थ. सन्यासी एवो उच्चार करता आसन तरफ आव्या. प्रेमनी जोत प्रगट थई आववाथी आंख्य मेळववा पाम्या नहीं, अर्थात् उंघ आवी नहीं, कुसुमावळिये बेहोश थयेली कळाप्रवीणने सज्या उपर सुवारी. ते जाणे के जळ विनानुं माछलुं होय, ए रीते तरफडतां रात गुजारी. रातनां फरनारांनुं निवारण थइने दिवसनां फरनारां पशुपाक्षियो ध्वनी करीने विंचरवा लाग्यां. त्यारे कुसुमावळिये ते कुंवरीने बिरदावळी कहीने नित्यक्रिया करवाने लगाडी.॥१८॥

॥ दोहा ॥

कुमरी नित कीनी क्रिया, सेव बिसर्जन कीन ॥

प्रतिउत्तर पाती लिखन, कुसुम सु कही प्रबीन॥१९॥

अर्थ. कुमारिये नित्य क्रिया करीने सेवानुं विसर्जन कर्युं. त्यारे कुसुमावळिये प्रवीणने प्रति उत्तरनो पत्र लखवानुं कह्युं. ॥१९॥

॥ सोरठा ॥

प्रेम बढाहि परबीन, उर उसास निर झर नयन ॥

कलम पत्र कर लीन, लागे प्रतिउत्तर लिखन ॥२०॥

अर्थ. त्यारे प्रवीणने प्रेम वध्यो, ने छातीमांथी उसासा लेवा मांड्या. ने आंखोमांथी आसु झरवा लाग्यां. अने हाथमां कलम तथा कागळ लइने प्रति उत्तर लखवा लागी. ॥२०॥

॥ अथ कला प्रवीनोक्त पत्र प्रत्युत्तर छंद ॥
॥ भुजंग प्रयात ॥

रसंसागरं ए दशा आप लीनी ॥ हमें होत नांही कछू प्रेम हीनी ॥ रच्योहे विधाता इते एह फंदा, परे लोहके पिंजरेमें परंदा ॥ भये अंतरं आप नेनां न फूटे, परे प्रान बेहाल पापी न छूटे ॥ जथा जोग काहु समे ओर धारे, वही बातकी आप सोंहे उचारे ॥ चहे चित आपें इतेही रहावे ॥ गुरूताइ ज्ञासे सु केसें कहावे॥ कहे अंतरं क्यों रसंना न कट्टे ॥ बताओ कहे सोइ प्रेमं न घट्टे ॥ इतेमें चहो जो विदागीर दीजे, विचारी कहो उत्तरं सोय कीजे॥ न माने अबे बात आपें बरज्जी, हमें दीनकी याद रख्खो अरज्जी ॥ माहाराजहो प्रेमकी मेघ माला,हमें तो भरे तुच्छही तुच्छ ताला॥घटंते जलं ओसरं मेघ चूके, तबे तो इकं तालमें ताल सूके ॥ तजे नीर तीरं सुके जाय हंसा,जिया जानिये आप एही प्रशंसा॥ उसासा भरे भापितं मेर रख्खे, दई ब्रह्मनी पानि पाती सुलख्खे ॥ २१ ॥

अर्थ. हे रससागर तमे आवी दशा लीधी.तेम हुं पण कांइ ओछा प्रेमवाळी थयी नथी. पण शुं करिये ! जे विधाताए आ ठेकाणे आवी जाळ रचेली छे. जाणे के लोढाना पांजरामां पक्षी पड्युं छे. आपनी जुदाइ थवाथी अमारी आंख्यो केम फूटती नथी ? अने आ पापी प्राण वेहाल पड्यां छे, पण केम छूटता नथी ? वळी कोइ समे जेम करवुं घटे तेम अमे वीजी धारणा करशुं, ते वातना हुं तमारा सम खाइने कहुंछुं. अने हुं मनमां एवुं चाहुंछुं के आप आंहीज रहो. पण एम कहेवाथी आज्ञा करनार गुरूपणुं

जणाय; माटे केम कही शकुं ? अने वेगळे जवानुं कहेतां मारी जीभ केम न कपाय? माटे जेथी प्रेम घटे नहीं, एवुं शुं कहुं ते बतावो? एटलामां आप मारी पासेथी विदायगिरी लेवाने चाहोछो. तो तमे विचारीने कहो ते उत्तर हुं आपुं. तमे हवे मारा वारवाथी कांइ वात माननारा नथी. पण अमारी गरीबनी आटली अरजी याद राखजो. के हे महाराज आप तो प्रेमनी मेघ-माळा छो. अने हुं हलकामां हलका भरेला तळाव जेवी छुं; तेमांथी पाणी घटी जाय, त्यारे जो वरसाद अवसर चूके, त्यारे तो एक ताळीमां ते तळाव सुकाई जाय. अने ते पाणीना कांठाने तजीने हंस उडी जाय. एज रीते मारा जीवनी हकीकत आप जाणजो. एवी रीते पत्र लखीने कुसुमाव-ळीना हाथमां आप्यो, अने उसासा भरीने कहाव्युं के महेरबानी राखजो.।२१।

॥ दोहा ॥

पाति ब्रह्मनि पानि दिय, बहुरयो लई प्रबीन ॥
चिंत दशावत मिंत प्रति, लखी ज्यु काव्य नवीन ॥ २२॥

अर्थ. कुसुमावळीना हाथमां पत्र आपीने वळी प्रवीणे पाछो लीधो, अने तेमां पोताना मननी दशा प्रमाणे मित्र प्रत्ये नवीन काव्य लख्यां.॥२२॥

॥अथ कलाप्रबीनोक्त पत्र भेद अन्योक्ति आक्षेपालंकार॥

॥ सवैया ॥

प्रेमहुको रसकूप भर्यो इक, केउ दिनां हम सागर पायो ॥
ताम्र न सिक बनाय तहां नित, नीरके तीरन पुंज जमायो॥
सायत शोधत चूक परी चित, शुद्ध मुहूरत सोय बिहायो ॥
कंचनकी पल सो गुजरी, अब तो पल लोह कथीरको आ-
यो ॥ २३ ॥

अर्थ. हे सागर केटलेक दहाडे हुं प्रेमरूपी रसकूप एटले जे रसथी

चीजो धातुनुं सोनुं थाय, 'एवा रसथी भरेलो एक कूवो पामी. त्यां रोज तांबाना सिका बनावीने ते पाणीने कांठे ढगलो जमाव्यो, पण सारो शोधनां मनमां चूक पडी. अने तेथी जे शुद्ध मुहूर्त्त हतुं ते गुमाव्युं. तेथी सोनुं थवानी पळ तो जती रही. अने हवे तो लोढुं तथा कथीर थवानी पळ आवी छे. ॥२३॥

॥ अथ समरूपक अलंकार ॥ सवैया ॥

आसन वार रहे इकहीं टक, आचमनं अनुराग जरे ॥
आवन सास गहे सुर शोधन, अंजुलि नेत्र नियोग करे ॥
सोधतहे गुन न्यास सबे तन, सागर ध्यान हमेश धरे ॥
प्रान भयो मुनिराज इही गति, सिद्ध मिलाप सदा समरे२४

अर्थ. हे सागर? मारो प्राण मुनीना जेवो बन्यो छे. ते आसनवाळीने एक नजरथी जोई रहे छे, भरप्रेमनुं आचमन करेछे, अने आवता जता श्वासथी स्वरनुं शोधन करेछे. अर्थात् प्राणायाम करेछे. अने नेत्ररूपी अंजलीथी (विनियोग) संकल्प करेछे. आपना गुण शोधीने आखा शरीरमां (न्यास) अर्थात् धारण करेछे, अने हमेशां आपनुं ध्यान धरेछे. एवी रीते मारो प्राण मुनिराज बनीने तमरूपी सिद्धना मिलापनुं निरंतर स्मरण करेछे.२४॥

॥ समरूपक अलंकार ॥ कवित ॥

अंसुवाके नीरहु ते, मंजत शरीर नित्य; बिरहकी धुनी उर तापवो बीसेख ले ॥ नेनके कटोरे, करी मांगत दरशनिच्छा, दरदकी सेली कंठ बिच अवरेखले ॥ खान पान गान तान सिगरे तजेहे सुख, प्रान जान होयगो निदान आ परेखले ॥ सागरसें कहो जाय, एक दिनां इते आय, प्रेमकी फकीरीको तमासागिरी देखले ॥२५॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के हुं रोज आंसुनां जळथी शरीरे नहाउंछुं, अने छातीमां विरहनी धूणी तपेछे. ते वडे विशेष तापी लउंछुं. आ नेत्रना कटोरा करीने सागरना दर्शननी भिक्षा मागुंछुं. अने दरदनी सेली मारा गळामां पहेरेली छे. तेने जोइल्यो. खान, पान, गान, तान विगेरे सघळां सुख तज्यां छे. हवे प्राण जवानुं थशे, माटे आवीने तेनुं कारण परखी ल्यो. अरे कोइ सागरने जइने कहो के एक दिवस अहीं आवीने आ प्रेमनी फकीरीनी तमासागिरी जोइ ल्यो. ॥२५॥

॥ संदेहालंकार ॥ सैवया ॥

डोलबो बावरो व्हेके भलो के, भलोहे बिभूतनको धरबो॥
ईशको शीश अरोप भलो के, भलो जप भैरवको भरबो ॥
काशिमें जाइ कट्यो सो भलो, के भलोहे हिमाचलमें गर-
बो ॥ सागर मिंत भलो सु बताइयें, ज्योंहि कहो त्यौं हमें
करबो ॥ २६ ॥

अर्थ. हे सागर? दिवानां थइने फरवुं, ए सारुं हशे? के विभूति धारण करीने जोगणी थवुं, ते सारुं हशे? शिवना उपर माथुं चडाववुं, अर्थात् कमळपूजा खावी, ते सारुं हशे? के भैरव जप खावो सारो हशे? काशीमां जईने करवतथी कपावुं सारुं हशे? के हिमाचळमां जइने गळवुं, ते सारुं हशे? हे सागर मित्र? जे सारुं होय ते बतावो? अने तमे जे कहो, ते अमारे करवुं. ॥२६॥

॥ अथ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

केबो कहा तुम जानतहो, निस बासर सागर राह चितेबो॥
तेबो महा बिरहानलसें, सु समे ज्युं तुमें बनिहे फिर एबो ॥
एबो बने न तुमें तो हमे, दीन क्यों गुजरे यह आयस देबो ॥

द्वो पती उनके करमें, करमें गति टेढिय तो फिर केबो॥२७॥

अर्थ. हे सागर? तमने कहिये शुं? तमे सर्व जाणोछो, अमे रात्रि ने दिवस तमारी वाट जोइये छिये, मोटा विरहाग्निथी तपवुं थायछे, अने फरीथी तमारुं आंही आववानुं बनशे तेज सारो समय हुं जाणुंछुं. अने जो तमारुं आववानुं नहीं थाय, तो अमारे दिवस केम गुजारवा. ते विषे आला आपदी. हे कुसुमावळी? आ पत्र एमना हाथमां आपवो. तेम छतां करमनी गति वांकी हशे, तो पछी शुं करवुं? ॥२७॥

॥ सोरठा ॥

लिखकें ब्रह्म कुमारि, पाती दीन प्रबीन ज्यूं ॥
आशिष वचन उचारि, कुसुम गवन उपवन कियो ॥ २८॥

अर्थ. ए रीते प्रवीणे पत्र लखीने कुसुमावळीने आप्यो. त्यारे कुसुमावळिये तेने आशिर्वाद आपीने बाग तरफ गमन कर्युं. ॥२८॥

सोई वंदि सन्यास, बिबस प्रेम बोल न सके ॥
अतिही भरी उसास, प्रतिउत्तर पाती धरी ॥ २९ ॥

अर्थ, ते कुसुमावळी सन्यासीने पगे लागी, पण प्रेमने वश थवाथी कांइ बोली शकी नहीं, अने अतिशे उसासा भरीने प्रतिउत्तरनो पत्र आगळ मूक्यो. ॥२९॥

तापस लही उठाय, पाती भरी सु प्रेम रस ॥
बांची भेद बनाय, शिर चढाय उर लाय उन ॥३०॥

अर्थ. प्रेमरसथी भरेलो ते पत्र तपस्विये उपाडी लीधो. ते माथे चडावीने तथा छातिये लगावीने तेमांनो भेद वर्णवीने वांच्यो. ॥३०॥

॥ गाहा ॥

दंपति पत्र विधानं, अलख जगान जोगि पुर गमनं ॥

ईकोत्तर अभिधानं, पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥ ३१ ॥

अर्थ. स्त्री पुरुषे परस्पर पत्र लख्या, तेनी रीत तथा जोगी अलख जगाववाने वास्ते शहेरमां गया. ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी इकोतेरमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३१॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे दंपति पत्र प्रत्युत्तर सन्यास अलख गमनो नाम एक सप्ततितमो लहरं ॥७१॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकसप्ततितम स्तरंगः समाप्तः॥७१॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद वसंततिलका ॥

जोगी गया पछि दशा परवीण पामी, ते वर्णवी विगतथी नव राखि खामी॥
हीमाचळे सु सिंध सागरने मळ्याछे, बोंतेरमी लहरमां कहि ते कथाछे॥

॥अथ पुनि पाती प्रत्युत्तर सन्यास अरन्य गमन प्रसंग यथा॥

॥ रूपकालंकार ॥ दोहा ॥

सागर सागर शशि पती, लखत लहर चढि चाह ॥
मन तरंग लग तट त्रपा, उछरत हटक अथाह ॥ १ ॥

अर्थ. सागररूपी समुद्रने पत्रिकारूपी चंद्र जोतां चाहनारूपी भरती चढी, तेना मनमां विचाररूपी मोजां, लाजरूपी किनाराने लागीने अथाग उछळीने पाछां हठेछे. ॥१॥

॥ पुनः रूपकालंकार ॥ दोहा ॥

पत्र कूप हेरत उठ्यो, पारद प्रेम फुहार ॥
हय तन हटक्यो ले गयो, मनहु कुमारी नार ॥ २ ॥

अर्थ. "पारो धातुछे, अने ते खनिज पदार्थ छे. पण तेने विषे एवी

तेनकथा चाले छे के शिवनुं विर्य स्खलित थयेलुं ते पारारूपे कूवामां प- राइ रहेलुंछे. त्यां एक कूंमारिकाने घोडा उपर बेसारीने लइ जइने तेनी द्रष्टी पारा तरफ करावेछे. एटले ते पारो कूंमारीने जोइने उछळेछे.एटले कुंमारिका घोडो फेरवीने पाछी नासेछे. तेथी पारो आवीने बहार पडेछे, तेनुं रूपक आमां छे.' पत्रिरूपी कूवाने जोतांज तेमांथी प्रेमरूपी पारानो फूनारो उछळ्यो,त्यारे सागरना शरीररूपी घोडो अटकी रह्यो. पण तेना मनरूपी कुंमारिकाने ते लई गयो.॥२॥

॥ सोरठा ॥

तापस अति सोचंत, पुनि प्रतिउत्तर जो लिख्यो ॥
उनकी गति एकंत, लहे उभे बंचन लिखन ॥ ३ ॥

अर्थ. ते रससागररूपी तपस्विये अतिशे शोचना करीने वळी जे प्रतिउत्तर लख्यो,तेना अंतरनी गतितो ते एकांतमां वांचनार ने लखनार ए बेज जाणे.॥३॥

श्रीमुख काव्य सु कीन, वहुरचो भेद लिखे सु वह ॥
धीरज धरन प्रवीन, कुसुमावलि दीनी सु कर ॥४॥

अर्थ. पोताने मोढे कविता रचीने वळी ते भेद प्रवीणने धीरज धरावा माटे लख्या. ने ते पत्र कुसुमावळीना हाथमां आप्यो.॥४॥

॥ अथ वह पाती उदाहरन भेद स्मरनालंकार ॥ सवैया ॥

आज प्रवीन मिले सुपने माहि,भूपन वास जराव जरी धर ॥ आसन एक लिये अति आदर, केसर चंदनकी चरचा कर ॥ पानन बीरि बनाय खवावत, भाजन पान लियो मदिरा भ- र ॥ सेज विनोदकि बात उचारत, या दुखियां अखियां ग- इ उघर ॥५॥

अर्थ. ते पत्रमां सागरे लख्युं जे--जडाउ घरेणां तथा जरीनां लूगडां पहेरीने आज प्रवीण मने स्वप्नामां मळयां, तेणे मने घणा आदरथी एक आसन उपर लीधो, अने केसर ने चंदनथी मारी पूजा करी, पाननी बीडी करीने खवरावी. अने मदिरानुं पात्र भरीने मने पावासारुं हाथमां लीधुं. पछी सेज विनोद करवानी वात बोलवा लाग्यां. त्यांतो आ दुखियारी आंख्यो उघडी गई.॥५॥

॥ समरूपकालंकार ॥ सवैया ॥

आसन साधि रह्यों इक धारन, बारिके नार बरुनि नमी हे ॥ धूनि अखंड जगे बिरहा, सुरताके झुलांनसें देह दमी हे ॥ खेंचत सास बिसास बडो उन, एक निरंतर टेक जमी हे ॥ एह प्रमान प्रबीन निहारत, जोगहु तें क्यों बिजोग कमी हे? ॥६॥

अर्थ. सागर लखेछे के जोगीनी पेठे एक धारणाथी साधन करवा आसन वाळीने रहुंछुं, अने जळना भारथी पांपणो नमीछे. विरहनी अखंड धूणी सळगती रहेछे. अने सुरतारूपी झूला उपर लटकीने शरीरने दमुं छुं. मोटो विश्वास राखीने श्वासने खेचुंछुं, अने मनमां एक टेक जमावीछे, हे प्रवीण? ए प्रमाणे हुं तमने ध्यानमां निहाळुंछुं. माटे जोगीनी क्रिया करतां आ वियोगनी क्रिया शुं कांइ ओछीछे?॥६॥

॥ यमकालंकार ॥ दोहा ॥

घटन प्रान लागे सु घट, छुटे न हर हर बार ॥
जो चाहत संकट कटे, रटे हरा हर नार ॥ ७॥

अर्थ. शरीरमांथी प्राण घटवा लाग्या. पण शिवशिव ? ? ते प्राण बहार नीकळी जता नथी. पण जो आ संकट कापवाने चाहिये, तो

शिवनी स्त्री (हरा) पार्वतीना नामने रटियें.॥७॥

॥ रूपकालंकार ॥ दोहा ॥

तालमें ताला लग्या, कारीगर बिध कीन ॥
चित कीली संचा सबद, खोलनहार प्रबीन ॥ ८ ॥

अर्थ. ब्रह्मारूपी कारीगरनुं करेलुं ताळुं नशीबमां लाग्युं छे. पण हे प्रवीण ? तमारा मनरूपी कुंचीवडे ब्रह्माना मांडेला शब्दोरूपी (संचो) नाखीने-ताळुं उघाडनारां तमेछो. मतलब के ब्रह्माये नशीबमां विजोग लख्योछे,पण तमारा मननी चतुराइथी ते शब्दने तमे फेरवी शको.अर्थात् विजोग मटाडी शको.॥८॥

॥ सोरठा ॥

उर टारन अंदेश, प्रति प्रबीन पाती लिखी ॥
सुतो सह संदेश, सागर कह्यो कवित्त करि ॥९॥

अर्थ. प्रवीणना मननो संशय टाळवा सारु तेनी तरफ कागळ लखीने वळी सागरे एक कवित करीने कुसुमावळी साथे संदेशो कहाव्यो. ॥९॥

॥ प्रतिपालंकार ॥ कवित ॥

हरहे बसे त्युं जच्छ किंनर चले तो कहा, भई जातरूप, मन इनके सरसरे ॥ वइकुंठनाथ, पुर कंचन रचित कहा, संतनके चित नीत चाहत दरसरे ॥ मनिबंध मानसर, सुर विहरे तो कहा, तोय तोयनिधिके न बूझत तरसरे ॥ चंदन चढाय जाय बंदन हमारे करि, पंथिक प्रबीन परकारीसें परसरे ॥ १० ॥

अर्थ. कैलासमां शिवजी वसेछे,अने यक्ष तथा किन्नरो चालेछे,तो शुं थयुं? अने ते सोनानो बनेलोछे.तोपण ते तेने मन सरसछे.वैकुंठनाथे वैकुंठपूर

सोनानुं रच्युंछे. अने संत जननां चित्त तेनां दर्शन करवा नित्य चाहेछे, तोपण शुं थयुं? मानसरोवर मणियोथी बांधेलुंछे. अने त्यां देवताओ विहार करेछे. तोपण शुं थयुं ? समुद्रमां घणुं जळ भर्युंछे.पण तेथी तरश मटती नथी. तो ते शा कामनोछे ? तेमज हे पंथिक एटले संदेशो लई जनार कुसुमावळी! कोइ (पेर) उपाय करी शके, एवां प्रवीण पासे जइने तेने चंदन चडावीने अमारीवती वंदना करीने तेनो स्पर्श करजो. अर्थात् मळजो. मतलब के कैलाश,वैकुंठ अने मानसरोवर कर्तां प्रवीणना मेळा-पने हुं बहु चाहुंछुं.॥१०॥

॥ सोरठा ॥

पाती दई सु पान, सागर कुसुम प्रबीनकी ॥
धार्यो पंथ पयान, पुर ब्रह्मनि तापस गहन॥११॥

अर्थ. सागरे प्रवीणने मोकलवानो पत्र कुसुमावळीना हाथमां आप्यो. पछी कुसुमावळिये शहेरने, अने तपस्विये जंगलने रस्ते प्रयाण करवानुं धार्युं.॥११॥

उरमें उभे उदास, कहे तापस लाव न कछू ॥
बीतत हयन निवास फेर करेंगे आइ इत ॥१२॥

अर्थ. तपस्विये कुसुमावळीने कह्युं के तमे बन्ने जण मनमां कांइ उदासी लावशो नहीं, केमके (हायन) वर्ष वीत्या पछी फरीथी अमे आंहीं आवीने निवास करशुं.॥१२॥

॥ अथ अमृतधुनि यमक ॥ छंद मुक्तदाम ॥

चले उठि जोगिय हाथ झटक्क॥पुरातनको सुख साज पटक्क,
खरे बिछुरे बिरहा सु खटक्क॥ चढी मनु प्रेम सुरंग चटक्क॥
भरभ्भर कंठ उसास भरंत ॥ धरद्धर प्रान बेहोस धरंत ॥

फरफ्फर नग्र वहे नरखंत ॥ खरख्खर बुंद चखें बरखंत ॥
तरत्तर टेकतहे निज अंग, थरथ्थर मानहु भंग भुजंग ॥
अरझ्झर स्वेद मनो गज मद, हरंहर भंखत मंत्र शबद ॥
यही विधि तापस व्रच्छ चलंत, तिही गति ब्राह्मि पुरी प्रबिसंत १३

अर्थ. जोगियो हाथ खंखेरीने अर्थात् आशा मुकीने उठीने चाल्या. अने प्रथमनो सुखनो सामान फेंकी दीधो. हवे तो खरेखरो वियोग थयो. तेथी मनमां विरह खटकवा लाग्यो. जाणे के प्रेमना रंगनी चटकी चडी होय नहीं शुं? गळुं भरीभरीने उसासा भरेछे. अने प्राण धडकी धडकीने बेहोसपणुं धरेछे. फरीफरीने ते नगरने जुएछे.ने आंखेथी खरखर आंसुनां बुंद खरेछे. आडे आडे पोताना शरीरने टेको देछे, अने थरथर धुजेछे. ते जाणे के शरीरे भागी गयेलो सर्प होय नहीं शुं? परसेवो झरझर झरेछे. ते जाणे के हाथीनो मद झरतो होय नहीं शुं? अने हरहर एवा मंत्रनो शब्द बोलेछे.ए रीते तपसी वननी झाडी तरफ चाल्या. अने तेवीज दशाथी कुसुमावळी शहेरमां पेठी.॥१३॥

॥ सोरठा ॥

दुजि प्रवेश पुर कीन, पहुंची कलाप्रवीनपें ॥
तापस पाती दीन, मोन लीन मुख दुख भरे ॥१४॥

अर्थ. ब्रह्मपुत्री कुसुमावळी शहेरमां प्रवेश करीने कळाप्रवीणनी पासे पहोंची, अने ते तपसीनो कागळ आपीने मोढे बोल्या वगर रही, ने मनमां दुःख भराइ आव्युं.॥१४॥

कुमरी सही समाज, व्याज सेंन दीनी विदा ॥
पाती सागरराज, गइ इकंत बंचन लगी ॥१५ ॥

अर्थ. त्यारे कुमारिये मुइ रहेवाने मिशे सखियोनी मंडळीने रजा

आपी. पछी एकांते जइने सागर राजानो पत्र वांचवा लागी.॥१५॥

बंचत जोगि बिदाय, पाय लाय लागी प्रबल ॥
वनी न बरनी जाय, हाय हाय मुख बानि हुइ ॥१६॥

अर्थ. ते वांचतां जोगी विदाय थया, एवुं जाणवाथी मनमां मोटी लाय लागी. अने तेनी दशा जे थई, ते वर्णवी जाय नहीं, ने तेने मोढेथी हाय हाय एवी वाणी थई.॥१६॥

॥ संबंधातिशयोक्ति अलंकार ॥ छंद मल्लिका ॥

बंचितं पती प्रबीन, प्रान अंबु छीन मीन ॥ जात सो पलं सु जान, आजही प्रले प्रमान॥ मानहु सहस्र सूर, भूमिपें भयो सु नूर ॥ लंघितं म्रजाद आप, बाडवा बढे प्रताप ॥ शेषने भर्यो उसास, कच्छहु कियो निकास ॥ कोलको भग्यो सु दंत, दंतिही डिगे डिगंत॥धातुके धसे सु श्रंग, ज्वालनेन जीत जंग॥ शेषसें सबे ब्रह्मंड, भंग भो बिराट अंड ॥ सो दशा प्रबीन पाय, धीर ब्रह्मनी धराय ॥ १७ ॥

अर्थ. ते पत्र वांचतां प्रवीणना प्राण जळ वगरनां माछलां जेवा थया, अने ते पळ जायछे, ते एवी के जाणे आज प्रलय थयो. अथवा जाणेके हजार सूर्यनो ताप पृथ्वी उपर पड्यो. अथवा समुद्रना जळे मर्यादा लोपी. अने वडवाग्निनो ताप वध्यो. अथवा शेषनागे उस्वास भर्यो. तेथी जे काचबाना आधारे पृथ्वी रहीछे, तेने काढी नाख्यो. अने जे वाराहनी दाढने आधारे ते काचबो रहेछे. ते दांत भागी गयो. अथवा दिशाओने छेडे पृथ्वीने टेको आपनारा हाथियोछे, ते डग्या. अथवा धातुना पर्वत मेरुनां शिखर धस्यां. अथवा जेना नेत्रमां प्रलयकाळनो अग्निछे, एवा महारुद्र प्रलय करवामां जीत्या. जाणे शेषथी लइने आखुं ब्रह्मांड जे अंडाकारछे,

ते वैराटनो भंग थयो. एवी दशा प्रवीण पाम्यां, तेने कुसुमावळी धीरज करावा लागी.॥१७॥

॥ सोरठा ॥

खान पान रुचि छंडि, वाला लही बिदेह गति ॥
असुआं नेन उमंडि, वढत स्वास बन्हि बिरह ॥ १८॥

अर्थ. ते कुंवरिये खावापीवानी इच्छा छोडी दीधी. अने विदेहीनी दशा लीधी.आंखे आंसु उमंडी आव्यां.अने श्वास तथा विरहाग्नि वधवा लाग्यो.१८

जो तन तापस ताप, सो सत गुन परबीन मन ॥
उरझत आपहि आप, पल पल प्रान प्रयान रुच ॥१९॥

अर्थ. जेवो ताप ते तपस्वीना मनमां थयो, तेवो सोगणो ताप प्रवीणना मनमां थयो. पण पोते पोताना मनमां मुंझाईने रहेछे. अने पळे पळे प्राण जवानी इच्छा करेछे. ॥१९॥

एक वरप अनुमान, आवन ओधि सु बिप्र वदि ॥
ओध आस उर आन, नीठ नीठ वपु वास किय ॥२०॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळिये आशरे एक वर्षे पाछा आववानी मुदत कही, ते अवधीनी आशा मनमां लावीने मांड मांड तेना शरीरमां प्राणे निवास कर्यो. ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

पल पल कला प्रबीनपें, ब्रह्मनि धीर धराय॥
उन मुख आवन ओधि वदि, नीठसु प्रान द्रढाय ॥२१॥

अर्थ. कळाप्रवीणने पळे पळे कुसुमावळिये धीरज धरावीने ते तपशिये मोढेथी कहेली आववानी मुदत कहीने मुश्केलीथी तेना प्राण रखाव्या.॥२१॥

खान पान सुख सेज तजि, सौध सु कलाप्रवीन ॥

उत्तर आसा आस सिध, यतीव्रतम तब लीन ॥२२॥

अर्थ. ते कळाप्रवीण खावा पीवानुं सुख, तथा पलंग तजीने हवेलीमां रही, त्यारे यति एटले सन्यासिये सिद्धने मळवानी आशाथी उत्तर दिशानो (वर्त्म) मारग लीधो. ॥२२॥

॥ चोपाई ॥

इहि विधि जोगि बिपन पथ लीने, बसन बद्रिकाश्रम चित कीने ॥ चाह सिद्ध परसन सु उलट्टे, मंद मंद संचर गिर कट्टे ॥ सातहु मिंत सांत रस भीने, सातहु पक्ष पंथ जब कीने ॥ नीठ बद्रिकाश्रम तब आये, दरस बद्रिकेदारहु पाये ॥ आसन उतें अनेक मुनीशा, ठोर ठोर उपगंग गिरीशा ॥ साधक सिद्ध जोगक्रम साधे, आप इष्ट परिब्रह्म अराधे ॥ नित फल फूल झुकित बनराया, षटरितू उत रितुराज लखाया ॥ गिरिवर श्रंग झरन जल धारा, बरषा उतें मास मनु बारा ॥ तापस तित प्रताप बिस्तारे, बैरभाव पशु पंखि बिसारे ॥ केहरि बास करत करि छाया, करी कलभ केहरि धृत माया ॥ कला कलापि धरित नृत मंडे, सनमुख अहि आवत बिल छंडे ॥ चटकहि बाल बाज प्रतिपारे, बायस करत उलूक बिहारे ॥ बक झष करत समीप बिहारा, दाहत बनन बन्हि बिस्तारा ॥ सरिता सर सरोज सुभ नीरा, सुरभि सीत गति मंद समीरा ॥ गिरि गिरि बन बन बन प्रति बेली, नीड नीड खग करत सु केली ॥ शाख शाख हींचत म्रगशाखा, परि परि रटत पंखि पशु भाषा ॥ सुमन सरोज रंग प्रति रंगा, ग्रहि मन मोद गुंजारत भ्रंगा ॥ सागर

लखत मोद मन लाये, आश्रम हेर चिताश्रम पाये॥२३॥

अर्थ. ए रीते जोगिये वननो मारग लीधो. अने बद्रिकाश्रममां जइने वसवानुं मन कर्युं, सिद्धनो स्पर्श करवानी चाहना उलटी, तेथी धीमे धीमे पर्वतोनो रस्तो काप्यो. साते मित्रो शांत रसमां भिंजायेला छे. तेओये सात पखवाडियां सुधी ज्यारे पंथ कर्यो, त्यारे बद्रिकाश्रम पासे आव्या. अने बद्रिकेदारनां दर्शन पाम्या. त्यां अनेक मुनीश्वरोनां आसन छे. अने ठेकाणे ठेकाणे गंगाने कांठे पर्वतो छे. त्यां साधको तथा सिद्धो योगनी क्रिया साधे छे. अने पोते परिब्रह्मरूपी इष्टनुं आराधन करेछे. त्यां हमेशां झाड उपर फळफूल झूकी रहेलां छे. त्यां छये ऋतुओमां वसंतऋतु देखाय छे. मोटा पर्वतोना शिखरो उपरथी झरणनां जळनी धाराओ थायछे. त्यां जाणे के बारे महिना वर्षाद थायछे. त्यां तपस्वियो पोतानो प्रताप वधारे छे. त्यां पशुओ अने पक्षियो परस्पर वैरभावने वीसारी देछे, हाथीनी छायामां केसरीसिंह वासो करेछे.अने हाथीनां बच्चां केसरीसिंह साथे माया राखेछे. त्यां मोर कळाधरीने नृत्य मांडे छे. त्यारे राफडाने छोडीने सर्प तेना सामो आवेछे. चकलीनां बच्यांने बाजपक्षी पाळेछे. अने कागडा घूड साथे विहार करेछे. बगला ने माछलां पासे रमण करेछे. अने अग्निनो विस्तारछे. पण वनने बाळतो नथी. त्यां नदी, तळाव, कमळ, अने सुंदर जळ छे. सुगंधिमान शीतळ अने हळवो हळवो पवन वाय छे. पर्वते पर्वते वन छे. ने वन वनप्रत्ये फेल्या छे. त्यां माळे माळे पक्षियो क्रीडा करछे. ने डाळे डाळे पांदडां हींचे छे. ने पशु ने पक्षी पेर पेरनी भाषा बोलेछे. त्यां फूल तथा कमळ रंगबेरंगी छे. मनमां आनंद पामीने भमरा गुंजारव करेछे. ते वन जोइने सागर मनमां आनंद लाव्या. ए बद्रिकाश्रम जोइने तेनुं चित्त आश्रम पाम्युं. ॥२३॥

॥ दोहा ॥

सुरतानंद पहाड तहां, अंब व्रच्छ उन श्रृंग ॥
कुसुमाकर बिकसित बिपिन, निकट गहर गति गंग ॥२४॥

अर्थ. त्यां सुरतानंद नामनो पर्वत छे. तेनां शिखर उपर आंबानां झाड छे. त्यां वनमां वसंतरूतु खीली रह्यो छे. अने तेना समीपमां गंभीर गति वाळी गंगा वहे छे. ॥२४॥

तिहां पंच दिन रहन किय, अविलोकत एकंत ॥
इष्ट मंत्र साधन लगे, सप्तासन किय मिंत ॥२५॥

अर्थ. त्यां एकांत जोईने पांच दिवस रहेवानुं कर्युं, अने ते साते मित्रो आसनवाळीने इष्टना मंत्रनुं साधन करवा लाग्या. ॥२५॥

॥ सोरठा ॥

मंजन कीजत गंग, करि ईडन प्रति ज्नव ज्नवा ॥
सुरतानंद सु श्रृगं, प्रेम मंत्र सप्तहु सधे ॥२६॥

अर्थ. गंगामां स्नान करेछे. अने शिव तथा पार्वती प्रत्ये स्तुति करीने ते सुरतानंद पर्वतना शिखर उपर साते मित्रो प्रेमनो मंत्र साधेछे. ॥२६॥

पूर्वायस अनुमान, प्रभानाथ परसन चहे ॥
सिद्ध सबे बिधि जान, गिरि आश्रय तजि गमन किय ॥२७॥

अर्थ. सिद्धे पूर्वे आज्ञा आपी हती, ते प्रमाणे ते प्रभानाथ नामना सिद्धनो स्पर्ष करवाने चाहेछे. अने ते सिद्धपण सर्वे विधिना जाणनार छे, तेथी तेणे ज्वाळामुखीना पर्वत उपर पोतानुं आश्रम छे ते तजीने सुरतानंद पर्वत तरफ गमन कर्युं. ॥२७॥

पंच द्योस बिलमंत, प्रभानाथ आये तहां ॥
तापस लिखत महंत, बंदि चरन अरचे बिबिध ॥२८॥

अर्थ तपस्वियो पांच दिवस रह्या, एटलामां त्यां प्रभानाथ आव्या. एटले तेओये ते महत् पुरुषने जोईने तेमने पगे लागीने विविधप्रकारे पूजन कर्युं.॥२८॥

॥ गाहा ॥

विछुरन दशा प्रवीनं, सागर सिद्ध मिलन बद्रिकाश्रम ॥
द्योसित्तर अभिधानं ॥ पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥२९॥

अर्थ. जूदां पडवाथी प्रवीणनी थयेली दशा, तथा सागरने बद्रिकाश्रममां सिद्धनो मेळाप थयो, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी बोतेरमी लहेर संपूर्ण थई. ॥२९॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे जोगी बद्रिकाश्रम गमन सिद्ध मिलन नाम द्विसप्तीतमो लहरं ॥७२॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां द्विसप्ततितम स्तरंगः समाप्तः॥७२॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

समरी सागर मित्रने, प्रवीण दुःखनी पेर ॥
पत्र विना पोकारती, काहि तोतेरमि लेर ॥

॥ अथ कलाप्रवीन दशा बर्नन ॥ दोहा ॥

कथा जोगिकी उत रही, अब कहुं प्रविन बृतंत॥
बिछुरनतें बिरहा बढ्यो, बारबार बिलपंत ॥१॥

अर्थ. कवि कहेछे के जोगीनी कथा एटलेथी रही, अने हवे प्रवीणनुं वृत्तांत कहुंछुं, तेने विजोग पडवाथी विरह वध्यो, तेथी वारे वारे विलाप करवा लागी. ॥१॥

॥ अथ कलाप्रवीनोक्त आक्षेपालंकार ॥ सवैया ॥

भस्म लगाइ बनाइ जटा, छबि सागर लीनिहे शंभु प्रभाकी ॥ जोगि बनी करि मोकुं बिजोगिनि, भोगिनि भैरहि भोग बिनाकी ॥ शंभु चिताकि बिभूति धरे, इतनी कमि काहिकुं राखि कह्याकी ॥ एरि सखी उन टेरि कहे, धरि जाय बिभूति सु मेरि चिताकी ॥२॥

अर्थ. कुसुमावळीने कहेछे के सागरे शरीरे भस्म लगावीने, माथे जटा बनावीने महादेवनी कांतिनी छबि लीधी, तेणे जोगी बनीने मने विजोगण करी, तेथी हुं भोगणी सुखभोग वगरनी थइ रही, पण शंकर तो चितानी विभूती लगावेछे, अने सागरे कहेवानी एटली खामी शा वास्ते राखी ? एमने बोलावीने कहो के मारी चितानी विभूती शरीरे धारण करीने जाय. मतलब के मारा देहनो अंत आणीने जाय. ॥२॥

॥ अथ शिक्षाक्षेप अलंकार ॥ कवित ॥

जोगी भये सागर संजोगीको सिंगार तजो, कमंडलु कर धरी, मुद्रा धरी कानमें ॥ होइकें उदास बनवास करनेकी आस, जातहे सो बरजेसें, क्यों रहे संस्थानमें ॥ जोगी तो निदान समसानमे सदाइ बसे, जानत न सागर क्युं, इतनी जहानमें ॥ तजी यह प्रौढ पूर, काहिकों सो जात दूर, कहो ज्युं रहे हजूर, मेरेइ मसानमें ॥३॥

अर्थ. सागर संयोगीनो शणगार तजीने जोगी थया, अने हाथमां कमंडल लइने कानमां मुद्रा धारण करी, अने उदासी थइने वनमां वास करवानी आशाथी जायछे, ते वारवाथी आ शहेरमां केम रहे? जोगी तो नक्की स्मशानमांज सदाय वसे, ते वात आटली दुनियामां शुं सागरजी जाणता नथी ? माटे आ मोटुं शहेर तजीने ते दूर शा वास्ते जायछे ? तेने

कहो के मारान मशाणमां पासे रहे. ॥३॥

॥ अथ द्रष्टांतालंकार ॥ सवैया ॥

में पिय कंठ कबू उरझी नहि, ज्यों उरझे तरुपें बनबेली ॥
बांह धरी गर नाहहिके कबु, खूब खुशी भइकें नहि खेली ॥
सागर कंठ लगी गइ सेलि, रही अब में इत ठोर अकेली ॥
में निरभागिनि भूतलमें, सदभागिनि व्है उन कंठकि सेली ४

अर्थ. जेम झाड उपर वननी वेली लटके छे, तेम हुं मारा पतिने गळे कदी लटकी नहीं, स्वामिना गळामां हाथ नाखीने कोइ दिवस खूब खुशी थईने खेली नहीं, अने सागरना गळामां तो (शेली) काळी दोरीनी कंठी वळगी गइ, हवे हुं आ ठेकाणे एकली रही, तेथी आ भूतळमां हुं निर्भागिणी रही. अने एमना गळानी शेली सदभागणी थई. ॥४॥

॥ अथ सहोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

सागर मिंत पुकार सुनो, अबमें पुनि आपकि संगहि आऊं॥
जो तुम अंग भभूत लगाई तो, में पुनि अंग भभूत लगाऊं॥
जो तुम भीखको भोजन पाइ हो, में पुनि भीखको भोजन पाऊं ॥ जो तुम नाथ अलेक जगाइ हो, में तुम साथ अलेक जगाऊं ॥ ५॥

अर्थ. हे सागर मित्र! हवे मारो पुकार सांभळो ? अने हुं पण आपनी साथे आवुं, अने जो तमे शरीरे विभूती लगावी, तो हुं पण मारे शरीरे विभूती लगावुं. अने जो तमे भिक्षा मागीने भोजन जमशो तो हुं पण भिक्षानुं भोजन जमीश, अने हे नाथ ? जो तमे अलेख जगावशो तो हुं पण तमारी साथे रहीने अलेख जगावीश. ॥५॥

॥ अथ विधिप्रार्थना ॥ कवित ॥

अहो चहुमुख मोकुं कायकुं तें दियो दुःख, कृपा करी कहो कहा करी तेरी चोरीमें ॥मेरो पति धरे भेख, एसो क्योंहि लिख्यो लेख॥ देख मेरी देह दशा सुखकी बिछोरीमें, अब अनुकंपा ल्याइ, होवहु सहाइ आई, बडी वस्तु चाहुं नही, चाहुं वस्तु थोरीमें ॥ जुग कर जोरी जोरी, कहुंमें निहोरी तोसें, भभूतकि गोरी व्है के, रहुं वाकी झोरीमें ॥ ६ ॥

अर्थ. अरे ब्रह्मा तें मने शा वास्ते दुःख दीधुं ? कृपा करीने कहे के में तारी शी चोरी करीछे? मारो पति भेख धरे एवो लेख तें केम लख्यो? हवे मारा देहनी सुखनी दशा में छोडी दीधी, ते तुं जो, हवे दया लावीने तुं आवीने सहायता कर, हुं मोटी वस्तु चहाती नथी, पण थोडीक वस्तु चहाउं छुं, अने बे हाथ जोडी जोडीने तने विनवीने कहुंछुं के (तुं एटलुं कर के) हुं विभूतीनी गोळी थईने तेनी झोळीमां रहुं. ॥६॥

॥ दोहा ॥

होत निरास उदास व्है, कुसुम सु दई सुनाय ॥
बिन सागर कैसें जियौं, अब निश दिन क्यौं जाय ॥७॥

अर्थ, ए रीते प्रवीण निराश थइने उदासी थायछे, अने कुसुमावळीने संभळावी दीधुं के हुं सागरविना शी रीते जीवुं, अने रातने दहाडो केम जाय ? ॥ ७ ॥

॥ कवित ॥

कैसें धरों धीर असरीर कहो कैसे रहे, कोन सूने कासों कहूं काकरे सहायरे॥आवे नांहि कंत अब कछु नां कहावे कब, यातें अंत मोकुं कोंन अंतक मिलायरे ॥ अबतो असार भये सारहु बिचार मेरे, भाग भो अभाग यातें लागे तन ला-

यरे ॥ घर नां सुहावे वन फिरनां सुहावे नांहि,मरनां सुहावे सो कहावे हाय हायरे ॥ ८ ॥

अर्थ. हुं शी रीते धीरज धरुं? अने कामदेव शी रीते पीडा करतो रहे ते कहो? अरे मारी पीडा कोण सांभळे, अने केने कहुं, अने कोण मने महायता करे? हवे मारो स्वामि नहि आवे, अने कोइ वखते कांइ कहावशे पण नहीं, माटे अंते मने मोतनी साथे कोण मेळवशे? हवे तो मारा मारा विचार हता ते खोटा थइ गया. अने भाग्य हतुं ते अभाग्य थइ गयुं.तेथी मारे शरीरे लाय लागेछे,मने घर गमतुं नथी,बागमां फरवानुं गमतुं नथी अने मरवानुं गमेछे, ते मोत मने हाय हाय कहेवरावेछे. ॥८॥

॥ छंद भुजंगप्रयात ॥

सखी सागरं जात नां हाथ ग्राहे, अबे तो यहे फेर आहे न आहे ॥ अबे विर्हकी आगि अंगे लगेरी, गति कर्मकी हायरे हाय मेरी ॥ दिनांही दिनां व्याधि वैसें बढेंगे, अरे याकी व्यथाकों कढेंगे॥ यही वन्हिसें प्रान कैसें बचेरी, गती कर्मकी हायरे हाय मेरी ॥ विना नाथ कैसें करी अन्न खावे,गये जान पें जान पापी न जावे॥जरी नां भई देहकी भाग्य हेरी, गती कर्मकी हायरे हाय मेरी ॥ दुखं देगये ले गये सुख लूटे, छुटे स्नेह नां देहतें प्रान छूटे ॥ पुकारुं पती पें सुने नां अबेरी, गती कर्मकी हायरे हाय मेरी॥ प्रले ज्यों भयो आज त्यों द्योस मेरे, यहे कष्ट यों नां दिलं जान तेरे ॥ विना सागरं चित्त चिंता करेरी, गती कर्मकी हायरे हाय मेरी ॥ मही सर्वमें एक जो जीव मूरी, उहीसें भई छूटनेकी जरूरी ॥ जियको अबे कोन आधार हेरी, गती

कर्मकी हायरे हाय मेरी॥लिख्यो भाग्यमें सो अबें कोन टारे, गये अंकके बंकतें मिंत न्यारे॥ हृदेमें अबे धीर कैसें धरेरी, गती कर्मकी हायरे हाय मेरी॥अरेरे गये सागरं स्नेह त्यागी, इते क्यों रही पापनी में अभागी, किही जन्मके पाप पाये उदे री गती कर्मकी हायरे हाय मेरी ॥ ९ ॥

अर्थ. हे सखी? सागर मारो हाथ झालीने लइ जता नथी, अने हवेतो ते फरीथी आवशे के नहीं आवे, हवे विरहनी आग मारे शरीरे लागीछे, अरे हाय हाय मारा कर्मनी गति.हवे दिवसे दिवसे एमज व्याधि वधती जशे,अरे तेनी पीडा हवे कोण काढशे? अने ते आगथी मारा प्राण शी रीते उगरशे? अरे हायहाय मारा कर्मनी गति. स्वामी विना शी रीते करीने अन्न भावे? पतिरूपी प्राण गया, पण आ पापी जीव जतो नथी, अने आ शरीरनी बळीने राखनी ढगली थइ नहीं,अरे हायहाय मारा कर्मनी गति. मने दुःख दै गया. अने मारुं सुख लूटीने लइ गया, मारो स्नेह छूटतो नथी तेम शरीरमांथी प्राणपण छूटतो नथी,स्वामी स्वामी पुकारुंछुं, पण हवे ते सांभळता नथी, अरे हायहाय मारा कर्मनी गति. जेम प्रलय थयो होय, मारे आज तेवो दहाडोछे, अने आवुं दुःख ढुंकडुं आवशे एवुं मनमां में जाण्युं नहोतुं, हवे सागर विना मारुं चित्त चिंत्ता करे छे, अरे हायहाय मारा कर्मनी गति. आखी प्रथ्वीमां मारी एक जे जीवनमूळी, तेनाथी छूटा पडवानी जरूर पडी. हवे जीववानो आधार शो छे? अरे हायहाय मारा कर्मनी गति.जे भाग्यमां लख्युं होय ते हवे कोण टाळी शके? नशीबना वांका आंकथी मारो स्वामी वेगळे गयो. हवे हृदयमां शी रीते धीरज धरिये? अरे हायहाय मारा कर्मनी गति. अरेरे स्नेह तजीने सागर गया अने हुं पापिणी अभागिणी आंही केम रही ? मारां कया भवनां पाप

उदय थयां? अरे हायहाय मारा कर्मनी गति.॥९॥

॥ सोरठा ॥

क्यों दिन करों व्यतीत, कहो सखी कित जाउ अब ॥
चिंता बाढी चीत, सागरके कागर बिना ॥ १०॥

अर्थ. हे सखी? हुं शी रीते दिवश गुजारुं? अने हवे क्यां जाउं? ते कहो? सागरना कागळ वगर मारा मनमां चिंता वधीछे.॥१०॥

कोंन अबे इत आय, ताको संदेसो कहे ॥
जियसें रह्यो न जाय, सागरके कागर बिना ॥ ११ ॥

अर्थ. हवे कोण आंही आवीने तेनो संदेशो कहे? हवे सागरना कागळ विना मारा जीवथी रह्युं जातुं नथी.॥११॥

खान पान सुख आन, गान तान रस नां रुचे ॥
पल पल तलफे प्रान, सागरके कागर बिना ॥ १२ ॥

अर्थ. खावानुं, पीवानुं, अने बीजुं गानताननुं सुख गमतुं नथी, अने सागरना कागळ विना पळेपळे मारा प्राण तलफेछे.॥१२॥

दुख दरियाव अपार, तट ताको देखुं नहीं ॥
ओर नहीं आधार, सागरके कागर बिना ॥ १३ ॥

अर्थ. आ दुःखनो दरियो अपारछे, तेनो किनारो हुं देखती नथी, अने सागरना कागळ विना बीजो आधार नथी.॥१३॥

धरिये किहि विध धीर, पीर समे क्यों पिंडकी ॥
नयने बरषे नीर, सागरके कागर बिना॥ १४ ॥

अर्थ. शी रीते धीरज धरिये? अने शरीरनी पीडा शी रीते मटे? सागरना कागळ विना मारा नेत्रे आंसु बरसेछे.॥१४॥

पाती ज्युं प्रति मास, आती सब आती नहीं ॥

उरमें भई उदास, सागरके कागर बिना ॥ १५॥

अर्थ. जे दर महिने पत्र आवतो हतो, ते हवे आवतो नथी, माटे सागरना कागळ विना मनमां उदास थइछुं.॥१५॥

प्रेम प्रतीती होय, पत्र बिलोकी मित्रको ॥
क्यों अब करियें सोय, सागरके कागर बिना ॥ १६ ॥

अर्थ. मित्रनो पत्र जोइने तेमना प्रेमनी प्रतिती थाय, ते सागरना कागळ विना हवे शी रीते करियें?॥१६॥

दर्शन सम साक्षात, पाती पेखी होय सुख ॥
अब तो सुख नहीं आत, सागरके कागर बिना॥ १७॥

अर्थ. मित्रनो पत्र जोइने प्रत्यक्ष दर्शनना जेटलुं सुख थाय, पण हवे तो सागरना कागळ विना सुख आवतुं नथी.॥१७॥

॥ अथ उपमालंकार ॥ कवित ॥

सागर सन्यासी होई, बनके निवासी भये, तातें चहुपासी अब, देखुं दुख राशीमें ॥ भयोहे उदासी काया माया तें निरासी दील, होउ बनबासी, किधों करुं बास कासीमें ॥ प्रेमकुं प्रकाशी अष्ट जोगकुं अभ्यासी मागु, हीयमें हुलासी अविनाशीकुं उपासीमें ॥ संजोगि श्रीया सी शैलजा सी शिवकी जटा सी, भानुकी प्रभा सी होउं सागरकी दासीमें।१८।

अर्थ. सागर सन्यासी थइने वनना निवासी थया, तेथी हुं चारे तरफ दुखना ढगला देखुंछुं, मारुं मन उदासी तथा कायाथी ने मायाथी निराशी थयुं छे, अने एम धारुंछुं के वनमां जइने बास करुं के काशीमां जइने बास करुं? त्यां प्रेमनो प्रकाश करीने, अष्टांगयोगनो अभ्यास करीने, परमेश्वरनी उपासना करीने, हैयामां हुल्लास पामीने, एवुं मागुं के--लक्ष्मीना

जेवी, पार्वतीना जेवी, शिवनी जटा जेवी, अने सूर्यनी कांति जेवी, पतिना मनोगवाळी हुं सागरनी दासी थाउं.॥१८॥

॥ अथ स्मरनालंकार ॥ कवित ॥

गेवी जोगी आयो, भेख अजब बनायो उने, गूढ शब्द गायो, आइ अलेक जगायो री॥ शब्द सो सुनायो, मेरो मन मुरझायो तब, ताहिकुं बोलायो, हर्म्य तरे ठहरायो री ॥ भिक्षा जब पायो तब, चंचल चलायो पाउं, सत्वर सिधायो फेर, दृष्टि न देखयो री ॥ चेटक लगायो मेरा चित्तकुं भ्रमायो फेर, कहां सो छुपायो क्युंही, अजहु न आयो री॥१९॥

अर्थ. ज्यारे ते गेवी जोगी (सागर) आव्यो हतो, तेणे अजायेब जेवो भेख बनाव्यो हतो, तेणे आवीने गुढार्थ शब्द गायो, अने अलेख जगाव्यो हतो, ते शब्द सांभळ्यो त्यारे मारुं मन मुझायुं, अने तेने बोलाव्यो, अने हवेली तळे उभो राख्यो, ते ज्यारे भिक्षा पाम्यो, एटले तेणे चपळताथी पग चलाव्यो, ते तरत जतो रह्यो, अने फरीथी नजरे देखायो नहीं, मने चेटक लगाड्युं, अने मारा मनने भमाव्युं, पछी ते क्यां संताइ गयो, अने हे सखी ते हजीसुधी केम आव्यो नहीं ? ॥१९॥

॥ सोरठा ॥

सागर पथ चित चाहि, जब प्रवीन चकपें चली ॥
तब कुसुमावलि ताहि, कहन लगी जुगती करी ॥२०॥

अर्थ. पछी सागरना रस्ताने जोवाने मनमां चाहीने ज्यारे प्रवीण चक तरफ चाली, त्यारे कुसुमावळी तेने युक्ति करीने कहेवा लागी के.॥२०॥

॥ अथ शिक्षाक्षेप अलंकार ॥ कवित ॥

सुनहु सुजान चक समीप न जैहु कबे, द्युतिमान देह तेरो,

चकमें देखायगो ॥ माशुक तिहारो मुख,आशक निहारे कोउ, बावरो बनीके ठोर, ठोर बिललायगो, तिच्छन कटाछ तेरे, बानके समान तातें, छतियामें छेल कोउ, छिनमें छेदायगो॥ सातकुं सन्यासी बनबासी तेरे आस्य किये, ओरहु उदासी व्है सन्यासी होइ जायगो ॥२१॥

अर्थ. हे सुजाण सांभळ, तुं चकनी पासे क्यारेय जइश नहीं, केमके कांतिमान तारुं शरीर चकमांथी बहार देखाशे,हे माशुख? तारुं मुख जो कोई आशक पुरूष देखशे तो गांडो बनी जइने ठेकाणे ठेकाणे विलाप करतो फरशे, तारां कटाक्ष बाणना जेवां तिक्षणछे, तेथी कोइ छेल पुरूष क्षणवारमां छातीमां छेदाइ जशे, अने तारे मुखे सातजणाने तो सन्यासी करीने वनना निवासी कर्या. अने बीजाओ पण उदासी थईने सन्यासी थई जशे.॥२१॥

॥ दोहा॥

सब नर सन्यासी बनी, जो बसहो वन जाय ॥
सब शामा यह शहरकी, तोसें बैर बढाय ॥२२॥

अर्थ. एम जो बधा पुरुषो सन्यासी थईने जइने वनमां रहेशो? तोआ शहेरनी बधी स्त्रीओ तारी साथे वैर वधारशे?॥२२॥

॥ कवित ॥

देखी तेरो रूप, मान रतिको न रह्यो रंच, तातें रतिपति, तेरा तनकुं तवाश्रो री ॥पंकजकी प्रभा,छीन लीनी तेरे पाव पामी, पंकज तनूज तातें, बैरकुं बढायो री ॥ मृगके नयनकी नीकाइ तेरे नेन आई, तातें शशि तोकुं दुःख दायक देखायो री ॥ शरीरसें सागर संतानको शोभा लीनी, तातें

तोसें तेरो सेन सागर रीसायो री ॥२३॥

अर्थ. तारुं रूप जोइने कामदेवनी स्त्री रतीनुं मान लगारे रह्युं नहीं, तेथी कामदेवे तारा शरीरने तपाव्युंछे, तेमज तारा पगे ने हाथे कमळनी शोभा छीनवी लीधी,तेथी कमळनो पुत्र जे ब्रह्मा,तेणे तारी साथे वेर वधार्युछे, हरणना नेत्रनी सुंदरता तारा नेत्रमां आवी, तेथी मृगनो पति चंद्र तने दुःखदायक देखायोछे, अने तें शरीरमां सागरनां संतान (चंद्र, हाथी, शारंगधनुष, मोती, परवाळां, विगेरे)नी शोभा लीधी,तेथी हे सखी? तारो सज्जन सागर ताराथी रीसायोछे.॥२३॥

॥ दोहा॥

यों बहु संग विरोध करि, तुं पाई संताप ॥
प्रिय प्रवीन यह महलमें, गुप्त रहो अब आप ॥२४॥

अर्थ. ए रीते घणां साथे विरोध करीने तुं संताप पामीछे. माटे हे प्रिय प्रवीण हवे तमे आ महेलमां गुप्त रीते रहो.॥२४॥

सागर सागर यों कही, करि फिर फिर पोकार ॥
प्रवीन तन धीरज तजी विलपत वारंवार ॥२५॥

अर्थ. पछी प्रवीण हे सागर? हे सागर? एम कही कहीने अने फरी फरीने पुकार करीने पोताना शरीरनी धीरज तजीने वारंवार विलाप करवा लागी. ॥ २५ ॥

॥ गाहा ॥

किये प्रवीन विलापं, बिछुरन तें सागरो मित्रं ॥
त्रय सप्तति अभिधानं, पूर्न प्रविनसागरो लहरं॥२६॥

अर्थ. सागरमित्रना विजोगथी प्रवीणे विलाप कर्यो, ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी आ तोतेरमी लेहेर संपूर्ण थई.॥२६॥

इतीश्री प्रवीनसागर ग्रंथे रससागर वियोगे प्रवीन विलाप बर्ननं नाम त्रीसप्ततितमो लहरं ॥ ७३॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां त्रिसप्ततितमः स्वरंगः समाप्तः॥७३॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥चोपाई॥

प्रवीणनो सुणि दुख पोकार, सखिये शिक्षा दीधी सार॥
प्रेम परीक्षा करवा चही, चमोतेरमी लहेरे कही॥

॥ अथ कुसुमावली शिक्षा कथन प्रसंगो यथा ॥

॥ दोहा ॥

प्रबिन बहूत प्रलाप किय, कष्ट पुकारि पुकारि ॥
कहन लगी कुसुमावली, तब शिच्छा सु बिचारि ॥१॥

अर्थ. प्रवीणे दुःख पोकारी पोकारीने घणो विलाप कर्यो, त्यारे कुसुमावळी सारी रीते विचारीने शीखामण कहेवा लागी के.॥१॥

॥ सोरठा ॥

जानी जूठ प्रपंच, सुख दुख सहिये सर्वदा ॥
रुदन किये सें रंच, दया न आवे दैवकुं ॥२॥

अर्थ. आ संसार जूठो जाणीने हमेशां सुखदुख सहन करिये, केमके रुदन करवाथी दैवने लगारे दया आवे नहीं॥२॥

फेर कुसुम कहि बानि, प्रेम परिच्छन प्रबिनको ॥
मृषा लियो दुख मानि, कहा दुःख तव देहमें ॥ ३ ॥

अर्थ. वळी प्रवीणना प्रेमनी परीक्षा करवा सारु, कुसुमावळिये वाणी कही के तें मिथ्या दुःख मानी लीधुंछे, नहिं तो तारा शरीरमां शुं दुःखछे?॥३॥

दुनियामें दुख दोइ, तन दुख अरु निर्द्रव्य दुख ॥
ज्ञानी गिनत न कोइ, मन कलिपत दुख और सब ॥४॥

अर्थ. जगतमां बे दुःख खरांछे.एकतो शरीरनुं दुःख, अने बीजुं अन्नादिक द्रव्य वगरनुं दुःख होय ते, ते विना बीजां बधां दुःख मन कल्पित छे. तेने कोइ ज्ञानी दुःखमां गणता नथी.॥४॥

तजि वैभव ठहराय, जंगलमें जन जोगि व्है ॥
पुनि वह जाचन जाय, अन्न फलादिक द्रव्यकुं ॥ ५ ॥

अर्थ. कोई माणस वैभव तजीने जोगी थईने वनमां जईने वास करे, पण वळी ते अन्न, फळ, आदिक द्रव्यने जाचवा जाय.॥५॥

रोग रहित तन होय, अन्नादिक अनुकुल पुनी ॥
कष्ट ताहि नहि कोय, समजहु या संसारमें ॥ ६ ॥

अर्थ. तो शरीर रोग वगरनुं होय, अने वळी अन्नादि [illegible] पण होय, तो समजो के आ संसारमां तेने कांई दुःख नथी.॥६॥

सत्य दुःख यथा ॥ दोहा ॥

जो व्याधी वपुमें वढे, विसरत नहीं विसार ॥
ज्यों बीछू काटे करे, ज्ञानि पुनि सितकार ॥ ७ ॥

अर्थ. जो शरीरमां रोग वधे, तो ते दुःख विसार्युं विसरे नहीं, जेम के वींछी करडे, तो ज्ञानी पण सितकारा करवा लागे.॥७॥

॥ तोटक छंद ॥

धन धान बहू घरमांहि धरे,बहु किंकर किंकर ताइ करे॥सुखपाल अरू हय हाथि सजे, बड भूपति आइ समीप व्रजे ॥
तन व्याधि विशेप वढे जबही,सुख साज कहा सुखके तबही॥
जल कंठहुसें जब नां उतरे, तब क्या सुख सो सुखसाज

करे ॥ तदपी हिय हिंमत जाहि जगे, इनकुं दुख सो कछु अल्प लगे ॥ अब द्रव्यके दुःखकि बात कहुं, चतुरा सुन तोकुं सुनाइ चहुं ॥ जन जाइ चढ्यो इक जंगलमें, जल नांहि मिल्यो इनही थलमें, तन होइ त्रुषातुर प्रान तजे, कहहू सुख सो किहि रीत सजे॥ यह रीत कहुं फिर और सुनो, जन निर्धनकुं दुख होत दुनो ॥ जन खोजत उद्यम जो न मिले, दुख पावत सोइ अत्यंत दिले, तन होय गरिष्ठ बलिष्ट अती, तउ कष्ट कटे नहि कर्म गती ॥ मतिं मंत अत्यंत हुवे नरही, कहु ज्ञान बिचार कहा करही ॥ अस आपत काल परे जबही, इनकुं कछु सूजत नां तबही ॥ जिनकुं नहि बीति सु हास्य करे, अपने मनमें अभिमान धरे ॥ तब ही पुनि हिंमत होय हिये, कछु कष्ट निवारन होत किये ॥ दुखमें दिल धीरजता धरिये,उर धारि उपाय सु आदरिये८

अर्थ. घरमां धन धान्य घणुं भर्युं होय, अने घणा नोकरो नोकरी करता होय, सुखपाल अने घोडा हाथी सजेला होय, अने मोटा राजाओ पासे आवीने सेवा करता होय, पण ज्यारे शरीरमां घणो रोग वधे, त्यारे ते सुखनो सामान शा सुखनो छे! ज्यारे गळाथी पाणी उतरे नहीं, त्यारे उपर कहेलो सुखनो सामान ते शुं सुख करे? तो पण जेना हैयामां हिमत जागृत होय, तेने ते दुःख कांईक ओछुं लागे. हवे द्रव्यना दुःखनी वात कहुंछुं. हे सुजाण? ते तने संभळाववा चाहुंछुं. के एक माणस जंगलमां जइ चढ्यो. ते ठेकाणामां तेने पाणी मळ्युं नहीं, त्यारे शरीरे तृषातुर थईने प्राण तजे, तो कहो के ते शी रीते सुख पामे? एज रीते वळी बीजुं कहुं ते सांभळो, के निर्धन माणसने बमणुं दुःख थायछे, जेमके कोई माणसने

शोध करतां पण उद्यम हाथ लागे नहीं, तो ते मनमां अतिशे दुःख पामे. तेनुं शरीर बळवान अने बहु मोटुं होय, तो पण एवी कर्मनी गतिथी ते दुःख कापी शके नहीं. जो पुरुष घणो बुद्धिमान होय, तोपण कहो के ते ज्ञानथी शो विचार करे? एवो आपतकाळ ज्यारे पडे, त्यारे तेने कांई सूजतुं नथी. जेने माथे वीती नथी. ते मश्करी करे, अने पोताना मनमां अभिमान लावे, त्यारे पण जो हैयामां हिंमत होय, तो कांईक दुःखनुं निवारण करवाथी थाय, माटे दुःखनी वखते मनमां धीरजपणुं धारिये, अने मनमां लावीने कांई उपायनो आदर करिये.॥८॥

॥ मन कल्पि दुःख यथा ॥ चर्नाकुल छंद ॥

कोउ चहे धन धान्य निधाने, जो न मिले तो महा दुख माने ॥ कोउ दुखी दंपति बिछुरेसें, कोउ दुखी बिन संतति एसें ॥ को दुखिया पाई अपमाना, कोउ दुखी त्रष्णातुर जाना ॥ कोउ दुखी पर वैभव पेखी, उनसें न्यूनपनो निज लेखी ॥ स्वजन मरनसें कोउ दुखियारा, कोउ दुखी मिलि दुष्ट हि दारा ॥ कोउ दुखी शिर वैरि विशेषा, कोउ दुखी शिर कुपित नरेषा ॥ कोउ दुखी दुख आवन शंका, बिनदुख दुखी गिनी ग्रह वंका ॥ मन कल्पित अस दुःख अनेका, व्यर्थ दुखी जिन नांहि विवेका ॥ गंभिरताइ धरे जन ज्ञानी, कल्पित दुख न लहे दुख मानी ॥ तन आरोग्य रु उद्यम पावे, तो दुख थल तजि दूरहि जावे ॥ जब आपत आवत शिर भारी, सुज्ञ चलत तब समय बिचारी ॥ नृप हरिचंद्र बिशम गति जानी, तजि मद भर्यो श्वपच घर पानी. ॥९॥

अर्थ, केटलाएक (जनो) धनना के धान्यना भंडारनी इच्छा राखे,

अने जो ते मळे नहीं, तो मनमां मोटुं दुःख मानी ले. केटलांएक धणी-धणिआणी जुदां पडवाथी दुःख माने, तेमज कोई तो संतान विना दुःख माने, कोई अपमान पामवाथी दुखियो थाय, अने कोई तो घणी तृष्णाथी दुखिया जाण्या छे. कोई तो पारकी दोलत देखीने अने तेनाथी पोताने ओछुं छे, एम गणीने दुखियो थाय, वळी कोई तो पोतानुं माणस मरी जवाथी दुखियो थाय, कोईने नठारी स्त्री मळी होय तेथी दुखियो थाय, अने कोईने माथे घणा शत्रु होय तेथी दुखी थाय, अने कोइने माथे राजा कोप्याथी दुखी थाय, कोई तो दुख आववानी शंकाथी दुख मानी ले. अने पोताना ग्रह वांकाछे, एवुं गणीने वगर दुखे दुखियो थाय, एवां मन-कल्पित अनेक दुःख छे. जेने विवेक नथी. ते एवो फोगट दुखी थाय. पण ज्ञानी माणस तो गंभीरता राखे. अने कल्पित दुःखने दुःख मानी ले नहीं. जो शरीर रोग वगरनुं होय. अने सारो उद्यम मळ्यो होय तो ते दुखनुं ठाणुं तजीने वेगळे जाय, ज्यारे माथे मोटी आपत्ति पडे, त्यारे डाह्यो माणस समय विचारीने चाले. हरिश्चंद्र राजाये ज्यारे पोतानी पडती दशा जाणी, त्यारे अभिमान तजीने चांडाळने घेर पाणी भर्युं. ॥९॥

॥ छंद भुजंगी ॥

भली राजकन्या तुंही भाग्यवत्ती, पिता जाहिको हे बडो छत्रपत्ती ॥ कछू बातकी यों कमी नांहि तेरे, बहू दास दासी रहे नित्य नेरे ॥ मिले मिष्ट स्वेच्छा समं खानपानं, यहे बाहनं सो विमानं समानं ॥ धरे अंग आभूषनं जैसि इच्छा, हुकूमं करे सो फिरे नांहि पीछा॥ सबे स्वर्गके तुल्य हे सूख तेरा, मृषा दुःख मानी लियो एहि बेरा ॥ दुखी देखिले लोगहे दूनियामें, भरी पेट सो अन्न क्योंहू न पामे ॥ दुखी देखहू

देह हे रोगि जाको, कहूं सत्य तो देखिके दुःख ताको॥ तिहारे लिये में रहीहुं कुंमारी, तथापि कहुं कष्ट नांही पुकारी तुंही कष्ट पोकारही नित्य तेरो, नहीं जानतीहे कछू कष्ट मेरो ॥ जवे ओरको दुःख देखे निहाली, तवे बीसरे आपको दुःख आली ॥ १० ॥

अर्थ. हे राजकन्या ? तुं भली भाग्यवाळी छे. के जेनो पिता मोटो छत्रपति छे. एम कोई वातनी तारे खामी नथी. अने घणा दास, दासियो, हमेशां तारी हजूरमां रहेछे. अने पोतानी इच्छा प्रमाणे मिष्ट खावा पीवानुं मळेछे. अने विमान जेवां सारां वाहनो छे. जेवी ईच्छा होय, तेवां लूगडां अने घराणां पहेरेछे. अने तुं जे हुकम करे,ते पाछो फरतो नथी. तारुं बधुं सुख स्वर्गना जेवुं छे. तेमछतां आ वखतमां तें फोगट दुःख मानी लीधुंछे. आ दुनियामां केवा दुखिया लोक छे, ते तुं जोइ ले, ते विचारा कोइ रीते पेट भरीने अन्न पामता नथी. वळी जेओनां शरीर रोगीछे. तेओ केवा दुखी छे ते जो. साचुं दुख तो तेओनुं दुःख जोइने हुं कहुंछुं. वळी तारे लीधे हुं पण कुंवारी रही. तो पण हुं मारुं दुःख पोकारीने कहेती नथी. तुं हमेशां तारुं दुःख पोकारेछे. पण मारुं दुःख तुं कांइ जाणती नथी. ज्यारे पारकुं दुःख तपासी जुए,त्यारे हे सखी! पोतानुं दुःख वीसरे ? ॥१०॥

॥ दोहा ॥

दमयंती सीता सती, द्रौपदि भै दुख पात्र॥
तिनके दुखको तोल कर, तव दुखहे कुनमात्र ॥ ११ ॥

अर्थ. दमयंति, सती सीता, अने द्रौपदी दुःखनुं पात्र थई हती. तेना दुःखनो तोल करी जो. तो तारुं दुःख शा हिसाबमां छे? ॥११॥

सुनी दुखी जनकी कथा, आप विपत्ति बिसारि ॥

दुखके द्योस गुजारिये, धीरज उरमें धारि ॥ १२ ॥

अर्थ. दुखी माणसोनी कथा सांभळीने पोतानुं दुख वीसारीने अने मनमां धीरज धरीने दुःखना दिवसो काढिये. ॥१२॥

सुख पीछे दुख आतहे, दुख पीछे सुख आत ॥
आवत जावत अनुक्रमे, ज्यौं जगमें दिन रात ॥१३॥

अर्थ. सुखनी पाछळ दुःख आवे, अने दुःखनी पाछळ सुख आवे, जेमके जगतमां दहाडो ने रात अनुक्रमे आवेछे, ने जायछे, तेम सुखदुःख आवे जायछे. ॥१३॥

सुखके दिन बहि जातहे, दुखके दिन बहिजात ॥
गये दिवस सो स्वप्नगत, भासतहे इहि भात ॥ १४ ॥

अर्थ. सुखना दहाडा वह्या जायछे, अने दुःखना दहाडा पण वह्या जायछे. अने जे दहाडा गया, ते तो जेम स्वप्नां गयां एजरीते भासेछे. ॥१४॥

वयगत बर्ष बिचारिये, बीतत लगी न बार ॥
बीतहि एसे शेष वय, नहि तनको निरधार ॥१५॥

अर्थ. पोतानी उमरनां गयेलां वर्षनो विचार करिये,तो जणाशे के ते जतां वार लागी नथी.एज रीते उमरनां बाकीनां वर्ष पण वीती जशे. अने आ शरीरनो कांइ निरधार नथी. ॥१५॥

सुखमें न धरो हर्श अति, दुखमें नहि दिलगीर ॥
सुख दुख सबही जूठहे, ज्यौं मृगजलको नीर ॥१६॥

अर्थ. माटे सुखमां अतिशे हरखावुं नहीं, अने दुखमां दिलगीर थवुं नहीं. केमके झांझवानां पाणी जेवां सुख अने दुःख बधां जूठां छे. ॥१६॥

जिनकी आयुष जगतमें अब्द सहस्त्रहि एक॥
ऐसे जन पुनि मरगये, बीते बर्ष अनेक ॥१७॥

अर्थ. जगतमां जेनी आवरदा एक हजार वर्षनी हती. एवां माणसो पण मरी गयां, अने तेने घणां वर्ष थई गयां. ॥१७॥

कलिमें आयुप अल्पहे, बीतत लगत न बार ॥
इतनेमें सुख दुख दुको, हर्ष शोक क्या धार ॥१८॥

अर्थ. कळियुगमां टुंकी आवरदा छे. ते वही जतां वार लागती नथी एटलामां सुख दुःखनो हर्ष के शोक शो धरवो? ॥१८॥

आगें कविजन कहि गये, सबजनकुं सुखदाय ॥
धैर्य धरन मन द्रढ करन, सो अब देहुं सुनाय ॥१९॥

अर्थ. अगलना कवियो सर्वे माणसने सुखदायक धीरज धरवानुं अने मन द्रढ करवानुं कही गयाछे, ते हवे हुं तने संभळावी दउंछुं. ॥१९॥

॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

कबू गेह वासी कबू बंन वासी, कबू पूर्न आशी कबू व्हे निराशी ॥ सबे कर्मके जोगसें सो सहेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू मिष्ट पाई कबू शुष्क खाई, कबू द्रव्य पाई कबू सो गुमाई ॥ दिले हर्ष औ शोक काहु न लेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू पाव प्यादे चली पंथ जानां, कबू वाहनं सु विमानं समानां ॥ कबू दान देनां कबू दान लेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू श्रेष्ट भूपाल सन्मान देवे, कबू कोपिकें सो गृहं लूटि लेवे ॥ तऊ चित्तमें राखिये सूख चेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू व्हे संजोगि कबू व्है वियोगी, कबू व्है निरोगी कबू होइ रोगी ॥ मुखे बोलिये नां बनी भीरु बेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू व्याह उच्छाहको द्योस आवे,

कबू शोक सिंधू बिधाता बनावे ॥ नही रोयके डारिये नीर नेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू आप राजा मबनी राज कीजे, कबू नीचकी नौकरी चाहि लीजे ॥ भली बूरिहे यौं कछू नां कहेनां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं खुशीमें रहेनां ॥ कबू हस्तिनि पुष्पकी माल डारे, कबू शस्त्रसें आइ शत्रु प्रहारे ॥ धरी धीर धीराइ धोखा रखे नां, रखे ज्यौं प्रभु त्यौं जेखुशीमें रहेनां ॥२०॥

आ अर्थ. कह्युंछे के क्यारेक घरमां रहिये, अने क्यारेक वनमां रहेवुं ए. क्यारेक आशा पूर्ण थाय, अने क्यारेक निराशी थइये. ते बधुं कर्मना गथी सहन करवुं, अने परमेश्वर जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं. क्या- मिष्टान खाइने, अने क्यारेक लूखुं सूकुं खाईने रहेवुं. क्यारेक द्रव्य आमीने अने क्यारेक ते खोईने मनमां हरख के शोक कांइ राखवो नहीं, अने प्रभु जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं.क्यारेक पगपाळा चालीने पंथे जवुं पडे अने क्यारेक विमान जेवुं वाहन मळे. वळी कोइ वखते दान दइये, अने कोइ वखते लइये. प्रभु जेवी रीते राखे तेम खुशीमां रहेवुं. कोइ वखते मोटा राजाओ मान आपे. अने क्यारेक राजा कोपीने घर लूटी ले. तो पण मनमां सुखचेन राखवुं. अने प्रभु जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं. क्यारेक संजोगी थईए अने क्यारेक विजोगी थइये. क्यारेक निरोगी होइये. अने क्यारेक रोगी होइये. तोपण बीकण बनीने मोढेथी वचन बोलिये नहीं. अने प्रभु जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं. कोइ वखत विवाहना उत्साहनो दिवस आवे. अने कोइ वखते विधाता शोकनो दरियो बनावे. तोपण रोइने आंखेथी आंसु पाडिये नहीं, अने प्रभु जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं. क्यारेक आप राजा थईने राज करिये, अने क्यारेक नीच माणसनी नो-

करी चाहीने लइये, पण ते स्थिति सारी छे के खोटीछे. एम कांइ कहेवुं नहीं. अने प्रभु जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं. कोई वखते हाथणी फूलनी माळा आपणा गळामां नाखे. अने कोइ वखते शत्रु आवीने हथियारथी मारे, तोपण धीरजवान धीरज राखीने कांइ धोखो राखे नहीं. माटे प्रभु जेम राखे तेम खुशीमां रहेवुं. ॥२०॥

॥ दोहा ॥

सब अपने प्रारब्ध सम, सुख दुःख लेत सदाय ॥
कोउ प्रकारे कोउको, सुख दुख लियो न जाय ॥२१॥

अर्थ. सर्वे पोताना नशीब प्रमाणे हमेशां सुखदुख पामेछे, कोइ कोइनुं सुख दुख लइ शकाय नहीं. ॥२१॥

मात तात अरु मित्रजन, करिहे कहा सहाय ॥
दुख सुख दैवाधीनहे, सो अब कहुं बताय ॥२२॥

अर्थ. मावाप अने स्नेही माणसो, शी सहायता करी शके? दुःसुख दैवाधीन छे, ते हवे बतावीने तने कहुं. ॥२२॥

॥ तत्र समुद्रको दृष्टांत ॥ विज्ञावनालंकार ॥ सवैया ॥

पुत्रि दिनी परमेसरकुं, अमरेसरकुं इभ उत्तम दीनो ॥
उत्तम अश्व दिनंकरकुं अरु, शंकरकुं शशि अर्पन कीनो ॥
देव सुधा रु सुरा लिय दानव, मानव मोक्तिक आदिक लीनो
दैव रुठे न सहाय दिसे, रुषिराय जबे रतनागृह [illegible] पीनो ॥२३॥

अर्थ. समुद्रे पोतानी दीकरी (लक्ष्मी) प्रभु [illegible] परमेश्वरने दीधी, अने इंद्रने उत्तम हाथी आप्यो, वळी उत्तम घोडो [illegible] सूर्यने, अने शंकरने चंद्र आप्या, देवताओए अमृत, अने दैत्योये मदिरा लीधां, [illegible] मानवोये मोती, परवाळां विगेरे लीधां, पण ज्यारे समुद्र उपर दैव रुठ्यो, [illegible] रोस [illegible] ज्यारे

म कनिष्ठिकायां ॥ ॐ वं ॐ वाम अनामिकायां ॥ ॐ
मैं ॐ वाम मध्यमायां ॥ ॐ वां ॐ वाम तर्जन्यां ॥
ॐ वां ॐ वामाङ्गुष्ठ शिरसि ॥ ॐ यं ॐ वामाङ्गुष्ठ
मूले ॥२॥ ॐ ॐ ॐ नमः ॐ हृदि ॥ ॐ विं
नमः ॐ मूर्द्धनि ॥ ॐ षं नमः ॐ भ्रुवोर्मध्ये
ॐ लं नमः ॐ शिखायां ॥ ॐ वें नमः ॐ ने
त्रयोः ॥ ॐ नं नमः ॐ सर्वसन्धिषु ॥ ॐ
मः नमः ॐ अस्त्राय फट् सर्वदिक्षु ॥

माछलामां नजर करी, त्यां ते हार नजरे पड्यो. ते लइने नीचे उतरीने बे पैसानी माछली वेचाती लइने खाधी, तेना पेटमांथी ते वींटीपण पाम्यो, वळी ते चोरने पण राजानो भय लाग्यो, तेथी ते धणीना घरमां जइने द्रव्य नाखी आव्यो. हे प्रवीण सांभळ? ज्यारे दैव त्रुठ्यो, त्यारे ते दरिद्री गरीब मटीने श्रीमंत कहेवायो. ॥२५॥

॥ दोहा ॥

जबलों विपरित दैव हे, तबलों धीरज धार ॥
व्हेहे दैव सुलट तबे, पैहो सुखहि अपार ॥२६॥

अर्थ. माटे ज्यां सुधी दैव अवळो छे, त्यां सुधी तुं धीरज राख्य, अने ज्यारे दैव सवळो थशे, त्यारे तुं अपार सुख पामीश. ॥२६॥

मनको दुख मनमें रखो, न करो बदन बिलाप ॥
दुर्जन हरखे देखिकें, स्वजन धरे संताप ॥२७॥

अर्थ. मननुं दुःख मनमां राखो, अने मोढे विलाप करशो नहीं, केम के ते जोइने शत्रुओ राजी थाय, अने पोताना स्नेहियो संताप पामे. ॥२७॥

तज सागरके स्मरनकुं तज सागरको नाम ॥
अब शंकरको स्मरन कर, पावे सूखको धाम ॥२८॥

अर्थ. माटे हवे सागरने संभारवानुं जवा दे ने सागरनुं नाम जवा दे, अने हवे शंकरनुं स्मरण कर, के जेथी तुं सुखनुं ठेकाणुं पामे. ॥२८॥

अथ व्याजनिंदा अलंकार ॥ सवैया ॥

स्नेह धरे नहि श्री हरिमें, पुनि स्नेह नहीं शुलपाननमें ॥
सूरजदेवहुमें नहि स्नेह, नहीं पुनि गौरि गजाननमें ॥
सागर सागर नाम रटे, हरि नाम न आवत आननमें ॥
मानव देह दियो तुजकुं, यह चूक परी चतुराननमें ॥२९॥

अर्थ. तुं विस्नुमां स्नेह धरती नथी, वळी शंकरमां पण स्नेह धरती नथी, सूरजदेवमां तारो स्नेह नथी, वळी पार्वतीमां के गणपतिमां पण स्नेह नथी, केवळ सागर सागर नाम रटेछे, अने हरिनुं नाम तारा मुखमां आवतुं नथी, तने माणसनो देह आप्योछे, ते ब्रह्मामांज चूक पडीछे. ॥२९॥

संदेहालंकार ॥ दोहा ॥

नाम न हरि हरको रटे, नाम न अल्ला लीन ॥
अंते तेरी होयगी, चिता कि बबर प्रबीन ॥ ३०॥

अर्थ. तुं हरीनुं के हरनुं नाम रटती नथी, तेम अल्लानुं नाम लेती नथी, माटे हे प्रवीण ? तारी अंते चिता थशे ? के कबर थशे ? ॥३०॥

अथ उपमेयोपमालंकार ॥ दोहा ॥

स्नेही बहु संसारमें, पें न करत कौ युंहि ॥
तोंसे तो सागर दिसे, सागर जेसी तुंहि ॥ ३१ ॥

अर्थ. संसारमां स्नेहियो घणांछे, पण आम कोई करतुं नथी, तारा जेवा तो सागर देखाय छे, अने सागरना जेवी तुं छे. ॥३१॥

यों शिक्षा कुसुमें कही प्रबिन सुनी द्रग मुंद ॥
अंतरमें कछु नां ठरी, ज्यइ तयेकी बुंद ॥३२॥

अर्थ. ए रीते कुसुमावळिये शीखामण कही, ते प्रवीणे आंख्यो मींचीने सांभळी, ते तेना मनमां कांइ ठरी नहीं, अने धखती तवी उपर छांटो नाखिये तेवी थई. ॥३२॥

॥ गाहा ॥

कुसुम सखी यौं शिक्षा, धैर्य धरावन प्रबीनकुं दीनी ॥
चहु सप्तति अभिधानं, पूर्न प्राबिनसागरो लहरं ॥३३॥

अर्थ. प्रवीणने धीरज धरावा सारुं कुसुमावळिये एवी रीते शिखामण

दीधी, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ चंमोतेरमी लहेर संपूर्ण थई.॥२३॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे प्रविन प्रति कुसुमावली शिक्षा कथन नाम चतुः सप्ततितमो लहरं ॥७४॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गुर्जरी टीकायां चतुःसप्ततितम स्तरंगः समाप्तः॥७४॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

प्रवीण दुःख पतिनुं कहे, कुसुम करे परिहास ॥
लहरी पंचोतेरमी, करशे तेह प्रकाश ॥

अथ प्रवीन प्रिय प्रवास कृत चिंता तथा कुसुमकृत परिहास प्रसंगो यथा ॥ तत्र प्रवीनोक्त ॥ दोहा ॥

सागर सुमरन तजनको, तें कीनो उपदेश ॥
सो मेरे मनमें सखी, रुचत नहीं लवलेश ॥ १ ॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के हे कुसुमावळी ? सागरनुं स्मरण तजवानो तें मने उपदेश कर्यो. ते हे सखी मारा मनमां लगारे गमतो नथी. ॥१॥

तप्त तेल सम मुज रुदे, तव बानी जल सीत ॥
मिलत दोइ ज्वाला लगी, भैहूं में भयभीत ॥ २ ॥

अर्थ. उकळता तेल जेवुं मारुं हृदयछे. अने तारी वाणी टाढा पाणी जेवीछे. ते बेनो मेळाप थतां झाळ लागी, तेथी हुं भयभीत थईछुं. ॥२॥

॥ सवैया ॥

जाय कहो चित चाहि चकोरिकुं, काहिकुं चंदपें चित्त लगावे;
ओर कहो सब कंजनकों तमगंजन बीन क्युंही कुमलावे ॥
नीरजकुं तुंहि धीरज देहु, क्युं नीर बीना नहिं धीर धरावे;

देहु सिखामन सो सबकुं, सखि तेरी सिखामन मोकुं न भावे३

अर्थ. तुं जइने मनमां चाहीने चकोरीने कहे के ते शावास्ते चंद्रमां चित्त लगाडेछे.वळी बधां कमळोने कहे के सूरज विना शावास्ते ते करमाइ जायछे. वळी माछलांने तुं जइने धीरज आप,के ते शावास्ते पाणी विना धीरज राखतुं नथी. हे सखी? ए बधांने शिखामण दे.तारी शिखामण मने गमती नथी. ॥३॥

॥ दोहा ॥

जो चाहे सुख करन तो, कर सागरकी गाथ ॥
कहां गये क्या करन गय, यहै कोनको साथ ॥ ४ ॥

अर्थ. जो तुं मने सुख करवाने चहाती होय, तो सागरनी वात कर के ते क्यां गया? अने शुं करवा गया? अने तेमने कोनो संघातछे? ॥४॥

॥ अथ कुसुमोक्त ॥ कवित ॥

उत्तर दिशामें चलेजात अवलोके हम, संन्यासी स्वरूप सातों सज्जनको साथहे ॥ जानती हों अनुमान, जैहे हिमाचल चली,साधन करही बैठी जहां बद्री नाथहे ॥ एक अब्दहूकी औधी दीनी इत आवनकी, आवन न आवन सो तो हरिके हाथहे ॥ सुनहु सुजान मोकुं सागरकी गाथ बुझी, तातें में सुनाई, तोकुं सागरकी गाथहे ॥ ५ ॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के तेमने उत्तर दिशामां चाल्या जता में दीठा. अने सन्यासीने रुपे ते साते मित्रोनो साथछे. अने हुं अनुमानथी जाणुंछुं के तेओ चालीने हिमाचळमां जशे. अने ज्यां बाद्रिनाथछे त्यां बेशीने साधना करशे. अने आंहीं पाछा आववानी एकवर्षनी अवधि आपीछे. पण आववानुं के न आववानुं तेतो इश्वरने हाथछे. हे सुजाण? सांभळ. तें

मने सागरनी वात पूछी, तेथी में तने सागरनी वात संभळावी. ॥५॥

अथ प्रवीनोक्त विषमालंकार कवित ॥

राजके कुमार सुकुमार काया सागरकी, क्यों उने अरन्य बिचरन गति आदरी ॥ पांउ प्यादे पांउमें उपान बिन प्रौढ पंथ, चले हय हाथी सुखपालकुं अनादरी ॥ बाटहे बिकट गिरि घाटके संघट घने, हे प्रदेश दूर इत कहांहे हिमादरी॥ सागरके सिर सूरतापमें करन छाया, क्यों बिधिना मोकुं न बनाइ वहां बादरी ॥६॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के सागर राजाना कुंवरछे, अने तेमनी काया कोमळछे, तेमणे वनमां जवानी गति केम करी? पगे पाळा अने पगमां मोजडी वगर लांबे रस्ते घोडा हाथी अने पालखीनो अनादर करीने चाल्या, ते रस्तो बिकटछे. अने पर्वतना घाटनो जथ्थो घणो छे. अने ते प्रदेश घणो दूरछे, हिमाचळ अहीं क्यांछे? सागरने माथे सूरजना तापमां छाया करवाने ब्रह्माए त्यां मने वादळी केम बनावी नहीं? ॥६॥

॥ अथ रत्नावलि अलंकार ॥ कवित ॥

नहीं अश्व "अश्विनी" आ 'रोहिनी' हु नही संग, 'मृगशिर' फटे ऐसे तापमें क्युं चलीहे ॥ वरषामें "आरद्रा" बसुधामें क्यो बिचरही, नहीं "पुनर्वसु" 'हस्त' मिष्टान्न क्यों मलीहे॥ 'ज्येष्टा' जामिनी, कनिष्ट धोस सीत समयमें, मूल कंद प्राशन करीकें केसें पलीहे ॥ 'पूरवा' रु 'उत्तरा' न अनुमानी परे, 'श्रवन' सुन्यो न पंथ साग क्यों कढीहे ॥७॥

अर्थ. नहीं घोडो के नहीं घोडी, अने साथे गाडी पण नहीं. अने

गनां माथां फाटे एवा तापमां शी रीते चालशे ? अने चोमासामां भीनी जमीनमां शी रीते चालशे ? वळी हाथमां नाणुं पण नहीं, तेथी मीठुं मीठुं खावानुं क्यांथी मळशे?अने शियाळामां रात मोटी अने दिवस नहाना.तेमां कंदमूळ खाइने शी रीते चालशे ? अने पूर्व दिशा के उत्तर दिशा छे. तेनुं अनुमान करी शकाय नहीं, एवो काने सांभळेलो नहीं. ते रस्तो सागर शी रीते कळी शकशे ? ॥७॥

॥ कवित ॥

औगुनी गनी अशेष, छांडी मोकुं बारेबेश, प्रिय मेरो परदेश गयोरे रिसाइकें ॥ दे गयो बिजोग दुःख, ले गयो सबही सुख, वे गयो अबही मुख देखुं कहां जाइकें ॥ धरुंगी में कैसें धीर, करुंगी कहा उपाय, मरुंगी में खामुखां बिषम बिष खाइकें ॥ धाओरे सहाय मेरी, जाओरे सुजान कोउ, ल्याओरे सो सागरकुं मोहीपें मनाईकें ॥८॥

अर्थ. मन छेक अवगुणवाळी गणीने बाळे वेशे छांडीने मारो पति रीसाइने परदेश गयो. ते मने विजोगनुं दुःख दइ गयो, अने मारुं बधुं सुख लईने गयो. ते गयो.हवे क्यां जइने तेनुं मुख जोउं? हुं धीरज शी रीते धरीश, अने शो उपाय करीश? हवे तो हुं महा झेर खाईने नक्की मरीश, अरे कोई मारी साहयताये दोडो, अने कोई चतुर माणस जाओ, अने ते सागरने मनावीने मारी पासे लावो. ॥८॥

॥ असंगति अलंकार ॥ कवित ॥

जोगी नहीं जोगीरूपे आयो कोउ जादुगर, कछु जादु करी गयो मोकुं इत आइकें ॥ भीख मांगनेकुं आयो, भभूत लगाइ पुनि, भूति डारी गयो मेरा मनकुं भमाईकें ॥ कहा

जानुं कहा कियो, चित्त मेरो चोर लियो, सुद्धि हरी गयो, गूढ शब्द मुख गाइकें ॥ अवधूत बनी आयो, अलक जगावनेकुं, अलक जगातें गयो, अनंग जगाइकें ॥९॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के ए जोगी नहीं, पण जोगीनेरुपे कोइ जादुगर आव्यो हतो. ते अहीं आवीने मने कांइ जादु करी गयो. वळी ते भभूति लगावीने भीख मागवा आव्यो हतो, पण भूति नांखीने मारा मनने भमावीने गयो. शुं जाणुं जे शुं कर्युं, अने मारुं चित्त चोरी लीधुं. अने मोढे गूढार्थ शब्द गाइने मारी सुधबुध हरी गयो. ते अवधूत बनीने अलेख जगाववाने आव्यो हतो. पण ते अलेख जगावतां कामदेव जगाडीने गयो. ॥९॥

॥ अथ संदेहालंकार ॥ सवैया ॥

सागर राजकुमार यहै किधुं, हे ज्युं फिरंगि कहो सखि मोही ॥ सिद्ध यहे कीधुं हे ज्युं गुसांइ, किधों अवधूत सु जोगिहे ओही ॥ ज्यों नटवा बहु बेश बनावत, जानत कोन जथारथ सोही ॥ पंच सरूप लखे हम सागर, या महिं सत्य स्वरूपहि कोही ॥ १० ॥

अर्थ. हे सखी मने कहे, के सागर ते राजकुंमार छे? के ते फिरंगी छे? के सिद्ध छे? के गोसांइ छे? के एते अवधूत जोगी छे? जेम नट बहु वेष बनावे छे. तेने जथारथ कोई जाणी शकतुं नथी. तेमज सागरनां पांच स्वरूप में दीठां.तेमां साचुं स्वरुप कयुं हशे? ॥१०॥

॥अथ कुसुमावली उक्त परिहास॥ दोहा ॥

राजकुंमार फिरंगि सिध, गुसांइ अरु सन्यासि ॥
द्रोपदि ज्यो किय पंच पति, तउ तुंहि रही उदासि॥११॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळी हशीने बोली के एक राजकुंमार, बीजो

फिरंगी, त्रीजो सिद्ध, चोथा गोसांइजी, अने पांचमो सन्यासी, एरीते द्रोपदिनी पेठे तें पांच पति कर्या, तोपण तुं उदासी रही. ॥११॥

जाग्रत पुनि यह सुपन सम, हे सिगरो संसार ॥
सदा सुपनमें मिलत पति, तिन संतोषहि धार ॥१२॥

अर्थ. हे प्रवीण ? आ बधो संसार जागृत अवस्थामां पण स्वप्न जेवो छे. अने हमेशां स्वप्नामां तो तने पति मळेछे. तो तेथी संतोष राख.॥१२॥

॥अथ प्रवीनोक्त दृष्टांतालंकार ॥दोहा ॥

दहत देह अरु दील मुज, तेरे होवत हास ॥
होवत हांसी काग मन, दादुर देह बिनास ॥१३॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के मारुं तन ने मन दाझेछे. अने तारे हांशी थायछे. जेमके देडकानो जीव जाय, अने कागडाने हसवुं थायछे. ॥१३॥

॥ अथ प्रवीन कुसुमोक्त वक्रोक्ति अलंकार ॥ कवित ॥

सुन सखी अब मोकुं सागर मिलिहे कहां ! जाहु स्तंभतीर्थ ढिग सागर गंभीरहे ॥ कहां होहि मित्र ! अब हे सो मेषराशिहुमें, कहां भोगी भ्रंग मेरो ! जहां कंज नीरहे ॥ अहो सखी कब एहि होयगी अवधपुरी ! होनेकी कहाहे ! सदा सरजुके तीरहे ॥ बियोगतें मेरे तन बढयो अति परिताप, तो प्रवीन रहो जहां शीतल समीरहे ॥१४॥

अर्थ. प्रवीणे कह्युं के हे सखी सांभळ, हवे मने सागर क्यां मळशे? त्यारे कुसुमावळिये वक्रोक्तिमां कह्युं के खंभातबंदर जा, त्यां पासेज उंडो सागरछे.प्रवीण--ते मित्र क्यां हशे?कुसुमावळी--हालमां मित्र एटले सूर्य मेष राशिमां छे.प्रवीण--ते मारो भोगी भमरो क्यां हशे?कुसुमावळी--ज्यां पाणीमां कमळ छे, त्यां ते छे. प्रवीण--अरे ए अवधपुरी क्यारे थशे? कुसुमावळी--थवानी शुंछे ? अवधपुरी हमेशां सरजुनदीने कांठे छे. प्रवीण--विजोगथी

मारे शरीरे घणो ताप वध्यो छे, कुसुमावळी--तो हे प्रविण? ठंडा पवनमां जइने रहे. ॥१४॥

॥अथ प्रवीनोक्त ॥ सवैया ॥

राज तजी सुख साज तजी, गज बाज तजी, गति पाउ कीनी ॥ मात रु तात, तजी कुल जात, श्रिपात भये भ्रात भगीनी ॥ देह रु गेहसें नेह तजीकें, विदेह दशा दिलमें धरि दीनी ॥ मेरे लिये सुख सागरकुं, तजि सब विदागिरि लीनी ॥ १५ ॥

अर्थ. प्रवीण कहेछे के सागर राज तजीने, सुखनी सामग्रि अने हाथी घोडा तजीने पगे गति करी. मा, बाप, कुळ अने जात ने तथा भाई बेनने तजीने श्रीपात थया. शरीरथी अने घरथी स्नेह तजीने मनमां विदेहीनी दशा लीधी. मारे लीधे सुखनां समुद्रने तजीने सागरे तरत विदागिरी लीधी. ॥१५॥

॥ छपय ॥

इह ओसर इक विप्र, टहल भाखत यह पुरमें ॥
पढि जाने इक श्लोक, ओर विद्या नहि उरमें ॥
प्रवीन मंदिर पास, आयकें श्लोक उचारा ॥
कुसुम कहे सखि सुनहु, एहि हित चहत तुमारा ॥
तोकुं यह आशिष देतहे, सुनि सुजान सखिकुं कहे ॥
यह श्लोक पढतहे चंडिको, क्या आशिष मोकुं यहे ॥ १६ ॥

अर्थ. ए समे एक ब्राह्मण ते शहेरमां टेल नांखतो हतो. ते एक श्लोक भणी जाणतो हतो. तेना हृदयमां बीजी विद्या नहोती. तेणे प्रवीणनी मेहेली पासे आवीने ते श्लोकनो उच्चार कर्यो, त्यारे कुसुमावळिये कह्युं के हे सखी? सांमळ आ तारुं हित चहाय छे. ने ते तने आशिर्वाद आपेछे.

एवुं सांभळीने प्रवीणे कुसुमावळीने कह्युं के एतो चंडीपाठनो श्लोक भणेछे. एमां मने आशिर्वाद शो देछे ? ॥१६॥

॥ दोहा ॥

कुसुम तबे यह श्लोककुं, लिख्यो सु जुक्ती आन ॥
तिनमें दोहा देखिकें, सुमुदित भई सुजान ॥ १७ ॥

अर्थ. पछी कुसुमावळिये ते श्लोकने युक्ति लावीने लख्यो. तेमां दोहरो जोइने प्रवीण आनंद पामी.॥१७॥

॥ अथ वह श्लोक यथा ॥ वसंततिलकावृत्त ॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेति वीर्ये॥
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारि बलेच देव्या ॥
तां तुष्टुवुः प्रणति नम्र शिरोधरांसा॥
वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद्गम चारु देहाः ॥ १८ ॥

अर्थ. ज्यारे देविये महा बळवान दुष्ट महिषासुरने तथा तेनी सेनाने मारी नाखी, त्यारे इंद्रादिक देवोना समुदाय विनय सहित माथां होठ ने खभा नमावीने हर्षथी रुंवाडां उभां थयेलां एवा सुंदर शरीरवाळा पोतानी वाणीथी. ते देवीनी स्तुति करवा लाग्या. ॥१८॥

॥अथ कुसुम लिखित वह श्लोक अंतर्लापिका भेद यथा॥

श								
क्रा यः	को	द्ग	म	चा	रु			
द सु	र		ल	पु	र्ष	ह	दे	हाः
	ग	णा	नि	ह्ल			प्र	ग्भि:वा
तां	सा	रां			ते	ति	वी	र्ये
ण्या			ध	रो	शि	म्र	न	
सु	तु:		ष्टु	वुः	प्र	ण	ति	
	दे		च	ले	व	रि	रा	
	नि	त्म	रा	दु	न्	स्मि	त	

॥ अह श्लोकांतर्गत ॥ दोहा यथा ॥

शक्रादय सुर सुरगणा, दे प्रवीन तिण रात ॥
निंद्रे तु सागरको मलनि, तेसि प्रवन सुहात ॥ १९ ॥

अर्थ. ईंद्रादिक देवो तथा तेना गणो हे प्रवीण तने तेवी रात्रि आपे के जेम नीद्रामां तो सागरनो मेळाप थायछे, तेवीज उत्तम बनीने ते शोभे ? अर्थात् जागृतमां पण तेवाज मेळापथी ते रात्रि शोभे. ते दोहो कमळबंध चित्रमांथी वांचतां छेल्ला त्रण अक्षरो डाबी बाजुना नीचा खुणेथी अने जमणी बाजुना उपरना तथा नीचेना खुणाथी अकेको वंचायछे.॥१९॥

दोहांतर्गत श्लोक सो, सुनत तृप्त भय कान ॥
कर्नभूषन लक्षको, द्विजकुं दियो सुजान ॥ २० ॥

अर्थ. उपरना दोहरो जेमांथी वंचायो, एवो श्लोक सांभळतां प्रवीणना कान तृप्त थया, तेथी तेणे लाख रूपियानी किंमतनी काननी झाळ ब्राह्मणने आपी. ॥२०॥

कुसुमावलि परिहास करि, ओर प्रसंग चलाइ ॥
दुख बिसरावत प्रविनको, प्रविन बिसारत नांइ ॥२१॥

अर्थ. एरीते कुसुमावळी हांशी करीने वचमां बीजा प्रसंग चलावीने प्रवीणनुं दुःख वीसरावेछे. पण प्रवीण वीसारती नथी. ॥२१॥

॥अथ कुसुमोक्त सारालंकार ॥ कवित ॥

बडे बडे लोगनके बडे बडे हे आवास, ताते बडो तेरो सौध सबहीके सीरहे ॥ सुनहु प्रवीन तातें बडोहे शहर यह, तातें बडो देश यह तोयधीके तीरहे ॥ ताहितें भरतखंड, ताते बडो जंबुद्विप,तातें बडो निधि जामें अनहद नीरहे ॥ अकुपारतें अत्यंत बडोहे आकाश पुनि, तातें पुनि तेरो मन

वडोइ गंम्भीरहे ॥ २२ ॥

अर्थ. कुसुमावळी कहेछे के मोटा मोटा लोकोनां मोटां मोटां घरछे. तेथी मोटी तारी हवेली सौने मांये छे. हे प्रवीण ! सांभळ. ते हवेली करतां आ शहेर मोटुंछे. ते करतां आ मोटो गुजरात देश समुद्रने कांठेछे. तेथी मोटो भरतखंड, अने तेथी मोटो जांबुद्विप छे. अने तेथी मोटो समुद्र के जेमां अपार जळ भर्युं छे. वळी ते समुद्र करतां आकाश अतिशे मोटोछे. पण ते करतां तारुं मन मोटुं गंभीर छे. ॥२२॥

अधिकालंकार ॥ कवित ॥

चौद विद्या चोसठ कला औ चतुराइ सब, काव्यकी कलाके भेद जीतने कहातहे ॥ नवसें नवानुं नदी सातोंही समुद्रहुको सो तो ज्ञान तेरे मन मुठीमें ज्यों आतहे ॥ सातहु पाताल लोक, सातहु उरध लोक, ताको सब ज्ञान तेरे मनमें समा-तहे ॥ एसे वडे मनमें न मात छिलकाइ जात, केसी बडी एसी ब्रह बेदना अघातहे ॥ २३ ॥

अर्थ. तेमां चौदविद्या, चोसठकळा, अने बधी चतुराई, अने कवितानी कळाना जेटला भेद कहेवायछे. ते तथा नवसेने नवाणुं नदियो. अने साते समुद्रनुं ज्ञान, ते तो जेम मुठीमां आवे तेम समायुं छे. सात पाताळ लोक अने सात उपल्या लोक, तेनुं बधुं ज्ञान तारा मनमां समायछे, एवडा मोटा मनमां समाती नथी, अने छलकाई जायछे, एवी अपार विरहनी वेदना केवडीक मोटी छे ! ॥२३॥

॥ अथ अल्पालंकार ॥ दोहा ॥

तीनहु बर्न बिजोगके, लिखे विधाता जेह ॥
वह पुनि वहन न करिशके, कैसि तनक तव देह ॥ २४ ॥

अर्थ. विजोगना जे त्रण अक्षर विधाताये लख्या, एटलुं पण उपाडी शकतुं नथी. एवुं तारुं शरीर केवुं नाजुकछे? ॥२४॥

॥ अथ निरुक्ति अलंकार ॥ दोहा ॥

प्रभुताईकुं परहरी, तें भूताई लीन ॥
धाताने तेरो धर्यो, सत्यहि नाम प्र बीन ॥२५॥

अर्थ. तें प्रभुताईने तजीने भूताई एटले भूतपणुं लीधुं छे. माटे विधाताये तारुं नाम (प्रवीन) प्र अक्षर विना एवुं धार्युं. ते खरुंछे. ॥२५॥

॥ अथ विधि अलंकार ॥ दोहा ॥

सुजान तोकुं सब कहे, मात तात अरु आन ॥
संकटमें धीरज धरे, तब तुव नाम सुजान ॥ २६ ॥

अर्थ. तने मा, बाप, अने बीजां सौ सुजाण कहेछे. पण ज्यारे संकटमां धीरज राखे त्यारे तारुं नाम सुजाण खरुं. ॥२६॥

॥ गाहा ॥

प्रिय प्रयानकी चिंता, सुजान करि, पुनि कुसूम परिहास ॥
पंच सितर अभिधानं, पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥२७॥

अर्थ. पतिना जवानी चिंता, प्रवीणे करी, अने कुसुमावळिये हांशी करी, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ पंचोतेरमी लहेर संपूर्ण थई.॥२७॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे प्रवीन मित्र प्रयान कृत चिंता तथा कुसुमावली कृत परिहास कथनं नाम पच सप्ततितमो लहरं ॥ ७५ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां पंच सप्ततितम तरंगः समाप्तः॥७५॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ छंद भुजंगी ॥

सता रायनी जोगिणी वेष लेशे, सखी देशि देशी मळी शीख देशे ॥
तेथी वाणियोनां कवीतो कह्यांछे, कथा एह छोतेरमी लेरमां छे. ॥

२॥ अथ प्रवीन योगिनी रूप धारण प्रसंगो यथा ॥दोहा॥

मे॥ कहे प्रवीन कुसुम सुनो, अब तजि लज्जा लोग ॥
जेम मुज लिय निधि जोगी भये,में पुनि धरिहुं जोग ॥१॥

पण अर्थ. प्रवीण कहेछे के हे कुसुमावळी ? सांभळ. के मारे लीधे मारो जोगी थयो. तो हवे लोकनी लाज तजीने हुं पण जोग धरीश.॥१॥

चैं ॥ कवित ॥

तेजों द्रुग अंजनकुं, म्रगमद मंजनकुं, रंजन शयन सो तो तजों साप सो गिनी ॥ दर्पन न देखुं दील दर्प न धरी हुं कछु, तर्पन न करुं तन भइ स्वाद जोगिनी ॥ जानिकें अंगार सम, तजी हुं सिंगार सब, जल फलाहार करुं रहुं जेसें रोगिनी ॥ मेरे लिये तजी राज साज सुखसागरकुं,जोगी भये सागर तो में भइहुं जोगिनी ॥२॥

अर्थ. आंख्यो आंजवानुं तजीश, अने कस्तुरी वडे नाहावानुं तजीश, अने मनरंजन पलंग तेतो सर्पना जेवो गणीने तजीश. दर्पण नहीं जोउं,अने मनमां मगरूरी नहीं राखुं, अने स्वाद लेनारी भोगिणी थइने शरीरने तृप्त नहीं करुं,अने बधा शृंगार तो अंगारा जेवा जाणीने तजीश. जळने फळनो आहार करीने रोगिणीनी पेठे रहीश. मारे लीधे सागर राज साज अने सुखनो सागर तजीने जोगी थया, तो हुं पण जोगणी थइश.॥२॥

॥ श्रग्विणी छंद ॥

अंग तें सर्व शृंगार दूरं किये, केसपासं जटाजूट बांधी

लिये ॥ धोइ काश्मीरकुं, भस्म अंगे धरी, श्वेत वस्त्रं धर्यो और दूरं करी ॥ धातुको रम्य पल्यंक ऊठाइकें, छोनि बैठी मृगछार बीछाइकें ॥ दर्पनादीक सो दूर डारी दिये, जोगिनी रूप बैराग्य पाइ लिये ॥३॥

अर्थ. पछी प्रवीणे पोताना अंगथी सर्वे श्रृंगार दूर कर्या, अने चोटलानी जटा बांधी लीधी. ने केसर धोइ नांखीने शरीरे विभूति धरी. अने [illegible] दूर करीने धोळां लूगडां पहेर्यां. अने धातुनो सुंदर पलंग उपाडीने पृथ्वी उपर मृगचर्म पाथरीने बेठी. दर्पण वगेरे वेगळे नाखीदीधां, अने बैराग पामीने जोगणीनुं रूप लीधुं. ॥३॥

॥ कवित ॥

हार हीयतें उतारी, बेसरीकुं पीसी डारी, किंकनी निकारी धारी जेसी कारी नागिनी ॥ जेहरी जहर धारी, कंकनादिकुं धिकारी, भारी मोलवारी भयंकारी मुद्रिका गिनी, [illegible] तारी डारी, दामनी विदारी डारी, गारी इनमें [illegible], अरे तुं अभागिनी, सारी अंगियां उतारी, श्वेत सारी अंगधारी, वनिता प्रवीन सो, बनी रही विरागिनी ॥४॥

अर्थ. हैयेथी हार उतारीने नाकनी वाळीने तो तोडी नाखी, अने कटीमेखलाने काळी नागण जेवी धारीने काढी नाखी. पगनां लंगरने झेर जेवां धार्यां, अने हाथनां कंकण वगेरेने धिकार्यां. अने मोटी किमतवाळी [illegible] ने भयंकर गणी. काननी अकोटीने तोडी नाखी, अने [illegible] [illegible] तोडी नाखी. ने अरे तुं अभागणीछे, एवी गाळ तेने दीधी. साडी अने [illegible] उतारीने [illegible] साडी शरीरे पहेरी. एवी रीते प्रवीण स्त्री [illegible] बनीने रही ॥४॥

॥ दोहा ॥

कर अंजुलि जलकी भरी, नियम लियो तिहि ठाम ॥
यह तनसें संसार सुख, हे सब मोहि हराम ॥५॥

अर्थ. हाथनी अंजळीमां पाणी भरीने ते ठेकाणे नियम लीधोके आ शरीरथी मारे संसारनां सुख बधां हरामछे ॥५॥

यह तन तजिकें और तन, फिर पाउं जिहि ठोर ॥
सागर स्वामी हो हु मुज, यह इच्छु नहिं और ॥६॥

अर्थ. आ शरीर तजीने फरीथी बीजुं शरीर जे ठेकाणे पामुं. त्यां सागर मारो स्वामि थजो, एज इच्छा राखुंछुं. बीजी कांइ राखती नथी. ॥६॥

गूढ बानि आकाश भै. प्रबिन लियो जब नेम ॥
धन्यहि धन्य प्रबीन सति, पतिपर तेरो प्रेम ॥ ७ ॥

अर्थ. ज्यारे प्रवीणे एवो नियम लीधो, त्यारे आकाशमां गेबी वाणी थइके हे प्रवीण! पति उपर आवो तारो प्रेमछे, माटे तने धन्यछे, धन्यछे ॥७॥

कुसुमावलि बरजे बहू, नहि मानति इन बात ॥
तब सखिसो दिलगीर भै, नेन नीर बहजात ॥ ८ ॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळी बहु वारवा लागी, पण तेनी वात सांभळी नहीं. त्यारे ते सखी बहु दिलगीर थइ, अने तेनी आंख्योमांथी आंसु वहेवा लाग्यां. ॥८॥

॥ चरना कुल छंद ॥

कुसुमावलि मनमें गभराई, बोलि बचन निज शीश नमाई ॥ मत कर प्रबिन मती शिशुतासी, होवहि तव पितु मातु उदासी ॥ सत्य उपाय कहूं में तातें, हो युहि तव इच्छित फल ज्यातें ॥ तव माता प्रति मर्महि खोलु, बचन युक्ति बहु करि-

के बोलु॥ कहुं प्रविनकी है अति चाहा, सागरके संग करहु विवाहा ॥ तातें इनको दुख टरि जैहे, ओर परम आनंदहि पैहे ॥ यह दुखको कारनहे एही, जोग तजी भोगिनि पद लेही ॥ तव पितुकुं कहही तव माता, त्यों करही सुनिकें तव ताता॥प्रविन कहे सुन सखी सयानी,जानतही क्यों भई अजानी ॥ रंगरावसों सगपन कीनो, बचन तेहि मुज तातें दीनो ॥ सो तजि दुसरेसें परनावे, नहि हम कुलकी रीत कहावे ॥ यह विचार मैं मनमें कीनो, तातें कुमारिका-व्रत लीनो ॥ पुनि शिव शापकि जानति तुंही, यह भव विजोगि रहनां युंही ॥ कोन बात मिथ्या यह करही, तव उपायसें कहा सुधरही ॥ ९ ॥

अर्थ. कुसुमावळी मनमां गभराई,अने पोतानुं माथुं नमावीने वचन बोली के हे प्रवीण? बाळकपणाना जेवी बुद्धि न कर.केमके तारां म रदानी थशे. माटे जेथी तारी धारेली मतलब पार पडे, एवो खरो उपाय हुं तने कहुं. ते एके के तारी माता पासे आ मर्म हुं खुल्लो करुं, अने घणी युक्ति करीने वचन कहुं. के प्रवीणनी घणीज इच्छा छे, माटे सागरनी साथे तेनो विवाह करो. तेथी एनुं दुःख मटी जशे, अने परम आनंद पामशे, प्रवीणना दुःखनुं कारण एज छे. माटे एम करवाथी जोग तजीने भोगनीनुं पद लेशे. पछी तारी मा ए वात तारा पिताने कहेशे. ते सांभ-ळीने तारो बाप पण तेमज करशे. त्यारे प्रवीणे कह्युं के, हे डाही सखी ? सांभळ. तुं जाणती छतां, अजाणी केम थाय छे ? मारुं सगपण रंगराव साथे करेलुं छे. (लेहेर २ नो छंद. २ जुओ) अने तेने मारा पिताये वागदान करेलुं छे. ते छोडीने बीजे ठेकाणे परणावे,एवी आमारा कुळनी रीत कहे-

वानी नथी. ते विचार में मनमां करीनेज कुंवारां रहेवानुं व्रत लीधुंछे. वळी शिवना आपनी वात पण तुं जाणेछे. के आ भवमां एमज विजोगी रहेवुं. ते वात कोण मिथ्या करी शकशे ? अने तारा उपायथी शुं सुधर-वानुं छे. ॥९॥

॥ हरिगीत छंद ॥

सपुंट करी कर, मुंष्टि करि, टीको करन संज्ञा करी ॥ सं-कल्प संज्ञा, खुल्हि मुष्टि बताइ निजकर गल धरी ॥ द्रग-मर्दनी संज्ञा करी, निज भालपर धरि अंगुरी ॥ यह अष्ट संज्ञा करि बतावत, इक सवैया उच्चरी ॥ १० ॥

अर्थ. पछी प्रवीणे आठ संज्ञाओ करीने एक सवैयो कह्यो ते आठ संज्ञाओनी विगत जे (१) बे हाथ जोडीने कह्युं. (२) हाथनी मुंठी वाळीने कह्युं. (३) अंगुठे करीने टीको करवानी संज्ञा करी. (४) अंजळीथी सं-कल्प करवानी संज्ञा करी. (५) मुठी खुल्ली करी बतावी. (६) पोतानो हाथ पोताना गळा उपर मुक्यो. (७) आंख्यो चोळवानी संज्ञा करी. (८) अने पोताने कपाळे आंगळी अडाडी. ॥१०॥

॥ विवृतोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

युं करिकें कहुं तोकुं सखी, सब युं करिकें रखनी यह बाता ॥
युं करिकें कबु सागरकुं, पुनि युं करि मोकुं नदे पितु माता ॥
युं करही तुंही बात कबू, तब युं करि मोकुं हने मुज भ्राता ॥
युं करिकें रहनां अबतो सखि, युं इनमे लिख लेख बि-धाता ॥११॥

अर्थ. हे सखी ? आम करीने (हाथ जोडीने) तने कहुंछुं के आम करीने (मुठीवाळीने) ए वात राखवी. आम करीने (टीको करीने) कदी

मागने, आम करीने (संकल्प करीने) मारां मावाप मारुं (कन्यादान) दे नहीं. जो कदापी तुं आम (खुली) वात करीश, तो आम करीने (सर्व कार्गीने) मारो भाई मने मारी नाखशे. माटे हवे तो हे सखी ? आम करीने. (आंख्यो चोळीने) रहेवुं. विधाताये आमां (कपाळमां) एवोज लेख लख्यो छे. ॥११॥

॥ सोरठा ॥

चरचा यांहि चलात, सखियन आवन समय भय ॥
आये सखियन व्रात, देखि दशा सब दुखित भै ॥१२॥

अर्थ. एवी चरचा चलावे छे, त्यां बीजी सखियोने आववानी वेळा थई, एटले सखियोनी टोळी आवी. अने ते प्रवीणनी दशा जोईने सौ दुखीथई.॥१२

कोउ शिखामन देत, देवत कोउ उराहनो ॥
प्रवीन मन नहि लेत, देत न उत्तर काहुकों ॥१३॥

अर्थ. कोई सखी शीखामण देछे ने कोई ठवको देछे, पण प्रवीण कोईनी वात मनमां लेती नथी ने कोइने उत्तर पण आपती नथी. ॥१३॥

॥ अथ गूर्जरी सखीउक्त ॥ कवित ॥

कहे गूजराती तारी पीडा तो कळाती नथी, मनमां मुंझाती डीले दूबळी देखाती छे ॥ न्हाती नथी खाती नथी, गीत मुखे गातो नथी, बोलती लजाती वाघा जेवी तुं जणाती छे॥ राती राण जेवी हती, दीसे छे सुकाती जाती, आंखो राती राती तारी छाती ताती तातीछे ॥ प्रवीण पंकाती तुंतो गुणीमां गणाती पण, न्हासे एवी भाती जाणे भ्रांतिमां न्नमातीछे ॥१४॥

अर्थ. गुजराती छे माटे स्पष्ट छे. ॥१४॥

॥ अथ कच्छी सखीउक्त ॥ कवित ॥

सन्नर करेने सुण गाल ज्ञली न्नेण मुंजी, मन म मुझाय, मुंजो चोंण नांय खिलजो ॥ दुःख तोजो दिसी जीव, जेडलेंजो दुःख दीसे, मुलाजो मकर, धर्ध चइविज धिल्लजो ॥ खेंण पीण मिडे छडे, रात दीं रूएंती विठी, नतो तीं जणाय सतलजा तोजे मिल्लजो ॥ चेंत आडी अवरी पुछोंस भूएके कोठाय, बर्तरा थीधी हूएत खणां पंखो फूलजो ॥ १५ ॥

अर्थ. कच्छी सखी कहेछे के हे मारी सारी बेन धीरज राखीने वात सांभळ, अने तुं मनमां मुझा नहीं, मारुं कहेवुं मश्करीनुं नथी, आ तारुं दुःख देखीने बेनपणीओनो जीव दुःख देखे छे, माटे शरम नहीं करतां तारा दिलनुं दरद कही दे, तुं खानपान सर्वे मुकीने रातदिवस रोया करेछे, तेमज आ तारो ढोंगछे, एम पण कारण जणातुं नथी, कहे तो भूवाने तेडावीने आडी अवळी वात पूछिये, कदी तने बळतरा थती होय, तो (पवन नाखवा) फूलनो पंखो उपाडी लउ. ॥१५॥

॥ अथ महाराष्ट्री सखीउक्त ॥ कवित ॥

प्रवीणे मीं तुझें तोंड, पाहुन सांगती आतां, कुठे गेली फार वरी, कांती तुझी कायाची ॥ चांगली मुलीला आतां, काय असा रोग झाला, आहे गति ही विचित्र, ईश्वराची मायाची ॥ ए उनद्या वैद्याला व पाहुनद्या नाडी तुझी, तो तुला देइल फार वरी गोळी खायाची ॥ त्या पासून तूझा रोग जाउन होइल सुख, सांगितली तुला गोष्ट, हीं मीं वरी न्यायाची ॥१६॥

अर्थ. महाराष्ट्री सखी कहेछे के, हे प्रवीण? हुं तारुं मुख जोइने हवे

कहुंछुं के तारी कायानी घणी सारी कांति हती ते क्यां गई? अरे सारी कुंवरीने हाल आवो शो मोटो रोग थयो? अरे इश्वरनी मायानी आ बिचित्र गति छे, वैद्यने आववा दे,? अने तारी नाडी जोवादे? ते तने खावानी घण-मानी गोळी आपशे, तेथी करीने तारो रोग जइने सुख थशे, आ वात में तने सारी न्यायनी कही. ॥१६॥

॥अथ मरुदेशी सखीउक्त॥ कवित ॥

मांको थे केणो न माने, थांको हियो थरु वे नां, बोल जव कांइ थांने हुवो एडो दुखडो ॥ हाथां जोडी कांछां थांने कइ थे चिंता करांछां, जको माडु जेडो आज वे नां थारो मुखडो ॥ प्रवीण रायांरी बेटी, मति करो एडी बातां इशो किये थांने अठे उपजे न सुखडो॥मोकळो वे धन थारे लोबडी लाखांरी थारी, सोना जीशो चंगो थारो वडो वे झरुखडो १७

अर्थ. मारवाडी सखी कहेछे के--तुं मारुं कह्युं मानती नथी, ने तारुं मन स्थिर नथी,तुं कहे के तने आवडुं मोटुं शुं दुःख थयुंछे? हुं तने हाथ जोडीने कहुंछुं के तुं शी चिंता करेछे? जे माणसना जेवुं आज तारुं मुख नथी, हे प्रवीण राजकुमारी? आवी वात तुं न कर, आम करवाथी आ ठेकाणे तने सुख उपजवानुं नथी, तारे पुष्कळ धनछे, लाख रुपीआनी तो माळी तारे पेहेरवानी छे,अने सोना जेवो सुंदर तारो मोटो झरुखोछे.॥१७॥

॥अथ माधुरी सखी उक्त रत्नावळि अलंकार ॥ कवित॥

जाहिको या जगतमें जाहीरहे "जयपूर" भाग्यको "उदयपूर" भलो जाको आजहे ॥ जाहिकी सेनामें शस्त्रधारी जन "जोधपुरे" भंडार "भरतपूर" सूरको समाजहे ॥ जाकी रक्षा "धारापुरी" "उजयिनी" ओपतीहे, "लखनूर" पूर

डरे शत्रुको समाजहे ॥ "आ गरे" की सों हे कहो काहे तुं वे "दीली" रखे, ऐसो तेरो पिता नीतिपाल महाराजहे॥ ॥१८॥

अर्थ. व्रजनी सखी कहेछे के--आ जगतमां जेनो जस संपूर्ण छे, अने ना भाग्यनो उदय संपूर्ण सारो आजछे, जेनी फोजमां शस्त्रधरनारा पूरा द्धाछे, अने देवोनो समाज जेनो भंडार संपूर्ण भरेछे, जेनी तरवारनी धार जीत करनारी शोभेछे,जेनुं पुरुं तेज जोइने शत्रुनो समाज डरेछे, एवो पिता नितिपाळ महाराज छे. तेमछतां आ गळाना समछे,कहे के तुं वास्ते उदासपणुं राखेछे? ए कवितमांथी जयपूर, उदयपूर विगेरे नव हेरोनां नाम नीकळे छे, तेथी रत्नावळी अलंकार छे. ॥१८॥

॥अथ यावनी (उर्दु) सखी उक्त ॥कवित॥

नूरे आफताब नूरे महाताब चेरा तेरा,शीतारासी चश्म बुलबुलसी जुबानहे ॥ हुआ तेरा जीगर दरदमें गिरफतार, सबब सुनाओ रास्त जानु मेरी जानहे ॥ खाविंदे खलक रखे तेसें रहो खुशहाल, जीसकी ओलाद जानमंद वे जिहानहे ॥ फनांकर फिकर जिकर क्या प्रवीण नेण, खलकमें बावा तेरा खुद खानदानहे ॥ १९ ॥

अर्थ. मुसलमानी सखी कहेछे के--हे प्रवीण-सुरज ने चंद्रना तेज जेवो तारो चेरोछे, अने ताराना जेवी आंख्यो, अने बुलबुलपक्षी (एक जातनी चकली) ना जेवी तारी वाणी छे, तारुं मन दरदमा गरकाव थइ गयुंछे, हे मारीजान? (जीव) तेनुं साचुं कारण छे ते बताव्य, एटले हुं जाणुं. अने जीनवाळी बधी जहान (दुनिया) जे खुदानी ओलाद (वंश) छे, एवो आ दुनियानो खाविंद (खुदा) जेम राखे तेम खुशीमां रहो, अने आ दुनियामां

तारां बाप पोते खानदान छे. माटे हे प्रवीण बहेन ? फिकर नाश कर, अने आ माथाकुट शी करेछे ? ॥१९॥

॥ अथ गिर्वाणा सख्युक्त ॥ कवित ॥

वचनं वदामि ते हिताय त्वत्सुखाय चाहं, भूत्वा सावधाना तत्तु शृणु भाग्यशालिके ॥ केयं कृता भीता भूत्वा त्वया त्वंता चाक्रंदता, मां वदस्व कारणं तन्मृदुल मृणालिके ॥ त्वमसि विद्यावंती प्रभावती क्षमावती च, किं वदामि त्वामहं सद्गुण मणिमालिके ॥ धैर्यं धृत्वा भूत्वा स्थिरा कष्टं तु विनष्टं कुरु, बुद्धिमती भवत्वं प्रवीणे भूपबालिके ॥ २० ॥

अर्थ. देवलोकनी सखी बोली के--तारा हितने माटे अने तारा सुखने माटे हुं वचन कहुंछुं, हे मोटा भाग्यवाळी तुं सावधान थइने ते सांभळ? ते बीकण थइने आ अतिशे रोवापणुं शुं कर्युं? हे कमळनी डांडी जेवी कोमळ, तेनुं कारण तुं मने कहे? तुं विद्यावाळी, कांतिवाळी, अने क्षमावाळी छे, हे सद्गुणरूपी मणियोनी माळारूपी, हुं तुने शुं कहुं ? तुं धीरज धरीने स्थिर थइने, दुःखनो नाश कर, हे राजकुमारी प्रवीण तुं बुद्धिवाळी था, अर्थात् समजण राख्य ? ॥२०॥

॥ दोहा ॥

इहि विधि बहु सखियन कही, सुनी न कउकी बात ॥
नितनेमें आये तिहां, प्रविन मात पुनि तात ॥२१॥

अर्थ. एरीते घणी सखियोए कह्युं, पण कोइनी वात सांभळी नहीं, एटलामां प्रवीणनां मा ने बाप त्यां आव्यां. ॥२१॥

॥ चोपाई ॥

जननि जनक कहे सुनहु सुबुद्धा, क्यों तुहि भइ कूल देश

विरुद्धा ॥ नृप कुल यों न किये कोउ आगे, इहि बिधि किय कुल लांछन लागे ॥ प्रविन कहे नहि कछू नवाई ॥ भइ बैरागिनि मीरांबाई ॥ में तप करुं जो तुमहि लजाओ, मीरांवत मोकुं विख पाओ ॥ यह संसार असत्यहि जाने, जन तन फल तप करनहि ठाने ॥ जो तुम मोकुं बर्जन करहू, नहि छांडों तप पुनिमें मरहूं ॥ जिहि कुलमें जन भक्त कहावे, तिहि कुल महिमा मुनिवर गावे ॥ हरखित होहु हिये यों जानी, अब बर्जनकी कहो न बानी ॥ मात रु तात सुनी अस बेनां, कछु न कह्यो जल भर निज नेनां ॥२२॥

अर्थ. माबापे कह्युं के हे सारी बुद्धिवाळी सांभळ? तुं आपणा कुळथी ने देशथी विरुद्ध केम थई? आगळ राजाओना कुळमां कोइये आम कर्युं नथी, अने आ रीते करवाथी कुळने लांछन लागे, त्यारे प्रवीणे कह्युं के कांइ नवाई नथी, (राजकुळमां) मीरांबाई पण वैरागिणी थई हती, हुं तप करुं तेथी जो तमे लाजतां हो? तो मीरांबाइनी पेठे मने झेर पाओ? में आ संसार जूठो जाण्यो, माटे माणसना देहनुं फळ तप करवुं एज ठराव्युं. जो तमे मने वारवानुं करशो ? तोपण हुं तप नहीं छोडुं अने मरीश. जेना कुळ मां माणस भक्त कहेवाय, ते कुळनो महिमा मोटा ऋषियो गायछे, माटे एवुं जाणीने मनमां राजी थाओ,अने हवे मने वारवानुं वचन कहेशो नहीं, एवां वचन माबाप सांभळीने तेने कांइ कही शक्यां नही, ने आंख्योमां आंसुं भराइ आव्यां ॥२२॥

॥ दोहा ॥

पूत्री गनी तपस्विनी, पुनि पुनि करी प्रनाम ॥
मात पिता फिर उठ चले, रहि सुजान वह ठाम ॥२३॥

अर्थ. कुंवरीने तपस्विनी गणीने, वारेवारे प्रणाम करीने, मा ने बाप पछी उठीने चाली नीकळ्यां, अने प्रवीण ते ठेकाणे रही. ॥२३॥

देह दमन दिन दिन करे, वैरागिन व्रत धारि ॥
अब कहुं सागर सिद्धकी, चरचा चित्त बिचारि ॥२४॥

अर्थ. ते वैरागिणीनुं वृत्त. धरीने दिवसे दिवसे शरीरनुं दमन करवा लागी, कवि कहेछे के हवे सागर अने प्रभानाथ सिद्धनी चर्चा विचारीने कहुं छुं. ॥२४॥

॥ गाहा ॥

जोगिनि भइ नृपजाता, देसि देसि सखि दिये सिखामनह ॥
षट सप्तति अभिधानं, पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥२५॥

अर्थ. राजकुमारी जोगिणी थई, तेने देश देशनी सखियोये शिखामण दीधी, ते संबंधी प्रवीण सागर ग्रंथनी आ छोतेरमी लेहेर संपूर्ण थई. ॥२५॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे प्रवीन योगिनी स्वरूप धारन देशि देशि सखी शिक्षा कथन नाम षट्सप्ततितमो लहरं ७६

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां षट्ःसप्ततितम तरंगः समाप्तः ७६

॥ अथ टीकाकारोक्त तुरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

[illegible] पूर्व भव, कही भक्तिनी पेर ॥
ते वर्णनथी विगतथी, सत्योतेरामें लेर ॥

॥ अथ सिद्धोक्त सातों मित्रके पूर्व भव तथा भक्ति योग कथन प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

सागर बूझे सिद्ध प्रति, अहो सिद्ध महाराज ॥
अद्भुत शंशय एकहे, सो तुम छेदहु आज ॥ १ ॥

अर्थ. सागरे (प्रभानाथ) सिद्धने पूछयुं के हे सिद्ध महाराज ? अमने एक अद्भुत शंशय छे ते तमे आज मटाडो. ॥१॥

स्वारथि सब संसारहे, बिन स्वारथी न कोय ॥
सब अपनी मतलब लिये, मित्र अमित्रहि होय ॥ २ ॥

अर्थ. आ बधो संसार स्वारथी छे, स्वारथ वगरनुं कोई नथी, सौ पोतानी मतलबने लीधे मित्र अने शत्रु थायछे. ॥२॥

सुखमें सब जन मित्रहे, रहे दुःखमें दूर ॥
दूर न व्हेंहें दुःखमें, सत्यहि मित्र जरूर ॥३॥

अर्थ. सुखमां सर्व माणसो मित्र थायछे, अने दुःखमां दूर रहेछे, पण जे दुःखमां दूर न थाय ते जरूर साचा मित्र कहेवाय. ॥३॥

मात तात सुत भ्रात तिय, सबही मिलिहे सेल ॥
सत्य मित्र संसारमें, मिलन महा मुश्केल ॥ ४ ॥

अर्थ. मा, बाप, दिकरा, भाइयो अने स्त्री ते सर्व मळवां सहेलां छे, पण संसारमां साचा मित्र मळवा महा मुश्केल छे. ॥४॥

हम सातों सत मित्रहे, प्रान एक तन भिन्न ॥
एक दुखी जोगी भये, सब जोगीपन लीन ॥ ५ ॥

अर्थ. अमे साते साचा मित्र छिये, तेओनो जीव एक अने शरीर जूदां छे, केमके एक दुःखी थइने जोगी थयो, तो सघळाये जोगीपणुं लीधुं. ॥५॥

॥ तोटक छद ॥

धन ध्यान पुनी तजि जन्मधरा, भगवा लिय अंग धरी कपरा ॥ तजि पुत्र कलत्र सहोदरकुं, तजि लोकन लाजहुके

कुं ॥ निज मित्र दुखे दिल दुःख धरी, बनवासकि पीर कबूल करी ॥ सुख दायक सेन पलंग तजी, निज मित्र लिये मृगछार भजी ॥ अस मित्र कलीजुगमें न मिले, यह संशय है अति मोहि दिले॥भव पूरबको ज्यु संबंध यहे, मन-में हम यों अनुमान लहे ॥ कहहू यह पूर्व संबंध कहा, तुम जानतहो सब सिद्धमहा ॥ करुना करिकें यह भेद कहो, करुनानिधि हो सुखकारी अहो ॥६ ॥

अर्थ. धन धान्य अने जन्मभूमी तजीने शरीरे भगवां लूगडां धरी लीधां, पुत्र स्त्री, अने भाइयो, बेनो ने तजीने तथा लोकनी लाजनो भय तजीने, तंताना मित्रना दुःखथी मनमां दुःख धरीने, बनवासनी पीडा कबूल करी, सुखदायक सुवानो पलंग तजीने पोताना मित्रने लीधे मृगचर्म धारण कर्या, एवो मित्र कलियुगमां मळे नहीं, माटे ए घणो संशय मारा मनमां छे. तेथी अमे मनमां एवुं अनुमान करिये छिये के आ पूर्वभवनो कांइक संबंध छे, माटे ते पूर्वभवनो शो संबंध छे, ते कहो? केमके तमे मोटा सिद्धछो, माटे सर्व वात जाणो छो, माटे दया करीने ते भेद कहो? अहो तमे दयाना समुद्र, अने सुखकारीछो? ॥६॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध कहे सागर सुनो, जब तुमकुं शिव शाप ॥
भयो तबे तब मित्र पट, सब पाये संताप ॥ ७ ॥

अर्थ. त्यारे सिद्धे कह्युं के हे सागर सांभळो? ज्यारे तमने शिवनो श्राप थयो, त्यारे तमारा छ मित्रो सौ संताप पाम्या, ॥७॥

शिवके गन सातों तुमें, लियो मनुज अवतार ॥
तिनके नाम कहुं अबे, सुनि लेहू श्रुति धार ॥ ८ ॥

अर्थ. तेथी तमे साते शिवना गणोये माणसनो अवतार लीधो, तेओना

नाम हवे कहुंछुं. ते कान धरीने सांभळी ल्यो. ॥८॥

॥ अथ सात गनके अवतारके नाम ॥ कवित ॥

वपुधारी सागर ज्यु तुमहो विचित्रानंद, भ्रंगीसो भारती-
नंद गन भवदेवको ॥ कवि रविजोती सो तो शिव गन नंदी
नाम, बीरभद्र नाम बीरभद्रके अभेवको ॥ शिवानंद गनसो
शरीर धारी शत्रसाल, रतन प्रताप नाम मनीभद्र एवको ॥
द्रष्टकेतु गन सो कुमरउमराव कहे, एही बिध सातों मित्र
शंकरके सेवको ॥ ९ ॥

अर्थ. हे सागर तमे देहधारी विचित्रानंद छो, अने शिवनो गण भ्रंगी ते आ भारतीनंद छे, अने शिवनो गण नंदीनामे ते आ रविजोत नामना कवि छे; अने वीरभद्र नामनो तमारो मित्र छे, ते वीरभद्र नामना गणनुं नाम (अभेद) एजछे, अने शिवानंद नामनो गण ते देहधारी शत्रसालछे, ते आ रत्न प्रताप नामछे,ते मणिभद्र नामना गणनुंजछे, अने द्रष्टकेतु नामनो गण ते कुमारउमराव केहेवायछे; एरीते तमे साते मित्रो शंकरना सेवकछो. ॥९॥

॥ दोहा ॥

सत्य स्नेहि सातों तुमें, पूर्वहुके संबंध ॥
तिहि बिन कलिमें होतनहि, सत्य स्नेहको संध ॥१०॥

अर्थ. ए रीते तमे साते मित्र साचा स्नेहीछो, अने तमारे पूर्व भवनो संबंधछे. ते विना कळियुगमां साचा स्नेहनो सांधो होय नहीं. ॥१०॥

॥ दोहा ॥

सुनि हर्शित सातों भये, निज पूरव भव [illegible] १६ ॥
स्नेह सहित सो सिद्धकों, पुनि [illegible] [illegible]णजो. अने हे सागर!

अर्थ. ए रीते पोतानां पूर्व भवनां नाम सांभळीने साते जणा राजी थया. अने स्नेह सहित ते सिद्धने वारे वारे नमस्कार कर्या. ॥२१॥

॥ अथ सागरोक्त प्रश्न ॥ छंद कुंद ॥

पुछ्यो सागरे सिद्धकों नाइकें शीश, अहो सिद्ध हो आप जोगींद्रके ईश ॥ दयाके निधी दीनबंधू दयाकार, उतारो हमें सिंधु संसारके पार ॥ कृपा कीजिये दीजिये ज्ञान संबोध ॥ बताओ हमें सत्य सिद्धीनको शोध ॥ किहि भांति पावे हमें शैल कैलास ॥ अतीहि अबे उर कैलासकी आस ॥ सहेहे हमें भूमिमें बोत संताप ॥ अबे सद्य संताप टारो सबे आप॥ कहो ज्युं किहि भांति साधे हमें ईश, लखी दासकों दीन कीजे कृपा शीश ॥ तुमें जो कह्योतो कहेंगे अगे एह, कही-कें अबे सो हरो सर्व संदेह ॥ कहा कीजिये तो मिटे शंभुको शाप ॥ कहो बात संछेपसें इतनी आप ॥१२॥

अर्थ. पछी सागरे सिद्धने मस्तक नमावीने पूछ्युं के अहो सिद्ध तमे योगीन्द्रना ईश्वरछो, तमे दयाना समुद्र, दीनना बंधु, अने दया करनाराछो, माटे अमने संसाररूपी समुद्रने पार उतारो? दया करो, अने अमने ज्ञाननो उपदेश आपो, अमने सिद्धि पामवानो साचो शोध बतावो? अमे शी रीते कैलास पर्वतने पामिये ? हवे अमारा मनमां कैलास पामवानी अतिशे आशाछे. अमे पृथ्वी उपर घणो संताप सहन करिये छिये, हवे बधो संताप तमे तरत मटाडो? अने कहो के अमे शंकरनी साधना शीरीते करिये? अमने दासने गरीब जाणीने अमारे माथे दया करो? तमे कह्युं हतु के ए वात तिनके नाम कहीशुं. (ले. ४७ छंद ९ जुवो) ते हवे कहीने बधो संशय अर्थ. तेथी तमे साते शिवरतनो श्राप मटे ? एटली वात संक्षेपथी आप

कहो? ॥१२॥

॥ एकावलि अलंकार ॥ सवैया ॥

करिये कृति कष्ट समापनकी, सुख प्रापनकी सुरता धरिये ॥
धरिये सुधि शंकर जापनकी ज्यु, बिलापनकी बिपती हरिये
हरिये मति मोह अमापनकी, पुनि पापनकी सरिता तरिये॥
तरिये सरिता शिव शापनकी, थिर थापनकी करुना करिये॥१३॥

अर्थ. आ कष्टनी समाप्ती थवानुं कृत्य करिये, अने सुख पामवानी सुरत धरिये, अने शिवनो जाप करवानी शुध पामिये, अने आ विलाप करवानी पीडा अमारी हरी ल्यो? अने घणा मोहनी बुद्धि पण हरी ल्यो? वळी पापनी नदी अमे तरिये, अने शिवना श्रापनी नदी पण तरिये? अने अमने अविचळ स्थापवानी कृपा करो. ॥१३॥

॥ दोहा ॥

क्यों सर्वोपरि पाइयें, अविचल सुख अत्यंत ॥
कहो सोइ करुना करी, सदय हृदय हो संत ॥१४॥

अर्थ. सर्वोपरि अतीशे अविचळ सुख शी रीते पामिये? ते कृपा करीने कहो? तमे दयाळु हृदयवाळा संत पुरुषछो. ॥१४॥

सिद्ध कहे सागर सुनो, जो तुम चित्त चहाय ॥
अविचल सुख संप्राप्तिके, अबही कहुं उपाय ॥ १५ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के हे सागर सांभळो जो तमे मनमां चाहोछो तो अविचळ सुख पामवानो हवे तमने उपाय कहुंछुं. ॥१५॥

मिलत सोइ सुख ग्यानसें, जानहु यह निःशंस॥
सागर ग्यान समुद्रहे, कहुं अब इनको अंश ॥ १६ ॥

अर्थ. ते सुख तो ज्ञानथी मळेछे. एम नक्की जाणजो. अने हे सागर?

ज्ञाननो तो समुद्रछे. माटे तेमांथी अंश मात्र हवे कहुंछुं.॥१६॥

अविचल सुख अत्यंतको, गुनातीत हे धाम ॥
भक्ति योग अरु सांख्य तें, पावे जन निष्काम ॥१७॥

अर्थ. अत्यंत अविचळ सुखनुं तो सत्व, रज ने तम ए त्रण गुणथी जुदुं धामछे, ते भक्तिथी योगथी अने सांख्य विचारथी निष्कामी जन पामे।१७

ईश्वरके दोऊ रूप हे, निर्गुन सगुन विचार ॥
निर्गुनहे आकार विन, सगुन यहै साकार ॥१८॥

अर्थ. परमेश्वरनां बे रूपछे, एक निर्गुण ने एक सगुण, ते विचारवां, तेमां निर्गुणरूप आकार वगरनुंछे, अने सगुण आकारवाळुंछे. ॥१८॥

वैकुंठरु कैलाससे, धाम सगुनके वोत ॥
ताकुं चाहे चित्तमें, जो सकाम जन होत ॥१९॥

अर्थ. वैकुंठ अने कैलास जेवां सगुण इश्वरनां धाम घणांछे, जेनुं मन सकाम एटले वासनावाळुं होय, ते तेवा धामने मनमां चाहेछे. ॥१९॥

दोउ पंथ हे तित गमनके, अर्ची धूमहि होइ॥
अर्ची कहिये ज्ञान पथ, धूम क्रिया पथ सोइ ॥२०॥

अर्थ. ते सगुणने निर्गुण धाममां जवाना बे रस्ताछे, एक आर्चैमार्ग ने बीजो धूममार्ग छे, तेमां ज्ञाननो रस्तो ते आर्चैमार्ग ने यज्ञादिक क्रियानो रस्तो धूम मार्गछे. ॥२०॥

भक्ति करतहे भक्तजन, जोगी साधत जोग ॥
कौ निर्गुन कौ सगुनको, इहि विधि पावत लोग ॥२१॥

अर्थ. भक्तजन भक्ति करेछे. अने जोगी अष्टांग जोग साधेछे, ए रीते कोइ निर्गुणनुं ने कोइ सगुणनुं धाम पामेछे. ॥२१॥

ग्यानी सांख्य विचारतें, पावत पद निर्वान ॥

सो तिहुकी बिगती कहुं, सुनहू तुमें सुजान ॥२२॥

अर्थ. ज्ञानी सांख्य विचारथी मोक्षपद पामेछे. ते त्रणेनी विगत कहुं छुं ते तमे डाह्या जनो सांभळो.॥२२॥

॥ अथ भक्तिभेदाभिधान छंद ॥ चोपाई ॥

निगुन सगुनकी भक्ति कहावे, सुनहू ताके भेद सुनावे ॥ निगुन भक्ति मनमें धरि लीजें, सगुन भक्ति तन मनसें कीजे॥ नवधा भक्ति प्रथमही जानो, सो कनिष्ठ भक्ती उर आनो ॥ दसमी प्रेमलच्छना जोई, मध्यम भक्ति कहावत सोई ॥ पराभक्ति उत्तम श्रुति गावे, सेवक सेव्य भेद न रहावे ॥ उनके भेद भिन्न समजाउं, शास्त्र कथित सो सार सुनाउं ॥२३॥

अर्थ. निगुणनीने सगुणनी भक्ति कहेवायछे, तेना भेद संभळावुं ते सांभळो? निर्गुणनी भक्ति मनमां धारी लइये, अने सगुणनी भक्ति तनथी तथा मनथी करिये, तेमां प्रथम नव प्रकारनी भक्ति जाणो, पण ते कनिष्ट प्रकारनी भक्ति छे एम मनमां लावो. अने दशमी प्रेमलक्षणा भक्ति जे छे, ते मध्यम प्रकारनी भक्ति कहेवाय छे. अने आगियारमी पराभक्ति छे, ते उत्तम प्रकारनी छे एम वेद कहेछे, के जेमां सेवक अने सेवा करवा योग्य इश्वर, ए बेमां कांइ भेद रहे नहीं. ए आगियारे भक्तिना भेद जूदा जूदा समजावुं, अने ते शास्त्रमां कहेला छे, तेनो सार संभळावुंछुं. ॥२३॥

॥ अथ नवधाभक्तिके नाम ॥ दोहा ॥

श्रवन रु किर्तन स्मरन पुनि, पदसेवन अरचंन ॥
वंदन दास्य रु सख्यता, नवम आतमअर्पन ॥२४॥

अर्थ, श्रवणभक्ति, कीर्तनभक्ति, स्मरणभक्ति, पदसेवनभक्ति, अर्चन-

भक्ति, वंदनभक्ति, दासत्वभक्ति, सख्यभक्ति, अने आत्मार्पणभक्ति.॥२४॥

॥ अथ नवधाभक्तिलच्छन ॥ कवित ॥

चित्त धरी सुने इष्ट कथा सो श्रवनभक्ति, इष्ट गुन गावे सोई किर्तन कहात हे ॥ मन बानीसें स्मरन करे सो स्मरनभक्ति, इष्ट पद सेवा पदसेवन प्रख्यात हे ॥ षोडश प्रकार अर्चा करे सोइ अर्चन हे, तन मन नमे सोइ वंदन विख्यात हे ॥ दासपनो दासभक्ति, सखापनो सख्यभक्ति, सबही समर्पे, आत्मअर्पन गिनात हे ॥२५॥

अर्थ. मन राखीने इष्टनी कथा सांभळे ते श्रवणभक्ति, अने इष्टना गुण गाय ते कीर्तनभक्ति कहेवाय छे, मनथी ने वाणीथी संभारवुं ते स्मरणभक्ति, अने ईश्वरना पगनी सेवा करवी, ते पदसेवनभक्ति प्रख्यात छे, शोडषोपचार-थी पूजा करे ते अर्चनभक्ति. अने तनथी ने मनथी नमस्कार करे ते वंदनभक्ति प्रख्यात छे, दासपणुं करवुं ते दासभक्ति, अने मित्रपणुं राखवुं ते सख्यभक्ति, अने ईश्वरने सर्व समर्पण करे, ते आत्मनिवेदनभक्ति गणायछे.।२५।

॥ अथ प्रेमलच्छनाभक्ति बर्नन ॥ कवित ॥

प्रेमको प्रवाह सो अथाह बढे अंतरमें, भूले तन भान ताकुं कहा ओर इच्छना ॥ नहि खान पान भान गान करे भान बिन, कोंन करे पूजन प्रनाम रु प्रदच्छना ॥ नेननसें नीर बहे धीरन धरत उर, जाकि मती नांही व्यवहारमें बिचच्छना॥ डोलत दिवाना जेसा बोलतही तुंही तुंही, सिद्ध कहे सो प्रसिद्ध भक्ति प्रेमलच्छना॥२६॥

अर्थ. अपार प्रेमनो प्रवाह अंतरमां वधे, अने शरीरनुं भान भूली जाय तेने बीजी शी इच्छा रहे? तेने खावा पीवानुं भान रहे नहीं, अने भान

वगरनो थइने गुणनुं गान करे, पूजा नमस्कारने प्रदक्षणा तेतो कोण करे? नेत्रमांथी आंसु वह्यां जाय, अने हृदयमां धीरज धरी शके नहीं, अने जेनी बुद्धि संसार व्यवहारमां डाही गणाय नहीं, ते दिवाना जेवो थइने फरतो फरे अने इष्टने संभारीने तुंही तुंही एम बोले, सिद्ध कहेछे के ते प्रेमलक्षणा भक्ति प्रसिद्ध छे. ॥२६॥

॥ अथ पराभक्ति बर्नन ॥ कवित ॥

नेननमें पूतरी ज्यों बारीमें ज्युं बुदबुदा, भिन्न भासे पुनि भिन्न भाव नहीं जानिये ॥ एसें दासभाव धरी इष्ट संग मिल रहे, भिन्न भासे तदपि अभिन्न पहिचानिये ॥ एक रंग एक रूप एक प्रकृति अनूप, मिश्र छीर नीरको दृष्टांत उर आनिये ॥ अनुभवें अर्चे नमे, अनुभवें गुन गाय, सोई पराभक्ति परमात्मकी प्रमानिये ॥ २७ ॥

अर्थ. जेम नेत्रमां पूतळी, अने पाणीमां परपोटा, ते जूदां जणाय, पण तेमां कांइ जूदाइ जाणवी नहीं. एमज दासभाव धरीने इष्टनी साथे मळीने रहे, ते जूदो देखाय पण एकरूप जाणिये. एक रंग, एकरूप, अने सुंदर एकज स्वभाव, जेम पाणीने दूध मळेलां होय, ते दृष्टांत मनमां लाविये. अनुभवथी पूजे, ने अनुभवथी नमस्कार करे, ने अनुभवथी गुण गाय ते परमात्मानी पराभक्ति छे एम मानिये. ॥२७॥

॥ दोहा ॥

उत्तम मध्यम अधम यों, भक्ति कही तिहु भात ॥
यह बिधि भक्ती योगसें, प्रानि परमपद पात ॥२८॥

अर्थ. ए रीते उत्तम, मध्यम अने अधम, त्रण प्रकारनी भक्ति कही, ए प्रकारे भक्तिना योगथी प्राणी परमपद पामेछे. ॥२८॥

जोगी जन हठजोगसें, ललित परमपद लेत ॥
सो अब में तुमकुं कहुं, सुनहू होई सचेत ॥ २९ ॥

अर्थ. हवे योगीजन हठयोगथी सुंदर परमपद पामेछे. ते हुं तमने कहुं, ते सावधान थइने सांभळो. ॥२९॥

॥ गाहा ॥

मित्र पूर्वभव कथनं, भक्ति भेद पुनि त्रिधा कथित सिद्धे॥
सप्तसितर अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥३०॥

अर्थ. एरीते मभानाथ सिद्धे साते मित्रोना पूर्वभव कह्या, तथा त्रण प्रकारनी भक्ति कही, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ सत्योतेरमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३०॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे मित्र पूर्वभव कथनं तथा भक्ति-भेद वर्ननं नाम सप्तसप्ततितमो लहरं ॥ ७७ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां सप्त सप्ततितम स्तरंगः समाप्तः ॥७७॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

यम नीयम आसन विधी, कहि जोगिये जेह ॥
अठोतेरमी लहरमां, वर्णन करशे तेह ॥

॥अथ अष्टांगयोगे यम नियमासन कथन प्रसंगो यथा॥

॥ दोहा ॥

भक्ति भेद सिद्धे कह्यो, सो सुनि मन मुद पाई ॥
सागर स्तुति किय सिद्धकी, स्नेह सहित सिर नाई ॥१॥

अर्थ. सिद्धे भक्ति योग कह्यो, ते सांभळीने मनमां आनंद पामीने सा-

गरे स्नेह सहित मस्तक नमावीने सिद्धनी स्तुति करी. ॥१॥

॥ अथ सिद्धकी स्तुतिको ॥ कवित ॥

भक्ति भेदके प्रकार, सिद्धने किये उचार, सातों मित्र श्रोन धार, सब सुनि लियोहे ॥ अब अष्टयोग अंग सुनन बढ्यो उमंग रुदयकुं प्रेमरंग, रंजित सु कियोहे ॥ सिद्धपें जनाइ स्नेह, फेर कही बानी एह, ग्यानको पियूष जेह, आज हमें पियोहे ॥ अहो सिद्ध महाराज उत्तम दे ग्यान आज, गरीबनिवाज नरदेह फल दियोहे ॥ २ ॥

अर्थ. सिद्धे भक्ति भेदना प्रकारनो उच्चार कर्यो. ते साते मित्रोये काने धरीने बधुं सांभळी लीधुं, हवे अष्टांगयोग सांभळवानी उत्कंठा वधी, तेणे हृदयने प्रेमना रंगथी रंजन करी मूक्यां, त्यारे सिद्ध प्रत्ये स्नेह जणावीने फरीथी एवी वाणी कही के, अमे आज ज्ञाननुं अमृत जे पीधुं, ते हे सिद्ध महाराज! आज तमे उत्तम ज्ञान दईने हे गरिब निवाज नर देहनुं फळ अमने आप्युंछे. ॥२॥

॥सद्गुरुकी दुर्लभता विषे ॥ कवित ॥

मिले मात तात भ्रात, मिले पुनि सुख सात, मिले सात धात ओर उत्तम आगारहे ॥ दुर्लभमें दुर्लभ मिलाप गुरुदेवहुको सदगुरु दया सिंधु ग्यानके दातारहे ॥ गुरु बिन ग्यान कोन पावत या पृथवीमें, गुरु बिन ग्यान हीन सकल संसारहे ॥ सदगुरु बिना कोन संसय मिटावे ओर, सदगुरु मिले ताको सुभाग्य अपारहे ॥३॥

अर्थ. मा, बाप, भाई मळे, अने साते सुख पण मळे, सात धातुओ तथा उत्तम घर मळे, पण गुरुदेवनो मेळाप तो दुर्लभमां दुर्लभछे, अने स-

सद्गुरु ज्ञानना समुद्र अने ज्ञानना आपनाराछे, आ पृथ्वीमां गुरु विना ज्ञान कोइ पाम्यो नथी. संसार गुरु विना अज्ञानी रहेछे, सद्गुरु विना बीजो कोण उद्धार करशे? जेने सद्गुरु मळे, तेना अपार सारां भाग्यछे. ॥३॥

॥ दोहा ॥

भेद भक्तिके तुम कहे, सो हम सुने सप्रीत ॥
मुक्ति कहो अब जोगकी, सुनन चहत हम चित्त ॥४॥

अर्थ. तमे भक्तिना भेद कह्या, ते अमे प्रीति सहित सांभळ्या, हवे जोगनी मुक्ति कहो? जोगके ते सांभळवाने अमे मनमां चाहिये छिये.॥४॥

मित्र कहौं सागर सुनौ, जो तुम चाहत चीत ॥
मुक्ति कहुं अब जोगकी, धरि परिपूरन प्रीत ॥५॥

अर्थ. मित्र कहुंछुं के हे सागर सांभळो? जो तमे मनमां चाहोछो - तो पूर्ण प्रीति राखीने हवे जोगनी मुक्ति कहुंछुं. ॥५॥

भेद सुनौ हठयोगके, यहे योग अष्टांग ॥
साधत है सो जोगिजन, सोई सुनाउं सांग ॥६॥

अर्थ. हठ योगना भेद सांभळो? ते योगनां आठ अंगछे. ते योगी लोको साधेछे, तेनां अंग सहित संभळावुंछुं. ॥६॥

॥ अथ अष्ट योग नामानी ॥ हरिगीत छंद ॥

यम नियम आसन और प्रानायाम प्रत्याहार है॥
धारना ध्यान समाधि सौं यह अष्ट योग प्रकार है ॥
कहुं प्रथम तिनमें यम नियम अरु आसनं मुनि ज्यों करे॥
भिन भिन कहेंगे ज्यों जथारथ, भेद अंतर उतरे ॥७॥

अर्थ. यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि ए रीते योगना आठ प्रकारछे, तेमां प्रथम यम, नियम अने आसन मुनिओ

जेम करेछे, ते कहुंछुं केमके थोडुं थोडुं कहेवाथी जेम जथारथ भेद तमारा अंतरमां उतरे. ॥७॥

॥ अथ दशविधि यम कथन ॥ हरिगीत छंद ॥

कहिये अहिंसा सत्य पुनि, अस्तेय अरु ब्रह्मचर्य हे ॥
धृति क्षमा और दया रु आर्जव, मिताहार रु शौच हे॥८॥

अर्थ. अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य धृति क्षमा दया आर्जव मिताहार शौच ए दश प्रकारना यम कहेवायछे. ॥८॥

॥ अथ अहिंसालच्छन ॥ दोहा ॥

मनसें तनसें बचनसें, करे न कौकी घात ॥
यही अहिंसा धर्म हे, कहत वेद साक्षात ॥९॥

अर्थ. मनथी तनथी के वचनथी कोइनी घात न करे, ए अहिंसा धर्म छे,एम साक्षात वेद कहेछे. ॥९॥

॥ अथ सत्यलच्छन ॥ दोहा ॥

जिहसें असत्य नां कहे, करे न असत्य कर्म ॥
दो प्रकारके जानिये, यहे सत्यही धर्म ॥१०॥

अर्थ. जीभथी जूठुं बोले नहीं, अने जूठुं काम पण करे नहीं, ए रीते बे प्रकारनो सत्य धर्मछे, ते जाणिये. ॥१०॥

॥ अथ अस्तेयलच्छन ॥दोहा ॥

तनसें मनसें काहुकी, चोरि न करनी चाहि ॥
दो प्रकार अस्तेयके, जानत मुनिजन जाहि ॥११॥

अर्थ. शरीरथी के मनथी चाहिने कोइनी चोरी करवी नहीं, ए रीते बे प्रकारनो अस्तेय धर्मछे, जेने मुनिजनो जाणेछे. ॥११॥

॥ अथ ब्रह्मचर्य लच्छन ॥ चरनाकुल छंद ॥

नमंरन श्रवंन रु निरखंन नारी, भाखंत गुह्य वृतांत उचारी ॥ हास्य रती स्पर्शन नहि सजनां, ब्रह्मचर्य अठ मैथुन तजनां ॥१२॥

अर्थ. स्त्रीने संभारवी, स्त्रीनी वातें सांभळवी, स्त्रीने नीरखवी, स्त्रीनी संघे बोलवुं, स्त्रीने छानी वात कहावची, तेना साथे हंसवुं; संभोग करवो, स्त्रीनो स्पर्श करवो, ए आठ प्रकारनुं मैथुन कहेवायछे, तेने तजवां ए ब्रह्मचर्य कहिये. ॥१२॥

॥ अथ धृतिलच्छन ॥ दोहा ॥

सुख दुखमें आपत्तिमें, डरे न कउसें जेहि ॥
धीरज सर्व समय धरे, धर्म धृतीको एहि ॥१३॥

अर्थ. सुखमां दुखमां के आपत काळमां जे कोइनाथी बीये नहीं, अने सर्व समये धीरज राखे ते धृतिनो धर्मछे. ॥१३॥

॥ अथ क्षमालच्छन ॥ चरनाकुल छंद ॥

कौ ताडन कर कौ दे गारी, कौ निंदा करिहे नर नारी ॥
सो सब सहन करी ज्यों रहिये, ताको नाम क्षमाही कहिये १४

अर्थ. कोइ मार मारे के कोइ गाळ दे, कोई स्त्री के पुरुष निंदा करे, ते सर्वुं सहन करीने रहिये, तेनुं नाम क्षमा कहिये. ॥१४॥

॥ अथ दयालच्छन ॥ दोहा ॥

सब प्रानीको हित चहे, मन क्रम वचनहि जोय ॥
वेर करे नहि काहुसें, दया कहत मुनि सोय ॥१५॥

अर्थ. मनथी क्रियाथी अने वचनथी जे सर्व प्राणियोनुं भलुं चाहाय, अने कोइनी साथे वेर राखे नहीं, तेनुं नाम मुनिजनो दया कहेछे. ॥१५॥

॥ अथ आर्जव लच्छन ॥ चरनाकुल छंद ॥

निज अंतर कोमलता धारे, मुखसें कोमल वचन उचारे ॥
सबपें कोमल दृष्टी राखे, आर्जव नाम ताहि मुनि भाखे॥१६॥

अर्थ. पोताना अंतःकरणमां कोमळता राखे, अने मोढे कोमळ वचन बोले, अने सौना उपर कोमळ नजर राखे, तेनुं नाम मुनियो आर्जव कहेछे.१६

॥ अथ मिताहार लच्छन ॥

सात्विक अन्न सु भोजन करही, तिक्त मिष्ट स्वाद न अनुसरही ॥ कछुक न्यून भोजन कृत रहही, मिताहार ताकु मुनि कहही ॥१७॥

अर्थ. तीखाने मीठा स्वाद न चहातां (सत्वगुणी) सादुं अन्न जमे, अने कांइक ओछुं भोजन करतो रहे, तेने मुनियो मिताहार कहेछे. ॥१७॥

॥ अथ शौच लच्छन ॥

मृतिका जलसें तन सुध करिहे, ज्ञानहुसें अंतर मल हरिहे॥ रागादिक तजि शुचि मन राखे, शौचाचार ताहि मुनि भाखे ॥१८॥

अर्थ. मृतिका अने पाणीथी शरीरने शुद्ध करे, अने ज्ञानथी अंतःकरणमो मेल काढे, अने राग, द्वेष विगेरे तजीने मन पवित्र राखे, तेने मुनियो शौचाचार कहेछे. ॥१८॥

॥ अथ दशविधि नियम बर्नन ॥

तप संतोष रु आस्तिक्य लीजे, दान रु पूजन कथा सुनीजे ॥ लज्जा जाप रु मौन रहावे, होम सहित दश नियम कहावे ॥१९॥

अर्थ. तप संतोष आस्तिक्य दान पूजन कथाश्रवण लज्जा जाप मौन रहेवुं, होम. एरीते दश प्रकारना नियम कह्या छे.॥१९॥

॥ अथ तप लच्छन ॥

शब्द स्पर्श रूप रस गंधा, पंच विषय ईंद्रिय संबंधा ॥ सब विधि त्याग करे जब याको, तप अस नाम कहावत ताको२०

अर्थ. शब्द, स्पर्ष, रूप, रस ने गंध, ए पांच विषयोने इंद्रियो साथे संबंध छे, सर्वप्रकारे ते विषयोनो त्याग करे तेनुं नाम तप छे. ॥२०॥

॥ अथ संतोषलच्छन ॥ दोहा ॥

मिलहीं तन प्रारब्द सम, तातें धरे ज्यु तोष ॥
करे न मनसें कल्पना, सो कहिये संतोष ॥२१॥

अर्थ. शरीरना नशिब प्रमाणे जे मळी आवे, तेथी शंतोष राखे, अने मनमां संकल्प विकल्प न करे, ते संतोष कहिये. ॥२१॥

॥ अथ आस्तिक्य लच्छन ॥ चरनाकुल छंद ॥

शास्त्र रु वेद पुरान उचारे, त्यमें द्रढ विश्वासहि धारे ॥ तजे कुतर्क भजे नित्य ईशा, आस्तिक्य ताकुं कहे मुनिशा२२

अर्थ. शास्त्र, वेद ने पुराण जे कहे, तेमां द्रढ विश्वास राखे, अने कुतर्क तजीने नित्य परमेश्वरने भजे, मुनिश्वरो तेने आस्तिक्य कहेछे. ॥२२॥

॥अथ दान लच्छन ॥ दोहा ॥

अन्न जलादिक दान इक, ओर ज्ञानको दान ॥
दो प्रकारके दान यह, जानत बुद्धि निधान ॥२३ ॥

अर्थ. एक तो अन्न अथवा जळनुं दान देवुं ते, अने बीजुं ज्ञाननुं दान देवुं ते, ए बे प्रकारनां दानछे, ते बुद्धिना भंडार जेवा जनो जाणेछे. ॥२३॥

॥ अथ पूजालच्छन ॥

एकहि पूजन मानसिक, अरु शोडष उपचार ॥
शास्त्र अरु मुनिजन कहे, पूजन दोइ प्रकार ॥२४ ॥

अर्थ. एक तो मनवडे पूजा करवी ते, बीजी चंदन पुष्पादिक सोळ उपचारथी पूजा करवी ते, एरीते शास्त्र अने मुनिजनो बे प्रकारनुं पूजन कहेछे. ॥२४॥

॥ अथ श्रवन लच्छन ॥

नित्य सुननको हरि कथा, नियम रखे निरधार ॥
श्रवन नियम ताकों कहे, मुनि जन परम उदार ॥ २५ ॥

अर्थ. इश्वरनी कथा सांभळवानो नित्य नकी नियम राखे, परमउदार मुनिजनो तेने श्रवण नियम कहेछे. ॥२५॥

॥ अथ लज्जा लच्छन ॥

लज्जा लोक रु गुरुनकी, रखे जीयमें जेह ॥
निंदित कर्म सु नां करे, लज्जा कहिये तेह ॥२६॥

अर्थ. जे पोताना जीवमां लोकनी ने गुरुनी शरम राखे. अने निंदा थाय एवुं काम करे नहीं, तेनुं नाम लज्जा कहिये. ॥२६॥

॥अथ जप लच्छन ॥दोहा॥

मंत्र जाप मनमें करे, कर माला धरि कोय ॥
प्रति श्वासे सोहं जपे, अजपाजप हे सोय ॥ २७ ॥

अर्थ. कोइ तो हाथमां माळा लइने मंत्रनो जप करे, अने कोइ प्रत्येक स्वासे सोहं सोहं जपे एनुं नाम अजपा जप छे, ए रीते बे प्रकारना जप छे. ।२७।

॥ अथ मौन लच्छन दोहा ॥

बिना प्रयोजन नां बदे, नहि अपशब्द उचार ॥
मौन कहत मुनि ताहिकुं, जाके शुद्ध बिचार ॥२८॥

अर्थ. प्रयोजन विना कांइ बोले नहीं, अने नठारो शब्द बोले नहीं, जेना शुद्ध विचार छे एवा मुनियो तेने मौन कहेछे. ॥२८॥

॥अथ होम लच्छन ॥ दोहा ॥

एक होम हे अग्निको,वेदमंत्र वत जेह ॥
ब्रह्माग्निमें गो दहे, होम दूसरो तेह ॥ २९ ॥

अर्थ. एकतो वेदना मंत्र प्रमाणे अग्निमां होम करेछे ते, अने बीजो ब्रह्मरूपी अग्निमां इंद्रियोने होमे ते होम कहेवाय छे. ॥२९॥

यह दश विधिके नियम सो,लच्छन सहित सुनाय ॥
अब आसनकी विधि कहुं, जो जानत मुनिराय ॥ ३० ॥

अर्थ. एरीते दश प्रकारना नियमो लक्षण सहित संभळाव्या, हवे जे मुनीश्वरो जाणेछे, ते आसननी विधि कहुंछुं.॥३०॥

॥ अथ आसन कथन छंद॥ चरनाकल ॥

आसन दृढ साधत मुनिराया, तातें रोग न व्यापत काया ॥
जोगकला सब शंकर जाने, आसन साधी तन स्थिर आनो॥
शिवा समिपमें सदैव वसही,तउ पुनि हरको बुंद न खसही
सो आसन साधनतें जानो, आसन साधन उरमें आनो ॥
चौराशी लख जंतु कहावे, इतने आसन योग सुहावे ॥
सब विधि जानत शंकर सोई, नहि जानतहे दुसरा कोई ॥
प्रति लख एकहि आसन लीना, यौं चौराशी प्रसिद्ध कीना॥
तामें पुनि उत्तमहे दोई, सिद्धासन पद्मासन सोई ॥
सुन अब याको कहूं विचारा,सो आसन शिखहू निरधारा ।३१।

अर्थ. मुनीश्वरो दृढ आसन साधेछे. तेथी तेओनी कायामां रोग व्यापतो नथी, योगनी सर्व कळाओ तो शिवजी जाणेछे, ते आसन साधीने शरीरने स्थिर राखेछे. तेमनी समीपमां पार्वतीजी सदाय रहेछे, तो पण शिवनुं वीर्य खसतुं नथी, ते आसन साधवाथी छे,एम जाणो. माटे आसन

साधवानुं तमे मनमां लावो. प्राणीनी जातियो चोराशी लाख छे, एटलां योगनां आसन छे, सर्व प्रकारे ते बधां आसन शिवजी जाणेछे, बीजुं कोइ जाणतुं नथी, प्रत्येक लाखमांथी अकेकुं आसन लइने एवी रीते चोराशी आसन तेमणे प्रसिद्ध कर्यां छे, तेमां वळी पद्मासनने सिद्धासन ए बे आसन उत्तम छे. हवे सांभळो तेनो विचार हुं तमने कहुं, ते आसन तमे नकी शीखो. ॥३१॥

॥अथ सिद्धासन लच्छन ॥ कवित ॥

वाम पाव एडी मुळद्वार अग्र ठहराइ, तिहिपर शिश्न रहे ॥ ऐसी रिति आनिये॥ तिहिपर एडी धरि दच्छन चरनहुकी औरही शरीर सब सरलही ठानिये॥ एडीपर वाम कर सुलट धरिकें तापें, दच्छन सुलट कर करि युक्ति जानिये ॥ अचल उरध दृष्टि भृके मध्य धारि रहे, इंद्रिय संयम करे सिद्धासन जानियें॥ ३२ ॥

अर्थ. डाबा पगनी पानी गुदा आगळ ठेरावीने ते पानी उपर इंद्रि रहे एवी रीते लाववी, ते इंद्रि उपर जमणा पगनी पानी मुकीने बीजुं बधुं शरीर पांशरुं राखिये, जमणा पगनी पानी उपर डाबो हाथ सवळो मुकीने तेना उपर जमणो हाथ सवळो मुकवानी युक्ति जाणिये, पछी चळे नहीं एवी उंची नजर भमरो वच्चे राखिये, अने इंद्रियोने नियममां राखे, ते सिद्धासन जाणवुं. ॥३२॥

॥अथ पद्मासन लच्छन॥ कवित ॥

दच्छन उरुके पर वाम पाव आवतहे, वाम उरु पर यौं दच्छिन पाव आतहे॥ दोउ कर पीठपें फेराइ तासें पावहूके, दच्छन रु वाम दोउ अंगुष्ट ग्रहातहे ॥ चिबुककुं वक्ष पर

धारिकें दो नेन खुल्ले, दृष्टि वाकी नासा अग्रपर ठहरातहे॥ सब व्याधि हरे एसो जोगीजन साधतहे, आसनको नाम पद्मासन प्रख्यातहे ॥ ३३॥

अर्थ. जमणा साथळ उपर डाबो पग आवेछे, पछी डाबा साथळ उपर एज रीते जमणो पग आवेछे.पछी बे हाथ वांसा तरफ फेरवीने तेथी जमणाने डाबा पगना अंगुठा पकडायछे. डाढीने छाती उपर राखीने बे आंख्यों उघाडीने नाकनी डांडी उपर तेनी नजर ठरावेछे, सर्व रोगने हरे एवुं जोगीलोको ते आसन साधेछे. ते आसननुं नाम पद्मासन प्रख्यातछे.॥३३॥

॥ दोहा ॥

यों यम नियम कहे हमें, कहि आसन बिध ओर ॥
मनन करहु मनमें यहे, कहिहों शेष बहोर ॥ ३४ ॥

अर्थ. एरीते अमे यमने नियम कह्या, वळी आसननी रीत कही, तेनुं मनमां मनन करो पछी बाकीनुं कहीश. ॥३४॥

॥ गाहा ॥

यम नियमासन भेदं, सिद्ध सुनाये तिहूहि सागरकुं ॥
अठ सप्तति अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥ ३५ ॥

अर्थ. सिद्धे यम नियम ने आसन ए त्रणे बाबत सागरने संभळावी ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ अठोतेरमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३५॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे यम नियमासन भेद कथनं नाम अष्टसप्ततिमो लहरं ॥ ७८ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां अष्टसप्ततितम स्तरंगः समाप्तः ॥७८॥

॥अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध॥ दोहा॥

प्राणायामादिक कह्या, बाकि जोगनां अंग॥
अगन्याएंशीमी विषे, कहेशे एह प्रसंग.॥

॥अथ प्रानायामादी शेष अंग कथन प्रसंगो यथा॥

॥सिद्धोक्त॥दोहा॥

प्रानायामादिक कहु, शेष योगके अंग॥
सिद्ध कहे सागर सुनो, मनमें धरी उमंग॥१॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के प्राणायाम आदिक जोगनां बाकी अंग कहुं, तें शरीरे उमंग धरिने हे सागर साभळो.॥१॥

॥अथ प्रानायाम लच्छन॥ दोहा॥

॥प्रानायाम किये हुसें, नाडी चक्र ठरात॥
पूरक कुंभक रेचकहि, करिकें पाप बिलात॥ २॥

अर्थ. प्राणायाम करवाथी शरीरनी नाडी ने चक्र स्थिर थायछे.माटे पूरक, कुंभक ने रेचक करीने जोगियो पापनो नाश करेछे.॥२॥

॥अथ नाडी कथन॥दोहा॥

नाडी बोत प्रकारकी, वामें दश प्रख्यात॥
इडा, पिंगला, शुशुमणा, यह त्रय सार कहात॥३॥

अर्थ. नाडियो घणा प्रकारनी छे, तेमां दश प्रख्यात छे. पण इडा, पिंगळा ने शुषुमणा ए त्रण सर्वोपरि कहेवाय छे.॥३॥

॥अथ त्रय नाडी भेद कथन॥ कवित॥

वाम नासा इडा नाडी, ईंदुहे अधीश ताको, पिंगला दच्छिन नासा, देव रवि ताहिको॥ वहे शुशुमणा ताको पति पावकहे, जानहु प्रताप सब काजहीमें जाहिको॥ प्रा-

नायाम प्रभावतें इडा पिंगला दो थके, तब वेग उलट चले शुशुमणाहिको॥शरीरमें सुख होत,दुःख जात दूर सब, एसोही प्रभाव ज्यु बदत बेद वाहिको ॥ ४॥

अर्थ. डावी तरफना नाकमां इडा नाडी वहेछे,तेनो अधिपति चंद्रमा छे. अने जमणी तरफना नाकमां पिंगळा नाडी वहेछे, तेनो अधिपति सूर्य छे, ते बन्नेनी वचमां शुषुमणा नाडी वहेछे, तेनो अधिपति अग्नि छे, सर्व क्रियामां तेनो प्रताप छे, एम जाणवुं, प्राणायामना प्रभावथी इडाने पिंगळा ए बे नाडियो ज्यारे थाके अर्थात् बंध थाय, त्यारे शुषुमणा नाडिनो वेग उलटो चालेछे अर्थात् उंचो चालेछे,ते नाडीनो प्रताप वेद एवो कहेछे के तेथी शरीरमां सुख थाय, अने बधुं दुःख दूर जायछे.॥४॥

॥ अथ दश वायु बर्नन ॥ छपय ॥

प्रान हृदयमें रहे, गुदास्थल अपान रहही ॥
व्यान सबहि तन व्याप,नाभि थल समान कहही॥
कंठहि रहे उदान, नाग उदगार करतहे ॥
कूर्म उघारे पलक, क्रकल सो छुधा धरतहे ॥
पुनि देवदत्त जंम्भन करे, यो मुनिजन सब गातहे ॥
फिर होत धनंजय बात जब, पंच प्रान मरजातहे ॥५॥

अर्थ. प्राणवायु हृदयमां रहेछे, अने अपानवायु गुदाने ठेकाणे रहेछे, व्यानवायु आखा शरीरमां व्यापीने रहेछे, ने समानवायु नाभीने ठेकाणे रहेछे, अने उदानवायु कंठमां रहेछे, अने नाग नामनो वायु ओडकार करेछे,अने कूर्मवायु आंखनी पापणो उघाडेछे, अने क्रकलवायु क्षुधा उपजावेछे, अने देवदत्तवायु बगासां खवरावे छे, ए रीते सर्वे मुनिजनो कहेछे, अने ज्यारे धनंजय नामनो वायु उपजेछे, त्यारे एकथी पांचमा नंबर सुधीना

वायु मरी जायछे. ॥५॥

॥अथ षट चक्र अनुक्रम ॥ छंद चरनाकुल॥

प्रथम चक्र आधार कहावे, मूलद्वारमही सु रहावे ॥ मुनि जन कहत चारि दल ताके, "वशषस" चारहि अच्छर जाके॥दुसरा चक्रहि स्वाधिष्ठाना ताको,गुह्येंद्रियहे स्थाना॥ षट दलमें षट बरन रहावे, "बभमयरल" उच्चार कहावे॥ मनिपूरक तिसरेको नामा, नाभीस्थलहे इनको धामा ॥दश दलके दश अच्छर जानो, "डढणत, थदधन, पफ" प्रमानो ॥ अनहद चक्र हृदयके मांही, द्वादश दल अच्छर पुनि वांही ॥ कादिक ठांत सु बार गनीजे, सो चतुर्थ चक्रहि गनि लीजे ॥ पंचम बिशुद्धचक्र कहावे, कंठस्थलमें सोइ रहावे ॥ शोडष दलमें शोडष अंका, अकार आदिक स्वरहि निशंका ॥ भ्रूमें आज्ञाचक्र कहीजे, द्वै दल अच्छर द्वै सुनि लीजे ॥ हंसःअस उच्चार कहावे, यौं षट्चक्र सुनिश्वर गावे ॥ यह षट्चक्र भेदि जब जावे, तबहि शुशुमणा मांहि समावे ॥ प्रानायाम सधे जन जबही, करे शुशुमणामें गति तबही ॥ ६ ॥

अर्थ. पहेलुं आधारचक्र कहेवायछे,ते गुदामां रहेछे, तेने चार पांखडियोछे एम मुनीजन कहेछे, तेमां धारवाना "वशषस" ए चार अक्षरछे. बीजुं स्वाधिष्ठान नामनुं चक्रछे. तेनुं गुह्येंद्रिय स्थान छे, त्यां छ पांखडीमां छ अक्षर रहेछे, तेनो उच्चार "बभमयरल" कहेवाय छे, त्रीजा चक्रनुं नाम मणिपूरक छे, तेनुं ठेकाणुं नाभिस्थळ छे, तेनी दश पांखडियोना दश अक्षर "डढणतथदधनपफ" जाणो, चोथुं अनहदचक्र हृदयमां छे, त्यां

पण बार पांखडियोमां बार अक्षर छे. ते कथी ठ सुधीना बार गणिये, पांचमुं विशुद्धचक्र कहेवायछे, ते कंठस्थळमां रहेछे, तेनी सोळ पांखडियोमां सोळ अक्षर ते अकार आदिक सोळे स्वर नक्की छे, छट्ठुं आज्ञाचक्र ते भमरो वच्चेछे, तेनी बे पांखडियोना बे अक्षर सांभळी ल्यो, तेनो "हंसः" एवो उच्चार कहेवायछे, ए रीते छ चक्र मुनीश्वरो कहेछे, ते छ चक्र भेदीने ज्यारे जाय, त्यारे षुषुमणा नाडीमां 'प्राण' समाइ जाय. ज्यारे माणस प्राणायामनुं साधन करे त्यारे षुषुमणामां गति करे. ॥६॥

॥अथ प्रानायामकी क्रिया ॥ दोहा ॥

षोडष प्रनवहि मन जपे, पुरे इडासें प्रान ॥
चोसठ जापत प्रनवलों, कुंभक करे निदान ॥ ७ ॥

अर्थ. ते एवी रीते के मनमां सोळवार ॐकार जपे,अने इडा नाडीमां श्वास भरे, पछी चोसठवार ॐकार जपे, त्यां सुधी कुंभक करे अर्थात् इंधो श्वास राखे. ॥७॥

पुनि बत्तीसहि जापलों, रेचक करही स्वासु ॥
पुनि फिर करे विलोम अस, प्रानायाम क्रियासु ॥ ८ ॥

अर्थ. पछी बत्रिशवार ॐकार जपे,एटलामां श्वासने रेचक करे,अर्थात् पिंगळा नाडीवडे उतारे, वळी तेने उलटी रीते करे,एटले प्राणायामनी क्रिया प्रमाणे जमणे नाके चडाविने उंचो राखीने डाबे नाके उतारे.॥८॥

चार वार ऐसें करे, धरि अंतर दृढ टेक ॥
सिद्ध कहे तब होतहे, प्रानायामहि एक ॥ ९ ॥

अर्थ. अंतःकरणमां दृढ टेक राखीने ज्यारे चार वार ए प्रमाणे करे, त्यारे सिद्ध कहेछे के एक प्राणायाम थायछे. ॥९॥

ऐसें प्रानायामको, अधिक करे अभ्यास ॥

प्रान रोध करिकें तबे, पावत ज्ञान प्रकाश ॥ १० ॥

अर्थ. एवा प्राणायामनो घणो अभ्यास करे, त्यारे प्राणनो रोध करीने ज्ञाननो प्रकाश पामे. ॥१०॥

॥अथ कुंम्भक अष्ट नामानी ॥ चरनाकुल छंद ॥

सूरजं भेदन अरु उज्जांई, शीतंकार शीतंली सुहाई ॥ पुनि न्द्रिका भ्रामरी जानो, मुर्छा पुनि केवंला प्रमानो ॥११॥

अर्थ. १ सूर्यभेदन २ उज्जाई ३ सीतकार ४ सीतली ५ भाद्रिका ६ भ्रामरी ७ मूर्छा ८ केवळा ए रीते कुंभकना आठ भेद छे. ॥११॥

॥ अथ दश महामुद्रा कथन ॥ छंद हरिगीत ॥

है महाबंधक, महावेधक, खेचरी उड्यानहे ॥
अरु मूलबंधक नामहे, जालंधरी पुनि जानहे ॥
बिपरीतकरनीहे अरु, बज्रोलि चालनशक्तिहे ॥
शशिकंला सो दशमी कही, महामुद्रिकाकी व्यक्तिहे १२॥

अर्थ. १ महाबंधक २ महावेधक ३ खेचरी ४ उड्यान ५ मूळबंधक ६ जालंधरी ७ विपरितकरणी ८ वज्रोळी ९ चालनशक्ति १० शशिकळा. एरीते दश महामुद्रानो विवेक छे. ॥१२॥

॥ अथ प्रत्याहार कथनं ॥ दोहा ॥

शब्द स्पर्ष रु रूप रस, गंधहिसें जिहिबार ॥
इंद्रिय संकोचन करे, हे सो प्रत्याहार ॥ १३ ॥

अर्थ. शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध, ए पांच विषयोथी इंद्रियोनो संकोच ज्यारे करे, त्यारे ते प्रत्याहार कहेवायछे. ॥१३॥

॥अथ पंच तत्वकी धारना तत्र पथम पृथ्वी तत्वकी धारना ॥ कथन छंद चरनाकुल ॥

हे यह चतुष्कोन आकारा,विधि दैवत अरु बीज लकारा॥
पीत वर्न पुनि हृदय स्थानं, घटिका पंच तिहां धरि प्रानं॥
चित्त स्थंभन करे, तहांही, भूमिधारना जय प्रदाही ॥१४॥

अर्थ. पृथ्वीनी धारणा चोखुण आकारे छे, तेनो अधिष्ठाता ब्रह्मा छे, अने लकार बीज छे, तेनो रंग पीळो, अने हृदयस्थान छे, त्यां पांच घडी सुधी प्राणवायु राखे,ने त्यां मनने ठरावी राखे, ते पृथ्वीनी धारणा जय आपनारी छे. ॥१४॥

॥ अथ जल तत्वकी धारना कथन ॥ छंद हरिगीत ॥

शशि अर्धके आकारहे, वंबीज कंठ स्थानहे ॥
रुषिकेश दैवत स्वेत वर्नहि, पारदहि समानहे ॥
वां पंच घटिका चित्तधारी, प्रान पुनि ठहरातहे ॥
महाविष तनुं व्यापे नहीं, जलधारना सु कहातहे ॥१५॥

अर्थ. जळधारणा अर्धचंद्रने आकारे छे, वंबीज ने कंठस्थान छे, तेना विष्णुदेव अने पारा जेवो श्वेत वर्ण छे. त्यां पांच घडी सुधी मन राखीने प्राणवायुने ठरावेछे.ते धारणाथी शरीरमां महा झेर व्यापी शके नहीं.॥१५॥

॥अथ तेज तत्वकी धारना कथनं॥छंद चरनाकुल ॥

तालू ठोर त्रिकोनाकारं, दैवत रुद्र रु बीज रकारं ॥
पद्मराग सम रक्तहि वर्नं, वहां पंच घटिका चित धरनं ॥
प्रान रोधि इश्वर उर धारे,तेजधारना दव जय टारे॥१६॥

अर्थ. अग्नितत्वनी धारणानुं ताळु स्थानक ने त्रिकोणाकार छे,देव रुद्र ने बिज रकारक छे,पद्मराग,मणिना जेवो रातो वर्ण छे.त्यां पांच घडी मन स्थिर अने त्यां प्राण रुंधीने इश्वरनुं ध्यान करे, तो ते धारणा अग्निनो ऐसे भ। ॥१६॥

॥ अथ वायु तत्वकी धारना कथनं ॥ छंद हरिगीत ॥

भ्रूमध्यमें षट कोनहे, यंबीज मेघाभासहे ॥
खेचरीसिद्धि देतसो, इश्वरहि दैवत तासहे ॥
वां पंच घटिका प्रान रोधी, चित्त पुनि ठहरातहे ॥
कहे सिद्ध सागर सुनहु, वायूधारना सु कहातहे ॥१७॥

अर्थ. वायुतत्वनी धारणा भमरो वच्चे छ खूणाने आकारे छे. तेनुं यकार बीज ने वर्षादना जेवो वर्णछे. ते आकाशमां गति करवानी सिद्धि आपेछे, तेनो देव इश्वर छे, त्यां पांचघडी सुधी प्राण रोधीने मन ठरावेछे, सिद्ध कहेछे के हे सागर? ते वायुधारणा कहेवाय छे. ॥१७॥

॥ अथ आकाश तत्वकी धारना कथनं ॥ छंद चरनाकुल ॥

ब्रह्मरंध्र वरतुल आकारं, देव सदाशिव बीज हकारं ॥
शुक्ल बर्न महामुक्ती दाता, घटिका पंच धरे चित ज्ञाता ॥
प्रान रोधिकें वहां रहावे, गगनधारना सोइ कहावे ॥१८॥

अर्थ. आकाश तत्वनी धारणा माथा उपर, गोळ आकार तेनो देव सदाशिव ने बीज हकार छे, श्वेत वर्णछे. अने ते महामोक्ष आपनारी छे, ज्ञानी पुरुषो त्यां पांचघडी सुधी मनराखीने वायुने रोधे; ते आकाश तत्वनी धारणा कहेवाय छे. ॥१८॥

॥ अथ पंच धारना नाम ॥ दोहा ॥

स्तंभनि द्रावनि दाहनी, शोषनि भ्रामनि जेह ॥
पंचतत्वकी धारना, पंच कहावे तेह ॥ १९ ॥

अर्थ. १ स्तंभनि २ द्राबनि ३ दाहनि ४ शोषनि ५ भ्रामणी ते उपर कहेली पांचतत्वनी धारणानां जूदां जूदां पांच नाम कहेवाय छे. ॥१९॥

॥ अथ ध्यान कथन छंद ॥ चरनाकुल ॥

प्रथमहि ध्यान पदस्थ कहावे, ध्यान दुजो पिंडस्थ सुहावे॥
यों तिसरो रूपस्थ कहीजे, रूपातीत चतुर्थ लहीजे ॥ २० ॥

अर्थ. पहेलुं पदस्थ ध्यान, बीजुं पिंडस्थ ध्यान, तेम त्रीजुं रूपस्थ ध्यान कहेवायछे, अने चोथुं रूपातीत ध्यान समजी लेवुं. ॥२०॥

॥ अथ पदस्थ ध्यान कथन॥ छंद हरिगीत ॥

कुंभक करी उर मंत्र जपही, ध्यान हरपदको धरे ॥
निश्चल रखे मन तांहिपें, कौ बिधिहि टार्यो नां टरे ॥
यों योगि साधन योगको करि, सिद्धि बडिकुं पातहे ॥
कहे सिद्ध सागर सुनहु, एहि पदस्थध्यान कहातहे ॥२१॥

अर्थ. कुंभक करीने मनमां मंत्र जपे, अने शिवना पगनुं ध्यान धरे, अने तेना उपर एवुं निश्चळ मन राखे के कोइ प्रकारे टाळ्युं टळे नहीं, एवी रीते जोगी जोगसाधना करीने मोटी सिद्धिने पामेछे, सिद्ध कहेछे के हे सागर? सांभळो. ते पदस्थध्यान कहेवायछे. ॥२१॥

॥ अथ पिंडस्थ ध्यान कथन ॥ दोहा ॥

शोधि चक्र षट पिंडकों, स्वच्छ करे धरि ग्यान ॥
ध्यान धरे प्रभु पिंडको, सो पिंडस्थहि ध्यान ॥ २२ ॥

अर्थ. छ चक्र शोधीने, अने ज्ञान धरीने शरीरने स्वच्छ करे, अने इश्वरना शरीरनुं ध्यान धरे, ते पिंडस्थ ध्यान कहेवाय. ॥२२॥

॥ अथ रूपस्थ ध्यान कथन ॥ छंद भुजंगी ॥

शशी सूर्य तारा सबे तेज जाको, पुनी चंचला दीपमाला प्रभाको ॥ त्रिकूटीमहीं इष्टको रूप देखो, यही रीतसों रूपको ध्यान लेखो ॥ २३ ॥

अर्थ. सूर्य, चंद्र, तारामंडळ अने वीजळी तथा दीपमाळानी कांतिनुं

ते सर्वे तेज जे इश्वरनुं छे. ते इश्वरनुं रूप वे भमरो वचे जुओ, ए रीते रूपस्थध्यान गणो. ॥२३॥

॥अथ रूपातीत ध्यान कथन ॥ कवित ॥

निराकार सुन्य रूप, इश्वर स्वरूप धारि, यामें दृढ निज मनोवृतिकुं लगातहे ॥ जैसे पंच्छी नम उडी जात सो देखात नांहि पुनि सब ठोर यह पंच्छीकुं देखातहे ॥ एसी गति योगीनकी, होत ब्रह्मरूपहिमें, तब सो समाधीहुमें, लीन होइ जातहे॥ ताकुं योगनिद्रा कहे, अखंडानंदमें रहे, रूपातीत ध्यान यह परम प्रख्यातहे ॥ २४ ॥

अर्थ. आकार वगरनुं शून्य जेवुं इश्वरनुं रूप धारीने तेमां पोताना मननी वृत्तिने दृढ लगाडेछे, जेम पक्षी आकाशमां उडी जाय ते जणातुं नथी, पण ते पक्षीने तो बधाय ठेकाणां देखायछे, ए रीते ब्रह्ममां योगीनी गति थायछे, त्यारे ते समाधीमां लीन थइ जायछे, तेने योगनिद्रा कहेछे, अने ते योगी अखंड आनंदमां रहेछे. ए रूपातीतध्यान परम प्रख्यात छे.॥२४॥

॥ अथ समाधीयोगकथन ॥ सवैया ॥

नीरहिमें ज्युंहि नीर मिले, अरु क्षीरहिमें ज्युंहि क्षीर मिलावे ॥ ज्युं घृतमें घृतही मिलिजात, रु सागरमें सरिता मिलजावे ॥ लून सलीलहिमें मिल जात रु दीपक ज्वालहिमें लय पावे ॥ सिद्ध मिले चिद सागरमें, सुनु सागर सोइ समाधि कहावे ॥२५॥

अर्थ. जेम पाणीमां पाणी ने दूधमां दूध मळे, जेम घीमां घी मळी जाय ने समुद्रमां नदियो मळी जाय, मीठुं पाणीमां मळी जाय, अने दीवा झाळमां लीन थइ जाय, तेमज चिदसागरमां सिद्ध मळी जाय, हे सागर!

सांभळो ते समाधी कहेवाय. ॥२५॥

॥ सवैया ॥

वां नहि शिष्य गुरू बिगती न, उपास्य उपासक भेद रहावे॥
मानव दानव देव अरू, नहि भूत पिशाच हुसें भय पावे ॥
राय रु रंककि शंक नही, नहि ग्यान अग्यान गुमान धरावे॥
सिद्ध मिले चिद सागरसें, सुनु सागर सोइ समाधि कहावे२६

अर्थ. त्यां गुरु के शिष्यनी विगती नथी, अने उपासना करवा योग्य ने उपासना करनारमां भेद रहेतो नथी, माणस, दैत्यो के देव अने भूत ने पिशाचथी पण भय पामे नहीं, राजानी के रांकनी शंका नहीं, ने ज्ञान, अज्ञान के अभिमान धरावता नथी, तेमज चिदसागरमां सिद्ध मळी जाय, हे सागर? सांभळो, ते समाधी कहेवाय.॥२६॥

॥ सवैया ॥

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति नहीं, नहि सूख न दुःख न भूखहि आवे ॥ बुद्धि मनो अहंकार नहीं, नहि इंद्रिय और अवेव रहावे ॥ पृथ्वि रु पानिय पावक पौन, न पुष्करके परमानुं सुहावे ॥ सिद्ध मिले चिद सागरसें, सुनु सागर सोइ समाधि कहावे ॥ २७॥

अर्थ. त्यां जागृत स्वप्न के शुषुप्ती (उंघ) नथी, सुख दुख के भूख लागती नथी, बुद्धि मन अने अहंकार नथी अने इंद्रियो के शरीरना बीजा आकार कांइ रहेता नथी, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, अने पवन नथी, आकाशना परमाणुं पण रहेता नथी, तेमज चिदसागरमां सिद्ध मळी जाय, हे सागर?सांभळो ते समाधी कहेवाय. ॥२७॥

॥ सवैया ॥

तात रु मात रु भ्रात नहीं, भगिनी सुत दार नहीं दरशावे॥ शत्रु नहीं अरु मित्र नहीं, नहि भ्रांति हुसें कहु भांति भमावे ॥ एक अखंडित मंडित ब्रह्म, अपंडित पंडित भेद न पावे ॥ सिद्ध मिले चिद सागरमें, सुनु सागर सोइ समाधि कहावे ॥ २८ ॥

अर्थ. बाप, मा, भाइ नहीं, बेन, दीकरा के स्त्री पण त्यां देखाय नहीं, त्यां शत्रु नथी, मित्र नथी, ने कोइ प्रकारनी भ्रांतिथी त्यां भमाता नथी, त्यां एक अखंडित ब्रह्म शोभेछे, त्यां मूर्खनो के पंडितनो कांइ भेद जणातो नथी, तेमज चिदसागरमां सिद्ध मळी जाय, हे सागर! सांभळो ते समाधी कहेवाय. ॥२८॥

॥ सवैया ॥

साधन शुद्ध सुनाइ दियो हम, ज्यां सुं मिले जनकुं महामुक्ती ॥ आत्म मिले परमातममें ज्युं, जहां पहुची न शके मन उक्ती ॥ सो परमारथ स्वारथको, पुनि है ज्युं जथारथ नांहि अत्युक्ती ॥ जो सुख सागरकुं चहिहो चित, सागर साधहु जोगकि जुक्ती ॥ २९ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के माणसने जेथी महा मुक्ति मळे एवुं शुद्ध साधन में तमने संभळावी दीधुं, अने ज्यां मन के वाणी पहोची शके नहीं एवा परमात्मामां आत्मा मळी जाय, ते खरा स्वारथनो पर्म अर्थछे, अने जथार्थ वात छे, एमां अतिशयोक्ति नथी, मतलब के में कांइ वधारीने कह्युं नथी, माटे हे सागर? जो तमे सुखना सागरने चहाता हो तो एरीते जोगनी जुक्ति साधो. ॥२९॥

॥ गाहा ॥

प्रानायामादिकही, समाधि लों सब बिधी कही सिद्ध ॥
इक उनाशि अभिधानं पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥३०॥

अर्थ. सिद्धे प्राणायामथी समाधी सुधीनी बधी रीत कही, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ अगनाएशीमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३०॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे प्रानायामादिक भेद कथन नाम एकोनाशीतीतम स्तरंगः ॥७९॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकोनअशितीतम स्तरंगः समाप्तः ॥७९॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ चोपाई ॥

सांख्य योगनो सार सुणावी, वळी सिद्ध कैलास सिधावी ॥
शिवरात्रीनी अवधी देशे, ते एशीमी लहेरे कहेशे. ॥

॥अथ सांख्य योग तथा शिवरात्रिकी अवधि कथन ॥

॥प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

जुक्ति कही हठजोगकी, पूरन धरिकें प्रीत ॥
सांख्ययोगको सार सुन, राजजोगकी रीत ॥ १ ॥

अर्थ. सिद्ध कहेछे के हठयोगनी युक्ति में पूर्ण प्रीत धरीने कही, हवे राजयोगनी रीतनो सांख्ययोगनो सार कहुं ते सांभळो. ॥१॥

हे यह चोविस तत्वके, पींड अरु ब्रह्मंड ॥
तातें भेद अनंत भय, आत्मा एक अखंड ॥ २ ॥

अर्थ. आ पिंड ने ब्रह्मांड चोवीशतत्वनां छे, तेथी एक अखंड आत्माना अनेक भेद थया छे. ॥२॥

नित्य अनित्यहि वस्तुकी, संख्याकों जब जान ॥

तब अनित्य मिथ्या गिने, पावे आत्मज्ञान ॥ ३ ॥

अर्थ. माटे नित्य एटले अविनाशी वस्तु, अने अनित्य एटले नाशवंत वस्तुओनी गणत्रीने ज्यारे जाणे, त्यारे अनित्य वस्तुओने झूठी गणे, अने आत्मज्ञान पामे. ॥३॥

सांख्ययोग ताकुं कहे, ताको बहु बिस्तार ॥
प्रथम शिवालयमें कहे, सोइ ग्यानको सार ॥ ४ ॥

अर्थ. तेनुं नाम सांख्ययोग कहेवाय छे, तेनो विस्तार घणो छे, ते ज्ञाननो सारांश प्रथम में तमने शिवालयमां कह्योछे. ॥४॥

प्रपंच पंचीकरनको, समजै जब सिद्धांत ॥
तबही आत्म स्वरूप व्है, सब बिधि पावे शांत ॥५॥

अर्थ. पांचभूतनो बनेलो आ संसार छे, तेनो सिद्धांत ज्यारे समजे त्यारे आत्मारूपे थइने सर्व प्रकारे शांति पामे. ॥५॥

॥ छपय ॥

सब व्यापक इक ब्रह्म, ओर सब असत्य भासे ॥
जन्म मरन सुख दुःख, सबहि जाने सुपनासे ॥
ईंद्रिय अरु मन बुद्धि, ओर जाग्रत अरु सुपना ॥
सुषुप्ति तूर्या पार, ब्रह्म सो आत्मा अपना ॥
वह स्थिती ग्यान हूसें मिले, सोइ परमपद जानहू ॥
उत्तम पद इनसें ओर नहि, सागर सत्यहि मानहू ॥६॥

अर्थ. सर्वव्यापक एक ब्रह्म सत्य छे, अने बीजुं बधुं असत्य जणाय, त्यारे जन्म, मरण, सूख, अने दुःख ए बधुं स्वप्नाजेवुं जाणे, इंद्रियो मन बुद्धि जागृत अने स्वप्न सुषुप्ति (उंघ) तूर्या एटले चोथी अवस्थाथी पार जे ब्रह्मछे. ते पोतानो आत्मा जाणे, एवी स्थिति ज्ञानथी मळेछे, अने तेनुं

नाम परमपद जाणवुं, तेनाथी उत्तम पद्धि बीजी नथी, हे सागर! ते सत्य मानजो. ॥६॥

॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

कह्यो सागरे हो सुनो सिद्ध देवा, तुमें जो कहे सो सुने सर्व भेवा ॥ सबे वात स्वामी कही आप सच्ची, पुनी हे हमारी मती होत कच्ची ॥ कहे जोगके अष्टही अंग सोई, किते बर्षतें साधते सिद्ध होई ॥ कह्यो ओर सर्वोपरी जेहि स्थानं, स्थितीहे महा नींदकी सो समानं ॥ नहीं बुद्धि इंद्री नहीं सूख दुःखं, कहा मानिये याहिमें श्रेष्ट सूखं ॥ नहीं हे अकामी हमें हे सकामी, क्युंही चाहिये तो स्थिती ऐसि स्वामी ॥ हमें चाहिये चित्त कैलासबासं,अरू नित्य प्रब्बीन संगे विलासं ॥ मिले नांहि तो लों रहेंगे उदासी, अबेतो भयेहे अतीही निराशी ॥ ७ ॥

अर्थ. सागरे कह्युं के हे सिद्धदेव सांभळो ? तमे जे कह्या ते बधा भेद अमे सांभळया, हे स्वामी? तमे बधी वात साची कही,पण अमारी बुद्धि बहु काची छे, तमे जोगसाधनानां आठ अंग कह्यां, ते केटला वर्ष सुधी साधतां सिद्ध थाय? वळी तमे सर्वोपरि जे स्थानक कह्युं, ते स्थिति तो महा निद्रा जेवी छे, जे स्थितिमां बुद्धि नहीं, इंद्रियो नहीं, सुख नहीं, अने दुःख नहीं, एवी स्थितिमां मोटुं सुख शुं मानिये? अमे निष्कामी नथी, अमे तो सकामी छिये,अर्थात् अमारे सुख भोगववानी इच्छा छे, तो हे स्वामी ? अमे एवी स्थितिने केम चाहिये ? अमे तो कैलासमां वसवानुं अने प्रवीणनी साथे नित्य विलास करवानुं मनमां चाहिये छिये, अने ते ज्यांसुधी मळशे नहीं,त्यांसुधी उदासी रहेशुं, हवे तो अमे छेक निराशी थयाछिये.॥७॥

॥ असंभवालंकार ॥ सवैया ॥

जो धरनीकुं तजे धरनीधर, श्रीधर संग तजे ज्युं श्रियाको॥
छांडे सुधाकुं सुधाधर जो, गिरिजाधर संग तजे गिरिजा-
को ॥ रत्नकि राशि तजे रतनाकर, त्योंहि प्रभाकर संग
प्रभाको ॥ तो पुनि ध्यान तजुं नहीं छीन, प्रबीन जसी मुज
प्रानप्रियाको ॥ ८ ॥

अर्थ जो शेशनाग पृथ्वीने तजे, अने विष्णु लक्ष्मीनो संग तजे, अने जो चंद्रमा अमृतने तजे, महादेव पार्वतीनो संग तजे, समुद्र रत्नना समुदायने तजे, तेमज सूर्य प्रकाशनो संग तजे, तो पण प्रवीण जेवी मारी प्राणप्रियानुं ध्यान हुं क्षणमात्र तजुं नहीं. ॥८॥

॥ दोहा ॥

सब व्यापक इश्वर तुमें, कह्यो सिद्ध गुरु देव ॥
प्रबीनमें इश्वर बसे, जान्यो अवश्य मेव ॥ ९ ॥

अर्थ. हे सिद्ध गुरुदेव, तमे परमेश्वरने सर्वव्यापक कह्यो, तेथी में नक्की जाण्युं के प्रवीणमां पण इश्वर वसेछे. ॥९॥

तातें ताको ध्यान धरि, सदा चहों तिन संग ॥
सार यूंहि सब ग्यानको, भास्यो हमहि अभंग ॥ १० ॥

अर्थ. माटे तेनुं ध्यान धरीने निरंतर तेनो संग चाहीश, बधा ज्ञाननो अखंड सार मने एज भास्यो. ॥१०॥

॥ कवि वाक्य ॥ दोहा ॥

जाके मन जो दृढ भई, छुटे न ग्रंथी लेष ॥
ब्रह्मासे जो गुरु मिले, व्यर्थ जाय उपदेष ॥ ११ ॥

अर्थ कवि कहेछे के जेना मनमां जे वातनी गांठ मजबूत थई, ते

लगार छूटे नहीं, अने ब्रह्मा जेवा गुरु मळे, तो पण तेनो उपदेश व्यर्थ जाय. ॥११॥

दसहि दशा भइ बिरहकी, सागरमें उतपंन ॥
ताकी बिगती कहतहुं, सुनहू श्रोताजंन ॥ १२ ॥

अर्थ. पछी विरहनी दस अवस्थाओ कहेवाय छे, ते सागरना शरीरमां उत्पंन थई. तेनी विगत कहुंछुं, ते श्रोताजन सांभळो. ॥१२॥

॥ विरहीकी दशावस्था नामनी ॥हरिगीत छंद ॥

अभिलाप स्मृति गुनकथन चिंता, ओर जडता जानिये॥
उद्वेग ओर प्रलाप व्याधी अष्टमी, उर आनिये ॥
उन्माद मरन समान दसमी, दशा तिनकी देखिये ॥
बिरही जनोकी दश अवस्था लक्षमें लइ लेखिये ॥ १३॥

अर्थ. १ अभिलाष २ स्मृति ३ गुणकथन ४ चिंता ५ जडता ६ उद्वेग ७ प्रलाप, ८ व्याधि ९ उन्माद १० मरणतुल्य ए रीते विरहि माणसनी दस अवस्था विचारमां लइने गणिये. ॥१३॥

॥ दोहा ॥

यह दशहीके जानहू, लच्छन नाम प्रमान॥
ग्रंथ बढन शंका लिये, कहत नहीं यह ठान ॥ १४॥

अर्थ. ए दस अवस्थानां लक्षण तेनां नाम प्रमाणे जाणवां. ग्रंथ वधी जवानी शंकाथी आ ठेकाणे कह्यां नथी. ॥१४॥

॥ सवैया ॥

धीरज छांडि अधीर भये, बिरहागिकि पीर भई मन भारी ॥
आंसु बहात दहात दिले, दुख बात मुखे नहि जात उचारी
सागर सुद्धि विहीन भये, मनु मीनहि दीन भये बिन बारी॥

छाड़ि छितीपें परे मुरछाइ, प्रबीन प्रबीन प्रबीन पुकारी १५

अर्थ. सागर धीरज छांडीने अधीरा थया, तेना मनमां विरहाग्निनी भारे पीडा थई. आंसु वह्यां जायछे, मनमां दाझेछे, अने दुःखनी वात मोढे कही जाती नथी, सागर बेशुद्ध थइ गया, जाणे के माछलुं जळ बहार दीन थइ गयुं होय, ने प्रवीण, प्रवीण, प्रवीण एम पोकारीने, क्षोभ पामीने मूर्छा खाइने पृथ्वी उपर पड्या. ॥१५॥

॥ दोहा ॥

पुनि वह वहां प्रबीनकी, ऐसि दशा तब होइ ॥
प्रभानाथ सर्वज्ञहे, सबहि जांनि लिय सोइ ॥१६॥

अर्थ. वळी पणे (मनछापूरीमां) प्रवीणनी पण एवीज दशा थई. ते प्रभानाथ सिद्ध सर्वज्ञ छे, तेथी तेणे ते बधी वात जाणी लीधी. ॥१६॥

॥ कवित ॥

दंपतिको देखी दुःख, दिग्गज डगन लगे, गति थीर भै गगनचरकी गगनमें॥ धराधर शीश तें धरनी धरकन लगी, जल छलकन लग्यो सातो सागरनमें ॥ भूमी पुनि नभाभास, भासे भारी भयंकर, कंपत अढारभार बनस्पत्ति बनमें ॥ पुनी पाकसासनको, आसन डगन लग्यो, त्रासन बन्यो बनाव मघवाके मनमें ॥१७॥

अर्थ. ते स्त्रीपुरुषनुं दुःख जोइने दिशाओना हाथियो डगवा लाग्या, अने आकाशमां फरनारा सूर्य चंद्र आदिकनी गति आकाशमां स्थिर थई. शेशनागने माथेथी पृथ्वी कंपवा लागी, अने साते समुद्रमां पाणी छलकावा लाग्युं पृथ्वीनो ने आकाशनो देखाव भारे भयंकर देखावा लाग्यो, अने वनमां अढारभार वनस्पति कंपवा लाग्यां, वळी इंद्रनुं आसन डगवा लाग्युं,

तथा इंद्रुना मनमां त्रासदायक बनाव बन्यो. ॥१७॥

॥ दोहा ॥

पाहन पुनि प्रगलन लगे, लखि दंपति दुख जोर ॥
जो जन मन पिगले नहीं, ऐसो कोन कठोर ॥१८॥

अर्थ. ए स्त्रीपुरुषना दुःखनुं जोर जोइने पथरा पण पीगळवा लागे, तो एवो कोण माणस कठोर होय के तेनुं मन पीगळे नहीं? ॥१८॥

खेद भयो खट मित्रकों, अति अंतर अकुलाय ॥
सागरको दुख देखिकें, लेष सह्यो नहि जाय ॥१९॥

अर्थ. छ मित्रोना मनमां खेद उपज्यो, अने तेओ अतिशे अकळावा लाग्या, अने सागरनुं दुःख जोइने लगारे सहन करी शकातुं नथी. ॥१९॥

प्रभानाथके नयनसें, बहन लगे तब बारि ॥
सागरकुं किय सांतवन, सीतल बचन उचारि ॥२०॥

अर्थ. त्यारे प्रभानाथना नेत्रमांथी आंसु वहेवा लाग्यां, तेथी ठंडां वचन उचारीने सागरने शांति करी. ॥२०॥

॥ भ्रमरावलि छंद ॥

पुनि सिद्ध कहे मन सागर, शांत करो ॥
हम जात कैलास तहां लग धैर्य धरो ॥
तुम दुःख भवाभव पास प्रकाश करुं ॥
इत आउ अबे ततकाल तिहां न ठरुं ॥
कहि यों बिचरे यह सिद्ध अकाश पथं ॥
जित राजत हे गिरिजापति गोरि सथं ॥
जित वासव आदिक देव मिले सबही ॥
तित जाय प्रनाम किये दुहूकुं तबही ॥

कछु हे पृथिमें उतपात एुं देव कहे ॥
सुनिके सब बात सुनावत सिद्ध वहे ॥
शिव दासकुं शंकर शाप अगेज्युं नयो॥
तिन मानव देह धरीकें बिजोग सह्यो॥
छिनहू न रहे इनकों बहु बर्ष बिते ॥
इनके दुखसें उपज्यो उतपात तितें ॥
लघु दोषहुसें बड दंड इतो न घटे॥
दुख देखत देखनहारकिं, छाति फटे ॥
सुनि बानि उमा उरमें करुना उपनी ॥
तब स्वीमहुपें बिनती भवभाम भनी ॥
यह दंपतिकुं इत टेरहु ईश अहो ॥
करुना निधि किंकरपें करुनालु रहो ॥
सुनि शंकर बानि कही प्रमनाथ प्रती ॥
तुम जाकर दंपतिपें कहहू उकती ॥
अब आवहिंगे महारात्रि समे जबही ॥
यह दंपतिकों इत टेरिलहे तबही ॥
शिवमंदिर नेनतरंग समीप जिहां ॥
हम लेजहिंगे द्युतिमान बिमान तिहां ॥
इतने दिन दंपति धीरज चित्त धरो ॥
कहिकें युंहिं दोहुनके दिल शांत करो ॥ २१ ॥

अर्थ. वळी सिद्धे कह्युं के हे सागर तमारुं मन शांत करो, हुं कैलासमां जाउंछुं, त्यां सुधी धीरज राखो, तमारुं दुःख पार्वती अने शंकरनी आगळ जाहेर करुं, अने आंही तर्त आवीश. हुं त्यां नहीं रहुं. एम कहीने ते सिद्ध आ-

काश मार्गे विचर्या, अने ज्यां शंकर पार्वतीनी साथे बिराजेछे, ज्यां इंद्रादिक बधा देवो एकठा थयाछे, त्यां जइने सिद्धे शिव पार्वती बन्नेने ते समे प्रणाम कर्या. त्यारे देवोए कह्युंके पृथ्वीमां कांइक उत्पातछे, ते सांभळीने ते सिद्धे बधी वात संभळावी, के शिवना गणने आगळ जे शिवनो श्राप थयोछे, तेथी तेणे मनुष्यनो देह धरीने वियोग सहन कर्यो, क्षण मात्र जूदां रही शके नहीं, तेने घणां वर्ष वित्या, तेओना दुःखथी त्यां उत्पात उपज्योछे, थोडी चूकथी एवडो मोटो दंड घटे नहीं, तेओनुं दुःख जोतां जोनारनी छाती फाटी जाय. एवी वाणी सांभळीने पार्वतीजीना मनमां दया उपजी, त्यारे पार्वतीजिये शिवने विनाति करी, के हे ईश्वर ? ते स्त्रीपुरुषने हवे आंही तेडावो. हे दयाना सागर? तमे सेवक उपर दयाळु रहो, एवुं सांभळीने शिवजिये प्रभानाथ प्रत्ये वाणी कही, के तमे जइने ते स्त्रीपुरुषने वचन कहो, के हवे ज्यारे शिवरात्रिनो समय आवशे, त्यारे ते स्त्रीपुरुषने आंही तेडावी लेशुं, नेनतरंग शहेरपासे ज्यां शिवनुं मंदिर छे, त्यां अमे तेजस्वी विमान मोकलीशुं, माटे तमो स्त्रीपुरुष एटला दिवस सुधी धीरज राखो, एम कहीने ते बन्नेजणानां मन शांत करो. ॥२१॥

॥ दोहा ॥

सो सुनि सुरवर सिद्ध पुनि, मनमें अति मुद पाई ॥
तितसें निज निज पंथ गय, शिव शिवाकुं शिरनाई ॥२२

अर्थ. ते सांभळीने मोटा मोटा देवो तथा प्रभानाथ सिद्ध मनमां घणो आनंद पामीने शिवने ने पार्वतीने मस्तक नमावीने त्यांथी पोत पोताने रस्ते गया. ॥ २२ ॥

॥ चोपाई ॥

प्रभानाथ सागर प्रति आये, स्नेह सहित सब बात सुना-

ये ॥ महारात्रिकी औधि उचारी, रहहु इते दिन धीरज धारी ॥ अब तुम मनछापुरहु विचरहू, दिय तुम वाक्य सत्य सो करहू ॥ तुम कुसुमावलिकुं ज्युं कहै हे, हायन बीतत हम फिर ऐहे ॥ नेनतरंग शिवालय जानां, वहां तुमे किय एहि प्रमाना ॥ सो सब सत्य करहु तुम जाई, सज्जन वचन न होत वृथाई ॥ जाको बचन वृथा कछु जावे, सो जगमें सज्जन न कहावे ॥ अब में सुजान संनिध जाऊं, सब यहही संदेश सुनाऊं ॥ फिर वांसें मुज थानक जैहुं, महारात्रिपर तुमपें ऐहुं ॥ सुनि सागर मन भइ कछु शांती, भाखित सिद्ध रही नहि भ्रांती ॥२३॥

अर्थ. पछी प्रभानाथ सागर पासे आव्या. ने स्नेह सहित बधी वात संभळावी. अने शिवरात्रिनी अवधी कहीने कह्युं के एटला दिवस धीरज राखीने रहो. अने हवे तमे मनछापुरी तरफ जाओ? अने तमे जे वचन आप्युं छे ते सत्य करो, तमे जे कुसुमावळीने कह्युं छे के एक वर्ष वित्या पछी अमे आंही आवीशुं, वळी तमे नेनतरंग पासे जजो, केमके त्यां पण तमे एज प्रमाणे कह्युंछे, माटे तमे जइने ते बधुं साचुं करो, केमके सारा माणसनुं वचन फोगट जाय नहीं, जेनुं वचन कांइ फोगट जाय, ते जगतमां सारुं माणस कहेवाय नहीं, अने हुं हवे प्रवीणनी पासे जाउं, अने आ बधो संदेसो संभळावुं, पछी हुं मारे स्थानके जइश, अने शिवरात्रि उपर तमारी पासे आवीश, ते सांभळीने सागरना मनने कांइक शांति थई. अने सिद्धे कह्युं तेमां कांइ भ्रांति रही नहीं. ॥२३॥

॥ दोहा ॥

शिव पंचाक्षर मंत्रको, सिद्ध दियो उपदेश ॥

नमःशिवाय प्रनव धुरे, जापहु यहै हमेश॥२४॥

अर्थ. पछी सिद्धे "नमःशिवाय" एरीते शिवना पंचाक्षर मंत्रनो उपदेश करीने कह्युं के प्रथम ॐकार जोडीने ए मंत्र हमेशां जपजो. ॥२४॥

सातों सज्जन सिद्धके, पुनि पुनि बंदे पाय ॥
कृपा करी हमपें बहू, अहो सिद्धगुरुराय ॥२५॥

अर्थ. पछी साते मित्रोए सिद्धना चरणारविंदने वारे वारे नमस्कार कर्या, अने कह्युं के हे सिद्ध गुरुदेव! तमे अमारा उपर घणी कृपाकरी.॥२५॥

महारात्रिकी ओधि कहि, इतने दिन पुनि मोहि ॥
बडे कष्टसें बितीहे, इक दिन जुग सम होहि ॥२६॥

अर्थ. तमे शिवरात्रिनी अवधी कही, तेटला दिवस मारे मोटा दुःखथी वीतशे, अने एक दहाडो जुग जेवो थशे. ॥२६॥

दूसराको दिन आजहे, इत नवरात्री कीन ॥
दुर्गादेवि प्रसादतें तव पद दर्शन लीन ॥२७॥

अर्थ. आज दशरानो दिवस छे, अने आ ठेकाणे अमे नवरात्रि करी, तेथी दुर्गादेवीनी कृपाथी तमारा चर्णारविंदनां दर्शन पाम्या. ॥२७॥

प्रभानाथ वांसें पुनी, मनछापुरिमें आय ॥
स्नेह सहीत सुजानकों, सब संदेश सुनाय ॥२८॥

अर्थ. पछी त्यांथी प्रभानाथ मनछापुरीमां आव्या, अने स्नेहथी प्रवी- अर्थ. ते सा[illegible] संभळाव्यो. ॥२८॥

आन[illegible]यों पीने शिवने विषमंत्रसें, उतरत अरु सुधि आय ॥
गया. ॥ [illegible]नाथके वे[illegible]तें, यों सुजान सुधि पाय ॥२९॥

प्रभानाथ सा[illegible] [illegible]प मंत्रथी सर्पनुं झेर उतरे अने शरीरनुं भान आवे, तेम प्रभा- प्रवीण शुद्धि पामी. ॥२९॥

सागरकी सुनि कुशलता, प्रमुदित भई प्रवीन ॥
महारात्रिकी ओधि सुनि, भयो कछुक दुख छीन ॥३०॥

अर्थ. सागरनी क्षेमकुशळता सांभळीने, प्रवीण आनंद पामी, वळी शिवरात्रिनी अवधी सांभळीने कांइक दुःख ओछुं थयुं. ॥३०॥

ज्वालामुखि प्रति सिद्ध गय, दे पंचाक्षर मंत्र ॥
पुनि वह मंत्र जपन हुको, सबहि बतायो तंत्र ॥३१॥

अर्थ. सिद्धे प्रवीणने पंचाक्षर मंत्र आप्यो, अने ते जपवानो न्यास ध्यान विगेरे तंत्र बतावीने ते सिद्ध ज्वालामुखी तरफ गया. ॥३१॥

सुरतानंद पहारतें, पुनि वह सातों मित्र ॥
आये बद्रीनाथ प्रति, जित हरस्थान पवित्र ॥३२॥

अर्थ. पछी ते साते मित्रो सुरतानंद पर्वतथी ज्यां पवित्र शिवनुं स्थान छे, एवा बद्रिनाथ प्रत्ये आव्या. ॥३२॥

पंचरात्रि तितही रहे, मित्र सहित महाराज ॥
बहु देवालय देवके, तिनके दर्शन काज ॥३३॥

अर्थ. त्यां देवोनां घणां देवळ छे तेओनां दर्शन करवा सारु ते मित्रो सहित रससागर महाराज पांच रात्रि त्यां रह्या. ॥३३॥

॥ गाहा ॥

सांख्यजोगको सारं, पुनि शिव कथिता सु ओधि शिवरात्री॥
अशीतितम अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं॥ ३४ ॥

अर्थ. सिद्धे सांख्ययोगनो सार तथा शिवे कहेली शिवरात्रिनी अवधि कही, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ एशीमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३४॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे सांख्ययोग सार कथनं तथा शिव कथित शिवरात्रि अवधि प्रसंग बर्ननो नाम अशीती-

तमो लहरं ॥ ८० ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां अशीतितम स्तरंगः समाप्तः ॥८०॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

अद्भुत अचरज गणितनां, कह्यां सागरे जेह ॥
एकाशीमी लहरिमां, वर्णन करशे तेह ॥

॥ अथ गणिताश्चर्य प्रसंगो यथा ॥

॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

पुजे सागरे देव श्री बद्रिनाथं, नमायो शि[हि]र भूसें जोरि हाथं ॥ बहू देव देवालयोमें बिराजे, बहू दुंदभी झल्लरी घंट बाजे ॥ चितें चाहिकें जाइकें दर्श कीने, सबे भक्तिके भावके रंग भीने ॥ किते देशके देशके संघ आवे, करी दर्शनं स्पर्शनं मोद पावे॥ कऊ गेहके देहके दुःख बारे, उदासी हुवे सो उहां देह गारे॥ तजे देह वां सो महा मुक्ति पावे, अरू जैसि इच्छा असो जन्म आवे ॥ तपे को तपस्वी वहां पंचतापं, कऊ जोग साधे प्रलेहोन पापं ॥ जिही सत्य जाने, मितो सात पूजे, दुखी देखही ताहिको दुःख बूजे ॥ १ ॥

अर्थ. सागरे श्री बद्रिनाथ देवनी पूजा करी.अने हेतथी हाथ जोडीने मस्तक नमाव्युं. घणां देवालयोमां देवो बिराजेछे.त्यां घणी नोबतो झालरो अने घंट वागेछे. मनमां चाहीने त्यां जईने दर्शन कर्या. ते सर्वे मित्रो भक्तिना भावना रंगथी भींजाएला हता. त्यां केटलाएक देशदेशना संघ आवेछे, ते दर्शन, अने स्पर्शन करीने आनंद पामेछे. कोई घरना अने

कोई शरीरना दुःखवाळा जे उदासी थाय. ते त्यां शरीरने गाळेछे. अने जे त्यां शरीर तजे, ते मोटी मुक्ति पामे. अथवा जेवी इच्छा होय, तेवो जन्म आवे. त्यां कोई तपस्वियो पंचाग्निनो ताप तापेछे. अने कोई तो पापनो प्रलय थवा वास्ते जोग साधेछे, तेमां जेने साचो जोगी जाणे, तेने साते मित्रो पूजेछे. अने कोइने दुखी देखे तो तेने शुं दुःखछे ते पूछेछे.।१।

॥ दोहा ॥

वां सन्यासी इक मिल्यो, देख्यो ताहि उदास ॥
सागर बूझ्यो तिनहिपें, क्यों तुम भये सन्यास ॥ २ ॥

अर्थ. त्यां एक सन्यासी मळ्यो. तेने उदासी दीठो. त्यारे सागरे तेने पूछ्युं के तमे सन्यासी केम थया?॥२॥

॥ वह सन्यासी उक्त ॥ सवैया ॥

कोउ कलत्र कुपात्र मिले, अरु कोउ कलत्र निरंत्र निरासी॥ कोउ दरिद्रि दरिद्रनके दुख, द्रव्य बिनां दिल होइ उदासी। कोउ बिजोगि बिजोग व्यथा धरि, प्रानप्रिया पर प्रेम प्रकासी ॥ सागर या कलिकालहिमें जन, छोरि संसार सु होत सन्यासी ॥ ३ ॥

अर्थ. ते सन्यासिये कह्युं के कोइतो कुपात्र स्त्री मळवाथी अने कोई तो निरंतर स्त्री मळवानीज नथी. एवी निराशाथी अने कोइ दरिद्री दरिद्रना दुःखथी धन विना मनमां उदासी थइने, कोइ विजोगी विजोगनी पीडा धरीने पोतानी प्राणप्रिया उपर प्रेम जणावीने, हे सागर? आ कळियुगमां संसार छोडीने माणस सन्यासी थायछे.॥३॥

॥ हरिगीत छंद ॥

विद्या रु कविता यांचना सेवा विदेश मुसाफरी ॥

"धन पुत्रकी" इच्छा धरी यह पंच कांता में करी ॥
पुनि दैव जो प्रतिकूल तातें, पंचहू वंझा रही ॥
सागर सुनो ज्यु निरास व्है सन्यास दिच्छा हम लही ॥४॥

अर्थ. में विद्या, कविता, याचना, चाकरी अने परदेशनी मुसाफरी एवी पांच भारजाओ धनरूपी पूत्रनी इच्छाथी करी, पण दैव उलटो थयो. तेथी ते पांचे वांझणीओ रही. अर्थात् धन मळ्युं नहीं, हे सागर! सांभळो तेथी उदास थइने में सन्यासनी दिक्षा लीधी. ॥४॥

॥ दोहा ॥

सागर सुनके तोहिकुं, देन लगे धन दान ॥
अबे द्रव्यकुं क्या करों, यौं कहि कियो प्रयान ॥ ५ ॥

अर्थ. एवुं सांभळीने सागर तेने धननुं दान देवा लाग्या. त्यारे तेणे कह्युं के हवे हुं धनने शुं करुं एम कहीने चालतो थयो. ॥५॥

सूके पिछ बर्षा कहा, गत जोबन कांताहि ॥
कहा मरन पिछ औशधी, गत औसर धन काहि ॥ ६ ॥

अर्थ. जतां तेणे कह्युं के "खेतर" सुकाइ गया पछी वर्षाद शा कामनो? अने जुवानी गया पछी भारजा मळे ते शा कामनी? अने मुवा पछी ओसड शा कामनुं, अने वखत गया पछी धन मळे ते शा कामनुं. ॥६॥

सन्यासी होकें रखे, जो कउ धन अरु नारि ॥
तो तिनकुं धिक्कारहे, कहा भेख लिय धारि ॥ ७ ॥

अर्थ. जो कोई सन्यासी थईने धन के स्त्री राखे, तो तेने धिकार छे, अने तेणे भेख शा वास्ते धरी लीधो? ॥७॥

पुनि दो द्विज आये तितें, डुबे करज दुख कूप ॥
सागरकुं जान्यो इने, हे नृप जोगी रूप ॥ ८ ॥

अर्थ. पछी कर्जरूपी दुःखना कूवामां डुबेला वे ब्राह्मणो त्यां आवी चड्या.तेणे सागरने जोइने जाण्युं के आ कोइ जोगीने रूपे राजा छे.॥८॥

॥ वह विप्रोक्त ॥ सवैया ॥

बादरसें न छूपे ज्युं बिभाकर, छोनि छुपे न तरूवर छाये ॥
अंजन अंजित नेन छुपे नहि, मेन छुपे नहि मौन रहाये ॥
निंदकसें न छुपे परकीरति, साच छुपे नहि जूठ बताये ॥
धूमहिसें ज्युंहि आग छुपे नहि, भाग्य छुपे न भभूत लगाये ॥ ९ ॥

अर्थ. जेम वादळाथी सूरज छानो रहे नहीं, अने मोटां झाड छवरावाथी पृथ्वी छानी रहे नहीं, आंजण आंजवाथी आंख्यो छानी रहे नहीं. अने बोल्या वगर रह्याथी तेना मनमां उपजेलो कामदेव छानो रहे नहीं, निंदा करनाराओथी पारकी कीर्ति छानी रहे नहीं, अने जूठुं बताववाथी साचुं होय, ते छानुं रहे नहीं. वळी धुमाडाथी जेम अग्नि छानो रहे नहीं तेमज भभूति लगाववाथी भाग्यशाळीनुं भाग्य छानुं रहे नहीं.॥९॥

॥ दोहा ॥

द्विजने आशिर्बाद दिय, कही निज करज बिपत्त ॥
सागर तिहि मोती दिये, जो हे प्रबीन दत्त ॥१०॥

अर्थ. पछी ते ब्राह्मणोये सौ मित्रोने आशिर्वाद दइने पोताना करजनुं दुःख कह्युं, त्यारे सागरे प्रवीणनां आपेलां मोती हतां, तेमांथी तेओने आप्यां, तेनी विगत जे.॥१०॥

॥ अथ मोतीदानको ॥ कवित ॥

सातो मित्र समीप दो दुखी द्विज आइ कहे, अहो अधिपती सूनो हमारी अरज हे ॥ चारीस रुपैयेको करज मेरे

एक कहे, एक कहे मेरे शिर लक्षको करज हे ॥ एककुं एकेक मोती, दूसरेकुं दोनुंदोनुं, दिये सातों मित्र टारी ओरकी गरज हे॥ कह्यो सबे मोती सम मोल हे तथापी सम, होइहो श्रीमंत यामें ऐसो अचिरज हे ॥११॥

अर्थ. साते मित्रो पासे ते बे दुखी ब्राह्मणोये आवीने कह्युं के हे महाराज? अमारी अरजी सांभळो?एम कहीने एकजणे कह्युं के मारे माथे चालीसरूपैआनुं करजछे. त्यारे बीजे कह्युं के मारे माथे लाखरूपैआनुं करज छे,त्यारे ते साते मित्रोये एक जणाने अकेकुं मोती आप्युं अने बीजाने बबे मोती आप्यां. अने बीजा कोइ पासे मागवा जवानी गरज मटाडी. वळी तेओने कह्युं के आ बधां मोती सरखीज किमतनांछे,तो [illegible] तेमां एवो चमत्कारछे के तेथी तमे बंनेजणा (पोतपोतानुं कर[illegible]टाडीने) सरखी मुंडीवाळा थशो अर्थात् बंने पासे सरखा रूपीआ र[illegible]?॥११॥

॥ दोहा ॥

सुनि दुसरो दिलगीर ज्ञो, जूठ सु वा[illegible] जान ॥
जब बेके ज्या शहरमें,भयो कह्याहि प्रमान ॥१२॥

अर्थ. ते सांभळीने बीजो ब्राह्मण के जेने माथे लाखनुं करज हतुं,तेणे ते वात जूठी जाणीने दिलगीर थयो, पण ज्यारे शहेरमां जइने ते मोती वेच्यां त्यारे सागरना कहेवा प्रमाणेज थयुं.॥१२॥

मोल मोति प्रत्येकको, उपज्यो कहा निदान ॥
करज कटत कितनो बच्यो, जाने चतुर सुजान ॥१३॥

अर्थ. ते प्रत्येक मोतीनुं मूल नकी शुं उपज्युं, अने बन्ने जणाने पोतपोतानुं करज कापतां केटलुं वध्युं तेतो चतुर डाह्यो माणस होय तेजाणे.॥१३॥

भाखे भारतिनंद तब, सागरपें मुख बान ॥

करज कटत कैसें हुवे, दो श्रीमंत समान ॥१४॥

अर्थ, त्यारे भारतिनंद कवियें, सागरप्रत्ये मोढेथी वाणी कही के ते बन्नेजणा पोतानुं करज कापतां सरखी मुडीवाळा केम थाय? ॥१४॥

॥ अथ सागरोक्त मोतीके मूलको ॥ कवित ॥

एक जनतें अधिक जितने दुजेकुं मोती, तीनकी अढाइ गुनी संख्या उर धारिये ॥ छोटो कर्ज सो संख्यांक गुनो करते ज्युं होत, तासें बडो कर्ज कछु न्युन न बिचारिये ॥ अंतर दो कर्जहूको अधिक मोतीसें हनो, प्रत्येक मोतीको मोल इतनो उचारिये॥ बडो कर्ज कह्यो तातें चाहे तेतो बडो होय, तदपी सो टारी पुंजी इतनी निहारिये ॥१५॥

अर्थ. सागर कहेछे के एकजणा करतां बीजाने जेटलां वधारे मोती आप्यां होय, ते वधारानां मोतीने अढीगणां करिये, अने जे संख्या आवे ते याद राखवी, अने नाना करजनी संख्याने ते सख्याये गणवी, तेथी जे आंक आवे, ते करतां मोटा करजदारनुं करज ओछुं होवुं जोइये नहीं, अने पहेला करतां बीजा जणने जेटलां वधारे मोती आप्यां, ते तेना वधाराना करजने पेटे आप्यां छे, माटे बंन्ने करजनुं अंतर जेटलुं होय, तेने वधारे आपेला मोतीनी संख्यावडे भागतां जे भाग आवे तेटली दरेक मोतीनी किमत कहेवी. ते मोटुं कर्ज उपर कह्या करतां वधारे गमे तेटलुं होय, तोपण ते करज कापतां सरखी मुडी रहे. ॥१५॥

॥ कवित ॥

हे अधिक कर्ज जाकुं, लक्षमें चालीश कम, ताके लिये सात मोती अधिक सु दियेहे ॥ सो संख्याको सप्तमांश, प्रत्येक मोतीको मोल चौदह सहस्र चहुशतबीश कियेहे ॥ काटतें

करज एकलक्षमहीं एसी न्युन, रहे सो प्रत्येक पास लाभ जानी लियेहे ॥ सागर कहत एसे होतहे अनेक भेद, जानत चतुर चतुराइ जाके हीयेहे ॥ १६ ॥

अर्थ. हवे जे बीजा ब्राह्मणने पहेला ब्राह्मण करतां एकलाखमां चाळीश रुपिआ ओछानुं करज वधारे छे, ते वधारांना करजने पटे तेने सात मोती वधारे आप्यां छे, माटे ते संख्यानो सातमो भाग जे चौदहजार, चारसें अने वीश रुपीआ थया, एटली दरेक मोतीनी किमत कहीछे. माटे बन्नेजणाने पोतपोतानुं करज कापतां एक लाखमां एशी रुपीया ओछा रह्या, ते तेमणे लाभ जाणीने अर्थात् वधारानी मूडी जाणी लीधी, सागर कहेछे के एवा अनेक हिसाब "उपर कहेली रीत उपरथी थायछे" ते जेना मनमां चतुराइ होय, एवा चतुर जनो जाणे, ॥१६॥

॥ हरिगीत छंद ॥

पुनि सात मालाकार पेखे, बाटिकाके पासही ॥
तिहिकुं कउ सरदार दीने, मोति उन पंचासही ॥
इक इक बढत धन मोल मोती, बांटतें लरने लगे ॥
निधि कहे भारतिनंदकुं, तुम बांटि देहू यह जगे ॥ १७ ॥

अर्थ. वळी एक बाग पासे सात माळियोने दीठा, तेओने कोइ सरदारे ओगणपचास मोती आप्यां हतां, तेमां पहेलुं मोती एक रुपियानी किमतनुं, अने पछी एकेक रुपीयो चढतां छेल्लुं ओगणपचास रुपीआनी किमतनुं हतुं, ते वहेंची लेतां तेओने लडाइ थई, त्यारे सागरे भारतिनंदकविने कह्युं के आ ठेकाणे तमे तेओने वहेंची आपो. ॥१७॥

॥ दोहा ॥

जंत्र क्रियाकी रीतिसें, मोती बाटहु मीत ॥

भाखे भारतिनंद तब, कहो जंत्रकृति रीत ॥१८॥

अर्थ. वळी कह्युं के हे मित्र यंत्र करवानी रीतथी मोती वहेंची आपों, त्यारे भारतिनंदे कह्युं के यंत्र करवानी रीत तमे मने कहो. ॥१८॥

॥ अथ सागरोक्त ॥ दोहा ॥

जंत्र क्रिया तें निधि कहे, उपजे जंत्र अनेक ॥
तीर्यग उर्ध रु कोनतें, आवत संख्या एक ॥१९॥

अर्थ. सागर कहेछे के जंत्र करवानी रीतथी अनेक प्रकारना जंत्र बनेछे, तेमां आडी पंक्तियोमां उभी पंक्तियोमां अने खूणे खूणनी पंक्तियोमां पण एक सरखी संख्या आवेछे. ॥१९॥

॥ हरिगीत छंद ॥

निधि तीर तिहु सुर पंच जन, रुषि सात नव नागहि गये ॥ तब मोति पंद्र पचीस उनपंचास एकाशी दये ॥ प्रत्येक चढते मोलके, दिय भिन्न अवसर ऊपरी ॥ प्रत्येक मंडल बांटि लिय, समभाग यंत्रक्रिया करी ॥२०॥

अर्थ. एक समे समुद्रने कांठे त्रण देवो गया हता, अने बीजीवार पांच माणसो गयां, त्रीजीवार सात रुषियो गया, चोथीवार नवकुळना नव नाग गया हता, त्यारे तेओने पहेलीने पंदर, बीजीने पचीश, त्रीजीने ओगणपचाश. अने चोथीने एकाशी मोती समुद्रे आप्यां हतां, ते दरेक मोती एक एक रुपीआनी चडती किंमतनां हता, अने प्रत्येक मंडळीने जूदीजूदी वखते आप्यां हतां, ते यंत्रक्रिया करीने प्रत्येक मंडलिये सरखे भागे वहेंची लीधां हतां. ॥२०॥

॥ अथ विषमपंक्तिके यंत्र करन विधि ॥ कवित ॥

विषम पंक्तिके यंत्र रचनकी विधि सुनो, पंक्ति संख्यासें

संजाय ताको यंत्र करिये ॥ घर संख्यामें मिलाइ एक अर्ध करो ताकुं, पंक्ति गुनो कमीसें कमी ज्युं उर धरिये, घर संख्या एक हीन अर्ध करो सोइ अंक, इच्छांकके पंक्तिमांश, हुसें परहरिये ॥ शेष सोइ दूजे काव्यमें कहुं त्यों लिखो पुनि, एक एक बढत सबही घर भारिये ॥२१॥

अर्थ. हवे एकी संख्यानी पंक्तियोना यंत्र करवानी रीत कहुं,ते सांभळो, जेटली पंक्तियो होय,एटली संख्याथी भागी शकाय, तेवी संख्यानो यंत्र करिये, ते यंत्रना जेटलां खानां होय, तेमां एक मेळवीने तेना अर्ध करवा, तेने उभी अथवा आडी जेटली पंक्तियो होय, तेटला गणा करवा, ओछामां ओछी एटली संख्यानो यंत्र करवानुं मनमां धारिये, खानानी संख्यामांथी एक बाद करीने तेना अर्धा करवा,ते आंक जेटली संख्यानो यंत्र करवाने धार्यो होय, तेनी पंक्तिमा भागमांथी बाद करिये, पछी जे बाकी आंक रह्यो,ते हवे बीजा कवितमां कहेशुं,ते प्रमाणे खानामां एकएक वधतो, वधां खानां भराय तेम लखो.॥२१॥

॥ अथ अंक लिखन विधिको ॥ कवित ॥

प्रथमही 'पू' पंक्तिके मध्य घर अंक लिखो, पुतें सदा 'प'मे सीधी बाजु पकरीजिये ॥ पतें कोनाकोन सदा चढिये 'द' पंगती लों, दते सिर पंगतीमें, 'उ' मही लखीजिये ॥ उते कोना कोन 'पू'लों चढतें जो अटके तो, लिख्यो ताके नीचे लीखी पू लों पहोंचीजिये॥ अग्निकोन घर भरी ता नीचेको घर भरो, चारों पंक्तिके नियम रुदेमें धरीजिये ॥२२॥

अर्थ. "इशानखूणाथी अग्निखूणा सुधीनी पंक्तिनुं नाम 'पू' पंक्तिछे, अने वाव्यखूणाथी नैरुत्यखूणा सुधीनी 'प' पंक्तिछे, नैरुतखूणाथी उपर ने

अग्निखूणा नीचे सुधीनी 'द' पंक्तिछे, अने वाव्यखूणा उपरथी इशानखूणानी नीचे सुधी 'उ' पंक्तिछे, ते चारे पंक्तिना नियमो तथा पांचमो मध्य भागनो नियम खूब याद राखवो,

पहेलवेलो 'पू' पंक्तिना वचला खानामां आंक लखवो, अने 'पू' पंक्तिमां आंक लख्या पछी हरेक वखते नीचे 'प' पंक्तिना एक जमणा खानामां आंक भरिये, अने 'प' पंक्तिथी हरेक वखते खूणाखूण 'द' पंक्तिसुधी ऊंचे चडतां खानां भरिये, अने 'द' पंक्तिथी दर वखते उपली लीटीमां 'उ' पंक्तिनुं खानुं भरिये, अने 'उ' पंक्तिथी खूणाखूण 'पू' पंक्ति सुधी चडतां जो वचमां अटके तो छेल्लो आंक लख्यो होय तेनी नीचेनुं खानुं भरीने खूणाखूण 'पू' पंक्तिसुधी चाडिये, अग्निकोणनुंखानुं भराय ते पछी तेनी नीचेनुं खानुं भरवुं, ए रीते चारेपंक्तिना नियमो मनमां राखवा। २२ ।

॥अथ त्रिपंक्ति पंच दश संख्यांक यंत्र ॥

इ पू अ

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उ द — वा प नै

॥अथ त्रिपंक्ति २४ संख्यांक यंत्र ॥

इ पू अ

११	४	९
६	८	१०
७	१२	५

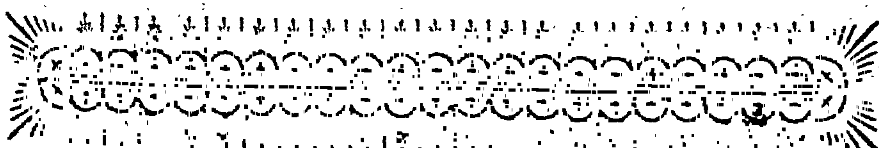
उ द — वा प नै

॥अथ पंचपंक्ति पंच षाष्टि संख्यांक यंत्र ॥

इ पू अ

१७	२४	१	८	१५
२३	५	७	१४	१६
४	६	१३	२०	२२
१०	१२	१९	२१	३
११	१८	२५	२	९

उ द — वा प नै



॥ अथ सप्तपंक्ति १७५ संख्यांक यंत्र ॥

ई पू अ

उ द

वा प नै

३०	३९	४८	१	१०	१९	२८
३८	४७	७	९	१८	२७	२९
४६	६	८	१७	२६	३५	३७
५	१४	१६	२५	३४	३६	४५
१३	१५	२४	३३	४२	४४	४
२१	२३	३२	४१	४३	३	१२
२२	३१	४०	४९	२	११	२०

॥ अथ नवपंक्ति ३६९ ॥ संख्यांक यंत्र ॥

ई पू अ

उ द

वा प नै

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४५
५७	६८	७९	९	११	२२	३३	४४	४
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	
७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	
६	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	[illegible]
१६	२७	२९	४०	५१	६२	६४	७५	५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	७४	४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	७३	३	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२४	३५

॥ पुनः सागरोक्त चतुःपंक्तिमें समसंख्यांक यंत्रक्रिया यथा ॥

॥ दोहा ॥

चहु पंक्तीके यंत्र कहु; प्रसंग पाई एहु ॥
समसंख्या तेतीसतें, अधिक चाहि सो लेहु ॥२३॥

अर्थ. सागर कहेछे के आ कहेवानो प्रसंगछे,तेथी चार पंक्तियोना यंत्र करवानी युक्तिपण कहुंछुं, ते तेत्रिश उपरांत बेकी आंकनी गमे ते संख्यानो यंत्र करवा धारो ते थशे.॥२३॥

॥ हरिगीत छंद ॥

इच्छांकके अर्धांशतें, तजि आठ कहुं सो घर भरो ॥ द्रग नव कळा मुनि वसु तिथी दश, भूमि अब कहूं सो करो ॥

मुनि दो त्रिखट इक आठ सर श्रृति,शेष घर नरि लीजिये॥
चहुपंक्ति समसंख्यांकके,शुभ यंत्र इहि बिधि कीजिये॥२४॥

अर्थ. धारेली संख्यानुं अर्ध करीने तेमांथी आठ बाद करीने,ते आंकडाथी एकएक चडता आंक हुं कहुं ते घरमां भरो,बीजुं,नवमुं, सोळमुं, सातमुं, आठमुं, पंदरमुं,दशमुं. अने पहेलुंखानुं भरवुं पछी, त्रीजाखानामां सातडो चोथाखानामां बगडो, पांचमामां तगडो, छठामां छगडो, अगियारमामां एकडो,बारमामां आठडो,तेरमामां पांचडो, अने चौदमा खानामां चोगडो भरवो. ए रीते चार पंक्तियोना बेकी आंकना गमे ते यंत्रो बनाविये.॥२४॥

॥ अथ चतुःपंक्ति ३४ सम संख्यांक यंत्र ॥

१६	९	७	२
३	६	१२	१३
१०	१५	१	८
५	४	१४	११

॥ अथ चतुःपंक्ति ६४ सम संख्यांक यंत्र ॥

३१	२४	७	२
३	६	२७	२८
२५	३०	१	८
५	४	२९	२६

॥ दोहा ॥

सो सुनि भारतिनंद कवि,औरहि कवि रविजोति ॥
सात पंक्तिके यंत्र विधि, बांट दिये यह मोति ॥२५॥

अर्थ. ते सांभळीने भारतिनंद कविये, तथा रविजोती कविये, सात पंक्तिनो यंत्र करवानी रीते ते मोती वहेंची आप्यां, अने दरेकजणने एकसोपंचोतेर रूपीआनी किंमतनां सात सात मोती आव्यां.॥२५॥

पुनि चहु मालाकार किय, इत इक नृपति आय ॥
हमकुं अत्तर शीशि दिय, सो क्यों बांटी जाय ॥२६ ॥

अर्थ. वळी चार माळियोंये कह्युं के आहीं एक राजा आव्यो हतो, तेणे अमने अतरनी शीशीयो आपीछे, ते "कांटा वगर के तोला वगर" शी रीते वहेंची शकाय?॥२६॥

अत्तर पूरित तिहु शिशी, बतिस बतिस तोलेहु ॥
ठल्ली पच्चिस सातकी, चहुकों बांटी देहु ॥ २७ ॥

अर्थ. बत्रिश बत्रिश तोलानी त्रण शीशीयो भरेलीछे, अने पचीश ने सात तोलानी बे ठाली शीशीयो छे ते अत्तर अमने वहेंची आपो.॥२७॥

॥ अथ सागरोक्त अत्तर बांटनेको ॥ कवित ॥

चार बेर सात भर डारकें पचीसमें, पचीसकी ठलाइ तामें तीन सोइ डारिये ॥ फेर तीन बेर सात डारतें चोवीस होत, पूरनसें पूरी एकतीस दूर धारिये ॥ दोनुमें ठलाइ पच्ची, फीर ऐसें दूजे एकतीस धरी, पच्चीसमें चोवीस उतारिये॥ तीस रहे दस तामें सात सात एकतीस, डारीकें सागर कहे, बांटन विचारिये ॥ २८ ॥

अर्थ. सागरे कह्युं के सात भारनी शीशी चारवार भरी भरीने पचिश भारनीमांनाखतां जे त्रण भार वधे ते पचिश भारनी शीशी पाछी बत्रिशभारनीमां खाली करीने तेमां नाखवुं, फरीथी त्रणवार सातभारनी भरी भरीने तेमां नाखतां चोवीश भार थाय, तेमां बत्रीशभारनी बीजी भरेली शीशी मांथी एक भार नाखीने ते एकत्रीश तोला भार वाळी शीशी वेगळी मुकवी. पछी पचीश भारनी शीशी सातभारनीमां तथा बत्रीश भारनी जे घणी अधुरीछे तेमां ठलवीने वळी उपर कह्या प्रमाणे बीजी बत्रीशभारनी शीशीमां एकत्रीशभार राखीने ते पण वेगळे मुकवी, वळी एज रीते पचीश भारनीमां चोवीस भार नाखिये, एटले त्रीजी शीशीमां दस तोलाभार रहेशे,

तेमां वेगळे मुकेली बे शीशीओमांथी सात सात भार नाखतां चारे भाग सरखा थइ रहेशे. ए विचारीने वहेंची ल्यो. ॥२८॥

॥ पुनःएक मालाकारको प्रश्न ॥ निंबु विषे ॥ कवित ॥

माली कहे मेरे नींबु तीस में बेकन चल्यो,परोसीकु तीस मोकुं बेकनकों दीयही ॥ मेरे तो पेसेके तीन, उनके पेसेके दोनुं, बेकाय तो बेकहू युं परोसीने कीयही ॥ दोनुं पेसे पांच पांच साठिहु नींबु में बेके,बोत ग्राहकसें पेसे चहूबीस लीयही ॥ मेरे पेसे दस लिये, वह पंचदश मंगे, एक पेसा न्यून रह्या तोतें जरे जीयही ॥ २९ ॥

अर्थ. वळी एक माळीये कह्युं के मारां त्रीस लींबु हुं वेचवा जतो हतो, त्यारे मारा पाडोशिये पण बीजां त्रीश लींबु मने वेचवा आप्यां, तेमां मारे तो पैसानां त्रण वेचवां हतां,अने तेणे कह्युं के मारां तो पैसानां बे लेखे वेचाय तोज वेचजे एम कह्युं, पछी ते साठे लींबु बे पैसानां पांच लेखे में वेच्यां, ते घणांक घराको लइ गयां, तेना चोवीश पैसा में लीधा, ते मांथी में मारा दस पैसा लीधा, अने पाडोशीये पोताना पंदरपैसा माग्या. तेमां एक पैसो ओछो रह्यो तेथी मारो जीव दाझेछे.॥२९॥

॥ दोहा ॥

पेसेकी न बिसात कछु, जात बडो इतबार ॥
कलंक लागे कपटकों, ताकी फिकर अपार ॥ ३० ॥

अर्थ. पैसानी कांइ विसात नथी, पण मोटो विश्वास जायछे, अने कपट कर्यानुं कलंक लागे तेनी घणी फिकरछे.॥३०॥

॥अथ सागरोक्त उत्तर यथा॥कवित ॥

सुनो स्त्रजकार स्नेहे सागर सुनावे सही, बारह पंचक नीं-

जु तुमें बेक आयेहे ॥ छेतीस तो यामें एक पेसेके बिकाये तीन, चोवीसही यामें पेसेके दोनुं बेकायेहे ॥ तीन पेसेके युं खट, हुते सो दो पेसे बेके, तातें एक पेसा यामें, ऊन उपजायेहे ॥ जो कोउ बडो व्यापारी मोती यों बेके तो जानो; पचीस सहस्त्रे धन सहस्त्र गुमायेहे ॥ ३१ ॥

अर्थ. स्नेहथी सागर कहेछे के हे माळी सांभळ, बार पंचकडां लींबु नुं वेची आव्यो, तेमां छत्रीश लींबु तो एक पैसाना त्रणने भावे वेचायां, अने चोवीश लींबु एक पैसानां बेने भावे वेचायां, ए रीते त्रण पैसानां छ लींबु हतां ते बे पैसामां गयां, तेथी एमां एक पैसो ओछो उपज्यो छे, जो कोइ मोटो वेपारी, ए रीते मोती वेचेतो जाणवुं के तेणे पचीशहजार रुपियाना वेपारमां एकहजार रुपिया खोया.॥३१॥

॥ दोहा ॥

सो सुनिकें स्त्रजकारको, टर्यो रुदयतें रोष ॥
दोप वडोहे कपटको, चुकको बडो न दोष ॥३२ ॥

अर्थ. ते सांभळीने माळीना अंतरनी दिलगीरी मटी, केमके कपटनुं महा पापछे, पण भूलनुं मोटुं पाप नथी.॥३२॥

॥ पुनःमालाकारोक्त फल विषे प्रश्न ॥ दोहा ॥

इत देवालयहे बहुत, में दर्शन करि आउं ॥
इक इक बढते फल धरन, कितने फल लेजाउं ॥३३ ॥

अर्थ. वळी एक माळिये पुछ्युं के आंहीं देव मंदिरघणांछे. त्यां हुं दर्शन करी आवुं, पण त्यां एकने एक, बीजाने बे, त्रीजाने त्रण,एम एकेकुं वधतुं फळ भेट करवाने केटलां फळ लइ जाउं.॥३३॥

॥ अथ सागरोक्त उत्तर ॥ दोहा ॥

अर्ध गुने अंत्यांकतें, करहु सइक अंत्यांक ॥
इतने फल ले जाहु तित, याद रखी यह आंक ॥ ३४ ॥

अर्थ. सागरे कह्युं के मंदिरनी संख्याना छेला आंकमां एक मेळवीने तेने छेला आंकना अरधा गुणा करो, ते आंकडो याद राखीने एटलां फळ लइ जाओ. ॥३४॥

जो शत देवल होइतो, एक मिलाई तास ॥
होत करत पंचास गुन, पंच सहस पंचास ॥ ३५ ॥

अर्थ. जो सो देवळ होय, तो तेमां एक मेळवीने, तेने पचास गुणा करतां पांचहजार ने पचास थाय. ॥३५॥

दो तिन चहु बढते धरो, तो तिन भेद सुनाउं ॥
दुगुन त्रिगुन चहुगुन करी, सो संख्या ले जाउं॥ ३६॥

अर्थ. जो पेहेले मंदिर बे फळ मुकीने पछी प्रत्येक मंदिरे बबे वधतां मुको तो उपर कहेली संख्याने बमणी करीने लइ जाओ. अने जो पहेले मंदिरे त्रण मुकीने पछी त्रण त्रण वधतां मुको, तो त्रगणी करो, अने जो पहेले मंदिर चार मुकीने चार चार फळ वधतां मुको तो उपर कहेली संख्याने चारगणी करीने लइ जाओ. ॥३६॥

॥ गाहा ॥

बद्रीकाश्रम स्थाने, गनिताश्चर्यं कृतं सु सागर ज्युं ॥
एकाशित्यभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥ ३७ ॥

अर्थ. बद्रिकाश्रममां सागरे गणितनो चमत्कार बताव्यो, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ एकाशीमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३७॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे बद्रिकाश्रमे सागर कृत गणिताश्चर्य प्रसंग बर्ननो नाम एकाशीतितमो लहरं ॥ ८१ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां एकाशीतितम तरंगःसमाप्तः॥८१॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

बद्रिकआश्रमथी निर्धी, आव्या मनछापूर ॥
आ बाशीमी लहरिमां, कह्यां नक्षत्र जरूर ॥

॥अथ सागर मनछापुरि प्रति गमन॥तथा नक्षत्र॥ तारादि कथन प्रसंगो यथा ॥ दोहा ॥

बद्रिनाथकुं बंदिकें, चले सु सातों मीत ॥
मनछापुरीको मग लियो, पूर्न धरी मन प्रीत ॥ १ ॥

अर्थ. बद्रिनाथने नमस्कार करीने ते साते मित्रो चाल्या, अने मनमां पूरी प्रीत धरीने मनछापूरीनो रस्तो लीधो. ॥१॥

वांसें मनछापुरि सु पंथ, उर धारत अनुमान ॥
कहत पंचशत कोश सब, तीन मास पथ जान ॥२॥

अर्थ. त्यांथी मनछापूरीनो रस्तो मनमां अनुमान धारतां पांचसें गाउ थाय. एम सौ कहेछे, "अंगरेजी बे माळइनो गाउ छे" अने त्रण महिनानो रस्तो जाणो. ॥२॥

द्वादश दिन जब पथ चले, गिरिबन गहन मझार ॥
पंचसप्तती कोश चलि, तब आये हरद्वार ॥३॥

अर्थ. ज्यारे पर्वतोमां ने मोटा जंगलमां बार दिवस सुधी मुसाफरी करी, त्यारे ७५ गाउ चालीने श्री हरद्वार आव्या. तेने मायापुरी कहेछे. ॥३॥

॥ चोपाई ॥

वां दिन पंच मुकामहि कीने,पुनि हस्तिनापुरी पथ लीने ॥

वां बिचमें इक अरन्य आयो, निशा अवास करन मन भायो ॥ चलत चलत अध रेनि बिहाई, पंथिक मंडलि सन्मुख आई ॥ कृष्ण निशा नहि शशि नक्ष मांही, तरु संघट पथ सूजत नांही ॥ कित पूरव कित पच्छिम होई, वह पंथिक नहि जानत कोई ॥ हे उनकूं दछिन दिश जाने, पुनि उत्तर पथ लीन अजाने ॥ सागरपें बूझ्यो इन जबही, भूल गये दिश जान्यो तबही ॥ उलट चली दो जोजन आये, पंथिक वह पुनि पुनि पिछताये ॥ पिछे चले सागरके संगा, बात करत उर बढ्यो उमंगा ॥ कहे पंथिक सागरपें बानी, दिनकर बिन हम दिशा न जानी ॥४॥

अर्थ. त्यां पांच दिवस मुकाम कर्यो, पछी दिल्लीनो रस्तो लीधो, त्यां वचमां एक जंगल आव्युं, तेमां रात्रिये चालवानी मनमां इच्छा थई, त्यां चालतां चालतां अरधी रात गई, त्यां मुसाफरोनी एक मंडळी सामी आवी, ते अंधारी रात हती, ने आकाशमां चंद्र नहोतो, अने झाड घाटां छे, तेथी रस्तो सूजतो नहोतो, कइ तरफ पूर्व, अने कइ तरफ पश्चिमादिशा हशे? ते ते मुसाफरो कोइ जाणता नहोता, तेओने दक्षिणदिशा तरफ जवानुं हतुं, पण भूलथी उत्तरदिशानो रस्तो लीधो हतो, एणे ज्यारे सागरने पूछयुं, त्यारे जाण्युं के अमे दिशा भूल्या छिये, अवळा चालीने तेओ बे जोजन आव्या हता. तेथी वारे वारे पस्तावा लाग्या, पछी पाछा फरीने सागरनी साथे चाल्या, अने वातो करतां करतां मनमां आनंद वध्यो, त्यारे ते मुसाफरोए सागरने वाणी कही के अमे सूरज विना दिशा जाणी नहीं. ॥४॥

॥ दोहा ॥

नछत्र जाने निधि कहे, तो न दिशा भूलाइ॥
गइ रजनी कितनी घरी, सोइ पुनी समजाइ ॥५॥

अर्थ. त्यारे सागरे कह्युं के जो नक्षत्रने ओळखता होय तो दिशा भूलाय नहीं, अने केटली घडी रात गइ ते पण समजाय. ॥५॥

विनय करी पथिक कहे, कहहू उडगन नाम ॥
तब सागरे नछत्रके, कहे कवित तिहि ठाम ॥६॥

अर्थ. त्यारे ते मुसाफरोये विनती करीने कह्युं के ताराओनां नाम कहो,? त्यारे सागरे ते ठेकाणे नक्षत्रोनां कवित कह्यां. ॥६॥

॥ अथ सागरोक्त नछत्र तारा संख्या यथा ॥ कवित ॥

अश्विनी के तीन तारे तीन तारे भरनी के, कृतिकाके खट रोहिनि के पंच जानिये॥ तीनमृग शिरषके, आरद्राको एक पुनि, पुनर्वसु चहु, तिहु पुष्यके प्रमानिये॥ अश्लेषाके पंच शुभ, मघाके मंजुल पंच, पूरवा उत्तरा दोनुं दोनुं पहिचानिये॥ हस्तहुके पंच, चित्रा स्वाति हूको एक एक, बिषाखाके बेद अनुराधा बेद आनिये ॥७॥

अर्थ. आ अश्विनीना त्रण तारा छे, भरणीना त्रण तारा, कृतिकाना छ, अने रोहिणीनां पांच जाणो, मृगशिरना त्रण, आरद्रानो एक, पुनर्वसुना चार, अने पुष्पना त्रण प्रमाणो, अश्लेषाना पांच, मघाना सुंदर पांच, पूर्वा फाल्गुनी ने उत्तरा फाल्गुनीना बबे जाणवा, हस्तना पांच, चित्रा, ने स्वातिनो एकेको, विषाखाना चार अने अनुराधाना पण चार मनमां लाविये. ॥७॥

॥ कवित ॥

जेष्टा तीन धार मूलँग्यार, पूर्वाषाढा दोनुं, उत्तराके दोनुं

अँभिजीत[२२] तारे तीन हे ॥ श्रवणके[२३] तीन पुनी, धनिष्ठाके[२४] श्रृति सम, शतभिषा[२५] शत तारे, करतारे कीनहे ॥ पूर्वाभाद्रपद[२६] दोनु, उत्तराके[२७] उभय हे ॥ रेवतीने[२८] बत्तिश, ललीत तारे लीन हे ॥ सब मिलि दोसें ओर एकबीस उडगन, नछत्र अठाइस पिछानत प्रबीन हे ॥८॥

अर्थ. जेष्टाना त्रण धारो, मूळना अगियार, पूर्वाशाढाने उत्तराशाढाना बबे, अने अभिजितना तारा त्रण छे, श्रवणना त्रण, धनिष्टाना चार, ने परमेश्वरे शतभिषाना सो तारा कर्या छे. पूर्वाभाद्रपदना बे, अने उत्तराभाद्रपदना बे छे, अने रेवतिये सुंदर बत्रिश तारा लीधा छे, ते बधा मळीने बसे ने एकवीश तारा छे, एरीते अठ्ठाविश नक्षत्रोने डाह्या माणसो जाणेछे.।८।

॥ अथ नक्षत्र आकार कथन ॥ कवित ॥

अश्वमुख[१] त्रिकोन[२] रु छुर[३] अरु शकट[४] हे, मृगमुख[५] मनि[६] गृह[७], बान[८] चक्र[९] मानिये ॥ संदन[१०] मंचक[११] संज्या[१२], पंझा[१३] मोती[१४] प्रवाल[१५] हे, तोरण[१६] रु बलीदान[१७] कुंडल[१८] पिछानिये ॥ सिंहपुच्छ[१९] गज[२०]-दंत, मंचक[२१] त्रिकोन[२२] शुभ.त्रिभुवन[२३] मृदंग[२४] रु वर्तुल[२५] ज्युं जानिये ॥ मंचक[२६] रु जुगल[२७] स्वरूप ओर मृदंग[२८]हे, नछत्र अठाइस आकृति उर आनिये ॥९॥

अर्थ. अश्विनी घोडाना मुखने आकारे, भरणी त्रिकोणाकार, कृतिका अस्त्राना फळाने आकारे, "जेने झुमखुं कहेछे ते" रोहिणी गाडाने आकारे, "जेने गाडली कहेछे ते" मृगशिर हरणना मुखने आकारे, आर्द्रा हीरा जेवी, पुनर्वसु घरने आकारे, अश्लेषा सर्पना गुंचळाने आकारे, मघा घरना छापराने आकारे छे, "तेने गोमुत्रिकानो आकार पण कहेवाय" पूर्वाफाल्गुनी मांचडाने आकारे, अने उत्तराफालगुनीना बे तारा मळवाथी ते

चारे थइने पलंगनो आकार थायछे, हस्त पंझाने आकारे, चित्रा मोतीने आकारे, स्वाति प्रवाळा जेवी छे, अर्थात् लगार रताश उपर छे, विशाखा तोरणने आकारे, अनुराधा जमतां थाळी पासे बळीदान मुकेछे, तेवे आकारे जरा वांकीहार छे, जेष्टा कुंडळमां त्रणमोतीनी हार होय, तेवे आकारे छे, मूळ सिंहना पूंछडाने आकारे, पूर्वाशाढा हाथीना बे दांतने आकारेछे, उत्तराशाढा मांचडाने आकारे, अभिचित त्रिकोणाकारे, श्रवण स्वर्ग मृत्यु ने पाताळनी पेठे उपरा उपर छे, धनिष्टा ढोलकने आकारे, शतभिषा गोळ "चारणीने" आकारे जाणो, पूर्वाभाद्रपद मोटा मांचडाने आकारे, उत्तराभाद्रपदना बे तारा सरखा जोटाने आकारे छे, "पण ते बे नक्षत्रना चारे तारा मळीने मोटा चोकने आकारे देखाय छे," रेवती मोटा मृदंगने आकारे छे, एरीते अठ्ठावीश नक्षत्रोना आकार मनमां राखिये. ॥९॥

॥ अथ दक्षिणचारी, मध्यचारी तथा उत्तरचारी कथन ॥

॥ कवित ॥

रोहिणी रु मृगशीर आरद्रा रु हस्त पुनि, चित्रा विषाखा
रु अनुराधा जेष्टा जानिये ॥ मूल अरु शाढा दोउ विश कला
शतभिषा, बारह सो दच्छन चारी यों उर आनिये ॥ अश्वी
भरनी कृतिका पुनर्वसु फाल्गुनी दो, स्वाति अभिजीत अरु,
श्रवन बखानिये ॥ धनिष्टा दो भाद्रपद उत्तरचारी हे यहे,
मध्य पुष्य सार्प्य मघा रेवती प्रमानिये ॥१०॥

अर्थ. रोहिणी, मृगशिर, आरद्रा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, जेष्टा, मूळ, पूर्वाशाढा, उत्तराशाढा, अने शतभीशानी वीशकळा ए बार नक्षत्रो दक्षिणचारी अर्थात् कांइक दक्षिण तरफ चालतां जणायछे, एम मनमां लावो, अने शतभिषानी बाकी कळा मध्यचारी छे, अश्विनी, भ-

रणी, कृतिका, पूनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति, अभिजित, श्रवण, धनिष्टा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ए बार नक्षत्रो उत्तरचारीछे. अने पुष्य. अश्लेषा, मघा, तथा रेवती ए चार मध्यचारीछे एम प्रमाणिये. ॥१०॥

॥ दोहा ॥

पेखो मृगशिरके पिछे, पूर्व दिशा प्रति जेह ॥
लुब्धकको तारो ललित, अति चलकत हे एह ॥११॥

अर्थ. जुओ मृगशिरनी पाछळ पूर्व दिशा तरफ सुंदर लुब्धकनो तारो छे, ते घणो चळके छे. ॥११॥

सपाद दो नछत्रमें, हे मेषादिक राशि॥
ध्रुव तारा उत्तर दिशे, रहे सदैव प्रकाशि ॥ १२ ॥

अर्थ. सवा बबे नक्षत्रमां मेश आदिक बार राशियो छे, अने उत्तर दिशामां हमेशां ध्रुनो तारो प्रकाशी रहेछे. ॥१२॥

मघा नछत्र उदीत तब, उदित होत रुषि सात ॥
कर्क उदित तब दछिने, रुषि अगस्त दरशात ॥१३॥

अर्थ. ज्यारे मघा नक्षत्र उगे, त्यारे सप्तरुषि उगेछे, "ते सातमाना पहेला बे तारा उगेछे!" अने ज्यारे कर्कराशी उगे, त्यारे दक्षिणमां अगस्त रुशिनो तारो देखाय छे, ॥१३॥

कर्कराशिपें मकरपें, नभगंगा लखि लेहु ॥
उत्तर दछिन बाहिनी, अविलोकहु पुनि एहु ॥१४॥

अर्थ. कर्कराशीमां अने मकर राशीमां आकाशगंगा जोइ लेवी, ते उत्तर दक्षिण वहेती होय एम जोवी. ॥१४॥

मंगल आदिक ग्रह जिते, यह ओसर देखात ॥
सो सबकुं देखाइकें, सागर नाम सुनात ॥१५॥

अर्थ. पछी मंगळ आदिक जेटला ग्रह ते वखते देखाता हता, ते सागरे सौने देखाडीने तेनां नाम संभळाव्यां. ॥१५॥

॥ अथ नक्षत्रोपरि मास नाम कथन ॥ छप्पय ॥

कृतिका मृगशिर पुष्प, मघा फाल्गुनि चित्रा पुनि॥
विशापा रु जेष्टाहि, ओर षाढा रु श्रवन सुनि॥
भाद्रपद रु अश्विनी, सोइ नक्षत्रहु बारे ॥
बार मासके नाम, एहि ऊपरतें धारे ॥
सो मास पूर्निमामें शशी, सो नछत्र ढिग आवही ॥
गत रात्रि मान वह मासमें, सो नछत्रतें पावही ॥१६॥

अर्थ. कृतिका उपरथी कारतक, मृगशिर उपरथी मागशर, पूष्य उपरथी पोस, मघा उपरथी माघ, उत्तराफाल्गुनी उपरथी फागण, चित्रा उपरथी चैत्र, विशाखा उपरथी वैशाख, जेष्टा उपरथी जेठ, उत्तराषाढा उपरथी अषाढ, श्रवण उपरथी श्रावण, पूर्वाभाद्रपद उपरथी भादरवो, अश्विनी उपरथी आसो. एरीते ते बारे नक्षत्रो उपरथी बार महिनानां नाम पाडेलां छे. अने ते महिनानी पूनमे ते नक्षत्र पासे चंद्रमा आवे. माटे केटली घडी रात्रि गइ छे, तेनुं प्रमाण ते महिनामां तेना नक्षत्र उपरथी मळे. मतलब के जेम सूरज केटलो चड्यो छे. ते जोईने केटली घडी दिवस चड्यो छे, तेनुं अनुमान करिये छिये. एज रीते आखा कार्तिक महिनामां कृतिका नक्षत्र जेटले ऊंचुं चड्युं होय, तेटली घडी रात गई; तेनुं अनुमान करवुं. एज रीते बारे मास विषे जाणवुं. ॥१६॥

॥ कवित ॥

ऐसें हरद्वारहुसें चले तीन द्योस तब, शाहरनपूर पंचवीश कोश आयेहे ॥ वांसें दोड दिन चली आये सो अठारे कोस,

मुझफरनगरमें आई ठहराये हे॥ वांसे दुहु द्योस चली आयेहे मिरतपूर, सो पुनि अठारे कोश चले यु कहायेहे ॥ दोदिने गाजियाबाद आये बिद्या कोस चली, सात कोस वांसें हस्तिनापूरीकुं पायेहे॥१७॥

अर्थ. ए रीते हरद्वारथी त्रण दिवस चाल्या त्यारे, पचीस गाउ शाहरनपूरमां आव्या, तेओ त्यांथी बे दिवस चालीने ते अढार गाउ आव्या, त्यारे मुझफरनगरमां आवीने रह्या, त्यांथी बे दिवस चालीने मितरपूर आव्या, ते पण अढार गाउ चाल्या एम केहेवामां आव्युं, पछी चौद गाउ चालीने बे दिवसे गाजियाबाद आव्या, त्यांथी सात गाउ हास्तिनापूरि एटले दिल्लीशहेरने पाम्या.॥१७॥

॥ दोहा ॥

वा दिन पंच मुकाम करि, किय जमुनांजल स्नान॥
तित वसु गुन भुमि कोश"१३८"पथ,पुष्कर कियो प्रयान१८॥

अर्थ. त्यां पांच दिवस मुकाम करीने, जमुनांजीना जळमां स्नान कर्युं,त्यांथी एकसोने आडत्रीश गाउ पुष्करजीने रस्ते प्रयाण कर्युं.१८

॥ कवित ॥

दिल्लिहुसें द्योस पंच आये चले अलवर,प्रान बेद कोश '४५' यह पंथको प्रमानहे ॥ वांसें षट द्योस चली आये जयपूर प्रति, बसु बेद कोस"४८"पंथ करिकें प्रयानहे ॥ वांसें पंच द्योस चली गयेहे किसनगढ, कहत छेंतीस कोस जानत सुजानहे ॥ एक द्योस चली नवकोस अजमेर आये, पुष्कर तीरथ जिहां पवित्र संस्थानहे ॥१९॥

अर्थ. दिल्लीथी पांच दिवस चालीने अलवर शहेरमां आव्या, ते

रस्तानुं प्रमाण पीसतालीस गाउनुंछे, त्यांथी छ दिवस चालीने, अडतालीस गाउनो पंथ करीने जयपूरमां आव्या, त्यांथी पांच दिवस चालीने किसनगढ गया, ते छत्रिश गाउ कहेवायछे. ते डाह्या माणसो जाणेछे, त्यांथी एक दिवसे नव गाउ चालीने ज्यां पुष्कर तीर्थनुं पवित्र संस्थान छे, त्यां अजमेर आव्या.॥१९॥

॥ चामर छंद ॥

पंच द्योस वां रही पुनी करी त्वरा चले, कोस '९५' बान भक्ति मान आय अर्बुदाचले ॥ पच्छ एक पंथमें बहाय आयहे तिते ॥ अर्बुदाभवाँनि शंभु अच्चलेश हे जिते ॥ द्योस दो रही चले जवेहि शास्त्र जोजनं ॥ आय सिद्धक्षेत्र तीर्थ स्नानके प्रयोजनं ॥ चार द्योस पंथमें चलंत वां बिती गये, पंच द्योस वां रहीं सु देव दर्शनं किये॥ फेर अष्ट जोजनं चली रखी सु यादमें, चार द्योस सें गये अहंमदाहिबादमें ॥ बार जोजनं रही पूरी प्रवीन बासकी, आय तीत पूर्णिमा भई ज्यु पोसमासकी ॥ शास्त्र संख्य द्योस सोइ बाटमें बिहाइकें, पूर्न मोद पाय सो पुरी प्रसिद्ध पाइके ॥२०॥

अर्थ. पछी त्यां पांच दिवस रहीने उतावळ करीने चाल्या, अने पंचाणुं गाउ जेटले आंबुजीए आव्या, ते रस्तामां एक पखवाडियुं वीताडीने ज्यां अर्बुदाभवानी अने अचलेश्वर महादेवछे त्यां आव्या. त्यां बे दिवस रही त्यांथी छ जोजन एटले चोवीश गाउ चाल्या, अने तीर्थमां स्नान कर्यांना प्रयोजनथी सिद्धपूरमां आव्या, ते रस्तामां चालतां चार दिवस वही गया, अने त्यां पांच दिवस रहीने देवनां दर्शन कर्यां, पछी आठ जोजन एटले बत्रीश गाउ चालीने, मनमां याद राखीने, चार दिवसे अम-

दावादमां गया, त्यारे प्रवीणने रहेवानी मनछापूरी अडतालीस गाउ रही, ज्यारे पोसमहिनानी पूनम थई त्यारे मनछापूरीमां आव्या, ते रस्तामां छ दिवस वीताडीने ते प्रसिद्ध शहेर पामीने संपूर्ण आनंद पाम्या.॥२०॥

॥ दोहा ॥

सायंसमय भयो जबे, तब आये तिहि ठाम ॥
सातों सन्यासी किये, नृप आराम मुकाम ॥२१॥

अर्थ. ज्यारे संध्याकाळ थयो, त्यारे ते ठेकाणे आव्या, अने ते साते सन्यासियोए राजाना बागमां मुकाम कर्यो.॥२१॥

॥ भ्रांतापन्हुति अलंकार ॥कवित ॥

सागर कहत प्रियमित्र पेखो पूर प्रति, जगमगे चंद्र-बिंब जेसो रूप जीनकों ॥ झरुखातें झांखतीहे इत प्रान-प्रिया मेरी, तातें तिहि दिशा प्राति दीसे मुख तीनको॥रुदन कियेसें नेन कज्जर बहायो तातें,दिसे यह श्याम दाग आननमें इनको ॥ एसें सुनि उत्तर यों भाखत भारतीनंद, वह बिधुबिंब, नांहि बदन प्रबीनको ॥ २२॥

अर्थ. सागरे कह्युं के हे मित्रो? शहेर तरफ जुओ, के जेनुं रूप चंद्रमंडळ जेवुं झगमगेछे. ते मारी प्राणप्रिया झरुखामांथी आ तरफ जुएछे. तेथी ते दिशा तरफ आ तेनुं मुख देखायछे. रुदन करवाथी आंखनुं काजळ रेलायुं तेथी तेनो आ काळो डाग तेना मुखमां देखाय छे. एवुं सांभळीने भारतिनंदे एवो जवाब दीधो के एतो चंद्रमंडळ छे, प्रवीणनुं मुख नथी.॥२२॥

॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

मिली मींत सातोहि चर्चा चलाई, रही बागमें रेन सारी

चित्लई॥प्रभाते पुनी मालिनीकुं बुलाई, कुसूमं प्रती ताहि वेगे पठाई ॥वहां मालिनी जाय संदेश दीनो, कुसूमं सुनी ऊर आनंद लीनो ॥ प्रबीनं प्रती ब्रह्मनी बात खोली, तबे सो कुसूमं प्रती यौंहि बोली ॥ कहो बंदना बागमें जाय मेरी, दशा मेरि ताकुं कहेनां सबेरी ॥ अबे पानिमें लेखिनी नां ग्रहाती, प्रियंमित्र प्रत्ये लिखों कैसें पाती ॥ पुनी हंसको चित्र ब्रह्मीकुं दीनो, निधीकुं सु देह मु[illegible] कीनो ॥ निधीको मिली मूख संदेश ल्याओ, वहां जायके अत्रही सद्य आओ॥ चढी चक्रिपें सो कुसूमं सिधाई, निधी पास उद्यानसें आप आई ॥ २३ ॥

अर्थ. ए रीते साते मित्रोये मळीने चर्चा चलावी. अने ते बागमां रहीने आखी रात वीताडी. पछी सवारमां मालणने बोलावीने तेने कुसुमावळी पासे तरत मोकली, त्यारे मालणे त्यां जइने संदेशो दीधो. ते सांभळीने कुसुमावळी मनमां आनंद पामी, अने ते ब्राह्मणिये प्रवीणनी पासे ते वांत जाहेर करी, त्यारे प्रवीण कुसुमावळी प्रत्ये एम बोली के तमे बागमां जइने मारी वंदना कहो, अने हे सखी? मारी बधी दशा तेमने कहेवी, अने हवे माराथी हाथमां लेखण झलाती नथी, माटे प्रियमित्र प्रत्ये शी रीते पत्र लखुं? एम कहीने वळी एक हंसनुं चित्र हतुं, ते ब्राह्मणीने आप्युं. अने मोढेथी एम कह्युं के आ सागरने आपजो. अने सागरने मळीने तेना मोढानो संदेशो लावजो अने त्यां जइने पाछां अहीं तरत आवजो. पछी ते कुसुमावळी रथमां बेशीने गई. अने पोते बागमां सागरनी पासे आवी.॥२३॥

॥ दोहा ॥

कुसुमें आशीषा कही, तब निधि किये प्रनाम ॥
कुसुमें बूझी कुशलता, सागरकुं तिहि ठाम ॥ २४ ॥

अर्थ. कुसुमावळीए तेमने आशिर्वाद कह्या, त्यारे सागरे तेने प्रणाम कर्यो, त्यारे ते ठेकाणे कुसुमावळीए सागरने कुशळता पूछी.॥२४॥

कहि निधिये निज कुशलता, बूझि प्रविनकी गाथ ॥
चित्र हंसको तब उने, दियो निधीके हाथ ॥ २५ ॥

पछी सागरे पोतानी कुशळता कहीने प्रवीणनी वात पूछी त्यारे तेणे हंसनुं चित्र सागरना हाथमां आप्युं. मतलबके तेनो हंस एटले जीव तमारी पासेछे.॥२५॥

कही दशा पुनि प्रविनकी, निधि सुनि भये उदास ॥
हंस उपरि धरि मदनफल, दियो कुसुम कर तास॥२६॥

अर्थ. वळी तेणे प्रवीणनी दशा कही, ते सांभळीने सागर उदासी थया, अने हंस उपर मींढळ मुकीने ते कुसुमावळीना हाथमां (पाछो) आप्यो.॥२६॥

कह्यो पुनी हम जायगे, नेनतरंग शिव थान ॥
शिवरात्री पर सो स्थले, आवै कहहु सुजान ॥२७॥

अर्थ. वळी कह्युं के अमे नेनतरंग पासे शिवनुं आलयछे, त्यां जइशुं माटे प्रवीणने कहेजो के शिवरात्रि उपर ते ठेकाणे आवे.॥२७॥

ब्रह्मी आयस मांगिकें, गई प्रबीन हजूर ॥
दियो हंस पुनि मदनफल, सुजान समजी उर ॥२८॥

अर्थ. पछी कुसुमावळी रजा मागीने प्रवीणनी पासे गई, अने हंस तथा मींढळ प्रवीणना हाथमां आप्यां, तेथी (तेनो मर्म) प्रवीण पोताना मनमां समजी, के हवे आपणां लगन थवानी वार नथी. माटे धीरज

राखवी.॥२८॥

कुसुमें पुनी प्रवीनकों, कहि सागरकी बान ॥
शिवरात्री पर शिव सदन, आनां करी प्रयान ॥२९॥

अर्थ. वळी कुसुमावळिये प्रवीणने सागरनी वाणी कही के शिवरात्रि उपर प्रयाण करीने शिवने मंदिर आवजो.॥२९॥

॥ सोरठा ॥

सखिकों कहे सुजान, कुसुमावलि मोकुं कहे ॥
अब शिवरात्री आन, कितनी घरी बिलंबहे ॥३०॥

अर्थ. ते सखीने प्रवीणे कह्युं के हे कुसुमावळी? तुं मने कहेके हवे शिवरात्रि आववाने केटली घडीनी वारछे?॥३०॥

चपल चलत नहि चाल, सूरज पुनि मुज शत्रु भो ॥
बीतत जब बहू काल, तब कछु काटत गगन पथ ॥३१॥

अर्थ. आ सूरज पण मारो शत्रु थयो छे, ते उतावळी चाल चालतो नथी. अने ज्यारे घणो वखत वीते छे, त्यारे कांईक आकाशनो रस्तो कापे छे.॥३१॥

कहे कुसुम सुनि बात, सदा चले रवि सम गती ॥
दुख सुखमें देखात, जुग सम पल सम दिवस सो॥३२॥

अर्थ. त्यारे कुसुमावळिये कह्युं के वात सांभळ, सूरज तो हमेशां सरखी गतिमां चालेछे. पण आपणने दुखमां जुग जेवडो अने सुखमां पळ जेवडो दिवस देखायछे.॥३२॥

॥ गाहा ॥

निर्वी बद्रिकाश्रमतें, मनछापुरिके उदान आगमनं ॥
द्वयअशीति अभिधानं, पूर्न प्रविनसागरो लहरं ॥ ३३॥

अर्थ. बद्रिकाश्रमथी सागर मनछापूरिना बागमां आव्या, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ बाशीमी लहेर संपूर्ण थई.॥२२॥

इतिश्री प्रवीनसागर ग्रंथे रससागर बद्रिकाश्रमात् मन छापुरि आगमनं तथा नक्षत्र तारादि कथनं नाम द्विअशी तितमो लहरं ॥ ८२ ॥

इतिश्री प्रवीणसागरग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां द्विअशीतितम स्तरंगः समाप्तः ॥८२॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

सात मित्र बे सजानियो, वसशे जइ कैलास ॥
आ त्र्याशीमी लहरमां, करशे कथा प्रकाश ॥

॥ अथ सागरादि कैलासवास करन प्रसंगो यथा ॥

॥ छंद तोटक ॥

वह मींत चले मनछापुरसें, गय नेनतरंग मुदा उरसें ॥ शिवकुं धरि स्नेह प्रनाम किया, शिव पूजक आशिरबाद दिया ॥ तब सागर बूझत ताहि अहो, कुशलाइ सु नेहपुरीकि कहो ॥ सुनि पूजक यों मुखसें उचरे, जबतें तुम जोगि भई बिचरे ॥ तुम मात रु तात उदासि भये, जनुं पंखिनकी तनु पंख गये ॥ स्वजनो सब अंतर शोक धरे, बहु चंद्रकलाहि बिलाप करे ॥ दिलगीर प्रजाजन सर्व दिसै, दुःख नां बिसरे यह द्योस निसै ॥ पुनि एक उछाहकि बात भई, छितिमें तिनसें खुशि बोत छई ॥ बिचरे बहु मास भये जबही, सुत चंद्रकलां प्रसव्यो तबही ॥ उनसें सब ठोर उछाह भयो,

पुनि नाम तिहीं प्रजपाल ठयो ॥ सुनि सातहु मित मुदीत भये, इनकों तब मौक्तिक माल दये ॥ पुनि बागहि जाय मुकाम कियो, शिव मंत्रहि साधन धारि लियो ॥१॥

अर्थ. ते मित्रो मनछापुरीथी चाल्या, अने खुशी भरेला मनथी नेन-तरंग गया, स्नेह धरीने शिवने नमस्कार कर्या, त्यां शिवना पूजारिये आशिर्वाद दीधो, त्यारे सागरे तेने पूछ्युं के अहो तमे नेहनगरनी कुशळता कहो. ते सांभळीने पूजारी मोढेथी बोल्यो के ज्यारे तमे जोगी थइने गया, त्यारे जाणे के पंखीनी पांखो गई होय, तेम तमारां मा बाप उदासी थयां, अने सगां वहालां पण मनमां घणो शोक करवा लाग्यां, अने राणी चंद्रकला तो बहु विलाप करवा लागी, अने प्रजाना सर्व लोको दिलगीर देखाया, ने हजुने दिवस तेओने तमारा विजोगनुं दुःख विसरतुं नथी, वळी एक खुशीनी वात थई तेथी पृथ्वीमां घणो आनंद छवराव्यो, ते एछे के तमे गयापछी चारमहिना थया, त्यारे राणी चंद्रकलाने कुंवर अवतर्यो, तेथी सर्व ठेकाणे घणो आनंद थयो, ते कुंवरनुं नाम प्रजापाळ ठराव्युं, ते सांभळीने साते मित्रो राजी थया, त्यारे ते पूजारीने वधामणीमां मोतीनी माळा आपी, पछी बागमां जइने मुकाम कर्यो, अने शिवना पंचाक्षर मंत्रनो जप करवानो आदर कर्यो. ॥१॥

॥ अथ विनोक्ति अलंकार ॥ सवैया ॥

ध्यान प्रवीनहुको उर धारत, गान प्रवीनहुके गुन गावे ॥ कान प्रवीन विना न सुने कछु, तान प्रवीनहुसें ज्यु मिलावे ॥ खान प्रवीन विना नहि भावत, पान प्रवीन विना नहि खावे॥ स्थान प्रवीनहुको सुमिरे उर, भान प्रवीन विना भुल जावे ॥ २ ॥

अर्थ. पण मनमां प्रवीणनुं ध्यान धरता हता, अने गानमां प्रवीणना गुण गाता हता, अने काने प्रवीण विना बीजुं कांइ सांभळता नहोता, अने प्रवीणनी साथेज तान मेळवता हता, खावानुं प्रवीण विना तेओने भावतुं नथी, ने प्रवीण विना पाननी बीडी खाता नथी, हृदयमां प्रवीणनी हवेलीने संभारेछे, ने प्रवीण विना शरीरनुं भान भूली जायछे. ॥२॥

॥ कवित ॥

पूजाकारै पूतकुं पठायो नेहपुर प्रति, बधाई सुनाई जाई सागरके तातकुं॥ ताकुं सिरपाव दियो, अधिक उत्सव कियो, बांटी बोत साकर शहरजन व्रातकुं ॥ तोरन बंधाई धुजा पताका पुनि चढाई, दान दिये दुज भाट चारनादि जातकुं ॥ सेना सजी पुरजन सहित तरंगनेन, आये [illegible] मिलन सो, सागर साक्षातकुं ॥३॥

अर्थ. पछी पूजारिये पोताना पूत्रने नेहनगर मोकल्यो. तेणे त्यां जइने सागरना पिताने वधामणी संभळावी. त्यारे राजाए तेने सिरपाव आप्यो, अने घणो उत्सव कर्यो. अने शहेरना माणसोना समुदायने घणी साकर वहेंची. तोरणो बंधावीने वळी धजाओ अने पताकाओ चडावी अने ब्राह्मणोने, भाटोने, तथा चारण आदिक जातने दान दीधां. पछी सेना सजीने शहेरना लोको सहित स्नेहथी साक्षात सागरने मळवासारुं तेओ नेनतरंग आव्या. ॥३॥

॥ दोहा ॥

सागरकी माता पुनी, मंत्रिनके समुदाय ॥
सुत जुत आई शशिकला, पेखि महा मुद पाय ॥४॥

अर्थ. अने सागरनी माता तथा कारभारियोना मंडळ तथा कुंवरने

लईने चंद्रकला पण त्यां आवी,ते सर्वे सागरने जोइने घणो आनंद पाम्यां.।४।

॥ छंद भुजंग प्रयात ॥

कहे सागरकुं सबे जोरि पानी, अगे ज्यों कहीती तुमैं ऐसि बानी ॥ बिते हायनं भेख दैहों उतारी, करो सो अबे सत्य बाचा तुमारी ॥ कह्यो सागरे साधना हे अधूरी, महारात्रिमें होइहे सोइ पूरी ॥ तबे जोगिको भेख हे सो तजेंगे, सुशोभीत सिंगार अंगे सजेंगे ॥ वहांलों हमे ठेहिहे ईत ठाउं, महादेव पूजी महासिद्धि पाउं ॥ कही सागरे युं सबेकुं बुझाये, महारात्रिलौं सो सबे वां ठराये ॥ महारात्रिपें वां बहु संग आवे, तजी पापकुं सो महा पुन्य पावे ॥ प्रवीने पुनी तात प्रत्ये उचारी, वहां जात्रकों जान इच्छा हमारी ॥ तबे ताहिकुं आयसा दीनि तातें, चली संग सेना लईकें प्रभातें॥ कुसूमावलीकुं पुनी संग लीनी, बहु दास दासी नृपें संग दीनी ॥ पितापें पुनी यूंहि बोली सुजानां, लियो नेम मैं पाउसें चालि जानां ॥ धरी यौनिका, वोत मर्याद कीनी, युंही शंकर स्थानकी वाट लीनी ॥ महारात्रि आगें रह्या धोस चारी, सुजानें पहोंची जहां शूलधारी ॥ ८ ॥

अर्थ. ते सर्वे हाथ जोडीने कहेवा लाग्यां के तमे आगळ एवुं वचन कह्युं हतुं के एक वर्ष वित्या पछी जोगीनो वेष तजी दइशुं ते तमारुं वचन हवे सत्य करो, त्यारे सागरे कह्युं के हजी अमारी साधना अधुरीछे, ते शिवरात्रिमां पूरी थशे, त्यारे जोगीनो भेखछे ते तजीशुं, अने सारो शृंगार शरीरे सजीशुं, त्यांसुधी अमे आ ठेकाणे रहेशुं, अने महादेवने पूजीने मोटी सिद्धि पामशुं. एम कहीने सागरे सौने समजाव्यां, तेथी

तेओ पण सौ शिवरात्रि सुधी त्यांज रह्यां. शिवरात्रि उपर ते ठेकाणे घणा संघ आवेछे, अने ते पाप तजीने मोटुं पुण्य पामेछे, वळी प्रवीणे पण पोताना पिताने कह्युं के त्यां नेनतरंगनी जात्राये जवानी मारी इच्छा छे, त्यारे पिताये तेने जवानी रजा आपी, तेथी साथे सेना लईने सवारमां त्यांथी चाली, तेणे कुसुमावळीने पण साथे लीधी,वळी राजाए पण घणा चाकरो अने दासीओ साथे आपी, वळी सुजाण पोताना पिता पासे एम बोली के में पगे चालीने जवानो नियम लीधोछे, त्यारे राजाए कनात तणावीने घणी अदब करी, ए रीते शिवना स्थाननो रस्तो लीधो, अने ज्यारे शिवरात्रि आडा चार दिवस रह्या त्यारे ज्यां ते शिवनुं स्थान छे त्यां प्रवीण पहोंची.॥५॥

॥ दोहा ॥

शिबिर तनाइ मुकाम किय, शिव मंदिरतें दूर ॥
शिवरात्री आगमनकी, अति उत्कंठा ऊर ॥६॥

अर्थ. शिवना मंदिरथी वेगळे तंबु तणावीने मुकाम कर्यो, अने शिवरात्रि आववानी तेना हृदयमां घणी उत्कंठा लागी.॥६॥

॥ अथ उपमालंकार ॥ कवित ॥

दुलहनी दुलह ज्यों दिलमें मुदित दीसै, ज्यों ज्यों खास खासतहि बासर बिबाहको ॥ यों कलाप्रबीन रससागर रुदय रीझै, क्या कहुं कथन इन उरके उत्साहको ॥ नर जानें कबे कर ग्रहों मेरी नारीहुको, नारी जाने कबे कर ग्राहों मेरे नाहको ॥ अंबकसें, त्र्यंबकको निलय निहारे दोउ, धारे दोउ ध्यान मित्र मिलनके राहको ॥७॥

अर्थ. जेम वरकन्याना मनमां विवाहनो दिवस ढुंकडो आवतो जाय,

तेम तेम वधारे आनंद देखाय, तेवी रीते कळाप्रवीण ने रससागर मनमां राजी थायछे, तेओना मनना उत्साहनां शां वचन कहुं ? ते नर जाणेछे के हुं मारी प्यारी स्त्रिनो क्यारे हाथ झालुं? अने ते नारी "प्रवीण" जाणे छे के हुं मारा स्वामीनो क्यारे हाथ झालुं? ते बन्नेजणां नेत्रथी शिवना मंदिरने जुएछे, अने मित्रने मळवाना रस्तानुं ध्यान बन्नेजणां धरेछे.॥७॥

॥ छंद उधोर ॥

आयो शिवनिशाको घोस, छायो संघ छिति बहु कोस ॥
गायो जन मिली शिवगान, आयो सुनत सबके कान ॥
सोहे शंभुको संस्थान, मोहे देखि सुर तजि मान ॥
जोहे ओहि थल आभास, कोहे इंद्रपुरि इन पास ॥
आये अमरके तित बृंद, गाये मुनि मिलीके छंद ॥
धाये अप्सरा तजि धीर, पाये निरखि शं[illegible]र ॥
बाजे विविध वां वाजित्र, गाजे ज्यों पयोद प[illegible] ॥
साजे प्रौढ पूजन विप्र, त्याजे त्रिविध तापहि क्षिप्र ॥
आये सिद्ध वां प्रन्ननाथ, ल्याये बोत सिद्धहि साथ ॥
भाये सात मितकुं सोय, नाये मस्तकहि पद दोय ॥ ८ ॥

अर्थ. ज्यारे शिवरात्रिनो दिवस आव्यो, त्यारे त्यां पृथ्वीमां चारगाउमां संघ आवीने छवरायो, अने माणसोये मळीने शिवना गुणनुं गान कर्युं ते सांभळतां सौना कानमें गम्युं.

ते शिवनुं मंदिर एवुं शोभेछे के ते जोइने देवो पण अभिमान तजीने मोह पामे, ते ठेकाणानो देखाव जे छे, तेनी आगळ इंद्रपुरी शा लेखामां छे? त्यां देवताओना समुदाय आव्या, अने मुनियोए मळीने वेदनुं गान कर्युं, अप्सराओ धीरज तजीने दोडी आवी, अने ते उत्सव जोइने शरीरमां

शांति पामी. जेम पवित्र वर्षाद गाजतो होय, तेम त्यां नानाप्रकारनां वाजित्र वाजेछे तेनी गर्जना थायछे, ब्राह्मणो महापूजा करेछे, अने अध्यात्म,अधिभूत,अने अधिदैव,एवा त्रण प्रकारना तापने तरत तजेछे, त्यां प्रभानाथसिद्ध आव्या; तेओ घणाक सिद्धोने पोतानी साथे लाव्या, ते साते मित्रोने गम्या, तेथी तेओना बन्ने चरणमां साते मित्रोये मस्तक नमाव्यां.॥८॥

॥ दोहा ॥

नृत्य करत सुरनारिका, गान करत गांधर्व ॥
यह उत्सव अवलोकिकें, सुमुदित भय जन सर्व ॥९॥

अर्थ. त्यां देवांगनाओ नृत्य करवा लागी; अने गांधर्वो गान करवा लाग्या; ते उत्सव जोइने सर्वेजनो आनंद पाम्या.॥९॥

जुगम [illegible] गत जामिनी, पेखत जन प्रत्येक ॥
कांचन मय कैलासतें, आय बिमान अनेक ॥१०॥

अर्थ. ज्यारे बे पहोर रात्रि गइ, त्यारे दरेक माणसना देखतां कैलासमांथी सोनानां अनेक विमानो आव्यां.॥१०॥

गन अगनित गंगेशके, पुनि अप्सरा अपार ॥
शिव प्रेरित शिव सदनपें, कियो आइ जयकार ॥११॥

अर्थ. शिवना अनेक गण अने अपार अप्सराओ शिवजीना मोकलवाथी ते शिव मंदिर पासे आवीने तेओये जयजयकार कर्यो. ॥११॥

अदभुत अचरिज देखिकें, भूले सब जन ज्ञान ॥
तब आई शिव सदनमें, कुसुमावलि रु सुजान ॥१२॥

अर्थ. मोटुं आश्चर्य जोइने बधां माणसो तो पोताना शरीरनुं भान भूली गयां, त्यारे कुसुमावळी अने प्रवीण ते शिवना मंदिरमां आव्यां.॥१२॥

॥ अथ उपमालंकार ॥ कवित ॥

मकरीकी जाल तोरी डारे ज्युं महा मरुत, तिमिंगल तोरी डारे ज्यों गति जहाजकी ॥ गिरिवर तोरी डारे गंगको प्रवाह जेसें, तंतुबंध तोरी डारे, त्रिया गजराजकी ॥ सुघरीको घर सो तो तोरी डारे सिंहनी ज्यों, त्यों प्रबीने तोरी डारी लीक लोकलाजकी॥जवनिका बीना अवनिका उल्लंघन करी, संचरी समीप साती मित्रके समाजकी ॥ १३ ॥

अर्थ. जेम मोटो पवन करोळियानी जाळ तोडी नाखे, अने जेम मोटो मगरमच्छ, नावनी गतिने तोडी नाखे, अने गंगानो प्रवाह जेम पर्वतने तोडी नाखे, अने हाथिणी जेम तांतणाना बंधने तोडी नाखे, जेम सिंहण सुघरीना घरने तोडी नाखे, तेम प्रवीणे लोकलज्जानी लीटीने तोडी नाखी, अने कनात विना पृथ्वी उलंघन करीने साते मित्रना मंडलनी पासे गई.॥१३॥

॥ दोहा ॥

सात मिंत दो सखिनके, तनमें प्रगटी ज्योति ॥
कोटि सूर्य शशि सम सिरी, जगमग जगमग होति॥१४

अर्थ. ते समे साते मित्रोना अने कुसुमावळी तथा प्रवीण एबे सखियोना शरीरमां तेज प्रगट्युं,ते करोडो सूर्यने चंद्रना जेवुं पण शांत झगमगवा लाग्युं. ॥१४॥

पारसमनि सम शिव कृपा, जन तन लोह समान ॥
सो मिटि देवस्वरूप भय, कांचन करन प्रमान ॥ १५॥

अर्थ. पारसमणी जेवी शिवजीनी कृपा, अने ते नव माणसोनां शरीर लोढा जेवा हतां,ते मटीने जेम लोढानुं सोनुं थाय, तेम देवस्वरूप थयां.॥१५॥

दिव्य वसन भूषन दिसे, चिंतामनि हिय हार ॥

ईंद्र उतारत आरती, कहि मुख जयजयकार ॥ १६ ॥

अर्थ. तेओना लूगडां अने घरेणां देवना जेवां देखावा लाग्यां, अने हैया उपर चिंतामणियोना हार देखावा लाग्या, अने ईंद्र महाराज मोहे जेजेकार कहीने तेओनी आरती उतारवा लाग्या. ॥१६॥

॥ सवैया ॥

लोक समस्त बिलोकतही, निधि हस्तसें हस्त मिलापन कीनो ॥ जाकर शंकर मंदिर अंदर, शीश नमाइ महा मुद लीनो ॥ दान दिये दुजकों बहु द्रव्य, दुजे तब आशिरवाद सु दीनो ॥ सागर ओर प्रबीनहुको तब, भो मन प्रेमप्रभा रस भीनो ॥ १७ ॥

अर्थ. वधालोको देखतां प्रवीणे सागरना हाथ साथे पोताना हाथनो मेळाप कर्यो, तेओए शिवना मंदिरमां जइने मस्तक नमावीने मोटो आनंद लीधो, वळी ब्राह्मणोने घणा द्रव्यनुं दान कर्युं, त्यारे ब्राह्मणोये आशिर्वाद दीधो, त्यारे सागरनुं अने प्रवीणनुं मन प्रेमनी कांतिना रसथी भिजाएलुं अर्थात् रसबस थयुं. ॥१७॥

॥ दोहा ॥

षट मित्र रु कुसुमावली, शंकर सन्मुख आय ॥
नेह धरीकें शीश निज, बिनय सहीत नमाय ॥१८॥

अर्थ. छ मित्रो अने कुसुमावळिये शंकर पासे आवीने स्नेह धरीने विनय सहित पोतानां मस्तक नमाव्यां. ॥१८॥

सागरके पितु मातकुं, नव जन कियेप्रनाम ॥
तब तिनकों आशीष दिय, पितु माते तिहि ठाम ॥१९॥

अर्थ. पछी सागरनां मा बापने ते नवजणाये नमस्कार कर्या, त्यारे ते

ठेकाणे सागरनां माबापे आशिर्वाद दीधो. ॥१९॥

उत्तम एक विमानमें, सागर कलाप्रवीन ॥
बैठे ताहि बिलोकिकें, भय जन अचरिज भीन ॥२०॥

अर्थ. पछी एक उत्तम विमानमां सागर अने कळाप्रवीण बेठां, तेओने जोइने सर्वे माणसो अचरजमां निमग्न थइ गयां. ॥२०॥

॥ हरिगीत छंद ॥

तब सागरे पितु मातकुं बदने युंही बानी कही ॥
हम देवहे कैलासके, सुनु कोउ जनके सुत नहीं ॥
दिलमें नहीं दिलगीर होनां, जात हम कैलासमें ॥
तुम जाइ सुखसें राज करहू, रहहु निज आवासमें ॥
पुनि शशिकलाकों यों कह्यो, तुम रहहु मन धीरज धरी॥
सुत प्रजापालकुं पालनां, सु प्रयत्न परिपूरन करी ॥
वह पूत्र होहि पराक्रमी, पूरन सु किर्ती पाइहे ॥
पालन प्रजाको करहि पुनि, सब शत्रु शीश नमाइहे ॥
सब जन प्रती सागर कहे, हर भक्ति करिहो भावसें ॥
भवसिंधु तरि भवभुवन पैहो, ज्यौं तरे निधि नावसें॥२१॥

अर्थ. त्यारे सागरे पोताना मा बापने पोताना मुखथी एवी वाणी कही के सांभळो अमे कैलासना देव छिये, कोइ माणसना पुत्र नथी, अने अमे कैलासमां जइये छिये, माटे मनमां कांइ दिलगीर थशो नहीं, हवे तमे जइने सुखथी पोताना दरबारमां रहो,ने राज करो, वळी चंद्रकळाने कह्युं के तमे मनमां धीरज धरीने रहेजो, अने आ प्रजापाळ कुंवरने पूरुं जतन करीने पाळजो, ते कुंवर पराक्रमी थशे, अने संपूर्ण कीर्ति पामशे, ते प्रजानुं पाळन करशे, अने बधा शत्रुओनां माथांने नमावशे, वळी सर्वे

माणसोने सागरे कह्युं के जो तमे भावथी शिवनी भक्ति करशो तो जेम नाववडे समुद्र तरे तेम आ संसार सागर तरीने शिवना धामने एटले कैलासने पामशो. ॥२१॥

॥ दोहा ॥

कहे सुजान अमात्यकों, देखत दृग तुम जेह ॥
मनछापुरिमें जाइकें, सबकुं कहनां तेह ॥२२॥

अर्थ. पछी प्रवीणे कारभारीने कह्युं के तमे तमारी नजरे जे आ देखाव देखोछो, ते मनछापुरीमां जइने सौने वात कहेजो.॥२२॥

भक्ति करहि भवदेवकी, सो पावहि शिव धाम ॥
यौं मुज जननी जनककुं, कहनां करी प्रनाम ॥२३॥

अर्थ. अने मारां मावापने मारीवती नमस्कार करीने कहेजो के जेओ शंकरदेवनी भक्ति करशे ते शिवना धामने पामशे. ॥२३॥

बानी सुनी सुजानकी, कछु न कहतहे कोय ॥
अद्भुत अचरज देखिकें, स्तब्ध भये सब सोय ॥२४॥

अर्थ. एवी प्रवीणनी वाणी सांभळीने कोइ कांइ बोली शक्या नहीं, केमके मोटुं आश्चर्य जोइने ते सौ दिग्मूढ थइ गया हता. ॥२४॥

षट मित्रहु कुसुमावली, पाई मोद अपार ॥
भिन्नहि भिन्न बिमानमें, बैठी किये बिहार ॥२५॥

अर्थ. पछी छ मित्रो अने कुसुमावळी घणो आनंद पामीने जूदां जूदां विमानमां बेसीने गति करी. ॥२५॥

॥ झूलना छंद ॥

व्योम पथ सबहि बीमान सो बीचरे, दुंदुभी देवकी बोत बाजी ॥ पुष्पकी वृष्टि वृंदारका करतहे, पुनि रह्यो गगन

जयकार गाजी ॥ कामिनी कंत कैलासमें जाइकें, बंदना शिव शिवाकुंहि कीनी ॥ हाथ धरि माथ तब नाथ उमयाहिके, ओर उमयाहि आशीष दीनी ॥ पुनि कह्यो अब बसी बास कैलासमें, तुम चिरंकाल सुख पूर्न पैहो॥ भोगवो भोग मन भावते भांति विधी, लक्षधा ललित इत लाभ लैहो ॥ अ-चल तुम नाम पुनि रहहि अचला विषे, कीर्ति सब देशके लोक कहही ॥ चरित तुम ग्रंथमें बोत चरचायगो, चतुरजन चित्तमें धरन चहही ॥ जाहिको ज्योंलु हे नाम सो जगतमें, त्योंलु हे अमर यह, यौंहि मानो ॥ नाम भो नाश तब ना-श ताको भयो; जीयमें जरुर यों आप जानो॥नाम रखनेकुं जन जायकें जुद्धमें, पाव न धरे पिछा प्रान त्यागे ॥ नाम रखनेकुं बहु द्रव्यको दान दे, ललित सुरमंदिरों करन लागे ॥ २६ ॥

अर्थ. पछी ते बधां विमानो आकाशने रस्ते चाल्यां, त्यारे देवताओनां घणां दुंदभी वाग्यां, अने देवताओ फूलनी वृष्टि करवा लाग्या, अने आ-काशमां जयजयकार गाजी रह्यो, ते स्त्रि पुरुषे कैलासमां जैने शिवजीने ने पार्वतीने नमस्कार कर्या. त्यारे शिवजिये अने पार्वतिये तेओने माथे हाथ मुकीने आशिर्वाद दीधो, अने वळी कह्युं के हवे तमे कैलासमां वास वसीने घणा काळ सुधी मनगमता भोग भलीरीते भोगवो, अने लाखरीते आंही सारो लावो लेशो, वळी प्रथ्वीमां तमारुं नाम अचळ रहेशे, अने सर्व देशना लोको तमारी किर्ती कहेशे, अने तमारुं चरित्र ग्रंथमां घणुं चर्चाशे, ते चतुर माणसो चित्तमां धारवाने चहाशे, ते जगतमां ज्यां सुधी जेनुं नामछे, त्यां सुधी ते अमर छे एम मानो, जेनुं नाम नाश थयुं त्यारे तेनो

नाश थयो, एम तमे तमारा जीवमां जरूर जाणो, वास्ते नाम राखवा सारु माणस जुद्धमां जइने पण पाछा धरता नथी, अने प्राण तजेछे, वळी नाम राखवा सारु घणा धननुं दान आपेछे, अने सुंदर देवालयो करावा लागेछे. ॥२६॥

॥ दोहा ॥

शुभ कवितासें रहतहे, बहु दिन निश्चल नाम ॥
अनेक रूपे होइकें, प्रसरत ठामहि ठाम ॥ २७ ॥

अर्थ. घणा दिवस सुधी अचळ नाम तो सारी कविताथी रहेछे, केम के ते अनेक प्रत्योरूपे थइने ठेकाणे ठेकाणे फेलायछे. ॥२७॥

तुम चरित्रके ग्रंथसो, बांचहि सब संसार ॥
तिन सद्गुन जो संग्रहें, होहि पतिव्रत नार ॥ २८ ॥

अर्थ. तमारा चरित्रनो ग्रंथ ते बधो संसार वांचशे, अने तेमांथी सद्गुणनो संग्रह करशे ते स्त्री पतिवृता थशे. ॥२८॥

पति प्रियाकों प्रेमको, पूरन होहि प्रकाश ॥
भव भक्ती करि भावसें, पावहि पद कैलास ॥ २९ ॥

अर्थ. अने धणी धणीआणीना प्रेमनो पूर्ण प्रकाश थइने अने भावथी शिवनी भक्ति करीने कैलासधाम पामशे. ॥२९॥

यों वर दीनो भव भवा, दंपति किये प्रनाम ॥
सदा अचल सुख भोगवें, धरी अचल निज धाम ॥ ३० ॥

अर्थ. एरीते शिवजिये ने पार्वतिये वरदान आप्युं, त्यारे ते स्त्रीपुरुषे नमस्कार कर्यो, अने त्यां पोतानुं अचळ धाम करीने निरंतर अचळ सुख भोगव्युं. ॥३०॥

पुनि भव यह प्रभनाथकुं, पुनि पुनि किये प्रनाम ॥

शिव शिवाकुं वंदन करी, सिध सुर गये स्वधाम ॥ ३१ ॥

अर्थ. वळी ते नवजणांये प्रभानाथ सिद्धने फरी फरीने नमस्कार कर्या, पछी वधा सिद्धो तथा देवो शिवने ने पार्वतीने नमीने पोतपोताने स्थानके गया. ३१

कुसुमावलि पुनि मित्र खट, शिव शक्तीके पाय ॥
वंदन करि निज बास प्रति, जाकर तित ठहराय ॥३२॥

अर्थ. पछी कुसुमावळी अने छ मित्रोये शिवशक्तिना चरणने नमस्कार करीने पोतपोताने स्थानके जैने निवास कर्यो. ॥३२॥

सुजानसें सागरहुसें, सदा रखत अति स्नेह ॥
बिबिध बिनोद करे पुनी, एक प्रान भिन्न देह ॥ ३३ ॥

अर्थ. तेओ प्रवीण साथे अने सागर साथे निरंतर घणो स्नेह राखेछे, अने वळी तेओ मळीने तरेह तरेहना विनोद करेछे, तेओनो जीव एक, ने शरीर जूदां छे. ॥३३॥

॥ चोपाई ॥

शिवरात्री गत भयो प्रभाता, तब सागरके पितु अरु माता॥ स्थापित शिवकुं शीश नमाई, जाइ रहे निज पुरमें आई ॥ सब जन निज निज सदन सिधाये, मनछापुरि जन निज पुर आये ॥ सो नृपकुं सब बात सुनाई, कछु मुद पाये अचिरज पाई ॥ पुनि कछु दिलगिरि दिल देखाई, पवित्र पुत्री फिरि नहि आई ॥ रससागर पुनि कलाप्रवीना, यह जगमें अविचल जस कीना ॥ तिनके जसको ग्रंथ रचायो, प्रवीनसागर सोई कहायो ॥ धन्य प्रदीप नरेश कहायो, सागर जिनको सुपुत सुहायो ॥ धन्यहि नीतीपाल नरेशा, सुजान जिनकी सुता सुवेशा ॥ यों मुख बदत लोक सब बानी,

या जगमें रहि अचल कहानी ॥ ३४ ॥

अर्थ. ते शिवरात्रि गइ ने ज्यारे प्रभात थयुं, त्यारे सागरनां स्थाप, स्थापेला शिवने मस्तक नमावीने जइने पोताना शहेरमां आवीने रह्यां, अने सर्वे माणसो पोतपोताने घेर गयां, अने मनछापूरीनां माणसो पोताना शहेर मनछापूरीमां आव्यां. अने ते नीतिपाळ राजाने बधी वात संभळावी, त्यारे राजा आश्चर्य पामीने कांइक आनंद पाम्या, पण पवित्र कुंवरी पाछी घेर आवी नहीं, तेथी कांइक दिलगीरी मनमां जणाई. ते रससागर ने कळाप्रवीणे तो आ जगतमां अविचळ जश लीधो, तेना जशनो जे ग्रंथ रचायो,ते प्रवीणसागर नामे कहेवायो, अने प्रदीपराजा धन्य कहेवायो, के जेनो सुपुत्र सागर थयो,तेमज जेनी कुंवरी सारा रूपवाळी सुजाण थई, तेथी ते नीतिपाळराजा पण धन्य छे,एरीते बधा लोको मोढेथी वचन कहे छे, अने तेओनी कथा आ जगतमां अचळ रही. ॥३४॥

॥ गाहा ॥

सात मींत दो सजनी, कैलासं प्रति गये बिमान चढी॥
त्रय अशीति अभिधानं, पूर्न प्रबिनसागरो लहरं ॥३५ ॥

अर्थ. सातेमित्रो, अने बे बेनपणियो,विमानमां चढीने कैलासमां गयां, ते संबंधी प्रवीणसागर ग्रंथनी आ त्राशीमी लहेर संपूर्ण थई. ॥३५॥

इतिश्री प्रबीनसागर ग्रंथे कलाप्रबीन रससागर षट मित्र तथा कुसुमावली कैलास गमनं नाम त्रिअशीतितमो लहरं ॥ ८३ ॥

इतिश्री प्रवीणसागर ग्रंथार्थ प्रयोजने गूर्जरी टीकायां त्रिअशीतितम स्तरंगःसमाप्तः॥८३॥

॥ अथ टीकाकारोक्त तरंग शिखाबंध ॥ दोहा ॥

कहीं प्रयोजन ग्रंथनुं, श्रुतिफळ कहेशे जेह ॥
चोराशीमी लहरमां, कथा कहेशे तेह ॥

॥ अथ ग्रंथ प्रयोजन तथा श्रृतिफल कथन प्रसंगो यथा ॥

॥ दोहा ॥

मनछापुरि मन कल्पना, सुबुद्धि सोई प्रबीन ॥
स्वात्मा सागर मानिकें, निरम्यो ग्रंथ नबीन ॥१॥

अर्थ. मननी कल्पना तेज मनछापुरी, अने सारी बुद्धि तेज प्रवीण, अने पोताना आत्माने सागर मानीने आ नविन ग्रंथ रच्योछे.॥१॥

सति पतिसें सतिसें पती, सब बिधि सजे सनेह ॥
उभय लोक सुख अनुभवे, ग्रंथ प्रयोजन एह ॥२॥

अर्थ. जे सति नारी पतिनी साथे स्नेह करे, अने पति सतिनी साथे सर्व प्रकारे स्नेह करे, तो तेओ आ लोकनुं अने परलोकनुं सुख पामे. आ ग्रंथ रचवानुं एज प्रयोजन छे.॥२॥

पर नरसें पर नारिसें, कबहु न जोरे प्रीत ॥
सत्य तजे नहिं संकटे, यह सज्जनकी रीत ॥३॥

अर्थ. सारा माणसनी रीत एवीछे के पारका पुरुष साथे अने परस्त्री साथे कदी प्रीत जोडे नहीं, अने संकटमां पण सत्य धर्म तजे नहीं.॥३॥

दंपति बिछुरे दैव वश, वर्ष बहुत वहि जाय ॥
तो पुनि तजे न सत्यव्रत, ओर न चित्त चहाय ॥४॥

अर्थ. दैवयोगथी धणीधाणिआणीने विजोग थाय. अने ए रीते घणां वर्ष वह्यां जाय.तो पण पोतानुं सत्य व्रत एके जण तजे नहीं, अने बीजाने मनमां चहाय नहीं.॥४॥

॥ सवैया ॥

खान रु पान बिधान निधान, निमग्न सदा सुखकी तरनीमें॥
जोबन जोर भयो तउ कंत, मिल्यो नहि चूक परी करनीमें॥
रुपके राशि प्रकाशित देह, नहीं तिय ता समि निर्जरनीमें॥
तौ पुनि धीरज धर्म तजी नहि, धन्य प्रबीन सती धरनीमें५

अर्थ. प्रवीणने खावापीवाना प्रकार, अने धननो भंडार हतो. अने सुखनी नदीमां हमेशां गरकाब हती. तेने जुवानीनुं जोर थयुं, तो पण पूर्व भवनी करणीमां चूक पडवाथी स्वामी मळ्यो नहीं, रूपना समुदाय जेवुं तेनुं शरीर प्रकाशित हतुं, अने देवियोमां पण तेना जेवी (रूपाळी) स्त्री नहोती, तो पण धीरज अने धर्म तजी नहीं, माटे आ पृथ्वीमां प्रवीण सतिने धन्यछे.॥५॥

॥ दोहा ॥

चरित सु सती प्रबीनको, विमल विशाल विचित्र ॥
पढहि सुनहि जन प्रेमसें, होवहि परम पवित्र ॥६॥

अर्थ प्रविणसतिनुं चारित्र निर्मळ मोटुं अने विचित्र छे. ते जे माणस प्रेमथी भणशे के सांभळशे ते परम पवित्र थशे.॥६॥

पति रससागर नाम धरि, पतनी नाम प्रबीन ॥
कवित लिखे यह परसपर, निपजे प्रेम नवीन ॥७॥

अर्थ. कोई धणीधणियाणी पतिनुं नाम रससागर, अने स्त्रीनुं नाम प्रवीण ठरावीने आ ग्रंथना कवित परस्पर लखी मोकलशे, तो तेओने नवी नवी प्रीति उपजशे.॥७॥

विद्या यह वशि करनकी, मन आकर्षन मंत्र ॥
प्रयोग शुचि मनसें करे, तो फलही यह तंत्र ॥८॥

अर्थ. आ वश करवानी विद्याछे, अने मनने खेंचवाना मंत्रछे. तेनो प्रयोग जो पवित्र मनथी करशे तो तेने आ तंत्र फळिभूत थशे.॥८॥

दरशायो हे मित्रको, परम धर्म प्रख्यात ॥
सुख दुखमें संमिल रहे, धन्य मित्र वह सात ॥९॥

अर्थ. वळी आमां मित्रनो उत्तम प्रसिद्ध धर्म देखाड्योछे. अने सागर सहित साते मित्रो सुखमां अने दुःखमां साथे मळीने रह्या, माटे तेओने धन्य छे.॥९॥

मित्र परस्पर जो लिखे, यह ग्रंथके कवित्त ॥
बढे परस्पर मित्रता, चौगुनि दिन दिन चित्त ॥१०॥

अर्थ. जो कोई मित्रो आ ग्रंथनां कवित एक बीजाने लखी मोकले तो तेओना मनमां दिवसे दिवसे परस्पर चारगणी मित्रता वधे.॥१०॥

निज मन वृत्ति प्रवीन गनि, रससागर रुषिकेश ॥
भक्त भजे यह कवितसें, हिय निज ईष्ट हमेश ॥११॥

अर्थ. वळी भक्त जनो पोताना मननी वृत्तिने प्रवीण गणीने अने परमेश्वरने रससागर गणीने आ ग्रंथना कवितथी हमेशां हैयामां पोताना इष्ट देवने भजशे.॥११॥

रस नारायन रूपहे, वेद करत उपदेश ॥
जाने सोइ प्रवीन हे, रससागर रुषिकेश ॥१२॥

अर्थ. वेद एवो उपदेश करेछे के रसछे ते नारायण रूपछे, ते वात ने जाणे ते प्रवीणछे. अने परमेश्वर रससागरछे.॥१२॥

किस्सा लेली मजनुंका, वार्ता ओर अनेक ॥
वांची उर इच्छा भई, रचन ग्रंथ अस एक ॥१३॥

अर्थ. लेली मजनुंनो किस्सो, तथा बीजी अनेक वार्ताओ वांचीने एवो

एक ग्रंथ रचवाने अमारा मनमां उत्साह थयो.॥१३॥

मित्र सात मिलिकें रच्यो, प्रवीनसागर ग्रंथ ॥
तिनमें दरसायो भलो, प्रेम नेमको पंथ ॥१४॥

अर्थ. तेथी अमे साते मित्रोये मळीने आ प्रवीणसागर ग्रंथ रच्यो, तेमां सारो प्रेमना नियमनो रस्तो देखाड्यो.॥१४॥

ज्यों सागरमें मिलत हे, सरिता आइ अपार ॥
सार त्योंहि बहु ग्रंथको, हे यह ग्रंथ मझार ॥१५॥

अर्थ. जेम समुद्रमां अनेक नदियो आवीने मळेछे. तेमज घणा ग्रंथोनो सार आ ग्रंथमांछे.॥१५॥

॥ कवित ॥

जोग सिद्धि एहि ग्रंथ, पंथ पावे जोगीजन, जोगीजन याते पुनि जोगसिद्धि पावही ॥ चतुराइ चाही चित्त, लाइ हे चतुर जन, उदासीके अंतरमें आनंद बढावही ॥ रस अलंकार ओर छंद हे अनेक जाति, कविजन काव्यकला चाहि चित्त लावही ॥ राजसभा रंजन करही जन अछी रीते, जो प्रबीनसागरके रत्नसें सुहावही ॥१६॥

अर्थ. भोगी जनो आ ग्रंथने रस्ते भोगनी सिद्धि पामशे, अने वळी आ ग्रंथथी जोगी जनो जोगनी सिद्धि पामशे. अने चतुर माणस चतुराई जाणवानी चाहनाथी आ ग्रंथ मनमां लावशे. अने उदासी माणसना अंतरमां आनंद वधारशे. वळी आमां रस अलंकार अने छंदनी अनेक जातो छे. तेथी कविजनो काव्यकळाने चाहीने चित्तमां लावशे. अने जो कोई माणस प्रवीणसागरनां कवितरुपी रत्नथी सुशोभित थशे, अर्थात् शीखशे तो ते सारी रीते राजसभाने रंजन करशे.॥१६॥

॥ दोहा ॥

कवित सवैया एक पुनि, कंठ धरहि जन कोइ ॥
सभाविषे शोभित बनी, जन मन हरनहि होइ ॥१७॥

अर्थ. जो आमानुं एक कवित के सवैयो कोइ माणस कंठे धारण करशे, तो ते सभामां शोभित बनीने माणसोना मनने हरनारो थशे.॥१७॥

जिय चौरासी लक्ष हे, तिनके प्रेम अनेक ॥
लहरी चौरासी रची, तत्व लक्ष प्रत्येक ॥१८॥

अर्थ. चोराशी लाख जातिना प्राणियो छे. तेओना अनेक प्रकारना प्रेमछे. ते दरएक लाखनो सार लईने आ चोराशी लहेरो रचीछे.॥१८॥

॥ कवित ॥

रस अलंकार छंद जातिरूपी जलजिय, जाहीमें मिलेहे, जाकी गति अति गहरी ॥ मूरखके मनकी मजादमें न रहे यह, बुद्धिमान मनकी मजादे रहे ठहरी ॥ विवेकी विभाकरके करमें अमृत व्हैहे, अविवेकी अहि मुख जाइ व्हैहे जहरी ॥ नागर नहीं सो जन मर्मवाको जाने नांहीं, नागर जाने प्रवीनसागरकी लहरी ॥ १९ ॥

अर्थ. आ जन रूपे ... सागरमां रस अलंकार अने छंदनी जातिरूपी जळचर जे ...ना मळेला छे, अने जे सागरनी गति अति गंभीर छे. ते सागर मूरखना मननी मर्यादामां रहेशे नही, अने बुद्धिमान माणसना मननी मर्यादामां ठेरी रहेशे, विवेकी माणसरूपी सूर्यना करमां जवाथी ते अमृत थशे, अने अविवेकीरूपी सर्पना मुखमां जइने जहेर जेवी आ सागरनी लहेर थशे. जे माणस चतुर नथी. ते एनो मर्म जाणशे नहीं. पण प्रवीणसागरनी लहेरनो मर्म तो चतुर माणस जाणशे. ॥१९॥

॥ सवैया ॥

खान रू पान बिमानसे यान, सुजान महान श्रिमान कुमा-
री ॥ जोबनमें छनमें छनमें, तनमें मनमें अति मैन प्रजारी॥
अंत प्रयंत न कंत मिल्यो, परकंत हुपें नहि दृष्टि पसारी ॥
ऐसि प्रातिव्रत अन्य नहीं बहु, धन्य प्रबीनि पतिव्रत धारी।२०।

अर्थ. प्रवीणने खावापीवानुं अने विमान जेवां वाहनो हतां, अने ते मोटा श्रीमंतनी कुंवरी हती. तेने जुवानीमां क्षणे क्षणे तनमां अने मनमां कामदेवे घणी तपावी. अने छेवट सुधी कंथ मळ्यो नहीं. तो पण परपुरुष सामी दृष्टि करी नहीं. एवी पतिव्रता स्त्रियो झाझी नथी. माटे प्रातिव्रत धरनारी प्रवीणने धन्य छे. ॥२०॥

॥ कवित ॥

ईंद्र चंद्र चंद्रधर नारद द्रुहीन जेसे, हार पाये मारहुतें,
सुनी उर आनिये ॥ ग्यानीको गुमायो ग्यान, ध्यानीको
छोरायो ध्यान, मान तज्यो मार आगे, महा अभिमानिये ॥
एक पत्निव्रत ओर, पतिव्रता व्रत्त धरे, ऐसे नर नारीनकुं
बिश्वमें बखानिये ॥ देह धरी देहअंत, परीयंत जीते मार,
जगमें सो जन जगदीश जेसे जानिये ॥ २१ ॥

अर्थ. ईंद्र, चंद्र, महादेव, नारद, अने ब्रह्मा जेवा कामदेवथी हार पाम्या. ते शास्त्रमांथी सांभळीने मनमां लावीए. कामदेवे ज्ञानियोनुं ज्ञान खोवराव्युं, अने ध्यानियोनुं ध्यान छोडाव्युं, अने मोटा अभिमानीयोये तेनी आगळ पोतानुं मान तज्युंछे. माटे कोई पुरुष एक पत्निव्रत धरे, अने कोई स्त्री पतिव्रतानुं व्रत धरे, एवा नरने अने स्त्रीने आ जगतमां वखाणिये. जेओ देह धरीने देहांत सुधी कामदेवने जीते, तेवां माणसने जग-

तमां परमेश्वर जेवां जाणिये.॥२१॥

॥ कवित ॥

चलबो गगन पंथ,मलबो मिहीर लोक,दलबो रिपुको दल, शस्त्रन विहिनहे ॥ धरबो धराको भार,तरबो निधिको बार, हरबो हराको हरि, करबो आधीनहे ॥ खायबो हलाहलकुं ल्यायबो फनिशमनी,धायबो खगेश संग,बने कोउ दीनहे॥ रहबो अहार विन, कहबो भविष्य होन; सबही सहल, काम दहबो कठिनहे ॥ २२ ॥

अर्थ. आकाशने रस्ते जवुं, अने सूरजना लोकमां जइने मळवुं, अने हथियार वगर शत्रुनी फोजने तोडी पाडवी, पृथ्वीनो भार उपाडवो, समुद्रना पाणीने तरी जवुं, पार्वतीना सिंहने हरी लइने वश करवो, हळाहळ झेर खावुं. शेशनागनो मणी लइ आववो, गरुडनी साथे दोडवुं, तेटलावानां कदापी बनी शके, वळी खाधा वगर रहेवुं, अने भविष्यमां थवानुं आगळथी कहेवुं, ए बधांवानां सहेलांछे, पण कामदेवने बाळवो अर्थात् जीतवो कठणछे.॥२२॥

॥ दोहा ॥

जितनो ज्ञान मिले पढे, औरहि ग्रंथ अनेक ॥
इतनो ज्ञान मिले पढे, प्रवीनसागर एक ॥ २३ ॥

अर्थ. बिजा अनेक ग्रंथ भणवाथी जेटलुं ज्ञान मळे,एटलुं ज्ञान एक प्रवीणसागर भणवाथी मळे.॥२३॥

पति त्रियाकुं परसपर, प्रेम बढावन हार ॥
वशीकरन विद्या यहे, एकहि छंद उचार ॥ २४ ॥

अर्थ. आनो एक छंद पण बोलवो ते स्त्री पुरुषने परस्पर प्रेम बधार-

नारो अने वशीकरणनी क्रिया जेवोछे. ॥२४॥

जो कौ रानी जानही, यह सु ग्रंथकी बानि ॥
तो पतिकुं प्रिय होयगी, रानी मिटि पटरानि ॥२५॥

अर्थ. जो कोइ राणी आ सारा ग्रंथनी वाणी जाणशे, तो ते पोताना स्वामीने वहाली थइने राणी मटीने पटराणी थशे.॥२५॥

पुत्रवती जइ तो कहा, जो न पढी चतुराइ ॥
चतुर नारि चतुराइसें, पिय मन लेत मिलाइ ॥२६॥

अर्थ. जो चतुराई भणी न होय तो दीकरावाळी थवाथी शुं थयुं ? चतुरनारी चतुराइथी स्वामीनुं मन मेळवी ले.॥२६॥

धन जोबन कुल रूपतें, रिझै न पुरुष प्रबीन ॥
जो जाने कविता कला, स्वामि होत स्वाधीन ॥ २७॥

अर्थ. डाह्या पुरुषो स्त्रीना धनथी, जोबनथी, कुळथी के रूपथी रीझे नहीं, पण जो स्त्री काव्यकळा जाणती होय, तो स्वामी तेने स्वाधीनथाय.२७

कामनि लोचन, कबि बचन, मन वेधन दो ठोर ॥
बेधूको मन बेधबो, वे कामनि कवि ओर ॥ २८ ॥

अर्थ. कह्युंछे के स्त्रीना नेत्र अने कविनां वचन ए बे मन वेधवानां ठेकाणांछे. पण सामाना मन वेधनारा जे छे, तेवाना मनने वेधवुं ते स्त्रीयो ने ते कवितो जूदाछे.॥२८॥

परपति अरु परनारि प्रति, जो सजही अस स्नेह ॥
सो पापी नरके परे, बामहि नहि संदेह ॥ २९ ॥

अर्थ. जो आ ग्रंथमां कह्योछे, तेवो स्नेह परपुरुष साथे के परनारी साथे करशे, तो ते पापियो नरकमां पडशे, एमां संशय नथी.॥२९॥

॥ कवित ॥

॥ दोहा ॥

रमा रमाकोरमन पुनि, भवा रु भव भगवान ॥
करुनाकर करुना करी, सबको करहु कल्यान ॥३७॥

अर्थ. लक्ष्मीजी अने विस्नुं, पार्वतीजी अने समर्थ महादेव, ते करूणानी खाण जेवां छे, तेओ दया करीने सर्वेनुं कल्याण करजो. ॥३७॥

॥ अथ ग्रंथांते हरिस्मरन ॥ सवैया ॥

जै जगबंदन नंदके नंदन, पांडव स्यंदन हांकन हारे ॥
चर्चित चंदन, कष्ट निकंदन, ग्राहि गयंदन, ग्राह बिदारे ॥
ईंद्र, फनिंद, कबिंद, मुनिंद रु, छंद गनी गन उचारे ॥
आनदकंद मुकंद गोविंद, करो दुख हं हमारे ।३८।

अर्थ. हे जगतने वंदन करवा योग्य, नंदना पुत्र, पांडवना रथने हांकनारा, शरीरे चंदन लगाव्युं छे जेणे एवा, अने दुःखनो नाश करनारा, अने जेणे गजेंद्रने पकडी राखीने ग्राहने मारी नाख्यो. जेना गुणना समुदाय इंद्र, शेषनाग, मोटा कवियो, तथा मुनीश्वरो, तथा वेदो बोलेछे, एवा आनंदना धडरूप, मुकंद

ते. प्रकाशने पामीने धर्मी मा-
ते प्रभु अमारां

करछे, अने कसाइ जेवा कुकर्म करेछे.॥३१॥

त्यों गुनमय यह ग्रंथको, करहि भिन्न उपयोग ॥
सो हमको कछु दोष नहि, लेखहि पंडित लोग ॥३२॥

अर्थ. तेमज गुण भरेला आ ग्रंथनो जूदो जूदो उपयोग करशे, ते कांइ अमारो वांक पंडित लोको गणशे नहीं.॥३२॥

पढ्यो सोइ पदवी चढ्यो, न पढ्यो चढ्यो न होत ॥
न चढ्यो गिरत न वोत दुख, चढ्यो गिरत दुख वोत॥३३॥

अर्थ. जे भण्यो होय ते पदिये चड्यो होयछे, अने जो न भण्यो होत

अर्थ. काव्यना नियमनुं के व्याकरनुं अमने पूरूं ज्ञान नथी, तेमछतां बाळकनी रमत जेवो आ ग्रंथ अमे पोताना मनने रंजन करवा रच्योछे.॥४०॥

प्रभु प्रेरित जैसी मती, तैसी किय कविताई ॥
जैसे बिचरत बासकन, जितहि पवन ले जाई ॥४१॥

अर्थ. परमेश्वरे जेवी बुद्धिनी प्रेरणा करी, तेवी अमे कविता करी, जेम के सुगंधना परमाणुंओने पवन जे तरफ लइ जाय ते तरफ ते जायछे.४१

॥ कवित ॥

बडे कविराइने बनाई कविताइ बडी, जाकी बडताई बसु धाइमें [illegible] ॥ बिना चतुराइ कविताई पथ धाई हम, होयगी हसाई शिशुताई यों देखाइहे ॥ जैसी मति दाई महामाईने बताइ मति, तेसी मति पाई कविताई या बनाइहे ॥ धरि नम्रताई शिरनाई स्तुति गाई कहुं, कछु चूक [illegible]ाइ कविराइ सो मिटाइहे ॥ ४२ ॥

नीरक ...

[illegible]रा कवीश्वरोये मोटी मोटी कविताओ बनावीछे,जेनी

बलों आदित्य ईदू रहे [illegible]

[illegible] जाण्यावगर कविताने

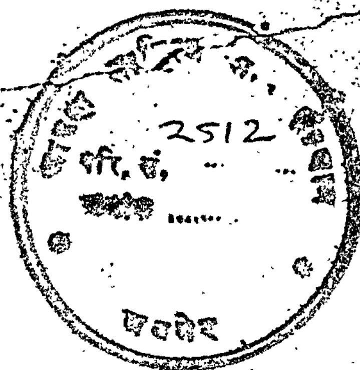
रमारमनमें, [illegible] रखे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]आप-

सु ग्रंथ यह सो प्रबीनसागरको,जयकार पाओ सदा सगरा जहानमें ॥३६॥

अर्थ. ज्यां सुधी शेषनाग पृथ्वीने माथा उपर राखे, अने ज्यां सुधी समुद्रमां जळ भर्युंछे, ज्यां सुधी आठकुळना पर्वतो पृथ्वीमां रहे, अने ज्यां सुधी सूर्य ने चंद्र आकाशमां रहे, अने ज्यां सुधी लक्ष्मीजी विष्णुमां प्रीति राखे, अने पार्वतीजी समर्थ शिवजीमां सारो भाव राखे, त्यां सुधी आ प्रवीणसागरनो सारो ग्रंथ ते आखा जगतमां हमेशां जयकार पामो.३६

॥समाप्तोयं ग्रंथः॥



॥ प्रविणसागर सटीकनुं शुद्धिपत्रक. ॥

अशुद्ध	शुद्ध.
मंगळ करनारा.	वरण एटले अक्षरना करनार मतलब-के मुंगो होय, तेने मुखे पण अक्षरनो उच्चार करावनार. अथवा गणपति-पुराणमां कर्मतकर्ता गणपतिने कह्या छे. माटे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, ने शुद्र एवा चार वर्णने उत्पन्न करनारा.
देव मनुष्य वगेरेने श्रेष्ट वरदान देवावाळा.	... दांतवाळा तथा बिरद धरनार अने वर केतां सुंदर.
विघ्न रूप मोटा अंधाराने नाश करनार अने जेना गुणना ओघ गावावाळानी वाणीथी पण गूढ छे.	प्रौढ छे महात्म जेनुं, अने गूढार्थ वाणीना गानार, एटले जाणनार, अने गुणना समुदाय रूप एवा गणपति.—

गूढार्थ वाणीना गानार एवुं विशेषण गणपतिने आप्युं. तेनुं कारण ए ... ज्यारे वेदव्यासे महाभारथनुं पुस्तक रच्युं त्यारे सर्वे देवोनी आगळ ... जेटली कविता रचुं तेटली झडपथी लखनार कोई हुंशीआर लहीओ जोईए. त्यारे गणपतिये कह्युं के जेटली झडपथी हुं लखीश, तेटली झडपथी तमाराथी कविता रची सकाशे नहीं. त्यारे व्यासे कह्युं के ठीक छे पण कवितानो अर्थ बराबर समजीने तमारे लखवुं. ए वात गणपतिये कबुल करी, पछी व्यासे एवी युक्ति करी के ठेकाणे ठेकाणे गूढार्थ श्लोक मुक्या. तेनो अर्थ गणपति विचारवा रहे. एटलामां व्यास बीजी कविता रची नाखता हता. ए रीते वाणीमां रहेलो गूढार्थ गणपति जाणता हता. ते कारणथी, अने वळी कविना मननी इच्छा आ ठेकाणे एवी जणाय छे के गूढार्थ जाणवानी शक्ति अमने गणपति आपे.

अशुद्ध	शुद्ध.
भक्तोने सहाय करनार.	सेवकनो पक्ष करनार.
जन सरनौ.	जन सुरनौ.
शरणे आवेला भक्तोने विधिए करी संसार समुद्रथी तारनाराछो.	माणसोने तथा सुरोने नावनी पेठे तारनारा छो.
जेनो जश गुणीलोको जपेछे.	जस जपनारना.
शंकरादि सर्व देवताओ तथा मनुष्य विगेरेने वर देनार एवा!	कल्याण करनार तथा सारा रसना वरदान आपनार मतलब के कविता-मां सारो रस आवे.

शुद्धिपत्रक.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
५	९	तथा छंदना भेद रुप.	एटले चार वेदना भेदरुपे थएलां— एवां हे सरस्वति तमारो जय थाओ.
"	११	आनंदमय.	मोहरुप ने मायारुप.
"	१४	सोळ उपचारथी पूजवा योग्य तमे छो.	चंद्रनी सोळ कळारुपे तमे छो.
"	१५	चोसठ कळाने धारण करनार.	चोसठ कळारुप.
"	१९	तमे जय आपो.	तमे जय पामो.
"	२१	तमे जय आपो.	तमे जय पामो.
"	२३	तमे जय आपो.	तमे जय पामो.
"	२४	ओंकाररूप, मंत्र अने माळारूप, तमे छो.	जेम मंत्रना समुदायमां ओंकार सर्वमां छे. तेम तमे सर्वमां छो.
६	५	तमे जय आपो.	तमे जय पामो.
"	८	तमे जय आपो.	तमे जय पामो.
"	११	चंद्र बिंबमां कांतिरुप.	चंद्र बिंबरुप.
"	१५	तमे वारंवार जय आपो.	तमे जय पामो.
"	१७	सुखना धामरुप.	सुखना मूळरुप.
"	१९	चंद्रशेखर जेनुं नाम छे.	ते चंद्र सहित छे. अने
"	२३	मसाण तथा.	आनो खरो अर्थ पृष्ठ ८३८ मे छे.
८	१८	करत	करे.
"	"	सदा गति	सदागति.
"	२२	गहरि गहरि यमुनांकी लहरि गजे [illegible] ॥२	गहरी गहरी जमुनांजुकी लहरी गजे. ॥
९	३	वचेना तंतुओमांथी उडता रजकणोना.	रसना उडता फूवाराना.
"	४	ते सुखमांथी विश्रांति लेवा सारु. डोलरना प्रत्येक पुष्पनी साथे मिलाप करवा अटकी पाछा मूळ जगोनां सुख वास्ते तरेह तरेहनी गति तथा गुंजारव करता दोडादोड करेछे.	ते भमरा डोलरना फूल फूल प्रत्ये सुगंध लेवा अटके छे. अने त्यां सदागति एटले पवन गति करेछे.
९	६	तेओनो मनोरंजक अवाज	

शुद्धिपत्रक.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
९	१८	ए जेओनां आयुध छे.	ए जेओनां भूषण छे.
”	२५	वारोह	वरोह.
१०	१८	मंगळा चणना.	मंगळा चरणना.
”	१९	॥१६॥	॥१५॥
”	२४	॥१७॥	॥१६॥
११	५	म्हारा पवित्र हृदय कमळमां. धारण करी आ ग्रंथ संपूर्ण करुंछुं.	मारा हृदयमां धारण करीने आ ग्रंथ कह्यो.
”	७	॥१८॥	॥१७॥
”	१३	॥१९॥	॥१८॥
१२	२	अनेक परमाणु वडे आ सर्व प्रकारनी सृष्टि रचनार जे ब्रह्मा तेने ग्रंथना पंथमां सुबुद्धि देनार तथा गतिरुप जाणां तेमनुं	जेणे सर्व सृष्टि रची ते ब्रह्मानुं ग्रंथना मारगमां गति करवानुं जाणवा वास्ते.
१३	१८	नवरस कहेला छे.	नवरसनां सुंदर नव अंग कहेलां छे.
”	१९	ब्रह्मा.	कामदेव.
”	२१	निर्वेद (वैराग्य)	मोद एटले आनंद छे.
१८	२३	वपैयो.	वपैयानी मादा.
२१	८	केटलाएक.	अमरकोश रचनार अमरसिंह आदिक.
”	१०	सुंदरदास.	सुरदास
२२	९	मानत.	जानत.
२५	९	सागर कहेछे के चतुर एवा अने सर्व कळामां प्रवीण राधाजी.	एवा चतुर ते सागर छे, अने राधाजी ते प्रवीण छे.
२६	८	पुंज	कुंभ.
”	१४	पर्वत.	कळश.
”	१५	रसिक शीरोमणी.	चतुर.
”	२२	पहाड उपरज.	पहाडनो पेठे स्थिर.
२७	४	वृषभानुनी पुत्री. राधानेज श्रेष्ट करीछे.	हे वृषभानुनी पूत्री तें भारे वात करी छे.मतलब के भगवानने हृदय कर्याछे एम सखीए राधाजीने कह्युं.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
२७	२७	रसिक.	प्रवीण
२९	४	दाडिमनी कळीआने चुगवा सारु वगर अंगवाळो पोपट चंद्रबिंबनी सरहद उपर ताक्यो एटले दाडमनी कळीओ जेवा दांतने चुगवा सारु नासिकारूप वगर अंगवाळो पोपट चंद्ररूपी मुख उपर ताकी रह्योछे.	वगर अंगवाळो पोपट एटले नाक ते दांतरूपी दाडमनो कळीओने चूगेछे. अने मुखरूपी चंद्र आकाशथी पृथ्वी उपर आवीने ठर्यो. अने
३०	२४	घरमां चारे तरफ काचना अरीसा जड्या छे तेमां तेजनो प्रकाश करवाथी तेनुं प्रतिबिंब एवुं शोभेछे के जाणे वगर तेलनो दीवो वारी वच्चे बळतो होयने!	आयना जडेला एवा महेलमां दीवानी जोत प्रगट करी, तेनां प्रतिबिंब आयनामां एवां पड्यां के जाणे तेल वगरना दीवा पाणीमां बळता होयने !
३१	२०	वारी वच्चे.	वारणां वच्चे.
३२	१३	वारी वच्चे.	पाणी वच्चे.
३४	२१	तेत्रीश करोड देवता.	तेत्रीश करोड देवता, नवयोगेश्वर.
३८	४	शरीरथके उत्पन्न थएलां जे सरस्वति तेनुं महात्म्य म्होटा कवीओए कहेलुं छे ते सुज्ञ जनोए सांभळवुं जोइए.	शरीरथी सरस्वति उत्पन्न थयांछे एम कविओ कहेता गयाछे. ते अमे सांभळी लीधुं छे.
४५	१०	सुग्यान.	सुगान.
४७	२०	सात स्वरथी.	लोक एटले चौद तेनुं अर्ध सात एटले सात स्वरोथी.
४८	२	तानथी गान साधेछे.	तानथी रागना आरोह अवरोहथी चाहीने सात रागनुं गान साधे छे.
४९	१३	ठेकाणे ठेकाणे वाक्य रचनाथी उच्चार करनाराओना छंदना उच्चार करी रह्या छे.	ठेकाणे ठेकाणे वृतधारी ब्राह्मणो वेदनो उच्चार करेछे.
"	१४	ठेकाणे ठेकाणे अक्षरना उच्चारथी.	ठेकाणे ठेकाणे अप्सराओना उच्चारथी.
५०	६	डोर नटो कम चार गति,	डोर नटी क्रम चार गति.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
५०	८	दोर ऊपर चडी नटनी स्त्रीओ अजाएब खेल करी रहीओ छे. मल्ल परस्पर कसरत करी मल्लयुधनी गति करी बतावेछे. पोपट अने मेनाओ पोताना मधुर स्वरथी सर्व देवोना मनने रंजन करेछे. गानताननां सूर्वे[illegible] सरो आनंद उपजावेछे, अने भमराओ कमळ ऊपर गुंजारवशब्द करी सुखमां वधारो करेछे.	जेम दोर ऊपर नटो कदम मांडीने चाले तेम झाडनी डाळ ऊपर मनोरंजन पोपट गति करेछे. अने जेम गानतान थतुं होय, तेम कमळ प्रत्ये भमरा गुंजारव करेछे. "सारो स्थिरांशे०" अर्थात् वृक्ष कठोर भाग इत्यमरः॥ मतलब के सार झाडनो डाळनुं नाम छे.
५२	९	पहँ वहँ.	पैहे ब्रह.
५३	१३	कहा सु	कहां सु.
[illegible]	१५	केम अहीं आव्या अने शुं काम छे ते कहो.	तमे क्यांथी अहीं आव्या.
[illegible]	१४	धारणा, संप,	अने धीरज, सांपडे. ने
६१	१४	सुजकहि	सुभगहि
६२	१४	विदर	पृथ्वीनुं पहेलुं पड
६३	४	राखनार.	०
६४	७	तेनां शिखर ऊपर.	तेनां शिखर घणां छे. ते ऊपर.
६८	१०	जन्म ते	जन्म ने.
७५	२३	स्थानकामां.	स्थानकोमां.
८२	२१	पोशक.	पोशाक.
८५	५	तेनी पश्चिम तरफनी सरहद ऊपर.	तेओने लगता.
८६	४	कोयलना स्वरमां वधारो करनार अने पक्षिओ मधुर स्वरथी बोलेछे.	आंबाना झाडमां अनेक कोयलो साथे रहीने स्वर करेछे.
८९	८	पेटे.	शरीर.
”	१३	थशे.	थशे ॥६॥
९१	७	राहु रह्यो.	राहु रह्यो होय.
९२	४	आप्युं.	आप्युं. पण जन्म समे [illegible] ग-

शुद्धिपत्रक.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
		शिनो छे, ते उपरथी पाछुं होत तो व व ऊ ऊपर नाम आवत.	
९८	१९	युद्दागारमां जइ तमाम जातना हथीयारोनो तपास करेछे.	अस्त्र एटले तीर वगेरे दूरथी फेंकवानां हथियारोनी विद्या साधेछे. मतलब के निशान पाडतां शीखेछे.
१०२	२३	सुभटो घोडा ऊपर.	भाला सजी सुभटो घोडा उपर.
१०४	६	विलाडा.	एटले एक जातना बाज.
१०६	२३	राज वसंत.	वसंतराज.
११७	२२	पारधीओने.	चाकरोने.
११९	२४	॥१०॥	॥१०॥ जे कवितामांथी बे अर्थ नीकळे, ते श्लेषभेद कहेवाय, आ कवितामां बीजो अर्थ नायके कोई प्रिया साथे केवी रीते स्नेह जोडवो. ते विशे छे. ते एवी रीते के पोतानो प्रिया शा उपायथी अहीं आवे, अने तेनो मेळाप मने कोण करावशे, ए भेदनोज प्रथम विचार करवो. मतलब के मालण, दरजण, सुयाणो, वगेरे मेळाप करावनारी दुतीओनो शोध करवो. पछी जे ठेकाणे मेळाप थवानो होय, त्यां क्षेमकुशळ शरीरी बचे. ने अने पाछुं शीरीते फराशे, एनो दावपेच लागे. एवी जग्या जोवी. छए ऋतुओनो वखत मनमां धारीने ज्यां स्थिरता पामीए एवुं स्थान जोवुं. तेनुं मन रंजन थाय, तेवां सारां लूगडां सुधारीने शरीर ढांको, अने आंखो वडे नजर लगाडी अने आकळा थइ जवुं नहीं. अने जे ठेकाणे मळवानो संकेत कर्यो होय, एवा सारा घरमां पवन पण नांखीए नहो, मतलब के चुपकीथी रहीए. ते रस्ते जतां आपणे कोईथी दबाइ जइए के आपणने कोई दबावे तेनुं अनुमान करीए. अने शिकारीने शिकार करवानो जेटलो साज करवो पडेछे, तेटलो आ प्रेम जोडवामां पडेछे. कवि कहेछे के हे सागर एटली परीक्षा करिये.
१२२	१	लेहेर. ११	लहेर १०
"	२४	॥९॥	॥१०॥
१२५	२०	आखा जगतमां.	आखी पृथ्वीमां.
१२८	१५	खानगी काम करवा वास्ते बे दासीओ.	जनानखानानी बे दासीओ.
१२९	२१	भाग अने गंभीर भाग होय,	कया अवयवो गंभीर होय ते सारा.
१३०	६	सामुद्रिक ए मोटा मुनीओनो ऊक्ति छे.	सामुद्रिक नामना मुनिवरनो उक्ति छे.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
१३०	१८	कक्ष	वक्ष
,,	२०	आरनं	आरूनं
१३१	६	वगल, ऊर, पेट, कांध.	छाती, स्तन, पेट, ल्भा.
१३२	१३	अस्थीर वृत्तिवाळो.	नवळी स्थीतिवाळो.
,,	१४	क्रम विना हिंगुं काम करनार.	क्रम हीन कहेतां होणा कामनो करनार.
,,	१९	नेनं ॥	नेनं ॥ मुखं चंद्र रेनं ॥
,,	२४	निषगं.	निषंगं.
१३३	२४	कुराल सुवेश	कराल कुवेश
१३७	५	तरुन.	तरनि.
१३८	१०	सेलांनक, जि.	सेलांन कजि,.
१३९	१०	गह.	डग.
,,	१५	जेओ.	हाथी.
१४१	१५	पोताना	(गजगाव) साजने चारे छेडे चमर लटकावेछे. ते लागी रह्याछे,पोताना
१४३	१०	बाण वगेरे हथीआरो राखेलां छे तेमज	अने भाथाओ सजी.
,,	२५	कोइए पीळा	कोइए पीळां अने कोइए रातां
१४५	१४	केवान,	कैवान, (कोकबाण)
,,	,,	तुफंग,	तुफंग, (बंदुक)
,,	१५	सेल,	सेल, (बरछी)
,,	,,	तोमर.	तोमर (एक जातनुं भालुं)
,,	१७	दाव,	दाव, (कुहाडो)
१४६	१२	फुंदार्थी	फूमकार्थी.
१४७	१२	पालन	पाल
१४८	९	आठ आठ,	आठ.
१५०	६	लांबां अने कठण भालांथी.	भाला अने बाणथी.
,,	१८	शीकारी स्वारोए	शिकारी हरोली स्वारोऐ
१५०	२०	हरणनां टोळांओ आडे रस्ते अने पर्वतो तरफ धसी नोकळ्यां.	क्रौंच पक्षी अने हरण आडे रस्ते धसी नीकळ्यां.
१५१	३	गुफा	कोतर.

शुद्धिपत्रक.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
१०१	७	विरद.	दोर.
१६२	९	हंस	सूर्य.
”	१६	कविपाल	भुविपाल.
१६३	५	त्यांना खबर	त्यांनो खबर.
१६४	२	नम्रता.	मर्यादा.
१६८	७	वीतो.	वीत्यो.
”	१०	तंबु ताणेला छे.	चांदनीओ ताणेली छे.
१७३	१६	दरवज्जा	गढना दरवाजा.
”	१८	वीजुं लश्कर	वीजुं मोटुं लश्कर.
”	२१	दान देवानो समय थयो	मशालो प्रगट थई.
”	२३	करोडो	कोटना.
”	२५	राजकुमारनी स्वारी डावी वाजुए चालेछे. अने महाराजा नीतिपाळ वचे चालेछे. रससागर राजकुमार जमणी वाजु हाथी ऊपर वीराजी चालेछे	रुद्रसेन डावी वाजु वचमां नीति- पाळ ने सागर जमणी वाजु एरीते त्रणेजणा हाथी ऊपर वेशी चालेछे.
१७७	४	वंदीजनो अने चोपदारो वाणीथी जश गाय छे.	भाट चारणादि वंदीजनो विरदा- वळी वोलेछे, अने चोपदार नकी पोकारेछे.
”	१७	गोळाकार.	मोतीवाळां.
”	१८	जाणे सूर्यनुं विंव.	जाणे प्रभातना सूर्यनुं विंव.
१७९	५	रह्या छे ने जाणे.	रह्या छे, ते समे कुंवर जाणे.
”	२३	फुलना हार.	हीराना हार.
१८०	४	रातां कमळ जेवा हाथमां मेंदीनो रंग आपेलो छे.	सर्वीए पाननी वीडी मोंमां आपेली छे.
१८३	११	चालेलुं सैन्य.	चालेलुं सागरनुं सैन्य.
१८५	१	लहेर १२.	लहेर १९.
१८६	११	ग्रहणे भोगवेलुं नक्षत्र अने दक्षि- णायन.	अने ते वर्षमां ग्रहणे भोगवेलुं नक्षत्र.
१८७	७	सुधी.	सिद्धि.
”	१७	वाणीमां न आवे एवा गुप्त.	गूढ वाणीना जाणनार.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
१८७	१९	कल्याण रूप.	शुभ आज्ञा करनारा.
१८८	२२	दधि चंदन अक्षत अने लीला रंगनी धोथी मंगल चिन्ह जोवामां आवेछे, तेमज तोरण अने फूलना हार बांध्या छे.	लीली धोनां तोरण बांध्यां छे.
१९८	९	ए जुदा जुदा	ए शरीर जुदा जुदा.
१९९	१३	सहिके.	साहिके.
२००	१४	लाजथी बेशी गयां	लाजमां डुबी गयां.
”	१५	झालो	झाली
२०१	१२	अन्योन्य	पितुमात
”	१६	चत्र हस्त	चतुरस्र
२०२	४	वेयने सुगंधी	वेयने कन्याना मावापे सुगंधी
”	[illegible]	आप्यो	अपाव्यो.
”	१७	तथा कुळाचार प्रमाणे मेखळाबंध स्थंडील करी ते ऊपर.	प्रमाणे चोरस स्थंदिल ऊपर
”	२१	हथेवाळो मेळवी विधिएथी लाजा सेकेली शाळनो होम कर्यो.	वरना हाथमां कन्यानो हाथ मुकावी अने ते वडे लाजा (शेकेल शाळ)नो होम कराव्यो.
२०२	१६	वरराजाए कन्याने कंसारनुं भोजन करावीने पोते ते ऊच्छिष्ट कंसारनुं कन्याना हाथथी भोजन कर्युं.	कन्याए वरने कंसारनुं भोजन कराव्युं, पछी ऊच्छिष्ट रहेलो कंसार वरे कन्याने खवराव्यो.
२०४	१४	वारा.	वारि
”	१५	सलिल	अनिल
२०५	३	खावाना	मुखवासना.
”	६	झालवाळा पंखा रही गया छे, सोनाना जडित बाजोठ ऊपर सुगंधी पांणी भरी राख्यां छे.	लूगडाना पंखा रही गया छे, सोनाथी सुगंधीवाळो पवन आवे छे.
२०६	९	देश देशना राजाओ.	देश देशना केटलाएक राजाओ.
२०७	८	एक	एक वे.
२१४	१९	हरिगीत	चर्चरी
”	२१	प्रेतका	पीयको

शुद्धिपत्रक.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
२१६	१४	शरीर शोभे	शरीर विशेष शोभे.
२२०	२०	मंदीरमां मोटा दीवानी हार्यो प्रगटेली छे, तेमज अनेक नाना दीवानी दीपमाळा बनावी छे.	मंदिरमां दीवानी हार्यो प्रगटी छे. अने स्त्री पण दीपमाला जेवी शोभायमान बनी छे.
२२२	२	बर्नन	बर्नन, ॥दोहा॥
,,	१६	औषधीओनी साथे अडदीया. लाडु खावा.	औषधियां वाळा लाडु खावा.
२२७	२	त्यांथी चाली	त्यांथी प्रभातमां उठीने चाली.
२३२	२०	सोना जेवुं कोमळ अने कान्तिवाळुं अंग छे	सोना जेवुं कांतिवाळुं अंगछे.
,,	२५	जेवा.	लई
२३५	२२	मुक्त	मुकुट
२३६	१६	मृगजि	मृगज.
२३७	६	रागणी पुर्वक परखी लेवी.	रागणी परखी लेवी.
,,	२३	करमाइ गएली फूलनी माळा धारण करी छे	फूलनी माळा तथा कस्तुरी धारण करी छे.
२४१	३	कोल,	कहत,
	९	त्रीजो काळ त्रीजो ताल—त्यांथी ते एज पृष्टली लीटी १६ मी मां—बचावीने गायछे. त्यां सुधी.	त्रीजो ताल हीन एटले ताल विना गावुं; त्रीजो स्वरभंग एटले गावामां साद तूटी जाय, चोथो भमर डोलाववी, पांचमो मुख डोलाववुं, छठ्ठो गळुं डोलाववुं, सातमो कोई पण अंग डोलाववुं. आठमो स्वरनो भेद न जाणवो, नवमो कपाळी स्वर, दसमो समय विना गावुं, के जेथी रसवाळो राग उपजे नहीं. एवी रीते संगीत शास्त्रना मतने जाणनार गुणी विद्वानो दश दोश बचावीने गायछे.
२४७	९	ताकी.	ताको.
,,	२४	लुखी	छटावाळी
२४८	९	गतिने वींटाइने अनेक	गतिनी आवृतियो अनेक
२४९	१८	॥१६॥	॥१७॥
२५१	६	भमरनो गूंप जेम पोताना धुंवाडामां घुंचवीने कस्तुरीने,	भमरना धुंवाडाने जेम कस्तुरी,
,,	२१	मछीमार जेम	मछीमारनो कांटो जेम.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
२९४	९	दीवालो जरीना पर्वतनी माफक.	सोना रूपानी दीवालगीरीओ.
२९९	२०	सोध	सौध.
२६०	३	भोये वीछानां	भोए चादनीमां वीछानां.
२६१	१	लहेर १८.	लहेर १९
२६३	४	वर्न	वरन
"	१६	॥ दोहा ॥	वसंतरागभेद ॥ दोहा ॥
२६९	१	लहेर १८	लहेर १९
२६८	१२	गायनोक्त प्रयुतर	गायनोक्त गूढोक्ति प्रयुतर.
"	१८	संगना	संज्ञा.
२७०	१	लहेर. १९	लहेर २०
	११	रस सागरे नायकाओने कह्युं के मनमां कामदेवना तरंगने (विकारने) ठसावो.	मनमां कामना तरंग धरोने रससागरे नायकाओने कह्युं के
"	२३	नीरव	नीरज.
"	२४	कमलं कज पातरनं	कमलं कि जपा तरनं
२७१	५	जानु	जंव
"	१६	भवनं	...न। लेवमात्र अंग...
"	१९	रसनो दन	अंग—पूछे
२७२	१६	गही	गुही.
"	१८	पीत	पीठ.
२७३	३	भवनं	भुवनं.
"	४	सुंजत	संजुत
"	९	सुखदो तनको	सु खदोतनको
२७४	३	सुलाल	सु वीन
"	१२	जातवान चंपानो कळीओ जेवी छे. अने ते जाणे लीला केसर तथा कंकुनी दळीओ बनावी होय तेवी छे, उपमाथो पण राता रंगवाळा छे परंतु ते जळमांथी उपजेला कमळना पातरा तथा जासुसना फुलनी बराबरी करे तेवा छे.	कमळ अथवा चंपानी कळीओ जेवीछे. अने ते आंगळीओनी कांतिए केसर तथा कंकुनी शोभानी हदने हरी लीधी होय तेवीछे. एगना राता रंगने कमळ किंवा जासुस के उगता सूरजनी कीरणोनी उपमा अपाए एवो छे.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
२०१	१९	हस्तरूपी कमळमांथी प्रगटेली पांखडीओ जेवी तेनी आंगळीओ. पवननी लहेर तथा वेदना स्वरो जेवी छे. रसदार आंगळीओ उपर वृद्धि पामेला नख हीरामां पाडेला माणकना डांक जेवा शोभे छे.	तेना हस्तकमळनी शोभा एवी प्रगटी छे के जाणे श्रुतिकेश जे विष्णु तेने पवन करवानो रमानो एटले लक्ष्मीनो पंखो होय तेवी छे. सरस आंगळीओ उपर नख द्रढ सजेला छे. ते आंगळीनी छवी सोना जेवी छे. अने उपर माणेकनी खोळ बीराजती होय, एवा शोभेछे.
	२	घोलेला.	०
	८	डोलर.	०
	९	वगर खेंचेला.	अतनु एटले कामदेवना.
	१३	केवळ गुंथेला केश चोतरफ विखराएली.	खुला केश.
	१४	शोभेछे; मोरना.	शोभेछे, अने क्यारेक गुंथेला होय-त्यारे (क्लिेशय) सर्प जेवो तेनो चोटलो देखाय छे, मोरनां.
	२०	हीरानी.	वांसा उपर पडे छे ते जाणे के सोनानी.
	२३ ९	[illegible] न उपर चकरीवंध चवीजो काळ वीजो ताल—नी चाले तेवी.	वांसा उपर चडता मकरी ने चक्री जातना सर्पनी छबि जेवी दीसे छे, मतलब के ब्रह्मपाश वाळे त्यारे मकरी-जेवी, ने रुद्रपाश वाळे त्यारे चक्री जेवी.
	२५	राफडामांथी नीकळेला नागना मुखमां रहेला मणिना विंब (आकार) जेवुं देखाय छे, एवीज भातथी तेना सेंथामां भरेलो सिंदुर.	मां चोटलानुं प्रतिबिंब पडे छे ते जाणे के सरपना मणामां सरपनुं प्रतिबिंब देखातुं होय एम दीसेछे. तेना सेंथामां सिंदुर एवी भातथी भर्यो छे के जाणे.
	६	नेत्ररूपी कमळ दळने मळवा आवतो तेनी शाम्यो क्रीडा करता भमरा पासे झुकी आवता पीपरना पत्र जेवी छे.	चोटलानी गुंथणीमां पल्लव एटले पान अने दल एटले पटीयां पाड्यां छे. तेमां झलवा (झलरी) एटल केश सुगंधित तथा साफ करवा साफ सुगंधीदार (गोटी घसीने) मेळवेलो छे. ते उपर भमराना दल एटले जथा किल किल्याट करता झुमी रह्या छे.

ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
८	तेना सोनाना	तेना हिरण्य एटले सोनाना.
९	(ऊगता सूर्यना लाल कीरण जेवाछे.	एटले ऊगता तरणी एटले सूर्यना अरुण एटले लाल कीरण जेवाछे.
९	मंगळना नंगथी चळकतां तेनां कर्णफूल	भुवन जे जळ तेनुं सुत एटले कमळ तेना जेवां तेना काननां फूलछे.
१०	जेवां लागेछे.	जेवां लागेछे, अर्थात् तेनुं कपाळ उलटा अर्धचंद्रने आकारे एटले तेनां शृंग कान पासे आवेलां छे.
"	मालतीनां	मोगराना.
१२	चंद्रमाना	(चोढणुं) चंद्रमाना.
१३	विद्रुम (परवाळां) सरखा वर्णवाळा मंगळने चंद्रमा चुंबतो.	दरवी एटले सर्प दुरके एटले हुल्यो रहोने चंद्रमां रहेला मंगळने चाटतो[illegible]
१५	ब्रहस्पतिना वाण	बृहस्पतिना रंगनां वाण
१९	नाकमां पहेरेला लीला मणीना ओरने जोइने तेना अवाजने चहाता मेघना वरा झुकता आवेछे.	तेना सुंदर नाकमां लटकता मेघना वरा सरखा नीलमणीने जोइने मोर अवाज करवाने चाहेछे.
२६	परमेश्वरना तेजमांथी अंश लइने बनावेला रसना राजा शृंगार जेवो छे.	एवो शोभेछे के जाणे [illegible] तेनो लवमात्र अंश [illegible] शृंगाररस[illegible]
५	[illegible]हासन	अंगनी कांति धोळी.
७	तेना हाथमां पहेरेला चूडानी गूजरी, कंकण, ठेयां अने चूडीओ	बोहोतेर.
	हाथीना दांतमांथी बनावेली,छे.?	व्याघ्य.
	भरपूर अने कोतरीदार छे	०
	[illegible]तना.	राजरीत उपरथी अनुमान.
		राजदरबारना.
१४	छंद.	छंद (वेदमंत्र)
१८	ध्यान.	स्थान.
२०	ध्यानने.	धामने.
२	तेनो गोवर्धन.	तेनो भोग्य गोवर्धन.
१५	इश्वरह.	ईश्वरह.
	सोपारी आप्यां	हाथमां सोपारी आपी.

शुद्धिपत्रक.

पानुं	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध.
३७०	२४	भली	भलो.
३७१	१	लहेर २८	लहेर. २७
"	१४	परमेश्वर पुरी	परमेश्वर निरंतर पूरी.
"	१९	चर्चा संबंधी	चर्चा तथा कुमारी वृत धरवाना नियम संबंधी.
३७२	३	॥२२॥	॥२७॥
३७६	१३	पाछी	०
"	१४	लावीने	लावेछे पछी
३७८	४	जुग.	जग.
"	२४	दिव दधि रवि जल	गिरि दिव दधि रवि.
३७९	१६	सविक.	शिविक.
"	२२	रथ, म्याना,	०
३८०	२	लोकोए	०
"	६	सुखचेनमां.	घणा सुखचेनमां.
"	१९	॥२२॥	॥२८॥
[illegible]	२२	उतारनार.	ग्रहण करनार.
३८५	२	समूहरूप.	मूळरूप.
३८६	८	हारा.	हारो.
"	२३	अमृतमय उजळा कीरणोथी प्रकाश करनार, चंद्रआकाशरूपी रंगभूमिना मेदाननी वचे प्रकाशती वखते मद्यना आनंदमां.	माथे चंद्र आव्यो ते वखते कामदेवना (सराप) मद्यना जुस्साथी.
३८८	७	हृदयमां विरहरूपी होज.	हृदयरूपी होजमां विरह.
"	११	जग.	जगि.
"	१७	जगतमां.	सळगीने.
३८९	१९	निछत्र.	नछत्र.
३९०	३	पलवनो स्पर्श करीने.	पलवने.
"	४	मनरूपी सूत्रोना सुरतीरूपी तंतुथी हमेशां.	पहोंची. अने ते वृक्षमां रहेलो म रूपी (सूत्रा) क लाळना
३९१	९	शब्दोनी हारो.	काम

શુદ્ધિપત્રક.

પાનું	ઓળ	અશુદ્ધ	શુદ્ધ.
૩૯૧	૧૦	પટલાવેછે.	પલટાવેછે.
”	૨૨	વિસ્તારથી કહેવા સારૂં કવિને આજ્ઞા કરી.	ફરીથી પૂછવા લાગ્યા.
૩૯૨	૨	આજ્ઞા.	૦
”	૧૫	દેવ.	શૂરવીર.
”	૧૬	વૃત્ત ધરી.	આચરણ કરી.
”	૨૨	॥છપ્પય॥	૦
૩૯૩	૧	લેહેર ૩૦	લેહેર ૨૯
”	૨	૦	॥છપય॥
”	૧૬	દહન.	દેન.
”	૨૫	॥૨૨॥	॥૨૯॥
૩૯૪	૧	લેહેર ૩૧	લેહેર ૩૦
”	૨૨	શોક	વિચાર
૩૯૫	૧	લેહેર ૩૧	લેહેર ૩૦
૩૯૬	૧	લેહેર ૩૧	લેહેર ૩૦
૩૯૭	૧૭	રેશમી રુમાલની સાથે	૦
”	૨૨	ત્યાંહાં તેઓને નજરે જોયા કે તરત તેનું મન હીંડોળાની પેઠે ઝોકાં ખાવા લાગ્યું.	અને રથમાં બેઠાં બેઠાં ત્યાં સુધી નજરે પહોંચી
૩૯૮	૭	શંકા ન રાખતાં.	કોઇની ગરજ એટલે આશા ન રાખતાં
૩૯૯	૧૩	આરોગ તે સાધ્યનો કે અસાધ્યનો	એવા અસાધ્ય રોગ હોય તે શી રીતે સાધ્ય થાય.
૪૦૨	૧૨	ગંગા	ગંગ
”	૨૩	ભ્રાંતિ ન ગઇ તો પછી નજ ગઇ	ભ્રાંતિ ન તજી તો પછી નજ તજી
૪૦૫	૪	તો	એવું.
૪૦૬	૪	જંગલ બળવા લાગ્યું	પર્વત બળવા લાગ્યો.
૪૦૭	૨૩	હંસન્યોક્તી	હંસ અન્યોક્તિ
૪૧૦	૧૩	॥૨૨॥	॥૩૦॥
૪[illegible]	૨૫	ભુકુટી	ભૃકુટી
[illegible]	[illegible]	હેનો વિનંતી	સાથે ફરી વિનંતી
[illegible]	[illegible]	[illegible]	લેહેર ૩૧